जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज-
विरचितया अनगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृत

हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्-

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम् ।

SHREE GNĀTĀDHARMA KATHĀNGA SOOTRAM

(तृतीयो भागः)

नियोजक

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराज'

प्रकाशक

'मद्रासनिवासी—श्रीमान्—शेठ—ताराचदजी—साहेब
गेलडा 'तत्प्रदत्त-द्रव्यसाहाय्येन अ० भा० श्वे०
स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुख श्रेष्ठि-
श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः
मु० राजकोट

प्रथमा-आवृत्ति	वीर-संवत्	विक्रम-संवत्	ईसवीसन्
प्रति १२००	२४८९	२०२०	१९६३

मूल्यम्-रू० २५-०-०

दक्षिण भारत में जैन समाज के प्रखर नेता दानवीरशेठ स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलडाकी

जीवनझलक

दक्षिण भारत के प्रवास पर आये हुए किसी भी व्यक्ति के दिलमे, मद्रास जैसे शहर के जैन समाज की शिक्षण और-वैद्यकीय सस्थाओं का सुव्यवस्थित क्रम और प्रबध देखकर आनद हुए विना नही रह सकता। और स्वतः ही जैन समाज की दान-दिशा को इस ओर ले जाने वाले व्यक्तिके रूपमे दानवीर शेठ स्व० श्रीमान् ताराचदजी साहेब गेलड़ाका नाम व व्यक्तित्व नजरमे आये विना नहीं रहता। ।

मध्यम कदका इकहटा वदन, खादीकी धोती, खादीका कुरता और खादी की टोपी, पैरमे केन्वासके पादत्राण हाथमे छोटीसी लकडी-चमकती तेज आखे और ७० वर्ष की अवस्थामे भी-जवानों की तेजी-ये आप के अभिन्न गुणों के सूचक थे। उनके यह सादगी अत समय तक भी कायम रही थी।

सन १९३७ मे आप राजकोट पधारे थे वहा अनेक शिक्षण सस्थाओंको देखकर आपने अपने मनमे तय किया कि मैं मद्रास जाकर शिक्षाकी ऐसीही सस्थाएँ वनाउगा। उनके विचारों की पुष्टि के रूपमे श्रीमान् विरदीचदजी सा मलेचाने ५००००) रूपया दान दिया और यहाकी श्री एस एस.जैन एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई। इस सोसायटी के विकास के लिये आपने अपने व्यापार से भी-निवृत्ति ले ली और-क्रमशः इसका विकास करते रहे। इस सोसायटी के तत्वावधानमे क्रमशः प्रायमरी स्कूल, बोर्डिंग होम, हाईस्कूल एव कॉलेज भी-स्थापित हुए और आज भी सुचारु रूपसे चल रहे है। जब तक ये सस्थाएँ पूर्णरूपसे आत्म-निर्भर नही हुई तबतक आप सोसायटी के प्रारभ कालसे मत्री वने रहे। इतनाही नही प्रत्येक सस्था के लिये आपने दान दिया था ही-किन्तु ताराचद गेलडा जैन विद्यालयके लिये ३१००० रु का भव्य दान दिया। इसके उपरात भी २२००० रू. का और दान आपका होनेसे आप

મળવાનું ઠેકાણુ
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરડિયા કૂવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
પાસે, રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India

卐

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञा,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥

卐

हरिगीतच्छन्दः

卐

करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते है तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान मे यह लायगा ॥ १ ॥

મૂલ્ય ૩. ૨૫=૦૦

પ્રથમ આવૃત્તિ પ્રત ૧૨૦૦
વીર સવત્ ૨૪૮૯
વિક્રમ સવત્ ૨૦૧૯
ઇસવીસન્ ૧૯૬૩

મુદ્રક
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટીગ પ્રેસ,
ઘી કાંટા રોડ, અમદાવાદ

७८ वर्ष की आयुमें आपका पडित-मरण हुआ जो आपके यशस्वी जीवन की यशकलगी के समान था। अर्थात् यशस्वी पुरुषो के शिरोमणि थे।

आपके सुपुत्र श्रीमान् भागचंदजी सा गेलडा भी कर्मठ कार्यकर्ता है। जैन एन्ड नेशनल सोसायटी के आप सदस्य एव पदाधिकारी रह चुके है-वर्तमानमें आप सोसायटीके सभापति है। गोसेवा और पाजरापोल के कार्यके लिये आप घर २ जाकर चंदा करने मे सकोच महसूस नहीं करते और विगत आठेक वर्षों से आप मद्रास पाजरापोलके मत्री है और उसका बहुत ही विकास किया है। द्वितीय पुत्र श्री नेमचदजी स्वर्गवासी हुए है किन्तु आप भी औषधालय निमित्त ट्रस्ट करके गये है। तृतीय पुत्र श्री खुगालचदजी व्यापार-कुशल है और कार्य-भार सम्हाले हुए हैं।

इस आगम प्रकाशन के लिये जब आपके पास डेप्यूटेशन पहुँचा तब इन सुपुत्रोंने उदारता से ५००१) रु दिये है एतदर्थ धन्यवाद है। अन्य सज्जन भी उनका अनुकरण करे यही अभ्यर्थना है।

सेक्रेटरी
शास्त्रोद्धार समिति

सोसायटी के पेइन (सरक्षक) बने। सन १९५६ में अर्थों को भी-कार्य संचालन का अनुभव हो एतर्थ आप निवृत्त हुए, किन्तु अंत समय तक सोसायटी के प्रत्येक कार्य के लिये आप सलाह देते रहे और यह समाज का गौरव था कि आप जैसे कुशल एव विचक्षण सलाहकार मिले।

दानके प्रवाह को शुभ मार्गमे बहाने का आप का प्रयास अत्यंत अनुकरणीय रहा। और मद्रास के जैन समाजने वैदकीय राहत क्षेत्रमें "जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी" स्थापित की-जिसके तत्वावधानमे फर्ई डीसपेंसरिया और एक प्रसूतिगृह चल रहा है। आप उसकी कार्य कारिणी के पदाधिकारी व सदस्य रहे।

इतनाही नही आपने अपने व्यापार क्षेत्रको नही भूला और सैदापेट (भूदान) मे शुद्ध आयुर्वेदिक औषधलय-जिनेश्वर औषधालय खोला जिसके साथ आगे जा कर अपनी पत्नीके नामपर रामसुरजबाई गेलडा प्रसूतिगृह भी खोला। एतदर्थ आपने अपने द्वितीय पुत्र स्व. नेमीचदजी की इच्छाके अनुसार अलग ट्रस्ट बना दिया है।

आपने अपनी जन्मभूमि कुचेरा के लिये भी कुछ करने के विचार से वहा पर भी छात्रालय शुरू १९४२ मे करवाया और उसके प्रारम्भकाल से आपकी ओर से २५० मासिक सहायता उसे दी जा रही है-जो अब भी चालू है।

तदुपरात ताराचद गेलडा ट्रस्ट भी आपने कायम किया जिससे कई उदीयमान जैन समाज के विद्यार्थिओं की आशाओ को प्रोत्साहन दिया गया और दिया जा रहा है।

उनके अदम्य उत्साह और जोश के साथ उनके दृढ मनोबल का परिचय न दिया जावे तो उनका व्यक्तित्व अधूरा रहेगा। वे अपने आप आगे बढने वाले थे। बहुत ही छोटी उम्र मे उन्हों ने व्यापार किया और ताराचद गेलडा एन्ड सन्स, टी ची ज्वेलरीज एव महेन्द्र स्टोर्स आदि व्यापारिक फर्म चले। सामान्य पूजीसे लेकर वे लाखोपति बने। सामान्य शिक्षा ज्ञान के बाद भी चार भाषा की जानकारी और प्रबल व्यापारिक ज्ञान आपकी विशेषता थी।

आजीवन खादीव्रत, हाथचटी का पीसा हुआ धान और गायका दूध-घी कठिन व्रत वे आजीवन निभाते रहे। समाज-सुधारणा भी आपने कई प्रकारसे की।

१७	द्वितीय श्रुतस्कधका उपक्रम	
	प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन	
१८	कालीदेवीका वर्णन	७६१-८०६
	दूसरा अध्ययन	
१९	रात्रीदेवीका वर्णन	८०६-८१०
	तीसरा अध्ययन	
२०	रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण	८११-८१४
	दूसरा वर्ग	
२१	शुभानिशुभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन	८१५-८१९
	तीसरा वर्ग	
२२	अलादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८२०-८२५
	चौथा वर्ग	
२३	रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२५-८२८
	पाचवा वर्ग	
२४	कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२९-८३३
	छट्ठा वर्ग	
२५	उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिषियों का वर्णन	८३४-८३५
	सातवा वर्ग	
२६	सूरप्रभादि देवियों के चारित्रका वर्णन	८३६-८३८
	आठवा वर्ग	
२७	चन्द्रप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३९-८४२
	नववा वर्ग	
२८	पद्मादिदेवियों के चरित्रका वर्णन	८४२-८४५
	दशवां वर्ग	
२९	कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८४६-८५१
३०	शास्त्र प्रशस्ति	८५२

ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र तृतीय भा की विषयानुक्रमणिका

क्रमाङ्क	विषय	पेज
	चौदहवा अध्ययन	
१	तेतलीपुत्र मधानके चारित्रका वर्णन	१–११८
	पंद्रहवा अध्ययन	
२	नदिफलके स्वरूपका निरूपण	११८–१३१
	सोलहवा अध्ययन	
३	धर्मरुचि अनगारके चरित्र निरूपण	१३२–१८२
४	सुकुमारिका के चरित्रका वर्णन	१८३–२५१
५	द्रौपदी के चरित्रका निरूपण	२५२–२९६
६	द्रौपदी पूजा चर्चा	२९७–४२६
७	द्रौपदी के चरित्रका वर्णन	४२७–५८५
	सत्रहवा अध्ययन	
८	नावसे व्यापार करने वाले वणिजोंका वर्णन	५८६–५९०
९	नावके निर्यामक का दिङ्मूढ होनेका कथन	५९१–५९५
१०	कालिक द्वीपमें सुवर्ण आदिका वर्णन	५९५–५९६
११	कालिक द्वीपमें हिरण्य आदिसे पोतकाभरना	५९७–६००
१२	कालिक द्वीपमे रहे आकीर्णाश्वों का वर्णन	६०१–६१९
१३	आकीर्णाश्वोंके दृष्टातको दार्ष्टान्तिक के साथ योजना	६२०–६३९
	अठारहवा अध्ययन	
१४	सुसमा दारिका के चारित्रका वर्णन	६३८–७०९
	उन्नीसवां अध्ययन	
१५	पुंडरीक–कंडरीक मुनिके चरित्रका वर्णन	७०८–७५२
	द्वितीय श्रुतस्कंध	
१६	द्वितीय श्रुतस्कंध का मङ्गलाचरण	७५३–७६०

१७	द्वितीय श्रुतस्कंधका उपक्रम	
	प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन	
१८	कालीदेवीका वर्णन	७६१–८०६
	दूसरा अध्ययन	
१९	रात्रीदेवीका वर्णन	८०६–८१०
	तीसरा अध्ययन	
२०	रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण	८११–८१४
	दूसरा वर्ग	
२१	शुभानिशुभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन	८१५–८१९
	तीसरा वर्ग	
२२	अलादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८२०–८२५
	चौथा वर्ग	
२३	रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२५–८२८
	पाचवा वर्ग	
२४	कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२९–८२३
	छट्ठा वर्ग	
२५	उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिषियों का वर्णन	८३४–८३५
	सातवा वर्ग	
२६	सूरप्रभादि देवियों के चारित्रका वर्णन	८३६–८३८
	आठवां वर्ग	
२७	चन्द्रप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३९–८४२
	नववा वर्ग	
२८	पद्मादिदेवियों के चरित्रका वर्णन	८४२–८४५
	दशवां वर्ग	
२९	कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८४६–८५१
३०	शास्त्र प्रशस्ति	८५२

તા ૧૫–૭–૬૩ ના રોજ કુલાસવાર

મેમ્બરોની સંખ્યા.

૨૭	આદ્ય મુરબ્બીશ્રી, ૫૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૩૨	મુરબ્બીશ્રી, ૧૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૧૩૩	સહાયક મેમ્બરો, ૫૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૫૮૬	લાઇફ મેમ્બરો, ૨૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૪૯	બીજા ન ભરના જુના મેમ્બરો, ૧૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૮૨૭	કુલ મેમ્બરો

રૂપિયા બસો પચાસ તથા રૂપિયા પાચસો વાળા મેમ્બરો લેવાનુ હવે બંધ છે ફક્ત રૂા ૧૦૦૧ થી મુરબ્બીશ્રી માટે ૭૦ સીતેર જગ્યા ખાલી છે અને આદ્ય મુરબ્બીશ્રી રૂા ૫૦૦૧ થી દાખલ કરવામા આવે છે

મેમ્બરોની સંખ્યા પૂરતા જ શાસ્ત્રો છપાય છે જેથી પાછળથી દાખલ થનારને સૂત્રો મળવા મુશ્કેલ છે માટે જીજ્ઞાસુ ભાઇઓ તથા બહેનોને અમારી વિનતી છે કે તેઓ મુરબ્બીશ્રી અથવા આદ્ય મુરબ્બીશ્રીમા પોતાનુ નામ જલ્દી મોકલી આપે

નમ્ર સેવક,
સાકરચદ ભાઇચદ શેઠ
મત્રી

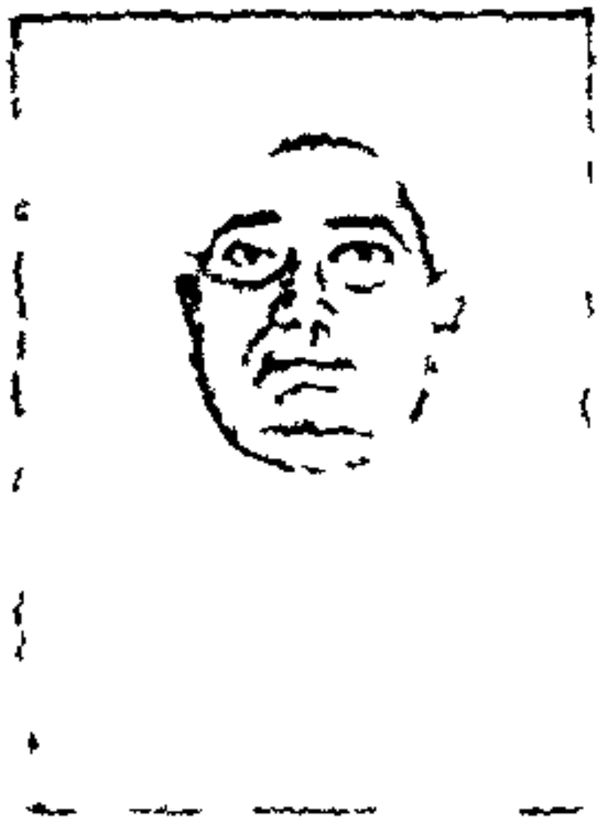
રાજકોટ
તા ૧૫–૭–૬૩

आद्यमुरब्बीश्री



शेठ साहेबश्री ताराचदजी साहेब, गेलडा
मद्रास

આનમુરબ્બી શ્રીઓ



(સ્વ) શેઠશ્રી હરજીવનદાસ કાલીદાસ માંગિયા
ભાવનગર



સ્વામી હરગોવિંદ જેચંદભાઈ
રાજકોટ.



શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ



(સ્વ) શેઠશ્રી વાડીલાલ જીવણલાલ
બારસી



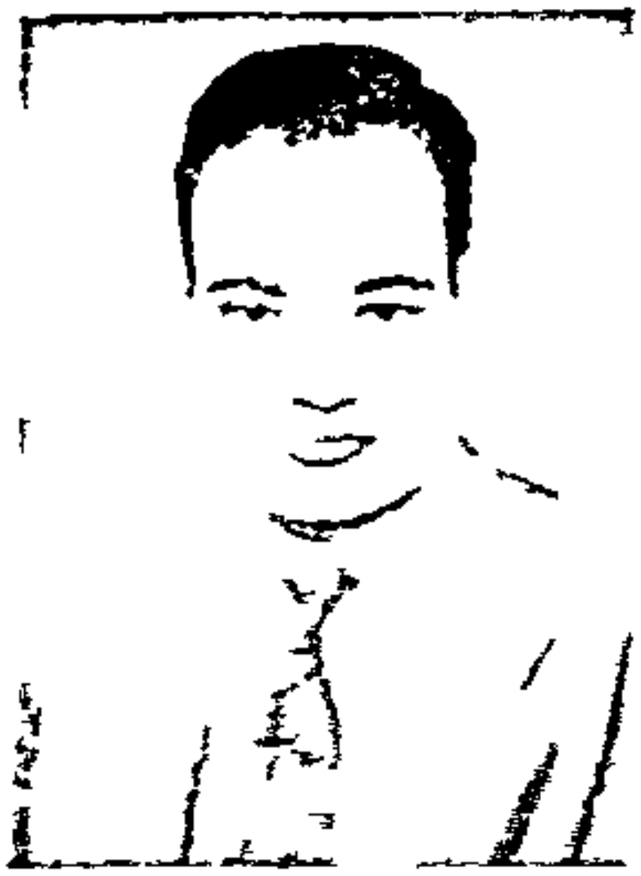
(સ્વ) શેઠશ્રી જગજીવનદાસ શામળદાસ ભાવસાર
અમદાવાદ



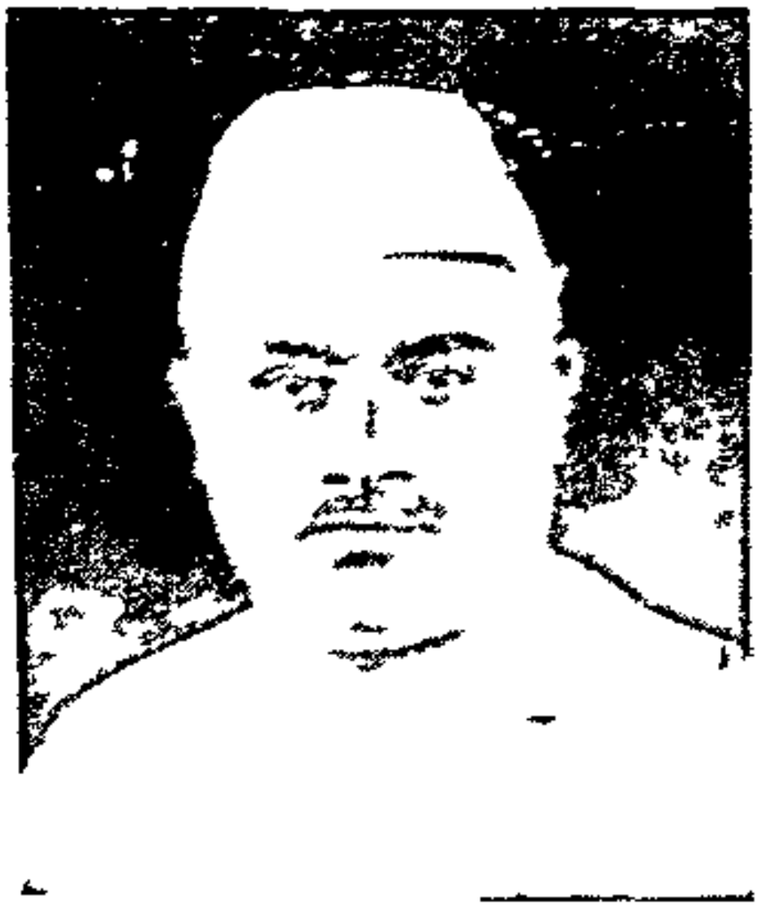
(૨૧) શે૦ જગજીવનભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ



૨૨ શ્રીમાન શે૦શ્રી મુલચંદજી મા
આલિયા પાલી મારવાડ.



(૨૩) શે૦શ્રી વિનયભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ



શે૦શ્રી જેમિનભાઈ પોપટલાલભાઈ
અમદાવાદ



૨૪ શે૦શ્રી આત્મારામ મારૂજીભાઈ
અમદાવાદ.

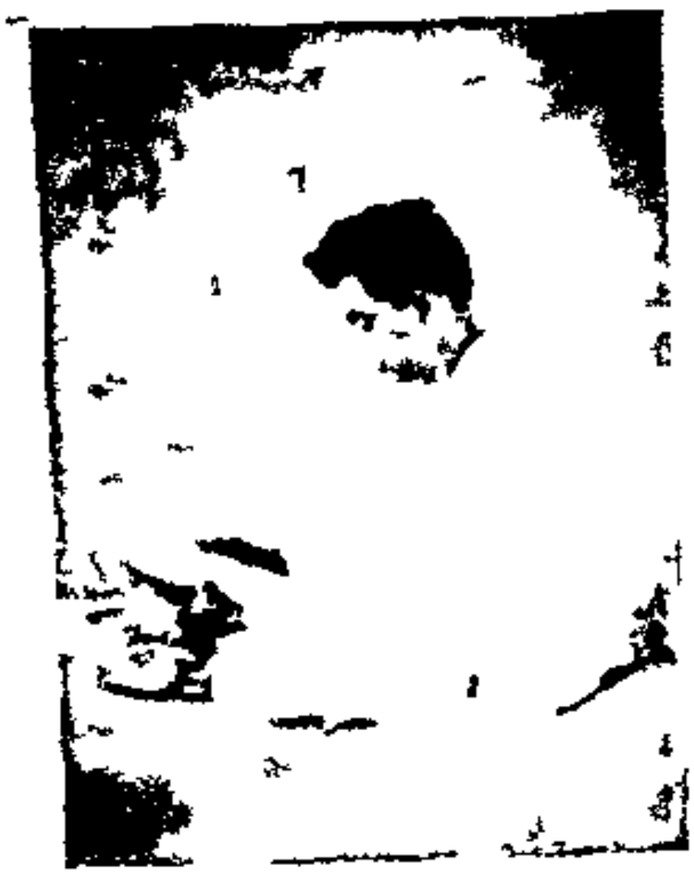
આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



(સ્વ) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ) વિનોદકુમાર વીરાણી
રાજકોટ.
(દીક્ષા લીધા પહેલા શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



શેઠશ્રી મિશ્રીમલજી લાલચંદજી સા લુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેમતરાજજી લાલચંદજી સા



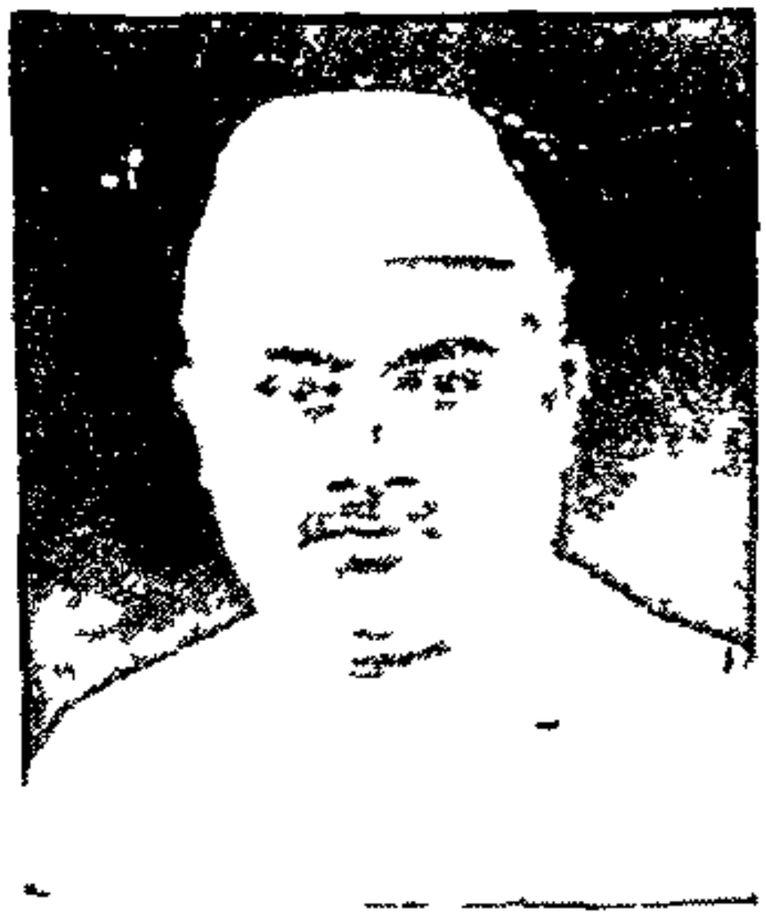
(૨૫) શેઠ ૭ ગજ્જભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ



૨૬. શ્રીમાન શે૦શ્રી મુકનચદજી મા
બાલિયા પાલી મારવાડ.



(૨૭) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ



શેઠશ્રી જેમિનભાઈ પોપાલાલભાઈ
અમદાવાદ



૨૮. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.



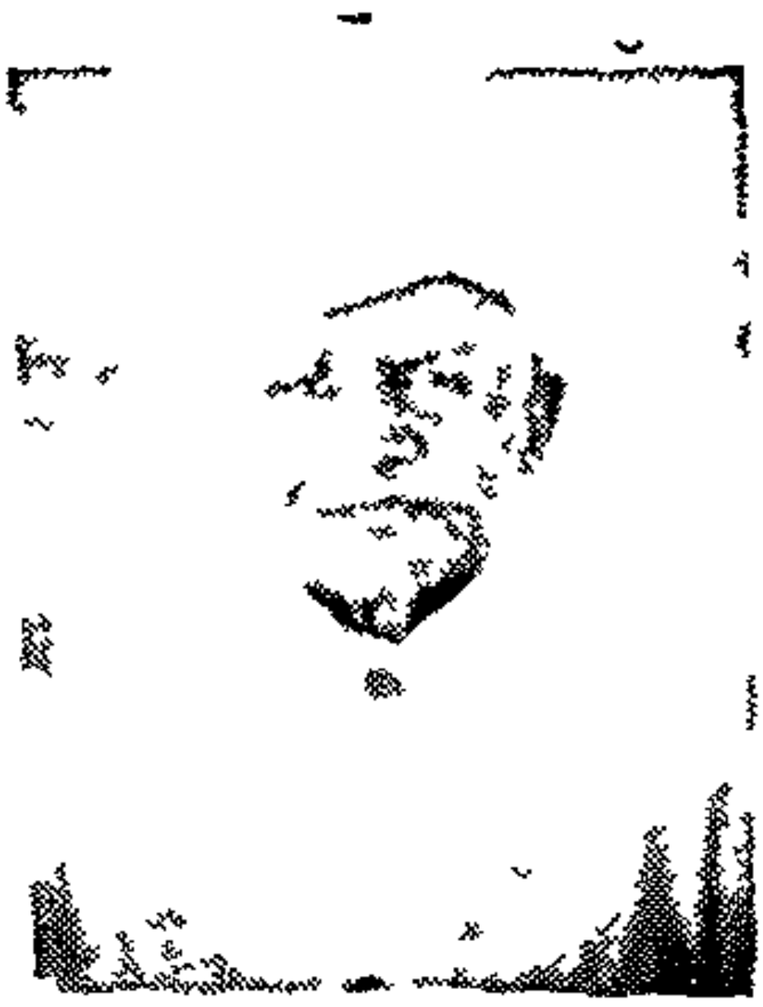
રોઠ સાહેબ શ્રી કીશનચંદજી સાહેબ
જોહરી દિલ્હી



સ્વ. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ શાહ
ખંભાત



૧ વચ્ચે બેઠેલા મોટાભાઇ શ્રીમાન
મૂલચંદજી જવાહીરલાલજી બરાડીયા
૨ બાજુમા બેઠેલા મિશ્રીલાલજી
બરડિયા
૩ ઉભેલા સૌથી નાનાભાઈ પૂનમચંદ
બરડિયા



શ્રી વૃજલાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रीजैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितया अनगार-धर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृत

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

तृतीयो भागः

अथ चतुर्दशाध्ययनं प्रारभ्यते

अस्य व्याख्यायमानचतुर्दशाध्ययनस्य व्याख्यातेन त्रयोदशेनाध्ययनेन सहायमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने सता गुणाना गुणाभिवर्द्धकपद्गुरूपदेशरूपसामग्र्यभावे हानिरुक्ता, इदतु-तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसपदुपजायते, इत्यभिधीयते, इत्येव पूर्वेण सहाभिसबद्धस्यास्येदमादिसूत्रम्-'जइण भते इत्यादि ।

मूलम्-जइणं भते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एव खलु जबू ! तेणं

चौदहवा अध्ययन प्रारभः-

इस चौदहवें अध्ययन का तेरहवें अध्ययन के साथ इस प्रकार का सबन्ध है-तेरहवें अध्ययन में जो यह बात कही गई है कि आत्मा में सम्यग्दर्शन आदि प्रकट भी हो गये, हों परन्तु यदि उन को बढाने वाली सद्गुरु आदि की उपदेश रूप सामग्री का अभाव रहे तो उन गुणों की हानि हो जाति है। इस अध्ययन में अब सूत्रकार यह स्पष्ट करेंगे कि यदि जीव को तथाविध सामग्री प्राप्त होती रहती है तो गुण सपत्ति भी बढती रहती है.-' जइण भते ' इत्यादि ।

ચૌદમુ અધ્યયન પ્રારભ—

ચૌદમા અધ્યયનનો તેરમા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સબધ છે કે તેરમા અધ્યયનમા જે આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવ્યુ છે કે આત્મામા સમ્યગ્દર્શન વગેરે પ્રગટ પણ થઇ ગયા હોય છતા જો સદ્‌ગુરુ વગેરેની ઉપદેશ રૂપ તેમનુ વર્ધન કરનાર સામગ્રી હોય નહિ તો તે ગુણોની હાનિ થઈ જાય છે આ અધ્યયનમા સૂત્રકાર હવે એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જીવને જો તથાવિધ સામગ્રી મળતી રહે છે તો ગુણ સપત્તિ પણ વધતી રહે છે

' जइण भंते ' इत्यादि—

कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया । तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी । तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदंड-दक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तस्स णं भद्दा नाम भारिया । तस्स ण कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया होत्था रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा । तएणं पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्क-वालसपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कण-गमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी२ विहरइ ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महा-वीरेण यावत्संप्राप्तेन त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्त चतुर्दशस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थ

टीकार्थ-जबू स्वामी पूछते हैं कि (भंते-जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण) हे भदत ! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जिन्होंने सिद्धिगति नाम का स्थान प्राप्त कर लिया है (तेरसमस्स णाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चोद्दसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरे ण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते) तेरहवें ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है-तो हे भदत ! चौदहवें ज्ञाता-ध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ निरूपित किया

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી પૂછે છે કે (भंते ! जइण समणेण भगवया महा वीरेण जाव सपत्तेण) હે ભદંત ! જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધ ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

(तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स ण भंते ! णायज्झ-यणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદંત ! તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

प्रश्नः। सुधर्मा स्वामी कथयति-एव खलु जम्बू!। तस्मिन् काले तस्मिन् समये तेतलिपुरं नाम नगरम् आसीत्। तत्र प्रमदवन नाम उद्यानमासीत्। तस्य नगरस्य कनकरथो नाम राजाऽसीत्। तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी। तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः तेतलिपुत्रो नाम अमात्यः 'सामदडदक्खे' साम दण्डदक्ष =अत्र सामदण्डग्रहणाद् दानभेदयोरपि ग्रहण तेन सामदानभेददण्डात्मक-चतुर्विधोपायनिपुण इत्यर्थः आसीत्।

तत्र खलु तेतलिपुरे कलादो नाम 'मूसियारदारए' मूषीकारदारकः= सुवर्णकारदारकः, 'मूषी' इति मूषापर्यायः, गौरादित्वाद्ङीष् यत्र सुवर्णादि

है? (एव खलु जम्बू! तेण कालेण तेण समएण तेयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया,। तस्स ण कणगरहस्स पउमावई देवी) श्री सुधर्मा स्वामी अब श्री जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के अभिप्राय से कहते हैं-जम्बू!, सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है-उस काल और उस समय में तेतलिपुर नाम का नगर था। उस में प्रमदवन नाम का उद्यान था। उस नगर के राजा का नाम कनक रथ था। इस कनकरथ राजा की रानी का नाम पद्मावती देवी था। (तस्स ण कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदडदक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नाम मुसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए) उस कनक रथ राजा का अमात्य था जिस का नाम तेतलि पुत्र था। यह साम, दान, भेद और दड इन चार प्रकार की राजनीति में विशेष पटु निपुण था। उसी तेतलिपुर मे कलाद नाम का

(एव खलु जम्बू! तेण कालेण तेण समएण तेयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया। तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी)

શ્રી સુધર્માસ્વામી હવે શ્રી જમ્બૂસ્વામીને આ પ્રશ્નોના જવાબ આપવાની ઇચ્છા થી કહે છે કે હે જમ્બૂ! સાભળો તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે તેતલિપુર નામે નગર હતુ તેમા પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતુ તે નગરના રાજાનુ નામ કનકરથ હતુ તે કનકરથ રાજાની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતુ

(तस्स ण कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदडदक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તે કનકરથ રાજાનો એક અમાત્ય (મંત્રી) હતો જેનુ નામ તેતલિપુત્ર હતુ તે સામ, દાન, ભેદ અને દડ એ ચારે પ્રકારની નીતિમા સવિશેષ નિપુણ-કુશળ હતો તે તેતલિપુરમા કલાદ નામે મૂષીકાર દારક (સોનીનો પુત્ર)

कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुर नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया । तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी । तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदंड-दक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तस्स णं भद्दा नाम भारिया । तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया होत्था रूवेण य जोव्वणेण य लाव-ण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा । तएणं पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्क-वालसपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कण-गमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी विहरइ ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता महा-वीरेण यावत्सम्प्राप्तेन त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्त चतुर्दशस्य खलु भदन्त! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थ

टीकार्थ-जबू स्वामी पूछते हैं कि (भते-जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण) हे भदत! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जिन्होने सिद्धिगति नाम का स्थान प्राप्त कर लिया है (तेरसमस्स णाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चोद्दसमस्स ण भते! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरे ण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते) तेरहवें ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है-तो हे भदत! चौदहवें ज्ञाता-ध्ययन का उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ निरूपित किया

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી પૂછે છે કે (भते! जइण समणेण भगवया महा वीरेण जाव सपत्तेण) હે ભદત! જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધ ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

(तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भंते! णायज्झ यणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદત! તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે?

'चेडियाचक्कवालसपरिवुडा' चेटिकाचक्रवालसपरिवृता=चेटिकाः=दास्यस्तासा यच्चक्रवाल मण्डल तेन सपरिवृता=सहिता दासीसमूहपरिवेष्टितेत्यर्थ., उपरिप्रासादवरगता प्रासादोपरिस्थिता-आकाशतले=अनाटतमदेशे 'छत्त' इति प्रसिद्धे कनकमयेन=स्वर्णनिर्मितेन 'तिंदूसएण' तिन्दूसकेन=कन्दुकेन क्रीडन्ती २ विहरति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-इमं च ण तेयलिपुत्ते अमच्चे पहाए आसखंधवरगए महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेण वीइवयइ। तएण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे२ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगय आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणीं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता। एवं वयासी - एसा णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा ?। तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा ण सामी ! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा। तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे विभूसिया चेडियाचक्कवालसपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगास तलगसि कणगमएण तिंदूसएण कीलमाणी २ विहरइ) एक दिन की बात है कि यह स्नान कर के तथा समस्त आभरणों से विभूषित हो करके अपनी दासियोंके साथ प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण निर्मित कन्दुक (गेंद) से क्रीडा कर रही थी। सूत्र ॥ १ ॥

એક દિવસે તે સ્નાન કર્યા બાદ પોતાના બધા અંગોને ધરેણાઓથી શણગારીને પોતાની દાસીઓની સાથે મહેલની ઉપરની અગાશીમા સોનાથી બનાવવામા આવેલી છડીથી રમી રહી હતી ॥ સત્ર "૧"

गाल्यते सा, तां करोति=साधनसामग्रीत्वेन निष्पादयति, इतिव्युत्पत्त्या मूषीकार-इति सुवर्णकारे योगारूढोऽयं शब्दः । 'होत्था' आसीत् । यो हि आढ्यो यावदपरिभूतः । तस्य खलु कलादस्य मूषिकारदारकस्य दुहिता भद्रायाः आत्मजा पोट्टिला नाम दारिका आसीत्, याहि रूपेण च=आकृत्या, यौवनेन च=तारुण्येन च लावण्येन च=शरीरोत्कृष्टकान्ति विशेषेण उत्कृष्टा अतएव उत्कृष्टशरीराऽसीत् । ततः खलु पोट्टिला दारिका अ यदा कदाचित् स्नाता सर्वालङ्कारविभूषिता

मूषीकार दारक-सुवर्णकार का पुत्र-रहता था। मूषी शब्द का अर्थ सांचा है। इस मे सुवर्णादि द्रव्य पिघलाये जाते है। इस सांचे को जो बनाता है उस का नाम मूषीकार है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार यह शब्द सुवर्णकार (सोनार) मे योगारूढ हुआ है। यह मूषीकार दारक आढ्य यावत् अपरिभूत था। (तस्स ण भद्दा नाम भारिया, तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया होत्था, रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा) इस मूषिकार दारक कलाद-सोनी की अत्यन्त प्रिय पोट्टिला नाम की लडकी थी जो इस की पत्नी भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई थी। यह आकृति से, यौवन से एव लावण्य से-शारीरिक उत्कृष्ट कान्ति से-बहुत ही अधिक मनोहर थी-अत' इस का शरीर बहुत अधिक उत्तम था। (तएण पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालकार-

રહેતો હતો 'मूषी' शब्दनो अर्थ सांचो (બીબું) छे तेमा सोनु वगेरे द्रव्यो ओगाળવામા આવે છે આ सांचाने બનાવનારનુ नाम मूषीकार छे आ व्युत्पत्तिने લઈને આ शब्द सुवर्णकार (सोनी) माटे योगारूढ थई गयो छे ते मूषिकारदारक आढ्य (धनवान) यावत् अपरिभूत हतो।

(तस्स ण भद्दा नाम भारिया तस्स ण कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया होत्था, रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेणं य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा)

તે મૂષિકારદારક કલાદ સોનીની ખૂબ જ વહાલી પોટ્ટિલા નામે પુત્રી હતી જે તેની પત્ની ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ હતી તે આકૃતિથી, યૌવનથી, લાવણ્યથી-શરીરની ઉજ્જવલ-કાંતિથી બહુ જ મનોહર હતી, એથી તેનુ શરીર ખૂબ જ ઉત્તમ હતુ

(तएण पोट्टिलादारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्कवालसपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी २ विहरइ)

रदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदेंति ॥ सू० २ ॥

टीका—'इम च ण' इत्यादि । अस्मिंश्च खलु समये तेतलिपुत्रोऽमात्यः स्नातः 'आसखंधवरगए'=अश्वस्कन्धवरगतः=अश्वारूढः 'महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते' महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्त' महान्तो भटचटकराः=भटसमूहाः तेषां वृन्दैः=समूहैः परिक्षिप्त =परिवृत' सन् ' आसवाहणियाए ' अश्ववाहनिकायै=अश्ववाहनेन क्रीडनायै ' णिज्जायमाणे '=निर्यान्=निर्गच्छन् कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन पार्श्वभागेन ' वीइवयइ '=व्यतिव्रजति=गच्छति । तत' खलु स तेतलिपुत्रो मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन् पोट्टिलां दारिकाम्

' इम च ण तेयलि पुत्ते अमच्चे ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(इम च ण) इसी समय (तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भटचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेण वीइवयइ) तेतलि पुत्र अमात्य स्नान से निवट कर घोड़े पर चढा हुआ बडे २ भट समूहों के वृन्दो से घिग होकर अश्वक्रीडा के लिये मूषीकारदारक कलादके (सोनार) मकानके पास से निकला । (तएण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेण वीइवयमाणे २ पोट्टिल दारियं उप्पिं पासायवरगय आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी पासइ) मूषीकार दारक कलाद के मकान के पास से होकर जाते हुए

इम च ण तेयलिपु अमच्चे' इत्यादि—

टीकार्थ—(इम च ण) ते वખતે

(तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भटचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेण वीइवयइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્ય સ્થાનથી પરવારીને ઘોડા ઉપર સવાર થયા અને ત્યારપછી વિશાળ ભટો (યોદ્ધાઓ) ના સમૂહોથી વીંટળાઈને અશ્વક્રીડા માટે મૂષીકારદારક કલાદના ઘરની પાસે થઈને નીકળ્યા

(तएण से तेयलिपुत्ते मूसियादारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणे२ पोट्टिल दारिय उप्पिं पासायवरगय आगासतलगसि कणगतिंदूसएण कीलमाणी पासइ)

अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह । तएणं ते अब्भंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तहत्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया । तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्टित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता, आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ? तएणं ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियदारयं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइ णं जाणासि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो सजोगो ता दिज्जउणं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, तो भण देवाणुप्पिय ! किंदलामो सुक्कं ? तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुक्के, जन्न तेयलिपुत्ते मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गहं करेइ । ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं ते [illegible]

यावत्-उत्कृष्टशरीरा अस्ति । तत खलु स तेतलिपुत्र अश्वदाहनिकायाः प्रति निवृत'=प्रत्यागत सन् ' अभिंतरट्ठाणिज्जे ' अभ्यन्तरस्थानीयान्=अन्तरङ्गप्रेष्य पुरुषा शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहितर भद्राया आत्मना पोट्टिला दारिका मम भार्यात्वेन वृणुत । हे देवानुप्रिया यूय तथा प्रयत यूय, यथा स मूषीकारदारकः स्वदुहितर मम भार्यात्वेन मह्य दद्यादिति भाव । तत. खलु ते आभ्यन्तरस्थानीया पुरुषास्ते-तलिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्ट तुष्टा' करतलपरिगृहीत शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, ' तहत्ति ' तथेति तथा करिष्यामीति 'विणएण' कृत्वा=स्वीकृत्य यत्रैव कला

इस का नाम पोट्टिला है । रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर वाली है । (तएण से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह) इस के बाद वह तेतलि पुत्र अमात्य, अश्ववाहनिका से पीछे जब लौटा तो लौटते ही उसने अपने अन्तरग प्रेष्य पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ? तुम लोग जाओ-और मूषीकार दारक कलाद की पुत्री जिसका नाम पोट्टिला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी भार्यारूप से वरआओ। तात्पर्य उस का यह है कि तुमलोग वहा जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मूषीकारदारक कलाद अपनी पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे देव। (तएण से अब्भिंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा करयल परिग्गहियं सिरसा

છે તેનુ નામ પોટ્ટિલા છે તે રૂપ વગેરેથી ખૂબ જ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે

(तएण से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह)

ત્યારપછી તે તેતલિપુત્ર અમાત્ય અશ્વવાહનિકાથી વેર પાછો આવ્યો ત્યારે આવતાની સાથે જ તેણે પોતાના-અન્તરંગ પ્રેષ્ય પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને મૂષીકારદારક કલાદની પુત્રી છે-કે જેનુ નામ પોટ્ટિલા છે, અને જે ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ છે-તેને ભાર્યા રૂપમા મને આપો તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તમે લોકો ત્યા જઈને એવી કોશિશ કરો કે જેથી તે મૂષીકારદારક કલાદ પોતાની પુત્રીને પત્ની રૂપમા મને આપી દે

उपरि प्रासादवरगतोमाचाशतले कनकतिन्दूसकेन क्रीडन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा, पोट्टिलाया दारिकाया रूपे च यौवने च लावण्ये च 'जाव अज्झोववन्ने' यावत्-मूर्च्छितः, गृद्धः, ग्रथितः, अध्युपपन्नः = अत्यन्तसक्ताइत्यर्थं कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्-एषा खलु देवानुप्रियाः ! कस्य दारिका किं नामधेया ? । ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा तेतलिपुत्रम् एवमवदन्-एषा खलु स्वामिन् ! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहिता, भद्रायाः आत्मजा पोट्टिला नाम दारिका रूपेण च

उस तेतलिपुत्र अमात्य ने प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण की कन्दुक (गेंद) से क्रीडा करती हुइ उस पोट्टिला दारिका को देखा । (पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-एसा णं देवाणुप्पिया कस्स दारिया ? किं नाम धेज्जा?) देख कर वह उस पोट्टिला दारिका के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्छित, गृद्ध, ग्रथित बनकर उस पर अत्यन्त आसक्ति से युक्त हो गया। उसी समय उस ने कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! कहो यह कन्या किसकी है और इसका नाम क्या है ? (तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने तेतली पुत्र से ऐसा कहा-हे स्वामिन् ! यह मूषीकार दारक कलाद की पुत्री है जो भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न हुई है ।

,, મૂષિકારદ્વારક કલાદના ઘરની પાસે થઈને જતા તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે મહેલના ઉપરની અગાશી ઉપર સોનાની દડીથી રમતી તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈ

(पासित्ता पोट्टिलाए दारिआए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी एसा णं देवाणुप्पिया कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा ?)

તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈને તે તેના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમા મૂર્ચ્છિત ગૃદ્ધ, ગ્રથિત બનીને અત્યત આસકત થઈ ગયો. તરત જ તેણે કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! બોલો, આ કન્યા કોની છે અને એનુ શુ નામ છે ?

(तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठ सरीरा)

તે કૌટુબિક પુરૂષોએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામિન્ ! તે મૂષિકારદ્વારક કલાદની પુત્રી છે અને ભદ્રાભાર્યાના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો

यावत्-उत्कृष्टशरीरा अस्ति। ततः खलु स तेतलिपुत्र अश्ववाहनिकायाः प्रतिनिवृत्तः=प्रत्यागतः सन् 'अब्भिंतरट्ठाणिज्जे' आभ्यन्तरस्थानीयान्=अन्तरङ्गप्रेष्यपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहितरं भद्रायाः आत्मजां पोट्टिलां दारिकां मम भार्यात्वेन वृणुत। हे देवानुप्रियाः यूयं तथा प्रयतध्वम्, यथा स मूषीकारदारकः स्वदुहितरं मम भार्यात्वेन मह्यं दद्यात्तिष्ठेत्। ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषास्तेतलिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्ट तुष्टा' करतलपरिगृहीतं शिरसावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, 'तहत्ति' तथेति तथा करिष्यामीति 'किच्चा' कृत्वा=स्वीकृत्य यत्रैव स्वा

इस का नाम पोट्टिला है। रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर वाली है। (तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह) इस के बाद वह तेतलि पुत्र अमात्य, अश्ववाहनिका से पीछे जब लौटा तो लौटते ही उसने अपने अन्तरंग प्रेष्य पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों? तुम लोग जाओ-और मूषीकार दारक कलाद की पुत्री जिसका नाम पोट्टिला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी भार्यारूप से वरआओ। तात्पर्य इस का यह है कि तुमलोग वहां जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मूषीकारदारक कलाद अपनी पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे देवे। (तएणं ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा करयल परिग्गहियं सिरसा

છે તેનું નામ પોટ્ટિલા છે તે રૂપ વગેરેથી ખૂબ જ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે
(तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह)

ત્યારપછી તે તેતલિપુત્ર અમાત્ય અશ્વવાહનિકાથી વેગ પાછો આવ્યો ત્યારે આવતાની સાથે જ તેણે પોતાના-અન્તરંગ પ્રેષ્ય પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ અને મૂષીકારદારક કલાદની પુત્રી કે-કે જેનું નામ પોટ્ટિલા છે, અને જે ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ છે-તેને ભાર્યા રૂપમાં મને આપો તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તમે લોકો ત્યાં જઈને એવી કોશિશ કરો કે જેથી તે મૂષીકારદારક કલાદ પોતાની પુત્રીને પત્ની રૂપમાં મને આપી દે

दस्य मूषीकारदारकस्य गृहं तत्रैव उपागताः। तए खलु से कलादे मूषीकारदारकः तान् अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषान् एजमानान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टोऽतिशयमुदितः आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय तान् सम्मानयितुं तेषामभिमुख सप्ताष्टपदानि

चत्त मत्थए अजलिं कट्टु तहत्ति विच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया) इस प्रकार तेतलि पुत्र के द्वारा कहे गये वे अन्तरग प्रेष्य पुरुष हृष्ट तुष्ट होते हुए वहा से निकल कर मूषीकार कलाद का जहा घर था वहा आये। आते समय उन्होंने तेतलि पुत्र को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख कर नमस्कार किया-और हम आपने जैसा कहा है वैसा ही करेंगे इस बात को उसे आश्वासन देकर स्वीकार किया था। (तएण से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेण उवणिमतेइ, उवणिमतित्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एव वयासी सदिसतु ण देवाणुप्पिया। किमागमणपओयण-तएण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियदारय एव वयासी) जब उस मूषीकार दारककलादने उन पुरुषों को आपने घर की ओर आते हुए देखा-तो वह देखकर हृष्ट तुष्ट हो अपने आसन पर से उठ बैठा-उठ

(तएण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु तहत्ति विच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया)

આ રીતે તેતલિપુત્રે જેઓને આદેશ આપ્યો છે એવા તે અતરગ પ્રેષ્ય પુરૂષ હૃષ્ટ તુષ્ટ થતા ત્યાથી રવાના થઇને મૂષીકાર કલાદનુ જ્યા ઘર હતુ ત્યા પહોચ્યા તેતલિપુત્રની પાસેથી પાછા ફરતા તેઓએ બને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને અમે આપે જેમ હુકમ કર્યો છે તેનો યથાવત પાલન કરીશુ આ રીતે તેમની આજ્ઞા તેઓએ સ્વીકારી

(तएण से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेण उवणिमतेइ, उवणिमतित्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एव वयासी सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयण-तएण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियदारय एव वयासी)

મૂષીકારદારક કલાદે જ્યારે તે પુરૂષોને પોતાના ઘર તરફ આવતા જોયા ત્યારે તે જોઇને હૃષ્ટ તુષ્ટ થઇને પોતાના આસન ઉપરથી ઉભો થઈ ગયો અને

गत्वा तानग्रे कृत्वा स्वयम् 'अणुगच्छइ' अनुगच्छति, तेषा पृष्ठवर्तीभूत्वा गच्छति, अनुगम्य, आसनेन उपनिमन्त्रयति=आसनदानेन तान् पुरुषानुपवेशयति, उपनिमन्त्र्य, आस्वस्थ, विस्वस्थः एतेषाममात्यपुरुषाणा सत्कारो यथावज्ज्ञात इति हेतोः स्वस्थमनाः भूत्वा सुखासनवरगतः=स्वयमपि स्वकीयासने सुखोपविष्टः सन् एवमवदत्-सदिशतु खलु हे देवानुप्रियाः! भवता किमागमनप्रयोजनम्? ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलाद मूषीकारदारकम् एवमवदन्-वय खलु देवानुप्रिय! तव दुहितर भद्राया आत्मजा पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्रस्य भार्यात्वेन वृणुम, तद् यदि खलु त्व 'जाणसि' जानासि=मन्यसे, हे देवानुप्रिय! यद् अस्माकमेतत्त्वत्कन्याविषयक याचन 'जुत्त वा' युक्त वा=उचितम् 'पत्त वा' प्राप्त वा मनसिसलग्न वा 'सलाहणिज्ज वा' श्लाघनीय वा=प्रशसनीय वा अपि च 'सरिसो वा सजोगो' सदृशो वा सयोगः तेतलिपुत्रेण सह तव कन्याया वैवाहिक

कर फिर वह सात आठ डग प्रमाण आगे उन का सत्कार करने के लिये गया। वहा से उन्हें आगेकर के वह स्वय उनके पीछे २ आया। आकर के फिर उसने उन्हें आसनों पर बैठाया-बैठा कर आश्वस्त विश्वस्त होकर बाद में वह स्वय दूसरे अपने आसन पर शान्ति पूर्वक बैठ गया। बैठ जाने के बाद फिर उसने इस प्रकार कहा- हे देवानुप्रियो! कहिये-किस कारण से आप यहा पधारे है-आपलोगों के आने का क्या प्रयोजन है-इस प्रकार उसके पूछने पर उन अभ्यन्तर स्थानीय पुरुषों ने उस सुवर्णकार के पुत्र कलाद से इस प्रकार कहा (अम्हे ण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिया! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो ता दिज्ज उण पोट्टिला दारिया तेयलि

ઊભો થઈને તેમના સ્વાગત માટે સાત આઠ પગલા સામે ગયો ત્યાથી તેણે આવનારાઓને આગળ કરીને એટલે કે પોતે તેઓની પાછળ પાછળ ચાલતો ત્યા આવ્યો અને આવીને તેણે તેઓને આસનો ઉપર બેસાડયા ત્યારપછી આશ્વસ્ત વિશ્વસ્ત થઈને તે પોતે બીજા આસન ઉપર શાતિપૂર્વક બેસી ગયો બેસીને તેણે તેઓએ વિનય પૂર્વક કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! બોલો, તમે શા કારણથી અહીં આવ્યા છો? તમે શા પ્રયોજનથી આવ્યા છો? આ રીતે કલાદ (સુવર્ણકાર) ની વાત સાભળીને તે આભ્યતર સ્થાનીય પુરૂષોએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(अम्हेण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय तेयलि पुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिय! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज

सम्बन्धो योग्यो भवतीति, यदि जानासि तदा दीयतां खलु पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्राय 'तो' तर्हि भण=ब्रूहि, हे देवानुप्रिय! किं दमः अस्मम् सम्मानपुरस्कारं भवते किं समर्पयामः। ततः खलु कलादो सूषीकदारकः अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषान् एवमवदत्-एतदेव खलु देवानुप्रियाः! मम श्रेयः, यत्खलु तेतलिपुत्रो मम दारिकानिमित्तेन अनुग्रहं=दयां करोति। अभ्युत्थानाभ्यान् अभ्यन्तरस्थानी-

पुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया! किं दलामो सुक्कस्स? तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी) हे देवानुप्रिय हम लोग तुम्हारी पुत्री पोट्टिला दारिका को कि जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है तेतली पुत्र अमात्य की वर भार्या बने इस रूप से वरण करने के लिये आये हुए हैं-तो यदि तुम हे देवानुप्रिय! हमारी इस याचना को उचित, प्राप्त, और श्लाघनीय-प्रशंसनीय मानते हो और यह समझते हो कि यह तेतलिपुत्र के साथ तुम्हारी कन्या का वैवाहिक सबंध योग्य है-तो पोट्टिला दारिका तेतलि पुत्र के लिये प्रदान कर दो-और साथ में यह भी कह दो कि हम आपके लिये इस निमित्त क्या सम्मान पुरस्कार देवें। इस प्रकार उन सब की ऐसी बाते सुनकर उस सुवर्णकार पुत्र कलादने उन आये हुए अभ्यंतर स्थानीय पुरुषों से इस प्रकार कहा-(एस चेव णं देवाणुप्पिया! मम सुक्कस्स जन्नं तेयलिपुत्ते-मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गहं करेइ, ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे

वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउणं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया! किंदलामो सुक्कस्स तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी)

હે દેવાનુપ્રિય! તમારી ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી તમારી પોટ્ટિલા દારિકા અમાત્ય તેતલીપુત્રની ભાર્યા થાય આ જાતની માગણી કરવા અમે તમારી પાસે આવ્યા છીએ હે દેવાનુપ્રિય! તમે તેતલિપુત્રની માગણી ઉચિત, શ્લાઘનીય અને પ્રશંસનીય માનતા હોય તેમજ એમ પણ તમને થતુ હોય કે અમાત્ય તેતલિપુત્રની સાથેનો આ લગ્ન સંબંધ યોગ્ય છે તો તમે અમાત્ય તેતલિપુત્રને પોટ્ટિલાદારિકા આપી દો અને એની સાથે તમે અમને એમ પણ જણાવી દો કે તમને અમે એના બદલ સન્માન પુરસ્કારના રૂપમા શું આપીએ? આ રીતે તેઓ બધાની વાત સાભળીને તે સુવર્ણકારના પુત્ર કલાદે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एस चेव णं देवाणुप्पिया! मम सुक्कस्स जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारिया

यान् पुरुषान् विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्कुरोति, सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य, प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते=आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यन्ति,प्रतिष्क्रम्य यत्रैव तेतलिपुत्रोऽमात्यस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेतलिपुत्राय अमात्याय 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=विवाहस्य स्वीकृतिरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडि विसज्जेइ । तएणं ते कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदेंति) हे देवानुप्रियो ! मेरा सन्मान पुरस्कार यही है कि जो तेतलि पुत्र दारिका के निमित्त से मेरे ऊपर ऐसी दया कर रहे हैं-अर्थात् मेरी पुत्री को जो वे अपनी पत्नी बनाने की चाहना कर रहे यही सब से बडा उन की ओर से मेरे लिये सन्मान पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है । इस प्रकार कह कर उस कलाद ने उन अभ्यतरस्थानीय पुरुषों का विपुल अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य से एव पुष्प, वस्त्र, गध माला एव अलकारों से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार एव सन्मान करने के बाद फिर उसने उन्हें विसर्जित कर दिया । वहा से विसर्जित होकर वे अभ्यतर स्थानीय

निमित्तेण अणुग्गह करेइ, ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे विउलेण असणपाणखाइमसाइमेण पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ । तएण ते कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे, तेणेव उवागच्छ ति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठ निवेदति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! અમાત્ય તેતલિપુત્ર મારી દારિકાને સ્વીકારવા રૂપ જે મારા ઉપર દયા બતાવી રહ્યા છે તે જ ખરેખર મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કારની જ વસ્તુ છે એટલે કે તેઓ મારી પુત્રીને પોતાની પત્ની પત્ની તરીકે ઇચ્છી રહ્યા છે, એજ તેમના તરફથી મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કાર રૂપ છે આ રીતે કહીને તે કલાદે આભ્યતર સ્થાનીય પુરૂષોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યથી અને પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગ ધ, માળા અને અલ કારોથી ખૂબ જ સરસ રીતે સત્કાર કર્યો અને તેમનુ સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કર્યા પછી તેણે તેમને વિદાય આપી ત્યારપછી તે આભ્યતર સ્થાનીય પુરૂષો તે સુવર્ણ

[illegible] करेइ, करित्ता [illegible] एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया मम दोच्चंपि तच्चंपि बहूसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव मूसियारदारयं रायकुलाओ साहरावित्तए, तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलस्स देवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता पोट्टिलं देवं सक्कारेइ सम्मा-णेइ, सक्कारित्ता सम्मानित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सयमेव मूसियारदारयं रायकुलाओ साहरइ, साहरित्ता मूसियारदारयं पोट्टिलस्स देवस्स भारियत्ताए दलयइ, तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० मूसियारदारयं पोट्टिलाए भारियत्ताए उवणेइ, उवणेत्ता दोच्चंपि तच्चंपि सक्कारेइ सम्मानेइ, सक्कारित्ता सम्मानित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता पडिगए, तए णं से पोट्टिले मूसियारदारए पोट्टिलाए भारियाए सद्धिं उरालाइं जाव विहरेइ॥सू०३॥

छाया-ततः खलु स मूषिकारदारकः अन्यदा कदाचित् शोभनतिथिकरणमुहूर्त्ते तिथिनक्षत्रमुहूर्त्ते

के घर से निकले और निकल कर जहां आकर उन्हों ने तेतलि पुत्र अमा त्य को विनंती की वहां पर दी। सूत्र ॥ २ ॥

'तए णं से मूसियारदारए' इत्यादि।

शब्दार्थ-(तएणं से मूसियारदारए) मूषीकार दारक ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि

ત્યારપછી તે મૂષીકાર દારકે (અન્નયા

पोट्टिला दारिका स्नता सर्वालङ्कारभूषिता 'सीय' शिविका दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य=आरोह्य 'मित्तणाइ सपरिवुडे' मित्रज्ञाति सपरिवृत =मित्रज्ञाति स्वजनसम्बन्धिप रिवेष्टितः, सर्वान् वैवाहिकान् समारान्=विवाहसस्कारोचित सामग्रीन गृहीत्वा स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य 'सव्विड्ढीए सर्वऋद्धया=सर्वप्रकारिकया ऋद्धया सह 'तेयलिपुर' तेतलीपुरस्य म-यम-येन निर्गच्छन् यत्रैव तेतलेर्गृह तत्रैव उपा गच्छति, उपागत्य पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्राय स्वयमेव भार्यात्वेन ददाति। तत खलु तेतलिपुत्रोऽमात्य. पोट्टिला दारिका स्वभार्यात्वेन 'उवणीय' उपनी-

---

पोट्टिल दारिय ण्हाय सव्वालकारविभूसिय सीय दुरूहइ) शुभ तिथि नक्षत्र, मुहूर्त्त में पोट्टिला दारिका को स्नान करा कर समस्त अलकारों से विभूषित किया और विभूषित कर के फिर उसे शिविका पर बैठा दिया-(दुरूहित्ता मित्तणाइ सपरिवुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलीपुर मज्झ मज्झेण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ) बैठा कर फिर वह मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनों से परिवेष्टित होकर एव वैवाहिक समस्त सामग्री को लेकर अपने घर से निकला। निकल कर सर्व प्रकार की अपनी ऋद्धि के साथ २ तेतलि पुर के बीच से होता हुआ जहा तेतलि का घर था वहा पहुँचा। वहा पहुँच कर उसने अपनी पुत्री पोट्टिला दारिका को तेतलि पुत्र को अपने आप से भार्या रूप से प्रदान कर दी। (तएण

(सोहणसि तिहिनक्खत्तमुहुत्त सि पोट्टिल दारियं ण्हायं सव्वालकार, भूसिय सीय दुरूहइ)

શુભ તિથિ નક્ષત્ર, મુહૂર્ત્તમા પોટ્ટિલા દારિકાને સ્નાન કરાવીને બધી જાતના અલકારોથી શણગારીને તેને પાલખીમા બેસાડી દીધી

(दुरुहित्ता मित्तणाइसपरिवुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलीपुर मज्झ मज्झेण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल दारिग तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ)

બેસાડીને તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી અને પરિજનોની સાથે લગ્નની બધી સાધન સામગ્રી લઈને ત્યાથી નીકળ્યો નીકળીને તે સર્વ પ્રકારની પોતાની ઋદ્ધિની સાથે તેતલિપુરની વચ્ચે થઈને જ્યા તેતલિપુત્રના ઘર

मूलम्—तएणं कलाए मूसियारदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारयं ण्हायं सव्वालंकारभूसियं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तणाइसंपरिवुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलीपुरं मज्झं मज्झेणं जेणेव तेयलिस्सगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ। तएणं तेयलिपुत्तं पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दूरुहइ, दूरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता पाणिग्गहणं करेइ, करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजणं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएणं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरेइ॥सू०३॥

टीका-'तएणं' इत्यादि, ततः खलु कलादो मूषीकारदारकः अन्यदा कदाचित् 'सोहणंसि' शोभने=शुभावहे विवाहयोग्ये 'तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि' तिथिनक्षत्रमुहूर्ते

पुत्र उस सुवर्णकार पुत्र कलाद के घर से निकले और निकल कर जहां तेतलि पुत्र अमात्य था वहां आये-वहां आकर उन्हों ने तेतलि पुत्र अमात्य को विवाह स्वीकृति रूप अर्थ की खबर दी। सूत्र ॥ ३ ॥

"तएणं कलाए मूसियारदारए" इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (मूसियारदारए) मूषीकार दारक ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि

કાર પુત્ર કલાદના ઘરથી નીકળ્યા અને ત્યાંથી જ્યાં અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો ત્યાં પહોંચ્યા અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઈને તેઓએ સંબંધ સ્વીકારવા રૂપ ખબર આપી ॥ સૂત્ર "૩" ॥

तएणं कलाए मूसियारदारए' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (मूसियारदारए) મૂષીકાર દારકે (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે

'पुप्फजाव' पुष्पयावत्=पुष्पवस्त्रादिना यावन्माल्यालङ्कारादिना सत्कारयति, सत्कार्य 'पडिविसज्जेइ' प्रति विसर्जयति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽमात्यः पोट्टिलाए भार्यायाम् 'अणुरत्ते' अनुरक्तः=आसक्तः 'अविरत्ते' अविरक्तः= अत्यन्तानुरक्त इत्यर्थः, 'उरालाइं जाव' उदारान् यावत्=उदारान् भोगभोगान्= विषयभोगान् भुञ्जानो विहरति ॥ सू०२ ॥

मूलम्—तएणं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए४ जाए पुत्ते वियगेइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठएवि, कन्नसक्कुलीएवि, नासापुडाइं फालेइ, अंगमंगाइं वियंगेइ। तएणं तीसे पउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए५ समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगेइ, जाव अंगमंगाइं वियगेइ। त जइ अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु ममं त दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगो-

पोट्टिला भार्या के मित्र, ज्ञाति, स्वजन सम्बन्धि परिजनों का अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलंकार आदि से सत्कार करवाया, सत्कार करवाने के बाद फिर उन सब को वहाँ से विदा कर दिया। इसके पश्चात् पोट्टिला भार्या में आसक्त एवं अनुरक्त बने हुए इस तेतलि पुत्र अमात्य ने उसके साथ पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी सुखों का अनुभव करने लगा। सूत्र ॥ २ ॥

પોટ્ટિલા ભાર્યાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધી અને પરિજનોનો અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી તેમજ પુષ્પ, વસ્ત્ર યાવત્ માલ્ય અલંકાર વગેરેથી સત્કાર કરાવડાવ્યો અને સત્કાર કરાવડાવ્યા પછી તેણે બધાને પોતાના ઘેરથી વિદાય આપી ત્યારપછી પોટ્ટિલા ભાર્યામા આસક્ત અને અનુરક્ત થયેલો તે અમાત્ય તેતલિપુત્ર તેની સાથે પચેન્દ્રિય સંબંધી સુખોનો

ताम् उपनयनीकृता पश्यति, दृष्ट्वा पोट्टिलया सार्द्धं पट्टकं दूरोहति, रूरुह्य ' सेय पीएहिं ' श्वेतपीतै '= रजतसुवर्णनिर्मितै. ' कलसेहिं ' कलशैः=घटै आत्मान ' मज्जावेइ ' मज्जति=स्नापयति, मज्जयित्वा अग्निसाक्षिको विवाह इति हेतोः ' अग्गिहोम करावेइ ' अग्निहोम कारयति, कारयित्वा 'पाणिग्गहण ' पाणिग्रहण= विवाह करोति, कृत्वा पोट्टिलाया भार्यायाः ' मित्तणाइ जाव परिजण ' मित्र ज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् पिपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाहारेण

तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारिय भारियत्ताए उवणीय पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टय दुरूहइ) तेतलिपुत्र अमात्य ने पोट्टिला दारिका को अपनी भार्या रूप से अपने लिये प्रदान की हुई देखा तो देख कर वह उस पोट्टिला दारिका के साथ पट्टक पर बैठ गया। (दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहि अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ, करावित्ता पाणिग्गहण करेइ करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजण विउलेण असण पाण खाइम साइमेण पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएण से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ जाव विहरेइ) बैठ कर फिर उसने रजत एवं सुवर्ण से निर्मित कलशों द्वारा अपना अभिषेक करवाया। अभिषेक करवा कर " अग्नि साक्षिक विवाह होता है " इस ख्याल से फिर उसने अग्नि में होम करवाया। करवा कर बाद में उसने उस पोट्टिला दारिका का पाणि ग्रहण कर लिया। विवाह हो चुकने के अनन्तर फिर उस तेतलि पुत्र अमात्य ने

(तएण तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारिय भारियत्ताए उवणीय पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टय दुरूहइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યે પોટ્ટિલા દારિકાને તેની ભાર્યા રૂપમાં આપેલી જોઈને તે પોટ્ટિલા દારિકાની સાથે પટ્ટક ઉપર બેસી ગયો

(दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहि अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ करावित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजण विउलेण असण पाण खाइम साइमेण पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएण से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ जाव विहरेइ)

બેસીને તેણે ચાંદી અને સોનાના કળશો વડે પોતાનો અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવડાવીને તેણે ' અગ્નિ સાક્ષિક લગ્ન થાય છે ' આમ વિચારીને તેણે અગ્નિમાં હવન કરાવડાવ્યો ત્યારપછી તેણે પોટ્ટિલા દારિકાનુ પાણિ ગ્રહણ કર્યું લગ્નની વિધિ પૂરી થયા બાદ [illegible] અમાત્યે

करोतीति व्यङ्गयति=अङ्गहीनान् करोति। 'विइतेइ' इति पाठे विकर्तयति छिनत्ति इत्यर्थोबोध्य । तत्प्रकारमाह-अप्येकेषा=केषाचिदुत्पन्नाना पुत्राणा हस्ताङ्गुलीश्छिनत्ति, अप्येकेषां=केषाचित् बालाना हस्ताङ्गुष्ठान् छिनत्ति । एव पादाङ्गुलिकाः पादाङ्गुष्ठान् अपि, एव 'कण्णसक्कुलीए वि' कर्णशष्कुलीरपि=कर्णानपि तथा नासापुटानि च 'फालेइ' पाटयति=छिनत्ति, इत्यर्थ । अनेन प्रकारेण एष कनकरथो राजा बालानाम् 'अगमगाइ' अङ्गानि अगानि सर्वाण्यङ्गानि व्यङ्गयति=छिनत्ति । तत खलु अनेन प्रकारेण समुत्पन्नाना पुत्राणा विनाशानन्तरम् 'तीसे' तस्याः कनकरथस्य राज्ञः पद्मावत्या देव्या अन्यदा 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे अयमेतद्रूप आ यात्मिकः=आत्मगतो

उत्पन्न हुए अपने पुत्रों को अगहीन कर देता। (अप्पेगइयाणं हत्थ गुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए, छिंदइ, एव पायगुलियाओ पायगुट्ठए वि कन्नसक्कुलीए वि, नासापुडाइ फालेइ, अगमगाइ वियंगेइ) किननेक बालकों के वह हाथो की अगुलियों को छेद देता था, किननेक बालको के हाथो के अगूठों को-काट देता था, इसी तरह वह पैरो की अगुलियो को पैरों के अगुष्ठों को, कानों को नासा पुटों को छेद देता था। इस तरह यह कनक रथ राजा बालको के अगो का भगकर देता था। (तएण तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) इस प्रकार समुत्पन्न पुत्रो के विनाश के बाद उस कनकरथ राजो की रानी पद्मावती देवी के किसी एक समय रात्रि के पश्चिम भाग में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न

(अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिंदइ अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिंदइ, एव पायगुलियाओ पायगुट्ठए वि कन्नसक्कुलिए वि, नासा पुडाइ फालेइ, अगमगाइवियंगेइ)

કેટલાક બાળકોની તે હાથોની આગળીઓ કપાવી નખાવતો હતો, કેટલાક બાળકોના હાથોના અગૂઠાઓ કપાવી નખાવતો હતો, આ રીતે તે પગોની આગળીઓને, પગોના અગૂઠાઓને, કાનોને, નાકને કપાવી નખાવતો હતો આમ તે કનકરથ રાજા બાળકોના અગોનુ તે છેદન કરાવી નખાવતો હતો

(तएण तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था)

આ પ્રમાણે જન્મેલા પુત્રોના વિનાશ પછી તે કનકરથ રાજાની રાણી પદ્માવતી દેવીને કોઈ એક સમયે રાત્રિના છેલ્લા પહોરમા આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

वेमाणीए विहरित्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ, संपेहित्ता तेयलिपुत्त अमच्च सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, त जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि । तएणं तुम देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि । तएणं से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणं भविस्सइ । तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावईए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए ॥ सू० ४ ॥

टीका–'तएण से' इत्यादि । तत. खलु स कनकरथो राजा राज्ये च=राष्ट्रे च=देशे बले=सैन्ये च, वाहने=अश्वादिषु च कोशे=भाण्डारे च धान्यादीना कोष्ठागारे च अन्तः पुरे च, 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मोह प्राप्त, गृद्ध'=आसक्तः ग्रथितः=विशेषेणासक्त', अध्युपपन्न =सर्वथा तत्परायण, जाए २=जातान् २= उत्पन्नान् २ पुत्रान् 'वियगेइ' व्यङ्गयति=विगतानि अङ्गानि येषा तान् व्यङ्गान्

'तएण से कणगरहे राया' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अतेउरे य मुच्छिए ४) वह कनकरथ राजा राज्य में राष्ट्र में सैन्य में अश्वादि वाहन में, धान्यादिकों के कोष्टागार में एव अन्तःपुर में मूर्छित गृद्ध अ यन अनुरक्त एव अध्युपपन्न–सर्वथा तत्परायण बन गया । सो (जाए पुत्ते वियगेइ)

तएण से कणगरहे राया इत्यादि—

(तएण) त्यारभाद

टीकार्थ–(से कणगरहे राया रज्जेय रट्ठे य बले य वाहणे य कोट्ठागारे य अतेउरे य मुच्छिए ४)

તે કનકરથ રાજા રાજ્ય રાજ્યમા, રાષ્ટ્રમા, સૈન્યમા, અશ્વ વગેરે વાહનોમા, ધાન્ય વગેરેની બાબતમા, કોઠાગારમા અને રણવાસમા મૂર્છિત, ગૃદ્ધ, ઘણો જ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન અ મૂર્ણપણે તત્પર થઈ ગયો એથી (जाए पुत्त वियगेइ) તે જન્મેલા પોતાના પુત્રોને અગહીન બનાવી દેતો

'अणुपुव्वेण ' आनुपूर्व्येण=यथाक्रमम् संरक्षन् भूपदृष्ट्यादितः संगोपायन् भूपकृतो पद्रवात् त दारक ' संवड्ढेइ ' संवर्द्धय, तस्य बालस्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु स दारक' ' उम्मुक्कबालभावे ' उन्मुक्तबालभाव=उन्मुक्त परित्यक्तो बालभावो बालत्व येन स , ' जोव्वणगमणुप्पत्ते ' यौवनकमनुप्राप्त=प्राप्तताारुण्यः तव मम च

ण सारक्खेमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि । तएण से दारए उम्मुक्कबाल भावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए)
तो यदि मेरे यहां पुत्र उत्पन्न होता है-मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ-तो मुझे यही योग्य है कि मे राजा कनकरथ को खबर न पडे इस रूप से उसकी रक्षा करूँ-उनकी दृष्टि से -उसे बचाकर रखू-ऐसा उसने मन से विचार किया। विचार कर फिर उसने अमात्य तेतलिपुत्र को बुलाया-बुलाकर उस से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्छित गृद्ध-अत्यत अनुरक्त एव अध्युपपन्न बना हुआ है जो वह उत्पन्न हुए बालको को अग हीन कर देता है-उनके हाथो की अगुलियों आदि अङ्गों को काट देता है। तो हे देवानुप्रिय ! यदि मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ तो देवानुप्रिय तुम उसे राजा को खबर न पडे इस रूप से रक्षित करते हुए और उनकी दृष्टि से बचाते हुए क्रमशः वृद्धिंगत करो। जब वह बालक-क्रमशः सवर्द्धित होता हुआ बाल्यावस्था से रहित होकर यौवनावस्था वाला बन जायगा

माणे संगोवेमाणे संवड्ढेहिं । तएण से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणु पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएण से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता पडिगए)

હવે મને પુત્ર Cત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરૂ તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમા આટલો બધો મૂર્ચ્છિત, ગૃદ્ધ-ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડયો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અંગો કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અંગોને કપાવી નાખે છે તો હે દેવા નુપ્રિય ! હુ પુત્રને જન્મ આપુ તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરતા તેનુ ભરણુ-પોષણ કરજો. જો તે

विचारो यावत् मनोगत सङ्कल्पः, ' समुप्पज्जित्था ' समुत्पन्नत । सङ्कल्पप्रकार माह-' एव खलु ' इत्यादि-एव खलु कनकरथो राजा राज्ये च यावत् व्यङ्गयति। यावत् अङ्गानि अङ्गानि व्यङ्गयति अनेन प्रकारेण कुत्सितप्रकारेण मारयति । तद्यदि खलु अह दारक ' पयायामि ' प्रजनयामि, सेय खलु मम त दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए विहरित्तए ' श्रेय. खलु मम त दारक कनकरथस्य ' रहस्सिय चेव ' रहस्यिकमेव=गुप्तमेव आपद सरक्षन्त्या ' सारक्ख माणीए ' सरक्षन्त्या. भूपदृष्टादे', ' सगोवेमाणीए ' सगोपायन्त्या भूपकृतोप-द्रवात् विहर्तुम्, ' त्ति कट्टु ' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा एव समेक्षते=एव विचारयति सप्रेक्ष्य=विचार्य तेतलिपुत्रममात्य प्रधान शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एव खलु देवानुप्रिय ! कनकरथो राजा ' रज्जेय जाव वियंगेइ ' राज्ये च यावद् व्यङ्गयति=राज्यादिषु च मूर्च्छितो जातान पुत्रान् विकृताङ्गान् करोति एव तेषामङ्गोपाङ्गानि खण्डयति। अनया रीत्या पुत्रान्मारयति, तद्यदि खलु अह देवानुप्रिय ! दारक प्रजनयामि । तत खलु त्व कनकरथस्य रहस्यिकमेव

हुआ-(एव खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगेइ, जाव अङ्ग मगाइ वियगेइ) यह कनकरथ राजा राज्य आदिमें मूर्छित गृद्ध, अत्य-न्त अनुरक्त एव अध्युपपन्न अत्यन्त तत्पर बनकर पुत्रों को काट देता हैं-बुरी तरह से उन्हे मार डालता है (त जइ अह दारय पायायामि, सेय खलु मम त दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता, तेयलिपुत्त अमच्च सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! कण गरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ त जइण अह देवाणुप्पिया ! दारगंप-यायामि, तएण तुम देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वे

(एव खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगेइ, जाव अङ्ग मगाइ वियगेइ)
કનકરથ રાજા રાજ્ય વગેરેની બાબતમા મૂર્છિત ગૃદ્ધ, ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન-અત્યન્ત તત્પર થઇને-પુત્રોને અગહીન કરાવી નાખે છે યાવત્ તેમના અગોને કપાવી નાખે છે અને બરાબ હાલતમા તેઓને મરાવી નાખે છે

(त जइ अह दारय पायायामि, सेय खलु मम त दारग कणगरहस्स रह-स्सिय चेव सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता तेयलिपुत्त अमच्च सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे, राया रज्जे य जाव वियगेई त जइण अह देवाणुप्पिया ! दारग पया यामि, तएण तुम देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वेण सारक्खे-

'अणुपुव्वेण ' आनुपूर्व्येण=यथाक्रमम् सरक्षन् भूतदृष्ट्यादिनः सगोपायन् भूपकृतो पद्रवात् त दारक ' सवड्ढेइ ' सवर्द्धय, तस्य बालस्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु स दारक' ' उम्मुक्कबालभावे ' उन्मुक्तबालभाव =उन्मुक्त परित्यक्तो बालभावो बालत्व येन स', ' जोव्वणगमणुप्पत्ते ' यौवनकमनुप्राप्त =प्राप्ततारुण्य. तत मम च

ण सारक्खेमाणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि । तएण से दारए उम्मुक्कबाल भावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएण से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए)
तो यदि मेरे यहां पुत्र उत्पन्न होता है-मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ-तो मुझे यही योग्य है कि मै राजा कनकरथ को खबर न पडे इस रूप से उसकी रक्षा करूँ-उनकी दृष्टि से -उसे बचाकर रखू-ऐसा उसने मन से विचार किया। विचार कर फिर उसने अमात्य तेतलिपुत्र को बुलाया-बुलाकर उस से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्छित गृद्ध-अत्यत अनुरक्त एव अध्युपपन्न बना हुआ है जो वह उत्पन्न हुए बालको को अग हीन कर देता है-उनके हाथो की अगुलियों आदि अङ्गों को काट देता है। तो हे देवानुप्रिय। यदि मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ तो देवानुप्रिय तुम उसे राजा को खबर न पडे इस रूप से रक्षित करते हुए और उनकी दृष्टि से बचाते हुए क्रमशः वृद्धिंगत करो। जब वह बालक-क्रमशः सवर्द्धित होता हुआ बाल्यावस्था से रहित होकर यौवनावस्था वाला बन जायगा

माणे सगोवेमाणे सवड्ढेहिं । तएण से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएण से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता पडिगए)

હવે મને પુત્ર Cત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરૂ તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમા આટલો બધો મૂર્ચ્છિત, ગૃદ્ધ-ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડયો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અંગો કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અંગોને કપાવી નાખે છે જો હે દેવા નુપ્રિય ! હુ પુત્રને જન્મ આપુ તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરતા તેનુ ભરણ-પોષણ કરજો. જો તે

'भिक्खाभायण' भिक्षाभाजनम्=भिक्षाया आधारभूतो भविष्यति। ततः खलु स तेतलिपुत्र पद्मावत्याः एतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य पद्मावत्या समीपात् प्रतिगत स्वगृहे गतवान् ॥सू०४॥

मूलम्–तएणं पउमावई य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ, सयमेव परिवहइ। तएणं सा पउमावई नवण्ह मासाणं जाव पियदंसणं सुरूव दारग पयाया, ज रयणिं च णं पउमावई दारय पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्ह मासाणं विणिहायमावन्न दारिय पयाया। तएणं सा पउमावई देवी अम्मधाइ सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छह णं तुमे अम्मो! तेतलिगिहे तेतलिपुत्तं अमच्च रहस्सियं चेव सद्दावेह। तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता, जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया! पउमावई देवी सद्दावेइ। तएणं तेतलिपुत्तं अम्मधाईए अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धि साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव

तो हमारे तुम्हारे दोनों के लिये भिक्षा पात्र–भिक्षा का आधार भूत-बन जायगा इस-प्रकार पद्मावती के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्यने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वह पद्मावती देवी के पास से अपने घर पर चला आया ॥ सू० ४ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે તો મારા અને તમારા બનેને માટે ભિક્ષાપાત્ર ભિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘેર આવી ગયો. સૂ ૪

उवागए करयलपरिग्गहियं दसणह सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्वं ? तएणं पउमावई तेतलिपुत्त एवं वयासी-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारग पयाया त तुम णं देवाणुप्पिया ! एयं दारग गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्तिकट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेण्हइ गिण्हत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स रहस्सियं अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, त णा तुम देवाणुप्पिया ! इम दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य सगोवाहि य सवड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कटु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिणिग्गए । तएण तीसे पउमावईए अगपरियारियाओ पउमावइ देवि विणिहायमावन्न च

'भिक्खाभायणं' भिक्षाभाजनम्=भिक्षाया आधारभूतो भविष्यति। ततः खलु स तेतलिपुत्र पद्मावत्या. एतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति. प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य पद्मावत्या समीपात् प्रतिगत स्वगृहे गतवान् ॥सू० ४॥

मूलम्–तएणं पउमावई य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ, सयमेव परिवहइ। तएणं सा पउमावई नवण्ह मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया, जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्ह मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया। तएणं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमे अम्मो! तेतलिगिहे तेतलिपुत्तं अमच्चं रहस्सियं चेव सद्दावेह। तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता, जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! पउमावई देवी सद्दावेइ। तएणं तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव

तो हमारे तुम्हारे दोनों के लिये भिक्षा पात्र–भिक्षा का आधार भूत–बन जायगा इस–प्रकार पद्मावती के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्यने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वह पद्मावती देवी के पास से अपने घर पर चला आया ॥ सू० ४ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે તો મારા અને તમારા બનેને માટે ભિક્ષાપાત્ર ભિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘેર આવી ગયો. સૂ ૪

उवागए करयलपरिग्गहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु एव वयासी-सदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्वं ? तएणं पउमावई तेतलिपुत्त एवं वयासी-एव खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ, अहं च ण देवाणुप्पिया ! दारग पयाया त तुम णं देवाणुप्पिया ! एय दारग गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्ति कट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेण्हइ गिण्हत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स रहस्सिय अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, त ण तुम देवाणुप्पिया ! इम दारग कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेण सारक्खाहि य सगोवाहि य सवड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विणिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता [illegible]

दारियं पयाति, पालित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी एवं खलु सामी ! पउमावईं देवी मइल्लियं दारियं पयाया । तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए जाए । तएणं से तेतलिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिइवडियं, जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रन्ने जाए, तं होउ णं दारए, नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएणं' इत्यादि । ततः खलु पद्मावती च देवी पोट्टिला च अमात्यी समकमेव गर्भं गृह्णाति, समकमेव गर्भं परिवहति=धारयति । ततः खलु सा पद्मावती 'नवण्हं मासाणं जाव' नवानां मासानां नवसु मासेषु व्यतीतेषु यावत् सत्सु 'पियदंसणं' प्रियदर्शनम्=प्रिय चेतोहरं दर्शनमवलोकनं यस्य तं = दर्शकजनचेतोह्लादजनकं सुरूपं दारकं 'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती । यस्या राज्ञ्या च

'तएणं पउमावई य देवी' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (पउमावई य देवी पोट्टिलाय अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी और पोट्टिला अमात्यी ने साथ ही गर्भ धारण किया। (तएणं सा पउमावई नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया) पद्मावती देवी ने जब नौ मास अच्छी तरह गर्भ के समाप्त हो चुके तब दर्शकजन चित्ताह्लाद जनक अच्छे रूप शाली पुत्र को जन्म दिया। (जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया

'तएणं पउमावइ य देवी' इत्यादि—

टीकार्थ- तएणं) त्यारपछी (पउमावइ य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी अने पोट्टिला अमात्यीओ साथे साथे ज गर्भधारण कर्यो

(तएणं सा पउमावई नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया)

ज्यारे नव मास सारी रीते पसार थई गया त्यारे पद्मावती देवीओ जोनाराओ जोईने प्रसन्न थई जाय एवा रूपाळा पुत्रने जन्म आप्यो।

खलु पद्मवती दारकं प्रजाता तस्या रजन्या च खलु पोट्टिलापि अमात्यी ' नवण्ह-मासाण ' नवाना मासानाम्=नवसु मासेषु व्यतीतेषु ' विणिहायमावन्न ' विनि-घातमापन्नाम्=मृताम् दारिका प्रजाता=जनितवती । ' तएण ' ततः खलु पुत्रजन्मा नन्तर सा पद्मावती देवी अम्मधात्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयमम्ब ! ' तेतलिगिहे ' तेतलिगृहे=तेतलेरमात्यस्य गृहे तेतलिपुत्रममात्य रहस्यिकम्=अन्यैरपरिज्ञातमेव शब्दयत=आह्वयत । ततः खलु सा अम्मधात्री तयेति प्रतिशृणोति,=अङ्गीकरोति, प्रतिश्रुत्य अन्त पुरस्य ' अवदारेण ' अपद्वारेण=पृष्ठ-द्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव तेतलेर्गृहम्, यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपा गच्छति, उपागत्य करतल यावद् अञ्जलिपुटं कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे

त रयणिं च ण पोट्टिलावि अमची नवण्ह मासाण विणिहायमावन्नं दारियं पयाया) जिस रात्रि मे पद्मावती देवी ने पुत्र को जन्म दिया था उसी रात्रि में पोट्टिला अमात्यी ने भी नौ मास व्यतीत हो जाने पर एक मरी हुइ कन्या को जन्म दिया (तएण सा पउमावई अम्मधाय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुमे अम्मो ! तेतलीगिहे तेतलीपुत्त अमच्च रहस्सिय चेव सद्दावेह) इस के बाद उस पद्मावती ने अम्मधात्री को बुलवाया और बुलवाकर उससे ऐसा कहा हे अम्म ! तुम तेतलि अमात्य के घर पर जाओ। और किसी को पत्ता न पड़े इस रूप से तुम तेतलि पुत्र अमात्य को बुला लाओ। (तएण सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ पडिसुणित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण णिग्ग-च्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्सगिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा गच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया

(ज रयणिं च ण पउमावई दारय पयाया त रयणिं च ण पोट्टिला वि अमची नवण्ह मासाण विणिहायमावन्न दारिय पयाया)

જે રાત્રિએ પદ્માવતી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો તે જ રાત્રિએ પોટ્ટિલા અમાત્યીએ પણ નવ માસ પૂરા થવાથી એક મરેલી કન્યાને જન્મ આપ્યો

(तएण सा पउमावई अम्मधाय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह ण तुमे अम्मो ! तेतलिगिहे तेतलिपुत्त अमच्च रहस्सिय चेव सद्दावेह)

ત્યારપછી તે પદ્માવતીએ અંબધાત્રીને બોલાવી અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે અમ્બ ! તમે તેતલિ અમાત્યને ઘેર જાઓ અને કોઈને ખબર પડે નહિ તેમ તેતલિપુત્ર અમાત્યને તમે અહીં બોલાવી લાવો

(तएण सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जतेउरस्स अवद्दारेण णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-

देवानुप्रिय ! पद्मावती देवी भवन्त शब्दयति । ततः खलु तेतलिपुत्रः ' अवधारय अन्तिके ' अम्बधात्र्या अन्तिके=अम्बधात्र्याः सकाशात् एतमर्थं श्रुत्वा हृष्टतुष्टोऽम्बधात्र्या साद्धं स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य अन्तपुरस्य अपद्वारेण रहस्यिकमेव=प्रच्छन्नमेव अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य, यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव ' उपागतः ' उपागतः=समाप्तः करतलपरिगृहीत दशनख शिरसावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवदत्-' संदिशतु ' संदिशतु=आज्ञापयतु खलु हे देवानुप्रिये !

पउमावई देवी सद्दावेइ । तएणं तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठ तुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) पद्मावती देवी के इस प्रकार वचन सुनकर उस अम्बधात्री ने तथेति कह कर उसकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया । स्वीकार कर के फिर वह अतः पुर के अपद्वार से-पीछे के दरवाजे से बाहिर निकली-निकल कर जहां तेतलि का घर और उसमें भी जहा तेतलिपुत्र था वहा गई। वहा जाकर पहिले उसने तेतलिपुत्र अमात्य को दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार किया-बाद में बोली-हे देवानुप्रिय ! आपको पद्मावती देवी बुला रही हैं । अम्बधात्री के मुख से इस प्रकार वचन सुन कर व तेतलि पुत्र हर्षित एव तुष्ट होता हुआ अम्बाधात्री के साथ ही अपने घर से निकला । (णिग्गच्छित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण रहस्सिय च चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागए करयलपरिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वया

गच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ । तएण तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिगच्छइ)

આ રીતે પદ્માવતી દેવીની વાત સાભળીને અ બધાત્રીએ ' તથેતિ ' (સારૂ) આમ કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી સ્વીકારીને તે રણુવાસના પાછલા બારણેથી બહાર નીકળી અને નીકળીને જ્યા તેતલિપુત્રનુ ઘર અને તેમા પણ જ્યા તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતા ત્યા પહોચી ત્યા પહોંચીને તેણે સૌ પહેલાં બને હાથ જોડીને તેતલિપુત્રને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તેણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને પદ્માવતી દેવી બોલાવે છે અ બધાત્રીના મુખથી આ જાતની વાત સાભળીને તેતલિપુત્ર હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થતો અ બધાત્રીની સાથે સાથે જ તે પોતાના ઘરથી રણુવાસ તરફ રવાના થયો

(णिगच्छित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण रहस्सिय चेव अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागए, [illegible] -दसणह सिर-

'ज मए कायव्व' यन्मया कर्तव्यम्, ततः खलु पद्मावती देवी तेतलिपुत्रमेवमवदत् 'एव खलु कणगरहे राया वियगेइ' एव खलु कनकरथो राजा व्यङ्गयति= हे देवाणुप्रिय ! मया पूर्वमेवकथित-यत्कनकरथ उत्पन्नान्पुत्रान् विकृताऽङ्गान् कृत्वा मारयति। अह च खलु देवानुप्रिय ! दारक प्रजाता=प्रजनितवती, 'त' तस्मात् कारणात् त्व खलु देवानुप्रिय ! एत दारक गृहाण यावत् तव च मम च

सी संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! जंमए कायव्व ? तएणं पउमावई तेतलि पुत्तं एव वयासी-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ, अह च णं देवाणुप्पिया दारग पयाया त तुम णं देवाणुप्पिया ! एय दारग गेण्हाहि) चलकर वह अतः पुर के पृष्ठ भाग के द्वार से किसी को आने का पता न लगे इस रूप से वहा प्रविष्ट हुआ। प्रविष्ट होकर जहां पद्मावती देवी थी वहां गया। वहा जाकर उसने दोनों हाथ जिसमें जुडे हुए हैं और दशोंनख जिसमें हैं ऐसी अजलिको दक्षिण तरफ से घुमाकर बाये तरफ लेजाकर और मस्तकपर अजलि को रखकर कहा-अर्थात् नमस्कार कर पूछा हे देवानुप्रिये ! जो मुझे करने योग्य कार्य है उस के करने की आप आज्ञा दीजिये। इस के बाद पद्मावती देवी ने तेतलिपुत्र से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! मैंने तुमसे पहिले ही कह रक्खा है कि कनकरथ उत्पन्न हुए पुत्रों को विकृत अग बनाकर मार डालता है। और मैंने हे देवानुप्रिय ! पुत्र को उत्पन्न किया है। इसलिये तुम हे देवा-

सावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयामी-स दिसतु ण देवाणुप्पिया ! जंमए करणिज्ज तएण परमाणेइ देवी वयासी-एव खलु कणगरहे राया जार वियगेइ अह च ण देवानुप्पिया ! दारग पयाया त तुम णदेवाणुप्पिया ! एव दारग गेण्हाहि)

ત્યા પહોચીને રણવાસના પાછલા બારણેથી કોઇને ખબર પડે નહિ તેમ રણવાસમા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો. પ્રવિષ્ટ થઇને તે જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા પહોચ્યો ત્યા પહોચીને તેણે દશે નખો જેમા છે એવા બને હાથ જોડીને અજલિ બનાવીને તેને જમણી બાજુથી ફેરવીને ડાબી બાજુ તરફ લઇ જઇને મસ્તક ઉપર અજલિ મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-એટલે નમસ્કાર કરીને પૂછ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયે ! મારે લાયક જે કઈ પણ કામ હોય તે મને કહો ત્યાર પછી પદ્માવતી દેવીએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને મે પહેલેથી કહી રાખ્યુ છે કે રાજા કનકરથ ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રોને અગહીન કરી નાખે છે અને હે દેવાનુપ્રિય ! મારે પુત્ર થયો છે હે દેવાનુપ્રિય ! એ બાળકને તમે લઇ જાઓ.

भिक्षाभाजनमिव भिक्षाभाजनं जीवन निर्वाहयति तथाऽयमपि जीवननिर्वाहको भविष्यति 'त्ति कट्टु' इति कृत्वाः इत्युक्त्वा 'तेतलिपुत्त' तेतलिपुत्राय प्राकृतत्वादत्र द्वितीया ददाति=तेतलिपुत्रस्य हस्ते दारकमर्पयति। ततः खलु तेतलिपुत्रः पद्मावत्या हस्ताभ्यां दारकं गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण=उत्तरीयवस्त्रेण 'पिहेइ' पिदधाति=आच्छादयति. 'पिहित्ता' पिधाय अन्तः-पुरस्य 'रहस्सियं' रहस्यिम=प्रच्छन्न यथा स्यात्तथा अपद्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव पोट्टिला भार्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पोट्टिलामेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिये ! कनकरथो राजा राज्ये च यावद् व्यपह्नयति स्वपुत्रान् मारयति अयं च खलु मम हस्तस्थितो दारकः कनकरथस्य पुत्रः पद्मावत्या आत्मजो मयाऽऽनीतः, 'त' तस्मात् कारणात् खलु हे देवानुप्रिये ! इमं दारकं 'कणगरहस्स

नुप्रिय'! इस बालक को लेलो (जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइत्ति कट्टु तेतलिपुत्त दलयइ) यावत् यह हमारे तुम्हारे लिये भिक्षा का भाजन हो जायगा जिस प्रकार भिक्षा भाजन जीवन निर्वाहक होता है-उसी तरह यह भी जीवन निर्वाहक होवेगा इस प्रकार कहकर उसने तेतलिपुत्र के हाथमें आपने पुत्र को दे दिया। (तएण तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हई) तेतलिपुत्र ने भी पद्मावती देवीके हाथसे बालक को ले लिया। (गिण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवद्दारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-पोट्टिलं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियरेइ, अयं

(जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइत्तिकट्टु तेतलिपुत्त दलयइ)

એ મારા અને તમારા માટે 'ભિક્ષાભાજન' થશે એટલે કે જેમ ભિક્ષાનું પાત્ર જીવનને ટકાવનાર હોય છે તેમજ આ બાળક પણ જીવન નિર્વાહક થશે આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેતલિપુત્રના હાથમા પોતાના નવ જાત પુત્રને સોંપી દીધો.

(तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ)

તેતલિપુત્રે પણ પદ્માવતી દેવીના હાથમાથી બાળક લઇ લીધુ

(गिण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सिय अवद्दारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोट्टिलं एवं वयासी, एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियरेइ, अयं च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए

रहस्सिय चेव ' कनकरथस्य रहस्यिकमेव=कनकरथो यथा न जानीयात्तथैव ' अणुपुव्वेणं' आनुपूर्व्येण=अनुक्रमेण तत्कृतोपद्रवतश्च 'सारक्खाहि य' संरक्ष्य कनकरथनृपदृष्टितः संगोपाय च तत्कृतोपद्रवतः, तथा संवड्ढेहिय ' संवर्धय च=स्तन्यपानादिनाऽस्य बालस्य वृद्धिमुपनय ! ततः खलु एष दारकः उन्मुक्तबालभावः तव च मम च पद्मावत्याश्च 'आहारे' आधार=आधारस्वरूपो भविष्यति ' तिकट्टु ' इतिकृत्वा च ण दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए, त णं तुम दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेण सारक्खाहि य संगोवाहि य संवड्ढेहि य) लेकर फिर उसे अपने दुपट्टे से ढक लिया और ढककर प्रच्छन्न गुप्तरूप से अतः पुर के पीछे के दरवाजे से बाहर निकल गया। निकल कर जहा अपना घर और पोट्टिला भार्या थी वहा गया। वहाँ जाकर उसने पोट्टिला भार्या से इस प्रकार कहा-देवानुप्रिये ! कनक रथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्च्छित हो रहा है कि वह उत्पन्न हुए अपने बालकों को अङ्ग विच्छेद कर मार डालता है। यह जो पुत्र मेरे हाथ में है वह कनक रथ राजा का पुत्र है यह पद्मावती देवी की कुक्षि से उत्पन्न हुआ है। इसलिये हे देवाणुप्रिये ! तुम इस पुत्र को कनक रथ को खबर न पडे इस तरह प्रच्छन्न रूप से क्रमशः रक्षित करती रहो-पालती रहो उसकी दृष्टि से बचाती रहो और स्तन्य पान आदि से बढाती रहो। (तएणं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य

त णं तुम देवाणुप्पिया ! इम दारगं कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वेण सारक्खाहिं य संगोवाहि य संवड्ढेहिय)

લઈને તેણે એસભા ઢાકી દીધુ, અને ઢાકીને છુપી રીતે રણુવાસના પાછલા બારણેથી બહાર નીકળી ગયો બહારનીકળીને જ્યા પોતાનુ ઘર અને પોટ્ટિલા ભાર્યા હતી ત્યા ગયો ત્યા પહોચીને તેણે પોટ્ટિલા ભાર્યાને એમ કહ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયે ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેની બાબતમા એટલો બધો આસક્ત થઈ ગયો છે કે તે જન્મ પામેલા પોતાના બાળકોના અ ગોને કપાવીને મારી નાખે છે મારા હાથમા જે બાળક છે તે પણ કનકરથ રાજાનો જ પુત્ર છે પદ્માવતી દેવીના ગર્ભમાથી આનો જન્મ થયો છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાને જાણ થાય નહિ તે પ્રમાણે તમે છુપી રીતે આ પુત્રનુ રક્ષણ કરતા રહો, પોષણ કરતા રહો, રાજાની કુદૃષ્ટિથી એને દૂર રાખતા રહો અને સ્તન્યપાન એટલે કે દૂધ વગેરે પીવડાવીને એને મોટો કરો

इत्युक्त्वा पोट्टिलायाः पार्श्वे 'णिक्खिवइ' निक्षिपति=स्थापयति, तथा पोट्टिलायाः पार्श्वात् तां 'विणिहायमावण्ण' विनिघातमापन्नां=मृतां दारिकां गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्तः पुरस्य अपद्वारेण अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मावत्याः देव्याः पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा तावत् 'पडिनिग्गए' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिर्गच्छति स्वयं

मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइत्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विणिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ पिहित्ता, अंतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ) इस तरह क्रमशः वृद्धिंगत होता हुआ यह बालक जब बाल्यावस्था से रहित हो जावेगा तो हमारा तुम्हारा और पद्मावती देवी का आधार होगा, ऐसा कहकर उस तेतलिपुत्र अमात्य ने उस पुत्र को पोट्टिला के पास रख दिया। और पोट्टिला के पास से मरी हुई कन्या को उठा लिया-उठाकर उसे अपने उत्तरियवस्त्र से ढँक लिया, ढँक कर फिर अन्तः पुर के पिछले दरवाजे से वहां आया (अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए) वहां आकर जहां पद्मावती देवी थी वहां पहुँचा, वहां पहुँच कर उसने उस मृत कन्या को पद्मावती देवी के

(तएणं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए, पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता, अंतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ)

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક જ્યારે બચપણ વટાવીને જુવાન થઇ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર થશે આ પ્રમાણે કહીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોટ્ટિલાની પાસે મૂકી દીધો અને પોટ્ટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણવાસના પાછલા બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો

(अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए)

ત્યા જઇને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પહોચીને તેણે તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામા મૂકી દીધી અને ત્યા મૂકીને તે ત્યાથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો

गतवान् । ' तएण ' तत खलु तस्याः पद्मावत्याः 'अगपडियारियाओ' अङ्गप्रतिचारिका'=दास्य' पद्मावतीदेवीं विनिघातमापन्नां प्राणरहितां दारिकां च पश्यन्ति, दृष्ट्वा यत्रैव कनकरथो राजा, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ' एव ' = वक्ष्यमाणरीत्या अवदत्–हे स्वामिन् ! पद्मावतीदेवी ' मइल्लिया ' मृता दारिका ' पयाया ' प्रजाता=प्रजनितवती । ' तएण ' इति, तत खलु दासीमुखान्मृतबालिकाजन्मश्रवणानन्तर कनकरथो राजा तस्या ' मइल्लियाए ' मृतायाः दारिकाया ' नीहरण' निर्हरण '=निष्काशन ' करेइ ' करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति, कृत्वा ' कालेण '

पास रख दिया। और रखकर फिर वह वहा से चल दिया चलकर अपने घर आ गया। (तएण तीसे पउमावईए अगपरियारियाओ पउमावइ देविं विणिहायमावन्नं दारियं पासति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनह सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एव वयासी एव खलु सामी पउमावई देवी मइल्लियं दारियं पयाया) इसके बाद पद्मावती देवी की अगपरिचारिकाओंने पद्मावती देवी को और मरी हुई उस कन्या को देखा देख कर वे सब जहा कनक रथ राजा थे वहाँ गईं–वहा जाकर उन्होंने दोनों हाथों की अजलि बना कर और उसे मस्तक पर घुमाकर–अर्थात् नमस्कार कर इस प्रकार कहा हे स्वामिन ! पद्मावती देवी ने मृत कन्या को जन्म दिया है। (तएण कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरण करेइ,बहूणि लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ करित्ता कालेण विगयसोए जाए) इस प्रकार उन के मुख से सुनकर कनक रथ राजाने उस मृत

(तएण तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउमावइ देविं विणिहायमावन्नं दारियं पासंति पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनह सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एव वयासी–एव खलु सामी पउमावईदेवी मइल्लियं दारियं पयाया)

ત્યારબાદ પદ્માવતી દેવીની અગ–પરિચારિકાઓએ પદ્માવતી દેવી તેમજ તે મરેલી કન્યાને જોઈ જોઇને તેઓ બધી જ્યા કનકરથ રાજા હતા ત્યા ગઈ અને ત્યા જઇને તેણે બને હાથોથી અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક ઉપર ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામી ! દેવી પદ્માવતીએ મરેલી કન્યાને જન્મ આપ્યો છે

(तएण कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरण करेइ, बहूणि लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए जाए)

इत्युक्त्वा पोट्टिलायाः पार्श्वे 'णिक्खिवइ' निक्षिपति=स्थापयति, तथा पोट्टिलायाः पार्श्वात् तां 'विणिहायमावण्ण' विनिघातमापन्नां=मृतां दारिकां गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्तः पुरस्य अपद्वारेण अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मवत्याः देव्याः पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा तावत् 'पडिनिग्गए' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिर्गत्य स्वगृहं

मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइत्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विणिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ पिहित्ता, अतेउरस्स अवद्दारेणं अणुप्पविसइ) इस तरह क्रमशः वृद्धिंगत होता हुआ यह बालक जब बाल्यावस्था से रहित हो जावेगा तो हमारा तुम्हारा और पद्मावती देवी का आधार होगा, ऐसा कहकर उस तेतलिपुत्र अमात्य ने उस पुत्र को पोट्टिला के पास रख दिया। और पोट्टिला के पास से मरी हुई कन्या को उठा लिया-उठाकर उसे अपने उत्तरियवस्त्र से ढँक लिया, ढँक कर फिर अन्त. पुर के पिछले दरवाजे से वहां आया (अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए) वहां आकर जहां पद्मावती देवी थी वहां पहुँचा, वहां पहुँच कर उसने उस मृत कन्या को पद्मावती देवी के

(तएणं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए, पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेग पिहेइ, पिहित्ता, अतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ)

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક જ્યારે બચપણ વટાવીને જુવાન થઇ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર થશે આ પ્રમાણે કહીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોટ્ટિલાની પાસે મૂકી દીધો અને પોટ્ટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણવાસના પાછલા બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો।

(अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए)

ત્યા જઇને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પહોચીને તેણે તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામા મૂકી દીધી અને ત્યા મૂકીને તે ત્યાથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો।

अस्माकमेष दारकः कनकरथस्य राज्ये जात., 'त' तस्मात् भवतु खलु दारको नाम्ना 'कनकध्वजः' इति। अनन्तरमसौ दारकः क्रमेण वृद्धिं गच्छन् यावद् 'भोगसमत्थे जाए' भोगसमर्थो जात=तारुण्य प्राप्त इत्यर्थः ॥ सू०५ ॥

मूलम्–तएणं सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था, णेच्छइ य तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए, किपुणदरिसणं वा परिभोग वा ?। तएण तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था–एव खलु अह तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओहयमणसकप्पं जाव झियायइ। तएण तेतलिपुत्ते पोट्टिल ओहयमणसकप्प जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एव वयासी–मा णं तुम देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि। तुम च णं मम महाणससि विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं

भारी उत्सव किया। तथा भोजन आदि द्वारा मित्र ज्ञाति द्वारा प्रमुख जनों का सत्कार सन्मान करके फिर उसने उनके समक्ष इस प्रकार कहा–यह हमारा पुत्र कनक रथ राजा के राज्य में उत्पन्न हुआ है–इस लिये यह "कनकध्वज" इस नामसे प्रसिद्ध होवे। इस के बाद यह पुत्र क्रमशः वृद्धिंगत हुआ यावत्–भोग समर्थ हो गया–अर्थात् जवान युवा–बन गया ॥ सू० ५ ॥

સુધી ભારે ઉત્સવ ઉજવ્યો તેમજ ભોજન વગેરેથી મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પ્રમુખ લોકોનો સત્કાર અને સન્માન કરીને તેણે તેઓની સમક્ષ આ પ્રમાણે કહ્યું કે આ અમારો પુત્ર રાજા કનકરથના રાજ્યમા ઉતન્ન થયો છે એથી એ "કનકધ્વજ" નામે પ્રસિદ્ધ થાય ત્યાર પછી તે કનકધ્વજ સમય પમાર થતા ધીમે ધીમે મોટો થતા યાવત ભોગ સ થ થઈ ગયો એટલે કે જુવાન થઈ ગયો ॥ સૂ૦ ૫ ॥

कालेन समये व्यतीते ' विगयसोए ' विगतशोकः=शोकरहितो जात' । तत' खलु स तेतलिपुत्र कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्–' खिप्पामेव ' क्षिप्रमेव ' चारगसोहण ' चारकशोधन=बन्दीजनमोक्षण यावन्मानोन्मानवर्द्धनम् पुत्रजन्मोत्सवनिमित्तक राजकर्मचारिणां वेतनवृद्धयादिना सत्कारसम्मानवर्द्धन कुरुते, इत्येवरूपामाज्ञां दत्त्वा स्वय ' ठिइवडिय ' स्थितिपतिता कुलमर्यादान्तर्गतां पुत्रजन्मनिदशदिवससाध्यमहोत्सवरूपां क्रियां करोति । पुनश्चाशनादिना मित्र ज्ञातिप्रमुखान् सत्कृत्य सम्मान्य तत्पुत्र एव कथयति–' जम्हाण ' यस्मात्तस्मि

कन्या का निर्हरण–श्मशान में ले जाना–किया। निर्हरण कर के फिर अनेक लौकिक मृतकृत्य किये। मृत कृत्य कर चुकने के बाद धीरे २ वे विगत शोक हो गये। (तएणसे तेतलिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव चारगसोहण जाव ठिइवडियं जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए त होउणं दारए नामेण कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए) इस के बाद तेतलिपुत्र अमात्यने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा–शीघ्र ही तुम लोग चारक शोधन करो–बन्दीजनों को मुक्त करो यावत् मानोन्मन का वर्द्धन, और पुत्र जन्मोत्सव के निमित्त को लेकर राज कर्मचारियो के वेतन की वृद्धि आदि करके उनके सन्मान का वर्द्धन करो– इस प्रकार आज्ञा देकर स्वयं उस तेतलिपुत्र अमात्यने अपनी कुल मर्यादा के अनुसार पुत्र का जन्म होने के कारण दश दिवस तक बड़ा

આ રીતે તેમના મુખથી આ વાત સાભળીને કનકરથ રાજાએ તે મરેલી કન્યાને સ્મશાનમા પહોંચાડી અને ત્યારબાદ તેણે મરણ પછીની ઘણી ક્રિયાઓ પૂરી કરી મરણ ક્રિયાઓને પતાવ્યા પછી રાજા કનકરથ ધીમે ધીમે શોક રહિત થઇ ગયા

(तएणं से तेतलिपुत्ते कौडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव चारगसोहण जाव ठिइवडियं,जम्हाणं अम्ह एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए त होउणं दारए नामेण कणगज्झाए जाव भोगसमत्थे जाए)

ત્યારબાદ તેતલી પુત્ર અમાત્યે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે–તમે લોકો સત્વરે ચારક શોધન કરો–એટલે કે જેલખાનામાથી કેદીઓને છોડી મૂકો યાવત માનોન્માનનું વર્દ્ધન તેમજ પુત્ર જન્મોત્સવ બદલ રાજકર્મચારીઓના પગાર વગેરેની વૃદ્ધિ કરીને તેમના સ માનનુ વર્દ્ધન કરો આ રીતે કૌટુંબિક પુરુષોને આજ્ઞા આપીને તેતલિપુત્રે જાતે પોતાની કુલ મર્યાદા મુજબ પુત્ર જન્મ હોવા બદલ દશ દિવસ

त्तकालसमए ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे ' इमेयारूवे ' अय मेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारः ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत् मनोगत सकल्पः ' समुप्पज्जित्था ' समुदपद्यत, सकल्पप्रकारमाह-एव खलु अह ' तेतलिस्स ' तेतलेः=तेतलिपुत्रस्यामात्यस्य पूर्वम् इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा ' आसि '=आसम् , परन्तु ' इयाणिं ' इदानीम् अनिष्टा यावद्-अमनोऽमा जाता। नेच्छति च तेतलिपुत्रः मम नाम यावत् परिभोग वा=मम नाम गोत्रमपि श्रोतु नेच्छति किंपुन र्मम दर्शन मया सह परिभोग वा। इत्थमेपा पोट्टिला ' ओहय-मणसकप्पा ' अपहतमनः सकल्पा=अपहतो=दुःखावेगवशाद् रुद्धो, मनः सकल्पो= मानसिको विचरो यस्या सा, ' जावझियायइ ' यावद् ध्यायति=यावदार्त्तध्यान करोति। ततः खलु तेतलिपुत्र पोट्टिलामपहतमनः सकल्पा ' जाव झियायमाणिं '

या कयाइ पुव्वावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-जित्था) जब पोट्टिलाने अपनी तरफ तेतलि पुत्र अमात्य की इतनी अधिक उपेक्षा-अनादरता देखी तो एक दिन किसी समय उसे रात्रि के मध्यभाग में इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(एव खलु अह तेतलिस्स पुव्वि इट्ठा ५ आसिं, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओ हयमणसकप्पा जाव झियायइ) में तेतलि पुत्र अमात्य के लिये पहिले इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी, परन्तु इस समय मे-उन्हे अनिष्ट यावत् अमनोम बन रही हूँ। वे तेतलि पुत्र अमोत्य देखने और परिभोग करने की तो बात कौन कहे मेरे नामगोत्र तक को भी सुनना पसद नही करते है। इस तरह वह अपहतमनसकल्प होकर यावत्

अत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

જ્યારે અમાત્ય તેતલિપુત્રને પોટ્ટિલા એ પોતાના પ્રત્યે આટલી બધી ઉપેક્ષા અને અનાદરતા જોઈ ત્યારે કોઈ વખતે એક દિવસ રાત્રિના મધ્યભા ગમા તેના મનમા આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થેયા કે

(एव खलु अह तेतलिस्स पुव्वि इट्ठा ५ आसिं इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव झियायइ)

પહેલા હુ તેતલિપુત્ર અમાત્યને માટે ઈષ્ટ, કાત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હમણા હુ તેમના માટેઅનિષ્ટ યાવત અમનોમ થઈ પડી છુ તેતલિ પુત્ર અમાત્ય જ્યારે મારુ નામ ગોત્ર સુદ્ધા સાભળવુ ઇચ્છતા નથી ત્યારે મારી સામે જોવાની અને મારી સાથે પરિભોગની તો વાત જ શી કરવી ? આ રીતે તે પોટ્ટિલા અપહત મન સકલ્પ થઈને યાવત આર્તધ્યાન કરતી બેઠી હતી

समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि। तएणं सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणित्ता, कल्लाकल्लिं महाणससि विपूल असण जाव दवावेमाणी विहरइ ॥सू०६॥

टीका—' तएणं ' इत्यादि। ततः खलु सा पोट्टिला अन्यदा कदाचित् केनापि कारणेन तेतलिपुत्रस्य अनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता चाप्यऽभवत्। नेच्छति च तेतलिपुत्रः पोट्टिलाया नाम गोत्रमपि ' सवण याए ' श्रवणतायै=श्रूयतेऽनेनेति श्रवणं कर्म', तस्य कर्म श्रवणता तस्यै, श्रवण विषयीकर्तुम् इत्यर्थ किं पुन तस्या ' दरिसण वा ' दर्शन वा तया सहपरिभोग वा, वाञ्छेत्, अपितु न। तत खलु तस्याः पोट्टिलाया अन्यदा कदाचित् पुव्वरत्तावर

तएणं सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (सा पोट्टिला) वह प्रधानकी स्त्री पोट्टिला (अन्नया कयाइ) किसी समय–कोई निमित्त को लेकर–किसी भी कारण से–(तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा जाया यावि होत्था) तेतलिपुत्र के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन गई। (णेच्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसण वा परिभोग वा) इस प्रकार वह तेतलिपुत्र उस पोट्टिला के नाम गोत्र तक को भी सुनना पसद नहीं करता तो फिर उसके देखने और परिभोग पास जाने की तो बात ही क्या है। (तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्न

तएणं सा पोट्टिला इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર પછી (सा पोट्टिला) તે અમાત્યની પત્ની પોટ્ટિલી (अन्नया कयाइ) કોઈ વખતે ગમેતે કારણે (तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था) તેતલિ પુત્રને માટે અનિષ્ટ, અકાન્ત, અપ્રિય અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ પડી

(णेच्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसण वा परिभोग वा)

એથી તેતલિપુત્ર અમાત્યને તેનુ નામ ગોત્ર સુદ્ધા સાભળવુ પણ પસદ પડતું ન હતુ ત્યારે તેને જોવાની અને તેની પાસે જવાની તો વાત જ શી?

(तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्वावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एव' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एयमट्ठ' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'कल्लाकल्लिं' कल्याल्यि=प्रतिदिनम्, महानसे विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहार मुपस्कार्य ददती च 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्—तेणं कालेण तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि०चरमाणागामाणुगाम दुइज्जमाणा जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता, सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणिओ विहरति। तएण तासिं सुव्वयाणं अज्जाण एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिह अणुपविट्ठे। तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता, विउल असण जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता, एव वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुव्वं

से दिलवाओ। इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से कहा-तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एव सतुष्ट हुई। और उसने तेतलिपुत्रकी इस बातको मान लिया। मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला में चारो प्रकार का आहार बनवा कर उसे श्रमण, माहण आदि जनोंके लिये स्वय देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

यावत् याचकोने पोते आपो अने बीजाओने हुकम करीने अपावो। तेतलिपुत्र अमात्ये न्यारे आ प्रमाणे पोट्टिलाने कह्युं त्यारे ते खूबज प्रसन्न तेमज सतुष्ट थई गई अने तेणे तेतलिपुत्रनी आ वात स्वीकारी लीधी अने ते दरेाज भेाजन शाळामा चारे जातना आहारेा बनावडावीने श्रमण ब्राह्मण वगेरे ने पोते आहार आपवालागी अने बीजाओ द्वारा अपाववा लागी सूत्र

यावद् ध्यायन्तीम्=यावदार्तध्यान कुर्वन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवदत्-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! अपहतमनः सङ्कल्पा ' जाव झियाहि ' यावद्ध्यायं=यावदार्तध्यानं माकुरु । हे देवि । त्वं च खलु मम ' महाणसंसि ' महानसे=भोजनशालायाम् विपुलम् ' असणं जाव ' अशनं यावत्=अशनपानखादिमस्वादिमं चतुर्विधमाहारम् ' उवक्खडावेहि ' उपस्कारय, ' उवक्खडावित्ता ' उपस्कार्य ' बहूणं समण माहण जाव वणीमगाणं ' बहुभ्य श्रमणब्राह्मण यावद् वनीपकेभ्यः=याचकेभ्यः, स्वयं देयमाणी ' ददती च, अन्यैः ' दवावेमाणी ' दापयन्ती च विहर । ततः खलु सा

आर्तध्यान कर रही थी-(तएण तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी माण तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं च णं मम महाणसंसि विउलं असणपाण खाइम साइम उवक्खडावेहिं, उवक्खडावित्ता बहूणं समण माहण जाव वणीपगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि, तएणं सा पोट्टिला तेतलीपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असणं जाव दवावेमाणी विहरइ) इतने मे तेतलिपुत्र ने उस अपहृतमनः सकल्प होकर आर्तध्यान करती हुइ पोट्टिला को देखा-तो देखकर उसने उससे कहा-हे देवानुप्रिये तुम अपहृतमन सकल्प होकर आर्तध्यान मत करो-तुम तो मेरी भोजनशाला में विपुलमात्रा में अशन, पान, खादिम एव स्वादिम इस तरह चतुर्विध अहार बनवाओ बनवाकर उसे अनेक श्रमण ब्राह्मण यावत् याचकजनों के लिये स्वय दो और दूसरों

(तएणं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी माण तुमे देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं च णं मम महाणसंसि विउलं असणपाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेहिं, उवक्खडावित्ता बहूणं समणमाहणं जाव वणीपगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि तएणं सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असणं जाव दवावेमाणी विहरइ)

આટલામા અપહૃતમન સકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરતી તે પોટ્ટિલાને અમાત્ય તેતલિપુત્રે જોઇ અને જોઇને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે અપહૃતમનસકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરો નહિ-તમે મારી ભોજન શાળામા જઇને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ આમ ચાર જાતના આહારો બનાવડાવો અને બનાવડાવીને તેને ઘણા શ્ર-

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एव' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एयमट्ठ' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'कल्लाकल्लिं' कल्याल्लिय=प्रतिदिनम्, महानसे विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहार मुपस्कार्य ददती च 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि०चरमाणागामाणुगाम दुइज्जमाणा जेणामेव तेतलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, अहापडिरूव उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणिओ विहरंति। तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे। तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, विउलं असण जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता, एव वयासी–एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुठवं

से दिलवाओ। इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से कहा–तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एव सतुष्ट हुई। और उसने तेतलिपुत्रकी इस बातको मान लिया। मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला में चारो प्रकार का आहार बनवा कर उसे श्रमण, माहण आदि जनोंके लिये स्वय देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

यावत् याचकोने पोते आपो अने बीजाओने हुकम करीने अपावो। तेतलिपुत्र अमात्ये ज्यारे आ प्रमाणे पोट्टिलाने कह्युं त्यारे ते खूबज प्रसन्न तेमज सतुष्ट थइ गइ अने तेणे तेतलिपुत्रनी आ वात स्वीकारी लीधी अने ते दररोज भोजन शाळामा चारे जातना आहारो बनावडावीने श्रमण ब्राह्मण [illegible] माहार आपवालागी अने बीजाओ द्वारा अपाववा लागी सूइ

इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव दसणं वा परिभोगं वा, तं तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसह, त अत्थि आइ भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि चुण्ण जोए वा मंतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा काउड्डुवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाहं तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति ठवित्ता, पोट्टिल एव वयासी–अम्हे ण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथिओ जाव गुत्तबभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारं कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमग पुण उवादिसित्तए वा आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया ! विचित्त केवलिपन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो। तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एव वयासी–इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्ह अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामेत्तए, तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त धम्म परिकहेंति । तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा एव वयासी–सद्दहामि णं अज्जाओ ! णिग्गंथ पावयण जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जित्तए, तएण

सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ। तएणं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुव्रतानाम आर्या ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो बहुश्रुता बहुपरिवाराः 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया विचरन्त्य 'जेणामेव' यत्रैव तेतलिपुरं नगरं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'अहापडिरूवं' यथाप्रतिरूपम्=यथाकल्पम् 'उग्गहं' अवग्रहम्=वसत्यर्थमाज्ञाम् 'उग्गिण्हंति' अवगृह्णन्ति=याचन्ते, अवगृह्य 'संजमेणं' संयमेन सप्तदशविधेन, 'तवसा' तपसा द्वादशविधेन आत्मानं भावयन्त्यो

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें (सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि०जेणामेव तेयलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ) सुव्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परपरा के अनुसार विहार करती हुइ उस तेतलिपुर नगर में आई। ये ईर्यासमिति आदि पाच समितियों की पालक थी-गुप्त ब्रह्मचारिणी थीं। बहुश्रुत थी। अनेक परिवार से युक्त थीं। (उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति तएणं

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કળે અને તે સમયે (सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ)

સુવ્રતા નામની આર્યા તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતી તેતલિપુર નગરમા આવી તે ઈર્યાસમિતિ વગેરે ૫ (પાચ) સમિતિઓનુ પાલનકરનારી હતી તેમજ ગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી હતી તે બહુશ્રુત તેમજ ઘણા પરિવારો થી વીટળાયેલી હતી

(उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा

इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा५ जाव दसण वा परिभोगं वा, तं तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसह, त अत्थि आइ भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि चुण्ण-जोए वा मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा काउड्डवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति ठवित्ता, पोट्टिल एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथिओ जाव गुत्तबभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयार कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमग पुण उवदिसित्तए वा आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया ! विचित्त केवलिपन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो। तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एव वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुम्ह अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामेत्तए, तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त धम्म परिकहेंति । तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा एव वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! णिग्गंथ पावयण जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवाज्जित्तए, तएण

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यरूपं चतुर्विधमाहार ' पडिलाभेइ ' प्रतिलम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भ्य, एवमवदत्-एव खलु अहं हे आर्याः ! तेतलिपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम् , परन्तु 'इयाणिं' इदानीम् ' अणिट्ठा५ जाव दंसणं परिभोगं वा' अनिष्टा५ यावत् दर्शन परिभोग वा=साम्प्रत तेतलिपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता, तस्मादेष तेतलिपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतु नेच्छति, किं पुनर्हे आर्याः ! स मम दर्शन मया सह परिभोग वा कथ वाञ्छेत् ? । ' त तुब्भेण

ब्भुट्ठेइ) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से उठी (अब्भुट्ठित्ता वदइ णमसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभित्ता एव वयासी) उठकर उसने उसको वदना की-नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन पान आदि चतुर्विध आहार दिया-और दे कर वह इस प्रकार कहने लगी-(एव खलु अह अज्जाओ ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव दसणं वा परिभोग वा-स तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खयाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागार जाव अहिंडइ, बहूणं राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ) हे आर्याओ ! पहिले मैं तेतलिपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम थी परन्तु अब इस समय में उनके लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन रही हूँ। वे मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना पसद नहीं करते है तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अब्भुट्ठित्ता वदइ णमसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभेइ पडिलाभित्ता एव वयासी)

ઊભી થઇને તેણે તેમને નમન કર્યા વદન અને નમન કરીને તેણે તેમને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો આપ્યા અને આપીને તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(एव खलु अह अज्जाओ ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा ५ आसि, इयाणिं ५ दसण वा परिभोग वा त तुब्भेण अज्जाओ सिक्खयाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव अहिंडइ, बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ)

હે આર્યાઓ ! હુ પહેલા તેતલિપુત્ર અમાત્યના માટે ખૂબ જ ઇષ્ટ, કાત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હુ તેમના માટે અનિષ્ટ, અકાત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ પડી છુ તેઓ મારા નામ ગોત્ર સુદ્ધા સાભળના ઇચ્છતા નથી ત્યારે મારી સામે પરિભોગ કરવાની અને મને ભોવાની

विहरन्ति । तत खलु तासा सुव्रतानामार्याणामेकः सघाटकः प्रथमायां पौरुष्याम् स्वाध्याय=सूत्रमूल्पठनरूप करोति, 'जाव अडमाणे' यावदटन्त्याः, यावत्पदात् 'द्वितीयस्यां पौरुष्या सूत्रार्थचिन्तनरूप ध्यान करोति, तृतीयस्या पौरुष्यां सुव्रतामार्यामापृच्छय उच्चनीचमध्यमकुलेषु गृहसामुदानिकमिक्षार्थमटन् इत्यर्थो बोध्यः, तेतलेर्गृहमनुप्रविष्टः । तत खलु सा पोट्टिला ताः सघाटकस्था आर्या एजमानाः पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वन्दते

तासिं सुव्वायाणं अज्जाणं एगे सघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) वहा आ कर उन्होंने यथाकल्प ठहरने की आज्ञा मागी-मांगकर फिर वे १७ सतरह प्रकारके सयमऔर १२ बारह प्रकार के तपसे अपने आपको वासित करती हुई ठहर गई। इन सुव्रता आर्या का एक सघाटक था जो प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करता-द्वितीय पौरुषीमें सूत्रार्थका चिन्तनरूप ध्यान करता और तृतीय पौरुषीमें सुव्रता आर्या की आज्ञासे ऊँच नीच एव मध्यम कुलोंमें भिक्षा के लिये अटन करता। इस तरह वह सघाटक (सघाडा)तृतीय पौरुषीमें इन उच्चादि घरों मे भिक्षार्थ अटन करता हुआ तेतलिपुत्र अमात्य के घर पर आया (तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ) इतने में उस पोट्टिलाने उन सघाटकस्थ आर्याओ को ज्यों ही अपने घर पर आया हुआ देखा तो (पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अ

अप्पाण भावेमाणीओ विहरति तएण तासिं सुव्वायाण अज्जाण एगेसघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिह अणुपविट्ठे)
ત્યા આવીને તેમણે યથાકલ્પ (સાધુકલ્પ પ્રમાણે) રહેવાની આજ્ઞા માગી અને ત્યારપછી તે ૧૭ જાતના સયમ અને ૧૨-જાતના તપ વડે પોતા ની જાતને વાસિત કરતા તે ત્યા રોકાઈ સુનતા આર્યાનો એક સઘાટક હતો જે પ્રથમ પૌરૂષીમા સ્વાધ્યાય કરતો હતો, દ્વિતીય પૌરૂષીમા સૂત્રાર્થનુ ચિતન રૂપ ધ્યાન કરતો અને તૃતીય પૌરૂષીમાં સુનતા આર્યાની આજ્ઞા મેળવીને ઊંચા, નીચા અને મધ્યમ કુળોમા ગોચરી માટે જતા હતા આ પ્રમાણે તે સઘાટક તૃતીય પૌરૂષીમા ઉપરોક્ત ઊંચા વગેરે કુળોના ઘરોમા ગોચરી માટે ફરતા ફરતા તેતલિપુત્ર અમાત્યને ત્યા આવ્યો (तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ) પોટ્ટિલાએ જ્યારે સઘાટકસ્થ આર્યાઓને પોતાને ઘેર આવેલી જોઇ ત્યારે તે (पासित्ता हट्ठ तुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ) જોઈને તે ખૂબ જ પ્રસન્ન થઈ અને પોતાના આસનથી ઊભી થઇ

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यरूप चतुर्विधमाहार 'पडिलाभेइ' प्रतिलम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भ्य, एवमवदत्—एव खलु अह हे आर्याः ! तेतलिपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्, परन्तु 'इयाणिं' इदानीम् 'अणिट्ठा५ जाव दसणं परिभोग वा' अनिष्टा५ यावत् दर्शन परिभोग वा=साम्प्रत तेतलिपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता, तस्मादेष तेतलिपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतु नेच्छति, किं पुनर्हे आर्याः ! स मम दर्शन मया सह परिभोग वा कथ वाञ्छेत् ? । 'त तुब्भेण

व्भुट्ठेइ) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से उठी (अब्भुट्ठित्ता वदइ णमंसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभित्ता एव वयासी) उठकर उसने उसको वदना की—नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन पान आदि चतुर्विध आहार दिया—और दे कर वह इस प्रकार कहने लगी—(एव खलु अह अज्जाओ ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव दसणं वा परिभोग वा—तं तुब्भेण अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव अहिंडइ, बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ) हे आर्याओ ! पहिले मैं तेतलिपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम थी परन्तु अब इस समय में उनके लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन रही हूँ। वे मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना पसद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अब्भुट्ठित्ता वदइ णमसइ वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभेइ पडिलाभित्ता एव वयासी)

ઊભી થઇને તેણે તેમને નમન કર્યા વદન અને નમન કરીને તેણે તેમને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો આપ્યા અને આપીને તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(एव खलु अहं अज्जाओ ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा ५ आसि, इयाणिं ५ दसण वा परिभोग वा त तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव अहिंडइ, बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ)

હે આર્યાઓ ! હુ પહેલા તેતલિપુત્ર અમાત્યના માટે ખૂબ જ ઇષ્ટ, કાત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હુ તેમના માટે અનિષ્ટ, અકાત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ પડી છુ તેઓ મારા નામ ગોત્ર સુદ્ધા સાભળવા ઇચ્છતા નથી ત્યારે મારી સામે પરિભોગ કરવાની અને મને ભોગવવાની

अज्जाओ ' इति, तत=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे आर्याः ! ' सिक्खियाओ ' शिक्षिता=शिक्षां प्राप्ता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणाः ' बहूपढियाओ ' बहुपठिता'=नानाविधविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहूणि गामागर जाव अडिंडह ' बहूनि ग्रामाकर यावत् आहिण्डथ=बहुषु ग्रामाकरनगरादिषु परि भ्रमण कुरुथ । तथा च ' बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ ' बहूना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुप्रविशथ=हे आर्याः ! यूय बहूना राजेश्वर तलवरश्रेष्ठि सेना-पत्यादीना गृहे प्रवेश कुरुथ, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् 'अत्थि अइ मे अज्जाओ !' अस्ति आइ युष्माकमार्या ! ' आइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युष्माक ज्ञानविषये ' चुण्णजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णाना द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग 'कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती है, अनेक राजेश्वर आदिको के घरो में आती जाती रहती हैं (त अत्थिआइ भे अज्जाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) कहीं कोई चूर्ण योग - द्रव्य चूर्णो का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली, वल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मन्त्र योग-वशीकरण आदि मन्त्रों का

તો વાત જ કયા રહી ? એથી હે આર્યાઓ. તમે સૌ શિક્ષિતા છો, બહુજ્ઞાતા છો-એટલે કે ઘણા શાસ્ત્રોના જ્ઞાનથી નિપુણ છે, બહુપઠિતા છો-અનેક જાતની વિદ્યાઓમા કુશળ છો, ઘણા ગામ, આકર સ્થાનોમા વિહાર કરતા રહો છો, અને ઘણા રાજેશ્વર વગેરેના મહેલોમાં આવજા કરતા રહો છો (त अत्थि-आइ मे अज्जाओ) તો હે આર્યાઓ ! (केइ कहि चिचुन्नज्जोएवा) કયાક ગમે તે ચૂર્ણ યોગ-દ્રવ્ય ચૂર્ણોનો સ્તભન વગેરેનો યોગ,

(मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभि ओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलि पुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि)

वा ' कार्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' हिय उड्डावणे वा '=हृदयोड्डायन वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा ' काउड्डायने वा ' कायोड्डायन वा=शरीराकर्षकवस्तुविशेषो वा ' आभिओगिए वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो वा, ' वसीकरणे वा ' वशीकरण वा=वशीकरणयोगो वा, ' कोउयकम्मे वा ' कौतुककर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकम्मे वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रितभस्मप्रक्षेपण वा तथा-औषधीना ' मूले ' मूलम् ' कदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक् ' वल्ली ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=गुटिका ' ओसहे वा भेसज्जे वा ' औषध वा भैषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजात युष्माभिः उपलब्धपुव्वे ' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः ! भवत्य एपु किमपि उपलब्धपूर्वा अवश्य भवेयु', तत्कृपया मह्यमर्पय, 'जेणाह' येनाहम् , यत्सेवनादहं तेतलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम् । ततः खलु ता आर्याः पोट्टिलाया एवमुक्ता. सत्यो द्वावपि हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कार्मण योग-उच्चाटन आदि मन्त्रो का योग हृदयोड्डीयन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्डायन—शरीराकर्षक वस्तु विशेषका योग, आभियोगिक-पराभव करन का योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग, भूति कर्म-मन्त्रादि से अभिमन्त्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा औषधियों के मूल, कद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष गोली, औषध-भैषज्य इत्यादि वस्तुओं का योग आपके देखने में अवश्य आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हम अवश्य-अवश्य प्रदान करे कि जिसमें म-जिस के सेवन से मैं-तेतलिपुत्र का पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम बन जाऊँ (तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणाओ दोवि हत्थे कन्ने ठवेंति,

---

મંત્રયોગ-વશીકરણ વગેરે મંત્રોનો યોગ-કાર્મણયોગ, ઉચ્ચારણ વગેરે મંત્રોનો યોગ, હૃદયોડ્ડાયન-ચિત્તાકર્ષક વસ્તુ વિશેષનો યોગ, આભિયોગિક-પરાભવ કરવાનો યોગ, વશીકરણ-વશીકરણ યોગ, કૌતુકકર્મ-સૌભાગ્યવર્દ્ધક સ્નાન વગરેનો યોગ, ભૂતિકર્મ-મંત્ર વગેરેથી અભિમંત્રિત કરીને ભસ્મ (રાખોડી) નુ પ્રક્ષેપણ રૂપ યોગ તેમજ ઔષધીઓના મૂળ, કંદ, ત્વક (છાલ) તેમજ લતા, શિલિકા-તૃણ વિશેષ ગોળી, ઔષધ, ભૈષજ્ય વગેરે વસ્તુઓનો યોગ આપના જોવામા આવ્યો જ હશે એટલા માટે તમે કૃપા કરીને એમાંથી ગમે તે યોગ મને ચોક્કસ આપો કે જેના સેવનથી હું ફરી તેતલિપુત્રની ઈષ્ટ કાંત પ્રિય મનોજ્ઞ અને મનોમ થઈ જાઉં

अज्जाओ ' इति, तत=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे आर्याः ! ' सिक्खियाओ ' शिक्षिता=शिक्षां प्राप्ता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणाः ' बहूपढियाओ ' बहुपठिता'=नानाविधविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहूणि गामागर जाव अडिंडह ' बहूनि ग्रामाकर यावत् आहिण्डथ=बहुषु ग्रामाकरनगरादिषु परि भ्रमण कुरुथ । तथा च ' बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसह ' बहूना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुप्रविशथ=हे आर्याः ! यूय बहूना राजेश्वर तलवरश्रेष्ठि सेना-पत्यादीना गृहे प्रवेश कुरुथ, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् 'अत्थि आइ मे अज्जाओ !' अस्ति आइ युष्माकमार्या ! ' आइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युष्माक ज्ञानविषये ' चुण्णजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णाना द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग 'कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती है, अनेक राजेश्वर आदिकों के घरों में आती जाती रहती हैं (त अत्थिआइ भे अज्जाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) कहीं कोई चूर्ण योग - द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले, कदे छल्ली, वल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मन्त्र योग-वशीकरण आदि मन्त्रों का

તો વાત જ કયા રહી ? એથી હે આર્યાઓ તમે સૌ શિક્ષિતા છો, બહુજ્ઞાતા છો-એટલે કે ઘણા શાસ્ત્રોના જ્ઞાનથી નિપુણ છો, બહુપઠિતા છો-અનેક જાતની વિદ્યાઓમા કુશળ છો, ઘણા ગામ, આકર સ્થાનોમા વિહાર કરતા રહો છો, અને ઘણા રાજેશ્વર વગેરેના મહેલોમા આવજા કરતા રહો છો (ત અત્થિ આઇ મે અજ્જાઓ) તો હે આર્યાઓ ! (કેઇ કહિ ચિચુન્નજ્જોએવા) કયાક ગમે તે ચૂર્ણ યોગ-દ્રવ્ય ચૂર્ણોનો સ્તભન વગેરેનો યોગ,

(मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि)

वा ' कार्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' हिय उड्डावणे वा '=हृदयोड्डायन वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा ' काउड्डायने वा ' कायोड्डायन वा=शरीराकर्षकवस्तुविशेषो वा ' आभिओगिए वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो वा, ' वसाकरणे वा ' वशीकरण वा=वशीकरणयोगो वा, ' कोउयकम्मे वा ' कौतुककर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकम्मे वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रितभस्मप्रक्षेपण वा तथा-ओषधीना ' मूले ' मूलम् ' कदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक् ' वल्ली ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=गुटिका ' ओसहे वा भेसज्जे वा ' औषध वा भैषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजातं युष्माभिः 'उवलद्धपुव्वे ' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः ! भवत्य एषु किमपि उपलब्धपूर्वा अवश्य भवेयु', तत्कृपया मह्यमर्पय, 'जेणाह' येनाहम् , यत्सेवनादहं तेतलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम् । ततः खलु ता आर्या. पोट्टिलाया एवमुक्ता. सत्यो द्वावपि हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कार्मण योग-उच्चाटन आदि मन्त्रो का योग हृदयोड्डीयन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्डायन—शरीराकर्षक वस्तु विशेषका योग, आभियोगिक पराभव करन का योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग, भूति कर्म-मन्त्रादि से अभिमन्त्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा ओषधियों के मूल, कद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष गोली, औषध-भैषज्य इत्यादि वस्तुओ का योग आपके देखने में अवश्य आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हम अवश्य-अवश्य प्रदान करे कि जिससे मै-जिस के सेवन से मैं-तेतलिपुत्र का पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम बन जाऊँ (तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणाओ दोवि हत्थे कन्ने ठवेंति,

---

મંત્રયોગ-વશીકરણ વગેરે મંત્રોનો યોગ-કાર્મણયોગ, ઉચ્ચારણ વગેરે મંત્રોનો યોગ, હૃદયોડ્ડાવન-ચિત્તાકર્ષક વસ્તુ વિશેષનો યોગ, આભિયોગિક-પરાભવ કરવાનો યોગ, વશીકરણ-વશીકરણ યોગ, કૌતુકકર્મ-સૌભાગ્યવર્દ્ધક સ્નાન વગરેનો યોગ, ભૂતિકર્મ-મંત્ર વગેરેથી અભિમંત્રિત કરીને ભસ્મ (રાખોડી) નુ પ્રક્ષેપણ રૂપ યોગ તેમજ ઔષધીઓના મૂળ, કંદ, ત્વક (છાલ) તેમજ લતા, શિલિકા-તૃણ વિશેષ ગોળી, ઔષધ, ભૈષજ્ય વગેરે વસ્તુઓનો યોગ જ્યારે જોવામા ચોક્કસ આવ્યો જ હશે એટલા માટે તમે કૃપા કરીને બતાવો જે યોગ મને ચોક્કસ આવ્યો હોય જેના સેવનથી હું ફરી તેતલિ [illegible] ાત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ થઈ જાઉં

पोट्टिलाम् एवमवदन्-वयं खलु हे देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य , यावद्-अष्टादशब्रह्मचारिण्यः, नो खलु कल्पतेऽस्माकम् ' एयप्पयार ' एतत्प्रकार=कर्णोरपि 'णिसामेत्तए' निशामयितुं=श्रोतुं न कल्पत इति पूर्वेण सम्बन्धः । ' अज्ज इति सम्बोधने ' हे पोट्टिले ! किं=कथं पुनः ' उवदिसित्तए वा ' उपदेष्टुम् वा, स्वयम् ' आयरित्तए वा ' आचरितुं वा कल्पते । न कल्पतइत्यर्थः, वयं खलु तव हे देवानुप्रिये ! विचित्रं केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं परिकथयामः । ततः खलु सा पोट्टिला ठाविंसा पोट्टिल एव वयासी-अम्हेण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गथीओ जाव गुत्तबभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारकन्नेहि वि निसामित्तए किमग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा। अम्ह ण तव देवाणुप्पिया ! विचित्त केवलिपन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो) इस प्रकार उस पोट्टिला के द्वारा कहीं गई उन आर्याओं ने अपने दोनों कानोंपर हाथ रख लिये-और रख कर पोट्टिला से इस प्रकार कहने लगीं—हे देवानुप्रिये ! हम तो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ हैं, नव कोटि से पूर्ण ब्रह्मचर्यको हम पालती हैं। हमें तुम्हारी ऐसी बाते कानों से सुनना भी कल्पित नहीं हैं तो फिर हे पुत्रि ! हम इनका उपदेश तुम्हें कैसे दे सकते हैं-और स्वय भी इनका आचरण कैसे कर सकता हैं। अर्थात् इन बातों का उपदेश देना और स्वय इनको अपने आचरण में लाना यह सब हमारे कल्प के अनुसार निषिद्ध है । हम तो हे देवानुप्रिये ! तेरे हितके

(तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एववुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति, ठाविंसा पोट्टिल एव वयासी अम्हेण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गथीओ जाव गुत्तबभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारकन्नेहि वि निसामित्तए किमग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा ! अम्ह ण तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलिपन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो)

આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાની વાત સાભળીને તે આર્યાઓએ પોતાના બંને કાનો ઉપર હાથ મૂકી દીધા અને મૂકીને એમ કહેવા લાગી હે દેવાનુપ્રિયે ! અમે તો નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ નવવાડ સહિત બ્રહ્મચર્યનું અમે પાલન કરીએ છીએ હે પુત્રિ ! તમારી એવી વાનો અમારા માટે કાનથી સાભળવી પણ યોગ્ય લેખાય નહિ ત્યારે તેના વિશે ઉપદેશની વાત તો સાવ અયોગ્ય જ છે અમે આ વિશે તમને કોઇ પણ જાતનો ઉપદેશ પણ આપી શકીએ નહીં તો પછી જાતે આનુ આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ ? એટલે કે આ બાબ તનો ઉપદેશ આપવો તેમજ પોતે આનુ આચરણ કરવુ તે રા કલ્પ

ता आर्या एवमवादीत्-इच्छामि खलु हे आर्याः ! युष्माकमन्तिके केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं निशामयितुम्=श्रोतुम् । ततः खलु सा पोट्टिला धर्मं श्रुत्वा 'निसम्म' निशम्य=हृदयेनाधार्य हृष्टतुष्टा एवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु हे आर्या ! नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं यावत् 'से' तत् तथैव यथैतद् यूयं वदथ । हे आर्याः ! 'इच्छामिण' इच्छामि खलु अहं युष्माकमन्तिके 'पचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं' पञ्चाणुव्रतिकं यावत् गृहिधर्मं 'पडिवज्जित्तए' प्रतिपत्तुं=स्वीकर्तुम् । अनन्तरं ता आर्या एवमवा

लिये विचित्र केवलि प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश करते हैं (सो तू सुन)- (तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी इच्छामि णं अज्जाओ! तुम्ह अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेत्तए-तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तधम्मं परिकहेंति) उनकी इस प्रकार बात सुन कर उस पोट्टिलाने उनसे कहा-हे आर्याओ ! मैं आप लोगों के मुख से केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहती हू । पोट्टिला की ऐसी प्रार्थना सुन कर उन आर्याओं ने उस पोट्टिला के लिये विचित्र केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनाया (तएणं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा एवं वयासी) उन के मुखसे केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुन कर और उसे अपने हृदयमे अवधृत कर अत्यन्त हर्षित एवं संतुष्ट हूई उस पोट्टिलाने उनसे ऐसा कहा (सद्दहामि णं अज्जाओ ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहियं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए-अहासुहं, तएणं सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पचाणुव्वइयं

મુજબ અયોગ્ય ગણાય છે હે દેવાનુપ્રિયે ! અમે તો તારા હિત માટે વિચિત્ર કેવળિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો ઉપદેશ આપીએ છીએ તેને તું સાંભળ

(तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेत्तए-तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं परिकहेंति)

તેમની આ જાતની વાત સાંભળીને તે પોટ્ટિલાએ તેમને એમ કહ્યું કે હે આર્યાઓ ! તમારા મુખથી હું કેવળી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સાંભળવા ઇચ્છું છું પોટ્ટિલાની એવી વિનંતી સાંભળીને તે આર્યાઓએ તેને વિચિત્ર કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો (तएणं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठा एवं वयासी) તેમના મુખથી કેવળી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરીને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ખૂબ જ હર્ષિત અને સંતુષ્ટ થતી તે પોટ્ટિલાએ તેમને એમ કહ્યું કે

(सद्दहामिणं अज्जाओ ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहियं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए-अहा-

पोट्टिलाम् एवमवदन्-वयं खलु हे देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य, यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यः, नो खलु कल्पतेऽस्माकम् 'एयप्पयार' एतत्प्रकार=कर्णोरपि 'णिसामेत्तए' निशामयितुं=श्रोतुं न कल्पत इति पूर्वेण सम्बन्धः। 'अज्ज इति सम्बोधने' हे पोट्टिले ! किं=कथं पुनः 'उवदिसित्तए वा' उपदेष्टुं वा, स्वयम् 'आयरित्तए वा' आचरितुं वा कल्पते। न कल्पतइत्यर्थः, वयं खलु तव हे देवानुप्रिये ! विचित्र केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं परिकथयामः। ततः खलु सा पोट्टिला ठावित्ता पोट्टिल एव वयासी-अम्हेणं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारकन्नेहिं वि निसामित्तए किमंग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा। अम्ह णं तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो) इस प्रकार उस पोट्टिला के द्वारा कहीं गई उन आर्याओं ने अपने दोनों कानोंपर हाथ रख लिये-और रख कर पोट्टिला से इस प्रकार करने लगीं-हे देवानुप्रिये ! हम तो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ हैं, नव कोटि से पूर्ण ब्रह्मचर्यको हम पालती हैं। हमें तुम्हारी ऐसी बाते कानों से सुनना भी कल्पित नहीं हैं तो फिर हे पुत्रि ! हम इनका उपदेश तुम्हें कैसे दे सकते हैं-और स्वयं भी इनका आचरण कैसे कर सकता हैं। अर्थात् इन बातों का उपदेश देना और स्वयं इनको अपने आचरण में लाना यह सब हमारे कल्प के अनुसार निषिद्ध है। हम तो हे देवानुप्रिये ! तेरे हितके

(तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एववुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति, ठाविता पोट्टिल एवं वयासी अम्हेणं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारकन्नेहिं वि निसामित्तए किमंग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा ! अम्ह णं तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो)

આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાની વાત સાભળીને તે આર્યાઓએ પોતાના બંને કાનો ઉપર હાથ મૂકી દીધા અને મૂકીને એમ કહેવા લાગી હે દેવાનુપ્રિયે ! અમે તો નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ નવવાડ સહિત બ્રહ્મચર્યનુ અમે પાલન કરીએ છીએ હે પુત્રિ ! તમારી એવી વાતો અમારા માટે કાનથી સાભળવી પણ યોગ્ય લેખાય નહિ ત્યારે તેના વિશે ઉપદેશની વાત તો સાવ અયોગ્ય જ છે અમે આ વિશે તમને કોઇ પણ જાતનો ઉપદેશ પણ આપી શકીએ નહીં તો પછી જાતે આનુ આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ ? એટલે કે આ બાબતનો ઉપદેશ આપવો તેમજ પોતે આનુ આચરણ કરવું તે બધુ અમારા કલ્પ

मूलम्–तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावर-त्तकालसमयंसि कुडुंबजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जे। एव खलु अह तेयलिपुत्तस्स पुव्वि इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव पारिभोग वा, त सेय खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए, एव संपेहेइ, संपेहित्ता, कल्ल जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयलपरिग्गहिय दसनहं सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी — एव खलु देवाणुप्पिया ! मए सुव्वयाण अज्जाण अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए। तएण तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एव वयासी–एव खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे काल किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुम देवाणुप्पिए ! मम ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलि पन्नत्ते धम्मे बोहेहि, तोह विसज्जेमि, अह णं तुम मम ण संबोहेसि, तो ते ण विसज्जेमि । तएण सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ । तत. खलु तेतलिपुत्ते विपुल असण४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमतेइ, आमतित्ता,, जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता, पोट्टिल पहाय जाव पुरिससहस्सवाहिणि सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता

लाभेमाणी विहरइ) इस प्रकार श्रमणोपासिका बनी हुई वह पोट्टिला निर्ग्रन्थ श्रमणजनोंको एव निर्ग्रन्थ श्रमणियो को दान–चारों प्रकार का आहार देती हुई अपना समय व्यतीत करने लगी ॥ सू० ७ ।

નિર્ગ્રંથ શ્રમણો અને નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને દાન–અશન વગેરે ચાર પ્રકારના આહારો–અપતા

दिपुः- अहासुह ' यथा सुख, हे देवानुप्रिये ! । तत खलु सा पोट्टिला तासा मार्याणामन्तिके पञ्चाणुव्रतिक यावद् गृहिधर्म प्रतिपद्यते, पुनस्ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा प्रतिविसर्जयति । ततः सा पोट्टिलाश्रमणोपासिका जाता, ' जाव पडिलाभेमाणि ' यावत् प्रतिलम्भयन्ती=निर्ग्रन्थेभ्य' श्रमणेभ्यः श्रमणीभ्यश्च चतुर्विधमाहार ददती विहरति ॥ सू० ७ ॥

जाव गिहिधम्म पडिवज्जेइ, ताओ अज्जाओ वदइ, णमसइ वदित्ता णमसित्ता पडिविसज्जेइ) हे आर्याओ ! म इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करती हू यावत् ऐसा मानती हू कि यह निर्ग्रन्थ प्रवचन जैसा आप कहती है वैसा ही है । अतः हे आर्याओ ! अब में आपके पास पचाणु व्रत सात शिक्षाव्रत आदि रूप १२ बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म को धारण करना चाहती हू । इस तरह पोट्टिला की भावना जान कर उन आर्याओ ने उससे कहा-यथा सुख देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह सुख हो वैसा तू कर-शुभकार्यमें विलम्ब करना योग्य नहीं है-इस प्रकार उन आर्याजनोंकी आज्ञा प्राप्त कर उस पोट्टिलाने उन्हीं आर्याओं के पास से श्रावकधर्म पच अणुव्रत एव सात शिक्षाव्रतों को धारण कर लिया । इस प्रकार श्रमणोपासिका बनी हुई उस पोट्टिला ने उन आर्याओं को वन्दना एव नमस्कार की-वन्दना नमस्कार करके फिर उन्हें विसर्जित कर दिया । (तएण सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडि

सुह तएण सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जेइ ताओ अज्जाओ वदइ, णमसइ वदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ)

હે આર્યાઓ ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ઉપર હું શ્રદ્ધા કરૂ છુ યાવત્ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન જેવુ તમે કહો છો તેવુ જ છે એથી હે આર્યાઓ ! હવે હુ તમારી પાસેથી પાચ અણુવ્રત વગેરેનો 'ગૃહસ્થ ધર્મ' ધારણ કરવા ઇચ્છુ છુ આ રીતે પોટ્ટિલાના વિચારો જાણીને તે આર્યાઓએ તેને કહ્યુ કે 'યથાસુખમ્' એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમા સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ તુ કર સારા કામમા વિલબ કરવો જોઇએ નહિ આ પ્રમાણે ત આર્યાઓની આજ્ઞા મેળવીને તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓની પાસથી શ્રાવક-ધર્મ-પાચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો-ને ધારણ કરી લીધો આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલાએ ત આર્યાઓને વદન તે જ નમસ્કાર કર્યા અને વદન તથા નમન કરીને તેમને વિનય આપી (तएण सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ) 'આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલા

रिय जागरमाणीए ' कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्रूप, ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिक'=आत्मगतो यावन्मनोगत, सङ्कल्प समुत्पन्नः। सङ्कल्पप्रकारमाह-एव खलु अहं तेतलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा आसम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोगं वा । अस्याभिप्रायः-अहो मनुष्याणा मनोवृत्तेरस्थिरता। पूर्व यस्याहम् इष्टा कान्ता प्रियाऽदिकाऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि। अय तेतलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोग वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः। ' त ' तत्=तस्मात्कारणात् ' सेय '

यसि) रात्रि के पिछले भागमें (कुडुम्बजागरिय-जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) कुटुम्ब की चिन्ता से जाग रही थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(एव खलु अह तेयलिपुत्तस्स पुव्वि इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोग वा, त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए) मैं पहिले तेतलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हू—अनिष्ट आदि बन गई हू। और बातों की बात ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तक नहीं देखना चाहते है-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है—पूर्व में जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि बन गई हू। यह तेतलिपुत्र तो मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે

(एव खलु अह तेयलिपुत्तस्स पुव्वि इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगा वा त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए)

પહેલા હુ તેતલિપુત્રને ખૂબજ ઇષ્ટકાત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હુ તેમના મ ટે તેવી રહી નથી અનીષ્ટ વગેરે થઇ પડી છુ મારી સાથે વાતચીતની વાત તો દૂર રહી પણ તેઓ મારુ મો પણ જોવા માગતા નથી ખેરખર પુરુષોની મનોવૃત્તિ કેટલી બધી ચચળ હોય છે ? જેને પહેલા જે હુ ઇષ્ટ, કાત, પ્રિય, વગેરેના રૂપમ હતી, હવે તેને તેજ હુ અનિષ્ટ અપ્રિય વગેરે થઈ પડી છુ આ તેતલિપુત્ર મારા નામગોત્ર સુદ્ધા સાભળવા માગતા નથી ત્યારે મને જોવાની અને મારી સાથે રહેવાની તો તેમને પાછવા પહોરમા (कुडुम्बजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) ઘર-ગૃહસ્થીના વિચારકરતી જાગી રહી હતી ત્યારે-આ જાતનો

मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सेयालिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ। पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ। तेतलिपुत्ते पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ४, एसणं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं अहासुहं मा पडिवंध करेहि। तएण सा पोट्टिला सुव्वयाहि अज्जाहि एवंवुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता, जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी-आलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता, आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा ॥सू०८॥

टीका—' तएणं तीसे ' इत्यादि। तत खलु तस्या पोट्टिलाया. ' पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रे पश्चिमेभागे ' कुडुंब जाग

तएण—'तीसे पोट्टिलाए' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तीसे पोट्टिलाए) उस पोट्टिला के जब कि वह (अन्नया कयाइ किसी एक दिन (पुव्वावरत्तकालसमय

'तएण-तीस पोट्टिलालाए' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) त्यार पछी (तीसे पोट्टिलाए) ते पोट्टिलाने-के ज्यारे ते (अन्नया कयाइ) કોઇ એક દિવસે (~ २।

रिय जागरमाणीए ' कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्रूप, ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिक'=आत्मगतो यावन्मनोगत, सकल्प समुत्पन्नः। सङ्कल्पप्रकारमाह-एव खलु अहं तेतलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया, मनोज्ञा मनोऽमा आसम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोग वा । अस्याभिमान'-अहो मनुष्याणा मनोवृत्तेरस्थिरता। पूर्व यस्याहम् इष्टा कान्ता, प्रियाऽदिकाऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि। अय तेतलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति, किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोग वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थ'। ' त ' तत्=तस्मात्कारणात् ' सेय '

यसि) रात्रि के पिछले भागमें (कुटुम्बजागरिय-जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) कुटुंब की चिन्ता से जाग रही थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(एव खलु अह तेयलिपुत्तस्स पुव्वि इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोग वा, त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए) मैं पहिले तेतलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हू—अनिष्ट आदि बन गई हू। और बातो की बात ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तक नही देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है—पूर्व में जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि बन गई हू। यह तेतलिपुत्र तो मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो, चाहना ही

આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે

(एव खलु अह तेयलिपुत्तस्स पुव्वि इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगा वा त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए)

પહેલા હુ તેતલિપુત્રને બહુજ ઇષ્ટકાત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હુ તેમના મટે તેવી રહી નથી અનીષ્ટ વગેરે થઇ પડી છુ મારી સાથે વાતચીતની વાત તો દૂર રહી પણ તેઓ મારૂ મોં પણ જોવા માગતા નથી એરખર પુરૂષોની મનોવૃત્તિ કેટલી બધી ચચળ હોય છે ? જેને પહેલા જે હુ ઇષ્ટ, કાત, પ્રિય, વગેરેના રૂપમા હતી, હવે તેને તેજ હુ અનિષ્ટ અપ્રિય વગેરે થઈ પડી છુ આ તેતલિપુત્ર મારા નામગોત્ર સુદ્ધા સાભળવા માગતા નથી ત્યારે મને જોવાની અને મારી સાથે રહેવાની તો તેમને મૂછવા પહોચ્યા (कुटुम्बजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) ઘર-ગૃહસ્થીના વિચારકરતી જાગી રહી હતી ત્યારે-આ જાતનો

श्रेयः=उचितं खलु मम सुव्रतानामार्याणामन्तिके प्रव्रजितुम्, एवं संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्लं जाव पाउप्पभायाए' कल्यं यावत् प्रादुष्प्रभातायाम्=प्रातः सूर्योदयसमये यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य 'करयल० परि०' करतलपरीगृहीतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय! मया सुव्रतानामार्याणामन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, 'जाव अब्भणु

उसे कैसे हो सकती है। इस लिये मुझे अब यही उचित है कि मैं सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रजित हो जाऊँ। (एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार जब वह विचार कर चुकी तो विचार करके फिर जब प्रातःकाल हुआ और सूर्य का उदय हो चुका तब जहां तेतलिपुत्र था वहां पहुंची (उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु-तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि) वहां जा कर उसने दोनों हाथ जोड कर उस को नमस्कार किया-बाद में वह इस प्रकार उससे कहने लगी हे देवानुप्रिय! बात ऐसी है कि मैंने

ઇરછા જ શી હોય? એથી મને હવે એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું સુવ્રતા આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ જાઉં

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય થતા જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો ત્યાં પહોંચી

(उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे काल किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि तं जइणं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि)

ત્યાં જઈને તેણે તેમને બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિય! મેં સુવ્રતા [illegible] પાસેથી

ण्णाया पव्वइत्तए ' यावदभ्यनुज्ञाता प्रव्रजितुम्=स धर्मो मम मनसि रुचितः तस्माद् भवताऽभ्यनुज्ञातासती प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः । ततः खलु तेतलिपुत्रः पोट्टिलामेवमवदत्—एव खलु त्व देवानुप्रिये ! मुण्टा प्रव्रजिता सती कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपत्स्यते । ' त ' तदा यदि खलु त्व देवानुप्रिये ! मा ततो देवलोकादागत्य केवलिप्रज्ञप्त धर्मं बोधये , ' तोहं ' तदाऽह त्वा ' विसज्जेमि ' प्रव्रजितुमाज्ञापयामि । 'अह ण' अथ खलु यदि खलु त्व मा 'ण सबोहेसि ' न सबोधयसि=केवलिप्रज्ञप्त धर्मं बोधयितु प्रतिज्ञां न करोपि ' तो ' तदा ' ते ' त्वा न विसृजामि=प्रव्रजितु नाज्ञापयामि । ' तएण ' तत खलु=तेतलिपुत्रस्य एतद्वचनश्रवणानन्तम् , सा पोट्टिला तेतलिपुत्रस्य ' एयमट्ठ ' एतमर्थं=धर्मं प्रति बोधनरूपमर्थं ' पडिसुणेइ ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तेतलिपुत्रो विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहारम् , ' उवक्खडावेइ ' उपस्कारयति=निष्पादयति, ' उवक्खडावित्ता ' उपस्कार्य ' मित्तणाइ जाव आमतेइ ' मित्रज्ञाति

सुव्रता आर्यिका के पास धर्म का उपदेश सुना है वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ है । इस लिये मैं आपसे आज्ञा लेकर दीक्षित होना चाहती हूँ । पोट्टिला की ऐसी बात सुन कर तेतलिपुत्रने उससे कहा—देवानुप्रिये ! बात ऐसी है कि तुम दीक्षित हो कर जब काल अवसर काल करोगी (यह निश्चित है) अन्यतर देवलोक में देवता की पर्याय से उत्पन्न होओगी–तब यदि देवानुप्रिय ! मुझे वहां से आ कर तुम केवलिप्रज्ञप्त धर्म समझाओ–तो मैं तुम्हे प्रव्रजित होने के लिये आज्ञा दे सकता हूँ (अह ण तुम मम ण सबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएण सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, ततः खलु तेयलिपुत्ते विपुल असण ४ उवक्डावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ जाव

ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો છે અને તે મને ગમી ગયો છે, એટલા માટે હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છુ છુ પોટ્ટિલાની આ જાતની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્રે તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દીક્ષિત થઇને જ્યારે કાળના સમયે કાળ કરશો અને અન્યતર દેવલોકમા દેવતાના પર્યાયથી જન્મ પામશો ત્યારે જો તમે હે દેવાનુપ્રિયે ! ત્યાથી આવીને મને કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સમજાવો તો હુ તમને અત્યારે ખુશીથી પ્રવજીત થવાની આજ્ઞા આપી શકુ તેમ છુ

(अह ण तुम मम णं सबोहेसिं तो ते ण विसज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, तत. खलु तेतलिपुत्ते विपुल अमण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमंतेइ, आमंतित्ता, मित्तणाइ सम्माणित्ता पोट्टिल

श्रेयः=उचितं खलु मम सुव्रतानामार्याणामन्तिके प्रव्रजितुम्, एवं संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्लं जाव पाउप्पभायाए' कल्यं यावत् प्रादुष्प्रभातायाम्=प्रातः सूर्योदयसमये यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य 'करयल० परि०' करतलपरीगृहीतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय! मया सुव्रतानामार्याणामन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, 'जाव अब्भणु

उसे कैसे हो सकती है। इस लिये मुझे अब यही उचित है कि मैं सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रजित हो जाऊँ। (एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार जब वह विचार कर चुकी तो विचार करके फिर जब प्रातःकाल हुआ और सूर्य का उदय हो चुका तब जहां तेतलिपुत्र था वहां पहुंची (उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु-तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! मम ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि) वहां जा कर उसने दोनों हाथ जोड कर उस को नमस्कार किया-बाद में वह इस प्रकार उससे कहने लगी हे देवानुप्रिय! बात ऐसी है कि मैंने

દરકાર જ શી હોય? એથી મને હવે એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું સુવ્રતા આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ જાઉં

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય થતાં જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો ત્યાં પહોંચી

(उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे काल किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि तं जइणं तुमं देवाणुप्पिए! मम ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि)

ત્યાં જઈને તેણે તેમને બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિય! મે સુવ્રતા આ[illegible] પાસેથી

दूरोह=आरोह ' मित्तणाइ जाव सेपरिवुडे ' मित्रज्ञाति यावत् सपरिवृतः=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनादिभिर्युक्तः ' सव्विड्ढीए ' सर्वद्धर्या ' जाव रवेणं ' यावद्रवेण=भेर्यादिनिनादेन सह तेतलिपुरस्य मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति । सा पोट्टिला शिविकातः ' पच्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति=अवतरति। तत स तेतलिपुत्र पोट्टिला पुरतः कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-एव खलु हे देवानुप्रियाः मम पोट्टिलाभार्या इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा, वर्तते,

બેઠા કર મિત્ર, જ્ઞાતિ સ્વજન સબન્ધી પરિજનોં સે યુક્ત હોકર અપની સમસ્ત વિભૂતિ કે અનુસાર ગાજે બાજેકે સાથ તેતલિપુર નગર કે બીચો-બીચ ચલ કર વહ જહાં સુવ્રતા આર્યિકા કા ઉપાશ્રય થા વહા પહુંચા । (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसण ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्ख अहासुह मा पडिवध करेहि) પોટ્ટિલા શિવિકા સે ઉતરી-તેતલિપુત્ર પોટ્ટિલાકો આગે કરકે જહાં સુવ્રતા આર્યિકા થીં વહાં ગયા । જા કર ઉસને ઉનકો વંદનાકી નમસ્કાર કિયા। વંદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઇસ પ્રકાર કહને લગા હે દેવાનુપ્રિયે ! યહ મેરી પોટ્ટિલા નામ કી પત્ની હૈ । યહ મુઝે ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, મનોજ્ઞ એવ મનોમ હૈ । ઇસને

પાલખીમા બેસાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબધી પરિજનોને સાથે લઈને તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાજવાજાની સાથે તેતલિપુર નગરની વચ્ચોવચ્ચ થઈને જ્યા તે સુવ્રતા આર્યિકાનો ઉપાશ્રય હતો ત્યા પહોચ્યો (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसण ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्ख अहासुह मा पडिवध करेहि) પોટ્ટિલા પાલખીમાથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોટ્ટિલાને આગળ રાખીને જ્યા સુવ્રતા આર્યિકા હતી ત્યા ગયો. ત્યા જઈને તેણે તેમને વદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોટ્ટિલા નામે મારી પત્ની છે મને એ ઇષ્ટ કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે એણે તમારી પાસેથી ધર્મનુ શ્રવણ કર્યુ છે

यावद्दामन्त्रयति, मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, 'आमंतित्ता' आमन्त्र्य 'जाव समाणेइ' यावत्-समानयति=अशनपानादि चतुर्विधाहारेण समान्य, 'पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीअं' पोट्टिलं स्नातं यावत् पुरुषसहस्रवाहिनी शिबिकाम्, 'दूरोहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, 'दुरुहित्ता' आमंतेइ आमंतित्ता जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं तेयलिपुरस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ) यदि तुम मुझे संबोधित नहीं करोगी अर्थात् केवलि प्रज्ञप्त धर्म को मुझे समझाने की प्रतिज्ञा नहीं करोगी तो मैं तुम्हे दीक्षित होने की आज्ञा नहीं दूँगा—इस प्रकार के तेतलिपुत्रके इस कथनको उस पोट्टिलाने स्वीकार कर लिया। अर्थात् मैं देवलोक में जाऊँगा तो वहा से आ कर आप को प्रतिबोध दूँगी इस प्रकार जब पोट्टिला ने स्वीकार कर लिया। इस के बाद तेतलिपुत्र ने विपुल मात्रा अनशनादि रूप चारों प्रकार का आहार निष्पन्न करवाया-करवा करके फिर उसने अपने मित्र, ज्ञाति, आदि जनो को आमन्त्रित किया। मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबन्धी परिजनोंको आमन्त्रित करके यावत् अशन पानादिरूप इस चतुर्विध आहार से उनका सन्मान करके उसने पोट्टिलाको स्नान करवा कर यावत् उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर बैठाया,

ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ दुरूहित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं तेयलिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ)

જો તમે મને સંબોધશો નહિ એટલે કે જો તમે મને કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સમજાવવાની પ્રતિજ્ઞા કરશો નહિ તો તમને હું કોઇપણ સંજોગોમા પણ દીક્ષા સ્વીકારવાની આજ્ઞા આપીશ નહિ આ રીતે કહેવાથી પોટ્ટિલાએ તેતલિપુત્રના કથનને સ્વીકારી લીધુ એટલે કે પોટ્ટિલાએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઇને કહ્યું કે હું દેવલોકમા જઇશ અને ત્યાથી આવીને તમને ધર્મનો બોધ આપીશ આમ જ્યારે પોટ્ટિલાએ સ્વીકારી લીધુ, ત્યારપછી તેતલિપુત્રે પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરેના રૂપમા ચાર જાતના આહારો બનાવડાવ્યા અને ત્યારબાદ તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, વગેરે સ્વજનોને આમંત્રણ આપ્યુ મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધી પરિજનોને આમંત્રણ આપીને યાવત્ અશન પાન વગેરે ચાર જાતના આહારોથી તેમનુ સન્માન કરીને તેણે પોટ્ટિલાને સ્નાન કરાવડાવ્યુ અને યાવત તેને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલ[illegible] સાડી.

दूरोह्य=आरोह्य 'मित्तणाइ जाव सपरिवुडे' मित्रज्ञाति यावत् सपरिवृतः=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनादिभिर्युक्तः 'सव्विड्ढीए' सर्वर्द्धया 'जाव रवेण' यावद्रवेण=भेर्यादिनिनादेन सह तेतलिपुरस्य मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति। सा पोट्टिला शिबिकातः 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति। ततः स तेतलिपुत्र पोट्टिला पुरतः कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-एष खलु हे देवानुप्रियाः मम पोट्टिलाभार्या इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा, वर्तते,

बैठा कर मित्र, ज्ञाति स्वजन सम्बन्धी परिजनों से युक्त होकर अपनी समस्त विभूति के अनुसार गाजे बाजेके साथ तेतलिपुर नगर के बीचों-बीच चल कर वह जहां सुव्रता आर्यिका का उपाश्रय था वहा पहुँचा। (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वंदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसण ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्ख अहासुह मा पडिवध करेहि) पोट्टिला शिबिका से उतरी-तेतलिपुत्र पोट्टिलाको आगे करके जहां सुव्रता आर्यिका थीं वहां गया। जा कर उसने उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके फिर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिये! यह मेरी पोट्टिला नाम की पत्नी है। यह मुझे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम है। इसने

પાલખીમા બેસાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબધી પરિજનોને સાથે લઇને તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાજાવાજાની સાથે તેતલિપુર નગરની વચ્ચોવચ્ચ થઇને જ્યા તે સુવ્રતા આર્યિકાનો ઉપાશ્રય હતો ત્યા પહોચ્યો. (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसण ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्ख अहासुह मा पडिवधं करेहि) પોટ્ટિલા પાલખીમાથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોટ્ટિલાને આગળ રાખીને જ્યા સુવ્રતા આર્યિકા હતી ત્યા ગયો ત્યા જઈને તેણે તેમને વદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે! આ પોટ્ટિલા નામે મારી પત્ની છે મને એ ઈષ્ટ કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે એણે તમારી પાસેથી ધર્મનુ શ્રવણ કર્યુ છે

एषा खलु भवतीना समीपे धर्मं श्रुत्वा, धर्मश्रवणजनितवैराग्यवशात् संसारभयो द्विग्ना 'जाव पव्वइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम् भीता जन्ममरणेभ्यो भवतीनामन्तिके प्रव्रज्या ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानुप्रियाः ! इमा शिष्याभिक्षाम्, सुव्रतार्या प्राह-यथासुखम् मा प्रतिबन्धं कुरुध्वं । तत. खलु सा पोट्टिला सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्राम्यति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्यालङ्कारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवदत्-'आलित्तेणं भंते ! लोए' आदीप्तः खलु भदन्त ! लोकः-हे आर्ये ! एष लोको जन्मजरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एवं' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणंदा' यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषाऽपि सुव्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यावत्-एकादश अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह ससार भय से उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, त्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित होना चाहती है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! आप मेरे द्वारा दी गई इस शिष्य भिक्षाको अगीकार कीजिये । तब सुव्रता आर्यिका ने कहा— यथा सुख मा प्रतिबध कुरुष्व—(तएण सा पोट्टिला-सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पचमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अलित्ते ण भंते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

તેના પ્રભાવથી એ સંસારભયથી વ્યાકુળ થઈને જન્મ-મરણથી ભીત અને ત્રસ્ત થઈને તમારી પાસેથી દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! મારા વડે અપાતી આ શિષ્યા રૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો. ત્યારે જવાબમા સુવ્રતા આર્યિકાએ તેને કહ્યું કે ' યથાસુખ મા પ્રતિબધ કુરુષ્વ '
(तएण सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तर पुरत्थिमं दिसी भाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पचमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता, णमसित्ता एव वयासी-अलित्तेण भंते ! लोए एव जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ, बहूणि

सलेखनया आत्मान जुष्टा पर्ष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा, 'आलोइयपडिक्ता' आलोचित प्रतिक्रान्ता 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ता कालमासे काल कृत्वा अन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपन्ना । सू० ८ ॥

वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कता समाहिपत्ता, कालमासे काल किच्चा अण्णतरेसु – देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा) इस प्रकार सुव्रता आर्यिका के द्वारा कही गई वह-पोट्टिला बहुत अधिक हृष्टतुष्ट हुई। बाद में वह ईशान कोणमें गई। वहां जाकर उसने अपने हाथों से शरीर पर रहे हुए आभरण, माल्य एव अलकारों को उतार दिया। उतार कर अपने आप पंचमुष्टिक केशों का लुचन किया-लुचन कर फिर वह जहां सुव्रता आर्या थीं वहां आई। आते ही उसने उन्हें वन्दना एव नमस्कार करके फिर वह इस प्रकार बोली— हे भदन्त ! यह लोक जरा मरण आदि दुःखों से प्रज्वलित हो रहा है, इस प्रकार से देवानदा की तरह यह सुव्रता आर्या के पास दीक्षित हो गई। यावत् उसने ११ अगों का अध्ययन भी कर लिया। बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्याय को पालन किया। प्रीतिपूर्वक अन्त में एक मास की सलेखना धारण कर ६०, भक्तों का अनशन द्वारा छेद

वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता, कालमासे काल किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा)

આ રીતે સુવ્રતા આર્યિકા વડે આજ્ઞા અપાયેલી પોટ્ટિલા ખૂબ જ હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈ ગઈ ત્યારપછી તે ઇશાન કોણ તરફ ગઈ અને ત્યા જઇને તેણે પોતાના હાથથી જ શરીર ઉપરના આભરણો, માળાઓ અને અલકારો ને ઉતાર્યા અને ઉતારીને પોતાની મેળે જ પાચ મુઠી કેશોનુ લુચન કર્યું લુચન કર્યા પછી તે જ્યા સુવ્રતા આર્યા હતી ત્યા આવતી રહી ત્યા આવીને તેણે તેમને વદન અને નમસ્કાર કર્યા, વદના અને નમસ્કાર કરીને તે આ પ્રમાણે વિનતી કરવા લાગી કે હે ભદન્ત ! આ ससार જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે દુખોથી સળગી રહ્યો છે આ રીતે પોટ્ટિલા દેવાનદાની જેમ સુવ્રતા આર્યાની પાસે દીક્ષિત થઈ ગઇ અને અનુક્રમે તેણે અગિયાર અગોનુ અધ્યયન પણ કરી લીધુ તેણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું છેવટે પ્રીતિપૂવક એક માસની સલેખના ધારણ કરીને અનશન વડે સાઠ ભક્તોનુ છેદન કર્યુ

एषा खलु भवतीना समीपे धर्मं श्रुत्वा, धर्मश्रवणजनितवैराग्यवशात् समारभयो द्विग्ना 'जाव पव्वइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके प्रव्रज्या ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानुप्रियाः ! इमा शिष्याभिक्षाम्, सुव्रतार्या प्राह-यथासुखम् मा प्रतिबन्धं कुरुध्वं । तत. खलु सा पोट्टिला सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्रामति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्यालकारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवदत्-'आलित्तेणं भंते ! लोए' आदीप्तः खलु भदन्त ! लोकः-हे आर्ये ! एष लोको जन्म जरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एवं' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणंदा' यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषाऽपि सुव्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यावत्-एकादश अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या

આપકે પાસ ધર્મ સુના હૈ સો ઉસકે પ્રભાવ સે યહ સસાર ભય સે ઉદ્વિગ્ન હો કર જન્મ મરણ સે ભીત, ત્રસ્ત હો કર આપકે પાસ દીક્ષિત હોના ચાહતી હૈ । ઇસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! આપ મેરે દ્વારા દી ગઈ ઇસ શિષ્ય ભિક્ષાકો અગીકાર કીજિયે । તબ સુવ્રતા આર્યિકા ને કહા— યથા સુખ મા પ્રતિબધ કુરુષ્વ—(तएण सा पोट्टिला-सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पचमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अलित्ते ण भंते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

તેના પ્રભાવથી એ સ સારભયથી વ્યાકુળ થઈને જન્મ-મરણથી ભીત અને ત્રસ્ત થઈને તમારી પાસેથી દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઈચ્છે છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! મારા વડે અપાતી આ શિષ્યા રૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો. ત્યારે જવાબમા સુવ્રતા આર્યિકાએ તેને કહ્યુ કે ' યથાસુખ મા પ્રતિબધ કુરુષ્વ ' (तएण सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिसी भाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पचमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता, णमसित्ता एव वयासी-अलित्तेण भंते ! लोए एव जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहस्सियं सवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिचह । सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकेहेइ । तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमार महया२ रायाभिसेएणं अभिसिचंति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झय रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी– एस णं पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अतेउरे य० तुम च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, तं तुमं ण तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इत अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोग च से अणुवड्ढेहि। तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा कदाचित् । ' कालधम्मुणा सजुत्ते ' कालधर्मेण सयुक्तः= मृतश्चाप्यभवत् । तत'

'तएण से कणगरहे राया' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएण

' तएण से कणगरहे राया ' इत्यादि

टीकार्थ–(तएण) त्यारपछी (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) ते કનકરથ

કવલિત થઇ ગયેા એટલે કે મૃત્યુ પામ્યેા

मूलम्-तएणं से कणगरहे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तएणं राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता, अन्नमन्न एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था, अम्हेणं देवाणुप्पिया! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्ह तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तएत्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियगेइ। अम्हे यणं रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए, तं जइणं देवाणुप्पिया! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, तण्णं तुमं अम्ह दलाहि। जाणं अम्हे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो। तएणं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर० एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर

दिया। छेद कर आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त हो गई और काल अवसर काल कर अन्यतर देवलोकमें देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गई। सू० ८॥

છેદન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાંત બનેલી તે સમાધિ પ્રાપ્ત થઈ ગઈ અને કાળ અવસરે કાળ કરીને અન્યતર દેવલોકમાં દેવતાના પર્યાયથી જન્મ પામી. સૂ. ૮

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी–एस ण देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहस्सियं सवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिचह । सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकेहेइ । तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिचंति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झय रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एव वयासी– एस णं पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अंतेउरे य० तुम च तेतलि पुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुमं ण तेयलिपुत्त अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंत अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोग च से अणुवड्ढेहि। तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोग च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा कदाचित् । ' कालधम्मुणा सजुत्ते ' कालधर्मेण सयुक्तः= मृतश्चाप्यभवत् । तत'

'तएण से कणगरहे राया' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएण

' तएण से कणगरहे राया ' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારપછી (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) તે કનકરથ રાજા કોઈ દિવસે કાલકવલિત થઇ ગયો એટલે કે મૃત્યુ પામ્યો

खलु ' राईसर० जाव '=राजेश्वर० यावत्=राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकादि सार्थवाहप्रभृतयः तस्य ' णीहरणं ' निहरणं=मृतकृत्यं कुर्वन्ति. कृत्वा अन्योऽन्यमेवमवदन्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! कनकरथो राजा 'रज्जे य जाव पुत्ते ' राज्ये च यावत् पुत्रान्=राज्यादिषु मूर्च्छित उत्पन्नान् पुत्रान् ' वियंगित्था ' अव्यङ्गयत्=विकृताङ्गान् कृतवान् मारितवानित्यर्थः । ' अम्हेण ' वयं खलु देवानुप्रिया ! ' रायाहीणा ' राजाधीनाः=राजवशवर्तिनः, ' रायाहिट्ठिया ' राजाऽधिष्ठिता=राजाश्रिता इत्यर्थः, ' रायाहीणकज्जा ' राजाधीनकार्याः, राजाधीन कार्य राईसर जाव णीहरण करेंति, करित्ता अन्नमन्न एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था) राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, सार्थवाह आदि व्यक्तियों ने मिल कर उसका दाह सस्कार किया । दाह संस्काररूप मृतक कृत्य करने के बाद फिर उन लोगों ने परस्पर में इस प्रकार का विचार किया । हे देवानुप्रियो ! देखो कनकरथ राजाने तो राज्य आदि में मूर्च्छित हो कर उत्पन्न हुए समस्त पुत्रों को विकृत अग करके मार डाला है (अम्हे णं देवाणुप्पिया ! राया हीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अय च ण तेत लीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दिन्नवियारे-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था) अब इस समय कोइ राजा है नही अतः हमलोगों का क्या होगा क्यो कि हम लोग तो हे देवानुप्रियो ! राजा वशवर्ती है, राजा के आश्रित ही रहते आये हैं, हमारा

(तएणं राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता अन्नमन्न एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था)

રાજેશ્વર, તલવર, માડમ્બિક કૌટુમ્બિક, સાર્થવાહ વગેરે લોકોએ મળીને તેનો અગ્નિ-સંસ્કાર કર્યો અગ્નિ-સંસ્કાર આદિ મૃત્યુ વિધિ પતાવીને તે લોકોએ પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ, રાજા કનકરથે તો રાજ્ય વગેરેની બાબતમા લોલુપ તેમજ મોહિત થઇને ઉત્પન્ન થયેલા પોતાના બધા પુત્રોના અંગો કાપીને મારી નાખ્યા છે

(अम्हेण देवाणुप्पिया ! राया हीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा, अय च ण तेतलीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दि विचारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था)

હવે અત્યારે કોઇ રાજા છે જ નહિ તો અમારી શી દશા થશે ? હે દેવાનુપ્રિયો ! અમે તો રાજાના વશવર્તી છીએ, રાજાને અધીન રહેવામા જ

येषा ते तथा, सर्वमस्माकं कृत्य राजाधीन वर्त्तते इति भावः । अयं च खलु तेतलि
रमात्यः कनकरथस्य राज्ञ ' सव्वट्ठाणेसु ' सर्वस्थानेषु=सधिविग्रहादिषु सर्वेषु
कार्येषु, ' सव्वभूमियासु ' सर्वभूमिकासु = स्वाम्यमात्यराष्ट्रदुर्गकोषबलसुहृत्पौर-
श्रेणिरूपाष्टविधासु ' लद्धपच्चए '=लब्धप्रत्यय -लब्धः=प्राप्त प्रत्ययो विश्वासो
यस्य सः, सकलजनविश्वासपात्रमित्यर्थः, ' दिन्नवियारे ' दत्तविचारः, दत्तः=
राज्ञे वितीर्णः, विचार=शोभनो विचारो येन स, लोकोपकारि विचारदायक इति-
भावः, ' सव्वकज्जवड्ढावए ' सर्वकार्यवर्द्धक =राज्ये समस्तकार्यसम्पादकश्चापि
' होत्था ' अस्ति । ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् ' सेय ' श्रेयः=उचित खलु अस्माकं
तेतलिपुत्रममात्य कुमार ' जाइत्तए ' याचितुम्, अयमभिप्राय'-यदयममात्यो
राज्ञ सकलकार्यनिर्वाहकः, अतस्तत्समीपे गत्वा ' कोऽपि राजलक्षणसपन्न
कुमारो राजपदे स्थापनीय. ' इति वार्तालापमुपक्रम्य, समागते प्रसङ्गे, तत्पुत्रो
राजपदे स्थापयितु याचनीय., ' त्तिकट्टु ' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा अन्यो-
ऽन्यस्य एतमर्थं ' पडिसुणेंति ' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, ' पडिसुणित्ता ' प्रति
श्रुत्य, यत्रैव तेतलिपुत्रोऽमात्यस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, एवमवदन्-एव खलु

जितना भी कार्य होता है वह सब राजाधीन ही होता आया है । इस लिये तेतलिपुत्र जो अमात्य है चलो उनके पास चले क्यों कि वे ही कनकरथ राजाके लिये सधिविग्रह आदि समस्त कार्यों में एव स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग कोश, बल, सुहृत् और पौरश्रेणीरूप आठ भूमियों में विश्वसनीय थे । राजा के लिये ये ही लोकोपकारी कार्यों में सलाह दिया करते थे और ये ही राज्यमें समस्त कार्यों के संपादक हैं (त सेय खलु अम्ह तेतलिपुत्त अमच्च कुमार जाइत्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एय मट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवाग-च्छति, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अमच्च एव वयासी-एव खलु देवाणु-

ટેવાઇ ગયેલા છીએ અમારા બધા કામો રાજાધીન જ હોય છે એથી ચાલો આપણે સૌ મળીને અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઇએ, કેમકે તેઓ જ રાજા કનકરથના સધિવિગ્રહ વગેરે બધા કામોમા અને સ્વામી અમાત્ય, રાષ્ટ્ર દુર્ગ, કોશાગાર, સુહૃત અને પૌર શ્રેણિરૂપ આઠ ભૂમિઓમા તે વિશ્વસનીય છે લોકોના હિત માટે તેતલિપુત્ર અમાત્ય જ સલાહ આપતા રહેતા હતા તેમજ રાજ્યના બધા કામોને પાર પાડનારા પણ તેઓ જ છે

(तसेय खलु अम्ह तेतलिपुत्त अमच्च कुमारं जाइत्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छ ति, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अमच्चं एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे

हे देवानुप्रिय ! कनकरथो राजा राज्ये च राष्ट्रे च यावत् व्याप्रयति, त्वय च खलु हे देवानुप्रिय ! राजाधीना यावद् राजाधीनकार्याः, त्व च खलु हे देवानुप्रिय !

प्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियगेइ, अम्हे य ण राया हीणा जाव रायहीणकज्जा, तुम च ण देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुरा चिंतए—त जइण देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसपन्ने अभिसेयारिहे, तएण तुम अम्ह दलाहि) इसलिये हमको उचित है कि हम तेतलिपुत्र अमात्य से कुमार की याचना करें। तात्पर्य इस का यह है कि ये तेतलिपुत्र अमात्य राजा के सकल कार्य निर्वाहक हैं-इसलिये उनके पास चलकर "कोई राज लक्षण सपन्न कुमार राजपद में स्थापनीय है" इस बात की हम चर्चा करें। इस चर्चा के प्रसग में उनसे यह भी निवेदन करेंगे कि आप अपने पुत्र की ही राज पद में स्थापित कर दीजिये। इस प्रकार का विचार उन्होंने किया। जब विचार स्थिर होचुका-तब सबने इस बात को एक मत से स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर के फिर वे सबके सब जहा अमात्य तेतलिपुत्र थे वहा गये। वहा जाकर उन्होंने ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! कनक रथ राजाने राज्य और राष्ट्र आदि में विशेष मू च्छित बनकर उत्पन्न हुए अपने समस्त पुत्रो को अगभग कर मारडाला

राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियगेइ, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुरार्चिंतए-त जइण देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसपन्ने अभिसेयारिहे, तण्ण तुम अम्ह दलाहिं)

એથી અમને એ ઉચિત લાગે છે કે અમે તેતલિપુત્ર અમાત્યની પાસે જઈને રાજકુમારની યાચના કરીએ કારણ કે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજાના બધા કામોને સારી રીતે પાર પાડનારા છે, એટલા માટે તેમની પાસે જઈને રાજા થવા યોગ્ય રાજ-લક્ષણ યુક્ત કોઈ કુમાર મળી શકે તેમ છે કે કેમ ? તે વિશે ચર્ચા કરીએ આ જાતની વિચારણા કરતા કરતા અમે બધા તેમને એવી વિનતી પણ કરીશું કે તમે પોતાના પુત્રને જ રાજગાદીએ બેસાડી દો આમ તે લોકોએ મળીને વિચાર કર્યો આમ વિચાર પાકો થઈ ગયો ત્યારે સૌએ એકમત થઈને તેને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેઓ બધા ત્યાથી જ્યા અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેમણે તેતલિપુત્રને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાએ રાજ્ય અને રાષ્ટ્ર વગેરેમા સવિશેષ મૂર્છિત બનેલે કે મોહવશ થઈને જન્મ પામેલા પોતાના બધા જ પુત્રોના અ ગો કાપીને ને મારી

कनकरथस्य राज्ञः सर्वस्थानेषु यावत् 'रज्जधुरावित्तए' राज्यस्य धूः राज्यधुरा, तस्याश्चिन्तकः, राज्यभारनिर्वाहकश्चापि, तद् यदि खलु देवानुप्रिय! अस्ति कोऽपि कुमारो राजलक्षणसंपन्नः 'अभिसेयारिहे' अभिषेकार्हो राज्याभिषेकयोग्यः, 'तं णं' तं खलु त्वमस्मभ्यं 'दलाहि' देहि 'जो' यस्मात् 'णं' तं 'अम्हे' वयं महता २ 'रायाभिसेएण' राज्याभिषेकेण=राजयोग्येनाभिषेकेण अभिषिञ्चामः राज्ये स्थापयाम इत्यर्थः। ततः खलु तेतलिपुत्रः तेषाम् 'ईसर०=ईश्वर०=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादि सार्थवहप्रभृतीनाम् एतमर्थं 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, कनकध्वज कुमार 'ण्हायं सस्सिरीयं' स्नातं यावत् सश्रीकम्, स्नात=कृतस्नानम्, यावत् सश्रीकम्=सर्वालङ्कारविभूषित शोभासमन्वित च करोति, कृत्वा तेषाम् 'ईसर जाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरादीनां सम्मुखे 'उवणेइ' उपनयति, उपनीय एवमवादीत्-एष खलु हे देवानुप्रियाः!

है। अब इस समय राज पद में कोई नहीं है। हमलोग तो हे देवानुप्रिय! राजाधीन यावत् राजाधीन कार्य वाले हैं। और देवानुप्रिय! कनक रथ राजा के लिये संधि विग्रह आदि समस्त स्थानों मे एव स्वामी अमात्य आदि आठ भूमियों में विश्वसनीय रहें हैं। राजा के लिये लोकोपकारी कार्यों में आप सलाह देते रहे हैं। और आप ही राज्य भार के निर्वाहक है। इसलिये हमारी आपसे यह प्रार्थना है कि हे देवानुप्रिय! यदि राज्यलक्षण सपन्न कोई कुमार राज्य पद मे अभिषेक करने के योग्य होवे तो उसे आप हमें देवे। (जो ण अम्हे महया२ रायाभिसेएण अभिसिंचामो। तएण तेतलिपुत्ते तेसिं ईसरएयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी) कि जिससे हम उसे

નાખ્યા છે હવે અત્યારે રાજપદ માટે કોઈ રહ્યુ નથી હે દેવાનુપ્રિય! અમે લોકો તો રાજાધીન રહીને જ રહેતા આવ્યા છીએ અને હે દેવાનુપ્રિય! તમે રાજા કનકરથના સંધિવિગ્રહ વગેરે બધા કામોમા એટલે કે સ્વામી અમાત્ય, વિગ્રહ વિગેરે તમામ કામોમા હમેશા વિશ્વાસપાત્ર રહ્યા છો, લોકહિતની બાબતમા તમે રાજાને સલાહ આપતા રહ્યા છો, અને તમેજ રાજ્યના બધા કામોને પાર પાડતા આવ્યા છો એથી અમે તમને એવી વિનતિ કરીયે છીએ કે હે દેવાનુપ્રિય! રાજ-લક્ષણોવાળો અને અભિષિક્ત થઇને રાજગાદીએ બેસવા યોગ્ય કોઈ કુમાર હોય તો તેને તમે અમને સોંપો

(जे ण अम्हे महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचामो। तएण तेतलिपुत्तं तेसिं ईसर एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी)

कनकरथस्य राज्ञः पुनः पद्मावत्या देव्या आत्मनः कनकध्वजो नाम कुमारः अभिषेकार्हो राजलक्षणसम्पन्नो मया कनकरथस्य राज्ञो 'रहस्सिय' रहस्यिकम्=मन्त्रम् यथा स्यात्तथा संवर्द्धितः, एतं खलु यूयं महता २ राजाभिषेकेण अभिषिञ्चत। पुनः स एवं च 'से' तस्य 'उट्ठाणपरियावणियं' उत्थानपरियापनिकम्=

राज योग्य अभिषेक द्वारा अभिषिक्त कर राज्य में स्थापित करें। इस तरह के उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक आदि सार्थवाह वगैरह के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्य ने स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके कनक ध्वज कुमार को उसने नहा धुवाकर सर्वालंकारों से विभूषित किया। विभूषित करके फिर वह उसे उन ईश्वर तलवर आदिकों के समक्ष ले आया। लाकर के उनसे उसने ऐसा कहा-(एस णं देवानुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिय संवड्ढिए एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह) हे देवानुप्रियो! यह कनकरथ राजा का पुत्र है जो पद्मावती की कुक्षि से जन्मा है। इसका नाम कनकध्वज कुमार है। अभिषेक के योग्य है और राजलक्षण सपन्न है। मैंने इसको कनकरथ राजा से छिपा कर पालापोषा है और वृद्धिंगत किया है। इसे आपलोग बडे भारी राजयोग्य अभिषेक के साथ राज्य में स्थापित कीजिये। (सव्वं च से

કે જેથી અમે તેનો રાજ્યાસને અભિષેક કરી શકીએ આ રીને અમાત્ય તેતલિપુત્રે તે ઈશ્વર, તલવર, માડંબિક, સાર્થવાહ વગેરેના કથનને સ્વીકાર્યું અને સ્વીકારીને તેણે કનકધ્વજ કુમારને સ્નાન કરાવ્યુ અને ત્યારપછી બધા અલંકારોથી તેને શણગાર્યો ત્યારબાદ અમાત્ય તેતલિપુત્રે સુસજ્જ થયેલા કુમારને ઈશ્વર, તલવર વગેરેની સામે લાવ્યો અને તેઓને કહ્યુ કે—

(एसणं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिय संवड्ढिए एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह)

હે દેવાનુપ્રિયો! આ કનકરથ રાજાનો પુત્ર છે અને પદ્માવતી દેવીના ગર્ભથી આનો જન્મ થયો છે કનધ્વજ કુમાર આનુ નામ છે આ કુમાર રાજ્યાસને બેસાડવા યોગ્ય તેમજ રાજલક્ષણોથી યુક્ત છે રાજા કનકરથને આ બાબતની જાણ નથી, મે આનુ પાલન તેમજ રક્ષણ છુપી રીતે કર્યું છે તમે ભારે મહોત્સવની સાથે આ કુમારને રાજગાદીએ બેસાડો

उत्थान=जन्म, परियापनिका=जन्मानन्तरमद्यावधिका सवर्द्धनादिपरिस्थितिः, उत्थान च परियापनिका च=उत्थानपरियापनिकम्=जीवनचरित परिकथयति। तत खलु 'ईसर०' ईसरतलवरमाडम्बिकादयः कनकध्वज कुमार महता २ राजाभिषेकेण अभिषिञ्चन्ति। ततः खलु स कनकध्वज' कुमारो राजा जातः, स च कनकध्वजो राजा 'महया हिमवत्त०' महाहिमवद्०=महाहिमवन्महामलय मन्दरमहेन्द्रसारः'=महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्राणा सार इव सारो यस्य सः,

---

उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर० कणगज्झय कुमार महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएण सा पउमावई देवी कणगज्झय राय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ऐसा कहकर फिर उन तेतलिपुत्र अमात्य ने उस कनकध्वज कुमार का उत्थान-जन्म और परियापनी का-जन्म से लेकर अभी तक की समस्त पालन पोषण सवर्द्धन आदि परिस्थिति रूप-जीवन चरित्र उन्हें कह सुनाया-इस के बाद उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक एव कौटुम्बिक आदिकोंने कनकध्वज कुमार का बड़े जोर शोर के साथ राज्याभिषेक किया। राज्य में अभिषिक्त होने के बाद वे कनकध्वज कुमार अब राजा बन गये। इसका सार-बल लोकमर्यादा कारी होने के कारण महा हिमवत् जैसा, यश और कीर्ति के फैलाव के कारण महामलय

---

[1] (सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर०कणगज्झयं कुमार महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचति। तएण से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवता मलय० वण्णओ जाव रज्ज पसासेमाणे विहरइ, तएण सा पउमावई देवी कणगज्झय रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

આ પ્રમાણે કહીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે કનકધ્વજ કુમારનુ ઉત્થાન-જન્મ અને પરિયાપનિકા એટલે કે જન્મથી માડીને અત્યાર સુધીની પોષણ સવર્દ્ધન વગેરેની જીવન ચરિત્ર સબધી બધી વિગત અથથી ઇતિ સુધી કહી સભળાવી ત્યારબાદ તે ઈશ્વર, તલવર, માડબિક અને કૌટુબિક વગેરે લોકોએ કનકધ્વજ કુમારનો બહુ જ મોટા પાયા ઉપર ઉત્સવ ઉજવીને રાજ્યાભિષેક કર્યો અભિષિકત થવા બાદ કનકધ્વજ રાજા થઈ ગયા હતા તેમનુ બળ લોક મર્યાદાને રક્ષનાર હોવા બદલ મહાહિમવત જેવુ હતું તેમના યશ અને કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલા હતા તેથી તે મહામલય જેવા હતા તેમજ તેઓ દૃઢ પ્રતિ-

लोकमर्यादाकारित्वेन महाहिमवत्सदृश, महतपशः कीर्तित्वेन महामलयतुल्य, दृढप्रतिज्ञत्वेन कर्तव्यदिग्दर्शकत्वेन च मन्दरमहेन्द्रतुल्य', 'वण्णओ' वर्णक विशेष रूपेण अन्यतोऽवसेयः, 'जाव रज्जं पसासेमाणे' यावद्राज्य प्रशासद् विहरति राज्य कुर्वन्नास्ते। ततः खलु सा पद्मावतीदेवी कनकध्वज राजान शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एतत् खलु हे पुत्र! तव 'रज्जे य जाव अंतेउरे य०' राज्य च यावदन्तः पुर च एतत्सर्वं तेतलिपुत्रस्य प्रभावेन वर्त्तते 'त' तत्=कारणात् त्व खलु तेतलिपुत्रममात्य 'आढाहि' आद्रियस्व=आदर कुरुष्व 'परिजाणाहि', परिजानाहि=अवेक्षस्व तदनुमत्या सर्वं कार्यं सम्पादयेत्यर्थः सत्कारय वस्त्रादिना, सम्मानय माल्यादिना, 'इत' यन्तम्=आगच्छन्तमेत तेतलिपुत्रम् 'अब्भुट्ठेहि' अभ्युत्तिष्ठ=अभ्युत्थानादिना विनय प्रदर्शयेत्यर्थ 'ठिय पज्जुवासाहि' स्थित पर्युपास्व=सेवस्व, 'वयत' व्रजन्त=गच्छन्तम् 'पडिसंसाहेहि' प्रतिसंसाधय=अनुगमनादिना प्रसादय, तथा 'अद्धासणेण उवणिमंतेहि' अर्धासनेन उपनिमन्त्रय=स्वस्यासने तमुपवेषय, भोग=सुखसामग्रीरूप च 'से' तस्य अनुवर्द्धय। ततः स कनकध्वज 'पउमावईए देवीए' पद्मावत्या देव्याः वचन 'तहत्ति'

के जैसा, दृढप्रतिज्ञा वाले एव कर्तव्य का दिग्दर्शन कराने वाले होने के कारण मन्दर महेन्द्र-मेरु के जैसा था। और भी इन राजा के विषय का विशेष वर्णन दूसरों शास्त्रों से जान लेना चाहिये। यावत् इस तरह ये कनकध्वज कुमार अपने राज्य के शासन करने में तत्पर बन गये। इसके बाद उस राजमाता पद्मावतीदेवी ने उन कनकध्वज राजाको अपने पास बुलाया-और बुलाकर फिर उनसे उसने इस प्रकार कहा-(तएण पुत्ता! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुमच्च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि,परिजाणाहि,सक्कारेहि,सम्माणेहि, इत अब्भुट्ठेहि ठिय पज्जुवासाहि, वयत पडिसंसाहेहि, अद्धासणेण

જાવાળા અને કર્તવ્યને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણવ્યુ છે, જીજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી જાણી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના વહીવટને સભાળવા માટે સાવધ થઇ ગયા ત્યારપછી રાજમાતા પદ્મવતીદેવીએ કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(तएण पुत्ता! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुम च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि, परिजाणाहि. सक्कारेहि. सम्मा

तथेति=' तथास्तु ' इतिकृत्वा प्रतिशृणोति=स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तथैव कुर्वाण यावद् भोगं च तस्य अनुवर्द्धयति ॥ ९ ॥

उवणिमंतेहि, भोगंच से अणुवड्ढेहि। तएण से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ,जाव भोगंचसे अणुवड्ढेइ) हे पुत्र! यह तुम्हारा राज्य और अतः पुर तथा तुम स्वयं यह जो कुछ है वह सब तेतलिपुत्र अमात्य के प्रभाव से ही है इसलिये तुम तेतलिपुत्र अमात्य का आदर करते रहो, उनकी अनुमति से काम किया करो उनका वस्त्रादि द्वारा समय २ पर सत्कार करते रहो, अभ्युत्थानादि सन्मान करते रहो और जब तेतलिपुत्र तुम्हें आते हुए दिखलाई दे तो तुम उठकर इनके प्रति अपना विनय प्रदर्शित किया करो। जब ये जावे-तब तुम बैठ कर इनकी सेवावृत्ति किया करो, जब ये चलने लगे तो तुम इनके पीछे २ थोड़ी दूर तक अपने महलों में पहुँचाने जाया करो, अपने बैठने के आसन पर इन्हें अर्धभाग में बैठाया करो और जो भी सुख साधनकी सामग्री है वह इनकी बढ़ा दो। इस प्रकार राजमाता पद्मावती देवी के वचनों को "तथास्तु" कहकर कनकध्वज राजाने स्वीकार कर लिया।

णेहि इत अब्भुट्ठेहि ठिय पज्जुवासाहि वय त पडिससाहेहि, अद्धासणेण उवणिमंतेहि, भोग च से अणुवड्ढेहि। तएण से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोग च से अणुवड्ढेइ)

હે પુત્ર ! આ તમારૂ રાજ્ય રણવાસ તેમજ તમે પોતે આ બધુ જે કઇ છે, તે સર્વે તેતલિપુત્ર અમાત્યના પ્રભાવથી જ છે એથી તમે તેત લિપુત્ર અમાત્યનો સદા આદર કરતા રહેો, દરેક કામ તેમની આજ્ઞાથી કરતા રહેો, વસ્ત્રો વગેરે આપીને યથા સમય તેમનો સત્કાર કરતા રહેો, તેમનુ સન્માન કરતા રહેો અને અમાત્ય તેતલિપુત્ર તમને આવતા દેખાય ત્યારે તમે ઉભાથઈને તેમના પ્રતિ વિનય યુક્ત થઇને વ્યવહાર કરેા. જ્યારે તેઓ જવા તૈયાર થાય ત્યારે તમે બેસીને તેમની સેવા કરતા રહેો અને જ્યારે તેઓ ચાલવા માડે ત્યારે તમે તેમની પાછળ પાછળ થેાડે દૂર સુધી પેાતાના મહેલ માજ વિદાય આપવા માટે તેમનુ અનુસરણ કરેતા જાઓ તમે તેમને પેાતાના આસનના અર્ધાભાગ ઉપર બેસાડેા અને તેમની બધી સુખસગવડની સામગ્રી મા વધારેા કરી આપેા આ રીતે રાજમાતા પદ્માવતી દેવીની આજ્ઞાને કનક ધ્વજ રાજાએ ' તથાસ્તુ ' કહીને સ્વીકારી લીધી, સ્વીકાર્યા પછી તેઓએ તે

लोकमर्यादाकारित्वेन महाहिमवत्सदृश, महत्तपशः कीर्तित्वेन महामलयतुल्य, दृढप्रतिज्ञत्वेन कर्तव्यदिग्दर्शकत्वेन च मन्दरमहेन्द्रतुल्यः, 'वण्णओ' वर्णक विशेष रूपेण अन्यतोऽवसेयः, 'जाव रज्जं पसासेमाणे' यावद्राज्य प्रशासद् विहरति राज्य कुर्वन्नास्ते। ततः खलु सा पद्मावतीदेवी कनकध्वज राजान शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एतत् खलु हे पुत्र! तव 'रज्जे य जाव अतेउरे य०' राज्य च यावदन्त' पुर च एतत्सर्व तेतलिपुत्रस्य प्रभावेन वर्त्तते 'त' तत्=कारणात् त्व खलु तेतलिपुत्रममात्य 'आढाहि' आद्रियस्व=आदर कुरुष्व 'परिजाणाहि' परिजानाहि=अवेक्षस्व तदनुमत्या सर्वं कार्यं सम्पादयेत्यर्थः सत्कारय वस्त्रादिना, सम्मानय माल्यादिना, 'इत' यन्तम्=आगच्छन्तमेत तेतलिपुत्रम् 'अब्भुट्ठेहि' अभ्युत्तिष्ठ=अभ्युत्थानादिना विनय प्रदर्शयेत्यर्थ 'ठिय पज्जुवासाहि' स्थित पर्युपास्व=सेवस्व, 'वयत' व्रजन्त=गच्छन्तम् 'पडिसंपाहेहि' प्रतिसंमाधय=अनुगमनादिना प्रसादय, तथा 'अद्धासणेण उवणिमंतेहि' अर्धासनेन उपनिमन्त्रय=स्वस्यासने तमुपवेषय, भोग=सुखसामग्रीरूप च 'से' तस्य अनुवर्द्धय। ततः स कनकध्वज' 'पउमावईए देवीए' पद्मावत्या देव्याः वचन 'तहत्ति'

के जैसा, दृढप्रतिज्ञा वाले एव कर्तव्य का दिग्दर्शन कराने वाले होने के कारण मन्दर महेन्द्र-मेरु के जैसा था। और भी इन राजा के विषय का विशेष वर्णन दूसरों शास्त्रों से जान लेना चाहिये। यावत् इस तरह ये कनकध्वज कुमार अपने राज्य के शासन करने में तत्पर बन गये। इसके बाद उस राजमाता पद्मावतीदेवी ने उन कनकध्वज राजाको अपने पास बुलाया-और बुलाकर फिर उनसे उसने इस प्रकार कहा-(तएण पुत्ता! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुमच तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि, परिजाणाहि, सकारेहि, सम्माणेहि, इत अब्भुट्ठेहि ठिय पज्जुवासाहि, वयत पडिसंसाहेहि, अद्धासणेण

જાણવાળા અને કર્તવ્યને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણવ્યુ છે, જીજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી જાણી લેવું જોઇએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના વહીવટને સભાળવા માટે સાવધ થઇ ગયા ત્યારપછી રજમાતા પદ્મવતીદેવીએ કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(तएण पुत्ता! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुम च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्मा

अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे, अपरियाणमाणे, अणब्भुट्ठायमाणे, परम्मुहे संचिट्ठइ । तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ । तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ । तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाव संजायभए एव वयासी-रुट्ठेण मम कणगज्झए राया हीणे णं मम कणगज्झए राया, अवज्झाए णं ममं कणगज्झए, राया त णा नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे५ जाव सणिय२ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता, तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता, तेतलिपुर मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तएणं तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासंति, ते तहा नो आढायति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेंति नो अंजालिपरिग्गह करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति । तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, त जहा—दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सावि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, जावि य से अब्भितरिया परिसा भवइ, त जहा – पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सावि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव बासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयणिज्जंसि णिसी-

मूलम्-तएणं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ। तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए५ एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं अढाइ जाव भोग च से वड्ढेइ तएणं से तेतलीपुत्ते अभिक्खणं२ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय रायं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए तिकट्टु एव संपेहेइ, संपेहिता, कणगज्झयं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ। तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं पहाए जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए बहूहि पुरिसेहिं सपरिवुडे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थए गमणाए। तएणं० तेतलिपुत्त अमच्च जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियाओ पासति, ते तहेव आढायंति, परिजाणति, अब्भुट्ठेंति, आढाइत्ता, परिजाणित्ता, अब्भुट्ठित्ता, अंजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहि कंताहि जाव वग्गूहि आलवेमाणा य सलवेमाणा य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ। तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्त एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, नो अढाइ, नो परियाणाइ, नो

स्वीकार करके फिर उन्होंने वैसा ही सब कुछ करते हुए तेतलिपुत्र अमात्य की यावत् सुख साधन सामग्री बढा दी ॥ सू० ९ ॥

પ્રમાણેજ બધુ કરતા તેતલિપુત્ર અમાત્યની સુખસગવડ વગેરેની સામગ્રીમા વધારો કરી આપ્યો ॥ સૂ૦ ૯ ॥

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सद्दहिस्सइ । तेतलि-पुत्तेणं पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेय सद्दहि-स्सइ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाहे जाव उदगंसि, अप्पामुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद्द-हिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खि-वित्ता अप्पामुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—' तएणं से पोट्टिले ' इत्यादि । तत खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलि-पुत्रम् ' अभिक्खण २ ' अभीक्ष्णम् २=पुनः पुनः केवलिप्रज्ञप्ते धर्मे सबोधयति । परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्र ' संबुज्झइ ' सम्बुध्यते=प्रतिबोध प्राप्नोति । ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूप.=पुरउच्यमानः ' अज्झ त्थिए ' ५=आध्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सकल्प. समुदपद्यत । सकल्पप्रकारमाह—' एव खलु ' इत्यादि । एव खलु कनकध्वजो राजा तेतलि-पुत्र आद्रियते यावत् भोग च समर्द्धयति, तत' खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्ष्ण २ मया

' तएणं से पोट्टिले ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव (तेतलिपुत्त अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलिप्रज्ञप्त धर्ममें प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ। (तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एव खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्त आढाइ, जाव भोग च सवड्ढेइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अ-

तएणं से पोट्टिले इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર પછી (से पोट्टिले देवे) તે પોટ્ટિલાનો જીવ દેવ (तेतलिपुत्त अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ नो चेव ण से तेतलि पुत्ते संबुज्झइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને વારવાર કેવળિ પ્રજ્ઞપ્તધર્મમા પ્રતિબોધિત કરવા લાગ્યો પણ તેતલિપુત્રને પ્રતિબોધ પ્રાપ્ત થયો નહિ

(तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एव खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्त आढाइ, जाव भोग च संवड्ढेइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अभिक्खणं

यइ, णिसीइत्ता, एवं वयासी-एव खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, त चेव जाव अब्भितरिया, पुरिसा नो आढाइ नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवीयाओ ववरोवित्तएत्तिकट्टु, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, से य विसे णो संकमइ । तएणं तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्हा । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए वधइ, वधित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना । तएणं से तेतलिपुत्ते महइ महालय सिल गीवाए वधइ, वंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए । तएणं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडसि अगणिकाय पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए । तएण से तेतलीपुत्ते एव वयासी-सद्धेय खलु भो समणा वयंति, सद्धेय खलु भो माहणा वयाति, सद्धेय खलु भो समणामाहणा वयाति, अह एगो असद्धेयं वयामि, एव खलु अहं सहपुत्तेहिं अपुत्ते को मेय सद्दहिस्सेइ? सहमित्तेहि अमित्ते, को मेय सद्दहिस्सइ, एव अत्थेणं दारेण दासेहिं परिजणेणं एव खलु तेतलिपुत्तेणं अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते, से वि य णो कमइ को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खड्गंसि, ओहर-

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्हा को मेयं सद्दहिस्सइ । तेतलि-पुत्तेणं पासगं गीवाए वधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेयं सद्दहिस्सइ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव वंधित्ता अत्थाहे जाव उदगंसि, अप्पामुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पामुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—' तएण से पोट्टिले ' इत्यादि । तत खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलिपुत्रम् ' अभिक्खण २ ' अभीक्ष्णम् २=पुनः पुनः केवलिप्रज्ञप्ते धर्मे सबोधयति । परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्र ' संबुज्झइ ' सम्बुध्यते=प्रतिबोध प्राप्नोति । ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूप =पुरउच्यमानः ' अज्झत्थिए ' ५=आध्यात्मिक चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सकल्प. समुदपद्यत । सकल्पप्रकारमाह-' एव खलु ' इत्यादि । एव खलु कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्र आद्रियते यावत् भोग च समर्द्धयति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्ष्ण २ मया

' तएण से पोट्टिले ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव (तेतलिपुत्त अभिक्खण २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव ण से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलिप्रज्ञप्त धर्ममें प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ। (तएण तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एव खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्त अद्दाइ, जाव भोग च समड्ढेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अ-

तएण से पोट्टिले इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર પછી (से पोट्टिले देवे) તે પોટ્ટિલાનો જીવ દેવ (तेतलिपुत्त अभिक्खण २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ नो चेव ण से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને વારવાર કેવળિ પ્રજ્ઞપ્તધર્મમા પ્રતિબોધિત કરવા લાગ્યો પણ તેતલિપુત્રને પ્રતિબોધ પ્રાપ્ત થયો નહિ

(तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एव खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्त आढाइ, जाव भोग च संवड्ढेइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अभिक्खणं

'सबोहिज्जमाणेवि' संबोध्यमानोऽपि धर्मे नो सम्बुध्यते=प्रतिबोधं न प्राप्नोति। 'तं तत्=तस्मात् कारणात् श्रेयः खलु मम कनकध्वजं राजानं तेतलिपुत्रात् विपरिणमयितुम्=तेतलिपुत्रविषये कनकध्वजस्य मानसिको भावो यथा विपरिणतो भवेत्तथा कर्तुमुचितम्, इतिकृत्वा=इति मनसि विचार्य एवं संप्रेक्षते विचारयति संप्रेक्ष्य कनकध्वजं तेतलिपुत्राद् विपरिणमयति=विपरीतं करोति। ततः खलु तेतलिपुत्रः 'खलु' वाक्यालङ्कारे द्वितीयस्मिन् दिने प्रायः 'ण्हाए जाव पायच्छित्ते' स्नातो यावत् प्रायश्चित्त=स्नातः=कृतस्नानः यावत् पदेन कृतबलिकर्मा=काकादि निमित्त कृतान्नभाग कृतकौतुकमाङ्गल्यप्रायश्चित्तः=कृतानि कौतुकानि दुःस्वप्नादि दोषनिवारणार्थं मषीपुण्ड्रादीनि-माङ्गल्यादीनि = मङ्गलकारणानि दूर्वाक्षतादीनि =प्रायश्चित्तवद्रश्यं कर्त्तव्यानि येन सः, 'आसखंधवरगए' अश्वस्कन्धवरगत =अश्वारूढः बहुभि पुरुषै सपरिवृतः स्वस्माद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य

भिक्खणं २ सबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो सबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणमेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ)
तब उस पोट्टिल देवको ऐसा आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ कनकध्वज राजा तेतलिपुत्र अमात्यका आदर करते हैं यावत् वे उनके सुख साधनकी सामग्री बढा दिया है-इसलिये मेरे द्वारा बार बार प्रतिबोधित करने पर भी वे धर्म मे प्रतिबुद्ध नही बन रहे हैं-प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हो रहे हैं। इसलिये मुझे अब ऐसा करना चाहिये कि जिससे तेतलिपुत्र के विषय में कनकध्वज राजा का मानसिक विचार बदल जावे। इस प्रकार का विचार उस देवके मनमें जगा (संपेहित्ता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ, तएण तेतलिपुत्ते कल्ल ण्हाए

---

२ सबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो सबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ)

ત્યારે તે દેવરૂપ પોટ્ટિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉ ભવ્યો કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રનો આદર કરે છે યાવત્ તેઓએ તેમની બધી જાતની સુખસગવડની સામગ્રીમા વધારો પણ કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાએ તેઓ ધર્મમા પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારવાર પ્રેરણા આપવા છતા પ્રતિબોધ થયો નથી એટલા માટે હુ હવે એ પ્રમાણે કરીક કરૂ કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે પ્રતિકૂળ થઈ જાય તે દેવે મનમા આ જાતનો વિચાર કર્યો

(संपेहित्ता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ तएण तेतलिपुत्ते कल्ले ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए, बहूहिं पुरिसेहिं सपरिवुडे, णिहाओ,

पत्रैव कनकध्वजो राजा तत्रैव 'पहारेत्थ गमणाए' प्राधारयद् गमनाय-प्रस्थितवान्। तत खलु तेतलिपुत्रममात्य 'जेजहा' ये यथा=येन प्रकारेण बहवो 'राईसरतलवरजावप्पभियओ' राजेश्वरतलवर यावत्प्रभृतयः, राजेश्वरतलवरा यः पश्यन्ति, ते तथैव तममात्यमाद्रियन्ते नमस्कारादिना परिजानन्ति=शुभागमनमित्यनुमोदयन्ति, अभ्युत्तिष्ठन्ति=अभ्युत्थान कुर्वन्ति, आदृत्य परिज्ञाय, अभ्युत्थाय अञ्जलिपरिग्रह कुर्वन्ति, तथा इष्टाभिः कान्ताभि. यावत्-प्रियाभिर्मनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिः'

जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए, महया पुरिसेहिं सपरिवुडे, साओ गिहाओ, णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं० तेतलिपुत्त अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियाओ पासति ते तहेव आढायति परियाणति, अब्भुट्ठेंति) इस विचार के आते ही उस देवने कनकध्वज राजा को तेतलिपुत्र अमात्य के प्रति विपरीत परिणमादिया। जब द्वितीय दिन प्रातः काल स्नान कर बलिकर्म, कर-काकादि निमित्त अन्न का विभाग कर, कौतुक, मंगल, प्रायश्चित्त कर-दुःस्वप्न आदि दोषों को निवारण करने के लिये मषी पुण्ड्रादि और मगल कारक दूर्वाक्षतादि तथा प्रायश्चित्तकी तरह आवश्यक कृत्य समाप्त कर-वह तेतलिपुत्र अमात्य घोडे पर बैठ कर जब अनेक पुरुषों के साथ साथ अपने घर से निकला तब निकल कर वह उस ओर गया जहा कनकध्वज राजा थे। तेतलिपुत्र अमात्य को ज्यो ही राजेश्वर आदि को ने आता हुआ देखा तो उन्होंने पहिले की तरह ही उसका आदर किया, उसके आगमन की सराहना की

णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं० तेतलिपुत्त अमच्च जे जहा बहवे राईसर तलवर जाव पभियाओ पासति ते तहेव आढायति परियाणति, अब्भुट्ठेंति)

આ જાતનો વિચાર ઉત્પન્ન થતાજ તે દેવે અમાત્ય તેતલિપુત્ર ને માટે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ બનાવીદીધો બીજા દિવસે સવાર થતા સ્નાન, બલિકર્મ, (કાગડા વગેરે પક્ષીઓ માટે અન્નભાગ અર્પણ) કૌતુક, મંગળ, પ્રાયશ્ચિત્ત-એટલે કે દુઃસ્વપ્ન વગેરેના દોષોના ઉપશમન માટે મષી પુણ્ડ્ર વગેરે તેમજ મંગળ કારક દુર્વા અક્ષત (ચોખા) વગેરેથી પ્રાયશ્ચિત્ત ની આવશ્યક વિધિઓ પતાવીને ઘણા પુરુષોથી વીંટળાઈને અમાત્ય તેતલિપુત્ર ઘોડા ઉપર સવાર થઈને જ્યા કનકધ્વજ રાજા હતા ત્યા ગયો અમાત્ય તેતલિપુત્રને આવતા જોતાની સાથે જ રાજેશ્વર વગેરે લોકોએ પહેલાની જેમ જ તેમને આદર કર્યા જોયા આગમનની સરાહના કરી અને બધાએ ઉભાથઈને તેમનેવધાવી લીધા

'संबोहिज्जमाणेवि' संबोध्यमानोऽपि धर्मे नो संबुध्यते=प्रतिबोधं न प्राप्नोति। 'तं तत्=तस्मात् कारणात् श्रेयः खलु मम कनकध्वज राजानं तेतलिपुत्रात् विपरिणमयितुम्=तेतलिपुत्रविषये कनकध्वजस्य मानसिको भावो यथा विपरिणतो भवेत्तथा कर्तुमुचितम्, इतिकट्टु=इति मनसि विचार्य एवं संप्रेक्षते विचारयति संप्रेक्ष्य कनकध्वज तेतलिपुत्राद् विपरिणमयति=विपरीतं करोति। ततः खलु तेतलिपुत्र 'कल्ले' कल्ये द्वितीयस्मिन् दिने प्रात. 'ण्हाए जाव पायच्छित्ते' स्नातो यावत् प्रायश्चित्त=स्नातः कृतस्नानः यावत् पदेन कृतबलिकर्मा=काकादि निमित्त कृतान्नभागः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः=कृतानि कौतुकानि तु स्वप्नादि दोषनिवारणार्थं मषीपुण्ड्रादीनि-माङ्गल्यादीनि = मङ्गलकारकाणि दूर्वाक्षतादीनि =प्रायश्चित्तवदवश्यं कर्त्तव्यानि येन सः, 'आसखंधवरगए' अश्वस्कन्धवरगतः=अश्वारूढः बहुभि पुरुषैः सपरिवृतः स्वस्माद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य

भिक्खुणं २ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणमेत्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ)
तब उस पोट्टिल देवको ऐसा आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कनकध्वज राजा तेतलिपुत्र अमात्यका आदर करते हैं यावत् वे उनके सुख साधनकी सामग्री बढा दिया है-इसलिये मेरे द्वारा बार बार प्रतिबोधित करने पर भी वे धर्म में प्रतिबुद्ध नही बन रहे हैं-प्रतिबोध को प्राप्त नही हो रहे हैं। इसलिये मुझे अब ऐसा करना चाहिये कि जिससे तेतलिपुत्र के विषय में कनकध्वज राजा का मानसिक विचार बदल जावे। इस प्रकार का विचार उस देवके मनमें जगा (संपेहित्ता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ, तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए

---

२ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ)

ત્યારે તે દેવરૂપ પોટ્ટિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉ ભ યો કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રનો આદર કરે છે યાવત્ તેઓએ તેમની બધી જાતની સુખસગવડની સામગ્રીમા વધારો પણ કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાએ તેઓ ધર્મમા પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારવાર પ્રેરણા આપવા છતા પ્રતિબોધ થયો નથી એટલા માટે હુ હવે એ પ્રમાણે કરીક કરૂ કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે પ્રતિકૂળ થઈ જાય તે દેવે મનમા આ જાતનો વિચાર કર્યો

(संपेहित्ता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए, बहूहिं पुरिसेहिं सपरिवुडे, । गिहाओ,

माद्रियन् 'अपरिजाणमाणे' अपरिजानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्= अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् 'परम्मुहे' पराङ्मुखः=विमुख सन् सतिष्ठते। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः नमुखे अञ्जलिं करोति। 'तएण' ततः खलु= तेतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि स कनकध्वजो राजा अनाद्रियमाणः, अपरिजानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तूष्णीक पराङ्मुखः सतिष्ठते। तत' खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वज विपरिणत=विपरीत ज्ञात्वा 'भीए जाव सजायभए' भीतो यावत् सजातभय, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनकध्वजो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही। इस तरह अनादर अननुमोदन एव अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये। (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुम्हिणीए परम्मुहे सचिट्ठइ) तौ भी उन कनक ध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुप चाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीए सजायभए एव वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् सजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुट्ठे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं। (खीणे ण मम कण-

આદર ન કર્યો, તેમના આવવાની સરાહના ન કરી અને ઉભા થઈને તેમને સત્કાર્યા પણ નહિ આ રીતે અનાદર, અનનુમોદન અનભ્યુત્થાન કરતા તે રાજા તેમના તરફ થી મો ફેરવીને બેસી ગયા (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) તેતલિપુત્રે આવતાની સાથે જ રાજા કનકધ્વજને નમસ્કાર કર્યો (तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे सचिट्ठइ) છતાએ રાજા કનકધ્વજે તેમના નમસ્કારનો પણ ઉચિત સત્કાર કર્યો નહિ ફક્ત તેઓ ચુપચાપ મોફેરવીને બેસી જ રહ્યા

(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीए जाव सजायभए एव वयासी)

ત્યારે તેતલિપુત્ર અમાત્યે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ થઈ ગયેલા (નારાજ થયેલા) જાણીને ભયભીત યાવત્ સજાતભય વાળા થતા મનમા વિચાર કર્યો કે (रुट्ठेण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા ઉપર નારાજ

घाभिः आलपन्तः संलपन्तश्च=आलापः=संभाषणं, संलापः=परस्परसंभाषणं कुर्वन्तश्च पुरतः=अग्रे च पृष्ठतः=पश्चाद्भागतश्च, पार्श्वतः=पार्श्वभागतश्च, मार्गतः=यस्मान्मार्गात् तेतलिपुत्रो निर्गच्छति, तन्मार्गतश्च 'समणुगच्छंति' समनुगच्छन्ति । तत खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव कनकध्वजस्तत्र उपागच्छति । ततः खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रमेजमानं पश्यति, दृष्ट्वा नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति । अनन्तरं 'आणादायमाणे' अनादियमानः=तस्मादरं

सबने उठकर उसे लिया-(आढाइत्ता, परिजाणित्ता अब्भुट्ठित्ता अंजलि परिग्गह करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठायमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ) आदर देकर शुभागमन की अनुमोदनाकर तथा उठकर उन सबने फिर दोनों हाथों की अंजलि जोडकर उसे नमस्कार किया । बाद में इष्ट, कान्त यावत् प्रिय-मनोज्ञ-मनोम वाणियों से आलाप - संभाषण, संलाप परस्पर संभाषण - करते हुए वे सबआगे, पीछे आजू बाजू होकर जिस मार्ग से वह आरहा था उसी मार्ग से उसके साथ साथ चले आये । चलते २ तेतलिपुत्र अमात्य जहां कनकध्वज राजा बैठे थे वहां आया । कनकध्वज राजा ने उन्हें आता हुआ देखा-तौभी पहिले की तरह देखकर न

(आढाइत्ता, परिजाणित्ता अब्भुट्ठित्ता अंजलि परिग्गह करेंति इट्ठाहिं, कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरओ य, पिट्ठओ य, पासओ य, मग्गओ य, समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठायमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ)

તેમને આદર આપીને, શુભાગમનને અનુમોદિત કરીને તેઓ બધા ઉભા થયા અને ત્યાર પછી બને હાથોની અંજળિ બનાવીને તેમને નમસ્કાર કર્યા ત્યાર બાદ ઇષ્ટ, કાંત, યાવત્ પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ વાતોથી આલાપ-સંભાષણ સંલાપ-પરસ્પર સંભાષણ કરતા તેઓ સર્વે આગળ, પાછળ અને તેમની બને બાજુએ થઈને જે માર્ગથી તેઓ આવતા હતા તે માર્ગથી જ તેની સાથે સાથે ચાલવા લાગ્યા તેતલિપુત્ર અમાત્ય ચાલતા ચાલતા જ્યાં રાજા કનકધ્વજ બેઠા હતા ત્યાં આવ્યા પણ કનકધ્વજ રાજાએ તો તેમને જોઈ ,મનો

माद्रियन् 'अपरिजाणमाणे' अपरिजानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्= अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् 'परम्मुहे' पराङ्मुखः=विमुख सन् संतिष्ठते। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः पराङ्मुखे अञ्जलिं करोति। 'तएण' ततः खलु= तेतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि स कनकध्वजो राजा अनाद्रियमाणः, अपरिजानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तूष्णीक पराङ्मुखः संतिष्ठते। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वज विपरिणत=विपरीत ज्ञात्वा 'भीए जाव संजायभए' भीतो यावत् संजातभय, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-दृष्टः खलु मम=मम विषये कनकध्वजो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही। इस तरह अनादर अननुमोदन एव अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये। (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुम्हिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ) तो भी उन कनकध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नही किया केवल चुप चाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणय जाणित्ता भीए संजायभए एव वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् संजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(दुट्ठे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं। (हीणे ण मम कण-

આદર ન કર્યો, તેમના આવવાની સરાહના ન કરી અને ઉભા થઈને તેમને સત્કાર્યા પણ નહિ આ રીતે અનાદર, અનનુમોદન અનભ્યુત્થાન કરતા તે રાજા તેમના તરફ થી મો ફેરવીને બેસી ગયા (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयास अजलिं करेइ) તેતલિપુત્રે આવતાની સાથે જ રાજા કનકધ્વજને નમસ્કાર કર્યો (तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ) છતાએ રાજા કનકધ્વજે તેમના નમસ્કારનો પણ ઉચિત સત્કાર કર્યો નહિ કિંતુ તેઓ ચુપચાપ મોફેરવીને બેસી જ રહ્યા

(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीए जाव संजायभए एव वयासी)

ત્યારે તેતલિપુત્ર અમાત્યે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ થઈ ગયેલા (નારાજ થયેલા) જાણીને ભયભીત યાવત્ સંજાતભય વાળા થતા મનમા વિચાર કર્યો કે (दुट्ठे ण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા ઉપર નારાજ

'हीणे ण' हीनः खलु=प्रीतिहीनः खलु ममोपरि कनकध्वजो राजा 'अवज्झाए' अपध्यात=दुर्भावसम्पन्नो जात खलु मम विषये कनकध्वजो राजा 'त' तत्=तस्मात् 'न नज्जइ' न ज्ञायते खलु एष मा केन कौशलेन कुमारेण=कुत्सितेन मारेण 'मारेहिइ' मारयिष्यति 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य भीतस्तः यावत्-त्रसितः, उद्विग्नः, सञ्जातभय मन् 'सणियं २' शनैः २ 'पच्चोसक्कइ' प्रत्यवस्वष्कते =प्रत्यवसर्पति=पश्चाद्गच्छति प्रत्यवस्वष्क्य, तमेव 'आसखधं'=अश्वस्कन्धं दुरो-हति, दृस्ह्य 'तेतलिपुर' अत्र षष्ठ्यर्थे द्वितीया, तेतलिपुरस्येत्यर्थः, मध्यमेन यत्रैव स्वक गृह तत्रैव माधारयद् गमनाय। ततः खलु त तेतलिपुत्र 'जेणहा'

गज्झाए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर प्रीति से रहित हो गये हैं। (अवज्झाए ण मम कणगज्झाए राया) कनकध्वज राजा मेरे विषय में सद्भाव रहित बन गये हैं। (त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे पूजावसणिय २ पच्चोसक्कइ) तो न मालूम यह मुझे किस कुत्सित मरण से मरवा डाले, ऐसा विचार कर वह भीत (भययुक्त) हो गया त्रस्त यावत् सजात भयवाला बन गया। और धीरे २ वहाँ से पीछा हट कर चला आया-(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण जेणेव सएगिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आकर के वह अपने उसी घोडे पर बैठकर तेतलिपुर के बीच से होता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया (तएण तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो आढायति, नो परिया

થઈ ગયા છે (हीणेण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજાનો હવે મારા ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી (अवज्झाए ण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે

(त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव सणिय २ पच्चोसक्कइ)

તો કોણ જાણે ક્યારે તેઓ મને કમોતે મરાવી ન નાખે આરીતે વિચાર કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે ત્રસ્ત યાવત સજાત ભયવાળો થઈ ગયો અને ધીમેધીમે ત્યાથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો

(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યાથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઈને તેતલિપુરની વચ્ચે થઇને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો

तएणं तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो [illegible] नो

ये यथा=ये यथास्थिताः 'ईसरजाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, 'ते तहेव' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, इष्टाभिर्वाग्भिर्नो सलपन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति। तत खलु तेतलिपुत्रो यत्रैव स्वक गृह तत्रैव उपागच्छति। यापि च 'से' तस्य 'तत्थ' तत्र भवने बाह्या परिषद् भवति, तद् यथा-'दासाइ वा' दासाइति वा, णति, नो अब्भुट्ठेंति) मार्ग में तेतलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही (नो अजलिपरिग्गह करेंति, इट्ठाहिं जाव णो सलवंति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड कर नमस्कार ही किया। न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, सलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग मे ही चले। (तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तेतलिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया। उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लए वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) वहा पर भी जो दास घर के काम काज करने

परियाणति, नो अब्भुट्ठेंति)

માર્ગમા જતા તેતલિપુત્રને ઇશ્વર તલવર માડંબિક વગેરે લોકોએ જોયો પણ કોઇએ પહેલાની જેમ તેનો આદર ન કર્યો, તેના આગમનની અનુમોદના ન-કરી અને તેને જોઇને તેઓ ઊભા ન થયા

(नो अजलि परिग्गह करेंति, इट्ठाहिं जाव णो सलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग०)

અને તેઓએ હાથ જોડીને તેને નમસ્કાર પણ ન કર્યા ઇષ્ટ, પ્રિય, વચનોથી તેઓએ તેની સાથે આલાપ ન કર્યો, સલાપ ન કર્યો અને બને બાજુએ થઇને તેઓ માર્ગમા તેની સાથે સાથે ચાલ્યા પણ નહિ (तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે ચાલતો ચાલતો તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોતાને ઘેર આવી ગયો

(उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा दासेइ वा पासेइ वा भाइल्लएइ वा, सा वि य ण नो आढाइ नो परियाणाइ, न अब्भुट्ठेइ)

ત્યા પણ જે દાસો-ઘરમા કામ કરનારા નોકરો, ત્રૈણ્યો-ઘરના કામ માટે

'हीणे ण' हीनः खलु=प्रीतिहीनः खलु ममोपरि कनकध्वजो राजा 'अवज्झाए' अपध्यात=दुर्भावसम्पन्नो जातः खलु मम विषये कनकध्वजो राजा 'त' तत्=तस्मात् 'न नज्जइ' न ज्ञायते खलु एष मां केन कीदृशेन कुमारेण=कुत्सितेन मारेण 'मारेहिइ' मारयिष्यति 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य भीतत्रस्तः यावत्-त्रसितः, उद्विग्नः, सञ्जातभयः मन् 'सणियं २' शनैः२ 'पच्चोसक्कइ' प्रत्यवस्वष्कते =प्रत्यवसर्पति=पश्चाद्गच्छति प्रत्यवस्वष्क्य, तमेव 'आसखधं'=अश्वस्कन्धं दुरो-हति, दृरुह्य 'तेतलिपुरं' अत्र षष्ठ्यर्थे द्वितीया, तेतलिपुरस्येत्यर्थः, मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव पाधारयद् गमनाय। ततः खलु स तेतलिपुत्रः 'जेणेव'

गज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर प्रीति से रहित हो गये हैं। (अवज्झाए ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे विषय में सद्भाव रहित बन गये हैं। (त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे पूजावत्तणिय २ पच्चोसक्कइ) तो न मालूम यह मुझे किस कुत्सित मरण से मरवा डाले, ऐसा विचार कर वह भीत (भययुक्त) हो गया त्रस्त यावत् सजात भयवाला बन गया। और धीरे २ वहाँ से पीछा हट कर चला आया-(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आकर के वह अपने उसी घोडे पर बैठकर तेतलिपुर के बीच से होता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया (तएण तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो आढायति, नो परिया

થઈ ગયા છે (हीणेण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજાનો હવે મારા ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી (अवज्झाए ण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે

(त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव सणिय २ पच्चोसक्कइ)

તો કોણ જાણે ક્યારે તેઓ મને કમોતે મરાવી ન બાવે આરીતે વિચાર કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે ત્રસ્ત યાવત સંજાત ભયવાળો થઈ ગયો અને ધીમેધીમે ત્યાથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો

(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झ मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યાથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઇને તેતલિપુરની વચ્ચે થઇને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો

तएणं तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो , नो

ये यथा=ये यथास्थिताः 'ईसरजाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, 'ते तहेव' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिग्रह कुर्वन्ति, इष्टाभिर्वाग्भिर्नो सल्पन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति। तत खलु तेतलिपुत्रो यत्रैव स्वक गृह तत्रैव उपागच्छति। यापि च 'से' तस्य 'तत्थ' तत्र भवने बाह्या परिषद् भवन्ति, तद् यथा-'दासाइ वा' दासादिति वा,

णति, नो अब्भुट्ठेंति) मार्ग में तेतलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही (नो अञ्जलिपरिग्गह करेंति, इट्ठाहिं जाव णो सल्लवंति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड कर नमस्कार ही किया। न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, संलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग मे ही चले। (तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तेतलिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया। उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) वहा पर भी जो दास घर के काम काज करने

પરિયાણતિ, નો અબ્ભુટ્ઠેંતિ)

માર્ગમા જતા તેતલિપુત્રને ઇશ્વર તલવર માડંબિક વગેરે લોકોએ જોયો પણ કોઇએ પહેલાની જેમ તેનો આદર ન કર્યો, તેના આગમનની અનુમોદના ન કરી અને તેને જોઇને તેઓ ઊભા ન થયા

(નો અંજલિ પરિગ્ગહ કરેંતિ, ઇટ્ઠાહિં જાવ णો સલ્લવંતિ નો પુરઓ ય પિટ્ઠઓ ય પાસઓ ય મગ્ગઓ ય સમણુગ०)

અને તેઓએ હાથ જોડીને તેને નમસ્કાર પણ ન કર્યા ઇષ્ટ, પ્રિય, વચનોથી તેઓએ તેની સાથે આલાપ ન કર્યો, સલાપ ન કર્યો અને બને બાજુએ થઇને તેઓ માર્ગમા તેની સાથે સાથે ચાલ્યા પણ નહિ (તએણ તેતલિપુત્તે જેણેવ સએગિહે તેણેવ उवागच्छइ) આ પ્રમાણે ચાલતો ચાલતો તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોતાને ઘેર આવી ગયો

(उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा, सा वि य ण नो आढाइ नो परियाणाइ, न अब्भुट्ठेइ) ત્યા પણ જે દાસો-ઘરમા કામ કરનારા નોકરો, પ્રેષ્યો-ઘરના કામ માટે

दासाः=गृहकार्यकारिणोभृत्या', पेसाइया' प्रेष्याइति वा, प्रेष्याः गृहकार्यं कर्तुमन्यत्र प्रेषणीया भृत्याः, 'भाइल्लएति वा' भाइल्लाइति वा, 'भाईल्ल' इति देशीशब्द ,हालिकः भागिनश्चेति तदर्थः हालिका'=भूमिकर्षणार्थं नियुक्ता भृत्याः, भागिनः,=स्वव्ययेनाऽन्यस्य क्षेत्रे कृषिं कृत्वा उपजातान्नस्यार्धभाग ग्राहिण , एतद्रूपा या परिषत् साऽपि च एत नो आद्रियते,नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठते । याऽपि च तस्य आभ्यन्तरिको परिषद् भवति, 'त जहा' तद् यथा 'पियाइ वा' पितेति वा, ' मायाइ वा ' माता इति वा, 'जाव सुण्हाइ वा ' यावत् स्नुषेति वा, स्नुषा =पुत्रवधू, तद्वापि च परिषद् एन नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति । तत खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव वासगृह यत्रैव स्वक शयनीय तत्रैव उपागच्छति,उपागत्य,

---

वाले नौकर प्रैष्य, घर के काम के लिये जिन्हे बाहर भेजा जाता है ऐसे भृत्य, तथा भाईल्ल-हालिक-भूमि कर्षणार्थ नियुक्त भृत्य, अथवा भागीदार-अपने व्यय से अन्य के खेत में कृषिकरके उत्पन्न अन्न के अर्ध भोग को लेने वाले वटियाजन इनरूप जो बाह्य परिषत् थी उसने भी उसका आदर नही किया, उसके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उसके आने पर अपने अधिष्ठित स्थान से उठे। (जाविय से अब्भितरिया परिसा भवइ-तजहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) इसी तरह जो उसकी अन्तरग परिषद थी जैसे पिता माता यावत् स्नुषा-पुत्रवधू आदि जन इन्होने भी उसका आदर नही किया, आगमन का अनुमोदन नहीं किया और न ये कोई भी उसके आने पर अपने स्थानसे

જેઓને બહાર મોકલવામા આવે છે તે ભૃત્યો, તથા ભાઇલ્લ-હાળીકો એટલે કે ખેડવા માટે નિયુક્ત કરાયેલા ભૃત્યો અથવા તો ભાગીદારો-કે જે પોતાના ખર્ચે જ બીજાના ખેતરોમા અનાજ વાવે છે અને બળતરમા ખેતરના માલિક પાસેથી અર્ધોભાગ મેળવે છે-એવા જે બાહ્ય પરિષત સબધી લોકો હતા તેઓએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યુ નહિ અને ન તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનેથી સત્કાર માટે તેઓ ઊભા થયા (जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ-त जहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) અને આ પ્રમાણે જ તેની અતરગ પરિષદના લોકો જેમ કે પિતા માતા યાવત્ સ્નુષા-બેટા વહુ-વગેરે લોકોએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યુ નહિ અને તેઓમાથી કોઇ પણ તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનથી ઊભા થયા નહિ.

शयनीये निषीदति, निषद्य, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-एव खलु=यथा अद्य तथैवान्यस्मिन्नपि दिवसे, अहं स्वकाद् गृहात् निर्गच्छामि, ' त चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाइ, नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ ' तदेव यावत् आभ्यन्तरिकी परिषद् नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति, अस्यायमभिप्रायः-पूर्वस्मिन् दिवसे राज्ञि प्रसन्ने मां दृष्ट्वा राजेश्वरादयः सर्वे आद्रियन्ते स्म,परिजानान्ति स्म अभ्युत्तिष्ठन्ति स्म,अद्याऽपि गृहनिर्गतं मां ते तथैव सत्कारयन्तिस्म। परन्तु राज्ञि अकस्मात् अप्रसन्ने राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकप्रभृतयः तथा मदीय बाह्याभ्यन्तरा च परिषदपि सर्वेऽपि च मां नाद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो

उठे। (तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह घर पर आकर वह तेतलिपुत्र अमात्य जहां अपना वासगृह और उसमें भी जहां अपनी शय्या थी वहां गया (उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) वहां जाकर वह उस पर बैठ गया-और मनही मन विचार करने लगा-(एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ नो अब्भुट्ठेइ-तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) पहिले के दिनों में जब मैं अपने घर से निकलता था तो लोग-राजेश्वर आदि समस्त जन मुझ पर राजा की प्रसन्नता होने के कारण आता जाता हुआ देखकर मेरा आदर करते थे-मेरे आगमन आदि की अनुमोदन करते थे उठकर अपने विनय प्रदर्शित करते थे-तथा आज भी जब मैं घरसे निकल

(तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે ઘેર આવીને તેતલિપુત્ર અમાત્ય જ્યાં તેની રહેવાની ઓરડી અને તેમા પણ જ્યાં પોતાની પથારી હતી ત્યાં ગયો (उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) ત્યાં જઈને તે તેના ઉપર બેસી ગયો અને મનમા જ વિચાર કરવા લાગ્યો કે

(एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ-तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ)

પહેલા જ્યારે હું ઘેરથી બહાર નીકળતો હતો ત્યારે લોકો-રાજેશ્વર વગેરે બધા લોકો-રાજા મારા ઉપર ખુશ હતા એટલે-આવતા જતા જોઇને મારો આદર કરતા હતા, મારા આ ગમનનુ અનુમોદન કરતા હતા તેમજ ઊભા થઇને વિનય પ્રદર્શિત કરતા હતા અને આજે પણ હું જ્યારે ઘેરથી નીકળીને

अभ्युत्तिष्ठन्ति । ' त ' तत्=तस्मात् कारणात्, श्रेयः खलु मम आत्मान जीवितात् व्यपरोपयितुम्, इति कृत्वा, एव सपेक्षते, सपेक्ष्य तालपुट विषम् ' आसगसि ' आस्ये=मुखे प्रक्षिपति, विष नो सक्राम्यति=विषत्वेन नो परिणमति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो ' नीलुप्पल जाव असि ' नीलोत्पल यावदसि=नीलोत्पल गवलगुलिकसमप्रभ=नीलोत्पल=नीलकमलम् गवल=माहिष शृङ्गम्, ' गुलिक ' नीलरङ्गविशेष, तै. समा प्रभातेतलि कान्तिर्यस्य स त तादृश यावदसि=तीक्ष्ण खड्ग ' खधे ' स्कन्धे=स्कन्धपृष्ठे ' ओहरइ ' अवहरति=निपातयति । तत्राऽपि च

कर राजा के पास गया-तब भी इन सबलोगों ने पूर्ववत् मेरा आदर आदि सब कुछ किया-परन्तु अकस्मात राजा के रुष्ट होने पर जब मैं वहा से लौटकर वापिस अपने स्थान पर आने लगा-तो किसी ने भी मेरा आदर आदि कुछ भी सत्कार नहीं किया। यहा तक कि जो मेरी बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् है-भीतर बाहरके नौकर चाकर एव माता पिता आदि जन हैं-उसने भी आज इस समय आने पर मुझे कुछ नहीं समझा-अत. मुझे अब ऐसी स्थिति से मरना ही उत्तम है। इस प्रकार का उसने अपने मन मे विचार किया-(सपेहित्ता तालउड विस आसगसि पक्खिवइ, सेय विसे णो सक्कमइ, तएण से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०) विचार करके उसने ताल पुटविष को अपने मुख मे डाला-परन्तु उसने अपना कुछ भी प्रभाव

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાએ પહેલાની જેમજ મારો આદર વગેરે બધુ કર્યું હતું પણ ઔચિત્ય રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ જ્યારે હુ ત્યાથી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કોઈએ પણ મારો આદર કે સત્કાર કર્યો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યતર પરિષદ એટલે કે બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-છે તેઓએ પણ આજે અત્યારે મારા આવવા બદલ કઈ પણ કિંમત કરી નહિ એથી એવી પરિસ્થિતિમા મારૂ મરણ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

(*सपेहित्ता तालउड विस आसगसि पक्खिवइ, सेय विसे णो सक्कमइ, तएण से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधसि ओहरइ, तत्थवि य से धारा ओपल्ला, तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेवउ०*)

આ જાતનો વિચાર કરીને તેણે તાલપુટ વિષ (ઝેર)

'से' तस्य खड्गस्य धारा 'ओपल्ला' कुण्ठिता, 'ओपल्ल' इति देशी शब्दः तत्पुटेन विषेण, कण्ठे निपातितेनापिनाऽपि च तदभिलषित मरण न जातम्। ततः खलु=तदनन्तर स तेतलिपुत्रो यत्रैव अशोकवनिका=अशोकवाटिका तत्रैव उपागच्छति,उपागत्य पाशक ग्रीवाया बध्नाति, बद्ध्वा 'रुक्ख' वृक्ष 'दुरुहइ, दुरोहति=आरोहति, दूरुह्य, पाश वृक्षे बध्नाति, बद्ध्वा आत्मान 'मुयइ' मुञ्चति= अधः पातयति। 'तत्थवि' तत्राऽपि=एतस्मिन्मरणोपाय कृतेऽपि च 'से' तस्य रज्जुश्छिन्ना=भग्न एव पाशस्त्रुटित। ततः खलु स तेतलिपुत्रः 'महइमहालय' महातिमहतीम्=अति विशाला शिला ग्रीवाया बध्नाति, बद्ध्वा 'अत्थाहमतारमपोरुसियंसि' अस्ताघातारपौरुषेये=नास्ति स्नाघ' यस्य तत् अस्ताघम्=

नहीं दिखलाया-अर्थात् वह विष रूप से परिणत नहीं हुआ। इसके बाद उस तेतलिपुत्रने नीलोत्पल गवल, गुलिका की प्रभा जैसी प्रभावाली अत्यन्त नीलवर्ण वाली-ऐसी तलवार को कि जिसकी धार बहुत तीक्ष्ण थी-अपनी गर्दन पर रखा-अर्थात् उसे गर्दन पर चलाई-परन्तु उसने भी अपना काम नहीं किया-वह भी-कुण्ठित हो गई-इस तरह जब इन दोनों वस्तुओ से अपना अभिलषित मरण सा ध्य नहीं हुआ-अब वह तेतलिपुत्र जहा अशोकवनिका-अशोक वाटिका-थी वहा गया (उवागच्छित्ता पासगगीवाए बधइ) वहा जाकर उसने अपनी ग्रीवामे फदा डाला- बाधा (बधित्ता अप्पाण मुयइ, तत्थ वि से रज्जू छिन्ना) बान्ध कर फिर वह वृक्ष पर चढ़ गया और वहा से अपने आपको नीचे लटका दिया परन्तु यहा पर भी उसकी रज्जू बीच में से टूट गई (तएण से तेतलिपुत्ते

મુખમા નાખ્યુ પણ તેણે કઇ અમર બતાવી નહિ એટલે કે તે વિષ રૂપમા પરિણમ્યુ નહિ ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્રે, નીલોત્પલ ગવલ, ગુલિકના જેવી પ્રભાવાળી તેમજ તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલવારને પોતાની ડોક ઉપર મૂકી એટલે કે તેના વડે તેણે પોતાની ડોક ઉપર ઘા કર્યો પણ તેનાથી પણ કઈ કામ થયુ નહિ એટલે કે તરવાર પણ બૂઠી થઈ ગઈ હતી 'ઓપલ્લ' આ કુઠિત (બૂઠી) અર્થ માટે વપરાયેલો દેશી શબ્દ છે જ્યારે આ રીતે તે બને વસ્તુઓથી તેની ઈચ્છા પૂરી થઇ નહિ એટલે કે તેનુ મરણ થઈ શકયુ નહિ ત્યારે તે જ્યા અશોક વનિકા-અશોક વાટિકા-હતી ત્યા ગયો (उवागच्छित्ता पासग गीवाए बधइ) ત્યા જઇને તેણે પોતાની ડોકમા ફાસો ભેરવીને બાધ્યો (बधित्ता अप्पाण मुयइ तत्थ वि से रज्जु छिन्ना) બાધીને તે વૃક્ષ ઉપર ચઢી ગયો અને ત્યાથી પોતાની મેળે જ તે લટકી ગયો પરતુ અહીં પણ ફાસાનુ દોરડ વચ્ચેથી તૂટી ગયુ હતું

अभ्युत्तिष्ठति । ' त ' तत्=तस्मात् कारणात्, श्रेयः खलु मम आत्मान जीवितात् व्यपरोपयितुम्, इति कृत्वा, एव संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य तालपुट विषम् ' आसगसि ' आस्ये=मुखे प्रक्षिपति, विष नो संक्रामयति=विषत्वेन नो परिणमति । ततः खलु स तेतलिपुत्तो ' नीलुप्पल जाव असिं ' नीलोत्पल यावदसिं=नीलोत्पल गवलगुलिकसमप्रभ=नीलोत्पल=नीलकमलम् गवय=माहिष शृङ्गम्, ' गुलिय ' नीलरङ्गविशेष, तै. समा प्रभातेतलि कान्तिर्यस्य स त तादृश यावदसि=तीक्ष्ण खड्ग ' खधे ' स्कन्धे=कण्ठपृष्ठे ' ओहरइ ' अवहरति=निपातयति । तत्राऽपि च

कर राजा के पास गया-तब भी इन सबलोगों ने पूर्ववत् मेरा आदर आदि सब कुछ किया-परन्तु अकस्मात राजा के रुष्ट होने पर जब मैं वहा से लौटकर वापिस अपने स्थान पर आने लगा-तो किसी ने भी मेरा आदर आदि कुछ भी सत्कार नहीं किया। यहा तक कि जो मेरी बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् है-भीतर बाहरके नौकर चाकर एव माता पिता आदि जन हैं-उसने भी आज इस समय आने पर मुझे कुछ नहीं समझा-अतः मुझे अब ऐसी स्थिति से मरना ही उत्तम है। इस प्रकार का उसने अपने मन मे विचार किया-(संपेहित्ता तालउड विस आसगसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संकमइ, तएण से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०) विचार करके उसने ताल पुटविष को अपने मुख में डाला-परन्तु उसने अपना कुछ भी प्रभाव

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાએ પહેલાની જેમજ મારો આદર વગેરે બધુ કર્યું હતુ પણ ઔચિત્ય રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ જ્યારે હુ ત્યાથી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કોઈએ પણ મારો આદર કે સત્કાર કર્યો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યતર પરિષદ એટલે કે બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-છે તેઓએ પણ આવે અત્યારે મારા આવવા બદલ કઈ પણ કિંમત કરી નહિ એથી એની પરિસ્થિતિમા મારૂ મરણ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

(संपेहित्ता तालउड विस आसगसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संकमइ, तएण से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधसि ओहरइ, तत्थवि य से धारा ओपल्ला, तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेवउ०)

આ જાતનો વિચાર કરીને તેણે તાલપુટ વિષ (ઝેર) ને પોતાના

दीत्=चित्त सबो य मनस्येनमकथयत्-भो चित्त ! श्रमणा यद् वदन्ति तत्खलु श्रद्धेय=श्रद्धा योग्य, श्रद्धेय खलु भोः ब्राह्मणा वदन्ति, श्रद्धेय खलु भोः ! श्रमण ब्राह्मणा वदन्ति। अय भाव-आत्मपरलोकाद्यर्थ प्रतिबोधक श्रमणादीना वचन श्रद्धेय भवति, अतीन्द्रियस्याप्यात्मपरलोकादिरूपस्यानुमानादि प्रमाणविषयतया श्रद्धाविषयत्वात्। परन्तु अहमेको असहायः अश्रद्धेयम् अविश्वसनीय वदामि। यद्यपि मदीय वचन सर्वथा सत्यम्, तथापि असम्भाव्यतया जनैः प्रत्येतुमशक्यम्। तदेवाह-' एव खलु ' इत्यादिना ' एव खलु ' मयि अश्रद्धेय

बीच ही में बुझ गई। इस तरह इन समस्त अनुभवनों की सभवना के बाद तेतलिपुत्रने अपने आपको सबोधित करते हुए मन मे विचार किया-हे चित्त ! श्रमणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है। ब्राह्मणजन जो कहते है वह श्रद्धेय है इसी प्रकार श्रमणमाहणजन जो कहते है वह श्रद्धेय है। इसका भाव यह है कि आत्मा, परलोक आदि पदार्थ जो कि अतीन्द्रिय हैं वे अनुमान आदि प्रमाण कि विषयभूत हो जाते है-इसलिये ये श्रद्धाके विषय बन जाते है-अतः इन अतीन्द्रिय आत्म, परलोक आदि पदार्थो को प्रतिपादित करने वाले श्रमण माहण आदिकों के वचन भी श्रद्धेय हो जाते हैं, परन्तु में जो कह रहा हूँ वह अश्रद्धेय कह रहा हूँ एक असहाय हूँ-इसलिये-मुझे इस विषयमें किसी को भी सहायता मिलने वाली नही है। उन श्रमण माहण आदिजनो के वचनो के सहायक तो अनुमान आदि प्रमाण है-परन्तु मेरा सहायक कोई प्रमाण ही नहीं होता है, यद्यपि मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ परन्तु वह मेरा वचन असम्भवित असहाय-होने की वजह से मनुष्यो के लिये श्रद्धेय नहीं बन

આ રીતે આ બધા અનુભવનોની સભાવના બાદતે તલિપુત્રે પોતાની જાતનેજ સબોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે, બ્રાહ્મણો જે કઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રમણ માહણજનો જે કઇ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ જાય છે એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની જાય છે એથી આ બધા અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનુ પ્રતિપાદન કરનાર શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ જાય છે, પણ હુ જે કઈ કહી રહ્યો છે તે અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છુ એક અસહાય છુ એથી મને આ બાબતમા કોઈની મદદ પણ મળી શકે તેમ નથી તે શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનોના સહાયક તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે પણ મારા કથનનુ સહાયભૂત થાય તેવુ કોઈ પ્રમાણ જ નથી જો કે હુ જે કઇ પણ કહી રહ્યો છુ તે સપૂર્ણ રીત યથાર્થ [illegible] મારા તે વચનો અસભવિત અસહાય હોવા બદલ

अतलस्पर्शि, अतारम्=अतरणीयम्, अपौरुषेयम्=पुरुष प्रमाणं यस्य तत् पौरुषेयम्= न पौरुषेयम्=अपौरुषेयम्=पुरुषप्रमाणरहितम्, एतादृशं कर्मधारय, तस्मिन् अतिगम्भीरे इत्यर्थः, उदके आत्मान मुञ्चति। तत्राऽपि=तस्मिन्नुदकेऽपि च 'से' तस्य=तेतलिपुत्रस्य 'थाहे' स्ताघो जातः। तत खलु स तेतलिपुत्रः शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जे 'अगणिकायं' अग्निकाय प्रक्षिप्य, तत्र आत्मान मुञ्चति। तत्रापि=शुष्के तृणेऽपि सो ऽग्निकायो 'निज्झाए' निध्यात =उपशान्त। 'तएण' ततः खलु=एतस्य सर्वस्य असम्भाव्यस्य सम्भावनानन्तरम् स तेतलिपुत्र एवमवा

महइमहालयं सीलं गीवाए-बंधइ बंधित्ता अत्थाहं मतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए) इसके बाद उस तेतलिपुत्र ने एक बहुत विशालकाय शिला को अपने गले में बांधा-और बांध कर अपने आपको अथाह-अतार एवं अपुरुष प्रमाण जल में छोड़ दिया-परन्तु वह जल भी उसके लिए ताघ थाह युक्त-बन गया-(तएणं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए-तएणं से तेतलिपुत्ते एवं-वयासी-सद्धेया खलु भो समणा वयंति सद्धेया-खलु भो माहणा वयंति, सद्धेया खलु भो समणमाहणा वयंति, अहं एगो असद्धेया वयामि एवं खलु अहं सहं पुत्तेहिं अपुत्ते को मेयं सद्दहिस्सइ १ सहमित्तेहिं अमित्ते को मेयं सद्दहिस्सइ) इसके बाद तेतलिपुत्रने शुष्क घासके ढेर में अग्नि लगाई-और उसमें अपने आपको डाल दिया-परन्तु वह भी

(तएणं से तेतलिपुत्ते महइ महालयं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारम पोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए)

ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટી ભારે શિલા (પથરો) ને પોતાની જાતને અથાહ-અતાર અને અપુરુષ પ્રમાણે પાણીમા નાખી દીધી પરતુ તે ઊડુ પાણી પણ તેના માટે થાહ વાળુ એટલે કે છીછરુ થઈ ગયુ

(तएणं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए-तएणं से तेतलिपुत्ते एवं वयासी सद्धेया खलु भो समणा वयंति सद्धेया-खलु भो माहणा वयंति, सद्धेया खलु भो समण माहणा वयंति, अहं एगो असद्धेया वयामि एवं खलु अहं सहं पुत्तेहिं अपुत्ते को मेयं सद्दहिस्सइ ? सहं मित्तेहिं अमित्ते को मेयं सद्दिस्सइ)

ત્યાર પછી તેતલિપુત્રે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને પોતાની જાતને તેમા નાખી દીધી પરતુ તે પણ વચ્ચેથી જ [illegible] ગયુ

दीत्=चित्त सम्बोध्य मनस्येवमकथयत्-भो चित्त ! श्रमणा यद् वदन्ति तत्खलु श्रद्धेय=श्रद्धा योग्य, श्रद्धेय खलु भोः ब्राह्मणा वदन्ति, श्रद्धेय खलु भोः ! श्रमण ब्राह्मणा वदन्ति। अय भाव-आत्मपरलोकार्थं प्रतिबोधक श्रमणादीना वचन श्रद्धेय भवति, अतीन्द्रियस्याप्यात्मपरलोकादिस्वरूपस्यानुमानादि प्रमाणविषयतया श्रद्धाविषयत्वात्। परन्तु अहमेको असहायः अश्रद्धेयम् अविश्वसनीय वदामि। यद्यपि मदीय वचन सर्वथा सत्यम्, तथापि असम्भाव्यतया जनैः प्रत्येतुमशक्यम्। तदेवाह-' एव खलु ' इत्यादिना ' एव खलु ' मयि अश्रद्धेय

बीच ही में घुस गई। इस तरह इन समस्त असम्भवनों की सम्भवना के बाद तेतलिपुत्रने अपने आप-को सम्बोधित करते हुए मन मे विचार किया-हे चित्त ! श्रमणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है। ब्राह्मणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है इसी प्रकार श्रमणब्राह्मणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है। इसका भाव यह है कि आत्मा, परलोक आदि पदार्थ जो कि अतीन्द्रिय हैं वे अनुमान आदि प्रमाण कि विषयभूत हो जाते है-इसलिये ये श्रद्धाके विषय बन जाते हैं-अतः इन अतीन्द्रिय आत्म, परलोक आदि पदार्थों को प्रतिपादित करने वाले श्रमण ब्राह्मण आदिकों के वचन भी श्रद्धेय हो जाते हैं, परन्तु में जो कह रहा हूँ वह अश्रद्धेय कह रहा हूँ एक असहाय हूँ-इसलिये-मुझे इस विषयमें किसी को भी सहायता मिलने वाली नही है। उन श्रमण ब्राह्मण आदिजनों के वचनों के सहायक तो अनुमान आदि प्रमाण है-परन्तु मेरा सहायक कोई प्रमाण ही नहीं होता है, यद्यपि में सर्वथा सत्य कहता हूँ परन्तु वह मेरा वचन असम्भवित असहाय-होने की वजह से मनुष्यो के लिये श्रद्धेय नहीं बन

આ રીતે આ બધા અસંભવનોની સંભાવના બાદતે તેતલિપુત્રે પોતાની જાતનેજ સંબોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કઇ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે બ્રાહ્મણો જે કઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રમણ બ્રાહ્મણજનો જે કઇ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ જાય છે એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની જાય છે એવી આ બધા અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનુ પ્રતિપાદન કરનાર શ્રમણ બ્રાહ્મણ વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ જાય છે, પણ હુ જે કઈ કહી રહ્યો છે તે - અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છુ એવ અસહાય છુ એવી મને આ બાબતમા કોઈની મદદ પણ મળી રહે તેમ નથી તે શ્રમણ બ્રાહ્મણ વગેરેના વચનોના સહાયક તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે પણ મારા કથનનુ સહાયભૂત થાય તેવુ કોઈ પ્રમાણ જ નથી ને કે હુ જે કઇ પણ કહી રહ્યો છુ તે સંપૂર્ણ રીત યથાર્થ સત્ય-કહી રહ્યો છુ પણ મારા તે વચનો અસંભવિત અસહાય હોવા બદલ

वचने सती यदि अहमेव=एवभूत मत्यमपि श्रद्दामि, यत्-अह 'सहपुत्तेहिं अपुत्त' सहपुत्रैरपि अपुत्रः=पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि अहं पुत्ररहित एवास्मि 'अनादृतत्वात् कः 'मेय' ममेदं=इदं मदीय वचनं 'सद्दिस्सइ' श्रद्धास्यति=श्रत्येष्यति, न कोऽपि, तथा अहं 'सहमित्तेहिंअमित्त' सहमित्रैरमित्र=मित्रेषु विद्यमानेष्वपि 'मित्ररहितोऽहं' को 'मेद' ममेदं वचनं श्रद्धास्यति ? एवम्=अनेन प्रकारेणैव अर्थेन दारैः दासैः परिजनेन च सहितोऽपि, तं रहितोऽस्मि, इदं मदीय वचनं कः श्रद्धास्यति, अपितु न कोऽपि। 'एव' अमुना प्रकारेण रा यद्यहं ब्रवीमि-यत् 'तेतलिपुत्ते' तेतलिपुत्र नामधेये खलु मयि अमात्ये कनकध्वजेन राज्ञा 'अवओहाणेणं समाएणं' अपध्यातेन=दुश्चिन्तकेन सता, अर्थात् कनकध्वजो राजा

सकता है जैसा मैं यह सत्य भी कहूँ कि मैं पुत्रों के विद्यमान होने पर भी अपुत्र पुत्र रहित-हूँ, तो कौन मेरी इस बात को श्रद्धा से देखेगा-इसी तरह में यह कहूँ कि मैं मित्रों के विद्यमान होने पर भी मित्र रहित हूँ-तो कौन मेरे इन वचनों पर विश्वास करेगा-(एव अत्थेणं दारेण दासेहिं परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्तेण अमच्चे कणगज्झएण रन्ना अवज्झाएण समाणेण तेतलिपुत्तेण तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण नीलुप्पल जाव खधसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सद्दहिस्सइ) इस तरह अर्थ, दारा, दास, परिजन, इन से युक्त होने पर भी मैं-इन से रहित हूँ, कौन मेरे इस वचन को मानेगा? अर्थात् कोई नहीं मानेगा इसी तरह यदि मैं ऐसा कहूँ कि मुझे तेतलिपुत्र अमात्य के ऊपर कनक

માણસો માટે શ્રદ્ધેય થઈ શકે તેમ નથી જેમ કે હું અત્યારે આ જાતની સાચી વાત પણ કહું કે પુત્રો હોવા છતાએ હું પુત્ર વગરનો છું તો કોણ મારી આ વાતને શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોશે ? આ પ્રમાણે જ હું કહું કે મિત્રો હોવા છતાએ હું મિત્ર વગરનો છું તો કોણ મારી આ વાત ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવશે?

(एव अत्थेण दारेण दासेहिं परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्तेण अमच्चे कणगज्झएण रन्ना अवज्झाएण समाणेण तेतलिपुत्तेण तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ, को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण नीलुप्पल जाव खधसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सद्दहिस्सइ)

આ રીતે અર્થ (ધન), દારા (પત્ની) દાસ, પરિજન એ બધા હોવા છતા પણ હું એમના વગર છું મારી આ વાત ઉપર કોણ વિશ્વાસ મૂકવા તૈયાર થશે ? એટલે કે કોઈ પણ વિશ્વાસ કરશે જ નહિ આ રીતે જ જો હું આમ કહું કે મારા ઉપર રાજા કનક ધ્વજ નારાજ થઈ ગયા હતા એટલા માટે

तेतलिपुत्रे दुश्चिन्तको जात' इतिहेतोः, तेतलिपुत्रेण तालपुटक विषम् 'आसगसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिप्तम्, 'से वि य' तदपि च विष नो 'कमइ न क्राम्यति=विषत्वेन न परिणमति को जन 'मेढ' मपेढ सत्यमपि वचन श्रद्धास्यति न कोऽपि, तथा 'तेतलिपुत्तेण' नीलुप्पल जाव खग्गसि ओहरिए' तेतलिपुत्रेण नीलोत्पल यावत् स्कन्धे अपहृतः=तेतलिपुत्रेण नीलोत्पलगवलगुलिकयमप्रभाऽसि 'स्कन्धे कण्ठमूले' अवहृत' प्रहृतः 'तत्थवि' तत्रापि=तस्मिन् मरणोपाये कृतेऽपि च' तस्य=असेः धारा ओपलता=कुण्ठीभूता को 'मेढ ममेद श्रद्धास्यति। एवमेव यद्यहं ब्रूयाम् यन्मया 'तेतलिपुत्तेण पासगं गीवाए बधेत्ता जाव रज्जूछिन्ना को मेय सद्दहिस्सइ' तेतलिपुत्रेण पाशक ग्रीवाया बद्ध्वा यावत् रज्जुश्छिन्ना, को ममेद श्रद्धास्यति ? तेतलिपुत्रेण अतिविशाला शिला यावद् बद्ध्वा अस्ताधयाव-

ध्वज राजा दुश्चितक बन गये-इसलिये मने तालपुट विष मुख में डाल दिया परन्तु वह विषरूप से परिणमित नहीं हुआ। मने विष खाया-पर मैं मरा नहीं-कौन मनुष्य मेरी इस सत्य बात को श्रद्धा की दृष्टी से देखेगा। तथा मैंने नीलोत्पल, गवल एव गुलिका की प्रभा जैसी प्रभाव वाली तीक्ष्ण तलवार अपनी गर्दन पर मरने के लिये चलाई-परन्तु वह भोटी धारवाली बन गई-कुण्ठित हो गई-उससे मेरी गर्दन नहीं कटी-कौन मेरी इस बात को मानने के लिये तैयार हो सकेगा (तेतलिपुत्तेणं पासग इत्यादि) इसी तरह यदि मे यह कहूँ कि मुझ तेतलिपुत्रने अपने गले में पाशक डाला और वृक्षपर चढकर वहा से नीचे मैं लटक पड़ा और फदा बीच में से टट गया तो कौन इन वचनो पर विश्वास करेगा। (तेतलिपुत्तेणं महइमहालय जाव बधित्ता अत्थाह जाव उद्दगसि अप्पा

મે તાલપુ વિષ (ઝેર) ખાધુ હતુ પણ તે વિષના રૂપમા પરિણત થયુ નથી એટલે કે વિષ ભક્ષણ કરવા છતાએ હુ મરણ પામ્યો નહિ આ વાત ઉપર કયો માણસ વિશ્વાસ મૂકવા તૈયાર થશે ? તેમજ નીલોત્પલ, ગવલ અને ગુલિકાના જેવી પ્રભાવાળી તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલ્વારનો મે મરવા માટે મારી ડોક ઉપર ઘા કર્યો પણ તે તરવાર જ બૂડી ધારવાળી થઈ ગઇ-કુઠિત થઇ ગઈ-તેનાથી મારી ડોક કપાઈ નહિ મારી આ વાત ઉપર કોણ વિશ્વાસ કરવા તૈયાર થશે ? (तेतलिपुत्तेण पासग इत्यादि) આ રીતે જ હુ આમ કહુ કે મે તેતલિપુત્રે પોતાના ગળામા ફાસો નાખ્યો અને વૃક્ષ ઉપર ચઢયો વૃક્ષ ઉપર ચઢીને ત્યાથી નીચે લટકી પડયો પણ ફાસો વચ્ચેથી જ તૂટી ગયે તો કોણ માની આ વાત ઉપર વિશ્વાસ મૂકશે ?

(तेतलिपुत्तेण महइमहालय जाव बधित्ता अत्थाह जाव उद्दगसि अप्पा मुक्के,

दुदके आत्मा मुक्तः, तत्रापि च खलु रताधो जातः, को ममेदं श्रद्धास्यति=मया स्वकण्ठे महाशिला बद्ध्वा अगाधे उदके आत्मा मुक्तः, परन्तु तस्मिन्नुदकेऽपि मम तलस्पर्शो जातः, इति मम वचनं कः श्रद्धास्यति ? पुनश्च-तेतलिपुत्रेण मया शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जेऽग्निकायं प्रक्षिप्य प्रज्वलिते तस्मिन् आत्मा मुक्तः, परन्तु सोऽग्निकायः 'निज्झाए' निर्ध्यातः=उपशान्तः, इत्येवरूपमपि मदीयं वचनं कः श्रद्धास्यति ? न कोऽपि, इत्येवं स तेतलिपुत्रः 'ओहयमणसंकप्पे' अपहृत-मनः संकल्प=भग्नोत्साहः सन् यावद् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति ॥सू० १०॥

मुक्को,तत्थ वि णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) मुझ तेतलिपुत्रने एक बहुत बड़ी शिला का गलेमें बाधी और बाद में अथाह अतार अपुरुष प्रमाण जल में कूद पड़ा परन्तु वह जल कूदते ही थाह वाला बन गया अथाह नहीं रहा मेरी इस सत्य बात पर भी कौन श्रद्धा करेगा। इसी तरह मुझ तेतलिपुत्रने एक बडे भारी शुष्क घास के ढेर में अग्नि लगाई और उस में अपने आप को प्रक्षिप्त कर दिया-परन्तु वह अग्नि बुझ गई उसने मुझे भस्म नहीं किया मेरी इसबात को कौन श्रद्धा रूप से स्वीकार करेगा। इस प्रकार अपहृत मन संकल्प वाला बन कर-उत्साह रहित होकर वह तेतलिपुत्र अमात्य आर्तध्यान में पड़ गया ॥ सू० १० ॥

तत्थ वि णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ)

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથરા) ગળામા બાંધી અને ત્યાર પછી હુ અથાહ (ઊંડા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જેટલા પાણીમા કૂદી ગયેા પણ કૂદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળુ (છીછરુ) થઇ ગયુ, અથાહ (ઊંડુ) રહ્યુ નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કેાણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મેાટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ પ્રગટાવ્યેા અને તેમા મે પેાતાની જાતને ઝપલાવી દીધી પણ તે અગ્નિ ઓલવાઇ ગયેા તેણે મને ભસ્મ કર્યો નહિ મારી આ વાતને કેાણ શ્રદ્ધેય માનીને સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમન સંકલ્પવાળેા (હતાશ) થઇને નિરુત્સાહી બની ગયેા અને આર્તધ્યાનમા ડૂબી ગયેા ॥ " " ॥

मूलम्–तएणं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूव विउव्वइ, विउव्वित्ता, तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी–ह भो ! तेतलिपुत्ता ! पुरओ पव्वाए पिट्ठओ हत्थिभयं, दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति, गामे पलित्ते रन्ने झियाइ, रन्ने पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेतलिपुत्ता ! कओ वयामो ?, तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एव वयासी–भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं, उक्कठियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्न, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्ज, माइयस्स रहस्स अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणाकिच्चं, पर अभिउजिउकामस्स सहायकिच्चं खतस्स दतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि णं भवइ । तएण से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्च एव वयासी–सुट्ठु णं तुम तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठ आयाणाहि त्तिकट्टु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिस पाउब्भूए, तामेव दिस पडिगए ॥ सू० ११ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ' तएण ' तत खलु तेतलिपुत्रे आर्तध्यानते सति स पोट्टिलोदेव' ' पोट्टिलारूव ' पोट्टिलारूप विकुर्वति=वैक्रियशक्त्या

' तएण से पोट्टिले देवे ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) उस पोट्टिल देवने (पोट्टिला रूव विउव्वइ) पोट्टिला के रूप की विकुर्वणा की–अर्थात् वैक्रिय शक्ति के प्रभाव से उसने पोट्टिला का रूप धारण किया (विउव्वित्ता

'तएण से पोट्टिले देवे' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યાર પછી (से पोट्टिले देवे) તે પોટ્ટિલદેવે (पोट्टिला रूव विउव्वइ) પોટ્ટિલાના રૂપની વિકુર્વણા કરી એટલે કે વૈક્રિય શક્તિના પ્રભાવથી

दुदके आत्मा मुक्तः, तत्रापि च खलु मृताभो जातः, को मामेवं श्रद्धास्यति=मया स्वकण्ठे महाशिला यद्धा अगाधे उदके आत्मा मुक्तः, परन्तु तस्मिन्नुदकेऽपि मम तलस्पर्शो जातः, इति मम वचनं कः श्रद्धास्यति ? पुनश्च-तेतलिपुत्रेण मया शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जेऽग्निकाय प्रक्षिप्य प्रज्वलिते तस्मिन् आत्मा मुक्तः, परन्तु सोऽग्निकाय 'विज्झाए' विध्यातः=उपशान्त, इत्येवरूपमपि मदीय वचनं कः श्रद्धास्यति ? न कोऽपि, इत्येव स तेतलिपुत्रः 'ओहयमणसंकप्पे' अपहृतमनः सकल्प=भग्नोत्साह' सन् यावद् ध्यायति=आर्त्तध्यान करोति ॥सू० १०॥

मुक्को,तत्थ वि ण थाहे जाए को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण सुक्कसि तणकूडसि अगणिकाय पक्खित्ता अप्पा मुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए को मेय सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) मुझ तेतलिपुत्रने एक बहुत बड़ी शिला का गलेमें बाधी और बाद में अथाह अतार अपुरुष प्रमाण जल में कूद पडा परन्तु वह जल कूदते ही थाह वाला बन गया अथाह नहीं रहा मेरी इस सत्य बात पर भी कौन श्रद्धा करेगा। इसी तरह मुझ तेतलिपुत्रने एक बडे भारी शुष्क घास के ढेर में अग्नि लगाई और उस में अपने आप को प्रक्षिप्त कर दिया-परन्तु वह अग्नि बुझ गई उसने मुझे भस्म नहीं किया मेरी इसबात को कौन श्रद्धा रूप से स्वीकार करेगा। इस प्रकार अपहृत मन संकल्प वाला बन कर-उत्साह रहित होकर वह तेतलिपुत्र अमात्य आर्तध्यान में पड़ गया ॥ सू० १० ॥

तत्थ वि ण थाहे जाए को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण सुक्कसि तणकूडंसि अगणिकाय पक्खित्ता अप्पा मुक्को तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए को मेय सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ)

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથ્થર) ગળામા બાધી અને ત્યાર પછી હુ અથાહ (ઊડા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જેટલા પાણીમા કૂદી ગયો પણ કૂદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળુ (છીછરુ) થઇ ગયુ, અથાહ (ઊંડુ) રહ્યુ નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કોણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને તેમા મે પોતાની જાતને ઝપલાવી દીધી પણ તે અગ્નિ ઓલવાઇ ગયો તેણે મને ભસ્મ કર્યો નહિ મારી આ વાતને કોણ શ્રદ્ધેય માનીને સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમન સકલ્પવાળો (હતાશ) થઇને નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમા ડૂબી ગયો ॥ " સૂ " ॥

मेवमवादीत् ' भो ' हे पोट्टिले ! भीतस्य खलु मव्रज्याशरण भवति तत्र दृष्टान्त-माह-यथा-' उक्कडियस्स ' उत्कण्ठितस्य=परदेशवर्त्तिनो बहु सुकृत्य स्वदेशगमन, ' बुहियस्स ' क्षुधितस्य अन्नम्, ' तिसियस्स ' तृषितस्य पान, ' आउरस्स आतुरस्य=रोगिण' 'भेसज्ज' भैषज्य 'मायिस्स' मायिकस्य=मायाविन. रहस्य=गोपनम्, ' अभिजुत्तस्स ' अभियुक्तस्य = दोषापवादयुक्तस्य ' पच्चयकरण = प्रत्ययकरण तन्निराकरणेन स्वविषये निर्दोषताप्रतीत्युत्पादनम्, 'अद्धाणपरिसतस्स' अ-ध्वपरिश्रान्तस्य=मार्गगमनपरिखिन्नस्य 'वाहणगमण' वाहनगमन, शकटादिना गमन ' तरि

तेतलिपुत्ते पोट्टिल एव वयासी-भीतस्स खलु भो पवज्जा-सरण-उक्कंडियस्स सदेसगमण बुहियस्स अन्न, तिसियस्स पाण, आउरस्स भेसज्ज, माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अद्धाण परिसतस्स वाहणगमण, तरिउकामस्स पहवणकिच्च. पर अभिउजिउकामस्स सहायकिच्चं सतस्स दतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ) इस प्रकार पोट्टिला की बात सुनकर तेतलिपुत्र अमात्य ने उससे ऐसा कहा हे पोट्टिले ! भीत (भय युक्त) के लिये प्रव्रज्या शरण भूत होती है, जैसे-परदेश वर्ती उत्सुक व्यक्ति के लिये स्वदेश गमन शरण भूत होता है, भूखे के लिये अन्न शरण भूत होता है प्यासे के लिये पानी, आतुर रोगी के लिये भैषज्य, मायावी के लिये मायाचारी, अभियुक्त-दोषापवाद वाले के लिये दोषों के निराकरण से अपने विषय मे निर्दोषता की प्रतीति का उत्पादन, शरण भूत होता है। मार्ग श्रान्त के लिये वाहन से गमन, करना शरण भूत होता है, तैरने की इच्छा वाले के

(तएण से तेतलिपुत्ते पोट्टिल एव वयासी-भीतस्स खलु भो पव्वज्ज सरण उक्कडियस्स सदेसगमण बुहियस्स अन्न निसियस्स पाण, आउरस्स भेसज्ज, माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अद्धाणपरिसतस्स वाहणगमण, तरिउकामस्स सहायकिच्च सतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ)

આ રીતે પોટ્ટિલાની વાત સાભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યુ કે હે પોટ્ટિલે ! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવ્રજ્યા શરણ ભૂત હોય છે-જેમ-પરદેશમા રહેતી ઉત્સુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ પાછા ફરવુ શરણ ભૂત હોય છે ભૂખ્યા ને માટે અન્ન શરણ ભૂત હોય છે આ પ્રમાણે જ તરસ્યાને મા ટે પાણી, આતુર-રોગ-ને માટે ભૈષજ્ય-દવા, માયાવીને માટે માયા ચ રી અભિયુક્ત-દોષાપવાદ વાળા-ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિર્દોષતાની પ્રતીતિનુ ઉત્પાદન શરણ ભૂત હોય છે માર્ગમા ચાલતા થાકી ગયેલાને માટે વાહનનો ઉપયોગ શરણ ભૂત હોય છે. તરવાની ઈચ્છા ધરાવતા માણસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

धारयति, निकुर्वित्वा तेतलिपुत्रस्य अदूरसामन्त=नातिदूरे नातिनिकटे स्थित्वा एवमवादीत्-इहो तेतलिपुत्र ! ' इहो ' इत्यामन्त्रणे, हे तेतलिपुत्र ! ' पुरओ ' पुरतः=अग्रतः ' ' पवाए ' प्रपातः=गर्त., अतो निर्गमनमसम्मति, पृष्ठतः हस्ति भयम्, अतो प्रत्यावर्तन चासमति, ' दुहओ ' उभयतः=उभयत =उभयोः पार्श्वयोः ' अचक्खुफासे' अचक्षुस्पर्शः=अन्धकार, ' मज्झे ' मध्ये=यत्र वयमास्महे तत्र ' सराणि' शरा =बाणा, ' वरिसंति ' वर्षन्ति=निपतन्ति । ' गामे पलित्ते ' ग्रामे प्रदीप्ते=प्रज्वलिते सति रण्णे ' अरण्य=वन ' झियाइ ' ध्यायति=गन्तु चिन्तयति, अरण्ये प्रदीप्ते ग्राम ध्यायति=गन्तु चिन्तयति, ' आउसो तेतलिपुत्ता ' हे आयुष्मन् तेतलिपुत्र ! ' उभओपलित्ते ' उभयत प्रदीप्ते=उभयस्मिन् प्रज्वलिते वय ' कओ वयामो ' कुतो व्रजाम'=कुत्र गच्छाम । तत' खलु स तेतलिपुत्रः पोट्टिला

तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठीच्चा एव वयासी) धारण कर के वह तेतलिपुत्र के समीप गयी। वहां जाकर उसने उससे इस प्रकार कहा-(इ भो तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभय) अरे ओ तेतलिपुत्र ! आगे प्रपात गड्ढा है और पीछे हाथी का भय है। (दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति) दोनों ओर अन्धेरा है और जहा हमलोग ठहरे हुए हैं वहा बाणों की वृष्टि हो रही है। (गामे पलित्ते रण्णो झियाइ, रन्नो पलित्ते गामे झियाइ) ग्राम में आगलगने पर मनुष्य जगल में चले जाने को सोचता है-और जगल में आग लगने पर ग्राम मे चले आने के लिये विचारता है। (आउसो तेतलि पुत्ता ! उभओ पलित्ते कओ वयामो) परन्तु जब दोनो में आग लग जावे तो हे आयुष्मन तेतलिपुत्र ! कहो ! हम कहा जावे ? (तएण से

तेणं पोट्टिलाए इय धारणं कयं (निउव्वित्ता तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठीच्चा एव वयासी) ધારણ કરીને તે તેતલિપુત્રની પાસે ગઈ ત્યા જઈને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (इ भो तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभय) અરે, ઓ ! તેતલિપુત્ર ! તમારી સામે પ્રપાત-ધોધ છે અને તમારી પાછળ હાથીનો ભય છે (दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति) બને તરફ અધારૂ છે અને જ્યા અમે ઊભા છીએ ત્યા તીરો વર્ષી રહ્યા છે (गामे पलित्ते रण्णो झियाइ रन्नो पलित्ते गामे जियाइ) ગામમા આગ લાગતા માણસ જગલમા નાસી જવાનો વિચાર કરે છે અને જગલમા આગ લાગતા ગામમા આવતા રહેવાનો વિચાર કરે છે (आउसो तेतलिपुत्ता उभओ पलित्ते कओ वयामो) પણ જ્યારે બને તરફ આગ સળગી ઉઠે ત્યારે હે આયુષ્મન્ત તેતલિપુત્ર ! બોલો, અમે કયા જઈએ ?

मेवमवादीत् ' भो ' हे पोट्टिले ! भीतस्य खलु प्रव्रज्याशरण भवति तत्र दृष्टान्त-माह-यथा-' उक्कडियस्स ' उत्कण्ठितस्य=परदेशवर्त्तिनो बहु सुकृतस्य स्वदेशगमन, ' छुहियस्स ' क्षुधितस्य अन्नम्, ' तिसियस्स ' तृषितस्य पान, ' आउरस्स आतु-रस्य=रोगिण' 'भेसज्ज' भैषज्य 'मायिस्स' मायिकस्य=मायाविनः रहस्य=गोपनम्; ' अभिजुत्तस्स ' अभियुक्तस्य = दोषापवादयुक्तस्य ' पच्चयकरण = प्रत्ययकरणं तन्निराकरणेन स्वविषये निर्दोषताप्रतीत्युत्पादनम्, 'अद्धाणपरिसतस्स' अध्वपरिश्रा-न्तस्य=मार्गगमनपरिखिन्नस्य 'वाहणगमण' वाहनगमन शकटादिना गमन ' तरि

तेतलिपुत्ते पोट्टिल एव वयासी-भीतस्स खलु भो पव्वज्जा-सरण-उक्कं-डियस्स सदेसगमण छुहियस्स अन्न, तिसियस्स पाण, आउरस्स भेस ज्ज, माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अद्धाण परिसतस्स वाहणगमण, तरिउकामस्स पव्वणकिच्च पर अभिउ जिउकामस्स सहायकिच्च सतस्स दतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ) इस प्रकार पोट्टिला की बात सुनकर तेतलिपुत्र अमात्य ने उससे ऐसा कहा हे पोट्टिले ! भीत (भय युक्त) के लिये प्रव्रज्या शरण भूत होती है, जैसे-परदेश वर्ती उत्सुक व्यक्ति के लिये स्वदेश गमन शरण भूत होता है, भूखे के लिये अन्न शरण भूत होता है प्यासे के लिये पानी, आतुर रोगी के लिये भैषज्य, मायावी के लिये मायाचारी, अभियुक्त-दोषापवाद वाले के लिये दोषों के निराकरण से अपने विषय मे निर्दो-षता की प्रतीति का उत्पादन, शरण भूत होता है। मार्ग श्रान्त के लिये वाहन से गमन, करना शरण भूत होता है, तैरने की इच्छा वाले के

(तएण से तेतलिपुत्ते पोट्टिल एव वयासी-भीतस्स खलु भो पव्वज्जा सरणं उक्कडियस्स सदेसगमण छुहियस्स अन्न निसियस्स पाण, आउरस्स भेसज्ज, माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अद्धाणपरिसतस्स वाहणगमण, तरिउ कामस्स सहायकिच्च सतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ)

આ રીતે પોટ્ટિલાની વાત સાભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યું કે હે પોટ્ટિલે ! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવ્રજ્યા શરણ ભૂત હોય છે-જેમ-પરદેશમા રહેતી ઉત્સુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ પાછા ફરવુ શરણ ભૂત હોય છે ભૂખ્યા ને માટે અન્ન શરણ ભૂત હોય છે આ પ્રમાણે જ તરસ્યાને માટે પાણી, આતુર-રોગ-ને માટે ભૈષજ્ય-દવા, માયાવીને માટે માયા ચારી અભિયુક્ત-દોષાપવાદ વાળા-ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિર્દોષતાની પ્રતીતિનુ ઉત્પાદન શરણ ભૂત હોય છે માર્ગમા ચાલતા થાકી ગયેલાને માટે વાહનનો ઉપયોગ શરણ ભૂત હોય છે, તરવાની ઈચ્છા ધરાવતા માણસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

समेणं कम्मरयविकरणकर अपुव्वकरण पविट्ठस्स केवलवर-णाणदंसणे समुप्पण्णे ॥ सू० १२ ॥

टीका—' तएण तस्स ' इत्यादि । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य शुभेन परिणामेन जातिस्मरणम्=पूर्वभवज्ञान समुत्पन्नम् । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः प्रार्थितः चिन्तितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत एवं खलु अहम् इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे पुष्कलावती विजये पुण्डरीकिण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजा आसम् । ततः खलु अहं स्थविराणामन्तिके मुण्डो भूत्वा यावत् ' चोद्दसपुव्वाइ० ' चतुर्दशपूर्वाणि०=चतुर्दशपूर्वाणि अधीतवान्, बहूनि वर्षाणि ' सामन्नपरियाय० ' श्रामण्यपर्यायं०=चारित्रपर्यायं पालित

' तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्र को (सुभेण परिणामेण जाइ सरणे समुप्पन्ने) शुभपरिणाम से जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । (तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था-एव खलु अहं इहेव जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नाम राया होत्था) उसके प्रभाव से उसने अपने पूर्वभव को जान लिया-उसने जाना कि मैं इसी जंबूद्वीप नामके द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में पुष्कलावती विजय में पुण्डरीकिणी नामकी राजधानी में महापद्म नाम का राजा था (तएण अहं थेराण अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइ० बहूणि

'तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्रने (सुभेण परिणामेणं जाइ सरणे समुप्पन्ने) शुभ परिणामथी જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયુ

(तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था-एव खलु अहं इहेव जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नाम राया होत्था)

તેના પ્રભાવથી તેણે પોતાના પૂર્વ ભવને જાણી લીધો તેને આ જાતનુ જ્ઞાન થયુ કે તે આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા મહા વિદેહ ક્ષેત્રમા પુષ્ક લાવતી વિજયમા પુંડરીકિણી નામની રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે રા ન હતો

(तएण अहं थेराणअंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइ० बहूणि वासाणि

वान्। अनन्तरं मासिक्या सलेखनया कालमासे काल कृत्वा 'महासुक्के कप्पे' महाशुक्रे कल्पे=सप्तमे देवलोके 'देवे' देव =देवत्वेनोत्पन्न'। ततः खलु अह तस्माद् देवलोकात् 'आयुक्खएण ३' आयुः क्षयेण ३=आयुर्भवस्थिति क्षयानन्तरम् इहैव तेतलिपुरे तेतलेरमात्यस्य भद्राया भार्याया 'दारगत्ताए' दारकत्वेन= पुत्रतया 'पच्चायाए' प्रत्यायात =उत्पन्नः, तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम 'पूर्वदृष्टानि=पूर्वभवपालितानि 'महव्वयाइ' महाव्रतानि=पञ्चमहाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य विहर्तुम्, एव संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य स्वयमेव महाव्रतानि आरोहति=स्वीकरोति, आरुह्य, यत्रैव प्रमदवनम्=उद्यान तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य असोगवरपाय-

---

वॉसाणि सामन्नपरियाय० मासियाए सलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे-तएणं अह ताओ देवलोयाओ आयुक्खएणं ३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए) वहां मैंने स्थविरों के पास मुडित होकर दीक्षा धारण की थी और ग्यारह अगों का अध्ययन कर विशिष्ट तपस्या की थी अन्त में अनेक वर्षोंतक श्रामण्य पर्यायका पालन कर एक मासकी सलेखना धारण कर मैं काल अवसर काल कर सातवा महाशुक्र कल्पमें देवकी पर्यायसे उत्पन्न हो गया। वहाँ की आयुष्य स्थिति भवस्थिति स्थितिके क्षयके अनन्तर मैं वहांसे चलकर इस तेतलिपुर में तेतलि अमात्य के यहा भद्रा भार्या की कुक्षि से पुत्र रूप में अवतरित हुआ। (त सेय खलु मम पुव्वदिट्ठाइ महव्वयाइ सयमेव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए-एव सपेहेइ, सपेहित्ता सयमेव महव्वयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पसयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ,

---

सामन्नपरियाय० मासियाए सलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे–तएण अह ताओ देवलोयाओ आयुक्खएण ३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए)

ત્યા મે મુડિત થઇને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી હતી અને અગિયાર અગોનુ અધ્યયન કરીને વિશિષ્ટ તપસ્યા કરી હતી ત્યારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક મહિનાની સલેખના ધારણ કરી અને ત્યાર પછી કાળ અવસરે કાળ કરીને સાતમા મહા શુક્ર કલ્પમા દેવના પર્યાયથી હું જન્મ પામ્યો ત્યાની ભવસ્થિતિ ૩ (ત્રણ) ના ક્ષય થવા બદલ હું ત્યાથી આવીને આ તેતલિપુરમા તેતલિ અમાત્યને ત્યા ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી પુત્ર રૂપમા જન્મ પામ્યો

(त सेय खलु मम पुव्वदिट्ठाइ महव्वयाइ सयमेव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए एव सपेहेइ, सपेहित्ता सयमेव महव्वयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पसयवणे

वस्स ' असोगवरपायवस्स=अशोकवृक्षस्य ' अहे ' अधः पण्णतसिलोपरि ' सुहनिसन्नस्स ' सुखनिषण्णस्य=सुखोपविष्टस्य ' अणुचिंतेमाणस्स ' अनुचिन्तयत = पूर्वभवे कृतमध्ययनादिकं स्मरत ' पुव्वाहीयाइं ' पूर्वाधीतानि=पूर्वभवे पठितानि सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि स्वयमेव ' अभिसमन्नागयाइं ' अभिसमन्वागतानि= ज्ञानविषयतया सजातानि । तत. खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अनगारस्य शुभेन परिणामेन ' जाव ' यावत्-प्रशस्तैरध्यवसायैः, प्रशस्तालेश्याभिश्च विशुद्ध्यमानाभिः ' तयावरणिज्जाणं ' तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां कर्मणां ' खयोवसमेणं ' उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं) इसलिये अब मुझे यही उचित है कि मैं पूर्व भव में पालित किये पच महाव्रतो को अपने आप धारण करलू। ऐसा उसने विचार किया। विचार करके फिर उसने अपने आपही महाव्रतों को धारण कर लिया। धारण करके फिर वह जहां प्रमदवन नामका उद्यान था वहां चला गया। वहां जाकर वह अशोक वृक्ष के नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पटाकार से परिणत शिला के ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव में कृत अध्ययन आदि का बार२ चिन्तवन करने लगा। इस तरह विचार करते२ उसके पूर्व भव में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये।

(तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तया-

उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं)

એટલા માટે હવે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે પૂર્વ ભવમા જે પાચ મહાવ્રતોને મે ધારણ કરેલા તેને પોતાની મેળે જ ધારણ કરી લઉં આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કર્યા બાદ તેણે પોતાની મેળે જ પાચ મહાવ્રતો ધારણ કરી લીધા ધારણ કર્યા પછી તે જ્યા પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઈને તે અશોક વૃક્ષની નીચે મૂકાયેલા પૃથિવી શિલા પટ્ટક ઉપર-પટ્ટાકાર રૂપથી પરિણત શિલા ઉપર-આનદ અનુભવતો બેસી ગયો અને પૂર્વ ભવમા જે કઈ અધ્યયન કર્યુ હતુ તેનુ વારવાર ચિંતન કરવા લાગ્યો આ રીતે ચિંતન કરતા કરતા પૂર્વભવમા ભણેલા સામાયિક વગેરે ચૌદ પૂર્વજ્ઞાન તેને વિષયભૂત થઈ ગયા

क्षयोपशमेन=उदितानां कर्मणां क्षयेण अनुदितानां कर्मणामुपशमेन=निरुद्धोदयत्वेन 'कम्मरयविकरणकर' कर्मरजो विकरणकरम् 'अपुव्वकरण' अपूर्वकरणम्=अष्टम गुणस्थानम् प्रविष्टस्य तस्य केवलवरज्ञानदर्शन समुत्पन्नम् ॥सू० १२॥

मूलम्–तएण तेतलिपुरे नयरे अहा संनिहिएहि वाणमंतरेहि देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि होत्था । तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी–एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्तं अणगार वंदामि नमंसामि वादित्ता नमासित्ता एयमट्ठ विणएणं भुज्जो २ खामेमि, एव संपेहेइ, सपेहित्ता पहाए० चाउरगणीए

वरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविरएणकर अपुव्वकरण पविट्ठस्स केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे) इस प्रकार शुभ परिणामों से यावत् प्रसस्त अध्यवसायों से विशुद्धमान लेश्याओ से, उसके ज्ञानावरणी आदि कर्मों का क्षयोपशम–उदित कर्मों का क्षय एव अनुदित कर्मो का उपशम–हो गया–सो इस के प्रभाव से वे कर्मरज को दूर करने वाले अष्टम अपूर्व करण नामके गुणस्थान में प्राप्त हो गये। बाद में बारहवे गुणस्थान के अत में और तेरहवे गुणस्थान के प्रारभ में उन्हे केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गया ॥सू० १२॥

(तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण जाव तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकर अपुव्वकरण पविट्ठस्स केवलवरनाणदसण समुप्पण्णे)

આ રીતે શુભ પરિણામોથી, યાવત્ પ્રશસ્ત અધ્યવસાયોથી, વિશુદ્ધમાન લેશ્યાઓથી તેના જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોનો ક્ષયોપશમ–ઉદિત કર્મોનો ક્ષય અને અનુદિત કર્મોનો ઉપશમ થઈ ગયો એના પ્રભાવથી તેઓ કર્મરજને વિકરણ કરનારા અષ્ટમ અપૂર્વ કરણ નામના ગુણસ્થાનમા પ્રાપ્ત થઈ ગયા ત્યાર પછી બારમા ગુણસ્થાનના અતમા અને તેરમા ગુણસ્થાનના પ્રારભમા તેમને કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થઈ ગયા ॥ સૂત્ર " ૧૨ " ॥

वस्स ' असोगवरपायवस्स=अशोकवृक्षस्य ' अहे ' अधः पणिवडिलोपरि ' सुह निसन्नस्स ' सुखनिषण्णस्य=सुखोपविष्टस्य ' अणुचिंतेमाणस्स ' अनुचिन्तयत = पूर्वभवे कृतमध्ययनादिक स्मरत ' पुव्वाहीयाइ ' पूर्वाधीतानि=पूर्वभवे पठितानि सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि स्वयमेव ' अभिसमन्नागयाइ ' अभिमगत्यागतानि= ज्ञानविषयतया सजातानि । तत. खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अनगारस्य शुभेन परि णामेन ' जाव ' यावत्-प्रशस्तैरध्यवसायै', प्रशस्तालेश्याभि विशुद्धयमानाभिः ' तयावरणिज्जाण ' तदावरणीयाना=ज्ञानावरणीयादीनां कर्मणा ' खयोवसमेण '

उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनि-सन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ सयमेव अभिसमन्नागयाइ) इसलिये अब मुझे यही उचित है कि मैं पूर्व भव में पालित किये पच महाव्रतो को अपने आप धारण करलू। ऐसा उसने विचार किया। विचार करके फिर उसने अपने आपही महाव्रतो को धारण कर लिया। धारण करके फिर वह जहां प्रमदवन नामका उद्यान था वहां चला गाया। वहा जाकर वह अशोक वृक्ष के नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पटाकार से परिणत शिला के ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव मे कृत अध्ययन आदि का बार२ चिन्तवन करने लगा। इस तरह विचार करते२ उसके पूर्व भव में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये। (तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण जाव तया-

उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ सयमेव अभिसमन्नागयाइ)

એટલા માટે હવે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે પૂર્વ ભવમા જે પાચ મહાવ્રતોને મે ધારણ કરેલા તેને પોતાની મેળે જ ધારણ કરી લઉં આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કર્યા બાદ તેણે પોતાની મેળે જ પાચ મહાવ્રતો ધારણ કરી લીધા ધારણ કર્યા પછી તે જ્યા પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઇને તે અશોક વૃક્ષની નીચે મૂકાયેલા પૃથિવી શિલા પટ્ટક ઉપર-પટ્ટાકાર રૂપથી પરિણત શિલા ઉપર-આનદ અનુભવતો બેસી ગયો અને પૂર્વ ભવમા જે કઈ અધ્યયન કર્યુ હતુ તેનુ વારવાર ચિંતન કરવા લાગ્યો આ રીતે ચિંતન કરતા કરતા પૂર્વભવમા ભણેલા સામાયિક વગેરે ચૌદ પૂર્વજ્ઞાન તેને વિષયભૂત થઈ ગયા

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णानि अचित्तपुष्पाणि निपातितानि=वर्षितानि, दिव्यः=मनोहरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत् । ततः खलु स कनकध्वजो राजा 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयी कृतस्तेतलिपुत्रः अमात्य' मव्रज्य प्रमदवने केवलवरज्ञानदर्शनसम्पन्नो जात इति वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमवादीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया ' अवज्झाए ' अपध्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा मव्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कारणात् नमस्यित्वा ' एयमट्ठ ' एतमर्थ=मया कृतमपमानरूपमर्थं विनयेन भूयो भूयः ' खामेमि ' क्षमयामि, एव सप्रेक्षते सप्रेक्ष्य ' ण्हाए ' स्नातः कृतस्नानः ' चाउरंगिणीए सेणाए ' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदवन उद्यान यत्रैव तेतलि-

---

होत्था) यथा सन्निहित आमन्त्र भूत हुए वाण, व्यन्तर देवो ने और देवियो ने आकाश में देवदुन्दुभिया बजाई। पचवर्ण के अचित्त कुसुमो की वृष्टि की। मनोहर गीत गधर्व निदान भी किया। (तएण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) जब यह समाचार कनकध्वज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एव खलु तेतलि पुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो२ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए०चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

यथा सन्निहित आसन्नभूत थयेला वाणव्यंतर देवोओ अने देवीओ ओ आकाशमा देवदुंदुभिओ वगाडी, पाच रंगना अचित्त पुष्पोनी वर्षा करी अने मनोहर गीत गंधर्व निनाद (ध्वनि) पण कर्यो (तएण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) ज्यारे आ समाचारोनी जाण कनकध्वजने थई के मारी दुष्ट विचारणाने लीधे तेतलिपुत्र अमात्ये दीक्षित थईने प्रमदवनमा केवळज्ञान अने केवळ दर्शन प्राप्त करी लीधा छे त्यारे तेणे मनमा विचार कर्यो के

(एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अणगार

सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेतलिपुत्ते अणगारं वदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२ खामेइ, नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ । तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइ महालियाए० धम्मं परिकहेइ । तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म, पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइ केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एव खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥ सू० १३ ॥

॥ चउद्दस अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—' तएण ' इत्यादि । तत खलु तेतलिपुरे नगरे ' अहासन्निहिएहिं ' यथा सन्निहितै'=आसन्नै. ' वाणमतरेहिं ' वाणव्यन्तरै. देवै देवीभिश्च देवदुन्दुभय समाहता =आकाशे देवै. देवीभिश्च देवदुन्दुभयो वादिता इत्यर्थ, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए' दशार्द्धवर्ण कुसुम निपातितम्, अत्र जाति विवक्षायामेकवचनम्,

---

' तएण तेतलिपुरे नयरे ' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेतलिपुरे नयरे) तेतलिपुर नगरमें (अहासन्निहिएहिं वाणमतरेहिं देवेहिं देवीहिय देवदुदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि

'तएण तेतलिपुरे नयरे' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यार पछी (तेतलिपुरे नयरे) तेतलिपुर नगरमां (अहा सन्निहिएहिं वाणमतरेहिं देवेहिं देवीहिय देवदुदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णानि अचित्तपुष्पाणि निपातितानि=वर्षितानि, दिव्यः=मनोहरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत्। ततः खलु स कनकध्वजो राजा 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयी कृतस्तेतलिपुत्र. अमात्यः प्रव्रज्य प्रमदवने केवलवरज्ञानदर्शनसम्पन्नो जात इति वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमवादीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया 'अवज्झाए' अपध्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कारणात् नमस्थित्वा 'एयमट्ठ' एतमर्थ=मया कृतमपमानरूपमर्थं विनयेन भूयो भूयः 'खामेमि' क्षमयामि, एव सप्रेक्षते सप्रेक्ष्य 'ण्हाए' स्नातः कृतस्नान. 'चाउरगिणीए सेणाए' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्ध यत्रैव प्रमदवन उद्यान यत्रैव तेतलि-

---

होत्था) यथा सन्निहित आसन्न भूत हुए वाण, व्यन्तर देवो ने और देवियों ने आकाश में देवदुन्दुभियां बजाई। पचवर्ण के अचित्त कुसुमो की वृष्टि की। मनोहर गीत गधर्व निदान भी किया। (तएण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) जब यह समाचार कनक वज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एवं खलु तेतलि पुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो२ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए०चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

यथा सन्निहित आसन्नभूत थयेला वाणव्यंतर देवोओ अने देवीओ ओ आकाशमा देवदुंदुभिओ वगाडी, पाच रंगना अचित्त पुष्पोनी वर्षा करी अने मनोहर गीत गंधर्व निनाद (ध्वनि) पण कर्यो (तएण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) ज्यारे आ समाचारोनी जाण कनक ध्वजने थई के मारी दुष्ट विचारणाने लीधे तेतलिपुत्र अमात्ये दीक्षित थईने प्रमदवनमा केवळज्ञान अने केवळ दर्शन प्राप्त करी लीधा छे त्यारे तेणे मनमा विचार कर्यो के

(एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अणगार

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा एतमर्थं=स्वकृताऽपराधरूपं विनयेनभूयो भूयः क्षमयति=क्षमां कारयति, तथा 'नच्चासन्ने०' नात्यासन्ने नातिदूरे यावत् पर्युपास्ते=सेवां करोति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्या च

पुत्त अणगारं वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी दुष्ट चिन्ता का विषयभूत बनाया है-सो वह मुण्डित होकर दीक्षित हो गया है। इसलिये मैं अब उसके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को वंदना करूँ-नमस्कार करूँ। वंदना नमस्कार कर मैं अपने द्वारा किये अपमान रूप अपराधकी बडे विनय के साथ बार२ उनसे क्षमा मागू-इस प्रकार ज्योंही उसने विचार किया-कि उसी समय वह उठा और स्नान किया-बाद में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहा प्रमदवन था -उसमें जहा तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहा पहुँचा-वहाँ पहुँच कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की बडे विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ कर उनकी सेवा सुश्रूषा की (तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ

वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठं विणएण भुज्झो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને મે પોતાની દુષ્ટ ચિંતાનો વિષયભૂત (લક્ષ્ય) બનાવ્યો છે તેથી જ તે મુંડિત થઈને દીક્ષિત થઈ ગયો છે એટલા માટે હવે હું તેની પાસે જઉં અને તેતલિપુત્ર અનગારને વંદન કરૂં નમસ્કાર કરૂં વંદના અને નમસ્કાર કરીને હું મારા વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધ બદલ બહુ જ નમ્રપણે તેમની પાસેથી ક્ષમા યાચના કરૂં આ રીતે વિચાર થતાની સાથે તરત જ તે ઊભો થયો અને સ્નાન કર્યું ત્યાર પછી પોતાની ચતુરંગિણી સેનાને સાથે જ્યા પ્રમદવન હતુ અને તેમા પણ જ્યાં તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન હતા ત્યા પહોચ્યો ત્યા પહોચીને તેણે તેતલિપુત્ર અનગારને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેના વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધની બહુ જ નમ્રપણે ક્ષમા માગી અને ત્યાર પછી તેણે ઉચિત સ્થાન ઉપર બેસીને તેમની સેવા તેમજ સુશ્રૂષા કરી

(तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णा वीसे य महइ महाल याए० धम्मं परिकहेइ)

'महइमहालयाए०' महातिमहत्या परिषदि धर्मं 'परिकहेइ' परिकथयति= उपदिशति। ततः खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रस्य केवलिनोऽन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं इत्येव द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य श्रमणोपासको जातः। कीदृश ?-अभिगत जीवा-जीवः=परिज्ञात-

---

यस्स रण्णो तीसे य महइमहालयाए० धम्मं परिकहेइ) इसके बाद उन तेतलिपुत्र अनगार केवली ने कनकध्वजराजा को उपस्थित परिषद् को विशाल धर्म का उपदेश दिया-(तएण से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जीव अहिगयजीवाजीवे। तएण तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइ केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे। एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उपदेश सुनने के बाद कनकध्वज राजाने तेतलिपुत्र केवलि के समीपश्रुतचारित्ररूप धर्म के प्रभाव से प्रेरित होकर और उस श्रुत धर्म का अच्छी तरह हृदय से विचार कर पाच अणुव्रत एव सात शिक्षा रूप श्रावक धर्म धारण कर लिया। धारण करके वे श्रमणोपासक बन गये-यावत् जीव और अजीव तत्त्व का क्या स्वरूप है इसके भी वे ज्ञाता हो गये। बाद में तेतलिपुत्र केवलीने अनेक वर्षा तक केवलि

ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્ર અનગાર કેવળીએ કનકધ્વજ રાજાને તેમજ ઉપસ્થિત પરિષદને સવિસ્તર ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો.

(तएण से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे। तएण तेतलिपुत्ते केवलि बहूणि वासाइ केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे। एव खलु जबू। समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि।)

ઉપદેશ સાભળીને કનકધ્વજ રાજાએ તેતલિપુત્ર કેવળિના શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મના પ્રભાવથી પ્રેરાઇને તે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ વિષે મનમા સારી રીતે વિચાર કરીને તેમની પ સેથી પાચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષારૂપ શ્રાવકધર્મ ધારણ કરી લીધા ધારણ કરીને તેઓ શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને યાવત્ જીવ તેમજ અજીવતત્ત્વનુ સ્વરૂપ શુ છે ? તેનુ પણ તેઓને જ્ઞાન થઈ ગયુ ત્યાર પછી તેતલિપુત્ર કેવળીએ ઘણા વર્ષો સુધી કેવળી પર્યાયનું પાલન કર્યું અને આમ તેઓએ યાવત સિદ્ધપદ

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्=एवमुक्ताऽपराधलक्षणं विनयेनभूयो भूयः क्षमयति=क्षमां कारयति, तथा 'नच्चासन्ने०' नात्यासन्ने नातिदूरे यावत् पर्युपास्ते=सेवां करोति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्या च

पुत्त अणगारं वदइ, नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवमट्ठं विणएण भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी दुष्ट चिन्ता का विषयभूत बनाया है-सो वह मुंडित होकर दीक्षित हो गया है। इसलिये मैं अब उसके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को वंदना करूँ-नमस्कार करूँ। वंदना नमस्कार कर मैं अपने द्वारा किये अपमान रूप अपराधकी बडे विनय के साथ बार२ उनसे क्षमा मागू-इस प्रकार ज्योंही उसने विचार किया-कि उसी समय वह उठा और स्नान किया-बाद में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहां प्रमदवन था -उसमें जहां तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहां पहुँचा-वहां पहुँच कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की बडे विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ कर उनकी सेवा सुश्रूषा की (तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ

वदइ, नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवमट्ठं विणएण भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને મે પોતાની દુષ્ટ ચિંતાનો વિષયભૂત (લક્ષ્ય) બનાવ્યો છે તેથી જ તે મુંડિત થઈને દીક્ષિત થઈ ગયો છે એટલા માટે હવે હું તેની પાસે જઉં અને તેતલિપુત્ર અનગારને વંદન કરૂં નમસ્કાર કરૂં વંદના અને નમસ્કાર કરીને હું મારા વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધ બદલ બહુ જ નમ્રપણે તેમની પાસેથી ક્ષમા યાચના કરૂં આ રીતે વિચાર થતાની સાથે તરત જ તે ઊભો થયો અને સ્નાન કર્યું ત્યાર પછી પોતાની ચતુરંગિણી સેનાને સાથે લ્યા પ્રમદવન હતુ અને તેમા પણ ગ્યા. તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન હતા ત્યા પહોચ્યો ત્યા પહોચીને તેણે તેતલિપુત્ર અનગારને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેના વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધની બહુ જ નમ્રપણે ક્ષમા માગી અને ત્યાર પછી તેણે ઉચિત સ્થાન ઉપર બેસીને તેમની સેવા તેમજ સુશ્રૂષા કરી

(तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णा तीसे य महइ महालयाए० धम्मं परिकहेइ)

॥ अथ पञ्चदशमध्ययनं प्रारभ्यते ॥

गत चतुर्दशमध्ययन सम्मति पञ्चदशमारभ्यते, पूर्वाध्ययनेऽपमानाद् विषय-त्यागः प्रदर्शितः, अत्र तु स जिनोपदेशाद् भवतीति प्रतिपादयिष्यतेऽतस्तस्य सद्भावेऽर्थप्राप्तिः, असद्भावेत्वनर्थप्राप्तिर्भवतीत्येव पूर्वेण सम्बन्धः तत्रेदमादिसूत्रम्-' जइणं भंते ' इत्यादि ।

मूलम्-जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चपा नाम नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया । तत्थ णं चपाए नयरीए धण्णे णामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था,

---

-:नन्दिफल नामका पन्द्रहवा अध्यायन प्रार :-

चौदहवां अध्ययन समाप्त हो चुका-अब पन्द्रहवा अध्ययन प्रारभ होता है। पूर्व अध्ययन में तेतलि प्रधान के आख्यान द्वारा अपमान से भी विषयों का त्याग कर दिया जाता है यह बात समझाई गई है। इस अध्ययन में यह विषय त्याग जिनके उपदेश से होता है यह कहा जावेगा। इस लिये उसके सद्भाव में अर्थ प्राप्ति और असद्भाव में अनर्थ प्राप्ति होती है इस तरह से पूर्व अध्ययन के साथ इसका सबन्ध बन जाता है.-जइणं भंते ! समणेण इत्यादि ॥

નદિફળ નામે પદરમુ અધ્યયન પ્રારભ

ચૌદમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે પદરમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે પહેલાના અધ્યયનમા તેતલિપ્રધાનના આખ્યાન વડે એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે અપમાનથી પણ વિષયોનો યાગ કરવામા આવે છે આ અધ્યયનમાં આ વિષય ત્યાગ જેમના ઉપદેશથી થાય છે તે વિષે કહેવામા આવશે એટલા માટે તેના સદ્ભાવમા અર્થ પ્રાપ્તિ અને અસદ્ભાવમા અનર્થ પ્રાપ્તિ હોય છે. આ રીતે પૂર્વ અધ્યયનની સાથે આનો સબધ સમજી રાકાય છે

ટીકાર્થ-'जइणं भंते ! समणेण' इत्यादि ।

सकलजीवाजीवतत्त्वज्ञोऽपि जातः । ततः खलु तेतलिपुत्रः केवली बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं पालयित्वा यावत् सिद्ध=मोक्षं गतः ।

सुधर्मास्वामी प्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण चतुर्दशस्य ज्ञाताध्ययनस्य 'अयमट्ठे' अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि=भगवत्समीपे यथा श्रुतं तथा त्वां प्रतिकथयामि । एतेन अध्ययनेन इदं ज्ञायते यत्-प्राणिनो यावद् दुःखं मानभङ्गं च न प्राप्नुवन्ति तावद् बहुशः प्रबोधिता अपि धर्मं न स्वीकुर्वन्ति, यथा तेतलिपुत्रः ॥ सू० १३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-पविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलालव्रत-प्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां चतुर्दशमध्ययनं सम्पूर्णम् ॥१४॥

पर्याय का पालन कर यावत् सिद्ध पद प्राप्त कर लिया । सुधर्मास्वामी कहते हैं-हे जंबू ! श्रमणभगवान महावीर ने इस चौदहवे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से भाव अर्थ प्ररूपित किया है । सो जैसा मैंने उन भगवान के समीप में सुना है यह वैसा ही तुमसे कहा है । इस अध्ययन से हमें यह ज्ञात हो जाता है कि संसार में तेतलिपुत्र की तरह ऐसे भी प्राणी हैं कि वे जब तक दुःख और अपमान को नहीं पालते हैं तब तक अनेक बार प्रतिबोधित करने पर भी-धर्म को स्वीकार नहीं करते हैं ॥ सू० १३ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत
" ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका
चौदहवा अध्ययन समाप्त ॥ १४ ॥

મેળવી લીધુ સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપથી ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે જેવો અર્થ મે તેઓશ્રી પાસેથી સાભળ્યો છે તેવોજ તમને કહ્યો છે આ અધ્યયનથી અમને આ જાતનુ જ્ઞાન થાય છે કે સંસારમા તેતલિપુત્રની જેમ એવા પણ પ્રાણી ઓ છે કે તેઓ જ્યા સુધી દુખી અને અપમાનિત થતા નથી ત્યા સુધી ઘણા વખત પ્રતિબોધિત કરવા છતા ધર્મને સ્વીકારતા નથી ॥ સૂત્ર ' ૧૩ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનુ ચૌદમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

ऽर्थः प्रज्ञप्त ' सुधर्मस्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! ाये चम्पा नाम नगर्यासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्य जितशत्रू ् चम्पाया नगर्या धन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स ा यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशाल्लीत्यर्थः । तस्या खलु रस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?- ेद्धा ' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पर्शिबहु- ा = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा, ारी वर्णनपाठोऽत्रवाच्य, स तु औपपातिकसूत्रादवसेयः । ी नगर्यां कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । ' महया वण्णओ '

ा ज्ञानाध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है ।
ण कालेण तेण समएण चपानाम नयरी होत्था)
ामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी
क जबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-
स समय में चंपा नाम की नगरी थी (पुन्नभद्दे चेइए
तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था
भूए) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था । जितशत्रु
समें रहता था । उसी चपा नगरी में धन्य नामका सार्थ-
था । यह जन धन धान्यादि सपन्न था । एव लोकमान्य
ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता
त्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ-तत्थण अहिच्छत्ताए

जबू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था)
જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી
કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે
અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી

ए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे
अपरिभूए)
र्ण भद्र नामे उद्यान हतु तेमा जितशत्रु नामे राजा रहेतो
ाह पण ते चपा नगरीमा ज रहेतो हतो ते जन,
हतो, तेमज लोक मान्य पण हतो
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी
न्नओ-तत्थणं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेउ

रिद्धित्थिमियसमिद्धा वन्नओ । तत्थ णं अहिच्छत्ताए नय-
रीए कणगकेऊ नाम राया होत्था, महया वन्नओ । तस्स
धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालस-
मयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए कप्पिए मणो-
गए संकप्पे समुप्पज्जित्थाः सेय खलु मम विपुल पणियभंड-
मायाए अहिच्छत्त नगरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एव संपेहेइ
संपेहित्ता गणिमच४ चउव्विह भंड गेण्हइ, सगडीसागड
सज्जेइ सज्जित्ता सगडीसागड भरेंति२ कोडुंबियपुरिसे
सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणु-
प्पिया ! चंपाए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु घोसणं
घोसेह ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति–यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महा वीरेण यावत् सिद्धिगतिमानधेय स्थान सम्प्राप्तेन चतुर्दशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अय मर्थ =पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः तर्हि पञ्चदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महा

टीकार्थ–जम्बूस्वामी पूछते हैं कि (जइण भंते ! समणेण भगवया महा वीरेण जाव संपत्तेण चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नर-समस्स ण भंते णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते) भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्षप्राप्त कर चुके है चौदहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है–तो हे भदन्त ! मुक्ति प्राप्त हुए उन्हीं श्रमण भगवान

જંબૂ સ્વામી પૂછે છે કે—

(जइण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण चोद्दसमस्स नाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स ण भंते णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते)

હે ભદન્ત ! જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેઓ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી ચુકયા છે–ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પન્દરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે

वीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्त ' सुधर्मस्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगर्यासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्य जितशत्रू राजा चाभवत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्यां धन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स कीदृश ? इत्याह-आढ्यो यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशाल्लीत्यर्थः । तस्या खलु चम्पाया नगर्या उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?- त्याह-''रिद्धत्थिमियसमिद्धा ' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पर्शिबहु-प्रासादयुक्ता, स्तिमिता = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा, ' वण्णओ ' वर्णकः=नगरी वर्णनपाठोऽत्रवाच्य, स तु औपपातिकसूत्रादवसेयः । तत्र खलु अहिच्छत्रायां नगर्यां कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । ' मइया वण्णओ '

महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है । '(एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण चपानाम नयरी होत्था) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी उन से कहते हैं कि जबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है- उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी (पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था। जितशत्रु नामका राजा उसमें रहता था। उसी चपा नगरी में धन्य नामका सार्थ-वाह भी रहता था। यह जन धन धान्यादि सपन्न था। एव लोकमान्य भी था। (तीसे ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ-तत्थण अहिच्छत्ताए

(एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था)

આ રીતે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી

(पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તેમા પૂર્ણ ભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો હતો ધન્ય નામે એક સાર્થવાહ પણ તે ચપા નગરીમા જ રહેતો હતો તે જન, ધન, ધાન્ય, વગેરેથી સ પન્ન હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો

(तीसेण चपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ-तत्थण अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेउ नामं राया होत्था महया वन्नओ)

महा०वर्णक=स च 'महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमंदिरसारे' महाहिमवन्महा
लयमन्दरमहेन्द्रसार, इत्यादिरूपोऽत्र विज्ञेयः। तस्य धन्यस्य सार्थवाहस्य अन्यदा
कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रे पश्चिमे प्रहरे अयमेतद्रूप आध्यात्मिक-
श्चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः सङ्कल्पः=विचारः समुदपद्यत-श्रेयः=उचित्त
खलु मम विपुल=मचुर 'पणियभंडं' प्रणितभाण्ड=गणिमादिक्रय विक्रयवस्तुभाण्डम्
'आयाए' आदाय=गृहीत्वा अहिच्छत्रां नगरीं वाणिज्याय गन्तुम्, गणिमादि
पण्यवस्तुजात गृहीत्वा व्यापारायाहिच्छत्रा नगर्यां मया गन्तव्यमिति भावः। एव
'संपेहेइ' सम्प्रेक्षते=विचारयति, सम्प्रेक्ष्य गणिम ४-गणिम धरिम मेय परिच्छेद्य
चेत्येवरूप चतुर्विध भाण्ड=पण्यवस्तुजात गृह्णाति, गृहीत्वा 'सगडीसागड' शकटी

नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था, महया वन्नओ) उस चपा नगरी के ईशान कोण में अहिच्छत्रा नामकी नगरी थी। यह नभस्तलस्पर्शी प्रासादों से युक्त स्वचक्र और परचक्र के भयसे रहित तथा धन धान्य आदि विभव से विशेष समृद्ध थी। नगरी के वर्णन का पाठ औपपातिक सूत्र में जैसा नगरी का वर्णन किया गया है वैसा ही यहा जनना चाहिये। उस अहिच्छत्रा नगरी में कनककेतु नामका राजा रहता था। इस राजा के वर्णन में "महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमंदिरसारे" इत्यादिरूप पाठ यहा लगा लेना चाहिये। (तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए, कप्पिए, मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-सेय खलु मम विउल पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एव संपेहेइ, संपेहित्ता गणिमचउक्कं चउव्विहं भंडं गेण्हइ, सगडी सागडं सज्जेइ स

તે ચપા નગરીના ઈશાન કોણમા અહિચ્છત્રા નામે નગરી હતી આકાશને સ્પર્શતા એવા ઊંચા પ્રાસાદોથી આ નગરી યુક્ત હતી તેમજ સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી રહિત તથા ધન ધાન્ય વગેરે વૈભવથી આ નગરી સવિશેષ સમૃદ્ધ હતી ઔપપાતિક સૂત્રમા નગરીના વિષે જેવુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેવું જ અહીં પણ જાણી લેવુ જોઇએ તે અહિચ્છત્રા નગરીમા કનકકેતુ નામે રાજા રહેતો હતો, આ રાજાના વર્ણન માટે (महया हिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे) વગેરે પાઠ અહીં સમજવો જોઇએ

(तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, पत्थिए कप्पिए, मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-सेय खलु मम विउल पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए एव संपेहेइ, संपेहित्ता गणिम च ४ चउव्विह मंडे गेण्हइ सगडीसा—

शाकट=लघुमहच्छकटसमूह सज्जयति,=सगुणी करोति सज्जयित्वा शकटीशाकट भरेति, भृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, आहूय एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया'! चम्पाया नगर्याः 'सिंघाडगजावपहेसु' शृङ्गाटक-त्रिकचतुष्क चत्वरमहापथपथेषु घोषणाम्=घोषयत ॥ सू० १ ॥

जिनत्ता सगडीसागडं भरेइ भरित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह्ण तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेह) एक दिन की बात है कि उस धन्यसार्थवाह को रात्रि के पश्चिम प्रहर में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक चिन्तित, प्रार्थित कल्पित मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कि मैं गणिमादि रूप विपुल, पण्य वस्तु को लेकर व्यापार के लिये जो अहिच्छत्रा नगरी में जाऊँ तो बहुत अच्छी बात है। इस प्रकार उसने विचार किया-ऐसा विचार करके उसने गणिम, धारिम, मेय और परिच्छेद्य रूप चार प्रकार का भाण्ड लिया। भाण्ड लेकर फिर उसने गाड़ी और गाड़ों को तैयार करवाया-जब वे गाडी गोड़े तैयार हो चुके तब उसने उस पण्य (विक्रेय वस्तु) को उनमें भरा-भर कर फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम लोग जाओ-और चंपा नगरी के शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ इन सब मार्गों में घोषणा करो। क्या घोषणा करना-यह बात नीचे के सूत्र से सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं॥ सू० १ ॥

सगडीसागडं भरेइ, भरित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह्ण तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेह)

એક દિવસે તે ધન્ય સાર્થવાહને રાત્રિના છેલ્લા પહોરમા આ જાતનો આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે પુષ્કળ પ્રમાણમા ગણિમ વગેરે વેચાણની વસ્તુઓ લઈને વેપાર ખેડવા માટે જો હું અહિચ્છત્રા નગરીમા જાઉ તો બહુ સારુ થાય આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો આવો વિચાર કરીને તેણે ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારની વસ્તુઓ વાસણોમા ભરી ચારે જાતની વસ્તુઓ વાસણોમા ભરીને તેણે ગાડી તેમજ ગાડાઓને તૈયાર કરાવ્યા જ્યારે ગાડી અને ગાડાઓ તૈયાર થઈ ચૂકયા ત્યારે તેણે તે વેચાણની વસ્તુઓને ગાડી અને ગાડાઓમા ભૂકી ત્યાર પછી તેણે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ, અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા માર્ગોમા ઘોષણા કરો ઘોષણા કરતા શું કહેવું તે નીચેના સૂત્ર વડે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

घोषणास्वरूपमाह-' एव खलु ' इत्यादि ।

मूलम्-एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए त जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपासंडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अंतराऽवि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहसुहेण य णं अहिगच्छत्त सपावेइ तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुबिय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणंतु भवतो चपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्य' सार्थवाह विपुलान् पणितभाण्डान् 'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्रा नगरी 'वाणिज्जाए' वाणिज्यायै

' एव खलु देवाणुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्रियो !

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શૃંગાટક વગેરે માર્ગોમા આ જાતની ઘોષણા

व्यापाराय गन्तु तत्=तस्मात् य. खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं 'गच्छती' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छेदित्याह-'चरए' इत्यादिना 'चरए वा' चरकः=गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्यौदनादेर्योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्थाप्यते तस्य भिक्षाट्यग्राहकः, 'चीरिए वा' चीरिकमार्गपतितशटितचीवरपरिधारकः, 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्मधारकः, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्ड =अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पडुरगे वा' पाण्डुराङ्गः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही, 'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रिया करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भाव, 'गिहिधम्मचिंतए वा' गृहिधर्मचिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्त चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएवश्रेयान नान्यः' उक्तश्च—

तुम लोग शृंगाटक आदि मार्गों में खडे होकर इस प्रकार की घोषणा करना-कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा मे पणित (विक्रय वस्तु) को लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (त जो ण देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्ध वुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ) इसलिये हे देवाणुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो-चाहे वह चरक हो चीरिक हो, चर्मखडधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो, गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

---

કરો કે ધન્ય સાર્થવાહ પુષ્કર પ્રમાણમા પણિત (વેચાણની વસ્તુઓ) લઈને અહિચ્છત્રા નામે નગરીમા વેપાર ખેડવા માટે જવા ઈચ્છે છે (त जो ण देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइ पासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ-तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ધન્ય સાર્થવાહની સાથે જે કોઈ જવા ઈચ્છતો હોય-ભલે તે ચરક હોય, ચીરિક હોય, ચર્મખડ ધારી હોય, ભિક્ષોડ હોય, પાડુરગ હોય, ગૌતમ હોય, ગોવ્રતિક હોય, ગૃહસ્થ ધર્મ ચિંતક હોય,

घोषणास्वरूपमाह-' एव खलु ' इत्यादि ।

मूलम्-एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए त जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपासंडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडिय दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अतराडविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहसुहेण य ण अहिगच्छत्त सपावेइ तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएण ते कोडुबिय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणतु भवतो चंपानगरीचत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्य' सार्थवाह विपुलान् पणितभाण्डान् 'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्रा नगरी 'वाणिज्जाए' वाणिज्याय=

' एव खलु देवाणुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरि वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्रियो !

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શૃંગાટક વગેરે માર્ગોમા આ જાતની ઘોષણા

व्यापाराय गन्तु तत्=तस्मात् यः खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं 'गच्छती' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छेदित्याह-'चरए' इत्यादिना 'चरए वा' चरकः=गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्यौदनादेर्योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्थाप्यते तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहकः, 'चीरिए वा' चीरिकमार्गपतितशटितचीवरपरिधारकः, 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्मधारकः, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्डः=अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पडुरगे वा' पाण्डुराङ्गः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही, 'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रियां करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भावः, 'गिहिधम्मचिंतए वा' गृहिधर्मचिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्तं चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएवश्रेयान् नान्यः' उक्तश्च—

तुम लोग शृंगाटक आदि मार्गों में खडे होकर इस प्रकार की घोषणा करना-कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा मे पणित (विक्रय वस्तु) को लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (त जो ण देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्ध वुड्ढ सावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपासडत्थे वा गिहत्थे वा धणेणं सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ) इसलिये हे देवाणुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो-चाहे वह चरक हो चीरिक हो, चर्मखडधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो, गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

---

કરો કે ધન્ય સાર્થવાહ પુષ્કર પ્રમાણમા પણિત (વેચાણની વસ્તુઓ) લઈને અહિચ્છત્રા નામે નગરીમા વેપાર ખેડવા માટે જવા ઈચ્છે છે

(त जो ण देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइ पासडत्थे वा गिहत्थे वा धणेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ-तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ધન્ય સાર્થવાહની સાથે જે કોઈ જવા ઈચ્છતો હોય-ભલે તે ચરક હોય, ચીરિક હોય, ચર્મખડ ધારી હોય, ભિક્ષોડ હોય, પાડુરગ હોય, ગૌતમ હોય, ગોવ્રતિક હોય, ગૃહસ્થ ધર્મ ચિંતક હોય,

घोषणास्वरूपमाह-' एव खलु ' इत्यादि ।

मूलम्-एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए त जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपासंडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडिय दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अंतराऽवि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहंसुहेण य णं अहिगच्छत्त सपावेइ तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुबिय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणतु भवतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्य' सार्थवाह विपुलान् पणितभाण्डान् 'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्रा नगरी 'वाणिज्जाए' वाणिज्याय=

' एव खलु देवाणुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्रियो !

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શૃંગાટક વગેરે માર્ગોમા આ જાતની ઘોષણા

अथवा ' भग्गलुग्गस्स ' भग्नरुग्णाय भग्नाय = त्रुटितहस्तपादाद्यवयवाय रुग्णाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा ' साहेज्ज ' साहाय्यम् = औषधोपचारादि करणरूप ददाति, तथा - सुख - सुखेन = सुखपूर्वकं च तम् अहिच्छत्रा नगरीं ' सपावेइ ' समापयति=समापयिष्यतीत्यर्थः । ' तिकट्टु ' इति कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वार घोषयत, घोषयित्वा मम ' एयमाणत्तियं ' एतामाज्ञप्तिकाम्=एतद्रूपा ममाज्ञा ' पच्चप्पिणह ' प्रत्यर्पयत=मदुक्ता घोषणा कृत्वा पुनर्मह्य निवेदयतेत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः ' तथाऽस्तु-

सुरसुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह) पदत्राण (जूता) रहित है तो जूता (पदत्राण) देगा जलपात्र रहित होगा उसे जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्बलपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्बल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य देगा, अर्थात् चलते२ बीच मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलते२ यदि वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलते२ यदि वह पैर फिसल कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये होंगे तो उसकी सार सम्हाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा। इस प्रकार की इस घोषणा को तुम लोग दो तीन वार करना। और (घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) करके फिर हमे पीछे इसकी खबर देना (तएण ते कौडुंबियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपा

भग्गलुग्गस्स साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेणं अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह)

જેઓ વગરનો હશે તેને જોડા આપશે, જમવાની સગવડ હશે નહિ તેને જમવાની સગવડ કરી આપશે શ ણ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય વગરનો હશે તેને શ બલ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય આપશે એટલે કે માર્ગમા અધવચ્ચે ભાતુ ખલાસ થઈ ગયુ હશે તેને યોગ્ય ધન આપશે માર્ગમા અધવચ્ચે ચાલતા ચાલતા જો તે ઘોડા ઉપરથી પડી જશે અથવા પગે ચાલતા ચાલતા જો તે પગ લપસવાથી પડી જશે અને તેથી તેના હાથ પગ વગેરે ભાગી ગયા હશે તો તેની તે સુશ્રૂષા કરશે-રોગની દવા કરશે અને સુખેરી તેને અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચાડશે આ રીતે તમે બે ત્રણ વખત ઘોષણા કરો અને (घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) ઘોષણા કરીને અમને ખબર આપો

(तएण ते कोडुंबियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपानयरी

" गृहाश्रमसमो धर्मो,-न भूतो न भविष्यति ।
पालयन्ति नराः शूराः, क्लीवा पाषण्डमाश्रिताः ॥ १ ॥ "

इत्यभिसन्धाय तथा चिन्तनशीलः, ' अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपासंडत्थे वा ' अविरुद्धविरुद्धवृद्धश्रावकरक्तपटनिर्ग्रन्थप्रभृतिपाषण्डस्थः तत्र-' अविरुद्ध ' अविरुद्ध' विरुद्ध' वस्त्वादपीत्यविरुद्ध =विनयवादी क्रीयावादीत्यर्थः, परलोकाभ्युपगमात्, ' विरुद्ध ' विरुद्ध. विरुद्ध = विरुद्धवादोऽस्यास्तीति-अर्श आदित्वादच, विरुद्धवादी अक्रियावादीत्यर्थः परलोकानभ्युपगमात्, 'वुड्ढसावग' वृद्धश्रावकः=ब्राह्मण', वृद्धः=वृद्धकालिको यः श्रावक. सः, भरतादिकाले पूर्वं श्रावकत्वेन पश्चाद् ब्राह्मणत्वभावात्, ' रक्तपड ' रक्तपट=गैरिकवस्त्रधारीपरिव्राजक', ' णिग्गंथप्पभिइ ' निर्ग्रन्थप्रभृति' = साधुप्रभृतिरन्यः कोऽपिकपिलादि पाषण्डस्थो वा गृहस्थो वा, इति यदि एषु यः कोऽपिगच्छेत् तस्मै खलु धन्यः सार्थवाह अच्छत्रकाय=छत्ररहिताय छत्रक ददाति=दास्यतीति भाव', एवं सर्वत्र विज्ञेयम् ' अणुवाहणस्स ' अनुपानहे=पादत्राणरहिताय ' उवाहणाओ ' उपानहौ ददाति, अकुण्डिकाय=जलपात्ररहिताय कुण्डिका=जलपात्र ददाति । ' अपत्थयणस्स ' अपथ्यदनाय शम्बलरहिताय ' पत्थयण ' पथ्यदन = शम्बल ददाति । ' अपक्खेवगस्स ' अप्रक्षेपकाय, प्रक्षेपकः = पूर्तिद्रव्य, तद्रहिताय मध्यमार्गे न्यून शम्बलाय प्रक्षेपक=शम्बलपूरक द्रव्य ददाति । ' अतरावियं ' अन्तराऽपि च= मार्गान्तरालेऽपि च ' से ' तस्मै पतिताय = वाहनाद् पादादिस्खलनेन वा, वा=

श्रावक हो, गैरिकवस्त्रधारी परिव्राजक हो, निर्ग्रन्थ हो, पाखडी हो, चाहे गृहस्थ हो कोई भी क्यों न हो, उसके लिये धन्य सार्थवाह यदि वह छत्ररहित है तो छत्र देगा (अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अ कुडियस्स कुंडिय दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अतराऽवियं से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ,

---

અવિરુદ્ધ હોય, વિરુદ્ધ હોય, વૃદ્ધ શ્રાવક હોય, ગૈરિક વસ્ત્ર ધારી પરિવ્રાજક હોય, નિર્ગ્રંથ હોય, પાખંડી હોય અને ગૃહસ્થ હોય કોઈ પણ કેમ ન હોય તેના માટે જો તે છત્ર વગરનો હોય તેવાને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર આપશે

(अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुडियस्स कुंडिय दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अतराऽवियं से) वा

अथवा ' भग्गलुग्गस्स ' भग्नरुग्णाय भग्नाय = त्रुटितहस्तपादाद्यवयवाय रुग्णाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा ' साहेज्ज ' साहाय्यम् = औषधोपचारादि करणरूप ददाति, तथा - सुख - सुखेन = सुखपूर्वक च तम् अहिच्छत्रा नगरीं ' सपावेइ ' समापयति=समापयिष्यतीत्यर्थः । ' तिक्खुत्तो ' इति कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वार घोषयत, घोषयित्वा मम ' एयमाणत्तियं ' एतामाज्ञप्तिकाम्=एतद्रूपा ममाज्ञा ' पच्चप्पिणह ' प्रत्यर्पयत=मदुक्ता घोषणा कृत्वा पुनर्मह्यं निवेदयतेत्यर्थः । तत' खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः ' तथाऽस्तु-

सुरसुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह) पदत्राण (जूता) रहित है तो जूता (पदत्राण) देगा जलपात्ररहित होगा उसे जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्बलपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्बल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य देगा, अर्थात् चलते२ बीच मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलते२ यदि वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलते२ यदि वह पैर फिसल कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये होंगे तो उसकी सार सम्हाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा। इस प्रकार की इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना। और (घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) करके फिर हमे पीछे इसकी खबर देना (तएण ते कौडुंबियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपा

मग्गलुग्गस्स साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह)

જેઓ વગરનો હશે તેને જોડા આપશે, જમવાની સગવડ હશે નહિ તેને જમવાની સગવડ કરી આપશે શ્રાણ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય વગરનો હશે તેને શબલ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય આપશે એટલે કે માર્ગમા અધવચ્ચે ભાતુ ખલાસ થઈ ગયુ હશે તેને ચોગ્ય ધન આપશે માર્ગમા અધવચ્ચે ચાલતા ચાલતા જો તે ઘોડા ઉપરથી પડી જશે અથવા પગે ચાલતા ચાલતા જો તે પગ લપસવાથી પડી જશે અને તેથી તેના હાથ પગ વગેરે ભાગી ગયા હશે તો તેની તે સુશ્રૂષા કરશે-રોગની દવા કરશે અને સુખેથી તેને અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચાડશે આ રીતે તમે બે ત્રણ વખત ઘોષણા કરો અને (घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) ઘોષણા કરીને અમને ખબર આપો

(तएण ते कोडुंबियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपानयरी

इत्युक्त्वा चम्पानगर्यां शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागम्य-एवमादिपुः-' हदि ' इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः ' शृण्वन्तु-भवन्तः-यत् चम्पानगरी वास्तव्या बहवः ' चरगाय जाव ' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च स्खलितेभ्यो रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्यवघोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय ' पच्चप्पिणंति ' प्रत्यर्पयति-निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

नगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार धन्यसार्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकार लिया और चपानगरी में शृंगाटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गों में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चपा नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक कर रख लिया जाता है, उस

वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક વગેરે મહાપથોમાં જઈને આ રીતે તેઓએ ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સાંભળો, ચંપા નગરીમાં રહેનાર ચરક વગેરે ગમે તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમાં જ તેને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમાં કોઈ પડી જશે અથવા તો બીમાર થઈ જશે તો ધન્ય સાથવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચાડશે આ રીતે ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનું કામ પુરૂ થઈ જવાની ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામાં આવે છે તે ભાગને જે ભીખ માગીને લઈ જાય છે તેને ચરક કહે છે ,માર્ગમાં પડેલા ફાટેલા વસ્ત્રો જે

हिस्से को जो भिक्षा वृत्ति से ले जाते हे उनका नाम चरिक है। मार्ग में गिरे हुए फटेचिटे वस्त्र को लेकर जो पहिनते हैं उनका नाम चीरिक है। चमड़े को जो अपने पहिरने के उपयोग में लाते हैं वे चर्म खडिक है। दूसरे के द्वारा लायी गई भिक्षा से जो अपना निर्वाह करते हैं वे भिक्षोण्ड हैं। अपने शरीर पर जो भस्म लपेटे रहते हैं वे पांडुरग हैं। बैल को लेकर जो दूसरों के घरों से अनाज मांगते हैं वे गौतम है। दिलीप राजा की तरह जो गायकी सेवा करने में लगे रहते हैं-जब वह बैठती है तब वे बैठते हैं-वह खड़ी होती है तो वे भी खडे हो जाते हैं इत्यादि रूप से गोचर्यानुकारी जो जन होते हैं वे गोव्रतिक हैं। गृहस्थ धर्म ही श्रेष्ठ है, इस प्रकार मान कर जो उसमें रह रहते हैं वे गृहिधर्म चिन्तक है। जैसे-गृहस्थाश्रम के समान धर्म न हुआ है और न आगे होगा ही। जो शूरवीर मनुष्य होते हैं वे ही इसे पालते हैं। पाषड धर्म को पालने वाले मनुष्य शूरवीर नहीं हैं किन्तु वे तो क्लीव-नपुसक हैं। ऐसी इनकी मान्यता होती है। अविरुद्ध शब्द का अर्थ विरुद्ध नहीं रहते हैं सबका समानरूप से विनय करते हैं। विरुद्ध शब्द का अर्थ अक्रियावादी है। ये अक्रिया वादी पर-

પહેરે છે તેનુ નામ ચીરિક છે ચામડાને જે વસ્ત્ર તરીકે પહેરવામા કામમા લે છે તે ચર્મ ખડિત છે બીજાઓ વડે લાવવામા આવેલી ભિક્ષાથી જે પોતાનુ ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોડ છે પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે છે તે પાડુરગ છે બળદને સાથે લઇને જેઓ બીજાઓના ઘરોથી અનાજ માગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા કરવામા વ્યસ્ત રહે છે-જ્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, જ્યારે ગાય ઊભી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ ઊભા થઈ જાય છે વગેરે રૂપમા જેઓ ગોચર્યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોવ્રતિક કહેવાય છે ગૃહસ્થ ધર્મજ ખરેખર ઉત્તમ ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણે માનીને તેમા દત્ત ચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહિધર્મ-ચિંતક છે જેમકે —ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ થયો નથી અને આગળ ભવિષ્યમા થવાની સભાવના પણ નથી જેઓ શૂરવીર માણસો હોય છે તેઓ જ આ ધર્મનુ પાલન કરે છે પાખડ ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી પણ તેઓ તો નપુસક છે ગૃહસ્થીઓની આ જાતની માન્યતા હોય છે અવિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે કેમ કે એઓ કોઈ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ કરતા નથી તેઓ બધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે અક્રિયાવાદી લોકોપરલોક જેવી વસ્તુમા

इत्युक्त्वा चम्पानगर्यां शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागम्य-एवमवादिषुः-' हंदि ' इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः ! शृण्वन्तु-भवन्तः'-यत् चम्पानगरी वास्तव्या बहवः ' चरगाय जाव ' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च स्खलितेभ्यो रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येवं घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय ' पच्चप्पिणंति ' प्रत्यर्पयन्ति-निवेदयन्ति ॥ सू० ७ ॥

नगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार धन्यसार्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकर लिया और चपानगरी में शृंगाटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गों में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चंपा नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक कर रख लिया जाता है, उस

वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક વગેરે મહાપથોમા જઇને આ રીતે તેઓએ ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સાંભળો, ચંપા નગરીમા રહેનાર ચરક, વગેરે જે તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમા જ તેને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધુ આપશે, તેમજ માર્ગમા કોઈ પડી જશે અથવા તો બીમાર થઈ જશે તો ધન્ય સાથવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોંચાડશે આ રીતે ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનુ કામ પુરૂ થઇ જવાની ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે આદ્ય વસ્તુઓનો જે ભાગ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામા આવે છે તે ભાગને જે ભીખ માગીને લઈ જાય છે તેને ચરિક કહે છે માર્ગમા પડેલા કાઢેલા વસ્ત્રો જે

हिस्से को जो भिक्षा वृत्ति से ले जाते हैं उनका नाम चरिक है। मार्ग में गिरे हुए फटेचिटे वस्त्र को लेकर जो पहिनते हैं उनका नाम चीरिक है। चमड़े को जो अपने पहिरने के उपयोग में लाते हैं वे चर्म खडिक है। दूसरे के द्वारा लायी गई भिक्षा से जो अपना निर्वाह करते हैं वे भिक्षोण्ड हैं। अपने शरीर पर जो भस्म लपेटे रहते हैं वे पांडुरग हैं। बैल को लेकर जो दूसरों के घरों से अनाज मांगते हैं वे गौतम है। दिलीप राजा की तरह जो गायकी सेवा करने मे लगे रहते हैं-जब वह बैठती है तब वे बैठते हैं-वह खड़ी होती है तो वे भी खडे हो जाते हैं इत्यादि रूप से गोचर्यानुकारी जो जन होते हैं वे गोव्रतिक हैं। गृहस्थ धर्म ही श्रेष्ठ है, इस-प्रकार मान कर जो-उसमें रह रहते हैं वे गृहिधर्म चिन्तक है। जैसे-गृहस्थाश्रम के समान धर्म न हुआ है और न आगे होगा ही। जो शूरवीर मनुष्य होते हैं वे ही इसे पालते है। पाषड धर्म को पालने वाले मनुष्य शूरवीर नहीं हैं किन्तु वे तो क्लीव-नपुसक हैं। ऐसी इनकी मान्यता होती है। अविरुद्ध शब्द का अर्थ विरुद्ध नहीं रहते हैं सबका समानरूप से विनय करते हैं। विरुद्ध शब्द का अर्थ अक्रियावादी है। ये अक्रिया वादी पर-

પહેરે છે તેનુ નામ ચીરિક છે ચામડાને જે વસ્ત્ર તરીકે પહેરવામા કામમા લે છે તે ચર્મ ખડિત છે બીજાઓ વડે લાવવામા આવેલી ભિક્ષાથી જે પોતાનુ ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોડ છે પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે છે તે પાડુરગ છે બળદને સાથે લઇને જેઓ બીજાઓના ઘરોથી અનાજ માગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા કરવામા વ્યસ્ત રહે છે-જ્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, જ્યારે ગાય ઉભી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ ઉભા થઈ જાય છે વગેરે રૂપમા જેઓ ગોચર્યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોવ્રતિક કહેવાય છે ગૃહસ્થ ધર્મજ ખરેખર-ઉત્તમ ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણે માનીને તેમા દત્ત ચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહિધર્મ-ચિંતક છે જેમકે —ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ થયો નથી અને આગળ ભવિષ્યમા થવાની સભાવના પણ નથી જેઓ શૂરવીર માણસો હોય છે તેઓજ આ ધર્મનુ પાલન કરે છે પાખડ ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી પણ તેઓ તો નપુસક છે ગૃહસ્થીઓની આ જાતની માન્યતા હોય છે અવિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે કેમ કે એઓ કોઈ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ કરતા નથી તેઓ બધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે અક્રિયાવાદી લોકોપરલોક જેવી વસ્તુમા

इत्युक्त्वा चम्पानगर्यां शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागत्य-एवमादिषु-'हंदि' इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः ! शृण्वन्तु-भवन्तः-यत् चम्पानगरी वास्तव्या बहवः 'चरगाय जाव' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च स्खलितेभ्यो रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येवं घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय 'पच्चप्पिणंति' प्रत्यर्पयन्ति ॥ सू० २ ॥

नगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार धन्यसार्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकर लिया और चपानगरी में शृंगाटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गों में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चपा नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक कर रख लिया जाता है, उस

वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક વગેરે મહાપથોમાં જઈને આ રીતે તેઓએ ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સાંભળો, ચંપા નગરીમાં રહેનાર ચરક, વગેરે જે તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમાં જ તેને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમાં કોઈ પડી જશે અથવા તો બીમાર થઈ જશે તો ધન્ય સાથવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચાડશે આ રીતે ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનું કામ પુરૂ થઈ જવાની ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામાં આવે છે તે ભાગને જે ભીખ માગીને લઈ જાય છે તેને ચરકિ કહે છે ,માર્ગમાં પડેલા ફાટેલા વસ્ત્રો, જે

जणवय मज्झ मज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सगडीसागड मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेस करेइ करित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एव वयह–एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफला नाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठति मणुण्णा वन्नेणं४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए, त जो णं देवाणुप्पिया ! तेसि नदिफलाण मूलाणि वा कद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ छायाए वा वीसमइ तस्स णं आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा२ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति, तं माणं देवाणुप्पिया ! केइ तेसि नदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरो–विज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि-य जाव हरियाणि य आहारेह छायासु वीसमहत्ति घोसणं घोसेह जाव पच्चप्पिणति, तएण से धण्णे सत्थवाहे सगडी-सागड जोएइ२ जेणेव नदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसिं नदिफलाण अदूरसामने सत्थणिवेस करेइ करित्ता दोच्चपि तच्चपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता

मूलम्-तएणं तेसिं कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानयरी वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति तएणं से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव पत्थयं ण दलाइ दलइत्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठह, तएणं ते चरगा य जाव गिहत्था य धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति, तएणं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० आमंतेइ आमंतित्ता भोयणं भोयावेइ भोयावित्ता आपुच्छइ आपुच्छित्ता सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता चरगा य जाव गिहत्था य सद्धिं घेत्तूण णाइवि प्पइट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे२ सुहेहिं वसहिं पायरासेहिं अंगं

लोक नहीं मानते हैं। वृद्धश्रावक-ब्राह्मण-अर्थ का वाचक है। क्यों कि ये पहिले भरत चक्रवर्ती के समय में श्रावक थे-पश्चात् ब्राह्मण बन गये इसलिये " वृद्धकालिको यः श्रावकः " इस व्युत्पत्ति के अनुसार वृद्धश्रावक शब्द ब्राह्मण अर्थ का वाची बन जाता है। बाकी अवशिष्ट शब्दों का अर्थ स्पष्ट है ॥ सू० २ ॥

વિશ્વાસ કરતા જ નથી વૃદ્ધ શ્રાવક-બ્રાહ્મણ અર્થને સ્પષ્ટ કરે છે કેમ કે એઓ પહેલા ભરત ચક્રવર્તીના વખતે શ્રાવક હતા ત્યાર પછી એ બધા બ્રાહ્મણ થઈ ગયા એટલા માટે ' વૃદ્ધ કાલિકો ય શ્રાવક સ વૃદ્ધ શ્રાવક ' આ વ્યુત્પત્તિ મુજબ વૃદ્ધ શ્રાવક શબ્દ બ્રાહ્મણ અર્થનો વાચક થઈ જાય છે બીજા શેષ શબ્દોના અર્થ તો સ્પષ્ટ જ છે ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

निग्गंथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेसु सज्जेइ सज्जिस्सइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—'तएण तेसिं' इत्यादि। ततः खलु तेषा कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके एतमर्थं=पूर्वोक्तमहिच्छत्रानगरीगमनार्थघोषणारूपं भाव श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य, निशम्य=हृदयवार्यं चम्पानगरी गन्तव्या अहिच्छत्रानगरीगन्तुकामा बहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्य सार्थवाह-स्तत्रैवोपागच्छन्ति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषा चरकाणा च यावद् गृहस्थाना च मध्ये अच्छत्रकाय छत्रं ददाति यावत पथ्यदन=शम्बल ददाति, एवमवादीत्=कथयति गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया. ! चम्पाया नगर्या बहि 'अग्गुज्जाणसि' अग्र्योद्याने मा 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्त =प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत। तत' खलु ते चरकाश्च=

—:तएण तेसिं इत्यादि:—

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसिं कोडुबियपुरिसाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चपा नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य सार्थवाहक था वहा आये (तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त दलइ जाव पत्थयण दलाइ दलइत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया। चपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठेह) इसके बाद धन्य सार्थवाह

'तएण तेसिं' इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર પછી

(तेसिं कोडुबिय पुरिसाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति)-

તે કૌટુબિક પુરુષોના મુખથી આ ઘોષણા રૂપ અર્થને-સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને ચ પા નગરીના ઘણા ચરકથી માડીને ગૃહસ્થ સુધીના બધા માણસો જ્યા ધન્ય સાર્થવાહ હતા ત્યા આવ્યા

(तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त दलयइ. जाव वत्थयण दलाइ. दलइत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणु-

एव वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवसंति महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एव वयह-एएणं देवाणुप्पिया ! ते णंदिफला रुक्खा किण्हा जाव मणुन्ना छायाए त जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णदिफलाण रुक्खाण मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल० जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, त माणं तुब्भे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा ण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमहत्तिकट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणति, तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सद्दहंति पत्तियंति रोयति एयमट्ठ सद्दहमाणा३ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेण परिहरमाणा२ अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति तेसि णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा२ सुहरूवत्ताए भुज्जो२ परिणमति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो निग्गथी वा जाव पचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ नो रज्जेइ से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं अच्चणिज्जे५ परलोए नो आगच्छइ जाव वीइवइस्सइ, जहा य ते पुरिसा तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ नो सद्दहति३ धण्णस्स एयमट्ठ असद्दहमाणा३ जेणेव ते नदिफला तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता तेसि नदिफलाण मूलाणि य जाव वीसमति तेसिं ण आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह

निग्गंथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेसु सज्जेइ सज्जिस्सइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—'तएण तेसिं' इत्यादि। तत खलु तेषा कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके एतमर्थं=पूर्वोक्तमहिच्छत्रानगरीगमनार्थघोषणारूप भाव श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य, निशम्य=हृदयेधार्य चम्पानगरी वास्तव्या अहिच्छत्रानगरीगन्तुकामा बहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्य सार्थवाह-स्तत्रैवोपागच्छन्ति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषा चरकाणा च यावद् गृहस्थाना च मध्ये अच्छत्रकाय छत्र ददाति यावत् पादुकन=पादत्राण ददाति, एवमवादीत्=कथयति गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया! चम्पाया नगर्या बहि 'अग्गुज्जाणसि' अग्र्योद्याने मां 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्त =प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत। तत खलु ते चरकाश्च=

—'तएण तेसिं इत्यादिः—

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसिं कोडुबियपुरिसाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चंपा नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य सार्थवाहक था वहा आये (तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त दलइ जाव पत्थयणं दलाइ दलइत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया। चपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठेह) इसके बाद धन्य सार्थवाह

'तएण तेसिं' इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तएण) त्यार पछी

(तेसिं कोडुबिय पुरिसाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति)-

તે કૌટુબિક પુરુષોના મુખથી આ ઘોષણા રૂપ અર્થને સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને ચ પા નગરીના ઘણા ચરકથી માડીને ગૃહસ્થ સુધીના બધા માણસો જ્યા ધન્ય સાર્થવાહ હતા ત્યા આવ્યા

(तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त 'दलयइ, जाव पत्थयण दलाइ, दलइत्ता एव 'वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया'! चपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठेह)

चरकादयो यावद् गृहस्था धन्येन सार्थवाहेन-एवमुक्ता सन्तः 'जाव' यावद्-धन्य सार्थवाह प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति । तत खलु धन्यः सार्थवाहः शोभने तिथि करणनक्षत्रे=शुभदिवसे विपुलमशनादिक चतुर्विधाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति उपस्कार्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, भोजन भोजयति=कार

ने उन चरक आदि से लेकर गृहस्थ पर्यन्त के मनुष्यों में जिसके पास छत्ता आदि नहीं था उसे छत्ता दिया यावत् जिस के पास कलेवा नहीं था उसको कलेवा-मार्ग भोजन-दिया । बाद में उसने उन सबसे कहा हे देवानुप्रियों ! तुम यहां से चलो और मुख्य उद्यान में मेरी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे रहो-(तएण ते चरगाय जाव गिहत्था य धण्णेण सत्थ वाहेण एव वुत्ता समाणा जाव चिट्ठन्ति, तएण धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विउल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० आमतेइ, आमत्तित्ता भोयण भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडीसागड जोयावेइ, जोयवित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ) इस प्रकार धन्यसार्थवाह के द्वारा कहे गये वे चरकादि गृहस्थ पर्यन्त समस्तजन वहा से चलकर मुख्य उद्यान में गये-और धन्यसार्थवाह की प्रतीक्षा करते हुए वहां ठहर गये । धन्यसार्थवाह ने शुभ तिथि, करण, एव नक्षत्र में विपुल मात्रा में अशन आदि रूप चारों प्रकार का आहार निष्पन्न करवाया । जब आहार निष्पन्न हो

ત્યાર પછી ધન્ય સાર્થવાહે તેઓ ચરક વગેરેથી માડીને ગૃહસ્થ સુધીના બધા માણસોમાથી જેની પાસે છત્રી વગેરે ન હતી તેને છત્રી વગેરે અને જેની પાસે માર્ગ માટેનુ ભોજન ન હતુ તેને ભોજન આપ્યુ ત્યાર બાદ તેણે બધા ને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અહીંથી મુખ્ય ઉદ્યાનમા જાઓ અને ત્યા મારી પ્રતીક્ષા કરો

(तएण ते चरगाय जाव गिहत्थाय धण्णेण सत्थवाहे ण एव वुत्ता समाणा जाव चिट्ठति, तएण धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विउल असण ४ उवक्खडवेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ आमतेइ, आमतित्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडीसग्गड जोयावेइ, जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે બધા માણસો ત્યાથી મુખ્ય ઉદ્યાનમા ગયા અને ધન્ય સાથવાહની રાહ જોતા તેઓ ત્યા જ રોકાયા ધન્ય સાર્થવાહે શુભ તિથિ, કરણ, અને
પ્રકૃણ પ્રમાણમા અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતના આહારો

यति, भोजयित्वा आपुच्छइ ' आपृच्छति=निदेशगमनार्थमाज्ञा प्रार्थयति, आपुच्छिय=आज्ञा प्राप्य शकटीशाकट योजयति, योजयित्वा चम्पा नगरीतो निर्गच्छति=निस्सरति, निर्गत्य चरकान् यावत् गृहस्थांश्च सार्द्धं गृहीत्वा 'नाइविप्पगिट्ठेहिं' नातिविप्रकृष्टेषु=नातिदूरेषु यथोचितेषु ' अद्धाणेहिं ' अध्वसु=मार्गेषु ' वसमाणे २ ' वसन्-वसन् स्थाने स्थाने निवास कुर्वन् ' सुहेहिं ' शुभैः=प्रशस्तै. ' वसहिपायरासेहिं ' वसतिमातराशैः = निवासस्थाने प्रातःकालीनलघुभोजनै' सह अङ्गजनपदस्य=अङ्गदेशस्य मध्य-मध्येन यत्रैव ' देसग्ग ' देशाग्र्य=अङ्गदेशसीमा वर्त्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटीशाकट मोचयति, मोचयित्वा ' सत्थनिवेस ' सार्थनिवेश करोति, कृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा=आहूय एवमवादीत्-" हे देवानुप्रियाः ! यूय खलु मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन=उच्चस्वरेण उद्घोषयन्त.=सन्तः एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदत=कथयत-

---

चुका-तब उसने अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनोंको आमन्त्रित किया। आमन्त्रित करके फिर उन सबको उसने उस चतुर्विध आहारको भोजन कराया भोजन कराके फिर उन सबसे परदेश गमन करने की उसने आज्ञा मांगी। आज्ञाप्राप्त करके उसने गाडी और गाड़ों को जुतवाया जुतवा कर फिर वह चपा नगरी से बाहिर निकला। चरकादि गृहस्थ पर्यन्त समस्त जन को अपने साथ में ले लिया-(निग्गच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्थाय सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेणिं वसमाणेर सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अग जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेस करेइ करित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दवित्ता एवं वयासी — तुब्भेण देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेससि महया २

આહારો તૈયાર થઈ ગયા ત્યારે તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને આમન્ત્રિત કર્યા આમન્ત્રિત કરીને તેણે બધાને ચારે જાતના આહારો જમાડયા ત્યાર પછી તેણે સૌની પાસેથી પરદેશ જવાની આજ્ઞા માગી આમ તેણે બધાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને ગાડી તેમજ ગાડાઓ જોતરાવ્યા અને ત્યાર પછી તે ચપા નગરી થી બહાર નીકળ્યો તેણે ઉદ્યાનમા રાહ જોનારા બધા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે માણસોને પણ સાથે લઈ લીધા હતા

(निग्गच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्था य सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे २ सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अग जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देसग्ग तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोयावेइ, मोयावित्ता सत्थणिवेस करेइ करित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता

एत्थ खलु हे देवाणुप्पिया ! 'इमीसे' अस्याः 'अगामियाए' = ग्रामरहितायाः 'छिन्नावायाए' छिन्नपातायाः छिन्नः आपातो = जनसञ्चारो यत्र सा, तस्याः जनसञ्चाररहितायाः 'दीहमद्धाए' दीर्घाध्वायाः-दीर्घः=बहुकालगम्यः अध्वा= मार्गो यत्र सा, तस्याः-चिरकालगम्यमार्गायाः, एतादृश्या अटव्याः 'बहुमज्झदेसभागे=अतिमध्यभागे, 'एत्थ णं' अत्र खलु बहवो नदिफलानामवृक्षाः सन्ति= लोकैः कथिता । कीदृशास्ते ? इत्याह-' किण्हा ' इत्यादि=कृष्णाः=कृष्णवर्णाः, कृष्णावभासा'=अतिनीलत्वेन कृष्णच्छटायुक्ताः यावत्-नीलादिवर्णयुक्ताः,

सद्देण उग्घोसेमाणा२ एव वयह-एव खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे अगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफलानाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया, पुप्फिया, फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव२ उवसोभेमाणा चिट्ठति) निकल कर नाति विप्रकृष्ट-यथोचित-मार्गोंमें ठहरता२ और वहां२प्रातः कालीन कलेवा करता हुआ वह जहा अगदेश की सीमा थी वहा पर आया। वहां आकर के उसने अपने शकटी शकटों को ढील दिया और ढील करके फिर अपने सार्थ को ठहरा दिया। ठहरा देने के बाद फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-और उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग हमारे सार्थनिवेश में बडे जोर २ से घोषणा करते हुए ऐसा कहो कि-हे देवानुप्रियो ! सुनो जन सचार रहित दीर्घ मार्ग वाली इस आगे की अटवी के मध्यभाग में लोग कहते है कि अनेक नदीफल नाम के

एव वयासी — तुब्भेण देवाणुप्पिया ! मम सत्थ निवेससि महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एव खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे अगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए, अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफलानाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया, पुप्फिया फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठति)

ત્યાથી રવાના થઇને તે માર્ગમા યથાકથાને નજીક નજીકના સ્થળો ઉપર વિશ્રામ કરતો અને ત્યા સધાર થતા જલપાન (નાસ્તો) વગેરે કરતો તે અગદેશની હદ ઉપર પહોચ્યો ત્યા પહોચીને તેણે ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યા પોતાના સાર્થને રોકયો રોકયા પછી તેણે પોતાના કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા સાર્થ સનિવેશમા તમે લોકો મોટેથી આ પ્રમાણેની ઘોષણા કરતા કહો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો ! હવે આગળ આવનાર લાબા માર્ગવાળા નિર્જન વનમા લોકો એમ કહે છે કે તેમા ઘણા નદિફળ

तथा-'पत्तिया' पत्रिता=पत्रबहुला', 'पुप्फिया' पुष्पिता'=पुष्पबहुलाः, 'फलिया' फलिताः=फलबहुला 'हरियगरेरिज्जमाणा' हरितकरारज्यमानाः= हरितकेन=हरितवर्णेन भृश शोभमाना 'सिरीए' श्रिया=हरितपल्लवादिशोभया अतीवातीव उपशोभमानास्तिष्ठन्ति=वर्त्तन्ते। पुन कीदृशास्ते' इत्याह-मनोज्ञा-वर्णेन, 'जाव' यावत्-गन्धेन, रसेन स्पर्शेन, मनोज्ञाऽछायया, रम्यवर्णादिना रम्य छायया च युक्ता इत्यर्थ, 'त' तत्=तस्मात् नन्दिवृक्षाणा सौन्दर्यादिकारणवशात् 'जो ण' यः खलु हे देवानुप्रिया ! तेषा नन्दिफलाना=नन्दिफलाभिधानां वृक्षाणा मूलानि वा कन्दानि वा त्वचो वा, पत्राणि वा, पुष्पाणि वा, फलानि वा, बीजानि वा, हरितानि वा 'आहारेइ' आहारयति, तेषा छायाया वा 'वीसमइ' विश्राम्यति तस्य खलु आपाते=पूर्वं भक्षणादि समये 'भद्दए'

वृक्ष हैं। ये वृक्ष कृष्ण वर्णवाले हैं और देखने पर भी अति हरित होने के कारण कृष्ण ही प्रतीत होते हैं। पत्र, पुष्प एव फलों से वे युक्त हैं। वे हरित वर्णसे बडे सुहावने लगते ह। उनके पल्लव आदि नव हरे २ हैं। इससे उन की शोभा बडी नीराली बनी हुई हैं। (मणुण्णा वन्नेण ४ जाव मणुन्ना फासेण मणुन्ना छायाए, त जो ण देवाणुप्पिया ! तेसिं नदिफलाण रुक्खाण मूलाणिवा कद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ आकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति) वर्ण, रस, गध एव स्पर्श से वे बडे मनोज्ञ हैं। छाया भी उनकी बडी मनोज्ञ है। इस लिये हे देवानुप्रियो! जो कोई इन की सुन्दरता आदि कारण के वशसे आकृष्ट होकर इन नदिफल वृक्षों के मूलों को कदों को छालों को, पत्रों को, फलो को बीजों को अथवा हरित अकुरों

નામે વૃક્ષો છે તે વૃક્ષો કૃષ્ણ વર્ણવાળા છે અને ખૂબજ લીલા હોવાથી કૃષ્ણ વર્ણના જેવા જ લાગે છે પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી તેઓ સમૃદ્ધ છે લીલા છમ હોવાથી તેઓ અત્યત સુદર લાગે છે તેમના પત્રો વગેરે બધા લીલા છે તેથી તેમની શોભા એકદમ અનોખી છે

(मणुण्णा वन्नेण ४ जाव मणुन्ना फासेण मणुन्ना छायाए त जो ण देवाणुप्पिया ! तेसिं नदिफलाण रुक्खाण मूलाणि वा कद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि, वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ तस्स ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति)

વર્ણ, રસ, ગધ અને સ્પર્શથી તેઓ બૂજ મનોજ્ઞ છે છાયડો પણ તેઓનો અત્યત મનોજ્ઞ છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! કોઈ પણ માણસ તેમની સુદરતા વગેરે કારણોથી આકર્ષાઇને તે નદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કદોને છાલને પાદડાઓને, પુષ્પોને, બિયાઓને અથવા તો લીલી કૂપળોને ખાશે કે

यूयं खलु हे देवानुप्रियाः ! मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन उद्घोषयन्तः २ एवं वदत-" एते खलु हे देवानुप्रियाः ! ते इमे नन्दिफलवृक्षाः यदर्थं पूर्वम् परिदृष्टम् कृष्णा यावत्-मनोज्ञाश्छायया, तद् यो खलु हे देवानुप्रियाः ! एतेषां नन्दिफलानां वृक्षाणां मूलानि वा कन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्वचो वा, पत्राणि वा, फलानि वा, यावत्-तानि मूलकन्दादीनि च जीवितात् व्यपरोपयन्ति, तद् मा खलु यूयं 'जात' यावत्-तेषां मूलकन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां छायायां विश्राम्यत किन्तु तान दूर-दूरेण=दूरतः एव 'परिहरमाणा' परिहरन्त =वर्जयन्तः

तीन वार बुलाया-बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम मेरे सार्थ निवेश में जाकर जोर २ से ऐसी घोषणा करो-कि हे देवानुप्रियो जिन नदिफल वृक्षों के विषय में पहिले सूचना दी गई है-वे येही कृष्ण यावत छाया से मनोज्ञ नदिफल वृक्ष हैं। तो जो ण देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणिवा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, तं माणं तुब्भे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह माण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति) इस लिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति इन नदिफलवृक्षोंके मूलोंको, कंदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नहीं खावे और न वह इनकी छायामे विश्राम ही करे-नहीतो वह अकालमें ही कालकवलित अर्थात् मर जावेगा हो जावेगा। इस लिये इन्हे बहुत दूर छोडकर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

મારા સાર્થ નિવેશમા જઈને મોટેથી તમે આ પ્રમાણે ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જે નદિફળ વૃક્ષોના વિષે પહેલા તમને જાણ કરવામા આવી હતી તે જ કૃષ્ણ-તેમજ છાયાથી મનોજ્ઞ લાગતા નદિફળ વૃક્ષો છે

(त जो ण देवाणुप्पिया ! एएसिं णदिफलाण रुक्खाण मूलाणि वा कद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ त माणं तुब्भे जाव दूर दूरेण परिहरमाणा वीसमह,माण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणति)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારામાથી કોઈ પણ માણસ નદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય નહિ અને તેમની છાયામા પણ વિશ્રામ લે નહિ, નહિતર તે અકાળે જ મૃ[illegible] એટલા એમનાથી ખૂબ જ દૂર રહીને વિશ્રામ લેશો

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमइ' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न खलु यूय जीविताद् व्यपरोपिष्यध्वे, तथा-अ येषां वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति कृत्वा घोषणा घोषयत, यावत्-ते घोषणा घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाज्ञा प्रत्यर्पयन्ति। तत्र=खलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थ वाहस्य एतमर्थम्=एतदुपदेश श्रद्दधति, प्रतिगच्छन्ति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्दधाना:= श्रद्धाविषयिकुर्वाणाः प्रतियन्त रोचयन्त तेषा नन्दिफलवृक्षाणा मूलादीनि छायां च दूर -दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषा वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणा छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होओगे। तथा इनसे अतिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिको को खाओ और उनकी छाया मे विश्राम करो। इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्हों ने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी। (तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सद्दहति, पत्तियति रोयति, एयमट्ठ सद्दहमाणाइ तेसिं नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति) वहा सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया। उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई। इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि सपन्न बने हुए उन लोगों ने उन नदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोडकर अन्य वृक्षों के मूलादि

પણ મુશ્કેલી નડશે નહિ તેમજ આ વૃક્ષો સિવાયના બીજા વૃક્ષો છે, તેમના મૂળ કંદ વગેરે તમે ખાવ અને તેમના છાયડામા વિશ્રામ કરો. તેઓએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેને ખબર આપી

(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सद्दहति, पत्तियति, रोयति, एयमट्ठ सद्दहमाणाइ तेसिं नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति)

ત્યા અર્થમા આવેલા કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહની સૂચના રૂપ આ વાતને સ્વીકારી લીધી અને તેને શ્રદ્ધાની અપેક્ષાએ પોતાના હૃદયમા સ્થાન આપતા બરોબર તેની ઉપર પ્રતીતિ કરી લીધી તે લોકોને તે વાત રૂચિકર પણ થઈ પડી આ રીતે શ્રદ્ધાયુક્ત થયેલા તે લોકોએ તે નદિફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરેની અને તેમની છાયાથી ખૂબ જ દૂર રહીને બીજા વૃક્ષોના મૂળ તેમજ કંદ વગેરેને આધા તથા તેમની છાયામા વિસામો લીધો

यूय खलु हे देवानुप्रिया ! मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन उद्घोषयन्तः २ एवं वदत-" एते खलु हे देवानुप्रिया ! ते इमे नन्दिफलवृक्षाः यदर्थं, पूर्वं प्रदिष्टम् कृष्णा यावत्-मनोज्ञाश्छायया, तद् मो खलु हे देवानुप्रिया ! एतेषां नन्दिफलानां वृक्षाणां मूलानि वा कन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्वचो वा, पत्राणि वा, फलानि वा, यावत्-तानि मूलकन्दादीनि न जीवितात् व्यपरोपयन्ति, तद् मा खलु यूय 'जार' यावत्-तेषां मूलकन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां छायासु विश्राम्यत किन्तु तान दूर-दूरेण=दूरत एव 'परिहरमाणा' परिहरन्त =वर्जयन्त

तीन बार बुलाया-बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रिया ! तुम मेरे साथ निवेश में जाकर जोर २ से ऐसी घोषणा करो-कि हे देवानुप्रियो जिन नदिफल वृक्षों के विषय में पहिले सूचना दी गई है-वे यही कृष्ण यावत छाया से मनोज्ञ नदिफल वृक्ष है। तो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणिवा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, तं माण तुब्भे जाव दूरे दूरेण परिहरमाणा वीसमह माणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति) इस लिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति इन नदिफलवृक्षोंके मूलोंको, कंदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नहीं खावे और न वह इनकी छायामे विश्राम ही करे-नहीतो वह अकालमें ही कालकवलित अर्थात् मर जावेगा हो जावेगा। इस लिये इन्हे बहुत दूर छोडकर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

મારા સાર્થ નિવેશમા જઈને મોટેથી તમે આ પ્રમાણે ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જે નદિફળ વૃક્ષોના વિષે પહેલા તમને જણાવવામા આવી હતી તે જ કૃષ્ણ તેમજ છાયાથી મનોજ્ઞ લાગતા નદિફળ વૃક્ષો છે

(तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ तं माण तुब्भे जाव दूरं दूरेण परिहरमाणा वीसमह,माणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणति)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારામાથી કોઈ પણ માણસ નદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય નહિ અને તેમની છાયામા પણ વિસામો લે નહિ, નહિતર તે અકાળે જ મૃ[illegible] એટલા

[illegible] એમનાથી બૂબ જ દૂર રહીને વિસામો લેશો તેથી [illegible]

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमइ' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न खलु यूय जीविताद् व्यपरोपिष्यध्वे, तथा-अ येषा वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" मिति कृत्वा घोषणां घोषयत, यावत्-ते घोषणा घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाज्ञा प्रत्यर्पयन्ति। तत्र=खलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थम्=एतद्रूपदेश श्रद्दधति, प्रतिगच्छन्ति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्दधाना:= श्रद्धाविषयिकुर्वाणा' प्रतियन्त' रोचयन्त तेषा नन्दिफलवृक्षाणा मूलादीनि छायां च दूर -दूरेण=दूरतश्च परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषा वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणा छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होओगे। तथा इनसे अतिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिकों को खाओ और उनकी छाया मे विश्राम करो। इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्हों ने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी। (तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा वणगस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सद्दहति, पत्तियति रोयति, एयमट्ठ सद्दहमाणाइ तेसिं नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति) वहा सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया। उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई। इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि सपन्न बने हुए उन लोगों ने उन नदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोडकर अन्य वृक्षों के मूलादि

પણ મુરઝેલી નહશે નહિ તેમજ આ વૃક્ષો સિવાયના બીજા વૃક્ષો છે, તેમના મૂળ કદ વગેરે તમે ખાવ અને તેમના છાયડામા વિશ્રામ કરો. તેઓએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેને ખબર આપી

(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सद्दहति, पत्तियति, रोयति, एयमट्ठ सद्दहमाणाइ तेसिं नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति)

ત્યા સાર્થમા આવેલા કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહની સૂચના રૂપ આ વાતને સ્વીકારી લીધી અને તેને શ્રદ્ધાની અપેક્ષાએ પોતાના હૃદયમા સ્થાન આપતા અરોબર તેની ઉપર પ્રતીતિ કરી લીધી તે લોકોને તે વાત રુચિકર પણ થઈ પડી આ રીતે શ્રદ્ધાયુક્ત થયેલા તે લોકોએ તે નદિફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરેથી અને તેમની છાયાથી બૂબ જ દૂર રહીને બીજા વૃક્ષોના મૂળ તેમજ કદ વગેરેને ખાધા તથા તેમની છાયામા વિસામો લીધો

भापाते=पूर्वमाहारसमय नो भद्रक भवति=विशिष्टस्वादादिलाभो न भवति किन्तु ततः पश्चाद्=भक्षणविरामानन्तर परिणम्यमानानि २ रसादिरूपेण परिणतानि मूलकन्दादीदि शुभरूपतया=भद्रकतया भूयो भूय परिणमन्ति ।

अथोपनय दर्शयन् सुधर्मस्वामी माह-' एवामेव ' त्यादिना । ' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव पूर्वोक्तप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ? योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा ' जाव ' यावत्-आचार्योपाध्यायानामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितस्ते पामुपदेशं श्रद्दधानः सन् पञ्चसु कामगुणेषु=शब्दादिविषयेषु ' नो सज्जेइ ' नो

कों को यावत् कदों को खाया और उनकी छाया में विश्राम किया। (तेसिं ण आवाए णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणयमाणा २ सुहरूवत्ताए सुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ, नो रज्जेइ, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव वीइवयस्सइ, जहा वा ते पुरिमा) परन्तु इन पुरुषोंको उनके मूलादिकों के खाने के समय विशिष्ट स्वादादि को प्राप्तिरूप भद्रक का लाभ तो नहीं हुआ-किन्तु उसके बाद जब खाये हुए उन मूलादिकों का रसादि रूप से परिणमन हुआ तब उन्हें बार २ शुभ रूप परिणमन होने से आनन्द आया और जीवन सुरक्षित रहा-अब सुधर्मास्वामी इसका उपनय (दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृति में जोडना) दिखलाते हुए कहते हैं कि इसी तरह से हे आयुष्मन्त श्रमणो । जो हमारे निर्ग्रन्थ श्रमण एवं श्रमणियाजन हैं वे आचार्य उपाध्यायके पास मुडित होकर दीक्षित हो जाते हैं और उनके उपदेश को श्रद्धा आदि का विषयभूत

(तेसिं ण आवाए णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ सुहरूवत्ताए सुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ, नो रज्जेइ से ण इहभवे चेव बहूण समणाण४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव वीइवयस्मइ जहा वा ते पुरिसा)

તે માણસોને વૃક્ષોના મૂળ કદ વગેરે ખાતી વખતે સવિશેષ સ્વાદ વગેરેની અનુભૂતિ તો થઈ શકી નહિ પણ ખાધા પછી તે મૂળ કદ રસ વગેરે રૂપમા પરિણત થયા ત્યારે તેમને સુખ મળ્યુ અને સાથે સાથે તેમના જીવન પણ સુરક્ષિત રહ્યા સુધર્મા સ્વામી હવે એજ વાતને દૃષ્ટાન્તના રૂપમા સ્પષ્ટ કરતા કહે છે કે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ, આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે મુડિત થઇને

स्वजते=आसक्तो भवति, 'नो रज्जेइ' नो रज्यते नो अनुरक्तो भवति स खलु इह भवएव बहूना श्रमणाना श्रमणीना बहूना साधूना साध्वीना मध्ये-अर्चनीय'= माननीयः सन् परलोके=भवान्तरे नो आगच्छति=जन्म न प्राप्नोति किन्तु-यावत्-अस्मिन्नेव भवे चातुरन्तसंसारकान्तार व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, मोक्ष प्राप्स्यतीत्यर्थः 'जहा वा ते पुरिसा' यथा वाते पुरुषाः-यथा वा=येन प्रकारेण धन्यसार्थवाहोपदेशश्रद्धया ते=नन्दिफलवृक्षमूलकन्दादि परिवर्जनेन तत्कथनानुसारसमाचरणशीलाः पुरुषाः=सार्थपुरुषा' सुखपूर्वकमहिच्छत्रा नगरीं प्राप्स्यन्ति तथेत्यर्थः। अथ श्रद्धा रहितान् वर्णयति-'तत्थ ण' इत्यादि। तत्र खलु सार्थे अप्येके=ये तेचित् पुरुषाः धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं=नन्दिफलभक्षणादि निषेधरूप

बनाते हुए पाच काम गुणों में-शब्दादि विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं अनुरक्त नहीं बनते हैं वे इस भवमें ही अनेक साधु और साध्वियों के बीचमें माननीय होते हुए परलोक में जन्म से रहित हो जाते हैं-अर्थात् पुन उन्हें जन्म धारण नही करना पडता है। कारण वे इसी भव में चतुर्गति रूप इस संसार कान्तार को पार करने वाले बन जाते हैं-उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जावेगा ऐसे वे तैयार हो जाते हैं। जिस प्रकार धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा करने से ये सार्थ के कितनेक पुरुष नदि वृक्षों के मूलकंदादिकों का परिहार-त्याग करते हुए और उसके कथनानुसार अपना आचरण बनाते हुए सकुशल अहिच्छत्रा नगरी को प्राप्त कर लेंगें ऐसे बन गये। अब जिन्होंने धन्य सार्थवाहके वचनों पर श्रद्धा नही की-उनको क्या दशा हुई इस बात का वर्णन सूत्रकार करते हैं-(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एय-

---

યુક્ત થઇને પાચ કામ ગુણોમા શબ્દાદિ વિષયોમા-અનાસક્ત રહે છે એટલે કે અનુરક્ત થતા નથી, તેઓ આ ભવમા જ ઘણા સાધુઓ તેમજ સાધ્વીઓની વચ્ચે સન્માનનીય થતા પરલોકમાં જન્મરહિત થઈ જાય છે એટલે કે ફરી તેઓનો જન્મ થતો નથી કેમકે તેઓ આ ભવમા જ ચતુર્ગતિ રૂપ આ સસાર કાતારને પાર કરવા લાયક સામર્થ મેળવી લે છે તેઓ મોક્ષ મેળવવા યોગ્ય થઇ જાય છે, જેમ ધન્યસાર્થવાહના ઉપદેશ ઉપર શ્રદ્ધા મૂકીને સાર્થના કેટલાક પુરૂષોએ નદિ વૃક્ષોના મૂળ કદ વગેરેને ત્યજીને તેની સૂચના મુજબ આચરણ કરતા અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચી શકે તેવા થઈ ગયા હવે જે પુરૂષોએ ધન્યસાર્થવાહની વાત ઉપર શ્રદ્ધા મૂકી નહિ તેઓની શી હાલત થઈ તેનુ વર્ણન કરતા સૂત્રકાર કહે છે—

(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं नो सद्दहति ३

नो श्रद्दधति नो रोचयन्ति नो प्रतियन्ति। ते धन्यस्य-एतमर्थम् अश्रद्दधाना अरोचयन्तः, अप्रतियन्त यत्रैव नन्दिफला वृक्षास्तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषां नन्दिफलानां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, तथा छायामु च विश्राम्यन्ति तेषां खलु आपाते=पूर्वं फलभक्षणादिसमये भद्रकं भवति=शुभत्वादादिलामो भवति किन्तु 'तओ पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तरं परिणम्यमाना=रसादिरूपेण

मट्ठं नो सद्दहंति ३ धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव बीयाणि य आहारेंति, तेसिं णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा) वहां पर कितनेक पुरुषों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को कि नंदिफल वृक्षों के कन्दमूलादि नहीं खाना चाहिये और न उनकी छायामें ही विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति का विषय नहीं बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्रद्धेय आदि मानकर जहां पर नंदिफल वृक्ष थे- वहां गये वहां जाकर उन्होंने उनके मूल कंदादि कों को खाया उनकी छाया में विश्राम किया उस समय उन्हें बडा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला -किन्तु जब उनका परिपाक काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते णंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव बीयाणि य आहारेंति, तेसिं णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

ત્યા કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહના નંદિફળ વૃક્ષોના કંદમૂળો વગેરે ખાવા જોઇએ નહિ તેમજ તે વૃક્ષોની છાયામા પણ વિસામો લેવો નહિ આ જાતના કથન પ્રત્યે શ્રદ્ધાવાન થયા નથી, તેના ઉપર વિશ્વાસ મૂક્યો નહિ અને પ્રતીતિપૂર્વક તેમા પોતાની અભિરૂચી બતાવી નહિ તે માણસો ધન્યસાર્થવાહના કથન અશ્રદ્ધેય માનીને જ્યા નંદિફળ વૃક્ષો હતા ત્યા ગયા ત્યા જઇને તેમણે તેમના મૂળ કંદ વગેરે ખાધા અને તેમના છાયડામા વિસામો લીધો તે સમયે તો તેમને ખૂબ જ આનંદ પ્રાપ્ત થયો, ફળોના સ્વાદમા અપૂર્વ સુખ મળ્યુ, પણ જ્યારે તેઓની પાચન ક્રિયા થવા માંડી, એટલે કે ખાધેલ વગેરે

परिणाम माप्नुवन्त. सन्तः शब्दादय यावत्-तान् जीवितात् व्यपरोपयन्ति। 'एवमेव' एवामेव=अनेनैव प्रकारेण हे आयुष्मन्त' श्रमणाः योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत् प्रव्रजितः सन पञ्चसु कामगुणेषु=शब्दादिकामभोगेषु स्वजते, रज्यते-कामभोगासक्तो भवति यावत्-स खलु इहभवे बहूना श्रमण-श्रमणीना, बहूना श्रावकश्राविकाना मध्ये हिलनीयो, निन्दनीय', खिसनीयो भवति, परलोके=च भवान्तरे चातुरन्तसंसारकान्तारम् अनुपर्यटिष्यति चातुर्गतिकसंसार एव स्थास्यति न तु मोक्ष माप्स्यतीत्यर्थ । येन प्रकारेण ते=धन्योपदेशमश्रद्दधानाः पुरुषाः=सार्थस्थिता जना नन्दिफलवृक्षमूलकन्दादिभक्षणेन तत्रैव म्रियन्ते नतु-अहिच्छत्रां नगरीं प्राप्नुवन्तीति भावः ॥ सू०३ ॥

मूलम्—तएणं से धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ उवा-

---

रसादिरूप से परिणमने लगे-तब वे सब अपने२ जीवन से रहित हो गये -मर गये-। इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो। जो हमारा निर्ग्रन्थ व निर्ग्रन्थी साध्वीजन यावत् प्रव्रजित होकर पचकाम गुणो मे-पचइन्द्रियों के शब्दादि विषयों मे-आसक्त बन जाता है-अनुरक्त हो जाता है, वह इस भवमें अनेक श्रमण श्रमणियोंके बीच हीलनीय, निंदनीय एव खिसनीय होता है एव वह भवान्तर में भी इस चतुर्गति रूप ससार कान्तार में ही घूमता रहेगा-मोक्ष प्राप्त नही करेगा। जिस प्रकार धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा नही करने वाले सार्थ के ये कितनेक पुरुष नदिफल वृक्षों के मूलादि के खाने से वहीं पर मर गये-अहिच्छत्र नगरी नहीं जा सके ॥ सू० ३ ॥

રસ વગેરે રૂપમા પરિણત થવા લાગ્યા ત્યારે તેઓ બધા નિર્જીવ થઈ ગયા, મૃત્યુ પામ્યા આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ કે નિર્ગ્રંથ સદ્વિઓ પ્રવ્રજીત થઈને પાચ કામ ગુણોમા અર્થાત્ પાચે ઇન્દ્રિયોના શબ્દાદિ વિષયોમા આસક્ત થઇ પડે છે-એટલે કે અનુરક્ત થઇ જાય છે, તે આ ભવમા ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓની વચ્ચે હીલનીય, નિંદનીય, અને ખિંસનીય હોય છે અને બીજા ભવમા પણ-આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર-કાતારમા જ ભ્રમણ કરતો રહેશે તેને મોક્ષ પ્રાપ્ત થશે નહિ ધન્યસાર્થવાહના ઉપદેશને શ્રદ્ધેય ન માનનારા કેટલાક માણસો જેમ નદિ ફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરે ખાઈને ત્યાને ત્યાજ મરણ પામ્યા, અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચી શકયા નહિ, તેમજ તેઓની પણ સ્થિતિ થાય છે ॥ સૂ ૩ ॥

नो श्रद्दधति नो रोचयन्ति नो प्रतियन्ति। ते धन्यस्य-धनसार्थस्य अश्रद्दधाना अरोचयन्तः, अप्रतियन्त यत्रैव नन्दिफला वृक्षास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषां नन्दिफलानां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, तत आयातु च विश्राम्यन्ति तेषां खलु आपातेः=पूर्वं फलभक्षणादिसमये भद्रकं भवति=शुभत्वादादिलाभोभवति किन्तु 'तओ पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तरं परिणम्यमाना =रसादिरूपेण

सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोयइ ३ धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव बीयमंति, तेसिं ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा) वहां पर कितनेक पुरुषों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को कि नंदिफल वृक्षों के कंदमूलादि नहीं खाना चाहिये और न उनकी छायामें ही विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति का विषय नहीं बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्रद्धेय आदि मानकर जहां पर नंदिफल वृक्ष थे- वहां गये वहां जाकर उन्होंने उनके मूल कंदादि कों को खाया उनकी छाया मे विश्राम किया उस समय उन्हें बडा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला -किन्तु जब उनका परिपाक काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते णंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव बीयमंति, तेसिं ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो। जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

આ કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહના નદિફળ વૃક્ષોના કંદમૂળો વગેરે ખાવા જોઇએ નહિ તેમજ તે વૃક્ષોની છાયામા પણ વિસામો લેવો નહિ આ જાતના કથન પ્રત્યે શ્રદ્ધાવાન થયા નથી, તેના ઉપર વિશ્વાસ મૂક્યો નહિ અને પ્રતીતિપૂર્વક તેમા પોતાની અભિરૂચી બતાવી નહિ તે માણસો ધન્યસાર્થવાહના કથન અશ્રદ્ધેય માનીને જ્યા નદિફળ વૃક્ષો હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમના મૂળ કંદ વગેરે ખાધા અને તેમના છાયડામા વિસામો લીધો તે સમયે તો તેમને ખૂબ જ આનંદ પ્રાપ્ત થયો, ફળોના સ્વાદમા અપૂર્વ સુખ મળ્યુ, પણ જ્યારે તેઓની પાચન ક્રિયા થવા માંડી, એટલે કે ખા વગેરે,

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः शकटीशकटं योजयति, योजयित्वा यत्रैवाहिच्छत्रा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्रायां नगर्यां बहिः अग्र्योद्याने=मुख्योद्याने सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा शकटी-शकटं मोचयति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः ' महत्थं ' महार्थं=महामूल्यं ' महग्घं ' महार्घं=महामूल्यं, ' महरिहं ' महार्हं=महतां योग्यं ' रायरिहं ' राजार्हं=राजयोग्यं प्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्द्धं सपरिवृतः अहिच्छत्रां नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतुः राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' करयल जाव वद्धावेइ ' करतल यावद् वर्धयति-कर-

' तएण से धण्णे सत्थवाहे ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाह ने (सगडी सागड जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ) वहां से अपने गोडी और गाडों को जुतवाया और जुतवा कर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया। (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया। वहां पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान बगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया। (करित्ता सगडी सागड मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाडी और गाडों को ढील दिया। (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे अहिच्छत्तं णयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (से धण्णे सत्थवाहे) તે ધન્યસાર્થવાહે (सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ ત્યાથી પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને જોતરાવીને જે તરફ અહિચ્છત્રા નગરી હતી તે દિશા તરફ રવાના થયો (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ) અને ધીમે ધીમે અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચી ગયો ત્યા પહોચીને તેણે નગરીની બહાર આવેલા પ્રધાન ઉદ્યાનમા પોતાના સાર્થનો મુકામ નાખ્યો (करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ) અને ત્યા જ પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને છોડાવી નાખ્યા

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे अहिच्छत्तं णयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

गच्छित्ता अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ, तएणं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ गेण्हित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं३ पाहुडं उवणेइ, तएणं से कणगकेऊ, राया हट्ठतुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्कं वियरइ २ पडिविसज्जेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ करित्ता पडिभंडं गेण्हइ गेण्हित्ता सुहसुहेणं जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मित्तनाइ०अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ पाउणित्ता मासियाए सं० अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ४ ॥

॥ पन्नरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाह शकटीशारट योजयति, योजयित्वा यत्रैवाहिच्छत्रा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्रायां नगर्यां बहिः अग्र्योद्याने=मुख्योद्याने सार्थनिवेश करोति, कृत्वा शकटी-शारट मोचयति । ततः खलु स धन्य सार्थवाहः ' महत्थ ' महार्थं=महामूल्यो जनक. ' महग्घ ' महार्घं=महामूल्य, ' महरिह ' महार्हं=महता योग्य ' रायरिह ' राजार्हं=राजयोग्य प्राभृत गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्द्धं सपरिवृत अहिच्छत्रा नगरीं मध्यम येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' करयल जाव वद्धावेइ' करतल यावद् वर्धयति-कर-

' तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाह ने (सगडी सागड जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ) वहा से अपने गाडी और गाडो को जुतवाया और जुतवा-कर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया। (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया। वहा पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान बगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया। (करित्ता सगड़ी सागड मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाडी और गाड़ों को ढील दिया। (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायारिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे अहिच्छत्त नयरिं मज्झ मज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (से धण्णे सत्थवाहे) તે ધન્યસાર્થવાહે (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ ત્યાથી પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને જોતરાવીને જે તરફ અહિચ્છત્રા નગરી હતી તે દિશા તરફ રવાના થયો. (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) અને ધીમે ધીમે અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચી ગયો. ત્યા પહોચીને તેણે નગરીની બહાર આવેલા પ્રધાન ઉદ્યાનમા પોતાના સાર્થનો મુકામ નાખ્યો (करित्ता सगडीसागड मोयावेइ) અને ત્યા જ પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને છોડાવી નાખ્યા.

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायरिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे अहिच्छत्त नयरिं मज्झ मज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

तत्परिगृहीत शिरोवर्तं धन्यस्य मस्तके ऽञ्जलिं कृत्वा राजानं जयविजयशब्देन वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा तन्महार्थं महार्घं महार्हं प्राभृतम् उपनयति=राज्ञः समीपे स्थापयति। ततः खलु स कनकरथः राजा हृष्टतुष्टहृदयो धन्यस्य सार्थवाहस्य तन्महार्थं ३ यावत् प्राभृतं। 'पडिच्छइ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति, प्रतीष्य धन्यं सार्थवाहं सत्कारयति सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य तस्मै 'उस्सुक्क' उच्छुल्क=शुल्कमाफयन् 'केनापि राजपुरुषेणास्मात्करो न ग्राह्यः' इत्येतद्रूपमा ज्ञापत्रं वितरति=ददाति, वितीर्य तं प्रतिविसर्जयति।

चलइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं ३ पाहुडं उवणेइ) इस के बाद उस धन्य सार्थवाह ने महार्घ साधक, महामूल्य एवं महा पुरुषों के योग्य-प्राभृत-भेट को साथ में लिया, और लेकर अनेक पुरुषों के साथ २ अहिच्छत्रा नगरी में बीच से होता हुआ प्रविष्ट हुआ। नगरी में प्रविष्ट होकर वह जहां कनक केतु राजा थे वहां गया वहां जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड कर नमस्कार किया, और जय विजय शब्दों को उच्चारण करते हुए उन्हें बधाई दी। बधाई देकर उसने फिर राजा के समक्ष अपनी भेट रखदी। (तएणं से कणगकेऊ राया हट्ठ तुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्कं वियरइ २ पडिविसज्जेइ) कनकके तु राजाने हर्षित एवं सतुष्ट होकर धन्यसार्थवाह को उस महार्थ साधक महामूल्य राज योग्य भेट

जेणेव कणगकेउ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं३ पाहुडं उवणेइ)

ત્યારપછી તે ધન્યસાર્થવાહે મહાર્થ સાધક બહુ કિમતી અને મહા પુરૂષોને યોગ્ય ભેટ સાથે લઇને ઘણા માણસોની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીની વચ્ચેના માર્ગે (રાજમાર્ગ) થઇને નગરીમા પ્રવિષ્ટ થયો. નગરીમા પ્રવેશીને તે જયા કનકકેતુ રાજા હતા ત્યા ગયો. ત્યા જઇને તેણે રાજાને બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને જય વિજય શબ્દો ઉચ્ચારણ કરતા તેમને વધાઈ આપી વધાઈ આપ્યા પછી તેણે રાજાની સામે પોતાની ભેટ મૂકી દીધી

(तएणं से कणगकेऊ राया हट्ठ तुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्कं वियरइ २ पडिविसज्जेइ)

કનકકેતુ રાજાએ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઇને મહાર્થ સાધક મહામૂલ્ય વાળી અને રાજાઓને માટે યોગ્ય ભેટ સ્વીકારી લીધી સ્વીકા[illegible] બાદ

ततः खलु स धन्य सार्थवाहस्तत्र 'भंडविणिमय' भाण्डविनिमय=भाण्डानां=क्रयाणकवस्तूनां विनिमयम्=आदानप्रदानं करोति, कृत्वा 'पडिभंड' प्रतिभाण्ड=विनिमयेन प्राप्त वस्तुजात गृह्णाति, गृहीत्वा शकटीशाकटे भरति भृत्वा शकटीशाकट योजयति, योजयित्वा सुखं=सुखेन=सुखपूर्वक यत्रैव चम्पानगरी=स्वनिवासस्थानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धि परिजनै सह 'अभिसमन्वागए' अभिसमन्वागत =समन्वितो विपुलान् मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानो विहरति।

को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्हों ने धन्यसार्थवाह का सत्कार एवं सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके "किसी भी राज पुरुष को इन से कर नहीं लेना चाहिये इस प्रकार का शुल्क भाव विषयक आज्ञा पत्र" उसके लिये प्रदान किया और प्रदान करके बाद में उसे वहां से विदा कर दिया। (तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेण जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद धन्यसार्थवाह ने वहां रह कर अपनी क्रयाणक वस्तुओं का विक्रय किया और उससे प्राप्त द्रव्य से और दूसरी वस्तुओ को खरीदा। खरीद कर उसने उन्हें गाडी और गाडों में भरा भरकर उन्हें जुतवाया और जुतवाकर फिर वह वहां से चंपानगरी की ओर वापिस चल दिया। (उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

તેમણે ધન્યસાર્થવાહનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કરીને રાજાએ 'કોઇપણ રાજપુરૂષ તેમની પાસેથી રાજકર લે નહિ' તે પ્રમાણેની વ્યવસ્થા કરતા તેમને શુલ્ક માફીનુ આજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યુ ત્યારપછી તેને ત્યાથી જવાની આજ્ઞા આપી

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेणं जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારબાદ ધન્યસાર્થવાહે ત્યા રહીને પોતાની ક્યાણક વસ્તુઓને વેચી અને તેનાથી જે ધન મળ્યુ તેનાથી બીજી વસ્તુઓ ખરીદી લીધી વસ્તુઓની ખરીદ કરીને તેણે બધી વસ્તુઓની ખરીદી કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ગાડી તેમજ ગાડાઓમા ભરી અને ત્યારપછી ગાડી અને ગાડાઓને જોતરાવીને ત્યાથી ચંપા નગરી તરફ પાછો રવાના થયો

(उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरागमनम् । धन्यः सार्थवाहो धर्मश्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा प्रव्रजितः, सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीते । बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया ऽऽत्मानं जुष्टं षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा कालमासे काल कृत्वा-

चपालगरी में आकर वह अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनों से मिला और विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगने लगा (तेण कालेण तेण समएण थेरागमणं, धण्णे सत्थवाहे धम्म सोच्चा जेट्ठ पुत्त कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइ एक्कारस अंगाइ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ । एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उसी काल और उसी समय में वहां पर स्थविरों का आगमन हुआ। धन्यसार्थवाह ने उनसे धर्म का व्याख्यान सुना सुनकर वह प्रतिबुद्ध हो गया और प्रतिबुद्ध हो करके फिर वह कुटुंब में अपने ज्येष्ठ पुत्र को रखकर दीक्षित होकरके उसने सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया। अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर १ मास की संलेखना से ६० भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके काल अवसर काल करके देव

ચપા નગરીમા આવીને તે પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવવા લાગ્યો

(तेणं कालेण तेण समएण थेरागमण धण्णे सत्थवाहे धम्म सोच्चा जेट्ठ पुत्त कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइ एक्कारसअंगाइ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव अंत करेहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण पन्नरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि)

તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમા સ્થવિરો પધાર્યા ધન્યસાર્થવાહે તેઓના મુખથી ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળ્યુ અને સાભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો પ્રતિબુદ્ધ થઇને તેણે પોતાના કુટુબના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રની નીમણુક કરીને દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા ગ્રહણ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક માસની સલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનુ અનશન વડે છેદન કરીને વખતે

अन्यतरेषु देवलोकेषु 'देवत्ताए' देवतया=देवत्वेन उपपन्नः। महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति। एवं खलु हे जम्बू! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्-सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन पञ्चदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि व्याख्या पूर्ववत्।सू०४।

इति श्री विश्वविख्यात – जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-
ललितकलापालापक –प्रविशुद्धेगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक
श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–
कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृ-
तवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां पञ्चदशमध्ययन समाप्तम् ॥ १५ ॥

लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हो गया। महाविदेह क्षेत्र से यह सिद्ध अवस्था को प्राप्त करेगा–यावत् समस्त दुःखो का अन्त करने वाला होगा इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धगति नाम के स्थान को प्राप्त करचुके हैं इस पद्रहवे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त भाव प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उनके मुख से सुना है सो यह वैसा तुमसे कहा है ॥ सू० ४ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत "ज्ञाता-धर्मकथाङ्गसूत्र"की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका पद्रहवां अध्ययन समाप्त ॥ १५॥

કાળ કરીને દેવલોકમા દેવના પર્યાયથી જન્મ પામ્યો. મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી તે સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત્ બધા દુ ખોનો તે અન્ત કરનાર થશે આ રીતે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓએ સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને મેળવી લીધુ છે–આ પદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત ભાવ નિરૂપિત કર્યો છે મે જે પ્રમાણે તેઓશ્રીના મુખથી સાભળ્યુ છે તે પ્રમાણે જ તમારી આગળ રજુ કર્યુ છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ પદરમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૫॥

तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरागमनम् । धन्यः सार्थवाहो धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा प्रव्रजितः, सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीते । बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया ऽऽत्मानं जुष्ट्वा षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा कालमासे काल कृत्वा-

चपानगरी में आकर वह अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनों से मिला और विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगने लगा (तेण कालेणं तेण समएण थेरागमणं, धण्णे सत्थवाहे धम्म सोच्चा जेट्ठ पुत्त कुडुबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंत करेहिइ । एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि) उसी काल और उसी समय में वहा पर स्थविरों का आगमन हुआ। धन्यसार्थवाह ने उनसे धर्म का व्याख्यान सुना सुनकर वह प्रतिबुद्ध हो गया और प्रतिबुद्ध हो करके फिर वह कुटुंब में अपने ज्येष्ठ पुत्र को रखकर दीक्षित होकरके उसने सामायिक आदि ग्यारह अगोका अध्ययन किया। अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर १ मास की सलेखना से ६० भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके काल अवसर काल करके देव

ચપા નગરીમા આવીને તે પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવવા લાગ્યો

(तेणं कालेण तेण समएण थेरागमण धण्णे सत्थवाहे धम्म सोच्चा जेट्ठ पुत्त कुडुबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव अत करेहिइ । एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पन्नरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि)

તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમા સ્થવિરો પધાર્યા ધન્યસાર્થવાહે તેઓના મુખથી ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળ્યુ અને સાભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો પ્રતિબુદ્ધ થઇને તેણે પોતાના કુટુબના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રની નીમણુક કરીને દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા ગ્રહણ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક માસની સલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનુ અનશન વડે છેદન કરીને વખતે

सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ ५, विपुले माणुस्सए जाव विहरंति । तएण तेसिं माहणाण अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउं पकाम भोत्तु पकामं परिभाएउं त सेय खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विउल असण पाण खाइम साइमं उवक्खडावित्ता परिभुजमाणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुल असण४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता परिभुजमाणा विहरति, तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था, तएण सा नागसिरी विपुल असणं४ उवक्खडेति उवक्खडित्ता एगं महंसालइय तित्तालाउय बहुसभारसंजुत्तं णेहावगाढ उवक्खडेइ उवक्खडित्ता एग विदुय करयलसि आसाएइ आसाइत्ता त खारं कडुयं अक्खज्ज अभोज्ज विसंवभूय जाणित्ता एवं वयासी—धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिवोलियाए जीएणं मए सालइए बहुसंभारसाभिए नेहावगाढे उवक्खडिए, सुबहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए, तं जइणं ममं जाउयाओ जाणिस्सति तो णं मम खिसिस्सति त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेय एयं साल-

॥ अथ षोडशाध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्तं पञ्चदशाध्ययनम्, तत्र विषयसङ्गोऽनर्थस्य कारणमित्युपदिष्टम् इह षोडशाध्ययने तु तद्विषयनिदानमनर्थस्य मूल मवतीत्युच्यते, इत्येवं सम्बन्धेन मायातस्यास्याध्ययनस्य प्रथम सूत्रमाह—'जइण भंते !' इत्यादि ।

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स णं समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेणं समएण चपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चंपा नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा-सोमे सोमदत्ते सोमभूई, अड्ढा जाव अपरिभूया रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि ण माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, त जहा-नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी

सोलहवा अध्यन प्रारभ

पन्द्रहवा अध्यन समाप्त हो चुका—अब सोलहवा अध्यन प्रारभ होता है । पंद्रहवे अध्यन में विषयसग 'अनर्थ का कारण कहा गया है—अब सोलहवे अध्यन में विषय निदान अनर्थ का कारण होता है यह स्पष्ट किया जायगा । इस सबन्ध से आया हुआ इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है 'जइण भते ।' इत्यादि ।

સોળમુ અધ્યયન પ્રારભ

પંદરમુ અધ્યયન પુરૂ થાય છે હવે સોળમુ અધ્યયન પ્રારભ થાય છે પદરમા અધ્યયનમા વિષયસગને અનર્થનુ કારણ બતાવવામા આવ્યુ છે હવે સોળમા અધ્યયનમા વિષય-નિદાન અનર્થનુ કારણ હોય છે, આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવશે આ વિષયને લગતુ આ અધ્યયનનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—

જઇણ ભતે ઇત્યાદિ—

श्रीसुधर्मास्वामी कथयति-' एव खलु जबू ' इत्यादि ! एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, तस्याः खलु चम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे सुभूमिभागनामकमुद्यानमासीत्, तत्र खलु चम्पाया नगर्यां त्रयो ब्राह्मणा भ्रातरः परिवसन्ति. तद् यथा-(१) सोम., (२) सोमदत्त', (३) सोमभूतिः, ते किं भूताः-आढ्याः=धनवन्त' यावद्-अपरिभूता., तथा-' रिउव्वेय जाव ' ऋग्वेद-यजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदेषु साङ्गोपाङ्गेषु सुपरिनिष्ठिता. । तेषा खलु ब्राह्मणाना तिस्रोभार्या आसन्, तद् यथा-(१) नागश्रीः,

सोलहवे ज्ञाताध्ययन का हे भदंत ? उन्ही श्रमण भगवान महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार के जंबू स्वामी के प्रश्नका उत्तर देते हुए सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जबू ! (तेणं कालेण तेण समएण चपा नामं नयरी होत्था, तीसेण चपाए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे, होत्था, तत्थ ण चपाए नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसति) उस काल और उस समय मे चपा नामकी नगरी थी । उस चपा के बाहिर ईशान कोण मे सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । उसी चपा नगरी मे तीन ब्राह्मण भाइ रहते थे (त जहा) उनके नाम ये हैं-(सोमे सोमदत्ते सोमभूई) सोम, सोमदत्त, और सोमभूति (अड्ढा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्यादि सपन्न एवं जन मान्य (रिउव्वेय, जाव सुपरिनिट्ठिया) ये सबके सब ऋग्वेद आदि चारो वेदों

મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધિગતિ મેળવી ચૂકયા છે-સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? આ રીતે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને ઉત્તર આપતા કહે છે કે હે જબૂ !

(तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था, तीसेण चपाए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सभूमिभागे उज्जाणे, होत्था तत्थ ण नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसति)

તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી તે ચપા નગરીની બહાર ઇશાન કોણમા સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતુ તે ચપા નગરીમા ત્રણ બ્રાહ્મણ ભાઇઓ રહેતા હતા (તજહા) તેમના નામ આ પ્રમાણે છે-(सोमे सोमदत्ते सोभूमई) સોમ, સોમદત્ત, અને સોમભૂતિ (अड्ढा जाव अपरिभूया) તેઓ ત્રણે ધનધાન્ય વગેરેથી સ પન્ન તેમજ જનમાન્ય હતા (रिउव्वेय, जाव सुपरिनिट्ठिया) તેઓ ત્રણે ઋગ્વેદ વગેરે ચારે વેદોના સારા જ્ઞાતા હતા

(तेसि ण माहणा ण तओ भारियाओ होत्था त जहा-नागसिरी, भूयसिरी

इयं तित्तालाउ य बहुसंभारणेहकयं एगते गोवेत्तए अन्न सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं संपेहेइ संपेहित्ता त सालइय जाव गोवेइ, अन्न सालइयं महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासणवरगयाण तं विपुलं असणं४ परिवेसेइ, तएणं ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परम-सुइभूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था, तएण ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असणं ४ आहारेति आहारित्ता जेणेव सयाइ२ गेहाइ तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ ॥सू०१॥

टीका—श्रीजम्बूस्वामी श्रीसुधर्मस्वामिन पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! हे भगवन् श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन पञ्चदशस्य अयम्=उक्तरूप., अर्थः प्रज्ञप्तः, षोडशस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?,

---

टीकार्थ-(जइण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पन्नरस-मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स ण भंते ? णायज्झयणस्स ण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ?) श्री जबू स्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि भदत ! श्रमण भगवान् महावीरने जो कि सिद्धि गति नामक स्थानको प्राप्त हो चुके हैं पन्द्रहवें ज्ञाताध्ययनका यह पूर्वोक्तरूपसे अर्थ निरूपित किया है-तो

ટીકાર્થ-(जइण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पन्नरस-मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स ण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू !)

શ્રી જબૂ સ્વામી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગ વાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે-પન્દરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તે

प्रकाम दातु, प्रकाम भोक्तु प्रकाम परिभाजयितुम् ततः = तस्मात् श्रेय = श्रेयस्कर खलु अस्माक हे देवानुप्रिया ! अन्योन्यस्य = परस्परस्य गृहेषु 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्य प्रतिदिवस विपुल = बहुलम्, अशन पान खाद्यं स्वाद्यं 'उवक्खडाउ' उपस्कार्युपरिभुञ्जानानां विहर्तुम्। अन्योन्यस्य=परस्परस्य एतमर्थं ते त्रयो भ्रातरो ब्राह्मणाः प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य 'कल्लाकल्लिं'

वसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु पकाम परिभाएउ-त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया। अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडाविउ) हे देवानुप्रियो ! अपने पास विपुलमात्रा में, गणिम, धरिम, मेय, एव परिच्छेद्यरूप चारों प्रकार का धन है, यावत् पद्मराग आदिरूप स्वापत्य भी हैं, कनक,सुवर्ण,रत्न,मणिमौक्तिक आदि सब कुछ है-और वह इतना अधिक है कि सात पीढी तक भी यदि खूब दान दिया जावे, बैठ २ खूब खाया जावे-और उसका हिस्सा भाग भी कर दिया जावे-तौ भी वह समाप्त नही हो सकता है। इसलिये हम लोगों को उचित है कि हम लोग प्रति दिन एक दूसरे के घर पर अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनवावे और (उवक्खडाविता परिभुजमाणाण विहरित्तए) बनवा कर उस का भोजन करे। (अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति) इस प्रकार का आपस का विचार उन्होने एक दूसरे का स्वीकार कर लिया।

जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु पकाम परिभाएउ त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडाविउ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણી પાસે પુષ્કળ પ્રમાણમા ગણિમ, ધરિમ, મેય, અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચારે જાતનુ ધન છે યાવત્ પદ્મરાગ વગેરે રૂપ સ્વાપત્ય પણ છે કનક' સુવર્ણ, રત્ન, મણિ, મોતી, વગેરે બધુ છે-અને જે કઇ છે તે એટલુ બધુ છે કે સાત પેઢી સુધી પણ જો પુષ્કળ પ્રમાણમા દાન કરવામા આવે છતા તે ખૂટશે નહિ એથી અમને એ યોગ્ય લાગે છે કે અમે બધા દરરોજ એકબીજાને ઘેર અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદરૂપ ચાર જાતના આહારો પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવડાવીએ અને (उवक्खडाविता परिभुजमाणाण विहरित्तए) બનાવડાવીને જમીએ (अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति) આ રીતે બધાએ એકમત થઇને વાત સ્વીકારી લીધી

(२) भूतश्री', (३) यक्षश्रीश्च, ताः किं भूताः-सुकुमारपाणिपादा, यावत्-सर्वाङ्ग सुन्दर्यः, तेषां खलु ब्राह्मणानामिष्टाः=कमनीयाः, विपुलान् मानुष्यकान् यावत् कामभोगान् भुञ्जाना विहरन्ति।

ततः खलु तेषां ब्राह्मणानामन्यदा कदाचिदेकतः समुपागतानां यावत् अयमेतद्रूप.=वक्ष्यमाणस्वरूप', मिथः=परस्पर, कथासमुल्लापः=वार्तालापः समुदपद्यत-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! अस्माकमिदं विपुलं धन गणिमधरिममेयपरिच्छेद्य भेदाच्चतुर्विध यावत् 'सावतेज्जे' स्वापतेय - पद्मरागादिरूप वा, अन्य यावत्पदवाच्य-कनकसुवर्णरत्नादिक तथा-मौक्तिकादिक च विद्यते, किंभूत तदित्याह-'अलाहि' पर्याप्त=परिपूर्ण-यावत्-आसप्तमात् कुलवंशात्=सप्तमकुलपर्यन्त

के अच्छे जानकार थे। (तेसिणं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था-तं जहा-नागसिरी, भूयसिरी, जक्खसिरी, सुकुमाल जाव तेसिं णं माहणाणं इट्ठाओ ५ विपुले मा० जाव विहरंति) इन तीनों ब्राह्मणों की तीन स्त्रियां थी। उनके नाम ये हैं।-नाग श्री, भूत श्री, और यक्ष श्री, ये सब सुकुमार करचरणवाली थी यावत् सर्वाङ्ग सुन्दर थीं। ये तीनों ब्राह्मण इनके साथ मनुष्यभव सबन्धी काम भोगों को भोगते हुए आनद से रहते थे। (तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाइं एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था) एक दिन की बात है कि जब ये तीनो भाई एक जगह बैठे हुए थे तब इनका परस्पर में इस प्रकार का विचार चला-(एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे विउले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुल-

---

जक्खसिरी, सुकुमार जाव तेसिं णं माहणाणं इट्ठाओ५ विपुले मा०जाव विहरंति)
આ ત્રણે બ્રાહ્મણોને ત્રણ સ્ત્રીઓ હતી તેમના નામો આ પ્રમાણે છે
નાગશ્રી, ભૂતશ્રી, અને યક્ષશ્રી તેઓ ત્રણે સુકોમળ હાથ અને પગવાળી હતી
અને બધા અંગો તેમના સુદર હતા ત્રણે બ્રાહ્મણો તેમની સાથે મનુષ્ય ભવના
કામભોગો ભોગવતા સુખેથી રહેતા હતા

(तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाइं एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था)
એક દિવસની વાત છે કે તેઓ ત્રણે ભાઈ એક સ્થાને બેઠા હતા ત્યારે
તેઓ પરસ્પર આ જાતનો વિચાર કરવા લાગ્યા કે—
(एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे विउले धणे जाव)

आस्वादयति, आस्वाद्य तत् क्षार कटुकमखाद्यमभोज्य विषभूत ज्ञात्वा एवमवादीत्-धिगस्तु मा नागश्रियमधन्यामपुण्या दुर्भगा 'दुब्भगसत्ताए' दुर्भगसत्वा दुर्भग=निष्फल सत्त्व=बल यस्याः सा तां व्यर्थपरिश्रमामित्यर्थः 'दूभगणिंबोलिए' दुर्भगनिम्ब गुलिकानिम्बफलिका, तद्वद् दुर्भगा ताम्=जनैरनादरणीयामित्यर्थः, अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी माकृतत्वात्, 'जीए' यथा खलु मया शारदिक बहुसंभारद्रव्यसंभृत स्नेहाव-

(उवक्खडित्ता एग बिंदुय करयलंसि आसाएइ) जब वह तैयार शाक हो चुका-तब उसने उसमें से एक बिन्दु मात्र शाक अपनी हथेली पर रखा और फिर उसे चखा-(आसाइत्ता त खार कडुय अखज्ज अभोज्ज विसभूय जाणित्ता एव वयासी-धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए दुरभगाए दुभगसत्ताए दुभगणिंबोलियाए जीएण मए सालइए बहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए) चखकर उसे ज्ञात हुआ कि यह शाक तो बहुत खारा है, बहुत अधिक कडुआ है। खाने के योग्य नहीं है भोजन में लेने के लायक नहीं है, यह तो विष जैसा है ऐसा जानकर उसने मन ही मन विचार किया उस विचार में उसने कहा-मुझ नागश्री को धिक्कार है, मैं अधन्या और अपुण्या हूँ। जनों के द्वारा आदर पाने योग्य नहीं हूँ। मेरे इस बल को बार २ धिक्कार हो-मेरा यह बल बिलकुल निष्फल है मैंने जो इस शाक के बनाने में इतना उद्यम किया है वह मेरा सर्वथा निष्फल गया। जिस प्रकार नीम-

---

ઉપર ઘી તરતુ હતું (उवक्खडित्ता एग बिंदुय करयलंसि आसाएइ) ત્યારે શાક તૈયાર થઈ ગયુ ત્યારે તેણે તેમાથી ફક્ત એક ટીપા જેટલુ શાક પોતાની-હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યુ

(आसाइत्ता त खार कडुय अखज्ज अभोज्ज विसभूयं जाणित्ता एव वयासी-धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए, दूरभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए जीएण मए सालइए बहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए)

ચાખવાથી તેને લાગ્યુ કે આ શાક તો ખૂબ જ ખારૂ છે, ખૂબ જ કડવું છે, ખાવાલાયક નથી, ભોજનમા કામ લાગે તેવુ નથી, આ તો ઝેર જેવુ છે, આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે પોતાની જાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હુ ખરેખર અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છુ હુ લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારૂ આ બળ સાવ નકામુ છે શાક તૈયાર કરવામા જેટલો મે શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ લીમ-

फलप्राकल्पं=मतिदिवसम् अन्योन्यस्य गृहेषु विपुलभोजनादिकमुपस्कारयन्ति । उपस्कार्य परिभुञ्जाना विहरन्ति । ततः खलु तस्या नागश्रियो ब्राह्मण्या अन्यदा=कदाचिदन्यस्मिन् समये 'भोयणवारए' भोजनवारक =भोजनपितु नियमितो दिवसो भोजनवारक जातः=समायातश्चाप्यभवत्, ततः खलु सा नागश्रीः विपुलमशनं पान खाद्य स्वाद्यमुपस्करोति=निष्पादयति, उपस्कृत्य एक महत् 'सालइयं' सारचित्र-सारेण रसेन चित्र युक्त यद्वा-शारदिक=शरदृतुभव 'तित्तालाउअं' तिक्तालाबुक=निम्बादिवत् तिक्तरसयुक्तलुम्बीफल, बहुसंभारसंयुक्त=बहुभिः= अनेकविधैः संभारद्रव्यैः=शाकादौ स्वादसुगन्धविशेषार्थं हिङ्गुमेथिकाजीरकादीनि व्याघारद्रव्याणि निक्षिप्यन्ते, तैर्मिश्रित, 'णेहावगाढं' स्नेहावगाढ=घृतादिप्लावितम् (युक्तम्) 'उवक्खडेइ' उपस्करोति, उपस्कृत्यैक बिन्दुक करतले समादाय

(पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्खडावेति) स्वीकार करके अब वे एक दूसरे के घर पर विपुल मात्रा में निष्पन्न हुए अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाने पीने लगे। (तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था) किसी एक दिन नागश्री ब्राह्मणी की भोजन बनाने की बारी आई (तएणं सा नागसिरी विउलं असणं ४ उवक्खडेंति) सो उस दिन उसने विपुल मात्रा मे चारो प्रकार का आहार बनाया (उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभारसंजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ) आहार बनाकर फिर उसने शरदऋतु में उत्पन्न हुई अथवा रस से सरस बनी हुई तिक्तरसतुंबी का शाक बनाया-और उसमें स्वाद एवं सुगंधि के निमित्त हींग, मैथी, जीरे आदि का बघार दिया। उसे खूब अधिक घृत में छौंका था-इसलिये घृत उसके ऊपर तैर रहा था।

(पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्खडावेंति)

સ્વીકારીને તેઓ એકબીજાને ઘેર પુષ્કળ પ્રમાણમા અશનપાન વગેરે ચાર જાતના આહારોને બાવા-પીવા લાગ્યા

(तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था)

કોઈ એક દિવસે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીનો ભોજન તૈયાર કરવાનો વારો આવ્યો (तएणं सा नागसिरि विउलं असणं ४ उवक्खडेति) તેણે તે દિવસે પુષ्કળ પ્રમાણમા ચારે જાતના આહારો બનાવ્યા

(उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभार संजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ)

આહાર બનાવીને તેણે શરદ્ ઋતુમા ઉત્પન્ન થયેલી અથવાતો રસથી સરસ થયેલી તિક્તરસવાળી તુંબીનુ શાક બનાવ્યુ અને તેમા સ્વાદ અને સુગંધીના માટે હીંગ, મેથી, જીરૂ વગેરેનો વઘાર દીધો તે ॥

आस्वादयति, आस्वाद्य तत् क्षार कटुकमखाद्यमभोज्य विषभूत ज्ञात्वा एवमवादीत्-धिगस्तु मा नागश्रियमधन्यामपुण्या दुर्भगा 'दुभगसत्ताए' दुर्भगसत्वा दुर्भग=निष्फल सत्त्व=बल यस्याः सा तां व्यर्थपरिश्रमामित्यर्थः 'दूभगणिंबोलिए' दुर्भगनिम्बगुलिकानिम्बफलिका, तद्वद् दुर्भगा ताम्=जनैरनादरणीयामित्यर्थ', अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी प्राकृतत्वात्, 'जीए' यथा खलु मया शारदिक बहुसभारद्रव्यसभृत स्नेहाव-

(उवक्खडित्ता एग बिंदुय करयलंसि आसाएइ) जब वह तैयार शाक हो चुका-तब उसने उसमें से एक बिन्दु मात्र शाक अपनी हथेली पर रखा और फिर उसे चखा-(आसाइत्ता त खार कडुय अखज्ज अभोज्ज विसब्भूय जाणित्ता एव वयासी-धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए दुरभगाए दुभगसत्ताए दुभगणिंबोलियाए जीएण मए सालइए बहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए) चखकर उसे ज्ञात हुआ कि यह शाक तो बहुत खारा है, बहुत अधिक कडुआ है। खाने के योग्य नही है भोजन में लेने के लायक नहीं है, यह तो विष जैसा है ऐसा जानकर उसने मन ही मन विचार किया उस विचार मे उसने कहा-मुझ नागश्री को धिक्कार है, मे अधन्या और अपुण्या हूँ। जनों के द्वारा आदर पाने योग्य नहीं हूँ। मेरे इस बल को बार २ धिक्कार हो-मेरा यह बल बिलकुल निष्फल है मैंने जो इस शाक के बनाने में इतना उद्यम किया है वह मेरा सर्वथा निष्फल गया। जिस प्रकार नीम-

ઉપર ઘી તરતુ હતું (उवक्खडित्ता एग बिंदुय करयलंसि आसाएइ) જ્યારે શાક તૈયાર થઈ ગયુ ત્યારે તેણે તેમાથી ફક્ત એક ટીપા જેટલુ શાક પોતાની હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યુ

(आसाइत्ता त खारं कडुय अखज्ज अभोज्ज विसब्भूयं जाणित्ता एव वयासी-धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए, दूरभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए जीएण मए सालइए बहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए)

ચાખવાથી તેને લાગ્યુ કે આ શાક તો ખૂબ જ ખારૂ છે, ખૂબ જ કડવું છે, ખાવાલાયક નથી, ભોજનમા કામ લાગે તેવુ નથી, આ તો ઝેર જેવુ છે, આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે પોતાની જાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હુ ખરેખર અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છુ હુ લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારૂ આ બળ સાવ નકામુ છે શાક તૈયાર [illegible] મે શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ લીમ-

गाढमुपस्कृत, तेन सुबहुद्रव्यक्षयः-हिङ्गुजीरकादिद्रव्यनाशः, स्नेहक्षयः=घृतादि क्षयश्चकृतः, तत्=तस्मात् यदि खलु मम 'जाउयाओ' यात्रकाः, देवरमार्याः ज्ञास्यन्ति, 'तोण' तर्हि खलु मम 'खिंसिस्सति' खिंसिष्यन्ति-निन्दां कोपं च करिष्यन्ति, तत्-तस्मात् यावन्मम यात्रका न जानन्ति, तावन्मम श्रेयः-उचित एतत् शारदिक तिक्तालाबुक बहुसभारस्नेहकृतम् एकान्ते 'गोवेत्तए' गोपयितुम्, अन्यत् शारदिक मधुरालाबुक मधुरतुम्बीफल यावत् स्नेहावगाढमुपस्कर्तुम्। एव

की निबौली किसी मनुष्य की दृष्टि में आदर पाने योग्य नहीं होती है उसी प्रकार में भी जनो द्वारा अनादरणीय बनी हूँ। जो मैंने शरद कालिक अथवा सरस इस तुंबी फल का हिङ्गु, जीरकादि द्रव्यों से युक्त और घृतादि से युक्त शाक बनाया है (सुबहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए) इस के बनाने में मैंने व्यर्थ ही बहुत से हिङ्गु जीरे मेथी आदि द्रव्य का और घृत का विनाश किया है। (त जइण मम जाउयाओ जाणिस्सति, तो, ण मम खिसिस्सति) इस बात को यदि मेरी देवरानी जानेगी तो वे मेरे ऊपर गुस्सा होगी और मेरी निंदा करेगी। (त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय एय सालइयं तित्ता लाउय बहुसभारणेह कय एगते गोवेत्तए) इसलिये मुझे अब यही उचित है कि मैं इस शारदिक तिक्तोलाबु के शाक को जो बहुत सभार एव घृत डालकर बनाया हैं किसी एकान्त स्थान में छुपाकर रख दूँ और

ડાની લીંબોળી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે હુ પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એટલે કે હુ લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છુ મે શરદ્ કાલિક અથવા સરસ તુંબીના ફળનુ હીંગ, જીરૂ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ઘી વગેરેથી યુક્ત શાક બનાવ્યુ છે (सुबहु दव्वक्खए नेहक्खए य कए) એને તૈયાર કરવામા મે વ્યર્થ હીંગ, જીરૂ, મેથી વગેરે તેમજ ઘી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યય કર્યો છે (त जइण मम जाउयाओ जणिस्सति, तो ण मम खिसिस्सति) જો મારા દેરાણીને આ વાતની જાણ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે થશે અને મારી નિંદા કરશે

(त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय एय सालइय तित्तालाउय बहु सभारणेहकय एगते गोवेत्तए)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિકતોલાબુ (કડવી તૂબડી) ના શાક ને-કે જે પૂબ જ સરસ ઘી નાખીને વઘારવામા આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ सालइय

सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य तत् शारदिक यावद् तिक्तालाबुक गोपयति=कचित् समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिक मधुरालाबुकमुपस्करोति=रन्धयति शेषचारादिभि' संस्करोति । तेषा ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगताना निजनिजासनेसुखोपविष्टाना तद् विपुलमशनपान खाद्य स्वाद्य परिवेषयति=तेषा भोजनावसरे भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः । ततः खलु ते ब्रह्माणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

---

उसके रखानपर (अन्न सालइय महुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मेंथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनालूँ (एव सपेहेइ, सपेहित्ता त सालइ य जाव गोपेइ अन्न सालइय महुरालाउय उवक्खडेइ तेसिं माहणाण ण्हायाण जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी तुंबडी के बहुत सभार एव घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबडी - का शाक हींग जीरे और मेंथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया। इतने में वे तीनो ब्राह्मण स्नान आदि से निवट कर भोजन शाला में आकर अपने २ आसन पर शाति के साथ बैठ गये। उनके बैठते ही उसने उन्हें अशन आदिरूप चारो प्रकार का आहार थालो मे परोसा (तएण ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परम सुइ-

---

महुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) બીજી શારદિક મીઠી તૂણડીનુ ઘી ઉપર તરી રહ્યુ છે એવુ શાક હીંગ, જીરૂ અને મેથીમા વઘારીને બનાઉ

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता त सालाइ य जाव गोवेइ, अन्न सालइय महुरालाउय उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ)

આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો, વિચાર કરીને તે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ ઘીમા વઘારેલા શાકને એક તરફ છૂપાવીને મૂકી દીધુ અને બીજી શારદિક મીઠી તુબડી-દૂધી-નુ હીંગ, જીરૂ અને મેથીનો વઘાર કરીને ઉપર ઘી તરતું શાક બનાવ્યુ એટલામા તો તેઓ ત્રણે બ્રાહ્મણો સ્નાન વગેરેથી પરવારીને ભોજનશાળામા આવીને પોતપોતાના આસન ઉપર શાતિથી બેસી ગયા તેમને બેસતા જ તેણે તેઓને અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતનો આહાર થાળીમા પીરસ્યો

गाढमुपस्कृत, तेन सुबहुद्रव्यक्षयः-बिल्वीरिङ्गादिद्रव्यनाशः, क्षयश्चकृतः, तत्=तस्मात् यदि खलु मम 'जाउयाओ' या ज्ञास्यन्ति, 'तोण' तर्हि खलु मम 'तिसिस्सति' तिरस्करिष्यन्ति करिष्यन्ति, तत्-तस्मात् यावन्मम यातृका न जानन्ति, तावन्म· एतत् शारदिक तिक्तालाबुक बहुतमारस्नेहकृतम् एकान्ते 'गोवेत्त· अन्यत् शारदिक मधुरालाबुक मधुरतुम्बीफल यावत् स्नेहागाढमु

की निंदौली किसी मनुष्य की दृष्टि में आदर पाने योग्य है उसी प्रकार म भी जनो द्वारा अनादरणीय बनी हूँ। जो कालिक अथवा सरस इस तुंबी फल का हिङ्गु, जीरकादि युक्त और घृतादि से युक्त शाक बनाया है (सुबहुदव्वक्खए, य कए) इस के बनाने में मैने व्यर्थ ही बहुत से हिङ्गु जीरे द्रव्य का और घृत का विनाश किया है। (त जइण मम जाणिस्सति, तो, ण मम रिसिस्सति) इस बात को यदि मेरी जानेगी तो वे मेरे ऊपर गुस्सा होगी और मेरी निंदा करेगी ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेयं एय सालइ लाउय बहुसभारणेहकय एगते गोवेत्तए) इसलिये मुझे अब य है कि मैं इस शारदिक तिक्तोलाबु के शाक को जो बहुत स घृत डालकर बनाया हैं किसी एकान्त स्थान मे छुपाकर र

ડાની લીંબોળી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી હુ પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એ લોકોની સામે અનાદરણીય થઇ ગઈ છુ મે શરદ્ કાલિક અ તુંબીના ફળનુ હીંગ, જીરૂ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ઘી વગેરેથી બનાવ્યુ છે (सुबहु दव्वक्खए नेहक्खए य कए) એને તૈયાર વ્યર્થ હીંગ, જીરૂ, મેથી વગેરે તેમજ ઘી વગેરે વસ્તુઓનો દુ· (त जइण मम जाउयाओ जणिस्सति, तो ण मम रिसिस्सति) દેરાણીને આ વાતની જાણ થશે તો તેઓ મોકસ મારા ઉપર ગુસ્સે મારી નિંદા કરશે

(त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय एय तित्तोलाउय बहु सभारणेहकय एगते गोवेत्तए)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિ (કડવી તૂંબડી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ઘી નાખીને બ આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્ય

समेक्षते=विचारयति, समेक्ष्य तत् शारदिकं यावद् तिक्तालाबुकं गोपयति=कचित् समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिकं मधुरालाबुकमुपस्करोति=रन्धयति शेषद्रव्यादिभिः संस्करोति। तेषां ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगतानां निजनिजासनेसुखोपविष्टानां तद् विपुलमशनपानं स्वाद्यं स्वाद्यं परिवेषयति=तेषां भोजनावसरे भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः। ततः खलु ते ब्राह्मणाः 'जिमियभुत्तुत्तरागया' जिमित-

उसके रखानपर (अन्न सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मेंथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनालूँ (एवं संपेहेइ, संपेहित्ता त सालइयं जाव गोवेइ अन्नं सालइयं महुरालाउयं उवक्खडेइ तेसिं माहणाणं पहायाणं जाव सुहासनवरगयाणं त विपुलं असणं ४ परिवेसेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी तुंबडी के बहुत सभार एवं घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबडी-का शाक हींग जीरे और मेंथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया। इतने में वे तीनों ब्राह्मण स्नान आदि से निवट कर भोजन शाला में आकर अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये। उनके बैठते ही उसने उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार थालों में परोसा (तएणं ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परम सुइ-

महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए) બીજી શારદિક મીઠી તૂંબડીનુ ઘી ઉપર તરી રહ્યુ છે એવું શાક હીંગ, જીરૂ અને મેથીમા વઘારીને બનાઉ

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता त सालाइयं जाव गोवेइ, अन्नं सालइयं महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं पहायाणं जाव सुहासनवरगयाणं त विपुलं असणं ४ परिवेसेइ)

આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો, વિચાર કરીને તે શારદિક કડવી તૂંબડીના સરસ ઘીમા વઘારેલા શાકને એક તરફ છૂપાવીને મૂકી દીધુ અને બીજી શારદિક મીઠી તુંબડી-દૂધી-નુ હીંગ, જીરૂ અને મેથીનો વઘાર કરીને ઉપર ઘી તરતું શાક બનાવ્યુ એટલામા તો તેઓ ત્રણે બ્રાહ્મણો સ્નાન વગેરેથી પરવારીને ભોજનશાળામા આવીને પોતપોતાના આસન ઉપર શાંતિથી બેસી ગયા તેમને બેસતાં જ તેણે તેઓને અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતનો આહાર

गाढमुपस्कृत, तेन सुबहुद्रव्यसंस्कारः-हिङ्गुजीरकादिद्रव्यनाशः, स्नेहक्षयः=घृतादि क्षयश्चकृतः, तत्=तस्मात् यदि खलु मम 'जाउयाओ' यात्रका', देवरमार्याः ज्ञास्यन्ति, 'तोण' तर्हि खलु मम 'खिंसिस्संति' खिंसिष्यन्ति-निन्दां कोपं च करिष्यन्ति, तत्-तस्मात् यावन्मम यात्रका न जानन्ति, तावन्मम श्रेयः-उचितं एतत् शारदिकं तिक्तालाबुकं बहुसंभारस्नेहकृतम् एकान्ते 'गोवेत्तए' गोपयितुम्, अन्यत् शारदिकं मधुरालाबुकं मधुरतुम्बीफलं यावत् स्नेहावगाढमुपस्कर्तुम्। एव

की निंदौली किसी मनुष्य की दृष्टि में आदर पाने योग्य नहीं होती है उसी प्रकार मे भी जनों द्वारा अनादरणीय बनी हूँ। जो मैंने शरद कालिक अथवा सरस इस तुंबी फल का हिङ्गु, जीरकादि द्रव्यों से युक्त और घृतादि से युक्त शाक बनाया है (सुबहुदव्वकरणए, नेहकरणए य कए) इस के बनाने में मैंने व्यर्थ ही बहुत से हिङ्गु जीरे मेथी आदि द्रव्य का और घृत का विनाश किया है। (त जइण मम जाउयाओ जाणिस्सति, तो, ण मम खिसिस्सति) इस बात को यदि मेरी देवरानी जानेगी तो वे मेरे ऊपर गुस्सा होगी और मेरी निंदा करेगी। (त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय एय सालइय तित्ता लाउय बहुसंभारणेहकय एगते गोवेत्तए) इसलिये मुझे अब यही उचित है कि मैं इस शारदिक तिक्तोलाबु के शाक को जो बहुत संभार एवं घृत डालकर बनाया हैं किसी एकान्त स्थान में छुपाकर रख दूँ और

ડાની લીંબોળી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે હુ પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એટલે કે હુ લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છુ મે શરદ કાલિક અથવા સરસ તુંબીના ફળનુ હીંગ, જીરૂ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ઘી વગેરેથી યુક્ત શાક બનાવ્યુ છે (સુબહુ દવ્વકરણ ए नेहकरण ए य कए) એને તૈયાર કરવામા મે વ્યર્થ હીંગ, જીરૂ, મેથી વગેરે તેમજ ઘી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યય કર્યો છે (त जइण मम जाउयाओ जणिस्सति, तो ण मम खिसिस्सति) જો મારા દેરાણીને આ વાતની જાણ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે થશે અને મારી નિંદા કરશે

(त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेय एय सालइय तित्तालाउय बहु संभारणेहकय एगते गोवेत्तए)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિક્તોલાબુ (કડવી તૂંબડી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ઘી નાખીને વઘારવામા આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ (सालइय

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसिए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ जाव चपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पडुवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्तकडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाण पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाण करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं

भुक्तोत्तरगताः भोजनानन्तरं बहिरागताः सन्तः 'आयता' आगताः कृतचुल्लकाः 'चोक्खा' चोक्षाः=मक्षालितहस्तमुखाः परमशुचिभूताः 'सकम्मसपउत्ता' स्वकर्मसमयुक्ता=स्वस्वकार्यसंलग्ना जाताश्चाभवन्। ततः खलु ताः ब्राह्मण्यः स्नाता यावत् बलिकर्मविभूषितास्तद् विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्यम् आहारयन्ति=आहारकुर्वन्ति भुञ्जते स्म। आहृत्य, यत्रैव स्वकानि स्वसानि गृहाणि= आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वकर्मसमयुक्ता जाता ॥ सू० १ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था) आहार जब परोसा जा चुका–तब उन सबने उसे खाया पीया–और खा पीकर जब वे निपट चुके तब उन्होंने कुल्ला आदि कर अपने मुह का प्रक्षालन किया–और हाथो को साफकर वे अपने २ कार्य में लग गये। (तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असण ४ आहारेंति, आहारित्ता जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सकम्म सपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्रह्मणियोंने जो कि पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेष भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाया–और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में चली गई–वहा जाकर अपने २ वे सब काममें लग गई ॥ सूत्र १ ॥

(तएणं ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परमसुइ भूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था)

આહાર જ્યારે પીરસાઈ ગયો ત્યારે તેઓ ત્રણે જમ્યા અને જમી પર વારીને કોગળા વગેરે કરીને હાથ મો સાફ કર્યા અને હાથ મો સાફ કરીને તેઓ ત્રણે પોતપોતાના કામમા પરોવાઇ ગયા

(तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असण४आहारित्ता जेणेव सयाइं२ गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ)

ત્યારબાદ તે બ્રાહ્મણીઓએ–કેટલીકોએ પહેલા સ્નાન કરીને પોતાના શરીરને સુદર વસ્ત્રોથી શણગાર્યું હતુ–તે પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલો અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર કર્યો આહારથી પરવારીને તેઓ પોતપોતાના વાસભવનમા જતી રહી અને ત્યા જઇને તેઓ સર્વે પોતપોતાના કામોમા પરોવાઈ ગઈ ॥સૂ०१॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरूवं जाव विहरति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएण तेसिं धम्मघोसाण थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेण खममाणे विहरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसिए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पडुवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्त कडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुइंस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तएण से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाण पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाण करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेण

भुक्तोत्तरागताः भोजनानन्तरं बहिर्गता गन्तः 'आगया' आगताः कृतबलिकर्माणः 'चोक्खा' चोक्षाः=परमशुचिभूताः 'परमसुइभूया' परमशुचिभूताः 'सकम्मसपउत्ता' स्वकर्मसमयुक्ता=स्वस्वकार्यतत्परा जाताश्चेमवत्। ताः खलु ताः ब्राह्मण्यः स्नाता यावत् कृतबलिकर्मविभूषिताश्चेत् विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आहारमाहारयन्ति=आहारकार्षुरिति भुञ्जते स्म। आहृत्य, गत्वा स्वकानि स्वकानि गृहाणि=आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वकर्मसमयुक्ता जाता ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था) आहार जब परोसा जा चुका-तब उन सबने उसे खाया पीया-और खा पीकर जब वे निपट चुके तब उन्होंने कुल्ला आदि कर अपने मुँह का प्रक्षालन किया-और हाथों को साफकर वे अपने २ कार्य में लग गये। (तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारेंति, आहारित्ता जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्राह्मणियोंने जो कि पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेष भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाया-और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में चली गई-वहां जाकर अपने २ वे सब काममें लग गई ॥ सूत्र १ ॥

(तएणं ते माहणा, जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयंता, चोक्खा, परमसुइभूया, सकम्मसपउत्ता, जाया, यावि होत्था)

આહાર જ્યારે પીરસાઈ ગયો ત્યારે તેઓ બ્રહ્મે જમ્યા અને જમી પરવારીને કોગળા વગેરે કરીને હાથ મો સાફ કર્યો અને હાથ મો સાફ કરીને તેઓ બ્રહ્મે પોતપોતાના કામમા પરોવાઇ ગયા

(तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारित्ता जेणेव सयाइं २ गेहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ)

ત્યારબાદ તે બ્રાહ્મણીઓએ-કે જેઓએ પહેલા સ્નાન કરીને પોતાના શરીરને સુંદર વસ્ત્રોથી શણગાર્યું હતુ-તે પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર કર્યો આહારથી પરવારીને તેઓ પોતપોતાના વાસભવનમા જતી રહી અને ત્યા જઇને તેઓ સર્વે પોતપોતાના કામોમાં પરોવાઈ ગઈ ॥સૂ૦૧॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरूवं जाव विहरति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसिए सज्झाय करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेर आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण ता नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाण पासइ पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पडुवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्तकडुय च बहुसभारसभियं णेहावगाढ धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाणं पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाण करयलसि पडिदंसेइ, तएणं ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गधेण

अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं विंदुणं गहाय करयलंसि आसाएइ। तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी–जइणं तुमं देवाणुप्पिया! एव सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, त मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं जाव आहारेहि, मा णं तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जेहि, त गच्छ णं तुम देवाणुप्पिया! इमं सालइयं एगंतमणावाए अचित्ते थडिले परिट्ठवेहि परिट्ठवित्ता अन्न फासुय एसणिज्ज असणंपाण खाइमं साइमं पडिगहित्ता आहार आहारेहि ॥ सू० २ ॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा नाम स्थविरा यावत्–बहुपरिवारा–बहुसाधुपरिवारेण सहिता यत्रैव चम्पा नाम नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यान तत्रोपागच्छन्ति, अत्र 'धर्मघोषा' इति बहुवचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूप यावत्–अवग्रहमवगृह्य संयमेन

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव जाव विहरति–परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया–तएण तेसिं धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले

(ते ण कालेण तेण समएणं) इत्यादि।

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव जाव विहरति परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसापडिगया, तएण तेसिं ... स थेराणं

तपसाऽऽत्मान भावयन्तो विहरति-आसतेस्म । परिषद् निर्गता धर्मः कथित = धर्मकथा कथिता परिषत् प्रतिगता=धर्मकथा श्रवणानन्तर मतिनिवृत्ता । ततः खलु तेषा धर्मघोषाणा स्थविराणामन्तेवासी धर्मरुचिर्नामानगारः उदारः प्रधानो यावत् सक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः=सक्षिप्ता शरीरान्त सकोचिता, विपुला=अनेकयोजन प्रमितक्षेत्रस्थितवस्तुदहनसमर्था, तेजोलेश्या=विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषो येन सः

जाव तेउलेस्से मास मासेण खममाणे विहरइ) धर्मघोष नामके स्थविर यावत् अनेक परिवार से युक्त होकर जहा चपा नगरी, और उसमे जहां वह सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहां आये । वहा आकर के उन्हों ने वहाँ ठहरने के लिये अपने कल्पानुसार आज्ञा मांगी बाद मे वे वहा सयम और तप से आत्माको भावित करते हुए ठहर गये । चपानगरी के समस्त जन उनको वदना एव धर्मकथा सुनाने के लिये वहाँ आये । उन्होंने श्रुतचारित्र रूप धर्मका उपदेश दिया । उपदेश श्रवण कर परिषद अपने २ स्थान पर पीछे गई । इसके अनन्तर इन धर्मघोष स्थविर के अन्तेवासी जिनका नाम धर्मरुचि अनागार था बडे उदार प्रकृति के थे विशिष्ट तपस्याओं को किया करते थे-उसके प्रभाव से इन्हें तेजोलेश्या की प्राप्ति हो गई थी और वह तेजोलेश्या इन्होंने अपने शरीर के भीतर सक्षिप्त कर रक्खी थी इस तेजोलेश्या का यह स्वभाव होता है कि जब वह शरीर से बाहिर निकलती है तो अनेक योजन प्रमित क्षेत्र में रही हुई वस्तुओ को भस्मकर देती है । मास क्षपण की उपवास रूप तपस्या

अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मास मासेण खममाण विहरइ

ધર્મઘોષ નામના સ્થવિર પોતાના ઘણા પરિવારોની સાથે જ્યા ચપા નગરી અને તેમા પણ જ્યા તે સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે ત્યા રોકાવાની પોતાના આચાર મુજબ આજ્ઞા માગી ત્યાર બી તેઓ ત્યા પોતાના આત્માને તપ અને સયમથી ભાવિત કરતા રહેવા લગ્યા ચપા નગરીના બધા લોકો તેમના વદન તેમજ ધર્મકથા શ્રવણ માટે ત્યા આવ્યા તેઓશ્રીએ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને લોકો પોતપોતાના નિવાસ સ્થાને જતા રહ્યા ત્યારપછી ધર્મઘોષ સ્થવિરના અંતેવાસી-જેમનુ નામ ધર્મરુચિ અનગાર હતુ, જેઓ ખૂબ જ ઉદાર પ્રકૃતિના હતા, વિશિષ્ટ તપસ્યાઓ કરતા રહેતા હતા જેના પ્રભાવથી એમણે તેજોલેશ્યા મેળવી હતી અને તેજોલેશ્યાને તેમણે પોતાના શરીરમા જ સકોચી રાખી હતી આ તેજો-લેશ્યાનો પ્રભાવ આ જાતનો હોય છે કે જ્યારે તે શરીરનીબ્હાર નીકળે છે ત્યારે ઘણા યોજનો સુધીના ક્ષેત્રમા મૂકેલી વસ્તુઓને ભસ્મ કરી નાખે છે-માસક્ષપણની ઉપવાસ રૂપ તપસ્યાથી તેઓ

अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं विंदुणं गहाय करयलंसि आसाएइ । तित्तगं खार कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइ अणगार एवं वयासी–जइणं तुमं देवाणुप्पिया ! एव सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तं मा ण तुम देवाणुप्पिया ! इमं सालइय जाव आहारेहि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जेहि, त गच्छ णं तुम देवाणुप्पिया ! इम सालइय एगंतमणावाए अचित्ते थडिले परिट्ठवेहि परिट्ठवित्ता अन्न फासुय एसणिज्ज असणंपाण खाइम साइम पडिगहित्ता आहारं आहारेहि ॥ सू० २ ॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा नाम स्थविरा यावत्–बहुपरिवारा–बहुसाधुपरिवारेण सहिता यत्रैव चम्पा नाम नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यान तत्रोपागच्छन्ति, अत्र ' धर्मघोषा ' इति बहु वचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूप यावत्–अवगृहमवगृह्य सयमेन

तेण कालेण तेण समएण इत्यदि ॥

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (धम्म घोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव जाव विहरति–परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया–तएण तेसिं धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले

(ते ण कालेण तेण समएण) इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव जाव विहरति परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसापडिगया, तएण तेसिं ધ્ય थेराणं

यावत्-न्याय नगर्यामुच्चनीचमध्यमकुलानि यावद्भ्रमन् यत्रैव नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहं तत्रैवोपागतः ।

ततः खलु सा नागश्री ब्राह्मणी धर्मरुचिमनगारम् एजमानम्-आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा तस्य 'सालइयस्स' शारदिकस्य तिक्तकटुकस्य=तिक्तकटुकतुम्बकस्य बहुसभारसभृतस्य स्नेहावगाढस्य 'पट्ठवणट्ठयाए' प्रस्थापनार्थं=परिष्ठापनार्थं हृष्टतुष्टा 'उट्ठाए' उत्थया=उत्थानक्रियया उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव भक्तगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तद् शारदिकं तिक्तकटुकतुम्बकं बहुसभारसंभृतं स्नेहावगाढं धर्मरुचेरनगारस्य 'पडिग्गहंसि' पतद्ग्रहे-पात्रे, सर्वमेव 'निसिरइ'

जिस प्रकार गौतम स्वामी श्री महावीर स्वामी से पूछकर आहार लेने के लिये जाते थे उसी प्रकार इन्होंने धर्मघोष स्थविर से आहार लाने के लिये आज्ञा मागी । आज्ञा प्राप्तकर ये चंपानगरी में उच्च नीच एवं मध्यमकुलो मे भ्रमण करते हुए जहां नागश्री ब्राह्मणी का घर था वहां गये । नागश्री ब्राह्मणी ने इन्हें ज्योंही आते हुए देखा (पासित्ता तस्स सालइयस्स बहु सभारसभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पट्ठवणट्ठयाए हट्ठ तुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ) त्योंहीं यह बहुसभार सभृत एव स्नेहावगाढ उसकडवी तुमडीका आहार देने के लिये उत्थान क्रिया द्वारा-उठी-अर्थात् अपने में रही हुई उठने की शक्ति से उठी और हृष्ट तुष्ट होती हुइ जहां भोजन-गृह था वहा गइ । (उवागच्छित्ता तं सालइयतित्त कडुय च बहुसभार सभिय णेहावगाढं धम्मरुइयस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सत्थमेव निसिरइ) वहां

સ્વામીને પૂછીને આહાર લાવવા માટે નીકળતા હતા તેમજ તેઓએ પણ આહાર લાવવા માટે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે આજ્ઞા માગી આજ્ઞા મેળવીને તેઓ ચંપા નગરીમા ઉચ્ચનીચ અને મધ્યમ કુળોમા ભ્રમણ કરતા જ્યા નાગશ્રી બ્રાહ્મણીનુ ઘર હતુ ત્યા ગયા નાગશ્રી બ્રાહ્મણીએ તેઓને આવતા જોયા (पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसभारसभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पट्ठवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ) ત્યારે તરત જ સરસ વઘારેલો ઘી તરતો કડવી તુમડીનો આહાર આપવા માટે ઉત્થાન ક્રિયા વડે ઊભી થઈ એટલે કે પોતાનામા રહેલી ઊભા થવાની તાકાતથી તે ઊભી થઈ અને હૃષ્ટ તેમજ તુષ્ટ થતી જ્યા ભોજનશાળા હતી ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता त सालइय तित्तकडुय च बहुसभारसभिय णेहावगाढ धम्मरुइयस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ)

तया, मास=त्रिंशदहोरात्रात्मकं कालं मासेन=मासरूपेण मासोपवासरूपतपः कर्मणा 'खममाणे' क्षपयन्=यापयन् विहरति । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां 'सज्झायं' स्वाध्याय सूत्रपाठरूप करोति, द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानम् सूत्रार्थचिन्तनरूप ध्यायति-करोति, एवं यथा गौतमस्वामी, तथैव गौतमस्वामीवत् तृतीयपौरुष्यां भाजनवस्त्राणिप्रमार्जयति, प्रमार्ज्य भाजनानि 'उग्गाहेइ' अवगृह्णाति, अवगृह्य यत्रैव धर्मघोषस्थविरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथैव श्रीमहावीरस्वामीव गौतमस्वामिवदेव धर्मघोष स्थविरमापृच्छति,

से, ये अपने त्रिंशत अहोरात्रात्मक काल को उस समय व्यतीत कर रहे थे। अर्थात् एक महीने की तपस्या इन्होंने उस समय कर रखे थे- (तएण से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्च नीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाण पासइ) ये धर्मरुचि अनगार मासक्षपण की पारणा के दिनप्रथम पौरुषी में सूत्रपाठ रूप स्वा ध्याय, द्वितीय पौरुषी में सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान और तृतीय पौरुषी मे गौतम स्वामी की तरह वस्त्रपात्रो का प्रमार्जन करते। इस तरह इन्होने तृतीय पौरुषी में वस्त्र पात्रो का प्रमार्जन कर अपने पत्रों को उठाया और उठकर ये धर्मघोष स्थविर के पास गये।

પોતાના ત્રિશત્ અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા

(तएण से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरीसए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाण पासइ)

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમા સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમા સૂત્રાર્થ ચિતન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમા વસ્ત્ર અને પાત્રોનુ પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષપણના પોતાના પારણાના દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમા વસ્ત્ર-પોતાનુ પ્રમાર્જન કરીને પોતાના પાત્રોને લીધા અને લઇને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે ગૌતમ

तया, मास=त्रिंशदहोरात्रात्मक कालं मासेन=मासक्षपणेन मासोपवासरूपतपः कर्मणा 'खममाणे' क्षपयन्=यापयन् विहरति । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां 'सज्झायं' स्वाध्यायं सूत्रपाठरूपं करोति, द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानम् सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यायति-करोति, एवं यथा गौतमस्वामी, तथैव गौतमस्वामीवत् तृतीयपौरुष्यां भाजनवस्त्राणि प्रमार्जयति, प्रमार्ज्य भाजनानि 'उग्गाहेइ' आगृह्णाति, आगृह्य यत्रैव धर्मघोषस्थविरास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथैव श्रीमहावीरस्वामीन गौतमस्वामिवदेव धर्मघोष स्थविरमापृच्छति,

से; ये अपने त्रिंशत अहोरात्रात्मक काल को उस समय व्यतीत कर रहे थे। अर्थात् एक महीने की तपस्या इन्होंने उस समय कर रखे थे- (तएण से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाण पासइ) ये धर्मरुचि अनगार मासक्षपण की पारणा के दिन प्रथम पौरुषी में सूत्रपाठ रूप स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषी में सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान और तृतीय पौरुषी मे गौतम स्वामी की तरह वस्त्रपात्रो का प्रमार्जन करते। इस तरह इन्होंने तृतीय पौरुषी में वस्त्र पात्रो का प्रमार्जन कर अपने पत्रों को उठाया और उठकर ये धर्मघोष स्थविर के पास गये।

પોતાના ત્રિંશત્ અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા

(तएण से धम्मरूइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, बीयाए पोरीसए एव जहा गोयमसामो तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरूइ एज्जमाण पासइ)

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમા સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમા સૂત્રાર્થ ચિંતન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમા વસ્ત્ર, અને પાત્રોનુ પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષપણના પોતાના પારણાના દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમા વસ્ત્ર-પોતાનુ પ્રમાર્જન કરીને પોતાના પાત્રોને લીધા અને લઇને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે । જેમ ગૌતમ

रुचिमनगारमेवमवदन् यदि खलु त्व हे देवानुप्रिय ! एतद् शारदिकं यावत्-तिक्तकटुकतुम्बक यावत् स्नेहावगाढम् आहारयसि=आहार करिष्यसि, तर्हि खलु त्वमकाले एव जीवितात् व्यपरोपिष्यसे' एतदशनेन मरणमवश्य माप्स्यसीत्यर्थ । तत्=तस्मात् मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! एतद् शारदिकं यावदाहारय, मा खलु

निकल कर चपानगरी के बीचो बीचसे होकर चल दिये सो जहा सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहा आ गये । वहा आकर वे अपने आचार्य धर्मघोष स्थविर के पास आये वहा आकर उन्होंने भिक्षामें प्राप्त हुआ आहार बताया और बताने के बाद उस शारदिक कडवी तुबडी के यावत् स्नेहावगाढ शाक की गध से अभिभूत होते हुए उन धर्मघोष आचार्य ने उस शारदिक यावत् स्नेहावगाढ शाक में से एक बिन्दु मात्र को अपने हाथ की हथेली पर रख कर चखा (तित्तग खार कडुय अखज्ज अभोज्ज विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइ अणगार एव वयासी -इण तुम देवाणुप्पिया । एय सालइय जाव ने हावगाढ आहारेसि तो ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि) चखते ही " यह तिक्त हैं क्षार से युक्त है कटुक है अखाद्य एव अभोज्ज है तथा विषभूत है " ऐसा जानर धर्मरुचि अनगार से उन्होंने ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! यदि तुम शारदिक कडवी तुबडी के बहु सभार सभृत एवं स्नेहावगाढ इस शाक का आहार करोगे-तो निश्चय से विना मृत्यु के

નીકળીને ચપા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જ્યા સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેમણે ભિક્ષામા પ્રાપ્ત થયેલા આહારને બતાવ્યો અને બતાવીને તે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતા તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકને હથેળી ઉપર મૂકીને ચાખ્યુ

(तित्तग खार कडुय अवज्ज अभोज्ज विसभूय जाणित्ता धम्मरुइ अणगार एव वयासी-जइण तुम देवाणुप्पिया ! एय सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

ચાખતા જ " આ તિકત છે, ખાર છે, કડવું છે, અખાદ્ય તેમજ અભોજ્ય છે તથા વિષભૂત છે " આવુ જાણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વઘારેલા ઘીતરતા શાકનો આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે કમોતે મરી જશો.

निष्ठजति=परिष्ठापयति । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारः 'अहापज्जत्त' यथा पर्याप्तम्-उदरपूर्तये पूर्णमेतद् इति कृत्वा=इति मनसि विभाव्य, नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहात् प्रतिनिष्क्रामति-निर्गच्छति प्रतिनिष्क्रम्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन प्रतिनिष्क्राम्यति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सुभूमिभागमुद्यानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धर्मघोषस्य स्थविरस्य 'अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे, अन्नपानं 'पडिलेहेइ' प्रतिलेखयति प्रतिलेख्य अन्नपानं करतले पात्रं कृत्वा प्रतिदर्शयति। ततः खलु ते धर्मघोषाः स्थविरास्तस्य शारदिकस्य तिक्तकटुतुम्बकस्य यावद् स्नेहावगाढस्य गन्धेनाऽभिभूतास्तस्माच्छारदिकाद् यावद् स्नेहावगाढादेकं बिन्दुकं गृहीत्वा करतले कृत्वा आस्वादयति । तिक्तकं क्षारं कटुकम् अखाद्यमभोज्यं विषभूतं ज्ञात्वा धर्म-

---

जाकर उसने उस शारदिक कडवी तुंबडी का चटु सभार संभृत एवं स्नेहावगाढ शाक धर्मरुचि अनागार के पात्र में सब का सब डाल दिया (तएणं से धम्मरुइ अणगारे अहापज्जत्तमित्तिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद वे धर्मरुचि अनगार "यह उदर पूर्ति के लिये पर्याप्त है" ऐसा मन में समझ कर नागश्री ब्राह्मणी के घर से बाहर निकले पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे – तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं से धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ)

ત્યા જઈને તેણે તે શારદિક કડવી તૂંબડીનુ ખૂબ જ સરસ રીતે વઘારેલુ તેમજ ઘી તરતુ શાક લઈ આવી અને ત્યારપછી ધર્મરુચિ અનગારના પાત્રમા બધુ નાખી દીધુ

(तएणं धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु णागसिरीए महिणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ)

ત્યારપછી તે ધર્મરુચિ અનગાર "આ ઉદર પોષણ માટે પર્યાપ્ત છે" એવું જાણીને નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેરથી બહાર નીકળ્યા

(पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे–तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अण्णपाणं करयलंसि पडिदंसइ, तएणं से धम्मघोसाथेरा तस्स सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय

रुचिमनगारमेवमवदत् यदि खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! एतद् शारदिकं यावत्-तिक्तम्कटुकतुम्बकं यावत् स्नेहावगाढम् आहारयसि=आहार करिष्यसि, तर्हि खलु त्वमकाले एव जीवितात् व्यपरोपिष्यसे' एतदशनेन मरणमवश्य प्राप्स्यसीत्यर्थः । वत्=यस्मात् मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! एतद् शारदिकं यावदाहारय, मा खलु

निकल कर चंपानगरी के बीचो बीचसे होकर चल दिये सो जहा सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहा आ गये । वहा आकर वे अपने आचार्य धर्मघोष स्थविर के पास आये वहा आकर उन्होंने भिक्षामें प्राप्त हुआ आहार बताया और बताने के बाद उस शारदिक कडवी तुंबडी के यावत् स्नेहावगाढ शाक की गंध से अभिभूत होते हुए उन धर्मघोष आचार्य ने उस शारदिक यावत् स्नेहावगाढ शाक में से एक बिन्दु मात्र को अपने हाथ की हथेली पर रख कर चखा (तित्तग खार कडुय अखज्ज अभोज्ज विसभूय जाणित्ता धम्मरुइ अणगार एव वयासी-इण तुम देवाणुप्पिया । एय सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि) चखते ही " यह तिक्त हैं क्षार से युक्त है कटुक है अखाद्य एवं अभोज्य है तथा विषभूत है " ऐसा जानकर धर्मरुचि अनगार से उन्होंने ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! यदि तुम शारदिक कडवी तुंबडी के बहु सभार संभृत एवं स्नेहावगाढ इस शाक का आहार करोगे-तो निश्चय से विना मृत्यु के

નીકળીને ચંપા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જ્યાં સુભમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેમણે ભિક્ષામા પ્રાપ્ત થયેલા આહારને બતાવ્યો અને બતાવીને તે શારદિક કડવી તૂમડીના સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતા તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકને હથેળી ઉપર મૂકીને ચાખ્યુ

(तित्तग खार कडुय अवज्ज अभोज्ज विसभूय जाणित्ता धम्मरुइ अणगारं एवं वयासी-जइण तुम देवाणुप्पिया ! एय सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

ચાખતા જ " આ તિકત છે, ખાઇ છે, કડવું છે, અખાદ્ય તેમજ અભોજ્ય છે તથા વિષભૂત છે " આવુ જાણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે શારદિક કડવી તૂમડીના સરસ વઘા [illegible] આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે કમોતે મરી જશો.

स्वाकान्तएव जीवितात् व्यपरोप्यन्त=मा म्रियस्व। तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय। इद शारदिक 'एगतमणावाए' एकान्तेऽनापाते=एकान्ते=निर्जनस्थाने, अनापाते=आपात.-द्वीन्द्रियादिप्राणिनां संयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते=जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिट्ठवेहि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्यत् प्रासुकमेषणीय=द्वाचत्वारिंशद्दोषरहित, शुद्धम्-अशनपानखाद्यस्वाद्यम् प्रतिगृह्य आहारमाहारय॥सू०२॥

मूलम्—तएणं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्ल

मरजाओगे-(त मा ण तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं जाव आहारेहि मा ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि त गच्छण तुम देवाणुप्पिया ! इम सालइयं एगतमणावाए अचित्ते थडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुय एसणिज्जं असणं पाण खाइमं साइम पडिगाहेत्ता आहार आहारेहि) इसलिये हे देवानुप्रिय ! तुम शारदिक कडवी तुंबडी के शाक किसी एकान्त स्थानमें कि जहा द्वीन्द्रियादि प्राणियोंको सचरण नहो—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परिष्ठापना कर आओ। और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एषणीय ४२ दोषो से रहित शुद्ध अशन, पान खाद्य स्वाद्य रूप दूसरे आहार को लेकर भोजन कर लो॥ सू० २॥

(त माणं तुम देवाणुप्पिया ! इम सालइय जाव आहारेहि माण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि त गच्छण तुम देवाणुप्पिया ! इम सालइय एग तमणावाए अचित्ते थडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अ न फासुय एसणिज्ज असणं पाण खाइमं साइम पडिगाहित्ता आहार आहारेहि)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ શારદિક તૂબડીના શાકને ખાશો નહિ તેથી અકાળે તમોરૂ મરણ પણ થશે માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ આ શારદિક કડવી તૂબડીના શાકની કોઇપણ એકાન્ત-નિર્જન સ્થાનમા કે જ્યા દ્વિન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનુ સંચરણ હોય નહિ અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એષણીય ૪૨ દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, ખાદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજો આહાર હોવો તે આહાર ગ્રહણ કરો. ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एगं विदुग गहेइ गहित्ता थंडिलंसि निसिरइ तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहा य णं पिवीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ तएणं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जाव तावं इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि विंदुगंमि पक्खित्तमि अणेगाइं पिपीलियासहस्साइं ववरोविजाति तं जइ णं अह एय सालइय थंडिलसि सव्व निसिरामि तएणं बहूण पाणाणं ४ वहकारणं भविस्सइ, त सेय खलु ममेय सालइय जावगाढ सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहित्ता मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससीसोवरियं काय पमज्जेइ२ तं सालइय तित्तकडुयं बहुनेहावगाढ विलमिव पन्नगभूतणं अप्पाणेणं सव्व सरीरकोट्ठसि पक्खिवइ, तएणं तस्स धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेण परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, तएण से धम्मरुची अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे आधारणिज्जमितिकट्टु आयारभंडग एगंते ठवेइ ठवित्ता थंडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलहित्ता दब्भसंथारगं संथारेइ सथारित्ता दब्भसंथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहिय एव वयासी—नमोऽत्थु

त्वमकालएव जीवितात् व्यपरोप्यस्व=मा भ्रिगस्व। तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय। इह शारदिक 'एगतमणावाए' एकान्तेऽनापाते=एकान्ते= निर्जनस्थाने, अनापाते-आपातः-द्वीन्द्रियादिप्राणिनां संयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते= जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिट्ठवेहि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्यत् प्रासुकमेषणीयं= द्वाचत्वारिंशद्दोषरहित, शुद्धम्-अशनपानखाद्यस्वाद्यम् प्रतिगृह्य आहारमाहारय॥सू०२॥

मूलम्—तएणं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेण एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्ल

मरजाओगे-(तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया। इमं सालइयं जाव आहारेहि मा णं तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि तं गच्छण तुमं देवाणुप्पिया। इमं सालइयं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिल्ले परिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि) इसलिये हे देवानुप्रिय! तुम शारदिक कडवी तुंबडी के शाक किसी एकान्त स्थानमें कि जहां द्वीन्द्रियादि प्राणियोंको संचरण नहीं—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परिष्ठापना कर आओ। और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एषणीय ४२ दोषों से रहित शुद्ध अशन, पान-खाद्य स्वाद्य रूप दूसरे आहार को लेकर भोजन कर लो॥ सू० २॥

(तं माणं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं जाव आहारेहि माणं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि तं गच्छण तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिल्ले परिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिगाहित्ता आहारं आहारेहि)

એથી હે દેવાનુપ્રિય! તમે આ શારદિક તૂંબડીના શાકને ખાશો નહિ તેથી અકાળે તમોને મરણ પણ થશે નહિ માટે હે દેવાનુપ્રિય! તમે આ આ શારદિક કડવી તૂંબડીના શાકની કોઈપણ એકાંત=નિર્જન સ્થાનમા કે જ્યા દ્વિન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનુ સંચરણ હોય નહિ અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એષણીય ૪૨ દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, ખાદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજો આહાર લાવી તે આહાર ગ્રહણ કરો. ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसंभारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'ण' तं=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य बिन्दुकं पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ' जीवितात् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो वियुज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपीलिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलाषरूपः, कल्पितः=कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः सङ्कल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् बिन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि पिपीलिकासहस्राणि 'ववरोविज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो वियुज्यते म्रियन्ते।

स्स बहुनेहावगाढस्स गंधेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहायणं पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की। प्रतिलेखना करके फिर उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुवडी के शाक में से एक बिन्दुमात्र शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया। तो इतने में ही शारदिक तिक्तकडवी तुवडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से वहां हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई। उनमें से जिस कीड़ीने जिस समय उसे खाया वह कीडी उसी समय वहां मर गई। (तएणं तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि बिन्दुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहायणं पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ)

અને આવીને તેમણે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનથી વધારે દૂર પણ નહિ અને વધારે નજીક પણ નહિ એવા સ્થાને ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેઓએ તે શારદિક-તિકત કડવી તૂબડીના શાકમાથી એક ટીપા જેટલું શાક લીધુ અને લઈને તે ભૂમિભાગ ઉપર નાખી દીધું નાખતાની સાથે જ ત્યા શારદિક તિકત-કડવી તૂબડીના ઘી તરતા શાકની સુવાસથી હજારો કીડીઓ એકઠી થઈ ગઈ તેઓમાંથી જે જે કીડીએ તે શાકને આધુ હતું તે તે-તરતજ ત્યા મરી ગઈ

तएणं तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि बिन्दुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलिया सहस्साइं

णं अरहताण जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं सम धम्मायरियाण धम्मोवएसगाणं, पुव्विंपि णं मए धम्मघोसाणं थेराण अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिंपि ण अहं तेसिं चेव भगवंताण अंतियं सव्व पाणाइवाइ पच्चक्खामि जाव परिग्गह पच्चक्खामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामिति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥ सू० ३ ॥

टीका—तत खलु स धर्मरुचिरनगारो धर्मघोषेण स्थविरेणैवमुक्त सन् धर्मघोषस्य स्थविरस्यान्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागोद्यानाद् अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातीसमीपे स्थण्डिल प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य तत =तस्माद् शारदिकात् तिक्तकटुकात् तुम्बकादेक बिन्दुक गृह्णाति, गृहीत्वा स्थण्डिले=भूमौ 'निसरइ' निसृजति=परिष्ठापयति। ततः खलु तस्य शारदिकस्य

तएण से धम्मरुई अणगारे इ त्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसे ण थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ) वे धर्म रुचि अनगार धर्म घोष से इस प्रकार कहे जाने पर धर्मघोष के पास से चले आये (पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूर सामते थडिल पडिलेहेइ,पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एग बिंदुग गहेइ, गहित्ता थडलसि निसिरइ, तो ण तस्स सालइयस्स तित्त कडुय-

त एण से धम्मरुई अणगारे इत्यादि

टीकार्थ-(त एण) त्यारपछी

(से धम्मरूई अणगारे धम्मघोसेग थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ)

તે ધર્મરુચિ અનગાર ધર્મઘોષની આ વાત સાભળીને તેમની પાસેથી આવતા રહ્યા

(पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामते थडिल पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एग बिंदुग गहेइ, गहित्ता थडिलंमि निसरइ, तो ण तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स वहुनेहावगाढस्स गधेण ८ ‘ पिपीलिगा

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसंभारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'ण' त=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य बिन्दुकं पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ' जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो वियुज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपीलिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलाषरूपः, कल्पितः=कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः सकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् बिन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि पिपीलिकासहस्राणि 'ववपरोविज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो वियुज्यते म्रियन्ते।

स्स बहुनेहावडाढस्स गंधेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहायणं पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की। प्रतिलेखना करके फिर उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुवडी के शाक में से एक बिन्दुमात्र शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया। तो इतने में ही शारदिक तिक्तकडवी तुवडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से वहां हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई। उनमें से जिस कीड़ीने जिस समय उसे खाया वह कीडी उसी समय वहां मर गई। (तएण तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगमि बिन्दुगमि पक्खित्तमि अणेगाइ पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहायणं पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ)

અને આવીને તેમણે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનથી વધારે દૂર પણ નહિ અને વધારે નજીક પણ નહિ એવા સ્થાને ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેઓએ તે શારદિક-તિકત કડવી તૂંબડીના શાકમાથી એક ટીપા જેટલું શાક લીધુ અને લઇને તે ભૂમિભાગ ઉપર નાખી દીધું નાખતાની સાથેજ ત્યા શારદિક તિકત-કડવી તૂંબડીના ઘી તરતા શાકની સુવાસથી હજારો કીડીઓ એકઠી થઈ ગઈ તેઓમાંથી જે જે કીડીએ તે શાકને ખાધું હતું તે તે તરતજ ત્યા મરી ગઈ

तएण तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगमि बिंदुगमि पक्खित्तम्मि अणेगाइ पिपीलिया सहस्साइ

खलु=तस्माद् यदि खल्वहमेतद् शारदिकं 'थंडिलंसि' स्थण्डिले=भूमौ सर्वं 'निसिरामि' निसृजामि=परिष्ठापयामि, 'तोण' तर्हि खलु बहूनां प्राणानां=प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूतानां जीवानां तत्=तस्माद् श्रेयः=श्रेयस्करं खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकालाबुकं यावत्-स्नेहावगाढ स्वयमेव आहारयितुम्=भोक्तुम्, ममैव 'एएण' एतेन=तिक्ततुम्बकाहारेण 'सरीरेण' शरीर खलु 'णिज्जाउ' निर्यातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा इति मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण सम्प्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्याणं कर्तुं

सहस्साइं ववरोविज्जति, त जइणं अह एय सालइय थडलसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं ४ वह कारण भविस्सइ त सेय खलु ममेय सालइय जाव गाढ सयमेव आहारेत्तए) इस तरह पिपीलिकाओ की विराधना देखकर धर्मरुचि अनगार को इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प-विचार हुआ-यहा सस्कृतके चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित इन तीन विशेषणों को ग्रहण कर ने के निमित्त सूत्र में ५ का अक दिया है। जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुवडी की शाक की एक बिन्दु मात्र जमीन पर डालने पर अनेक पिपीलिका सहस्र प्राणों से वियुक्त हो जाती हैं तो मै जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुबी के शाकको पूरेरूपमें जमीन पर परिष्ठापित कर दूँगा तो अनेक प्रणियों४ के वह विराधना का कारण होगा इसलिये मुझे उचित है कि मैं ही इस शारदिक तिक्त कडवी तुबडी के इस बहुत मसालेदार एव स्नेहावगाढ बहुत घृतसे युक्त शाक को स्वय आहार कर जाऊँ। (मम चेव एएण सरीरेण णिज्जाउत्तिकट्टु एवं सपेहेइ सपेहित्ता मुहपोत्तिय २

ववरोविज्जति, त जइणं अह एय सालइय थडलसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं४वह कारणं भविस्सइ त सेय खलु ममेय सालइय जाव गाढ सयमेव आहारेत्तए

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના જોઇને ધર્મરુચિ અનગારને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો. અહીં સકલ્પના ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમા ૫ નો અક આપવામા આવ્યો છે-કે જ્યારે આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂબડીના શાકના ફક્ત એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હજારો પ્રાણોથી વિયુકત થઈ જાય છે ત્યારે હુ શારદિક કડવી તૂબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનુ કારણ થશે એથી મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂબડીના આ સરસ મસાલાવાળા અને ઘી તરતા શાકને પોતે જ આર્ધ જાઉ

निश्चिनुते। सम्प्रेक्ष्य-' मुहपोत्तिय ' मुखपोत्तिका=सदोरकमुखवस्त्रिका रजोहरणं च प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य ' ससीसोवरिय ' सशीर्षोपरिकम्=चरणतलाद् मस्तकोपरिभागपर्यन्त काय=शरीर, ' पमज्जेइ ' प्रमार्जयति, प्रमार्ज्य तद् शारदिक तिक्तकटुक बहुसभारसभृत स्नेहावगाढ विलमिव पन्नगभूतेन आत्मना सर्वं शरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहितमाहारयतीत्यर्थः। ततः खलु तस्य धर्मरुचेस्तद्

पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससीसोवरिय काय पमज्जेइ पमज्जित्ता तं सालइय तित्तकडुय बहुनेहावगाढ विलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेण सव्वं सरीरकोट्ठसि पक्खिवइ) मेरा ही शरीर इस तिक्त कटु तुवडी के आहार से नाश होवे इस प्रकार उन्होंने अपने मनमें बार २ सोचा सोचकर अपने शरीर के निर्याण करने का उन्होंने निश्चय कर लिया। निश्चय करने के अनन्तर सदोरक मुखवस्त्रिका एव रजोहरण इनकी उन्होने प्रतिलेखना करके फिर वे चरण तल से लेकर मस्तकोपरिभाग पर्यन्त तक के समस्त अपने शरीर की प्रमार्जना करके उन्होंने उस शारदिक तिक्त कडवी तुवडी के बहुत मसाला से युक्त एव स्नेहावगाढ बहुत घी से युक्त समस्त शाक का आहार कर लिया-जिस प्रकार सर्प जब बिल में प्रविष्ट होता है तब बिल के दोनों पार्श्वभागों को स्पर्श नहीं करता हुआ उसमें सीधा प्रविष्ट हो जाता है-उसी तरह वह शाक रूप सर्प भी मुख रूप बिल के दोनों पार्श्वभागों को स्पर्श नहीं करता हुआ सीधा गले से होकर पेट में चला गया। (तएणं तस्स

(मम चेव एएण सरीरेण णिज्जाउत्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता मुहपोत्तिय २ पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससिसोवरिय काय पमज्जेइ पमज्जित्ता त सालइय तित्तकडुय बहुनेहावगाढ विलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेणं सव्व सरीर कोट्ठसि पक्खिवइ)

મારૂ શરીર જ આ તિકત કડવી તૂબડીના આહારથી નષ્ટ થાય આ રીતે તેણે પોતાના મનમા વારવાર વિચાર કર્યો વિચારીને પોતાના શરીરને નષ્ટ કરવાનો તેમણે મક્કમ વિચાર કર્યા બાદ તેણે સદોરક મુખવસ્ત્રિકા અને રજોહરણની તેમણે પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેમણે પગના તળિયાથી માંડીને મસ્તક સુધીના પોતાના આખા શરીરની પ્રમાર્જના કરી ત્યારે તેમણે તે શારદિક તિકત કડવી તૂબડીના સરસ મસાલાવાળા અને ઉપર ઘી તરતા બધા શાકનો આહાર કરી લીધો જેવી રીતે સાપ જ્યારે દરમા પ્રવેશે છે ત્યારે દરના બને પાર્શ્વભાગનો સ્પર્શ કર્યા વગર તેમા સીધો પ્રવિષ્ટ થઈ જાય છે તેમજ તે શાક રૂપી સાપ પણ મુખ રૂપી દરના બને પાર્શ્વભાગને સ્પર્યા વગર સીધું ગળામા થઇને પેટમા જતું રહ્યું

खलु=तस्माद् यदि खल्वहमेतत् शारदिकं 'थंडिलंसि' स्थण्डिले=भूमौ सर्वं 'निसिरामि' निसृजामि=परित्यापयामि, 'तोणं' तर्हि खलु बहूनां प्राणानां=प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूतानां जीवानां तत्=तस्माद् श्रेयः=श्रेयस्कर खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकालाबुकं यावत्-स्नेहावगाढ स्वयमेव आहारयितुम्=भोक्तुम्, ममैव 'एएण' एतेन=तिक्तकटुकाहारेण 'सरीरेणं' शरीर खलु 'णिज्जाउ' निर्यातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा इति मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण सम्प्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्याणं कर्तुं

सहस्साइं वधरोविज्जति, त जइणं अहं एय सालइय थंडलसि सव्व निसिरामि तएण बहुण पाणाण ४ वह कारण भविस्सइ त सेय खलु ममेय सालइय जाव गाढ सयमेव आहारेत्ताए) इस तरह पिपीलिकाओ की विराधना देखकर धर्मरुचि अनगार को इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प-विचार हुआ-यहा सकल्पके चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित इन तीन विशेषणों को ग्रहण कर ने के निमित्त सूत्र में ५ का अक दिया है। जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुवडी की शाक की एक बिन्दु मात्र जमीन पर डालने पर अनेक पिपीलिका सहस्र प्राणों से वियुक्त हो जाती हैं तो मैं जब इस शारदिक तिक्त कटवी तुबी के शाकको पूरेरूपमें जमीन पर परिष्ठापित कर दूँगा तो अनेक प्राणियों ४ के वह विराधना का कारण होगा इसलिये मुझे उचित है कि मैं ही इस शारदिक तिक्त कडवी तुवडी के इस बहुत मसालेदार एव स्नेहावगाढ बहुत घृतसे युक्त शाक को स्वय आहार कर जाऊँ। (मम चेव एएण सरीरेण णिज्जाउत्तिकट्टु एवं सपेहेइ सपेहित्ता मुहपोत्तिय २

वधरोविज्जति, त जइण अह एय सालइय थडलसि सव्व निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं४वह कारणं भविस्सइ त सेय खलु ममेय सालइय जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના જોઇને ધર્મરુચિ અનગારને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો અહીં સકલ્પના ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમા ૫ નો અક આપવામા આવ્યો છે-કે જ્યારે આ શારદિક તિકત કડવી તૂબડીના શાકના ફક્ત એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હજારો પ્રાણોથી વિયુકત થઈ જાય છે ત્યારે હુ શારદિક કડવી તૂબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનુ કારણ થશે એથી મને એજ ચોગ્ય લાગે છે કે હું આ શારદિક તિકત કડવી તૂબડીના આ સરસ મસાલાવાળા અને ઘી તરતા શાકને પોતે જ આર્ઇ જાઉ

मित्यर्थः, एकान्ते 'ठावयित्ता' स्थापयित्वा 'दब्भसंथारगं' दर्भसंस्तारकम्=दर्भसंस्तारकभूमिं प्रतिलेख्य दर्भसंस्तारकं 'संथारेइ' संस्तृणाति=संस्तृतं करोति संस्तीर्य, दर्भसंस्तारकं दुरोहति=आरोहति, दुरुह्य पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिगभिमुखः, 'संपलियंकनिसन्ने' संपर्यङ्कनिषण्णः=पद्मासननिषिष्टः, 'करयलपरिग्गहियं=सटोजितहस्तं दसनहं सिरसावत्तं कट्टु एवं=दशनखशिरसावर्तम् एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=त्वमवादीत्,

"नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं,—

—णमोऽत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं" नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः स्थविरेभ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि दीक्षाग्रहणकालेऽपि खलु मया धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके सर्वः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवं 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-सर्वो मृषावादः सर्वमदत्तादानं सर्वं मैथुनं च प्रत्याख्यातम्, तथा-सर्वः परिग्रहः प्रत्याख्यातः। इदानीमपि खलु अहं तेषामेव भगवतामन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिग्रहं प्रत्याख्यामि यावत्

પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને ફિર ઉસકે ઉપર ઉન્હોંને દર્ભસંસ્તારક કો બિછાયા-બિછાકર ફિર વે ઉસપર બૈઠકર ફિર પૂર્વદિશા કી ઔર મુખકર પર્યઙ્કાસન સે ઉસ પર વિરાજમાન હો ગયે વિરાજમાન હોકર ઉન્હોંને અપને દોનો હાથોં કો જોડા ઔર મસ્તક પર ઉસકી અંજલિ રખકર ઇસ પ્રકાર અપને મન હી મન વે કહને લગે-

(नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे इयाणिं पि अहं तेसिंचेव भगवंताणं अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव

ભાંડને-વસ્ત્ર પાત્ર વગેરેને એકાંતમાં મૂકી દીધા મૂકયા બાદ તેઓએ સંસ્તારક ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેની ઉપર તેમણે દર્ભ સંસ્તારક કર્યો દર્ભસંસ્તારક પાથરીને તેઓ તેની ઉપર બેસીને પૂર્વદિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી તેની ઉપર વિરાજમાન થઈ ગયા વિરાજમાન થઈને તેઓએ પોતાના બંને હાથોને જોડયા અને તેમની અંજલી બનાવીને મસ્તક ઉપર મૂકી અને પોતાના મનમાં જ કહેવા લાગ્યા

(नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायारियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिं पि अहं तेसिं चेव

शारदिक यावत्-स्नेहावगाढम् आहारितस्य=भुक्तवतः, तस्य मुहूर्तान्तरेण परिणम्यमाने=आहारे परिणाम माप्ते सति शरीरे वेदना मादुर्भूता, सा कीदृशी ? त्याह-उज्ज्वला=तीव्रा, यावत् ' दुरहियासा ' दुरध्यासा=दुरधिसहा-अमनोज्ञत्वर्गः । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो ऽस्यामा, हीनपराक्रमः, अबलः=मनोबलरहितः अवीर्यः=हतोत्साहः अपुरुषकारपराक्रमः,=पुरुषार्थहीनः, ' अधारणिज्जमितिकट्टु ' अधारणीयमिति कृत्वा-धारयितुमशक्यमिद शरीरमितिमनसि विचार्य ' आयारमडग ' आचारभाण्डकम्-आचाराय आचारपालनार्थं माण्डक=माण्डोपकरणं वस्त्रपात्रादिक

धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तरेण परिणममाणसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा-तएण से धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभडग एगते ठवेइ, ठवित्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता दब्भसथारग, दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिग्गहिय एवं वयासी) शाक उन धर्मरुचि अनगार के पेट में पहुँचते ही एक मुहूर्त के बाद जब वह पचने लगा तब उनके शरीर में उज्ज्वल यावत् दुरधिध्यास वेदना प्रकट हुई । इस से वे धर्मरुचि अनगार पराक्रम से हीन, मनोबल से विहिन, हतोत्साह होकर पुरुषार्थ रहित बन गये । यह शरीर अब धारण करने से अशक्य हो रहा है ऐसा जब उन्होंने प्रतीत होने लगा तब उन्होंने अपने आचारभांडक पचविध आचार पालने के लिये जो - वस्त्र - पात्रादिक थे उनको -एकान्त में रख दिया-रखकर फिर उन्हों ने सस्तारकभूमि की

(तएण तस्स धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तरेण परिणममाणसि सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा-तएण से धम्मरूई अणगारे अथामे, अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभडग एगते ठवेइ, ठवित्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता दब्भसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिग्गहिय एव वयासी)

શાક તે ધર્મરુચિના પેટમા પહોચતા જ એક મુહૂર્ત પછી જ્યારે તેનુ પાચન શરૂ થયુ ત્યારે તેમના શરીરમા ઉજ્વલ યાવત્ દુરધિષ્યાસ વેદના થવા માંડી તેથી તે ધર્મરુચિ અનગાર પરાક્રમ વગર, મનોબળ વગર હતોત્સાહી થઈને પુરુષાર્થ વગર બની ગયા હવે આ શરીર ટકવુ અશકય થઇ પડ્યુ છે એવી જ્યારે તેઓને પ્રતીતિ થવા લાગી ત્યારે તેમણે પોતે આચાર

मित्यर्थः, एकान्ते स्थापयति, स्थापयित्वा संडासगं=संस्तारकभूमिं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य दर्भसंस्तारकं 'संथारेइ' संस्तृणाति=संस्तृतं करोति संस्तीर्य, दर्भसंस्तारकं दुरोहति=आरोहति, दुरुह्य पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिगभिमुखः, 'सपलियंकनिसन्ने' सपल्यङ्कनिषण्णः=पद्मासनसन्निविष्टः, करतलपरिगृहीतं=संयोजितहस्ततलद्वयं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=इममभ्युक्तवान्,

"नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं,—

—णमोऽत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं" नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः स्थविरेभ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि ग्रहणकालेऽपि खलु मया धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यातो यावज्जीवं 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-सर्वो मृषावादः सर्वमदत्तादानं सर्वं मैथुनं च प्रत्याख्यातम्, तथा-सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यातः। इदानीमपि खलु अहं तेषामेव भगवतामन्तिकं सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिग्रहं प्रत्याख्यामि यावत्

प्रतिलेखना की प्रतिलेखना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्भसंस्तारक को बिछाया-बिछाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा की ओर मुखकर पर्यङ्कासन से उस पर विराजमान हो गये विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़ा और मस्तक पर उसकी अंजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे-

(नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवं जाव परिग्गहे इयाणिं पि अहं तेसिंचेव भगवंताणं अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव

ભાંડને-વસ્ત્ર પાત્ર વગેરેને એકાંતમાં મૂકી દીધા મૂકયા બાદ તેઓએ સંસ્તારક ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેની ઉપર તેમણે દર્ભ સંસ્તારક કર્યો દર્ભસંસ્તારક પાથરીને તેઓ તેની ઉપર બેસીને પૂર્વદિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી તેની ઉપર વિરાજમાન થઈ ગયા વિરાજમાન થઈને તેઓએ પોતાના બંને હાથોને જોડયા અને તેમની અંજલી બનાવીને મસ્તક ઉપર મૂકી અને પોતાના મનમાં જ કહેવા લાગ્યા

(नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायारियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिं पि अहं तेसिं चेव

ज्जीव, यथा-स्कन्दकः=स्कन्दकवत् यावच्चरमै-रन्तिमैः, 'वोसिरामिति कट्टु' व्युत्सृजामि=शरीर परित्यजामि' इति कृत्वा 'आलोइय पडिक्कते' आलोचितप्रति क्रान्तः=पूर्वकृत यदतीचारजात तदालोचित, पुनरकरणमतिज्ञया प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्त=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरण प्राप्त ॥सू० ३॥

मूलम्-तएण ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरं गय जाणित्ता समणे निग्गथे सद्दावेंति सद्दावित्ता एव वयासी

परिग्गह पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइय पडिक्कते समाहिपत्ते कालगए) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहन्त भगवन्तो के लिये मेरा नमस्कार हो-धर्मोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मघोषस्थविर के लिये मेरी नमस्कार हो मैंने पहिले दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मघोष स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अदत्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान कर दिया है। अब भी मैं उन्हीं भगवतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यात करता हूँ। यावत् अन्तिम श्वासोत्तक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ। इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रति क्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू० ३॥

भगवताण अतिय सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव परिग्गह पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहि वोसिरामित्ति कट्टु आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालगए)

યાવત્ સિદ્ધગતિ મેળવેલા અરિહંત ભગવંતોના માટે મારા નમસ્કાર છે ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે પહેલા દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મે તે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાતો, સમસ્ત મૃષાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત પરિગ્રહોનુ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું અત્યારે પણ તે જ ભગવંતોની સામે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનુ યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ જીવનના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરૂ છુ આ રીતે પોતાના મનમા જ કહીને તે ધર્મ-રુચિ અનગાર આલોચિત પ્રતિકાત થઇને આત્મસમાધિમા તલ્લીન થતા મરણ પામ્યા ॥ સૂત્ર " ૩ " ॥

—एव खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमण-पारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसरणट्ठयाए बहिया निग्गए चिरगए त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्म-रुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह, तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनि-क्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छति उवा-गच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति पासित्ता हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग करेंति करित्ता धम्मरुइस्स आयारभडग गेण्हति गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता गमणा-गमणं पडिक्कमंति पडिक्कमित्ता एव वयासी—एव खलु अम्हे तुब्भ अतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेण धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव इह हव्वमागया, त कालगए णं भते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभडए, तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गथे निग्गथीओ य सद्दावेति सद्दावित्ता एव वयासी —एव खलु अज्जो ! मम अतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे

ज्जीव, यथा-स्कन्दकः=स्कन्दकवत् यावच्चरमै-रन्तिमैः, 'वोसिरामिति कृत्वा व्युत्सृजामि=शरीर परित्यजामि' इति कृत्वा 'आलोइय पडिक्कते' आलोचितप्रति क्रान्तः=पूर्वकृत यतीचारजात तदालोचित, पुनरकरणमतिक्रम्या प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्त=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरण प्राप्त ॥सू० ३॥

मूलम्-तएण ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिर गय जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति सदावित्ता एव वयासी

परिग्गह पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सा सेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइय पडिक्कते समाहिपत्ते कालगए) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहन्त भगवन्तो के लिये मेरा नमस्कार हो-धर्मोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मघोषस्थविर के लिये मेरी नमस्कार हो मैंने पहिले दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मघोष स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अद त्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान कर दिया है। अब भी मैं उन्हीं भगवतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यात करता हूँ। यावत् अन्तिम श्वासोतक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ। इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रति क्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू० ३॥

भगवताण अतिय सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव परिग्गह पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइयपडि-क्कते समाहिपत्ते कालगए)

યાવત્ સિદ્ધગતિ મેળવેલા અરિહંત ભગવંતોના માટે મારા નમસ્કાર છે ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે પહેલા દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મે તે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાતો, સમસ્ત મૃષાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત પરિગ્રહોનુ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું અત્યારે પણ તે જ ભગવંતોની સામે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનુ યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ જીવનના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરૂ છુ આ રીતે પોતાના મનમા જ કહીને તે ધર્મ-રુચિ અનગાર આલોચિત પ્રતિકાત થઇને આત્મસમાધિમા તલ્લીન થતા મરણ પામ્યા ॥ સૂત્ર " ૩ " ॥

शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः=उक्तवन्तः, एव खलु हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकस्य तिक्तकटुकतुम्बकस्य यावत्-स्नेहावगाढस्य 'णिसिरणट्ठयाए' निसृजनार्थं बहिर्निर्गतश्चिरगतः=तस्मिन् गते सति बहुतरः कालो व्यतीत इत्यर्थः । तत्-तस्माद् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं=सम्यगन्वेषणं कुरुत । तत खलु ते श्रमणा निर्ग्रन्था यावत् प्रतिशृण्वन्ति=तथा करिष्यामीत्युक्त्वा तामाज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनि

वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए-चिरगए, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइयस्स अणगारस्स सव्वओ समता गवेसण करेह) श्रमण निर्ग्रन्थो को बुलाया । बुलाकर उनोंने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार आज मासखमण की पारणा के दिन शारदिक तिक्त कटुवी तुमडी का बहु सभार सभृत शाक कि जिसके ऊपर घृत तैर रहा था लाये थे-मैने उसे परिष्ठापन के लिये उन्हे आज्ञा दिया सो वे उसे परिष्ठापन करने के लिये यहां से बाहिर चले गये-गये उन्हें बहुत देर हो गई-वे अभीतक नही आये इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और धर्मरुचि अनोगार की सब तरफ चारों दिशाओं मे मार्गणा एव गवेषणा करो । (तएण ते समणा निग्गथा जाव पडिसुणेति, पडि सुणित्ता धम्मघोसाण

(समणे निग्गथे सद्दावेति सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगार मासखमणपारणगसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गयाए-चिरगए, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेह)

શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણની પારણાના દિવસે શારદિક તિક્ત કડવી તૂમડીનુ સરસ વઘારેલુ ઉપર ઘી તરતું હતું આહાર માટે લાવ્યા હતા તેઓને મે પ્રતિષ્ઠાપનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન માટે અહીંથી બહાર ગયા છે તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે, હજી તેઓ આવ્યા નથી એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને ધર્મરુચિ અનગારની ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો

(तएण ते समणा निग्गथा जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाण

पगइभद्दए जाव पगइउवसंतपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए माम माणेणं अणिस्सिएणं तवो कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव काल अणवकंखेमाणे विहरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि जासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ त विरत्थुणं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंमि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएणं त ' इत्यादि । तत' खलु=इतश्च ते धर्मघोषा स्थविरा धर्मरुचिमनगार चिर गत बहुकालना गत ज्ञात्वा श्रमणान निर्ग्रन्थान् शब्दयति,

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन-धर्मघोष स्थविरने(धम्मरुइ अणगार) धर्मरुचि अनगार को (चिरगय जाणित्ता) बहुत देर के गये हुए जानकर (समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यारबाद (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविरे (धम्मरुइ अणगार) धर्मरुचि अनगारने (चिरगय जाणित्ता) बहु वखतथी बहार गयेला जाणीने

शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः=उक्तवन्तः, एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकस्य तिक्तकटुकतुम्बकस्य यावत्-स्नेहावगाढस्य 'णिसिरणट्ठयाए' निसृजनार्थं बहिर्निर्गतश्चिरगतः=तस्मिन् गते सति बहुतरः कालो व्यतीत इत्यर्थः । तत्-तस्माद् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं=सम्यगन्वेषणं कुरुत । तत खलु ते श्रमणा निर्ग्रन्था यावत् प्रतिशृण्वन्ति=तथा करिष्यामीत्युक्त्वा तामाज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनि

वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइयस्स अणगारस्स सव्वओ समंता गवेसणं करेह) श्रमण निर्ग्रन्थों को बुलाया । बुलाकर उनोंने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार आज मासखमण की पारणा के दिन शारदिक तिक्त कटुवी तुमडी का बहु संभार संभृत शाक कि जिसके ऊपर घृत तर रहा था लाये थे-मैंने उसे परिष्ठापन के लिये उन्हें आज्ञा दिया सो वे उसे परिष्ठापन करने के लिये यहां से बाहिर चले गये-गये उन्हें बहुत देर हो गई-वे अभीतक नहीं आये इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और धर्मरुचि अनागार की सब तरफ चारो दिशाओ मे मार्गणा एवं गवेषणा करो । (तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

(समणे निग्गंथे सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गयाए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह)

શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણની પારણાના દિવસે શારદિક તિક્ત કડવી તૂમડીનુ સરસ વઘારેલુ ઉપર ઘી તરતું શાક આહાર માટે લાવ્યા હતા તેઓને મે પ્રતિષ્ઠાપનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન માટે અહીંથી બહાર ગયા છે તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે, હજી તેઓ આવ્યા નથી એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને ધર્મરુચિ અનગારની ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો

(तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

पगइभद्दए जाव विणीए मासं मासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी जाव निसीट्ठ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्ध महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ त विरत्थुणं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंमि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएणं ते ' इत्यादि । ततः खलु=इतश्च ते धर्मघोषा स्थविरा धर्मरुचिमनगारं चिरं गतं बहुकालतो गतं ज्ञात्वा श्रमणान् निर्ग्रन्थान् शब्दयति,

तएणं ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन-धर्मघोष स्थविरने(धम्मरुइ अणगारं) धर्मरुचि अनगार को (चिरगयं जाणित्ता) बहुत देर के गये हुए जानकर (समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव

तएणं ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ (ते धम्मघोसा थेरा) તે ધર્મઘોષ સ્થવિરે (धम्मरुइं अणगारं) ધર્મરુચિ અનગારને (चिरगयं जाणित्ता) બહુ વખતથી બહાર ગયેલા જાણીને

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाण-मत्ययिकं=परिनिर्वाण मरणं तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव तदेव मत्ययोहेतुर्यस्य स परिनिर्वाणमत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डकं=वस्त्रपात्रादिक गृह्णन्ति,गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति,उपागत्य गमनागमनम्= इर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्रम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् ! वय युष्मा-कमन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गता', प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वहीं पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायो-त्सर्ग किया। (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने उन धर्मरुचि अनागार के आचार भाडको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा लिया-उठाकर वे जहा धर्मघोष स्थविर थे-वहा आये (उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे-तुब्भ अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-रतेण धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगएण भत्ते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभडए - तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गथीओ य सद्दावेति-सद्दावित्ता एव वयासी) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् ! हम लोग आपके पास से यहा से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

રીતે કહીને તેમણે ત્યાજ મૃત શરીરને વોસરાવા રૂપ કાયોત્સર્ગ કર્યો (करित्ता० उवागच्छ०) કાયોત્સર્ગ કરીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના આચાર ભાડકાને તેમજ વસ્ત્રોને લઈલીધા અને લઇને જ્યા ધર્મઘોષ સ્થવિર હતા ત્યા આવ્યા (उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे तुब्भ अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगएणं भते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए तएणं त धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गथे निग्गथीओ य सद्दावेंति-सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યા આવીને તેમણે ઈર્યાપથિક પ્રતિક્રમણ કર્યું પ્રતિક્રમણ કરીને તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે સ્વામિન્ ! અમે લોકો અહીંથી આપની પાસેથી ગયા અને જઈને સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનની ચોમેર ફરતા ફરતા ધર્મરુચિ

कस्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्तात् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं= स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य कालकरणस्थानं तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेरनगारस्य शरीरकं 'निष्पाणं' निष्प्राणं=प्राणरहितं, 'निश्चेष्टं' निश्चेष्टं=चेष्टारहितं 'जीवविप्पजढं' जीवविप्रमुक्तं=जीवहीनं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा ! हा ! अहो ! इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्टं जातं यद्धर्मरुचिनगारो मृतः, 'तिकट्टु' थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वाओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अकज्जमित्ति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति)

उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब प्रकार से मार्गणा गवेषणा की। इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था-वहां आये वहां आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगार के शरीर को प्राण-रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा। देखकर के सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बडा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया।

थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स, सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अकज्जमित्ति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति)

તે નિર્ગ્રંથ શ્રમણોએ પોતાના ધર્માચાર્યની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસેથી નીકળીને ધર્મરુચિ અનગારની બધી રીતે ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરવા લાગ્યા આ રીતે માર્ગણ ગવેષણ કરતા જ્યા તે સ્થડિલ હતુ-ધર્મરુચિ અનગારના મૃત્યુનુ સ્થાન હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના શરીરને નિષ્પ્રાણ નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ જોયુ આ દૃશ્ય જોતાની સાથે જ તેઓના મુખથી હાય ! હાય ! ના ખેદ સૂચક શબ્દો નીકળી પડયા તેઓ કહેવા લાગ્યા કે અહો બહુ જ ખોટું થયુ છે-ધર્મરુચિ અનગારનું થયુ છે. આ

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाण-मत्ययिकं=परिनिर्वाण मरण तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव तदेव मत्ययोहेतुर्यस्य स परिनिर्वाणमत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डक=वस्त्रपात्रादिकं गृह्णन्ति,गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति,उपागत्य गमनागमनम्= इर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् ! वय युष्मा-कमन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गता', प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वही पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायो त्सर्ग किया। (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने उन धर्मरुचि अनागार के आचार भाडको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा लिया-उठाकर वे जहा धर्मघोष स्थविर थे-वहा आये (उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे-तुब्भ अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-रतेण धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगएणं भत्ते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभडए - तएण ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गथे निग्गथीओ य सद्दावेति-सद्दावित्ता एव वयासी) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् ! हम लोग आपके पास से यहा से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

રીતે કહીને તેમણે ત્યાજ મૃત શરીરને વોસરાવા રૂપ કાયોત્સર્ગ કર્યો (करित्ता० उवागच्छ०) કાયોત્સર્ગ કરીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના આચાર ભાડકાને તેમજ વસ્ત્રોને લઈલીધા અને લઇને જ્યા ધર્મઘોષ સ્થવિર હતા ત્યા આવ્યા (उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे तुब्भं अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेण धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगएणं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए तएणं त धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गथे निग्गथीओ य सद्दावेंति-सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યા આવીને તેમણે ઈર્યાપથિક પ્રતિક્રમણ કર્યું પ્રતિક્રમણ કરીને તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે સ્વામિન્ ! અમે લોકો અહીંથી આપની પાસેથી ગયા અને જઈને સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનની ચોમેર ફરતા ફરતા ધર્મરુચિ

कस्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्तात् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं-स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य कालकरणस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेरनगारस्य शरीरकं 'निष्पाण' निष्प्राणं=प्राणरहितं, 'निश्चेष्ट' निश्चेष्टं=चेष्टारहितं 'जीवविप्पजढं' जीवविमुक्तं=जीवहीनं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा ! हा ! अहो ! इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्टं जातं यद्धर्मरुचिनगारो मृतः, 'तिकट्टु' थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स-अणगारस्स सव्वाओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अकज्जमित्ति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं-करेंति)

उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब प्रकार से मार्गणा गवेषणा की। इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था-वहा आये वहा आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगोर के शरीर को प्राण-रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा। देखकर के सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बडा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया।

थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धण्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स, सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवं विप्पजढं पासंति, पासित्ता हाहा अकज्जमित्ति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति)

તે નિર્ગ્રંથ શ્રમણોએ પોતાના ધર્માચાર્યની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસેથી નીકળીને ધર્મરુચિ અનગારની બધી રીતે ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરવા લાગ્યા આ રીતે માર્ગણ ગવેષણ કરતા જ્યા તે સ્થડિલ હતુ-ધર્મરુચિ અનગારના મૃત્યુનુ સ્થાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના શરીરને નિષ્પ્રાણ નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ જોયુ આ દૃશ્ય જોતાની સાથે જ તેઓના મુખથી હાય ! હાય ! ના ખેદ સૂચક શબ્દો નીકળી પડયા તેઓ કહેવા લાગ્યા કે આ બહુ જ ખોટુ થયુ છે-ધર્મરુચિ અનગારનુ

'परिपेरंतेण' परिपर्यन्तेन=चतुर्दिक्षु परिभ्रमन्तो धर्मरुचेरनगारस्य 'सव्वओ समंता' सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं तत्रोपागच्छामः, उपागत्य यावद् इह हव्यमागताः स कालगतः खलु हे भदन्त ! धर्मरुचिरनगारः, इमानि 'से' तस्य, आचारभाण्डकानि । ततः खलु ते धर्मघोषा स्थविराः 'पुव्वगए' पूर्वगते=दृष्टिवादान्तर्गतश्रुताधिकारविशेषे उपयोगं गच्छन्ति=लगयन्ति यदा धर्मरुचिराहारमानेतुं नगर्यां गतस्तदा कस्य गृहे गतः ? केनेदमाहारदत्तं' इत्यादि ज्ञातुं स्वकीयोपयोगं नयन्तीत्यर्थः, गत्वा-स्वकीयोपयोगं लगयित्वा, श्रमणान् निर्ग्रन्थान् निर्ग्रन्थीश्च शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—एवं खलु हे आर्याः ! ममान्तेवासी=शिष्यः, धर्मरुचिर्नामाऽनगारः 'पगइभद्द' प्रकृतिभद्रकः=प्रकृत्या

दिशाओं में फिरते २ धर्मरुचि अनगार की सर्व प्रकार से मार्गण, गवेषणा करने लगे । मार्गणा, गवेषणा करते हुए हम लोग फिर उस स्थान पर पहुँचे जहां धर्मरुचि अनगार का शव पडा हुआ था वहां से अभी २ हम लोग आरहे हैं । हे भदन्त ! वे धर्मरुचि अनगार कालगत हो गये हैं-ये उनके आचार भाण्डक वस्त्र पात्र हैं । इस के बाद उन धर्मघोष स्थविर ने दृष्टि वाद के अतर्गत श्रुताधिकार विशेष में अपना उपयोग लगाया-तो उन्हे यह ज्ञात हो गया कि जब धर्मरुचि आहार लेने के लिये नगरी में गये तो वे किसके घर गये, किस ने यह आहार उन्हें दिया इत्यादि । अपने उपयोग से इस बात को जानकर उन्होंने निर्ग्रन्थ श्रमणों और निर्ग्रन्थ श्रमणियों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(एव खलु अज्जो मम अंतेवासी, धम्मरुई, णाम

અનગારની વિધી રીતે માર્ગણા ગવેષણા કરવા લાગ્યા માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરતા અમે લોકો તે જગ્યાએ પહોંચ્યા જ્યા ધર્મરુચિ અનગારનુ મડદુ પડ્યુ હતુ અમે લોકો અત્યારે ત્યાથી જ આવી રહ્યા છીએ હે ભદંત ! તે ધર્મરુચિ અનગાર મરણ પામ્યા છે તેઓશ્રીના આ આચાર ભાડક વસ્ત્રપાત્રો છે, ત્યારપછી તે ધર્મઘોષ સ્થવિરે દૃષ્ટિવાદના અતર્ગત શ્રતાધિકાર વિશેષમા પોતાનો ઉપયોગ લગાવ્યો તેમાથી તેઓને આ વાતની જાણ થઇ કે જ્યારે ધર્મરુચિ આહાર લાવવા માટે નગરીમા ગયા હતા, ત્યારે તેઓ કોના ઘેર ગયા હતા, આ આહાર તેમને કોણે આપ્યો હતો વગેરે પોતાના ઉપયોગથી આ બધી વિગત જાણીને તેમણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણો અને નિગ્રંથ શ્રમણીઓને પોતાની પાસે બોલાવી અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एव खलु अज्जो मम अंतेवासी, धम्मरुई णाम अणगारे

स्वभावेन भद्रकः-शान्तः, यावद्-यावत् करणादिदं द्रष्टव्यम्-'पगइ उवसंते, पगइ-पयणु कोहमाणमायालोहे, मिउमद्दवसंपण्णे, आलीणे, भद्दए, इति। प्रकृत्युपशान्तः, प्रकृति प्रतनुक्रोधमानमाया लोभः, मृदु मार्दवसंपन्नः, आलीनः, भद्रकः, इति। विनीतः 'मास मासेणं' मास व्याप्य मासेन=मासक्षपणनामकेन, अनिक्षिप्तेन=अन्तरहितेन, अविश्रान्तनेत्यर्थः तपः कर्मणा विचरन् पारणकदिने यावत्-नागश्रिया ब्राह्मण्यागृहमनुप्रविष्टः, ततस्तदनन्तरं सा नागश्री ब्राह्मणी यावत्-शारदिकं तिक्तालाबुकं 'निसिरइ' निसृजति=पात्रे निक्षिपतिस्म। ततः धर्मरुचि-

---

अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मास मासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे तएणं सा नागसिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु जाव काल अणवकंखेमाणे विहरइ, सेणं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढं सोहम्मं जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्णत्ता) आर्यो! सुनो बात ऐसी है मेरे अन्तेवासी शिष्य-धर्मरुचि अनगार स्वभाव से ही भद्र परिणामी थे। यावत् शब्द से इस पाठ का यहां संग्रह हुआ है "पगइ उवसंते पगइ पगणु कोहमाणमाया लोहे मिउमद्दवसंपण्णे आलीणे भद्दए"। ये अविश्रान्त अंतर रहित-मास मासखमण पारणा करते थे। आज उनके पारणा का दिन था-सो गोचरीके लिये भ्रमण करते हुए ये नागश्री ब्राह्मणीके घर

विणीए मास मासेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे तएणं सा नागसिरि माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरूई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु जाव काल अणवकंखेमाणे विहरइ, सेणं धम्मरूई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता अलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्मं जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्णत्ता)

આર્યો! સાભળો, વાત એવી છે કે મારા અંતેવાસી શિષ્ય-ધર્મરુચિ અનગાર સ્વભાવથી જ ભદ્ર પરિણામી હતા યાવત્ શબ્દથી અહીં આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે-"पगइ उवसंते" (पगइपयणुकोहमाणमायालोहे मिउमद्दव संपण्णे आलिणे भद्दए) તેઓ અવિશ્રાંત-અંતર રહિત-(નિરંતર) માસ ખમણ કરતા રહેતા હતા આજે તેમનો પારણાનો દિવસ હતો, તેઓ આહાર માટે ક્ષમણ કરતા નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેર ગયા હતા બ્રાહ્મણીએ શારદિક તિક્ત

रनगारो यथापर्याप्तमितिकृत्वा=क्षुधानिवृत्तये पूर्णमिति मत्वा यावत्-कालम् 'अत्तणकखेमाणे' अनवकाङ्क्षमाणः विहरति, स खलु धर्मरुचिरनगारो बहूनि वर्षाणि श्रमण्यपर्यायं पालयित्वा, आलोचित प्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे काल कृत्वा ऊर्ध्वं 'सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे' सौधर्मादयो द्वादशदेवलोकाः, ततः उर्ध्वं नवग्रैवेयकानि तदुपरि यावत् सर्वार्थसिद्धे, महाविमाने देवत्वेनोपपन्न=देवभवं प्राप्तवान्। तत्र=तस्मिन् सर्वार्थसिद्धविमाने, खलु 'अजहण्णमणुक्कोसेण' अजघन्यानुत्कृष्टेन=जघन्योत्कृष्टवर्जितेन तत्र हि सर्वेषां देवानां स्थितिः समानैव भवति न तु न्यूनाऽधिककालतया विषमेतिभावः। त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र धर्मरुचेरपि देवस्य त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, स खलु धर्मरुचि र्देवस्तस्माद् देवलोकाद्=सर्वार्थसिद्धविमानाद् यावद् च्युत्वा यावद् महाविदेहे वर्षे सिज्झिहिइ' सेत्स्यति, सिद्धिं प्राप्स्यति। तत्=तस्माद् विगस्तु खलु हे

पहुँचे। यावत् उसने शारदिक तिक्त कडवे तुंबे की शाक उनके पात्र में बोहराया धर्मरुचि अनगार ने उसको क्षुधानिवृत्ति के लिये पर्याप्त मान कर लिया। उन धर्मरुचि अनगारने अनेक वर्षों तक श्रमण्य पर्याय का पालन किया और पालन करके आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे समाधि में लीन हो गये। काल अवसर काल करके अब वे सौधर्म आदि १२ देवलोको से ऊपर नवग्रैवेय को से भी आगे जो सर्वार्थसिद्धि नाम का विमान है कि जिसमें ३३ सागर की स्थिति है-और यह स्थिति जहा सब देवा की समान हैं उसमें ३३ सागर की स्थितिवाले देव हुए हैं। "अजहण्णमणुक्कोसेग" जघन्य और उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपम की स्थिति है। (से ण धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ, त विरत्थु

કડવી તૂબડીનુ શાક તેમના પાત્રમા વહોરાવ્યુ ધર્મરુચિ અનગારે તેને ક્ષુધા નિવૃત્તિ માટે પર્યાપ્ત જાણીને તેને સ્વીકારી લીધુ તે ધર્મરુચિ અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યુ છે અને પાલન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાત થઇને તેઓ સમાધિમા લીન થઇ ગયા છે કાળ સમયે કાળ કરીને હવે તેઓ સૌધર્મ વગેરે બાર દેવલોકોથી ઉપર નવ ગ્રેવેયકોથી પણ આગળ જે સર્વાર્થસિદ્ધિ નામે વિમાન છે કે જેમા ૩૩ સાગરની સ્થિતિ છે અને આ સ્થિતિ જના બધા દેવોની સરખી છે, તેઓ તેમા ૩૩ સાગરની સ્થિતિવાળા દેવ થયા છે "अजहण्णमणुक्कोसेण" જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(सेग धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ,

आर्याः ! नागश्रिय ब्राह्मणीमधन्यामपुण्या यावद् दुर्भग निम्बगुलिकाम्, यथा-खलु नागश्रिया ब्राह्मण्या तथारूप' प्रकृतिभद्रत्वादिगुणयुक्तः साधु धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकेन तिक्तालाबुकेन यावत् स्नेहावगाढेनाऽकाल एव जीविताद् व्यपरोपितः ॥सू०४॥

मूलम्-तएणं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एवमाइक्खंति-धिरत्थु णं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं तेसिं समणाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एव भासइ

ण अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगसि सालइए णं जाव गाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए) वे धर्मरुचि देव इस देवलोक से चवकर यावत् महाविदेह क्षेत्र से सिद्धिको प्राप्त करेंगे आर्यों ! अधन्य, अपुण्य यावत् दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय उस नागश्री ब्राह्मणी को धिक्कार हो-कि जिसने तथारूप, प्रकृति भद्रत्वादि गुणों से सपन्न साधु धर्मरुचि अनगार को मासखमण के पारणा के दिन शारदिक तिक्त कडवी तुंबी का शाक यावत् स्नेहावगाढ बना-कर दिया-कि जिससे वे अकाल में मरण को प्राप्त हुए ॥ सू० ४ ॥

त धिरत्थुण अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिंबोलियाए जाए ण तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगसि सालइएण जाव गाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए)

તે ધર્મરુચિ દેવ તે દેવલોકથી ચવીને યાવત્ મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી સિદ્ધિને મેળવશે હે આર્યો ! અધન્ય, અપુણ્ય, યાવત્ દુભગ નિંબગુલિકા જેવી અના-દરણીય તે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને ધિક્કાર છે કે જેણે તથારૂપ, પ્રકૃતિ ભદ્રત્વ વગેરે ગુણોવાળા સાધુ ધર્મરુચિ અનગારને માસ ખમણના પારણાના દિવસે શારદિક તિક્ત કડવી તૂંબડીનુ શાક-કે જે સરસ વઘારેલુ, જેની ઉપર ઘી તરતું હતું-વહોરાવ્યુ, જેને લીધે અકાળે જ તેઓનુ મરણ થયુ. ॥ સૂત્ર "૪" ॥

धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोवित्तए, तएणं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एवं वयासी–हं भो ! नागसिरी ! अपत्थिय पत्थिय दुरंत पत-लक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाव णा तुमं तहारूवे साहू साहूरूवे मास-खमणपारणासि सालइएणं जाव ववरोवित्ए, उच्चावयाहिं अक्कोसणाहि अक्कोसेंति उच्चावयाहिं उद्दंसणाहि उद्दंसेंति उच्चावयाहि णिब्भत्थणाहि णिब्भत्थंति उच्चावयाहि णिच्छोड-णाहि निच्छोडेंति तज्जेंति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निज्झुभंति, तएण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चर चउम्मुह० बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी२ दडि-खडनिवसणा खडमल्लयखडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाचडगरेण अन्निज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देहं बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ, तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं जहा–सासे कासे जोणिसूलं जाव कोढे, तएणं सा नागसिरी माहणी

सोलसहि रोयायकेहि अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा काल-मासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं वावीससागरो-वमट्ठिइएसु नेरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि। ततः खलु ते श्रमणाः निर्ग्रन्था धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य चम्पायां शृङ्गाटक-यावन्महापथेषु बहु-जनस्य एवमाख्यान्ति धिगस्तु खलु हे देवानुप्रियाः! नागश्रियं ब्राह्मणीं यावद् दुर्भगनिम्बगुलिकाम्, यया खलु तथारूपः साधुः साधुरूपो धर्मरुचिरनगारः शारदिकेन यावत्तिक्तालाबुकेन जीवितादव्यपरोपितः। ततः खलु तेषां श्रमणानामन्तिके

'तएणं ते समणा निग्गंथा' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते समणा निग्गंथा धम्मघोसा थेराणं अंतिएएयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एवं माइक्खंति-धिरत्थुणं देवाणुप्पिया! नागसिरीए जाव णिंबोलियाए जाएणं तहारूवे साहू साहुरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ) उन श्रमण निर्ग्रन्थोंने धर्मघोष स्थविर के मुख से इस समाचार को सुनकर और उसका हृदय में विचार कर चंपानगरी में शृंगाटक यावत् महापथों में बहुजनों से ऐसा कहा हे देवानुप्रियों! ब्राह्मणी नागश्री को धिक्कार है यावत् निम्ब की निंबोली जैसी अनादरणीय है कि जिसने तथा रूप साधु-साधुरूप धर्मरुचि अनगार को शारदिक यावत् कडवे तुम्बे का शाक देकर जीवन से रहित करदिया है। (तएणं तेसिं समणाणं अं-

'तएणं ते समणा निग्गंथा' इत्यादि—

ટીકાર્થ (तएणं) ત્યારબાદ

(ते समणा निग्गंथा धम्मघोसा थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एवं माइक्खंति-धिरत्थुणं देवाणुप्पिया! नाग-सिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाएणं तहारूवे साहू साहुरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ)

તે શ્રમણ નિર્ગ્રંથોએ ધર્મઘોષ સ્થવિરના મુખથી આ વાત સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ચંપાનગરીમાં શૃંગાટક મહાપથો વગેરેમાં ઘણા માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! બ્રાહ્મણી નાગશ્રીને ધિક્કાર છે અને તે લીમડાની લીંબોળીની જેમ અનાદરણીય છે કેમકે તેણે તથારૂપ સાધુ સાધુ રૂપ ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક કડવી તુંબડીનું શાક આપીને મારી નાખ્યા છે

एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य बहुजनोऽन्योन्यस्य=परस्परस्य एवमाख्याति-एव भाषते एव प्रज्ञापयति, एव प्ररूपयति धिगस्तु खलु नागश्रिया ब्राह्मण्या:, यया धर्मरुचिरनगार शारदिकेन यावद् जीवितात् व्यपरोपित: । तत: खलु ते ब्राह्मणा चम्पायां नगर्यां बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, आशुरुसा:=शीघ्रं क्रोधाविष्टा: यावत् मिसमिसन्त =क्रोधानलेन प्रज्वलन्त ,यत्रैव नागश्रीर्ब्राह्मणी,तत्रोपागच्छन्ति,

तिए एयमट्ठ सोच्चा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहण चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति) उन श्रमणजनों के मुख से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण करके अनेक मनुष्य आपस में इस प्रकार कहने लगे बोलने लगे प्रज्ञापना करने लगे प्ररूपणा करने लगे कि ब्राह्मणी नागश्री को धिक्कार है जिसने धर्मरुचि अनगार को शारदिक-तिक्त कडवे तुंबे के शाक से जीवन रहित करदिया है । इस प्रकार उन ब्राह्मणों ने तथा सोम, सोमदत्त, सोमभूति आदि ने जब चपानगरी में अनेक मनुष्यों के मुख से इस बात को सुना-तो वे सुनकर और उसे अपने २ हृदय में धारण कर इकदम क्रोध से तम तमा उठे और यावत् क्रोधानल से जलते हुए जहा नागश्री ब्राह्मणी थी वहा आये-

(तएणं तेसिं समणाणं अतिए एयमट्ठ सोच्चा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ धिरत्थुण नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएण ते माहणा चपाए नयरीए बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छति)

તે શ્રમણ લોકોના મુખથી આ સમાચાર સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને ઘણા માણસો એકબીજાની સાથે આ રીતે વાતચીત કરવા લાગ્યા, પ્રજ્ઞાપના કરવા લાગ્યા, પ્રરૂપણા કરવા લાગ્યા કે બ્રાહ્મણી નાગશ્રીને ધિક્કાર છે જેણે ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક-તિક્ત કડવી તૂબડીના શાકથી મારી નાખ્યા આ રીતે તે બ્રાહ્મણોએ એટલે કે સોમ, સોમદત્ત અને સોમભૂતિએ જ્યારે ચપા નગરીના અનેક માણસોના મુખથી આ વાત સાભળી ત્યારે તેઓ સાંભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને એકદમ ક્રોધાવિષ્ટ થઈ ગયા અને ક્રોધરૂપી અગ્નિમા સળગતા જ્યા નાગશ્રી બ્રાહ્મણી હતી ત્યા આવ્યા.

उपागत्य नागश्रिय ब्राह्मणीमेवमवादिषुः-उक्तवन्तः, ह भो ! नागश्रीः ! अप्रार्थित प्रार्थिके ! मरणाभिलाषिणि ! दुरन्तप्रान्तलक्षणे ! हीनपुण्यचातुर्दशिके ! धिगस्तु खलु तव अधन्यायाः अपुण्यायाः यावद्-दुर्भगनिम्बगुलिकायाः, अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी आर्षत्वात्, यया खलु त्वया तथारूपः साधु साधुरूपो धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकेन तिक्तालाबुकेन यावद् व्यपरोपितः, 'उच्चावयाहिं' उच्चावचाभिः=उच्चनीचाभिः 'अक्कोसणाहिं' आक्रोशनाभिः=निन्दावचैः नीचाऽसि त्वमित्यादिभिर्वचनैः 'अक्कोसंति' आक्रोशन्ति-फटकारयन्ति उच्चावचाभिः उद्धंसनाभिः दुष्कुलोत्पन्नाऽसित्यादिवचनैः, 'उद्धंसेंति' उद्धंसयन्ति=कुलादि-

(उवागच्छित्ता णागसिरी माहणीं एव वयासी) ह भो ! नागसिरी ! अपत्थियपत्थिय दुरतपतलक्खणे, हीण पुण्णचाउद्दसे धिरत्थुण तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए ण तुमे तहारूवे साहू साहूरूवे मास खमणपारणंसि सालइएण जाव ववरोविए उच्चावएयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसति उद्धंसेति) वहा आकर न्होंने नागश्री ब्राह्मणीसे कहा अरीओ नागश्री ! अरी अप्रार्थित प्रार्थके। हे दुरन्तप्रान्त लक्षणे। ओ हीन पूण्य चातुर्दशिके ! तुझ अपुण्य अधन्या को धिक्कार हो ! तू दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय है जो तूने मासखमणके पारणा के दिन घरपर आहार लेने के निमित्त आये हुए तथा रूप साधुरूप धर्मरुचि अनगार को शारदिक तिक्त कडवे तुंबे का शाक देकर जीवन से रहित कर दिया है। तू बडी नीच है इत्यादि रूप ऊँच, नीच आक्रोश निन्दा-वचनों से उन्हों ने उसे फटकारा तू नीच खानदान की

(उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एव वयासी-ह भो ! नागसिरी ! अपत्थिय पत्थिय दुरतपतलक्खणे, हीनपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु ण तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए ण तुमे तहारूवे साहू साहूरूवे मासखमणपारणंसि सालइएण जाव ववरोविए उच्चावएयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसति उद्धंसेति) ત્યા આવીને તેમણે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને કહ્યુ કે-કે મુર્ખ ઓ નાગશ્રી ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થકે ! હે દુરત પ્રાત લક્ષણે ! ઓ હીનપુણ્ય ચાતુર્દશિકે ! તારા જેવી પાપણી અધન્યાને ધિક્કાર છે તુ દુર્ભગ નિંબગુલિકા (લિંબોળી જેવી અનાદરણીય છે કેમકે તેણે માસ-ખમણના પારણાના દિવસે ઘેર આહાર લેવા માટે આવેલા તથારૂપ સાધુ સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક તિકત કડવી તૂબડીનુ શાક આપીને મારી નાખ્યા છે તુ સાવ નીચ છે, આમ ઘણા ઉચ-નીચ આક્રોષ-નિંદા-ના વચનોથી તેઓએ તેને ફીટકારી તુ નીચ

गौरवात्पातयन्ति, उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिः=ऊंचनीचताडनैः 'णिब्भत्थंति' निर्भर्त्सयन्ति, उच्चावचाभि' 'णिच्छोडणाहि' निश्छोटनाभि.=' अमद् गृहान्निर्गच्छ निस्सर इत्यादि वचने 'निच्छोडेंति' निश्छोटयन्ति = गृहान्निर्गमयोत्तोदनेन भीषयन्ति, 'तज्जेंति' तर्जयन्ति 'शाम्यसि पापे!' इत्यादिवाक्यैरंगुली प्रदर्शनपूर्वक ताडनमय मदर्शयन्ति, 'तालेंति' ताडयन्ति चपेटादिभिः, तर्जयित्वा ताडयित्वा, स्वकाद् गृहाद् 'निच्छुभंति' निस्सिपन्ति = बहिर्नि'-सारयन्ति। ततस्तदनन्तर सा नागश्रीः स्वकाद् गृहार 'निच्छूढा समाणा' निस्सिप्तामती=निस्सरितासती, चम्पाया नगर्या. शृङ्गाटक त्रिकचतुष्कचत्वरचतुर्मुखमहापथपथेषु यत्र यत्र

है इस तरह की ऊँची नीची वाणियों से उसे भला बुरा कहा कुलादि के गौरव से उसे पतित कहा। (उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंति, तज्जेंति, तालेंति, तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति) ऊँचे नीचे कठोर वचनों से उसका तिरस्कार किया। भले बुरे वचनों से उसे डरवाया-हमारे घर से तू बाहिर निकल जा इत्यादि भयोत्पादक शब्दों से उसे भय दिखलाया। ओ पापिनी! तूजे मालूम पड जायगा, इत्यादि वाक्यों से अंगुली दिखा २ कर उसे मारने का भय दिखलाया और चपेटा-थप्पड आदि से उसे पीटा भी। और पीटपाट कर उसे उन्होंने फिर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। (तएणं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चपाए नगरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुह०

આનદાનની છે, આ જાતના ઉચ્ચા નીચા વચનોથી તેણે ખોટી ખરી સભળાવી કુળ વગેરેના ગૌરવથી તેણે પતિતા કહ્યુ

(उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थति, उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंति, तज्जेंति, तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभति)

ઉચ્ચા નીચા વચનોથી તેનો તિરસ્કાર કર્યો, ખોટા ખરા વચનોથી તેને બીવડાવી ' અમારા ઘરથી તુ બહાર નીકળી જા ' વગેરે ભયોત્પાદક વચનોથી તેણીને બીક બતાવી 'એ પાપણી! તને મજા બતાવવી દઈશું?' વગેરે વચનોથી સામી આગળી કરીને તેને મારી નાખવાની બીક બતાવવા લાગ્યા અને થપ્પડ લાફા વગેરેથી તેને માર પણ માર્યો, મારપીટ કરીને તેઓએ તેને પોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકી

(तएण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चपाए नगरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुह० बहुजणेण

गच्छति तत्र तत्र सर्वत्र बहुजनेन 'हीलिज्जमाणी' हील्यमाना-जात्याद्युद्घाटनेन, 'खिसिज्जमाणी' निंद्यमाना-परोक्षदूषणेन, 'निंदिज्जमाणी' निंद्यमाना-तत्परोक्षम् 'गरहिज्जमाणी' गर्ह्यमाना-तत्समक्षमेव 'तज्जिज्जमाणी' तर्ज्यमाना-अङ्गुलीचालनेन भयमुत्पादयमाना 'पव्वहिज्जमाणी' प्रव्यथ्यमाना यष्ट्यादिताडनेन 'धिक्कारिज्जमाणी' धिक्क्रियमाणा 'थुक्कारिज्जमाणी' थुत्क्रियमाणा क्वापि

बहुजणेण हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी, पव्वहिज्जमाणी, धिक्कारिज्जमाणी, थुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाण वा निलय वा अल्लमाणी २ दंडि खडा निवसणा खंड खडमल्लय खंड खंड घडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाउगरेणं अब्भिज्जमाणमग्गा गेह गेहेणं देह बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ) अपने घर से बाहिर निकल कर वह नागश्री चंपानगरी के शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर चतुर्मुख महापथ आदि मार्गों पर जहां २ गई, वहां २ सर्वत्र अनेक जनों ने उसकी "यह नीचजाति की है" इत्यादिरूप से हीलना की। सब के सब उसपर बहुत क्रोधित हुए सबने उसकी परोक्ष में निंदा की। सामने सबने उसे भला बुरा कहा। अंगुली संचालन पूर्वक उसे मारने पीटने का भय दिखलाया। किन्हीं २ ने उसे लकडी आदिसे मारा पीटा भी। अनेकोंने उसे धिक्कारा। कितनेक जनों ने उसे देखकर उसपर थूक भी दिया। इस तरह की परिस्थिति

निंदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी, धिक्कारिज्जमाणी, थुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाण वा निलय वा अल्लमाणी २ दंडिखडा निवसणा खडमल्लय खड खड घडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसामच्छियाचउगरेणं अब्भिज्जमाणमग्गा गेह गेहेणं देह बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ)

પોતાના ઘરથી બહાર નીકળીને તે નાગશ્રી ચંપા નગરીના શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, ચતુર્મુખ, મહાપથ વગેરે માર્ગો ઉપર જ્યા ગઈ ત્યા ત્યા બધે ઘણા માણસોએ તેની "આ નીચ જાતની છે" વગેરે વચનોથી હીલના કરી બધા માણસો તેની ઉપર ખૂબ જ ગુસ્સે થયા તેની ગેર હાજરીમા લોકોએ તેની ખૂબ નિંદા કરી, તેની સામે તેને બધાએ ખરી ખોટી સંભળાવી, આંગળી ચીંધી ચીંધીને તેની સાથે મારપીટ કરવાની બીક બતાવવા લાગ્યા કોઈ કોઇએ તો તેને લાકડી વગેરેનો ફટકો પણ માર્યો, ઘણા બધાએ તેને ધિક્કારી, કેટલાક માણસોએ તેને જોઇને તેની ઉપર થૂકી દીધુ.

स्थानं वा निवासार्थं निलय वा-अल्पकालविश्रामार्थस्थानम्, अल्पमाना २=अल्पा पुनर्वती २, 'दड्डीखडनियसगा' दण्डिखण्डनिवसना=दण्डि-कृतमस्थान जीर्णवस्त्र, तस्य खण्ड, तदेव निवसन-परिधान यस्याः सा तथा, 'खडमल्लयखडघडगहत्थगया' खण्डमल्लक-खण्डघटहस्तगता=खण्डमल्ल =भिन्नं शरावखण्ड खण्डघट कश पानार्थं घटखण्ड, तद् द्वय हस्तगत यस्या सा तथा, 'फुट्टहडाहडसीसा' स्फुटितहडाहडशीर्षा-स्फुटित स्फुटितकेश 'हडाहडम्' अत्यर्थं शीर्षं शिरो यस्याः सा तथा, विकीर्णकेशवतीत्यर्थ 'मच्छियाचडगरेण अभिज्जमाणमग्गा' मक्षिका चटकरेण अन्वीयमानमार्गा मक्षिकासमूहेन अनुगम्यमानमार्गा शरीरवस्त्रादीना मलिनत्वात् मक्षिकास्तत्पृष्ठतो धावतीत्यर्थ. गेह गेहेण देह बलियाए' गृह गृहेण देहबलिकया=प्रतिगृह देहनिर्वाहहेतोः उदरपूर्त्यर्थमेवेत्यर्थ'-वृत्तिं 'कप्पेमाणी' कल्प्यमाना=कुर्वाणा सती विहरति। ततस्तदनन्तर खलु तस्या नागश्रिया आत्मन्यस्मिन् भवे एव षोडश रोगातङ्काः प्रादुर्भूताः, तद्यथा-(१) श्वासः, (२) कास, (३) ज्वरः, 'जावकुढे' यावत्-कुष्ठम्, (४) दाहः, (५) कुक्षिशूलम्, (६)

का सामना करती हुई वह कहीं पर भी बैठने के लिये स्थान को, और ठहरनेके लिये-विश्राम करनेके लिये-जगह भी को नही प्राप्त करती फटे हुए जीर्ण वस्त्र के टुकडे को पहिरे हुए भिक्षा के लिये मिट्टी के खप्पर को और पानी के लिये फूटे घडे के टुकडे को हाथ में लिये हुए इधर उधर एक घर से दूसरे घर पर उदर पूर्ति के लिये फिरने लगी। इसके शिर के बाल ईधर उधर बिखरे हुए रहते थे। शरीर और वस्त्रादिकों के मैले कुचैले होने के कारण मक्षिकाओं का समूह इसके पीछे पीछे २ भागता रहता था। (तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवसि चेव सोलसरोगायंका पाउब्भूया- त जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव

આવી પરિસ્થિતિનો મુકાબલો કરતી કોઈ પણ સ્થાને બેસવાની કે રોકાવાની કે વિશ્રામ કરવાની જગ્યા તે મેળવી શકી નહિ, અને છેવટે ફાટેલા જૂના વસ્ત્રોના કકડાને વીંટાળીને ભિક્ષાના માટે માટીનુ ખપ્પર અને પાણીના માટે ફૂટી માટલીના કકડાને હાથમા લઇને પેટ ભરવા માટે આમતેમ એક ઘરથી બીજે ઘેર ભમવા લાગી તેના માથાના વાળો આમ તેમ અસ્ત વ્યસ્ત રહેતા હતા, શરીર અને વસ્ત્રો વગેરે મેલા હોવાને લીધે માખીઓના ટોળેટોળા તેની પાછળ પાછળ ભમતા રહેતા હતા

(तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवसि चेव सोलसरोयायंका पाउब्भूया-त जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव कोढे तएण स

भगन्दर, (७) अर्शः, (८) योनिशूलम्, (९) दृष्टिशूलम्, (१०) मूर्धशूलम्, (११) अरुचिः, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) कण्डू, (१५) जलोदरम्, (१६) कुष्ठम्। ततस्तदनन्तर सा नागश्री ब्राह्मणी षोडशभी रोगातङ्कैरभिभूता-सती आर्तदुःखार्तवशार्त्ता=शारीरिकमानसिकदुःखदुःखिता कालमासे कालं कृत्वा षष्ठ्या पृथिव्याम् 'उक्कोसेण' उत्कृष्टतः, द्वाविंशति सागरोपमस्थितिकेषु नर केषु-नरकावासेषु नारकत्वेन उपपन्ना-उत्पन्ना ॥ सू०५ ॥

मूलम्-सा णं तओऽणंतरंसि उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिईएसु नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चपि

कोढे तएण सा नागसिरी माहिणी, सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना) उस नागश्री ब्राह्मणी को उसी भव में ये सोलह रोगातक प्रकट हो गये-(१) श्वास (२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७) अर्श (८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२) अक्षि-वेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ। इन १६ सोलहरोगातंको से अत्यन्त दुःखित हुई-शारीरिक एव मानसिक व्य थाओं से व्यथित हुई-वह नागश्री काल अवसर कालकर छठी पृथिवी में २२ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावासों नैरयिक की पर्यायसेमें उत्पन्न हुई ॥ सू० ५ ॥

सोलसहिं रोयायकेहि अभिभूया समाणी अट्ट दुहट्टवसट्टा कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना)

તે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને તેજ ભવમા આ સોળ રોગાતકો પ્રકટ થયા (૧) શ્વાસ (૨) કાસ (૩) જ્વર (૪) દાહ (૫) કુક્ષિશૂલ (૬) ભગદર (૭) અર્શ (૮) યોનિશૂલ (૯) દૃષ્ટિશૂલ (૧૦) મૂર્ધશૂલ (૧૧) અરૂચિ (૧૨) અક્ષિવેદના (૧૩) કર્ણવેદના (૧૪) કણ્ડૂ (૧૫) જલોદર (૧૬) કુષ્ઠ આ સોળ રોગાતકોથી અતીવ દુખી થયેલી શારીરિક તેમજ માનસિક વ્યથાઓથી વ્યથિત થતી તે નાગશ્રી કાળ અવસરે કાળ કરીને છઠ્ઠી પૃથિવીમા બાવીસ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમા નૈરયિકની પર્યાયથી જન્મ પામી ॥ સૂ. ૫ ॥

मच्छेसु उववज्जइ, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोस तेत्तीससागरोवमट्ठिईएसु नेरइएसु उववज्जई, सा णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं० तओऽणंतर उव्वट्टित्ता मच्छेसु उरगेसु गव जहा गोसाले तहा नेयव्व जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइ राहयर विहाणाइ जाव अदुत्तरं च णं खर वायर पुढविक्काइ यत्ताते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो ॥सू०६॥

टीका—' सा ण ' इत्यादि। सा=नागश्री ब्राह्मणी खलु तत =षष्ठ्या पृथिव्याः अनन्तरम्=आयुर्भवस्थितिक्षये गति ' उव्वट्टित्ता ' उद्वर्त्य-निस्सृत्य मत्स्येषूत्पन्ना, तत्र खलु मत्स्यभवे सा ' सत्थवज्झा ' शस्त्रवध्या ' दाहवक्कतीए ' दाहव्युत्क्रान्त्या-दाहोत्पत्त्या, कालमासे कालं कृत्वाऽध सप्तम्या पृथिव्यामुत्कृष्टत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकेषु ' नेरइएसु ' नैरयिकेषु उत्पन्ना। सा खलु ततः=सप्तम्याः पृथिव्याः अनन्तरमुद्वर्त्य द्वितीयवारमपि मत्स्येषूत्पद्यते। तत्रापि च खलु शस्त्र-

' सा ण तओ ' इत्यादि।

टीकार्थ-(सा) वह नागश्री (तओऽणंतरंसि) उस सप्तमी नरककी भवस्थिति समाप्त होने पर (उव्वट्टित्ता) वहां से निकली-और निकलकर (मच्छेसु उववन्ना तत्थ ण सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना, सा ण ततोऽणंतर उव्वट्टित्ता दोच्चपि मच्छेसु उवव

' सा ण तओ ' इत्यादि—

टीकार्थ-(सा) તે નાગશ્રી (तओऽणंतरंसि) તે છઠ્ઠી નરકની ભવસ્થિતિ પૂરી થયા બાદ (उव्वट्टित्ता) ત્યાંથી નીકળી અને નીકળીને

(मच्छेसु उववन्ना तत्थ ण सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना सा ण उववज्जइ)

दिद्धा दाहव्युत्क्रान्त्या द्वितीयवारमपि अधः सप्तम्या पृथिव्यामुत्कृष्टत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूपपद्यते, सा खलु 'तओहिंतो' तस्याः=सप्तम्याः पृथिव्याः, यावद् उद्वर्त्य 'तच्चपि' तृतीयवारमपि मत्स्येषु उत्पन्ना। तत्रापि च खलु शस्त्रविद्धा 'जाव काल किच्चा' यावत् दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे काल कृत्वा द्वितीयवारमपि षष्ठ्या पृथिव्यामुत्कृष्टतो द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकेषु नरकेषूत्पन्ना, सा खलु तत =षष्ठ्याः पृथिव्या अनन्तर 'उवट्टित्ता' उद्वर्त्य= निस्सृत्य उरःपरिसर्पेषूत्पन्नाः, तत्र शस्त्रवध्या दाहव्युत्क्रान्त्यामुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषूत्पन्ना। एव यथा गोशालकस्तथा ज्ञातव्यम्=गोशालकवदस्या-

---

ज्जई) तिर्यञ्चगति में मच्छ की पर्याय से उत्पन्न हो गई। वहां वह मत्स्य के भव में शस्त्र से विद्ध होकर दाह की उत्पत्ति से काल अवसर काल कर मरी सो नीचे सप्तम नरक में ३३ तेतीस सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावास मे नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से निकलकर फिर वह मत्स्य की पर्याय से उत्पन्न हुई। (तत्थ वि य णं सत्थवज्झादाहवक्कतीए दोच्चपि अहे सत्तमीए पु०) वहां वह शस्त्र से पुनः विद्ध होकर दाहकी व्युत्क्रान्ति से मरी और मरकर द्वितीयवार भी सप्तम नरक में (उक्कोस तेतीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उववज्जइ) उत्कृष्ट-तेतीस सागर की स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। (सा ण तओ हिंतो जाव उववट्टित्ता तच्चपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं तओऽणंतर उवट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एव जहा गोसाले

તિર્યંચ ગતિમા મચ્છથી પર્યાયની જન્મ પામી ત્યા તે મત્સ્યના ભવમા શસ્ત્ર વડે વીધાઇને દાહથી પીડાઇને કાળ અવસરે કાળ કરીને મરણ પામી અને નીચે સાતમા નરકમા ૩૩ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નરકાવાસમા નૈરયિકની પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યાથી નીકળીને ફરી તે મત્સ્યના પર્યાયથી જન્મ પામી (तत्थ वि य ण सत्थवज्झा दाहवक्कतीए दोच्चपि अहे सत्तमीए पु०) ત્યા તે ફરી શસ્ત્ર વડે વિદ્ધ થઇને દાહથી પીડાઇને મરી અને મરીને બીજી વખત પણ સાતમા નરકમા (उक्कोस तेतीमसागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उववज्जइ) ઉત્કૃષ્ટ ૩૩ સાગરની સ્થિતિ લઈને નૈરયિકની પર્યાયમા જન્મ પામી (सा ण तओहिं तो जाव उव्वट्टित्ता तच्चपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव काल किच्चा दोच्चपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण तओऽणंतर

वर्णनं योऽप्यमित्यर्थः, 'जाव रयणप्पभाए सत्तसु उववन्ना' यावद् रत्नप्रभायां सप्त उत्पन्ना=अयं भाव-उरः परिसर्पगतो निर्गत्य पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्यां उत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्नः, ततो निर्गत्य द्वितीयवारमुरःपरिसर्पेषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि पञ्चम्यां पृथि

ईहा नेयव्व जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं च ण खरवायरपुढविकाइयत्ता ते तेसु अणेगसतसहस्सखुत्तो) यहां से भव स्थिति समाप्त होते ही वह निकली-निकल कर तीसरी बार भी मत्स्य की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी सो मर कर दुबारा भी छठी ही पृथिवी में २२ बावीस सागर की उत्कृष्ट स्थिति ले कर उत्पन्न हुई। वहां की भवस्थिति समाप्त कर जब वह वहां से निकली तो उर परिसर्प की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां पर भी वह शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से-उत्पत्ति से काल अवसर काल कर धूमप्रभा नाम की पचम पृथिवी में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहा सत्तरह सागर की उत्कृष्ट-स्थिति इसकी हुई। गोशालक की तरह इसका वर्णन जानना चाहिये। तात्पर्य इसका इस प्रकार है-१७ सागर की उत्कृष्टस्थिति वाले पचम नरक से निकल द्वितीय बार भी वह उरः परिसर्प की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहा से पूर्व की तरह

उव्वट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एव जहा गोसाले तहा नेयव्व जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्टित्ता जाइ इमाइ खहयरविहाणाइ जाव अदुत्तरं, च ण खरवायरपुढविकाइयत्ता ते तेसु अणेगसतसहस्सखुत्तो) त्यानी भवस्थिति पूरी थता જ તે ત્યાથી નીકળી અને નીકળીને ત્રીજી વાર પણ માછલીના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઇને તથા દાહથી પીડાઇને મરણ પામી અને તે વખતે પણ છઠી પૃથિવીમા ૨૨ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઇને ઉત્પન્ન થઇ ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને જ્યારે તે ત્યાથી નીકળી ત્યારે તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા પણ તે શસ્ત્રથી વીધાઇને અને દાહથી પીડાઈને કાળ અવસરે કાળ કરીને ધૂમપ્રભા નામની પચમ પૃથિવીમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યા ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તેની થઈ ગોશાલકની જેમ આનુ વર્ણન જાણી લેવુ જોઇએ મતલબ આની આ છે કે ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા પચમ નરકથી નીકળીને બીજી વખત પણ તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યાથી પણ પહેલાંની જેમજ કાળ અવસરે કાળ કરીને બીજીવાર પણ આ પૃથિવીમા

व्यामुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततो निःसृत्य तृतीयवारमपि उरः परिसर्पेषूत्पद्यते, अत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यामुत्कृष्टतो – दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निःसृत्य सिंहेषूत्पद्यते,तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि चतुर्थ्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतो दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततश्चतुर्थ्याः पृथिव्या निःसृत्य द्वितीयवारमपि सिंहेषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् काल कृत्वा तृतीयाया वालुकप्रभाया पृथिव्यामुत्कृष्टत सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निः सृत्य पक्षिषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् काल कृत्वा द्वितीयवारमपि तृतीयाया पृथिव्यामुत्कृष्टतः

काल कर द्वितीयवार भी यह पचम पृथिवी मे १७ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की स्थिति समाप्त कर जब यह वहां से निकली–तो तीसरी वार भी यह उरः परिसर्पों में उत्पन्न हुई । वहां से पूर्व की तरह काल कर चौथी पक प्रभा पृथिवी में कि जहा १० सागर की नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिक की पर्याय से उत्पस्न हुई । वहा से निकल कर यह सिंह की पर्याय में उत्पन्न हुई । पहिले की तरह वहा से भी मर कर द्वितीय वार भी यह चतुर्थ नरक में दश सागर की स्थिति वाले नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । चतुर्थ नरक से निकल कर यह दुबारा भी सिंह की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से अपने समय पर मर कर फिर यह वालुका प्रभा नाम की तीसरी पृथिवी में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर नैयरिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां से निकल कर फिर यह पक्षियों के कुल मे उत्पन्न हुई । यहा से मर कर

---

૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નરકોમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યાની સ્થિતિ પૂરી કરીને જ્યારે તે ત્યાથી નીકળી તો ત્રીજી વાર પણ તે ઉર પરિસર્પમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી પહેલાની જેમ કાળ કરીને ચોથી પક પ્રભા પૃથિવીમા–કે જ્યાં દશસાગરની નૈરયિકોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે, ત્યા નૈર યિકની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ, ત્યાથી નીકળીને તે સિંહના પર્યાયથી જન્મ પામી પહેલાની જેમ ત્યાથી પણ મરણ પામીને બીજીવાર પણ ચતુર્થ નરકમા દશ સાગરની સ્થિતિવાળા નરકમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી ચતુર્થ નરકથી નીકળીને તે ફરી સિંહના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે વાલુકાપ્રભા નામની ત્રીજી પૃથિવીમા સાત સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઇને નૈર યિકની પર્યાયમા જન્મ પામી, ત્યાથી નીકળીને તે ફરી તે પક્ષીઓના કુળમા

सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततस्तृतीयायाः पृथिव्या निः सृत्य द्वितीयवारमपि पक्षिषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयायां पृथिव्यां शर्कराभायामुत्कृष्टत्रिसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततो निःसृत्य सरीसृपेषूत्पद्यते, तत्रापि शस्त्रेण्या दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि द्वितीयायां पृथिव्यामुत्कृष्टत्रिसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततो द्वितीयायाः पृथिव्याः निः सृत्य द्वितीयवारमपि सरीसृपेषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा तृतीयायां पृथिव्यां रत्नप्रभायामुत्कृष्टत एकसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निः सृत्य सरीसृपेषु, ततो निः सृत्याऽसंज्ञिषूत्पद्यते, ततो निः

फिर यह पुनः तीसरे नरक में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । यहा से निकल कर पुनः यह पक्षियो के कुल में उत्पन्न हुई । यहा से मर कर फिर यह दूसरी पृथिवी जो शार्करा प्रभा है और जिसके नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति है वहा नैरयिको की पर्याय से उतनी स्थिति लेकर उत्पन्न हुई । वहां से निकल कर सरीसृपों में यह दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी तो मर कर द्वितीय वार भी द्वितीय पृथिवी के नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर उत्पन्न हुई । द्वितीय पृथिवी से निकल कर दुबारा यह सरीसृप में उत्पन्न हुई । वहा से अपने समय पर मर कर रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी में उत्कृष्ट एक सागर की स्थिति वाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की भवस्थिति समाप्त होने पर यह वहा से निकलकर सज्ञी जीवो में वहां

જન્મ પામી ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે ત્રીજા નરકમા સાત સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નૈરયિકોમા નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ ત્યાથી નીકળીને ફરી તે પક્ષીઓના કુળમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે બીજી પૃથિવી જે શર્કરાપ્રભા છે અને જેના નરકાવાસોમા ત્રણ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે ત્યા નૈરયિકોના પર્યાયથી તેટલી જ સ્થિતિ લઇને જન્મ પામી ત્યાથી નીકળીને સરીસૃપોમા તે ઉત્પન્ન થઈ ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઈને તથા દાહથી પીડાઇને મરણ પામી અને ત્યારપછી બીજીવાર પણ બીજી પૃથિવીના નરકાવાસોમા ત્રણ સાગર જેટલી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઇને ઉત્પન્ન થઈ બીજી પૃથ્વિથી નીકળીને બીજીવાર તે સરીસૃપમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી યથા સમય મરણ પામીને રત્નપ્રભા નામની પ્રથમ પૃથ્વિમા ઉત્કૃષ્ટ એક સાગરની સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમા નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને તે ત્યાથી નીકળીને સજ્ઞી-જીવોમા, ત્યાથી પણ મરણ પામીને

सूत्य द्वितीयवारमपि प्रथमायां पृथिव्यां पल्योपमस्याऽसंख्येयभागस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतयोत्पन्ना ' इति ।

' तओ उव्वट्टित्ता ' ततः उद्वर्त्य=रत्नप्रभातो निः सृत्य यानि इमानि ' खहयरविहाणाइं ' खचरविधानानि चर्मपक्ष्यादीनि भवन्ति तेषु, यावत् जयोत्तर च खलु यानीमानि खरबादरपृथिवी कायिकविधानानि तेषु खरबादरपृथिवीकायिकतयाऽनेकशतसहस्रकृत्वः समुत्पन्ना ॥ सू० ६ ॥

मूलम्–सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया तएणं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं० दारियं पयाया सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाण, तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोन्न गुणनिप्फन्न नामधेज्जं करेंति–जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा त होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तएण तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति, तएणं सा सूमालिया दारिया पंचधाई परिग्गहिया तं जहा–खीरधाईए

से भी मर कर असज्ञी जीवों मे और फिर वहा से मर कर फिर दुबारा भी प्रथम पृथिवी में १ एक पल्य के असख्यात वें भाग प्रमाण स्थितिवाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । उस रत्न प्रभा पृथिवी से निकल कर फिर यह जितने ये पक्षिभेद हैं–चर्म पक्षी आदि हैं–उनमें और उनके बाद जो ये खर–बादर–पृथिवीकायादि भेद हैं उनमें खरबादर पृथिवीकायिकरूपसे लाखों वार उत्पन्न हुई ॥सू० ६॥

અને ફરી ત્યાથી મરણ પામીને બીજીવાર પણ પહેલી પૃથ્વિમા ૧ એક પલ્યના અસખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણ સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી તે રત્નપ્રભા પૃથ્વિથી નીકળીને ફરી તે જેટલા પક્ષી ભેદો છે–ચર્મ પક્ષી વગેરે છે–તેઓમા અને ત્યારપછી ખર–બાદર પૃથ્વીકાય વગેરે ભેદ છે તેઓમા ખર–બાદર પૃથ્વિકાયિકના રૂપમા લાખો વાર જન્મ પામી સૂ. ૬

'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूता दारिकामित्याह—'सुकुमालकोमलिय' सुकुमारकोमलाम्-अतिमृदुलाम् गजतालुकसमाना अङ्गस्यातिकोमलतया गजतालुतुल्यामित्यर्थः। तस्या दारिकाया 'निव्वत्तबारसाहियाए' निर्वृत्तद्वादशाहिकायाः सम्प्राप्तद्वादशदिवसाया. अम्बापितरौ=मातापितरौ इदमेतद्रूप 'गोणं' गौणं=गुणेभ्य आगत=प्राप्त गुणनिष्पन्न=गुणबोधकं नामधेय कुरुतः कर्तुंविचारयतः तथाहि यस्मात् खलु अस्माकमेषा दारिका सुकुमारा गजतालुकसमाना जाता, तद्=तस्मात् भवतु खलु अस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं 'सुकुमारिका' इति। ततः विचारकरणानन्तर खलु तस्या दारिकाया अम्बपितरौ नामधेय कुरुतः 'सुकुमारिका' इति। तत खलु सा सुकुमारिका दारिका पञ्चधात्रीपरिगृहीता-पञ्चसंख्यकाभि धात्रीभिः=उपमातृभिः सुरक्षिता जाता, तद् यथा=तासा पञ्चानां धात्रीणा नामानि दर्शयति 'खीरधाईए जाव गिरिकदर' इति। क्षीरधात्र्या=स्तन्य-

---

वाहिके गर्भ के नौ मास तथा साढे सात दिन रात पूर्णरूप से व्यतीत हो चुके तब उसने पुत्रीको जन्म दिया। यह पुत्री अत्यन्त कोमल अगवाली थी इसी लिये गजका तालु भाग जिस प्रकार मृदुल होता है यह वैसी ही कोमल थी। जब यह १२ बारह दिन की हो चुकी-तब इस के मातापिताने इसका 'यथा नाम तथा गुण' इस कहावतके अनुसार गुणों को लेकर नाम सस्कार करने का विचार किया। विचार करने के बाद उन्होंने इस ख्याल से कि यह हमारी पुत्री अत्यन्त सुकुमार और गज तालु का के जैसी मृदुल है अतः इसका नाम सुकुमारिका रहे (तएणं तीसे दारियाए अम्मा पियरो नामधेज्ज करेंति सूमालियत्ति) उस कन्या का नाम सुकुमारिका रख दिया (तएण सा सुकुमारियदारिया

ભદ્રા સાર્થવાહીના ગર્ભના નવ માસ અને સાઢા સાત દિવસ રાત પૂરા થઇ ચૂકયા ત્યારે તેણે પુત્રીને જન્મ આપ્યો આ પુત્રી અતીવ કોમળાગી હતી હાથીના તાળવાનો ભાગ જેવો સુકોમળ હોય છે, તે તેવીજ કોમળ હતી જ્યારે તે બાર દિવસની થઈ ગઈ ત્યારે તેના માતાપિતાએ જેવું નામ તેવા ગુણવાળી એ કહેવત મુજબ ગુણોના આધારે તેનો નામ સસ્કાર કરવાનો વિચાર કર્યો વિચાર કર્યા બાદ તેઓએ પોતાની પુત્રીની સુકોમળ દૃષ્ટિ સમક્ષ રાખીને એટલે કે તેઓએ આ પ્રમાણે વિચારીને કે આ મારી પુત્રી હાથીના તાળવા જેવી સુકોમળ છે માટે એનુ નામ સુકુમારી રાખીએ

(तएण तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्ज करेंति सूमालियत्ति)

તે કન્યાનુ નામ સુકુમારી રાખ્યુ

जाव गिरिकंदरमालीणा इव चंपकलया निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ, तएणं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था ॥ सू० ७ ॥

टीका—' सा ण तओ ' इत्यादि । सा खलु नागश्री. ततोऽनन्तरम् उद्वर्त्य जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे चम्पाया नगर्यां सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य भद्रायां भार्यायाः कुक्षौ ' पच्चायाया ' प्रत्यायाता गर्भमागता । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अर्द्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु दारिकां

' सा ण तओऽणंतर' इत्यादि ।

टीकार्थ-(सा ण तओऽणंतर उव्वट्टित्ता) इसके बाद वह नागश्री खर पृथ्वी कायिका से निकल कर (इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारतवर्ष नामके क्षेत्र में वर्तमान चंपानगरी मे सागरदत्त सेठ की धर्मपत्नी-भद्रा की कुक्षि में पुत्रीरूप से अवतरी (तएण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाण दारिय पयासा सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्त थारिसाहियाए अम्मापियरो इम एयारूव गोन्नं गुणनिप्फन्न नाम धेज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकुमाला गयतालुय समाणा त होउण अम्ह इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया) भद्रा सार्थ

'सा ण तओऽणंतर उव्वट्टित्ता' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(सा ण तओऽणंतर उव्वट्टित्ता) ત્યારપછી તે નાગશ્રી ખર પૃથ્વિકા યિકથી નીકળીને (इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरद त्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) એ જ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા આવેલા ભારતવર્ષ નામના ક્ષેત્રમા વિદ્યમાન ચંપાનગરીમા સાગરદત્ત શેઠની ધર્મપત્ની ભદ્રાના ઉદરમા પુત્રી રૂપમા અવતરી (तएण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाण० दारिय पयाया सुकुमालकोम लिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्तबारिसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूव गोन्न गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकु- माला गयतालुयसमाणा त होउण अम्ह इमीसे दारियाए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया ! दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव तं जइ ण सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विउले असणपाणखाइमसा-इमं उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमतेइ जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव सपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सा-गरदत्ते सत्थवाहे विपुल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडा-वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टय दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहि कल-सेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ करावित्ता सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

से ?, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठसरीरा तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पहाए जाव मित्तनाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?, तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जइ णं जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्त वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो दिज्जउण सूमालिया सागरस्स, तएणं देवाणुप्पिया किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?, तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमग पुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं त जइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-
तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते
समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागं-
रदारगं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सागं-
रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !
सूमालिया ! दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव त जइ
णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं
से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे
तुसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि
तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विउले असणंपाणखाइमसा-
इम उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ जाव सम्माणित्ता
सागरं दारगं पहायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता
पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ
जाव सपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-
च्छित्ता चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-
वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सा-
गरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाणखाइमसाइम उवक्खडा-
वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए
दारियाए सद्धिं पट्टय दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कल-
सेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ करावित्ता सागरं
दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

टीका—' तत्थ णं चंपाए ' इत्यादि । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां जिनदत्तो नाम सार्थवाह आढ्यो यावत् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-सा किम्भूता-सुकुमारा इष्टा यावत् मानुष्यकान् ' पञ्चविधकामभोगान् प्रत्यनुभवन्ती विहरति । तस्य खलु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्यायां आत्मजः= अङ्गजातः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारपाणिपादः, सर्वलक्षणसम्पन्न' यावत्-सुरूपः । तत खलु स जिनदत्तसार्थवाहः अन्यदा कदाचित्

' तत्थ णं चंपाए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे, तस्स णंजिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) उस चंपा नगरीमें जिनदत्त नामका एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एवं जन मान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी। समस्त अंग और उपांग इसके बडे ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनंद के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तत्थण चंपाए इत्यादि—

टीकार्थ-(तत्थण चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे तस्सण जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) તે ચંપા નગરીમા જીનદત્ત નામે એક સાર્થવાહ રહેતો હતો. તે ધનધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સંપન્ન તેમજ સમાજમા પૂછાતો માણસ હતો તેની ધર્મપત્નીનુ નામ ભદ્રા હતુ, તે સર્વાંગ સુંદરી હતી તેના બધા અંગો અને ઉપાગો બહુ જ સુકોમળ હતા, તે પોતાના પતિને બહુજ વહાલી હતી પતિની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતી તે સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરી રહી હતી

(तस्सणं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे)

ભદ્રાભાર્યાથી ઉત્પન્ન થયેલો ભદ્રાભાર્યાને એક પુત્ર હતો. તેનુ નામ સાગર હતું તે સુકુમાર યાવત્ સુંદર રૂપવાન હતો.

स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य, सागदत्तस्य गृहस्य 'अदूरसामन्ते' =नातिदूरे नातिसमीपे 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति=गच्छति, 'इमंचणं' अस्मिन् समये सुकुमारिका दारिका स्नाता=कृतस्नाना 'चेडियासघपरिवुड़ा' चेटिकासघपरिवृता=दासीसमूहमध्यगता, उपरि आकाशतलके-प्रासादस्याट्टालिकोपरि 'कणगतेंदुसकेण' कनकतेंदुससयेन 'तेंदुसय' इतिदेशीशब्दः, सुवर्णमयकन्दुकेन 'कीलमाणी २' विहरति, ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सुकुमारिका दारिका पश्यति, दृष्ट्वा सुकुमारिकाया दारिकाया रूपे च यौवने च लावण्ये च 'जाव विम्हए' यावत् विस्मितः=आश्चर्ययुक्तः सन् कौटुम्बिकपुरुषान्= आज्ञाकारिण पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिया. ! कस्य दारिका किं वा नामधेय 'से' इति तस्या' ?, ततः खलु ते

अच्छे रूपवाला था। (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूर सामंतेणं वीईवयई) एक दिन जिनदत्त सार्थवाह अपने घरसे निकला और निकलकर सागरदत्तके घरके पास से हो कर जा रहा था। (इम च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पिआगासतलगसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी२ विहरइ, इसी समय सुकुमारिका दारिका नहा धो कर अपने प्रासाद की छत पर दासी समूहके साथ २ सुवर्णमय कंदुक (गेंद) से खेल रही थी। (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालिय दारिय पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुविय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एसण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा-नामधेज्जं से ? तएणं ते

तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेण वीईवयई)

એક દિવસે જીનદત્ત સાર્થવાહ પોતાને ઘેરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને સાગરદત્તના ઘરની પાસે થઈને જઈ રહ્યો હતો.

(इम च ण सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगसि कणगतेंदूसएण कीलमाणी २ विहरइ)

તે વખતે સુકુમારિકા દારિકા સ્નાન કરીને પોતાના મહેલની અગાશી ઉપર દાસી સમૂહની સાથે સુવર્ણમય કંદુક (દડી) રમતી હતી

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालिय दारिय पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एसण देवाणप्पिया ! कस्स दारिया किं वा नामधेज्ज से ? तएण ते कोडुंबिय

टीका—' तत्थ णं चंपाए ' इत्यादि । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां जिनदत्तो नाम सार्थवाह आढ्यो यावद् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-सा किम्भूता-सुकुमारा इष्टा यावद् मानुष्यकान् ' पञ्चविधमनुष्यसम्बन्धिकामभोगान् प्रत्यनुभवन्ती विहरति । तस्य खलु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्यायां आत्मजः-अङ्गजातः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारपाणिपादः, सर्वलक्षणसम्पन्नः यावत्-सुरूपः । तत खलु स जिनदत्तसार्थवाहः अन्यदा कदाचित्

' तत्थ णं चंपाए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तत्थ ण चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे, तस्स णजिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) उस चंपा नगरीमें जिनदत्त नामका एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एवं जन मान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी। समस्त अंग और उपांग इसके बडे ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनंद के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तत्थण चंपाए इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तत्थण चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे तस्सण जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) તે ચંપા નગરીમા જીનદત્ત નામે એક સાર્થવાહ રહેતો હતો તે ધન ધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સંપન્ન તેમજ સમાજમા પૂછાતો માણસ હતો તેની ધર્મપત્નીનુ નામ ભદ્રા હતું, તે સર્વાંગ સુંદરી હતી તેના બધા અંગો અને ઉપાંગો બહુ જ સુકોમળ હતા, તે પોતાના પતિને બહુજ વહાલી હતી પતિની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતી તે સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરી રહી હતી

(तस्सणं जिणथत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे)

ભદ્રાભાર્યાથી ઉત્પન્ન થયેલો ભદ્રાભાર્યાને એક પુત્ર હતો તેનુ નામ સાગર હતું તે સુકુમાર યાવત્ સુંદર રૂપવાન હતો

वाहस्तेषा कौटुम्बिकानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा यत्रैव स्वक गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नातो यावद् मित्रज्ञातिपरिवृतश्चम्पाया नगर्या मध्ये भूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृह तत्रैवोपागच्छति, ततस्तदनन्तरम् सागरदत्तः सर्थवाह खलु जिनदत्त सार्थवाहम् एज्जमानम्=आगच्छन्त पश्यन्ति, दृष्ट्वाऽऽसनादुत्तिष्ठति, उत्थाय 'आसणेणं उवणिमंतेइ' आसनेनोपनिमन्त्रयति=आसन उपवेशनार्थं मार्थयति, उपनिमन्त्र्य, आसनोपर्युपवेशनानन्तरम् ,आस्वस्थ=मार्गश्रमापगमात् श्रान्तिरहित, विस्वस्थ=विशेषतो विश्रान्तिमुपगतं, सुखासनवरगत=सुखेन विशिष्टासनोपविष्ट, तं

अतिए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइपरिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्त सत्थवाह एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्टित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमत्तित्ता आसत्थ सुहासणवरगय एव वयासी) जिनदत्त सार्थवाहने उन कौटुम्बिक पुरुषो के मुख से जब इस अर्थ को सुना तो सुनकर वह पहिले अपने घर गया—वहां जा कर उसने स्नान किया। यावत् फिर वह अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के साथ२ चपानगरी के बीच से हो कर जहां सागरदत्त का घर था वहा पहुँचा-सागरदत्तने ज्यों ही अपने घर पर आते हुए जिनदत्त सार्थवाहको देखा - तो वह जल्दीसे अपने स्थान से उठा-और उठकर " आप यहा बैठिये " इस प्रकार उनसे कहने लगा जब वे यथोचित स्थान पर बैठ चुके और आस्व

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कौडुंबियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा-जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएण सागरदत्ते सत्थवाहे, जिणदत्त सत्थवाह एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्टित्ता आसणेण उवणिमतेइ उवणिमतित्ता आसत्थ वीसत्थ सुहासणवरगय एव वयासी)

જીનદત્ત સાર્થવાહે તે કૌટુંબિક પુરૂષોના મુખથી આ વાત સાભળીને સૌ પહેલા તેઓ પોતાને ઘેર ગયા ત્યા પહોચીને તેમણે સ્નાન કર્યું યાવત પછી તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોની સાથે ચપા નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યા સાગરદત્તનુ ઘર હતું ત્યા પહોચ્યા સાગર દત્ત જીનદત્ત સાર્થવાહને પોતાને ઘેર આવતા જોઈને ત્વરાથી તે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભો થઈ ગયો અને ઊભો થઈને " તમે અહીં બેસો "

कौटुम्बिकपुरुषा जिनदत्तेन सार्थवाहेनैवमुक्ता सन्तो हृष्टतुष्टाः-अतिमुदिताः 'करतल जाव' करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिषुः-हे देवानुप्रिया ! एषा सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य 'धूया' दुहिता-पुत्री, भद्रायाः आत्मजा सुकुमारिका नाम दारिका सुकुमारपाणिपादा यावद्-रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च उत्कृष्टा उत्कृष्ट शरीरा । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थ

कोडुंबिय पुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तिया सुमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठ सरीरा) बोलती हुई उस कुमारिका दारिका को जिनदत्त सार्थवाह ने देखा-देखकर वे सुकुमारिका दारिका के रूप यौवन एवं लावण्य में आश्चर्यचकित हो गये-और आश्चर्य से युक्त होकर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर वे उनसे इस प्रकार कहने लगे—हे देवानुप्रियो ! यह कन्या किसकी है इसका नाम क्या है । जिनदत्त सार्थवाह के द्वारा पूछे गये उन कौटुम्बिक पुरुषों ने हर्षित हो कर और अपने दोनों हाथों जोड़ कर बड़े विनय के साथ उनसे ऐसा कहा—हे देवानुप्रिय ! यह पुत्री सागरदत्त सार्थवाहकी है । भद्रा भार्या की कुक्षि से यह जन्मी है । इसका नाम सुकुमारिका है । इसके कर चरण बड़े ही सुकुमार हैं यावत् रूप, यौवन एवं लावण्यसे यह सर्वोत्कृष्ट है और सर्वाङ्ग सुन्दरी है । (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं

पुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तिया सुमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव, उक्किट्ठसरीरा)

રમતી સુકુમાર દારિકાને જીનદત્ત સાર્થવાહે જોઈ જોઇને તેઓ સુકુમાર દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમા આશ્ચર્ય ચકિત થઇ ગયા અને ત્યાર પછી તેમણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કન્યા કોની છે ? એનુ નામ શું છે ? જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે એવી રીતે પૂછાએલા તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ હર્ષિત થઇને પોતાના બને હાથ જોડીને બહુજ વિનયની સાથે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાર્થવાહ સાગરદત્તની આ પુત્રી છે ભદ્રાભાર્યાના ઉદરથી આનો જન્મ થયો છે સુકુમારિકા આનુ નામ છે એના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી આ સર્વો ઉત્કૃષ્ટ છે સુંદરી

पात्र=' कन्या योग्योऽय मत्पुत्रः सागर ' इति, ' सलाहणिज्जं वा ' श्लाघनीयं=प्रशसनीय वा ' सरिसो वा सजोगो ' सदृशो वा संयोगः-अय कन्यावरयो वैवाहिकः सम्बन्धः कुलेन रूपेण गुणेन वा तुल्य इति, 'तो ' तर्हि ' दिज्जउ ' ददातु भवान् खलु सुकुमारिका दारिकां सागराय=मत्पुत्रायेतिभावः । ततः खलु हे देवानुप्रिय ! ब्रूहि-किं दद्म-किं दद्यां, शुल्क=संमानार्थं द्रव्य सुकुमारिकाया दारिकायाः ? ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्त जिनदत्तमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एकजाता=एकैवोत्पन्ना, तया-इष्टा-अनुकूला, यावत्-कान्ता=ईप्सिता, प्रिया=प्रीतिपात्रा, मनोज्ञा=मनोगता तथा-

कन्या के योग्य है यह सबन्ध प्रशसनीय है, कन्या और वर का यह वैवाहिक सबन्ध कुल रूप और गुणो के अनुरूप है तो आप अपनी पुत्री सुकुमारिका को मेरे पुत्र सागर के लिये प्रदान कर दीजिये-(तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्कं सुमालियाए ?) हे देवानुप्रिय ! साथ में यह भी कहदीजिये कि सुकुमारिका दारिका के समानार्थ हम क्या द्रव्य देवें (तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा, एगजाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि, सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग त जइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स सूमालिय दलयामि) सागरदत्तए ने जिनदत्त से तब इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह सुकुमारिका पुत्री मेरे यहा एक ही लड़की है और यह एक ही उत्पन्न हुई

છે, આ સબધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સબધ કુળ રૂપ અને ગુણોને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો (तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સમાનાર્થ અમે શુ દ્રવ્ય રૂપમા આપીએ ?

(तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एग जाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग त जइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स दारगस्स सुमालिय दलयामि) ત્યારે સાગરદત્તે જીનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે

जिनदत्त सार्थवाहमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-हे देवानुप्रिय ! भण=कथय, किमागमनप्रयोजनम्=कस्मै प्रयोजनाय समागतो भवान् ? ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाह सागरदत्त सार्थवाहमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-एव खलु अहं हे देवानुप्रिय ! तव दुहितर=पुत्रीं, भद्राया आत्मनां सुकुमारिकां=सुकुमारिकानाम्नीं सागरस्य=सागरनामकस्य मत्पुत्रस्य भार्यात्वेन 'वरेमि' वृणोमि=याचामि, यदि खलु त्वं जानीहि हे देवानुप्रिय ! 'जुत्त वा' युक्त वा=योग्य वा-'एतत् कार्यं समुचित भवति' ति 'पत्त वा' प्राप्त वा=एतत् कार्यं कुलमर्यादामनुप्राप्त वा,

स्वस्थ विश्वस्थ बन चुके-तब विशिष्ट आसन पर शांति के साथ बैठे हुए उन जिनदत्त सार्थवाह से उसने इस प्रकार पूछा।-(भण देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयण) कहिये देवानुप्रिय ! यहां पधारने का आपका क्या प्रयोजन है ? किस प्रयोजन से आप यहां आये हैं-कहिये-(तएणं से जिणदत्तसत्थवाहे सागरदत्त सत्थवाह एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तव धूय भद्दाए अतिय सूमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि जइण जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो दिज्जउ ण सूमालिया सागरस्स) जिनदत्त सार्थवाह ने सागरदत्त सार्थवाह से तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! में आपकी सुभद्रा की कुक्षिसे उत्पन हुई सूमालिका पुत्री को अपने पुत्र सागर की भार्या बनाना चाहता हूँ। यदि आप इसे स्वीकार करे कि यह कार्य योग्य है-उचित है-कुल मर्यादा के अनुसार है अथवा मेरा पुत्र आपकी

આ રીતે તેમને કહેવા લાગ્યો. ત્યારે તેઓ ઉચિત સ્થાને બેસી ગયા અને આસ્વસ્થ વિશ્વસ્થ થઈ ચૂકયા ત્યારે વિશિષ્ટ આસન ઉપર શાંતિપૂર્વક બેઠેલા તે જીનદત્ત સાર્થવાહને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું-(भण देवाणुप्पिया ! किमागमण पओयण) હે દેવાનુપ્રિય ! બતાવો અહીં પધારવાની પાછળ આપનો શો હેતુ છે ? કયા પ્રયોજનથી આપ અહીં આવ્યા છો ?

(तएण से जिणदत्त सत्थवाहे सागरदत्त सत्थवाह एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तव धूय भद्दाए अतिय सूमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि जइण जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो दिज्जउ ण सूमालिया सागरस्स)

જીનદત્ત સાર્થવાહે સાગરદત્ત સાર્થવાહને ત્યારે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! હું તમારી સુભદ્રાના ઉદરથી જન્મ પામેલી સુમાલિકા પુત્રીને મારા પુત્ર સાગરની પત્ની બનાવવા ઇચ્છું છું આપ ને મારી માગણી ઉચિત ક્ષમ જતા હો, કુળ-મર્યાદા યોગ્ય તેમજ મારો પુત્ર તમારી માટે યોગ્ય

पात्र=' कन्या योग्योऽय मत्पुत्रः सागर ' इति, ' सलाहणिज्जं वा ' श्लाघनीयं=प्रशसनीयं वा ' सरिसो वा सजोगो ' सदृशो वा संयोगः-अय कन्यावरयो वैवाहिकः सम्बन्धः कुलेन रूपेण गुणेन वा तुल्य इति, 'तो ' तर्हि ' दिज्जउ ' ददातु भवान् खलु सुकुमारिका दारिकां सागराय=मत्पुत्रायेतिभावः । ततः खलु हे देवानुप्रिय ! ब्रूहि-किं दद्म-किं दद्यां, शुल्क=समानार्थं द्रव्य सुकुमारिकाया दारिकायाः ? ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्त जिनदत्तमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एकजाता=एकैकोत्पन्ना, तया-इष्टा-अनुकूला, यावत्-कान्ता=ईप्सिता, प्रिया=प्रीतिपात्रा, मनोज्ञा=मनोगता तथा-

कन्या के योग्य है यह संबन्ध प्रशसनीय है, कन्या और वर का यह वैवाहिक सबन्ध कुल रूप और गुणो के अनुरूप है तो आप अपनी पुत्री सुकुमारिका को मेरे पुत्र सागर के लिये प्रदान कर दीजिये-(तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?) हे देवानुप्रिय ! साथ में यह भी कहदीजिये कि सुकुमारिका दारिका के समानार्थ हम क्या द्रव्य देवें (तएण से सागरदत्ते तं जिणदत्त एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा, एगजाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि, सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं त जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स सूमालिय दलयामि) सागरदत्तए ने जिनदत्त से तब इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह सुकुमारिका पुत्री मेरे यहा एक ही लड़की है और यह एक ही उत्पन्न हुई

છે, આ સબધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સબધ કુળ રૂપ અને ગુણોને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો (तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સમાનાર્થ અમે શુ દ્રવ્ય રૂપમા આપીએ ?

(तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एग जाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग त जइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स दारगस्स सुमालिय दलयामि) ત્યારે સાગરદત્તે જીનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે

मनोमा=मनसः स्थानभूता, किं पुनः उदुम्बरपुष्पमिव 'दुल्लहं खलु भो देवाणुप्पिया एएसिं' इतिवत् श्रवणविषयत्वेन सा दर्शना, किमङ्ग ! पुनः-दर्शनविषयतया, तत्=तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमालियाए दारियाए=क्षणमपि विप्पओगं=वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम 'घरजामाउए' गृहजामातृकः=गृहवासीजामाता भवति 'तोणं' तर्हि खलु अहं सागराय दारकाय सुकुमालियां ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन सार्थवाहेनैव मुक्त सन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं=स्वपुत्र शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र ! सागरदत्तः सार्थवाहो मम=मां प्रति, 'सम्बन्धसामान्ये षष्ठी' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एका जाता इष्टा 'त चेव'

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत् मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एव मन का स्थान भूत होने से मनोज्ञ है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुंबर पुष्प के समान दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अतः मैं इसे देना नहीं चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के विना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन कर रहना चाहें तो मैं उन्हे यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ। (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ છે વધારે શું કહું ! આ તો અમને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી સાંભળવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હું આપવા ઇચ્છતો નથી કારણ કે એના વગર હું ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હું આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકું તેમ છું

(तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवात्रयोध्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि। ततः खलु स सागरको दारको जिनदत्तेन तार्थवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्बी सन् संतिष्ठते।

वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइण सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि) इस प्रकार सागरदत्त सार्थवाहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह जहा अपना घर था वहाँ आया-वहां आकर उसने अपने सागर पुत्र को बुलाया। बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागरदत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ। उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं। यह उसे बहुत ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है। इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया। इसलिये वह उसका एक क्षण भी वियोग सहन नहीं कर सकता है। अतः वह

देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइण सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि)

આ રીતે જીનદત્ત સાર્થવાહ તેમની આ વાત સાભળીને તે જીનદત્ત સાર્થવાહ જ્યા પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યા. ત્યા આવીને તેણે પોતાના સાગરપુત્રને બોલાવ્યો બોલાવીને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! સાગરદત્ત સાર્થવાહે મને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે તમારો પુત્ર સાગર જો મારો ઘર જમાઈ રહેવા કબૂલતો હોય તો હુ મારી પુત્રી સુકુમારિકા તેમને આપવા તૈયાર છુ તેઓ તમને ઘર જમાઈ બનાવવા એટલા માટે ઈચ્છે છે કે સુકુમારિકા દારિકા તેમની એકની એક પુત્રી છે તે તેમને અતીવ ઈષ્ટ યાવત્ મનોમ છે આ રીતે સાગરદત્તે જે કઇ કહ્યુ હતું તે બધુ તેમણે પોતાના પુત્ર સાગર આગળ રજૂ કર્યું અને છેવટે કહ્યુ કે એટલા માટે જ તે એક ક્ષણ પણ પોતાની પુત્રીનો વિયોગ સહી શકતો નથી તમને તે આ કારણથી જ ઘર જમાઈ બનાવવા ઇચ્છે છે

मनोमा=गतसः स्थानभूता, किं बहूना उदुम्बरपुष्पमिव ' उदुम्बरपुष्पं केनापि दृष्टम् ' इतिवत् श्रवणविषयतयैव सा दुर्लभा, किमङ्ग ! पुनः-दर्शनविषयतया, तत्=तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं=वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम ' घरजामाउए ' गृहजामातृकः=गृहवासीजामाता भवति ' तोण ' तर्हि खलु अहं सागराय दारकाय सुकुमारिकां ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन सार्थवाहेनैवं मुक्तः सन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं= स्वपुत्रं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र ! सागरदत्तः सार्थवाहो मम=मां मति, ' सम्बन्धसामान्ये षष्ठी ' एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एका जाता इष्टा ' त चेव '

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एव मन का स्थान भूत होने से मनोज्ञ है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुंबर पुष्प के समान दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अतः मैं इसे देना नहीं चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के विना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन कर रहना चाहे तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ। (तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेणं एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ છે વધારે શુ કહુ ! આ તો અમને ઉદુમ્બર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી સાભળવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હુ આપવા ઇચ્છતો નથી કારણ કે એના વગર હુ ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવા નુપ્રિય ! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હુ આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકુ તેમ છુ

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते ण सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारग सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवानुबोध्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि। ततः खलु स सागरको दारको जिनदत्तेन तार्यवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्बी सन् संतिष्ठते।

वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइण सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि) इस प्रकार सागरदत्त सार्थवाहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह जहा अपना घर था वहां आया-वहां आकर उसने अपने सागर पुत्र को बुलाया। बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागरदत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ। उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं। यह उसे बहुत ही अधिकइष्ट यावत् मनोम है। इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया। इसलिये वह उसका एक क्षण भी वियोग सहन नही कर सकता है। अतः वह

देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइणं सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि)

આ રીતે જીનદત્ત સાર્થવાહ તેમની આ વાત સાભળીને તે જીનદત્ત સાર્થવાહ જ્યા પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યા. ત્યા આવીને તેણે પોતાના સાગરપુત્રને બોલાવ્યો બોલાવીને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! સાગરદત્ત સાર્થવાહે મને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે તમારો પુત્ર સાગર જો મારો ઘર જમાઈ રહેવા કબૂલતો હોય તો હુ મારી પુત્રી સુકુમારિકા તેમને આપવા તૈયાર છુ તેઓ તમને ઘર જમાઈ બનાવવા એટલા માટે ઈચ્છે છે કે સુકુમારિકા દારિકા તેમની એકની એક પુત્રી છે તે તેમને અતીવ ઈષ્ટ યાવત્ મનોમ છે આ રીતે સાગરદત્તે જે કઇ કહ્યુ હતુ તે બધુ તેમણે પોતાના પુત્ર સાગર આગળ રજૂ કર્યું અને છેવટે કહ્યુ કે એટલા માટે જ તે એક ક્ષણ પણ પોતાની પુત્રીનો વિયોગ સહી શકતો નથી તમને તે આ કારણથી જ ઘર

मनोमा=मनसः स्थानभूता, किं बहुना उदुम्बरपुष्पमिव ' उदुम्बरपुष्पं केनापि दृष्टम् ' इतिवत् श्रवणमपि यत्नेन मा दुर्लभा, किमङ्ग ! पुनः-दर्शनविषयतया, तत्=तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं=वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम ' घरजामाउए ' गृहजामातृकः=गृहवासीजामाता भवति ' तोण ' तर्हि खलु अहं सागराय दारकाय सुकुमारिकां ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन सार्थवाहेनैवं मुक्त सन् यत्रैव स्वक गृह तत्रोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं स्वपुत्र शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एव खलु हे पुत्र ! सागरदत्तः सार्थवाहो मम=मां मति, ' सम्बन्धसामान्ये षष्ठी ' एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा ' त चेव '

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एव मन का स्थान भूत होने से मनोज्ञ है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुंबर पुष्प के समान दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अतः मैं इसे देना नहीं चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के विना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन कर रहना चाहें तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ। (तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेणं एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ છે વધારે શુ કહુ ! આ તો અમને ઉદુમ્બર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી સાભળવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હુ આપવા ઇચ્છતો નથી કારણ કે એના વગર હુ ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવા નુપ્રિય ! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હુ આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકુ તેમ છુ

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते ण सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारग सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम

सम्मानयति समान्य सागर दारक स्नात यावत् सर्वालङ्कारविभूषित कारयति, कारयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञाति स्वजन-सम्बन्धिभिर्यावत् परिवृतः सर्वर्द्धया सकलविभवेन स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन=मध्येभूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शिविकातः 'पच्चोरुहावेइ' प्रत्यवरोहयति, सागरदारकं स्वपुत्र प्रत्यवतारयति, प्रत्यवरोह्य सागरक दारक सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य उपनयति=समीपमानयति ।

ततः खलु सागरदत्तः सार्थवाहो विपुलमशन पान खाद्यं स्वाद्य=चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति, उपस्कार्य यावत् = मित्रादिसहित जिनदत्तमामन्त्र्य भोजयित्वा, सत्कृत्य, समानयति, समान्य सागरक दारक सुकुमारिकया दारिकाया सार्धं 'पट्टय' पट्टक 'दुरूहावेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरूह्य श्वेतपीत[क]:=

सबका वस्त्रादिक से सत्कार किया सत्कार करके फिर उनका स्वागत वचनादिको द्वारा सन्मान किया- । सन्मान कर के बाद में उसने अपने सागरपुत्रको स्नान कराया- । स्नान कराकर उसने उसे समस्त अलकारो से विभूषित कराया । विभूषित कराकर बाद में उसने उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिविका पर चढाया चढाकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबधियो को साथ लेकर फिर वह सकल विभवके अनुसार अपने घर से निकला -निकलकर चपानगरी के बीचो बीच से होता हुआ सागरदत्त का जहाँ घर था वहाँ पहुँचा । (उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएण, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुल असणपाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरग दारग सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टय

ડીને બધાને વસ્ત્રો વગેરે આપીને સત્કાર કર્યો, સત્કાર કરીને તેણે તેમનુ સ્વાગત વચનો વડે સન્માન કર્યુ સન્માન કર્યા બાદ તેણે પોતાના સાગર પુત્રને સ્નાન કરાવ્યુ સ્નાન કરાવીને તેણે તેને બધા અલકારોથી શણગાર્યો, શણગારીને તેણે તેને પુરૂષ-સહસ્રવાહિની પાલખીમા બેસાડયો ત્યારપછી મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબધીઓને સાથે લઇને તે પોતાના સપૂર્ણ વૈભવની સાથે પોતાના ઘરથી નીકળ્યો-નીકળીને ચપા નગરીની વચ્ચે થઇને તે જ્યા સાગરદત્તનુ ઘર હતું ત્યા પહોચ્યો

(उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएण, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलअसणपाणखाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरग दारग सूमालियाए

ततः खलु निजकः सार्थवाहो ऽन्यदा कदाचित् शोभने=शुभकारके, तिथिकरणनक्षत्रमुहूर्ते विपुलमशन पानं खाद्य स्वाद्यमुपस्कारयति, निष्पादयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य 'जाव सम्माणेइ' यावत् सम्मानयति भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रादिभि सत्करोति, सत्कृत्य वस्त्रगन्धमाल्यादिना

तुम्हें घरजमाई बनाना चाहता है। (तएणं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ, तएणं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइ सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विउलं असणं पान खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ०आमतेइ, जाव सम्माणित्ता सागर दारग ण्हाय जाव सव्वालंकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीय दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव सपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता चपा नयरिं मज्झ मज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ) जिनदत्त सार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहा जाने पर वह सागर दारक चुपचाप रह गया उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। एक दिन जिनदत्त ने शुभ, तिथि करण, दिवस नक्षत्र मुहूर्त्तमें विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार बनवाया -बनवाकर उसने अपने मित्र ज्ञाति आदि बन्धुओं को आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके फिर उसने उन सबको भोजनकराया-भोजन कराकर

(तएणं से सागरए दारए जिणदत्ते ण सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइ सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि, विउलं असणपान खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाई आमतेइ, जाव सम्माणित्ता सागर दारग ण्हाय जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीय दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव सपरिवुड सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चपा नयरिं मज्झ मज्झेण जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ)

જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયેલો સાગર પુત્ર એકદમ ચૂપ થઇને એસી જ રહ્યો તેણે કોઇ પણ જાતનો જવાબ આપ્યો નહિ એક દિવસ જીનદત્તે શુભતિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર મુહૂર્ત્તમા પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવ્યો બનાવડાવીને તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે સબધીઓને આમન્ત્રિત કર્યા આમન્ત્રિત કરીને તેણે તે બધા આવેલા સબધીઓને જમાડયા જમા

मूलम्–तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूवं पाणिफास पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखाइमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जइ, तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिगंसि निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूव अगफासं पडिसवेदेइ, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अगफास असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

राजतसौवर्णैः कलशैः = पारिपूर्णैरष्टोत्तरशतेन, मज्जयित्वा अग्निहोमं कारयति, कारयित्वा सागरं दारकं सुकुमारिकया दारिकया पाणिं ग्राहयति॥सू ८॥

दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता सागरं दारयं सुमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ) वहा पहुँचकर उसने अपने पुत्र सागर को पालखी से नीचे उतारा और उतारकर सागरदत्त सार्थवाह के पास उसे ले आया। सागरदत्त सार्थवाहने भी पहिलेसे ही विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवालियो था सो उससे मित्रादि सहित जिनदत्त सार्थवाह को आनद के साथ खिलाया पिलाकर सबका सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करने के बाद फिर सागरदत्तने सागर दारक को अपनी पुत्री सुकुमारिका के साथ एक पट्टक पर बैठाया-बैठाकर सुवर्ण चांदी के कलशोंसे उनका अभिषेक कराया अभिषेक हो जाने के बाद अग्निहोम कराया 'अग्निहोम जब हो चुका तब सागरदत्तने अपनी पुत्री सुकुमारिका का सागर के हाथ में हस्तमिलाप किया-अर्थात् लग्न कर दिया ॥ सू० ८ ॥

दारियाए सद्धिं पट्टयं, दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता सागरदारयं सुमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ)

ત્યા પહોચીને તેણે પોતાના પુત્ર સાગરને પાલખીમાથી નીચે ઉતાર્યો અને ઉતારીને સાગરદત્ત સાર્થવાહની પાસે લઇ ગયો સાગરદત્ત સાર્થવાહે પણ પહેલેથી જ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર તૈયાર કરાવીને રાખ્યો હતો તેણે મિત્ર વગેરે લોકોની સાથે જીનદત્ત સાર્થવાહને આનદની સાથે જમાડયા અને ત્યારપછી તેણે સૌનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યુ સત્કાર અને સન્માન કર્યા બાદ સાગરદત્તે સાગર દારકને પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાની સાથે એક પટ્ટક ઉપર બેસાડયો બેસાડીને સોના-ચાદીના કળશોથી તેમનો અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેકનુ કામ પુરૂ થયા બાદ તેણે અગ્નિહોમ કરાવ્યો અગ્નિહોમની વિધિ પૂરી થઈ ગઈ ત્યારે સાગરદત્તે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાનો સાગરની સાથે હસ્તમેળાપ કરાવી દીધો એટલે કે લગ્ન કરાવી દીધા ॥ સૂ ૮ ॥

मूलम्–तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखाइमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जइ, तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिगंसि निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूव अंगफासं पडिसवेदेइ, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अगफास असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वासघरस्स दार विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू०९॥

टीका—' तएणं ' इत्यादि । ततः खलु सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूप=वक्ष्यमाणप्रकार पाणिस्पर्श=करस्पर्श प्रतिसंवेदयति=अनुभवति, कीदृशः स करस्पर्श' इति सदृष्टान्तमाह—' से जहानामए ' इत्यादि । तद् यथा नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्त प्रदर्शयति–' असिपत्तेइ वा ' इत्यादि । असिपत्रमिति वा=असिपत्र-खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकुमारिका दारिकायाः करस्पर्श प्रतिसंवेदयत इति भावः । ' जाव मुम्मुरे इ वा० ' यावत् मुर्मुरेति वा=अत्र यावत् करणादिद बोध्यम्—' करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा

' तएण सागरदारए ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद–अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप क्रिया तब (सागरदारए) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकुमारिका दारिकाका (पाणिफासं) वह हस्तका स्पर्श (इम एयारूवं पडिसंवेदेइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइवा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ) जैसे वह असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श हो । यहा यावत् शब्दसे " कर पत्तेइ " वा खुर पत्तेइवा, कलव चीरिया

'तएण सागरदारए' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારપછી એટલે કે સાગરદારકે જ્યારે હસ્તમેળાપ કર્યો ત્યારે (सागरदारए) તે સાગરને (सूमालियाए दारियाए) સુકુમાર દારિકાનો (पाणिफासं) તે હાથનો સ્પર્શ (इमएया रूव पडिसंवेदेइ) આ પ્રમાણે લાગ્યો કે

(से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठत्तराए चेव पाणिफासं पडिसंवेदेइ)

જાણે તે અસિપત્ર–તરવાર–નો સ્પર્શ ન હોય, યાવત્ અગ્નિકણ મિશ્રિત ભસ્મનો સ્પર્શ ન હોય અહીં ' यावत् ' શબ્દથી

(करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा, कलवचीरियापत्तेइ वा सत्ति

कलंबचीरियापत्तेइ वा सत्तिअग्गेइ वा कोंतग्गेइ वा तोमरग्गेइ वा भिंडिमालग्गेइ वा सूचिकलावएइ वा विच्छुयडकेइ वा कविकच्छूइ वा इंगालेइ वा मुम्मुरेइ वा अच्चीइ वा जालेइ वा आलाएइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारूवेसिया ?, नो इणट्ठे समट्ठे, करपत्रमिति वा क्षुरपत्रमिति वा कदम्बचीरिकापत्रमिति वा शक्त्यग्रमिति वा कुन्ताग्रमिति वा तोमराग्रमिति वा भिन्दिपालाग्रमिति वा वृश्चिकदंश इति वा कपिकच्छुरिति वा अङ्गार इति वा मुर्मुर इति वा अर्चिरिति वा ज्वालेति वा, अलातमिति वा शुद्धाग्निरिति वा भवेदेतद्रूप -स्यात् ?, नायमर्थः समर्थः, इति । तत्र करपत्र= ककचं ' करवत् ' इति प्रसिद्ध क्षुरपत्रम्=' उस्तरा ' इति प्रसिद्धम् , कदम्बचीरिकापत्रम्-कदम्बचीरिका-तृणविशेष , अस्या अग्रभागोऽतितीक्ष्णो भवति तस्य पत्र, शक्तिः=शस्त्रविशेषः-त्रिशूल वा तस्या अग्रभागः स्व कुन्तः ' भाला ' इति प्रसिद्ध शस्त्रविशेषः, तदग्रभागः, तोमरः=बाण विशेषस्तदग्रभाग', भिन्दिपालः= शस्त्रविशेषः सूचीकलापकं सूचीसमूहस्तस्याग्रभागः, वृश्चिकदंशः=वृश्चिक कण्टकः, कपिकच्छुः-खर्जुकारी वनस्पतिविशेषः, अङ्गारः=ज्वालारहितोऽग्नि , मुर्मुर'=अग्नि-

पत्तेइ वा, सत्ति अग्गेइवा कोतग्गेइवा तोमरग्गेइ वा, भिंडिमालग्गे वा सूचिकलावएइवा विच्छुय डकेइ वा कवि कच्छूइवा इंगालेइ वा मुम्मुरेइ वा अच्चोइ वा जालेइ वा आलाइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारू वेसिया ? नो इणट्ठे समट्ठे) कर पत्र-कर वत, क्षुर पत्र-उस्तरा कदम्बचीरिका पत्र छुरिया घास-जिसका अग्रभाग अधिक तीक्ष्ण होता है शक्ति-अग्र -शक्ति-त्रिशूल अथवा आयुधविशेष का अग्रभाग कुन्ताग्र भाले की नोक तोमराग्र-बाण की अनी भिन्दिपाल-शस्त्र विशेष-का अग्रभाग-सूची कलापका अग्रभाग-विच्छु का डंक कपिकच्छु-करेच-जिसके स्पर्श होनेपर खुजली आती है-ज्वाला रहित अग्नि, मुर्मुर-अग्निकणमिश्रित

तोमरग्गेइ वा, भिंडिमालग्गे वा सूचिकलावएइ वा विच्छुय डकेइ वा, कविकच्छुइ वा इंगालेइ वा, मुम्मुरेइ वा अच्चोइ वा जालेइ वा, आलाइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारूवे सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे)

કરપત્ર-કરવત, ક્ષુરપત્ર - અસ્ત્રો, કદંબચીરિકા પત્ર-છુરિકા કે જેનો અગ્રભાગ એકદમ તીક્ષ્ણ હોય છે, શક્તિ-અગ્ર-શક્તિ,-ત્રિશૂળ અથવા આયુધ વિશેષનો અગ્રભાગ, કુંતાગ્ર-ભાલાની અણી, તોમરાગ્ર-તીરની અણી, ભિંદિપાલ-વિશેષનો અગ્રભાગ, સૂચીકલાપનો અગ્રભાગ, વીંછીનો ડંખ, કપિકચ્છુ-કવચ-જેના સ્પર્શથી ખંજવાળ આવે છે, જ્વાળા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકણ મિશ્રિત લક્ષ્મ, અર્ચિ-લાકડાઓથી સળગતી જ્વાળા, જ્વાળા-લાકડા વગરની

दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० ९॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः खलु सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूप=वक्ष्यमाणप्रकार पाणिस्पर्शं=करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति, कीदृशः स करस्पर्शः इति दृष्टान्तमाह—'से जहानामए' इत्यादि। तद् यथा नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्त प्रदर्शयति-'असिपत्तेइ वा' इत्यादि। असिपत्रमिति वा=असिपत्र-खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकुमारिका दारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसंवेदयत इति भावः। 'जाव मुम्मुरे इ वा०' यावत् मुर्मुरेति वा=अत्र यावत् करणादिद वोध्यम्—'करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा

'तएणं सागरदारए' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद-अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप किया तब (सागरदारए) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकुमारिका दारिकाका (पाणिफासं) वह हस्तका स्पर्श (इमं एयारूवं पडिसंवेदेइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइवा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ) जैसे वह असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श हो। यहा यावत् शब्दसे "कर पत्तेइ" वा खुर पत्तेइवा, कलव चीरिया

'तएणं सागरदारए' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી એટલે કે સાગરદારકે જ્યારે હસ્તમેળાપ કર્યો ત્યારે (सागरदारए) તે સાગરને (सूमालियाए दारियाए) સુકુમાર દારિકાનો (पाणिफासं) તે હાથનો સ્પર્શ (इमएया रूव पडिसंवेदेइ) આ પ્રમાણે લાગ્યો કે

(से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव पाणिफासं पडिसंवेदेइ)

જાણે તે અસિપત્ર-તરવાર-નો સ્પર્શ ન હોય, યાવત્ અગ્નિકણ મિશ્રિત ભસ્મનો સ્પર્શ ન હોય અહીં 'यावत्' શબ્દથી

(करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा, कलवचीरियापत्तेइ वा सत्ति [illegible] वा कोंतग्गो

रिजनाँश्च विपुलेनाशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको दारकः सुकुमारिकया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये 'निवज्जइ' निषीदति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूपमरूपशं प्रतिसवेदयति-तद् यथानामक-तत् प्रतिसवेदन दृष्टान्तोपन्यासपूर्वक प्रदर्श्यते-असिपत्र वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अङ्गस्पर्शं

अम्मापियरो मित्तजाइ० विउलेण असण पाणखाइम साइम पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा से रहित बन गया । फिर भी वहा विवश होकर वह कुछ समय तक ठहरा रहा । सागरदत्त सार्थवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, सबन्धी परिजनो का विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला तथा अलकार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उसने सबको अपने यहां से विदा कर दिया । (तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामयरागचेव अगफास

गरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाण खाइम साइम पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

એટલા માટે તે સાગર તેના અભિલાષાથી રહિત બની ગયો છતાએ તે ત્યા લાચાર થઈને થોડા વખત સુધી રોકાયે। સાગરદત્ત સાર્થવાહે સાગર દારકના માતાપિતાનો તેમજ તેના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી પરિજનોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી અને પુષ્પ વસ્ત્ર, ગધ, માળા તેમજ અલકારોથી બહુ સત્કાર અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે સૌને પોતાને ત્યાથી વિદાય કર્યા

(तएण सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएणं

परामिश्रितभस्म अर्चि=इन्धन प्रतिबद्धा ज्वाला, ज्वालाः इन्धनरहिता, आला तम्=उल्मुक, शुद्धाग्निः लोहपिण्डस्थोऽग्निः । असिपत्रादि-शुद्धाग्निपर्यन्तानां स्पर्शः इव सुकुमारिकायाः करस्पर्शो भवेत्तथाऽपि किमु? नायमर्थः समर्थः=अयं दृष्टान्तसमूहः करस्पर्शे साम्यं प्राप्तुं न समर्थः नहि कीदृशः ? इत्याह 'एसो अणिट्ठतराए चेव०' एतत्तमाद् असिपत्रादीनां स्पर्शादनिष्टतरक एव, अकान्ततरक एव=अत्यन्तमकमनीय एव, अप्रियतरक एव=अतिदुःखजनक एव अमनोज्ञतरक एव=अतिशयेन मनो विकृतिकारक एव अमनोमतरक एव=अतिशयेन मनः प्रतिकूल एव वर्तते, तमेवम्भूतं पाणिस्पर्शं सुकुमारिकादारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति ।

तए णं से सागरदारए अकामए अवसवसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स

भस्म अर्चि-इन्धन प्रतिबद्ध ज्वाला, ज्वाला-इन्धन से रहित ज्वाला अलात-उल्मुक शुद्धाग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि । इन असिपत्र से लेकर शुद्धअग्नि पर्यन्त पदार्थों का स्पर्श जैसा होता है वैसा ही सुकुमारिका के कर का स्पर्श हो सकता था-परन्तु यहां यह अर्थ समर्थित नहीं है -अर्थात् उसके सुकुमारिका के कर स्पर्श में इन दृष्टान्तों के स्पर्श की समानता नहीं मिल सकती है क्यों कि वह स्पर्श तो इनके स्पर्श से भी अधिक अनिष्टतर ही था, अकान्ततरक ही था-अत्यन्त अकमनीय था, अप्रिय तरकही था-अत्यन्त दुःखजनक ही था, अमनोज्ञतरक ही था -अत्यन्त मनो विकृतिजनक ही था, अमनोमतरक ही था-अत्यन्त मनः प्रतिकूल ही था । (तएण से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त संचिट्ठइ, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स

જ્વાળા, અલાત-ઉલ્મુક, શુદ્ધ અગ્નિ-લોહપિંડસ્થ અગ્નિ-આટલી વસ્તુઓનુ ગ્રહણ કરવુ જોઇએ આ અસિપત્રથી માંડીને શુદ્ધ અગ્નિ સુધીના પદાર્થોનો જે જાતનો સ્પર્શ હોય છે તેવો જ સુકુમારિકાના હાથનો પણ સ્પર્શ હતો

પણ હકીકતમા તો આ વસ્તુઓની સમાનતા પણ તેના તીક્ષ્ણ સ્પર્શની સાથે કરી શકાય તેમ નથી કેમકે તેના હાથનો સ્પર્શ તો ઉકત વસ્તુઓના સ્પર્શ કરતા પણ વધારે અનિષ્ટતર હતો, અકાતતરક હતો, અતીવ અકમનીય હતો, અપ્રિયતરક હતો, અત્યત દુ ખજનક હતો, અમનોમતરક હતો, બૂબજ મનો વિકૃતિજનક હતો, અમનોમ તરક હતો, બહુ જ મન પ્રતિકૂળ હતો

(तएण से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त संचिट्ठ -एण से सा

रिजनांश्च विपुलेनाशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको दारकः सुकुमारिकया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये 'निवज्जइ' निषीदति । तत' खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूपमङ्गस्पर्शं प्रतिसवेदयति-तद् यथानामक=तत् प्रतिसवेदन दृष्टान्तोपन्यासपूर्वक प्रदर्श्यते-असिपत्र वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अङ्गस्पर्शं

अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाणखाइम साइम पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा से रहित बन गया । फिर भी वहा विवश होकर वह कुछ समय तक ठहरा रहा । सागरदत्त सार्थवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, संबन्धी परिजनों का विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला तथा अलकार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उसने सबको अपने यहा से विदा कर दिया । (तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ, तएण से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफासं पडिसवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामयरागचेव अगफास

गरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाण खाइम साइम पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

એટલા માટે તે સાગર તેના અભિલાષાથી રહિત બની ગયો છતાએ તે ત્યા લાચાર થઈને થોડા વખત સુધી રોકાયે। સાગરદત્ત સાર્થવાહે સાગર દારકના માતાપિતાનો તેમજ તેના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી પરિજનોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી અને પુષ્પ વસ્ત્ર, ગધ, માળા તેમજ અલકારોથી બહુ સત્કાર અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે સૌને પોતાને ત્યાથી વિદાય કર્યા

(तएण सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएणं

मपत्नुमगत् निहरति। ततः खलु स सागरदारकस्तया अङ्गस्पर्शमसहमानोऽवश
वशः=भवशः स्वाधीनः, सन् मुहूर्तमात्रं संतिष्ठते। ततः खलु स सागरदारकः
सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा सुकुमारिकाया दारिकायाः पार्श्वत उत्तिष्ठति,
उत्थाय यत्रैव स्वकं शयनीयं तत्रोपागच्छति, उपागत्य शयनीये, 'निवज्जइ'
निषीदति स्वपितीत्यर्थः। तत खलु सुकुमारिका दारिका तो मुहूर्तान्तरे प्रति-
बुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता 'पइमणुरत्ता' पत्यनुरक्ता स्वपति प्रत्यनुरागिणी,
पार्श्वे पतिमपश्यन्ती 'तलिमाउ' तल्पात्=शयनीयात् उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्र

पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएणं से सागरए अगफासं असहमाणे अव
सव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ) इसके बाद सागरदारक सुकुमारिका के
साथ जहां वासगृह-शयन घर-था वहां गया वहां जाकर वह उस सुकु
मारिकाके साथर एक शय्यापर बैठ गया। बैठ जाने पर उस सागरदारक
को सुकुमारिका दारिकाका अगस्पर्श इस रूपसे प्रतीत हुआ-जैसे मानो
असिपत्र आदिका स्पर्श हो। इन असिपत्र (खड्गको यावत्) आदिको
के स्पर्श से भी उसका वह अगस्पर्श यावत् अमनोमतरक ही था। इस
प्रकार का उसका अगस्पर्श अनुभवता हुआ वह सागरदारक विवश
बनकर वहा कुछ समय तक ठहरा बाद में जब उससे सहन नहीं
हुआ तो। (तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं
जाणित्ता सूमालियाए दरियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सय
णिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं
सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइ

से सागरए अगफास असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ)

ત્યારપછી સાગર દારક સુકુમારિકાની સાથે જ્યા વાસગૃહ-શયનઘર હતુ
ત્યા ગયો, ત્યા જઈને તે સુકુમારિકાની સાથે એક શય્યા ઉપર બેસી ગયો
બેઠા બાદ તે સાગર દારકને સુકુમારિકા દારિકાનો અગ-સ્પર્શ એવા પ્રકારનો
જણાયો કે તે અસિપત્ર - તરવાર વગેરેનો સ્પર્શ ન હોય! અસિપત્ર
વગેરે કરતા પણ તેનો અગ સ્પર્શ યાવત અમનોમતરક હતો આ રીતે તેના
અગ સ્પર્શને અનુભવતો સાગર દારક લાચાર થઈને ત્યા થોડા વખત સુધી
રોકાયો અને ત્યારબાદ જ્યારે તેને તે સ્પર્શ અસહ્ય થઈ પડયો ત્યારે

(तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए
दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया

' से ' तस्य शयनीयं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (निवज्जई) निपीदति=स्वपिति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया ' दुच्चपि ' द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति यावद्-अकामकोऽपस्ववशो मुहूर्तमात्र संतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिका दारिका सुखप्रसुप्ता ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वार ' विहाडेइ ' विघाटयति = उद्घाटयति विघाटय ' मारामुक्कके विव काए ' मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहां अपनी शय्या थी वहां चला गया । वहां आकर उस पर पड़ गया इतने में ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलग से उठ बैठी । उठकर वह जहा सागरदारक का पलग था वहा गई । (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहा जाकर वह उसके पास सो गई । (तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूवं अगफासं पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्त मित्त सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ)

તે સાગર દારક તે સુકુમારિકા દારિકાને સુખેથી સૂતેલી જાણીને તેની પાસેથી ઉઠયો, અને ઉઠીને જ્યા પોતાની શય્યા હતી ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઇને તે તેની ઉપર પડી ગયો એટલામા એક મુહૂર્ત પછી પતિમા અનુરકત બનેલી પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકા જાગી ગઈ અને પોતાની પાસે પતિ ન જોતા પોતાની શય્યા ઉપરથી ઉઠી અને બેઠી ગઈ ત્યારપછી તે ઉઠીને જ્યા સાગર દારકની શય્યા હતી ત્યા ગઇ (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) ત્યાં જઇને તે તેના પડખામા સૂઈ ગઇ

(तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूव अंगफासं पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सचिट्ठइ,तएण से सागरदारए सूमालिय दारियं सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ,उट्ठित्ता वासघरस्स दार विहा-

पगल्भमाणे विहरइ। तए णं से सागरदारए सुकुमालियं दारियं सुहप्पसुत्तं जाणित्ता सुकुमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तए णं सुकुमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइं सागरयं अपासमाणी तओ सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता सागरदारयस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी जेणेव असुइठाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारयस्स सुकलं पडिसेहमाणी पासइ, पासित्ता एवं वयासी-अहो णं इमेणं माणुस्सए भवे अयसे अकित्ती अगुत्ती गरहा जं णं मए सागरदारए अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे सुकलं पडिसेहमाणे। तं धिरत्थु णं मम अधण्णाए अपुण्णाए अकयपुण्णाए एयारूवं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं जीवियं जीवित्तए, तं सेयं खलु ममं अप्पाणयं वावाइत्तए। एवं संपेहेइ, संपेहित्ता उत्तरिज्जगं ओमुयइ, ओमुइत्ता रुक्खं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासायाओ अप्पाणं मुयइ। तए णं से सागरदारए सुकुमालियाए दारियाए सरीरयं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासइ, पासित्ता

' से ' तस्य शयनीय तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (निवज्जइ) निषीदति=स्वपिति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया ' दुच्चपि ' द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारकम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति यावद्-अकामकोऽपस्ववशो मुहूर्तमात्रं संतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं ' विहाडेइ ' विघाटयति = उद्घाटयति विघाट्य ' मारामुक्के त्ति काए ' मारामुक्त इव कायः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहा अपनी शय्या थी वहां चला गया । वहां आकर उस पर पड़ गया इतने मे ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलग से उठ बैठी । उठकर वह जहा सागरदारक का पलग था वहा गई । (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहा जाकर वह उसके पास सो गई । (तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इमं एयारूव अगफास पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्त-मित्त सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पतिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ)

તે સાગર દારક તે સુકુમારિકા દારિકાને સુખેથી સૂતેલી જાણીને તેની પાસેથી ઉઠયો, અને ઉઠીને જ્યા પોતાની શય્યા હતી ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઇને તે તેની ઉપર પડી ગયો એટલામા એક મુહૂર્ત પછી પતિમા અનુરકત બનેલી પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકા જાગી ગઈ અને પોતાની પાસે પતિ ન જોતા પોતાની શય્યા ઉપરથી ઉઠી અને બેઠી ગઈ ત્યારપછી તે ઉઠીને જ્યા સાગર દારકની શય્યા હતી ત્યા ગઇ (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) ત્યાં જઇને તે તેના પડખામા સૂઈ ગઇ

(तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूव अंगफासं पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सचिट्ठइ,तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ,उट्ठित्ता वासघरस्स दार विहा-

स्ना वधस्थान, तस्मान्मुक्तो निर्गतः काक इव, 'द्व।-मारामुक्त=मारा-वधस्थानात्मुक्तः =निर्मुक्त विन्दुटितः काको यथा वेगतो निर्गच्छति तद्वत्, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० ९ ॥

मूलम्-तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइव्वया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ सागरस्स दारियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसणं करेमाणी२ वासघ रस्स दार विहाडियं पासइ पासित्ता एव वयासी-गए से

जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरस्स दार विहाडेई, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) सागरदारक की सुकुमारिका दारिका का अगरागँ हुवा रामी वैसा ही पूर्वोक्तरूप से अनुभव में आया-अन. उसके पास सोने की इच्छा न होने पर भी वह विवशहोकर कुछ समय तक उसके पास सोता रहा-जब वह अच्छी तरह सो गई-तब वह उसे खुब प्रसुप्तजा नकर उसके पास से उठा-और उठकर उसने उस वास गृह के दरवाजे को खोला खोलकर जिस प्रकार 'मारामुक्त' काक बड़े वेगसे निकलता है -उसी तरह यह भी बहुत जल्दी वहा से निकलकर जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा तरफ चोपिस चला गया। जिस मे प्राणी मारे जाते हैं उसका नाम मारा-शूना- वधस्थान है। इस मारा से निकला हुआ अथवा मारनेवाले पुरुष के हाथ से छूटा हुआ-ऐसे ये दो अर्थ " मारमुक्त " इस शब्द के हो सकते है। सू० ९

ઢેઈ,विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)
સાગર દારકને સુકુમારિકાનો બીજીવારનો અંગ સ્પર્શ પણ પહેલાની જેમજ લાગ્યો એટલા માટે તેની પાસે સૂવાની ઇચ્છા ન હોવા છતાએ તે વિવશ થઇને થોડીવાર સુધી તેની પાસે પડી રહ્યો જ્યારે તે સારી રીતે સૂઈ ગઈ ત્યારે તે તેને સુખેથી સૂતી જાણીને તેની પાસેથી ઉઠ્યો અને ઉઠીને તેણે તે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડ્યુ ઉઘાડીને જેમ મારા-મુક્ત કાગડો જલ્દી નીકળી જાય છે તેમજ તે પણ બહુ જ ત્વરાથી ત્યાથી નીકળીને જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો જે સ્થાને પ્રાણીઓ મારી નાખવામા આવે છે તેનુ નામ " મારા " (વધસ્થાન) છે આ ' મારા ' થી છૂટીને આમ બે અર્થો ' મારામુક્ત ' શબ્દના થઇ શકે છે ॥ સૂત્ર ૯ ॥

सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दास चेडियं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम देवाणुप्पिए ! बहुवरस्स मुह-धोवणियं उवणेहि, तएण सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणति, मुहधोवणिय गेण्हइ गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी – किन्नं तुम देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ?, तएणं सा सूमालिया दारिया तं दास-चेडी एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वास-घरदुवार अवगुणइ जाव पडिगए तएण तओ अह मुहुत्तं-तरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए ण से सागरएत्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायामि, तएण सा दासचेडी सूमालि-याए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेएइ, तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवाग-च्छइ उवागच्छित्ता जिणदत्तं एव वयासी–किण्णं देवाणु-प्पिया ! एव जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूव वा कुलसरिसं वा जन्न सागरदारए सूमालियं दारिय अदिट्ठदोस पइवयं

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दट्ठुण पुत्ता! तुमे कय सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एव वयासी—अवि आइ अह ताओ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डतरिए सागरस्स एयमट्ठ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालिय दारिय सद्दावेइ सद्दावित्ता अके निवेसेइ निवेसित्ता एव वयासी—किण्ण तुम पुत्ता! सागरएण दारएणं मुक्का?, अहणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—' तएण ' इत्यादि। ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका दारिका तनो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय सागरस्स दारकस्य सर्वतः समन्ताद् मार्ग णगवेषण कुर्वती२ वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वार विघाटितम्=उद्घाटित पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-गतः स सागरदारकः, इति कृत्वा 'ओहयमणसंकप्पा' अपहतमनः सकल्पा=नष्टमनोरथा, यावत् ध्यायति=आर्तध्यान करोतिस्म। ततस्तदनन्तर भद्रा सार्थवाही 'कल्ल' कल्ये=द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्या यावत् तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सूर्ये उदिते दासचेटीः=दासपुत्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा

'तएण सुमालिआ दारिया' इत्यादी।

टीकार्थ-(तएण) उसके बाद (सुमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइव्वया जाव अपासमाणी) एक मुहूर्त के बाद जग पडी-सो उस पतिव्रता ने वहा अपने पतिको जब नही देखा तब (सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसण करेमाणी २ वासघरस्स दार विहाडियं पासइ, पासित्ता एव वयासी) पलग से उठी उठकर उसने सागर दारक की वही पर सब और बार २ मार्गण गवेषणा की-। जब उसने शयन गृह के दरवाजे को उघडा हुआ देखा-तब उसे विचार आया कि (गये से सागरे त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएण सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउ० दासचेडिय सद्दावेइ) कि सागर चले गये है। इस प्रकार अपहतमनःसकल्प होकर वह विचार मे पड गई, इतने मे भद्रा सार्थवा

(तएण सूमालिया दारिया इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (सूमालिया दारिया) સુકુમારિકા દારિકા (तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइव्वया जाव अपासमाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને જ્યારે જોયા નહિ ત્યારે

(सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसण करेमाणी २ वासघरस्स दार विहाडियं पासइ, पासित्ता एव वयासी)

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાજ આસપાસ ચોમેર સાગર દારકની માર્ગણા-ગવેષણા કરી જ્યારે તેણે શયનગૃહના બારણાને ઉઘાડેલુ જોયુ ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(गए से सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउ दासचेडिय सद्दावेइ)

સાગર જતા રહ્યા છે આ રીતે અપહત મન સંકલ્પવાળી થઈને તે

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-दट्ठुण पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एव वयासी-अवि आइ अह ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुतरिए सागरस्स एयमट्ठ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालिय दारिय सद्दावेइ सद्दावित्ता अके निवेसेइ निवेसित्ता एव वयासी-किण्णं तुम पुत्ता ! सागरएण दारएणं मुक्का ?, अहंणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—' तएण ' इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय सागरस्स दारकस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं कुर्वती२ वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं विघाटितम्=उद्घाटितं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-गतः स सागरदारकः, इति कृत्वा 'ओहयमणसंकप्पा' यावद् हतमनः सङ्कल्पा=नष्टमनोरथा, यावत् ध्यायति=आर्तध्यानं करोतिस्म। ततस्तदनन्तरं भद्रा सार्थवाही 'कल्लं' कल्ये=द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सूर्ये उदिते दासचेटीं=दासपुत्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा

'तएणं सुमालिआ दारिया' इत्यादी।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सुमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइव्वया जाव अपासमाणी) एक मुहूर्त के बाद जग पडी-सो उस पतिव्रता ने वहां अपने पतिको जब नहीं देखा तब (सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी) पलंग से उठी उठकर उसने सागर दारक की वहीं पर सब और घर २ मार्गण गवेषणा की-। जब उसने शयन गृह के दरवाजे को उघडा हुआ देखा-तब उसे विचार आया कि (गये से सागरे त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दासचेडियं सद्दावेइ) कि सागर चले गये हैं। इस प्रकार अपहतमनःसंकल्प होकर वह विचार में पड गई, इतने में भद्रा सार्थवा

(तएणं सूमालिया दारिया इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारबाद (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइव्वया जाव अपासमाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને જ્યારે જોયા નહિ ત્યારે

(सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी)

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાં આસપાસ ચોમેર સાગર દારકની માર્ગણા-ગવેષણા કરી જ્યારે તેણે શયનગૃહના બારણાને ઉઘાડેલુ જોયુ ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(गए से सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ दासचेडियं सद्दावेइ)

સાગર જતા રહ્યા છે આ રીતે અપહત મન સંકલ્પવાળી થઈને તે

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरयं दारय एवं वयासी-दट्ठूणं पुत्ता! तुमे कय सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्त एवं वयासी-अवि आइ अहं ताओ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेस वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालिय दारिय सद्दावेइ सद्दावित्ता अके निवेसेइ निवेसित्ता एव वयासी-किण्णं तुम पुत्ता! सागरएण दारएणं मुक्का?, अहंणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—' तएण ' इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

हे देवानुप्रिये ! हे सुकुमारिके ! किं=कुतः खलु त्वम् अपहतमनः सङ्कल्पा यावत् ध्यायसि ?, ततस्तदनन्तर सा सुकुमारिका दारिका ता दासचेटीमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! एव खलु सागरको दारको मा सुखसमुप्ता ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहद्वारम् ' अवगुणइ ' अपगुणयति=अपावृणोति उद्घाटयति, 'यावत् प्रतिगत ' यस्याः एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिश प्रतिगत । ततस्तदनन्तर खलु ' तओ' ततो मुहूर्तान्तरेऽह यावत्-प्रतिबुद्धा सती सागरदारकमपश्यन्ती शयना दुत्तिष्ठामि, उत्थाय तस्य मार्गणगवेषण कुर्वती वासगृहस्य द्वार विघाटित पश्यामि गतः खलु स सागरकः ' इति कृत्वा=इति हेतोरहम् अपहतमनः सङ्कल्पा यावद्-

---

चिंता मग्न देखा-देखकर उसने उससे पूछा कि हे देवानुप्रिये ! क्या कारण है जो आप अपहतमन' सङ्कल्पा होकर चिन्ता मग्न बनी हुई हो ? इस दासचेटी के प्रश्नको सुनकर उस सुकुमारिका ने उस से कहा-देवानुप्रिये-सुनो-सागरदारक मुझे सुप्त प्रसुप्त जानकर मेरे पास से उठे और उठकर वासगृह के दरवाजे को खोलकर जहा से आये थे वहां चले गये है । (तए ण तओ अह मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडिय पासामि गएण से सागरए त्तिकट्टु ओहयमाण जाव झियायामि, तए ण सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ) उसके बाद ज्योंही मैं जगी-तो मैंने जब सागर दारक को अपने पास नहीं देखा-तो मैं शय्या से उठ बैठी-और उठकर मैने उनकी यहीं पर सब तरफ मार्गण गवेषणाकी उसमें मैने वासगृह के दरवाजे उघडा पाया-तब मैं समझ

જઇને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને ચિંતામા ગમગીન જોઈ જોઇને તેણે તેને પૂછ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા કારણથી તમે અપહત મન સકલ્પા થઇને ચિંતામા બેઠા છો ? દાસચેટીના પ્રશ્નને સાભળીને તે સુકુમારિકાએ તેને કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાભળો, સાગર દારક મને સુખેથી સૂતી જાણીને મારી પાસેથી ઉભા થયા અને ઉભા થઇને વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડીને જ્યાથી આવ્યા હતા, ત્યા જતા રહ્યા છે

(तएण तओ अह मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडिय पासामि गएण से सागरए त्ति कट्टु ओहयमण जाव झियायामि, तएण सा दासचेडी, सूमालियाए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી જ્યારે હુ જાગી ત્યારે મે સાગર દારક ને મારી પાસે જોયો નહિ, હુ શય્યા ઉપર ઉઠી અને બેઠી થઈ ગઇ અને ત્યાર પછી મે અહીં જ તેમની બધે માર્ગણ-ગવેષણા કરી મે જ્યારે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડુ જોયુ કે તેઓ ચાલ્યા ગયા છે આ વિચારથી જ હુ અપહત

एवयासीत्-हे देवानुप्रिये ! गच्छ खलु त्वं ' बहूवरस्स ' बधूवरस्य ' मुहधोवणियं ' मुखधावनिकां=दन्तधावनादिरूपाम् ' उवणेहि ' उपनय=प्रापय। ततः खलु सा दासचेटी भद्रया सार्थवाह्या एवमुक्तासती ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्= एतद्वचनं ' तहत्ति ' इति या प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य ' मुहधोवणियं ' मुख धावनिकां गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव वासगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामेकाकिनीं यावत् धात्रीवर्गेण-मार्यया यावत् पर्यायैः पश्यति दृष्ट्वा एवमवादीत्-

---

ચિંતામા ગમગીન થઇ ગઇ એટલામા બીજા દિવસે સવારે ભદ્રાસાર્થવાહીએ દાસપુત્રીને બોલાવી

(सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह ण तुमं देवाणुप्पिए ! बहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि, तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवंवुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणति मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सूमालियं दारियं जाव धायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी-किन्न तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ? तएणं सा सूमालिया दारिया त दासचेडिं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्त जणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुणइ, जाव पडिगए)

બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તું વરવધૂની પાસે આ દંતધાવન વગેરે મુખધાવનિકા લઇ જા ભદ્રાના આ કથનને સાભળીને તે દાસચેરીએ "तहत्ति" કહીને તેને સ્વીકારી લીધુ અને મુખધાવનિકા (દાતણ) ને લઈ લીધુ અને લઇને તે જ્યા વાસગૃહ હતુ ત્યા ગઇ ત્યા

विमुच्य=त्यक्त्वा इहागतः-कथमेतद् युक्तं, यत् निर्दोषां सुकुमारिकां विहाय सागरदारकोऽत्र समायात इति। एवं वह्वीभिः 'खिज्जणियाहि य' खेदनिकामिः= खेदपूर्णाभिस्तथा 'रुट्टणियाहि य'=रुटणियाभिव देशीयोऽयं शब्दः, रोदनक्रियायुक्ताभिः वाग्भिः उपालभते=सागरदत्तो जिनदत्तस्य उपालम्भं करोतीत्यर्थः।

ततः खलु जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तस्य सार्थवाहस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य यत्रैव सागरदारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरकं दारकं स्वपुत्रमेव= वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे पुत्र! त्वया खलु दुष्टु=अशोभनं कृतम् यत्-सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहादिह हव्यमागतः, तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्वं हे पुत्र! एवमपि=यथास्थितस्तत्रैव सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहम्। सागरदारको जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे तात! अपि=निश्चयेन 'आइ' इति वाक्यालङ्कारे अहं

दारियं अदिट्ठदोसं पइव्वयं विप्पजहाय इह मागओ वट्टइ खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि य उवालभइ) हे देवानुप्रिय! क्या यह बात योग्य है- अथवा कुलमर्यादा के लायक है, या कुल की योग्यता के अनुसार है या कुल को शोभित करे ऐसी है, जो सागरदारक बिना किसी दोषके देखे-पतिव्रता सुकुमारिका दारिका को छोड़कर यहां आ गया है इस प्रकार अनेक खेदपूर्ण एवं रोदनक्रिया युक्त वचनोंसे सागरदत्तने अपने सहधी जिनदत्तको ठपका-उलाहना दिया। (तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं,सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइ अहं ताओ!

હે દેવાનુપ્રિય! શું આ વાત વાજબી છે? કુળ મર્યાદાને લાયક છે? અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે? કુળને શોભાવનારી છે? કે જે સાગર દારક કોઈ પણ જાતના દોષ જોયા વગર પતિવ્રતા સુકુમારીકા દારિકાને ત્યજીને અહીં આવી ગયો છે? આ રીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થઈને રડતા રડતા ઘણા વચનોથી સાગરે પોતાના વેવાઇ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો.

(तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइ अहं

आर्तध्यानमध्यागमि । ततः खलु सा दासचेटी सुकुमारिकाया पारिकाया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा, यतो सागरदत्त सार्थवाह=सुकुमारिकाया पिता, तत्रोपागच्छति, उपागत्य त सागरदत्तमेतमर्थं निवेदयति । ततस्तदनन्तर स सागरदत्तः सार्थवाहो दासचेटया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुप्त.=शीघ्र क्रोधाविष्टः सन् यत्रैव जिनदत्तस्य सार्थवाहस्य गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य जिनदत्त सार्थवाहमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! किं=कथ खलु एय युक्तम्=उचित वा प्राप्त= कुलमर्यादामनुप्राप्त वा कुलानुरूप=कुलयोग्यतानुकूल वा कुलसदृश=कुलसाम्यापन्न वा, यत् खलु सागरो दारकः सुकुमारिका दारिकामदृष्टदोषा=निर्दोषा पतिव्रता

गई कि वे चले गये है इस विचार से मैं अपहृतमनः सकल्प होकर आर्तध्यान-चिन्ता-मे पड़ रही हूँ । इस प्रकार सुकुमारिका की बात सुनकर वह दासचेटी बहुत सोच विचार करके वहा से सागरदत्त के पास आई । (उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेएइ-तएण से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता जिणदत्त एव वयासी) वहाँ आकर उसने सागरदत्त से इस बात को कहा-। इस तरह दासचेटी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर सागरदत्त बहुत अधिक-क्रुद्ध हुआ-और उसी समय जहा जिनदत्त सार्थवाह का घर था वहा गया । वहा जाकर उसने जिनदत्त से इस प्रकार कहा-(किण्ह देवाणुप्पिया ! एव जुत्त वा पत्त वा कुलाणुरूव वा कुलसरिस वा जन्न सागरदारए सुमालिय

મન સકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન-ચિંતા-મા પડી છુ આ રીતે સુકુમારીકાની વાત સાભળીને તે દાસ ચેટી ખૂબજ વિચાર કરીને ત્યાથી સાગરદત્તની પાસે ગઈ

उवागच्छित्ता सागरदत्तस्य एयमट्ठ निवेएइ=तएण से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता जिणदत्त एव वयासी)

ત્યા આવી ને તેણે સાગરદત્તને આ વાત કરી આ રીતે દાસ ચેટીના મુખથી બધી વિગત સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને સાગર દત્ત અત્યત ગુસ્સે થયો અને તરત જ જ્યા જિનદત્ત સાર્થવાહનુ ઘર હતુ ત્યા ગયો ત્યા જઈને તેણે જિનદત્ત સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(किण्ण देवाणुप्पिया ! एव जुत्त वा पत्त वा कुलाणुरूव वा कुलसरिस वा जन्न सागरदारए सुमालिय दरियं अदिट्ठदोस पइवय विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि य उवालभइ)

विमुच्य=त्यक्त्वा इहागतः-कथमेतद् युक्तं, यत् निर्दोषां सुकुमारिकां विहाय सागरदारकोऽत्र समायात इति। एवं बहीभिः 'खिज्जणियाहि य' खेदनिकामिः= खेदपूर्णाभिस्तथा 'रुट्टणियाहि य'=रुटणियाभिश्च देशीयोऽयं शब्दः, रोदनक्रिया युक्ताभिः वाग्भिः उपालभते=सागरदत्तो जिनदत्तस्य उपालम्भं करोतीत्यर्थः।

ततः खलु जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तस्य सार्थवाहस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य यत्रैव सागरदारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरकं दारकं स्वपुत्रमेव= वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे पुत्र! त्वया खलु दुष्ठु=अशोभनं कृतम् यत्-सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहादिह हव्यमागतः, तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्वं हे पुत्र! एवमपि=यथास्थितस्तत्रैव सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहम्। सागरदारको जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे तात! अपि=निश्चयेन 'आइ' इति वाक्यालङ्कारे अह

दारियं अदिट्ठदोसं पइव्वयं विप्पजहाय इह मागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि य उवालभइ) हे देवानुप्रिय! क्या यह बात योग्य है- अथवा कुलमर्यादा के लायक है, या कुल की योग्यता के अनुसार है या कुल को शोभित करे ऐसी है, जो सागरदारक बिना किसी दोषके देखे-पतिव्रता सुकुमारिका दारिका को छोड़कर यहां आ गया है इस प्रकार अनेक खेदपूर्ण एवं रोदनक्रिया युक्त वचनोंसे सागरदत्तने अपने सबधी जिनदत्तको ठपका-उलाहना दिया। (तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं, सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविणए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइ अहं ताओ!

હે દેવાનુપ્રિય! શું આ વાત વાજબી છે? કુળ મર્યાદાને લાયક છે? અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે? કુળને શોભાવનારી છે? કે જે સાગર દારક કોઈ પણ જાતના દોષ જોયા વગર પતિવ્રતા સુકુમારીકા દારિકાને ત્યજીને અહીં આવી ગયો છે? આ રીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થઈને રડતા રડતા ઘણા વચનોથી સાગરદત્તે પોતાના વેવાઈ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો।

(तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविणए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइ अहं

तमाइया गिरिपडण वा तरुपडण वा मरुप्पवाय वा=निर्जलप्रदेशगमन वा जलप्रपात वा=अगाधजले पतन वा, जलनप्रवेश वा जाज्वल्यमानो प्रवेश वा विषभक्षणं वा, 'सत्थोवाडण वा' शस्त्रावपाटन वा=शस्त्रेण शरीरविदारण वा, 'वेहाणस वा' वैहायस वा गले पाशग्रहण वा, तथा-गृद्धपृष्ठ=गृद्धैः स्पर्शनं मया गात्रोद्दीना कलेवरे मनेप्सितस्य शरीरस्य मृतावुद्धा गृद्धैर्भक्षण, तथा प्रव्रज्या वा, विदेश-

---

गिरिपडण वा तरुपडण वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अह सागरदत्तस्स गिह गच्छिज्जा) जिनदत्त सागरदत्त के इस उत्तालने रूप अर्थ को सुन करके जहां सागरदारक था वहां गया-वहां जाकर उसने सागर दारक से इस प्रकार कहा-हे पुत्र ! यह तुमने अच्छा नहीं किया-जो तुम सागरदत्त के घर से यहां इतने जल्दी आ गये। इसलिये हे बेटा ! तुम जैसे यहां बैठे हो वैसे ही सागरदत्त के घर चले जाओ। तब सागरदारकने अपने पिता जिनदत्त से इस प्रकार कहा-पितोजी ! मैं आपकी आज्ञा से पर्वत से गिरना स्वीकार कर सकता हूँ, वृक्ष से नीचे पड़जाना स्वीकारकर सकता हूँ-मरुप्रपात-निर्जलप्रदेश में जाना अगीकारकर सकता हूँ, अगाधजल में डूबकर मरसकता हूँ तथा जलती हुई अग्नि में प्रवेश करना, विषकाभक्षण करना, शस्त्र से शरीर का

ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अह सागरदत्तस्स गिह गच्छिज्जा)

જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાભળીને જ્યા સાગર દારક હતો ત્યા ગયો અને ત્યા જઇને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! તમે આ જે કઈ કર્યું છે, તે સારુ ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા! તમે અત્યારે જેવી સ્થિતિમા છો તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો ત્યારે સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પિતશ્રી ! તમારી આ જ્ઞાથી હુ પર્વત ઉપરથી નીચે ગબડી પડવુ સ્વીકારી શકુ છુ, વૃક્ષ ઉપરથી નીચે પડી જવું સ્વીકારી શકુ છુ, મરુપ્રપ ત-નિર્જળ પ્રદેશમા જવુ સ્વીકારી શકુ છુ, ઊડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકુ છુ, તેમજ સળગતા અગ્નિમા પ્રવેશવુ, વિષનુ ભક્ષણ કરવુ, શસ્ત્રનાઘાથી શરીર ને કાપવુ, ગળા સો'

गमन वा अभ्युपगच्छामि=स्वीकरोमि किंतु खलु=निश्चयेन सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहे नैवगच्छामि । ततस्तदा-स सागरदत्तः सार्थवाहः कुड्यान्तरित = भित्तिव्यवधानेन स्थितः सागरस्य दारकस्य एतमर्थम्=उक्त वचन निशामयति=शृणोति, निशाम्य लज्जित स्वय, व्रीडितः परतः ' पिडे ' पिडः=देशीयोऽय शब्दः स्वपरतोलज्जितः, जिनदत्तस्य गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति । प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वक गृह तत्रोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिका दारिका शब्दयति, शब्दयित्वा अङ्के=उत्सङ्गे ' निवेसेइ ' निवेशयति= उपवेशयति, निवेश्य एवमवादीत्-हे पुत्री ! किं=केन कारणेन खलु तव सागरेण दारकेण ' मुक्का ' मुक्ता=त्यक्ता ?।

विदारण करना गले में फांसी लगाकर मरजाना, गज, उष्ट्र आदि के मृतकलेवर मे मैं अपने आपको प्रक्षिप्त कराकर उस शरीरको मृतबुद्धि की कल्पना से गृद्ध पक्षियों द्वारा भक्षण करवाना यह सब मैं स्वीकार कर सकताहूँ, इसी तरह दीक्षाग्रहण करना अथवा विदेश में चलेजाना भी स्वीकारकर सकता हूँ-परन्तु मैं सागरदत्त के घरजानास्वीकार नही कर सकता हूँ । अर्थात् ये सब पूर्वोक्त आपकी आज्ञाएँ मुझे विना किसी सकोचके या विचारके मान्य हैं परन्तु सागरदत्तके घरजाना मुझे मान्य नहीं है । (तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विड्डे जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंकेनिवेसेइ, निवेसित्ता एव वयासी, किण्णं तुम पुत्ता सागरएण दारएण मुक्का? अह ण तुम तस्स

લેરવીને મરવુ, હાથી ઊંટ વગેરેના મરેલા શરીરમા પ્રવેશ કરી મારા શરી રને મૃતબુદ્ધિની કલ્પનાથી ગીધ પક્ષીઓને બવડાવવુ આ બધુ હુ સ્વીકારી શકુ તેમ છુ, તેવી જ રીતે દીક્ષા ગ્રહણ કરવી અથવા તો પરદેશમા જતા રહેવુ પણ હુ સ્વીકારી શકુ છુ પણ હુ સાગરદત્તના ઘેર જવુ સ્વીકારવા તૈયાર નથી એટલે કે આ બધી ઉપરની તમારી આજ્ઞાઓ મને કોઇ પણ જાતના વિચાર કર્યા વગર માન્ય છે, પણ સાગરદત્તને ત્યા જવુ માન્ય નથી

(तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विड्डे, जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एव वयासी किण्णं तुम पुत्ता सागरएण दारएण

तवाइणया गिरिपतन वा तरुपतन वा मरुप्पपात वा=निर्जलदेशगमन वा जम्पपात वा=अगाधजले पतन वा, जलप्रवेश वा जाज्वल्यमानो प्रवेश वा विषभक्षणं वा, 'सत्थोवाडण वा' शस्त्रावपाटन वा=शस्त्रेण शरीरविदारण वा, 'वेहाणस वा' वैहायस वा कण्ठे पाशकग्रहण वा, तथा-गिद्धपिट्ठ=गृध्रैः स्वयं मया वा मनोदृढीकृतैः शरीरस्य मांसभक्षणं वा गृध्रभक्षण, तथा पव्रज्या वा, विदेश

गिरिपडण वा तरुपडण वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अह सागरदत्तस्स गिह गच्छिज्जा) जिनदत्त सागरदत्त के इस उलाहने रूप अर्थ को सुन करके जहां सागरदारक था वहां गया-वहां जाकर उसने सागर दारक से इस प्रकार कहा-हे पुत्र! यह तुमने अच्छा नहीं किया-जो तुम सागरदत्त के घर से यहां इतने जल्दी आ गये। इसलिये हे बेटा! तुम जैसे यहां बैठे हो वैसे ही सागरदत्त के घर चले जाओ। तब सागरदारकने अपने पिता जिनदत्त से इस प्रकार कहा-पितोजी! मैं आपकी आज्ञा से पर्वत से गिरना स्वीकार कर सकता हूँ, वृक्ष से नीचे पड़जाना स्वीकारकर सकता हूँ-मरुप्रपात-निर्जलप्रदेश में जाना अंगीकारकर सकता हूँ, अगाधजल में डूबकर मरसकता हूँ तथा जलती हुई अग्नि में प्रवेश करना, विषभक्षण करना, शस्त्र से शरीर का

ताओ ! गिरिपडण वा तरुपडणं वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापि ट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अह सागरदत्तस्स गिह गच्छिज्जा)

જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાભળીને જ્યા સાગર દારક હતો ત્યા ગયેા અને ત્યા જઇને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! તમે આ જે કઈ કર્યું છે, તે સારુ ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા! તમે અત્યારે જેવી સ્થિતિમા છેા તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહેા ત્યારે સાગર દારકે પેાતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પિતશ્રી! તમારી આ જ્ઞાથી હુ પર્વત ઉપરથી નીચે ગબડી પડવુ સ્વીકારી શકુ છુ, વૃક્ષ ઉપરથી નીચે પડી જવુ સ્વીકારી શકુ છુ, મરુપ્રપ ત-નિર્જળ પ્રદેશમા જવુ સ્વીકારી શકુ છુ, ઊડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકુ છુ, તેમજ સળગતા અગ્નિમા પ્રવેશવુ, વિષનુ ભક્ષણ કરવુ, શસ્ત્રનાઘાથી શરીર ને કાપવુ, ગળામા

जाव अन्निज्जमाणमग्ग, तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! एय दमगपुरिस विउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोभेहि पलोभित्ता गिह अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग खडघडग ते एगते एडेह एडित्ता अलकारियकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कयवलि० जाव सव्वालकारविभूसिय करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइम भोयावेह भोयावित्ता मम अतिय उवणेह, तएण कोडुवियपुरिसा जाव पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं दमग असण उवप्पलोभेंति उवप्पलोभित्ता सय गिह अणुपवेसिति अणुपवेसित्ता त खडगमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणसि महया२ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसियसद्द सोच्चा निसम्म कोडुवियपुरिसे एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया महया सद्देण आरसइ ? तएण ते कोडुवियपुरिसा एव वयासी—एस णं सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया महया सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुवियपुरिसे एव वयासी—मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स त

अहं खलु तां तस्मै दास्यामि यस्य यद् इष्टा=भविष्यसि कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोमा=मनोगता भविष्यसि, इति=एवं सुकुमारिकां दारिकां बहुभिरिष्टैः' 'समासासेइ' समाश्वासयति समाश्वास्य प्रतिविसर्जयति=सत्कारयति ॥ १० ॥

मूलम्-तएणं से सागरदत्ते गए समं दमगपुरिसं पासइ दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं

दलामि जस्स ण तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सुमालिय दारिय ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ) वहीं भित्ति के पीछे छुपा हुआ सागरदत्त सार्थवाह सागर-के उन वचनों को सुन रहा था। सो सुनकरके स्वयं बड़ा लज्जित हुआ तथा दूसरोंसे भी उसे बड़ी शर्म आई इस तरह स्व और पर से लजाता हुआ वह जिन दत्त के घर से बाहर निकल गया। और जाकर अपने घर पहुँचा। घर पहुँच कर उसने अपनी पुत्री सुकुमारिका दारिका को बुलाया -बुलाने पर जब वह आ गई तब उसे उसने अपनी गोदी में बैठा लिया बैठानेके बाद फिर उसने उससे पूछा बेटी ! सागरने तुम्हें किस कारण से छोड़ दिया है मैं तुम्हें उसी के दूंगा। कि जिस के लिये तुम अच्छी तरह इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा एवं मनोमा होओगी, इस प्रकार उसने सुकुमारिका दारिकाको उन२ इष्ट वचनों द्वारा अच्छी तरह आश्वासन दिया-धैर्य बँधाया-और आश्वासन देकर उसे विसर्जित करदिया।सू०१०

मुक्का [1] अह ण तुम तस्स दाहामि जस्सण तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सुमालिय दारिय ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ)

ત્યા જ ભીંતની પાછળ છુપાઇને સાગરદત્ત સાર્થવાહ સાગરની તે બધી વાતને સાભળી રહ્યો હતો સાભળી તે બહુજ લજ્જિત થયો તેમજ બીજા ઓથી પણ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે 'જાતે' અને બીજાઓથી લજાતો તે જિનદત્તના ઘેરથી બહાર નીકળી ગયો અને નીકળીને પોતાને ઘેર પહોચ્યો ત્યા જઇને તેણે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકા દારિકાને બોલાવી જ્યારે તે સુકુમારિકા દારિકા આવી ગઈ ત્યારે તેને પોતાના ખોળામા બેસાડી લીધી બેસાડીને તેણે તેને પૂછયુ હે બેટી ! શા કારણથી સાગરે તને ત્યજી છે ? તને હુ તે પુરુષને જ આપીશ કે જેના માટે તુ સારી રીતે ઇષ્ટા, કાતા પ્રિયા, મનોજ્ઞા અને મનોમા થશે આ રીતે તેણે સુકુમાર દારિકાને પોતાના ઇષ્ટ વચ નોથી સારીરીતે આશ્વાસન આપ્યુ અને ત્યાર પછી તેને વિદાય આપી -- ૧૦॥

जाव अन्निज्जमाणमग्गं, तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी--तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिस विउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोभेहि पलोभित्ता गिह अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग खडघडग ते एगते एडेह एडित्ता अलकारियकम्म कारेह कारित्ता पहाय कयवलि० जाव सव्वालकारविभूसिय करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइम भोयावेह भोयावित्ता मम अतिय उवणेह, तएण कोडुवियपुरिसा जाव पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेति उवप्पलोभित्ता सय गिह अणुपवेसेति अणुपवेसित्ता त खडगमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगते एडिज्जमाणसि महया२ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसियसद्द सोच्चा निसम्म कोडुबियपुरिसे एव वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया महया सद्देण आरसइ ? तएणं ते कोडुवियपुरिसा एव वयासी—एस ण सामी ! तसि खडमल्लगसि खंडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया महया सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुवियपुरिसे एव वयासी—मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स त

खंड जाव एडेइ पासे ठवेइ जहा णं पत्तिय भवइ, तेवि तहेव ठवंति. तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गाय उव्वट्टिति२ उसिणोदगेणं गंधोदगेण सीतोदगेणं पहाणेंति पम्हल सुकुमाल गंधकासाइयाए । गायाइ लूहेंति लूहित्ता हंसलक्खणं पट्टसाडगं परिहेंति परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति करित्ता विउल असणपाणखाइमसाइमं भोयावेंति भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति, तएण सागरदत्ते सूमालियं दारियं पहायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करिता तं दमगपुरिसं एवं वयासी–देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि भद्दियाए भद्दओ भविज्जासि, तएण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणिता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि निवज्जइ, तएण से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्टित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खंडमल्लग खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तएण सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्तिकट्टु ओहयमण जाव झियाइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स सागरदत्त सार्थवाहोऽन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले ' उप्पिं आगासतलगंसि ' उपरि आकाशतलके=प्रासादोपरिभागे , सुहनिसण्णे ' सुखेनोपविष्टः, राजमार्गमवलोकमानः २ तिष्ठति । तत खलु स सागरदत्त एक महान्त ' दमगपुरिसं ' द्रमनपुरुष ' दमग ' इति देशीयः शब्दः दरिद्रपुरुष पश्यति, किम्भूतम् ? इत्याह–' दडिखंड निवसण ' दण्डिखण्डनिवसन=दण्डि–कृतसन्धान जीर्णवस्त्र तस्य खण्ड तदेव निवसन परिधानवस्त्र यस्य स दण्डिखण्डनिवसनस्तम्, तथा–, खडमल्लग घडगहत्थगय ' खण्डमल्लकघटकहस्तगत= खण्डमल्लक–खण्डशराव स्फुटितशराव भिक्षापात्र, तथा खण्डघटकश्च=खण्डरूपो घट' स्फुटितस्य घटस्य भागः स एव जलपात्र, एतद् द्वय हस्तगत यस्य तम्, ' मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्ग ' मक्षिकासहस्रै र्यावत् अन्वीयमानमार्गं, शरीरवस्त्रादेर्मलिनत्वात् तत्पृष्ठतो मक्षिका आप

'तएण से सागरदत्ते' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण से सागरदत्ते)इसके बाद सागरदत्तने किसी एक समय " उप्पिं आगासतलगंसि " अपने प्रासाद के ऊपर सुख पूर्वक बैठी हुई स्थिति में राजमार्ग का अवलोकन करते समय (एग महं दमगपुरिसं पासइ) एक अत्यत दरिद्र पुरुष को देखा (दडिखडनिवसण खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं जाव अनिज्जमाणमग्गं) जो जीर्णवस्त्र के जुड़े हुए चिथडे को पहिने था और जिसके हाथ में खडमल्लकया–फुटा हुआ मिट्टि के खप्पर था – तथा पानी पीने के लिये फुटे हुए घट का एक खप्पर था । हजारो मक्खिया जिसके पीछे पीछे, शरीर और वस्त्रो के मलिन होने से भिन्न २ करती हुई उड़ रही

' तएण से सागरदत्ते ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तएण से सागरदत्ते) ત્યાર બાદ સાગરદત્ત કોઈ એક વખત (उप्पिं आगासतलगंसि) પોતાના મહેલની ઉપર સુખેથી બેસીને રાજમાર્ગનુ અવલોકન કરતો હતો ત્યારે તેણે (एग महं दमगपुरिसं पासइ) એક ખૂબજ દરિદ્ર–કંગાળ–પુરુષને જોયો (दडिखडनिवसण खडगमल्लगघडगहत्थगय मच्छियासहस्सेहिं जाव अनिज्जमाणमग्ग) તેણે જૂના વસ્ત્રના ચીંથરાઓ પહેરેલા હતા અને તેના હાથમા " खडमल्लक हतु ' એટલે કે ફુટી ગયેલા માટીના વાસણનો એક કકડો હતો તેમજ પાણી પીવા માટે ફુટેલી માટલીનુ એક ખપ્પર હતુ હજારો માખીઓ તેનીપાછળ પાછળ-શરીર અને વસ્ત્રોની મલીનતાને લીધે ઉડી રહી હતી,

तन्तीत्यर्थः । ततः खलु स सागरदत्तः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् हे देवानुप्रियाः ! यूय खलु एतं दमकपुरुषं=रङ्कपुरुषं विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य खण्डमल्लक खण्डघटकं=पानीयपात्रं 'से' तस्य दमकपुरुषस्य एकान्ते=एकान्त स्थाने 'एडेह' निक्षेपयत, निक्षिप्य अलङ्कारिककर्म = केशनखच्छेदनादिक नापितादिभिः कारयत, कारयित्वा स्नातं कृतबलिकर्माणं यावत् सर्वालङ्कार

थी। (तए णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडघडगं च एगंते एडेह एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह) इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया। बुलाकर उसने इस प्रकार कहा देवानुप्रियो। तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर फिर इसे घर में भीतर करलो। जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब तुमलोग इसके ये खंडमल्ल (फटी लगोटी) और खंडघटक इससे छुड़ा कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो। बाद में नापित (नाई) को बुलाकर इसके सुन्दर ढंग से बाल बनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेइ, पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडं घडगं च एगंते एडेह, एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह)

ત્યારપછી સાગરદત્તે આજ્ઞાકારી પુરૂષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો આ દરિદ્ર પુરૂષને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારની લાલચ આપો લાલચ આપીને તેને ઘરની અંદર બોલાવી લો જ્યારે તે ઘરમા આવી જાય ત્યારે તમે તેની પાસેના ખંડમલ્લ અને ખંડઘટક લઈને તેને એકાંત સુરક્ષિત સ્થાનમા મૂકી દો ત્યારપછી હજામને બોલાવીને તેના સરસ રીતે વાળ કપાવી નાખો અને વધી ગયેલા નખ વગેરેને કપાવી નાખો ત્યાર ^ તેને સ્નાન

विभूषित कुरुत कृत्वा ' मणुण्ण ' मनोज्ञम्=रुचिरम् अशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयत भोजयित्वा ममान्तिकम्=समीपमुपनयत । ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-प्रतिशृण्वन्ति=' तथाऽस्तु ' इति कृत्वा तदाज्ञा स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमकपुरुषः=रङ्कपुरुष', तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त द्रमक रुचिरेण विपुलेनाशनादिना प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वक गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमल्लक खण्डकघटक च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते ' एडति ' निक्षेपयन्ति, तत खलु स द्रमक स्तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते ' ' एडिज्जमाणसि ' निक्षेप्यमाणे सति महता २ शब्देन ' आरसइ ' आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य द्रमकपुरुषस्य त महान्त ' आरसियइ सद्द ' आक्रन्दनशब्द श्रुत्वा निशम्य कौटु

हैं उन्हें कटवाओ । उसके पश्चात् इसे स्नान कराओ । बाद मे इससे पशु पक्षी आदिको अन्नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलकारो से विभूषित करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद मे फिर हमारे पास इसे ले आओ । (तएण कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सय गिह अणुपवेसिंति अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खड घटगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसियसद्द सोच्चा

કરાવો સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના હાથેથી પશુ-પક્ષી વગેરેનો અન્ન વગેરેનો ભાગ આપવા રૂપ બલિકર્મ કરાવડાવો જ્યારે બલિકર્મની વિધિ પતી જાય ત્યારે તમે લોકો એને બધી જાતના અલકારોથી શણગારો શણગારીને તેને મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડો જમાડયા પછી તેને અમારી પાસે લઈ આવો

(तएण कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंते उवप्पलोभित्ता सयगिह अणुपवेसिंति, अणुपविसित्ता, त खडगमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खडघडगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसियसद्द सोच्चा निसम्म कोडुबियपुरिसे एव वयासी)

तन्तीत्यर्थः । ततः खलु स सागरदत्तः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु एनं द्रमकपुरुषं=रङ्कपुरुषं विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य खण्डशराव खण्डघटक=पानीयपात्रं 'से' तस्य द्रमकपुरुषस्य एकान्ते=एकान्त स्थाने 'एडेह' निक्षिपत, निक्षिप्य अलंकारिककर्म = केशनखच्छेदनादिक नापितादिभिः कारयत, कारयित्वा स्नातं कृतबलिकर्माणं यावत् सर्वालङ्कार-

थी। (तए णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाण खाइम साइम पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खडगमल्लगं खडघडगं च एगंते एडेह एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह) इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया। बुलाकर उसने इस प्रकार कहा देवानुप्रियो। तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर फिर इसे घर में भीतर करलो। जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब तुमलोग इसके ये खडमल्ल (फटी लगोटी) और खडघटक इससे छुड़ा कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो। बाद में नापित (नाई) को बुलाकर इसके सुन्दर ढग से बाल बनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेइ, पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लगं खडघडगं च एगंते एडेह, एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह)

ત્યારપછી સાગરદત્તે આજ્ઞાકારી પુરૂષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો આ દરિદ્ર પુરૂષને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારની લાલચ આપો લાલચ આપીને તેને ઘરની અંદર બોલાવી લો જ્યારે તે ઘરમા આવી જાય ત્યારે તમે તેની પાસેના ખંડમલ્લ અને ખંડઘટક લઈને તેને એકાંત સુરક્ષિત સ્થાનમા મૂકી દો ત્યારપછી હજામને બોલાવીને તેના સરસ રીતે વાળ કપાવી નાખો અને વધી ગયેલા નખ વગેરેને કપાવી નાખો ત્યારપછી તેને સ્નાન

विभूषित झुरुत कृत्वा ' मणुण्ण ' मनोज्ञ=रुचिरम् अशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयत भोजयित्वा ममान्तिक=समीपमुपनयत । ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-प्रतिशृण्वन्ति=' तथाऽस्तु ' इति कृत्वा तदाज्ञा स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमकपुरुषः=रङ्कपुरुष', तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त द्रमक रुचिरेण विपुलेनाशनादिना प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वक गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमल्लक खण्डकघटक च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते ' एडति ' निक्षेपयन्ति, तत खलु स द्रमकस्तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते ' ' एडिज्जमाणसि ' निक्षेप्यमाणे सति महता २ शब्देन ' आरसइ ' आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य द्रमकपुरुषस्य त महान्त ' आरसियइ सद्द ' आक्रन्दनशब्द श्रुत्वा निशम्य कौटु-

---

हैं उन्हें कटवाओ । उसके प्रश्चात् इसे स्नान कराओ । बाद मे इससे पशु पक्षी आदिको अ नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलंकारो से विभूषित करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद में फिर हमारे पास इसे ले आओ । (तएण कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त दमगं असण उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खड घटगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसियसद्द सोच्चो

કરાવો સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના હાથેથી પશુ-પક્ષી વગેરેનો અન્ન વગેરેનો ભાગ આપવા રૂપ બલિકર્મ કરાવડાવો જ્યારે બલિકર્મની વિધિ પતી જાય ત્યારે તમે લોકો એને બધી જાતના અલકારોથી શણગારો શણગારીને તેને મનોજ્ઞ, અશન, પાન, બાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડો જમાડયા પછી તેને અમારી પાસે લઈ આવો

(तएण कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंते उवप्पलोभित्ता सयागेह अणुपवेसिंति, अणुपविसित्ता, त खडगमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खडघडगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसिय सद्द सोच्चा निसम्म कोडुबियपुरिसे एव वयासी)

म्बिकपुरुषानेवमवादीत्-हं देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु एष द्रमकपुरुषो महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा एवमवदन्-एष खलु हे स्वामिन ! तस्मिन् खण्डघटके खण्डघटके गृह्यमाणे महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् एवमवादीत्-हं देवानुप्रियाः ! मा खलु यूय एतस्य

निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और स्वीकारकर वहां जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से बार २ लुभाया लुभाकर वे उसे अपने घर तक ले आये और अन्त में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन लोगोंने उस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खंड को, तथा फूटे हुए घडे के खप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख दिया । जब उस दमकपुरुषने अपने खंडमल्लक(फटी लगोटी) को और खंडघटको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आवाजको सुनकर और उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषो से इस प्रकार कहा-(किण्णं देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ ३ तएणं ते कौडुंबियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं

આ જાતની સાગરદત્તની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ સારી રીતે સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ દરિદ્ર માણસની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેને બોલાવ્યો અને અશન, પાન વગેરે ૪પ ચાર જાતના આહારની વારવાર લાલચ આપી લલચાવીને તેઓ તેને ઘર સુધી લઈ આવ્યા અને છેવટે તેને ઘરમા દાખલ કરી દીધો ત્યારપછી તે લોકોએ તે દરિદ્ર માણસની પાસેથી ફૂટેલા માટીના વાસણનો કટકો તેમજ ફૂટેલા માટલાના ખપ્પરને લઈને સુરક્ષિત સ્થાને મૂકી દીધુ જ્યારે તે દરિદ્ર માણસે પોતાના ખંડમટલકને અને ખંડઘટકને પોતાની પાસેથી છીનવીને એકાંત સ્થાનમા મૂકતા જોયુ ત્યારે તે મોટેથી ઘાટા પાડીને રડવા લાગ્યો તેના રડવાના આવાજને સાભળીને અને તેને પોતાના ચિત્તમા ધારણ કરીને સાગરદત્તે કૌટુંબિક પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(किण्णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं से

द्रमकपुरुषस्य तत् खण्डमल्लक खण्डघटक यावत्-एकान्ते 'एडेह' निक्षेपयत अस्य परोक्षे मा स्थापयतेत्यर्थ, किन्तु पार्श्वे स्थापयत, यथा खलु 'पत्तिय' प्रत्ययः= विश्वासो भवति। तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव स्थापयन्ति। तत खलु ते कौटु-

---

आरसह, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुबिय पुरिसे एव वयासी) हे देवानुप्रियो! क्या कारण है जो यह दमक पुरुष जोर २ से रो रहा है? तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने ऐसा कहा कि हे स्वामिन्! इसने ज्योही अपने खडमल्लक को और घटखड को लेकर एक ओर सुरक्षित स्थान में रखे जाते हुए देखा वैसे ही यह बडे जोर२ से रोने लगा है। ऐसा सुनकर सागरदत्त ने उन कौटुम्बिक पुरुषो से इस प्रकार कहा- (माण तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स त खड जाव एडेह, पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, तेवि तहेव ठवेंति, तएण ते कोडुबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलकारियकम्म करेंति, करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेंति, अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्वट्टणेण गाय उव्वट्टिंति, २ उसिणोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेंति) हे देवानुप्रियो! तुम लोग इस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खड को और फूटे हुए घडे के खप्पर को इससे लेकर परोक्ष में-अदृश्य स्थान में-मत रखो किन्तु इस के पास में ही-समक्ष रखो, जिससे इसे अपनाविश्वास बना रहे। इस प्रकार सागरदत्त की बात

कोडुबिय पुरिसे एव एव वयासी)

હે દેવાનુપ્રિયો! શા કારણથી આ દરિદ્ર માણસ મોટેથી ઘાટા પાડી પાડીને રડી રહ્યો છે? ત્યારે તે કૌટુબિક પુરૂષોએ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામિન્! પોતાના ખડમલ્લક અને ખડઘટકને તેની પાસેથી લઈને બીજા સુરક્ષિત સ્થાને લઈ જતા જોઈને આ દરિદ્ર માણસ મોટેથી રડવા લાગ્યો છે આ પ્રમાણે સાભળીને સાગરદત્તે કૌટુબિક પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(माण तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स त खड जाव एडेह पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, ते वि तहेव ठवेंति, तएण ते कोडुबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलकारियकम्म करेंति, करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेंति अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्वट्टणेण गाय उव्वट्टिंति २ उसिणोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेंति)

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો આ દરિદ્ર પુરૂષના ફૂટેલા માટીના દીપકના કટકાને અને ફૂટેલા ઘડાના ખપ્પરને એની પાસેથી લઈને દૂર એકાતમા મૂકશો —નહિ પણ એની પાસે જ-એની સામે જ મૂકી રાખો જેથી એને વિશ્વાસ રહે

म्बिकपुरुषानेवमवादीत्-किं देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु एष दमकपुरुषो महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः एवं मवदन्-एष खलु हे स्वामिन् ! तस्मिन् खण्डघटके यावत्ते निक्षिप्यमाणे महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! मा खलु यूयं यतस्य

निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और स्वीकारकर चला जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से बार २ लुभाया ललचाकर वे उसे अपने घर तक ले आये और अन्त में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन लोगोंने उस दमक पुरुष के फटे हुए मिट्टी के दीपक के खड को, तथा फूटे हुए घडे के खप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख दिया । जब उस दमकपुरुषने अपने खडमल्लक,फटी लगोटी) को और खडघटकको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आवाजको सुनकर और उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषों से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सद्देण आरसइ ३ तएण ते कौडुंबियपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तंसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देण

આ જાતની સાગરદત્તની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ સારી રીતે સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ દરિદ્ર માણસની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેને બોલાવ્યો અને અશન, પાન વગેરે રૂપ ચાર જાતના આહારની વારવાર લાલચ આપી લલચાવીને તેઓ તેને ઘર સુધી લઈ આવ્યા અને છેવટે તેને ઘરમા દાખલ કરી દીધો ત્યારપછી તે લોકોએ તે દરિદ્ર માણસની પાસેથી ફૂટેલા માટીના વાસણનો કટકો તેમજ ફૂટેલા માટલાના ખપ્પરને લઈને સુરક્ષિત સ્થાને મૂકી દીધુ જ્યારે તે દરિદ્ર માણસે પોતાના ખડમટકને અને ખડઘટકને પોતાની પાસેથી છીનવીને એકાંત સ્થાનમા મૂકતા જોયુ ત્યારે તે મોટેથી ધાટા પાડીને રડવા લાગ્યો તેના રડવાના આવાજને સાભળીને અને તેને પોતાના ચિત્તમા ધારણ કરીને સાગરદત્તે કૌટુંબિક પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देण आरसइ, तएण ते कोडुंबियपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे तं

रूक्षयित्वा 'हंसलक्खण' हसलक्षण = हसस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टशाटक=क्षौमवस्त्र 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति । ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिका स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूषिता कृत्वा त दमकपुरुषम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अह तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउल असनपाणखाइमसाइम भोयावेंति, भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछाजा चुका-तब फिर उन्होने हँस चिह्नवाला अथवा हँस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया । क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया । भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएण सागरदत्ते सूमालिय दारिय ण्हाय जाव सव्वालंकार विभूसिय करित्ता त दमगपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण जह तव भारियत्ताए दलामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलकारो से विभूषित करके उस दमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह मेरी लड़की है । और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(लूहित्ता हसलक्खणपट्ट साडग परिहेति, परिहित्ता,सव्वालंकारविभूसिय करेति, करित्ता विउल असनपाणखाइमसाइम भोयावेंति,भोयावित्ता,सागरदत्तस्स उवणेंति)

જ્યારે શરીરના બધા અંગો સરસ રીતે લુછાઈ ગયા ત્યારે તેઓએ હંસચિન્હિત અથવા તો હંસ જેવુ સ્વચ્છ ધોળુ પટ્ટશાટક ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવ્યુ ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવીને તેને વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડયા જમાડયા પછી તેઓ તેને સાગરદત્તની પાસે લઈ ગયા

(तएण सागरदत्ते सूमालिय दारिय ण्हाय जाव सव्वालंकारविभूसिय करित्ता त दमगपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अइ तव भारियत्ताए दलामि)

સાગરદત્તે પોતાની સુકુમારિકા દારિકાને સ્નાન કરાવીને યાવત્ બધી જાતના અલકારોથી શણગારીને તે દરિદ્ર માણસને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ મારી પુત્રી છે અને મને બહુ જ ઈષ્ટ, પ્રિય, કાત, મનોજ્ઞ

मिकपुरुषास्तस्य दारकस्य=दारकपुरुषस्य अभ्यङ्गनं कारयन्ति कारयित्वा शत पाक सहस्रपाकैस्तैलैरभ्यङ्गयन्ति अभ्यङ्गयित्वा सुगन्धिपिष्टकेन गात्रमुद्वर्तयन्ति, उद्वर्त्य उष्णोदकेन गन्धोदकेन शीतोदकेन स्नपयन्ति, स्नपयित्वा 'पम्हलसुकुमारगंधकासाइयाए' पक्ष्मलसुकुमारगन्धकाषायिकया=पक्ष्मला=दुकूली मृदुरोमयुक्ता अत एव सुकुमारा तथा कषायेण रक्ता साटी काषायिका तया गात्राणि 'लूहंति' रूक्षयन्ति = प्रोञ्छयन्ति,

सुनकर उन आदेशकारी पुरुषों ने वैसा ही किया-अर्थात उसके मल्लक घड़े और घटघड़ दोनों को ही उसके समक्ष उन्होंने रख दिया। इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उस दमक पुरुषका आलंकारिक कर्म करवाया। अब उसका अच्छी तरह अलंकारिक कर्म निष्पन्न हो चुका-तब उसके बाद उस दमक पुरुष के शरीर की उन लोगों ने शतपाक और सहस्र पाकवाले तैल से मालिश की-मालिश करनेके पश्चात्, सुगन्धि पिष्टक-सुगंधितपिट्टी-से उसके शरीर का उद्वर्तन किया उस सुगंधित पिट्टी को उसके शरीर पर रगड़ २ कर मला इससे जो उसके शरीर पर मल जमा हुआ था वह चिक्कनाई के सबन्ध से उस पिट्टीद्वारा निकल गया। जब उनके शरीर का उद्वर्त्तन हो चुका-तब फिर उन लोगों ने उसे उष्णोदक से गंधोदक से, पुनः शीतोदक से स्नान कराया। स्नान कराकर बाद में उसका शरीर (पम्हलसुकुमारगंधकासाइयाए गायाइं लूहंति) पक्ष्मल-रूँवाली-मृदुरोमयुक्त-सुकुमार-नरम, रँगी हुई दुवाल से-अंगोछी-से-तौलिया से पोंछा। (लूहित्ता हंसलक्खण

આ રીતે સાગરદત્તની વાત સાભળીને તે આજ્ઞાકારી પુરૂષોએ તે પ્રમાણે જ કર્યું એટલે કે તેના મલ્લકખડ અને ઘટખડને તેની સામે જ મૂકી દીધા ત્યારપછી તે કૌટુમ્બિક પુરૂષોએ તે દરિદ્ર માણસના વાળ અને નખ કપાવ્યા જ્યારે આકામ સરસ રીતે પુરૂ થઇ ગયુ ત્યારે તેઓએ દરિદ્ર માણસના શરીરને શતપાક અને સહસ્રપાકવાળા તેલથી માલિશ કર્યા બાદ સુગધિપિષ્ટક-સુગધિત પીઠી-તેના શરીરે ચોળીને ઉપ્તન કર્યું એથી તેના શરીર ઉપર જેટલો મેલ હતો તે પીઠીની સ્નિગ્ધતાને લીધે સાફ થઈ ગયો જ્યારે તેના શરીરે પીઠી ચોળાઈ ગઈ ત્યારે તે લોકોએ તેને ગરમ પાણીથી, સુવાસિત પાણીથી અને ઠંડા પાણીથી સ્નાન કરાવ્યુ સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના શરીરને (पम्हल सुकुमार गध कासाइयाए गायाइ लूहति) પક્ષ્મલ-રૂવાટાવાળા સુકોમળ, નરમ રંગીન દુવાલથી લૂછ્યુ

रूक्षयित्वा 'हसलक्खण' हसलक्षण = हंसस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टशाटक=क्षौमवस्त्र 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति। ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिका स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूषिता कृत्वा त द्रमकपुरुषम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अहं तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउलं असनपाणखाइमसाइमं भोयावेंति, भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछा जा चुका-तब फिर उन्होने हँस चिह्नवाला अथवा हँस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया। क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया। भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएण सागरदत्ते सुमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकार विभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एसण देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलंकारो से विभूषित करके उस दमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय! यह मेरी लड़की है। और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(लूहित्ता हसलक्खणपट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता, सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउलं असनपाणखाइमसाइमं भोयावेंति, भोयावित्ता, सागरदत्तस्स उवणेंति)

જ્યારે શરીરના બધા અંગો સરસ રીતે લુછાઈ ગયા ત્યારે તેઓએ હંસચિન્હિત અથવા તો હંસ જેવું ઉજ્જ્વળ ધોળું પટ્ટશાટક ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવ્યું ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવીને તેને વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડ્યા જમાડ્યા પછી તેઓ તેને સાગરદત્તની પાસે લઈ ગયા

(तएणं सागरदत्ते सुमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एसण देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि)

સાગરદત્તે પોતાની સુકુમારિકા દારિકાને સ્નાન કરાવીને યાવત્ બધી જાતના અલંકારોથી શણગારીને તે દરિદ્ર માણસને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! આ મારી પુત્રી છે અને મને બહુ જ ઈષ્ટ, પ્રિય, કાંત, મનોજ્ઞ

'भद्दियाए' भद्रिकया=भाग्यशालिन्याऽनया सार्द्धमति भद्रको भाग्यशाली भविष्यसि। ततः खलु स दमकपुरुषः सागरदत्तस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं वासगृहमनुप्रविशति, सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तल्लिगसि' तल्पे=शयनीये 'सीयज्झ' निषीदति उपविशति। ततः खलु स दमक पुरुष सुकुमारिकाया इम=पूर्वोक्तम् एतद्रूप=पूर्वोक्तस्वरूपम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=मत्यनुभवति शेषं यथा सागरस्य=शैलवर्णन सागरदारकवद् बोध्यम्, यावत्-अत्र यावच्छब्दादिदं द्रष्टव्यम्-'अनिष्टानां स्पर्शानिष्टतर तदङ्ग स्पर्शं ज्ञात्वा सागरदारकवद् दमकपुरुषोऽपि तां सुकुमारिका सुखसुप्ता ज्ञात्वा, शयनीयादुत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वासगृहाद् निर्गच्छति, निर्गम्य यत्रैव स्वकमात्मीय=स्फुटि

मनोज्ञ एवं मनोम है। मैं अपनी इस पुत्री को तुम्हें तुम्हारी भार्या के रूप में प्रदान करता हूँ (भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडि० २ सुमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाए दारियाए सद्धिं तल्लिगंसि निवज्जइ) इस भाग्यशालिनी से तुम भी भाग्यशाली बनजाओगे। दमकपुरुष ने सागरदत्त के इस कथनरूप अर्थ को अंगीकार करलिया, और फिर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ वासगृह में प्रविष्ट हुआ। वहां जाकर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ साथ एक ही पलंग पर-बैठ गया-सोगया (तएणं से दमगपुरिसे सुमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ,सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खड्डमल्लग

અને મનોજ્ઞ છે હું ભાગી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમાં અર્પું છું. भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडि० २ सुमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाए दारियाए सद्धिं तल्लिगंसि निवज्जइ)

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો. તે દરિદ્ર પુરૂષે સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની સાથે વાસગૃહમાં પ્રવિષ્ટ થયો. ત્યાં જઈને તે દરિદ્ર માણસ સુકુમારિકા દારિકાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર બેસી ગયો.

(तएणं से दमगपुरिसे सुमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खड्डमल्लग खड्डघडगं च गहाय म

तमिक्षापात्र, खण्डघटक=स्फुटितपानीयपात्र च गृहीत्वा 'मारामुक्के विव काए' मारामुक्तइव काकः मारा-शूना प्राणिवधस्तान ततो मुक्तः निःसृतः काक इव, अथवा-मारात्-मारकपुरुषात् तदीयहस्तादित्यर्थः मुक्त-विच्छुटित काक इव शीघ्रतया यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिश प्रतिगतः। ततः खलु सा सुकुमारिका यावद्-ततो मुहूर्तान्तर प्रतिबुद्धा सती पतिमपश्यन्ती शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रमकपुरुषस्य मार्गणगवेषण कुर्वाणा वासगृहस्य द्वार विघाटित पश्यति

खडयडग च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए) उस समय उस दमक पुरुष को उस सुकुमारिका दारिका का वह पूर्वोक्त तथा पूर्वोक्त स्वरूपवाला अगस्पर्श अनुभव मे आया। शेष वर्णन सागरदारककी तरह जानना चाहिये। इस तरह वह दमक पुरुष भी अग्निपत्रादिकों के स्पर्श से भी अधिक अनिष्ट उसके अग-स्पर्श को जानकरके, सागरदारक की तरह, सुख प्रसुप्त उस सुकुमारिका दारिका को जान उसे छोडने के लिये पलग से उठा और उठकर उस वास घर से बाहिर निकला-निकलकर खडमल्लक-फूटे हुए भिक्षापात्र को तथा खडघटक-फूटे हुए पानी पीने के पात्र को-लेकर वधस्थान से अथवा मारक पुरुष के हाथ से मुक्त हुए काककी तरह वह बहुत जल्दी जहा से आया था उसी ओर चलदिया (तएण सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमण जाव झियायइ) इसके थोडीदेर बाद वह सुकुमारिका दारिका जगी और पतिको अपने पास न

दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए)

તે વખતે તે દરિદ્ર માણસને સુકુમારિકા દારિકાના અંગોનો સ્પર્શ પહેલા વર્ણન કરવામા આવ્યા પ્રમાણેનો કઠોર જ લાગ્યો (અહીં સાગરદારક જેવું જ વર્ણન સમજી જવુ જોઇએ) આ રીતે તે દરિદ્ર માણસ પણ તરવારના સ્પર્શ કરતા પણ વધારે અનિષ્ટકર તેનો સ્પર્શ જાણીને સાગર દારકની જેમજ સુખેથી સૂઇ ગયેલી તે સુકુમારિકા દારિકાને જોઈને, તેનો ત્યાગ કરવા માટે પલંગ ઉપરથી ઊભો થયો અને ઊભો થઈને વાસગૃહની બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને ખંડમલ્લક-ફૂટેલા ભિક્ષાપાત્ર તેમજ ખંડઘટક-ફૂટેલા પાણી પીવા માટેના પાત્રને લઈને વધસ્થાનથી અથવા તો મારક (હિંસક) પુરૂષના હાથથી મુક્ત થયેલા કાગડાની જેમ તે ત્વરાથી જ્યાથી તે આવ્યો હતો તે તરફ જ જતો રહ્યો

(तएण सा सूमालिया जाव गएण से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमण जाव झियायइ)

થોડા વખત પછી તે સુકુમારિકા દારિકા જાગી અને પતિને પોતાની પાસે ન જોઇને

'भद्दियाए' भद्रिकया=भाग्यशालिन्याऽनया भद्रो भाग्यशाली भविष्यसि। ततः खलु स द्रमकपुरुषः सागरदत्तस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं वासगृहमनुप्रविशति, सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तल्लिगंसि' तल्पे=शयनीये 'निवज्जइ' निषीदति उपविशति। ततः खलु स द्रमक पुरुष सुकुमारिकाया इमम्=पूर्वोक्तम् एतद्रूपम्=पूर्वोक्तस्वरूपम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=मत्यनुगच्छति शेषं यथा सागरस्य=शेषवर्णनं सागरदारकवद् बोध्यम्, यावत्-अत्र यावच्छब्दात् द्रष्टव्यम्-'उज्झितधार्मिकानां स्वजनादिष्वनिष्टतर तदन्न स्पर्शं ज्ञात्वा सागरदारकवद् द्रमकपुरुषोऽपि ता सुकुमारिका सुखमसुप्ता ज्ञात्वा, शयनीयादुत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वासगृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य खण्डमल्लक=स्फुटि

मनोज्ञ एवं मनोम है। मैं अपनी इस पुत्री को तुम्हें तुम्हारी भार्या के रूप में प्रदान करता हूँ (भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडि० २ सुमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाए दारियाए सद्धिं तल्लिगंसि निवज्जइ) इस भाग्यशालिनी से तुम भी भाग्यशाली बनजाओगे। दमकपुरुष ने सागरदत्त के इस कथनरूप अर्थ को अंगीकार करलिया, और फिर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ वासगृह में प्रविष्ट हुआ। वहां जाकर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ साथ एक ही पलंग पर-बैठ गया-सोगया (तएणं से दमगपुरिसे सुमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ,सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खंडमल्लग

અને મનોમ છે હું મારી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમાં અર્પું છું. भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडि० २ सुमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाए दारियाए सद्धिं तल्लिगंसि निवज्जइ)

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો તે દરિદ્ર પુરૂષે સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની સાથે વાસગૃહમાં પ્રવિષ્ટ થયો ત્યાં જઈને તે દરિદ્ર માણસ સુકુમારિકા દારિકાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર બેસી ગયો.

(तएणं से दमगपुरिसे सुमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खंडमल्लग खंडघडगं च गहाय मारामुक्के

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुमन्वेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति। एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यान ध्यायन्ती पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये! किं खलु त्वम् अपहतमन सकल्पा ध्यायसि? ततः सुकुमारिका ता दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमकपुरुषो मा सुप्तमुक्ता ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्थाय निर्गत., ततोमुहूर्त्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती 'गतः स द्रमकपुरुष, इति कृत्वाऽऽर्त-यान ध्यायामि

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहा यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोड़लेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तू वधू और वर के लिये यह मुख धोने की सामग्री दतौन आदि -लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई -और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये। क्या कारण है जो अपहतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह दमक पुरुष मुझे यहा सुख प्रसुप्त जान छोडकर चला गया है। जब मै थोडी देरबाद उठी तो मैने उसे अपने पास नही देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ) સુકુમારિકા દારિકાની માતા ભદ્રાએ બીજા દિવસે જ્યારે સવાર થઈ ગયુ અને સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે તેણે દાસીને બોલાવી અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-અહીં યાવત્ શબ્દથી પહેલાના સૂત્રની જેમ જ વર્ણન સમજી લેવુ જોઇએ જેમકે ભદ્રાએ તેને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે વધૂ અને વરના મુખ પ્રક્ષાસન માટે દાતણ વગેરે લઈ જા જ્યારે ભદ્રાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ ત્યારે તે દાસી વાસગૃહમા ગઇ અને ત્યા જઈને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને આર્તધ્યાન કરતી જોઈ ત્યારે આ પ્રમાણે તેની હાલત જોઇને તેણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે! શા કારણથી તમે અપહતમન સકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરી રહ્યા છો ત્યારે સુકુમાર દારિકાએ તે દાસીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે તે દરિદ્ર માણસ મને અહીં સુખેથી સૂતેલી છોડીને જતો રહ્યો છે જ્યારે થોડા વખત પછી હુ જાગી ત્યારે મે તેને મારી પાસે જોયેા નહિ અને મે વાસગૃહના બારણાને પણ ખુલ્લું

दृष्ट्वा एवमवादीत् '-इति कृत्वा, अपहतमन सङ्कल्पा यावद्-आर्तध्यान ध्यायति ॥ सू० ११ ॥

मूलम्-तएणं सा भद्दा कल्ल पाउ० दासचेडिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएणं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ निवेसित्ता एवं वयासी-अहो ण तुम पुत्ता ! पुरा पोराणा णं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि त मा ण तुम पुत्ता ! ओहयमण जाव झियाहि तुम ण पुत्ता मम महाणससि विपुल असणं४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तएण सा सुमालिया दारिया एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता माहणससि विपुल असणं जाव दलमाणो विहरइ ॥ सू०११ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही=सुकुमारिका दारिकाया जननी ' कल्ल ' कल्ये द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्यां यावत्-

---

देखकर पलग से उठी । उठकर उसने उस दमकपुरुषकी मार्गणा एव गवेषणा की । उसमें उसने वासगृह के द्वार को खुला हुआ देखा । देख कर उसने विचारा कि वह दमक पुरुष अब चला गया है । ऐसा सोचकर वह अपहत मन. सकल्प होकर यावत् आर्त ध्यान करने लगी ॥सू० ११॥

' तएण सा भद्दा कल्ल ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ ઊભી થઈને તેણે તે દરિદ્ર માણસની શોધ ખોળ કરી તેણે વિચાર કર્યો કે તે દરિદ્ર માણસ તો જતો રહ્યો છે આ રીતે વિચાર કરીને તે અપહતમન સકલ્પા થઈને યાવત્ આર્તધ્યાનમા ડૂબી ગઇ ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

' तएण सा भद्दा कल्ल ' इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यारबाद (सा भद्दा कल्ल पाउ० दासचेडिं ` सद्दा

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुसन्धेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति। एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यान ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये! किं खलु त्वम् अपहृतमन सकल्पा ध्यायसि? ततः सुकुमारिका ता दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमकपुरुषो मा सुखप्रसुप्ता ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्त्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती 'गतः स द्रमकपुरुष, इति कृत्वा ऽऽर्त्त-ध्यान ध्यायामि

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहां यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोडलेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तू वधू और वर के लिये यह मुख धोने की सामग्री दतौन आदि -लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई -और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये! क्या कारण है जो अपहृतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह द्रमक पुरुष मुझे यहां सुख प्रसुप्त जान छोडकर चला गया है!! जब मैं थोडी देरबाद उठी तो मैने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकानी माता ભદ્રાએ બીજા દિવસે જ્યારે સવાર થઈ ગયુ અને સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે તેણે દાસીને બોલાવી અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-અહીં યાવત્ શબ્દથી પહેલાના સૂત્રની જેમ જ વર્ણન સમજી લેવુ જોઇએ જેમકે ભદ્રાએ તેને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે વધૂ અને વરના મુખ પ્રક્ષાસન માટે દાતણ વગેરે લઈ જા જ્યારે ભદ્રાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ ત્યારે તે દાસી વાસગૃહમા ગઇ અને ત્યા જઈને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને આર્તધ્યાન કરતી જોઈ ત્યારે આ પ્રમાણે તેની હાલત જોઇને તેણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે! શા કારણથી તમે અપહૃતમન સકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરી રહ્યા છો ત્યારે સુકુમાર દારિકાએ તે દાસીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે તે દરિદ્ર માણસ મને અહીં સુખેથી સૂતેલી છોડીને જતો રહ્યો છે જ્યારે થોડા વખત પછી હુ જાગી ત્યારે મે તેને-મારી પાસે જોયો નહિ અને મે વાસગૃહના બારણાને પણ ખુલ્લુ

तए. सा दासचेटी सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स मणोपमाणंसोमणं निवेदयतीति योजना योध्या। तत एतत् तु सागरदत्तवचनमेव 'समंते' सभ्रान्त=उद्विग्नः सन् यत्रैव वासगृहतत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामङ्के निषण्णयति, निवेश्य एवमवादीत्-अहो! इत्यादिकं खलु हे पुत्रि 'तए' पुरा' पूर्वम्=अतीतेषु 'पोराणाण' पुराणानाम्=अतीतकालकृतानां, यावत्=अत्र यावत्पदेन योध्यम्-' दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुहाणं पावाणं कडाणं पावगं फलवित्ति देखा तब मैं समझ गई कि घर यहां से चला गया है। इस प्रकार मैं चिन्ता में पड़ रही हूँ। सुकुमारिका को इस बात को सुनकर दासचेटी ने उसी समय वहां से आकर सागरदत्त को इस बात की खबर दी-" इस प्रकार यह पूर्वोक्त पाठ यहां लगा लेना चाहिये-(तएणं से सागरदत्ते तहेव सभते समाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी अहो णं तुम पुत्ता! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं भाणं तुम पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुम णं पुत्ता मम महाणससि विपुल असण ४ जहा पुट्ठिला जाव परिभाएमाणी विहराहि) इसके बाद वह सागरदत्त पहिले जैसा उद्विग्न चित्त होकर जहां वासगृह था वहां गया। वहां जाकर उसने सुकुमारिका दारिका को अपनी गोद में बैठा लिया और बैठाकर कहने लगा-हेपुत्रि! तुमने पहिले भवों में जो दुश्चीर्ण दुष्पराक्रान्त, (कठिनता ईसे भोगने योग्य एवं कृत ज्ञानावरणीय आदि अशुभ कर्म उपार्जित

જોયુ ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે આ રીતે હુ ચિંતામા પડી હુ સુકુમારિકાની આ વાત સાભળીને દાસીએ તરત જ સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહી પહેલાનો પાઠ જાણી લેવો જોઈએ तएणं से सागरदत्ते तहेव सभते समाणे, जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता सुमालियं दारियं अंके निवेसेइ,निवेसित्ता एवं वयासी अहो णं तुम पुत्ता! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं भाणं तुम पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुम णं पुत्ता मम महाणससि विपुल असण ४ जहा पुट्ठिला जाव परिभाएमाणी विहराहि)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાની જેમ વ્યાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યા વાસગૃહ હતુ ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ! તે પહેલા ભવમા જે કઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્પરાક્રાત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે મેં ઉપા

सिसेस ' इति-दुश्चीर्णाना-दुश्चरिताना यान्मनोजनित मृषावादादिकर्मणामित्यर्थः, किं भूताना तेषा? दुष्पराक्रान्ताना-कायिकानां प्राणिहिंसाऽदत्तादानादीना, कृताना प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदेन बद्धाना पापाना=अशुभाना कर्मणा=ज्ञानावरणीयादीना पापकम्-अशुभ, फलवृत्तिविशेषम्, प्रत्यनुभवन्ती=वेदयन्ती विहरसि=वर्तसे तत्=तस्माद् मा खलु त्व हे पुत्रि ! अपहतमनःसकल्पा यावद् ध्यायः आर्तध्यान मा कुरु इत्यर्थः, त्व खलु हे पुत्रि ! मम ' महाणस सि ' महानसे-पाकशालाया विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्य यथा पोट्टिला यावत् परिभाजयन्ती=श्रमणादिभ्यः प्रविभाग कुर्वती ' विहराहि ' विहर=तिष्ठ। ततः खलु सा सुकु-

---

किये-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बंध के भेदसे बांधे हैं-उन्हीं पुराने अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के तुम अशुभ फल विशेष को इस समय भोग रही हो। पूर्व भवों में जो पाप किये हे बेटी यहां" "पुराण" शब्द से गृहीत हुए हैं। पाप शब्द यहा अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बोधक है। ये अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जीव अशुभ मन, वचन और काय की प्रवृत्ति से जन्य मृषावाद आदि क्रियाओ से, तथा प्राणिहिंसा, अदत्तादान आदि कुकृत्यों से बाधता है। बांधते समय इनमें प्रकृति, स्थिति अनुभाग और प्रदेश बधरूप विभाग हो जाता है। अधिक स्थिति और अधिक अनुभाग बध इनमें सक्लेश परिणामो से पडता है। इसलिये हे पुत्रि। तुम अपहतमन' सकल्प होकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो मेरी भोजन शाला में चतुर्विध आहार तैयार करा कर पोट्टिला की तरह श्रमण आदि

र्जित हता-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश બંધના ભેદથી બાંધ્યા છે અત્યારે તુ તેજ પહેલાના અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોના અશુભ ફળ વિશેષને ભોગવી રહી છે પૂર્વ ભવમા જે પાપ કરવામા આવ્યા હોય તેને અહીં "પુરાણ" શબ્દથી ગ્રહણ કરવામા આવ્યા છે અહીં પાપ શબ્દ અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોને સ્પષ્ટ કરે છે આ બધા અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મો જીવ અશુભ-મન, વચન, અને કાયની પ્રવૃત્તિથી જન્ય મૃષાવાદ વગેરે ક્રિયાઓથી તેમજ પ્રાણીઓ ની હિંસા, અદત્તાદાન વગેરે કુકર્મોથી બાંધે છે બાંધતી વખતે એઓમા પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બંધરૂપ વિભાગ થઇ જાય છે અધિક સ્થિતિ અને અધિક અનુભાગ બંધ તેઓમા સકલેશ પરિણામોથી પડે છે એથી હે પુત્રિ ! તમે અપહત મન સકલ્પ થઈને યાવત્

ततः सा दासचेटी सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य मनोगतमेतमर्थं निवृत्तमिति ज्ञात्वा शीघ्रं त्वरितं चपलं वेगितं यत्रैव सागरदत्तः सार्थवाहस्तत्रैव 'हव्वं' हृष्टा=उद्विग्नः सन् यत्रैव वासगृहस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामङ्के निषण्णां निवेश्य एवमवादीत्-भद्रो ! इत्यादि खलु हे पुत्रि 'एव' पुरा' पूर्वम् 'पोराणाणं' पुराणानाम्=अतीतकालकृतानां, यावत्=अत्र यावत्करणेन बोध्यम्-'दुचिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुहाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति

देखा तब मैं समझ गई कि यह यहां से चला गया है। इस प्रकार मैं चिन्ता में पड़ रही हूँ। सुकुमारिका की इस बात को सुनकर दासचेटी ने उसी समय वहां से चलकर सागरदत्त को इस बात की खबर दी-" इस प्रकार यह पूर्वोक्त पाठ यहां लगा लेना चाहिये-(तएणं से सागरदत्ते तहेव सभते समाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणससि विपुल असण ४ जहा पुट्ठिला जाव परिभाएमाणी विहराहि) इसके बाद वह सागरदत्त पहिले जैसा उद्विग्न चित्त होकर जहां वासगृह था वहां गया। वहां जाकर उसने सुकुमारिका दारिका को अपनी गोद में बैठा लिया और बैठाकर कहने लगा-हेपुत्रि ! तुमने पहिले भवों में जो दुश्चीर्ण दुष्परान्तान्त, (कठिनाईसे भोगने योग्य एवं कृत ज्ञानावरणीय आदि अशुभ कर्म उपार्जित

જોયુ ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે આ રીતે હુ ચિંતામા પડી છુ સુકુમારિકાની આ વાત સાભળીને દાસીએ તરત જ સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ જાણી લેવો જોઈએ

तएणं से सागरदत्ते तहेव सभते समाणे, जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणससि विपुल असण ४ जहा पुट्ठिला जाव परिभाएमाणी विहराहि)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાની જેમ વ્યાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યા વાસગૃહ હતું ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ ! તે પહેલા ભવમા જે કઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્પરાક્રાત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે ભોગવ્યા

विसेस ' इति-दुश्चीर्णाना-दुश्चरिताना वाङ्मनोजनित मृषावादादिकर्मणामित्यर्थः, किं भूताना तेषा? दुष्पराक्रान्ताना-कायिकाना माणिहिंसाऽदत्तादानादीना, कृतानां प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदेन बद्धाना पापाना=अशुभाना कर्मणा=ज्ञानावरणीयादीना पापकम्-अशुभ, फलवृत्तिविशेषम्, प्रत्यनुभवन्ती=वेदयन्ती विहरसि=वर्तसे तत्=तस्माद् मा खलु त्व हे पुत्रि ! अपहतमनःसकल्पा यावद् ध्याय=आर्तध्यान मा कुरु इत्यर्थः, त्व खलु हे पुत्रि ! मम ' महाणस सि ' महानसे-पाकशालाया विपुलमशनं पान खाद्य स्वाद्य यथा पोट्टिला यावत परिभाजयन्ती=श्रमणादिभ्यः प्रविभाग कुर्वती ' विहराहि ' विहर=तिष्ठ। ततः खलु सा सुकु-

---

किये-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बधके भेदसे बांधे हैं-उन्हीं पुराने अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के तुन अशुभ फल विशेष को इस समय भोग रही हो। पूर्व भवों में जो पाप किये हैं वेही यहा " "पुराण" शब्द से गृहीत हुए हैं। पाप शब्द यहां अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बोधक हे। ये अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जीव अशुभ मन, वचन और काय की प्रवृत्ति से जन्य मृषावाद आदि क्रियाओ से, तथा प्राणिहिंसा, अदत्तादान आदि कुकृत्यों से बाधता है। बांधते समय इनमें प्रकृति, स्थिति अनुभाग और प्रदेश बधरूप विभाग हो जाता है। अधिक स्थिति और अधिक अनुभाग बध इनमें सक्लेश परिणामो से पडता है। इसलिये हे पुत्रि। तुम अपहतमनः सकल्प होकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो मेरी भोजन शाला में चतुर्विध आहार तैयार करा कर पोट्टिला की तरह श्रमण आदि

ચિત કર્યા હતા-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બંધના ભેદથી બાંધ્યા છે અત્યારે તુ તેજ પહેલાના અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોના અશુભ ફળ વિશેષને ભોગવી રહી છે પૂર્વ ભવમા જે પાપ કરવામા આવ્યા હોય તેને અહીં " પુરાણ " શબ્દથી ગ્રહણ કરવામા આવ્યા છે અહીં પાપ શબ્દ અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોને સ્પષ્ટ કરે છે આ બધા અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મો જીવ અશુભ-મન, વચન, અને કાયની પ્રવૃત્તિથી જન્ય મૃષાવાદ વગેરે ક્રિયાઓથી તેમજ પ્રાણીઓની હિંસા, અદત્તાદાન વગેરે કુકર્મોથી બાંધે છે બાંધતી વખતે એઓમા પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બંધરૂપ વિભાગ થઇ જાય છે અધિક સ્થિતિ અને અધિક અનુભાગ બંધ તેઓમા સકલેશ પરિણામોથી પડે છે એથી હે પુત્રિ ! તમે અપહત મન સકલ્પ થઈને યાવત્

मारिका दारिका अनगारे पतिगृह्णाति=स्वीकरोति, प्रतिगृह्य महानसे विपुलम् अशनपानखाद्य स्वाद्यम् 'दलमाणी' ददती विहरति=आस्ते स्म ॥ सू० १२ ॥

मूलम्–तेण कालेण तेणं सुमालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव सव्वोसहाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वयासी–एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि णं सागरए मम नाम वा जाव परिभोगं वा, जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स २ वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ एव जहा पुट्ठिला जाव उवलद्धे जे णं अहं सागरस्स दारियाए इट्ठा कता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया चिता तहेव सागरदत्त सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया, तएणं सा सूमा-

---

जनों के लिये वितरण करती रहो (तएणं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता महाणससि विपुल असण जाव दलमाणी विहरइ) इस तरह पिता सागरदत्त के समझाने पर उस सुकुमारिका दारिका ने अपने पिता के इस कथन को स्वीकार कर के वह महानस भोजन शाला में निष्पन्न चतुर्विध आहार को श्रमणादि जनों के लिये वितरण भी करने लगी ॥ सूत्र १२ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી ભોજન શાળામા ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવીને પોટ્ટિલાની જેમ શ્રમણ વગેરે જનોને આપતી રહે

(तएणं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता महाणससि विपुल असण जाव दलमाणी विहरइ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામા આવેલી તે સુકુમાર દારિકાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામા તૈયાર થયેલા ચારે જાતના આહારોને શ્રમણ વગેરેને આપવા રૂપ સૂ ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ वाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए, तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एवं वयासी—अम्हे ण अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठ२ जाव विहरित्तए, कप्पइ ण अम्ह अतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स सघाडिवद्धियाए णं समतल पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठं अ०३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठ छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' गोवालियाओ अज्जाओ ' गोपालिका=गोपालिकानाम्न्यः आर्याः=साध्व्यः, ' बहुस्सुयाओ ' बहुश्रुता =श्रुतपारगामिन्य , एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ' तेतलिणाए ' तेतलिज्ञाते=चतुर्दशे तेतलिपुत्राध्ययने वर्णिताः ' सुव्वयाओ ' सुव्रताः=सुव्रता-

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तेण कालेण–तेण समएण) उस काल और उस समय में (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

' तेण कालेण–तेण समएण ' इत्यादि—

टीकार्थ–(तेण कालेण–तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

मारिका दारिका एतमर्थं मनिग्रगाति=क्रोशतीति, मनिश्रुत्य महानसे विपुलम्य नपानखाद्य खाद्य यावत् ' दलमाणी ' दलती विहरति=आस्ते स्म ॥ सू०१२ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वयासी–एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोग वा, जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स २ वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ एव जहा पुट्ठिला जाव उवलद्धे जे णं अह सागरस्स दारियाए इट्ठा कता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया चिता तहेव सागरदत्त सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया, तएणं सा सूमा

जनों के लिये वितरण करती रहो (तएण सा सूमालिया दारिया एय मट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता महाणससि विपुल असण जाव दलमाणी विहरइ) इस तरह पिता सागरदत्त के समझाने पर उस सुकुमारिका दारिका ने अपने पिता के इस कथन को स्वीकार कर के वह महानस भोजन शाला में निष्पन्न चतुर्विध आहार को श्रमणादि जनों के लिये वितरण भी करने लगी ॥ सूत्र १२ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી ભોજન શાળામા ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવીને પોટ્ટિલાની જેમ શ્રમણ વગેરે જનોને આપતી રહે

(तएण सा सूमालिया दारिया एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता महाणससि विपुल असण जाव दलमाणी विहरइ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામા આવેલી તે સુકુમારિકા દારિકાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામા તૈયાર થયેલા ચારે જાતના આહારોને શ્રમણ વગેરેને આપવા લા[illegible] સૂ ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए, तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एवं वयासी-अम्हे ण अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं२ जाव विहरित्तए, कप्पइ ण अम्ह अतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिवच्छियाए णं समतल पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठ अ०३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठ छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' गोवालियाओ अज्जाओ ' गोपालिका=गोपालिकानाम्न्यः आर्याः=साध्व्यः, ' बहुस्सुयाओ ' बहुश्रुता =श्रुतपारगामिन्य , एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ' तेतलिणाए ' तेतलिज्ञाते=चतुर्दशे तेतलिपुत्राध्ययने वर्णिताः ' सुव्वयाओ ' सुव्रताः=सुव्रता-

---

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेण कालेण-तेण समएण) उस काल और उस समय में (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

' तेण कालेण-तेण समएण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तेण कालेण-तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

भाव्य साध्वयः, ' तहेव समोसढाओ ' तथैव समवसृताः=पूर्ववदागता गोपालिकाः समागताः। ' तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे ' तथैव संघाटको यावद् अनुप विष्टः गोपालिकानामार्याणामेव संघाटकः यावत् सुकुमारिकागृहेऽनुप्रविष्टः। तथैव यावत् सुकुमारिका ता आर्याः अशनादिना प्रतिलभ्य एवमवादीत्-हे आर्याः ! एवं खलु अहं सागरस्य अनिष्टा यावद् अमनोमा=मनः प्रतिकूला भवामि, नेच्छति सागर मम नाम वा यावत् परिभोगं वा, यस्य मम नामापि श्रोतुं नेच्छति तत्र का वार्ता परिभोगस्य, अहं तु तेन सर्वथा परि, त्यक्तेति भावः। अपि च यस्मै यस्मै खलु ' दिज्जामि ' दीये=स्वपित्रा प्रदत्ता भवामि, तस्य तस्यापि च खलु अनिष्टा यावद् अमनोमा=मनः प्रतिकूला भवामि, हे आर्याः ! यूयं च खलु ' बहुनायाओ ' बहुज्ञाताः ज्ञानातिशययुक्ताः, ' एवं

तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सुमालिया पडिलभित्ता एवं वयासी) गोपालिका नामकी आर्यिका जो श्रुत पारगामिनी थीं इस प्रकार से कि जिस प्रकार से तेतलि प्रधान नामक चौदहवें अध्ययन में सुव्रता साध्वी वर्णित हुई है-थीं-वे उसी तरह से वहां आईं। इनका एक संघाडा था, यावत् सुकुमारिका के घर में गोचरी के लिये प्रवेश किया। सुकुमारिका ने बड़ी भक्ति के साथ उन्हें आहार पानी दिया-और देकर वह फिर इस प्रकार से उनसे कहने लगी--(एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अम णामा, नेच्छइ ण सागरए मम नाम वा जाव परिभोग वा जस्स २ वि य ण दिज्जामि तस्स-तस्स वि य ण अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि लुब्भे य ण अज्जाओ ! बहुनायाओ, एवं जहा पुट्ठिला जाव उवलद्धे

तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सुमालिया पडि लभित्ता एवं वयासी)

ગોપાલિકા નામે આર્યિકા કે જે શ્રુત પારગામિની હતી તેતલીપ્રધાન નામના ચૌદમા અધ્યયનની સુવ્રતા સાધ્વી જેવી હતી તેવા જ તે પણ હતી સુવ્રતા સાધ્વીની જેમ જ તે યાવત્ સુકુમારિકાના ઘેર તે ગોચરી માટે ગઇ સુકુમારિકાએ ખૂબ જ ભક્તિ-ભાવથી તેમને આહારપાણી આપ્યુ અને આપીને તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી—

(एवं खलु अज्जाओ अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अमणामा नेच्छइ ण सागरए मम नाम वा जाव परिभोग वा जस्स २ वि य ण दिज्जामि तस्स तस्स वि य ण अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि तुब्भे य ण

यथा पोट्टिला यावद् उपलब्धम् अयमर्थः-यथा तेतलिपुत्रभार्या पोट्टिला स्वभर्तृवशीकरणोपायमदर्शनार्थं सुव्रता साध्वी पृच्छतिस्म, तथा-सुकुमारिका दारिका गोपालिका सम्राटक पृष्ठवती, तादृश चूर्णयोगादिकमुपलब्धवन्तः किम् ? येनाह सागरस्य दारकस्येष्टा कान्ता यावद् भवेयं आर्यास्तथैव भणन्ति=यथा पोट्टिलि

जे णं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्त सत्थवाह आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया) हे आर्याओं। मैं अपने पति सागर दारक के अनिष्ट बनी हूं यावत् अकान्त अप्रिय अमनोज्ञ एवं अमनोम मनः प्रतिकूल बनी हुई हूँ। वे मेरा नाम गोत्र कुछ भी सुनना नहीं चाहते हैं। तो फिर उनके साथ परिभोग करने की तो बात ही क्या है। मुझे तो उन्होंने सर्वथा ही छोड दी है। अपिच-मेरे पिता मुझे जिस २ व्यक्ति के लिये देते हैं-मैं उस २ व्यक्ति के लिये भी अनिष्ट आदि बन जाती हूँ। हे आर्याओ ! आप तो बहुश्रुत हैं अनेक शास्त्रों की ज्ञाता हैं-ज्ञान के अतिशय से सपन्न हैं। इस प्रकार उस सुकुमारिका ने पोट्टिला की तरह अपने पति को वश में करने के विषय मे उनसे उपाय पूछा पोट्टिलाने अपने पति तेतलिपुत्र को वशमें करने को पहिले जैसे सुव्रता साध्वी के सम्राटेसे उपाय पूछा था-और कहा आपको यदि कोई ऐसा चूर्ण आदि का प्रयोग उपलब्ध

एवं जहा पुट्ठिला जाव उवलद्धे जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्त सत्थवाह आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया)

હે આર્યાઓ ! મારા પતિ સાગરદારક માટે હું અનિષ્ટ થઈ ગયેલી છું યાવત્ અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ ચૂકી છું તેઓ મારા નામ ગોત્ર કંઈ પણ સાભળવા ઈચ્છતા નથી ત્યારે તેમની સાથે પરિભોગ કરવાની તો વાત જ શી કરવી તેઓએ મને એકદમ જ જે છોડી દીધી છે અને મારા પિતાએ મને જે જે માણસને આપે છે તે બધા માટે પણ હું અનિષ્ટ વગેરે થઈ જાઉ છું હે આર્યાઓ ! તમે તો બહુશ્રુત છો, ઘણા શાસ્ત્રોને જાણો છો, જ્ઞાન સપન્ન છે આ રીતે પોટ્ટિલાની જેમ જ સુકુમારિકા દારિકાએ પણ પતિને વશમા કરવા માટેના ઉપાયોની પૂછપરછ કરી પોટ્ટિલાએ પોતાના પતિ તેતલિપુત્રને વશમા કરવા માટે પહેલા સુવ્રતા સાધ્વીના સાથી જેમ ઉપાયો પૂછયા હતા તેમજ તેણે પણ તેમને કહ્યુ કે-જે એવો

कया पृष्टा सुव्रतायाः सकाशात्निष्क्रान्ताः सा पोट्टिलामवोचत्, तथैव गोपालिका सघाटरवाः आर्या मणक्ति=वदन्ति स्मेति अर्थः । 'तहेव गाहिया जाया' तथैव श्राविका जाता=पोट्टिला यत् सुकुमारिका दारिकाऽपि श्राविका जाता । तथैव चिन्ता-पोट्टिलावदेव पश्चात्=प्रव्रज्यां ग्रहीतुं चिन्ता सुकुमारिकाया मनसि माद् भूता । सुकुमारिका सागरदत्त सार्थवाह=स्वपितरं तथैव=यथा स्वपतिं पोट्टिला, तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामन्तिके प्रव्रजिता=दीक्षा गृहीतवती । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्वी जाता सा कि भूता-ईर्यासमिता यावद् गुप्त

हो तो भी पता दीजिये कि जिससे मैं अपने पति सागरदारक को इष्ट, कान्त यावत् मनोम यनजाऊँ। गोपालि का के सघाडे की इन आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोट्टिला को सुव्रता साध्वी की तरह समझाया-वह उसी तरहसे श्राविका बन गई। पोट्टिला की तरह इस सुकुमारिका ने भी बाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया-। पोट्टिलाने जिस तरह अपने पति से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की थी-उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली। (तएण सा सूमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाव गुत्तबभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ) इस तरह वह सुकुमारिका आर्या बन गई। वह ईर्यासमिति आदि का पालन करने लगी

કોઈ ચૂર્ણ વગેરેનો પ્રયોગ મળી શકે તો પણ મને બતાવી દો કે જેથી હુ મારા પતિ સાગરદારકના માટે ફરી ઇષ્ટ, કાત, યાવત્ મનોમ થઈ જાઉ ગોપાલિકા સ ઘાડાની તે આર્યાઓએ-સુવ્રતા-સાધ્વીએ જેમ પોટ્ટિલાને સમ જાવી તેમજ સમજાવી અને છેવટે તે શ્રાવિકા બની ગઇ પોટ્ટિલાની જેમજ તે સુકુમારિકાએ પણ ત્યારપછી દીક્ષા લેવાનો મનમા મક્કમ વિચાર કરી લીધો પોટ્ટિલાએ જેમ પોતાના પતિની આજ્ઞા લઇને દીક્ષા ધારણ કરી હતી તેમજ સુકુમારિકાએ પણ પોતાના પતિ સાગરદત્તને પૂછીને ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી લીધી

(तएण सा सूमालिया अज्जा जाया इरिया जाव गुत्तबभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે સુકુમારિકા આર્યા થઈ ગઈ, તે ઇર્યા સમિતિ વગેરેનુ પાલન કરવા લાગી, મહાવ્રતની રક્ષા

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमभक्तैर्यावत्-तप कर्मभिरात्मान भावयन्ती विहरति=आस्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव गोपालिका आर्यास्तत्रोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती चम्पानगर्या बहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे षष्ठषष्ठेन-षष्ठभक्तानन्तर पुन षष्ठभक्तेन ' अणिक्खित्तेण ' अनिक्षिप्तेन =अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तप.कर्मणा ' सूराभिमुही ' सूर्याभिमुखी ' आया वेमाणी ' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विहर्त्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तर ता गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः-हे आर्ये ! वय खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी। अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित भी करने लगी। एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या साध्वी-जहा गोपालिका आर्या विराज मान थी वहा गई-(उवाग-च्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अ-ज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूर सामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मे ण सूरा भिमुही आयावेमाणी विहरित्तए) वहां जाकर उसने उन्हें वदना की, नमस्कार किया ' वदना एव नमस्कार कर फिर वह इस-प्रकार कहने लगी-हे भदत ! मै आप से आज्ञा प्राप्त कर चपा नगरी से बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अतररहित छट्ठ छट्ठ की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ। (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एव वयासी-अम्हेण

ચતુથ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ ભક્ત વગેરે તપસ્યાઓથી પોતાને ભાવિત પણ કરવા લાગી એક દિવસની વાત છે કે તે સુકુમારિકા આર્યા સાધ્વી જ્યા ગોપાલિકા આર્યા વિરાજમાન હતી ત્યા ગઇ (उवागच्छित्ता वदइ, नम सइ, वदित्ता, नम-सित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तु भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी च पाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणि विहरित्तए) ત્યા જઇને તેણે તેમને વદના કરી નમસ્કાર કર્યા વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ભદત ! આપની આજ્ઞા મેળવીને હુ ચપા નગરીમા બહાર સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે અતર રહિત છઠ્ઠ છઠ્ઠની તપસ્યા કરતા સૂર્યાભિમુખી થઇને આતાપના કરવા ઇચ્છુ છુ (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं

फया पृष्टा सुकुमालिकायाः सङ्घाटकस्थिताः सा सुकुमालिकां, तथैव गोपालिका सङ्घाटिका आर्या भणन्ति=वदन्ति स्मेत्यर्थः । 'तहेव सावित्ता जाया' तथैव श्राविका जाता=पोट्टिला यत् सुकुमारिका दारिकाऽपि श्राविका जाता । तथैव चिन्ता-पोट्टिलावदेव पश्चात्=पश्चाद्यां गतीऽभवत् तां चिन्ता सुकुमारिकाया मनसि माद्भूता । सुकुमारिका सागरदत्त सार्थवाह=स्वपितरं तथैव=यथा स्वपतिं पोट्टिला, तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामन्तिके मुण्डिता=दीक्षा गृहीतवती । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्वी जाता सा कि भूता-ईर्यासमिता यावद् गुप्त

हो तो भी बता दीजिये कि जिससे मैं अपने पति सागरदारक को इष्ट, कान्त यावत् मनोम बनजाऊँ। गोपालि का के सघाडे की इन आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोट्टिला को सुव्रता साध्वी की तरह समझाया-वह उसी तरहसे श्राविका बन गई। पोट्टिला की तरह इस सुकुमारिका ने भी बाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया-। पोट्टिलाने जिस तरह अपने पति से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की थी-उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली। (तएणं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाव गुत्तबभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ) इस तरह वह सुकुमारिका आर्या बन गई। वह ईर्यासमिति आदि का पालन करने लगी

કોઈ ચૂર્ણ વગેરેનો પ્રયોગ મળી રાકે તો પણ મને બતાવી દો કે જેથી હુ મારા પતિ સાગરદારકના માટે ફરી ઇષ્ટ, કાત, યાવત્ મનોમ થઈ જાઉ ગોપાલિકા સ ઘાડાની તે આર્યાઓએ-સુવ્રતા-સાધ્વીએ જેમ પોટ્ટિલાને સમ જાવી તેમજ સમજાવી અને છેવટે તે શ્રાવિકા બની ગઇ પોટ્ટિલાની જેમજ તે સુકુમારિકાએ પણ ત્યારપછી દીક્ષા લેવાનો મનમા મક્કમ વિચાર કરી લીધો પોટ્ટિલાએ જેમ પોતાના પતિની આજ્ઞા લઇને દીક્ષા ધારણ કરી હતી તેમજ સુકુમારિકાએ પણ પોતાના પતિ સાગરદત્તને પૂછીને ગોપાલિકા આર્યોની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી લીધી

(तएणं सा सूमालिया अज्जा जाया इरिया जाव गुत्तबभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે સુકુમારિકા આર્યા થઈ ગઈ, તે ઇર્યા સમિતિ વગેરેનુ પાલન કરવા લાગી અને નવકોટીથી બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતની રક્ષા [illegible] કરવા

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमभक्तैर्यावत्-तप कर्मभिरात्मान भावयन्ती विहरति=आस्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव गोपालिका आर्यास्तत्रोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती चम्पानगर्या बहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे षष्ठषष्ठेन-षष्ठभक्तानन्तर पुन षष्ठभक्तेन ' अणिक्खित्तेण ' अनिक्षिप्तेन =अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तप.कर्मणा ' सूराभिमुही ' सूर्याभिमुखी ' आया वेमाणी ' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विहर्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तर ता गोपालिका आर्याः सुकुमानिकामार्यामेवमवादिषु.-हे आर्ये ! वय खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी। अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित भी करने लगी। एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या साध्वी-जहा गोपालिका आर्या विराज मान थी वहा गई-(उवाग-च्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अ-ज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूर सामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मे ण सूरा भिमुही आयावेमाणी विहरित्तए) वहा जाकर उसने उन्हें वदना की, नमस्कार किया ! वदना एव नमस्कार कर फिर वह इस-प्रकार कहने लगी-हे भदत ! मै आप से आज्ञा प्राप्त कर चपा नगरी से बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अतररहित छट्ठ छट्ठ की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ। (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एव वयासी-अम्हेण

ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ ભક્ત વગેરે તપસ્યાઓથી પોતાને ભાવિત પણ કરવા લાગી એક દિવસની વાત છે કે તે સુકુમારિકા આર્યા સાધ્વી જ્યા ગોપાલિકા આર્યા વિરાજમાન હતી ત્યા ગઇ (उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता, नम-सित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणि विहरित्तए) ત્યા જઇને તેણે તેમને વદના કરી નમસ્કાર કર્યા વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ભદત ! આપની આજ્ઞા મેળવીને હુ ચપા નગરીમા બહાર સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે અતર રહિત છઠ્ઠ છઠ્ઠની તપસ્યા કરતા સૂર્યાભિમુખી થઇને ।ઇચ્છુ છુ (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं

निर्ग्रन्थ्यः ईर्यासमिता=ईर्यासमितियुक्ताः, यावद्-गुप्तब्रह्मचारिण्यः स्म, नस्माद् नो खलु वयमेषाम् कल्पते-'बहिया' बहिः-ग्रामाद् यावद् सन्निवेशाद् षष्ठं षष्ठेन 'जाव विहरित्तए' यावद् विहर्तुम् ग्रामादेः बहिः प्रदेशे साध्वीनां स्थितिः शीलभङ्गादिकारणं भवतीति भावः। किन्तु कल्पते खलु अस्माकम् 'अत्थो' अन्तः=अभ्यन्तरं 'उवस्सयस्स' उपाश्रयस्य=यतेः, किम्भूतस्य 'विइपरिकिखत्तस्स' वृतिपरिक्षिप्तस्य=भित्त्यादिना सर्वतः समावृतस्य, 'सघाडियद्धियाए' सङ्घाटिका प्रतिबद्धायाः=प्रतिबद्धसाटिकायाः सर्वथाऽनुत्साटितगात्रायाः इत्यर्थः 'समतलपइयाए' समतलपदिकायाः=भूमौ समतलतया स्थापितचरणयुगलायाः 'आयावित्तए' आतापयितुम्=आतापनां कर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। ततः

अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठ० जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारि का आर्या से इस प्रकार कहा हे आर्ये! हम लोग निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं। ईर्या आदि समितियों का पालन करती हैं। और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती है। इस लिये हम लोगों को ग्राम से यावत् सन्निवेश से बाहिर रह कर षष्ठ षष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है। कारण-ग्रामादि के बाहिरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभंग आदि का निमित्त बन जाता है। (कप्पइ णं अम्ह अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स सघाडियद्धियाए ण समतल पइयाए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एवं वयासी-अम्हेणं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओईरिया समियाओ जाव गुत्त बंभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठ० जाव विहरित्तए) આ રીતે સુકુમારિકા સાધ્વીનું કથન સાભળીને ગોપાલિકા આર્યાએ સુકુમારિકા આર્યાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે આર્યે! આપણે નિગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ ઈર્યા વગેરે સમિતિઓનું પાલન કરીએ છીએ, અને નવ કોટિથી બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરીએ છીએ એથી આપણે ગામથી યાવત્ સન્નિવેશથી બહાર રહીને ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરવી યાવત્ સૂર્યાભિમુખી થઈને આતપન યોગ ધારણ કરવો કલ્પિત નથી કારણ કે-ગામ વગેરેથી બહારના પ્રદેશમા સાધ્વીઓએ રહેવુ શીલભગ વિગેરેનુ નિમિત્ત થઈ જાય છે (कप्पइ णं अम्ह अतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स सघाडियद्धियाए ण समतलपइयाए आयावित्तए) આપણને તો એ જ કલ્પિત છે કે આપણે ભીત, ચોમેર

खलु सा सुकुमारिका गोपालिकानामार्यायामेतमर्थं नो श्रद्दधाति 'नो पत्तियइ' नो प्रत्येति=नो विश्वसिति, 'नो रोएइ' नो रोचते, एतमर्थम् अश्रद्दधाना अप्रतियन्ती, अरोचमाना सति सुभूमिभागस्य उद्यानस्य अदूरसामन्ते षष्ठ-षष्ठेन यावत्-तप कर्मणा सूर्याभिमुखी भूत्वा-आतापना कुर्वती विहरति ॥ सू० १३ ॥

मूलम्-तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ, नरवइ दिण्णवियारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरिभूया, तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था सुकुमालजहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिलगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स

कि जो भित्ति आदि से सब तरफ से परिक्षिप्त है भीतर ही अपने शरीर को शाटिका से अच्छी तरह संवृत्त करती हुई और भूमि पर दोनों चरणो को बराबर स्थापित कर आतापना ले (तएण सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठ अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) इस गोपालिका आर्याके कथन ऊपर उस सुकुमारिका आर्या को श्रद्धा नहीं जमी उस पर उसे विश्वास नहीं आया, वह उसे रुची नहीं। इस तरह वह उसे अश्रद्धा अप्रतीति और अरुचि का विषय बनाती हुई सुभूमिभाग नामक उद्यान के पास षष्ठ षष्ठ भी तपस्या करती हुई वह सूर्याभिमुख होकर आतापना करने लगी ॥ सू० १३ ॥

પરિક્ષિપ્ત ઉપાશ્રયની અંદર જ પોતાના શરીરને શાટિકા-સાડીના ભાગથી રીતે ઢાંકીને અને ભૂમિ ઉપર બંને ચરણોને બરાબર સ્થાપિત કરીને આતાપના લઇએ (तएण सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठ अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) ગોપાલિકા આર્યાના કથન ઉપર સુકુમાર આર્યાને શ્રદ્ધા થઈ નહિ, તેના ઉપર તેને વિશ્વાસ થયો નહિ તે તેને ગમ્યુ પણ નહિ આ રીતે તે તે કથન પ્રત્યે અશ્રદ્ધા, અપ્રતીતિ અને અરુચિ ધરાવતી સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરતી સૂર્યાભિમુખી થઈને આતાપના કરવા લાગી ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

निर्ग्रन्थ्यः ईर्यासमिता=ईर्यासमितियुक्ताः, यावत्-गुप्तब्रह्मचारिण्यः स्म, तस्माद् नो खलु अस्माकं कल्पते-'बहिया' बहिः-ग्रामाद् यावत् सन्निवेशाद् षष्ठं षष्ठेन 'जाव विहरित्तए' यावद् विहर्तुम् ग्रामादे र्बहि मत्वेन साध्वीना स्थितिः शीलभङ्गादिकारणं भवतीति भावः। किन्तु कल्पते खलु अस्माकम् 'अंतो' अन्तः=अभ्यन्तरं 'उवस्सयस्स' उपाश्रयस्य=वसतेः, किम्भूतस्य 'विइपरिक्खित्तस्स' वृतिपरिक्षिप्तस्य=भित्त्यादिना परिवेष्टितस्य, 'सघाडिबद्धियाए' सङ्घाटिका प्रतिबद्धाया =प्रतिबद्धशाटिकायाः सर्वथाऽनुद्घाटितगात्राया इत्यर्थः 'समतलपइयाए' समतलपदिकाया =भूमौ समतलतया व्यवस्थितचरणयुगलाया आयावित्तए' आतापयितुम्=आतापना चर्यां कर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। ततः

अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठ० जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारि का आर्या से उस प्रकार कहा हे आर्ये! हम लोग निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं। ईर्या आदि समितियो का पालन करती हैं। और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती है। इस लिये हम लोगो को ग्राम से यावत् सन्निवेश से बाहिर रह कर षष्ठ षष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है। कारण-ग्रामादि के बाहिरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभग आदि का निमित्त बन जाता है। (कप्पइ णं अम्ह अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स सघाडिबद्धियाए णं समतल पइ याए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एव वयासी-अम्हेणं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओईरिया सामियाओ जाव गुत्त बभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठ० जाव विहरित्तए) આ રીતે સુકુમારિકા સાધ્વીનુ કથન સાભળીને ગોપાલિકા આર્યાએ સુકુમારિકા આર્યાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે આર્યે! આપણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ ઇર્યા વગેરે સમિતિઓનુ પાલન કરીએ છીએ, અને નવ કોટિથી બ્રહ્મચર્યનુ રક્ષણ કરીએ છીએ એથી આપણે ગામથી યાવત્ સન્નિવેશથી બહાર રહીને ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરવી યાવત્ સૂર્યાભિમુખી થઈને આતપન યોગ ધારણ કરવો કલ્પિત નથી કારણ કે-ગામ વગેરેથી બહારના પ્રદેશમા સાધ્વીઓએ રહેવુ શીલભગ વિગેરેનુ નિમિત્ત થઈ જાય છે (कप्पइ णं अम्ह अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स सघाडिबद्धियाए णं समतलपइयाए आयावित्तए) આપણને તો એ જ કલ્પિત છે કે આપણે ભીત [illegible] ચોમેર

वेश्याविहारकृतनिकेता - वेश्यागृहकृतनिवासा, तथा-' नाणाविहअविणयप्पहाणा ' नानाविधाऽविनयप्रधाना, तथा-आढ्या=धनधान्यसम्पन्ना, यावद् अपरिभूता=परैरनभिभूता, आसीत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्यां देवदत्ता नाम 'गणिया' गणिका=वेश्या, आसीत् , सा किम्भूतेत्याह-सुकुमारपाणिपादा, चतुष्पष्टिकलाविशारदा ' जहा अंडणाए ' यथा अण्डज्ञाते=अण्डनामके तृतीये ज्ञाताध्ययने यथाऽस्यावर्णन तद्वदिह बोध्यम् । ततः खलु तस्या ललिताया गोष्ठ्या अन्यदा= अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, पञ्च ' गोट्ठिल्लगपुरिसा ' गोष्ठिकपुरुषा=मण्डलीपुरुषाः समानवयस्का इत्यर्थः देवदत्तया गणिकया सार्धं सुभूमिभागस्योद्यानस्योद्यानश्रिय= उद्यानशोभा मत्यनुभवन्तो विहरन्ति । तत्र खलु एको गोष्ठिकपुरुषो देवदत्ता

नाणाविह अविणयप्पहाणा, अड्ढा जाव अपरिभूया) इसने अपनी सेवासे राजाको प्रसन्न कर रखा था-सो उसकी कृपा से यह बिलकुल स्वच्छंद थे। अपने माता पिता आदि कुटुम्बी जनो की यह परवाह नही किया करते थे-उनको इन पुरुषों से बिलकुल भय नही था। वेश्याओं के घर में पडे रहना-यही इनका एक काम था। अनेक प्रकार के अविनय प्रधान रूप अनाचारों का सेवन करना यही उनका काम था। पैसे की-द्रव्यकी उनके- पास कमी नही थी। कोई इनको कुछ कह सुन नही सकता था। (तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नाम गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच ' गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति) उसी चंपा नगरी में

જાવ અપરિભૂયા) તે બધાએ પોતાની સેવાથી રાજાને પ્રસન્ન કરેલો હતો. તેમની કૃપાથી તે બધી એકદમ સ્વચ્છંદપણે આચરતી હતી પોતાના માતા પિતા વગેરે કુટુંબી લોકોની પણ તેઓ દરકાર કરતા ન હતા તેઓને આ વડીલોની કોઇપણ જાતની બીક હતી નહિ, વેશ્યાઓના ઘેર પડયા રહેવુ ફક્ત એજ એમનુ એક માત્ર કામ હતું અનેક પ્રકારના અવિનયપૂર્ણ આચરણો કરવા એજ તેઓના જીવનનુ મુખ્ય કામ હતું ધનની તેઓની પાસે ખોટ હતી નહિ કોઇપણ નાગરિકની એટલી પણ તાકાત નહોતી કે તેઓ તેમને કંઇપણ કહે! (तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नाम गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति) તેજ સમયે

उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तत्थ णं एगे गोहिलगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरइ एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ एगे पुप्फपूरयं रएइ एगे पाए रएइ एगे चामरुक्खेवं करेइ तएणं सा सुभालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोहिलपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ, तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियमबंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि त्तिकट्टु नियाणं करेइ करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ ॥सू० १४॥

टीका—' तत्थ णं चपाए ' इत्यादि। तत्र खलु चम्पायां नगर्यां ललिता नाम्नी ' गोट्ठी ' गोष्ठी=मण्डली परिवसति किं भूता सा गोष्ठीत्याह-'नरवइदिण्ण वियारा ' नरपतिदत्तविचारा नरपतिना दत्तो विचारः समर्पितो यस्यै सा तथा-सेवा दिना सन्तुष्टान्नरपतेर्लब्धस्वतन्त्रता, तथा - ' अम्मापिइनियय निप्पिवासा ' अम्बापितृनिजकनि पिपासा=मातापित्रादि निरपेक्षा, ' वेसविहारकय निकेया '

' तत्थ णं चपाए ललिया नाम ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तत्थ णं चपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ) उस चपानगरीमें ' ललिता ' इस नामकी गोष्ठी-मडली-रहती थी। (नरवइ दिण्णवियारा, अम्मापिइ नियय निप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया,

---

' तत्थणं चपाए ललिया नाम ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तत्थणं चपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ) તે ચપા નગરીમા ' ललिता ' નામે गोष्ठी ' મડળી રહેતી હતી (नरवइ, दिण्णवियारा अम्मापिइ नियय निप्पिवासा, वेसविहारकयनिकेया, नाणाविहअविणयप्पहाणा, अड्ढा

पुरेसं मानुस्सगाणं=श्रेष्ठान् भोगान् भुञ्जाना-दुर्वां पश्यति, ततस्तस्याः सुकुमारिकाया अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः संकल्प=विचारः समुदपद्यत-अहो ! खलु इमा स्त्री पुरा=पूर्वभवे 'पोराणाणं' पुराणानाम्-पुरातनानां सञ्चितानां कर्मणां पुण्यकर्मणां यावत्=फलवृत्तिविशेषं प्रत्यनुभवन्ती विहरति तत्=तस्मात् कारणाद् यदि खलु कोऽप्यस्य सुचरितस्य तपोनियमब्रह्मचर्यवासस्य कल्याण=इष्टः शुभरूपः, फलवृत्तिविशेषः अस्ति, 'तो' तर्हि खलु अहमपि 'आगमिस्सेणं' आगामिना भवग्रहणेन इमान् एतद्रूपान् उदारान् भोगान् यावद् भुञ्जाना 'विह-

उस पर चमर ढोरे। इस तरह से उस सुकुमारिका आर्या ने उन मंडली के पांच पुरुषों के साथ उस देवदत्ता गणिका को उदार मनुष्य भव संबन्धी काम भोगों को भोगते हुए देखा। (तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ) तब उस सुकुमारिका आर्या को इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ-अहो! इस स्त्री ने पूर्वभव में जो पुण्य कर्म कमाये हैं उन्हीं पुराने पुण्य कर्मों के यावत् फलवृत्ति विशेष को यह भोग रही है। (त जइणं केइ इमस्स सुचरियस्स तव नियम बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि, त्ति कट्टु नियाणं करेइ, करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ) इसलिये यदि इन पालित तप, नियम एवं ब्रह्मचर्य व्रतों का कोई शुभरूप फलवृत्ति विशेष है तो मैं भी आगामी भव में इसी तरह के उदार मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों

ઢેબ્યા આ રીતે તે સુકુમારિ આર્યાએ મંડળીના પાંચે માણસોની સાથે તે દેવદત્તા ગણિકાને ઉદાર મનુષ્યભવના કામભોગો ભોગવતા જોયા (तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ) ત્યારે તે સુકુમાર આર્યાને આ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો કે અહો ! આ સ્ત્રીએ પૂર્વભવમાં જે પુણ્યકર્મ કર્યા છે તેમને લીધેજ એટલે કે તે પૂર્વભવના પુણ્ય-કર્મોના યાવત્ ફળવિશેષને આ ભોગવી રહી છે (त जइणं केइ इमस्स सुचरियस्स तव नियम बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि, त्ति कट्टु नियाणं करेइ, करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ) આ બધા મારા વડે આચરવામાં આવેલ તપ, નિયમ અને બ્રહ્મચર્ય વ્રતોનું શુભ ફળ છે તો હું પણ આવતા ભવમાં આ જાતના જ ઉદાર સંબંધી કામભોગોને ભોગવું આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે નિદાન

गणिकामुत्सङ्गे धरति एक 'पिट्ठओ' पृष्ठतः 'आयवत्त' आतपत्रं धरति, एकः 'पुप्फपूरयं' पुष्पपूरक-पुष्पाणां रचनाविशेषं 'करइ' करोति, एकः पादौ-अलक्तकादिना रञ्जयति। पञ्चः 'चामरुक्खेवं' चामरं क्षिप-चामरवीजनं करोति। तत' खलु सा सुकुमालिया अज्जा देवदत्ता गणिका तं' पञ्चभिर्गोष्ठिक

देवदत्ता नाम की एक गणिका रहती थी। वह चौंसठ कलाओं में निष्णात थी। इसके हाथ पैर आदि सब ही अवयव बहुत ही अधिक सुकुमार थे। मयूर अंड नाम के तृतीय ज्ञाताध्ययन में उसका जैसा वर्णन किया गया है-वैसा ही वर्णन इसका यहां जानना चाहिये। एक समय की बात है कि गोष्ठी के ५, कि जो समान वयवाले थे देवदत्ता गणिका के साथ उस सुभूमिभाग उद्यान में आये-और वहां की उद्यान की शोभा का निरीक्षण करते हुए इधर-उधर घूमने लगे-(तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लग पुरिसे देवदत्त गणिय उच्छंगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्त धरेइ, एगे पुप्फपूरय रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेव करेइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा देवदत्त गणिय तेहिं पचहिं गोट्ठिल्लगपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ) वहां एक उस मंडली के पुरुष ने देवदत्ता गणिका को अपनी गोदी मे बैठाया, एक दूसरे-मंडली के पुरुष ने उसके पीछे से उसके ऊपर छत्ता ताना, एक तीसरे पुरुषने उसके निमित्त पुष्पों की रचना रची, चौथे पुरुष ने उसके दोनों पैरों में आलता लगाया पांचवें ने

નગરીમા દેવદત્તા નામે એ ગણિકા રહેતી હતી તે ૬૪ કળાઓમા નિપુણ હતી, તેના હાથ-પગ વગેરે બધા અંગો અતીવ સુકોમળ હતા મયૂરી અંડ નામના ત્રીજા અધ્યયનમા દેવદત્તાનુ જેવુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેવુ જ વર્ણન અહી પણ જાણી લેવુ જોઇએ એક દિવસની વાત છે કે ગોષ્ઠી-મંડળીના પાચ માણસો કે જેઓ સરખા ઉંમરવાળા હતા-દેવદત્તા ગણિકાની સાથે તે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનમા ગયા અને ત્યાની ઉદ્યાન શોભાનુ નિરીક્ષણ કરતા આમ તેમ ફરવા લાગ્યા (तत्थण एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्त गणियं उच्छंगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्त धरेइ, एगे पुप्फपूरय रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेव करेइ तएण सा सूमालिया अज्जा देवदत्त गणिय तेहिं पचहि गोट्ठिल्लपुरिसेहि सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी पासइ) त्यारे તે ૫ ગોષ્ઠીના એક માણસે દેવદત્તા ગણિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી બીજા માણસે તેની ઉપર છત્રી તાણી, ત્રીજા માણસે તેના માટે પુષ્પોની રચના કરી, ચોથા માણસે તેના પગમા લાલ રંગ લગાવ્યો, પાચમા માણસે તેના ઉપર ચામર

माणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं अहं अगारवासमज्झे वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्वि च णं मम ससाणीओ आढायति२ इयाणि नो आढंति२ त सेयं खलु मम कल्ल पाउ० गोवालियाण अतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्क उवस्सय उवसंपज्जित्ताण विहरित्तए त्तिकट्टु एव संपेहेइ संपेहित्ता कल्ल पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्कं उवस्सय उवसपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्ण-परियागं पाउणइ अद्धमासियाए सलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे अपणयरसि विमाणसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाण देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या ' सरीर

' तएण सा सूमालिया अज्जा ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर बउसा

' तएण सा सूमालिया अज्जा ' इत्यादि—

-(तएण) त्यारपछी (सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि

रिज्जामित्ति कट्टु ' ' विहरामि ' इति कृत्वा ' निगाण ' निदान करोति, कृत्वा आतापनभूमितः प्रत्यवरोहति-आतापना परित्यजति ॥ सू० १४॥

मूलम्-तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतराइ धोवेइ कक्खंतराइ धोवेइ गोज्झतराइ धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं अज्ज एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बभचेरधारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुम च णं अज्जे ! सरीरबाउसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेसि जाव चेएसि, तं तुम णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तएण सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ, तएण ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीए सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहि हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

---

को भोगू । ऐसा विचार कर उसने निदान बध किया और करके फिर वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४॥

બંધ કર્યો અને કરીને તે આતાપન ભૂમિથી આતાપના લઈને પોતાના સ્થાને આવી ગઈ ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

माणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं अहं अगारवासमज्झे वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्वि च णं मम समाणीओ आढायति२ इयाणिं नो आढति२ त सेयं खलु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्क उवस्सयं उवसपज्जित्ताण विहरित्तए त्तिकट्टु एव संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्कं उवस्सय उवसपज्जित्ताणं विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ अद्धमासियाए सलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरसि विमाणसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या ' सरीर

' तएण सा सूमालिया अज्जा ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर बउसा

' तएण सा सूमालिया अज्जा ' इत्यादि—

–(तएण) त्यारपछी (सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि

रिज्जामित्ति कट्टु ' ' गिहरामि ' इति कृत्वा ' निगाणं ' निदानं करोति, कृत्वा आतापनभूमितः प्रत्यवरोहति आतापना परिहापयति ॥ सू० १४॥

मूलम्–तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं२ हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतराइं धोवेइ कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं अज्ज एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुम च णं अज्जे ! सरीरबाउसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेसि जाव चेएसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तएणं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ, तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीए सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

---

को भोगू । ऐसा विचार कर उसने निदान बंध किया और करके फिर वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४॥

બંધ કર્યો અને કરીને તે આતાપન ભૂમિથી આતાપના લઈને પોતાના સ્થાને આવી ગઈ ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

ततः खलु गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः एवं खलु हे देवानुप्रिये ! आर्ये ! वयं श्रमण्य-तपस्विन्यः निर्ग्रन्थ्यः ब्राह्माभ्यन्तरग्रन्थि-रहिताः ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचर्यधारिण्यः स्मः, नो खलु कल्पतेऽस्माकं सरीरबाउसियाए ' शरीरबकुशिका ' होत्तए ' भवितुम् इति त्वं च खलु हे आर्ये ! शरीरबकुशिका जाता अभीक्ष्ण=पुनः पुनरतिशयेन हस्तौ धावसि =प्रक्षालयसि, यावत्-स्थानं वा शय्यां वा स्वाध्यायभूमिं वा जलेनाभ्युक्ष्य ' चेएसि ' चेतयसि स्थानादिकं करोषीत्यर्थः । तत्=तस्मात् त्वं खलु हे देवानु प्रिये ! तत् स्थानम् ' आलोएहि ' आलोचय, स्वातिचारं प्रकाशयेत्यर्थः । यावत् ' पडिवज्जाहि ' प्रतिपद्यस्व=प्रायश्चित्तं स्वीकुरु ' इत्यर्थः । ततः खलु सा सुकु-

---

लिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से कहा-(एव खलु देवाणुप्पि-या ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचेर धारिणिओ, नो खलु कप्पइ अम्ह सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे सरीरबाउसिया, अभिक्खणं २ हत्थे धोवेसि, जाव चेएसि) हे देवानुप्रिये ! हम आर्याएँ निर्ग्रन्थ श्रमणिया हैं। ईर्या आदि पांच समि-तियोंका पालन करती हैं। नौकोटि ब्रह्मचर्य सहितमहाव्रतको पालन करती हैं। अतः हम लोगों को अपने शरीर के संस्कार करने में परा-यण बनना कल्पित नहीं हैं। हे आर्ये ! तुम शरीर संस्कार करने में परायण बन चुकी हो। बार २ तुम हाथों को धोती हो यावत् स्थान को शय्या को, और स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानीसे धोकर नियत करती हो (तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि) इस लिये हे देवानुप्रिये ! तुम उस स्थान की आलोचना करो-अपने अतिचारों को प्रकाशित करो यावत् उनका प्रायश्चित्त लो।

સુકુમારિકા આર્યાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचे धारिणिओ नो खलु कप्पइ अम्हे सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे सरीरबाउसिया, अभिक्खणं २ हत्थे धोवेसि जाव चेएसि) હે દેવાનુપ્રિયે ! અમે આર્યાઓ નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ, ઈર્યા વગેરે પાંચ સમિતિઓનું બરોબર પાલન કરીએ છીએ, નવ કોટિવાળું બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત બરાબર કરીએ છીએ એવા પોતાના શરીરનો સંસ્કાર કરવો એ આપણા માટે યોગ્ય ગણાય નહિ હે આર્યે ! તમે શરીરના સંસ્કા રમાં પરાયણ બની ચૂકી છો તમે વારંવાર હાથોને ધુએ છો યાવત્ સ્થાનને, શય્યાને અને સ્વાધ્યાયભૂમિને પહેલેથી જ પાણીથી ધોઈને નકકી કરી લો છો (तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि) એવા

वउत्ता ' सरीरबउत्ता सरीरसक्कारणयाए जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ पुनः पुनः हत्थे ' धोवेइ ' धावति=प्रक्षालयति, पाए धावति ' सीसं ' शीर्षं=शिरः धावति, मुहं धावति, ' थणंतराइं ' स्तनान्तराणि धावति ' कक्खंतराइं ' कक्षान्तराणि धावति ' गुज्झंतराइं ' गुह्यान्तराणि गुह्यदेशं धावति, जत्थवि ' ठाणं वा ' स्थानम्-उपवेशनार्थं स्थानं ' सेज्जं वा ' शय्यां वा ' निसीहियं वा ' नैषेधिकीं स्वाध्यायभूमिं वा ' चेएइ ' चेतयति-करोति, तत्रापि च णं पुव्वामेव ' अब्भुक्खइत्ता ' अभ्युक्ष्य=अभिषिच्य, तत पश्चात् ' ठाणं वा ' स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा चेएइ ' चेतयति-करोति ।

जाया यावि होत्था-अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गोज्झंतराइं धोवेइ) वह सुकुमारिका आर्या शरीर संस्कार करने में भी तत्पर बन गई। बार २ वह हाथ धोने लगी, पैर धोने लगी, शिर धोने लगी, मुख धोने लगी, स्तनान्तरों को धोने लगी, कक्षाओं को धोने लगी और गुह्य प्रदेश को धोने लगी। (जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएण अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा ३ चेएइ, तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी) इसी तरह वह जहां अपना बैठने के लिये स्थान बनाती, शय्या-पाथरती, स्वाध्याय स्थान करती, वहां भी वह पहिले से ही उसे जल से सींच देती-तब जाकर वहां वह अपना स्थान, शय्या एवं स्वाध्याय भूमि नियत करती। इस प्रकार की परिस्थिति देख कर गोपा

होत्था-अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ) તે સુકુમારિકા આર્યા શરીર-સંસ્કા રના કામમા પરોવાઇ ગઇ વારવાર હાથ ધોવા લાગી, પગ ધોવા લાગી, માથુ ધોવા લાગી, મુખ ધોવા લાગી,સ્તનોના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી,બગલોને ધોવા લાગી, અને ગુપ્ત સ્થાનોને ધોવા લાગી (जत्थणं ठाणं वा सेज्जंवा निसीहियं वा चेएइ तत्थवि य णं पुव्वामेव उदएण अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा ३ चेएइ तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी) આ પ્રમાણે જ તે જ્યા પોતાનુ બેસવાનુ સ્થાન નક્કી કરતી, કે પથ રી પાથરતી અથવા તો સ્વાધ્યાય માટે બેસવાનુ સ્થાન નક્કી કરતી ત્યા પહેલેથી જ તે સ્થાનને પાણી છાટતી હતી અને ત્યારપછી તે ત્યા પોતાનુ સ્થાન-શય્યા અને સ્વાધ્યાય સ્થાન નક્કી કરતી હતી આ જાતની પરિસ્થિતિ જોઈને ગોપાલિકા તે

भूतः, यदा=यावत् काल खलु अहमगारवासमध्ये वसामि, तदा=तावत् काल खल्वहं ' अप्पवसा ' आत्मवशा स्वाधीना आसम्, यदा खल्वहं मुण्डा भूत्वा प्रव्रजिता तदा खल्वहं परवशा पराधीना जाता। ' पुव्वि ' पुरा पूर्वस्मिन् काले च खलु ' मम ' मा श्रमण्यः ' आढायंति ' २ आद्रियन्ते, तथा परिजानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, ' त ' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्भूत प्रभातया रजन्या यावज्ज्वलति सूर्ये अभ्युद्गते गोपालिकानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रम्य ' पाडिएक्क ' पार्थक्य=पार्थक्यायाश्रय पृथग्भूतम् अन्यमित्यर्थः ' उव-

---

यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(जयाण अम्ह आगारवासमज्झे वसामि तयाण अहं अप्पवसा जयाण अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तयाण अहं परवसा, पुव्वि च ण मम समणीओ आढायंति, इयाणि णो आढति २ तं सेय खलु मम कल्ल पाउ०गोवालियाणं अतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्क उवस्सयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ) जब तक मै घर में रही तब तक स्वाधीन रही-और अब जब से मुंडित होकर प्रव्रजित हुई हूँ तब से पराधीन बन रही हूँ। पहिले ये श्रमणिया मेरा आदर करती थी-मेरी बात मानती थी परन्तु अबतो कोई भी न मेरा आदर करती है-और न मेरी बात ही मानती है। इस लिये मुझे अब यही उचित होगा कि मैं दूसरे दिन जब प्रातः काल होने पर सूर्य प्रकाश से चमकने लगे-तब मैं गोपालिका आर्याके पास से निकल कर किसी दूसरे भिन्न उपा

રોક ટોક કરી ત્યારે તેને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે (जयाण अम्ह आगारवासमज्झे वसामि तयाण अहं अप्पवसा जयाण अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तयाण अहं परवसा पुव्वि च ण मम समणीओ आढायंति, इयाणि णो आढति २ त सेय खलु मम पाउ० गोवालियाण अतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिक्क उवस्सय उवसपज्जित्ताण विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ) જ્યા સુધી હુ ઘરમા રહી ત્યા સુધી સ્વાધીન રહી પણ જ્યારથી મુડિત થઈને પ્રવ્રજીત થઇ છુ ત્યારથી પરાધીન થઈ ગઈ છુ પહેલા આ શ્રમણીઓ મારો આદર કરતી હતી, મારી વાત માનતી હતી પણ અત્યારે તો કોઈ પણ મારો આદર નથી કરતુ અને મારી વાત પણ માનતુ નથી તેથી મારે માટે એજ ઉચિત છે કે બીજે દિવસે સવારે સૂર્ય ઉદય પામતા જ હુ ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી નીકળીને કોઇ બીજા ઉપાશ્રયે જતી રહુ — —તનો તેણે વિચાર કર્યો (सपेहित्ता) વિચાર કરીને તે (कल्ल पा०

मारिका आर्या गोपालिकानामार्याणामेनमर्थं 'नो आढाइ' नाद्रियते, नो परिजानीते तद्वचने ध्यान न ददाति। अनाद्रियमाणा=अनादर कुर्वती, अपरिजानाना=ध्यानमदद्दाना विहरति=आस्ते। तत' खलु ताः गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामभीक्ष्णं=पुनः पुनरभीक्ष्णं खिंसन्ति निन्दन्ति यावत् परिभवन्ति। अभीक्ष्णं=पुनः पुनः, 'एयमट्ठं' एतमर्थम् उक्तरूपं अभीक्ष्णोमाकरण जलसेक्षेपादिकं निवारयन्ति=प्रतिषेधयन्ति। तत' खलु 'तीए' तस्याः सुकुमारिकाया श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभिः हील्यमानाया यावद् वार्यमाणाया अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणस्वरूप' आध्यात्मिको यावन्मनोगतः संकल्पो-विचारःसमुदपद्यत=भा

(तएण सा सुमालिया गोवालियाण अज्जाण एयमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) सुकुमारिका आर्या ने गोपालिका आर्या के इस कथन रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से नहीं देखा, उनके वचनों पर उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इस तरह उनके वचनो का अनादर और उन पर ध्यान नहीं देती हुई वह रहने लगी (तएणं ताओ अज्जाओ सुमालियं अज्ज अभिक्खणं २ एयमट्ठ निवारेंति, तएण तीसे सुमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस के पश्चात् उन गोपालि का आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या की बार २ अवहेलना की, उस पर वे गुस्सा भी हुई उसकी निंदा भी की यावत् उसका तिरस्कार भी किया। बार २ उसे शरीर की शोभा करने से और जल का सिंचन करने से रोका। तब उसे इस प्रकार का

હે દેવાનુપ્રિયે! તમે તે સ્થાનની આલોચના કરો–પોતાના અતિચારને પ્રકા શિત કરો યાવત્ તેના માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરો (तएण सा सुमालिया गोवालियाण अज्जाण एयमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) સુકુમારિકા આર્યાએ ગોપાલિકા આર્યાના આ કથનરૂપ અર્થને આદરની દૃષ્ટિથી જોયો નહિ, તેમના વચનો ઉપર તેણે કંઈ પણ વિચાર કર્યો નહિ આ રીતે તેમના વચનોનો અનાદર અને તે પ્રત્યે બેદરકાર થઈને તે પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગી (तएण ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्ज अभिक्खणं २ एयमट्ठ निवारेंति, तएण तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) ત્યારપછી તે ગોપાલિકા આર્યાએ તે સુકુમારિકા આર્યાની વારવાર અવહેલના કરી, તેની તરફ તેમણે ગુસ્સો પણ બતાવ્યો, તેની નિંદા કરી યાવત્ તેનો તિરસ્કાર પણ કર્યો તેને વારવાર શરીરને શોભાવવા બદલ તેમજ જળનુ સિ બદલ

सय ' उपाश्रयम् उपसंपद्य विहर्तुमिति कृत्वा पत्र संप्रेक्ष्य कल्ये प्रादुर्भूतमाताया रजन्या यावज्वलनित्यर्के उदिते ति गोपालिकानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पाडिएक्क ' प्रार्थक्य-पृथगभूतमन्यमुपाश्रयमुपसंपद्य खलु विहरति-आस्त इति।

तवः खलु सा सुकुमारिका आर्या ' अणोहट्टिया ' अनपघट्टिका अपवारक रहिता-उच्छृङ्खला अविनयवतीति यावत् ' अनिवारिया ' अनिवार्या दुर्निवारा ' सच्छंदमई ' स्वच्छन्दमतिः-चारित्रधर्मानुरोधरहितमाना, अभीक्ष्ण-पुनः पुनः हस्तौ धावति=प्रक्षालयति यावत्=स्थान वा शय्या वा नैषेधिकीं वा जलेनाभ्युक्ष्य-क्षेतयति=स्थानादिक करोतीत्यर्थः। तत्रापि च खलु पार्श्वस्था, पार्श्वस्थविहारिणी,

---

अब मैं चली जाऊँ इस प्रकार का उसने विचार किया (संपेहित्ता) ऐसा विचार करके (कल्ल पा० गोवालियाए अज्जाए) दूसरे ही दिन प्रातः काल जब सूर्योदय हो गया-तब वह गोपालिका आर्या के (अतियाओ) पास से (पडिनिक्खमित्ता) निकल कर-(पडिण्णक) भिन्न, दूसरे (उवस्सय) उपाश्रय को (उवसपज्जित्ताणं विहरइ) प्राप्तकर, वहा रहने लगी-अर्थात् दूसरे उपाश्रय में चली आई। (तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ) परा वह सुकुमारिका आर्या बिना किसी रोक टोक के स्वच्छंद बनकर रहने लगगई। वहां उसे कोई रोकने वाला रहा नहीं-सो जो मन में आया वह करने लगगई-इस तरह वह चारित्र धर्म के भाव से रहित बन गई। बार २ अपने हाथों को धोती यावत् स्थान, शय्या, और स्वाध्याय की भूमि को धोकर वहा

गोशालियाए अज्जाए) બીજે દિવસે સવારે જ્યારે સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે તે ગોપાલિકા આર્યાની (अतियाओ) પાસેથી (पडिनिक्खमित्ता) નીકળીને (पडिण्णक) બીજા (उवस्सय) ઉપાશ્રયને (उवसपज्जित्ताणं विहरइ) મેળવીને ત્યા રહેવા લાગી, એટલે કે બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી (तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ) ત્યા તે સુકુમારિકા આર્યા કોઈપણ જાતની રોક ટોક વગર સ્વચ્છતાપૂર્વક રહેવા લાગી ત્યા તેને કોઈ રોક-ટોક કરનાર હતુ નહિ એટલે જે પ્રમાણે તેની ઇચ્છા થતી તે પ્રમાણે જ તે આચરતી હતી આ રીતે તે ચારિત્ર ધર્મના ભાવથી રહિત બની ગઇ વાર વાર તે પોતાના હાથોને ધોતી હતી યાવત્ સ્થાન, પથારી અને સ્વાધ્યાયના સ્થાનને ધોઇને ત્યા પોતાનુ સ્થાન નક્કી કરતી હતી

अवसन्ना, अवसन्नविहारिणी, कुशीला कुशीलविहारिणी, संसक्ता, संसक्तविहारिणी, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्धमासिक्या संलेखनया-तस्य स्थानस्याऽनालोचिता अप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा, ईशाने कल्पेऽन्यत मस्मिन् विमाने मथुर्यादि वाचनासमये आचार्याणा विमानसंख्याया विस्मरणेन निश्चयाभावादन्यतमस्मिन्नित्युक्तम्, देवगणिकतया उपपन्ना। तत्रैकैकासा-देवीना नवपल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ सू० १५ ॥

अपना स्थान नियत करती। इस प्रकार (तत्थ वि य ण पासत्था पासत्थ विहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ) वहां उस सुकुमारिका ने पार्श्वस्था पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी,कुशीला,कुशील विहारिणी, संसक्ता, संसक्त विहारिणी बनकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया (पाउणित्ता अद्धमासियाए) पालन करके वह अर्धमास की संलेखना धारण कर (कालमोत) अपनी मृत्यु के अवसर (काल किच्चा) पर मरी-सो मरकर (अणालोइय अपडिक्कता) अपने पापों की अनालोचना करने से वह प्रतिक्रान्त नहीं बन सकने के कारण (ईसाणे कप्पे) ईशानकल्प में (अण्णयरंसि विमाणंसि) किसी एक विमान में (देवगणियत्ताए उववण्णा) देवगणिका के रूप में उत्पन्न हुई। (तत्थेगइयाणं देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता) वहां कितनिक देवियों

આ રીતે (तत्थ वि य ण पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीलाऽसंसत्ता २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ) ત્યા તે સુકુમારિકાએ પાર્શ્વસ્થા, પાર્શ્વસ્થ વિહારિણી, અવસન્ના, અવસન્ન વિહારિણી, કુશીલા, કુશીલ વિહારિણી, સંસકતા, સંસકત વિહારિણી થઈને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું (पाउणित्ता अद्धमासियाए) પાલન કરીને તે અર્ધમાસિકની સંલેખના ધારણ કરીને (कालमासे) પોતાના મૃત્યુ કાળે (काल किच्चा) તે મરણ પામી અને મરણ પામીને (अणालोइय अपडिक्कता) પોતાના પાપોની આલોચના ન કરવાથી પ્રતિકાત ન બની શકવાના કારણે તે (ईसाणे कप्पे) ઇશાન કલ્પમા (अण्णयरंसि विमाणंसि) કોઈ એક વિમાનમા (देवगणियत्ताए उववण्णा) દેવગણિકાના રૂપમા જન્મ પામી (तत्थेगइयाण देवी ण नवपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थण सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता) ત્યા કેટલીક દેવીઓની સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની કહે

मूलम्–तेणं कालेण तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था, वन्नओ तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ, तस्स णं चुलणीदेवी धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तएणं सा सूमालियादेवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुपयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया, तएणं सा चुलणीदेवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया, तएणं सा तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं नामधेज्जं जम्हा० एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया त होउ णं अम्ह इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई, तएणं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गुणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवई, तएणं सा दोवई दारिया पंच धाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण इव चंपगलया निवाय

की स्थिति नौ पल्योपम की कही गई है–सो इस सुकुमारिकादेवी की वहां नौ पल्योपम की स्थिति हुई। यहां जो " किसी एक विमान में " ऐसा अनिश्चयात्मक पदआया है उसका तात्पर्य यह है कि माधुर्यादि वाचना के समय में आचार्यों को विमान संख्या का विस्मरण हो जाने से उसका निश्चय नहीं रहा। अतः ऐसा कहा गया है ॥ सू० १५ ॥

વામા આવી છે તો તે સુકુમારિકા દેવીની પણ ત્યા નવપલ્યોપમની સ્થિતિ થઇ અહીં જે " કોઈ એક વિમાનમા " આ જાતનુ અનિશ્ચયાત્મક પદ આપ્યુ છે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે માધુર્યાદિ વાચનાના સમયે આચાર્યોને વિમાન સખ્યાનુ વિસ્મરણ થઇ જવાથી તે વિષે નિશ્ચય રહ્યો નહિ એથી આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ। तएणं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया जावि होत्था, तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंतेउरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति करित्ता दुवयस्स रण्णो पाएवंदिउं पेसंति तएण सा दोवइ राय० जेणेव राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ, तएणं से दुवए राया दोवइ दारियं अंके निवेसेइ निवेसित्ता दोवइए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ रायवरकन्नं एवं वयासी-जस्स णं अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि, तएणं मम जावजीवाए हिययडाहे भविस्सइ, तं णं अहं तव पुत्ता! अज्जयाए संयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णसयंवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १६ ॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुर=काम्पिल्यपुरनामक नगरं

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नाम नयरे होत्था) इसी जंबूद्वीप में भारत वर्ष में पांचाल जनपद में

तेण कालेण तेण समएणं इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (इहेव जंबुद्दीवे भारहेवासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नाम नयरे होत्था) આ જંબૂદ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં પાંચાલ જનપદમાં કાંપિલ્યપુર નામે નગર હતું (वन्नओ) આ નગરનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે ત્યાથી પાઠકોએ જાણી

गारसीत्, वर्णकः=अस्य नगरस्य वर्णनमौपपातिकसूत्रात् बोध्यम्। तत्र खलु द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुल्लनी नाम्नी देवी गार्याऽऽसीत्, तस्य पुत्रः 'धट्ठज्जुणे' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत्।

ततः खलु सा सुकुमारिका देवी तस्मात् देवलोकादायुःक्षयेण यावत्-च्युत्वा इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः=चुल्लन्या देव्याः कुक्षौ दारिकतया=पुत्रीत्वेन 'पच्चायाया' प्रत्या याता=समुत्पन्ना। तत खलु सा चुल्लनीदेवी नवानां मासानां बहुप्रतिपूर्णानां यावद् दारिकां पुत्रीं प्रजाता=प्रजनितवती। तत खलु सा तस्या दारिकाया

काम्पिल्यपुर नाम का नगर था। (वन्नओ) इस नगर का वर्णन औप पातिक सूत्र में किया गया है सो वहां से जान लेना चाहिये। (तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था वन्नओ तस्स ण चुल्लणीदेवी, धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तएण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुल्लणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) वहांके राजाका नाम द्रुपद था। राजाका वर्णन भी पहिले जैसा ही जानना चाहिये। इस की रानी का नाम चुल्लनीदेवी था। कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था—यह युवराज था। वह सुकुमारिका आर्या का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के कारण चवकर इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पांचाल जनपद में कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुल्लनीदेवी की कुक्षि में पुत्री रूपसे अवतरित हुआ। (तएण सा चुल्लणीदेवी नवण्ह मासाणं जाव

देवु जोईએ (तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था, वन्नओ, तस्सण चुल्लणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे, जुवराया, तएण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुल्लणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) त्यांना राजानु नाम द्रुपद हतुं राजानु वर्णन पण औपपातिक सूत्रमा वर्णित कोणिक राजानी जेम जाणी लेवु जोईએ-तेनी राणीनु नाम चुल्लनी देवी हतुं तेना पुत्रनु नाम धृष्टद्युम्न हतुं धृष्टद्युम्न युवराज हतो, सुकुमारिका आर्यानो जीव ते બીજા દેવલોકથી આયુ વગેરે ક્ષય થતા બદલ ચવીને આજ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા, ભરત ક્ષેત્રમા, પાંચાલ્ય જનપદમા, કાંપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની ચુલની દેવીના ઉદરમા પુત્રી રૂપે અવતરિત થયો (तएण सा चुल्लणी

'निव्वत्तबारसाहियाए' निर्वृत्तद्वादशाहिकाया=द्वादशेऽहनि समाप्ते इदमेतद्रूप नाम कृतवती यस्मात् खलु एषा दारिका द्रुपदस्य राज्ञो 'धूया' दुहिता-पुत्री चुलन्याः देव्या 'अत्तिया' आत्मजा=अङ्गजाता, तस्माद् भवतु खल्वस्माकमस्या दारिकाया नामधेय 'द्रौपदी' इति। ततः खलु तस्या अम्बापितरौ इममेतद्रूप गौणं=गुणप्राप्त गुणनिष्पन्न=गुणसपन्न, नामधेय कुरुतः। ततः सा द्रौपदी दारिका पञ्चधात्रीभिर्यावद् गिरिकन्दरमालीने चम्पकलता निर्वातनिर्व्याघाते सुख-सुखेन परिवर्धते स्म।

दारिय पयाया तएण सा तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इम एया रूव गोण गुणणिप्फण्ण नामधेज्ज जम्हाण एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया त होउण-अम्ह इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई) गर्भ के जब नौ मास अच्छी तरह समाप्त हो चुके तब चुलनी-देवी ने एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्री को उत्पन्न हुए १२ वां दिन लगा-तब चुलनी माताने उसको इस रूप से गुणनिष्पन्न नामरक्खा क्यों कि यह द्रुपदराजा की पुत्री है और मुझ चुलनी के उदर से उत्पन्न हुई है-इसलिये इस हमारी कन्या को नाम द्रुपदी रहो इस तरह के विचार-से (तीसे अम्मा पियरो) माता पिता ने उसका (इम एयारूव गुण गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करिंति दोवई) इस तरह का गुणनिष्पन्न नाम द्रौपदी रख दिया। (तएण) इसके बाद-(सा दोवई दारिया पचधाइ परिग्गहिया जाव गिरिकदरमल्लीणइव चपगलया निवायनिव्वाघायसि सुह सुहेण परिवड्ढइ) वह द्रोपदी दारिका पाच धायमाताओं से युक्त

देवी नवण्ह मासाण जाव दारिय पयाया तएण सा तीसे दारियाए निव्वत्तबार साहियाए इम एयारूव गोण गुणणिप्फन्नण नामधेज्ज जम्माण एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया त होउण अम्ह इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई) ગર્ભના નવમાસ જ્યારે સંપૂર્ણપણે સમાપ્ત થયા ત્યારે ચૂલની દેવીએ એક પુત્રીને જન્મ આપ્યો પુત્રીના જન્મ પછી જ્યારે અગિયાર દિવસ પૂરા થયા અને બારમો દિવસ શરૂ થયો ત્યારે ચુલની માતાએ વિચાર કર્યો કે દ્રુપદ રાજાની આ કન્યાપુત્રી છે અને મારા ગર્ભથી જન્મ પામી છે આ પ્રમાણે આનું નામ દ્રૌપદી રાખીએ તો સારૂ આમ વિચારીને (तीसे अम्मापियरो) માતાપિતાએ (इम एयारूव गुण गुणनिप्फन्न नाम धेज्ज करिंति दोवई) આ રીતે તે કન્યાનુ ગુણ નિષ્પન્ન નામ દ્રૌપદી પાડયુ (तएण) ત્યારપછી (सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदर मल्लीण इव चंपगलया निवायनिव्वाघायसि सुह सुहेण परिवड्ढइ) દ્રૌપદી

मासीत्, वर्णकः=अस्य नगरस्य वर्णनमौपपातिकसूत्रात् बोध्यम्। तत्र खलु द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुल्लनी नाम्नी देवी भार्याऽभवत्, तस्य पुत्रः 'धट्ठज्जुणे' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत्।

ततः खलु सा सुकुमारिका देवी तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण यावद्-च्युत्वा इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः=चुल्लन्या देव्या. कुक्षौ दारिकतया=पुत्रीरूपेण 'पच्चायाया' मया याता=समुत्पन्ना। तत खलु सा चुल्लनीदेवी नवानां मासानां बहुप्रतिपूर्णानां यावद् दारिका पुत्रीं प्रजाता=प्रजनितवती। ततः खलु सा तस्या दारिकाया

काम्पिल्यपुर नाम का नगर था। (वन्नओ) उस नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में किया गया है सो वहां से जान लेना चाहिये। (तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था वन्नओ तस्स ण चुल्लणीदेवी, धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तएण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुल्लणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) वहांके राजाका नाम द्रुपद था। राजाका वर्णन भी पहिले जैसा ही जानना चाहिये। इस की रानी का नाम चुल्लनीदेवी था। कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था-यह युवराज था। वह सुकुमारिका आर्या का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के कारण चवकर इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पांचाल जनपद में काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुल्लनीदेवी की कुक्षि में पुत्री रूपसे अवतरित हुआ। (तएण सा चुल्लणीदेवी नवण्ह मासाण जाव

હેવુ જોઇએ (तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था, वन्नओ, तस्सण चुल्लणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे, जुवराया, तएण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुल्लणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) ત્યાના રાજાનુ નામ દ્રુપદ હતુ રાજાનુ વર્ણન પણ ઔપપાતિક સૂત્રમા વર્ણિત કોણિક રાજાની જેમજ જાણી લેવુ જોઇએ -તેની રાણીનુ નામ ચુલની દેવી હતુ તેના પુત્રનુ નામ ધૃષ્ટદ્યુમ્ન હતુ ધૃષ્ટદ્યુમ્ન યુવરાજ હતો, સુકુમારિકા આર્યાનો જીવ તે બીજા દેવલોકથી આયુ વગેરે ક્ષય થવા બદલ ચવીને આજ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા, ભરત ક્ષેત્રમા, પાચાલ્ય જનપદમા, કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની ચુલની દેવીના ઉદરમા પુત્રી રૂપે અવતરિત થયો (तएण सा चुल्लणी

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्यायो रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वय मेव दास्यामि, तत्र खलु त्व सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, तत खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःख भविष्यति।

तएण से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ, रायवरकन्न एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहा आई। वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनो पैरो को पकड़ा कि इतने में उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ती! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि,तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविजासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि! मैं स्वय तुम्ह जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूँगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनो भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (त ण अहं पुत्ता!

से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ रायवरकन्न एव वयासी) તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી જ્યા રાજા દ્રુપદ હતા ત્યા ગઈ ત્યા જઈને તેણે દ્રુપદ રાજાને વદન કરવા માટે બને પગો પકડયા ત્યારે તેઓએ દ્રૌપદી દારિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી દ્રૌપદી જ્યારે ખોળામા બેસી ગઈ ત્યારે રાજા તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી સવિશેષ વિસ્મિત થયો અને વિસ્મિત થઇને તેણે તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને આ પ્રમાણે કહ્યુ— (जस्स ण अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भवि-जासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्सइ) હે પુત્રિ! હુ તને જે રાજાને કે યુવરાજને ભાર્યાના રૂપમા આપીશ ત્યા તું સુખી પણ થઈ શકે તેમ છે અને દુખી પણ તેથી મને

तत खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या उन्मुक्तबालभावा यावद् विकृष्टा, उत्कृष्ट शरीरा जाता चाप्यभवत्। ततः खलु तां द्रौपदीं राजवरकन्यामन्तःपुरा कदाचिद् 'अंते उरियाओ' आन्त पुरिक्य =अन्तः पुरवर्तिन्यः स्त्रियः स्नातां यावत्-बलाल कृतविभूषितां कुर्वन्ति कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञः पादौ वन्दितुं 'पेसंति' प्रेषयन्ति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव द्रुपदो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रुपदस्य राज्ञः पादग्रहणं करोति, ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपदीं दारिकामङ्के

होकर इस तरह पलने पुपने लगी कि जिस तरह गिरि की कदरा के प्रदेशमें उत्पन्न हुई चपकलता वात रहित निरुपद्रव स्थान में आनन्द के साथ पलती पुपती है। (तएण सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएण त दोवइ रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंते उरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति, करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वदिउ पेसंति) वह राजवर कन्या द्रौपदी बालभाव रहित होकर जब यौवन अवस्था वाली हो चुकी तब इस के शरीर में लावण्य की चमक से विपय सौन्दर्य आ गया-अतः उस समय यह विशेषरूप से उत्कृष्ट शरीर वाली बनगई। किसी एक दिन की बात है कि अत. पुर की स्त्रियों ने द्रौपदी को स्नान कराकर यावत् बलाल कार से विभूपित किया-और विभूपित कर के द्रुपद राजा की चरण वंदना करने के लिये भेज दिया (तएण सा दोवइ राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ,

---

દારિકા પાંચ ધાયમાતાઓથી યુક્ત થઇને આ પ્રમાણે લાલિત પાલિત થતા મોટી જેમકે પર્વતની કંદરાના પ્રદેશમા ઉત્પન્ન થયેલી ચપકલતા નિર્વાત, નિરૂપદ્રવ સ્થાનમા સુખેથી મોટી થતી ન હોય ! (તએણ સા દોવઈ રાયવર કન્ના ઉમ્મુક્કબાલભાવા જાવ ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા યાવિ હોત્થા, તએણ ત દોવઈ રાયવરકન્ન અણ્ણયા કયાઈ અંતે ઉરિયાઓ ણ્હાય જાવ વિભૂસિય કરેંતિ કરિત્તા દુવયસ્સ રણ્ણો પાએ વદિઉ પેસંતિ) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી બચપણ વટાવીને જ્યારે યુવાવસ્થા સપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમા લાવણ્યના ઝમકથી સવિશેષ સૌદર્ય દીપી ઉઠયુ તેથી તે વખતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કૃષ્ટ શરીર વાળી થઇ ગઇ હતી કોઇ એક દિવસની વાત છે કે રણવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપ દીને સ્નાન કરાવ્યુ યાવત્ વસ્ત્રલકારોથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને દ્રુપદ રાજાની ચરણ વદણા કરવા માટે મોકલી (તએણ સા દોવઇ રાય૦ જેણેવ દુવએ રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, ઉવાગચ્છિત્તા, દુવયસ્સ રણ્ણો પાય તએણં

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्यायाश्च रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्यामेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयमेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीवं 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति।

तएणं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं, रायवरकन्नं एवं वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहां द्रुपद राजा था वहां आई। वहां आकर उसने वंदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनों पैरों को पकड़ा कि इतने में उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स णं अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि,तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूँगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (तं णं अहं पुत्ता!

से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं वयासी) તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી જ્યાં રાજા દ્રુપદ હતા ત્યાં ગઈ ત્યાં જઈને તેણે દ્રુપદ રાજાને વંદન કરવા માટે બંને પગો પકડયા ત્યારે તેઓએ દ્રૌપદી દારિકાને પોતાના ખોળામાં બેસાડી દ્રૌપદી જ્યારે ખોળામાં બેસી ગઈ ત્યારે રાજા તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી અવિશેષ વિસ્મિત થયો અને વિસ્મિત થઈને તેણે તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને આ પ્રમાણે કહ્યું— (जस्स णं अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थणं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) હે પુત્રિ! હું તને જે રાજાને કે યુવરાજને ભાર્યાના રૂપમાં આપીશ ત્યાં તું સુખી પણ થઈ શકે તેમ છે અને દુઃખી પણ તેથી મને

तत खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या उन्मुक्तबालभावा यावद् वयोऽनुप्राप्ता, उत्कृष्ट शरीरा जाता चाप्यभवत्। ततः खलु तां द्रौपदीं राजवरकन्यामन्यदा कदाचिद् 'अंते उरियाओ' आन्त' पुरिक्य =अन्तः पुरवर्तिन्यः स्त्रियः स्नातां यावत्-बला कंकारविभूषितां कुर्वन्ति कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञः पार्श्वं वन्दितुं 'पेसंति' प्रेषयन्ति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव द्रुपदो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रुपदस्य राज्ञः पादग्रहणं करोति, ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपदीं दारिकामङ्के

होकर इस तरह पलने पुपने लगी कि जिस तरह गिरि की कंदरा के प्रदेशमें उत्पन्न हुई चंपकलता वात रहित निकटस्थ स्थान में आनन्द के साथ पलती पुपती है। (तएण सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कबाल भावा, जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएण त दोवइ रायव रकन्न अण्णया कयाई अते उरियाओ ण्हाय जाव विभूसिय करेंति, करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वदिउ पेसति) वह राजवर कन्या द्रौपदी बालभाव रहित होकर जब यौवन अवस्था वाली हो चुकी तब इस के शरीर में लावण्य की चमक से विपय सौन्दर्य आ गया-अतः उस समय यह विशेषरूप से उत्कृष्ट शरीर वाली बनगई। किसी एक दिन की बात है कि अत. पुर की स्त्रियों ने द्रौपदी को स्नान कराकर यावत् वस्त्रालंकार से विभूषित किया-और विभूषित कर के द्रुपद राजा की चरण वंदना करने के लिये भेज दिया (तएण सा दोवइ राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ,

---

દારિકા પાચ ધાયમાતાઓથી યુક્ત થઇને આ પ્રમાણે લાલિત પાલિત થતા માડી જેમકે પર્વતની કદરાના પ્રદેશમા ઉત્પન્ન થયેલી ચપકલતા નિર્વાત, નિરૂપદ્રવ સ્થાનમા સુખેથી મોટી થતી ન હોય ! (તએણ સા દોવઈ રાયવર કન્ના ઉમ્મુક્કબાલભાવા જાવ ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા યાવિ હોત્થા, તએણ ત દોવઈ રાયવરકન્ન અણ્ણયા કયાઈ અતે ઉરિયાઓ ણ્હાય જાવ વિભૂસિય કરેતિ કરિત્તા દુવયસ્સ રણ્ણો પાए વદિઉ પેસતિ) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી બચપણુ વટાવીને જ્યારે યુવાવસ્થા સપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમા લાવણ્યના ચમકથી સવિશેષ સૌદર્ય દીપી ઉઠયુ તેથી તે વખતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કૃષ્ટ શરીર વાળી થઇ ગઇ હતી કોઇ એક દિવસની વાત છે કે રણવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપ દીને સ્નાન કરાવ્યુ યાવત્ વસ્ત્રાલકારોથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને દ્રુપદ રાજાની ચરણ વદણા કરવા માટે મોકલી (તએણ સા દોવઇ રાય० જેણેવ દુવએ રાયા તેણેવ उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पाए

निवेदयति, निदेश्य द्रौपद्या राजवरकन्यायाः रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्यं प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्यामेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयमेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, तत खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीवं 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःख भविष्यति।

तएणं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ, रायवरकन्न एवं वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहां द्रुपद राजा था वहां आई। वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनो पैरो को पकड़ा कि इतने मे उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स णं अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि,तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि! मैं स्वयं तुम्हे जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूँगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनो भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (तं णं अहं पुत्ता!

से दुवए राया दोवइ दारिय अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ रायवरकन्न एवं वयासी) તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી જ્યા રાજા દ્રુપદ હતા ત્યા ગઈ ત્યા જઇને તેણે દ્રુપદ રાજાને વદન કરવા માટે બને પગો પકડયા ત્યારે તેઓએ દ્રૌપદી દારિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી દ્રૌપદી જ્યારે ખોળામા બેસી ગઈ ત્યારે રાજા તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી સવિશેષ વિસ્મિત થયો અને વિસ્મિત થઇને તેણે તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને આ પ્રમાણે કહ્યુ— (जस्स णं अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थणं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हियયडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि! हु तने જે રાજાને કે યુવરાજને ભાર્યાના રૂપમા આપીશ त्या न જાણી પણ થઈ શકે તેમ છે અને દુખી પણ તેથી મને

=तत्तस्मात् खलु हे पुत्रि ! तव ' अज्जयाए ' अद्यतया-एषु दिवसेषु अल्पेषु दिनेषु इत्यर्थः स्वयंवरं यायामि-करोमि अद्यतया अल्पदिवसेष्वेव खलु तव ' दिण्णसयंवरा ' दत्तस्वयंवरा=म्रियते इति वरः, कन्यया स्वयं कृतः स्वयंवरः, स दत्तः कन्यायाः पित्रादिना यस्यै । दत्तस्वयंवरा भविष्यतीति भावः । 'दत्तस्वयंवरा' इत्यत्र व्याचक्षाण एवमाह- जण्ण तुम' इत्यादि । यः खलु तव स्वयमेव राजा युवराजो वा वरिष्यसि, स खलु तव भर्ता भविष्यति ' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा ताभिरिष्टाभिर्यावत्=वाग्भिराश्वासयति, आश्वास्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० १६ ।

मूलम्-तएण से दुवए राया दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया ! बारवइ नयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे बलदेवपामुक्खे पंचमहावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्धट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ

अज्जयाए सयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्ण सयंवरा जण्ण तुमं सयमेव राय वा जुवराय वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइत्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, आसासित्ता पडिविसज्जेइ) इस लिये हे पुत्रि ! मैं थोडे ही दिनों में तुम्हारा स्वयंवर करवाने वाला हूँ। तुम इन दिनों मे दत्तस्वयंवरा हो जाओगी, सो तुम जिस राजाको या युवराज को अपनी इच्छानुसार वरोगी वही तेरा भर्ता बन जायगा । इस तरह कहकर राजा ने अपनी पुत्री को इष्ट आदि विशेषणो वाली वाणी से आश्वासित किया और फिर आश्वासित करके उसे वहां से भेज दिया ॥ सू० १६ ॥

જીવન પર્યન્ત દુઃખ થયા કરશે (ત ણ અહ પુત્તા ! અજ્જયાએ સયંવર વિરયામિ, અજ્જયાએ ણ તુમ દિણ્ણસયંવરા જણ્ણ તુમ સયમેવ રાય વા જુવરાય વા વરેહિસી સે ણ તવ ભત્તાર ભવિસ્સઇ, તિ કટ્ટુ તાહિં ઇટ્ઠાહિં જાવ આસાસેઇ આસાસિત્તા પડિવિસજ્જેઇ) હે પુત્રિ ! થોડા દિવસોમા જ હુ તમારા માટે સ્વયંવર કરવાનો છુ ત્યારે તુ સ્વયંવરમા દત્ત સ્વયંવરા થઈ જશે જે રાજા કે યુવરાજને તુ તારી પસંદગી આપશે તેજ તારો પતિ થશે આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ પોતાની પુત્રીને ઈષ્ટ વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત વચનો વડે આશ્વાસનથી આશ્વાસિત કરીને તેને ત્યાથી વિદાય કરી ॥ સૂત્ર-૧૬ ॥

सट्ठि दुइंतसाहस्सीओ वीरसेणपामोक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिस-साहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंवियकोडुवियइब्भसिट्ठिसेणावइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनह सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि वद्धावित्ता एवं वयाहि–एवं खलु देवाणुप्पिया ! कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कपिल्लपुरे नयरे समोसरह, तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, उवट्ठवित्ता तएणं से दूए ण्हाए जाव अलकार० सरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउह पहरणेहिं सद्धिं सपरिवुडे कपिल्लपुरं नयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेण जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झमज्झेणं जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता बारवइ नयरिं मज्झं मज्झेण अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया

उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउघंटं आसरहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता अणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह। तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं स द्रुपदो राजा दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! द्वारवतीं=द्वारकां नगरीम्, तत्र खलु त्वं कृष्णं वासुदेवं, समुद्रविजयप्रमुखान् दश दशार्हान्, बलदेवप्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रद्युम्नप्रमुखाः अर्धचतुर्थी-कुमारकोटीः=प्रद्युम्नप्रमुखान् सार्धत्रिकोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः षष्टिदुर्दान्तसाहस्रीः =साम्बप्रमुखान् षष्टिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिवीरपुरुषसाहस्रीः=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

' तएणं से दुवए ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सक्कारेइ, सक्कारित्ता एवं वयासी गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दसदसारे बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीसं

' तएणं से दुवए ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सक्कारेइ सक्कारित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दसदसारे बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ महया बलव

मप्रमुखाः षट्पञ्चाशत् बलवत्साहस्रीः=महासेनप्रमुखान् षट्पञ्चाशत्सहस्रप्रमितबल वतो राज्ञः, अन्याश्च बहून् राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्चेष्ठिसेनापति सार्थ-वहप्रभृतीन् करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तमञ्जलि मस्तके कृत्वा जयेन विज-येन=जयविजयशब्देन 'वद्धावेहि' वर्धय=अभिनन्दय वर्धयित्वा एव ब्रूहि-हे देवानुप्रिया'! एव खलु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्या, चुल्न्या देव्या आत्मजाया धृष्टद्युम्नकुमारस्य भगिन्या', द्रौपद्या राजवरकन्यकाया स्वय

वीर पुरिससाहस्सीओ महसेनपामोक्खाओ छप्पन्न बलवगसाहस्सी ओ अन्नेय बहवे राई सरतलवरमाडबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइ सत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त अजलिं मत्थए कट्टु जएण विजएण वद्धावेहि वद्धाविसा एव वयाहि) इस द्रुपद राजाने अपने एक दूत को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिय! तुम द्वारका नगरीको जाओ वहा तुम कृष्ण वासुदेव को, समुद्र विजय प्रमुख दश दशार्हो को, बलदेव प्रमुख पाच महावीरों को, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजाओ को प्रद्युम्न प्रमुख ३॥) साढे तीन करोड राजकुमारों को ६० हजार दुर्दान्त. साम्ब प्रमुखो को २१ हजार वीरसेन प्रमुख वीरों को ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओ को, तथा और भी अनेक राजेश्वर तलवर, माडविक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदिको को दोनों अपने हाथो की दशनखो वाली अजलि बनाकर और उसे मस्तक से घुमाकर नमस्कार करना तथा "जय विजय" शब्दोच्चारण करते हुए उन्हें वधाई देना-उनका अभिनन्दन करना। वधाई देकरके फिर उन से ऐसा

गसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडबियकोडुबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाह पभिइओ करयल परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त अजलिं मत्थए कट्टु जएण विज एण वद्धावेहि, वद्धावित्ता एव वयाहि) ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ પોતાના એક દૂતને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે દ્વારકા નગરીમા જાઓ ત્યા તમે કૃષ્ણવાસુદેવને, બળદેવ પ્રમુખ પાચ મહાવીરોને, ઉગ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓને, પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાડા ત્રણ કરોડ રાજ કુમારોને, ૬૦ હજાર દુર્દાતસામ્ય પ્રમુખોને, ૨૧ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોને, ૫૬ હજાર મહાસેન પ્રમુખ બલિષ્ઠ રાજાઓને તેમજ બીજા પણ બધા રાજેશ્વર, તલવર, માડબિક, કૌટુબિક, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠિ, સેનાપતિ, સાથવાહ વગેરેને પોતાના બને દશ નખોવાળા હાથોની અજલિ બતાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરીને તથા 'જય વિજય' શબ્દોચ્ચારણ કરતા બધાને તમે અભિનદિત

उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउघट आसरहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह। तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । तदनन्तरं स द्रुपदो राजा दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! द्वारवतीं=द्वारकां नगरीम्, तत्र खलु त्वं कृष्णं वासुदेवं, समुद्रविजयप्रमुखान् दश दशार्हान्, बलदेवप्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रद्युम्नप्रमुखाः अर्धचतुर्थी-कुमारकोटीः=प्रद्युम्नप्रमुखान् सार्धत्रिकोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः षष्टिदुर्दान्तमाहस्री-=साम्बप्रमुखान् षष्टिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिवीरपुरुषमाहस्री =वीरसेनप्रमुखान एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

' तएणं से दुवए ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेन पामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीस

' तएणं से दुवए ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजय पामोक्खे दसदसारे बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्ण पामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीस वीरपुरिससाहस्सीओ महसेनपामोक्खाओ छप्पन बलव

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथ 'दुरुहइ' दूरोहति-आरोहति। दूरुह्य बहुभि. पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं' इति अत्र यावत्पदेनैव बोध्यम्-सन्नद्धबद्धवर्मितकवएहिं, उप्पीलियसरासनपट्टगेहिं, पिणद्धगेविज्जगवद्धाविद्धविमलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपहरणेहिं इति। सन्नद्धबद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिनद्धग्रैवेयकबद्धविद्धविमलवरचिह्नपट्टैः गृहीतायुधप्रहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृता, बद्धा'=कशाबन्धनेन सबद्धा, वर्मिता.=भङ्गे परिहिताः कवचा यै स्ते सन्नद्धबद्धवर्मितकवचास्तै, तथा-उत्पीडितशरासनपट्टकै. उत्पीड़ितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टकानि धनुः प्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टका रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्वारिणस्तैः,

वह जहा अपना घर था वहाँ आया। वहा आकर उसने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों! तुम लोग शीघ्र ही चार घटों से युक्त अश्वरथ को घोडे जोतकर यहा ले आओ। उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया। वे चार घटा वाले उस रथ में घोडे जोतकर उसे वहा ले आये (तएण से दूए ण्हाए जाव अलकार० सरीरे चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं सपरिवुडे कपिल्लपुरनयर मज्झ मज्झेण णिग्गच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को समस्त अलकारों से विभूषित किया। बाद में वह उस चतुर्घट वाले अश्वरथ पर सवार हो गया। उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे जयापर बाण को आरोपित करने से बकी भूत हुआ धनुष जिनके हाथो में है ऐसे अनेक धनुर्धारी

પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે કૌટુમ્બિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સત્વરે ચાર ઘટડીઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને અહીં આવો કૌટુમ્બિક પુરૂષોએ તેમજ કર્યું ચાર ઘટડી ઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને ત્યા લઇ આવ્યા (तएण से दूए ण्हाए जाव अलकार० सरीरे चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणे हिं सिद्धिं सपरिवुडे कपिल्लपुरनयर मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ) ત્યારબાદ દૂતે સ્નાન કર્યું યાવત્ પોતાના શરીરને બધી જાતના અલકારોથી ગણગાર્યું ત્યારપછી તે દૂત ચતુર્ઘટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઇ ગયો તે દૂતની સાથે બખ્તરથી સુસજ્જ થયેલા ઘણા પુરૂષો હતા પ્રત્યા-ત્રિપર બાણ ચઢાવવાથી વક્ર થઇ ગયેલા ધનુષો જેમના હાથોમા છે

रो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्त ' अकालपरिहीणं चैव ' कालचिन्तारहितमेव काम्पिल्यपुरं नगरं समवसरत, तदा खलु स दूतः करतल० यावत्-अञ्जलिं मस्तके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञ एतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः चतुर्घण्टं=घण्टाचतुष्टययुक्तम् अश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत । यावत्-उपस्थापयति । ततः खलु स दूतः करतल० यावत्-अञ्जलिं मस्तके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञ एतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः चतुर्घण्टं=घण्टाचतुष्टययुक्तम् अश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत । यावत्-उपस्थापयति । तत खलु स दूतः

करना-(एव खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लीणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, त णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) हे देवानुप्रियो ! काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुल्लनी देवी की आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है, इसलिये हे देवानुप्रियों ! आप लोग द्रुपद राजा के ऊपर अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र काम्पिल्यपुर नगर में पधारें । (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) दूतने द्रुपद राजा के इस कथन को दोनों हाथ जोडकर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

કરને અભિનંદિત કર્યા બાદ તમે તેઓને આ પ્રમાણે વિનંતી કરને (एव खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सई, त णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) હે દેવાનુપ્રિયો ! કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા, ધૃષ્ટદ્યુમ્નકુમારની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે કાંપિલ્ય નગરમાં પધારો (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) દ્રુપદ રાજાની આજ્ઞાને દૂતે બન્ને હાથ જોડીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કર્યા તે બાદ

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथ 'दुरुहइ' दूरोहति-आरोहति। दूरुह्य बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति अत्र यावत्करणेन ग्राह्यम्-सन्नद्धबद्धवर्मितकवएहिं, उप्पीलियसरासनपट्टगेहिं, पिणद्धगेविज्जगबद्धाविद्धविमलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपहरणेहिं इति। सन्नद्धबद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिनद्धग्रैवेयकबद्धविद्धविमलवरचिह्नपट्टैः गृहीतायुधप्रहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृता, बद्धा=कशाबन्धनेन सबद्धा, वर्मिताः=भङ्गे परिहिताः कवचा यै स्ते सन्नद्धबद्धवर्मितकवचास्तै, तथा-उत्पीडितशरासनपट्टकैः उत्पीडितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टकानि धनुःप्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टकाः रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्वारिणस्तैः,

---

वह जहा अपना घर था वहां आया। वहां आकर उसने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों! तुम लोग शीघ्र ही चार घटों से युक्त अश्वरथ को घोडे जोतकर यहा ले आओ। उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया। वे चार घटा वाले उस रथ में घोडे जोतकर उसे वहा ले आये (तएण से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं सपरिवुडे कपिल्लपुरनयर मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को समस्त अलंकारों से विभूषित किया। बाद में वह उस चतुर्घट वाले अश्वरथ पर सवार हो गया। उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे ज्यापर बाण को आरोपित करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथो में हैं ऐसे अनेक धनुर्धारी

પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે કૌટુમ્બિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે સત્વરે ચાર ઘટડીઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને અહીં આવો કૌટુમ્બિક પુરૂષોએ તેમજ કર્યું ચાર ઘટડી ઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને ત્યા લઇ આવ્યા (तएण से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घट आसरह दुरुहइ दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सनद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणे हिं सिद्धिं सपरिवुडे कपिल्लपुरनयर मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ) ત્યારબાદ દૂતે સ્નાન કર્યું યાવત્ પોતાના શરીરને બધી જાતના અલંકારોથી ગણગાર્યું ત્યારપછી તે દૂત ચતુર્ઘંટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઇ ગયો તે દૂતની સાથે બહારથી સુસજ્જ થયેલા ઘણા પુરૂષો હતા પ્રત્યંચા ઉપર બાણ ચઢાવવાથી વક્ર થઇ ગયેલા ધનુષો જેમના હાથોમા છે

रो भविष्यति, तत्=तस्मात् राजन् यूयं हे देवानुप्रियाः ! द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्त 'अकालपरिहीणा चेव' कालविलम्बरहितमेव काम्पिल्यपुरं नगरं समवसरत, ततः खलु स दूतः करतल० यावत्-अञ्जलिं मस्तके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञ एतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः, चतुर्घण्टम्=चतस्रो घण्टा यस्मिंस्तत् चतुर्घण्टयुक्तम् अश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत । यावत्-उपस्थापयन्ति । ततः खलु स दूतः

कल्पना-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) हे देवानुप्रियों ! कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुल्लनी देवी की आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है, इसलिये हे देवानुप्रियों ! आप लोग द्रुपद राजा के ऊपर अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र कांपिल्यपुर नगर मे पधारे । (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) दूतने द्रुपद राजा के इस कथन को दोनों हाथ जोडकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर

કરને અભિનંદિત કર્યા બાદ તમે તેઓને આ પ્રમાણે વિનંતી કરને (एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सई, तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) હે દેવાનુપ્રિયો ! કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા, ધૃષ્ટદ્યુમ્નકુમારની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે કાંપિલ્ય નગરમાં પધારો (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) દ્રુપદ રાજાની આજ્ઞાને દૂતે બન્ને હાથ જોડીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કર્યો બાદ તે બધા

वाहिरुपस्थानशाला-आस्थानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं स्थापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति-प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य 'मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' मनुष्यवागुरापरिक्षिप्तः=मनुष्यसमूह परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्या गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपगत्य कृष्ण वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखाश्च दशदशार्हान् यावत् बलवत्साहस्री', करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-'त चेव' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णन बोध्यम् यावत्-समवसरत

वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघट आसरह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) वहा आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उपस्थानशाला-सभामडप था वहा गया। वहाँ पहुचकर उसने अपने चार घटावाले अश्वरथ को खडा कर दिया। रोक दिया-उसके रुकते ही वह उससे नीचे उतरा। उतर कर वह मनुष्योके समूहसे परिक्षिप्त (युक्त) हो कर पैदल ही जहा कृष्ण वासुदेव थे वहा गया। (उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल त चेव जाव नमोसरह) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्होको यावत् महासेन प्रमुख५६, हजार बलिष्ट राजाओको दोनो हाथों की अजलिकर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघट आसरह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) त्या आवीने ते द्वारावती नगरीना मध्यमार्ग थइने नगरमा प्रविष्ट थयो अने त्यारपछी ते ज्या कृष्णु-वासुदेवनी बाह्य उपस्थानशाळा-दीवाने आम-(सभा मडप) हती त्या गयो त्या पहोचीने तेणे पोताना चार घटडीओवाळा रथने ऊभो राख्यो अने पोते नीचे उतर्यो उतर्या पछी ते पोताना नोकरो-सेवकनी साथे ज्या कृष्णु-वासुदेव हता त्या गयो (उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल त चेव जाव नमोसरह) त्या जइने तेणे कृष्णु-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन प्रमुख ५६ हजार बलिष्ठ राजाओने अने हाथनी अजलि बनावीने तेने

तथा-पिनद्धग्रैवेयकबद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टे - पिनद्धानि - परिधृतानि ग्रैवेयकाणि-कण्ठभूषणानि यैस्ते तथा, बद्ध.=आरोपित सर्वोत्तिनः आविद्ध'=मस्तके परिधृत. विमलः=स्वच्छ. वरः चिह्नपट्टः-स्वपक्षबोधकचिह्न : यैस्ते तथा, ततो द्विपदकर्मधारय', तथा-गृहीतायुधप्रहरणा.=आयुधानि अस्त्राणि, प्रहरणानि-शस्त्राणि गृहीतानि यैस्ते गृहीतायुधप्रहरणा स्ते, सार्धं संपरिवृतः काम्पिल्यपुर नगर मध्यमध्येन मध्यमार्गेण निर्गच्छति, पञ्चालजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव 'देसप्पते' देशप्रान्त-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'सुरट्ठाजणवयस्स' सौराष्ट्रजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य द्वारवती नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कृष्णस्य वासुदेवस्य

पुरुष थे, जिन्होंने गले में आभूषणों को पहिररक्खे हैं और मस्तक के ऊपर स्वच्छ, स्वपक्षबोधक चिह्न धारण किया है ऐसे अनेक व्यक्ति थे। तथा आयुध एवं प्रहरणों को लेकर अनेक सैनिक जन इसके आसपास हो कर चल रहे थे। सो वह दूत इन सब के साथ २ उस काम्पिल्यपुर नगर के बीचोंबीच से होकर निकला। (पञ्चालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ-सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ) चलते २ वह पाचाल जनपदके बीचोंबीच से होता हुआ जहा पर अपने देशकी सीमा का अन्त था वहा आया। वहा आकर वह सौराष्ट्र देशके बीचसे निकलता हुआ जहा द्वारावती नगरी थी वहाँ आया-(उवागच्छित्ता बारवइ नयरी मज्झ मज्झेण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स

એવા ઘણા ધનુર્ધરો તેની સાથે હતા, જેઓએ ગળામા આભૂષણો પહેરેલા અને મસ્તક ઉપર સ્વચ્છ સ્વપક્ષ બોધક ચિહ્ન પટો બાધી રાખેલા એવા પણ અનેક પુરુષો તેની સાથે હતા આયુધ અને પ્રહરણોને ઉપાડીને પણ ઘણા સૈનિકો તેની બને બાજુએ ચાલી રહ્યા હતા આ રીતે તે દૂત તેઓ બધાની સાથે કાપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળ્યો (पञ्चालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ) આમ પોતાની યાત્રા પૂરી કરીને તે દૂત પાચાલ જનપદની વચ્ચોવચ્ચ જ્યા પોતાના દેશની હદ પૂરી થતી હતી ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તે સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને જ્યા દ્વારાવતી નગરી હતી ત્યા આવ્યો (उवागच्छित्ता बारवइ नयरिं मज्झ मज्झेण, अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव

बाह्यस्थानशाला-आस्थानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं स्थापयति, स्थापयित्वा ' रहाओ ' रथात् ' पच्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति-प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य ' मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते ' मनुष्यवागुरापरिक्षिप्तः=मनुष्यसमूह परिवृतः, स दूत' पादविहारचारेण=पादाभ्या गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपगत्य कृष्ण वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखाश्च दशदशार्हान् यावत् बलवत्साहस्री., करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-' त चेव ' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णन बोध्यम् यावत्-समवसरत

वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघट आसरह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) वहा आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहा कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उप स्थानशाला-सभामडप था वहां गया। वहाँ पहुचकर उसने अपने चार घटावाले अश्वरथ को खडा कर दिया। रोक दिया-उसके रुकते ही वह उससे नीचे उतरा। उतर कर वह मनुष्योके समूहसे परिक्षित (युक्त) हो कर पैदल ही जहां कृष्ण वासुदेव थे वहा गया। (उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल त चेव जाव नमोसरह) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्हों को यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार बलिष्ठ राजाओंको दोनों हाथों की अजलिकर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघट आसरह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पाय विहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) ત્યા આવીને તે દ્વારા વતી નગરીના મધ્યમાર્ગે થઈને નગરમા પ્રવિષ્ટ થયો અને ત્યારપછી તે જ્યા કૃષ્ણ-વાસુદેવની બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળા-દીવાને આમ-(સભા મડપ) હતી ત્યા ગયો ત્યા પહોચીને તેણે પોતાના ચાર ઘટડીઓવાળા રથને ઊભો રાખ્યો અને પોતે નીચે ઉતર્યો ઉતર્યા પછી તે પોતાના નોકરો-સેવકની સાથે જ્યા કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યા ગયો (उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल त चेव जाव नमोसरह) ત્યા જઈને તેણે કૃષ्ण-વાસુદેવને સમુદ્ર વિજય પ્રમુખ દશાર્હોને યાવત્ મહાસેન પ્રમુખ ૫૬ હજાર બલિષ્ઠ રાજાઓને બને હાથની અજલિ બતાવીને તેને

इति पर्यन्तम्, अयमर्थः-काम्पिल्यपुरनगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् यूय द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्त कालविलम्बरहितं काम्पिल्यपुरे नगरे समागच्छतेति स दूतः प्रोक्तवान्' इति ।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तस्य दूतस्यान्तिके तमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टः यावत्-हर्षवशेन विसर्पद्धृदयस्तं दूतं सत्कारयति तथा सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० १७ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि, तएणं से कोडुंबियपुरिसे कण्हेणं वासुदेवेणं जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता

नमस्कार किया। यहां पर 'एवं खलु देवाणुप्पिया,' से लेकर समोसरह" तकका पूर्वोक्त पाठ इसके द्वारा कहा गया कहा लेना चाहिये-जिसका तात्पर्य यह है कि कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है सो आपलोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा कर के उसमें शीघ्र पधारें। इस प्रकार (तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) कृष्ण वासुदेव ने उस दूत के मुखसे जब इस समाचार को सुना-तो वे सुनकर और उसे हृदयमें धारण कर बहुत ही अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुए। दूतका उन्होंने सत्कार किया, सन्मान किया। बादमें उसे वहां से विसर्जित कर दिया ॥सू० १७॥

મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યો અહીં 'एवं खलु देवाणुप्पिया' થી समोसरह' સુધીનો પાઠ દૂત વડે કહેવામા આવેલો છે એમ સમજી લેવુ જોઇએ તેની મતલબ એ છે કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને તેમા સત્વરે પધારો આ રીતે (तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) કૃષ્ણ-વાસુદેવે દૂતના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાભળ્યા ત્યારે સાભળીને અને તેઓને બરોબર હૃદયમા ધારણ કરીને અત્યંત હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઈને તેમણે દૂતનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું ત્યારપછી તેમણે દૂતને વિદાય કર્યો ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥

जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरि महया महया सद्देणं तालेइ तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ छप्पण्णं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया विभूसिया जहा विभव इड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल जाव कण्हे वासुदेवे जएणं विजएणं वद्धावेंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे, तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण बारवइनयरिं मज्झं मज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झं मज्झेण जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १८ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ' तए ' खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिक पुरुष शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिय ! सभाया सुधर्माया ' सामुदाइय ' सामुदायिकीं भेरिं ताडयत, ततः खलु स कौटुम्बिक पुरुष करतल० यावद्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् कृष्णस्य वासुदेवस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव सभाया सुधर्माया ' सामुदाइया ' सामुदायिकी भेरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सामुदायिकीं भेरीं महता २ शब्देन ताडयति, येन महाशब्दो भवति, तथा भेरीं ताडयति स्म ' इत्यर्थः, ततस्तदनन्तरं खलु तस्या

'तएण से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला कर (एव वयासी) उनसे ऐसा कहा-(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं ताडेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा सभामें जाओ और वहा जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएण से कोडुंबिय पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया २ सद्देण ताडेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया-और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा मे जहा वह सामुदायिकी भेरी थी वहा आया । वहा आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

' तएण से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ-વાસુદેવે (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને (एव वयासी) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं ताडेहि) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સુધર્મા સભામા જાઓ અને ત્યા જઈને સામુદાયિકી ભેરી વગાડો (तएण से कोडुंबियपुरिसे कर यल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया २ सद्देण ताडेइ) જાતની કૃષ્ણ-વાસુદેવની આજ્ઞાને તે પુરૂષે ખૂબજ નમ્ર પણે અને ભૂકીને સ્વીકારી લીધી, સ્વીકાર કર્યા પછી તે ત્યાથી જ્યા સુ ભેરી હતી ત્યા જઈને તેણે મોટો અવાજ થાય વગાડી (तएण ताए भेरीए

सामुदायिक्या भेर्या ताडिताया सत्या समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हा यावत्-महासेन प्रमुखा षट्पञ्चाशद्बलवत्साहस्र्यः=षट्पञ्चाशत्-सहस्रप्रमिता बलवन्तो राजानः स्नाता यावद्-सर्वालंकारविभूषिता यथाविभवर्द्धिसत्कारसमुदयेन 'अप्पेगइया' अत्येके-यावद्=केचिद् हयारूढा=अश्वारूढाः केचिद् गजारूढाः, केचिद् रथारूढा. केचिद् पादविहारचारेण यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतल० यावत् कृष्णं वासुदेवं जयेन विजयेन=जयविजय शब्देन वर्धयन्ति। ततः खलु कृष्णो वासुदेव कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव 'अभिसेक्कं' आभिषेक्य गज

बडे बल से बजायी कि जिससे उससे बडी भारी आवाज निकली (तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजय पामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पण बलवगसाह स्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जेणेव विभव इड्ढी सक्कारसमुदएण अत्थेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति) इस तरह उस सामुयिकी भेरी के बजने पर समुद्रविजय आदि दश दशार्हों ने यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओं ने स्नान किया। यावत् समस्त अलकारों से विभूषित होकर एव सबके सब अपने विभव ऋद्धि और सत्कार के अनुसार जहा कृष्ण वासुदेव थे वहा आये। इनमे कितनेक घोडों पर कितनेक हाथियों पर कितनक रथों पर बैठकर आये और कितनेक पैदल ही चलकर आये (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण बद्धावेंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दवित्ता एव वयासी, खिप्पामेव

तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पण बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जेणेव विभव इड्ढी सक्कारसमुदएण अप्पेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति) આ રીતે તે સામુયિકી ભેરી વગાડવામા આવી ત્યારે સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોએ યાવત ૫૬ હજાર મહાસેન પ્રમુખ બલિષ્ઠ રાજાઓએ સ્નાન કર્યું યાવત તેઓ સર્વે સમસ્ત અલકારોથી સુસજ્જ થઇને પોતાના વિભવ અને સત્કારની સાથે જ્યા કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યા ગયા આમા કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર, કેટલાક રથો ઉપર સવાર થઇને ત્યા પહોચ્યા હતા તો કેટલાક પગે ચાલીને જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે હાજર થયા હતા (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण बद्धावेंति तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पा

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिक पुरुष शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं देवानुप्रिय ! सभायां सुधर्मायां ' सामुदाइयं ' सामुदायिकीं भेरिं ताडय, ततः खलु स कौटुम्बिक पुरुष करतल० यावद्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तथा इत्यस्य वासुदेवस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव सभायां सुधर्मायां ' सामुदाइया ' सामुदायिकी भेरी तत्रोपागच्छति, उपागत्य सामुदायिकीं भेरीं महता २ शब्देन ताडयति, येन महाशब्दो भवति, तथा भेरीं ताडयति स्म ' इत्यर्थः, ततस्तदनन्तरं खलु तस्या

'तएण से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला कर (एवं वयासी) उनसे ऐसा कहा-(गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं ताडेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा सभामें जाओ और वहा जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएण से कोडुंबिय पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया२ सद्देण ताडेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया-और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा में जहा वह सामुदायिकी भेरी थी वहा आया। वहा आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

' तएण से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ-વાસુદેવે (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને (एवं वयासी) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं ताडेहि) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સુધર્મા સભામા જાઓ અને ત્યા જઈને સામુદાયિકી ભેરી વગાડો (तएण से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया२ सद्देण ताडेइ) આ જાતની કૃષ્ણ-વાસુદેવની આજ્ઞાને તે પુરૂષે ખૂબજ નમ્ર પણે બન્ને હાથોને મસ્તકે મૂકીને સ્વીકારી લીધી, સ્વીકાર કર્યા પછી તે ત્યાથી જ્યા સુધર્મા સભામા સામુદાયિકી ભેરી હતી ત્યા જઈને તેણે મોટો અવાજ થાય તેમ તે સામુદાયિકી ભેરીને વગાડી (तएण ताए भेरीए

वासुदेव समुद्रविजयमुखैर्दशार्हैं यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखाभिरनेकाभिर्गणिका साहस्रीभि' सार्धं सपरिवृतः सर्वद्धर्या=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपणवपटहभेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निर्गत्य सौराष्ट्रजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पश्चालजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काम्पिल्यपुर नगर तत्रैव माधारयद् गमनाय= गतु प्रवृत्त' ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहा स्नान घर थो वहा गये-वहा जाकर उन्होने मुक्ताओं सहित गवाक्षो से सुन्दर उस स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके फिर सर्व अलकारो से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरूढ हो गये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्वड्ढीए जाव रवेण बारवइनयरिं मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचाल जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आरूढ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय आदि दश दशार्हो यावत् अगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओ के साथ २ उग्र आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शख, पणव, पटह, भेरी आदि बाजो की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

ત્યારપછી તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યા સ્નાનઘર હતુ ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે મોતી જડેલા ગવાક્ષોથી રમણીય લાગતા સ્નાનઘરમા સ્નાન કર્યુ અને ત્યાર પછી બધા અલકારોથી વિભૂષિત થઈને-નરપતિ અજનગિરિના શિખર જેવા વિશાલ કૃષ્ણ વર્ણવાળા ગજપતિ ઉપર સવાર થઈ ગયા (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहि दसहि दसारेहि जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण बारवइ नयरिं मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) સવાર થઈ ને તેઓ સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ અગસેના પ્રમુખ હજારો ગણિકાઓની સાથે છત્ર વિગેરે રાજચિહ્ન રૂપ વિભૂતિથી યુક્ત થઈને શખ, પણવ, પટહ, ભેરી વગેરે તુમુલ ધ્વનિ સ્થાને દ્વારવતી નગરીની વચ્ચે થઈને પસાર થયા ત્યાથી પસાર

रत्न=मम मुख्यहस्तिन परिकल्पयत-सज्जीकुरुत, हयगजरथपदातिकं चतुरङ्गबल सज्जीकुरुत, एतां ममाज्ञा प्रत्यर्पयत, इति तत्रत्ये कौटुम्बिकपुरुषाः ' तथाऽस्तु ' इत्युक्त्वा तदाज्ञा स्वीकृत्य सर्वं सपादयन्ति यावत् प्रत्यर्पयन्ति=निवेदयन्ति स्म । तत. खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव मज्जन गृह तत्रैवोपागच्छति, मज्जनगृह प्रविशमित्याह-' समुत्तजालाकुलाभिरामे ' समुक्तजालाकुलाभिराम मुक्तामिः मण्डितानि जालानि यत्र तादृशो यो भिराम सुन्दरम्, उपागत्य स तत्र स्नान कृत्वा यावत्-सर्वालकारविभूषित, अञ्जनगिरिकूटसन्निभम्=उन्नत श्यामवर्णमित्यर्थ, गजपतिं=हस्तिपु मुख्य हस्तिन नरपति.=श्री कृष्णवासुदेव. ' दुरूढे ' दूढः=समारूढः, तत. खलु स कण्हो

भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगय जाव पच्चप्पिणंति) वहा आकर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेव को नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दो द्वारा बधाई दी-इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही मेरे मुख्य हाथी को सजाओ-तथा-हय, गज, रथ और पदातिरूप चतुरग युक्त सेना को भी सजाकर तैयार करो । पीछे हमको इसकी खबर दो । इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषो ने-" तथास्तु " कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार लिया और स्वीकार करके बल और वाहन सब हमने सज्जित कर दिये हैं इस प्रकार की खबर उन्हें पीछे कर दी । (तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरि कूडसन्निभ गयवइ नरवई दुरूढे) इसके पश्चात् वे

मेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह, हयगयजाव पच्चप्पिणति) ત્યા જઈને તેઓએ બને હાથ જોડીને ' જયવિજય ' શબ્દોથી કૃષ્ણ-વાસુદેવને નમસ્કાર કરતા અભિનદિત કર્યા ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સત્વરે તમે મારા મુખ્ય હાથીને તેમજ બીજી પણ ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદલની ચતુરગિણી સેનાને સુસજ્જ કરો અને સેના સુસજ્જ થઈ જાય ત્યારે અમને ખબર આપો ત્યારપછી કૌટુબિક પુરૂષોએ ' તથાસ્તુ ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ પોતાના કામમા પરોવાઈ ગયા જ્યારે કામ થઇ ગયુ ત્યારે તેઓએ " સેના અને વાહન તૈયાર છે " આ જાતની ખબર આપી (तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरिकूडसन्निभ गयवइ नरवई दुरूढे)

वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्हैः यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखाभिरनेकाभिर्गणिका साहस्रीभिः सार्धं सपरिवृतः सर्वर्द्धया=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपणवपटहभेर्यादिरवेण द्वारवती नगरीं मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निर्गत्य सौराष्ट्रजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चालजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काम्पिल्यपुरं नगरं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय= गन्तु मारब्धः ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहां स्नान घर थो वहां गये-वहां जाकर उन्होंने मुक्ताओं सहित गवाक्षों से सुन्दर उस स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके फिर सर्व अलंकारो से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरूढ हो गये) (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्व ड्ढीए जाव रवेण बारवइनयरिं मज्झ मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचाल जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आरूढ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय आदि दश दशार्हो यावत् अनंगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ २ उत्तम आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शंख, पणव, पटह, भेरी आदि बाजो की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

ત્યારપછી તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યાં સ્નાનઘર હતું ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે મોતી જડેલા ગવાક્ષોથી રમણીય લાગતા સ્નાનઘરમાં સ્નાન કર્યું અને ત્યાર પછી બધા અલંકારોથી વિભૂષિત થઈને-નરપતિ અંજનગિરિના શિખર જેવા વિશાલ કૃષ્ણ વર્ણવાળા ગંધપતિ ઉપર સવાર થઈ ગયા (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण बारवइं नयरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) સવાર થઈ ને તેઓ સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ અનંગસેના પ્રમુખ હજારો ગણિકાઓની સાથે છત્ર વિગેરે રાજચિહ્ન રૂપ વિભૂતિથી યુક્ત થઈને શંખ, પણવ, પટહ, ભેરી વગેરે તુમુલ ધ્વનિ સ્થાને દ્વારવતી નગરીની વચ્ચે વચ્ચે થઈને પસાર થયા ત્યાંથી પસાર

मूलम्—तएणं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गयंच विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं किवं आमत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह, तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि जाव जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२। एएणेव कमेणं तच्चं दूय चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्ह अगराय सेट्ठ नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं तत्थ णं तुमं सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमग दूय हत्थसीसिनयर तत्थ ण तुमं दमदत राय करयल तहेव जाव समोसरह। छट्ठ दूयं महुर नयरिं तत्थ ण तुम धरं राय करयल जाव समोसरह। सत्तम दूयं रायगिहं नयंर तत्थ ण तुम सहदेव जरासिधुसुय करयल जाव समोसरह। अट्ठम दूय कोडिण्ण नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समोसरह। नवम दूय विराडनयर तत्थ ण तुम कीयग भाउसय समग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूय अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले। निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर वहा आये जहाँ देश की सीमा थी। उस सीमा पर आकर के फिर वे पाचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहा काम्पिल्य पुर नगर था उस ओर चल दिये।'

થઈને

ચે થઈને પોતાના દેશની હદ સુધી પહોચ્યા

થઈને જ્યા કાપિલ્યપુર નગર હતુ તે

नगरेसु अणेगाइ रायसहस्साइ जाव समोसरह । तएण से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह। तएण ताइं अणेगाइं रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० तं दूय सक्कारेंति सक्कारित्ता सम्माणेति सम्माणित्ता पडिविसज्जिति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय२ ण्हाया सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहितो२ नगरेहितो अभिनिग्गच्छति२ जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १९ ॥

टीका—' तएण से' इत्यादि । तत खलु स द्रुपदो राजा द्वितीय दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व पाण्डु राज सपुत्रक=पुत्रै सहित

' तएण से दुवए राया ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) उस के बाद (से दुवए राया) उस द्रुपद राजाने (दोच्च दूय सद्दावेइ) अपने दूसरे दूतको बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा-गच्छण तुम देवाणुप्पिया हत्थिणाउर नयर तत्थ ण तुम पडुराय सपुत्तय जुहिट्ठिल्ल भीमसेण अज्जुण नउल सहदेव दुज्जोहण भाइसयसमग्ग गगेय विदुर दोण जयद्दह सउणीकिव आसत्थाम करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह) बुलाकर उससे ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहा जाकर तुम पुत्र

' तएण से दुवए राया ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર્પછી (से दुवए राया) તે દ્રુપદ રાજાએ (दोच्च दूय सद्दावेइ) પોતાના બીજા દૂતને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया हत्थिणाउर नयर, तत्थ ण तुम पडुराय सपुत्तय जुहिट्ठिल्ल भीमसेण अर्जुन नउल सहदेव दुज्जोहण भाइसयसमग्ग गगेय विदुर दोण जयद्दह सउणी किव आसत्थाम करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હસ્તિનાપુર નગરમાં જાઓ

मूलम्–तएण से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं तत्थ णं तुम पंडुराय सपुत्तय जुहिट्ठिल्ल भीमसेणं अज्जुण नउल सहदेव दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुर दोणं जयद्दह सउणी किव आगत्थाम करयल जाव कट्टु तहेव समो सरह, तएण से दूए एव वयासी जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि जाव जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२। एएणेव कमेणं तच्चं दूय चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्ह अंग-राय सेट्ठ नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं तत्थ णं तुम सिसुपाल दमघोससुय पंचभाइ सयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह । पचमग दूय हत्थसीसनयर तत्थ ण तुम दमदत राय करयल तहेव जाव समोसरह । छट्ठ दूयं महुर नयरिं तत्थ ण तुम धर राय करयल जाव समोसरह । सत्तम दूय रायगिहं नयर तत्थ ण तुम सह-देव जरासिधुसुय करयल जाव समोसरह। अट्ठम दूय कोडिण्ण नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समो सरह । नवम दूय विराडनयर तत्थ णं तुम कीयग भाउसय समग्गं करयल जाव समोसरह। दसम दूय अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले। निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर वहा आये जहां देश की सीमा थी। उस सीमा पर आकर के फिर वे पाचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहा काम्पिल्य पुर नगर था उस ओर चल दिये।' सू० १८

થઈને તેઓ સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને પોતાના દેશની હદ સુધી પહોચ્યા ત્યાથી તેઓ પાચાલ જનપદની વચ્ચે થઈને જ્યા કાપિલ્યપુર નગર હતુ તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं, तत्थ ण तुम सिसुपाल दमघोससुय पच-भाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहा से हस्तिनापुर को चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बडे विनय पूर्वक इस प्रकार कहा-काम्पिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयंवर होगा-सो आप सब कृपाकर शीघ्रातिशीघ्र वहा पधारें। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पाडुराजा आदि से सन्मानित होकर वहा से वापिस हो गया। पाडुराज आदि स्नान कर सर्वालंकारों से विभूषित होकर गजारूढ हो, चतुरंगिणी सेना के साथ अपनी ऋद्धि आदि के अनुसार यावत् जहा काम्पिल्यपुर नगर था उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहां पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस मे विशेषता केवल इतनी है कि वे सब जब द्वारावती नगरी से काम्पिल्यपुर नगर को जाने के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी-यहा वह नहीं है। इसी क्रम से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया-बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं तत्थण तुम सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयस पव-रिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) त्यारपछी दूत पोताना राजानी आज्ञा प्रमाणे त्याथी हस्तिनापुर तरफ रवाना थई गयो त्या पहोचीने तेणे पाडु राजा वगेरे राजाओने नम्रपणे आ रीते विनति करी के-काम्पिल्यपुरमा द्रौपदीनो स्वयंवर थशे तो आप सौ कृपा करीने सत्वरे त्या पधारो आ रीते समाचारो आपीने ते दूत पाडुराज वगेरेथी सन्मान पामीने त्याथी पाछो फर्यो पाडुराज वगेरे बधाओ पण स्नान वगेरेथी परवारीने तेमज सर्वा लंकारोथी सुसज्ज थईने हाथीओ उपर सवार थया अने पोत पोतानी चतु-रंगिणी सेना तेमज ऋद्धिनी साथे यावत् जे तरफ काम्पिल्यपुर नगर हतुं ते तरफ रवाना थया आ प्रमाणे कृष्ण-वासुदेवनी जेमज अहीं पण वर्णन समजी लेवु जोइओ कृष्ण-वासुदेवना पाठमा पाडुराज करता एटली विशेषता हती के तेओ ज्यारे द्वारावती नगरीनी बहार नीकळ्या त्यारे तेमनी साथे भेरी पण हती, पाडुराजनी साथे भेरी न हती आ प्रमाणे द्रुपद राजाओ त्रीजा दूतने बोलाव्यो अने तेने पण आ रीते कह्युं के हे देवानुप्रिय! तमे

युधिष्ठिरं भीमसेनम् अर्जुनं नकुलं सहदेवं दुर्योधनं भ्रातृशतकसमग=शतभ्रातृभिः सहितं, गाङ्गेयं=भीष्मं, विदुरं द्रोणं जयद्रथं शकुनिं 'किव' कृपम्=कृपाचार्यं, अश्वत्थामानं करतल० यावत् मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, तथैव समवसत यथा पूर्वमुक्तं तथैवात्र 'समवसरत' इतिपर्यन्तं बोध्यम् अयं भावः-जयविजयशब्देन वर्धयित्वा एवं ब्रूहि-काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति तस्माद् खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः, कालविलम्बरहितमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत । ततः स दूतो द्रुपदस्य वचनं स्वीकृत्य हस्तिनापुरं गत्वा पाण्डुराजादिकमेवमवादीत्=' काम्पिल्यपुरे द्रौपद्या' स्वयंवरो भविष्यति तत्र शीघ्रमागच्छत ' इति ततोऽसौ दूतः पाण्डुराजादिना सम्मानितो विसर्जितश्च ' जहा वासुदेवे ' यथा-वासुदेवः कृष्णस्तद्वदत्रापि विज्ञेयम्-' नवर' विशेषस्तु ' भेरी नत्थि ' भेरीनास्ति, कृष्णवासुदेवस्य पाण्डुराजादिः स्नातः सर्वालङ्कार विभूषितो गजास्कन्धवरगतश्चतुरङ्गसेनया सपरिवृतः सर्वर्द्धया युक्तो यावत् यत्रैव काम्पिल्यपुरं नगरं तत्रैव पाधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ।

सहित पाडुराज को, युधिष्ठिर को, भीमसेन को, अर्जुन को नकुल को, सहदेव को, सौभाईयों सहित दुर्योधन को, गागेय भीष्म पितामह को विदुर को, द्रोण को जयद्रथ को, शकुनि को, कृपाचार्य को, और द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा को पहिले दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार करना उन सबको जय विजय आदि शब्दों से बधा देना । बधाकर फिर इस प्रकार कहना कि काँपिल्य पुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर है, इस लिये हे देवानुप्रियों ! आप सब द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके विना किसी विलंब के शीघ्रही काम्पिल्यपुर नगर में पधारें । (तएण से दूए एव वयासी-जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि, जाव जेणेव कपिलपुरे

અને ત્યા જઇને તમે પુત્રો સહિત પાડુરાજને, યુધિષ્ઠિરને, ભીમસેનને, અર્જુનને નકુલને સહદેવને, સો ભાઇઓ સહિત દુર્યોધનને, ગાંગેય ભીષ્મ પિતામહને, વિદુરને, દ્રોણને, જયદ્રથને, શકુનિને, કૃપાચાર્યને અને દ્રોણાચાર્યના પુત્ર અશ્વત્થામાને સૌ પહેલા કરબદ્ધ થઇને-અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને ' જય વિજય ' શબ્દોથી તેઓને અભિનદિત કરજો ત્યારપછી તમે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને સત્વરે કાપિલ્ય નગર પધારો
(तएण से दूए एव वयासी-जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि
एव वयासी-जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि, जाव जेणेव कपिलपुरे

नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ दूयं सुत्तिमइ नयरिं, तत्थ ण तुम सिसुपाल दमघोससुय पच भाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहा से हस्तिनापुर को चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बडे विनय पूर्वक इस प्रकार कहा-कापिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयवर होगा-सो आप सब कृपाकर शीघ्रातिशीघ्र वहा पधारे। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पाडुराजा आदि से सन्मानित होकर वहां से वापिस हो गया। पाडुराज आदि स्नान कर सर्वालकारो से विभूषित होकर गजारूढ हो, चतुरगिणी सेना के साथ अपनी ऋद्धि आदि के अनुसार यावत् जहा कापिल्यपुर नगर था उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहा पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस मे विशेषता केवल इतनी है कि वे सब जब द्वारावती नगरी से कापिल्यपुर नगर को जाने के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी-यहा वह नही है। इसी क्रम से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया-बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं तत्थण तुम सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयसप-रिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) त्यारपछी दूत पोताना राजानी आज्ञा प्रमाणे त्याथी हस्तिनापुर तरफ रवाना थइ गयेा त्या पहोचीने तेणे पाडु राजा वगेरे राजाओने नम्रपणे आ रीते विनति करी के-कापिल्यपुरमा द्रौपदीनेा स्वयवर थशे तेा आप सौ कृपा करीने सत्वरे त्या पधारेा आ रीते समाचारेा आपीने ते दूत पाडुराज वगेरेथी सन्मान पामीने त्याथी पाछेा फर्यो पाडुराज वगेरे बधाओ पण स्नान वगेरेथी परवारीने तेमज सर्वा लकारेाथी सुसज्ज थइने हाथीओ उपर सवार थया अने पेात पेाताની ચતુ રગિણી સેના તેમજ ઋદ્ધિની સાથે યાવત્ જે તરફ કાપિલ્યપુર નગર હતું તે તરફ રવાના થયા આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવની જેમજ અહીં પણ વર્ણન સમજી લેવુ જોઇએ કૃષ્ણ-વાસુદેવના પાઠમા પાડુરાજ કરતા એટલી વિશેષતા હતી કે તેઓ જ્યારે દ્વારાવતી નગરીની બહાર નીકળ્યા ત્યારે તેમની સાથે ભેરી પણ હતી, પાડુરાજની સાથે ભેરી ન હતી આ પ્રમાણે દ્રુપદ રાજાએ ત્રીજા દૂતને બોલાવ્યેા અને તેને પણ આ રીતે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે

एतेनैव प्रमेण तृतीय दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरीम्, तत्र गत्वा कर्ण=कर्णनामानम्-अङ्गराजम्=अङ्गदेशस्याधिपतिं, तथा ' सेल्ल ' शैल्य=शैल्यनामक नन्दिराज=नन्दिदेशाधिप करतल परिगृहीत दशनख यावत्-मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा एव ब्रूहि-' तहेव ' तथैव=पूर्ववदेव बोध्यम्-तद् यथा-" काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयवरो भविष्यति, तस्माद् यूय हे देवानुप्रियाः ! यूय द्रुपद राजानमनुगृह्णन्त शीघ्रमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत " इति एव द्रुपदो राजा चतुर्थं दूत शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व शुक्तिमतीं नगरीं, तत्र गत्वा खलु त्व शिशुपाल दमघोषपुत्र पञ्चभ्रातृशतसपरिवृत करतल० यावन्मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा ब्रूहि-' तथैव यावत् समवसरत ' यथा पूर्वमुक्त तद्वदत्र ' समवसरत ' इति

कहा-कि हे देवानुप्रिय ! तुम चपानगरी जाओ वहा अगदेश के अधिपति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति शैल्यराजा को कर तल परिगृहीत दशनखवाली अजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना बाद में जय विजय शब्दो से उन्हें बधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा कहना-कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है, सो हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके जल्दी से जल्दी काम्पिल्यपुर नगर पधारें। इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ वहा जाकर दमघोष के पुत्र तथा पाचसौ अपने भाइयों से युक्त शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशनखवाली अजलि मस्तक पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि काम्पिल्यपुर नगरमें

ચપા નગરીમા જાઓ, ત્યા અગ દેશના અધિપતિ કર્ણ રાજાને તેમજ નદિ દેશના અધિપતિ શૈલ્યરાજાને હાથોની અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને જય-વિજય શબ્દોથી તેમને અભિનદિત કરજો ત્યારપછી તેમને વિનતી કરજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે તો હે દેવાનુપ્રિયો તમે સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ કાપિલ્યપુર નગરમા આવો આ રીતે દ્રુપદ રાજાએ ચોથા દૂતને બોલાવ્યો અને તેને પણ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તમે શક્તિમતી નગરમા જાઓ અને ત્યા જઈને દમઘોષના પુત્ર શિશુપાલ રાજાને જ પોતાના પાચસો ભાઈઓ સહિતકરણદ્ધ થઈને અજલિ મસ્તકે મૂકીને વિનતી આ પ્રમાણેના સમાચાર આપજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રા

पर्यन्त वाच्यमित्यर्थः । एवं द्रुपदो राजा पञ्चमकं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हस्तिशीर्षनगरं, तत्र खलु त्वं दमदन्तं=दमदन्तनामकं राजानं करतलपरिगृहीतदशनखं यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-' तवैव यावत् समवसरत ' इति पूर्ववदेवात्रापि ' समवसरत ' इतिपर्यन्तं वाच्यम् एवं स द्रुपदो राजा षष्ठं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं मथुरां नगरीं, तत्र खलु त्वं धरं=धरनामकं राजानं ' करतल० यावत् समवसरत' अत्रापि पूर्ववद्दूतगमनादिकं वोध्यम्, एवं सप्तमं दूतं शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छ खलु त्वं राजगृहं नगरम्, तत्र गत्वा त्वं सहदेवं जरासिन्धुसुतं ' करतल० यावत् समवसरत ' इति पूर्ववत्-द्रौपद्याः स्वयंवरस्य वार्तां कथयित्वा ' काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत ' इति ब्रूहि । तथा स

द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है-सो आप कृपा करके शीघ्र ही वहां पधारें । (पचमग दूय हत्थिसीसनयर तत्थ णं तुम दमदत्त राय करयल तहेव जाव समोसरह,छट्ठ दूय महुर नयरिं तत्थ णं तुम धर राय करयल जाव समोसरह सत्तम दूय रायगिह नयर तत्थणं तुम सहदेव जरासिंधुसुय करयल जाव समोसरह, अट्ठम दूय कोडिण्णं नयर तत्थणं तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समोसरह, नवम दूय विराडनयर तत्थ णं तुम कीयग भाउसयसमग्ग करयल जाव समोसरह, दसम दूय अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइ रायसहस्साइ जाव समोसरह) इसी तरह पाचवे दूत को हस्तिशीर्षनगर में दमदन्त नाम के राजा के पास छठे दूत को मथुरा नगरी में धर राजा के पास, सातवे दूत को राजगृह नगर मे जरासिंधु के पुत्र सहदेव के पास

દીને। સ્વયંવર થવાને। છે એથી તમે કૃપા કરીને અવિલંબ ત્યાં પધારો। (પંચમગ દૂય હત્થસીસનયર તત્થ ણ તુમ દમદંત રાય કરયલ તહેવ જાવ સમોસરહ ઠ્ઠ દૂય મહુર નયરિં તત્થણ તુમ ધર રાય કરયલ જાવ સમોસરહ સત્તમ દૂય રાયગિહ નયર તત્થ ણ તુમ સહદેવ જરાસિંધુ સુય કરયલ જાવ સમોસરહ અટ્ઠમ દૂય કોંડિણ્ણ નયર તત્થણ તુમ રૂપ્પિ ભેસગસુય કરયલ તહેવ જાવ સમોસરહ નવમ દૂય વિરાડનયર તત્થ ણ તુમ કીયગ ભાઉસય સમગ્ગ કરયલ જાવ સમોસરહ, દસમ દૂય અવસેસેસુ ગામાગર નગરેસુ અણેગાઇ રાયસહસ્સાઇ જાવ સમોસરહ) આ પ્રમાણે પાંચમા દૂતને હસ્તિશીર્ષ નગરમા દમદન્ત નામના રાજાની પાસે, છઠ્ઠા દૂતને મથુરા નગરીમા ધર રાજાની પાસે, સાતમા દૂતને રાજગૃહ નગરમા જરાસિંધુના પુત્ર સહદેવની પાસે, આઠમા દૂતને કૌંડિન્ય નગરમા ભીષ્મકના પુત્ર રુકિમ રાજાની પાસે, નવમા દૂતને

एतेनैव क्रमेण तृतीय दूत शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरीम् , तत्र गत्वा कर्ण=कर्णनामानम्-अङ्गराजम्=अङ्गदेशस्याधिपतिं, तथा ' सेलं ' शैलम्=शैलनामानं नन्दिराय=नन्दिदेशाधिपं करतलपरिगृहीत दशनख यावत्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा एवं ब्रूहि-' तहेव ' तथैव=पूर्ववत्तथा बोध्यम्-तद् यथा-" काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् यूयं खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः शीघ्रमेव काम्पिल्यपुरं नगरं समवसरत " इति एवं द्रुपदो राजा चतुर्थं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं शुक्तिमतीं नगरीं, तत्र गत्वा खलु त्वं शिशुपालं दमघोषसुतं पञ्चभ्रातृशतसपरिवृतं करतल० यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-' तहेव यावत् समवसरत ' यथा पूर्वमुक्तं तद्वदत्र ' समवसरत ' इति

कहा-कि हे देवानुप्रिय ! तुम चपानगरी जाओ वहा अगदेश के अधिपति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपनि शैलराजा को करतल परिगृहीत दशानखवाली अजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना बाद में जय विजय शब्दों से उन्हें बधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा कहना-कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है, सो हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके जल्दी से जल्दी काम्पिल्यपुर नगर पधारे । इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ वहा जाकर दमघोष के पुत्र तथा पाचसौ अपने भाइयों से युक्त शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशनखवाली अजलि मस्तक पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि काम्पिल्यपुर नगरमें

ચપા નગરીમા જાઓ, ત્યા અગ દેશના અધિપતિ કર્ણ રાજાને તેમજ નદિ દેશના અધિપતિ શૈલ્યરાજને હાથોની અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને જય-વિજય શબ્દોથી તેમને અભિનદિત કરજો ત્યારપછી તેમને વિનતી કરજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે તો હે દેવાનુપ્રિયો તમે સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ કાપિલ્યપુર નગરમા આવો આ રીતે દ્રુપદ રાજાએ ચોથા દૂતને બોલાવ્યો અને તેને પણ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તમે શક્તિમતી નગરમા જાઓ અને ત્યા જઇને દમઘોષના પુત્ર શિશુપાલ રાજાને જ પોતાના પાચસો ભાઇઓ સહિતકરબદ્ધ થઇને અજલિ મસ્તકે મૂકીને વિનતી કરતા આ પ્રમાણેના સમાચાર આપજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ

सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य यावत्-समवसरत, ' समवसरत ' इति पर्यन्त दूतवाक्य पूर्ववद् बोध्यम्। ततः खलु तानि अनेकानि राजसहस्राणि तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूत सत्कारयन्ति=सत्कृत कुर्वन्ति समानयन्ति,सत्कार्य, सम्मान्य प्रतिविसर्जयन्ति।

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसरयका राजानः,=प्रत्येक २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह) वह दशवा दूत उसी तरह से-पहिले के दूतों के समान काम्पिल्य नगर से निकला और निकल कर जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहा पर अनेक राजसहस्रों के पास गया-वहा जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है-सो आपमब लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कांपिल्य पुर नगर पधारे (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेंति, सक्कारित्ता सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेति) इस प्रकार वे अनेक सहस्र राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित बनकर परम सतोष को प्राप्त हुए। उन्होंने उस दूत का सत्कार किया सत्कार करके सन्मान किया और सन्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित कर दिया-भेजदिया। (तएण ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय

समोसरह) તે દશમો દૂત બધાની જેમ કાપીલ્ય નગરથી નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યા ગ્રામ આકર અને નગર હતા ત્યા અનેક સહસ્રો રાજાઓની પાસે ગયો ત્યા જઈને નમ્રપણે તેણે સહુને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે કાપિલ્ય નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ કાપિલ્ય નગરમા પધારો (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेति सक्कारित्ता, सम्माणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति) આ રીતે સહસ્રો રાજાઓ તે દૂતના મુખથી આ સમાચાર સાભળીને અને તેને પોતાના હૃદયમા ધારણ કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ પરમ સતુષ્ટ થયા તેઓએ દૂતનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યુ ત્યારપછી દૂતને તેઓએ વિદાય[illegible]ી (तएण ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय २ ण्हाया

मुपदो राजा अष्टम दूत शब्दयित्वाऽऽदीन्-गच्छ खलु त्व 'रुक्मि' कुक्मिनामक भोजकपुत्र करतल तथैव यावत् समर सरत पूर्ववत् 'समरमरत' इति पर्यन्त यावत्। एव स द्रुपदो राजा नवम दूत शब्दयित्वाऽऽदीत्-गच्छ खलु त्व विराटनगर, तत्र गच्छ त्व 'कीचग' कीचक-कीचकनामक राजान तलभालुमहित करतल यावत् समरमरत अत्रापि व्याख्या पूर्ववत्। एव स द्रुपदो राजा दशम दूत शब्दयित्वाऽऽदीत्-अवशेषेषु च ग्रामाकर नगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि यावत् समरमरत, अत्रापि व्याख्या पूर्ववत्, ततस्तदनन्तर खलु स दूतस्तीय=तृतीयदूतादय निर्गच्छति काम्पिल्यनगरता नि-

में आठवें दूत को कौण्डिन्य नगर में भीष्मक के पुत्र रुक्मि राजा के पास में नौवें दूत को विराट नगर मे सौ भाइयो से युक्त कीचक के पास में, और दशवे दूतो को अवशिष्ट ग्रामों मे आकरों में तथ नगरों में हजारों राजाओं के पास जाने के लिये कहा। इन दूतों को राजा द्रुपद ने यह समझादिया कि तुम लोग जब इन राजाओं के पास जाओ तब पहिले उन्हे दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करना और कहना कि काम्पिल्य पुर नगर में द्रुपदकी पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है सो आप लोग उस में द्रुपद राजा उपर दया कर के शीघ्र से शीघ्र पधारें। राजाकी आज्ञानुसार तीसरे दूतसे लेकर नौवें दूत तक समस्त दूत जिन्हे २ जहां २ जाने को कहा था-वे वहा२ चले गये। वहा जाकर उन्हों ने जैसा द्रुपद राजा ने इन से करने एव कहने को कहा था-वैसा ही उन्हो ने वहा २ किया और कहा। इस तरह पहिले की तरह यहां तक सब व्याख्या समझलेनी चाहिये। (तएण से दूए तहेव निगच्छइ,

---

વિરાટ નગરમા સો ભાઇઓથી યુક્ત કીચકની પાસે અને દશમા દૂતને બાકી રહી ગયેલા બીજા ગામોમા આકરોમા અને નગરોમા હજારો રાજાઓની પાસે જવા હુકમ કર્યો આ બધા દૂતોને રાજા દ્રુપદે જતા પહેલા આ વાત સરસ રીતે સમજાવી દીધી હતી કે જ્યારે તમે રાજાઓની પાસે જાઓ ત્યારે સૌ પહેલા પોતાના બને હાથ જોડીને તેઓને નમસ્કાર કરજો અને ત્યારપછી તમે તેમને વિનતી કરજો કે કાપિલ્ય નગરમા દ્રુપદની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ ત્યા પધારો રાજાની આજ્ઞા મુજબ ત્રીજા દૂતથી માડીને નવમા દૂત સુધીના બધા દૂતો જ્યા જ્યા તેઓને જવાનુ હતુ ત્યા ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓએ દ્રુપદ રાજાએ જેમ આજ્ઞા કરી હતી તેમજ તેઓએ કર્યુ અને કહ્યુ, અહીં [illegible]ની જેમજ સમજી લેવું જોઇએ (तएण से दूए तहेव निगच्छइ, जाव

सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य यावत्-समवसरत, ' समवसरत ' इति पर्यन्त दूतवाक्य पूर्ववद् बोध्यम्। ततः खलु तानि अनेकानि राजसहस्राणि तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूत सत्कारयन्ति=सत्कृत कुर्वन्ति समानयन्ति,सत्कार्य, समान्य प्रतिविसर्जयन्ति।

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसख्यका राजान',=प्रत्येकं २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह) वह दशवां दूत उसी तरह से-पहिले के दूतों के समान काम्पिल्य नगर से निकला और निकल कर जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहां पर अनेक राजसहस्रों के पास गया-वहा जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है-सो आपसब लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कांपिल्य पुर नगर पधारे (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेंति, सक्कारित्ता सम्माणेंति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेंति) इस प्रकार वे अनेक सहस्र राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित बनकर परम सतोष को प्राप्त हुए। उन्होंने उस दूत का सत्कार किया सत्कार करके सन्मान किया और सन्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित कर दिया-भेजदिया। (तएण ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय

समोसरह) તે દશમો દૂત બધાની જેમ કાપીલ્ય નગરથી નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યા ગ્રામ આકર અને નગર હતા ત્યા અનેક સહસ્રો રાજાઓની પાસે ગયો ત્યા જઈને નમ્રપણે તેણે સહુને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે કાપિલ્ય નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ કાપિલ્ય નગરમા પધારો (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेंति सक्कारित्ता, सम्माणेंति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेंति) આ રીતે સહસ્રો રાજાઓ તે દૂતના મુખથી આ સમાચાર સાભળીને અને તેને પોતાના હૃદયમા ધારણ કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ પરમ સતુષ્ટ થયા તેઓએ દૂતનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું ત્યારપછી દૂતને તેઓએ વિદાય આપી (तएण ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय २ ण्हाया

सन्नद्धबद्धवर्मितवरना यावद् गृहीतायुधप्रहरणा' हस्तिस्कन्धवरगता हयगजरथ महाभटचटकरमकरन्दपरिक्षिप्ता'=अ नगरमध्यमध्येनैव निर्गच्छन्ति. अभिनिर्गत्य यत्रैव पञ्चालो जनपदस्तत्रैव प्राधार्यन् गमनाय=गन्तु मारब्धाः ॥ सू० १९ ॥

मूलम्–तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे वहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय सालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव

२पहाया सन्नद्ध हत्थिखंधवरगया हय गयरह० महया भडचडगररहप हकर० सण्णिनो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पाचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बादमें जब दूत समाचार देकर कांपिल्य पुर नगर में आचुके तब वासुदेव प्रमुख वे अनेक राजा प्रत्येक स्नान से निवटे, और सजाकर अपने२ शरीर पर कवच पहिरा, यावत् आयुध और प्रहरणों को अपने २ साथ लिया, अपने २ प्रधान हाथियों पर चढे और हाथी घोडे रथ और महाभटों के समुदाय से घिर हुए होकर ये सब अपने राज महलोंसे-नगरों से-निकले-निलकर जहां पांचाल जनपद था उस ओर चल दिये ॥ सू० १९

सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सण्णिनो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पाचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ત્યારપછી જ્યારે બધા દૂતો સમાચાર આપીને કાંપિલ્યપુર નગર પાછા આવી ગયા ત્યારે વાસુદેવ પ્રમુખ ઘણા હજારો રાજાઓએ સ્નાન કર્યો અને ત્યારબાદ પોતાના શરીર ઉપર કવચો ધારણ કર્યા યાવત્ આયુધો અને પ્રહરણોને પોતાની સાથે લીધા ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાના પ્રધાન હાથીઓ ઉ[illegible] અને હાથી, ઘોડા, રથ અને મહાભટોના સમુ[illegible]હથની સા[illegible]ી-નગરોથી નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યા પાચાલ [illegible] ના થયા ॥ સૂત્ર ૧૯

भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामुक्खाण बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणंति, तएण दूवए वासुदेवपामुक्खाण बहूणं रायसहस्साण आगम जाणेत्ता पत्तेय२ हत्थिखंध जाव परिवुडे अग्घ च पज्ज च गहाय सविड्ढिए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामुक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसि वासुदेवपामुक्खाण पत्तेय२ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया२ आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहितो पच्चोरुहंति पच्चोरुहित्ता पत्तेय खधावारनिवेसं करेंति करित्ता सए२ आवासे अणुपविसंति अणुपविसित्ता सएसु२ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य सतुयट्टा य बहूहि गधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति, तएणं से दुवए राया कपिल्लपुर नगर अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउल असण४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउल असण४ सुर च मज्ज च मम च सीधु च पसण्ण च सुबहुपुप्फवत्थगंधमल्लालकार च वासुदेवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु साहरह, तेवि साहरंति, तएण त वासुदेवपामुक्खा त विउलं

सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणाः हस्तिस्कन्धवरगता हयगजरथ महाभटचटकरमकरन्दपरिक्षिप्ताः=भटानरथमहाभटसमूहपरिक्षिप्ता., स्वकेभ्यः स्वकेभ्योऽभिनिर्गच्छन्ति. अभिनिर्गत्य यत्रैव पञ्चालो जनपदस्तत्रैव प्राधार्यन् गमनाय=गन्तु प्रवृत्ताः ॥ सू० १९ ॥

मूलम्–तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे वहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय सालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव

२एहाया सन्नद्ध हत्थिखंधवरगया हय गयरह० महया भडचडगररहपहकर० संपरिवुडो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पांचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) स्नान के बाद में जब दूत समाचार देकर वापिस काम्पिल्य पुर नगर में आचुके तब वासुदेव प्रमुख वे अनेक शस्त्र राजा प्रत्येक स्नान से निवटे, और सजाकर अपने२ शरीर पर कवच पहिरा, यावत् आयुध और प्रहरणों को अपने २ साथ लिया, अपने २ प्रधान हाथियों पर चढे और हाथी घोडे रथ और महाभटों के समुदाय से घिरे हुए होकर वे सब अपने राज महलोंसे–नगरों से–निकले–निलकर जहां पांचाल जनपद था उस ओर चल दिये ॥ सू० १९

सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० संपरिवुडो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पांचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ત્યારપછી જ્યારે બધા દૂતો સમાચાર આપીને કાપિલ્યપુર નગર પાછા આવી ગયા ત્યારે વાસુદેવ પ્રમુખ ઘણા હજારો રાજાઓએ સ્નાન કર્યા અને ત્યારબાદ પોતાના શરીર ઉપર કવચો ધારણ કર્યા યાવત્ આયુધો અને પ્રહરણોને પોતાની સાથે લીધા ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાના પ્રધાન હાથીઓ ઉપર સવાર થયા અને હાથી, ઘોડા, રથ અને મહાભટોના સમુદાયની સાથે પોતાના રાજમહેલથી–નગરોથી નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં પાંચાલ જનપદ હતો તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૧૯ ॥

काइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइ रएह२ एयमाणत्तिय पच्च-प्पिणह, ते वि जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्ल पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थि-खंधवरगया सकोरट० सेयवरचामराहि हयगय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ उवाग-च्छित्ता जणुपविसंति अणुपविसित्ता पत्तेय२ नामकिएसु आस-णेसु निसीयंति दोवइ रायवरकण्णा पडिवालेमाणा चिट्ठति, तएणं से पडुए राया कल्ल ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंध-वरगए सकोरट० हयगय० कंपिल्लपुरे मज्झमज्झेण निग्गच्छंति जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० बद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामर गहाय उववीयमाणे चिट्ठति ॥ सू० २० ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरु षान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रिया. ! काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य बहिः प्रदेशे गङ्गाया महानद्या अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिनिकटे एकं महान्तं स्वयम्बरमण्डपं कुरुत कारयतेत्याह—' अणेग ' इत्यादि।

' तएणं से दूवए राया कोडुंबिय पुरिसे ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (दूवए राया) द्रुपद राजा ने (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा—(गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह,

---

' तएणं से दूवए राया कोडुंबिय पुरिसे ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (दूवए राया) द्रुपद राजाए (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. (सद्दावित्ता एवं वयासी) बोलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्युं के (गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह, अणेगखंभस-

असणेय जाव पसन्नं च आसाएमाणाय विहरति, जिमियाभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गणनायेहिं जाव विहरंति, तएणं से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरं सघाडगं जाव पहे वासुदेवपामुक्खाणं य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया२ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा२ एवं वदह-एवं खलु देवाणुप्पिया कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुण्णस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा पहाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छह उवागच्छित्ता पत्तेयं२ नामंकिएसु आसणेसु निसीयह२ दोवइं रायकण्णं पडिवालेमाणा२ चिट्ठह, घोसणं घोसेह२ ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी -गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसियसमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं

अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टम्=अनेकशतस्तम्भयुक्तम्, 'लीलट्ठियसालभजिआगं' लीलास्थितशालभञ्जिकाम्=लीलया स्थिता शालभञ्जिका-पुत्तलिका यस्मिंस्तादृशं, यावत्-'तहाऽस्तु' इति कृत्वा ते कौटुम्बिकपुरुषाः तथेति स्वीकृत्य तथैव सपाद्य, प्रत्यर्पयन्ति=मण्डपो निर्मित इति निवेदयन्ति। ततः खलु स द्रुपदो राजा 'दोच्चंपि' द्वितीयवारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः! शिघ्रमेव वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणां आवास-वासस्थान कुरुत=रचयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषा 'तहत्ति' कृत्वा=वासुदेवादीनां निवासार्थं पृथक् पृथक् योग्य वासस्थान विधाय प्रत्यर्पयन्ति=नृपाय राज्ञे कथयन्ति। ततः

अणेग खंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति) हे देवानुप्रियो! तुमलोग जाओ-और कांपिल्यपुर नगरके बाहिर गंगा महा नदी के नअतिदूर और न अति समीप-उचित स्थान-में एक बड़ाभारी स्वयंवरमंडप बनाओ। जो अनेक सैकड़ों खंभोंसे युक्त हो तथा जिसमें विविध प्रकार की क्रीडा करती हुई पुत्तलिकाएँ सजा कर लगाई गई हों। यावत् "तथास्तु" कह कर उन लोगों ने राजा की इस आज्ञा को मान लिया और उसी आज्ञाके अनुसार स्वयंवर मंडप बना कर इसकी खबर राजाको कर दी। (तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया! वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह ते वि करित्ता पच्चप्पिणंति इसके बाद द्रुपद राजा ने दूसरे कौटुम्बिक पुरुषों का बुलाया-बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्रातिशीघ्र वासुदेव

यसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति) હે દેવાનુપ્રિયો! કાંપિલ્યપુર નગરની બહાર ગંગા મહા નદી થી વધારે દૂર નહીં તેમજ વધારે નજીક પણ નહિ એવા યોગ્ય સ્થળે એક ભારે વિશાળ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરો કે જે ઘણા સેંકડો થાંભલાઓવાળો હોય, તેમજ જેમા અનેક જાતની ક્રીડા કરતી પૂતળીઓ સજાવીને મૂકવામા આવી હોય તે લોકોએ પણ 'તથાસ્તુ' કહીને રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેમની આજ્ઞા મુજબ જ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરીને રાજાને તેની ખબર આપી (तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया! वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, ते वि करेत्ता पच्चप्पिणंति) ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ બીજા કૌટુમ્બિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો અવિલંબ વાસુ- ગણ્યા

खलु द्रुपदो राजा वासुदेवप्रमुखाणा बहूना राजसहस्राणाम् आगम=आगमन ज्ञात्वा प्रत्येक २ हस्तिस्कधवरगतः, हयगजरथमहाभटसमूहपरिवृत, अर्घं= पानार्थं जल पाद्यं=चरणप्रक्षालनार्थमुदक च गृहीत्वा सर्वद्धर्या छत्रचामरादिरूपया काम्पिल्यपुरतो निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसख्यका-राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राजसहस्राणि= तान् बहुसहस्रसख्याकान् वासुदेवप्रमुखान् राज्ञः, अर्घ्येण च पाद्येन च सत्कार-

प्रमुख अनेक सहस्र राजाओं को बैठने के लिये पृथक्२ स्थान बनाओ। उन्होंने राजाकी आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी खबर राजा को कर दी। (तएण दुवए वासुदेवपामुक्खाण बहूण रायसहस्साण आगम जाणेत्ता पत्तेय २ हत्थिखध जाव पडिवुडे अग्घ च पज्ज च गहाय सव्विड्ढीए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ,निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेव पामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामुक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ) इसके बाद द्रुपद राजा वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का आगमन जानकर अपने प्रधान हस्ती पर आरूढ हो हय, गज, रथ तथा महाभटों के समूह के साथ २ प्रत्येक राजा के लिये अर्घ-पीने के लिये पानी, पाद्य-चरण प्रक्षालन के जल-लेकर छत्रचामर आदि अपनी राजविभूतिसे युक्त होकर काम्पिल्य पुर नगर से निकले-निकलकर जहा वासुदेव प्रमुख हजारों राजा ये वहा गये। वहा जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारा राजाओ का अर्घ्य

હજારો રાજાઓને બેસવા માટે જુદા જુદા સ્થાન તૈયાર કરો તે લોકોએ પણ રાજાની આજ્ઞા મુજબ જ બધુ કામ પતાવી દીધુ અને કામ થઈ ગયાની ખબર રાજા સુધી પહોચાડી દીધી (तएण दुवए वासुदेवपामुक्खाण बहूण राय सहस्साण आगम जाणेत्ता पत्तेय २ हत्थिखध जाव पडिवुडे अग्घ च पज्ज च गहाय सव्विड्ढीए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामुक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ) ત્યારબાદ વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનુ આગમન સાભળીને દ્રુપદ રાજા પોતાના પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર થયા અને ઘોડા, હાથી, રથ તેમજ મહાભટોના સમૂહની સાથે દરેકે દરેક રાજાને માટે અર્ઘ-પીવા માટે પાણી-લઈને છત્ર ચામર વગેરે પોતાની રાજ-વિભૂતિથી યુક્ત થઈને કાપિલ્યપુરથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ હતા ત્યા પહોચ્યા ત્યા જઈને તેમણે તે

यति, सम्मानयति, सत्कारसम्मानं कृत्वा, नानारत्नसुवर्णादिवस्तुभागान् प्रत्येकं२ पृथक्२ आवासं 'विसरइ' विसृजति । तत्र वासुदेवमनुगा यत्रैव स्वका २=निजा २ आवासास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरुह्य प्रत्येकं२ स्कन्धावारनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा स्वकं२ आवासेऽनुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य स्वकेषु स्वकेषु आसनेषु-आसनेषु च शयनेषु च सन्निषण्णा उपविष्टाश्च तथा 'सन्तुयट्टा' सम्यक्तिष्ठा. परिवर्तितवार्श्वा वा तूष्णीमवस्थिताश्च 'नाड एहि य' नाट्यैश्च 'उवगिज्जमाणा य' उपगीयमानाश्च, 'उवगिज्जमाणा य'

और पाद्य से सत्कार किया-सन्मान किया। (सक्कारित्ता, सम्माणित्ता, तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे विसरइ, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं २ खंधावारनिवेसं करेंति) सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन सब वासुदेव प्रमुखों का प्रत्येक के लिये पृथक्२ आवास-स्थान-दिया,। इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रमुखराजा जहां अपना २ स्थान नियत था-वहां गये। वहां जाकर के अपने २ हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धावार स्थापित कर दी-अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया। (करित्ता सए २ आवासे अणु०) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य सतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहिं य नाडएहिं य उवगिज्जमाणा य

વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનુ અર્ઘ્ય અને પાદથી સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું (सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे विसरइ, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેક દરેક રાજાને જુદુ જુદુ આવાસ સ્થાન આપ્યુ ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યા પોતપોતાનુ આવાસ સ્થાન નક્કી કરવામા આવ્યુ હતુ ત્યા ગયા ત્યા જઇને તેઓ પોતપોતાના હાથીઓ ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ પોતપોતાની સ્કન્ધાવાર-છાવણી સ્થાપિત કરી એટલે કે સેનાનો પડાવ નાખ્યો (करित्ता सए २ आवासे अणु०) છાવણી નાખીને તેઓ પોતપોતાના આવાસ સ્થાનમા પ્રવિષ્ટ થયા (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य सतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहिं य नाडएहिं य

उपनृत्यमानाश्च गीत श्राव्यमाणाश्च, नृत्य द र्यमानाश्च विहरन्ति । ततः द्रुपदो राजा काम्पिल्यपुर नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य विपुलम्-अशन खाद्य स्वाद्यम् उपस्कारयति. सस्कारयति. उपस्कार्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत र लु यूय हे देवानुप्रियाः ! विपुलम्, अशन ४ खाद्य स्वाद्य सुरा च मद्य च मासं च सीधु च प्रसन्ना च सीधुः प्रसन्ना च मदि निशेषे, तथा सुबहु पुष्पवस्त्र धमाल्यालकार च वासुदेवप्रमुखाणा राजसहस्र आवासेषु ' साहरह सहरत=उपनयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव सहरन्ति

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति तएणं से दुवए राया कपिल्लपुर न अणुपविसइ, अणुपविसित्ता विउल असण ४ उवक्खडावेइ) होकर के वे अपने अपने आवास स्थानों में आसनों पर एव बिस्तर पर जाकर अच्छी तरह बैठ गये लेट गये । वहां लेटे हुए उनकी अने गधर्वोंने, अनेक नाटयकारों ने स्तुति की-उनकी प्रशसा के गीत गाए, नाटक दिखलाया । इसके बाद द्रुपद राजा काम्पिल्यपुर नगर के भीतर आये-वहा आकर के उन्होंने विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया-पकवाया । (उवक्खडावित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-(गच्छह णं तुम्मे देवाणुप्पिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च मसं च सीधु च पसण्ण च सुबहु पुप्फवत्थ गधमल्लालकार च वासुदेवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु साहरह) तैयार करवा कर फिर उन्होने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो तुमलोग जाओ और इस

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति, तएण से दुवए राया कपिल्लपुर नयर अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउल असण४ उवक्खडावेइ) प्रवेशीने तेओ पोतपोताना આસનો ઉપર સારી રીતે બેસી ગયા, સૂઈ ગયા ત્યા સૂઈ ગયેલા તેઓની ઘણા ગધર્વોએ, ઘણા નાટયકારોએ સ્તુતિ કરી, તેમની પ્રશસાના ગીતો ગાયા અને નાટકો ભજવ્યા ત્યારપછી દ્રુપદ રાજા કાપિલ્યપુર નગરમા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય ૪ ચાર જાતનો આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો (उवक्खडावित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम्मे देवाणुप्पिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च मसं च सीधु च पसण्ण च सुबहुपुप्फवत्थगधमल्लालकार च वासु देवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु साहरह) તૈયાર કરાવીને તેમને કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે

यति, समानयति, सत्कार्य सत्कारं करोति, सत्कार्य तेषां वासुदेवप्रमुखानां प्रत्येकं २ आवासं 'वियरइ' वितरति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा यत्रैव स्वकं २=निजं २ आवासस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागम्य हस्तिस्कन्धान् प्रत्यवरुह्य प्रत्येकं २ स्कन्धावारनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा स्वके स्वके आवासेऽनुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य स्वकेषु स्वकेषु आवासेषु-आसनेषु च शयनेषु च सन्निषण्णा उपनिष्टाश्च तथा 'सतुयट्टा' सत्वग्वर्तिनः परिवर्तितवार्श्वाश्च बहुभिर्गन्धर्वैश्च 'नाड एहि य' नाटकैश्च 'उवगिज्जमाणा य' उपगीयमानाश्च, 'उवगिज्जमाणा य'

और पाद्य से सत्कार किया-सन्मान किया। (सक्कारित्ता, सम्माणित्ता, तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेव पामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं २ खंधावारनिवेसं करेंति) सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन सब वासुदेव प्रमुखों को प्रत्येक के लिये पृथक्२ आवास-स्थान-दिया,। इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रमुखराजा जहां अपना २ स्थान नियत था-दिया गये। वहां जाकर के अपने २ हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धावार स्थापित कर दी-अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया। (करित्ता सए २ आवासे अणु०) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य सतुयट्टा य बहूहिं गन्धव्वेहिं य नाडएहिं य उवगिज्जमाणा य

વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનુ અર્ઘ્ય અને પાદથી સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યુ (सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેકે દરેક રાજાને જુદુ જુદુ આવાસ સ્થાન આપ્યુ ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યા પોતપોતાનુ આવાસ સ્થાન નક્કી કરવામા આવ્યુ હતુ ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેઓ પોતપોતાના હાથીઓ ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ પોતપોતાની સ્કન્ધાવાર-છાવણી સ્થાપિત કરી એટલે કે સેનાનો પડાવ નાખ્યો (करित्ता सए २ आवासे अणु०) છાવણી નાખીને તેઓ પોતપોતાના આવાસ સ્થાનમા પ્રવિષ્ટ થયા (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य सतुयट्टा य बहूहिं गन्धव्वेहिं य नाडएहिं य

पविष्टा बहुभिर्गन्धैर्यावद् नाटकैश्चोपगीयमाना उपनृत्यमानाश्च विहरन्ति= आसते स्म इत्यर्थः ।

तत खलु स दुपदो राजा पूर्वापराह्णकालसमये कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु हे देवानुप्रियाः ! काम्पिल्यपुरे नगरे शृङ्गाटक यावत्-त्रिक चतुष्क चत्वर महापथपथेषु वासुदेवप्रमुखाणा च राजसहस्राणामावासेषु आवासगृहेषु बहुजनस्य अन्येषु च बहुषु गन्धर्वनाटकेषु उपगीयमानेषु २ एव वदत, एव खलु देवानुप्रियाः ! अस्ति पाञ्च० द्रुपदस्य राज्ञो धृष्टद्युम्नप्रमुखाणा पञ्चाना पुत्राणा द्रौपद्याश्च चुल्लपितुर्दुहितुः पञ्चपाण्डवानामनुजायाः कृष्णाया देव्याः अस्मिन् महति विवाहे शीघ्रमेव आगच्छत यावत् पाणिग्रहणमनुभवत यूय तत खलु स द्रुपदो राजा विपुलेन अशनपानखादिमस्वादिमेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च तान् सुबहून् राजसहस्रान् सत्कारयति सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य च प्रतिविसर्जयति, प्रतिविसृज्य च कृष्णां द्रौपदीं देवीं स्नानां यावत् सर्वालङ्कारविभूषितां पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामारोहयति, आरोह्य च सकलकुरुजनपदप्रधानैः महद्भिः राजवैभवेन यावद् वाद्यनिर्घोषेण हस्तिनापुरं नगरं मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं विपुलेन अशनपानखादिमस्वादिमेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्कारयति सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य च तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः पाण्डवान् पञ्च पुरुषान् कृतसंस्कारान् कृतसमुचितकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तान् शुद्धप्रावेश्यानि मङ्गलानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितान् अग्निहोमसाक्षिकान् पाणिग्रहणं कारयति, कृत्वा च विपुलं वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारं दायं ददाति, दत्त्वा च पाण्डवान् पञ्च पुरुषान् कृष्णां द्रौपदीं देवीं स्नानां यावत् सर्वालङ्कारविभूषितां पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामारोहयति, आरोह्य च सकलकुरुजनपदप्रधानैः महद्भिः राजवैभवेन यावद् वाद्यनिर्घोषेण हस्तिनापुरं नगरं मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं विपुलेन अशनपानखादिमस्वादिमेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्कारयति सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य च तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः पाण्डवान् पञ्च पुरुषान् एवमवादीत्-यूयं खलु पुत्रा ! मम गृहे कृष्णायाः देव्याः सुबहुं छिद्रं वा विवरं वा प्रतिजागरमाणाः २ विहरत, मा खलु यूयं केनचित् किञ्चिदपि वक्तव्याः भविष्यथ, ततः खलु स द्रुपदो राजा पाण्डवान् पञ्च पुरुषान् एवमवादीत्-यूयं खलु पुत्रा ! मम गृहे कृष्णायाः देव्याः सुबहुं छिद्रं वा विवरं वा प्रतिजागरमाणाः २ विहरत, मा खलु यूयं केनचित् किञ्चिदपि वक्तव्याः भविष्यथ, ततः खलु स द्रुपदो राजा कृष्णां द्रौपदीं देवीं स्नानां यावत् सर्वालङ्कारविभूषितां पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामारोहयति, आरोह्य च सकलकुरुजनपदप्रधानैः महद्भिः राजवैभवेन यावद् वाद्यनिर्घोषेण हस्तिनापुरं नगरं मध्यमध्येन यत्रैव पाण्डवानां गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पाण्डवान् पञ्च पुरुषान् एवमवादीत्-यूयं खलु पुत्रा ! मम गृहे कृष्णायाः देव्याः सुबहुं छिद्रं वा विवरं वा प्रतिजागरमाणाः २ विहरत, मा खलु यूयं केनचित् किञ्चिदपि वक्तव्याः भविष्यथ, ततः खलु स द्रुपदो राजा कृष्णां द्रौपदीं देवीं स्नानां यावत् सर्वालङ्कारविभूषितां पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामारोहयति, आरोह्य च सकलकुरुजनपदप्रधानैः महद्भिः राजवैभवेन यावद् वाद्यनिर्घोषेण हस्तिनापुरं नगरं मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं विपुलेन अशनपानखादिमस्वादिमेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्कारयति सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य च तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखास्तद् विपुलम्, असन पान खाद्य स्वाद्य यावत् प्रसन्नां च 'आसायमाणा' आस्वादयन्तो विहरन्ति, अपि च खलु 'जिमिया' जिमिताः-भुक्तवन्तः, 'भुत्तुत्तरागया' भुक्तोत्तरागताः भुक्तोत्तर=भोजनानन्तरम् आगताः भुवतेस्यत्र भावे क्तः भोजनस्थानादाचमनदेशे मुखप्रक्षालनार्थमागताः सन्त 'आयता' आचान्ताः-कृतचुल्लुका, यावत्-सुखासनवरगताः=आसनवरे सुखो-

अशन, पान, खाद्य स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार को सुरा मद्य, मीधु और प्रसन्न मदिरा को और अनेक विध इन पुष्पों को वस्त्रों को गन्धमाल्य एव अलकारो को वासुदेव प्रमुख राजसहस्रों के आवास स्थानों पर ले जाओ। (ते वि साहरति) राजा की आज्ञानुसार वे सब उन अशनादिवस्तुओं को वहा पर ले गये। (तएण ते वासुदेवपामुक्खा त विउल असण ४ जाव पसन्न च आसाएमाणा ४ विहरति) इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने उस आनीत विपुल अशनादिरूप प्रसन्ना मदिरा तक की आहार की सामग्री को खाया (जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा जाव सुहासणवरगया बहूहिं गधव्वेहिं जाव विहरति) खा पी कर जब वे निश्चिन्त हो चुके और मुख प्रक्षालन के लिये भोजन स्थान से उठकर दूसरे निकट स्थान पर आये-तब उन्होंने कुल्ला किया-और फिर सुन्दर अपने २ आसनों पर शाति पूर्वक आकर बैठ गये। इनके बैठते ही मनोविनोद के लिये

લીધા જાઓ અને આ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારને સુરા, મદ્ય, માસ, મીધુ અને પ્રસન્ન મદિરાને અને ઘણી જાતના આ પુષ્પોને, વસ્ત્રોને, ગધમાલ્ય અને અલકારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજમહલ્રોના આવાસ સ્થાને પહોચાડો (ते वि साहरति) રાજની આજ્ઞા પ્રમાણે તેઓ બધાએ તે બધા પદાર્થોને રાજાઓના આવાસ સ્થાને પહોચાડી દીધા (तएण ते वासुदेवपामुक्खा त विउल असण ४ जाव पसन्न च आसाएमाणा ४ विहरति ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ ત્યા પહોચાડવામા આવેલા પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરેથી માડીને પ્રસન્ન મદિરા સુધીના બધી જાતના આહાર સામગ્રી વગેરેનુ ખૂબ રૂચિપૂર્વક પાન કર્યું

(जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा आयता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गधव्वेहिं जाव विहरति)

જમી પરવારીને જ્યારે તેઓ નિશ્ચિત થઇ ચૂકયા ત્યારે તેઓ મુખ પ્રક્ષાલન માટે ભોજન સ્થાનથી ઊભા થઇને બીજા પાસેના ત્યા તેઓએ કોગળા કર્યા અને ત્યારપછી તેઓ ફરી પોતપોતાના

मण्डपस्तत्रोपागच्छत. उपागत्य प्रत्येक 'नामङ्कितेषु' नामाङ्कितेषु स्व स्व नामाङ्कितेषु आसनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदीं राजकन्या 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्त. २ प्रतीक्षमाणा २ तिष्ठत इति घोषणा घोषयत, घोषयित्वा ममैतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्बिकारतथैव यावत् प्रत्यर्पयन्ति। ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! स्वयंवरमण्डपम् "आसिक्तसम-ज्जितोपलिप्तम्" आसिक्तम्-जलप्रक्षेपेणार्द्रीकृत, समार्जित-कचवराद्यपनयनेन संशोधितम्, उपलिप्त-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्त, तथा-सुगन्धवरगन्धित सुगन्धवरगन्धित-अगुरुतुरुष्कधूपसरलदाहादिजनितसुगन्धयुक्त, 'पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जोपचारकलित' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जोपचारकलित। 'कालागुरुप्रवर-कुन्दुरुष्कतुरुष्क-यावद्-गन्धवर्तिभूत, अत्र यावत्पदेन-धूपडज्झतमघमघन्तगन्धुद्धुयाभिराम' इति बोध्यम्।

सब के साथ हो। मडप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले आसन पर बैठजावें। बैठकर फिर वहा वह राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें। (घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) इस प्रकार की घोषणा करो और जब तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब इसकी हमें पीछे खबर दो। (तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने नृपाज्ञानुसार ऐसा ही किया-बाद में हमलोग आपकी आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा के पास भेज दी। (तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसियसम्मज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयार-कलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कं जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं

મંડપમા આવીને દરેક દરેક પોતપોતાના નામવાળા આસન ઉપર બેસી જાય ત્યા બેસીને તેઓ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીના આગમનની પ્રતીક્ષા કરે (घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને આમ થઈ જાય ત્યારે મને ખબર આપો (तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति) તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધુ કામ પતાવી દીધુ અને 'અમે લોકોએ આપની આજ્ઞા અનુસાર ઘોષણા કરી છે' એવા અર્થ રાજાની પાસે પહોચાડી દીધી

(तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसियसम्मज्जिओवलित्तं सुगंधवर-गंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कं जाव गंधवट्टिं

दिवसे प्रादुर्भूतप्रभातायां रजन्यां तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युद्गते द्रुपदस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः, चुलन्यादेव्या आत्मजायाः, धृष्टद्युम्नस्य भगिन्या द्रौपद्या राजवरकन्यायाः स्वयंवरो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं द्रुपदराजानमनुगृह्णन्तः स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारविभूषिता-हस्तिस्कन्धवरगताः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्ताः हयगजरथमहाभटचतुरङ्गबलेन यावत् परिक्षिप्ता=परिवृता यत्रैव स्वयंवर-

से ऐसी घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रिय ! कल सूर्योदय होने पर द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा और धृष्टद्युम्न की बहिन राजवर कन्या-द्रौपदी का स्वयंवर होगा (तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरण्ट० सेयवरचामर० हय गय रह० महया भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं२ नामंकिएसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह) इस लिये हे देवानुप्रियो ! आपलोग द्रुपदराजा के ऊपर कृपा करके स्नान आदि से निवट कर एवं समस्त अलंकारों से विभूषित होकर जहाँ स्वयंवर मंडप है वहां पधारे । आते समय हाथियों पर बैठकर आवे । कोरण्ट पुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र उस समय आप सब के ऊपर तने हों और श्वेत सुन्दर चामर ऊपर ढोरे जा रहे हों । हय, गज, रथ एवं महाभटों का समूहरूप चतुरंगबल आप

ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવાર થતા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા અને ધૃષ્ટદ્યુમ્નની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થશે

(तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरण्ट० सेयवरचामर० हय गय रह० महया भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને સ્નાન વગેરેથી પરવારીને તથા સમસ્ત અલંકારોથી વિભૂષિત થઈને જ્યાં સ્વયંવર મંડપ છે, ત્યાં હાથીઓ ઉપર સવાર થઈને પધારો કોરંટ પુષ્પોની માળાઓવાળું શોભતું છત્ર તે વખતે તમારા ઉપર તાણેલું હોવું જોઈએ અને સફેદ ચમરો પણ તમારા ઉપર ઢોળાતા હોવા જોઈએ હાથી, રથ અને મહા ભટોના સમૂહ રૂપ ચતુરંગિણી સેના તમારી સાથે હોવી જોઈએ વર

मण्डपस्तत्रैवोपागच्छत. उपागत्य प्रत्येक 'नामङ्कितेषु' नामाङ्कितेषु स्व स्व नामाक्षरयुक्तेषु आसनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदी राजकन्या 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणा. २ तिष्ठत इति घोषणा घोषयत, घोषयित्वा ममैनामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्बिकारतथैव यावत् प्रत्यर्पयन्ति। तत खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया.! स्वयंवरमण्डपम् "आसिक्तसम्मार्जितोपलिप्तम्=आसिक्तम्-जलप्रक्षेपेणार्द्रीकृत, समार्जित-कचवराद्यपनयनेन संशोधितम्, उपलिप्त-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्त, तथा-सुगन्धवरगन्धित सुगन्धवरगन्धित-अगुरुतुरुष्कर्पूरसरलदाहादिजनितसुगन्धयुक्त, 'पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जोपचारकलित' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जोपचारकलित। 'कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्क-यावद् गन्धवर्तिभूत, अत्र यावच्छब्देन-धूपडज्ञानप्रवरगन्धोद्धुयाभिराम' इति बोध्यम्।

सब के साथ हो। मडप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले आसन पर बैठजावें। बैठकर फिर वहा वर राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें। (घासण घोसेह २ मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) इस प्रकार की घोषणा करो और जब तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब इसकी हमें पीछे खबर दो। (तएण ते कोडुबिया तहेव जाव पच्चप्पिणति) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने नृपाज्ञानुसार ऐसा ही किया-बाद मे हमलोग आपकी आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा के पास भेज दी। (तएण से दुवए राया कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सयवरमडव आसियसमज्जिओवलित्त सुगंधवरगधिय पचवण्णपुप्फपुजोवयारकलिय कालागरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्क जाव गधवट्टिभूय मचाइमचकलियं

મડપમા આવીને દરેકે દરેક પોતપોતાના નામવાળા આસન ઉપર બેસી જાય ત્યા બેસીને તેઓ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીના આગમનની પ્રતીક્ષા કરે (ઘોસણ ઘોસેહ ૨ મમ એયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ) આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને આમ થઈ જાય ત્યારે મને ખબર આપો (તણ તે કોડુબિયા તહેવ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ) તે કૌટુબિક પુરૂષોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધુ કામ પતાવી દીધુ અને 'અમે લોકોએ આપની આજ્ઞા અનુસાર ઘોષણા કરી છે' એવા અર્થ રાજાની પાસે પહોચાડી દીધી

(तएण से दुवए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमडव आसियसमज्जिओवलित्त सुगंधवर गधिय पचवण्णपुप्फपुजोवयारकलिय कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्क जाव गधवट्टि-

धूपद्यमानमघमघायमानगन्धोद्धूताभिराम, तत्र कालागुरु' कृष्णागुरु., प्रवर-कुन्दुरुक्क-चीडानामको गन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्क च सिल्हक,'वृषश्च गन्धद्रव्य सयोगन इति द्वन्द्व', यद्वा-एतत्समन्वितो यो धूपस्तस्य दह्यमानस्य च सुरभिसमवायमानः-अतिशयवान्, गन्ध उद्भूतस्तेनाभिरामो रमणीय स तथा त तथा-ग गर्तिभूत ग गर्ति-ग गन्धवर्तिकातद्भूत-तत्सदृशी त्यातिशयात् तथा-'मचाइमचकलिय' मञ्चातिमञ्चकलित कुरुत, कृत्वा वासुदेवपामुक्खाण बहूण रायसहस्साण पत्तेय २ नाम काइ आसणाइ अत्थुयपच्च थुयाइ रएह २ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) इसके बाद द्रुपदराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुमलोग जाओ-और स्वयंवर मंडप को आसिक्त करो-जलसिंचन से आर्द्र करो, समार्जित करो-कचवर आदि को उससे बाहिर कर उसे साफ करो एवं उपलिप्त करो मिट्टी तथा गोबर से उसे लीपो। सुगन्धवर्तिभूत करो उसमें-अगुरु, गुग्गुल, कपूर आदि को जलाकर उनकी गंध से उसे सुगंध युक्त बनाओ पंचवर्ण के पुष्पों के पुंज उसमें जगह २ रखो। कृष्णागुरु प्रवर कुन्दुरुक्क, तुरुष्क गोंद इनके चूर्ण को वहां अग्नि में खूब जलाकर उनके गंध से उसे बहुत ही अधिक मनोभिराम बनाओ ज्यादा क्या-उस ऐसा करदो कि जिससे ऐसा ज्ञात हो कि यह एक सुगन्धित द्रव्य की वर्तिका है। वहां मचों के ऊपर मचों को

मूल मचाइमचकलिय करेह, कारित्ता वासुदेवपामुक्खाण बहूण रायसहस्साण पत्तेय २ नामकाइ आसणाइ जत्थुयपच्च थुयाइ रएह २ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને સ્વયંવર મંડપને આસિક્ત કરો-પાણી છાંટો, સમાર્જિત કરો, કચરા વગેરે સાફ કરો, અને ઉપલિપ્ત કરો, એટલે કે માટી તેમજ છાણથી લીપો સુગંધવર ગંધિત કરો એટલે કે તે સ્થાને અગુરૂ, ગુગ્ગુલ, કપૂર વગેરેનો ધૂપ કરીને તેની સુગંધથી તે સ્થાનને સુવાસિત કરો પંચવર્ણના પુષ્પપુંજના સમૂહો સ્થાને સ્થાને ગોઠવીને તમે મંડપની શોભામાં અભિવૃદ્ધિ કરો કૃષ્ણાગુરૂ, પ્રવર, કુંદરૂષ્ક, તુરૂષ્ક, લોબાન આ બધા પદાર્થોના ચૂર્ણને અગ્નિમાં નાખીને તે સ્થાનને સુગંધથી ખૂબ જ રમણીય બનાવી દો તે સ્થાનને તમે એવુ મઘમઘ સુગંધમય બનાવો કે જેથી તે સુગંધિત દ્રવ્યોની વર્તિકા (અગરબત્તી) જેવું લાગે ત

रायसहस्साणा पत्तेयं २ नामाङ्किआणि आसणाणि ' अत्थुयपच्चत्थुयाइं ' आस्तृत प्रत्यवस्तृतानि=आच्छादित प्रत्याच्छादितानि ' रएह ' रचयत, रचयित्वा एतामा ज्ञप्तिका प्रत्यर्पयत, तेऽपि=कौटुम्बिकपुरुषाः, यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ' तएणं ते ' वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० पहाया जाव सव्विड्ढीए जाव रवेण जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं २ नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइ रायवरकण्णं पडिवालेमाणा २ तिष्ठन्ति । तदनन्तरं खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहवे राजसहस्रा कल्ये प्रादुर्भूतायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युद्गते स्नाता यावत् सर्वालङ्कारविभूषिता हस्तिस्कन्धवरगता सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च उक्ता हय गज-यावत्-रथपदातिसमूहेन परिवृता सर्वर्द्धया यावत् ' शङ्खपणवपटहादीनां रवेण यत्रैव स्वयंवरमण्डपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्यानुपविशन्ति, अनुपविश्य प्रत्येकं २ 'नामाङ्कितेषु' नामाङ्कितेषु=स्वस्वनामाक्षरयुक्तेषु आसनेषु निषीदन्ति=उपविशन्ति, निषद्य द्रौपद्या वरकन्या ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्त =प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति ।

रखो। उन पर वासुदेव प्रमुख राजाओं के प्रत्येक के नाम के आसनों को आस्तृत-शुभवस्त्र से ढककर प्रत्यवस्तृत-और फिर शुभवस्त्र से आच्छादित कर रखो। रख कर फिर हमें पीछे इस सब कार्य के समाप्त होने की खबर दो। (ते वि जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार राजा की आज्ञानुसार उन कौटुम्बिक पुरुषों ने सब कार्य उचित रूप में करके पीछे राजा को " सब कार्य आज्ञानुसार यथोचित हो चुका है " ऐसी खबर करदी। (तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० पहाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामरेहिं हय गय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेण जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइ रायवरकण्णं पडिवालेमाणा २

ગયેાની ગેાઠવણુ કરેા ત્યા તમે વાસુદેવ પ્રમુખ દરકે દરેક રાજાના નામથી અંકિત થયેલા આસનેાને આસ્તૃત-સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાકીને, પ્રત્યાવસ્તૃત અને બીજા સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાકેા આ બધુ કામ પતાવીને તમે અમને ખબર આપેા (ते वि जाव पच्चप्पिणंति) આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાભળીને તે કૌટુંબિક પુરૂષેાએ તે મુજબ બધુ કામ પતાવી દીધુ અને ત્યારપછી ' તમારી આજ્ઞા મુજબ કામ બધુ પતી ગયુ છે ' એવી ખબર રાજાની પાસે પહેાચાડી

(तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० पहाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामरेहिं हय गय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेण जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइ रायवरकण्णं

ततः खलु 'पडुए' पाण्डुनामको राजा 'कल्लं' श्वस्य-प्रातः काले स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृतः सर्वर्द्धया यावत्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन समवभूता निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहवो राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतलपरिगृहीतदशनख

चिट्ठति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढे हुए ध्रियमाण कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरों से वीज्यमान होते हुए उच्च हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शंख पणव पटह आदि के साथ २ जहां वह स्वयंवर मंडप था-वहां आये। वहां आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अंकित आसनों पर पृथक २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएणं से पडुए राया कल्लं पाउप्पभायाए जाव विभूसिए सकारेट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छति-जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिट्ठति)

ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પ્રકાર થઈ ગઈ અને સવાર થતા સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પોતાના શરીરને બધા આભૂષણોથી શણગારીને, હાથીઓ ઉપર સવાર થ'ને, સુગંધિત કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત અને છત્રથી યુક્ત થઈ ઉત્તમ શ્વેત ચામરોથી વીજ્યમાન થતા તેમજ ઘોડા, હાથી યાવત્ રથ પદાતિ સમૂહથી પરિવૃત થતા પોતાના રાજ્ય વૈભવ અનુસાર યાવત્ શંખ પણવ પટ્ટહ વગેરે વાજ સાથે જ્યા સ્વયંવર મંડપ હતો ત્યા ગયા ત્યાં જઇને તેઓ પ્રવિષ્ટ થયા અને પ્રવિષ્ટ થઇને તેઓ પોત પોતાના ના ાગનો ઉપર બેસી ગયા અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીની

जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट
पामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव

शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य श्वेतवरचामरं गृहीत्वा 'उवीयमाणे' उपवीजयन् चामरादधुननेन सेवमान स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पासुमग्गाण करयल० वद्धावित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उवीयमाणे चिट्ठति) इस के बाद पाडु नामक राजा प्रातः काल स्नान से निवृत्त हो कर और समस्त अलङ्कारो से विभूषित होकर अपने पट्ट गजराज पर चढ कर कांपिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्वयंवर मंडप में आये। जब ये गजराज पर चढे हुए आरहे थे उस समय इन के ऊपर कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र, छत्रधारियों ने तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज, रथ एवं पदादि समूहरूप चतुरंगिणी सेना इनके साथ चल रही थी। राजसी ठाटबाट से ये सुसज्जित थे। विविध बाजे साथ में बजते हुए-आरहे थे। मंडप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे हुए थे-वहां गये। वहां जाकर उन्होंने उन वसुदेव प्रमुख हजारो राजाओं को दोनों हाथ जोड कर बडी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जय विजय शब्दो द्वारा उन्हें बधाई दी। बधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए वहां बैठ गये ॥ सू० २० ॥

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उवीयमाणे चिट्ठति)

ત્યારપછી પાંડુ નામક રાજા સવારે સ્નાનથી પરવારીને સમસ્ત અલંકારોથી પોતાના શરીરને શણગારીને અને પોતાના મુખ્ય ગજરાજ ઉપર સવાર થઈને કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચેથી પસાર થઈને સ્વયંવર મંડપમાં આવ્યા જ્યારે તેઓ ગજરાજ ઉપર બેસીને આવતા હતા ત્યારે કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત છત્ર છત્રધારીઓએ તાણેલું હતું ચામર ઢોળનારાઓ શ્વેત ચામરો ઢોળી રહ્યા હતા, ઘોડા, હાથી, રથ અને પદાતિ સમૂહ રૂપ ચતુરંગિણી સેના તેમની આગે સાથે ચાલી રહી હતી રાજસી ઠાઠથી તેઓ સુસજ્જિત હતા, અનેક જાતના વાજાંઓ વાગી રહ્યા હતા મંડપમાં આવીને તેઓ જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યાં ગયા જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યાં તેમની પાસે જઈને તેઓએ વાસુદેવ પ્રમુખ સર્વ રાજાઓને ખૂબ જ નમ્રપણે બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા જય વિજય શબ્દોથી તેઓને અભિનંદિત કર્યા અભિનંદિત કર્યા બાદ તેઓ કૃષ્ણ વાસુદેવની ઉપર શ્વેત ચામર ઢોળતા ત્યાં બેસી ગયા ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

ततः खलु 'पडुए' पाण्डु नामको राजा 'कल्ले' प्रत्यूषे-प्रातः काले स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृतः सर्वर्द्धया यावत्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन समवभूता निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवमनुरक्षतां करतलपरिगृहीतदशनख चिट्ठति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढे हुए घियमाण कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरों से वीज्यमान होते हुए अश्व, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शङ्ख पणव पटह आदि के साथ २ जहां वह स्वयंवर मंडप था-वहां आये। वहां आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अङ्कित आसनों पर पृथक २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएणं से पडुए राया कल्ल पाउ जाव विभूसिए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुर मज्झमज्झेणं निग्गच्छति-जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव

પડિવાલેમાણા २ चिट्ठति)

ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પ્રસાર થઈ ગઈ અને સવાર થતા સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પોતાના શરીરને બધા આભૂષણોથી શણગારીને, હાથીઓ ઉપર સવાર થ'ને, સુગંધિત કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત અને છત્રથી યુક્ત થઈ ઉત્તમ શ્વેત ચામરોથી વીજ્યમાન થતા તેમજ ઘોડા, હાથી યાવત્ રથ પદાતિ સમૂહથી પરિવૃત થતા પોતાના રાજ્ય વૈભવ અનુસાર યાવત્ શંખ પણવ પટ્ટહ વગેરે વાજાઓની સાથે જ્યા સ્વયંવર મંડપ હતો ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેઓ બધા મંડપમા પ્રવિષ્ટ થયા અને પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓ પોત પોતાના નામાંકિત જુદા જુદા આસનો ઉપર બેસી ગયા અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીની પ્રતીક્ષા કરવા લાગ્યા

(तएणं से पडुए राया कल्ल पाउ जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हय गय० सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा बहवे ।

शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य श्वेतवरचामरं गृहीत्वा 'उद्धूयमाणे' उपवीजयन् चामरादिधूननेन सेवमान स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पामुक्खाणं करयल० वद्धावित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उवधीयमाणे चिट्ठति) इस के बाद पाडु नामक राजा प्रातः काल स्नान से निवट कर और समस्त अलङ्कारो से विभूषित होकर अपने पट्ट गजराज पर चढ कर कांपिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्वयंवर मण्डप में आये। जब ये गजराज पर चढे हुए आरहे थे उस समय इन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विरजित छत्र, छत्रधारियों ने तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज, रथ एवं पदादि समूहरूप चतुरङ्गिणी सेना इनके साथ चल रही थी। राजसी ठाटबाट से ये सुसज्जित थे। विविध बाजे साथ में बजते हुए-आरहे थे। मण्डप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे हुए थे-वहां गये। वहां जाकर इन्होंने उन वसुदेव प्रमुख हजारो राजाओं को दोनों हाथ जोड कर बडी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जय विजय शब्दो द्वारा उन्हें बधाई दी। बधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए वहां बैठ गये ॥ सू० २० ॥

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल०वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उवधीयमाणे चिट्ठति)

ત્યારપછી પાંડુ નામક રાજા સવારે સ્નાનથી પરવારીને સમસ્ત અલંકારોથી પોતાના શરીરને શણગારીને અને પોતાના મુખ્ય ગજરાજ ઉપર સવાર થઈને કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચેથી પસાર થઈને સ્વયંવર મંડપમાં આવ્યા જ્યારે તેઓ ગજરાજ ઉપર બેસીને આવતા હતા ત્યારે કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત છત્ર ધરવાવાળીઓએ તાણેલુ હતું ચામર ઢોળનારાઓ શ્વેત ચામરો ઢોળી રહ્યા હતા, ઘોડા, હાથી, રથ અને પદાતિ સમૂહ રૂપ ચતુરંગિણી સેના તેમની આગે સાથે ચાલી રહી હતી ગજની ઠાઠથી તેઓ સુસજ્જિત હતા, અનેક જાતના વાજાઓ વાગી રહ્યા હતા મંડપમાં આવીને તેઓ જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યાં ગયા જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યાં તેમની પાસે જઈને તેઓએ વાસુદેવ પ્રમુખ સર્વ રાજાઓને ખૂબ જ નમ્રપણે બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા જય વિજય શબ્દોથી તેઓને અભિનંદિત કર્યા અભિનંદિત કર્યા બાદ તેઓ કૃષ્ણ વાસુદેવની ઉપર શ્વેત ચામર ઢોળતા ત્યાં બેસી ગયા ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

ततः खलु 'पडुए' पाण्डुनामको राजा 'कल्ल' श्वः-प्रातः प्राप्ते स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृतः सर्वर्द्धया यावत्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहवो राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां बहूनामभिगृहीतभवनस

चिट्ठति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढे हुए धियमाण कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरों से वीज्यमान होते हुए एवं हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शंख पणव पटह आदि के साथ २ जहां वह स्वयंवर मंडप था-वहां आये। वहां आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अंकित आसनों पर पृथक २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएणं से पडुए राया कल्लं पाउ जाव विभूसिए सकारंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति-जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेवे पामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिट्ठति)

ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પ્રકાર થઈ ગઈ અને સવાર થતા સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પોતાના શરીરને બધા આભૂષણોથી શણગારીને, હાથીઓ ઉપર સવાર થઈને, સુગંધિત કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત અને છત્રથી યુક્ત થઈ ઉત્તમ શ્વેત ચામરોથી વીજ્યમાન થતા તેમજ ઘોડા, હાથી યાવત્ રથ પદાતિ સમૂહથી પરિવૃત થતા પોતાના રાજન વૈભવ અનુસાર યાવત્ શંખ પણવ પટહ વગેરે વાજાઓની સાથે જ્યાં સ્વયંવર મંડપ હતો ત્યાં આવ્યા ત્યાં જઈને તેઓ બધા મંડપમાં પ્રવિષ્ટ થયા અને પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓ પોત પોતાના નામાંકિત જુદા જુદા આસનો ઉપર બેસી ગયા અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીની પ્રતીક્ષા કરવા લાગ્યા

(तएणं से पडुए राया कल्लं पाउ जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हय गय० सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा तेणेव

वस्त्राणि परिधाय ' जिणपडिमाण अच्चणं करेइ ' जिनप्रतिमाना, कामदेव प्रतिमानामर्चन करोति विवाहविधि निर्विघ्न सपन्नार्थ मिति भावः ' करित्ता ' कृत्वा ' जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ' यत्रैवा-तःपुर तत्रैवो- पागच्छति ॥सू०२१॥

द्रौपदीचर्चा

यत्तु—" जिणपडिमाण अच्चणं करेइ " इति पाठ समाश्रित्य भगवतोऽर्हतः पूजन जैनधर्मानुयायिभि' कर्त-यमित्याहुस्तन्मिथ्यात्वविलसितम् , अस्य पाठस्य चरितानुवादरूपत्वेन विधायकत्वासम्भवात् । विधिवाक्य हि जिनाज्ञाया बोधकत्वेन विधायकं भवति, यथा—भगवता विधेयतयोपदिष्ट षड्विधावश्यक चतुर्विध-

---

जिन प्रतिमा का कामदेव की प्रतिमा का निर्विघ्न विवाहकार्य के लिये अर्चन करती है अर्चन कर के फिर वह (जेणेव अते उरे तेणेव उवागच्छइ) जहां अत पुर था वहा चली गई ॥ सू० २१ ॥

द्रौपदी चर्चा

जो "जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" इस पाठका आश्रय लेकर प्रतिमापूजन की उपयोगिता कहते हुए यह कहते हैं, कि " अर्हत भगवान की प्रतिमा की पूजा जैनधर्म के पालको को करना चाहिये" यह उनका कथन मिथ्यात्व का विलास ही है। क्यो कि यह " जिनपडिमाण " इत्यादि वाक्य चरित का ही अनुवादक है-अतः ऐसे वाक्य किसी मुख्य अर्थ के विधायक नहीं हुआ करते हैं। चारितानुवाद से तो सिर्फ जिस व्यक्ति ने जो २ आचरण किया है उसका ही बोध होता है। शास्त्र विहित मार्गके निर्देशक विधिवाक्य हुआ करते हैं-क्यों कि कि ऐसे वाक्य जिन भगवान की आज्ञाके विधायक होते हैं। जिस प्रकार षट्

પ્રતિમાનુ કામદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિઘ્ને વિવાહકાર્ય સંપન્ન થવાના હેતુથી અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યા રણવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રૌપદી ચર્ચા

કેટલાક "जिणपडिमाण अच्चण करेइ" આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજનની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે " અર્હંત ભગવાનની પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવું જોઇએ " તેમનુ આ કથન સત્યથી બહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે આ " जिनपडिमाण " વગેરે વાકય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે એવા વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને સ્પષ્ટ કરનારા હોતા નથી ચરિતાનુવાદથી તો ફક્ત જે માણસે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનુ જ જ્ઞાન થાય તેમ છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને બતાવનારા તો વિધિ વાકયો જ થાય છે જેવી રીતે

मूलम्–तएण सा दोवइ रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया जिणपडिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता ' कयबलिकम्मा ' कृतबलि कर्मा अन्नादिषु वायसादिप्राणिनां सविभागो बलिकर्म तत् कृत यया सा तथा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता ' सुद्धप्पावेसाइ ' शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि प्रवेश्यानि-सभाया प्रवेष्टु योग्यानि, यत्परिधानेन सभाया लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि ' पवरपरिहिया ' प्रवरपरिहिता-प्रवरविधिना प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती आर्षत्वात् कर्तरिक्त,

'तएण सा दोवई रायवर कन्ना' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहा स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ) उस ओर गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमगल पायच्छित्ता) वहा जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, स्नानकर फिर उसने काक पक्षि आदि को अन्नादि का भाग देने रूप बलि कर्म किया कौतुक मगल प्रायश्चित्त किये। (सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मागलिक वस्त्र अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाण अच्चण करेइ)

' तएण सा दोवईरायवरकन्ना ' इत्यादि—

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારપછી (सा दोवई रायवरकन्ना) તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી (जेणेव मज्जणघरे) જ્યા સ્નાનઘર હતુ (तेणेव उवागच्छइ) ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय कोउयमगलपायच्छित्ता) ત્યા જઈને તેણે સ્નાનઘરમા સ્નાન કર્યુ સ્નાન કર્યા બાદ તેણે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યુ–કૌતુક મગળ પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા (सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ) સભામા પ્રવેશવા યોગ્ય સ્વચ્છ માગલિક વસ્ત્રો તેણે સરસ રીતે પહેર્યા, ત્યારપછી તે સ્નાનઘરથી બહાર નીકળી (जिणपडिमाण अच्चण [illegible])ન

वस्त्राणि परिधाय ' जिणपडिमाण अच्चणं करेइ ' जिनप्रतिमाना, कामदेव प्रतिमानामर्चन करोति विवाहविधि निर्विघ्न सपन्नार्थ मिति भावः ' करित्ता ' कृत्वा ' जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ' यत्रैवा-तःपुर तत्रैवो- पागच्छति ॥सू०२१॥

द्रौपदीचर्चा

यत्तु–" जिणपडिमाण अच्चणं करेइ " इति पाठ समाश्रित्य भगवतोऽर्हतः पूजन जैनधर्मानुयायिभि' कर्तव्यमित्याहुस्तन्मिथ्यात्वविलसितम् , अस्य पाठस्य चरितानुवादरूपत्वेन विधायकत्वासम्भवात् । विधिवाक्य हि जिनाज्ञाया बोधकत्वेन विधायक भवति, यथा–भगवता विधेयतयोपदिष्ट षड्विधावश्यक चतुर्विध-

---

जिन प्रतिमा का कामदेव की प्रतिमा का निर्विघ्न विवाहकार्य के लिये अर्चन करती है अर्चन कर के फिर वह (जेणेव अते उरे तेणेव उवागच्छइ) जहां अत पुर था वहां चली गई ॥ सू० २१ ॥

द्रौपदी चर्चा

जो "जिणपडिमाण अच्चणं करेइ" इस पाठका आश्रय लेकर प्रतिमापूजन की उपयोगिता कहते हुए यह कहते हैं, कि " अर्हत भगवान की प्रतिमा की पूजा जैनधर्म के पालको को करना चाहिये" यह उनका कथन मिथ्यात्व का विलास ही है। क्यो कि यह " जिनपडिमाण " इत्यादि वाक्य चरित का ही अनुवादक है-अतः ऐसे वाक्य किसी मुख्य अर्थ के विधायक नहीं हुआ करते हैं । चारितानुवाद से तो सिर्फ जिस व्यक्ति ने जो २ आचरण किया है उसका ही बोध होता है। शास्त्र विहित मार्गके निर्देशक विधिवाक्य हुआ करते हैं-क्यों कि कि ऐसे वाक्य जिन भगवान की आज्ञाके विधायक होते हैं। जिस प्रकार षट्

પ્રતિમાનુ ડામદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિઘ્ને વિવાહકાર્ય સપન્ન થવાના હેતુથી અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યા રણવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રૌપદી ચર્ચા

કેટલાક "जिणपडिमाण अच्चण करेइ" આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજનની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે " અર્હત ભગવાનની પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવુ જોઇએ " તેમનુ આ કથન સત્યથી બહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે આ " जिनपडिमाण " વગેરે વાકય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે એવા વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને સ્પષ્ટ કરનારા હોતા નથી ચરિતાનુવાદથી તો ફક્ત જે માણસે જે તે આચરણ કર્યુ છે, ફક્ત તેનુ જ જ્ઞાન થાય તેમ છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને બતાવનારા તો વિધિ વાકયો જ થાય છે જેવી રીતે

मूलम्–तएणं सा दोवइ रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ, करित्ता जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता ' कयबलिकम्मा ' कृतबलिकर्मा अन्नादिषु वायसादिप्राणिना संविभागो बलिकर्म तत् कृतं यया सा तथा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता ' सुद्धप्पावेसाइं ' शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि प्रवेश्यानि-सभाया प्रवेष्टुं योग्यानि, यत्परिधानेन सभाया लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्तीत्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि ' पवरपरिहिया ' प्रवरपरिहिता-प्रवरविधिना प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती आर्षत्वात् तृतीयार्थे क्तः,

'तएणं सा दोवई रायवर कन्ना' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहां स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ) उस ओर गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगल पायच्छित्ता) वहां जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, नहाकर फिर उसने काक पक्षि आदि को अन्नादि का भाग देने रूप बलि कर्म किया कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किये। (सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया) सभा मे प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मांगलिक वस्त्र अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ)

' तएणं सा दोवईरायवरकन्ना ' इत्यादि—

ટીકાર્થ–(तएणं) त्यार५छी (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) જ્યાં स्नानधर हतुं (तेणेव उवागच्छइ) त्यां गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय कोउयमंगलपायच्छित्ता) त्यां જઈને तेणे स्नानधरमां स्नान कर्युं स्नान કર્યા બાદ તેણે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને अन्न वगेरेनो भाग ३पीने બલિકર્મ કર્યું–કૌતુક મંગળ પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા (सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ) સભામા પ્રવેશવા યોગ્ય સ્વચ્છ માંગલિક વસ્ત્રો તેણે સરસ રીતે પહેર્યા, त्यारपछी ते स्नानधरथी બહાર નીકળી (जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ) જીન

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तूनामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेय स्यात् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र खलु प्रतिमाया भगवतोऽर्हत. पूजन न कृतम्, जैनप्रवचने प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य षट्कायजीवहिंसासाध्यतया जैन धर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं षट्कायहिंसाऽवश्यभाविनी, एव च

जाता है कि वह उन्हीं मे चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में सङ्गादि शस्त्र आदि वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अत' उनमें भी पूज्यता आजानी चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी विधेय कोटि मे मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा मे जो भगवान अर्हत की पूजन नहीं की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन मे प्रतिमा पूजन के विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन षट् काय के जीवों की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन मे जिनेन्द्र द्वारा प्रतिप्रादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का अभाव है। षट् काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

ન હોય તેની એ ફરજ થઇ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને મનને તલ્લીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આચરે

ચરિતને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાકયને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજની વાત સાભળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઇએ અને આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય કરવી જોઇએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા ભગવાન અર્હંતનુ પૂજન કર્યું નથી તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપન્ન હોય છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ધર્મ-આત્મકલ્યાણ સાધક રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી

सघस्य कर्तव्य भवति ।

तथा चोक्तम्—समणेण सावएण य अवस्सकायव्वय हवइ जम्हा ।
अतो अहोनिसस्स य, तम्हा आवस्सय नाम ॥ १ ॥ इति (अनुयोगद्वा०)

छाया-श्रमणेन श्रावकेण च अवश्यकर्त्तव्यक भवति यस्माद् ।
अन्तेऽहर्निशस्य च तस्माद् आवश्यक नाम ॥ १ ॥

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा ।
तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओकाल छव्विह आवस्सय करेंति (अनु०)

छाया-यदिद श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा ।
तच्चित्तः तन्मना यावद् उभयकाल षड्विधमावश्यक नाम ॥ २ ॥

आवश्यक कार्यों को प्रतिपादन करने वाले वाक्य जिन प्रभु की आज्ञा के निर्देशक होने से साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघ को उपादेय माने जाते हैं । शास्त्र में भी यही बात कही गई है

' समणे ण सावएण य ' इत्यादि

शास्त्र विहित षट् आवश्यक कर्तव्य चतुर्विध श्रीसघ को रात्री एव दिनके अतिम भागमें अवश्य करन चाहिये । उनके किये विना मुनि का मुनिपन नही और श्रावकका श्रावकपन नही । अत' षट् आवश्यक कार्य अवश्य करने योग्य होनेसे आवश्यक रूप से प्रतिपादित हुए हैं ।

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे वा जाव उभओ काल " इत्यादि ।

इसलिये जब ये आवश्यक हैं तब चाहे साधु हो या साध्वी हो श्रावक हो या श्राविका हो कोई भी क्यो न हो उसका यह कर्तव्य हो

છ આવશ્યક કાર્યોના પ્રતિપાદન કરનારા વાક્યો જીન પ્રભુની આજ્ઞાના નિર્દેશક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સઘના માટે યોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમા પણ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે —

" સમણેણ સાવએણ ય ' ઈત્યાદિ

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવશ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સઘને રાત્રિ તેમજ દિવસના અતિમ ભાગમા ચોક્કસ પણે આચરવા જોઈએ તેના આચરણ વગર મુનિનુ મુનિપણુ નથી અને શ્રાવકનુ શ્રાવકપણુ નથી એટલા માટે છ આવશ્યક કાર્ય ચોક્કસ કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ काल इत्यादि—આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ' આવશ્યક ' છે, ત્યારે ભલે સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય [illegible]મ

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तूनामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेयं स्यात् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र खलु प्रतिमाया भगवतोऽर्हतः पूजनं न कृतम्, जैनप्रवचने प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य षट्कायजीवहिंसासाध्यतया जैनधर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं षट्कायहिंसाऽवश्यभाविनी, एव च

जाता है कि वह उन्हीं में चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में सट्टगादि शस्त्र आदि वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अतः उनमें भी पूज्यता आजानी चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी विधेय कोटि मे मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा मे जो भगवान अर्हत की पूजन नहीं की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन षट् काय के जीवों की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन मे जिनेन्द्र द्वारा प्रतिप्रादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का अभाव है । षट् काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

ન હોય તેની એ ફરજ થઇ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને મનને તલ્લીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આચરે

ચરિતને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાકયને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજની વાત સાભળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઇએ અને આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય કરવી જોઇએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા ભગવાન અર્હંતનુ પૂજન કર્યું નથી તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપન્ન હોય છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ધર્મ-આત્મકલ્યાણ સાધક રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી

सघस्य कर्तव्य भवति ।

तथा चोक्तम्—समणेण सावएण य अवस्सकायव्वय हवइ जम्हा ।

अतो अहोनिसस्स य, तम्हा आवस्सय नाम ॥ १ ॥ इति (अनुयोगद्वा०)

छाया–श्रमणेन श्रावकेण च अवश्यकर्त्तव्यक भवति यस्मात् ।

अन्तेऽहर्निशस्य च तस्माद् आवश्यक नाम ॥ १ ॥

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा ।

तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओकाल छव्विह आवस्सय करेंति (अनु०)

छाया–यदिद श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा ।

तच्चित्तः तन्मना यावद् उभयकाल षड्विधमावश्यक नाम ॥ २ ॥

आवश्यक कार्यों को प्रतिपादन करने वाले वाक्य जिन प्रभु की आज्ञा के निर्देशक होने से साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघ को उपादेय माने जाते हैं । शास्त्र में भी यही बात कही गई है

' समणे ण सावएण य ' इत्यादि

शास्त्र विहित षट् आवश्यक कर्तव्य चतुर्विध श्रीसघ को रात्री एव दिनके अतिम भागमे अवश्य करन चाहिये । उनके किये विना मुनि का मुनिपन नही और श्रावकका श्रावकपन नही । अत षट् आवश्यक कार्य अवश्य करने योग्य होनेसे आवश्यक रूप से प्रतिपादित हुए हैं ।

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे वा जाव उभओ काल " इत्यादि ।

इसलिये जब ये आवश्यक हैं तब चाहे साधु हो या साध्वी हो श्रावक हो या श्राविका हो कोई भी क्यो न हो उसका यह कर्तव्य हो

છ આવશ્યક કાર્યોના પ્રતિપાદન કરનારા વાક્યો જીન પ્રભુની આજ્ઞાના નિર્દે-શક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સ ઘના માટે ચોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમા પણ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે —

" સમણેણ સાવણ્ય ' ઈત્યાદિ

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવશ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સ ઘને રાત્રિ તેમજ દિવ સના અ તિમ ભાગમા ચોક્કસ પણે આચરવા જોઈએ તેના આચરણ વગર મુનિનુ મુનિપણુ નથી અને શ્રાવકનુ શ્રાવકપણુ નથી એટલા માટે છ આવશ્યક કાર્ય ચોક્કસ કરવા ચોગ્ય હોવાથી આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ काल इत्यादि—આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ' આવશ્યક ' છે, ત્યારે ભલે સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય [illegible]

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तूनामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेय स्यात् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र खलु प्रतिमाया भगवतोऽर्हत. पूजन न कृतम्, जैनप्रवचने प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य षट्कायजीवहिंसासा-यतया जैन धर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं षट्कायहिंसाऽवश्यभाविनी, एव च

जाता है कि वह उन्हीं मे चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में सङ्गादि शस्त्र आदि वस्तुओ की भी पूजा सुनी जाती है-अत' उनमें भी पूज्यता आजानी चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी विधेय कोटि मे मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा मे जो भगवान अर्हत की पूजन नहीं की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन षट् काय के जीवो की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन मे जिनेन्द्र द्वारा प्रतिप्रादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का अभाव है । षट् काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

ન હોય તેની એ ફરજ થઇ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને મનને તલ્લીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આચરે

ચરિતને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાકયને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજની વાત સાભળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઇએ અને આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય કરવી જોઇએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા ભગવાન અર્હંતનુ પૂજન કર્યું નથી તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સ પન્ન હોય છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ધર્મ-આત્મકલ્યાણ સાધક રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી

प्राणातिपातविरमणव्रतिना मुनीना प्रतिमापूजोपदेशे स्वधर्मस्य मूलोच्छेद स्या देव । अत एव-जिनप्रणीतागमे प्रतिमापूजाया विधिर्नोपलभ्यते । प्रतिमास्थापनार्थं

अगीकार करने में उस पूजन के समय में षट् काय के जीवों की विराधना जब अवश्यभावी है तब भला! हम इसे विधेय मार्ग कैसे मान सकते हैं, और कैसे यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस पूजन का कर्त्ता सच्चे धर्म का उपासक है तथा प्रतिमापूजन को धर्म माना जावे तो एक बड़ा भारी दोष यह भी आकर उपस्थित होता है कि सर्व प्रकार के हिंसादिक पापों से सर्वथा विरक्त महाव्रती मुनिजन जब इस प्रतिमापूजनरूप धर्म का उपदेश करेंगे तब वे भी कारितादिरूप कराने आदि रूप से इसके कर्त्ता होने के कारण अपने मुनिधर्म के मूलतः ही विध्वसक माने जायेंगे। मुनिजन हिंसादिक सावद्य व्यापारों के कृत, कारित एव अनुमोदना इन तीन करण एव तीन योग से त्यागी हुआ करते हैं। जब ये प्रतिमापूजन रूप धर्म का गृहस्थों के लिये व्याख्यान देंगे तब उनके व्याख्यान से प्रेरित हो गृहस्थ जन उस ओर अपनी प्रवृत्ति चालू करने वाले होंगें, और उस प्रकार के उनके व्यवहार से इस कार्य में षट्काय के जीवों की विराधना होने से उस विराधना

જે સાધ્ય થાય છે તેમા તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધા દુર્લભ છે એટલા માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના જ્યારે ચોક્કસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર કરીએ કે આ જાતનુ પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે? જો પ્રતિમા પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકારના હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત વિધ્વસક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવદ્ય વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જ્યારે તેઓ પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનુ ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના આચરણોથી આ કામમા ષટ્કાય જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહાવ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે? એથી-ધર્મ લાભને ઇચ્છતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ છે.

देवायतनप्रतिमाऽऽरामकूपादिकरणे तदुपदेशदाने च पृथिवीकायहिंसाया अवश्यम्भाव. । देवायतनादिकरणे पूजाङ्गतयास्नान प्रतिमास्नपनवस्त्रक्षालनादिकरणे च तदुपदेशदाने चाप्कायविराधनमपि, तथा-पूजाङ्गधूपदीपारात्रिकसम्पादन चाग्निकायविराधनया विना न सभवति, वायुकायहिंसन तु धूपदीपारात्रिका

के कराने वाले ये उपदेशक मुनिजन माने जायेगे–तब इनके अहिंसादि महाव्रत त्रियोग और त्रिकरण विशुद्ध कैसे रह सकेंगे ? अतः लाभ की चाहना में इन विचारों की भूल में ही बडी भारी भूल होने से ये अपने धर्म के सच्चे आराधक नही माने जा सकेगे। इसलिये यह बात अवश्य माननी चाहिये कि जिन प्रणीत आगम में प्रतिमापूजन की विधि नही पाई जाती है।

इसी प्रकार प्रतिमा स्थापन, प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाना, मदिर वगैरह बनवाना एव उस प्रतिमा की पूजा निमित्त वगीचा तथा कुआ आदि का करवाना ये बाते पृथिवी कायिक जीवों की हिंसा के कारण हैं अतः त्याज्य है। इनके बनवाने आदि का जो उपदेश करते है वे भी पृथिवीकायिक जीवों की हिंसा से मुक्त नही हो सकते हैं। इसी प्रकार पूजन का अग होने से स्नान, प्रतिमा के अभिषेक तथा पूजन के वस्त्रों के धोने साफ करने मे और उसके उपदेश देने में अप्काय के जीवो की विराधना होती है, धूपखेना, दीपक जलाना, आरती उतारना ये सब बातें अग्निकायिक जीवों की विराधना के विना नही हो सकती है अर्थात् इनमें अग्निकायिक जीवो की विराधना अवश्यभाविनी है।

બેસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી જોઇએ કે 'જીન પ્રણીત' આગમમા પ્રતિમા–પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા–સ્થાપન, –પ્રતિમા–પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મદિર વગેરે બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉદ્યાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર કરાવવા એ પૃથ્વિ–કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે–એટલા માટે ત્યાજ્ય છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વિ–કાયિક જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઇ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન, પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામા અને તેના ઉપદેશમા પણ અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ–કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સભવી શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમા અગ્નિ–કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

प्राणातिपातविरमणव्रतिना मुनीना प्रतिमापूजनोपदेशे स्वधर्मस्य मूलोच्छेद स्या देव । अत एव-जिनप्रणीतागमे प्रतिमापूजनविधिर्नोपलभ्यते । प्रतिमास्थापनार्थं

अगीकार करने में उस पूजन के समय में षट् काय के जीवों की विरा धना जब अवश्यभावी है तब भला! हम इसे विधेय मार्ग कैसे मान सकते हैं, और कैसे यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस पूजन का कर्त्ता सच्चे धर्म का उपासक है तथा प्रतिमापूजन को धर्म माना जावे तो एक बड़ा भारी दोष यह भी आकर उपस्थित होता है कि सर्व प्रकार के हिंसादिक पापों से सर्वथा विरक्त महाव्रती मुनिजन जब इस प्रतिमापूजनरूप धर्म का उपदेश करेंगे तब वे भी कारितादिरूप कराने आदि रूप से इसके कर्त्ता होने के कारण अपने मुनिधर्म के मूलत. ही विध्वसक माने जायेंगे। मुनिजन हिंसादिक सावद्य व्यापारों के कृत, कारित एव अनुमोदना इन तीन करण एव तीन योग से त्यागी हुआ करते हैं। जब ये प्रतिमापूजन रूप धर्म का गृहस्थो के लिये व्याख्यान देंगे तब उनके व्याख्यान से प्रेरित हो गृहस्थ जन उस ओर अपनी प्रवृत्ति चालू करने वाले होंगें, और उस प्रकार के उनके व्यवहार से इस कार्य में षट्काय के जीवों की विराधना होने से उस विराधना

જે સાધ્ય થાય છે તેમા તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધા દુર્લભ છે એટલા માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના જ્યારે ચોક્કસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર કરીએ કે આ જાતનુ પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે ? જો પ્રતિમા પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકા રના હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત વિધ્વ સક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવદ્ય વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જ્યારે તેઓ પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનુ ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના આચરણોથી આ કામમા ષટ્કાય જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહા વ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે ? એથી ધર્મ- લાભને ઇચ્છતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ

देवायतनप्रतिमाऽऽरामकूपादिकरणे तदुपदेशदाने च पृथिवीकायहिंसाया अवश्यम्भावः । देवायतनादिकरणे पूजाङ्गतयास्नान प्रतिमास्नपनवस्त्रक्षालनादिकरणे च तदुपदेशदाने चाप्कायविराधनमपि, तथा-पूजाङ्गधूपदीपारात्रिकसम्पादन चाग्निकायविराधनया विना न सभवति, वायुकायहिंसन तु धूपदीपारात्रिका

के कराने वाले ये उपदेशक मुनिजन माने जायेगे–तब इनके अहिंसादि महाव्रत त्रियोग और त्रिकरण विशुद्ध कैसे रह सकेंगे ? अतः लाभ की चाहना मे इन विचारों की भूल में ही वडी भारी भूल होने से ये अपने धर्म के सच्चे आराधक नही माने जा सकेगे। इसलिये यह बात अवश्य माननी चाहिये कि जिन प्रणीत आगम में प्रतिमापूजन की विधि नही पाई जाती है।

इसी प्रकार प्रतिमा स्थापन, प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाना, मदिर वगैरह बनवाना एव उस प्रतिमा की पूजा निमित्त वगीचा तथा कुआ आदि का करवाना ये बाते पृथिवी कायिक जीवों की हिंसा के कारण हैं अतः त्याज्य है। इनके बनवाने आदि का जो उपदेश करते है वे भी पृथिवीकायिक जीवों की हिंसा से मुक्त नही हो सकते है। इसी प्रकार पूजन का अग होने से स्नान, प्रतिमा के अभिषेक तथा पूजन के वस्त्रों के धोने साफ करने मे और उसके उपदेश देने में अप्काय के जीवो की विराधना होती है, धूपखेना, दीपक जलाना, आरती उतारना ये सब बातें अग्निकायिक जीवों की विराधना के विना नही हो सकती है अर्थात् इनमें अग्निकायिक जीवो की विराधना अवश्यभाविनी है।

બેસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી જોઇએ કે 'જીન પ્રણીત' આગમમા પ્રતિમા–પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા–સ્થાપન, –પ્રતિમા–પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મદિર વગેરે બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉધાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર કરાવવા એ પૃથ્વિ–કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે–એટલા માટે ત્યાજ્ય છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વિ–કાયિક જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઇ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન, પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામા અને તેના ઉપદેશમા પણ અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ–કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સભવી શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમા અગ્નિ–કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

दिभिश्चामरादिवीजनैर्नृत्यगीतवाद्यैश्च सविशद भवति, वनस्पतिकायविराधन च प्रतिमापूजानिमित्तकेऽनन्तकायकोमलविविधफलपुष्पपत्रसग्रहे नियत भवति। पृथिवीकायाद्याश्रिता बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसगोपिशरीरा द्वीन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःखैस्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्खलितपतिता म्रियन्ते।

धूपकेधु आ से, दीप तथा आरती की ज्योति से चमर आदि के ढोरने से, नृत्य करने से, गीत गाते समय मुख से निकले हुए गर्म वायु से, एव वाजों के बजाने से वायुकायिक जीवों की विराधना होती हुई स्पष्ट मालूम देती है। वनस्पति कायिक जीवों की विराधना भी इस समय इस प्रकार से होती है, कि-मूर्ति पूजन के लिये उसके पूजक अनन्त कायिक ऐसे कोमल अनेक प्रकार के फल, पुष्प और पत्रों का सग्रह जो करता है इस प्रकार इस पूजन में षट्कायिक जीवों को हिंसा का आरभ स्पष्ट देखा जाता है। तथा त्रस कायिक जीवों का भी इसके निमित्तहनन होता है और वह इस प्रकार से-कि जब पृथिवीकायिकादि जीवों का आरभ प्रतिमा आदि के निर्माण में या देव आयतन (मन्दिर) आदि के कराने में किया जाता है तो उस समय उसके आश्रित जो बहुत से अनेक जाति के निरपराधी, हीन, दीन, दुर्बल, प्रकृति से भयशील तथा सगोपित शरीरवाले ऐसे द्वीन्द्रियादिकसे लेकर पचेन्द्रिय तक जितने भी त्रस जीव रहते हैं वे सब के सब छेदन, भेदन, एव स्वाश्रय के विनाश जनित अनत दुःखों से सतप्त होकर

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢોળવાથી તેમજ વાજાંઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરાધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફૂળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા કરે છે આમ આ પૂજામા ષડ્-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે ત્રસ-કાયિક જીવોનુ પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથ્વિ-કાયિક વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમા અથવા તો દેવ-આયતન (મદિર) વગેને બનાવવામા કરવામા આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણ તેમજ સગોપિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માડીને પચેન્દ્રિય સુધીના ત્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના

धर्मस्य लक्षणं हि-जिनाज्ञाप्रयोज्यप्रवृत्तित्वम्, " आणाए मामग धम्म " इति भगवद्वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भगवता-" अणगारधम्मो ताव " इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभोजनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिद कथितम्—

'अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ' (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुष्मन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्त । एतस्य धर्मस्य ' शिक्षायामुपस्थितः '=आराधकः, निर्ग्रंथो वा निर्ग्रंथी वा विहर-

और वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते है ।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृति करना यही धर्म का लक्षण है । भगवान का भी आचाराङ्गसूत्र अ- ६ उ २ सू- ८ में यही कथन है " आणाए मामग धम्म " इति । प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश दिया उस समय उन्होने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक- १ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म । " अनगार धम्मो ताव " इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि " अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ " हे आयुष्मन ! यह अनगारसामायिक-मुनियो का सिद्धान्त विषयक

ઇ ખોવાયો ન તપ્ત થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, ભ્રષ્ટ થઇને અંતે મૃત્યુને ભેટે છે

જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવુ એજ ધર્મનુ લક્ષણ છે આચારાગ સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ મા પણ ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે " આણાએ મામગ ધમ્મ ઇતિ " પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર મુનિનો ધર્મ " अनगारधम्मो ताव " વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરાધના વગેરેથી વિરક્ત થવુ અહીંથી માડી રાત્રિ-ભોજનનો સપૂર્ણપણે ત્યાગ કરવો અહીં સુધી જે કઈ કહ્યુ છે તે બધુ અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામા આવ્યુ છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમા તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે—
(अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ) હે આયુષ્મન્ !

दिभिश्चामरादिवीजनैर्नृत्यगीतवाद्यैश्च सविशद भवति, वनस्पतिकायविराधन च प्रतिमापूजानिमित्तकेऽनन्तकायकोमलविविधफलपुष्पपत्रसग्रहे नियत भवति। पृथिवीकायाद्याश्रिता बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसगोपितशरीरा द्वीन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःखैस्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्खलितपतिता म्रियन्ते।

धूपकेधु आ से, दीप तथा आरती की ज्योति से चमर आदि के ढोरने से, नृत्य करने से, गीत गाते समय मुख से निकले हुए गर्म वायु से, एव वाजों के बजाने से वायुकायिक जीवों की विराधना होती हुई स्पष्ट मालूम देती है। वनस्पति कायिक जीवों की विराधना भी इस समय इस प्रकार से होती है, कि-मूर्ति पूजन के लिये उसके पूजक अनन्त कायिक ऐसे कोमल अनेक प्रकार के फल, पुष्प और पत्रों का सग्रह जो करता है इस प्रकार इस पूजन में षट्कायिक जीवों की हिंसा का आरभ स्पष्ट देखा जाता है। तथा त्रस कायिक जीवों का भी इसके निमित्तहनन होता है और वह इस प्रकार से-कि जब पृथिवीकायिकादि जीवों का आरभ प्रतिमा आदि के निर्माण में या देव आयतन (मन्दिर) आदि के कराने में किया जाता है तो उस समय उसके आश्रित जो बहुत से अनेक जाति के निरपराधी, हीन, दीन, दुर्बल, प्रकृति से भयशील तथा सगोपित शरीरवाले ऐसे द्वीन्द्रियादिकसे लेकर पचेन्द्रिय तक जितने भी त्रस जीव रहते हैं वे सब के सब छेदन, भेदन, एव स्वाश्रय के विनाश जनित अनत दुःखों से सतप्त होकर

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢાળવાથી તેમજ વાજાંઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફૂલો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા કરે છે આમ આ પૂજામા ષડ્-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે ત્રસ-કાયિક જીવોનુ પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથ્વિ-કાયિક વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમા અથવા તો દેવ-આયતન (મદિર) વગેરે બનાવવામા કરવામા આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી ભીરુ તેમજ સગો પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માડીને પચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ત્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનત

धर्मस्य लक्षणं हि-जिनाज्ञामयोज्यप्रवृत्तिकरत्वम्, " आणाए मामग धम्म " इति भगवद्वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भगवता-" अणगारधम्मो ताव " इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभोजनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिद कथितम्—

'अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गये वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ' (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुष्मन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्त । एतस्य धर्मस्य ' शिक्षायामुपस्थितः '=आराधकः, निर्ग्रंथो वा निर्ग्रंथी वा विहर-

---

और वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृति करना यही धर्म का लक्षण है। भगवान का भी आचाराङ्गसूत्र अ- ६ उ २ सू- ८ में यही कथन है " आणाए मामग धम्मं " इति। प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश दिया उस समय उन्होने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-१ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म। " अनगार धम्मो ताव " इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि " अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ " हे आयुष्मन ! यह अनगारसामायिक-मुनियो का सिद्धान्त विषयक

ઇ ખોથા ન તસ થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, ભ્રષ્ટ થઇને અ તે મૃત્યુને ભેટે છે

જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવુ એજ ધર્મનુ લક્ષણ છે આચારાગ સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ મા પણ ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે " आणाए मामग धम्म इति " પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર મુનિનો ધર્મ " अनगारधम्मो ताव " વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરાધના વગેરેથી વિરક્ત થવુ અહીંથી માડી રાત્રિ-ભોજનનો સપૂર્ણપણે ત્યાગ કરવો અહી સુધી જે કઈ કહ્યુ છે તે બધુ અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામા આવ્યુ છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમા તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે—
(अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ) હે આયુષ્મન્!

दिभिश्चामरादिवीजनैर्नृत्यगीतवाद्यैश्च सविशद भवति, वनस्पतिकायविराधन च मतिमापूजानिमित्तकेऽनन्तकायकोमलविविधफलपुष्पपत्रसग्रहे नियत भवति। पृथिवीकायाद्याश्रिता बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसगोपिताशरीरा द्वीन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःखैस्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्खलितपतिता म्रियन्ते।

धूपकेधु आ से, दीप तथा आरती की ज्योति से चमर आदि के ढोरने से, नृत्य करने से, गीत गाते समय मुख से निकले हुए गर्म वायु से, एव वाजों के बजाने से वायुकायिक जीवों की विराधना होती हुई स्पष्ट मालूम देती है। वनस्पति कायिक जीवों की विराधना भी इस समय इस प्रकार से होती है, कि-मूर्ति पूजन के लिये उसके पूजक अनन्त कायिक ऐसे कोमल अनेक प्रकार के फल, पुष्प और पत्रों का सग्रह जो करता है इस प्रकार इस पूजन में षट्कायिक जीवों की हिंसा का आरभ स्पष्ट देखा जाता है। तथा त्रस कायिक जीवों का भी इसके निमित्तहनन होता है और वह इस प्रकार से-कि जब पृथिवीकायिकादि जीवों का आरभ प्रतिमा आदि के निर्माण में या देव आयतन (मन्दिर) आदि के कराने में किया जाता है तो उस समय उसके आश्रित जो बहुत से अनेक जाति के निरपराधी, हीन, दीन, दुर्बल, प्रकृति से भयशील तथा सगोपित शरीरवाले ऐसे द्वीन्द्रियादिकसे लेकर पचेन्द्रिय तक जितने भी त्रस जीव रहते हैं वे सब के सब छेदन, भेदन, एव स्वाश्रय के विनाश जनित अनत दुःखों से सतप्त होकर

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢાળવાથી તેમજ વાજાંઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફૂલો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા કરે છે આમ આ પૂજામા ષડ્-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે ત્રસ-કાયિક જીવોનુ પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથ્વિ-કાયિક વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમા અથવા તો દેવ-આયતન (મદિર) વગેરેને બનાવવામા કરવામા આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી ભીરુ તેમજ સગો પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માડીને પચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ત્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનત

छाया—अयमायुष्मन् ! अगारसामयिको धर्मः प्रज्ञप्तः, एतस्य धर्मस्य शिक्षायामुपस्थितः'=आराधकः श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा विहरमाणा आज्ञाया आराधको भवति । इति ॥

अत्रापि एतस्य द्वादशविधस्य धर्मस्याराधक एव श्रमणोपासक आज्ञाया आराधक इति बोधयताऽऽज्ञैव धर्मस्य मूलमिति बोधितम् ।

आचाराङ्गसूत्रेऽपि प्रथमाध्ययने तृतीयोद्देशे भगवताऽभिहितम्-"जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा-विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसंजोग । पणया वीरा महावीहिं । लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय ।" इति

आयुष्यमन् ! यह गृहस्थ का धर्म कहा गया है । इस धर्म की शिक्षा में उपस्थित-श्रमणोपासक-मुनिजनों के भक्त ऐसे श्रावकजन अथवा श्राविकाजन तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा के आराधक माने जाते हैं। इस सूत्र में भी यही प्रकट किया गया है कि इस १२ प्रकार के धर्म का आराधक ही श्रमणोपासक-श्रावक, श्राविका तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का आराधक है इस प्रकार समझानेवाले श्री जिनेन्द्र देव ने आज्ञा ही धर्म का मूल है यह समझाया है ।

आचाराग सूत्र के प्रथम अ ययनके तृतीय उद्देशे में भगवान ने यह कहा है "जाए सद्धाए णिक्खते तमेव मणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय' कि जिस श्रद्धा उत्साह से "अर्हंत प्रभु द्वारा प्रतिपादित सम्यग्दर्शनादिक मोक्षके मार्ग है या नहीं है" इस प्रकार सर्व

आणाए आराहए भवइ" હે આયુષ્મન્ત ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્તજન-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે આ રીતે સમજાવનારા શ્રી જીનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનુ મૂળ છે આમ સમજાવ્યુ છે

આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે-" जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्व सजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " કે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી " અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ " આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શકા તેમજ

माण आज्ञाया आराधको भवति । एतस्य धर्मस्याराधक एवाज्ञाया आराधक इत्युक्त्वाऽऽज्ञैव धर्मस्य सकाशकतया मूलमिति बोधितम् । तदनन्तर च भगवता-

" अगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ । त जहा—पच अणुव्वयाइ, तिण्णि-गुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खावयाइ " इत्यादिना द्वादशविधं धर्मं निरूप्य कथितम् ।

' अयमाउसो ! अगारसामइए धम्मे पण्णत्ते ' एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उव ट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति ।

ધર્મ કહા ગયા હૈ-અર્થાત્ મુનિયોં કા યહ ધર્મ કહા ગયા હૈ । ઇસ ધર્મ કી શિક્ષા મેં જો ઉપસ્થિત હોતા હૈ અર્થાત્ જો ઇસ ધર્મ કી-આરાધના કરતે હૈં- ચાહે વે સાધુ હોં ચાહે સાધ્વી હોં શ્રોઢ ભી હો યે જિનેન્દ્ર ભગવાન કી આજ્ઞા કે આરાધક હોતે હૈં । ઇસ ધર્મ કી આરા ધના કરનેવાલા જીવ હી જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા કા આરાધક માના ગયા હૈ ઇસ કથન સે " જિસ બાત મેં ભગવાન કી આજ્ઞા હો વહી ધર્મ કા મૂલ હૈ અન્ય આજ્ઞા વિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હૈ " યહ બાત સમઝાઈ ગઈ હૈ ઇસ કે બાદ ભગવાન ને " અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આઇક્ખઇ તં જહા-પચ અણુવ્વયાઇ, તિણ્ણિગુણવ્વયાઇ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઇ" ઇસ સૂત્ર સે યહ પ્રકટ કિયા હૈ કિ ગૃહસ્થ કા ધર્મ ૧૨ પ્રકાર કા હૈ ૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણ વ્રત ઔર ૪ શિક્ષાવ્રત । ઇસ પ્રકાર સે કથન કર " અયમાઉસો અગાર સામઇએ ધમ્મે પણ્ણત્તે એયસ્સ ધમસ્સ સિક્ખાએ, ઉવટ્ઠિ, સમણોવાસએ વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાએ આરાહએ ભવઇ " ઇતિ-હે

આ અનગાર સામાયિક મુનિયેાનેા સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામા આવ્યેા છે એટલે કે આ મુનિઓનેા ધર્મ કહેવામા આવ્યેા છે આ ધર્મની શિક્ષામા જે ઉપસ્થિત હેાય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે-ભલે તેઓ સાધુ હેાય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હેાય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના આરાધકેા હેાય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારેા જીવ જ જીનેન્દ્રના આરા ધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે જે વાતમા ભગવાનની આજ્ઞા હેાય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરૂદ્ધ બીજુ આચરણ અધર્મ છે ત્યારપછી ભગવાન વડે " અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આઇક્ખઇ ત જહા પચ અણુવ્વયાઇ,તિણ્ણિ ગુણવ્વયાઇ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઇ " આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ગૃહસ્થનેા ધર્મ ૧૨ પ્રકારનેા છે-૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણવ્રત અને ૪ શિક્ષાવ્રત આ રીતે " અયમાઉસો અગારસામાઇએ ધમ્મે પણ્ણત્તે એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાએ ઉવટ્ઠિ, સમણોવાસએ વા સમણોવાસિયા વા

छाया—अयमायुष्मन् ! अगारसामयिको धर्मः प्रज्ञप्तः, एतस्य धर्मस्य शिक्षायामुपस्थितः'=आराधकः श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा विहरमाणा आज्ञाया आराधको भवति । इति ॥

अत्रापि एतस्य द्वादशविधस्य धर्मस्याराधक एव श्रमणोपासक आज्ञाया आराधक इति बोधयताऽऽज्ञैव धर्मस्य मूलमिति बोधितम् ।

आचाराङ्गसूत्रेऽपि प्रथमाध्ययने तृतीयोद्देशे भगवताऽभिहितम्-" जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा-विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसंजोग । पणया वीरा महावीहिं । लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय ।" इति

आयुष्यमन् ! यह गृहस्थ का धर्म कहा गया है । इस धर्म की शिक्षा में उपस्थित-श्रमणोपासक-मुनिजनों के भक्त ऐसे श्रावकजन अथवा श्राविकाजन तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा के आराधक माने जाते हैं । इस सूत्र में भी यही प्रकट किया गया है कि इस १२ प्रकार के धर्म का आराधक ही श्रमणोपासक-श्रावक, श्राविका तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का आराधक है इस प्रकार समझानेवाले श्री जिनेन्द्र देव ने आज्ञा ही धर्म का मूल है यह समझाया है ।

आचाराग सूत्र के प्रथम अध्ययनके तृतीय उद्देशे में भगवान ने यह कहा है " जाए सद्धाए णिक्खते तमेव मणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय' कि जिस श्रद्धा उत्साह से "अर्हंत प्रभु द्वारा प्रतिपादित सम्यग्दर्शनादिक मोक्षके मार्ग है या नहीं है" इस प्रकार सर्व

आणाए आराहए भवइ" हे आयुष्मन्त ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્તજન-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે આ રીતે સમજાવનારા શ્રી જીનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનુ મૂળ છે આમ સમજાવ્યુ છે

આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે-" जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्व सजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " કે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી " અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપ્રાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ " આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શકા તેમજ

माण आज्ञाया आराधको भवति । एतस्य धर्मस्याराधक एवाज्ञाया आराधक इत्युक्त्वाऽऽज्ञैव धर्मस्य प्रकाशकतया मूलमिति बोधितम् । तदनन्तर च भगवता-

" अगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ । त जहा—पच अणुव्वयाइ, तिण्णि-गुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खावयाइ " इत्यादिना द्वादशविध धर्म निरूप्य कथितम् ।

' अयमाउसो ! अगारसामइए धम्मे पण्णत्ते ' एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उव ट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति ।

धर्म कहा गया है-अर्थात् मुनियों का यह धर्म कहा गया है । इस धर्म की शिक्षा में जो उपस्थित होता है अर्थात् जो इस धर्म की-आराधना करते हैं- चाहे वे साधु हों चाहे साध्वी हों कोइ भी हो ये जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा के आराधक होते हैं । इस धर्म की आराधना करनेवाला जीव ही जिनेन्द्र की आज्ञा का आराधक माना गया है इस कथन से " जिस बात में भगवान की आज्ञा हो वही धर्म का मूल है अन्य आज्ञा विरुद्ध प्रवृत्ति है " यह बात समझाई गई है इस के बाद भगवान ने " अगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ त जहा-पच अणुव्वयाइ, तिण्णिगुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खावयाइ" इस सूत्र से यह प्रकट किया है कि गृहस्थ का धर्म १२ प्रकार का है ५ अणुव्रत, ३ गुण व्रत और ४ शिक्षाव्रत । इस प्रकार से कथन कर " अयमाउसो अगार सामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धमस्स सिक्खाए, उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ " इति-हे

આ અનગાર સામાયિક મુનિયોનો સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે એટલે કે આ મુનિઓનો ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા જે ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે-ભલે તેઓ સાધુ હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જ જીનેન્દ્રના આરાધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે જે વાતમા ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજુ આચરણ અધર્મ છે ત્યારપછી ભગવાન વડે " अगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ त जहा पच अणुव्वयाइ,तिण्णि गुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खावयाइ " આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે-૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણવ્રત અને ૪ શિક્ષાવ્રત આ રીતે " अयमाउसो अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे

'पणया' प्रणता =प्राप्ताः कठिनतरतपः संयमाराधनेन प्राप्तवन्त इत्यर्थः। अयमेव मार्गो मोक्षावाप्तिकरोऽशेषसंयमिसेवितत्वात्, तीर्थङ्करादिमहापुरुषा अपि मार्गमिममनुशीलितवन्त इति विश्वसनीयतया शिष्याणा श्रद्धापूर्वक मवृत्तिर्यथा स्यादितिभाव ।

कश्चिन्मन्दधीः शिष्योऽनेकदृष्टान्तैर्बोध्यमानोऽपि अप्कायादिजीवेषु न श्रद्धातीति तमुद्दिश्य कथयति—हे शिष्य ! तव मतिर्यद्यपि अप्कायजीवविषये न

वीर दो प्रकार के होते है ? द्रव्यवीर और दूसरे भाववीर। संयम के अनुष्ठान करने में जो शक्तिसंपन्न हैं वे भाववीर ह। ये जीव सम्यग्दर्शन आदि लक्षणरूप इस महाविस्तृतमार्ग को कि जो महापुरुषो द्वारा सेवित हुआ है कठिनतर तप और संयम की आराधना से प्राप्त कर लिया करते हैं। कहनेका सार यही है कि भाववीर यही अपने चित्तमें विचार किया करते हैं कि सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र और सम्यगतप रूप ही मार्ग है क्यो कि इसी से मुक्ति की प्राप्ती होती है—इसीलिये इस मार्गका समस्त संयमीजीवोंने पूर्व में सेवन किया है और तो क्या स्वय तीर्थंकर प्रभु ने भी इसी मार्ग की परिशीलना की है। इसलिये इस मार्ग में प्रवृत्ति सर्वहित विधायी है इस प्रकार यह मार्ग विश्वास योग्य होने से शिष्यजन भी श्रद्धापूर्वक इसमे प्रवृत्ति करे।

कोई मन्दबुद्धिवाला शिष्य अनेक दृष्टान्तो द्वारा समझाये जाने पर भी यदि अप्काय आदि जीवों की श्रद्धा से रहित होता है तो उसे

---

१ द्रव्य-वीर, २ भाव-वीर संयमना अनुष्ठानमा जे शक्तिशाळी छे ते भाव वीर छे आ बधा जीवो सम्याग्-दर्शन वगेरे लक्षण रूप आ विस्तृतमार्गने के जे महापुरुषो वडे सेववामा आव्यु छे-कठण तप अने संयमनी आराधनाथी मेळवी ले छे कहेवानी मतलब ओ छे के भाव-वीरो पोताना मनमा आ प्रमाणे ज विचारो करता रहे छे के खरी रीते सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र रूप ज मार्ग छे केमके मुक्तिनी प्राप्ति एनाथी ज थाय छे एटला माटे ज पहेला थई गयेला बधा जीवोओ आ मार्गनु ज अनुसरण कर्युं हतुं तीर्थंकर प्रभुओ जाते पण आ मार्गनी ज परिशीलता करी छे एथी आ मार्गमा प्रवृत्त थवु ते बधी रीते हितावह छे आ प्रमाणे आ मार्ग विश्वसनीय होवा बदल शिष्यो पण श्रद्धा राखीने तेमा प्रवृत्त थाय

कोईक मंद बुद्धि धरावनार शिष्य घणा दृष्टांतो वडे स्पष्ट करवामा आववा छता पण जे अप्काय वगेरे जीवोनी श्रद्धाथी रहित होय छे तो

यया श्रद्धया-सम्यक्त्वेन ' निग्गोत्तिय ' निस्रोतसिकां=शङ्कां-सर्वशङ्कां देश शङ्का चेत्यर्थः, यथा-' किमार्हतो मोक्षमार्गोऽस्ति न वा ' इति सर्वागमविषयिका शङ्का सर्वशङ्का, तथा-" किमप्कायाद्यो जीवाः सन्ति न वा " इति देशशङ्का। तथा ' पुव्वसंजोगं ' पूर्वसंयोग=मातापित्रादिसम्बन्धं धनधान्यस्वजनादिसम्बन्धं वा, इदमुपलक्षण-तेन पश्चात्संयोगमपि श्वशुरादिकृत, ' विजहित्ता ' विहाय=परित्यज्य ' णिक्खंते ' निष्क्रान्तः=प्रव्रजितः। ' त ' वा श्रद्धाम् ' अणुपालिज्जा एव ' अनुपालयेदेव-निरतिचार रक्षेदित्यर्थः।

अथ-' परिशीलितमार्गोऽनुगम्यते ' इति लोकरीत्या शिष्यश्रद्धादृढीकरणाय पूर्वमहापुरुषाचरितोऽयं मार्ग इति।

वीराः—भाववीराः संयमानुष्ठाने धीर्यवन्तः ' महावीहिं ' महावीथिम्=महावीथि-सम्यग्दर्शनादिलक्षणो महामार्ग' महापुरुषसेवितत्वात्, तां महावीथिं

आगम विषयक सर्वशका का तथा " अप् कायिकादिक जीव हैं या नहीं " इस प्रकार की देशशका और माता पिता आदि के साथ के सबधरूप पूर्व सयोग एव धन, धान्य, स्वजन आदि सबध, उपलक्षण से श्वशुर आदिरूप प्रश्चात् सयोग का परित्याग कर यह जीव ससार आदि पदार्थों को हेय समझ उनसे सर्वथा विरक्त हो जाता है उस श्रद्धा का अतिचार आदि को से रक्षा करनी चाहिये-उस श्रद्धा का अतिचार रहित होकर मुनि को पालन करना चाहिये। जो मार्ग परिशीलित होता है उस पर अनेक प्राणी चलते हैं यह लौकिकरीति है। इसीरीति के अनुसार शिष्यो की श्रद्धा को दृढ करने के लिये " यह मार्ग पूर्व में महापुरुषों द्वारा सेवित किया गया है " इसें समझाने के लिये सूत्रकार " पणया वीरा महावीहिं " इस अश का कथन करते हैं

" અપ્કાયિક વગેરે જીવો છે કે નથી " આ જાતની દેશ શકા અને માતા પિતા વગેરેની સાથેના સબધ રૂપ પૂર્વ સયોગ અને ધન, ધાન્ય, સ્વજન વગેરે સબધ ઉપલક્ષણથી ' શ્વસુર ' વગેરે રૂપ પશ્ચાત્ સયોગનો પરિત્યાગ કરીને આ જીવ સસાર વગેરે પદાર્થોને હેય સમજીને તેમના તરફ સપૂર્ણ પણે વિરક્ત થઈ જાય છે તે શ્રદ્ધાની અતિચાર વગેરેથી રક્ષા કરવી જોઇએ તે શ્રદ્ધાનુ પાલન મુનિએ અતિચાર વગર થઇને કરવું જોઇએ જે માર્ગ પરિશીલિત હોય છે તે તરફ ઘણા પ્રાણીઓ જાય છે, આ લૌકિક પ્રથા છે આ પ્રથા પ્રમાણે શિષ્યોની શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવા માટે " આ માર્ગ મહા પુરુષો વડે સેવવામા આવ્યો છે " આ વાત સમજાવવા માટે સૂત્રકાર " पणया वीरा महावीहिं " આ વચનને ટાકે છે વીર બે પ્રકારનું

'पणया' प्रणता =प्राप्ताः कठिनतरतप सयमाराधनेन प्राप्तवन्त इत्यर्थः। अय मेव मार्गो मोक्षावाप्तिकरोऽशेषसयमिसेवितत्वात्, तीर्थङ्करादिमहापुरुषा अपि मार्गमिममनुशीलितवन्त इति विश्वसनीयतया शिष्याणा श्रद्धापूर्वक प्रवृत्तिर्यथा स्यादितिभाव ।

कश्चिन्मन्दधीः शिष्योऽनेकदृष्टान्तैर्बोध्यमानोऽपि अप्कायादिजीवेषु न श्रद्दधातीति तमुद्दिश्य कथयति—हे शिष्य ! तव मतिर्यद्यपि अप्कायजीवविषये न

वीर दो प्रकार के होते हैं ? द्रव्यवीर और दूसरे भाववीर। सयम के अनुष्ठान करने में जो शक्तिसपन्न हैं वे भाववीर ह। वे जीव सम्यग्दर्शन आदि लक्षणरूप इस महाविस्तृतमार्ग को कि जो महापुरुषो द्वारा सेवित हुआ है कठिनतर तप और सयम की आराधना से प्राप्त कर लिया करते हैं। कहनेका सार यही है कि भाववीर यही अपने चित्तमें विचार किया करते हैं कि सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र और सम्यग्तप रूप ही मार्ग है क्यों कि इसी से मुक्ति की प्राप्ती होती है-इसीलिये इस मार्ग का समस्त सयमीजीवोंने पूर्व में सेवन किया है और तो क्या स्वय तीर्थंकर प्रभु ने भी इसी मार्ग की परिशीलना की है। इसलिये इस मार्ग में प्रवृत्ति सर्वहित विधायी है इस प्रकार यह मार्ग विश्वास योग्य होने से शिष्यजन भी श्रद्धापूर्वक इसमे प्रवृत्ति करे।

कोई मन्दबुद्धिवाला शिष्य अनेक दृष्टान्तो द्वारा समझाये जाने पर भी यदि अप्काय आदि जीवो की श्रद्धा से रहित होता है तो उसे

---

१ द्रव्य-वीर, २ भाव-वीर सयमना अनुष्ठानमा जे शक्तिशाळी छे ते भाव वीर छे आ बधा जीवो सम्याग्-दर्शन वगेरे लक्षणु रूप आ विस्तृतमार्गने के जे महापुरुषो वडे सेववामा आव्यु छे-कठणु तप अने सयमनी आरा धनाथी मेळवी ले छे कहेवानी मतलब ओ छे के भाव-वीरो पोताना मनमा आ प्रमाणे ज विचारो करता रहे छे के खरी रीने सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र रूप ज मार्ग छे केमके मुक्तिनी प्राप्ति एनाथी ज थाय छे एटला माटे ज पहेला थई गयेला बधा जीवोओ आ मार्गनु ज अनुसरणु कर्युं हतुं तीर्थंकर प्रभुओ जाते पणु आ मार्गनी ज परिशीलता करी छे एथी आ मार्गमा प्रवृत्त थवु ते बधी रीते हितावह छे आ प्रमाणे आ मार्ग विश्वसनीय होवा बदल शिष्यो पणु श्रद्धा राखीने तेमा प्रवृत्त थाय

कोईक मद बुद्धि धरावनार शिष्य घणा दृष्टातो वडे स्पष्ट करवामा आववा छता पणु जे अप्काय वगेरे जीवोनी श्रद्धाथी रहित होय छे तो

परिस्फुरति, तद्विषये विशेषज्ञानाभावात्, तथापि भगवदाज्ञया श्रद्धा नितरां विधेयेत्याशयेनाह—" लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति ।

" लोग " लोकम् अत्र लोकशब्देन प्रकरणवशादप्काय लोक एव गृह्यते, तमप्कायलोकं च शब्देन अन्याश्चाप्कायाश्रितान् जीवान " आणाए " आज्ञया तीर्थंकर वचनेन " अभिसमेच्चा " अभिसमेत्य आभिमुख्येन सम्यग्ज्ञात्वा, अप् कायादयो जीवा सन्तीत्येवमवधृ येत्यर्थः, " अकुतोभय " नास्ति कुतश्चित् समझानेके लिये सूत्रकार कहते हैं कि हे शिष्य ! तुम्हारी बुद्धि अप्कायिक आदि जीवोंकी श्रद्धा करनेमें उन विषयक विशेषज्ञानके अभावसे यदि समर्थ नहीं है, तो भी भगवान् की आज्ञा से तुम्हें उनके विषय में अपनी श्रद्धा को दूषित नहीं होने देना चाहिये-अर्थात भगवान की आज्ञा प्रमाण मानकर तुम्हें उनके विषय में अपनी अतिशय श्रद्धा जाग्रत करनी चाहिये । सूत्रकार इसी अभिप्राय से कहते हैं कि " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति । अप्काय रूप लोक को तथा " च " शब्द से अन्य अप्काय के अश्रित जीवों को तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा से अच्छी तरह जानकर उनकी आज्ञानुसार उनका अस्तित्व मानकर आत्मकल्याण के अभिलाषी मुनियों को संयम का पालन करना चाहिये । सूत्रस्थलोक शब्द यहां प्रकरण के वश से अप् काय का बोधक है । " च " शब्द से तदाश्रित अन्य जीवों का ग्रहण हुआ है । " अकुतोभय " शब्द का अर्थ संयम है कहीं से भी किसी

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય ! તમારી બુદ્ધિ અપ્કાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામા તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મંદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમા વધારે શ્રદ્ધા જાગ્રત કરવી જોઇએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति । અપ્કાય રૂપ લોકને તેમજ ' च ' શબ્દથી બીજા અપ્કાયાશ્રિત જીવોને તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનુ અસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ઇચ્છનારા મુનિ-ઓએ સંયમનુ પાલન કરવુ જોઇએ સૂત્રમા આવેલો ' લોક ' શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્કાયનો વાચક છે ' च ' શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનુ ગ્રહણ થયુ છે ' अकुतोभय " શબ્દનો અર્થ સંયમ છે કોઈ પણ જગ્યા એથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી ભય હોતો નથી તે અ

केनापि प्रकारेण प्राणिना भय यस्मात् सोऽकुतोभयः=सयमस्तम्, "अणुपालिज्जा" अनुपालयेत् इति पूर्वोक्तेन सम्बन्धः। सर्वदा जीवाभिरक्षणरूपसयमानुपालने सावधानतया यत्नः कार्यः इत्यर्थः।

अत्र "जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसजोग" इत्यनेन श्रद्धाया आराध्यत्वे जिनाज्ञायाः सद्भावात् श्रद्धाया धर्मत्व सिद्धम्।

श्रद्धादृढीकरणमपि च धर्मस्तदर्थं "पणया वीरा महावीहिं" इति भगवदुप देशस्य सद्भावात्।

"लोग च आणाए अभिसमेच्चा" इत्यनेनाज्ञायाः षट्कायजीवतत्त्वज्ञान-हेतुत्वेन वर्णनात् तत्त्वज्ञानस्य धर्मत्वम्।

भी प्रकार से जीवो को जिससे भय नहीं होता है वह अकुतोभय-सयम है भाव इसका यही है कि आत्म कल्याण के इच्छुक मुनियों को जीवों के सरक्षण रूप सयम की आराधना करने में सावधानता पूर्वक प्रयत्नशील रहना चाहिये। यहा "जाए सद्धाए निक्खते तमेवमणुपालिज्जा, विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग" इस सूत्राश से यह बात समझाई गई है कि श्रद्धा की आराधना में जिनेन्द्र की आज्ञा का सद्भाव है अतः वहा धर्म है। अपि च श्रद्धा की दृढता करना यह भी धर्म है। इसी निमित्त "पणया वीरा महावीहिं" यह भगवान का उपदेश है।

"लोग च अणाए अभिसमेच्चा" इस सूत्राश से यह प्रकट होता है कि जब जिनेन्द्र की आज्ञा षट् कायिक जीवों के वास्तविक ज्ञान होने में हेतुरूप से वर्णित हुई है तो इस स्थिति मे तत्वज्ञान धर्म है।

છે મતલબ એ છે કે આત્મકલ્યાણ ઇચ્છનારા મુનિઓને જીવોની રક્ષા રૂપ સયમની આરાધના કરવામા સાવધાન થઇને પ્રયત્ન કરતા રહેવુ જોઇએ અહીં "जाए सद्धाए निक्खते तमेवमणुपालिज्जा, विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग" આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે શ્રદ્ધાની આરાધનામા જીનેન્દ્રની આજ્ઞાનો સદ્ભાવ છે એટલા માટે તેજ ધર્મ છે અને શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવી તે પણ ધર્મ છે આ નિમિત્તે જ "पणया वीरा महावीहिं" આ ભગવાનનો ઉપદેશ છે

"लोगच आणाए अभिसमेच्चा" આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે જ્યારે જીનેન્દ્રની આજ્ઞા ષટ્કાયિક જીવો વિષે વાસ્તવિક જ્ઞાન કરાવવા માટેજ કરવામા આવી છે ત્યારે આવી પરિસ્થિતિમા તત્વજ્ઞાન ધર્મ છે.

परिस्फुरति, तद्विषये विशेषज्ञानाभावात्, तथापि भगवदाज्ञया श्रद्धा नितरां विधेयेत्याशयेनाह—" लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति।

" लोग " लोकम् अत्र लोकशब्देन प्रकरणवशादप्काय लोक एव गृह्यते, तमप्कायलोकं च शब्देन अन्याश्चाप्कायाश्रितान् जीवान " आणाए " आज्ञया तीर्थंकर वचनेन " अभिसमेच्चा " अभिसमेत्य आभिमुख्येन सम्यगज्ञात्वा, अप् कायादयो जीवा सन्तीत्येवमवधार्येत्यर्थः, " अकुतोभय " नास्ति कुतश्चित्

समझानेके लिये सूत्रकार कहते हैं कि हे शिष्य ! तुम्हारी बुद्धि अप्कायिक आदि जीवोंकी श्रद्धा करनेमें उन विषयक विशेषज्ञानके अभावसे यदि समर्थ नहीं है, तो भी भगवान् की आज्ञा से तुम्हें उनके विषय में अपनी श्रद्धा को दूषित नहीं होने देना चाहिये-अर्थात भगवान की आज्ञा प्रमाण मानकर तुम्हें उनके विषय में अपनी अतिशय श्रद्धा जाग्रत करनी चाहिये। सूत्रकार इसी अभिप्राय से कहते हैं कि " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति। अप्काय रूप लोक को तथा " च " शब्द से अन्य अप्काय के अश्रित जीवों को तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा से अच्छी तरह जानकर उनकी आज्ञानुसार उनका अस्तित्व मानकर आत्मकल्याण के अभिलाषी मुनियों को संयम का पालन करना चाहिये। सूत्रस्थलोक शब्द यहां प्रकरण के वश से अप् काय का बोधक है। " च " शब्द से तदाश्रित अन्य जीवों का ग्रहण हुआ है। "अकुतोभय" शब्द का अर्थ संयम है कहीं से भी किसी

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય ! તમારી બુદ્ધિ અપ્કાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામા તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મંદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમા વધારે શ્રદ્ધા જાગ્રત કરવી જોઇએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति। અપ્કાય રૂપ લોકને તેમજ ' च ' શબ્દથી બીજા અપ્કાયાશ્રિત જીવોને તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનુ અસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ઇચ્છનારા મુનિ-ઓએ સંયમનુ પાલન કરવુ જોઇએ સૂત્રમા આવેલો ' લોક ' શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્કાયનો વાચક છે ' च ' શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનુ ગ્રહણ થયુ છે ' अकुतोभय " શબ્દનો અર્થ સંયમ છે કોઈ પણ જગ્યા-એથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી ભય હોતો નથી તે સંયમ

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हतव्वा न अज्जा वेयव्वा, न किलायव्वा, न उद्दवेयव्वा ।

एस धम्मे सुद्धे णितिए सासए, समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ।

आर्हतधर्मएव श्रद्धेय इति बोधयितु श्रीसुधर्मास्वामीमाह-" से बेमि " इत्यादि । तीर्थंकरै स्वस्वशिष्येभ्यो यत् सम्यक्त्वमुक्त तदह ब्रवीमि । यद्वा-'से' इत्यस्य 'स' इतिच्छाया । येन मया भगवतः श्री वर्धमानस्वामिनस्तीर्थ-करस्य सकाशे तद्वचनतस्तत्त्वज्ञान लब्ध, सोऽह ब्रवीमि ।—भगदुक्तार्थमेव कथयामि, तस्मान्मम वाक्य श्रद्धेयमितिभावः ।

पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हतव्वा, न अज्जावेयव्वा, न परिघेत्तव्वा, न परितावेयव्वा न किलामेयव्वा, न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे सुद्धे णितिए समेच्चा लोय खेयन्नेहिं पवेइए" (आ. सू० अ-४ उ १ सू० १) श्री सुधर्मा स्वामी इस सूत्र द्वारा जम्बूस्वामी को यह समझाते है कि अर्हंतप्रभु द्वारा प्रतिपादित धर्म ही श्रद्धा करने योग्य हैं-वे इसमें कहते हैं कि तिर्थंकर देवो ने अपने २ शिष्यों के लिये जिस सम्यक्त्व का कथन किया है वही तत्व उन तीर्थंकर प्रभुके वचनो द्वारा श्रवण कर मैं तुम्हें समझाता हूँ अर्थात् मैं अपनी निजी कल्पना से इस विषय में कुछ भी न कह कर जो कुछ तुम्हें समझाऊँगा वह तीर्थंकर प्रभु की मान्यतानुसार ही समझाऊँगा अत इस में सदेह के लिये थोडी सी भी जगह नहीं है-इसलिये इस मेरे कथन का मूल-स्रोत जब श्री तीर्थंकर प्रभु का उपदेशश्रवण है तब यह श्रद्धेय-श्रद्धा करने योग्य आवश्य है भगवान् का यह आदेश है-कि जितने भी

पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हतव्या, न अज्जावेयव्वा, न परिघेत्तव्वा, न परितावेयव्वा, न किलामेयव्वा, न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे सुद्धे णितिए समेच्चा लोय खेयनेहि पवेइए" (આ સૂ અ ૪ ઉ ૧ સૂ ૧) શ્રી સુધર્મા સ્વામી આ સૂત્ર વડે શ્રી જબૂ સ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે કે અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત ધર્મ જ શ્રદ્ધેય છે, તેઓ આ સૂત્રમા કહે છે કે તીર્થંકર દેવોએ પોતપોતાના શિષ્યો માટે જ સમ્યકત્વનુ નિરૂપણ કર્યું છે તે જ તત્ત્વ તીર્થંકર પ્રભુના મુખથી શ્રવણ કર્યા બાદ હુ તમને સમજાવી રહ્યો છુ એટલે કે હુ પોતાની મેળે આમા કઈ પણ ઉમેર્યા વગર તીર્થંકર પ્રભુની માન્યતા મુજબ જ તમને સમજાવીશ એથી અમા રાકાને માટે અહેજ પણ સ્થાન નથી આ પ્રમાણે જ્યારે મારા કથનનો મૂળ સ્રોત શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનુ ઉપદેશ શ્રવણ છે ત્યારે તે શ્રદ્ધેય જ છે ભગવાનની આ પ્રમાણે આજ્ઞા છે કે

'अकुतोभय' इत्यस्य-"अणुपालिज्जा" इत्यनेनान्वयाद् अकुतोभयं-संयमम् अनुपालयेदित्यपि भगवदाज्ञैव, तथा च संयमस्याऽऽराध्यतया विधानाद् संयमस्य धर्मत्वं बोध्यम्।

अपर च-उत्तराध्ययनसूत्रे-"धम्माण कासवो मुह" इत्युक्तम् "धम्माण" धर्माणां श्रुतधर्माणां चारित्रधर्माणां च "कासवो" काश्यपः काश्यपगोत्रीयः श्रीमहावीरवर्धमानस्वामी "मुह" मुखं वक्ता वर्तते।

अहिंसादौ खलु भगवतोऽर्हत आज्ञा वर्तते, पश्यागमेषु। यथा-आचाराङ्गसूत्रे-

"से बेमि-जे य अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो, ते सव्वेवि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति—

'अकुतोभय' इस पद का "अणुपालिज्जा" इस क्रियापद के साथ अन्वय करने से यह अर्थ होता है कि अकुतोभयरूप संयम का पालन करना चाहिये, यह भी जब भगवान की आज्ञा ही है तो इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भगवान की आज्ञा से संयम आराधन करने लायक होने से धर्म रूप है। अपर च-उत्तरा ध्ययन सूत्र में "धम्माण कासवो मुह" यह कहा है इसका भाव यह है कि श्रुत एवं चारित्र धर्मों के मुख-वक्ता-काश्यप गोत्रीय श्री महावीर वर्धमान स्वामी हैं। देखो उन्हों ने आगमों में अहिंसादिक महाव्रतों के पालने का मुमुक्षुओं= मोक्षाभिलाषियों के लिये इस प्रकार आज्ञा प्रदान की है "से बेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे वि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति" सव्वे

'अकुतोभय' આ પદનો 'अणुपालिज्जा' આ ક્રિયાપદની સાથે અન્વય કરવાથી આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે કે અકુતોભય રૂપ સંયમનું પાલન કરવું જોઈએ આ પણ ભગવાનની જ આજ્ઞા છે તો એનાથી આ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે કે ભગવાનની આજ્ઞાથી 'સંયમ' આરાધવા યોગ્ય હોવાથી ધર્મરૂપ છે અને વળી 'ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર' માં "धम्माण कासवो मुह" આ નામોનો ઉલ્લેખ છે એનો અર્થ એમ થાય છે કે શ્રુત અને ચારિત્ર ધર્મોના મુખ્ય-વક્તા-કાશ્યપ ગોત્રીય શ્રી મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી છે તેઓશ્રીએ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોના પાલન કરનારા મોક્ષ ઇચ્છનારા લોકોને માટે આગમોમાં આ જાતની આજ્ઞા કરી છે કે—

"से बेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे वि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति सव्वे

तयोरपि ग्रहणम्, तथा च-' एवमाचख्यु, एवमाख्यास्यन्ति ' इत्यपि योजनीयम्। एवं सर्वासु क्रियासु योजनीयम्। तथा-एव " भासंति " भाषन्ते=सुरनरपरिषदि सर्वजीवाना स्वस्वभाषापरिणामिन्याऽर्धमागध्या भाषया ब्रुवन्ति। तथा-एव" पण्णवेंति " प्रज्ञापयति=हेतुदृष्टान्तादिना प्रकर्षेण बोधयन्ति। तथा-एव ' परूवेंति ' प्ररूपयन्ति=तत्तद्भेद प्रदर्श्य प्रकर्षेण निर्णयन्ति।

ननु सर्वेऽप्यर्हन्तो भगवन्तः-किमाख्यान्तीत्यादिजिज्ञासायामाह-' सव्वे-पाणा ' इत्यादि। सर्वे=निरवशेषाः, प्राणाः=प्राणिनः, पृथिव्यादयः स्थावरा

कर परिग्रह रूप से सग्रह करने योग्य, अन्न, पान आदि के निरोध एव गर्मीसर्दी आदिमें रखने से कभी भी पीडा पहुँचाने योग्य और विषप्रदान एव शस्त्र के आघात से विनाश करने योग्य नही है।

सूत्र में " आइक्खति-आख्यान्ति " यह वर्तमानकालिक-क्रियापद अतीत और अनागतकालिक क्रियापद का उपलक्षक है। अतः इस से यह अर्थ प्रतीत होता है कि उन तीर्थकर प्रभुओ ने वर्तमान में जैसा कहा है वैसा ही उन्हों ने या अन्य भूत कालिक तीर्थकरों ने भूत काल में भी कहा है एव आगामी कालमे भी वे वैसा ही कहेंगे। इसी प्रकार " भासति, पण्णवेंति " इत्यादि क्रियापदो के साथ भी अतीत और अनागत कालिक क्रियादोंका सबध कर लेना चाहिये। इस कथन से सूत्रकार ने उनके कथन में परस्पर में विरुद्ध अर्थकी प्ररूपणा का अभाव प्रदर्शित किया है जो कुछ उन्हो ने कहा है। वह भूत, भविष्यत और वर्तमान काल में से किसी भी काल में किसी भी

એવુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેનો નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા " आइक्खति आख्यान्ति " આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થંકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે કહ્યુ છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થંકરોએ ભૂતકાળમા પણ કહ્યુ છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ રીતે " भासति, पण्णवेति " વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના કથનમા પરસ્પરમા વિરૂદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

भगवदुक्तार्थमाह-" जे य अतीता " इत्यादि । ये च अतीताः=अतीतकालिकाः, ये च ' पडुप्पन्ना ' प्रत्युत्पन्नाः=वर्तमानकालिकाः पञ्चभरतेषु पञ्चैरवतेषु पञ्चमहाविदेहेषु वर्तमानाः, ये च " आगमिस्सा " आगामिनः-भविष्यत्कालभाविनः, ते सर्वेऽपि अर्हन्तो भगवन्तः एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण " आइक्खंति " आख्यान्ति=परप्रश्नावसरे कथयन्ति । अत्र वर्तमानग्रहणमुपलक्षणं तेनातीतानाग-

भूतकाल में तीर्थंकर हुए हैं, वर्तमान काल में भी पांच भरत, पांच ऐरवत तथा पांच महाविदेह सम्बन्धी जितने भी तीर्थंकर हैं और भविष्यत काल मे जो तीर्थंकर होंगे उन सब ने जब उनसे किसी ने प्रश्न किया, तो एक यही उत्तर दिया है देव एव मनुष्यों की सभा में अपनी सर्वभाषा में परिणमित हुई अर्धमागधीरूप दिव्यध्वनि द्वारा उन्हो ने समस्त जीवो को यही समझाया है, और हेतु, दृष्टान्तो द्वारा इसी बात की पुष्टि की है। वक्तव्य विषय के भेद और प्रभेदों को प्रकट करते हुए उन्हों ने अच्छी तरह से यही प्ररूपणा की है कि समस्त प्राणी पृथिवी आदिक एकेन्द्रिय स्थावर जीवों से लेकर द्वीन्द्रियादिक पचेंद्रिय जीव पर्यन्त त्रस जीव, चतुर्दश भूतग्रामरूप समस्त भूत, नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति एव देवगति के समस्त जीव, एव अपने द्वारा किये गये कर्मों के उदय के फल स्वरूप सुख दुःख आदि का अनुभव करने वाले समस्त सत्व दण्ड आदि द्वारा कभी भी ताडन करने योग्य, घात करने योग्य, ये मेरे आधीन हैं ऐसा ख्याल

ભૂતકાળમા જેટલા તીર્થંકર થયા છે, વર્તમાનકાળમા પણ પાચ ભરત, પાચ ઐરવત તથા પાચ મહાવિદેહ સબધી જેટલા તીર્થંકરો છે અને ભવિષ્યકાળમા જેટલા તીર્થંકરો થશે તે બધામાથી જ્યારે કોઇએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામા પોતાની સર્વ ભાષામા પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમા તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાતો વડે આ વાતનુ જ સમર્થન કર્યુ છે વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતા તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથ્વિ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યંચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામા આવેલા કર્મોના ઉદયના ફળ સ્વરૂપ સુખ દુખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્વો દડ [illegible] કોઈ પણ વખત તાડન કરવા યોગ્ય કે ઘાત [illegible] યોગ્ય, કે એઓ

तयोरपि ग्रहणम्, तथा च-' एवमाचख्यु, एवमाख्यास्यन्ति ' इत्यपि योजनीयम्। एवं सर्वासु क्रियासु योजनीयम्। तथा-एव " भासंति " भाषन्ते=सुरनरपरिषदि सर्वजीवाना स्वस्वभाषापरिणामिन्याऽर्धमागध्या भाषया ब्रुवन्ति। तथा-एव" पण्णवेंति " प्रज्ञापयन्ति=हेतुदृष्टान्तादिना प्रकर्षेण बोधयन्ति। तथा-एव ' परूवेंति ' प्ररूपयन्ति=तत्तद्भेद प्रदर्श्य प्रकर्षेण निर्णयन्ति।

ननु सर्वेऽप्यर्हन्तो भगवन्तः-किमाख्यान्तीत्यादिजिज्ञासायामाह-' सव्वे-पाणा ' इत्यादि। सर्वे=निरवशेषाः, प्राणाः=प्राणिनः, पृथिव्यादयः स्थावरा

कर परिग्रह रूप से संग्रह करने योग्य, अन्न, पान आदि के निरोध एव गर्मीसर्दी आदिमें रखने से कभी भी पीडा पहुँचाने योग्य और विषप्रदान एव शस्त्र के आघात से विनाश करने योग्य नही है।

सूत्र में " आइक्खंति-आख्यान्ति " यह वर्तमानकालिक-क्रिया पद अतीत और अनागतकालिक क्रियापद का उपलक्षक है। अतः इस से यह अर्थ प्रतीत होता है कि उन तीर्थकर प्रभुओ ने वर्तमान में जैसा कहा है वैसा ही उन्हों ने या अन्य भूत कालिक तीर्थकरों ने भूत काल में भी कहा है एव आगामी कालमे भी वे वैसा ही कहेंगे। इसी प्रकार " भासंति, पण्णवेंति " इत्यादि क्रियापदों के साथ भी अतीत और अनागत कालिक क्रियादोंका सबध कर लेना चाहिये। इस कथन से सूत्रकार ने उनके कथन में परस्पर में विरुद्ध अर्थकी प्ररूपणा का अभाव प्रदर्शित किया है जो कुछ उन्हो ने कहा है। वह भूत, भविष्यत और वर्तमान काल में से किसी भी काल में किसी भी

એવુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, જે અન્ન, પાન વગેરેનો નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા " आइक्खंति आख्यान्ति " આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થંકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે કહ્યુ છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થંકરોએ ભૂત કાળમા પણ કહ્યુ છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ રીતે " भासंति, पण्णवेंति " વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઇએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના કથનમા પરસ્પરમા વિરૂદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

भगवदुक्तार्थमाह-" जे य अतीता " इत्यादि । ये च अतीताः=अतीतकालिकाः, ये च ' पडुप्पन्ना ' प्रत्युत्पन्नाः=वर्तमानकालिकाः पञ्चभरतेषु पञ्चैरवतेषु पञ्चमहाविदेहेषु वर्तमानाः, ये च " आगमिस्सा " आगामिनः-भविष्यत्कालभाविनः, ते सर्वेऽपि अर्हन्तो भगवन्तः एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण " आइक्खंति " आख्यान्ति=परमश्नावसरे कथयन्ति । अत्र वर्तमानग्रहणमुपलक्षणं तेनातीतानाम-

ભૂતકાળમા જેટલા તીર્થંકર થયા છે, વર્તમાનકાળમા પણ પાચ ભરત, પાચ ઐરવત તથા પાચ મહાવિદેહ સબધી જેટલા તીર્થંકરો છે અને ભવિષ્યકાળમા જેટલા તીર્થંકરો થશે તે બધામાથી જ્યારે કોઇએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામા પોતાની સર્વ ભાષામા પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમા તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાતો વડે આ વાતનુ જ સમર્થન કર્યુ છે વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતા તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથ્વિ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યંચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામા આવેલા કર્મોના ઉદયના ફળ સ્વરૂપ સુખ દુખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્વો દડ વગેરે કોઈ પણ વધ્ય તાડન કરવા યોગ્ય કે ઘાત કરવા યોગ્ય, કે એઓ

तयोरपि ग्रहणम्, तथा च-' एवमाचख्यु, एवमाख्यास्यन्ति ' इत्यपि योजनीयम्। एव सर्वासु क्रियासु योजनीयम्। तथा-एव " भासंति " भाषन्ते=सुरनरपरिषदि सर्वजीवाना स्वस्वभाषापरिणामिन्याऽर्धमागध्या भाषया ब्रुवन्ति। तथा-एव" पण्णवेंति " प्रज्ञापयन्ति=हेतुदृष्टान्तादिना प्रकर्षेण बोधयन्ति। तथा-एव ' परूवेंति ' प्ररूपयन्ति=तत्तद्भेद प्रदर्श्य प्रकर्षेण निर्णयन्ति।

ननु सर्वेऽप्यर्हन्तो भगवन्तः-किमाख्यान्तीत्यादिजिज्ञासायामाह-' सव्वे-पाणा ' इत्यादि। सर्वे=निरवशेषाः, प्राणाः=प्राणिनः, पृथिव्यादयः स्थावरा

कर परिग्रह रूप से सग्रह करने योग्य, अन्न, पान आदि के निरोध एव गर्मीसर्दी आदिमें रखने से कभी भी पीडा पहुँचाने योग्य और विषप्रदान एव शस्त्र के आघात से विनाश करने योग्य नही है।

सूत्र में " आइक्खति-आख्यान्ति " यह वर्तमानकालिक-क्रियापद अतीत और अनागतकालिक क्रियापद का उपलक्षक है। अतः इस से यह अर्थ प्रतीत होता है कि उन तीर्थकर प्रभुओ ने वर्तमान में जैसा कहा है वैसा ही उन्हों ने या अन्य भूत कालिक तीर्थकरों ने भूत काल में भी कहा है एव आगामी कालमे भी वे वैसा ही कहेंगे। इसी प्रकार " भासति, पण्णवेंति " इत्यादि क्रियापदों के साथ भी अतीत और अनागत कालिक क्रियादोंका सबध कर लेना चाहिये। इस कथन से सूत्रकार ने उनके कथन में परस्पर में विरुद्ध अर्थकी प्ररूपणा का अभाव प्रदर्शित किया है जो कुछ उन्हो ने कहा है। वह भूत, भविष्यत और वर्तमान काल में से किसी भी काल में किसी भी

એવુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેનો નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા " आइक्खति आख्यान्ति " આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે કહ્યુ છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થકરોએ ભૂત કાળમા પણ કહ્યુ છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ રીતે " भासति, पण्णवेति " વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના કથનમા પરસ્પરમા વિરૂદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

द्वीन्द्रियादिपञ्चेन्द्रियपर्यन्तत्रसाश्रित्यर्थः, इन्द्रियादिप्राणाना यथासम्भवधारणात् तेषु प्राणित्वमस्तीति भावः । तथा-सर्वे ' भूया ' भूताः=भवन्ति भविष्यन्त्यभूवन्निति भूताः-चतुर्दशभूतग्रामरूपाः, तथा-सर्वे जीवा=जीवन्ति जीविष्यन्त्यजीवित्रिति जीवाः-नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवाः, तथा-सर्वे "सत्ता" सत्त्वाः=

प्रमाण द्वारा बाधित नहीं हो सकने से पूर्वापर विरोध रहित ही कहा है। " प्राण " शब्द से सूत्रकार ने त्रस और स्थावर प्राणियो का ग्रहण किया है। क्यो कि १० द्रव्य प्राणो में से इनको अपने २ योग्य प्राणो का सद्भाव पाया जाता है। अत' इनके सद्भाव से ही ये प्राणी कहे जाते हैं। " भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन् "यह भूत शब्द की व्युत्पत्ति है। इसका भाव यही है कि जो वर्तमान में सत्ता विशिष्ट हैं, आगामी काल में सत्ता विशिष्ट रहेंगे एव भूतकाल में भी जो सत्ता विशिष्ट थे। इस व्युत्पत्ति से सूत्रकार ने यह प्रदर्शित किया हैं कि प्रत्येक जीवादिक पदार्थ किसी भी काल में उत्पाद और व्यय धर्म विशिष्ट होते हुए भी अपनी २ सत्ता से रहित नहीं होते हैं। क्यों कि द्रव्य का " उत्पादव्ययध्रौव्य सत् " उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये स्वभाव है। इससे यह बात निश्चित कोटि में आता है कि किसी भी नवीन पदार्थ का उत्पाद नहीं होता है और न सत् पदार्थ का विनाश ही होता है। " सतो विनाश. असतश्चोत्पादो न " " जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीवित्रु " यह जीव शब्द की व्युत्पत्ति है।

४४ કહ્યુ છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે તે પ્રમાણ દ્વારા બાધિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહ્યુ છે, " प्राण " शब्द वडे सूत्रकारे त्रस अने स्थावर प्राणीओनु ग्रहण कयु छे तेमथी १० द्रव्य प्राणोमाथी जेमनामा पोतपोताने योग्य प्राणोनो सद्भाव मळे छे तेथी तेमना सद्भावथी ज तेओ प्राणी कहेवाय छे " भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन् " आ भूत शब्दनी व्युत्पत्ति छे तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे के वर्तमानकाळमा जेओ सत्ता विशिष्ट छे, तेओ भविष्यकाळमा सत्ता विशिष्ट रहेशे अने भूतकाळमा पण जेओ सत्ता विशिष्ट हता आ व्युत्पत्ति वडे सूत्रकारे ए बताव्यु छे के दरेके दरेक जीव वगेरे पदार्थ कोई पण कालमा ने व्ययधर्म विशिष्ट होवा छताए पोतपोतानी सत्ताथी रहित होता

द्रव्यनो " उत्पादव्ययध्रौव्य सत् " उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्य
एथी ए वात चोक्कस रीते स्पष्ट थाय छे के कोई पण नवीन
थतो नथी अने सत् पदार्थनो विनाश पण थतो नथी
असतश्चोत्पादो न " " जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीवित्रु " आ

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःखानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुन पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

'न हतव्या' न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्या इत्यर्थ, "न अज्जावेयव्या" नाज्ञापयितव्याः=न यातयितव्या इत्यर्थः, "न परिघेत्तव्या" न परिग्रहीतव्या =इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्या, "न परिता-

---

जो जीते है, जीवेंगे और जिये है, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व धर्म का अभाव नही होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नही होता है इससे वृक्षादिको में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन "समस्त जीवों में बारबार दया करनी चाहिये" है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित है । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शाक्य आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषो का सद्भाव पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમા ત્રિકાળમા પણ જીવનત્વ ધર્મનો અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભલે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાએ તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમા અચેનતા માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનુ ખડન થઈ જાય છે

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય વાચી શબ્દોનો જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનુ ખાસ કારણ " બધા જીવોમા વારવાર સદય રહેવુ જોઇએ " તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાક્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયેા છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથા સ્વીકાર્યો છે તે બરેબર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ છે અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

द्वीन्द्रियादिपञ्चेन्द्रियपर्यन्तानामुपसंख्यानार्थम्, इन्द्रियादिप्राणानां यथासम्भवधारणात् तेषु प्राणित्वमस्तीति भावः। तथा-सर्वे 'भूया' भूताः=भवन्ति भविष्यन्त्यभूवन्निति भूताः-चतुर्दशभूतग्रामरूपाः, तथा-सर्वे जीवा=जीवन्ति जीविष्यन्त्यजीविषु रिति जीवाः-नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवाः, तथा-सर्वे "सत्ता" सत्त्वाः=

प्रमाण द्वारा बाधित नहीं हो सकने से पूर्वापर विरोध रहित ही कहा है। "प्राण" शब्द से सूत्रकार ने त्रस और स्थावर प्राणियों का ग्रहण किया है। क्यों कि १० द्रव्य प्राणों में से इनको अपने २ योग्य प्राणों का सद्भाव पाया जाता है। अतः इनके सद्भाव से ही ये प्राणी कहे जाते हैं। "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्" यह भूत शब्द की व्युत्पत्ति है। इसका भाव यही है कि जो वर्तमान में सत्ता विशिष्ट हैं, आगामी काल में सत्ता विशिष्ट रहेंगे एवं भूतकाल में भी जो सत्ता विशिष्ट थे। इस व्युत्पत्ति से सूत्रकार ने यह प्रदर्शित किया हैं कि प्रत्येक जीवादिक पदार्थ किसी भी काल में उत्पाद और व्यय धर्म विशिष्ट होते हुए भी अपनी २ सत्ता से रहित नहीं होते हैं। क्यों कि द्रव्य का "उत्पादव्ययध्रौव्य सत्" उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये स्वभाव हैं। इससे यह बात निश्चित कोटि में आता है कि किसी भी नवीन पदार्थ का उत्पाद नहीं होता है और न सत् पदार्थ का विनाश ही होता है। "सतो विनाशः असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीविषु" यह जीव शब्द की व्युत्पत्ति है।

કર્યું કહ્યું છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે તે પ્રમાણ દ્વારા બાધિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહ્યું છે, "प्राण" શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનુ ગ્રહણ કર્યું છે કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણોમાથી એમનામા પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોનો સદ્ભાવ મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्" આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે વર્તમાનકાળમા જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમા સત્તા વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા આ વ્યુત્પત્તિ વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યુ છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમા ઉત્પાદ અને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાએ પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા નથી કેમકે દ્રવ્યનો "उत्पादव्ययध्रौव्य सत्" ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય સ્વભાવ છે એથી એ વાત ચોક્કસ રીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન પદાર્થનો ઉત્પાદ થતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ નો નથી "सतो विनाश असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अ આ

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःखानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुन पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

'न हतव्या' न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्या इत्यर्थ, "न अज्जावेयव्या" नाज्ञापयितव्याः=न यातयितव्या इत्यर्थः, " न परिवेत्तव्या " न परिग्रहीतव्या =इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्या, " न परिता-

---

जो जीते हैं, जीवेंगे और जिये है, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व धर्म का अभाव नही होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नहीं होता है इससे वृक्षादिको में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन "समस्त जीवों में बारबार दया करनी चाहिये " है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित है । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शाक्य आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषो का सद्भाव पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમા ત્રિકાળમા પણ જીવનત્વ ધર્મનેા અભાવ થતેા નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભલે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળેા હેાય છતાએ તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતેા નથી આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમા અચેનતા માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનુ ખડન થઈ જાય છે

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય વાચી શબ્દોનેા જે પ્રયેાગ કર્યો છે તેનુ ખાસ કારણ " બધા જીવેામા વારવાર સદય રહેવુ જોઇએ " તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાક્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયેા છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથા સ્વીકારેા છે તે બરેબર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે દોષેાનેા સદ્ભાવ છે અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લેાકેા દ્વારા પ્રતિપાદિત હેાવાને

वेयव्वा" न परितापयितव्या =अन्नपानाद्यवरोधनेन ग्रीष्मातपादौ स्थापनेन च न पीडनीयाः, " न किलामेयव्वा " न श्रामयितव्याः=न खेदयितव्याः=न त्रिपशस्त्रादिना मारयितव्याः ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्गतत्वरूपितः, धर्मः=सर्वप्राणिप्राणातिपातविरमणरूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थ । आर्हतधर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु

सद्भाव का कारण उसमें असर्वज्ञ और सरागियों द्वारा प्रणीतता ही है पूर्ण ज्ञानीयो द्वारा प्रदर्शित मार्ग ही शुद्ध होता है उसका कारण उनमें राग द्वेष का सर्वथा अभाव ही होता है । असर्वज्ञ या रागद्वेषकलुषित-चित्तवालों द्वारा प्रदर्शित मार्ग इसलिये शुद्ध नहीं होता है कि वे एक तो उस विषय के पूर्ण ज्ञाता नहीं होते, दूसरी अपनी रागद्वेषमयी प्रवृत्ति को पुष्ट करने के लिये उसकी अन्यथा भी प्ररूपणा कर देते हैं। ऐसा धर्म शाश्वतिक नित्य नहीं होता है-क्यों कि ऐसा धर्मका विशिष्ट ज्ञानियों-केवलज्ञानियो द्वारा जीवों का कल्याण की कामना से निराकरण कर दिया जाता है । वीतरागप्रतिपादित धर्म ही अविनाशी रहता है, और उसीसे जीवों का सदा कल्याण होता रहता है । इसमे अन्यथाप्ररूपणाके लिये थोडी सी भी जगह नही मिलती है । पच महाविदेह क्षेत्रोंमें अब भी इस शुद्ध धर्मका सद्भाव है । इसी अपेक्षा इसे सूत्रकारने नित्य-अविनाशी कहा है । शाश्वतगतिरूप मुक्ति का कारण होने से

લીધે જ તેમા હિંસા વગેરે સદોષતા છે પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગ જ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા સ પૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સ પૂર્ણપણે જાણતા નથી અને બીજુ તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનુ વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવળજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઇને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનુ કલ્યાણ થતુ રહે છે આમા અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી અત્યારે પણ પચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકારે નિ ?
કહ્યો છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો હોવાથી આ ધ

सद्भावात् । तथा-शाश्वतः=शाश्वतगतिकारणत्वात् । यद्वा-यतो नित्यस्तस्माच्छाश्वत इति । अयमेव धर्मः श्रद्धेयो ग्राह्यश्चेत्यत्र हेतु मदर्शयन् विशेषणान्तरमाह-समेत्य इत्यादि । लोक षट् जीवनिकाय दुःखदावानलान्तःपतित, समेत्य=केवलज्ञानेन प्रत्यक्षतया विज्ञान, खेदज्ञैः=सर्वप्राणिदुःखाभिज्ञैस्तीर्थंकरैः प्रवेदितः=आदिष्ट । 'प्रवेदित' इत्यनेन धर्मोऽय मया न स्वमनीषया कल्पितः' इति च सुधर्मस्वामिना शिष्यमुद्दिश्य सूचितम् । अनुयोगद्वारे—

यह शाश्वत माना गया है अथवा हेतु हेतुमद्भाव से भी यों कह सकते हैं कि जिस कारण से यह नित्य है इसी कारण से यह शाश्वत माना गया है । अतः प्रत्येक मुमुक्षु जीवों द्वारा यह धर्म श्रद्धेय श्रद्धा करने योग्य एव ग्राह्य-आराधन करने योग्य है इस विषय मे पूर्वोक्त-रूप से सूत्रकार हेतु का कथन कर उस धर्म की प्ररूपणा करने के कारण का प्रदर्शन करते हुए " समेत्य लोक खेदज्ञैः प्रवेदितः " कहते हैं कि समस्त प्राणीयों के दुःखों के वेत्ता केवलज्ञानी प्रभु ने इस षट्जीव निकायरूप लोक को प्रत्यक्षरूप से साक्षात् दुःखरूपी दावानल से जलता हुआ देखकर इस शुद्ध, शाश्वतिक धर्म का कथन किया है ।

भावार्थ-अनत सासारिक दुःखो से सतप्त समस्त ससारी जीवों को साक्षात् हस्तामलकवत् देखकर दुःखो से उनके उद्धार के निमित्त वीतराग केवलज्ञानियोंने ही इस धर्म की प्ररूपणा की है । मैं ने अपनी ओर से इसका कथन नहीं किया है । इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी अपने शिष्य जम्बूस्वामी को समझाते हे ।

વામા આવ્યેા છે અથવા હેતુ-હેતુ મદ્દભાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે જે કારણને લઈને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામા આવ્યેા છે એથી દરેક મેાક્ષને ઇચ્છનારા જીવેા વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા યેાગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યેાગ્ય છે આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનુ કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતા " समेत्य लोक खेदज्ञै प्रवेदित " કહે છે કે બધા પ્રાણીઓના દુ ખેાને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ ષટ્જીવ નિકાય રૂપ લેાકને પ્રત્યક્ષ રૂપમા સાક્ષાત્ દુ ખ રૂપી દાવાનળમા સળગતા જોઈને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનુ કથન કર્યુ છે—

ભાવાર્થ—સ સારના બધા જીવેાને અનત સાસારિક દુ ખેાથી હસ્તા મલકવત્ સતપ્ત જોઈને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવળજ્ઞાનીઓ એ જ આ ધર્મનુ નિરૂપણ કર્યુ છે મે પેાતાની મેળે આ કથન કર્યુ નથી શ્રી સુધર્મા સ્વામી પેાતાના શિષ્ય જ બૂ સ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે

वेयव्वा" न परितापयितव्या =अन्नपानाद्यवरोधनेन ग्रीष्मातपादौ स्थापनेन च न पीडनीयाः, " न किलामेयव्वा " न श्रामयितव्याः=न खेदयितव्याः=न विष शस्त्रादिना मारयितव्याः ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्भगवत्प्ररूपितः, धर्मः=सर्वप्राणिप्राणातिपातविरमण रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थः । आर्हतधर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एव नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु

सद्भाव का कारण उसमें असर्वज्ञ और सरागियों द्वारा प्रणीतता ही है पूर्ण ज्ञानीयो द्वारा प्रदर्शित मार्ग ही शुद्ध होता है इसका कारण उनमें राग द्वेष का सर्वथा अभाव ही होता है । असर्वज्ञ या रागद्वेषकलुषित-चित्तवालों द्वारा प्रदर्शित मार्ग इसलिये शुद्ध नहीं होता है कि वे एक तो उस विषय के पूर्ण ज्ञाता नहीं होते, दूसरी अपनी रागद्वेषमयी प्रवृत्ति को पुष्ट करने के लिये उसकी अन्यथा भी प्ररूपणा कर देते हैं । ऐसा धर्म शाश्वतिक नित्य नहीं होता है-क्यों कि ऐसा धर्मका विशिष्ट ज्ञानियों-केवलज्ञानियो द्वारा जीवों का कल्याण की कामना से निराकरण कर दिया जाता है । वीतरागप्रतिपादित धर्म ही अविनाशी रहता है, और उसीसे जीवों का सदा कल्याण होता रहता है । इसमे अन्यथाप्ररूपणाके लिये थोडी सी भी जगह नही मिलती है । पच महाविदेह क्षेत्रोंमें अब भी इस शुद्ध धर्मका सद्भाव है । इसी अपेक्षा इसे सूत्रकारने नित्य-अविनाशी कहा है । शाश्वतगतिरूप मुक्ति का कारण होने से

લીધે જ તેમા હિંસા વગેરે સદોષતા છે પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગ જ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા સપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સપૂર્ણપણે જાણતા નથી અને બીજુ તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનુ વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવળજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઇને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનુ કલ્યાણ થતુ રહે છે આમા અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી અત્યારે પણ પચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકાર નિ ? કહ્યો છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો ક. હોવાથી આ ધર્મ

सद्भावात् । तथा-शाश्वतः=शाश्वतगतिकारणत्वात् । यद्वा-यतो नित्यस्तस्माच्छाश्वत इति । अयमेव धर्मः श्रद्धेयो ग्राह्यश्चेत्यत्र हेतु प्रदर्शयन् विशेषणान्तरमाह-समेत्य इत्यादि । लोक षट् जीवनिकाय दुःखदावानलान्त.पतित, समेत्य=केवलज्ञानेन प्रत्यक्षतया विज्ञान, खेदज्ञैः=सर्वप्राणिदुःखाभिज्ञैस्तीर्थंकरैः प्रवेदितः=आदिष्ट । 'प्रवेदितः' इत्यनेन धर्मोऽय मया न स्वमनीषया कल्पितः' इति च सुधर्मस्वामिना शिष्यमुद्दिश्य सूचितम् । अनुयोगद्वारे—

यह शाश्वत माना गया है अथवा हेतु हेतुमद्भाव से भी यों कह सकते है कि जिस कारण से यह नित्य है इसी कारण से यह शाश्वत माना गया है । अतः प्रत्येक मुमुक्षु जीवों द्वारा यह धर्म श्रद्धेय श्रद्धा करने योग्य एव ग्राह्य-आराधन करने योग्य है इस विषय मे पूर्वोक्त-रूप से सूत्रकार हेतु का कथन कर उस धर्म की प्ररूपणा करने के कारण का प्रदर्शन करते हुए " समेत्य लोक खेदज्ञैः प्रवेदित' " कहते है कि समस्त प्राणीयों के दु खों के वेत्ता केवलज्ञानी प्रभु ने इस षट्जीव निकायरूप लोक को प्रत्यक्षरूप से साक्षात् दुःखरूपी दावानल से जलता हुआ देखकर इस शुद्ध, शाश्वतिक धर्म का कथन किया है ।

भावार्थ-अनत सासारिक दु खो से सतप्त समस्त ससारी जीवों को साक्षात् हस्तामलकवत् देखकर दुःखो से उनके उद्धार के निमित्त वीतराग केवलज्ञानियोंने ही इस धर्म की प्ररूपणा की है । मैं ने अपनी ओर से इसका कथन नहीं किया है । इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी अपने शिष्य जम्बूस्वामी को समझाते है ।

વામા આવ્યેા છે અથવા હેતુ-હેતુ મદ્ભાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે જે કારણને લઇને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામા આવ્યેા છે એથી દરેક મેાક્ષને ઇચ્છનારા જીવેા વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા યેાગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યેાગ્ય છે આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનુ કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતા " समेत्य लोक खेदज्ञै प्रवेदित " કહે છે કે બધા પ્રાણીઓના દુ ખેાને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ ષટ્જીવ નિકાય રૂપ લેાકને પ્રત્યક્ષ રૂપમા સાક્ષાત્ દુ ખ રૂપી દાવાનળમા સળગતા જોઇને શુદ્ધ, શાશ્વતિક વર્મનુ કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સ સારના બધા જીવેાને અનત સાસારિક દુ ખેાથી હસ્તા મલકવત્ સતપ્ત જોઇને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવળજ્ઞાનીઓ એ જ આ ધર્મનુ નિરૂપણ કયુ છે મે પેાતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી શ્રી સુધર્મા સ્વામી પેાતાના શિષ્ય જબૂ સ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે

" जह मम ण पिय दुक्ख जाणिय एमेव सव्वजीवाण ।
न हणइ न हणावेइ य, सममणइ तेण सो समणो । इति "

छाया-यथा मम न प्रिय दुःख, ज्ञात्वा एवमेव सर्वजीवानाम् ।
न हन्ति न घातयन्ति च समम् अणति तेन स समणः ॥

च शब्दात् घ्नतश्चान्यान्न समनुजानीत इत्यनेन प्रकारेण 'सममणति' ति सर्वजीवेषु तुल्य वर्त्तते यतस्तेनासौ श्रमण इति गाथार्थ ।

'एस धम्मे सुद्धे' इत्यनेन आर्हत धर्मस्य हिंसादि दोषाभावाद्भगवता शुद्ध त्वमुक्तम् । शुद्धधर्मबोधकत्वाच्च द्वादशाङ्गयाः प्रवचनत्वमागमत्व सर्वोत्कृष्टत्व च सिध्यति । प्रवचनस्य स्वरूप माहात्म्य चाऽऽगमेषु भगवताऽभिहितम् ।

अनुयोगद्वार में-

जह मम ण पिय दुःख जाणिय एमेव सव्वजीवाण ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणो ॥ इति ।

जिस प्रकार दुःख मुझे इष्ट नहीं है, उसी तरह यह दुःख किसी भी ससारी जीवो को इष्ट नहीं है ऐसा समझ कर जो जीवो की विराधना स्वय नही करता और न दूसरों से करवाता है तथा समस्त जीवों में तुल्यता की भावना रखता है वही श्रमण है । श्रमण होने में ये पूर्वोक्त बाते हेतु-कारण हैं ।

" एस धम्मे सुद्धे " इस सूत्राश से श्री सुधर्मास्वामी ने तीर्थंकर कथित धर्म मे हिंसादिक दोषो के अभाव से शुद्धता का कथन किया है । इस शुद्ध धर्म का बोधक--बोध करानेवाली होने से ही द्वादशागी में प्रवचनता, आगमता एव सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है । भगवान ने

અનુયોગદ્વારમા—जह मम ण पिय दुःख जाणिय एमेव सव्वजीवाण ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणे ॥ इति ।

જેમ મને દુ ખ ગમતું નથી તેમજ તે દુ ખ સ સારના કોઇ પણ જીવને ગમે જ નહિ આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમા તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ 'શ્રમણ' છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે

" एस धम्मे सुद्धे " આ સૂત્રાશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમા હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનુ કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મનો બોધક—બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાગીમા પ્રવચનતા આગ[illegible] સર્વો-ત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનુ સ્વરૂપ

यथा भगवतीसूत्रे—

पवयण भंते ! पवयण, पावयणी पवयण ?। " गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी। पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे। तं जहा–आयारो० जाव दिट्ठिवाओ। इति, (श० २० उ०८)

भंते ! हे भदन्त ! " पवयण " प्रवचन–किं प्रवचन, उत–" पावयणी " प्रवचनी प्रवचनम् ?। " गोयमा ! " हे गौतम ! ' अरहा ' अर्हन् ' ताव ' तावत् नियमात्प्रवचनी। प्रवचन पुन ' दुवालसंगे ' द्वादशाङ्गी " गणिपिडगे " गणिपिटकम्। तद् यथा–" आयारो जाव दिट्ठिवाओ " आचाराङ्गादि यावत् दृष्टिवादः। इति,

पुनस्तत्रैव–" से नूण भंते ! तमेव सच्च नीसकं जं जिणेहिं पवेइयं ?।

प्रवचन का स्वरूप और उसका प्रभाव-माहत्म्य आगमों में कहा है। जैसे भगवती सूत्र में " पवयण भंते ! पवयण, पावयणी पवयण ? गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी। पवयण पुण दुवालसंगे गणिपिडगे। तं जहा-आयारे जाव दिट्ठिवाओ। इति (श० २० उ ०८)

भावार्थ-गौतमस्वामी पूछते हैं हे भगवन् ! प्रवचन प्रवचन है–या प्रवचनी प्रवचन है ? इस अश का समाधान करते हुए भगवान् कहते हैं–हे गौतम ! गणिपिटक जो आचारांग से लेकर दृष्टिवाद तक द्वादशाग आगम है वह समस्त प्रवचन है। इस प्रवचन को अर्थत प्रकट करनेवाले श्री तीर्थकर प्रभु प्रवचनी हैं। उसी भगवती सूत्र में और भी यह कहा है कि–" से नूण भंते ! तमेव सच्च निसकं जं जिणेहिं पवेइयं ? हंता गोयमा ! तमेव सच्च से नूण भंते ! एव मणे

માહાત્મ્ય કહ્યો છે જેમકે ભગવતી સૂત્રમા " पवयण भंते ! पवयण पावयणी पवयण ? गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी ! पवयण पुण दुवालसगे गणि पिडगे ! त जहा–आयारो जाव दिट्ठिवाओ। इति (श २० उ ८)

ભાવાર્થ—ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન છે કે પ્રવચની પ્રવચન છે ? આ શકાનુ સમાધાન કરતા ભગવાન કહે છે–કે હે ગૌતમ ! ગણિપિટક-કે જે આચારાગથી માડીને દૃષ્ટિવાદ સુધી દ્વાદશાગ આગળ છે તે સમસ્ત પ્રવચન છે અર્થત આ પ્રવચનને પ્રકટ કરનારા શ્રી તીર્થકર પ્રભુ પ્રવચની છે તે ભગવતી સૂત્રમા જ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે કે–(से नूण भंते तमेव सच्च नीसकं जं जिणेहिं पवेइयं ! हंता गोयमा ! तमेव सच्च से नूण भंते ! एव मणे धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए

" जह मम ण पिय दुक्ख जाणिय एमेव सव्वजीवाण ।
न हणइ न हणावेइ य, सममणइ तेण सो समणो । इति "

छाया-यथा मम न प्रिय दुःख, ज्ञात्वा एवमेव सर्वजीवानाम् ।
न हन्ति न घातयन्ति च समम् अणति तेन स समणः ॥

च शब्दात् घ्नतश्चान्यान् न समनुजानीत इत्यनेन प्रकारेण 'सममणति' ति सर्वजीवेषु तुल्य वर्त्तते यतस्तेनासौ श्रमण इति गाथार्थ ।

'एस धम्मे सुद्धे' इत्यनेन आर्हत धर्मस्य हिंसादि दोषाभावाद्धगवता शुद्ध त्वमुक्तम् । शुद्धधर्मबोधकत्वाच्च द्वादशाङ्गयाः प्रवचनत्वमागमत्व सर्वोत्कृष्टत्व च सिध्यति । प्रवचनस्य स्वरूप माहात्म्य चाऽऽगमेषु भगवताऽभिहितम् ।

अनुयोगद्वार में-

जह मम ण पिय दुःख जाणिय एमेव सव्वजीवाण ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणो ॥ इति ।

जिस प्रकार दुःख मुझे इष्ट नहीं है, उसी तरह यह दुःख किसी भी ससारी जीवो को इष्ट नहीं है ऐसा समझ कर जो जीवों की विराधना स्वय नही करता और न दूसरों से करवाता है तथा समस्त जीवों में तुल्यता की भावना रखता है वही श्रमण है। श्रमण होने में ये पूर्वोक्त बाते हेतु-कारण हैं।

" एस धम्मे सुद्धे " इस सूत्राश से श्री सुधर्मास्वामी ने तीर्थंकर कथित धर्म मे हिंसादिक दोषो के अभाव से शुद्धता का कथन किया है। इस शुद्ध धर्म का बोधक-बोध करानेवाली होने से ही द्वादशागी में प्रवचनता, आगमता एव सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है। भगवान ने

અનુયોગદ્વારમા—जह मम ण पिय दुख जाणिय एमेव सव्वजीवाण ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणे ॥ इति ।

જેમ મને દુખ ગમતું નથી તેમજ તે દુખ સ સારના કોઇ પણ જીવને ગમે જ નહિ આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમા તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ 'શ્રમણ' છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે

" एस धम्मे सुद्धे " આ સૂત્રાશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમા હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનુ કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મનો બોધક—બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાગીમા પ્રવચનતા આગમતા અને સર્વો-ત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનુ સ્વરૂપ અને વ

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैयायिक, संशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, असन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्ध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्व दुःखानामन्तं कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयणं भगवया सुकहियं " इति (प्रश्न० संवर०)

छाया—' इदं च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचनं भगवता सुकथितम्' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्यं प्रदर्शयता भगवता-माधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्तः ।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासंपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं " इति-(प्रश्न संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त संसारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ ૨૫૯૮ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સંપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

अन्यच्च-इम च ण सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहीय " इति-(प्रश्न० संवर०)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સંસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

हता गोयमा ! तमेव सच्चं । से नूण भंते ! एव मणे धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ?। हता गोयमा ! त चेव " त्ति ।

छाया—अथ नून भदन्त । तदेव सत्य निश्शङ्क यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नून भदन्त ? एव मनसि धारयन एव प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडि-पुन्न नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति सव्वदु खाणमंत करति ।

धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आरोहए भवइ ! हता गोयमा ! त चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभि लाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है-उसमें किसी भी प्रकार की शका के लिये स्थान नही है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थंकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यक सूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेया उय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झ ति मुच्चति परिणि वाएति सव्वदु खाणमत करति ।

ભવઇ ! હ તા ગોયમા ! ત ચેવ ઇત્તિ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સ પૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઇએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમા લગીરે શ ા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી છે-(इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमस दिद्ध ! इत्थ ठिया जीवा सिज्झ ति बुज्झति मुच्च ति परिणिव्वाएति सव्व [illegible] क र ति ।

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ मवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैयायिक, संशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्ग', मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, अमन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्धयन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्वं दुःखानामन्तं कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयणं भगवया सुकथियं" इति (प्रश्न० संवर०)

छाया—' इदं च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचनं भगवता सुकथितम्' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्यं प्रदर्शयता भगवता-प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्तः ।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासंपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखो का विनाश है।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं" इति-(प्रश्न संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त संसारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करें और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સંપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

अन्यच्च-इमं च णं सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहीय " इति-(प्रश्न० संवर०)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સુમાર્ગીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા

इता गोयमा ! तमेव सच्च । से नूण भंते ! एव मणे धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ?। इता गोयमा ! त चेव " त्ति ।

छाया—अथ नून भदन्त । तदेव सत्य निश्शङ्क यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नून भदन्त ? एव मनसि धारयन एव मकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडि-पुन्न नेयाउय सशुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति सव्वदु खाणमंत करति ।

धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आरोहए भवइ । हंता गोयमा ! त चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभि लाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है-उसमें किसी भी प्रकार की शका के लिये स्थान नही है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यक सूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेया उय सशुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झ ति मुच्चति परिणि बाएति सव्वदु.खाणमत करति ।

ભવઇ ! હ તા ગોયમા ! ત ચેવ ઇતિ) આ સૂત્રનેા ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મેાક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પેાતાના હૃદયમા સ પૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમા લગીરે શ કા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પેાતાના મનમા કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મેાક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હેાય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી છે-(इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमस दिद्ध ! इत्थ ठिया जीवा सिज्झ ति बुज्झति मुच्च ति परिणिवाएति सव्व ८ करति ।

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैयायिक, संशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, असन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्धयन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्वं दुःखानामन्तं कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इम च ण सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहिय " इति (प्रश्न० संवर०)

छाया—' इद च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचन भगवता सुकथितम्' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्य प्रदर्शयता भगवता-प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्त ।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासंपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है।

अन्यच्च—इम च ण सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयण भगवया सुकहिय " इति-(प्रश्न संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त संसारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સંપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

अन्यच्च-इम च ण सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयण भगवया सुकहीय " इति-(प्रश्न० संवर०)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સંસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

हता गोयमा ! तमेव सच्चं । से नूणं भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ?। हंता गोयमा ! तं चेव " त्ति ।

छाया—अथ नून भदन्त । तदेव सत्य निश्शङ्क यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नून भदन्त ? एव मनसि धारयन् एव प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडि-पुन्न नेयाउय सशुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति सव्वदु खाणमत करति ।

धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आरोहए भवइ । हंता गोयमा ! त चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभि लाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है-उसमें किसी भी प्रकार की शका के लिये स्थान नही है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यक सूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेया उय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झ ति मुच्चति परिणि वाएति सव्वदुःखाणमत करति ।

भवइ ! हंता गोयमा ! त चेव इति) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સ પૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમા લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી છે-(इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमस दिद्ध ! इत्थ ठिया जीवा सिज्झ ति बुज्झति मुच्च ति परिणिव्वाएति सव्व ु — कर ति ।

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैयायिक, संशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, असन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्ध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्व दुःखानामन्तं कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इम च णं सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयणं भगवया सुकहियं " इति (प्रश्न० संवर०)

छाया—' इद च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचन भगवता सुकथितम्' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्य प्रदर्शयता भगवता-प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्त ।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासंपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं " इति-(प्रश्न संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त संसारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સંપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

अन्यच्च-इम च णं सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहीय " इति-(प्रश्न० संवर०)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સંસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

हता गोयमा ! तमेव सच्चं । से नूणं भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ?। हंता गोयमा ! तं चेव " त्ति ।

छाया—अथ नून भदन्त ! तदेव सत्यं निश्शङ्कं यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नून भदन्त ? एवं मनसि धारयन् एवं प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्यसूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं । इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाएंति सव्वदुक्खाणमंतं करंति ।

धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ । हंता गोयमा ! तं चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभिलाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है–उसमें किसी भी प्रकार की शंका के लिये स्थान नहीं है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थंकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यक सूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं । इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाएंति सव्वदुःखाणमंतं करंति ।

भवइ ! हंता गोयमा ! तं चेव इति) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઇએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમાં લગીરે શંકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે–(इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं ! इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाएंति सव्व दुक्खाणमंतं करंति ।

है, अनवद्य है, इस में प्रत्येक जीवादिक पदार्थ का विवेचन बहुत ही अच्छी तरह से किया गया है अतः यह महार्थ है इसका प्रभाव भी अद्वितीय है इसकी छत्रछाया में आने से प्रत्येक भव्य जीव आत्मक ल्याण के अपने अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि कर लिया करते हैं। इस में प्रतिपादित तत्व सामान्यजन नहीं ज्ञात कर सकते हैं-द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयरूप दो दृष्टिया जिनके पास हैं-वे ही इसमें प्रतिपादित विषय को अच्छी तरह ज्ञात कर सकते हैं। इसमें जो भी कुछ कथन सर्वज्ञ भगवान् ने किया है वह इन्हीं दो दृष्टियो को सामने रखकर किया गया है यदि एक दृष्टि को ही प्रधान रखकर इसके तत्व को समझने की चेष्टा की जाय तो वह प्रतिपाद्य विषय ठीक २ नहीं समझा जा सकता है। तथा इस प्रकार की प्ररूपणा अन्यथा भी ज्ञात होने लगती है इसलिये दूसरी दृष्टि को सामने रखकर ही वह विषय ठीक २ रीति से समझ में आ सकता है, अत इसी अभिप्रायसे इसे निपुण जनवेद्य कहा है तथा इस में प्रत्येक पदार्थ को उत्पादन व्यय और ध्रौव्य आत्मक कहा गया है-वह भी द्रव्य और पर्याय की अपेक्षा से ही कहा गया है द्रव्य की अपेक्षा से प्रत्येक जीवादिक पदार्थ ध्रौव्यरूप

અતીવકુશળ છે દરેક દરેક જીવો ના આ હીતકારી છે અનવદ્ય છે, એમા દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનુ વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યુ છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેક ભવ્યજીવ આત્મકલ્યાણ વિષયક પોતાની અતિમ લક્ષની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્ય લોકો જાણી શકતા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ્ઞ ભગવાને આમા જે કઈ કહ્યુ છે તે બધુ આ પૂર્વોકત બને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યુ છે ને એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્ત્વને જાણવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ જાતની પ્રરૂપણા અ યથા પણ માલુમ થવા માડે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય બરાબર રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેદ્ય' કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમા ને દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

यथा भगवती सूत्रे--(श० २५ उ० ७)

" धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा-आणाविचए " अवायविचए, विवागविचए, सठाणविचए ॥

छाया—धर्मध्यान चतुर्विध प्रज्ञप्तम् । तद् यथा-आज्ञाविचयः, अपाय विचय , विपाकविचयः, सस्थानविचयः ।

अत्र प्रसङ्गवशाद् आज्ञाविचय एव व्याख्यायते—

आज्ञाविचयश्च-आज्ञायाः पर्यालोचन, आज्ञा-सर्वज्ञप्रणीत आगम', तामाज्ञा मित्थ विचिनुयात्=पर्यालोचयेत् - पूर्वापरविशुद्धमतिनिपुणामशेषजीवकार्यहिता

हैं उन में सर्व प्रथम आज्ञाविचय को जो कहा है उसका कारण यही है कि शेष तीन पायों (भेदों) में प्रधान है। भगवती सूत्र श. २५ उ-७ में देखो यह वर्णन इस प्रकार से हुआ है-धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा-आणाविचए, अवायविचए, विवागविचए, सठाणविचए ॥

अर्थ— धर्मध्यान ४ प्रकार का है (१) अज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाकविचय (४) सस्थानविचय।

प्रसगवश यहां आज्ञाविचय पर विवेचन किया जाता है-तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का विचय-पर्यालोचन-विचार करना सो आज्ञाविचय है सर्वज्ञ कथित आगम का नाम आज्ञा है । इस आगमरूप आज्ञा का इस प्रकार से विचार करना चाहिये-यह प्रभु प्रतिपादित आगम पूर्वा-पर विरोध रहित होने से विशुद्ध है, प्रत्येक सूक्ष्म अन्तरित और दूरार्थ के प्रतिपादन करने में अतिनिपुण है, प्रत्येक जीवों का यह हितकारी

તેઓમા જે સૌ પ્રથમ આજ્ઞા વિચયનો જે ઉલ્લેખ કરવામા આવ્યો છે તેનુ કારણ એ જ છે કે બાકી રહેલા ત્રણ ઉપભેદોમા તે મુખ્ય છે ભગવતી સૂત્ર શ ૨૫ ઉ ૭ મા એના માટે જોવુ જોઇએ ત્યા આનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે-धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा-आणाविचए, अवायविचए, विवाग विचए, स ठाणविचए ॥

અર્થ—ધર્મધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે (૧) આજ્ઞા-વિચય, (૨) અપાય વિચય, (૩) વિપાક વિચય, (૪) સ સ્થાન વિચય

પ્રસ ગવશ અહીં આજ્ઞાવિચય વિષે વર્ણન કરવામા આવે છે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરવો તે આજ્ઞાવિચય છે સર્વ જ્ઞકથિત આગમનુ નામ આજ્ઞા છે તે આગમરૂપ આજ્ઞાનો આ રીતે વિચાર કરવો જોઇએ કે આ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગામ પૂર્વાપર વિરોધ ર અહલ વિશદ્ધ છે, દરેક સૂક્ષ્મ અતરિત અને દૂરાર્થના

है, अनवद्य है, इस में प्रत्येक जीवादिक पदार्थ का विवेचन बहुत ही अच्छी तरह से किया गया है अतः यह महार्थ है इसका प्रभाव भी अद्वितीय है इसकी छत्रछाया में जाने से प्रत्येक भव्य जीव आत्मक ल्याण के अपने अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि कर लिया करते हैं। इस में प्रतिपादित तत्व सामान्यजन नहीं ज्ञात कर सकते हैं-द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयरूप दो दृष्टिया जिनके पास हैं-वे ही इसमें प्रतिपादित विषय को अच्छी तरह ज्ञात कर सकते हैं। इसमें जो भी कुछ कथन सर्वज्ञ भगवान् ने किया है वह इन्हीं दो दृष्टियो को सामने रखकर किया गया है यदि एक दृष्टि को ही प्रधान रखकर इसके तत्व को समझने की चेष्टा की जाय तो वह प्रतिपाद्य विषय ठीक २ नहीं समझा जा सकता है। तथा इस प्रकार की प्ररूपणा अन्यथा भी ज्ञात होने लगती है इसलिये दूसरी दृष्टि को सामने रखकर ही वह विषय ठीक २ रीति से समझ में आ सकता है, अत इसी अभिप्रायसे इसे निपुण जनवेद्य कहा है तथा इस में प्रत्येक पदार्थ को उत्पादन व्यय और ध्रौव्य आत्मक कहा गया है-वह भी द्रव्य और पर्याय की अपेक्षा से ही कहा गया है द्रव्य की अपेक्षा से प्रत्येक जीवादिक पदार्थ ध्रौव्यरूप

અતીવકુશળ છે દરેક જીવો ને આ હીતકારી છે અનવદ્ય છે, એમા દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનુ વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યુ છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેક ભવ્યજીવ આત્મકલ્યાણ વિષયક પોતાની અતિમ લક્ષની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્ય લોકો જાણી શકતા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ્ઞ ભગવાને આમા જે કઈ કહ્યુ છે તે બધુ આ પૂર્વોક્ત બને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યુ છે તો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્ત્વને જાણવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ જાતની પ્રરૂપણા અન્યથા પણ સાલુમ થવા માડે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય સરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેદ્ય' કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમાં જે દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

मनवद्यां महार्थां महानुभावां निपुणजनविज्ञेया द्रव्यपर्यायप्रपञ्चवतीमनायनिधनाम्। अस्य प्रवचनस्याऽऽद्यन्तरहितत्वं च भगवता नन्दीसूत्रे निगदितम्—

"इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग न कयाइ णासी ॥"

इत्येतद् द्वादशाङ्ग गणिपिटक न कदापि नासीत् ॥ इत्यादि।

है और पर्याय की अपेक्षा से उत्पादन व्ययरूप है, इसलिये भी जिन प्रतिपादित आगमरूप आज्ञा स्वय द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली है। अथवा जीवादिक समस्त ६ द्रव्यो की त्रिकालवर्ती समस्त पर्यायें इसमे प्रतिपादित हुई हैं, अथवा कोई भी द्रव्य कभी भी पर्याय रहित नहीं हो सकता है-स्वभाव पर्यायें और व्यञ्जन पर्यायें, विभाव पर्यायें और अर्थपर्यायें प्रत्येकक्षण में समस्तद्रव्यों में होती रहती हैं, इत्यादिरूप से द्रव्य और पर्यायो का प्रतिपादन इस आज्ञा में भगवान ने प्रदर्शित किया है इस अपेक्षा भी यह द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली मानी गई है तथा यह अनादि अनन्त है न कभी इस आज्ञा की आदि हुई है और न कभी इसका विनाश होगा। नदीसूत्र में भी प्रवचन की अनादि अनन्तता के विषय मे "इच्चेइय दुवालसग गणिपिडिग न कयाइनासी" यही कहा है-ऐसा कोई सा भी काल नहीं था कि जिस काल में इस द्वादशागरूप गणिपिटकका सद्भाव नहीं था।

અપેક્ષાથી દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ ધ્રૌવ્યરૂપ છે અને પર્યાયની અપેક્ષાથી ઉત્પાદ વ્યયરૂપ છે એટલા માટે પણ જિન પ્રતિપાદિત આગામરૂપ આજ્ઞા પોતે દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપચ (વિસ્તાર) વાળી છે અથવા તો જીવ વગેરે બધા ૬ દ્રવ્યોના ત્રિકાલ વર્તા સમસ્ત પર્યાયો આમા પ્રતિપાદિત થયા છે, અથવા કોઈ પણ દ્રવ્ય કોઇ પણ દિવસે પર્યાય રહિત થઇ શકતુ નથી સ્વભાવ પર્યાયો અને વ્યજન પર્યાયો, વિભાવ પર્યાયો અને અર્થ પર્યાયો દરેક ક્ષણમા બધા દ્રવ્યોમા થતી રહે છે ઇત્યાદિ રૂપથી દ્રવ્ય અને પર્યાયોનુ પ્રતિપાદન આ આજ્ઞામા ભગવાને બતાવ્યુ છે આ અપેક્ષાથી પણ આ દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપચ (વિસ્તાર) વાળી માનવામા આવી છે તેમજ આ અનાદિ અનત છે કોઇ દિવસ આજ્ઞાની આદિ થઇ નથી અને કોઇ પણ દિવસે આનો વિનાશ થશે નહિ નદીસૂત્રમા પણ પ્રવચનની અનાદિ અનતતાને લગતી (इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग न कयाइनासी) એ જ વાત કહેવામા આવી છે એવો કોઈ પણ કાળ હતો નહિ કે તે કાળે આ દ્વાદશાગ રૂપ ગણિપિટકનો સદ્ભાવ હતો નહિ આ રીતે આ આગમની મહત્તા અથવા તો

इत्थं चागममाहात्म्यपर्यालोचनरूपस्य धर्मध्यानस्याऽऽ – र्हताऽऽज्ञाविषयत्वाद् धर्मध्यानस्य धर्मत्व सिद्धम् । तथा–हिंसादि–दोषलेशेनाप्यसंपृक्तस्य शुद्ध धर्मस्य बोधकत्वादहिंसाप्रधानस्य प्रवचनस्य श्रद्धेयत्व च सिद्धम् ।

अहिंसायामर्हतो भगवत आज्ञा प्रदर्शिता, एव सयमेपि तदाज्ञा वर्तते । यथा –ज्ञाताधर्मकथाऽङ्गसूत्रे–(प्रथमा यपने)

" तएण समणे भगव महावीरे मेह कुमार सयमेव पव्वावेइ, जाव सयमेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठियव्व णिसीइयव्व

इस प्रकार इस आगम की महत्ता अथवा उसके महात्म्य का विचार करना यही आज्ञाविचय नामक धर्मध्यान का प्रथम भेद है। इस ध्यान में अर्हतप्रभु की आज्ञा का ही विचार होता है–अतः इस ध्यान मे उन की आज्ञा का विषय करनेवाला होने से धर्मरूपता सिद्ध है तथा हिंसादिक दोष के लेश से भी रहित ऐसे शुद्ध धर्म का बोधक होने से अहिंसाप्रधान इस प्रवचन मे श्रद्धेयता सिद्ध होती है।

इस पूर्वोक्त प्रकार से अहिंसा में अर्हत भगवान् की आज्ञा का प्रदर्शन कर अब सयममें भी उनकी आज्ञा इसी प्रकार की है यह प्रकट करने के लिये सर्व प्रथम ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र से इस विषय की पुष्टि करते हुए सूत्रकार कहते हैं।

" तएण समणे भगव महावीरे मेहकुमार सयमेव पव्वावेइ, जाव धम्ममाइक्खइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठियव्व णिसी-

સ્થને લગતો વિચાર કરવો એ જ આજ્ઞા–વિચય નામક ધર્મધ્યાનનો પ્રથમ ભેદ છે આ ધ્યાનમા અર્હંત પ્રભુની આજ્ઞા વિષે જ વિચાર હોય છે તેથી આ ધ્યાનમા તેમની આજ્ઞાનો વિષય પ્રતિપાદિત થયો છે માટે આમા ધર્મ રૂપતા સિદ્ધ છે તેમજ હિંસા વગેરે દોષોથી પણ રહિત શુદ્ધ કર્મનો બોધક હોવાને કારણે અહિંસા પ્રધાન આ પ્રવચનમા શ્રદ્ધેયતા સિદ્ધ થાય છે

આ પ્રમાણે પૂર્વોક્ત રીતે અર્હંત ભગવાનની અહિંસાના વિષે આજ્ઞા બતાવીને હવે આગળ સૂત્રકાર સયમ માટે પણ તેઓશ્રીની આજ્ઞા આ રીતે જ છે આ વાત સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૌ પ્રથમ જ્ઞાતા–ધર્મકથાઙ્ગ સૂત્રથી આ વિષયની પુષ્ટિ કરતા કહે છે—

" तएण समणे भगव महावीरे मेहकुमार सयमेव पव्वावेइ, जाव मय मेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठि-

तुयट्टियव्व भुंजियव्व भासियव्व, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्वं, अस्सिं च ण अट्ठे णो पमाएयव्व " इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघ कुमार स्वयमेव प्रव्राजयति, यावत् स्वयमेव आचार यावद् धर्ममाख्याति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्य, स्थातव्य' निषत्तव्य, त्वग्वर्तयितव्य भोक्तव्य भाषितव्यत्, एवमुत्थाय उत्थाय प्राणेषु भूतेषु जीवेषु सत्त्वेषु सयमेन सयन्तव्यम्, अस्मिंश्च खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम् । इति,

दशवैकालिक सूत्रेऽपि—

" जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए ।
जय भुंजतो भासतो पावकम्म न बधई ॥ "

इयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व भासियव्व एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व, अस्सिंच ण अट्ठे णो पमाएयव्व"

श्रमण भगवान महावीर ने स्वय अपने ही हाथों से मेघकुमारको जब भागवती दीक्षा प्रदान की उनके लिये मुनि विषयक आचार आदि का जब उन्हो ने उपदेश दिया तब उन्हो ने उसे यही समझाया कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहारकरते और बात चित करते समय प्राणियो, भूतो, जीवो, और सत्वो में सदा सयम से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक शारीरिक एव वाचनिक क्रियाओ में, सयमित प्रवृत्ति करें। इस प्रकार की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने सयम की रक्षा होती है इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नही करना चाहिये। दशवै कालिक सूत्र में भी यही कहा है-" जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय

यव्व णिसीइयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व, भासियव्व, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहि भूयेहि जावेहि सत्तेहि सजमेण सजमियव्व अस्सिं च ण अट्ठे णो पमाएयव्व "

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ્યારે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમા એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુપ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતા, બેસતા, સૂઇ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્વોમા હમેશા સયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવુ જોઇએ મુનિની એ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયા ઓમા સયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઇને રહેવાથી જ મુનિઓ વડે સયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમા મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ કરવો જોઇએ નહિ દશવૈકાલિક સૂત્રમા પણ એજ વાત કહેવામા આવી છે કે જય ચિટ્ઠે જયમાસે જય સએ, જય ભુંજતો ભાસતો

छाया-यतं चरेत् यत तिष्ठेत्, यतमासीत यत शयीत ।
यत भुञ्जानो भाषमान पापकर्म न बध्नाति ॥ १ ॥ इति ।
तत्रैव-' संजम निहुओ चर " इत्यादि । छाया-सयम निभृतश्चर ' इति ।
सयमे तीर्थंकरस्याज्ञा प्रदर्शिता, इदानीं तपसि तदाज्ञा प्रदर्श्यते । यथा-दश वैकालिक सूत्रे-(द्वितीयाध्ययने)
" आयावयाही चय सोगमल्ल " इति । " आयावयाही " आतापय=आतापनारूपतपोधर्माराधनेन तनु शोषय, " सोगमल्ल " सौकुमार्यं " चय " त्यज=परिहर ।

सए, जय भुजतो भासतो पावकम्म न बधई" सकल सयमियो को पूर्ण सावधान तापूर्वक ही चलना चाहिये और पूर्ण सावधानता पूर्वक ही बैठना चाहिये । उठने बैठने में तथा आहारादि क्रिया करने और बोलने चालने में सदा उसे अपनी यत्नाचारमय प्रवृति पर ही लक्ष्य रखना चहिये । इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से वह साधु पापकर्म का बध नही करता है । इसलिये हे मेघकुमार ! तुम " सयम निभृतश्चर " इस सकल सयम की अच्छी तरह से-यत्नाचारमय प्रवृत्ति से रक्षा करो-पालन करो । उस प्रकार से सयम की आराधना में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का प्रदर्शन सूत्रकार ने किया है । अब तप के आराधन करने में उनकी क्या आज्ञा है-वे यह स्पष्ट करते है " आयावयाही चय सोगमल्ल " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) 'हे मुने ! सुकुमालपने को छोड़ आतापनाले' आतापनारूप तपधर्म की आराधना से मुनि को चाहिये

બધા સયમી લોકોએ સ પૂર્ણપણે સાવધાન થઇનેજ ચાલવું જોઇએ અને પૂર્ણ સાવધાન થઇને જ બેસવુ જોઇએ ઉઠવા બેસવામા તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા કરવામા અને બોલવા ચાલવામા હ મેશા તેને પોતાની યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ ઉપર જ લક્ષ્ય આપવુ જોઇએ આ રીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે સાધુ પાપ-કર્મનો બધ કરતો નથી એથી હે મેઘકુમાર ! તમે " सयम निभृतश्चर " આ સકલ સયમની સારી રીતે યત્નાચારમયી પ્રવૃત્તિ વડે રક્ષા કરો-આનુ પાલન કરો આ રીતે સૂત્રકારે સ યમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનુ પ્રદર્શન કર્યું છે હવે તપની આરાધના કરવામા તેઓશ્રીની આજ્ઞા શી છે ? તે સૂત્રકાર અહીં સ્પષ્ટ કરે છે-" आयावयाही चय सोगमल्ल " (દશવૈકાલિક દ્વિતીય અધ્યયન) હે મુનિ ! સુકોમળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારો આતાપના રૂપ તપધર્મની આરાધનાથી મુનિ પોતાના શરીરને કૃશ (દુર્બળ) બનાવે અને શારીરિક

तुयट्टियव्व भुंजियव्व भासियव्व, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व, अस्सिं च ण अट्ठे णो पमाएयव्व " इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघ कुमार स्वयमेव प्रव्राजयति, यावत् स्वयमेव आचार यावद् धर्ममाख्याति–एव खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्य, स्थातव्यं' निषत्तव्य, त्वग्वर्तयितव्य भोक्तव्य भाषितव्यत्, एवमुत्थाय उत्थाय प्राणेषु भूतेषु जीवेषु सत्त्वेषु सयमेन सयन्तव्यम्, अस्मिंश्च खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम्। इति,

दशवैकालिक सूत्रे ऽपि––

" जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए ।
जय भुजतो भासतो पावकम्म न बधई ॥ "

इयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व भासियव्व एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व, अस्सिंच ण अट्ठे णो पमाएयव्व"

श्रमण भगवान महावीर ने स्वय अपने ही हाथों से मेघकुमारको जब भागवती दीक्षा प्रदान की उनके लिये मुनि विषयक आचार आदि का जब उन्हो ने उपदेश दिया तब उन्हो ने उसे यही समझाया कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहारकरते और बात चित करते समय प्राणियो, भूतो, जीवो, और सत्वो में सदा सयम से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक शारीरिक एव वाचनिक क्रियाओ में, सयमित प्रवृत्ति करें। इस प्रकार की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने सयम की रक्षा होती है इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नही करना चाहिये। दशवै कालिक सूत्र में भी यही कहा है–" जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय

यञ्च णिसीइयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व, भासियव्व, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहि भूयेहि जावेहि सत्तहि सजमेण सजमियव्व अस्सिं च ण अट्ठे णो पमाएयव्व "

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જાતે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને જ્યારે ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમા એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુપ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતા, બેસતા, સૂઇ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્વોમા હમેશા સયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવુ જોઇએ મુનિની એ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયા ઓમા સયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઇને રહેવાથી જ મુનિઓ થકે સયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમા મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ કરવો જોઇએ નહિ દશવૈકાલિક સૂત્રમા પણ એજ વાત કહેવામા આવી છે (जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए, जय भुंजतो भासतो

छाया-यतं चरेत् यत तिष्ठेत्, यतमासीत यत शयीत ।
यत भुञ्जानो भाषमान' पापकर्म न बध्नाति ॥ १ ॥ इति ।
तत्रैव-' संजम निहुओ चर " इत्यादि । छाया-सयम निभृतश्चर ' इति ।
सयमे तीर्थंकरस्याज्ञा प्रदर्शिता, इदानीं तपसि तदाज्ञा प्रदर्श्यते । यथा-दश-वैकालिक सूत्रे-(द्वितीयाध्ययने)

" आयावयाही चय सोगमल्ल " इति । " आयावयाही " आतापय=आता-पनारूपतपोधर्माराधनेन तनु शोषय, " सोगमल्ल " सौकुमार्यं " चय " त्यज=परिहर ।

सए, जयं भुजतो भासतो पावकम्म न बधई" सकल सयमियो को पूर्ण सावधान तापूर्वक ही चलना चाहिये और पूर्ण सावधानता पूर्वक ही बैठना चाहिये । उठने बैठने में तथा आहारादि क्रिया करने और बोलने चालने में सदा उसे अपनी यत्नाचारमय प्रवृति पर ही लक्ष्य रखना चहिये । इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से वह साधु पापकर्म का बध नहीं करता है । इसलिये हे मेघकुमार ! तुम " सयम निभृतश्चर " इस सकल सयम की अच्छी तरह से-यत्नाचारमय प्रवृत्ति से रक्षा करो-पालन करो । इस प्रकार से सयम की आराधना में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का प्रदर्शन सूत्रकार ने किया है । अब तप के आराधन करने में उनकी क्या आज्ञा है-वे यह स्पष्ट करते हैं " आयावयाही चय सोगमल्ल " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) 'हे मुने ! सुकुमालपने को छोड़ आतापनाछे' आतापनारूप तपधर्म की आराधना से मुनि को चाहिये

બધા સયમી લોકોએ સ પૂર્ણપણે સાવધાન થઈને જ ચાલવુ જોઈએ અને પૂર્ણ સાવધાન થઈને જ બેસવુ જોઈએ ઉઠવા બેસવામા તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા કરવામા અને બોલવા ચાલવામા હ મેશા તેને પોતાની યતનાચારમય પ્રવૃત્તિ ઉપર જ લક્ષ્ય આપવુ જોઈએ આ રીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે સાધુ પાપ-કર્મનો બધ કરતો નથી એવી હે મેઘકુમાર ! તમે " સયમ નિભૃતશ્ચર " આ સકલ સયમની સારી રીને યતનાચારમયી પ્રવૃત્તિ વડે રક્ષા કરો-આનુ પાલન કરો આ રીતે સૂત્રકારે સ યમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનુ પ્રદશ ન કર્યું છે હવે તપની આરાધના કરવામા તેઓશ્રીની આજ્ઞા શી છે ? તે સૂત્રકાર અહીં સ્પષ્ટ કરે છે-" आयावयाही चय सोगमल्ल " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) હે મુનિ ! સુકોમળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારો આતાપના રૂપ તપધર્મની આરાધ ના કરી મુનિ પોતાના શરીરને કૃશ (દુર્બળ) બનાવે અને શારીરિક

किंच श्रमणस्य क्षान्त्यादिदशविधे धर्मे तपसः पाठो वर्तते, तस्मात् तपोधर्म इति विज्ञायते। तथाचोक्तं समवायाङ्गसूत्रे-(समवाय १०)

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, त जहा-(१) खंती, (२) मुत्ती (३) अज्जवे (४) मद्दवे (५) लाघवे (६) सच्चे (७) संजमे (८) तवे (९) चियाए (१०) वंभचेरवासे।

अहिंसादीना जिनाज्ञाप्रयोज्यप्रवृत्तिरूपस्य धर्मलक्षणस्य सद्भावाद् धर्मत्व सिद्ध।

उक्त धर्मस्य लक्षण, लक्ष्या अहिंसादयश्च मोक्ताः, तत्राहिंसासयमतपोरूपो धर्म उत्कृष्ट मङ्गल बोध्यम्।

तथाचोक्तं दशवैकालिकसूत्रे-(प्र० अ० १)

" धम्मो मगलमुक्किट्ठ अहिंसा संजमो तवो।
देवावि त नमसति जस्स धम्मे सया मणो॥ "

कि वह अपने शरीर को कृश करें एव शारीरिक सुकुमारता का मोह छोड़े। उत्तम क्षमा आदिक जो श्रमणों के दशप्रकार के धर्म कहे गये हैं, उनमें तप का भी कथन आया है, अत' तप में धर्मरूपता सिद्ध ही होती है। समवायाग सूत्र मे श्रमण के दश प्रकार के धर्मों का कथन करते हुए सूत्रकार ने यही कहा है-" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, त जहा-खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, सजमे, तवे, चियाए बभचेरवासे।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होती है कि वहा पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत अहिंसादिकों का कथन है। ये अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ કહેવામા આવ્યા છે તેઓમા તપનુ કથન છે એથી તપમા ધર્મરૂપતા સિદ્ધ થાય જ છે સૂત્રકારે સમવાયાગ સૂત્રમા શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનુ કથન કરતા આ પ્રમાણે જ કહ્યુ છે—

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते -त जहा-खत्ती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे' सजमे, तवे चियाए बभचेरवासे। "

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમા ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે કે તેઓમા જીનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજન્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્ભાવ છે આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા ~ છે અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મ —ઉત્કૃષ્ટ મગળ

छाया—धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टम् अहिंसा संयमस्तपः ।
देवा अपि त नमस्यन्ति, यस्य धर्मे सदा मनः ॥

नन्वहिंसा-संयम-तपो-रूपो धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टमित्येतद्वचः किमाज्ञासिद्धम् आहोस्विद् युक्तिसिद्धमपि ?

अत्रोच्यते—उभयसिद्धमपि, तथाहि-जिनवचनत्वा-दाज्ञासिद्धम् अनुमानम-प्यत्रवर्तते-' अहिंमासयमतपोरूपो-धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टम् इति प्रतिज्ञा, ' देवादि

उत्कृष्ट मगलरूप हैं दशवैकालिकसूत्र में यही कहा है " धम्मो मगल-मुक्किट्ठ अहिंसा सजमो तवो। देवा वि त नमसति जस्स धम्मे सया-मणो " धर्म ही उत्कृष्ट मगल है। अहिंसा सयम और तप ये ही धर्म हैं। जिसका अन्तः करण इस धर्म से सदा युक्त रहता है उसके लिये देव भी नमस्कार करते है।

शका-अहिंसा, संयम और तपरूप धर्म में जो उत्कृष्ट मगलरूपता कही है वह आज्ञासिद्ध है इसलिये कही है कि युक्ति से सिद्ध है इस-लिये कही है ? भावार्थ-अहिंसादिकों में उत्कृष्टमगलता किस प्रमाण से सिद्ध है ? आगम से या अनुमान से ?

उत्तर-इनमें उत्कृष्ट मगलरूपता आगम और युक्ति दोनों से सिद्ध है। जिनेन्द्र के वचन होने से इनमें आज्ञासिद्धता है तथा अनुमान से प्रसिद्ध होने से युक्ति सिद्धता है। " धम्मो मगलमुक्किट्ठ " इत्यादि गाथा द्वारा इनमें जिनेन्द्रवचनरूप आगमता पूर्व में ही प्रदर्शित की जा चुकी है अनुमान प्रसिद्धता इस प्रकार है-अनुमान के पांच अग होते

સૂત્રમા એ જ વાત કહેવામા આવી છે-" धम्मो मगलमुक्किट्ठ-अहिंसा सजमो तवो। देवा वि त नमसति जस्स धम्मे सया मणो " ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મગળ છે અહિંસા સયમ અને તપ એ જ ધર્મ છે જેનુ અન્તઃકરણ આ ધર્મથી સદા યુક્ત રહે છે તેને દેવો પણ નમન કરે છે

શકા—અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મને જે ઉત્કૃષ્ટ મગળ રૂપ કહેવામા આવ્યો છે તે આજ્ઞાસિદ્ધ છે માટે કહેવામા આવેલ છે કે યુક્તિથી સિદ્ધ છે એટલા માટે કહેવામા આવે છે ? ભાવાર્થ-અહિંસા વગેરેમા ઉત્કૃષ્ટ મગળતા કયા પ્રમાણથી સિદ્ધ છે ? આગમથી કે અનુમાનથી ?

ઉત્તર—આમા ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા આગમ અને યુક્તિ બનેથી સિદ્ધ છે જિનેન્દ્રનાવચનો હોવાથી આમા આજ્ઞા સિદ્ધતા છે તેમજ અનુમાનથી પ્રસિદ્ધ હોવા બદલ યુક્તિ સિદ્ધતા છે " धम्मो मगलमुक्किट्ठ " વગેરે ગાથા વડે આમા જિનેન્દ્ર પ્રવચનરૂપ આગમતા પહેલા બતાવવામા આવી જ છે અને અનુ-

किंच श्रमणस्य क्षान्त्यादिदशविधे धर्मे तपसः पाठो वर्तते, तस्मात् तपोधर्म इति विज्ञायते। तथाचोक्त समवायाऽङ्गसूत्रे-(समवाय १०)

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, त जहा-(१) खती, (२) मुत्ती (३) अज्जवे (४) मद्दवे (५) लाघवे (६) सच्चे (७) सजमे (८) तवे (९) चियाए (१०) बंभचेरवासे।

अहिंसादीनां जिनाज्ञामयोज्यप्रवृत्तिरूपस्य धर्मलक्षणस्य सद्भावाद् धर्मत्व सिद्ध।

उक्त धर्मस्य लक्षण, लक्ष्या अहिंसादयश्च प्रोक्ताः, तत्राहिंसासयमतपोरूपो धर्म उत्कृष्ट मङ्गल बोध्यम्।

तथाचोक्त दशवैकालिकसूत्रे-(म० अ० १)

" धम्मो मगलमुक्किट्ठ अहिंसा संजमो तवो।
देवावि त नमसति जस्स धम्मे सया मणो॥ "

कि वह अपने शरीर को कृश करें एव शारीरिक सुकुमारता का मोह छोड़े। उत्तम क्षमा आदिक जो श्रमणों के दशप्रकार के धर्म कहे गये हैं, उनमें तप का भी कथन आया है, अत' तप में धर्मरूपता सिद्ध ही होती है। समवायाग सूत्र में श्रमण के दश प्रकार के धर्मों का कथन करते हुए सूत्रकार ने यही कहा है-" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा-खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, सजमे, तवे, चियाए बभचेरवासे।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होती है कि वहा पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत अहिंसादिकों का कथन है। ये अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ કહેવામા આવ્યા છે તેઓમા તપનુ કથન છે એથી તપમા ધર્મરૂપતા સિદ્ધ થાય જ છે સૂત્રકારે સમવાયાગ સૂત્રમા શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનુ કથન કરતા આ પ્રમાણે જ કહ્યુ છે—

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते -त जहा-खत्ती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे' सजमे, तवे चियाए बभचेरवासे। "

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમા ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે કે તેઓમા જીનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજન્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્ભાવ છે આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વ[illegible] છે અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મ જ [illegible] મગળ [illegible]

" धर्माधर्मव्यवस्थाया, शास्त्रमेव नियामकम् ।
तदुक्ताऽऽसेवनाद् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात् ॥ " इति,

आगम से ही जात कर सकते हैं। घटपटादिकों की तरह उसे स्पष्ट रूप से देखनहीं सकते हैं। इसीलिये वह दुर्ज्ञेय है। जो अनुमान और आगम से गम्य होता है वह अग्नि आदि की तरह किसी न किसी के प्रत्यक्ष होता है यह स्पष्ट सिद्धान्त है। तीर्थंकर प्रभु ने कि जो राग और द्वेष से सर्वथा रहित हैं, त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थों को जो हस्तामलक वत् स्पष्ट जानते हैं, ३५ वाणी के अतिशय से जो युक्त हैं अपने केवलज्ञान रूपी आलोक से उसे विशदरूप से जान लिया है। हम छद्मस्थों के लिये इनके वचनों के सिवाय इस विषय का नियामक और कुछ नहीं है। अतः उनके कथनानुसार ही धर्म और अधर्म का स्वरूप हम ससारी जीव जान सकते हैं या जानते हैं। " धर्माधर्मव्यवस्थाया' शास्त्रमेव नियामक, तदुक्ता सेवनात् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात् "-धर्म और अधर्म के स्वरूप की व्यवस्था करने वाले केवल सर्वज्ञभगवान् के वचन स्वरूप आगम ही है। अतः उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का सेवन करना धर्म और उससे विपरीत मार्ग का सेवन करना अधर्म है

भावार्थ-जीवोंको धर्मकी प्राप्ति सर्वज्ञ भगवान द्वारा प्रदर्शित मार्ग

સમજી શકીયે છીએ ' ઘટ પટ ' વગેરેની જેમ તેને સ્પષ્ટ પણે જોઈ શકતા નથી એથી જ તે દુર્જ્ઞેય છે જે અનુમાન અને આગમથી ગમ્ય હોય છે તે અગ્નિ વગેરેની જેમ કોઇને કોઇને પ્રત્યક્ષ હોય છે આ એક સ્પષ્ટ સિદ્ધાત છે રાગ અને દ્વેષથી સપૂર્ણ પણે રહિત એવા તીર્થંકર પ્રભુએ-કે જેઓ ત્રિકાળવર્તી બધા પદાર્થોને હસ્તામલકવત્ સ્પષ્ટ રીતે જાણે છે, ૩૫ વાણીના અતિશયથી જેઓ યુકત છે-પોતાના કેવળજ્ઞાન રૂપી આલોકથી તેને વિશદ રૂપથી જાણી લીધુ છે અમારા જેવા છદ્મસ્થોને માટે એમના વચનો સિવાય આ વિષયનો નિયામક બીજો કોઈ નથી એથી અમે તેમના કહ્યા મુજબ જ ધર્મ અને અધર્મનુ સ્વરૂપ જાણી શકીયે છીએ " धर्माधर्म-व्यस्थाया शास्त्र मेव नियामक, तदुक्तासेवनात् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात् " ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપની વ્યવસ્થા કરનાર ફકત સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચન સ્વરૂપ આગામો જ છે એથી તેમના વડે દર્શાવવામા આવેલા માર્ગનુ સેવન કરવુ એજ ધર્મ અને તેથી વિરૂદ્ધ માર્ગનુ સેવન કરવુ અધર્મ છે ભાવાર્થ-સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા

मान्यत्वात्, इति हेतुः। अर्हदादिवत् इति दृष्टान्तः इह यो यो देवादिमान्यः स स उत्कृष्ट मङ्गल यथाऽर्हदादयः, ' तथा चाय धर्मः ' इत्युपनयः, तस्माद् देवादि मान्यत्वादुत्कृष्ट मङ्गलमिति निगमनम्।

वस्तुतस्तु धर्माधर्मस्वरूप हेतुमत्वाच्चास्यैर्दुर्ज्ञेय, केवल सर्वेन रागादिदोष रहितेन पञ्चत्रिंशद्वचनातिशयसपन्नेन केवलिना तीर्थकरेण केवलालोकेन सुज्ञेय भवति। छद्मस्थानां तु भगवद्वचनमेव नियामक, तथाचोक्तम्—

हैं-१ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ दृष्टान्त, उपनय ४ और ५ निगमन। अर्हत भगवान की तरह देवादिकों द्वारा मान्य होने से अहिंसा, तप और सयमरूप धर्म उत्कृष्ट मगल हैं।

इस अनुमान वाक्य में "अहिंसा, सयम और तप रूप धर्म उत्कृष्टमगल है" यह प्रतिज्ञा है "देवादिकों द्वारा मान्य होने से" यह हेतु है। "अर्हन्त की तरह" यह दृष्टान्त है पक्ष में हेतु के दुहराने से उपनय और प्रतिज्ञा के दुहराने से निगमन सिद्ध हैं जैसे-"जो जो देवादिकों द्वारा मान्य होता है वह २ उत्कृष्ट मगल होता है जैसे अर्हत प्रभु-ये भी देवादिकों द्वारा मान्य हैं। इस प्रकार पक्ष में हेतु के दुहराने रूप उपनय है इसलिये "वे भी उत्कृष्ट मगल स्वरूप हैं" इस प्रकार प्रतिज्ञा के दुहराने रूप निगमनवाक्य है।

वास्तव में तो धर्म और अधर्म का स्वरूप सूक्ष्म होने से हम छद्मस्थों के लिये अत्यत परोक्ष है-इस लिये हम उसे सिर्फ अनुमान या

માન પ્રસિદ્ધતા આ પ્રમાણે સમજવી જોઇએ અનુમાનના પાચ અગો હોય છે-પ્રતિજ્ઞા' ૧, હેતુ ૨, દૃષ્ટાત ૩, ઉપનય ૪, અને નિગમન ૫,

અર્હંત ભગવાનની જેમ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવા બદલ અહિંસા, તપ અને સયમ રૂપ ધર્મ ઉત્કૃષ્ટ-મગલ છે

આ અનુમાન વાકયમા "અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ઉત્કૃષ્ટ મગળ છે" આ પ્રતિજ્ઞા છે 'દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવાથી આ હેતુ છે અર્હંતની જેમ" આ દૃષ્ટાત છે પક્ષમા હેતુને જોવડાવવાથી ઉપનય અને પ્રતિજ્ઞાને જોવડાવવાથી નિગમન સિદ્ધ છે જેમકે "દેવ વગેરે દ્વારા જે જે માન્ય હોય છે તે તે ઉત્કૃષ્ટ-મગલ હોય છે જેમ અર્હંત પ્રભુ પણ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય છે આરીતે પક્ષમા હેતુને જોવડાવવાથી ઉપનય છે, માટે "તેઓ પણ ઉત્કૃષ્ટ મગળ સ્વરૂપ છે" આરીતે પ્રતિજ્ઞાને જોવડાવવા રૂપ નિગમન વાકય છે

વસ્તુત ધર્મ તેમજ અધર્મનુ સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ હોવાથી અમારા જેવા છદ્મસ્થો માટે તે અતીવ પરોક્ષ છે જોથી અમે ફકત તેને અનુમાન કે આગમથી

स्वयमेव भगवता-अहिंसासंयमतपसां धर्मत्व,तथा - तेषामुत्कृष्टमङ्गलस्वरूपत्वेन प्राधान्य च वर्णित, तत्राप्यहिंसाया.-सर्वधर्ममूलत्वेन प्राधान्यात् प्रथम स्थान मदत्तम् । तस्य सर्वप्रधानस्याऽहिंसाधर्मस्य षट्कायोपमर्दनसाध्ये मूर्तिपूजने मूलतः समुच्छेद केवलालोकेन साक्षात् पश्यन् भगवानर्हन् मूर्तिपूजनार्थमाज्ञा मद्यादित्याकाशकुसुमवदात्यन्तमसदेव वोध्यम् ।

स्पष्ट रूप से ज्ञान के विषय नही हो सकते हैं। अत. ऐसे विषयो में सर्वज्ञ के वचन ही प्रमाण कोटि में अगीकार करना चाहिये।

भगवान ने स्वय ही अहिंसा, सयम और तप में धर्मरूपता तथा उत्कृष्ट मगलरूप होने से प्रधानता कही है। अहिंसा में जो प्रधान रूपता कही गई है उसका मुख्य कारण यह है कि वह समस्तधर्मों का मूल है और इसीलिये उसे उन्हो ने सर्वप्रथमस्थान दिया है जब यह बात है तो विचारना चाहिये कि भगवा मूर्तिपूजा की आज्ञा कैसे दे सकते हैं। क्यों कि वह पूजा षट्काय के जीवो की विराधना से सा य होती है। इस विराधना में अहिंसा धर्म का मूलतः ही अभाव समाया हुआ है। अर्थात् मूर्तिपूजा में उस प्रभुप्रतिपादित अहिंसा धर्म का सर्वथा उच्छेद हो हो जाता है-मूर्तिपूजा करने वाला पूजक अहिंसा धर्म का रक्षक नही हो सकता है-प्रत्युत उसे हिंसा का ही दोष लगता है इस प्रकार स्वय भगवान जब अपने केवल ज्ञान से इस बात को

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા જોઇએ

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ ઉત્કૃષ્ટ મગળરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનુ મૂળ છે અને એથી તેને સૌએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અપ્યુ છે જ્યારે એવી વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવુ જોઇએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મતો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મનો સપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા ધર્મનો રક્ષક થઇ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ ઓઢવો પડે છે આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

पर चलनेसे ही हो सकती है, इससे विपरीत मार्ग पर चलने से नहीं। अतः जो जीव धर्म को साक्षात्कार करना चाहते हैं उनका कर्तव्य है कि वे सर्वज्ञ भगवन द्वारा कथित मार्ग का सेवन करें और उस से भिन्न मार्ग का परित्याग करे। इस प्रकार की प्रवृत्ति से वे धर्म और अधर्म के स्वरूप के ज्ञाता बन जाते हैं। इस कथन से शंकाकार की इस आशंकाका यहां परिहार किया गया है कि जो उसमें पहिले यह प्रश्न किया कि अहिंसादिकों में जो उत्कृष्ट मंगलरूपता है वह किस प्रमाण से है। सूत्रकारने आगम और अनुमान दोनो प्रमाणों से उनमें उत्कृष्ट मंगलता सिद्ध की है इस कथन से एक बात और हमें यह ज्ञात होती है कि सर्वज्ञ कथित सिद्धान्त की जांच के लिये जबतक तर्क का जोर चलता रहे बुद्धिमान तबतक अपनी तर्कणा की कसौटी पर उसे कसता रहे-पर जब तर्क की समाप्ति हो जावे-तर्कणा शक्ति कुंठित हो जावे-तो उस व्यक्ति का कर्तव्य है वह आगम प्रमाण से ही उस सिद्धान्त का अनुसरण करें। फिर उसे उस विषय में तर्क करने की आवश्यकता नहीं है क्यों कि सूक्ष्मादिक पदार्थ सर्वज्ञ के सिवाय छद्मस्थों के

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકે તેમ છે, એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જે જીવો ધર્મનુ પ્રત્યક્ષ દર્શન ઇચ્છતાહોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનુ સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઈ જાય છે આ કથનથી શંકાકારની એ આશંકાનો અહી પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ પશ્ન કરવામા આવ્યો છે કે અહિંસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મંગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે ? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બને-પ્રમાણો થી તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મંગળતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે બીજી આ વાતનુ પણ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યા સુધી તર્કની શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યા સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પણ જ્યારે તર્કની શક્તિ મંદ થઈ જાય-તર્કણા શક્તિ કુંઠિત થઇ જાય ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નુ અનુસરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેખ કરવી જોઇએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

स्वयमेव भगवता-अहिंसासंयमतपसां धर्मत्व,तथा – तेषामुत्कृष्टमङ्गलस्वरूपत्वेन माधान्य च वर्णित, तत्राप्यहिंसाया.-सर्वधर्ममूलत्वेन प्राधान्यात् प्रथम स्थान मदत्तम् । तस्य सर्वप्रधानस्याऽहिंसाधर्मस्य षट्कायोपमर्दनसाध्ये मूर्तिपूजने मूलतः समुच्छेद केवलालोकेन साक्षात् पश्यन् भगवानर्हन् मूर्तिपूजनार्थमाज्ञा मदद्यादित्याकाशकुसुपमित्वात्यन्तमसदेव बोध्यम् ।

स्पष्ट रूप से ज्ञान के विषय नही हो सकते है। अतः ऐसे विषयों में सर्वज्ञ के वचन ही प्रमाण कोटि में अगीकार करना चाहिये।

भगवान ने स्वय ही अहिंसा, सयम और तप मे धर्मरूपता तथा उत्कृष्ट मगलरूप होने से प्रधानता कही है। अहिंसा में जो प्रधान रूपता कही गई है उसका मुख्य कारण यह है कि वह समस्तधर्मों का मूल है और इसीलिये उसे उन्हो ने सर्वप्रथमस्थान दिया है जब यह बात है तो विचारना चाहिये कि भगवा मूर्तिपूजा की आज्ञा कैसे दे सकते है। क्यों कि वह पूजा षट्काय के जीवों की विराधना से साध्य होती है। इस विराधना में अहिंसा धर्म का मूलतः ही अभाव समाया हुआ है। अर्थात् मूर्तिपूजा में उस प्रभुप्रतिपादित अहिंसा धर्म का सर्वथा उच्छेद हो हो जाता है-मूर्तिपूजा करने वाला पूजक अहिंसा धर्म का रक्षक नही हो सकता है-प्रत्युत उसे हिंसा का ही दोष लगता है इस प्रकार स्वय भगवान जब अपने केवल ज्ञान से इस बात को

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા જોઇએ

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ ઉત્કૃષ્ટ મગળરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનુ મૂળ છે અને એથી તેને સૌએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અપ્યું છે જ્યારે એવી વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવુ જોઇએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મતો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ થયેા છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મનો સપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા ધર્મનો રક્ષક થઇ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ ઓઢવો પડે છે આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

पर चलनेसे ही हो सकती है, इससे विपरीत मार्ग पर चलने से नहीं। अतः जो जीव धर्म को साक्षात्कार करना चाहते हैं उनका कर्तव्य है कि वे सर्वज्ञ भगवन द्वारा कथित मार्ग का सेवन करें और उस से भिन्न मार्ग का परित्याग करे। इस प्रकार की प्रवृत्ति से वे धर्म और अधर्म के स्वरूप के ज्ञाता बन जाते हैं। इस कथन से शंकाकार की इस आशंकाका यहां परिहार किया गया है कि जो उसमें पहिले यह प्रश्न किया कि अहिंसादिकों में जो उत्कृष्ट मंगलरूपता है वह किस प्रमाण से है। सूत्रकारने आगम और अनुमान दोनों प्रमाणों से उनमें उत्कृष्ट मंगलता सिद्ध की है इस कथन से एक बात और हमें यह ज्ञात होती है कि सर्वज्ञ कथित सिद्धान्त की जांच के लिये जबतक तर्क का जोर चलता रहे बुद्धिमान तबतक अपनी तर्कणा की कसौटी पर उसे कसता रहे-पर जब तर्क की समाप्ति हो जावे-तर्कणा शक्ति कुंठित हो जावे-तो उस व्यक्ति का कर्तव्य है वह आगम प्रमाण से ही उस सिद्धान्त का अनुसरण करें। फिर उसे उस विषय में तर्क करने की आवश्यकता नहीं है क्यों कि सूक्ष्मादिक पदार्थ सर्वज्ञ के सिवाय छद्मस्थों के

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકે તેમ છે. એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જે જીવો ધર્મનુ પ્રત્યક્ષ દર્શન ઇચ્છતાહોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનુ સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઈ જાય છે આ કથનથી શંકાકારની એ આશંકાનો અહી પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે કે અહિંસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મંગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે ? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બને-પ્રમાણો થી તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મંગળતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે બીજી આ વાતનુ પણ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યા સુધી તર્કની શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યા સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પણ જ્યારે તર્કની શક્તિ મંદ થઈ જાય-તર્કણા શક્તિ કુંઠિત થઈ જાય ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નુ અનુસરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેખ કરવી જોઇએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

स्वयमेव भगवता-अहिंसासंयमतपसां धर्मत्व,तथा – तेषामुत्कृष्टमङ्गलस्वरूपत्वेन प्राधान्य च वर्णित, तत्राप्यहिंसाया –सर्वधर्ममूलत्वेन प्राधान्यात् प्रथम स्थान मदत्तम् । तत्र सर्वप्रधानन्याऽहिंसाधर्मस्य षट्कायोपमर्दनसाध्ये मूर्तिपूजने मूलत. सद्युच्छेद केवलालोकेन साक्षात् पश्यन् भगवानर्हन् मूर्तिपूजनार्थमाज्ञा प्रदद्यादित्याकाशकुसुमवित्यन्तमसदेव वोऽयम् ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હૈ। અત. ઐસે વિષયોં મેં સર્વજ્ઞ કે વચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અગીકાર કરના ચાહિયે।

ભગવાન ને સ્વય હી અહિંસા, સંયમ ઔર તપ મે ધર્મરૂપતા તથા ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈ। અહિંસા મેં જો પ્રધાન રૂપતા કહી ગઈ હૈ ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈ કિ વહ સમસ્તધર્મોં કા મૂલ હૈ ઔર ઇસીલિયે ઉસે ઉન્હો ને સર્વપ્રથમસ્થાન દિયા હૈ જબ યહ બાત હૈ તો વિચારના ચાહિયે કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કૈસે દે સકતે હૈં। ક્યોં કિ વહ પૂજા પટ્કાય કે જીવો કી વિરાધના સે સાધ્ય હોતી હૈ। ઇસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અભાવ સમાયા હુઆ હૈ। અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉસ પ્રભુપ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મ કા સર્વથા ઉચ્છેદ હો હો જાતા હૈ–મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા ધર્મ કા રક્ષક નહી હો સકતા હૈ–પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા હૈ ઇસ પ્રકાર સ્વય ભગવાન જબ અપને કેવલ જ્ઞાન સે ઇસ બાત કો

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા જોઇએ

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ ઉત્કૃષ્ટ મગળરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બનાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનુ મૂળ છે અને એથી તેને સૌએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અપ્યું છે જ્યારે એવી વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવુ જોઇએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મતો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મનો સપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા ધર્મનો રક્ષક થઇ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ ઓઢવો પડે છે આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

एव लक्ष्याः समालोचिताः, इदानीमलक्ष्या उच्यन्ते-हिंसादौ जिनाज्ञाविरुद्धा प्रवृत्तिर्भवति लोकाना तस्मादधर्मा हिंसादय एव तस्य धर्मलक्षणस्यालक्ष्या भवन्ति। धर्माधर्मस्वरूपबोधनार्थं हि भगवताऽऽवश्यके नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो निक्षेपः प्रदर्शितः। तत्र भावावश्यके एव तीर्थंकराज्ञायाः सद्भावाद्

साक्षात् जानते हैं तो फिर वे ही मूर्तिपूजा करने की आज्ञा देंगे यह मान्यता आकाशपुष्पकी तरह सर्वथा असत्य ही है यह स्वय समझने जैसी बात है जहाँ हिंसा है वहा धर्म नहीं है अहिंसामें ही सच्चाधर्म है।

इस प्रकार धर्म के लक्ष्यभूत अहिंसा आदि का यहां तक विचार किया। अब उससे विपरीत हिंसादिकों का विचार करते हैं-

हिंसा आदि पाप हैं-इन में प्रवृत्ति करने की आज्ञा जिन भगवान ने नही दी है फिर भी जो प्रवृत्ति करते हैं वे उस आज्ञा से बहिर्भूत हैं। अत. जिनाज्ञा से विरुद्ध प्रवृत्ति होने से जीवों के लिये धर्म प्राप्ति के बदले इनसे अधर्म की ही प्राप्ति होती है। जिन से जीवों को अधर्म की प्राप्ति होती हो, वे स्वय अधर्म हैं। हिंसादिक पापो में अधर्मता होने का कारण उनमें धर्म के लक्षण का अभाव है। इसीलिये ये धर्म के लक्षण के अलक्ष्य हुए है। इस धर्म और अधर्म के स्वरूप को समझाने के लिये भगवान ने आवश्यकसूत्र में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव

વાતને સ્પષ્ટપણે પ્રત્યક્ષરૂપમા જાણે છે તો પછી તેઓ જ મૂર્તિપૂજા કરવાની આજ્ઞા આપે એવી માન્યતા આકાશ પુષ્પની જેમ સ પૂર્ણપણે અસત્ય જ સિદ્ધ થાય છે આપણે પોતે પણ આ વાત સમજી શકીએ તેમ છીએ કે જ્યા હિંસા છે ત્યા ધર્મ નથી અહિંસામા જ સાચો ધર્મ છે

આ રીતે ધર્મના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે ને માટે અહીં સુધી વિચાર કરવામા આવ્યો છે હવે આગળ તેથી વિરુદ્ધ હિંસા વગેરેની બાબતમા વિચાર કરવામા આવે છે—

હિંસા વગેરે પાપ છે—આમા પ્રવૃત્ત થવાની આજ્ઞા જિન ભગવાનને કોઇને પણ આપી નથી છતા જેઓ તેમા પ્રવૃત્તિ કરે છે તેઓ તે આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત છે એથી જિનાજ્ઞાની પ્રતિકૂળ પ્રવૃત્તિ હોવાથી જીવોને ધર્મ પ્રાપ્તિના સ્થાને એમનાથી અધર્મની જ પ્રાપ્તિ થાય છે જીવોને જેનાથી અધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે તે પોતે અધર્મ છે હિંસા વગેરે પાપોમા અધર્મતા હોવાને લીધે તેઓમા ધર્મના લક્ષણનો અભાવ છે એટલા માટે જ તેઓ ધર્મના લક્ષણથી અલક્ષ્ય થયા છે આ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને સમજાવવા ને

धर्मत्वम्, अन्यविधेष्वावश्यकेषु रागद्वेषहिंसादिदोषसद्भावेन मोक्षमार्गोपदेशे प्रवृत्तस्य तीर्थंकरस्य चाऽऽज्ञाया अभावेन न तत्र धर्मलक्षण समनुगच्छति, तेषां मोक्षसाधकत्वाभावाच्जैनधर्मपद लब्धु-मनर्हत्वात् । तथाचोक्तमनुयोगद्वारे--

"से किं त नामावस्सय ? । नामावस्सयं जस्स ण जीवस्स वा अजीवस्स वा

के भेद से ४ चार निक्षेपों का कथन किया है उनमें नाम स्थपना और द्रव्यरूप धर्म निक्षेप के आराधन करने की भगवान ने जीवों को आज्ञा नहीं दी है क्यों कि इनसे जीवों को धर्म की प्राप्ति नहीं होती है। धर्म की प्राप्ति कराने वाला केवल भाव निक्षेपरूप आवश्यक है। इसकी आराधना से ही जीवों को धर्म प्राप्त हुआ करता है-अतः इस में ही धर्मरूपता प्रकट की गई है बाकी के इसके अतिरिक्त निक्षेपों में-आवश्यकों में रागद्वेष और हिंसा आदि दोषों का सद्भाव होने से एव मोक्ष मार्ग के उपदेशप्रदान करने में प्रवृत्त तीर्थंकरो की इनके आराधन करने में आज्ञा का अभाव होने से धर्म के लक्षण का समन्वय ही नहीं होता है। मुक्ति का जो साधक होता है वही जैन-धर्म है। इन ३ निक्षेपरूप आवश्यकों में मुक्ति की साधकता का अभाव है-इसलिये ये जैनधर्म के पदको स्वप्न में भी प्राप्त नहीं कर सते हैं।

अनुयोगद्वार में यही बात कही गई है—

से किं त नामावस्सय ? नामावस्सय जस्स ण जीवस्स अजीवस्स

આવશ્યકસૂત્રમા નામ, સ્થાપના દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી ચાર નિક્ષેપો નુ કથન કર્યું છે તેઓમા નામ, સ્થાપના, અને દ્રવ્યરૂપ ધર્મ નિક્ષેપને આરાધવાની ભગવાને જીવોને આજ્ઞા આપી નથી કેમ કે એમનાથી જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી ધર્મની પ્રાપ્તિ કરાવનારો કેવળ ભાવનિક્ષેપરૂપ આવશ્યક છે એની આરાધનાથી જ જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે એથી આમા જ ધર્મરૂપતા બતાવવામા આવી છે એના સિવાયના બીજા નિક્ષેપોમા-આવશ્યકોમા-રાગદ્વેષ અને હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ હોવાથી અને મોક્ષ માર્ગના ઉપદેશ આપવામા પ્રવૃત્ત તીર્થંકરોની એમની આરાધના કરવાની આજ્ઞાનો અભાવ હોવાથી ધર્મના લક્ષણનો સમન્વય જ થતો નથી મુક્તિનો જે સાધક હોય છે તે જ જૈન-ધર્મ છે આ ૩ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યકોમા મુક્તિની સાધકતાનો અભાવ છે માટે એઓ જૈન ધર્મના પદને સ્વપ્નમાયે મેળવા શકે નેમ નથી

અનુયોગદ્વરમા એ જ વાત કહેવામા આવી છે—

से किं त नामावस्सय ? नामावस्सय जस्स ण जीवस्स अजीवस्स वा जीवाण वा

जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नामं कज्जइ, से त नामावस्सय ।

अथ किं तत् नामावश्यक ? नामावश्यकं-यस्य खलु जीवस्य वा अजीवस्य वा जीवाना वा अजीवानां वा, तदुभयस्य वा तदुभयेषां वा आवश्यकमिति नाम क्रियते तदेतन्नामावश्यकम् ।

" से किं त ठवणावस्सय ? ? जण्ण कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सय ।

छाया-अथ किं तत् स्थापनावश्यकम्? स्थापनावश्यक यत् खलु काष्ठकर्म वा पुस्तकर्म वा चित्रकर्म वा लेप्यकर्म वा ग्रन्थिम वा वेष्टिम वा पूरिम वा सङ्घातिम

वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नाम कज्जइ से त नामावस्सय ।

से किं त ठवणावस्सय ? जण्ण कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सय

भावार्थ—जीव, अजीव अथवा तदुभय स्वरूप आदि पदार्थों में " यह आवश्यक है " इस प्रकार नाम संस्कार करना वह जीव अजीव आदि नाम आवश्यक है इस नाम आवश्यक में आवश्यक के वास्तविक गुणादि कुछ भी नहीं होते हैं-सिर्फ लोक व्यवहार के लिये ही इस प्रकार की वहा पर निक्षेपविधि करली जाती है काष्ठ, पुस्तक चित्र

अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नाम कज्जइ से त नामावस्सय ।

से किं त ठवणावस्सय ? जण्ण कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, सेत ठवणावस्सय ।

ભાવાર્થ—જીવ, અજીવ અથવા તદુભય સ્વરૂપ વગેરે પદાર્થોમા " આ આવશ્યક છે " આ રીતે નામ સંસ્કાર કરવો ને જીવ અજીવ વગેરે ' નામ આવશ્યક ' છે આ નામ આવશ્યકમા આવશ્યક ના વાસ્તવિકગુણ વગેરે કઇ જ હોતા નથી ફકત લોકવ્યવહાર ના માટે જ આ જાતની ત્યા નિક્ષે

घा अक्ष वा वराटक घा एको वा अनेको वा सद्भावस्थापना वा असद्भावस्थापना घा ' आवश्यक '–मिति स्थापना स्थाप्यते, तदेतत् स्थापनावश्यकम् ।

भावावश्यकस्वरूपशून्ये गोपालदारकादौ आवश्यकेति नामकरणे नाम्ना-नाममात्रेणावश्यक नामावश्यक गोपालदारकादिर्भवति। स्थापनाऽपि भावावश्यक

एव अक्ष–शतरज की गोटी आदि में एक अथवा अनेक आवश्यक क्रिया करने वाले श्रावक आदि का तदाकार अथवा अतदाकार लिखित चित्र स्थापना आवश्यक (निक्षेप) है यह स्थापना दो प्रकार की है एक सद्भाव स्थापना और २ दूसरी असद्भावस्थापना। सद्भाव स्थापना में जिसकी स्थापना की जाती है उसकी सर्व आकृति कोतरी रहती है असद्भूत स्थापना में इस प्रकार की आकृति आदि नही रहती है वहां पर केवल सकेत ही है जैसे शतरज की गोटिया में यह प्यादा है यह वजीर है, यह हाथी है इत्यादि सिर्फ कल्पना ही कल्पना रहती है–वहां उनका कोई भी आकार कोतरा नहीं रहता है। नाम निक्षेप में जिस प्रकार भाव आवश्यक शून्यता रहती है उसी प्रकार स्थापना में भी यही बात रहती है किसी गोपाल (ग्वालिये) के लड़के का " आव श्यक " इस प्रकार का नाम जिस प्रकार भाव आवश्यक रहित नाम निक्षेप में है उसी प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य स्थापना निक्षेप में भी " यह आवश्यक है " यह स्थापना निक्षेप है ।

આવે છે, કાષ્ઠ, પુસ્તક, ચિત્ર અને અક્ષ–શતરજ ની સોગઠી વગેરેમા એક કે અનેક આવશ્યક ક્રિયા કરનાર શ્રાવક વગેરેનુ તદાકાર કે અતદાકાર લેખિત ચિત્ર–સ્થાપન આવશ્યક (નિક્ષેપ) છે આ સ્થાપના બે પ્રકારની છે એક સદ્ભાવ સ્થાપના અને બીજી અસદ્ભાવ સ્થાપના સદ્ભાવ સ્થાપનામા જેની સ્થાપના કરવામા આવે છે તેની આકૃતિ સ પૂર્ણ પણે કોતરેલ હોય છે અસદ્ભૂ-ભૂત સ્થાપનામા આ જાતની આકૃતિ વગેરે રહેતી નથી ત્યા ફક્ત સ કેત જ છે જેમ શેતરજની સોગઠીઓમા આ પાયદળ છે, આ વજીર છે, આ હાથી છે વગેરે ફક્ત કોરી કલ્પના જ હોય છે તેમા તેમની કોઇપણ જાતની આકૃતિ કોતરેલી હોતી નથી નામ નિક્ષેપમા જેમ ભાવ આવશ્યક શૂન્યતા રહે છે તેમજ સ્થાપનામા પણ એ જ વાત હોય છે કોઇ ગોવાળિયાના પુત્રનુ ' આવ શ્યક ' આ જાતનુ નામ જેમ ભાવ આવશ્યક રહિત નામ નિક્ષેપમા છે તે પ્રમાણે જ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય સ્થાપના નિક્ષેપમા પણ " આ આવશ્યક છે " આ સ્થાપના નિક્ષેપ છે

स्वरूपशून्ये काष्ठकर्मादौ क्रियते । अतो भावावश्यके क्रियमाणत्वाविशेषादनयो र्नास्ति कश्चिद् भेद इत्याशयेनाह—

" णामट्ठवणाण को पइविसेसो ?। छाया-नामस्थापनयोः कः प्रतिविशेषः?।

अत्रोत्तरमुच्यते—

'णाम आवकहिअ, ठवणा इत्तरिआ वा होज्जा आवकहिआ वा' ॥ छाया-नाम यावत्कथिक, स्थापना-इत्वरिका वा भवेद् यावत्कथिका वा ।

' णाम आवकहिय ' नाम यावत्कथिक-स्वाश्रयद्रव्यस्यास्तित्वकथा यावदनुवर्तते इत्यर्थः, स्थापना तु ' इत्तरिया वा ' इत्वरिका वा स्वल्पकालस्थायिनी वा ' होज्जा ' स्यात्, यावत्कथिका वा, अय भावः-कश्चित्-स्थापना स्वाश्रय द्रव्यस्य सद्भावेऽपि, मध्यकाल एव निवर्तते, काचित्तु-तत्सत्ता यावदवतिष्ठते

शंका—जिस प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य गोपाल के लड़के आदि में " आवश्यक " इस प्रकार का नामनिक्षेपरूप आवश्यक है उसी प्रकार भाव आवश्यकके स्वरूपसे शून्य काष्ठकर्म आदिकों में भी यही बात है । अतः भाव आवश्यकके स्वरूपकी शून्यताकी अपेक्षा से इन दोनोंमें कोई भी अन्तर नहीं है । तो फिर इन दोनोंमें क्या भेद है !

उत्तर—"णाम आवकहिय ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिआ-वा" इस प्रकार की शंका ठीक नहीं-क्यों कि नाम यावत्कथित होता है स्थापना इत्वरिक और यावत्कथिक दोनों प्रकार की होती है । अपने आश्रयभूत द्रव्यका जबतक अस्तित्व-सद्भाव रहता है तबतक नामनिक्षेप रहता है ! इत्वरिक शब्द का अर्थ अल्पकालीन है चित्र एवं अक्ष आदिकों में यह स्थापना अल्पकालीन होती है । इस प्रकार नाम और

શંકા—જેમ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય ગોવાળિયાના પુત્ર વગેરેમા " આવશ્ય " આ જાતનુ નામ નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક છે તેમજ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય કાષ્ઠકર્મ વગેરેમા પણ એ જ વાત છે એથી ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપની શૂન્યતાની દૃષ્ટિએ આ બનેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી, ત્યારે આ બનેમા ભેદ શો છે ?

ઉત્તર—(णाम आवकहिय ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिआ वा) શંકા યોગ્ય નથી કેમકે નામ યાવત્ કથિત હોય છે સ્થાપના ઇત્વરિક અને યાવત્કથિત બને પ્રકારની હોય છે પોતાને આશ્રયભૂત દ્રવ્યનુ જ્યા સુધી સદ્ભાવ-અસ્તિત્વ રહે છે ત્યા લગી નામ નિક્ષેપ રહે છે ! ઇત્વરિક શબ્દનો અર્થ અલ્પકાલીન છે ચિત્ર અને અક્ષ (રમવાના પાસા) વગેરેમા એ સ્થાપના અલ્પકાળ માટે હોય છે આ રીતે નામ અને સ્થાપનામા

इति। एव च-नामस्थापनयोर्भावशून्यत्वेनाधारसाम्येऽपि भेदः स्वस्वावस्थानकाल-कृत एव भगवता प्रदर्शित । यद्यपि गोपालदारकादौ विद्यमानेऽपि कदाचिद-नेकनामपरिवर्तन लोके क्वचिद् दृश्यते, तथा च कालकृतोऽपि भेदो नास्ति, तथापि-बहुशः स्थळे नाम्नो यावत्कथिकत्वमेव दृश्यते, नाम्नः परावर्तन तु क्वचिद्विरलतयोपल-भ्यते । अतोऽल्पस्थलव्यापित्वेन नाम्न इत्वरिकता भगवता न विवक्षिता । नाम्नोऽल्पकालिकताकल्पने तूत्सूत्रप्ररूपणापत्तिरिति बोध्यम् ।

स्थापनामें भावनिक्षेपकी शून्यताकी अपेक्षासे समानता आती है तो भी अपने२ कालकी अपेक्षासे इनमें इस प्रकार भेद-अन्तर माना गया है।

शंका—नामनिक्षेप में जो यावत्कथिकता प्रदर्शित की गई है, वह ठीक नहीं है-कारण कि हम देखते हैं नामवान द्रव्य-गोपालदारक आदि के विद्यमान रहते हुए भी उस में अनेक नामों का परिवर्तन होता रहता है। कभी उसका "आवश्यक" यह नाम होता है, तो "इन्द्र" यह नाम रख लिया जाता है। फिर "आवश्यक" इस नाम निक्षेप में यावत्कथिकता कैसे आ सकती है?

उत्तर-शंका ठीक है इस प्रकार से विचार करने पर कालकृत अन्तर यद्यपि उन दोनों में नहीं मालूम होता है-तो भी इस बात की यहां पर विवक्षा नहीं है इसका कारण यही है कि यह नामपरिवर्तन अल्पस्थलवर्ती होनेसे व्याप्य है। यह बात सब जगह नहीं होती। कहीं २ ही होती है यहां सामान्यकथन है-विशेष नहीं। सामान्यरूप से नाम

શૂન્યતાની અપેક્ષાથી સમાનતા આવી જાય છે, છતાયે પોતપોતાના કાળની અપેક્ષાથી તેઓમા આ જાતનો ભેદ અન્તર માનવામા આવ્યો છે

શંકા—નામ નિક્ષેપમા જે યાવત્કથિકતા બતાવવામા આવી છે, તે ઉચિત નથી કારણ કે નામવાળુ ગોપાળદારક વગેરેના વિદ્યમાન રહેતા પણ તેમા અનેક નામોનુ પરિવર્તન થતુ રહે છે કોઈ વખતે તેનુ નામ 'આવશ્યક' રાખવામા આવે છે તો કોઇ વખત 'ઇન્દ્ર' નામ રાખવામા આવે છે તો પછી 'આવશ્યક' આ નામ નિક્ષેપમા યાવત્કથિત કેવી રીતે આવી શકે છે?

ઉત્તર—શંકા ઉચિત છે આ રીતે વિચાર કરવાથી જો કે કાળકૃત અંતર તેઓ બનેમા જણાતુ નથી છતાયે આ વાતની અહીં વિવક્ષા નથી એનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે આ નામ પરિવર્તન અલ્પ-સ્થલવર્તી હોવાથી વ્યાપ્ય છે, આ વાત બધે સ્થાને હોતી નથી કોઇક કોઇક સ્થાને જ હોય છે અહીં

यत्तु-उपलक्षणमात्र चेद् कालभदनेतयोर्भेदकथनम्-अपरस्यापि बहुप्रकार-भेदस्य सम्भवात्, इत्युक्त, तदुत्सूत्रप्ररूपणम् यथोत्सूत्रप्ररूपणभियानामनिक्षेपे इत्वरिकताया. क्वचित् सगवेऽपि भगवताऽनुक्तत्वादुपलक्षणमिति न स्वीक्रत तथैव स्थापनाया कालातिरिक्तस्य भेदहेतोः कल्पनेऽप्युत्सूत्रप्ररूपण प्रसज्येत कालान्यकृत

यावत्कथिक ही होता है। इसी अपेक्षा को लक्ष्य में रखकर भगवान ने उसमें इत्वरिकता का कथन न कर केवल यावत्कथिकता का ही कथन किया है यदि नाम में जो केवल इत्वरिकता ही मानी जावेगी-तो यह बात सिद्धान्त से बहिर्भूत होने से मानने वाले के लिये उत्सूत्रप्ररूपणा करने की आपत्ति का दोष आवेगा-क्यों कि शास्त्र में भगवान ने नाम निक्षेप में केवल यावद्द्रव्य भाविता ही प्रदर्शित की है।

जो व्यक्ति इस शका का इस प्रकार से समाधान करते हैं कि "काल के भेद से जो नाम और स्थापना मे भेद कहा गया है वह केवल उपलक्षण मात्र है-इससे अन्य अनेक प्रकारों से भी इन दोनों में परस्पर भेद है यह बात जानी जाती है" सो उनका यह कथन शास्त्र-मर्यादा के विरुद्ध है जिस प्रकार नाम निक्षेप में कहीं २ इत्वरिकता होने पर भी भगवान द्वारा स्वीकृत न होने से वह उपलक्षणरूप से स्वीकृत नहीं की गई है-उसी प्रकार स्थापना में भी कालकृत भेद के

સામાન્ય કથન છે વિશેષ નહિ સામાન્ય રૂપથી નામ યાવત્ કથિત જ હોય છે આ વાતને સામે રાખીને જ ભગવાને તેમા ઇત્વરિકતાનુ કથન ન કરતા ફક્ત યાવત્કથિકતાનુ કથન કર્યું છે જો નામમા ફક્ત ઇત્વરિકતા જ માનવામા આવશે તો આ વાત સિદ્ધાન્તની બહાર હોવાથી માનનાર માટે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરવા રૂપ દોષ આવશે કેમકે શાસ્ત્રમા ભગવાને નામ નિક્ષેપમા ફક્ત યાવદ્-દ્રવ્ય-ભાવિતા જ બતાવી છે

જે માણસો આ શકાનુ સમાધાન આ પ્રમાણે કરે છે કે "કાલના ભેદથી જે નામ અને સ્થાપનામા તફાવત બતાવવામા આવ્યો છે તે ફક્ત ઉપલક્ષણ માત્ર છે એથી બીજા અનેક પ્રકારોથી પણ આ બનેમા પરસ્પર તફાવત છે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે" જેથી તેમનુ આ કહેવું શાસ્ત્ર-મર્યાદાથી વિપરીત છે જેમ નામ-નિક્ષેપમા કોઈક કોઇક ઠેકાણે ઈત્વરિકતા હોવા છતાયે ભગવાન વડે સ્વીકૃત ન હોવાથી તે ઉપલક્ષણ રૂપથી સ્વીકારવામા આવી નથી, તેમ સ્થાપનામા પણ કાલકૃત ભેદ સિવાય બીજા વડે

भेदस्य भगवताऽनुक्तत्वात्। एतेन-" यत् कैश्चिदुक्तं यथा प्रतिमारूपस्थापनाद-र्शनाद् भावः समुल्लसति नैव नामश्रवणमात्रादिति नामस्थापनयोर्भेदः, यथा चेन्द्रादे' प्रतिमारूपस्थापनाया,लोकस्योपयाचितेच्छा पूजाप्रवृत्ति समीहितलाभादयो-दृश्यन्ते,नैव नामेन्द्रादौ, इत्यपि तयोर्भेदः। एवमन्यदपि वाच्यमिति तदुत्सूत्रप्ररू

सिवाय अन्य द्वारा अन्तर भेद मानने में उत्सूत्र प्ररूपणा करने का दोष आता है, कारण कि भगवान ने कालकृत भेदके सिवाय स्थापना निक्षेप में अन्य और किसी दूसरी अपेक्षा से भेद का कथन नहीं किया है इस प्रकार के कथन से "यह बात भी जो दूसरों ने कही है कि नाम और स्थापना में इस प्रकार से भी भेद है-कि "जिस प्रकार अर्हत की प्रतिमारूपस्थापना के देखने-दर्शन करने से भावों की जागृति होती है, उस प्रकार नाम निक्षेपरूप अर्हत नाम के सुनने से भावों की जागृति नहीं होती है। अथवा-इन्द्रादिक की प्रतिमारूप स्थापना में जिस प्रकार से लौकिकजनों की उस प्रतिमा से कुछ मागने की इच्छा उसके पूजन करने की भावना और उस प्रतिमा द्वारा उनके अभिलषि-तमनोरथों की पूर्ति होती हुई देखी जाती है उस प्रकार नामरूप इन्द्र में उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति और अभिलषित मनोरथो की पूर्ति होती हुई नहीं देखी जाती है। इसी तरह और भी ऐसी कई बाते हैं जो नाम और स्थापना में अन्तर कराती है। यह सब कालकृत भेद के सिवाय

ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણ રૂપ દોષ થઈ જાય છે કારણ કે ભગવાને કાલકૃત ભેદ સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપમા બીજી કોઈ અન્ય દૃષ્ટિએ ભેદ-કથન કર્યું નથી આ જાતના કથનથી " આ વાત પણ જે બીજાઓએ કહી છે કે નામ અને સ્થાપનામા આ રીતે પણ તફાવત છે કે " જેમ અર્હંતની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનાને જોવા એટલે કે દર્શન કરવાથી ભાવોની જાગૃતિ થાય છે, તેમ નામ નિક્ષેપ રૂપ અર્હંતના નામને સાભળવાથી પણ ભાવોની જાગૃતિ હોતી નથી અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનામા જેમ લૌકિક માણસોની તે પ્રતિમાથી કઇક માગણી કરવાની ઇચ્છા, તેની પૂજા કરવાની ભાવના અને તે પ્રતિમા વડે તેમના અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી દેખાય છે તેમ નામ રૂપ ઇન્દ્રમા તેમની આ જાતની પ્રવૃત્તિ અને અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી જોવામા આવતી નથી આ પ્રમાણે બીજી પણ ઘણી બાબતો છે જે નામ અને સ્થાપ-નામા અતર કરાવે છે.

पणा जनितानन्तसंसारजनकम् । आगमे यदिदमुपलभ्यते–" तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवणयाए महाफलं ।" इति, तत्र नास्ति नामनिक्षेपस्य विषयः । " अरहंताणं भगवंताणं " इत्युक्त्या तस्मिन्नर्थे प्रयुक्तस्य नाम्न एव श्रवणेन महाफलसंभवात् , गोपालदारकादौ प्रयुक्तस्य नाम्न श्रवणेन तु गोपालदारकाद्यर्थस्यैव बोधादात्मपरिणामशुद्धिहेतुत्वं तस्य नास्तीति । नामनिक्षेपस्थले भगवतोऽर्हतः स्मरणासंभवः, तस्य भावशून्यत्वात् , अत्र तु नामगोत्राभ्यां भगवदर्हतः सम्बन्धषष्ठ्यन्तपदप्रयोगादेव दर्शयता भगवता नामनिक्षेपो न विवक्षितः । भावजिन

नाम और स्थापना में भेद करपना का कथन उत्सूत्र प्ररूपक होने से अनन्त संसार का जनक है अतः हेय है । " तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवणयाए महाफल " आगम में जो यह सूत्र लिखा हुआ देखा है उसका अभिप्राय नामनिक्षेप परक नहीं है । अर्थात्-इस सूत्र से नाम निक्षेप की पुष्टि नहीं होती है । यदि सूत्रकार को इस सूत्र से जो नामनिक्षेप की पुष्टि करना इष्ट होता तो " अरहंताणं भगवंताणं इस पद के स्वतन्त्र देने की कोई खास आवश्यकता नहीं थी । अतः यह बात माननी चाहिये कि अरहंत भगवान के ही नामगोत्र के श्रवण से महाफल होता है । किसी गोपाल के लड़के में निक्षिप्त " अरहंत " इस नाम के सुनने से नहीं । उस में प्रयुक्त भी उस नाम के श्रवण से तो केवल उस गोपाल दारकरूप अर्थ का ही बोध होता है । " अरहंत " यह नाम जिसरूप के संकेत से अरि-

---

આ બધુ કાલકૃત ભેદ સિવાય નામ અને સ્થાપનામા ભેદ કલ્પનાનુ કથન ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપક હોવાથી અનત સસારનુ જનક છે એથી ત્યાજ્ય છે " तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नाम गोयसवणयाए महोफलं " આગમમા જે આ સૂત્ર મળે તેનો અભિપ્રાય નામનિક્ષેપપરક નથી એટલે કે આ સૂત્ર વડે નામ નિક્ષેપ-પુષ્ટિ થતી નથી જો સૂત્રકારને આ સૂત્ર વડે નામ-નિક્ષેપની પુષ્ટિ કરવું ઇષ્ટ લાગતુ હોત તો " अरहंताणं भगवंताणं " આ પદને સ્વતત્ર રૂપમા મૂકવાની કોઈ ખાસ આવશ્યકતા હતી નહિ એથી આ વાત માની લેવી જોઇએ કે અરહંત ભગવાનના નામ ગોત્ર-શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે કોઇ ગોપાળના પુત્રમાં નિક્ષિપ્ત " अरहंत " આ નામને સાભળવાથી નહિ તેમા પ્રયુકત પણ તે નામના શ્રવણથી તો ફક્ત તે ગોપાળના પુત્ર રૂપ અર્થનો જ બોધ હોય છે " अरहंत " આ નામ જે રૂપના સકેતથી અરિહંત પ્રભુમા સકેતિત થયુ છે-તે રૂપના સકેતથી જ ગોપાળના

हंत प्रभु में सकेतित हुआ है-उसी रूप से सकेत से गोपाल के पुत्र में सकेतित नहीं हुआ है। लौकिक व्यवहारके लिये ही केवल "अरहत" ऐसा उसका नाम करलिया गया है। नाम निक्षेप में जिसका निक्षेप किया जाता है उस जाति के द्रव्य, गुण और कर्म-क्रिया आदि निमित्त की अनपेक्षा रहती है इस निमित्त के सद्भाव में वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना जाताहै। भाव निक्षेप का ही वह विषय होता है अतः यह निश्चित होता है कि अरहत भगवान के ही नाम गोत्र के श्रवण के महाफल सूत्रकार ने प्रकट कियाहै यदि नामनिक्षेप से यह फल प्राप्त होने लगता तो फिर भावनिक्षेप की आवश्यकता ही क्या थी। उसके श्रवण मात्र से ही जीवों के आत्मिक भावों में शुद्धिरूप महाफल का लाभ होने लगता। तथा जिसका "अरिहन्त" यह नाम है वह स्वय अरिहत प्रभु की तरह महापवित्र, ३४ अतिशयों सहित ८ प्रातिहार्य आदि विभूति सपन्न हो जाता। परन्तु ऐसा नहीं होता है अतः यह मानना चाहिये कि यह सूत्र भावनिक्षेप की ही पुष्टि विधायक है-नामनिक्षेप का नहीं। नामनिक्षेप से भगवान अरिहत की स्मृति भी नही कराई जाती है-कारण कि वह नामनिक्षेप स्वय उस प्रकार के भावों से शून्य है। अनुभूत पदार्थ की स्मृति हुआ करती

થયુ નથી લૌકિક વ્યવહાર માટે ફક્ત "અરહત" આવુ નામ પાડવામા નામનિક્ષેપમા જેનો નિક્ષેપ કરવામા આવે છે તે જાતિના દ્રવ્ય, ગુણ અને કર્મ-ક્રિયા વગેરે નિમિત્તની અપેક્ષા રહે છે આ નિમિત્તના સદ્ભાવમા તે નામ-નિક્ષેપનો વિષય માનવામા આવતો નથી ભાવ નિક્ષેપનો જ તે વિષય હોય છે એથી એ સિદ્ધ થાય છે કે અરહત ભગવાનના જ નામ ગોત્રના શ્રવણથી જ સૂત્રકારે મહાફળ બતાવ્યુ છે જો નામનિક્ષેપથી આ ફળ મળી શકયુ હોત તો પછી ભાવનિક્ષેપની આવશ્યકતા જ, શી હતી ? તેના શ્રવણ માત્રથી જ જીવોની આત્મિક ભાવોમા શુદ્ધિ રૂપ મહાફળનો લાભ થવા માડતો તેમજ જેનુ "અરિહત" આ નામ છે તે પોતે અરિહત પ્રભુની જેમ મહા પવિત્ર, ૩૪ અતિશયો સહિત, ૮ પ્રતિહાર્ય વગેરે વિભૂતિઓથી સપન્ન થઇ જાત, પણ આવું થતુ નથી એથી એમ સમજી લેવુ જોઇએ કે આ સૂત્રથી ભાવનિક્ષેપની જ પુષ્ટિ થાય છે-નામ નિક્ષેપની નહિ નામ નિક્ષેપથી ભગવાન અરિહતની સ્મૃતિ પણ કરવામા આવતી નથી કારણ કે તે નામ-નિક્ષેપ જાતે તે જ્ઞાનના ભાવોથી રાહત છે અનુભૂત પદાર્થનુ સ્મરણ થયા કરે છે જેનુ

है जिसका "अरिहंत" यह नाम रखा गया है उसके देखने से अरिहंत की स्मृति हो भी कैसे सकती है-स्मृति तो अरिहंत की तब हो सकती कि जब उसमें उनकी स्मृति के चिह्न होते-वह स्वयं उस प्रकार के हेतु हो सकती है माना कि श्रवण कर्त्ता शास्त्र आदिकों में अरिहंतप्रभु के गुणों का वर्णन पढकर चित्त में उकेर कर भले ही "अरिहंत" इस नामके श्रवण से उनका स्मरण कर सकता है। परंतु गोपालदारकादी में कृत नाम से उनका स्मरण उसे नहीं हो सकता-उस नाम से तो उसमें ही सकेतित उस शब्द से उस गोपाल दारूप अर्थ का ही उसे बोध होगा। यदि अरिहंत नाम के सुनने से सुनने वाले को अरिहंत पदार्थ का भान होता हैतो वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना गया है भावनिक्षेप का ही वह विषय है। थोड़ा बहुत भी किसी अपेक्षा से सादृश्य होने पर एक पदार्थ को देखकर सदृश दूसरे पदार्थ का स्मरण हो जाता है परन्तु प्रकृत मे गोपालदारूप अरिहंत नामनिक्षेप में ऐसा कौन सा सादृश्य है जो वह अरिहंत का स्मरण करा सके। अतः नाम और गोत्र के साथ साक्षात् भगवान अरिहंत का सबध षष्ठी विभक्ति द्वारा प्रदर्शित करने वाले सूत्रकार ने इस सूत्र में नामनिक्षेप का कोई

"અરિહંત" આ નામ રાખવામા આવ્યુ છે તેને જોવાથી અરિહંત સ્મૃતિ પણ કેવી રીતે થઇ શકે તેમ છે? સ્મૃતિ તો અરિહંતની ત્યારે જ થઈ શકે કે જ્યારે તેમા તેમની સ્મૃતિના ચિહ્નો હોય, તે પોતે આ જાતના ભાવોથી રહિત થયેલો હોય ત્યારે તે કેવી રીતે તેમની સ્મૃતિનુ કારણ થઈ શકે છે? આ વાત આપણે સ્વીકારી શકીયે તેમ છીએ કે શ્રવણ-કર્ત્તા શાસ્ત્ર વગેરેમા અરિહંત પ્રભુના ગુણોનુ વર્ણન વાચીને ચિત્તમા ધારણ કરીને ભલે 'અરિહંત' આ નામના શ્રવણથી તેમનુ સ્મરણ કરી શકે છે પણ ગોપાળદારક વગેરેમા કૃત નામથી તેનુ સ્મરણ થઈ શકતું નથી તે નામ વડે તો તેમા જ સકેતિત તે શબ્દથી તે ગોપાળદારક રૂપ અર્થનો જ તે બોધ થશે જો અરિહંત નામ શ્રવણથી સાભળનારને અરિહંત પદાર્થોનુ જ્ઞાન થાય છે ત્યારે તે નામનિક્ષેપનો વિષય માનવામા આવ્યો નથી ભાવનિક્ષેપનો જ તે વિષય છે કોઈ પણ રીતે થોડુ પણ સરખાપણુ હોવાથી એક પદાર્થને જોઇને તેના સરખા બીજા પદાર્થનુ સ્મરણ થઈ જાય છે પણ પ્રકૃતમા ગોપાળદારક રૂપ અરિહંત નામનિક્ષેપમા એવુ કઈ જાતનુ સરખાપણું છે કે જે તે અરિહંતનુ સ્મરણ કરાવી શકે? એથી નામ અને ગોત્રની સાથે સાક્ષાત્ ભગવાન અરિહંતનો સબધ ષષ્ઠી વિભક્તિ વડે દર્શાવનારા સૂત્રકારે આ સૂત્રમા નામનિક્ષેપનો કોઈ પણ વિષય પ્રતિપાદિત કર્યો નથી

बोधकस्य नाम्न एव श्रवणेन महाफलसमवः । एव स्थापनापि भावरूपार्थशून्या, स्थापनया भावरूपार्थस्य नास्ति कोऽपि सम्बन्ध । भावजिनशरीरवर्तिनी याऽऽकृतिरासीत् , तस्या आश्रयाश्रयिभावसम्बन्धो भावजिनेन सह तदानी विद्यमान आसीन । यदा भावजिन पदार्थस्तदानी भावोल्लासोऽपि कस्यचित् सजातः,

---

भी विषय प्रतिपादित नहीं किया है । भावनिक्षेप का ही विषय इसमे कहा है इसलिये भावजिन का बोध कराने वाले जिन 'अरिहत' आदि नामों के सुनने से ही महाफल होता है ऐसा मानना चाहिये ।

इसी प्रकार स्थापना निक्षेप भी भावरूप अर्थ से शून्य है कारण कि इसका उसके साथ कोई सबध नही है भावजिन की अवस्था की आकृति पाषाण आदि की मूर्ति मे " यह वही है " इस प्रकार की कल्पना करने का नाम स्थापना है तीर्थंकर प्रकृति के उदयसे समवसरणादि विभूति सहित आत्मा का नाम भाव जिन है इस भाव जिन के शरीर की जो आकृति है उसका सबध विचारिये उस पाषाण आदि की प्रतिमा में कैसे आसकता है । क्यों कि इस आकृति का सबध आश्रय आश्रयी भावसे वे जिन जिसकाल मे थे उसी काल में उनके साथ था। उनके नही रहने पर पाषाण आदि मे इस तरह का आश्रय आश्रयी भाव सबध मानना उचित कैसे कहा जा सकता है, भावजिन के सद्भाव मे जिस प्रकर उनके साक्षात् दर्शन से प्राणियो को एक प्रकार

નો જ વિષય તેમા બતાવ્યો છે એથી જીનનો બોધ કરાવનાર જીન " અરિહત " વગેરે નામ શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે આમ સમજવુ જોઇએ

આ પ્રમાણે સ્થાપના નિક્ષેપ પણ ભાવ રૂપ અર્થથી રહિત છે કારણ કે આનો તેની સાથે કોઈ પણ જાતનો સબધ નથી ભાવજીનની અવસ્થાની આકૃતિ પથ્થર વગેરેની મૂર્તિમા " આ તેઓ જ છે " આ જાતની કલ્પના કરવાનુ નામ સ્થાપના છે તીર્થકરની પ્રકૃતિના ઉદયથી સમવસરણ વગેરે વિભૂતિ સહિત આત્માનુ નામ ભાવજીન છે આ ભાવજીનના શરીરની જે આકૃતિ છે તેના વિષે આપણે પણ વિચાર કરીયે કે પથ્થર વગેરેની પ્રતિમામા તેનો સબધ કેવી રીતે આવી શકે છે ? કેમકે તે આકૃતિનો સબધ આશ્રય આશ્રયી ભાવથી તે જીન જે કાળમા હતા તે કાળમા જ તેમની સાથે હતો તેમની ગેરહાજરીમા પથ્થર વગેરેમા આ જાતનો આશ્રય-આશ્રયી ભાવ સબધ માન્ય રાખવો કેવી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તેમ છે ? ભાવજીનના સદ્ભાવમા જેમ તેમના સાક્ષાત દર્શનથી પ્રાણીઓમા એક જાતનો ભાવોલ્લાસ ઉદ્ભવે

तथा भक्त्या तामाकृतिं स्मरतो जनस्य भावोल्लासः समवतु, तदाऽऽकृतेर्भावजिनेन सम्बन्धात्, परन्तु स्थापनाया आश्रयाश्रयिभावसम्बन्धो नास्ति भावजिनेन सह। भावजिनात्मनस्तत्राऽऽह्वान स्थापनं तु जिनागमाश्च प्रवचनविरुद्धं कर्तुमशक्यम्, कथं तर्हि-भावजिनसम्बन्धाभावे प्रतिमा भावजिनं तद्गुणं वा स्मारयितुं शक्ता भवेत्।

का भावोल्लास होता है, उसी प्रकार से भक्ति के आवेश से भी उनकी उस आकृति का उस समय स्मरण करने वाले प्राणी को उस प्रकार के भावोल्लास का सद्भाव हो सकता है। इसका निषेध नहीं है। क्यों कि स्मृति के आधारभूत जिन परमात्मा उस काल में स्वयं विद्यमान हैं। उन के अभाव में उन्हें नहीं देखने वाले प्राणियोंको भी उनकी उस प्रतिमा से उसी प्रकार का भावोल्लास होता है यह मान्यता केवल एक कल्पना मात्र है वास्तविक नहीं। इसके समाधान के निमित्त जो यह कहा जाता है कि उस पाषाण प्रतिमा में जिन भगवान की आत्मा का मन्त्रादिकों द्वारा आह्वान किया जाता है अतः उस प्रतिमा के दर्शन से साक्षात् भाव जिनके ही दर्शन होते हैं सो यह मान्यता सर्वथा असत्य है-कारण कि मोक्ष में प्राप्त आत्माओं का पाषाण आदि प्रतिमाओं में अपनी मान्यता सिद्ध करने के लिये आह्वान आदि मानना सर्वथा जिनसिद्धान्त से विरुद्ध है मोक्ष प्राप्त आत्माएँ कहीं पर भी किसी भी काल में आह्वान करने से नहीं आती हैं ऐसी जिन शासन की आज्ञा है इस तरह से उस पाषाण आदि की आत्माओं का

છે, તેમ ભક્તિના આવેશથી પણ તેમની એ આકૃતિનુ તે સમયે સ્મરણ કરનાર પ્રાણીને તે જાતના ભાવોલ્લાસની અનુભૂતિ થઇ શકે છે આનો નિષેધ નથી કેમકે સ્મૃતિમા તે આકૃતિના આધારભૂત જીન પરમાત્મા તે કાળમા જાતે વિદ્યમાન છે તેમના અભાવમા તેમને નહિ જોનારા પ્રાણીઓને પણ તેમની તે પ્રતિમાથી તે પ્રમાણેનો જ ભાવોલ્લાસ થાય છે, આ માન્યતા ફક્ત એક કોરી કલ્પના જ છે, વાસ્તવિક નથી એના સમાધાન માટે જે આમ કહેવામા આવે છે કે તે પથ્થરની પ્રતિમામા જીન ભગવાનના આત્માનુ મત્રો વગેરેથી આવાહન કરવામા આવે છે, એથી તે પ્રતિમાના દર્શનથી પ્રત્યક્ષ ભાવજીન ના જ દર્શન થાય છે, તો આ માન્યતા સાવ અસત્ય છે કારણ કે મોક્ષમા પ્રાપ્ત આત્માઓનુ પથ્થર વગેરે પ્રતિમાઓમા પોતાની માન્યતા સિદ્ધ કરવા માટે આહ્વાહન વગેરે માનવુ તે તો જીન સિધ્ધાતથી સાવ વિરૂધ્ધ છે મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઓ કોઇ પણ સ્થાને અને કોઇ પણ કાળે આવાહન કરવાથી આવતા નથી, એવી જીન શાસનની આજ્ઞા છે આ રીતે તે પથ્થર ના

सर्वथा कुमावचनिकद्रव्यावश्यकवत् प्रतिमापूजन कुर्वन्तः कारयन्तश्च मिथ्यादृष्टित्व प्राप्नुवन्ति न तु सम्यक्त्वमिति ।

द्रव्यावश्यक-द्विविध-आगमतो नोआगमतश्च । यस्य जन्तोरावश्यकशास्त्र शिक्षितादिगुणोपेत भवति, स जन्तुस्तत्रावश्यकशास्त्रे शिष्याध्यापनरूपया वाचनया गुरु प्रति प्रश्नलक्षणया मच्छनया, पुनः पुन. सूत्रार्थाभ्यासरूपया परावर्तनया, तथा

अहान होने से आना मान लिया जाय तो फिर उस प्रतिमा में सजीवता मानने में क्या दोष है इसलिये यह स्वीकार करना ही चाहीये। कि भावजिन के अभाव में वह प्रतिमा भावजिन एव उनके गुणों का स्मरण करवाने में सर्वथा समर्थही है। जब यह निश्चित सिद्धान्त है तो फिर इसकी पूजनादि करने कराने से जो मनुष्य समकित की प्राप्ति होना मानते हैं वे उस विधवा कि दशा जैसे है जो अपने पति की फोटो या मूर्ति के दर्शन एव सहवास आदि से सन्तान की उत्पत्ति की कामना करती हो। इसलिये कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की तरह यह प्रतिमापूजनादि कर्म करने कराने वाले दोनों ही जन मिथ्यात्वरूप दृष्टि के ही पात्र हैं, सम्यक्त्व के नही।

द्रव्य निक्षेपरूप आवश्यक, आगम और नोआगम के भेद से दो प्रकार का है। उसमे जिस प्राणी के आवश्यक शास्त्र शिक्षितादिगुणों से युक्त है वह प्राणी उस आवश्य शास्त्र में, शिष्यों का पढानेरूप

તે આત્માઓનુ આવાહન હોવાથી આવવુ માની લઇએ તો પછી તે પ્રતિમાને સજીવ માનવામા શો વાધો છે? એટલા માટે આપણે આ વાત સ્વીકારવી જ જોઇએ કે ભાવજીનના અભાવમા તે પ્રતિમા ભાવજીન અને તેમના ગુણોનુ સ્મરણ કરાવવામા સ પૂર્ણપણે સમર્થ જ છે જ્યારે આ સિધ્ધાન્ત નિશ્ચિત રૂપે માન્ય થયેલો છે ત્યારે તેનુ પૂજન વગેરે કરાવવાથી જે લોકો સમકિતની પ્રાપ્તિ થવી માને છે તેમની તો વિધવા જેવી દશા છે કે જે પોતાના પતિની છબી કે મૂર્તિના દર્શન અને સહવાસ વગેરેથી સતાન મેળવવાની ઇચ્છા કરતી હોય! એટલા માટે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ આ પ્રતિમા પૂજન વગેરે કાર્ય કરનાર તેમજ કરાવનાર અને માણસો મિથ્યાત્વ રૂપ દૃષ્ટિના જ પાત્ર છે, સમ્યકત્વના નથી

દ્રવ્ય નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક આગમ તેમજ નોઆગમના ભેદથી બે પ્રકાર છે તેમા જે પ્રાણી આવશ્યક શાસ્ત્ર શિક્ષિત વગેરે ગુણોથી યુકત છે તે પ્રાણી તે આવશ્યક શાસ્ત્રમા શિષ્યોને ભણાવવા રૂપ વાચનાથી, ગુરૂ-પ્રતિ તદ્

धर्मकथया वर्तमानोऽप्यनुपयोगे सति आगमतो द्रव्यावश्यकम्, 'अणुवओगो दव्व' इति वचनात्। अनुपयोगो भावशून्यता।

वाचना से, गुरु के प्रति तद्विषयक प्रश्न लक्षणरूप पृच्छना से बार बार सूत्र और अर्थ के अभ्यासरूप परावर्तन से तथा धर्मकथा से वर्तमान होता हुआ भी अनुपयुक्त अवस्थासपन्न होने से आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। अनुपयोग का नाम ही द्रव्य है।

भावार्थ-" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारण तु यल्लोके तद्द्रव्यम् " यह द्रव्यनिक्षेप का लक्षण है। भूतपर्याय या भविष्यत् पर्याय का जो कारण आधार होता है, वह द्रव्य है जिस प्रकार किसी राजा के युवराज को राजा कह दिया जाता है यद्यपि वह अभी वर्तमान में राजारूपपर्याय से युक्त नहीं है-आगे उसे राजपर्याय प्राप्त होगी, परन्तु फिर भी उसे व्यवहार में लोग राजा कहते है। यह भविष्यत पर्याय की अपेक्षा द्रव्य निक्षेपका विषय है। जोपहिले राजा था-कारण वश जब वह राजागद्दी का परित्याग कर देता है-तब भी लोग उसे राजा कहते हैं। यहा उस राजा में यद्यपि वर्तमान समय मे राजपर्याय से युक्तता नही है तौ भी भूतकाल की अपेक्षा से ही उसे राजा कहा जाता है। यह भूतकाल की अपेक्षा से राजपर्याय का आधार होने के कारण द्रव्य निक्षेप का विषय है प्रकृत मे इस निक्षेप की आयोजना इस प्रकार से

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનુ નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—" भूतस्य भाविनो वा भावत्य हि कारण तु यल्लोके तद् द्रव्यम् " આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનુ લક્ષણ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત પર્યાયનો જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામા આવે છે જોકે તે વર્તમાનમા રાજા રૂપ પર્યાયથી યુકત નથી આગળ તેને રાજ પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાયે તેને વ્યવહારના લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે જે પહેલા રાજા હતો-પણ કોઈ કારણુસર રાજગાદિનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામા જોકે વર્તમાન સમયમા રાજ પર્યાયથી યુકતતા નથી છતાયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે પ્રકૃતમા આ

अथ नोआगमतो द्रव्यावश्यकमुच्यते-अत्र नो शब्द सर्वथा प्रतिषेधे देशतः प्रतिषेधेऽपि च वर्तते । तथा च सर्वथा-आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यक, तथा

होती है कि जो वर्तमान में आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है आगे भविष्यत् काल में उस शास्त्र का ज्ञाता होंगे उसे तथा जो भूतकाल में उस शास्त्र का ज्ञाता था अब वर्तमान काल मे उसका ज्ञाता नहीं है-उसे आवश्यक इस प्रकार जानना या कहना यहद्रव्यनिक्षेप की अपेक्षा आवश्यक है। इसके मूल मे दो भेद हैं? आगम द्रव्य निक्षेप और दूसरा नोआगमद्रव्यनिक्षेप। आवश्यक शास्त्र आदि का जो ज्ञाता हो, शिष्यों को जो उसे पढाता हो, उस विषयक गुरु आदि के निकट जो तात्त्विक चर्चा आदि भी करता हो इस प्रकार वाचना, प्रच्छना-पर्यटना अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेशरूप पाचो प्रकार के स्वाध्याय से जो उसकी पर्यालोचना कर रहा है-परन्तु उसमे उपयोग नहीं है-अनुपयुक्त है वह आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। इसमें आवश्यक शब्द के अर्थ का ज्ञान ही आगमरूप से विवक्षित है। अतः आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता होता हुआ भी उसमे अनुपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है यह बात निश्चित हुई।

नो आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है-जहा आगम का सर्वथा अभाव या आगम के एक देश का अभाव विवक्षित होता

જના એ રીતે હોય છે કે વતમાનમા જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમા તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, ' આવશ્યક ' આ રીતે જાણવુ કે કહેવુ આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે એના મૂળ રૂપે બે ભેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્ વિષયક ગુરૂ વગેરેની પાસે જઈને જે તાત્વિક ચર્ચા વગેરે પણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમા તેનો ઉપયોગ નથી, અનુપયુકત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય ' આવશ્યક ' છે એમા આવશ્યક શબ્દના અર્થનુ જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એથી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાયે તેમા અનુપયુકત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યા આગમનો સપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

धर्मकथया वर्तमानोऽप्यनुपयोगे सति आगमतो द्रव्यावश्यकम्, 'अणुवओगो दव्व' इति वचनात्। अनुपयोगो भावशून्यता।

वाचना से, गुरु के प्रति तद्विषयक प्रश्न लक्षणरूप पृच्छना से बार बार सूत्र और अर्थ के अभ्यासरूप परावर्तन से तथा धर्मकथा से वर्तमान होता हुआ भी अनुपयुक्त अवस्थासंपन्न होने से आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। अनुपयोग का नाम ही द्रव्य है।

भावार्थ-" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारणं तु यल्लोके तद् द्रव्यम् " यह द्रव्यनिक्षेप का लक्षण है। भूतपर्याय या भविष्यत् पर्याय का जो कारण आधार होता है, वह द्रव्य है जिस प्रकार किसी राजा के युवराज को राजा कह दिया जाता है यद्यपि वह अभी वर्तमान में राजारूपपर्याय से युक्त नहीं है-आगे उसे राजपर्याय प्राप्त होगी, परन्तु फिर भी उसे व्यवहार में लोग राजा कहते हैं। यह भविष्यत् पर्याय की अपेक्षा द्रव्य निक्षेपका विषय है। जोपहिले राजा था-कारण वश जब वह राजागद्दी का परित्याग कर देता है-तब भी लोग उसे राजा कहते हैं। यहां उस राजा में यद्यपि वर्तमान समय मे राजपर्याय से युक्तता नही है तौ भी भूतकाल की अपेक्षा से ही उसे राजा कहा जाता है। यह भूतकाल की अपेक्षा से राजपर्याय का आधार होने के कारण द्रव्य निक्षेप का विषय है प्रकृत मे इस निक्षेप की आयोजना इस प्रकार से

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સંપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનુ નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारणं तु यल्लोके तद् द्रव्यम् " આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનુ લક્ષણ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત પર્યાયનો જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામા આવે છે જો કે તે વર્તમાનમા રાજા રૂપ પર્યાયથી યુકત નથી આગળ તેને રાજ પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાયે તેને વ્યવહારના લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે જે પહેલા રાજા હતો-પણ કોઈ કારણસર રાજગાદિનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામા જો કે વર્તમાન સમયમા રાજ પર્યાયથી યુકતતા નથી છતાયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે પ્રકૃતમા આ

अथ नोआगमतो द्रव्यावश्यकमुच्यते-अत्र नो शब्द' सर्वथा प्रतिषेधे देशतः प्रतिषेधेऽपि च वर्तते । तथा च सर्वथा-आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यक, तथा

होती है कि जो वर्तमान मे आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नही है आगे भविष्यत् काल में उस शास्त्र का ज्ञाता होंगे उसे तथा जो भूतकाल में उस शास्त्र का ज्ञाता था अब वर्तमान काल मे उसका ज्ञाता नहीं है-उसे आवश्यक इस प्रकार जानना या कहना यहद्रव्यनिक्षेप की अपेक्षा आवश्यक है। इसके मूल मे दो भेद हैं? आगम द्रव्य निक्षेप और दूसरा नोआगमद्रव्यनिक्षेप। आवश्यक शास्त्र आदि का जो ज्ञाता हो, शिष्यों को जो उसे पढाता हो, उस विषयक गुरु आदि के निकट जो तात्त्विक चर्चा आदि भी करता हो इस प्रकार वाचना, प्रच्छना-पर्यटना अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेशरूप पाचो प्रकार के स्वाध्याय से जो उसकी पर्यालोचना कर रहा है-परन्तु उसमे उपयोग नहीं है-अनुपयुक्त है वह आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। इसमें आवश्यक शब्द के अर्थ का ज्ञान ही आगमरूप से विवक्षित है। अतः आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता होता हुआ भी उसमे अनुपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है यह बात निश्चित हुई।

नो आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है-जहा आगम का सर्वथा अभाव या आगम के एक देश का अभाव विवक्षित होता

જના એ રીતે હોય છે કે વર્તમાનમા જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમા તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, ' આવશ્યક ' આ રીતે જાણવુ કે કહેવુ આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે એના મૂળ રૂપે બે ભેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્ વિષયક ગુરૂ વગેરેની પાસે જઇને જે તાત્વિક ચર્ચા વગેરે પણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમા તેનો ઉપયોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય ' આવશ્યક ' છે એમા આવશ્યક શબ્દના અર્થનુ જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એથી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાયે તેમા અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યા આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

देशत आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यक च-नोआगमतो द्रव्यावश्यकम्। तत्-त्रिविधम्-ज्ञशरीरद्रव्यावश्यक, भव्यशरीरद्रव्यावश्यकं,तद्व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक चेति।

है-वह नो आगम की अपेक्षा से द्रव्य आवश्यक माना गया है। " नो आगम " में नो शब्द सर्वथा आगम के अभाव का अथवा उसके एक देश के अभाव का बोधक है। इसके ज्ञशरीरद्रव्यावश्यक, भव्यशरीर-द्रव्यावश्यक, और तद्व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक, इस प्रकार तीन भेद हैं। आवश्यक शास्त्र का जो पहिले (भूतकाल में) ज्ञाता था-तथा दूसरों के लिये इस शास्त्र का उपदेश आदि भी जिसने पहिले दिया है ऐसे जीव का अचेतन शरीर ज्ञशरीरद्रव्यावश्यक है जो जीव इस समय आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है भविष्यत् काल में उसका ज्ञाता बनेगा उसका वह सचेतन शरीर भविष्यत् काल में आवश्यक शास्त्र के ज्ञान का आधार होने की अपेक्षा से, भव्यशरीरद्रव्यावश्यक है। तद्व्यतिरिक्तद्रव्यावश्यक लौकिक कुप्रावचनिक और लोकोत्तर के भेद से ३ प्रकार का है। लौकिकजनों द्वारा आचरित आवश्यक कर्म लौकिक द्रव्यआवश्यक है। जैसे राजसभा मे जाने वाले राजा, युवराज, तल वर (कोट्टपाल) आदि जन प्रातः काल मे उठकर राजसभा मे जाने के लिये प्रथम प्राभातिक विधियो से निपटते है-मुख धोते है, दातों को

આગમની અપેક્ષાથી દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામા આવ્યો છે " નોઆગમ " મા નો શબ્દ આગમના સ પૂર્ણપણે અભાવનો કે તેના એક દેશના અભાવનો બોધક છે તેના જ્ઞશરીર દ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર દ્રવ્યાવશ્યક અને તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક આ પ્રમાણે ત્રણ ભેદો છે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જે પહેલા (ભૂતકાળમા) જ્ઞાતા હતો તેમજ બીજાઓ માટે આ શાસ્ત્રનો ઉપદેશ વગેરે પણ જેણે પહેલા આપ્યો છે એવા જીવનુ અચેતન શરીર જ્ઞ શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે જે જીવ અત્યારે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તેનો જ્ઞાતા થશે તેનુ તે સચેતન શરીર ભવિષ્યકાળમા આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાનનો આધાર હોવાને કારણે ભવ્ય શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે તદ્વ્યતિરિકત દ્રવ્યાવશ્યક લૌકિક કુપ્રાવચનિક અને લોકોત્તર એમ ત્રણ પ્રકારનો છે લૌકિક માણસો વડે આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે જેમ રાજસભામા જનારા રાજા, યુવરાજ, તલવર (કોટ્ટપાલ) વગેરે લોકો સવારે ઉઠીને રાજ સભામા જવા માટે પ્રથમ પ્રાભાતિક વિધિયોથી પરવારે છે, મુખ ધુએ છે,

ज्ञातयानिति–ज्ञ', ज्ञस्य शरीर ज्ञशरीर तदेव द्रव्यावश्यकमिति विग्रहः । जीव परित्यक्तमावश्यकशास्त्रज्ञानवतः शरीर ज्ञशरीरद्रव्यावश्यकम् । यः कश्चिद् जीवः जन्मकालादारभ्य अनेनैव आत्तेन – गृहीतेन शरीरसमुच्छ्वासेन, जिनोपदिष्टेन भावेन आवश्यकमित्येतत् पद=शास्त्र आगामिनि काले शिक्षिष्यते न तावच्छिक्षते, तज्जीवाधिष्ठित शरीर भव्यशरीरद्रव्यावश्यकमिति । ज्ञशरीर–भव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक त्रिविधम्–लौकिक, कुप्रावचनिक, लोकोत्तरिक चेति ।

लौकिक द्रव्यावश्यकम् ' ये राजेश्वरतलवरादय प्रभातसमये–मुखधावन–दन्तप्रक्षालन–तैल–कङ्कतक–मर्दन–दूर्वा–दर्पण–धूप–पुष्प–माल्य–गन्ध–ताम्बूल–वस्त्रादिकानि द्रव्यावश्यकानि कुर्वन्ति, कृत्वा पश्चाद् राजकुलदेवकुलादौ गच्छन्ति, तत्–तेषा सम्बन्धिमुखधावनादि ।

कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यकम् ' ये इमे चरकचीरिकादयः पाषण्डस्था , इन्द्र–स्कन्द–रुद्र–शिव–वैश्रवण–देव–नाग–यक्ष–भूत–मुकुन्दार्या–दुर्गा– कोट्टक्रियाणाम् – उपलेपनसमार्जनार्चनधूपपुष्पगन्धमाल्यादिकानि द्रव्यावश्यकानि कुर्वन्ति तेषा तद् इन्द्रस्कन्दादेरुपलेपनादि । कुत्सित प्रवचन येषा ते कुप्रवचना स्तेषामिद कुप्रावचनिकम् । उपलेपन चन्दनपङ्केन, समार्जन–स्नपनानन्तर वस्त्रेण जलप्रोञ्छनम् आर्चण=गन्धोदकेन, ' गुलावजल ' इत्यादि भाषाप्रसिद्धेन ।

नामावश्यकम्–आवश्यकनामको गोपालदारकादिः, स्थापनावश्यकम्–आव

साफ करते ह, स्नान करते हैं । सुगधित तैल लगाते हें इत्यादि आवश्यक कार्य करते हैं । पीछे राजसभा मे या देवकुल मे जाते हे । उनका यह मुख धावन आदि कार्य लौकिक द्रव्य आवश्यक है । चरक चीरिक आदि पाखडियो द्वारा जो इन्द्र, स्कन्द, रुद्र, वैश्रवण, देव, नाग और यक्षादिकों की मूर्तियो का चदन से लेपन, अभिषेक कराने के बाद वस्त्र से मूर्तिस्थ जल का पोछना मदिर में या उन मूर्तियो पर गुलाब जल का छिडकाव आदि करना ये सब कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यक है ।

હાત સાફ કરે છે, સ્નાન કરે છે, સુગધિત તેલ લગાવે છે, વગેરે આવશ્યક કાર્યો કરે છે ત્યારપછી રાજસભામા અથવા તો દેવકુળમા જાય છે તેમનુ મુખ ધોવુ વગેરે કામ લૌકિક–દ્રવ્ય આવશ્યક છે ચરક ચીરિક વગેરે પાખડીઓ વડે જે ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, શિવ, વૈશ્રવણ દેવ, નાગ અને યક્ષો વગેરેની મૂર્તિઓનુ ચદનથી અભિષેક કરાવ્યા બાદ વસ્ત્રથી મૂર્તિના પાણીને લૂછવુ, મદિરમા કે તે મૂર્તિઓ ઉપર ગુલાબજળનુ સિચન વગેરે કરવુ આ બધુ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક છે આ પ્રમાણે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્યના ભેદથી આ

श्यकक्रियायत्त कस्यचित् काष्ठकर्मादिषु प्रतिकृतिः, द्रव्यावश्यकं च आगम
कोपयोगशून्या देहागमक्रिया, एवावश्यकेषु उपयोगाभावेन चरणगुणरहितत्वेन
च कर्मनिर्जराजनकत्वाभावादागमबन्धन जिनाज्ञा नास्ति, तस्मादेतत् त्रितयमाव
श्यकं धर्मपदवाच्यं न भवतीति निश्चयादलक्ष्यमेव। लोकोत्तरिकद्रव्यावश्यकं च

इस प्रकार नाम, स्थापना और द्रव्य के भेद से यह आवश्यक तीन प्रकार का होता है। किसी गोपाल के पुत्र का "आवश्यक" इस प्रकार का कृतनाम संस्कार नाम आवश्यक है। आवश्यक क्रियाओं से युक्त किसी व्यक्ति की काष्ठ आदि में तदाकार रूप से या अतदाकाररूप से प्रतिकृतिकी कल्पना करना या उसे बनालेना यह स्थापना आवश्यक है। आवश्यक में उपयोग से शून्य प्राणी की जो भी आगम और नो आगम की अपेक्षा से क्रियाएँ है वे सब द्रव्य आवश्यक हैं। इन तीनों आवश्यकों मे उपयोग-भावरूप-आवश्यक के अभाव से तथा चारित्रगुण तदनुकूल प्रवृत्ति के आचरण से रहित होने से कर्मों की निर्जरा कराने में साधकपना नहीं है। अतः जिनेन्द्रदेव ने इनके आराधन करने की आज्ञा प्रदान नहीं की है। धर्म की ही आराधन करने की उन्होंने आज्ञा दी है क्यों कि वही कर्मों की निर्जरा कराने में साधक है। इन तीनों में कर्मों की निर्जरा कराने का अभाव होने से धर्मस्वरूपता नहीं है। धर्मपद वाच्य भी ये नहीं हैं। इसीलिये ये तीनो धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य है, ऐसा समझना चाहिये। लोकोत्तरिक द्रव्य

આવશ્યક ત્રણ પ્રકારનુ હોય છે કોઈ ગોપાળના પુત્રનો 'આવશ્યક' આ રીતે કરેલો સંસ્કાર નામ આવશ્યક છે આવશ્યક ક્રિયાઓથી યુકત કોઈ વ્યકિતની કાષ્ઠ વગેરેમા તદાકાર રૂપથી કે અતદાકાર રૂપથી પ્રતિકૃતિની કલ્પના કરવી કે પ્રતિકૃતિનુ નિર્માણ કરવુ તે સ્થાપના આવશ્યક છે આવશ્યકમા ઉપયોગથી રહિત પ્રાણીની જે કંઈપણ આગમ અને નો આગમની અપેક્ષાથી ક્રિયાઓ છે તે બધી દ્રવ્ય આવશ્યક છે આ ત્રણે આવશ્યકોમા ઉપયોગ ભાવ રૂપ આવશ્યકના અભાવથી તેમજ ચારિત્રગુણ તદનુકુળ પ્રવૃત્તિના આચરણ વગર થઈ જવાથી કર્મોની નિર્જરા કરાવવામા સાધકપણુ નથી તેથી જીનેન્દ્ર દેવે તેમના આરાધનની આજ્ઞા આપી નથી ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓ શ્રીએ આજ્ઞા આપી છે કેમકે ધર્મજ કર્મોની નિર્જરા કરાવવામા સાધક છે આ ત્રણેમા કર્મોની નિર્જરા કરાવવાનો અભાવ હોવાને કારણે ધર્મસ્વરૂપતા નથી એ ધર્મપદ વાચ્ય પણ નથી તેથી આ ત્રણે ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવાને કારણે તેના અલક્ષ્ય છે એમ સમજવુ જોઇએ આગમિક વગેરે લોકો

चनोक्त सदपि जिनाज्ञाबाह्यै स्वच्छन्दविहारिभिर्मूलोत्तरगुणरहितै षट्कायनिरनुकम्पैरनुपयोगपूर्वक क्रियमाण सामायिकादिकम् तच्च धर्मपदवाच्य न भवितुमर्हति, तत्रापि निर्जराजनकत्वाभावेन विधेयतया जिनाज्ञाया आभावात् ।

एवमेव-नामजिन' स्थापनाजिनस्तथा द्रव्यजिनश्च निर्जराजनकत्वाभावादाराध्यत्वेन जिनाज्ञाया अभावात् । तदाराधन धर्मपदवाच्य न भवितुमर्हति ।

आवश्यक समायिक आदि है इनके करने का विधान यद्यपि प्रवचन शास्त्र में विहित है तो भी इसे जो धर्म का अलक्ष्य बताया गया है उसका कारण यह है कि ये जब जिनदेव की आज्ञा से बहिर्भूत बने हुए, स्वेच्छाचारी, मूलगुण और उत्तर गुणो से रहित एव षट्काय के जीवों की रक्षा करने में आसावधान मनुष्यो द्वारा अनुपयोगपूर्वक करने में आते हैं तब ये द्रव्य आवश्यकरूप से कहे जाते हैं। और इसीलिये ये धर्मपद के वाच्य नही है अर्थात् धर्मरूप नही हैं। जहा धर्मरूपता नही है वहा कर्मों की निर्जरा कारकत्व भी नही है। यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है। भगवान ने जो इस अवस्था में इन्हें विधेय नहीं कहा है उसका यही कारण है । अतः जिस प्रकार नाम आवश्यक, स्थापना आवश्यक और द्रव्य आवश्यक ये तीन निक्षेप आराध्यरूप से तीर्थंकर प्रभु ने अनविधेय कहे हैं, उसी प्रकार से नामजिन स्थापनाजिन तथा द्रव्यजिन भी आराध्य नही हैं। इनकी आराधना करने में जो धर्म की प्राप्ति होना कहते है या मानते हैं उन्हें जिन

त्र द्रव्य आवश्यक छे प्रवचन शास्त्रमा એમના आचरणनु विधान विहित छे छताये એને જે धर्मना अलक्ष्य રૂપમા બતાવવામાં આવ્યેા છે તેની भत લબ એ છે કે ત્યારે તે જીનદેવની આજ્ઞાથી બહિભૂર્ત બનેલા સ્વેચ્છાચારી, મૂળગુણ તેમજ ઉત્તર ગુણેાથી રહિત અને ષટકાય જીવેાની રક્ષા કરવામા અસાવધાન માણસેા વડે અનુપયેાગ પૂર્વક આચરવામા આવે ત્યારે તે દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપમા કહેવાય છે એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય નથી એટલે કે ધર્મ રૂપ નથી ત્યા ધર્મરૂપતા નથી ત્યા કર્મોની નિર્જરા કારકતા પણ નથી આ સર્વમા ય સિદ્ધાન્ત છે ભગવાને જે આ અવસ્થામા એમને વિધેય કહ્યા નથી તેનુ કારણ પણ એ જ છે એટલા માટે જેમ નામ આવશ્યક, સ્થાપના આવશ્યક અને દ્રવ્ય આવશ્યક આ ત્રણ નિક્ષેપેાને આરાધ્ય રૂપથી તીર્થંકર પ્રભુએ અવિધેય કહ્યા છે, તેમજ નામ જિન, સ્થાપના જિન તેમજ દ્રવ્યજિન પણ આરાધ્ય નથી એમની આરાધના કરવામા જે ધર્મની પ્રાપ્તિ થવી બતાવવામા આવે છે કે માનવામા આવે છે, તેમને જિન ભગવાનની

एव च प्रतिमापूजनमपि धर्मलक्षणस्य लक्ष्यं न भवति, तत्र धर्मत्वाभाव निश्चयात् । 'मोक्षकामो जिनप्रतिमा पूजयेत्' इत्येवमर्हतो भगवत आज्ञायाः प्रवचनेऽनुपलब्धेः । धर्मविषये सर्वत्र भगवदाज्ञोपलभ्यते-दृश्यते हि आवश्यकार्थे भगव

भगवान की आज्ञा से बहिर्भूत ही समझना चाहिये। यदि इन निक्षेपों की या स्थापनानिक्षेप की आराधना करने से आराधक जीवों को धर्म का लाभ होता तो वे उनकी आराधना करने का भव्य जीवों को अव श्य २ उपदेश देते। इस प्रकार की स्वमनः कल्पित प्रवृत्ति से उनकी पूजा आदि करने में षट्काय के जीवों की कितनी विराधना होती है यह एक स्वानुभवगम्य बात है। अतः जहाँ आरंभ है वहां धर्म नहीं है। जहा धर्म नहीं है उसकी आराधना से कर्मो की निर्जरा भी नहीं हो सकती है। इस प्रकार से नाम स्थापना और द्रव्यजिन आदि तीन निक्षेप भी धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य माने गये हैं। जब स्थापना जिन ही उसका अलक्ष्यभूत है, तो फिर जिन की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा आदि कार्य भी धर्मलक्षण से शून्य होने से वह भी उसका अलक्ष्य है ऐसा निश्चित हो जाता है भगवान ने इस प्रकार की आज्ञा शास्त्र में कहीं भी नहीं दी है "मोक्षकामो जिन प्रतिमा पूजयेत्" कि मुक्ति की अभिलाषा वाला प्राणी जिन प्रतिमा की पूजा करें। धर्मकी आराधना करने की ही उन्हों ने आगम में आज्ञा

આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત જ સમજવા જોઇએ આ નિક્ષેપોની કે સ્થાપના નિક્ષેપોની આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોને ધર્મનો લાભ થતો હોય ત્યારે તો તેઓ તેમની આરાધના કરવા માટે ભવ્ય જીવોને ચોક્કસ ઉપદેશ આપતા આ રીતે પોતાના મનથી જ કલ્પના કરીને તેમની પૂજા વગેરે કરવામા ષટ્કાય જીવોની કેટલી બધી વિરાધના હોય છે તે જાતે જ અનુભવવા જેવી વાત છે એટલા માટે જ્યા આરંભ છે ત્યા ધર્મ તો નથી જ અને જ્યા ધર્મ નથી તેની આરા ધનાથી કર્મોની નિર્જરા પણ થઈ શકે તેમ નથી આ રીતે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્ય જિન વગેરે ત્રણ નિક્ષેપો પણ ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવા બદલ તેને અલક્ષ્ય માનવામા આવ્યા છે જ્યારે સ્થાપના જિન જ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે, ત્યારે જિનની પ્રતિમા બનાવીને તેની પૂજા વગેરે કાર્યો પણ ધર્મલક્ષણથી રહિત હોવાથી તે પણ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે આવી ચોક્કસ ખાત્રી થઇ જાય છે ભગવાને આ જાતની આજ્ઞા શાસ્ત્રમા કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી "मोक्षकामो जिनप्रतिमा पूजयेत्" કે મોક્ષની ઇચ્છા રાખનારે પ્રાણી જિન પ્રતિમાનુ પૂજન કરે ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓશ્રીએ 'આજ્ઞા

दाज्ञा, दर्शनार्थं ज्ञानार्थं च भगवदाज्ञा पुनरहिंसासंयमतपःसंवरादिविधिरपि शास्त्रे प्रदर्शितः परन्तु प्रतिमापूजनार्थमाज्ञा क्वापि नोपलभ्यते शास्त्रेषु, प्रत्युत कुप्रावचनिकद्रव्यावश्यकलक्षणाक्रान्ततयेन प्रतिमापूजनं जैनागमविरुद्धमिति सूचितम्। इन्द्रादिपूजनं हि कुप्रावचनिकस्य नोआगमतो द्रव्यावश्यकस्योदाहरणतया भगवता प्रदर्शितम्। तेन सर्वं प्रतिमापूजनं कुप्रावनिचक तादृशद्रव्यावश्यके भगवता निक्षिप्तमिति सुस्पष्टं प्रतीयते। षट्कायहिंसासाध्यायाः पूजायाः

પ્રદાન કી હૈ જૈસે-આવશ્યક, દર્શન ઔર જ્ઞાન કી આરાધના પ્રત્યેક મોક્ષાભિલાષી ભવ્ય જન કો કરના ચાહિયે-ઇસ પ્રકાર કે આવશ્યક આદિ કી આરાધના કરને કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ આગમો મેં મિલતા હૈ-તથા જિસ પ્રકાર ઉન્હોંને અહિંસા, સંયમ, તપ ઔર સંવર આદિ કી વિધિ શાસ્ત્રોં મેં પ્રદર્શિત કી હૈ-ઉસ પ્રકાર ન તો ઉન્હોને પ્રતિમા પૂજન કી કહીં ન આજ્ઞા પ્રદાન કી હૈ ઔર ન ઉસ કી વિધિ હી કહી હૈ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કે લક્ષણ સે યુક્ત હોને સે પ્રત્યુત પ્રતિમાપૂજન કો જૈન આગમ સે વિરુદ્ધ હી સૂચિત કિયા હૈ। કુપ્રાવચનિકોં દ્વારા માન્ય ઇન્દ્રાદિકોં કે પૂજન કો ભગવાન નો આગમ કી અપેક્ષા સે દ્રવ્ય આવશ્યક કે ઉદાહરણ રૂપ મેં પ્રકટ કિયા હૈ ઇસસે હી યહ બાત સ્પષ્ટ હો જાતી હૈ કિ ઉન્હોંને અન્ય સમસ્ત પ્રતિમા પૂજન કો ભી ઇસી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કી તરહ દ્રવ્ય આવશ્યક મેં રખા હૈ। પ્રવચન મેં કુત્સિતતા-ખોટાપન કુશાસ્ત્રતા હિંસાદિક સાધ્ય પૂજા આદિ કાર્યો

કરી છે જેમ આવશ્યક, દર્શન અને જ્ઞાનની આરાધના દરેકે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારા ભવ્ય જનને કરવી ઘટે છે જેમ આવશ્યક વગેરેની આરાધના કરવા વિષેનો ઉલ્લેખ આગમોમા મળે છે, તેમજ જેમ તેમણે અહિંસા, સંયમ, તપ અને સંવર વગેરેની વિધિ શાસ્ત્રોમા બતાવી છે તેમ તેમણે કોઇ પણ સ્થાને પ્રતિમા પૂજનની આજ્ઞા કરી નથી અને તેની વિધિ પણ બતાવી નથી પ્રતિમા પૂજાને કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકના લક્ષણથી યુક્ત હોવા બદલ જૈન આગમોથી વિરૂદ્ધ જ બતાવવામા આવી છે કુપ્રાવચનીઓ વડે માન્ય ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને ભગવાને આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્ય આવશ્યકના ઉદાહરણ રૂપમા બતાવ્યુ છે એથી આ વાત સ્પષ્ટ સમજી શકાય તેમ છે કે તેમણે બીજી પણ બધી પ્રતિમા પૂજાને પણ આ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ દ્રવ્ય આવશ્યકમા જ સ્થાન આપ્યુ છે પ્રવચનમા કુત્સિતતા કુશાસ્ત્રતા હિંસા વગેરે સાધ્ય પૂજા વગેરે કાર્યોની પુષ્ટિ કરવાથી જ સંભવે છે બીજા ચરણ

विधायकतया प्रवचनस्य कुत्सितत्वं, तेनैव चेन्द्रादिपूजनस्य कुप्रावचनिकत्वं भवति । एव प्ररूपयतो भगवतोऽर्हतः प्रतिमाया पूजनस्य प्रसङ्ग एव तदानीं नासीत्-हिंसामयत्वात्पूजनस्य, तेन प्रवचने भगवता प्रतिमापूजनप्रतिषेधो विशिष्य नोक्त । प्रतिषेधवाक्य हि तदैव सार्थकं, यदाप्रतिषेध्यरूपोऽर्थः कथचित् प्रसक्तो भवति । जिनप्रतिमापूजन हि न तावल्लौकिकद्रव्यावश्यक, नापि लोकोत्तरिक द्रव्यावश्यक. जिनो हि लोकोत्तरो देवस्तत्पूजनमपि स्याच्चेत् लोकोत्तरिकमेव

की पुष्टि करने से ही आती है । अन्य चरक आदि समस्त प्रवचनों में इन्ही हिंसादिक कर्मों के करने का विधान स्पष्टरूप से पाया जाता है । इसीलिये ये कुप्रवचन माने गये हैं। इनके द्वारा प्रदर्शित इन्द्रादिक पूजन भी इसी निमित्त से कुप्रावचनिक कहा गया है। जैन शास्त्रों में प्रतिमापूजन के निषेध का स्पष्ट उल्लेख जो देखने में नहीं आता है, उसका यह कारण है कि जिस समय प्रभु ने इन्द्रादिक के पूजन का कुप्रावचनिक रूप मानकर निषेध किया उस समय उनके समक्ष अर्हंत की प्रतिमा के पूजन का प्रसग ही नहीं था, नही तो इसका भी वे स्वतन्त्र रूप से निषेध करते-दूसरे-प्रतिमा पूजन कार्य हिंसामय कार्य है-भगवान ने धर्म के लिये भी हिंसा करने का आदेश नही दिया है अत' जब वीतराग शास्त्र मे हिंसा का विधान ही नही है-तब इसका भी विधान कैसे वे करते प्रतिषेध वाक्य उसी समय सार्थक माना जाता है जब प्रतिषेध्यरूप पदार्थ किसी भी रूप से प्रसक्त होता है ।

ચારિક વગેરે બધા પ્રવચનોમા એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનુ વિધાન સ્પષ્ટ રૂપ જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનુ પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચનિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ જોવામા આવતો નથી તેનુ કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતત્ર રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનુ કાર્ય હિંસા મય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિધેનુ વિધાન જ નથી ત્યારે આનુ વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિષેધ વાકય ત્યારે જ સાર્થક છે જ્યારે પ્રતિષેધ્યરૂપ પદાર્થ કોઇ પણ રૂપથી પ્રસકત હોય છે

स्यात् लोके तु तस्य समावेशानर्हतया लौकिकत्वासंभवात् । प्रवचने भगवता यत् सामायिकादि षड्विधावश्यकं प्ररूपितं तदेव स्वच्छन्दविहारिभिः षट्कायविराधनारतैरनुपयुक्तैर्जिनाज्ञाबाह्यैः क्रियमाणं लोकोत्तरिक-द्रव्यावश्यकम् । तत्र षड्विधावश्यकेषु जिनप्रतिमा पूजनस्य प्रवेशात् तस्य लोकोत्तरिकद्रव्यावश्यके समावेशो न संभवति।

यह प्रतिमापूजनरूप कार्य न लौकिक द्रव्य अवश्यक है और न लोकोत्तर द्रव्य अवश्यक ही है ।

शंका—प्रतिमा पूजन लौकिक द्रव्य आवश्यक नहीं है यह तो आप का कहना ठीक है, क्यों कि यह लौकिक द्रव्य आवश्यकों से सर्वथा भिन्न है। परन्तु इसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक मानने में आपको क्या विवाद है । क्यों कि प्रभु स्वयं लोकोत्तर देव माने जाते अतः उनका पूजन भी लोकोत्तरिक ही मानना चाहिये ?

उत्तर—प्रवचन में भगवान जो सामायिक आदि छह प्रकार के आवश्यकों का वर्णन किया है-वे जब जिन आज्ञा बाह्य-स्वच्छन्दविहारी और षट्काय की विराधना करने में निरत अनुपयुक्त पुरुषों द्वारा करने में आते हैं लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक रूप से प्रतिपादित किये गये हैं। इन षट्प्रकार के आवश्यकों में प्रतिमापूजन का कोई अधिकार ही नहीं है । अतः इसे कैसे लोकोत्तरिक आवश्यक माना जा सकता है।

પૂજનરૂપ કાર્ય માટે ન તો લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને ન તો લોકોત્તર દ્રવ્ય આવશ્યક છે

શંકા —પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નથી તમારી આ વાત તો ઉચિત છે કેમ કે આ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકોથી સંપૂર્ણપણે ભિન્ન છે પણ એને લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામાં તમને શો વાંધો છે ? કેમકે પ્રભુ જાતે લોકોત્તર દેવ મનાય છે ત્યારે તેમનું પૂજન પણ લોકોત્તરિક જ માનવું જોઇએ ?

ઉત્તર—પ્રવચનમાં ભગવાને જે સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યકોનું વર્ણન કર્યું છે તેઓ જ્યારે જિન-આજ્ઞા બાહ્ય સ્વચ્છંદ વિહારી અને ષટ્કાયની વિરાધના કરવામાં નિરત અનુપયુક્ત પુરુષો વડે આચરવામાં આવે છે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામાં આવે છે આ છ જાતના આવશ્યકોમાં પ્રતિમા પૂજનનો કોઇ અધિકાર જ નથી એટલા માટે લોકોત્તરિક આવશ્યક કેવી રીતે માની શકાય ?

विधायकतया प्रवचनस्य कुत्सितत्व, तेनैव चेन्द्रादिपूजनस्य कुप्रावचनिकत्व भवति । एव प्ररूपयतो भगवतोऽर्हतः प्रतिमाया पूजनस्य प्रसङ्ग एव तदानीं नासीत्-हिंसामयत्वात्पूजनस्य, तेन प्रवचने भगवता प्रतिमापूजनप्रतिषेधो विशिष्य नोक्त । प्रतिषेधवाक्य हि तदैव सार्थक, यदाप्रतिषेध्यरूपोऽर्थः कथचित् प्रसक्तो भवति । जिनप्रतिमापूजन हि न तावल्लौकिकद्रव्यावश्यक, नापि लोकोत्तरिक द्रव्यावश्यक, जिनो हि लोकोत्तरो देवस्तत्पूजनमपि स्याच्चेत् लोकोत्तरिकमेव

की पुष्टि करने से ही आती है । अन्य चरक आदि समस्त प्रवचनों में इन्ही हिंसादिक कर्मों के करने का विधान स्पष्टरूप से पाया जाता है । इसीलिये ये कुप्रवचन माने गये हैं। इनके द्वारा प्रदर्शित इन्द्रादिक पूजन भी इसी निमित्त से कुप्रावचनिक कहा गया है। जैन शास्त्रों में प्रतिमापूजन के निषेध का स्पष्ट उल्लेख जो देखने में नही आता है, उसका यह कारण है कि जिस समय प्रभु ने इन्द्रादिक के पूजन का कुप्रावचनिक रूप मानकर निषेध किया उस समय उनके समक्ष अर्हत की प्रतिमा के पूजन का प्रसग ही नहीं था, नही तो इसका भी वे स्वतन्त्र रूप से निषेध करते-दूसरे-प्रतिमा पूजन कार्य हिंसामय कार्य है-भगवान ने धर्म के लिये भी हिंसा करने का आदेश नही दिया है अतः जब वीतराग शास्त्र मे हिंसा का विधान ही नही है-तब इसका भी विधान कैसे वे करते प्रतिषेध वाक्य उसी समय सार्थक माना जाता है जब प्रतिषेध्यरूप पदार्थ किसी भी रूप से प्रसक्त होता है ।

ચૈત્યકિ વગેરે બધા પ્રવચનોમા એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનુ વિધાન સ્પષ્ટ રૂપ જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનુ પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચનિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ જોવામા આવતો નથી તેનુ કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અર્હતની પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતત્ર રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનુ કાર્ય હિંસામય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિધેનુ વિધાન જ નથી ત્યારે આનુ વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિષેધ વાકય ત્યારે જ સાર્થક ગણાય છે જ્યારે પ્રતિષેધ્યરૂપ પદાર્થ કોઇ પણ રૂપથી પ્રસકત હોય છે ,

चित्रादय इति प्ररूपितम् । एव च जिनपूजन-कुप्रावचनिक-नोआगमतो द्रव्यावश्यक प्रतिमाया क्रियमाणत्वात् , इन्द्रादिपूजनवत् ,इत्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यकतया धर्मपदवाच्य न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रवचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप से नही किया गया है, तो भी कामपूरक प्राणियों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में होती हुई पूजा भी कुप्रावचनिकी है ।

इस प्रकार हम अनुमानसे कह सकते हैं । उसमें प्रवचनमें पूजाके आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य हैं वे सब गृहीत हुए है। इस प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है । इसलिये वह कुप्रावचनिक है । इस प्रकार हम करते है। इस कथन से यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी है। अत जिन पूजन भी प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नही है यह बात स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान पयोग इस प्रकार से करना चाहिए ।

ઉત્તર —જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનુ વિધાન સ્વતત્ર રૂપમા કર વામા આવ્યુ નથી છતાય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા–માણુસના મૃત નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામા આવેલી પૂજા પણ કુપ્રા વચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનમા પૂજાના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજાના આધારભૂત જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનુ ગ્રહણ થયુ છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજાનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે એટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ વ્યસિસિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમા જે જે પૂજાઓ કરવામા આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે એટલા માટે જિન પૂજા પણ પ્રતિમામા આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ થઈ જાય છે આમા અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે

कुप्रवचनेऽर्हत पूजाविधान विशिष्य नास्ति तथापि तत्पूरकमूतमनुष्यपूजनवत् तस्य पूजा प्रतिमाया क्रियमाणा कुप्रावचनिकीति वक्तु शक्यते । तस्मिन् कुप्रवचने हि पूजाधारनिर्णायकरे सामान्यत' पूज्यस्य सर्वस्यापि पूजाधारः प्रतिमा

भावार्थ-शकाकार ने प्रतिमापूजन को लोकोत्तरिक आवश्यक मानकर द्रव्य आवश्यक में जो उसका समावेश करना चाहा है सो उसकी इस आशका का समाधान करते हुए सूत्रकारने यह कहा है कि जिन आज्ञा बाह्य एव सामायिक आदि में अनुपयुक्त पुरुषो द्वारा किये गये सामायिक आदि षट् विध आवश्यक कार्य ही लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में परिगणित किये गये है। इनमें प्रतिमा पूजा को कोई सबध ही नही है-प्रतिमा पूजा षट् विध आवश्यक कार्यों में परिगणित ही नही हुई है। अत उसका वहा पर किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होने से उसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में नही गिना जा सकता है अत' इसका समावेश केवल कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक में ही हुआ है ऐसा मानना चाहिये।

शका—कुप्रवचन में इन्द्रादिकों की पूजा करने के विधान की तरह प्रतिमा पूजा का विधान तो पाया नहीं जाता है फिर आप इसे कुप्रावचनिक में अन्तर्भूत कैसे कह सकते है ?

ભાવાર્થ —શકાકારે પ્રતિમા પૂજનને લોકોત્તરિક આવશ્યક માનીને દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેનો સમાવેશ કરવાની જે ઈચ્છા બતાવી છે તેની તે શકાનુ સમાધાન કરતા સૂત્રકારે આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે જિન આજ્ઞા બાહ્ય અને સામાયિક વગેરેમા અનુપયુક્ત પુરુષો વડે કરવામા આવેલા સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યક કાર્યો જ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમા પરિગણિત કરવામા આવ્યા છે એનાથી પ્રતિમા પૂજનનો કોઇ સબધ જ નથી પ્રતિમા પૂજન ષટ્વિધ આવશ્યક કાર્યોમા પરિગણિત જ થઈ નથી એટલા માટે ત્યા તેનો કોઈ પણ રીતે સબધ નહિ હોવાથી લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમા તેની ગણના થઈ શકે તેમ નથી એથી ફક્ત દ્રવ્ય આવશ્યકમા જ થયેા છે આમ માની લેવુ જોઈએ

શકા —કુપ્રવચનમા ઈન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવાના વિધાનની જેમ પ્રતિમા પૂજનનુ વિધાન તો મળતુ નથી ત્યારે તમે એને કુપ્રવાચનિકમા કેવી રીતે સમાવિષ્ટ કરી શકો ?

चित्रादय इति मरूपितम् । एव च जिनपूजन-कुप्रावचनिक-नोआगमतो द्रव्यावश्यक प्रतिमापा क्रियमाणत्वात् , इन्द्रादिपूजनवत् ,इत्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यकतया धर्मपदवाच्य न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रवचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप से नही किया गया है, तो भी कामपूरक प्राणियों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में होती हुई पूजा भी कुप्रावचनिकी है।

इस प्रकार हम अनुमानसे कर सकते हैं। उसमें प्रवचनमें पूजाके आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य है वे सब गृहीत हुए है। इस प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है। इसलिये वह कुप्रावचनिक है। इस प्रकार हम कहते है। इस कथन से यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी है। अत जिन पूजन भी प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नही है यह बात स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान पयोग उस प्रकार से करना चाहिए।

ઉત્તર —જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનુ વિધાન સ્વતત્ર રૂપમા કર વામા આવ્યુ નથી છતાય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણસના મૃત નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામા આવેલી પૂજા પણ કુપ્રા વચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનમા પૂજાના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજાના આધારભૂત જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનુ ગ્રહણ થયુ છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજાનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે એટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ વ્યાપ્તિ સિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમા જે જે પૂજાઓ કરવામા આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે એટલા માટે જિન પૂજા પણ પ્રતિમામા આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ થઈ જાય છે આમા અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે

अथ भावावश्यकमुच्यते-विवक्षितक्रियानुभवयुक्तो योऽर्थः स भाव, भाव तद्धतोरभेदोपचाराद् भावः। यथा-ऐश्वर्यरूपायाइन्दनक्रियाया अनुभवाद् इन्द्रो भाव उच्यते। भावश्चासौ आवश्यकं च, भावमाश्रित्य वा आवश्यकं भावावश्यकम्।

" जिनपूजन नो आगमतो कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यक प्रतिमायां क्रियमाणत्वात् इन्द्रादिपूजनवत् "। अतः इस समस्त पूर्वोक्त कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह प्रतिमापूजन कार्य लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक रूप से भी प्रसक्त होता तो भगवान् इसका अवश्य प्रतिषेध करते।

अथ भावावश्यकमुच्यते - अब भाव आवश्यक क्या है इसका कथन सूत्रकार करते हैं-वर्तमान समय में उस विवक्षितरूप पर्याय से युक्त द्रव्य का नाम भाव है। भाव यद्यपि वर्तमान क्रिया रूप माना गया है, फिर भी यहां पर उस क्रिया से युक्त द्रव्य को जो भाव कहा है उसका कारण द्रव्य और पर्याय का अभेद सबध है। भगवान द्रव्य के विना नहीं रह सकता है। भाव द्रव्य की एक पर्याय है, वह निराश्रय होती नहीं है-अतः जिस द्रव्य के आश्रय वह रहेगी उन दोनो में अभेदोपचार से उस पर्याय से उपलक्षित उस द्रव्य को ही भाव कह दिया है। जिस प्रकार ऐश्वर्यरूप इदन (देदीप्यमान होना)

" જિનપૂજન નો આગમતો કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક પ્રતિમાયા ક્રિયમાણ ત્વાત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ "

એટલા માટે આ પૂર્વોકિત કથનથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે તે પ્રતિમા પૂજન રૂપ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક પણ નથી જો તે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપે પણ પ્રસકત હોત તો ભગવાન તેનો ચોક્કસ પ્રતિષેધ કરત

' अथ भावावश्यकमुच्यते ' —હવે આવશ્યક શુ છે એનુ સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર કરે છે-વર્તમાન સમયમા તે વિવક્ષિત રૂપ પર્યાયથી યુકત દ્રવ્યનુ નામ ભાવ છે જો કે ભાવ વર્તમ ન ક્રિયારૂપ માનવામા આવ્યો છે, છતાય અહીં તે ક્રિયાથી યુક્ત દ્રવ્યને જ ભાવ બતાવ્યો છે તેનુ કારણ દ્રવ્ય અને પર્યાયનો અભેદ સ બ ધ છે ભાવ ભગવાન દ્રવ્ય વગર રહી શકતો નથી ભાવ દ્રવ્યની એક પર્યાય છે, તે નિરાશ્રય હોતીજ નથી એથી જે દ્રવ્યના આશ્રયે તે રહેશે તેઓ બનેમા અભેદોપચારથી તે પર્યાયથી ઉપલક્ષિત તે દ્રવ્યને જ ભાવ કહી દીધો છે જેમ ઐશ્વર્ય ઇદન (દેદીપ્યમાન થવુ) ક્રિયાના અનુભ

तद् द्विविधम्- (१) आगमत = आगममाश्रित्य, (२) नोआगमतः=आगमाभावमाश्रित्य ।

आगमतो भावावश्यकमाह—

" से किं त आगमओ भावावस्सय ? आगमओ भावावस्सय जाणए उवउत्ते, सेत आगमओ भावावस्सय " । (अनुयोग०)

अथ किं तदागमतो भावावश्यकम् ?, उत्तरमाह-" ज्ञायक उपयुक्त " आगमतो भावावश्यकम् ।

अयमर्थः-आवश्यकपदार्थज्ञस्तज्जनितसवेगेन विशुध्यमानपरिणामस्तत्र चोपयुक्त साध्वादिरागमतो भावावश्यकम्, अत्रावश्यकार्थज्ञानरूपस्यागमस्यात्र

क्रिया के अनुभव से उपलक्षित शचीपति भाव इन्द्र कहा जाता है । इसी प्रकार जो आवश्यक रूप क्रिया के अनुभवसे युक्त है वही आत्मा भावावश्यक कहलाता है । भावरूप जो आवश्यक है वह, अथवा भाव को आश्रय करके जो आवश्यक है वह भावावश्यक है ।

यह भाव आवश्यक भी दो प्रकार का है-१ आगम की अपेक्षा भाव आवश्यक और दूसरा नो आगम की अपेक्षा भाव आवश्यक । इनमें " ज्ञायक' उपर्युक्त' आगमतो भावावश्यक " ज्ञायक उपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक माना गया है । आवश्यकरूप पदार्थ का जो ज्ञाता है उसका नाम ज्ञायक है । आवश्यकरूप पदार्थ के ज्ञान से जनित सवेग द्वारा विशुद्ध हुए परिणामों का नाम उपयोग है । इस उपयोग से विशिष्ट जो साधु आदि जन हैं वे आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं । क्यों कि इनमें आवश्यकरूप पदार्थ

૧થી ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ ઇન્દ્ર કહેવાય છે તેમજ જે આવશ્યકરૂપ ક્રિયાના અનુભવથી યુક્ત છે તે આત્મા ભાવાવશ્યક કહેવાય છે ભાવરૂપ જે આવશ્યક છે તે અથવા ભાવને આશ્રય કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવાવશ્યક છે

આ ભાવ આવશ્યક પણ બે પ્રકારનો છે-૧, આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક અને ૨, નો આગમની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક એમનામા "જ્ઞાયક उपयुक्त आगमतो भावावश्यक" જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક માનવામા આવ્યો છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થનો જે જ્ઞાતા છે તેનુ નામ જ્ઞાયક છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનથી જનિત સવેગવડે વિશુદ્ધિ પામેલા પરિણામોનુ નામ ઉપયોગ છે આ ઉપયોગથી વિશિષ્ટ જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેઓ આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે કેમકે તેઓમા આવ-

सत्त्वात्, भावावश्यकता चात्रावश्यकार्थज्ञानजनितोपयोगपरिणामवत्त्वाद्भा-माश्रित्यावश्यकमिति व्युत्पत्तेः। इत्युक्तं भवति आवश्यकार्थगस्य आवश्यकोपयोगपरिणाम आगमतो भावावश्यकं, साध्वादिस्तु तादृशपरिणामवत्त्वादागमतो भावावश्यकमुच्यते। इदमावश्यकोपयोगपरिणामरूप भावावश्यकं धर्मपदवाच्यं, श्रुतधर्मान्तर्गतत्वात्, अत्र जिनाज्ञायाः सत्त्वात्।

नोआगमतो भावावश्यकं त्रिविधं-लौकिकं, कुप्रावचनिकं, लोकोत्तरिकं चेति लौकिकं भावावश्यकं पूर्वाह्णे भारतस्य वाचनं श्रवणं वा, अपराह्णे रामायणस्य

के ज्ञानरूप आगम का सद्भाव पाया जाता है। इसलिये साधु आदि जनों में आगम की अपेक्षा से आवश्यकता और इस आवश्यक के अर्थ ज्ञान से जनित उपयोगरूप परिणामों की विशिष्टता होने से भाव रूपता आती है। अतः "भाव को आश्रित करके जो आवश्यक है वह भाव आवश्यक है" यह कथन सुसंगत हो जाता है

भावार्थ-"आवश्यक" इस पद के अर्थज्ञान से विशिष्ट तथा तदनुकूल उपयोग परिणति सम्पन्न आत्मा ही आगम की अपेक्षा से भावावश्यक कहा गया है। ये भावावश्यक साधु आदि हैं। क्यों कि ये ही उस प्रकार की परिणति वाले होते हैं। अतः श्रुतधर्म के अन्तर्गत होने से यह भावावश्यक ही धर्म पद का वाच्य कहा गया है और ऐसे ही धर्म की आराधना करने की भगवानने आज्ञा प्रदान की है।

नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक तीन प्रकार का माना गया है। (१) लौकिक (२) कुप्रावचनिक और लोकोत्तरिक। पूर्वाह्ण में

श्यકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનરૂપ આગમનો સદ્ભાવ મળે છે એટલા માટે સાધુ વગેરે લોકોમા આગમની અપેક્ષાથી આવશ્યકતા અને આ આવશ્યકતાના અર્થ જ્ઞાનથી જનિત ઉપયોગરૂપ પરિણામોની વિશિષ્ટતા હોવાથી ભાવરૂપતા આવે છે એટલા માટે "ભાવને આશ્રિત કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવ આવશ્યક છે" આ કથ સુસંગત થઈ પડે છે

ભાવાર્થ—"આવશ્યક" આ પદના અર્થ જ્ઞાનથી વિશિષ્ટ તેમજ તદનુકૂળ ઉપયોગ પરિણતિ સંપન્ન આત્મા જ આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યક સાધુ વગેરે છે કેમકે એ લોકો જ આ જાતની પરિણતિવાળા હોય છે એથી શ્રુતધર્મના અંતર્ગત હોવા બદલ આ ભાવાવશ્યક જ ધર્મ પદવાચ્ય કહેવામા આવ્યો છે અને આ જાતના ધર્મની આરાધના કરવાની ભગવાને પણ આજ્ઞા કરી છે

નો આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યકના ત્રણ પ્રકારો છે-(૧) લૌકિક (૨) કુપ્રાવચનિક (૩) અને લોકોત્તરિક પૂર્વાહ્ણમા ભારતનુ વા , શ્રવણ

वाचनं श्रवण वा । लोके हि भारतस्य वाचन श्रवण पूर्वाह्ने एव क्रियमाणं दृश्यते, तथा रामायणस्य वाचन श्रवणमपराह्ण एव क्रियमाणं दृश्यते, विपरीत्ये दोषदर्शनात् । ततश्चेत्थ लोकेऽवश्यकरणीयतयाऽऽवश्यकत्व तद्वाचकस्य श्रेतुश्च तदर्थोपयोगपरिणामसत्त्वाद् भावत्व, तद्वाचक पुस्तकपत्रादिपरावर्तनरूपया हस्ताभिनयरूपया च क्रियया युक्तो भवति, श्रोतापि च गात्रसयतत्व-करसंपुटीकरणादि

भारत का वाचना अथवा सुनना, अपराह्न में रामायण का वाचना या सुनना ये सब लौकिक भाव आवश्यक हैं। लोक में भारत का वाचना अथवा सुनना पूर्वाह्नमें ही किया जाता है। रामायणका वाचन और श्रवण अपराह्न में ही होता हुआ देखा जाता है। इससे विरुद्ध प्रवृत्ति करने से अनेक प्रकार के दोषों का भाजन बनना पडता है, इस प्रकार लोक में भारतादिक ग्रन्थों का वाचना आदि कार्य नियमित समय में अवश्य करने योग्य होने की वजह से आवश्यक रूपमें माना गया है। अतः इसमें इस प्रकार से आवश्यकपना आ जाता है। तथा इनके वाचने वालो मे या सुनने वालो में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम के सद्भाव से भावरूपता आती है। क्यों कि जबतक उनके वाचने वाले में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम की जागृति नहीं होगी तब तक वे उन पुस्तको के पत्रों आदि का परावर्तन करने रूप क्रिया और श्रोताओ को अनेक अर्थ की सगति बैठाने के लिये हस्त आदि के सचालनरूप अभिनय क्रिया का उपयोग ही

અપરાહ્નમા રામાયણનુ વાચન કે શ્રવણ આ બધુ લૌકિક ભાવ આવશ્ય છે લોકમા ભારતનુ વાચન અથવા તો શ્રવણ પૂર્વાહ્નમા જ કરવામા આવે છે રામાયણનુ વાચન અને શ્રવણ અપરાહ્નમા જ થતુ જોવામા આવે છે એથી વિરુદ્ધ આચરણ કરવાથી માણસ ઘણી જાતના દોષોને પાત્ર થઇ પડે છે આ પ્રમાણે ભારત વગેરે ગ્રથોનુ વાચન વગેરે કાર્ય નિયમિત સમયમા આવશ્યક કરવા યોગ્ય હોવા બદલ આવશ્યક રૂપમા માનવામા આવે છે એથી આમા આ રીતે આવશ્યકપણુ આવી જાય છે તેમજ એમનુ વાચન કરનારાઓમા તેમના તરફ ઉપયોગાત્મક પરિણામના સદ્ભાવથી ભાવરૂપતા આવે છે કેમકે જ્યાસુધી તેમનુ વાચન કરનારાઓમા તેમના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગાત્મક પરિણામની જાગૃતિ થશે નહિ, ત્યા સુધી તેઓ તે પુસ્તકના પત્રો વગેરેના પરાવર્તન કરવારૂપ ક્રિયા અને શ્રોતાઓના માટે અનેક જાતના અર્થની સગતિ બેસાડવા માટે હાથ વગેરેના હલનચલનરૂપ અભિનય ક્રિયા ઉપયોગ જ કેવી રીતે કરી શકે.

क्रियावान् भवति, एव तयोः क्रियावत्त्वेन नोआगमत्व, "किरियाऽऽगमो नहोइ" इति वचनात्। क्रियारूपे देशे आगमाभावाद् नोआगमत्वमपि, अत्र नो शब्दस्य देशनिषेधबोधकत्वात्। लोके भारतादावागमत्व व्यवह्रियते, तस्माद्देशत आगमोऽस्त्यपि। तस्माद् पूर्वाह्णेऽपराह्णे यथानिर्दिष्टकाले भारताद्युपयुक्तो यद्वचनय भारतादि वाचयति शृणोति वा, तद् वाचन श्रवण च लौकिक भावावश्यकमिति बोध्यम्।

કેવી રીતે કર સકતે હૈં। પરન્તુ ઉસ સમય ઇસ પ્રકાર કી યે સમસ્ત ક્રિયાએઁ ઉનમેં પ્રત્યક્ષ હી દેખને મેં આતી હૈં। ઇસી પ્રકાર ઓનાજન ભી અટલ હોકર ઉનકે સુનને મે તન્મય હો જાતે હૈં। સમય ૨ પર હાથ જોડને રૂપ ક્રિયાએઁ ભી કરતે હૈ। ઇસ પ્રકાર કી ક્રિયાએઁ મે યુક્ત હોને સે ઉન સુનને વાચને વાલો મેં નો આગમના ભી હૈ ક્યો કિ " કિરિયા આગમો ન હોઇ " ક્રિયા આગમ નહી માની જાતી હૈ ઐસા સિદ્ધાત કા કથન હૈ। " નો આગમ " મેં નો શબ્દ આગમ કે એક દેશ કા વાચક હે। ઇસલિયે ક્રિયારૂપ એક દેશ મેં પૂર્ણરૂપ સે આગમ કા અભાવ હોને સે આગમ કી એક દેશતા ઉસમેં માનને મેં આતી હૈ। ભારતાદિક પુસ્તકોં મેં આગમતા કા કથન લોક કી અપેક્ષા સે હી કિયા ગયા જાનના ચાહિયે। ક્યો કિ લોક મેં અન્ય વ્યવહારી જન ઇનમેં આગમતા કા વ્યવહાર કરતે હુએ દેખે જાતે હૈ। ઇસ પ્રકાર પૂર્વાહ્ન યા અપરાહ્ન મેં કિસી ભી નિર્દિષ્ટ સમય મે ભારતાદિક ગ્રન્થો કા જ્ઞાતા ઉનમેં ઉપર્યુક્ત હોકર જો ઉનકા વાચના આદિ કાર્ય કરતા હૈ–યા જો શ્રોતાજન ઉપ

પણ તે વખતે આ જાતની આ બધી ક્રિયાઓ તેઓમા પ્રત્યક્ષરૂપે જોવામા આવે છે આ રીતે શ્રોતાઓ પણ તલ્લીન થઇને સાભળવા માડે છે યોગ્ય સમયે તેઓ હાથ જોડવારૂપ ક્રિયાઓ પણ કરે છે આ જાતની ક્રિયાઓથી યુક્ત હોવા બદલ તે વાચનારા તેમજ સાભળનારાઓમા નો આગમતા પણ છે કેમકે " કિરિયા આગમો ન હોઇ" ક્રિયા આગમ માનવામા આવતી નથી આ સિદ્ધાન્તનુ કથન છે " નો આગમ " મા નો શબ્દ આગમના એક દેશનો વાચક છે એટલા માટે ક્રિયારૂપ એકદેશમા આગમનો સ પૂર્ણપણે અભાવ હોવાથી તેમા આગમની એકદેશતા માનવામા આવે છે ભારત વગેરે ગ્રથોમા આગમતાનુ કથન લોકની અપેક્ષાથી જ કરવામા આવ્યુ છે કેમકે લોકમા બીજી વ્યવહારી લોકો પણ એમા આગમતારૂપ વ્યવહાર કરતા જોવાય છે આ રીતે પૂર્વાહ્ન કે અપરાહ્નમા કોઇ પણ નિર્દિષ્ટ સમયમા ભારત વગેરે ગ્રથો નો જ્ઞાતા તેઓમા ઉપયુક્ત થઇને જે તેમનુ વાચન વગેરે કાય કરે છે । તો

कुप्रावचनिक भावावश्यकमुच्यते—ये इमे चरकचीरिकादयो यावत् पाषण्डस्था उपयुक्तो यथावसरं यदवश्यम्-इज्याञ्जलि-होम-जपो-न्दुरुक्तनमस्कारादिकं भाव रूपमावश्यकं कुर्वन्ति तेषां तत् कुप्रावचनिकं भावावश्यकम् ।

तत्र-इज्या-सन्ध्योपासनम्, अञ्जलि'-जलाञ्जलि' सूर्याय दीयते, होम'-नित्यहवनम् , जप -गायत्र्या., उन्दुरुक्त-अय देशीयः शब्द धूपार्थकः, नमस्कारः=वन्दनम्, एतेषां चरकादिभि पाषण्डस्थैरवश्य क्रियमाणत्वादावश्यकत्वम् । तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामसद्भावात् भावत्वम् । चरकादीना तदर्थोप-

युक्त होकर उन्हें सुनते हैं वह सब वाचना सुनना आदि कार्य नो आगम की अपेक्षा से लौकिक भाव आवश्यक है ।

जो चरक चीरिकादि जन उपयुक्त होकर अपने आवश्यक कार्य स्वरूप इज्या, अजलि, होम जप, उन्दुरुक, और नमस्कार आदि भाव रूप आवश्यक करते हैं, उनके ये सब कार्य कुप्रावचनिक भाव आव श्यक हैं सन्या की उपासना करना इज्या है, सूर्य के लिये जलकी अजलि देना अञ्जलि है, नित्य हवन करना होम, गायत्री का पाठ करना जप, धूप का खेना उन्दुरुक्त और नमस्कार करना वन्दना कर्म है । ये सब कार्य चरकादि जनो द्वारा प्रतिदिन अवश्य करने योग्य होने हैं-अतः इनमें उन्ही की मान्यतानुसार आवश्यकपना कहा गया है इनके करने में उनके अन्तः कारण मे उनके अर्थ के प्रति उपयोग एव श्रद्धा आदिरूप परिणति का सद्भाव पाया जाता है । इस

જે શ્રોતાઓ ઉપયુકત થઈને તેમનુ શ્રવણ કરે છે તે બધુ વાચન શ્રવણ વગેરે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લૌકિક ભાવ આવશ્યક છે

જે ચરક ચારિક વગેરે લોકો ઉપયુકત થઇને આવશ્યક કાર્યસ્વરૂપ ઇજ્યા, અજલિ, હોમ, જપ, ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર વગેરે ભાવરૂપ આવશ્યકો કરે છે, તેઓના આ બધા કાર્યો કુપ્રાવચનિકભાવ આવશ્યક છે સધ્યાની ઉપાસના કરવી એ ઇજ્યા છે, સૂર્યને માટે પાણીની અજલિ આપવી તે અજલી છે, દરરોજ હવન કરવો તે હોમ, ગાયત્રી પાઠ કરવો તે જપ અને ધૂપ કરવો તે ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર એ વદના કર્મ છે આ બધા કાર્યો ચરક વગેરે લોકો વડે હમેશાઅવશ્ય કરવાયોગ્ય હોય છે એટલા માટે આમા તેમની માન્યતા મુજબ જ આવશ્યકપણુ કહેવામા આવ્યુ છે એમના આચરણથી તેમના હૃદયમા તેના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગ અને શ્રદ્ધા વગેરે રૂપ પરિણતિ નો સદ્ભાવ મળે છે આ અપેક્ષાએ ત્યા ભાવતા અને

योगरूपो देश आगम, करशिरः संयोगादिक्रियारूपो देशस्तु नोआगम, तथा च देशिकागमाभावमाश्रित्य नो आगमत्वमपि, नोशब्दस्यात्रापि देशनिषेधपरत्वात्।

लौकिक कुप्रावचनिक च नोआगमतो भावावश्यक न धर्मपदवाच्यम्, तत्र जिनाज्ञाया अभावादिति यो॰यम्।

अथ किं लोकोत्तरिक नोआगमतो भावावश्यकम्? उच्यते अनुयोगद्वारे।

" जण्ण इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे

अपेक्षा से वहां भावता और एकदेश से आगमता भी है। क्यों कि हाथों का जोडना नमस्कार करना आदि रूप जो भी क्रियाएँ हैं वे सब नो आगम हैं। इस अपेक्षा इनमें पूर्णरूप से आगमपना न होकर आगम की एक देशता ही है चरक चीरीकादि द्वारा मान्य ग्रन्थों की निर्दिष्ट क्रियाओं का ही वहा सद्भाव है और उन्ही के अर्थ मे उनका उपयोगादिरूप परिणाम है। इसलिये ये सब चरक चीरीकादि की क्रियाएँ नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं। यहा पर भी नो शब्द देश निषेध परक है अर्थात् आगम के एक देश का वाचक है ये लौकिक और कुप्रावचनिक जिन्हें नो आगम की अपेक्षा से भावावश्य करूप में प्रकट किया गया है धर्मपद के वाच्य नही हैं। क्यों कि इन की आराधना से जीवो के कर्मो की निर्जरा नही होती है। अत तीर्थंकर प्रभु ने इनके आरावन करने की आज्ञा प्रदान नही की है।

नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक इस प्रकार

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ જોડવા, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા સપૂર્ણપણે નથી ફકત આગમ ll એકદેશતા જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે માન્ય ગ્રથોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યા સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થમા તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહી પણ નો શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે-ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થંકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે —

जण्ण इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तल्लेसे

तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणा भाविए अण्णत्थ कत्थइ मण अकरेमाणे उभओकाल आवस्सय करेइ, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नोआगमतो भावावस्सय, से त भावावस्सय ॥'

छाया-यत्खलु श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तस्तन्मनस्कस्तल्लेश्यस्तदध्यवसितस्तत्तीव्राध्यवसायस्तदर्थोपयुक्तस्तदर्पितकरणस्तद्भावना-भावित अन्यत्र कुत्रचिन्मनोऽकुर्वन् उभयकाल यत् आवश्यक सामायिकादि करोति तेषां तल्लोकोत्तरिक भावावश्यकम्। तेषां तद् नोआगमतो भावावश्यकम् तदे-तद्भावावश्यकम्।

अत्राप्यवश्य करणीयत्वादावश्यक च, तत्रोपयोगश्रद्धादिपरिणामस्य सद्भा-वाद् भावत्वम्, रजोहरणप्रमार्जनक्रियाव्यापारयथारात्निकवन्दनकरणानन्तर सविधि

है-जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअ-करणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकाल आवस्सयं करेंति, से त लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से त नो आगमतो भावावस्सयं, से त भावावस्सयं (अनुयोगद्वार)

श्रमण अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जो सामायिक आदि आवश्यक क्रियाओं को तच्चित्त होकर (उनमें ही चित्त लगाकर) तन्मन होकर उनमें ही अन्तःकरणको एकाग्रकर इत्यादि सूत्रमें कथित विधिके अनुसार दोनों कालों में करतेहैं वह उनका कार्य नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक है। ये सामायिक आदि क्रियाएँ अवश्य करने योग्य होने से आवश्यक है। कर्त्ता का उनके अर्थ में उपयोग रूप एवं श्रद्धा आदि रूप परिणाम का सद्भाव होने से उनमें

तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकाल आवस्सयं करेंति, से त लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से त नो आगमतो भावावस्सयं, से त भावावस्सयं (अनुयोगद्वार)।

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જે સામાયિક વગેરે આવ શ્યક ક્રિયાઓને તચ્ચિત્ત થઈને (તેમનામાં મન પરોવીને) તન્મન થઈને તેમનામાં જ મન લગાવીને વગેરે સૂત્રમાં કથિત વિધિ મુજબ અને જ્યારે કર છે તેમનુ તે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે આ સામાયિક વગેરે ક્રિયાઓ અવશ્ય કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક છે કર્ત્તાનો તેમના અર્થમાં ઉપયોગરૂપ પરિણામનો સદ્ભાવ હોવાથી તેમાં ભાવતા પણ છે રજોહરણથી ભૂમિ વગેરેનુ પ્રમાર્જન કરીને યથારાત્નિક વંદન કરણાનંતર વિધિ

योगरूपो देश आगम, करशिरः संयोगादिनिमित्तरूपो देशस्तु नोआगम, तथा च दैशिकागमागममाश्रित्य नो आगमत्वमपि, नोशब्दस्यात्रापि देशनिषेधपरत्वात् ।

लौकिक कुप्रावचनिक च नोआगमतो भावावश्यक न धर्मपदवाच्यम्, तत्र जिनाज्ञाया अभावादिति बोध्यम् ।

अथ किं लोकोत्तरिक नोआगमतो भावावश्यकम् ? उच्यते अनुयोगद्वारे ।

" जण्ण इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे

अपेक्षा से वहाँ भावता और एकदेश से आगमता भी है । क्यों कि हाथों का जोडना नमस्कार करना आदि रूप जो भी क्रियाएँ है वे सब नो आगम हैं । इस अपेक्षा इनमें पूर्णरूप से आगमपना न होकर आगम की एक देशता ही है चरक चीरीकादि द्वारा मान्य ग्रन्थों की निर्दिष्ट क्रियाओं का ही वहा सद्भाव है और उन्हीं के अर्थ मे उनका उपयोगादिरूप परिणाम है । इसलिये ये सब चरक चीरीकादि की क्रियाएँ नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं । यहा पर भी नो शब्द देश निषेध परक है अर्थात् आगम के एक देश का वाचक है ये लौकिक और कुप्रावचनिक जिन्हें नो आगम की अपेक्षा से भावावश्यक रूप में प्रकट किया गया है धर्मपद के वाच्य नहीं है । क्यों कि इन की आराधना से जीवो के कर्मो की निर्जरा नही होती है । अत तीर्थंकर प्रभु ने इनके आराधन करने की आज्ञा प्रदान नही की है ।

नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक इस प्रकार

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ જોડવા, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા સંપૂર્ણપણે નથી ફક્ત આગમ ની એકદેશતા જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે માન્ય ગ્રંથોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યા સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થ મા તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહી પણ નો શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે–ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થંકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે —

जण्ण इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे

तल्लेसे तज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणा भाविए अण्णत्थ कत्थइ मण अकरेमाणे उभओकाल आवस्सय करेइ, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नोआगमतो भावावस्सय, से त भावावस्सय ॥'

छाया-यत्खलु श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तस्तन्मनस्कस्तल्लेश्यस्तदध्यवसितस्तत्तीव्राध्यवसानस्तदर्थोपयुक्तस्तदर्पितकरणस्तद्भावना-भावित अन्यत्र कुत्रचिन्मनोऽकुर्वन् उभयकाल यत् आवश्यक सामायिकादि करोति तेषां तल्लोकोत्तरिक भावावश्यकम्। तेषा तद् नोआगमतो भावावश्यकम् तदे-तद्भावावश्यकम्।

अनाप्यवश्य करणीयत्वादावश्यक च, तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामस्य सद्भा-वाद् भावत्वम्, रजोहरणप्रमार्जिताद्व्यापारयथारात्निकवन्दनकरणानन्तर सत्रिधि

है-जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअ-करणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मण अकरेमाणे उभओकाल आवस्सय करेंति, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नो आगमतो भावावस्सय से त भावावस्सय (अनुयोगद्वार)

श्रमण अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जो सामायिक आदि आवश्यक क्रियाओं को तच्चित्त होकर (उनमें ही चित्त लगाकर) तन्मन होकर उनमे ही अन्त करणको एकाग्रकर इत्यादि सूत्रमें कथित विधिके अनुसार दोनों कालों में करतेह वह उनका कार्य नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक है। ये सामायिक आदि क्रियाएँ अवश्य करने योग्य होने से आवश्यक है। कर्त्ता का उनके अर्थ मे उपयोग रूप एव श्रद्धा आदि रूप परिणाम का सद्भाव होने से उनमे

तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मण अकरेमाणे उभओकाल आवस्सय करेंति, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नो आगमतो भावावस्सय, से त भावावस्सय (अनुयोगद्वार)।

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જે સામાયિક વગેરે આવ શ્યક ક્રિયાઓને તચ્ચિત્ત થઇને (તેમનામા મન પરોવીને) તદ્દીન થઇને તેમનામા જ મન લગાવીને વગેરે સૂત્રમા કથિત વિધિ મુજબ અને વર્તત કર છે તેમનુ તે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે આ સામાયિક વગેરે ક્રિયાઓ અવશ્ય કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક છે કર્ત્તાનો તેમના અર્થમા ઉપયોગરૂપ પરિણામનો સદ્ભાવ હોવાથી તેમનામા ભાવતા પણ છે રજોહરણથી ભૂમિ વગેરેનુ પ્રમાર્જન કરવુ, વદના વગેરે કૃતિ

षड्विधावश्यककरणरूपाः क्रियाः अनागमतो नोआगमतश्च वोध्याः, अत्रापि नो-शब्दस्य देशार्थकत्वात्। इदम् लोकोत्तरिकं नो आगमतो भावावश्यकं धर्मपदवाच्यम् तत्र निखिलस्य भगवतोऽर्हत आज्ञारूपत्वात्। अन्येऽपि धर्मलक्षणमेवमाहुः—

" वाचनादिविकल्पाद्यनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते " ॥ १ ॥

भावना भी है रजोहरण से भूमि आदि का प्रमार्जन करना, वंदना आदि त्रुटि कर्म करना आदि विधि पूर्वक जो षट् विध आवश्यक करने रूप क्रियाएँ हैं वे सब "किरिया आगमो न होइ" इस नियम के अनुसार आगम नहीं हैं। अतः इन में आगम के एक देश अभाव की अपेक्षा से नो आगमता है। यहां पर भी नो शब्द सम्पूर्ण रूप से आगम का प्रतिषेधक न होकर उसके एक देश का ही प्रतिषेधक है। अतः ये सामायिक आदि षड्विध आवश्यक नोआगम की अपेक्षा से लोकोत्तरीक भाव आवश्यक है' और इनके ही आराधन करने की जिनेन्द्र देवने भव्य जीवों को आज्ञा दी है। कारण कि ये धर्मपद के वाच्य है इनकी आराधना से भव्यजीवों के कर्मों की निर्जरा होती है।

दूसरों ने भी इस प्रकार धर्म का लक्षण कहा है—

वाचनादिविकल्पाद्यनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

કર્મ આદિ વા વગેરે વિધિપૂર્વક જે ષડ્વિધ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે તેઓ સર્વે "किरिया आगमो न होइ" આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલ માટે એમનામા આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી નો આગમતા છે અહીં પણ નો શબ્દ સંપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરક નથી પણ તેના એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સામાયિક વગેરે આ ષડ્વિધ આવશ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર દેવે એમની આરાધના કરવાની જ ભવ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે એમકે આ બધા ધર્મપદના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી ભવ્ય જીવોના કર્મોની નિર્જરા થાય છે

[illegible]એ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે—

[illegible] यथोदितम्।
[illegible] भावसमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

अस्यव्याख्या वचनादिति ल्यब्लोपे पञ्चमी, वचनमनुसृत्येत्यर्थः । वचनम्= आगमः । कीदृशाद् वचनादित्या"—अविरुद्धात्-कषच्छेदतापेषु अविघटमानात्, तत्र विधिप्रतिषेधयोर्मुख्यतेनोपवर्णनात् भावशुद्धि', पदे पदे तद्योगक्षेमकारिक्रियोपदर्शनत हेतुशुद्धि., निखिलप्रतिषेधतद्विषयाणां जीवादिपदार्थानां च स्याद्वादपरीक्षया याथात्म्येन समर्थनत्तापशुद्धि । तत्त्वाविरुद्ध वचन जिनप्रणीतमेव, निमित्तशुद्धेः

अविरुद्ध आगम से यथोदित एव मैत्री आदि भावनाओ से मिश्रित जो अनुष्ठान है वह धर्म है । स्पष्टार्थ-वचन शब्द का अर्थ आगम है। आगम में अविरुद्धता कष, ताप, और छेद द्वारा परीक्षित होने पर ही आती है। जिस प्रकार सुवर्ण की परीक्षा कष-कसौटी पर करने से ताप-अग्नि मे तपाने से और छेद-छैनी वगैरह द्वारा काटने से होती है, उसी प्रकार आगम की शुद्धि की परीक्षा भी इन तीन उपायों द्वारा की जाती है। विधि और प्रतिषेध का बहुलता से जिस शास्त्र में वर्णन है, वह शास्त्रकष से शुद्ध कहा जाता है। पद पद पर जिस शास्त्र में इनके योग और क्षेमकरि क्रियाओ का कथन किया गया मिलता है वह शास्त्र छेदसे शुद्धमाना जाता है। विधि एव प्रतिषेध तथा इन के विषयभूत जीवादिक पदार्थो का स्याद्वाद ढग से जहा पर यथार्थ समर्थन किया जाता है सप्तभगी द्वारा जहा पर इनका सुन्दर शैली से विवेचन करने मे आता है वह शास्त्र तप उपायद्वारा शुद्ध माना जाता

અવિરુદ્ધ આગમથી યથોદિત અને મૈત્રી વગેરે ભાવનાઓથી મિશ્રિત જે અનુષ્ઠાન છે તે ધર્મ છે સ્પષ્ટાર્થ—વચન શબ્દનો અર્થ આગમ છે આગમમા અવિરુદ્ધતા, કષ, તાપ અને છેદ વડે પરીક્ષિત થયા પછી જ આવે છે જેમ સોનાની પરીક્ષા કષ-કસોટી ઉપર કસવાથી તાપ અગ્નિ ઉપર તપાવવાથી અને છેદ-છીણી વગેરેથી કાપવાથી હોય છે, તેમજ આગમની શુદ્ધિની પરીક્ષા પણ આ ત્રણે ઉપાયો વડે કરવામા આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધનુ મોટા પ્રમાણમા જે શાસ્ત્રમા વર્ણન છે, તે શાસ્ત્ર કષથી શુદ્ધ કહેવાય છે ડગલે ને પગલે જે શાસ્ત્રણા એમના યોગ અને ક્ષેમકરિ ક્રિયાઓનુ કથન કરવામા આવ્યુ છે તે શાસ્ત્ર છેદથી શદ્ધ માનવામા આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધ તેમજ એમના વિષયભત જીવ વગેરે પદાર્થોનો સ્યાદ્વાદના રૂપથી જ્યા યથાર્થ વર્ણન કરવામા આવે છે, સપ્તભગી વડે જ્યા સુદર શૈલીમા એમનુ વિવેચન કરવામા આવે છે, તે શાસ્ત્ર તપ ઉપાયવડે શુદ્ધ માનવામા આવે છે આ ત્રણે

षड्विधावश्यककरणरूपाया क्रियाया अनागमत्वान नोआगमत्व मेव्यम्, अत्रापि नो-शब्दस्य देशतः प्रतिषेधपरत्वात्। इदम् लोकोत्तरिक नो आगमतो भावावश्यक धर्मपदवाच्यम् तत्र क्रियारूपतया भगवतोऽर्हत आज्ञाया श्रद्धानात्। अन्येऽपि धर्मलक्षणमेवमाहु'—

" वाचनादविरुद्धाद्य-दनुष्ठान यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते " ॥ १ ॥

भावना भी है रजोहरण से भूमि आदि का प्रमार्जन करना, वदना आदि द्वादशावर्त कृति कर्म करना आदि विधि पूर्वक जो षट् विध आवश्यक करने रूप क्रियाएँ हैं वे सब "किरिया आगमो न होइ" इस नियम के अनुसार आगम नहीं है। अत इन में आगम के एक देश अभाव की अपेक्षा से नो आगमता है। यहाँ पर भी नो शब्द सम्पूर्ण रूप से आगमका प्रतिषेधपरक न होकर उसके एक देश का ही प्रतिषेधक है। अत ये सामायिक आदि षट्विध आवश्यक नोआगम की अपेक्षा से लोकोत्तरीक भाव आवश्यक है' और इनके ही आराधन करने की जिनेन्द्र देवने भव्य जीवों को आज्ञा दी है। कारण कि ये धर्मपद के वाच्य है इनकी आराधना से भव्यजीवों के कर्मो की निर्जरा होती है।

दूसरों ने भी इस प्रकार धर्म का लक्षण कहा है—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठान यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसमिश्र तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

કર્મ આદ્ય વા વગેરે વિધિપૂર્વક જે ષટ્વિધ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે તેઓ સર્વે "किरिया आगमो न होइ" આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલા માટે એમનામા આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી ના આગમતા છે અહીં પણ નો શબ્દ સપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરક નથી પણ તેના એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સામાયિક વગેરે આ ષટ્વિધ આવશ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર દેવે એમની આરાધના કરવાની જ ભવ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે કમકે આ બધા ધર્મપદ ના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી ભવ્ય જીવોના કર્મોની નિર્જરા થાય છે

બીજાઓએ પણ આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ બતાવ્યુ છે—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठान यथोदितम्।
मैत्र्यादि भावसमिश्र तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

कारणस्वरूपानुविधायि कार्यं, तन्न दुष्टकारणाऽऽरब्धं कार्यमदुष्टं भवितुमर्हति, निम्बबीजादिक्षु यष्टिरिवेति । अन्यथा-कारणव्यवस्थोपरमप्रसङ्गात् ।

यच्च-यदृच्छाप्रणयनप्रवृत्तेषु तीर्थान्तरीयेषु रागादिमत्स्वपि घुणाक्षरोत्किरण

रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् हतिं जिनः" राग द्वेष आदिक जो अन्तरंग शत्रु हैं इन पर जिसने विजय पायी है वे ही जिन कहलाते है जिस प्रकार तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) आदि शब्द यथानाम तथा गुण वाले हुआ करते हैं, इसी प्रकार "जिन" यह नाम भी यथा नाम तथा गुण वाला है यथा नाम तथा गुण का होना ही नाम की सार्थकता है। जिन्हों ने इन अन्तरंग शत्रुओं को परास्त नहीं किया उनके वचनो में परस्पर अविरुद्धार्थता नहीं आसकती है-क्यो कि वहा पर निमित्त की शुद्धि नहिं हैं। इसीलिये अजिन प्रणीत वचन अविरुद्ध नहीं होते हैं। लोक में भी जिस प्रकार नीम के बीज से इक्षु की उत्पत्ति देखने में नहीं आती उसी प्रकार सदोष कारण से उत्पन्न हुआ कार्य भी निर्दोष नहीं होना है। कार्य में निर्दोषता कारण कि निर्दोषता पर आधार रखती है। न्याय शास्त्र का भी यही सिद्धान्त है "कारण स्वरूपानुविधायि कार्य" कि कार्य, कारण के स्वरूप का अनुविधायक होता है। यदि इस प्रकार की व्यवस्था न मानी जावे तो फिर कार्य कारण भाव की व्यवस्था ही नहीं बन सकती है। हर एक पदार्थ

"जयंति रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् इति जिन" રાગદ્વેષ વગેરે જે અંતરંગ શત્રુઓ છે તેમના ઉપર જેમણે વિજય મેળવ્યો છે તેઓ જ જિન કહેવાય છે જેમ તપન (સૂર્ય) દહન (અગ્નિ) વગેરે શબ્દો નામ જેવા જ ગુણવાળા હોય છે, તે પ્રમાણે જ "જિન" આ નામ પણ નામ પ્રમાણે જ ગુણવાળુ છે જેવુ નામ તેવા ગુણો હોવા એ જ નામની સાર્થકતા છે જેમણે આ અંતરંગ શત્રુઓને હરાવ્યા નથી તેમના વચનોમા પરસ્પર અવિરુદ્ધાર્થતા આવી શકતી નથી કેમ કે ત્યા નિમિત્તની શુદ્ધિ નથી એટલા માટે અજિન પ્રણીત વચનો અવિરુદ્ધ હોતા નથી લોકમા પણ જેમ લીમડાના બીજથી શેરડીની ઉત્પત્તિ જોવામા આવતી નથી તેમજ સદોષ કારણથી ઉત્પન્ન થયેલુ કાર્ય પણ નિર્દોષ હોતુ નથી કાર્યમા નિર્દોષતા કારણની નિર્દોષતા ઉપર આધારિત હોય છે ન્યાયશાસ્ત્રનો પણ એજ સિદ્ધાંત છે, "कारणगुणपूर्वकं कार्यं" કે કાર્ય કારણના સ્વરૂપનો અનુવિધાતા હોય છે જો આ જાતની વ્યવસ્થા માનવામા આવે

वचनस्य हि वक्ता निमित्तमन्तरङ्गम्, तस्य च रागद्वेषमोहपारतन्त्र्यमशुद्धिः, तेभ्यो वितथवचनप्रवृत्तेः, न चैषाऽशुद्धिर्जिने भगवति, जिनत्वविरोधात्, जयति रागद्वेष मोहरूपान्तरङ्गान रिपूनिति शब्दार्थानुपपत्तेः तपनदहनादिशब्दवत्, अन्वर्थतया चास्याभ्युपगमात्, निमित्तशुद्धत्वभावाद् नाजिनप्रणीतवचनमविरुद्धम्। यत—

है। इन तीनों उपायों से परीक्षित आगम ही परिशुद्ध कहा गया है। अविरुद्ध वचन का नाम ही आगम है।

इन कषादिकों से जो आगम में शुद्धता आती है उसका कारण निमित्त की शुद्धि है। निमित्त शुद्ध जिन प्रणीत वचन ही हैं। अन्य प्रणीत वचन नहीं। निमित्त में भी शुद्धि का कारण राग, द्वेष और मोह का अभाव है। वचन का अन्तरग कारण वक्ता ही हुआ करता है वक्ता की प्रमाणता से ही वचन-आगम में प्रमाणता आती है इसी लिये राग द्वेष आदि से कलुषित व्यक्तियों के वचन प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं। क्यों कि राग द्वेष आदिक सद्भाव में वचनों में परस्पर विरुद्ध अर्थ की प्ररूपकता स्वय ही आ जाती है अत' यह निश्चित सिद्धान्त है कि जहां पर इनका सर्वथा अभाव है वही सच्चा आगम का प्रणेता हो सकता है। और उसी आगम में अविरुद्धता है। ऐसा अविरुद्ध आगम जिन प्रणीत ही हो सकता है क्यो कि उनमें पूर्वोक्त राग द्वेष आदि द्वारा अशुद्धि का सर्वथा अभाव हो चुका है इस के सर्वथा दूर होने से ही वे "जिन" इस प्रकार की सज्ञा वाले हुए हैं। "जयति

ઉપાયોથી પરીક્ષિત આગમ જ પરિશુદ્ધ કહેવામા આવ્યો છે અવિરુદ્ધ વચનનુ નામ જ આગમ છે કષ વગેરેથી આગમમા જે શુદ્ધતા આવે છે તેનુ કારણ નિમિત્તની શુદ્ધિ છે જિન પ્રણીત વચનો જ નિમિત્તશુદ્ધ છે બીજાઓ વડે પ્રણીત વચનો નહિ નિમિત્તમા પણ શુદ્ધિનુ કારણ રાગ દ્વેષ અને મોહનો અભાવ છે વચનનુ અતરગ કારણ બોલનાર જ હોય છે બોલનારા (વક્તા) ની પ્રમાણુતાથી જ વચન-આગમમા પ્રમાણુતા આવે છે એટલા માટે જ રાગ દ્વેષ વગેરેથી કલુષિત માણુસોના વચનો પ્રમાણુ કોટિમા આવતા નથી કેમકે રાગદ્વેષ વગેરે સદ્ભાવ વચનોમા પરસ્પર વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપકતા જાતે જ આવી જાય છે એટલા માટે આ નિશ્ચિત સિદ્ધાત છે કે જ્યાં એમનો સપૂર્ણ અભાવ છે તે જ સાચા આગમનો પ્રણેતા થઈ શકે છે અને તે આગમમાજ અવિરુદ્ધતા છે એવુ અવિરુદ્ધ આગમ જિનપ્રણીત જ થઈ શકે છે કેમકે તેમનામા પૂર્વોક્ત રાગદ્વેષ વગેરે વડે અશુદ્ધિનો સપૂર્ણપણે અભાવ થઈ ચૂક્યો છે અશુદ્ધિ સર્વ રીતે મટી જવાથી તેઓ 'જિન' સ રા છે

कीदृशमनुष्ठान धर्म ? इत्याह—' यथोदितम् ' यथा येन प्रकारेण कालाद्या राधनानुसारूपेण-उदित=प्रतिपादित, तत्रैवाविरुद्धरचने इति गम्यम् ।

अन्यच्च—

जो जहवायं न कुणइ, मिच्छादिट्ठी तओ उ को अन्नो ? ।
वड्ढेइ मिच्छत्तं, परस्स सकं जणेमाणो ॥ इति ।

छाया-यो यथावाद न करोति, मिथ्यादृष्टिस्ततस्तु कोऽन्यः ।
वर्धयति मिथ्यात्व, परस्य शङ्काजनयन् ॥ इति ।

पुनरपि कीदृशमित्याह-' मैत्र्यादिभावसमिश्रम् ' इति । मैत्र्यादयः=मैत्री मुदिता करुणा माध्यस्थलक्षणा ये भावाः=अन्तःकरणपरिणामा, तत्पूर्वकाश्च

न्याय से कही २ अविरुद्ध अर्थ प्रतिपादकता सो वह उनकी निज की घर की वस्तु नहीं है-उसका मूल स्रोत अविरुद्ध अर्थ का प्ररूपक जिन प्रणित आगम ही है । यही बात मार्गानुसारी बुद्धिवाले व्यक्ति में भी समझ लेनी चाहिये । वह जो कुछ भी सत्यार्थ कहता है उसका मूल कारण जिनप्रणीत आगम का सहारा ही है । श्लोक कथित "यथोदित" पद इस बात का समर्थन करता है कि देश काल आदि की आराधना के अनुसार जो आचार-अनुष्ठान प्रतिपादित किया गया है । उससे जो अविरुद्ध कहा गया है-वही धर्म है इससे विपरीत नहीं । " मैत्र्यादि भाव समिश्रम् " इस पद द्वारा सूत्रकार यह प्रतिपादित करते हैं कि वह अनुष्ठान मैत्री, मुदिता, करुणा और माध्यस्थ इन चार लक्षणों से युक्त होता है । ये धर्म के बाह्य चिह्न हैं । इनके सद्भाव से आत्मा में

અર્થ પ્રતિપાદકતા પણ જે તે તેમની પોતાની વસ્તુ તો નથી જ કેમકે તેના મૂળિયા તો અવિરુદ્ધ અર્થના પ્રરૂપક જિનપ્રણીત આગમમા જ છે એ જ વાત માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાળી વ્યક્તિમા પણ સમજી લેવી જોઇએ તે જે કઇ પણ સત્યાર્થ કહે છે તેનુ મૂળ કારણ જિન પ્રણીત આગમ જ છે શ્લોક કથિત "યથોદિત" પદ આ વાત ને સ્પષ્ટ કરે છે કે દેશકાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આચાર-અનુષ્ઠાન-પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે, તેનાથી જે અવિરુદ્ધ કહેવામા આવ્યુ છે તે ધર્મ છે એનાથી વિપરીત નહિ " मैत्र्यादि भावसमिश्रम् ' આ પદવડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરે છે કે તે અનુષ્ઠાન મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા અને માધ્યસ્થ આ ચાર લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે આ બધા ધર્મના બાહ્ય ચિન્હો છે એમના સદ્ભાવથી આત્મામા ધર્મનુ અસ્તિત્વ

व्यवहारेण क्वचित् किंचिदविरुद्धमपि वचनमुपलभ्यते, मार्गानुसारिबुद्धौ वा प्राणिनि क्वचित्, तदपि जिनभणीतमेव, तन्मूलकत्वात् तस्य ।

हर एक का कार्य और कारण हो जावेगा । अतः आगमरूप कार्य की शुद्धि के लिये निमित्त रूप कारण शुद्धि का होना अवश्य आवश्यकीय माना गया है ।

प्रश्न—आपने जो कहा कि आगम में अविरुद्धता उसके कारणभूत प्रणेता के अधीन है—सो यह बात हमें मान्य है । परन्तु इससे यह बात तो सिद्ध नहीं होती है कि वे अविरुद्ध वचन जिन भगवान के ही है' अन्य के नहीं-कारण कि अन्य सिद्धान्तकारों के वचनों में भी किसी अंशसे अविरुद्धार्थता देखी जाती है । अतः उन्हें सदोष मान कर आप जो उनमें अनाप्तता सिद्ध करते हैं सो यह बात कैसे मान्य हो सकती है ?

उत्तर—शंका तो ठीक है-परन्तु विचार करने से इसका उत्तर भी सहजरूप में मिल जाता है । अन्य सिद्धान्तकारों ने जो कुछ रचनाएँ की हैं—वे सब उन्हों ने अपनी इच्छानुसार ही की है । अपनी निज कल्पना में जो कुछ उन्हें सूझा वही उन्हों ने लिखा है । उनकी रचनाओं में पूर्वापर विरोध स्पष्ट प्रतीत होता है इससे उनमें रागादिक दोषों का अस्तित्व सिद्ध होता है । अब रही उनके वचनों में घुणाक्षर

નહિ તો કાર્ય કારણ ભાવની વ્યવસ્થા બની શકે તેમ નથી દરેક પદાર્થ દરેક કંતુ કાર્ય અને કારણ થઈ જશે એટલા માટે આગમરૂપ કાર્યની શુદ્ધિ માટે નિમિત્તરૂપ કારણ શુદ્ધિ થવી ચોક્કસપણે આવશ્યકીય માનવામા આવી છે

પ્રશ્ન —તમે કહ્યુ કે આગમમા અવિરુદ્ધતા તેના કારણભૂત પ્રણેતાના આધીન છે—એ વાત એમને માન્ય છે પણ એનાથી આ વાત તો સિદ્ધ થતી નથી કે તે અવિરુદ્ધ વચનો જિન ભગવાનના જ છે, બીજાઓના નહિ કેમકે બીજા સિદ્ધાતકારોના વચનોમા પણ કોઇ પણ અંશે અવિરુદ્ધાર્થતા જોવામા આવે છે એટલા માટે તેમને દોષયુક્ત માનીને તમે જે તેમનામા અનાપ્તતા સિદ્ધ કરો છો આ વાત કેવી રીતે માન્ય થઇ શકે તેમ છે !

ઉત્તર —શંકા તો ઠીક છે, પણ વિચાર કરવાથી આનો જવાબ પણ સરળ રીતે મળી શકે તેમ છે બીજા સિદ્ધાન્તકારોએ જે રચનાઓ કરી છે તે બધી તેમણે પોતાની ઇચ્છા મુજબ જ કરી છે પોતાની કલ્પનાથી જે કઇ તેમને યોગ્ય લાગ્યુ તે તેમણે લખ્યુ છે તેમની રચનાઓમા પૂર્વાપર વિરોધ સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ આવે છે એનાથી તેઓમા રાગ વગેરે દોષો છે એવી વાત સિદ્ધ થાય છે હવે ઘુણાક્ષર ન્યાયથી કોઇક કોઇક સ્થાને તેમના ૫ ૬

पञ्चमी, तथा च-वचनप्रयोज्यप्रवृत्तित्व लक्षणमिति न कुत्राप्यव्याप्तिदोषावकाशः प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानानामपि वचनप्रयोज्यत्वाऽनपायादिति ।

किं च--हिंसादिपापपरिहारो धर्मसिद्धेर्लिङ्गमित्यार्हता स्वीकुर्वन्ति । तथा चोक्तम्-

औदार्यं दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धेः, प्रायेण जनप्रियत्व च ॥ इति ।

पापजुगुप्सा=पापपरिहारः ।

पद्कायवधमाध्य प्रतिमापूजन कुर्वता धर्मसिद्धि कथ स्यादिति विचारयन्तु सुधिय । अपर च --

---

प्रतीत नहीं होता है क्यों कि वचनानुष्ठान धर्म का अर्थ वचन के अनुसार होने वाला अनुष्ठान धर्म है उसमें कोई जातका दोष नहीं आता है । ”

किंच--हिंसादिक पांच पापों का परित्याग धर्म सिद्धि का चिह्न है इस प्रकार की मान्यता जैनियों की है । शास्त्रान्तर में यही बात प्रकट की गई है-

औदार्य दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे प्रायेण जनप्रियत्व च ॥ (षोडश-ग्रथ ४ प्रकरण)

उदारता-हृदय की विपालता, दाक्षिण्य-सर्व जीवो के अनुकल प्रवृत्ति, पापजुगुप्सा-पाप का परित्याग, निर्मलबोध-तत्त्वज्ञान, और जन प्रियत्व ये ५ धर्मसिद्धि के लक्षण हैं । अब यहा पर विचारने की बात यह है कि जब पाप का परिहार करना यह धर्मसिद्धि का लक्षण

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા કોઇ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ—હિંસા વગેરે પાચ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનુ ચિહ્ન છે આ જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રા તરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે —

औदार्यं दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोध ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे प्रायेण जिनप्रियत्व च ॥ (षोडशग्रथ ४ प्रकरण)

ઉદારતા—હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઇ પડે તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ બોધ – તત્ત્વજ્ઞાન, અને જિનપ્રિયત્વ આ પાચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનુ લક્ષણ

वाङ्मयचेष्टाविशेषाः, तैः समिश्र=संयुक्त, मैत्र्यादिभावाना नि श्रेयसाभ्युदयधर्मम् लत्वेन शास्त्रान्तरेषु प्रतिपादनात्। तदेवंविधमनुष्ठान धर्म इति कीर्त्यते शब्द्यते सुधीभिरिति।

नन्वेव वचनाऽनुष्ठान धर्म इति प्राप्त, तथा च प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानेष्व व्याप्तिरिति चेन्न-इह तु वचनादित्यत्र वेदात् प्रवृत्तिरित्यत्रेव प्रयोज्यत्वार्थिका

धर्म का अस्तित्व जाना जाता है अन्य सिद्धान्तकारों ने भी इन्हें नि. श्रेयस और स्वर्ग के कारणभूत धर्म का मूल कहा है। अतः जो आगम से अविरुद्ध है, काल आदि की आराधना के अनुसार जो आराधित होता है और जो मैत्री आदि चार भावनाओं से गर्भित है ऐसा अनुष्ठान ही धर्म है। ऐसे ही धर्म की आराधना करने का गण धर आदि का आदेश है।

भावार्थ-तीर्थंकर कथित आगम के अनुसार होने वाले अनुष्ठान का नाम धर्म है। इसका फलितार्थ यही है कि जिस अनुष्ठान मे तीर्थंकर प्रभु द्वारा कथित आगम से विरोध नहीं आता है वही धर्म है। तथा च-प्रीति भक्ति और असग रूप अनुष्ठानों में इस लक्षण की अप्राप्ति नहीं होती है क्यों कि वहा पर भी इस लक्षण का सद्भाव पाया जाता है "वाचनानुष्ठान धर्मः" इस प्रकार के कथन मे "वेदात् प्रवृत्तिः" की तरह प्रयोज्य अर्थ में पचमी विभक्ति हुई है अत जिस प्रवृत्ति का प्रयोज्य वचन है वह धर्म है। (वचनानुष्ठान धर्म) यहा से लेकर (प्रीति भक्ति असगानुष्ठान इत्यादि तक) लिखने की आवश्यकता

જાણવામા આવે છે બીજા સિદ્ધાતકારોએ પણ આ ધર્મને નિ શ્રેયસ અને સ્વર્ગના કારણભૂત ધર્મનુ મૂળ બતાવ્યુ છે એથી જે આગમથી અવિરુદ્ધ છે કાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આરાધિત હોય છે અને જે મૈત્રી વગેરે ચાર ભાવનાઓથી યુક્ત છે એવુ અનુષ્ઠાન જ ધર્મ છે એવા જ ધર્મની આરાધના કરવા માટે ગણધર વગેરેનો આદેશ છે

ભાવાર્થ —તીર્થંકર કથિત આગમમુજબ આચરાયેલા અનુષ્ઠાનનુ નામ ધર્મછે એનો અર્થ આ પ્રમાણે ફલિત થયો છે કે જે અનુષ્ઠાનમા તીર્થંકર પ્રભુ વડે કથિત આગમથી વિરોધ જણાતો નથી તે જ ધર્મ છે તેમજ પ્રીતિ, ભક્તિ અને અસ ગ રૂપ અનુષ્ઠાનોમા આ લક્ષણની અપ્રાપ્તિ પણ હોતી નથી કેમકે ત્યા પણ આ લક્ષણનો સદ્ભાવ મળે છે "વાચનાનુષ્ઠાન ધર્મ" આ જાતના કથનમા "વેદાત્ પ્રવૃત્તિ" ની જેમ પ્રયોજ્ય અર્થમા પચમી વિભક્તિ થઇ છે એટલા માટે જે પ્રવૃત્તિનુ પ્રયોજ્ય વચન છે તે ધર્મ છે (વચના નુષ્ઠાન ધર્મ) અહીથી માડીને પ્રીતિ ભક્તિ અસગાનુષ્ઠાન વગેરે [illegible] ખવાની

पञ्चमी, तथा च-वचनप्रयोज्यप्रवृत्तित्व लक्षणमिति न कुत्राप्यव्याप्तिदोषावकाशः प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानानामपि वचनप्रयोज्यत्वाज्जपादिति ।

किं च--हिंसादिपापपरिहारो धर्मसिद्धेर्लिङ्गमित्यार्हता स्वीकुर्वन्ति । तथा चोक्तम्-

औदार्यं दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे, प्रायेण जनप्रियत्व च ॥ इति ।

पापजुगुप्सा=पापपरिहारः ।

पदकायवधमाध्य प्रतिमापूजन कुर्वता धर्मसिद्धि कथ स्यादिति विचारयन्तु सुधिय । अपर च--

---

प्रतीत नहीं होता है क्यों कि वचनानुष्ठान धर्म का अर्थ वचन के अनुसार होने वाला अनुष्ठान धर्म है इसमे कोई जातका दोष नहीं आता है । ”

किंच—हिंसादिक पांच पापों का परित्याग धर्म सिद्धि का चिह्न है इस प्रकार की मान्यता जैनियो की है । शास्त्रान्तर मे यही बात प्रकट की गई है-

औदार्य दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे प्रायेण जनप्रियत्व च ॥ (षोडश-ग्रथ ४ प्रकरण)

उदारता-हृदय की विपालता, दाक्षिण्य-सर्व जीवो के अनुकूल प्रवृत्ति, पापजुगुप्सा-पाप का परित्याग, निर्मलबोध-तत्त्वज्ञान, और जन प्रियत्व ये ५ धर्मसिद्धि के लक्षण हैं। अब यहा पर विचारने की बात यह है कि जब पाप का परिहार करना यह धर्मसिद्धि का लक्षण

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા કોઇ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ—હિંસા વગેરે પાચ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનુ ચિહ્ન છે આ જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રા તરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે —

औदार्य दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोध ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे प्रायेण जिनप्रियत्व च ॥ (षोडशग्रथ ४ प्रकरण)

ઉદારતા—હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઇ પડે તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ બોધ – તત્ત્વજ્ઞાન, અને જિનપ્રિયત્વ આ પાચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનુ લક્ષણ

एकेन्द्रियादिषड्जीवनिकायजीवानां रक्षणं धर्मस्य मूलमिति वक्तव्यता षट्कायविराधनासाध्यायाः प्रतिमापूजायाः अङ्गीकारे जैनत्वमेव नश्यति, जैन धर्मस्य मूलत्वस्तत्र समुच्छेदात् ।

तथा चोक्तम्-जीवदयसच्चवयण, परधणपरिवज्जण सुसील च ।
सती पंचिन्दिय-णिग्गहो य धम्मस्स मूलाइ ॥ दर्शनशुद्धि-२ तत्त्व)

है तो प्रतिमा का पूजन करने वाले के उसका परिहार कैसे हो सकता है । क्यों कि यह पहिले ही प्रकट किया जा चुका है कि यह प्रतिमा पूजन कार्य षट् काय के आरंभ के बिना साध्य हो ही नहीं सकता । अतः प्रतिमापूजन वाले को धर्मसिद्धि का लाभ मानना यह एक मनगढन कल्पना ही है-शास्त्रीय कल्पना नहीं । शास्त्र में तो यही जिनेन्द्र देव की आज्ञा है कि एकेन्द्रिय आदि षट् निकाय के जीवों की रक्षा करना ही प्रत्येक जैन मात्र का कर्तव्य है, और यही धर्म का मूल है जब इस प्रकार की वीतराग प्रभु की आज्ञा है-तो फिर यह तो सोचो की षट्निकाय की विराधना से साध्य इस प्रतिमापूजन की मान्यता में जैनत्व का रक्षण ही कैसे हो सकता है-। प्रत्युत जैनधर्म का इस प्रकार की मान्यता मे समूलत नाश ही हो जाता है ।

जीवदयसच्चवयण परधनपरिवज्जण सुसीलच ।
सती पंचिंदिय निग्गहोय धम्मस्स मूलाइ ॥ (दर्शन शु २ तत्व)

છે ત્યારે પ્રતિમાની પૂજા કરનારાઓ માટે આનો પરિહાર કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે, કેમકે આ વાત પહેલા જ પ્રગટ કરવામા આવી છે કે આ પ્રતિમા પૂજન કાર્ય ષટ્કાયના આરંભ વગર સાધ્ય થઇ શકે તેમ નથી એથી પ્રતિમા પૂજનવાળા માટે ધર્મસિદ્ધિનો લાભ સમજી લેવો આ એક ખોટી કલ્પના માત્ર છે શાસ્ત્રીય કલ્પના નથી શાસ્ત્રમા તો જિનેન્દ્રદેવની એ જ આજ્ઞા છે કે એકેન્દ્રિય વગેરે ષટ્કાયના જીવોની રક્ષા કરવી જ દરેકે દરેક જૈનનુ કર્તવ્ય છે અને એ જ ધર્મનુ મૂળ છે જ્યારે આ જાતની વીતરાગ પ્રભુની આજ્ઞા છે ત્યારે આ વાત ઉપર તો વિચાર કરીએ કે ષટ્કાય નિકાયની વિરાધનાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા પૂજનની માન્યતામા જૈનત્વનુ રક્ષણ જ કેવી રીતે થઈ શકે છે આ જાતની માન્યતાથી તો જૈન ધર્મનો મૂળરૂપે વિનાશ જ થઇ જાય છે

जीवदयसच्चवयण परधनपरिवज्जण सुसील च ।
सती पंचिदियनिग्गहोय धम्मस्स मूलाइ ॥ (दर्शन तत्त्व)

जीवाश्चेतनादिलिङ्गव्यङ्ग्या एकेन्द्रियादय तेषा दया=रक्षणं जीवदयेति। ह्रस्वत्व प्राकृतप्रभवम्। धर्ममूल भवतीति सर्वत्र क्रियाऽध्याहारः कार्यः।

प्रतिमापूजन विशुद्धपरिणामजनकत्वादुपादेयमितिकथन निर्मूलम्--

धर्माङ्गेषु दयायाः प्राधान्यात् प्राथम्य वर्तते। हिंसासाध्याया प्रतिमापूजाया दयाया अभावाद् धर्माङ्गत्व न सिध्यति। तथा च विशुद्धात्मपरिणामरूप धर्मं प्रति कारणत्व प्रतिमापूजनस्य न सभवति। अन्यच्च--

इस लोक में यही बात कही गई है। जीवों की दया करना सत्य बोलना, पर धन के हरण करने का त्याग करना, कुशील का त्यागना, क्षमाभाव रखना, पाचों इंद्रियों को वश में रखना ये सब धर्म के मूल हैं। जिस प्रकार बिना मूल-जड़ के वृक्ष की स्थिति आदि नहीं हो सकती है-उसी प्रकार उनके बिना भी धर्मरूपी महावृक्ष की जीवात्माओं में स्थिरता नहीं हो सकती है जो व्यक्ति "प्रतिमा के पूजने से विशुद्ध परिणामो की आत्मा में जागृति होती है" इस बात का समर्थन करते हुए उपयोगिता सिद्ध करते हैं उनका यह कथन बिलकुल ही निर्मूल है क्यो कि धर्म में सर्वप्रथम स्थान दया को ही दिया गया है जीवों की हिंसा से साध्य इस प्रतिमापूजन में उस दया का सरक्षण ही नहीं होता है-इसलिये उसे धर्म का अग कैसे माना जा सकता है जो धर्म का ही अग नही बनता है उससे कैसे परिणामो में विशुद्धता की जागृति हो सकती है अतः यह प्रतिमापूजन धर्म प्राप्ति में कारण नहीं है ऐसा मानना चाहिये।

આ શ્લોકમા એ જ વાત બતાવવામા આવી છે કે જીવ ઉપર દયા કરવી, સત્ય બોલવુ, પારકાના ધનને લઈ લેવાની વૃત્તિને દૂર કરવી, કુશીલનો ત્યાગ કરવો, ક્ષમાભાવ રાખવો, પાચ ઇન્દ્રિયોને વશમા રાખવી આ બધા ધર્મના મૂળ છે જેમ મૂળ-જડ વગરના વૃક્ષની સ્થિતિ વગેરે જ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એમના વગર પણ ધર્મરૂપી મહાવૃક્ષની જીવાત્માઓમા સ્થિરતા થઇ જાઉ તેમ નથી જે વ્યક્તિ "પ્રતિમાના પૂજનથી વિશુદ્ધ પરિણામોની આત્મામા જાગૃતિ થાય છે" આ વાતને યોગ્ય માનીને આની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરે છે, તેમનુ આ કથન સાવ નિર્મૂળ-વ્યર્થ છે કેમકે ધર્મમા સૌ પ્રથમ સ્થાન દયાનેજ આપવામા આવે છે જીવોની હિંસાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા પૂજનમા તે દયાની રક્ષા જ થતી નથી એટલા માટે આને ધર્મનુ અગ કેવી રીતે માની શકીયે અને જે ધર્મનુ જ અગ થઈ શકતું નથી તેનાથી કેવી રીતે પરિણામોમા વિશુદ્ધતાની જાગૃતિ થઈ શકે એટલા માટે આ પ્રતિમાપૂજન ધર્મપ્રાપ્તિમા કારણ નથી આમ માની લેવુ જોઈએ

धर्मालम्बनानि स्थानाङ्गसूत्रे भगवता प्रज्ञप्तानि—
"धम्म ण चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता।
त जहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" ॥ इति।

भगवता धर्मालम्बनानि पञ्चैव कथितानि। तत्र "छक्काया" इत्युक्त्या गणराजादीनामपि सद्ग्रहे सत्यपि पुनस्तेषा विशिष्योपन्यासः प्राधान्यख्यापनार्थः

अन्यच्च-"धम्म चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता-तजहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति- भगवान ने धर्म के छह काय, गण, राजा, गाथापति और शरीर इस प्रकार ये छह आलम्बन स्थान स्थानाङ्गसूत्र में कहे हैं। इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है-इससे यह भलीभाति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते-जिस प्रकार छहकाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है। यद्यपि "छहकाय" इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वत. कथन सिद्ध हो जाता है, क्यो की इन सब का समावेश उसी एक पद में हो जाता है। फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है। इसी प्रकार

અને બીજુ પણ કહ્યુ છે કે "धम्म चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता-त जहा छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति, ભગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલંબનસ્થાન સ્થાનાગ સૂત્રમા કહ્યા છે આ બધામા જિન પ્રતિમાનુ કથન કરવામા આવ્યુ નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનુ પૂજન ધર્મનુ અવલંબન નથી ને સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમા જિન પ્રતિમાના પૂજનનુ કાર્ય ધર્મના અવલંબન રૂપમા માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનુ પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનુ કથન કર્યુ છે તેમ કર્યુ હોત ને કે "षट्काय" આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનુ સ્વત કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમા જ થઈ જાય છે, છતાય આ બધાનો સ્વતત્ર રૂપમા જે નામ નિર્દેશ કરવામા આવ્યો છે તેનુ કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલંબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે ને ' પણ

दर्शनवन्दनपूजनादिना जिनप्रतिमायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वाऽष्टकर्मक्षयहेतुत्व स्वीकारे तु अस्या अपि निश्रास्थानत्वेन निश्रास्थानेषु विशिष्य तदुपन्यासमकृत्वा "पच निस्साठाणा पण्णत्ता" इति कथन विरुध्यते। तस्मात् जिनप्रतिमाया निश्रास्थानेष्वनभिधानात् प्रतिमाया धर्मालम्बनत्व न सिध्यति। एव च तत्पूजन कुशलात्मपरिणामविशेषस्य धर्मस्य कारण नास्तीति विश्वसनीयम्।

प्रतिमापूजायामारम्भः परिग्रहश्चावश्य भावी। ताभ्या विना पूजाया असभवात् तथाऽपि-प्रतिमापूजोपदेशकाः एव वदन्ति—

यदि जिन प्रतिमा भी दर्शनवन्दना और पूजादिक द्वारा सम्यक्त्वशुद्धि एव अष्टकर्मों के क्षय का कारण होती तो उसका भी धर्म का आलम्बनरूप होने से यहा पर विशेषरूप से शास्त्रकार को कथन करना चहिये था! परन्तु ऐसा तो सूत्रकार ने किया नहीं है। फिर भी यदि उसे धर्म का अवलम्बनरूप स्वीकार किया जाय तो इस सूत्र में प्रतिपादित 'पाच ही निश्रास्थान हैं" इस कथन से विरोध आता है कारण कि उन स्थानों से अतिरिक्त एक और जिनप्रतिमापूजन धर्म का आलम्बन रूप स्थान बढ जाता है अतः 'पच निस्साठाणा पण्णत्ता' इस सूत्र प्रदर्शित उपन्यास से यह बात पुष्ट होती है कि जिन प्रतिमा धर्म का आलम्बन स्थान नही है। यह तो उस के पक्षपातियो के ही दिमाग की एक उटपटाग सूझ है यह जानते हुए भी कि जिनप्रतिमापूजन में आरभ और परिग्रह अवश्यभावी है, इनके विना वह कथमपि साध्य हो नही सकती है, तो भी जिनपूजाके उपदेशक खेद है कि जनता को

દર્શન વન્દના અને પૂજા વગેરે વડે સમ્યકત્વ શુદ્ધિ અને અષ્ટ કર્મોના ક્ષયનુ કારણ હોત તો ધર્મના આલબનરૂપ હોવા બદલ અહી વિશેષરૂપમા શાસ્ત્રકારો વડે તેનુ કથન કરવુ જોઈએ પણ સૂત્રકારે આવુ કઇ કર્યુ નથી છતાય જો તેને ધર્મના અવલબનરૂપે સ્વીકારીયે તો આ સૂત્રમા પ્રતિપાદિત "પાચ જ નિશ્રાસ્થાનો છે" આ કથનથી વિરોધ ઊભો થાય છે કેમકે તે સ્થાનોથી અતિરિક્ત એક બીજા જિનપ્રતિમા પૂજન ધર્મના આલબનરૂપ સ્થાનની વૃદ્ધિ થઈ જાય છે એથી "पच निस्साठाणा पण्णत्ता" આ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસથી આ વાત પુષ્ટ થાય છે કે જિનપ્રતિમા ધર્મનુ આલબન સ્થાન નથી આ તો ફક્ત તેના તરફદારીઓના મસ્તિષ્કની જ વ્યર્થની કલ્પના છે જિનપ્રતિમા પૂજનમા આરભ અને પરિગ્રહ અવશ્ય ભાવી છે એના વગર તે કોઈ પણ સજોગે સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી આવુ જાણવા છતા બહુ દુખ સાથે કહેવુ પડે છે કે જિન પૂજાના ઉપદેશકો સમાજને "पूयाए काय

धर्मालम्बनानि स्थानाङ्गसूत्रे भगवता प्रज्ञप्तानि--
"धम्म ण चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता ।
त जहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" ॥ इति ।

भगवता धर्मालम्बनानि पञ्चैव कथितानि । तत्र "छक्काया" इत्युक्त्या गणराजादीनामपि सग्रहे सत्यपि पुनस्तेषा विशिष्योपन्यासः प्राधान्यख्यापनार्थः

अन्यच्च-"धम्म चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता-तजहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति- भगवान ने धर्म के छहकाय, गण, राजा, गाथापति और शरीर इस प्रकार ये छह आलम्बन स्थान स्थानाङ्गसूत्र में कहे हैं। इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है-इससे यह भलीभाति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते-जिस प्रकार छहकाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है। यद्यपि "छहकाय" इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वतः कथन सिद्ध हो जाता है, क्यो की इन सब का समावेश उसी एक पद मे हो जाता है। फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है। इसी प्रकार

અને બીજુ પણ કહ્યુ છે કે "धम्म चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता-त जहा छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति, ભગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલંબનસ્થાન સ્થાનાગ સૂત્રમા કહ્યા છે આ બધામા જિન પ્રતિમાનુ કથન કરવામા આવ્યુ નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનુ પૂજન ધર્મનુ અવલંબન નથી જો સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમા જિન પ્રતિમાના પૂજનનુ કાર્ય ધર્મના અવલંબન રૂપમા માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનુ પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનુ કથન કર્યુ છે તેમ કર્યુ હોત જો કે "षट्काय" આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનુ સ્વત કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમા જ થઇ જાય છે, છતાય આ બધાનો સ્વતત્ર રૂપમા જે નામ નિર્દેશ કરવામા આવ્યો છે તેનુ કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલંબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે જો [illegible] પણ

'दो ट्ठाणाइं' द्वे स्थाने=द्वे वस्तुनी 'अपरियाणित्ता' अपरिज्ञाय=अपरिज्ञया 'एतावारम्भपरिग्रहावनर्थाय' इत्यविज्ञाय अलं ममाभ्यामिति परिहाराभिमुख्य-द्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च ब्रह्मदत्तवत् तयो प्रवृत्तः, 'आया' आत्मा=जीव, नो केवलिपन्नत्तं=जिनोक्तं धर्मं लभेत श्रवणतया-श्रवणभावेन श्रोतुमित्यर्थः। जैनधर्मश्रवणानर्हो भवतीति भावः। तद् यथा आरम्भः-प्राणातिपातादिरूप, पापस्थानम् परिग्रहः-धनधान्यादिसग्रहः।

द्वे स्थाने अपरिज्ञाय - अपरिज्ञयाऽनर्थकारणमज्ञात्वा प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च तत्र प्रवृत्तः 'आया' आत्मा-जीवः केवलं बोधिं=अर्थात् सम्यक्त्वं न बुध्येत=न प्राप्नुयादित्यर्थः।

पाने के भी योग्य बन सकती है" यह सूत्र हमें यह शिक्षा देता है कि भला जिस परिग्रह और आरंभयुक्त आत्मामें केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनने तक की भी योग्यता नहीं है और न जिसमें सम्यक्त्व का अनुभव है, है उस आत्मा में "वह प्रतिमा सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण होता" इस प्रकार की मान्यता आकाश के फूल के समान एक कल्पना मात्र ही है। अतः यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि इस प्रतिमापूजन मे न तो धर्म के कोई मौलिकतत्त्व का समावेश है और न धर्म का कोई अग ही है। यह न तो धर्म का आलम्बनरूप है और न धर्म के लक्षण से ही युक्त है। फिर भी इसे धर्म पद का वाच्य मानना केवल स्पष्ट रूप से उत्सूत्र प्ररूपणामात्र है इस प्रकार शास्त्रीयमर्यादा के विरुद्ध इस प्रतिमा पूजन का उपदेश देने वाले तथा प्रतिमापूजन कराने वाले उप-

---

બની શકે તેમ નથી "આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે પરિગ્રહ અને આરંભયુક્ત આત્મામા કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સાભળવા સુધીની પણ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામા "તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનુ કારણ હોય છે" આ જાતની માન્યતા આકાશના પુષ્પની જેમ એક ખોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજુ શુ છે ? એટલા માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનુ કોઈ પણ એક અગ છે આ ધર્મનુ આલમ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી છતા ય તેને ધર્મ પદવાચ્ય માનવુ તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની મર્યાદાથી વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

अपि च-" पूयाए कायवहो, पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया ।
सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा " ॥१॥
छाया-पूजाया कायवधः प्रतिकुष्टः सतु किन्तु जिनपूजा ।
सम्यक्त्वशुद्धिहेतु-रिति भावनीया तु निरवद्या ॥१॥
सर्वमेतदुत्सूत्रप्ररूपणम्---श्रूयतां प्रवचन तावत्--
दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव । दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोहिं बुज्झिज्जा । त जहा-आर भे चेव परिग्गहे चेव ॥ (स्था २ ठा १उ.)इति

" पूयाए कायवहो पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ इस प्रकार की उत्सूत्र प्ररूपणा द्वारा भ्रम में ही डालते रहते हैं। हमें तो बुद्धि पर तरस आता है कि वे क्यों नहीं इस सिद्धान्त को समझने की चेष्टा करते हैं कि-" दोट्ठाणाइ अप रियाणित्ता आया णो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिगाहे चेव । दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोधिं बुज्झिज्जा त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव (स्था २ ठा १ उ.) ये दो धनधान्य आदि रूप परिग्रह और प्राणातिपात आदि रूप आरभ स्थान अनर्थ के कारण है । जब तक आत्मा ज्ञ परिज्ञा से इन्हें जान कर और प्रत्याख्यान परिज्ञा से इनका परित्याग नहीं कर देती है तब वह ब्रह्मदत्त की तरह केवलि द्वारा कथित धर्म के सुननेका अधिकारी नहीं हो सकती है और न इन दोनों के त्याग किये विना वक्र सम्यक्त्व को

वहो पडिकुट्ठो सोउ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिर वज्जा ॥ १ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણો વડે ભ્રમમા જ નાખી રાખે છે અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાતને સમ જાવવાની કોશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે " दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आयाणो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव । दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिबोधि बुज्झिज्जा त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव (स्था० २ ठा० १ उ०) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે જ્યા સુધી આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યા સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત ધર્મને સાભળવા માટે અધિકારી (યોગ્ય પાત્ર) ગણાઈ [illegible] નથી અને તે બનેનો જ્યા સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યા સુધી તે સમ્ય[illegible]

'दो ट्ठाणाइ' द्वे स्थाने=द्वे वस्तुनी 'अपरियाणित्ता' अपरिज्ञाय=अपरिज्ञया 'एतावारम्भपरिग्रहावनर्थाय' इत्यविज्ञाय अत्र ममाभ्यामिति परिहाराभिमुख्य द्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च ब्रह्मदत्तान् तयो प्रवृत्तः, 'आया' आत्मा=जीव, नो केवलिपन्नत्तं=जिनोक्त धर्मं लभेत श्रवणतया-श्रवणभावेन श्रोतुमित्यर्थः। जैनधर्मश्रवणानर्हो भवतीति भावः। तद् यथा आरम्भः-प्राणातिपातादिरूप, पापस्थानम् परिग्रहः-धनधान्यादिसग्रहः।

द्वे स्थाने अपरिज्ञाय - अपरिज्ञयाऽनर्थकारणमज्ञात्वा प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च तत्र प्रवृत्तः 'आया' आत्मा-जीवः केवलं बोधिं=अर्थात् सम्यक्त्वं न बुध्येत=न प्राप्नुयादित्यर्थः।

पाने के भी योग्य बन सकती है" यह सूत्र हमें यह शिक्षा देता है कि भला जिस परिग्रह और आरभयुक्त आत्मामें केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनने तक की भी योग्यता नहीं है और न जिसमें सम्यक्त्व का अनुभव है, है उस आत्मा में "यह प्रतिमा सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण होता" इस प्रकार की मान्यता आकाश के फूल के समान एक कल्पना मात्र ही है। अतः यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि इस प्रतिमापूजन में न तो धर्म के कोई मौलिकतत्त्व का समावेश है और न धर्म का कोई अग ही है। यह न तो धर्म का आलम्बनरूप है और न धर्म के लक्षण से ही युक्त है। फिर भी इसे धर्म पद का वाच्य मानना केवल स्पष्ट रूप से उत्सूत्र प्ररूपणामात्र है इस प्रकार शास्त्रीयमर्यादा के विरुद्ध इस प्रतिमा पूजन का उपदेश देने वाले तथा प्रतिमापूजन कराने वाले उप-

---

બની શકે તેમ નથી "આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે પરિગ્રહ અને આરભયુક્ત આત્મામા કેવલિ પ્રજ્ઞપ્તત્વ ધર્મ સાભળવા સુધીની પણ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામા "તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનુ કારણ હોય છે" આ જાતની માન્યતા આકાશના પુષ્પની જેમ એક બોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજુ શુ છે ? એટલા માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનુ કોઈ પણ એક અગ છે આ ધર્મનુ આલમનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી છતા ય તેને ધર્મપદવાચ્ય માનવુ તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની મર્યાદાથી વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

अपि च-" पूयाए कायवहो, पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया ।
सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा " ॥१॥
छाया-पूजाया कायवधः प्रतिकुष्टः सतु किन्तु जिनपूजा ।
सम्यक्त्वशुद्धिहेतु-रिति भावनीया तु निरवद्या ॥१॥
सर्वमेतदुत्सूत्रप्ररूपणम्--श्रूयतां प्रवचन तावत्--
दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव । दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोहिं बुज्झिज्जा । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव ॥ (स्था. २ ठा १उ)इति

" पूयाए कायवहो पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ इस प्रकार की उत्सूत्र प्ररूपणा द्वारा भ्रम में ही डालते रहते हैं। हमें तो बुद्धि पर तरस आता है कि वे क्यों नही इस सिद्धान्त को समझने की चेष्टा करते कि-" दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिगाहे चेव । दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोधिं बुज्झिज्जा त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव (स्था २ ठा १ उ.) ये दो धनधान्य आदि रूप परिग्रह और प्राणातिपात आदि रूप आरभ स्थान अनर्थ के कारण है । जब तक आत्मा ज्ञ परिज्ञा से इन्हें जान कर और प्रत्याख्यान परिज्ञा से इनका परित्याग नही कर देती है तब वह ब्रह्मदत्त की तरह केवलि द्वारा कथित धर्म के सुननेका अधिकारी नही हो सकती है और न इन दोनों के त्याग किये विना वक्र सम्यक्त्व को

वहो पडिकुट्ठो सोउ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા વડે ભ્રમમા જ નાખી રાખે છે અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાતને સમ જાવવાની કોશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે " दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आयाणो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव । दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिबोधि बुज्झिज्जा त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव (स्था० २ ठा० १ उ०) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે જ્યા સુધી આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યા સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત ધર્મને સાભળવા માટે અધિકારી (યોગ્ય પાત્ર) ગણાઈ શકે તેમ નથી અને તે બનેનો જ્યા સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યા સુધી તે સમ્યક્ત્વ [illegible] યોગ્ય

तथा-सम्यक्त्वशुद्ध्यर्थं कर्मक्षयार्थं च प्रतिमापूजने प्रवृत्तस्य जीवस्य षट्कायोपमर्दनसाध्यपूजया ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मणो वृद्धौ सत्या सम्यक्त्वस्य केवलि प्रज्ञप्त धर्मस्याऽपि प्राप्तिःकालत्रयेऽपि न संभवति किंपुन कर्मक्षयाशा

सम्यक्त्वमात्मनः क्षायोपशमिको भावः । प्रतिमा तु न क्षयोपशमस्वरूपा, न चापि क्षयोपशमहेतु, ज्ञानावरणीयदर्शनमोहनीयकर्मनिर्जराजनकत्वाभावात्, देशतः कर्मक्षयो हि निर्जरा ता प्रति तपस एव कारणत्वात् । उक्तं चोत्तराध्ययनसूत्रे-

प्रकार सम्यक्त्व की शुद्धि अथवा कर्मों का विनाश प्रतिमापूजनसे नहीं होता है, प्रत्युत जिस प्रकार वह रुधिरयुक्त वस्त्ररुधिर से साफ किये जाने पर अधिक मलिन हो जाता है उसी प्रकार षट्काय की विराधना साध्य इस प्रतिमापूजन में लवलीन जीव भी ज्ञानावरणीय और दर्शन मोहनीय कर्म की वृद्धि करता हुआ अधिकाधिक मलिन होता रहता है वह कभी भी इनकी वृद्धिमें सम्यक्त्व और केवलि प्रज्ञप्त धर्म का पाने वाला नहीं बन सकता है । इसलिये कर्मों के क्षय करने की आशा से प्रतिमापूजन में लवलीन मनुष्य अपने कर्मों का इस कार्यसे क्षय करता है यह एक दुराशामात्र है अरे ! जब इस कार्य से जीव सम्यक्त्व और केवलिप्रज्ञप्त धर्म तक के भी लाभ से सदा वंचित रहता है तो उससे फिर कर्म क्षय मानना यह कोरी कल्पना मात्र ही है । सम्यक्त्व यह जीव का क्षायोपशमिक भाव है । प्रतिमा न क्षयोपशम स्वरूप है और न उस क्षयोपशम में कारण रूप ही है । कारण कि इस से ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म की निर्जरा नहीं होती है । कर्मों का

ખરડાયેલુ વસ્ત્ર લોહીવડે સાફ કરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ ષટ્કાયની વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તલ્લીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે કોઇ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને મેળવી શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા પૂજનમા તલ્લીન માણસ પોતાના કર્મોને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય કરવા માગે છે તે કેવલ દુરાશા માત્ર છે જ્યારે આ કાયથી જીવ સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ ક્ષયની આશા રાખવી તે ખોટી કલ્પના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયોપશમિક ભાવ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયોપશમમા કારણ રૂપે છે કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

यत्र केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्य श्रवणायापि योग्यता न भवति, सम्यक्त्वस्य च नानु भवः, तत्र सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्व गगनकुसुमवन्मनोविकल्पमात्रम् । यस्य प्रतिमा पूजनस्य नास्ति धर्ममूलत्व न चास्ति धर्माङ्गत्व, नापि धर्मालम्बनत्व, न चापि धर्मलक्षणसमन्वित, तस्य धर्मपदवाच्यत्वकल्पने – सुस्पष्टमेवोत्सूत्रप्ररूपणम् । भगवताऽर्हता-मयचने अनुपदिष्टस्य प्रतिमापूजनस्योपदेशकरणेन भ्रान्ति जनयतां प्रतिमापूजन कारयता च का गतिः स्यादिति समालोचनीय सुधीभि' । अपर च-

दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए त जहा खएण चेव उवसमेण चेव एव जाव मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा त जहा-खएण चेव उव समेण चेव । (स्था० २ ठा० ४ उ०)

"खएण चेव" इति ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मण उदय प्राप्तस्य क्षयेण, अनुदितस्य चोपशमेनेत्यर्थ' । अत्र पदद्वयेन क्षयोप शमरूपोऽर्थो गृह्यते । यावत् करणात्-"केवल बोहिं बुज्झेज्जा ।"

केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्य श्रवण तथा सम्यक्त्व च ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मण. क्षयोपशमादेव लभ्यते इति भगवता प्रतिबोधितम् । इदमत्रबोध्यम् नहि रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधिरेण प्रक्षालने शुद्धिर्भवति प्रत्युत मलिनतरत्वमेव,

---

देशक तथा प्रेरक की वास्तविक वस्तुस्थिति से जनता को अधकार में रखने के कारण क्या गति होगी यह स्वय बुद्धिमानों को विचार ने जैसी बात है ।

अपर च—दोहिं ठाणेहिं आयाके वलिपन्नत्त धम्म लभेज्जा सवण याए-त जहा इत्यादि सूत्र—

इसका भावार्थ यह है-जीव केवलियों द्वारा प्रज्ञप्त धर्म का श्रवण तथा सम्यक्त्व का लाभ ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म के क्षय और क्षयोपशम से ही करता है प्रतिमापूजन से नहीं । जिस प्रकार रुधिर से मैले वस्त्र की सफाई रुधिर में ही धोने से नहीं होती, उसी

પૂજન કરાવનારા ઉપદેશકો પ્રેરકરૂપ થઇને યથાર્થ વસ્તુસ્થિતિથી સમાજને અધારામા રાખે છે તે બદલ તેમની શી દશા થશે તે વિદ્વાનો સમજી શકે છે

અને બીજુ પણ કે—દોહિં ઠાણેહિં આયા કેવલિપન્નત્ત ધમ્મ લભેજ્જા સવણયાએ-ત જહા—ઇત્યાદિ સૂત્ર—

આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે કેવલિઓ વડે પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનુ શ્રવણ તેમજ સમ્યક્ત્વનો લાભ જીવ જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષય અને ક્ષયોપશમથી કરે છે પ્રતિમાપૂજનથી નહિ જેમ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રની સાફસૂફી લોહી વડે ધોવાથી થતી નથી તેમ જ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિ અથવા તો કર્મોનો વિનાશ પ્રતિમાપૂજનથી થતો નથી બલ્કે જેમ તે લોહીથી

तथा-सम्यक्त्वशुद्ध्यर्थं कर्मक्षयार्थं च प्रतिमापूजने प्रवृत्तस्य जीवस्य षट्कायोपमर्दनसाध्यपूजया ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मणो वृद्धौ सत्यां सम्यक्त्वस्य केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्याऽपि प्राप्तिःकालत्रयेऽपि न संभवति किंपुन कर्मक्षयाशा

सम्यक्त्वमात्मनः क्षायोपशमिको भावः । प्रतिमा तु न क्षयोपशमस्वरूपा, न चापि क्षयोपशमहेतु, ज्ञानावरणीयदर्शनमोहनीयकर्मनिर्जराजनकत्वाभावात्, देशतः कर्मक्षयो हि निर्जरा ता प्रति तपस एव कारणत्वात् । उक्तं चोत्तराध्ययनसूत्रे-

प्रकार सम्यक्त्व की शुद्धि अथवा कर्मों का विनाश प्रतिमापूजनसे नहीं होता है, प्रत्युत जिस प्रकार वह रुधिरयुक्त वस्त्ररुधिर से साफ किये जाने पर अधिक मलिन हो जाता है उसी प्रकार षट्काय की विराधना साध्य इस प्रतिमापूजन में लवलीन जीव भी ज्ञानावरणीय और दर्शन मोहनीय कर्म की वृद्धि करता हुआ अधिकाधिक मलिन होता रहता है वह कभी भी इनकी वृद्धिमे सम्यक्त्व और केवलि प्रज्ञप्त धर्म का पाने वाला नही बन सकता है । इसलिये कर्मों के क्षय करने की आशा से प्रतिमापूजन में लवलीन मनुष्य अपने कर्मों का इस कार्यसे क्षय करता है यह एक दुराशामात्र है अरे ! जब इस कार्य से जीव सम्यक्त्व और केवलिप्रज्ञप्त धर्म तक के भी लाभ से सदा वंचित रहता है तो उससे फिर कर्म क्षय मानना यह कोरी कल्पना मात्र ही है । सम्यक्त्व यह जीव का क्षायोपशमिक भाव है । प्रतिमा न क्षयोपशम स्वरूप है और न उस क्षयोपशम में कारण रूप ही है । कारण कि इस से ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म की निर्जरा नही होती है । कर्मों का

ખરડાયેલુ વસ્ત્ર લોહીવડે સાફ કરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ ષટ્કાયની વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તલ્લીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે કોઇ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને મેળવી શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા પૂજનમા તલ્લીન માણસ પોતાના કર્મોને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય કરવા માગે છે તે ફકત દુરાશા માત્ર છે જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ ક્ષયની આશા રાખવી તે મોટી કલ્પના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયોપશમિક ભાવ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયોપશમમા કારણ રૂપે છે કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

"भवकोडीसंचिय कम्म तवसा निज्जरिज्जइ।" (अ ३०, गा ६) तत्त्वार्थ सूत्रेऽपि—

"तपसा निर्जरा च" (अ० ९ सू० ४।

अत्र चकारः समुच्चयार्थः। समितिगुप्तियतिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः संवरो भवति, तपसा तु निर्जरा संवरोऽपि चेति भावः सम्यक्त्वनाम सम्यग्दर्शनं, तच्च स्थानाङ्गसूत्रम्- (स्था० २उ० १) द्विविधं प्रोक्तं। निसर्गसम्यग्दर्शनम् अभिगमसम्यग्दर्शनं चेति। निसर्गतः=स्वभावतः-न परोपदेशतो यदुत्पद्यते, तन्निसर्गसम्यग्दर्शनम्। अभिगमात् - सद्गुरूपदेशतो यदुत्पद्यते, तदभिगम सम्यग्दर्शनम्।

एक देश क्षय होना निर्जरा है। इस निर्जरा के प्रति कारणता तो तप में बतलाई गई है। देखो उत्तराध्ययन सूत्र में यही बात कही है—

'भवकोडी संचिय कम्म तवसा निज्जरिज्जइ" करोडों भवों में संचित कर्मों की जीव तप से निर्जरा कर देता है। तत्त्वार्थ सूत्र में भी "तपसा निर्जरा च" इस सूत्र द्वारा यही बात कही गई है-तप से निर्जरा और संवर दोनों होते हैं। सूत्रस्थ "च" शब्द से संवर का ग्रहण हुआ है।

भावार्थ-इसका यही है कि पांच समिति, ३ गुप्ति, १० यतिधर्म १२, अनुप्रेक्षा, २२ परीषहों का जीतना एवं ५ प्रकार का चारित्र पालना-इनसे संवर होता है और तप से संवर एवं निर्जरा दोनों ही होते हैं। स्थानाङ्गसूत्र में सम्यग्दर्शन दो प्रकार का कहा गया है-१ निसर्ग

કર્મનો નિર્જરા થઇ શકે તેમ નથી કર્મોના એકદેશનો ક્ષય થવો તે નિર્જરા પ્રત્યે કારણુતા તો તપમા બતાવવામા આવી છે, જુઓ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા એ જ વાત સ્પષ્ટ કરી છે—

"भवकोडी संचिय कम्म तवसा निज्जरिज्जइ" કરોડો ભવોમા સંચિત કર્મોની નિર્જરા જીવ તપથી કરી નાખે છે તત્ત્વાર્થ સૂત્રમા પણ "तपसा निर्जरा च" આ સૂત્રવડે એ જ વાત કહેવામા આવી છે કે તપથી નિર્જરા તેમજ સંવર બને થાય છે "સૂત્રમા આવેલ "च" શબ્દથી સંવરનુ ગ્રહણ કરવામા આવ્યુ છે

ભાવાર્થ—આનો આ પ્રમાણે છે કે પાંચ સમિતિ, ૩ ગુપ્તિ, ૧૦ યતિધર્મ, ૧૨ અનુપ્રેક્ષા ૨૨ પરીષહોને જીતવા અને ૫ પ્રકારના ચારિત્રનુ પાલન કરવુ આ બધાથી સંવર થાય છે અને તપથી સંવર અને નિર્જરા બને થાય છે સ્થાનાગસૂત્રમા સમ્યગ્દર્શન બે પ્રકારનુ બતાવવામા આવ્યુ૦

केचित्तु--अत्राभिगमशब्दार्थो निमित्तमपि, तच्च प्रतिमादि इति वदन्ति, तन्मोहनीयकर्मोदयविलसितम् -- अभिगमसम्यग्दर्शने हि प्रतिमानिमित्तकृत न सभवति श्रवणादिना क्षयोपशमहेतोरेव सद्गुरूपदेशस्याभिगमन

और दूसरा अभिगम। जो सम्यग्दर्शन जीवों को स्वभाव से ही होता है। सद्गुरु के उपदेश से जो जीव को प्राप्त होता है वह अभिगम सम्यग्दर्शन है। निसर्ग और अभिगम में अन्तरग कारणदर्शन मोह नीय कर्म का क्षयोपशम आदि समान है परन्तु इसके होने पर भी जो जीव को सद्गुरु के उपदेश से प्राप्त होता है वह अभिगम और जो इसके विना प्राप्त होता है वह निसर्ग सम्यग्दर्शन है कोई २ व्यक्ति अभिगम शब्द का अर्थ निमित्त परक भी करते हैं और वह निमित्त "प्रतिमा आदि है" ऐसा मानते हैं। परन्तु यह उनका कथन केवल मोह कर्म का ही विलास है क्यो कि अभिगम सम्यग्दर्शन में प्रतिमा रूप निमित्त कला सभवित नही होती है-वहा तो श्रवण आदि से दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के कारणरूप सद्गुण के उपदेश का ही अभिगम शब्द से ग्रहण हुआ है। यदि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में वह कारण होता तो उस का ग्रहण निमित्तरूप से होता परन्तु ऐसा तो होता नही है-कारण कि वह अचेतन है उस से प्रवचन के अर्थ का उपदेश होता नही है। प्रवचन के अर्थ के उपदेश सुनेविना श्रोताओं को प्रवचन का अर्थ ज्ञान कैसे हो सकता है ? अर्थज्ञान हुए विना

છે ૧ નિસર્ગ અને ૨ અભિગમ સદ્ગુરુના ઉપદેશથી નહિ પણ જીવોને સ્વભાવથી જ જે સમ્યગ્દર્શન થાય છે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે સદ્ગુરુના ઉપદેશથી જે જીવને સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત થાય છે તે અભિગમ સમ્યગ્દર્શન છે નિસર્ગ અને અભિગમમા અતરગ કારણ દર્શનમોહનીય કર્મનો ક્ષયોપશમ વગેરે સમાન જ છે પણ એના હોવા છતાય જીવને જે સદ્ગુરુના ઉપદેશથી મળે છે તે અભિગમ અને જે એના વગર મળે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે કેટલીક વ્યક્તિઓ અભિગમ શબ્દનો અર્થ નિમિત્ત પરક પણ કરે છે અને તે નિમિત્ત "પ્રતિમા વગેરે છે" એવુ માને છે પણ આવુ કથન તેમના કૃત મોહ કર્મનો જ વિલાસ છે કેમકે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા પ્રતિમા રૂપ નિમિત્તતા સભવિત થઈ શકે તેમ નથી ત્યા તો શ્રવણ વગેરેથી દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમના કારણરૂપ સદ્ગુણના ઉપદેશનુ જ અભિગમ શબ્દથી ગ્રહણ થયુ છે જો સમ્યગ્દર્શનની ઉત્પત્તિમા તે કારણ હોત તો તેનુ ગ્રહણ નિમિત્ત રૂપથી થાત પણ આવુ બનતુ નથી કેમકે તે અચેતન છે તેનાથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ થઇ શકતો નથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ સાભળ્યા વિના

शब्देन ग्रहणात् सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान च निर्जरामूलक, निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सद्गुरूपदेश कारण, न तु प्रतिमा। सा हि सद्गुरुवत् प्रवचनार्थमुपदेष्टुमसमर्था, तस्या जडत्वात्, । नापि सा निर्जराहेतु', विनयादितपोरूप

कर्मों की निर्जरा नहीं हो सकती है। निर्जरा के अभाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशम आदि रूप सम्यक्त्व की उत्पत्ति सभवित नही है। अतः अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और उसीका ग्रहण यहा पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नही-इसी का खुलासा "सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान च निर्जरामूलक - निर्जरा च विनय वैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सद्गुरुपदेशः कारण न तु प्रतिमा" अर्थ इन पक्तियों में लिखा गया है। तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए विना तत्त्वज्ञान हो ही नही सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आराधना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा सबध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नही-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનુ અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઇ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કર્મોની નિર્જરા પણ થઇ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામા આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનુ જ ગ્રહણ થયુ છે પ્રતિમાનુ નહિ આનુ જ સ્પષ્ટીકરણ "सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान निर्जरामूलक निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सद्गुरूपदेश कारण न तु प्रतिमा" આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનુ શ્રદ્ધાન કરવુ તે સમ્યક્ત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનુ મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામા આવે છે પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતુ નથી વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરપરા સબધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમા ગૃહીત થયેા છે નહિ કે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

त्वाभावात्, कथ तर्हि सम्यक्त्व प्रतिमायाः सभवति ? नथमपि नहि । अत एवो पदेशस्य सम्यक्त्व प्रति कारणत्व प्रदर्शयन् भगवानवादीत्-उत्तरा ध्ययनसूत्रे- (अ० २८ गा० १५)

" तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ।

छाया—त थाना तु भावाना सद्भाव उपदेशनम् ।
भावेन श्रद्दधत सम्यक्त्व तद् व्याख्यातम् ॥

जीवाजीवादिपदार्थाना सद्भावे यद् उपदेशन=गुरोरुपदेशः, तद् भावेन- अन्तःकरणेन श्रद्दत मोहनीयकर्मण क्षयेण क्षयोपशमेन वा याऽभिरुचिरुत्पद्यते, तत् सम्यक्त्व तीर्थकरैर्व्याख्यातम् ।

के अर्थ का उपदेश करने में अचेतन होने से सर्वथा असमर्थ है कर्मों की निर्जरा में भी वह हेतु रूप नही होती है-कारण कि कर्मो की निर्जरा के हेतु तो विनयादिक तप ही माने गये हैं, प्रतिमा विनयादि तप स्वरूप नही है । अत प्रतिमा में सम्यक्त्व की उत्पत्ति मे कारणता किसी भी प्रकार सभवित नही होती है-उत्तरा ध्ययन सूत्र में सद्गुरु के उपदेश को सम्यक्त्व के प्रति कारण प्रकट करते हुए सिद्धान्तकार कहते हैं कि-तहियाण तु भावा ण सब्भावे उवएसण ।

भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ॥

जीव और अजीव आदि पदार्थो का सद्गुरु ने जो यथावस्थित स्वरूप प्रकट किया है, उसका उसीरूप से अन्तः करण से श्रद्धान करने वाले प्राणी के दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय अथवा क्षयोपशम

પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ કરવામા અચેતન હોવા બદલ સ પૂર્ણપણે અસમર્થ છે કારણ કે કર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ માનવામા આવ્યા છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામા સમ્યકત્વની ઉત્પત્તિમા કારણુતા કોઇ પણ રીતે સ ભવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા સદ્ગુરૂના ઉપદેશને સમ્યકત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનુ જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરૂએ પ્રકટ કર્યુ છે તેનુ તે રૂપથી અ ત કરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહ નીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનુ નામ જ

शब्देन ग्रहणात् सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं, निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरूपदेशः कारणं, न तु प्रतिमा। सा हि सद्गुरवत् प्रवचनार्थमुपदेष्टुमसमर्था, तस्या जडत्वात्, । नापि सा निर्जराहेतुः, विनयादितपोरूप

कर्मों की निर्जरा नहीं हो सकती है। निर्जरा के अभाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशम आदि रूप सम्यक्त्व की उत्पत्ति संभवित नहीं है। अतः अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और उसीका ग्रहण यहां पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नहीं-इसी का खुलासा "सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं - निर्जरा च विनय वैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरूपदेशः कारणं न तु प्रतिमा" अर्थ इन पंक्तियों में लिखा गया है। तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए विना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आराधना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा संबंध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનુ અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઇ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કર્મોની નિર્જરા પણ થઇ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સંભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામા આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનુ જ ગ્રહણ થયુ છે પ્રતિમાનુ નહિ આનુ જ સ્પષ્ટીકરણ "सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं निर्जरामूलकं निजरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरूपदेशः कारणं न तु प्रतिमा" આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનુ શ્રદ્ધાન કરવુ તે સમ્યક્ત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનુ મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામા આવે છે પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતુ નથી વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરંપરા સંબંધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમા ગૃહીત થયો છે નહિકે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

त्वाभावात्, कथ तर्हि सम्यक्त्व प्रतिमाया: सभवति ? यथमपि नहि । अत एवो पदेशस्य सम्यक्त्व प्रति कारणत्व प्रदर्शयन् भगवानवादीत्–उत्तरा ध्ययनसूत्रे– (अ० २८ गा० १५)

" तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ।

छाया—तथ्याना तु भावाना सद्भाव उपदेशनम् ।
भावेन श्रद्दधतः सम्यक्त्व तद् व्याख्यातम् ॥

जीवाजीवादिपदार्थाना सद्भावे यद् उपदेशन=गुरोरुपदेश., तद् भावेन– अन्त'करणेन श्रद्दधत मोहनीयकर्मण: क्षयेण क्षयोपशमेन वा याऽभिरुचिरुत्पद्यते, तत् सम्यक्त्व तीर्थकरैर्व्याख्यातम् ।

के अर्थ का उपदेश करने में अचेतन होने से सर्वथा असमर्थ है कर्मों की निर्जरा में भी वह हेतु रूप नही होती है–कारण कि कर्मो की निर्जरा के हेतु तो विनयादिक तप ही माने गये हैं, प्रतिमा विनयादि तप स्वरूप नही है । अत प्रतिमा में सम्यक्त्व की उत्पत्ति मे कारणता किसी भी प्रकार सभवित नही होती है–उत्तराध्ययन सूत्र में सद्गुरु के उपदेश को सम्यक्त्व के प्रति कारण प्रकट करते हुए सिद्धान्तकार कहते हैं कि–तहियाण तु भावा ण सब्भावे उवएसण ।

भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ॥

जीव और अजीव आदि पदार्थो का सद्गुरु ने जो यथावस्थित स्वरूप प्रकट किया है, उसका उसीरूप से अन्तः करण से श्रद्धान करने वाले प्राणी के दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय अथवा क्षयोपशम

અધ્યયનના અર્થનો ઉપદેશ કરવામા અચેતન હોવા બદલ સપૂર્ણપણે અસમર્થ છે કારણ કે કર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ માનવામા આવ્યા છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામા સમ્યકત્વની ઉત્પત્તિમા કારણુતા કોઇ પણ રીતે સમજી શકે તેમ નથી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા સદ્ગુરૂના ઉપદેશને સમ્યકત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનુ જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરૂએ પ્રકટ કર્યું છે તેનુ તે રૂપથી અત કરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનુ નામ જ

यदि प्रतिमाऽपि सम्यक्त्वलाभे निमित्तं स्यात्तर्हि भगवता स्थानाङ्गसूत्रे प्रतिमानिमित्तकत्वेन सम्यग्दर्शनस्य तृतीयभेदोऽपि वाच्यः, तस्यानुक्तत्वाद् प्रतिमायाः सम्यक्त्वलाभे निमित्तत्वं नास्तीति बोध्यम् । किं च—

पाणातिपातसाध्या. प्रतिमापूजायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वं वदन्तः स्व दुर्गतिं न पश्यन्ति मोहान्धाः, स्थानाङ्गसूत्रे हि पाणातिपातस्य दुर्गतिहेतुत्व प्रदर्शितम्—

पचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइ गच्छति । त तहा-पाणाइवाएण, मुसावाएण, अदिन्नादाणेण, मेहुणेण, परिग्गहेण " इति । (स्था ५ ठा १ उ)

से जो रुचि उत्पन्न होती है उसी का नाम सम्यग्दर्शन है ऐसा तीर्थंकर प्रभुने कहा है यदि सम्यक्त्व की प्राप्ति मे प्रतिमा निमित्त होती तो स्थानाङ्ग सूत्र में जो " दोहिं ठाणेहिं आया केवलि पन्नत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए " ऐसा कहा है वहा यदि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा भी निमित्त होती तो उसके निमित्त होने से दो स्थानों की जगह सम्यक्त्व की प्राप्ति में तीन स्थानो का कथन सूत्रकार को करना चाहिये था परन्तु वहा दो स्थानो के अतिरिक्त तृतीयस्थान का कथन हुआ नही है, अतः इससे यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा निमित्त नही है ।फिर भी प्राणातिपात द्वारा साध्य प्रतिमा पूजन को मोह के आवेश से अधे हुए व्यक्ति सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण बत लाते हुए अपनी दुर्गति का कुछ भी ख्याल नही करते ह यही एक बडे आश्चर्य की बात है देखो प्राणातिपात को स्थानाङ्ग सूत्र मे दुर्गति

સમ્યગ્દર્શન છે, આમ તીર્થંકર પ્રભુએ કહ્યુ છે ને સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા નિમિત્ત રૂપે હોત તો સ્થાનાગ–સૂત્રમા જે " दोहि ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए " આ પ્રમાણે કહ્યુ છે, ત્યા જો સમ્યક્ત્વના લાભમા પ્રતિમા પણ નિમિત્ત થઇ શકત તો તેને નિમિત્ત રૂપે થવા બદલ બે સ્થાનોની જગ્યાએ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા ત્રણ સ્થાનોનુ કથન સૂત્રકારે કરવુ જોઇતુ હતુ, પણ ત્યા તો બે સ્થાનો સિવાય ત્રીજા સ્થાનનુ કથન થયુ જ નથી એથી આ સિદ્ધા તની જાત્રી થાય છે કે સમ્યક્ત્વના લાભમા પ્રતિમા નિમિત્ત નથી છતા યે પ્રાણાતિપાત વડે સાધ્ય પ્રતિમા પૂજનને અજ્ઞાનની નિદ્રામા પડેલી વ્યક્તિઓ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનુ કારણ બતાવતી પોતાની દુરવસ્થા તરફ સહેજ પણ જોતી નથી તે એક બહુ નવાઇ જેવી વાત છે જુઓ પ્રાણાતિપાતને સ્થાનાગસૂત્રમા દુર્ગતિનુ જ કારણ બતાવવામા આવ્યુ છે–(पचहिं ठाणेहिं

किंच-यथा लोके मुग्धाना सुवर्णमात्रसाम्येना शुद्धसुवर्णेऽपि प्रवृत्तिमवलोक्य शुद्धाशुद्धपरीक्षणाय निपुणैः कषच्छेदतापा आद्रियन्ते, तथाऽत्रापि परीक्षणीये श्रुतचारित्रलक्षणे धर्मे कषादय समादरणीया भवन्ति ।

प्राणिवधादीना पापस्थानाना यस्तु शास्त्रे प्रतिषेध', तथा स्वाध्यायध्यानादीना यश्च तत्र विधि स धर्मरूप । प्राणिवधसपर्कवति पूजने तु धर्मत्वबुद्धिर्मोहवशादेव भवति, शास्त्रे प्राणिवधस्य प्रतिषेधात् । अतस्तत्र नास्ति कषशुद्धिः ।

का ही कारण कहा है "पचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइ गच्छति-त जहा-पाणाइवाएण, मुसावाएणं, अदिन्नादाणेण, मेहुणेण, परिग्गहेण इति । (स्था ५ ठा १ उ) इन पाचो स्थानो से जीव दुर्गति के पात्र बनते है - प्राणातिपात से, मृषावाद से. अदत्तादान से मैथुन से और परिग्रह से। किंच-लोक में जिस में जिस प्रकार भोले भाले व्यक्तियो की सुवर्णमात्र की समानता से अशुद्ध स्वर्ण में भी यह सच्चा सुवर्ण है इस प्रकारकी प्रवृत्ति को देखकर सुवर्णपरीक्षक जन उसके सम्यक्त्व और असम्यक्त्व परीक्षाके लिये कष छेद और तप रूप उपायों का अवलम्बन करते है उसी प्रकार परीक्षणीय इस श्रुतचारित्ररूप धर्म की परीक्षा के लिये सूत्रकारों ने कषादिक परीक्षा के साधनो का उपयोग किया है प्राणिवधादिक पापस्थानो का शास्त्र में जो निषेध का विधान हुआ है तथा स्वाध्याय एव अध्ययन आदि का जो वहा पर विधान किया गया है यही धर्म का रूप है पूजन में यह धर्म रूप नही है क्यों कि वह प्राणि वध के सपर्क से दूषित है-अत. फिर भी जो उसमे धर्म

जीवा दुग्गइ गच्छति-त जहा-पाणाइवाएण, मुसावाएण, अदिन्नादाणेण, मेहुणेण परिग्गहेण इति) (स्था ५, ठा १ उ) આ પાચે સ્થાનોથી જીવ દુર્ગતિને યોગ્ય ઠરે છે-પ્રાણાતિપાતથી, મૃષાવાદથી, અદત્તાદાનથી, મૈથુનથી અને પરિગ્રહથી અને બીજુ પણ કે લોકમા જેમ ભોળા માણસોની સુવર્ણમાત્રની સમાનતાથી અશુદ્ધ સુવર્ણમા પણ 'આ સોનુ બરૂ છે,' આ જાતની પ્રવૃત્તિ જોઇને સુવર્ણ પરીક્ષકો તેના બરા-બોટાની પરીક્ષા માટે કષ, છેદ અને તાપ રૂપ ઉપાયોનો આસરો લે છે તેમજ પરીક્ષણીય આ શ્રુતચરિત્ર રૂપ ધર્મની પરીક્ષા માટે સૂત્રકારોએ કષ વગેરે પરીક્ષાના સાધનોનો ઉપયોગ કર્યો છે પ્રાણિ વધ વગેરે પાપસ્થાનોનુ શાસ્ત્રમા જે નિષેધ રૂપ વિધાન થયુ છે તેમજ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરેનુ જે ત્યા વિધાન કરવામા આવ્યુ છે તે જ ધર્મની કસોટી-કષ છે પૂજનમા આ ધર્મ કષ નથી કેમકે તે પ્રાણિવધના સપર્કથી દૂષિત છે છતા ય તેમા ધર્મત્વની બુદ્ધિ રાખવામા આવે છે તે ફક્ત

यत्र विधिः प्रतिषेधश्च इत्थ कदाचित् स्वरूपतो विपरीतत्वेन याति, अर्थात्-स्वाध्याय यानादौ नियमतः प्रवृत्त्या विधिपरिशुद्धिः, तथा हिंसादौ नियमतो निवृत्त्या प्रतिषेधपरिशुद्धिर्भवति, स चेदं उच्यते। प्रतिमापूजाया तु नास्ति च्छेदशुद्धिः, तस्याः षट्कायोपमर्दनताध्यत्वेन प्रतिषेधपरिशुद्धत्वभावात्।

प्रवचने जीवाजीवादीना तत्त्वाना यथावस्थितस्वरूपनिरूपणं मोक्षसाधकमित्येव निश्चयस्तापशुद्धिः। यथा वह्नौ तापनेन सुवर्णस्य यथावस्थितस्वरूपावि र्भाव तथा-प्रवचनोक्ततत्त्वानुसन्धानेन धर्मस्य स्वरूपमाविर्भवति। अत्र प्रतिमा पूजायां प्रवचनोक्तसंवरनिर्जरातत्त्वलक्षणानाक्रान्तत्वान्नास्ति तापशुद्धिः।

त्वकी शुद्धि होती है वह केवल मोक्ष का ही आवेश है। प्राणिवध शास्त्र से निषिद्ध है। जहां पर विधि और प्रतिषेध ये दोनों कभी भी अपने स्वरूप से विपरीतपने को प्राप्त नहीं होते हैं वहां पर छेद से शुद्धि मानी जाती है जिस प्रकार स्वाध्याय और अध्ययन आदि शुभ कार्यों में नियम से शास्त्र में प्रवृत्ति प्रदर्शित की गई है और हिंसादि कार्यों से उसमे नियम से निवृत्ति करी गई है। प्रतिमा पूजन में यह छेद शुद्धि नही है। क्यो कि इसमें प्रतिषेध से परिशुद्धि का अभाव है इस का कारण यह है कि चर् षट्काय के जीवों के घात से साध्यकार्य है। प्रवचन में जीव और अजीव आदि तत्त्वो के यथावस्थित स्वरूप का वर्णन ही मोक्षका साधक है इस प्रकार का निश्चय ही ताप शुद्धि है। जिस प्रकार अग्नि मे तपाने से स्वर्ण का यथावस्थित स्वरूप प्रकट होता है। उसी प्रकार प्रवचन कथित तत्त्वो के अनुसन्धान से धर्म के स्वरूप का आविर्भाव होता है इस प्रतिमापूजन मे धर्मतत्त्वके अविर्भाव करने

અજ્ઞાનનો જ ઊભરો છે પ્રાણિ વધ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ છે જ્યા વિધિ અને પ્રતિષેધ આ બન્ને કોઇ પણ વખતે પોતાના સ્વરૂપથી વિપરીતાવસ્થામા પરિવર્તિત થતા નથી ત્યા છેદથી શુદ્ધિ માનવામા આવે છે જેમ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરે શુભ કાર્યોમા નિયમથી શાસ્ત્રમા પ્રવૃત્તિ બતાવવામા આવી છે અને હિંસા વગેરે કાર્યોથી તેમા નિયમથી નિવૃત્તિ બતાવવામા આવી છે પ્રતિમા પૂજનમા આ છેદ શુદ્ધિ નથી કેમકે આમા પ્રતિષેધથી પરિશુદ્ધિનો અભાવ છે આનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે ષટ્કાયના જીવોના ઘાતથી સાધ્ય કાર્ય છે પ્રવચનમા જીવ અને અજીવ વગેરે તત્ત્વોના યથાવસ્થિત સ્વરૂપનુ વર્ણન જ મોક્ષનુ સાધક છે આ જાતનો નિશ્ચય જ તાપ શુદ્ધિ છે જેમ અગ્નિમા તપાવવાથી સોનાનુ યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રગટ થાય છે તેમજ પ્રવચન કથિત તત્ત્વોના અનુસંધાનથી ધર્મના સ્વરૂપનો આવિર્ભાવ થાય છે આ [illegible] ધર્મ

एभिः कृपादिभिः परिशुद्धस्यैव धर्मत्व समवति तादृशस्यैव धर्मफल जनकत्वात् ।

यथा-आधाकर्मादिदोषदूषिताहारादिदाने धर्मबुद्धया क्रियमाणे धर्मव्याघात', यथा वा इन्द्रादिपूजादौ धर्मव्याघातः, तथैव धर्मबुद्धया प्रतिमापूजनेऽपि धर्मव्याघातः स्यात् , तस्य जीवोपघातहेतुत्वात् ।

" प्रतिमापूजा-धर्मव्याघातवती, आगमोक्तन्यायनिराकृतत्वात् , अयोग्यप्रव्रज्यादानवत् , इन्द्रादिपूजावद् वा " इत्याद्यनुमानेनापि प्रतिमापूजाया धर्मव्याघातो भवतीति विभावनीयम् । उक्त च—

की योग्यता तक भी नही है । कारण कि यह प्रवचन कथित सवर और निर्जरा तत्त्व के लक्षण से युक्त नही है-अत उसमें तात्त्विक शुद्धि भी नही है । इन कपादिको द्वारा परिशुद्ध हुई वस्तु मे ही धर्मता आती है और वही यथार्थ मे धर्म के फलका प्रदाता होता है । प्रतिमापूजन मे यह बात नही है-अत. वह धर्मरूप नही है ।

किंच-धर्मबुद्धि से बनाये गये, परन्तु आधाकर्म आदिदोषों से दूषित ऐसे आहार के दान में तथा इन्द्र आदिको का पूजन करने में जिस प्रकार धर्म का व्याघात माना गया है, उसी प्रकार धर्मबुद्धि से की गई प्रतिमा का पूजन मे भी जीवो का घात होने से धर्म का व्याघात होता है । इसलिये आगम कथित सिद्धान्त के अनुसार यह प्रतिमापूजन उपादेय कोटि में नही आता है । फिर भी जो इसे करते हैं-कराते है-वे आगम कथित सिद्धान्त से सर्वथा बाह्य है-और धर्म का व्याघात कर-

---

તત્ત્વને આવિર્ભૂત કરવા સુધીની પણ ક્ષમતા નથી, કેમકે આ પ્રવચન કથિત સવર અને નિર્જરા તત્ત્વના લક્ષણથી યુક્ત નથી એટલા માટે આમા તાપ શુદ્ધિ પણ નથી આ કપ વગેરે વડે પરિશુદ્ધ થયેલી વસ્તુમા જ ધર્મતા આવે છે અને તે જ સાચા સ્વરૂપમા ધર્મના ફળને આપનાર છે પ્રતિમા પૂજનમા આ વાત નથી એથી તે ધર્મ રૂપ નથી

ધર્મબુદ્ધિથી તૈયાર કરવામા આવેલા, પણ આધાકર્મ વગેરે દોષો વડે દૂષિત એવા આહારના દાનમા તેમજ ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવામા જેમ ધર્મનો વ્યાઘાત માનવામા આવ્યો છે, તેમ જ ધર્મબુદ્ધિ રાખીને કરવામા આવેલા પ્રતિમા પૂજનમા પણ જીવોનો ઘાત હોવાથી ધર્મનો વ્યાઘાત હોય છે એટલા માટે આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત મુજબ આ પ્રતિમા પૂજન ઉપાદેય કોટિમા આવતુ નથી છતા યે જે આને કરે છે, કરાવે છે તેઓ આગમ કથિત સિદ્ધા તથી સર્વથા બાહ્ય છે અને ધર્મના વ્યાઘાતક છે એવી અયોગ્યને આપેલી

" प्रव्रज्यादिविधाने च, शास्त्रोक्तन्यायबाधिते ।
द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो, धर्मव्याघात एव हि "॥ दार्ष्टान्तिकम्

यत्तु-जिनप्रतिमाया दर्शन वन्दन चाकृत्वा साधूनामिति वन्दनाधकृत्वा भक्तपान न कल्पते तेनामित्याद्युक्तं तन्निर्मूलम्—

अहोरात्रकृत्येषु साधुकल्पेषु जिनप्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वात् । शृणु तावदहोरात्रकृत्य साधूनाम्—

नेवाले है अतः अयोग्य को दीक्षा दान की तरह अथवा इन्द्रादिक के पूजन की तरह यह प्रतिमापूजन आगमोक्त न्याय से निराकृत होने से धर्म का व्याघात करनेवाला है ऐसा विश्वास करना चाहिये । तथा च अनुमानप्रयोगोऽय-प्रतिमापूजा धर्मव्याघातवती आगमोक्तन्याय निराकृतत्वात् अयोग्यप्रव्रज्यादानवत् इन्द्रादिपूजनवद्वा । इस अनुमान में दिया गया हेतु असिद्ध नही है-क्यो कि " प्रव्रज्यादिविधाने च शास्त्रोक्तन्यायबाधिते - द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो धर्मव्याघात एव हि " दृष्टान्त में इस हेतु का इस श्लोक द्वारा कथित प्रकार से सद्भाव पाया ही जाता है।

जो यह कहा जाता है कि जिनप्रतिमा के दर्शन वन्दन किये विना साधुओं को आहार पानी करना कल्पनीय नही है-अत. उसका दर्शन वन्दन करना साधुओ के लिये आवश्यक है वह बिलकुल निर्मूल है-कारण कि दिनरात सबधी जितने भी साधुओ के कल्प है उन में इस बात का कही भी कथन किया हुआ नही मिलता है-दिनरात सबधी साधुओं के ये कृत्य है—

દીક્ષાની જેમ અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજાની જેમ આ પ્રતિમાપૂજન આગમ કથિત ન્યાયથી નિરાકૃત હોવા બદલ ધર્મનો નાશ કરનારૂ છે આમ માની જ લેવુ જોઇએ " तथा च अनुमानप्रयोगोऽय प्रतिमापूजा धर्मव्याघातवती आगमोक्तन्यायनिराकृतत्वात् अयोग्य-प्रव्रज्यादानवत् इन्द्रादिपूजनवद्वा । આ અનુમાનમા આપેલ હેતુ અસિદ્ધ નથી, કારણ કે-प्रव्रज्यादिविधाने च शास्त्रोक्तन्यायबाधिते -द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो धर्मव्याघात एव हि । દૃષ્ટાતમા આ હેતુનો આ શ્લોક વડે જે કથિત પ્રકાર છે તેનો સદ્ભાવ મળે છે

જે એમ કહેવામા આવે છે કે જીન પ્રતિમાના દર્શન કર્યા વગર સાધુ ઓને આહાર પાણી કરવુ યોગ્ય નથી એથી તેના દર્શન વન્દન કરવા સાધુ ઓના માટે આવશ્યક છે તે માત્ર ખોટી વાત છે કેમકે દિવસ અને રાત્રિને લગતા સાધુઓને માટે જેટલા કલ્પ છે તેમા આ વાતનુ કથન કરાયે નથી દિવસ અને રાત્રિના સાધુઓના આ નીચે લખ્યા મુજબ કૃત્યો

पढम पोरिसि सज्झायं, बीए झाण झियायए ।
तइयाए भिक्खायरिय, चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥
पढम पोरिसि सज्झाय, बीए झाण झियायए ।
तइयाए निद्दमोक्ख च, चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥ इति,
(उत्तराध्ययनसूत्रे २६ अ)

किं च-सामायिकाद्यावश्यकेऽपि प्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वाद् जिनाज्ञाया एव च धर्ममूलत्वात्तस्य धर्मत्व न सि यति ।

यत्तु-पुष्पादिसमभ्यर्चनलक्षणो द्रव्यस्तवः साधुना हेय एव श्रावकेण तु उपादेयोऽपि तथा चाह-भाष्यकारः-

अकसिणपवत्तगाण, विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो ।
ससारपयणुकरणो दव्वत्थए कूवदिट्ठतो (भाष्यकारः ४२)

पढम पोरिसि सज्झाय बीए झाण झियायए ।
तइयाए भिक्खायरिय चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥
पढम पोरिसि सज्झाय बीए झाणं झियायए ।
तइयाए निद्दमोक्ख च चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥
(उत्तरा सूत्र २६ अ-)

अर्थस्पष्ट है । इसी प्रकार साधुओं के जो सामायिक आदि आवश्यक कृत्य है, उनमें भी प्रतिमा के दर्शन आदि करना नहीं कहा है । धर्म का मूल तो जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा की आराधना करने में है इसलिये दर्शन वगैरह ये धर्म के मूल नहीं हैं । भाष्यकारने जो इस गाथा द्वारा " अकसिण पवत्तगाण विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । ससार पयणुकरणो दव्वत्थए कूवदिट्ठतो " (भाष्यकार ४२) यह कहा है कि

પઢમે પોરિસિ સજ્ઝાય બીએ ઝાણ ઝિયાયએ ।
તઇયાએ ભિક્ખાયરિય ચઉત્થિએ પુણો વિ સજ્ઝાય ॥
પઢમે પોરિસિ સજ્ઝાય બીએ ઝાણ ઝિયાયએ ।
તઇયાએ નિદ્દમોક્ખ ચ ચઉત્થિએ પુણો વિ સજ્ઝાય ॥ (उत्तराऽसूत्र-२६ अ)

અર્થ સરળ જ છે આ રીતે સાધુઓના જે સામાયિક વગેરે આવશ્યક કૃત્યો છે તેમનામા પણ પ્રતિમાના દર્શન વગેરે કરવાની વાત કહી નથી ધર્મનુ મૂળ તો જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાને આરાધવામા આવે છે માટે દર્શન વગેરે આ બધા ધર્મના મૂળ નથી ભાષ્યકારે જે આ ગાથા વડે-(अकसिण पवत्तगाण विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । ससारपयणुकरणो दव्वत्थए

अकृत्स्नप्रवर्तकानां अकृत्स्नसयममवृत्तिमता विरताविरतानां=देशविरतीना श्रावकाणाम् एष द्रव्यस्तव' साधु युक्त एव । किभूतोऽयमित्याह-ससार प्रतनु करणः=ससारक्षयकारकः इत्यर्थ' । ननु द्रव्यस्तवो हेय मकृत्यबाहुल्यः स कथ श्रावकाणा युक्त ? । इत्याशङ्क्याह-कूपदृष्टान्त इति-

यथा लोके केऽपि जलाभावतस्तृष्णातुरा. पिपासापनोदनार्थं कूप खनन्ति ते कूपखनका मृत्तिकाकर्दमादिभिश्च मलिना भवन्ति, पश्चात् तदुद्भवेन जलेन तेषा तृष्णायास्तथा मृत्कर्दमकल्यस्य च नाशो भवति तदनन्तरमपि ते तदन्ये च

श्रवणों के लिये उपादेय भी पुष्प आदिको द्वारा भगवान की पूजा स्वरूप द्रव्यस्तव साधुओं के लिये हेय ही है। क्यों कि साधु सर्व आरभ और परिग्रह के सर्वथा त्यागी हैं-श्रावक नहीं वे देश विरति सपन्न हैं। अतः उनके लिये द्रव्यस्तव ससार का क्षय कारक माना गया है कूप का दृष्टान्त देकर भाष्यकार ने इस शका का परिहार किया है कि जिस प्रकार जल के अभाव से पिपासा को दूर करने के लिये कोई २ मनुष्य कूप को खोदते है और उसे खोदते समय मिट्टी और कीचड से मलिन भी हो जाते हैं परन्तु पश्चात् उस कूप मे निकले हुए जल से वे उस कीचड और लगी हुई मिट्टी को साफ कर देते हैं और समय २ पर अपनी पिपासा की भी शाति करते रहते ह। दूसरे और भी लोक उससे लाभ उठाते है। इस प्रकार उस जलयुक्त कुएँ से खोदने वाले व्यक्तियों को तथा और भी अन्यजनों को समय २ पर अनेक प्रकार से लाभ होता रहता है। ठीक इसी तरह इस द्रव्यस्तव मे जो कि सयम

कूवदिट्ठतो ।) (भाष्यकार ४२) આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે શ્રાવકોને માટે ઉપા દેય હોવા છતા પુષ્પ વગેરે વડે ભગવાનની પૂજા સ્વરૂપ દ્રવ્યસ્તવ સાધુઓના માટે તો ત્યાજ્ય જ છે, કેમકે સાધુ સર્વ આરભ અને પરિગ્રહના સપૂર્ણ પણે ત્યાગી હોય છે શ્રાવક નથી, તેઓ દેશ વિરતિ સપન્ન છે એટલા માટે તેમને સામે રાખીને વિચાર કરીએ તો દ્રવ્યસ્તવ સસારને ક્ષય કરનાર માનવામા આવ્યો છે કૂપનુ દૃષ્ટાત આપીને ભાષ્યકારે આ શકાને દૂર કરી છે કે જેમ પાણીના અભાવને લીધે પીડાઇને તરસ મટાડવા માટે કેટલાક માણસો વાવ ખોદે છે અને તે વખતે તેઓ માટી અને કાદવથી ખરડાઈ જાય છે પણ ત્યાર પછી વાવમાથી નીકળતા પાણીથી જ તેઓ કીચડ તેમજ શરીરે ચોટેલી માટીને સાફ કરી નાખે છે અને વખતો વખત પોતાની તરસ પણ મટાડે છે બીજા પણ કેટલાક લોકો તેનાથી લાભ મેળવે છે આ રીતે તે પાણી ભરેલી વાવથી

लोका जलेन सुखिनो भवन्ति एव द्रव्यस्तवे यद्यप्यसयमो भवति तथापि तत एव सा परिणामशुद्धिर्भवति, या तद् असयमोपार्जितमन्यच्च निरवशेष क्षपयति इति।

" तस्माद्विरताविरतैः श्रावकैरेष द्रव्यस्तव कर्तव्य ।
शुभानुबन्धी सभूतनिर्जराफल इति कृत्वा " इत्युक्तम्-

तदसत्-अत्र हि कूपदृष्टान्तो न सघटते कूपखननेन जलमुत्पद्यते इति सकल लोकप्रत्यक्ष, किन्तु षट्कायवध कुर्वत' कारयतश्च धर्ममूलभूताया दयाया एव

की रक्षा नहीं होती है, तो भी यह कर्त्ता को परिणामों मे शुद्धि का हेतु होता है। इससे कर्त्ता उस द्रव्यस्तव के करने मे उद्भूत असयम द्वारा उपार्जित पापो का सम्पूर्णरूप से विनाश कर देता है। इसलिये विरताविरत (एकदेश सयम की आराधना करनेवाले पचमगुणस्थानवर्ती श्रावको द्वारा यह द्रव्यस्तव कर्तव्य कोटि में आने से उपादेय है। कारण कि यह उनके लिये शुभानुबधी और कर्मों की अधिक निर्जरा रूप फल का प्रदाता होता है" यह सब भाष्यकार का कथन ठीक नही है। कारण कि उन्हो ने जो कूप का दृष्टान्त देकर इस विषय की पुष्टि करनी चाहिये, उससे प्रकृत विषय की वास्तविक पुष्टि नही होती है। यह तो प्रत्येक लौकिक जन के प्रत्यक्ष अनुभव मे आने जैसी बात है कि कूप के खोदने से जल निकलता है इस में तो विवाद की कोई जरूरत ही नहीं है, किन्तु प्रतिमा की पूजा करने और करानेवालो से षट्

ખોદનાર લોકોને તેમજ બીજા પણ ઘણા માણસોને વખતો વખત ઘણી રીતે લાભ થતા રહે છે ઠીક આ પ્રમાણે જ દ્રવ્યસ્તવમા જો કે સયમની રક્ષા થતી નથી, છતા ય તે કર્તાના માટે પરિણામમા શુદ્ધિનુ કારણ હોય છે તેનાથી કર્તા તે દ્રવ્યસ્તવના કરવામા ઉદ્ભૂત અસયમ વડે મેળવેલા પાપોનો સપૂર્ણ પણે વિનાશ કરી નાખે છે એથી વિરતાવિરત (એકદેશ સયમની આરાધના કરનાર પચમ ગુણસ્થાનવર્તી) શ્રાવકો વડે આ દ્રવ્યસ્તવ કર્તવ્ય કોટિમા આવવાથી ઉપાદેય છે કારણ કે તે તેમના માટે શુભાનુબધી અને કર્મોની વધારે નિર્જરા ફળને આપનાર છે ભાષ્યકારનુ આ બધુ કથન યોગ્ય નથી, કારણ કે તેઓએ જે વાવનુ દૃષ્ટાત આપીને આ વિષયની પુષ્ટિ કરવા પ્રયત્ન કર્યો છે, તેનાથી પ્રકૃત વિષયની વાસ્તવિક રૂપમા પુષ્ટિ થતી જોવામા આવતી નથી દરેકે દરેક માણસના માટે આ તો એક પ્રત્યક્ષ અનુભવ કરી શકાય તેવી હકીકત છે કે વાવ ખોદવાથી પાણી નીકળે છે, આમા તો ચર્ચાની કોઈ વાત જરૂરિ થતી નથી પણ પ્રતિમાની પૂજા કરનાર અને કરાવનારાઓથી

काय के जीवो की रक्षा नहीं हो सकती है-उनसे उनकी विराधना होती है। ऐसी परिस्थिति में धर्म के मूलभूत सिद्धान्त का ही जब यहां अभाव है तब उस पूजन कार्य के उनके परिणामों मे शुद्धि मानना यह कथन शास्त्र से विरुद्ध और प्रत्यक्ष आदि समस्त प्रमाणों से बाधित होता हुआ किसी भी समझदार व्यक्ति को मान्य नहीं हो सकता है प्रतिमा पूजनके पक्षपाती जो इस प्रकार अपने पक्षमें तर्क करते है कि-

सम्यक् स्नात्वोचिते काले सस्नाप्यच जिनान् क्रमात्।
पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः॥

तथा-जिनप्रभसूरिकृतपूजाविधौ-सरससुरहिचंदणेण अंगेसु पूअ काऊण पचंगकुसुमेहिं गंधवासेहिं च पूएइ सद्धणे सुगंधिभिः सरसैरभूपतितैर्विकाशिभिरसहितदलैः प्रत्यग्रैश्च प्रकीर्णैर्नानाप्रकारग्रथितैर्वा पुष्पैः पूजयेत्" इति-तथा—कुसुमक्खयगंधपईवधूयनेवेज्जफलजलेहिं पुणो अट्ठविहकम्मदलनी अट्ठुत्तयारा हवइ पूया" इति किञ्च-

जिनभवन जिनबिम्ब जिनपूजा जिनमत च यः कुर्यात्।
तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि॥

ષટ્કાય જીવોની રક્ષા થઈ શકતી નથી, તે કાર્યથી તો તેમની વિરાધના જ હોય છે આવી પરિસ્થિતિમા ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તોનો જ જ્યારે અભાવ છે ત્યારે તે પૂજા રૂપ કાર્યથી તેમના પરિણામોમા શુદ્ધિ માનવી આ વાત શાસ્ત્રથી વિરૂદ્ધ અને પ્રત્યક્ષ વગેરે બીજા બધા પ્રમાણોથી બાધિત થતી કોઈ પણ સમજુ માણસના માટે તો માન્ય થઇ શકે તેમ નથી પ્રતિમા પૂજનની તરફદારી કરનારાઓ પોતાની વાતને પુષ્ટ કરવા માટે જે આ જાતની ખોટી દલીલો સામે મૂકે છે કે—

सम्यक् स्नात्वोचिते काले स स्नाप्य च जिनान् क्रमात् ।
पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधि ॥

तथा-जिनप्रभसूरिकृतपूजाविधौ-सरस-सुरहिचंदणेण अंगेसु पूअ काउण पचंगकुसुमेहि गंधवासेहि य पूएइ सद्धणे सुगंधिभि सरसैरभूपतितैर्विकाशिभिरसहित दलै प्रत्यग्रैश्च प्रकीर्णै र्नानाप्रकारग्रथितैर्वा पुष्पै पूजयेत् । इति तथा कुसुमक्खयगंधपईवधूयनेवेज्जफलजलेहि पूणो अट्ठविहकम्मदलनी अट्ठुत्तयारा हवइ पूया" इति किञ्च—

जिनभवन जिनबिम्ब जिनपूजा जिनमत च य कुर्यात् ।
तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि ॥

समुच्छेदात् परिणामशुद्धिरुत्पद्यत इति प्रवचनविरुद्ध कल्पन सर्वप्रमाणबाधित कस्यानुमत भवेत् । अपि तु न कस्यापि ।

(आचाराङ्गसूत्रे भगवताऽभिहितम् (अ १ उ १)

" इमस्स चेव जीवियस्स परिवदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउ से सयमेव पुढविसत्थ समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थ समारभावेइ,

भावार्थ—पूजक उचित समय में अच्छी तरह स्नान करके जिनेन्द्र का अभिषेक कर पुष्प आदिकों से उन की पूजा करे । जिनप्रभसूरि द्वारा विरचित पूजाविधि मे भी पूजा के विषय में यही विधि प्रदर्शित की गई है सरस सुगधित चदन से भगवान के नव अगो में तिलकरूप पूजन कर पूजक सुगधित, जमीन पर नही गिरे हुए, पत्र विनाके ताजे पच जाति ते पुष्पों द्वारा प्रभु की पूजा करें । पुष्प, अक्षत, गध, प्रदीप, धूप, नैवेद्य फल और जल इन आठ द्रव्यो से आठ कर्मों को नाश कर नेवाली अष्टप्रकारी पूजा होती है । जिनमदिर, जिनप्रतिमा जिनपूजा और जिनमत को जो करता है, उस मनुष्य के हाथ मे मनुष्यगति देवगति और मोक्ष के सुख आ जाते है–अर्थात वह मनुष्य इन गतियो के सर्वोत्तम सुख भोग कर मोक्षसुख का भोक्ता बन जाता है–सो इस प्रकार का यह पूजन विषयक समस्त कथन प्रवचन सिद्ध ही है क्योंकी आचारांगसूत्र में भगवान ने "इमस्स चेव जीवियस्स परिवदण माणण पूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपरिघायहेउ से सयमेव पुढविस-

ભાવાર્થ—પૂજા કરનાર યોગ્ય સમયે સારી રીતે સ્નાન કરીને જીનેન્દ્રનો અભિષેક કરે તેમજ પુષ્પ વગેરેથી તેમની પૂજા કરે જીનપ્રભાસૂરિ વડે વિરચિત પૂજાવિધિમા પણ પૂજાના વિષયમા આ વિધિ જ બતાવવામા આવી છે સરસ સુગધિત ચદનથી ભગવાનના નવ અગોમા તિલક રૂપ પૂજન કરી પૂજા કરનાર સુવાસયુકત, જમીન ઉપર પડેલા નહિ, પત્ર વગરના તાજા, પાચ જાતિના પુષ્પોથી પ્રભુની પૂજા કરે પુષ્પ, અક્ષત, ગધ, પ્રદીપ, ધૂપ, નૈવૈદ્ય, ફળ અને પાણી આ આઠ દ્રવ્યોથી આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અષ્ટ પ્રકારની પૂજા હોય છે જીન મદિર, જીન પ્રતિમા, જીન પૂજા અને જીન મતને જે કરે છે, તે માણસની પાસે મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ અને મોક્ષના સુખો આવી જાય છે એટલે કે તે માણસ આ ગતિઓના સર્વોત્તમ સુખો ભોગવીને મોક્ષ સુખને ભોગવનાર બની જાય છે, માટે આ જાતનુ આ પૂજનને લગતુ બધુ કથન પ્રવચન સિદ્ધ જ છે, કેમકે આચારાગ સૂત્રમા ભગવાને—(इमस्स चेव जीवियस्स परिवदण माणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपरिघायहेउ से

अण्णे वा पुढविसत्थं समारभते समणुजाणइ। तं से अहियाए तं से अबोहीए।" इति जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीकायस्य समारम्भं करोतीत्याह-" इमस्स चेव " इत्यादि। अस्यैव=क्षणभङ्गुरस्य, " जीवियस्स " जीवनस्य-जीवनस्यार्थे, तथा परिवन्दनमाननपूजनाय=परिवन्दन प्रशंसा, तदर्थं यथाऽऽश्चर्यगृहादिकरणे, मानन=सत्कारः तदर्थं, यथा कीर्तिस्तम्भादिकरणे, पूजन=सापूजा। प्रतिमापूजन च, तत्र स्वपूजन-वस्त्ररत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजनार्थं च प्रतिमादिरचने तथा-जातिमरणमोचनाय, तथा दुःखविघातहेतु-दुःखविनाशार्थं।

त्थ समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थ समारभावेइ, अण्णे वा पुढविसत्थ समारभते समणुजाणइ। तं से अहियाए तं से अबोहिए" इति-इस सूत्र में "जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीकाय का समारभ करता है" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस क्षणभगुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्चर्योत्पादक गृह आदि बनवा न दें मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्तभ आदि कराने में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये वस्त्र रत्नकम्बल आदि पुरस्कार में तथा प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने मे तथा जाति-परलोक में सुख के लिये देवमन्दिर आदिके बनवानेमे, मरण-जिनकी मृत्यु हो चुकी है ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने ने मे, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवानेमे अथवा अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमें स्वय भी पृथिवी

समेव पुढविसत्थ समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थ समारभावेइ, अण्णेवा पुढविसत्थ समारभते समणुजाणइ तं से अहियाए तं से अबोहिए) इति— "જીવ શા માટે પૃથ્વીકાયનો સમારંભ કરે છે" એ સવાલનો જવાબ આપતા આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે કે આ જીવ આ ક્ષણભગુર જીવન માટે પરિવદન-પ્રશંસા માટે આશ્ચર્યોત્પાદક ઘર વગેરે બનાવવામા, માન-સત્કાર માટે કીર્તિસ્તભો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, પોતાની પ્રતિષ્ઠા માટે વસ્ત્ર, રત્ન, કામળા વગેરે રૂપ પુરસ્કાર તેમજ પ્રતિમા પૂજન માટે પ્રતિમા વગેરે બના વવામા જાતિ પરલોકમા સુખ પ્રાપ્તિ થાય તેના માટે દેવ-મદિરો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, મરણ-જેઓ મરણ પામ્યા છે તેવા પોતાના પિતા વગેરેની યાદમા સ્તૂપ, સમાધિ વગેરે બનાવવામા, મોચન-મુક્તિ મેળવવા માટે દેવ-પ્રતિમા વગેરે બનાવવામા અથવા તો ઘણી જાતના દુખોના વિનાશ માટે વર્તમાન કાળમા પોતે પણ પૃથ્વીકાયના વિનાશ સ્વરૂપ દ્રવ્યભાવ વ્યાપાર

सः जीवनपरिवन्दनमाननपूजनार्थं जनः स्वयमेव पृथिवीशस्त्रं समारभते =पृथिव्युपमर्दकं द्रव्यभावशस्त्रं व्यापारयति। अन्यैर्वा पृथिवीशस्त्रं समारम्भयति =उद्योजयति। पृथिवीशस्त्रं समारभमाणान् अन्यान् समनुजानाति अनुमोदयति। एवमतीतानागताऽपि, तथा मनोवाक्कायैश्च पृथिवीशस्त्रसमारम्भभेदा अवगन्तव्याः। पृथिवीशस्त्रं समारभमाणः किं फलं प्राप्नोतीत्याह-" तं से अहियाए " इत्यादि। " तं " तत्=पृथिवीकायसमारम्भणं, " से " तस्य=पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य " अहियाए " अहिताय=अकल्याणाय भवतीति शेषः। ' तं ' तत् = तदेव च पृथिवीकायसमारम्भणमेव च " से " तस्य पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य " अबोहीए " अबोधये सम्यक्त्वालाभाय जिनधर्मप्राप्त्यभावाय च भवति।

पृथिवीकायसमारम्भणं हि-कृतकारितानुमोदितभेदेन त्रिविधम्, तत्रातीत-

---

काय के विनाशस्वरूप द्रव्य भाव शस्त्रका व्यापार करता है, दूसरों से कराता है और इस शस्त्र का प्रयोग करने वाले प्राणियोंकी अनुमोदना करता है इसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में मनवचन और काय से(त्रियोग और त्रिकरणके सम्बन्धसे) यह जीव पृथिवी कायका समारम्भ करने वाला हुआ है और होगा। अतः जिस प्रकार वर्तमान में त्रियोग और त्रिकरण के सम्बन्ध से इस पृथिवी काय समारम्भ के भेद होते हैं उसी प्रकार भूत और भविष्यत काल मे भी उनके सम्बन्ध इसके भेद जानलेना चाहिये। यह पृथिवी काय का समारम्भरूप शस्त्रका प्रयोग प्रयोक्ता जीवको कभी भी कल्याण एवं सम्यक्त्व के लाभ जिनधर्म की प्राप्ति की प्राप्ति कराने वाला नही होता है।

भावार्थ—पृथिवीकाय का समारम्भ कृत, कारित और अनुमोदना

(કાય) કરે છે, બીજાઓ પાસે કરાવે છે અને આ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરનાર પ્રાણીઓની અનુમોદના કરે છે આ પ્રમાણે ભૂત અને ભવિષ્યકાળમા મન, વચન અને કાયથી (ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના સબધથી) આ જીવ પૃથ્વિ કાયનો સમારભ કરનાર થયો છે અને થશે એટલા માટે જેમ વર્તમાનકાળમા ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના સબધથી આ પૃથ્વિકાય સમારભના ભેદ (પ્રકાર) હોય છે તેમજ ભૂત અને ભવિષ્યત કાળમા પણ તેમના સબધ તેમજ ભેદ જાણી લેવા જોઈએ આ પૃથ્વિકાયના સમારભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ પ્રયોક્તા જીવના માટે કદાપ કલ્યાણ સમ્યક્ત્વનો લાભ તેમજ જીન ધર્મની પ્રાપ્તિ કરાવનાર થતો નથી

ભાવાર્થ—પૃથ્વિકાયનો સમારભ કૃત, કારિત અને અનુમોદનાના ભેદથી ત્રણ પ્રકારનો છે અતીત અને અનાગત કાળના ભેદોથી તેના બીજા ત્રણ ત્રણ

अण्णे वा पुढविसत्थ समारभते समणुजाणइ। त से अहियाए त से अबोहीए।" इति जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीकायस्य समारम्भ करोतीत्याह-" इमस्स चेव " इत्यादि। अस्यैव=क्षणभगुरस्य, " जीवियस्स " जीवनस्य-जीवनम्यार्थे, तथा परिवन्दनमाननपूजनाय=परिवन्दन प्रशसा, तदर्थ यथाऽऽश्चर्यगृहादिकरणे, मानन=सत्कारः तदर्थं, यथा कीर्तिस्तम्भादिकरणे, पूजन=स्वपूजन प्रतिमापूजन च, तत्र स्वपूजन-वस्त्ररत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजनार्थं च प्रतिमादिरचने तथा-जातिमरणमोचनाय, तथा दुःखसविघातहेतु-दुःखविनाशार्थं।

त्थ समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थ समारभावेइ, अण्णे वा पुढविसत्थ समारभते समणुजाणइ। त से अहियाए त से अबोहिए" इति- इस सूत्र में "जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीकाय का समारभ करता है" इस प्रश्न को उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस क्षणभगुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्चर्योत्पादक गृह आदि बनवा न दें मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्तभ आदि कराने में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये वस्त्र रत्नकम्बल आदि पुरस्कार में तथा प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने में तथा जाति-परलोक मे सुख के लिये देवमन्दिर आदिके बनवानेमे, मरण-जिनकी मृत्यु हो चुकी है ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने ने मे, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवानेमे अथवा अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमे स्वय भी पृथिवी

समेव पुढविसत्थ समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थ समारभावेइ, अण्णेवा पुढविसत्थ समारभते समणुजाणइ त से अहियाए त से अबोहिए) इति— "જીવ શા માટે પૃથ્વીકાયનો સમારભ કરે છે" એ સવાલનો જવાબ આપતા આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે કે આ જીવ આ ક્ષણભગુર જીવન માટે પરિવદન-પ્રશસા માટે આશ્ચર્યોત્પાદક ઘર વગેરે બનાવવામા, માન-સત્કાર માટે કીર્તિસ્તભો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, પોતાની પ્રતિષ્ઠા માટે વસ્ત્ર, રત્ન, કામળ વગેરે રૂપ પુરસ્કાર તેમજ પ્રતિમા પૂજન માટે પ્રતિમા વગેરે બનાવવામા જાતિ પરલોકમા સુખ પ્રાપ્તિ થાય તેના માટે દેવ-મદિરો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, મરણ-જેઓ મરણ પામ્યા છે તેવા પોતાના પિતા વગેરેની યાદમા સ્તૂપ, સમાધિ વગેરે બનાવવામા, મોચન-મુક્તિ મેળવવા માટે દેવ-પ્રતિમા વગેરે બનાવવામા અથવા તો ઘણી જાતના દુઃખોના વિનાશ માટે વર્તમાન કાળમા પોતે પણ પૃથ્વીકાયના વિનાશ સ્વરૂપ દ્રવ્યભાવ

मलभ्य, किं पुनस्तत्र षट्कायसमारम्भणे स्वर्गापवर्गलाभस्य सभव । परिवन्दन-माननपूजनार्थं जातिमरणमोचनार्थं दु'खप्रतिघातार्थं च ये जीवाः पृथिवीकायादि-समारम्भ कुर्वन्ति, ते तत्फल विपरीतमेव लभन्ते यतोऽसौ समारम्भः अबोधिमहित चोत्पादयतीत्युक्त भगवता । परतु तत्र प्रतिमापूजका' शास्त्रविरुद्धमेव कथयति-प्रतिमापूजाया स्वाभ्युदयमोक्षार्थं क्रियमाणः षट्कायसमारम्भः खलु अबोधिम-

जीव के लिये यह अकेला पृथिवीकाय का समारभ ही अहित का कर्त्ता और मोक्ष के मार्ग से वचित रखनेवाला कहा गया है तो भला किस कार्य में षट्काय के जीवों का समारभ होता है, उस कार्य से अथवा उस प्रकार के समारभ से जीवों को स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का लाभ कैसे हो सकता है ? अर्थात् किसी तरह नहीं हो सकता।

जो मनुष्य परिवदन मानन और पूजन के निमित्त तथा जाति और मरण के मोचन के निमित्त एव दु'खो के विनाश करने के निमित्त पृथिवीकाय आदि का समारभ करते है, वे उसका विपरीत ही फल भोगते हैं यह बात अच्छी तरह से प्रकट की जा चुकी है। क्यों कि प्रतिमापूजा बोध एव हित प्राप्ति के लक्ष्य को लेकर के ही की जाती है -परन्तु इस लक्ष्य की सिद्धि न होकर उससे उल्टा कर्त्ता जीव अबोध एव अहित का प्रापक ही होता है ऐसा श्री महावीर प्रभु का कथन है। फिर भी इसके पक्षपाती जन इस बात पर ध्यान न देकर शास्त्र विरुद्ध ही कथन करते है-वे यह कहते हैं " कि इस प्रतिमापूजन में माना कि

માર્ગથી દૂર રેખી દેનાર બતાવવામા આવ્યો છે ત્યારે કયા કાર્યમા ષટ્કાયના જીવોનો સમારભ હોય છે, તે કાર્યથી અથવા તો તે જાતના સમારભથી જીવને સ્વર્ગ અને અપવર્ગ (મોક્ષ) નો લાભ કેવી રીતે સભવી શકે તેમ છે ? એટલે કે કોઇ પણ કાળે જીવને આ કાયથી સ્વર્ગ કે મોક્ષનો લાભ થઇ શકતો નથી

જે માણસ પરિવદન, માનન અને પૂજનના માટે તેમજ જાતિ અને મરણના મોચન માટે અને દુખોના વિનાશ માટે પૃથ્વિકાય વગેરેનો સમા રભ કરે છે, તેઓ તેનુ ઉલટુ ફળ ભોગવે છે આ વાત સારી રીતે સમ જાવવામા આવી છે, કેમકે પ્રતિમા પૂજા બોધ તેમજ હિત પ્રાપ્તિના લક્ષ્યને લઇને જ કરવામા આવે છે પણ આ લક્ષ્યની સિદ્ધિ ન થતા તેનાથી સાવ વિપરીત કર્તા જીવ અબોધ અને અહિતને મેળવે છે એવુ જ શ્રી મહાવીર પ્રભુએ કહ્યુ છે આ ય પ્રતિમા પૂજાના કેટલાક તરફદારીઓ આ વાતને લક્ષ્યમા ન રાખતા શાસ્ત્ર વિરૂદ્ધ જ કથનને વળગી રહે છે તેઓ આ પ્રમાણે કહે છે

वर्तमानानागतभेदेन प्रत्येक त्रैविध्ये नवधा भवति । नवविधस्यापि पृथिवीकाय समारम्भणस्य मनोवाक्काययोगभेदेन प्रत्येक त्रैविध्ये सप्तविंशतिर्भङ्गा भवन्ति । एवं विधपृथिवीकायसमारम्भप्रवृत्तः खलु षट्कायारम्भसंपातजन्यघोरतरदुरितार्जनेन दुरन्तसंसारदावानलज्वालान्तःपात माप्यानन्तनरकनिगोदादिदुःखमनुभवन् न कदाचित् कल्याण शाश्वतसुखप्रद मोक्षमार्गं प्राप्नोतीतिभाव ॥

भगवता पृथिवीकायसमारम्भणवदप्कायादिसमारम्भणमप्यहिताय बोधये च भवतीत्यपि तत्रैव प्ररूपितम् । यत्रैकस्य पृथिवीकायस्य समारम्भणे सम्यक्त्व

के भेद से तीन प्रकार का है-इसके अतीत और अनागत काल के भेद से तीन ३ प्रकार का और हो जाते हैं इस प्रकार यह तीनों कालों की अपेक्षा से ९ प्रकार का है। इन नव प्रकारों के साथ-मन वचन और काय इन तीनो का गुणा करने से यह २७ प्रकार का माना गया है इस प्रकार त्रिकरण और त्रियोग के सबध से २७ प्रकार के इस पृथिवीकाय के समारभ में प्रवृत्त जीव षट्काय के आरभ के सपात जन्य घोरतर पापों के अर्जन से दुरन्त ससार रूपी दावानल की ज्वाला के मध्य में निमग्न बन अ त में अनन्त नरक निगोदादिकों के दुःखो का अनुभव करता हुआ कभी भी निज कल्याण का भोक्ता एव शाश्वत सुख को प्रदान करने वाले मोक्ष के मार्ग का पथिक नहीं बन सकता है पृथिवी काय के समारम्भ की तरह अप्काय आदि का समारभ भी इस जीवात्मा को सदा अहितकारी और अबोध का दाता है यह बात भी वहाँ पर (आचाराग सूत्र में) भगवान ने कही है अब विचारिए-जब

ભેદો થઇ બધ્ય છે આ રીતે આ ત્રણે કાળોની અપેક્ષાએ નવ પ્રકારનો છે આ નવ પ્રકારોની સાથે મન, વચન અને કાય અને ત્રણેનો ગુણાકાર કરવાથી આ ૨૭ પ્રકારનો માનવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગના સબધથી ૨૭ પ્રકારના આ પૃથ્વિકાયના સમારભમા પ્રવૃત્ત જીવ ષટકાયના આરભના સ પાત જન્મ ઘોરતર (ભયકર) પાપોને કારણે દુરત સસાર રૂપી દાવાનલના અગ્નિમા પડીને છેવટે અનત નરક નિગોદ વગેરે દુ ખોને અનુ ભવતો કદ પિ પોતાના કલ્યાણનો ભોકતા થઇને અને શાશ્વત-સુખને આપનાર મોક્ષ મા ર્ગનો પથિક (વટેમાર્ગુ) બની શકતો નથી પૃથ્વિકાયના સમાર ભની જેમ અપ્કાય વગેરેનો સમાર ભ પણ આ જીવાત્મા માટે હમેશા અહિતકારી અને અબોધ (અજ્ઞાન) આપનારો છે આ વાત પણ આચારાગ સૂત્રમા ભગવાને કહી છે હવે આટલુ તો આપણે પણ સમજી શકીએ છીએ કે જ્યારે જીવના માટે ફકત પૃથ્વિકાયનો સમાર ભ જ જ્યારે અહિત કરનાર અને મોક્ષના

समारभमाणः अन्यान् अनेकरूपान् प्राणान् विहिंसति । एषः=पृथिवीशस्त्रसमारम्भः खलु निश्चयेन ग्रन्थः=ग्रथ्यते=बध्यते जीवोऽनेनेति ग्रन्थः, अष्टविधकर्मबन्धः, बन्धजनकत्वाद् ग्रन्थ इत्युच्यते । तथा-एष मोहः विपर्यास वीपरीतज्ञानरूप इत्यर्थ तथा-एष मारः=निगोदादिमरणरूपः । तथा-एष खलु नरकः-नारक जीवाना दशविधयातनास्थानम् । इत्यर्थम्-एतदर्थं कर्मबन्ध-मोह मरण-नरक-रूप घोर दुःखफलं प्राप्य पुन पुनरेतदर्थमेव लोकः=अज्ञानवशवर्ती जीवः गृद्धः-लिप्सुरस्ति । यद्यपि विषयभोगासक्तो लोक शरीरादिपरिपोषणार्थं परिवन्दनमाननपूजनार्थं जातिमरणमोचनार्थं दुःखप्रतिघातार्थं च पृथिवी-शस्त्रमारम्भ करोति, तथापि तत्फल कर्मबन्धमोहमरणनरकरूपमेव लभते, अतः पृथिवीकर्मसमारम्भस्य तदेव फल भवतीति भाव' । तदेव प्रवचनसिद्धमरूपण

कराने वाला होने से ग्रन्थस्वरूप, विपरीत ज्ञान का जनक होने से मोह-रूप, निगोदादि जीवों का इस में मरण होता है-इसलिये मार स्वरूप तथा नारकियो की दश प्रकार की यातना का हेतु होने से यह नरकरूप माना गया है। इस प्रकार यह जीव इस पृथिवीकाय के समारभरूप शस्त्र के फलस्वरूप कर्मबन्ध, मरण और नरकरूप घोरतर दुःखों को भोगता हुआ भी अज्ञान के आधीन होकर उसी शस्त्र के प्रयोग करने का फिर भी अभिलाषी हो रहा है। यद्यपि विषय भोगों में आसक्त बना हुआ यह जीव शरीर आदि की पुष्टि परिवदन, मानन, पूजन एव जाति और मरण के मोचन के लिये तथा दुःखो के विनाश के लिये पृथिवीकाय के समारभरूप शस्त्र का प्रयोग करता है-परन्तु फिर भी इसका यह कर्मबन्ध, मोह, मरण, नरकरूप फल का ही भोक्ता बनता

જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોનો બંધ કરાવનાર હોવા બદલ ગ્રન્થ સ્વરૂપ, વિરુદ્ધ જ્ઞાનને ઉત્પન્ન કરનારૂ હોવાથી મોહ રૂપ, નિગોદ વગેરે જીવોનુ આમા મરણ થાય છે માટે મર સ્વરૂપ તેમજ નારકીઓની દશ પ્રકારની યાતનાનુ કારણ રૂપ હોવાથી આ નરક રૂપ માનવામા આવ્યુ છે આ રીતે આ જીવ આ પૃથ્વિકાયના સમારભ રૂપ શસ્ત્રના ફળ સ્વરૂપ કર્મબંધ, મરણ અને નરક રૂપ ઘોરતર દુ ખોને ભોગવવા છતા પણ અજ્ઞ નવરા થઈને તે જ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરવા માટે રૂની તૈયાર થઇ રહ્યો છે ને કે વિષય ભોગોમા આસક્ત બનેલો આ જીવ શરીર વગેરેની પુષ્ટિ પરિવદન, માનન, પૂજન અને જાતિ મરણના મોચન માટે તેમજ દુ ખોને દૂર કરવા માટે પૃથ્વિકાયના સમારભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરે છે પણ છતા યે તે કર્મબન્ધ, મોહ, મરણ અને નરક રૂપ ફળને ભોગવનાર જ બને છે એટલા માટે આપણે ચોક્કસ કહી શકીએ તેમ છીએ

हित नोत्पादयति, प्रत्युत बोधि नरामरशिवसुखरूप हित च सम्यग् जनयतीति, तदेतत् साक्षात् शास्त्रविरुद्धमिति ।

किं च आचाराङ्गसूत्रे पृथिवीकायसमारम्भस्य फलमुक्त्वा भगवता पुनरभिहितम्-' एस खलु गंथे, एस खलु मोहे एस खलु मारे, एस खलु णिरये, इच्चत्थं गढिए लोए, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ । ' (आ० १ अ० २ उ०)

छाया- एष खलु ग्रन्थः, एष खलु मोहः, एष खलु मारः, एष खलु नरकः इत्ययं गृद्धो लोकः, यदिमं विरूपरूपैः शस्त्रैः पृथिवीकर्ममसमारम्भेण पृथिवीशस्त्र

षट्काय का समारम्भ होता है-परन्तु यह समारम्भ स्वाभ्युदय एवं मुक्ति प्राप्ति के निमित्त ही किया जाता है-अतः यह कर्त्ता जीवों को न अहित का ही उत्पादक होता है और न बोधि के लाभ से वंचित रखता है प्रत्युत यह उन्हें बोधि एवं नर अमर और मोक्ष के सुख स्वरूप हित का प्रदान करने वाला ही होता है" सो इस प्रकार का उनका यह कथन साक्षात् शास्त्र से विरुद्ध ही है-यह बात आचाराग सूत्र से भली भांति पुष्ट होती है उसमें पूर्वोक्तरीति से पृथिवीकाय के समारभ का फल कह कर फिर यह कहा गया है—" एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु नरये, एच्चत्थ गढ्ढिए लोए,जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारभेण पुढविसत्थं समारभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ " (आ १ अ- २ उ-) यह पृथिवीकाय का समारभरूप शस्त्र निश्चय से जीवो को अष्टप्रकार के ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बन्ध

કે-આપણે થોડા વખત માટે આમ પણ માની લઈએ કે આ પ્રતિમા પૂજ્ય નમા ષટ્કાયનો સમારંભ થાય છે-પણ આ સમારંભ સ્વાભ્યુદય અને મુક્તિની પ્રાપ્તિ માટે જ કરવામા આવે છે એટલા માટે આ કર્તા જીવોના માટે અહિતનો ઉત્પાદક પણ હોતો નથી અને બોધિના લાભથી પણ તેઓને વંચિત રાખતો નથી આ તો તેમને બોધિ અને નર અમર અને મોક્ષના સુખ સ્વરૂપ હિતને આપનાર જ હોય છે પણ તેમનુ આ કથન પ્રત્યક્ષ રૂપમા શાસ્ત્રથી વિરૂદ્ધ જ છે આ વાત આચારાગ સૂત્રથી સારી પેઠે પુષ્ટ થઈ જાય છે તેમા પૂર્વોક્ત રીતથી પૃથ્વિકાયના સમારંભનુ ફળ બતાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—

'एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे एस खलु नरये, एच्चत्थं गढ्ढिए लोए जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि पुढविकम्मसमारंभेण पुढविसत्थं समारभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ " (आ १ अ २ उ)

આ પૃથ્વિકાયનુ સમારંભ રૂપ શસ્ત્ર ચોક્કસ જીવોના પ્રકારના

यत्तु-ब्राह्मीलिपिरित्र प्रतिमा वन्द्या, ' नमो बभीए लिवीए " इतिपद यद् व्याख्याप्रज्ञप्तेरादावुपन्यस्त तत्र ब्राह्मीलिपिरक्षरविन्यास', सा यदि श्रुतज्ञानस्याऽऽकारस्थापना, तदा तद्वन्द्यत्वे साकारस्थापनाया भगवत्प्रतिमाया. स्पष्टमेव वन्द्यत्वम् तुल्यन्यायादित्युक्तं, तन्मोहनीयकर्मोदयविलसितम्-

श्रुतज्ञानरूपस्य भावश्रुतस्य स्थापना-श्रुतज्ञानवत. श्रुतपठनादिक्रियावत' सा यादेश्चित्रादिक भवति, श्रुततद्वतोरभेदोपचारात् सा यादि श्रुतमुच्यते । स्थापनावश्यकस्य स्थापनाश्रुतस्य च तथैवानुयोगद्वारे भगवता वर्णनात्। यदेव लिपिः श्रुतज्ञानस्य स्थापनारूपत्व न प्राप्नोति । तस्मात् प्रतिमाया ब्राह्मीलिपिदृष्टान्त प्रदर्शनमुत्सूत्रप्ररूपणम् ।

किञ्च—प्रतिमापूजन की पुष्टि के लिये " नमो बभीए लिवीए " व्याख्याप्रज्ञप्ति की आदि में लिये हुए उस सूत्र के बल पर जो उसके पक्षपाती जन यह कहते हैं-" कि अक्षर विन्यासरूप ब्राह्मीलिपि जिस प्रकार श्रुतज्ञान के आकार की स्थानपारूप होकर वन्द्य-वन्दनीय मानी गई है उसी प्रकार साकार स्थापनारूप भगवान की प्रतिमा में भी वन्दनीयता स्पष्ट ही है " सो यह कथन विचार करने पर ठीक नहीं बैठता है।

तथाहि— श्रुतज्ञानरूप भावश्रुत की स्थापना-श्रुतज्ञानसपन्न, और श्रुत के पठन की क्रिया विशिष्ट ऐसे जो साधु आदिजन हैं उनके चित्र आदि स्वरूप पडती है अर्थात् श्रुतज्ञानी सोधु आदि के चित्रस्वरूप ही श्रुतज्ञानरूप भावश्रुतकी स्थापना होती है। ब्राह्मीलिपि अक्षर विन्यास है। वह श्रुतज्ञान की स्थापना है। यहां श्रुतज्ञानी साधु आदि को जो

અને બીજુ પણ કે-પ્રતિમા પૂજનની પુષ્ટિ માટે " નમો બભીએ-લિવીએ " વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિની શરૂઆતમા આવેલા આ સૂત્ર મુજબ જે તેની તરફદારી કરનારા માણસો આમ કહે છે કે " અક્ષર વિન્યાસ રૂપ બ્રાહ્મિ લિપિ જેમ શ્રુતજ્ઞાનના આકારની સ્થાપના રૂપ થઈને વન્દ્ય-વદનીય માનવામા આવી છે, તેમજ આકાર-સ્થાપના રૂપ ભગવાનની પ્રતિમામા પણ વદનીયતા સ્પષ્ટ દેખીતી વાત જ છે પરતુ આ કથનનો પણ વિચાર કર્યા બાદ યોગ્ય લાગતું નથી તેમજ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાન સપન્ન અને શ્રુતના પઠનની ક્રિયા વિશિષ્ટ એવા જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેમના ચિત્ર વગેરે સ્વરૂપ હોય છે એટલે કે શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેના સ્વરૂપ જ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના હોય છે બ્રાહ્મિ-લિપિ અક્ષર વિન્યાસ છે તે શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના છે અહીં શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેને જે ભાવશ્રુત રૂપ કહેવામા આવ્યો છે તે શ્રુતજ્ઞાન

पराः सर्वदोषनिर्मुक्तं शुद्धमद्वितीयमनवद्यं जैनधर्मं सावद्यपूजोपदेशेन कुप्रावचनिकोपमेयं कुर्वन्तः संसारदावानले जनान् पातयन्तः स्वयं च मोहनीयकर्मोदयवशादन्धा इव सन्मार्गतो निपतन्तः स्वात्मानमहितेन मिथ्यात्वेन च पुनः पुनः संयोजयन्ति। यदि मृगतृष्णाऽपि केषांचित् पिपासाकुलानां स्वच्छजलधारावाहिनी भवेत्, तदा प्रतिमापूजापि तेषां द्रव्यलिङ्गिनां परिणामशुद्धिसंपादिनी अष्टविधकर्मदलनी नरामरशिवसुखविधायिनी भवेदिति भावः।

है। अतः प्रतिमापूजन का उपदेश निश्चित है कि प्रवचनमार्ग से विरुद्ध है। इस विरुद्ध प्ररूपणा करने में तत्पर मनुष्य सर्व दोषों से रहित, शुद्ध और अद्वितीय एवं अनवद्य इस जैनधर्म को सावद्य पूजा के उपदेश से कुप्रावचनिक की तरह कलङ्कित-सदोष कर संसाररूपी दावानल में भोले भाले प्राणियों को डाल रहे हैं और स्वयं भी मोहनीय कर्म के उदय से अन्ध की तरह बन कर सन्मार्ग से विमुख होते हुए अपनी आत्मा को अहित और मिथ्यात्व के कलङ्क से कलुषित कर रहे हैं। अरे-कहीं मृगतृष्णा से भी प्यासे व्यक्तियों की प्यास बुझती है? यदि नहीं, फिर मृगतृष्णा तुल्य इस प्रतिमा पूजन से कर्त्ता की सम्यक्त्व और हित की प्राप्ति होने रूप प्यास कैसे बुझ सकती है-सोचो। हा! यदि ऐसा होता कि मृगतृष्णा स्वच्छजल की धारा बहाकर प्यासे प्राणियों की तृषा को शांत करती-तो यह प्रतिमा पूजन भी द्रव्यलिङ्गियों के परिणामों में शुद्धि करती हुई उनके अष्टकर्मों को दलने वाली और उन्हें नर, अमर एवं शिवसुख प्रदान करने वाली भी हो सकती।

કે પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ પ્રવચન માર્ગથી વિરૂદ્ધ છે આ જાતની વિરૂદ્ધ પ્રરૂપણા કરવામા તત્પર માણસ બધા દોષોથી રહિત, શુદ્ધ અદ્વિતીય અને અનવદ્ય આ જૈન ધર્મને સાવદ્ય પૂજાના ઉપદેશથી કુપ્રાવચનિકની જેમ કલંકિત દોષયુક્ત બનાવીને સંસાર રૂપી દાવાનલમા ભોળા પ્રાણીઓને નખી રહ્યો છે અને જાતે પણ મોહનીય કર્મના ઉદયથી આંધળાની જેમ થઈને સન્માર્ગથી દૂર થતા પોતાના આત્માને અહિત અને મિથ્યાત્વના કલંકથી કલુષિત કરી રહ્યો છે મૃગજળથી પણ કોઈ દિવસે તરસ્યા માણસોની તરસ મટી શકી છે? જો આવું નથી તો પછી મૃગજળ જેવી આ પ્રતિમા પૂજનથી કર્ત્તાની સમ્યક્ત્વ અને હિતની પ્રાપ્તિ થવા રૂપ તરસ કેવી રીતે મટી શકે તેમ છે જોમૃગજળ નિર્મળ પાણીનો ઝરો થઈને તરસ્યા પ્રાણીઓની તરસ મટાડી શકત તો આ પ્રતિમા પૂજા પણ દ્રવ્યલિંગિઓના પરિણામોમા શુદ્ધિ કરનારી તેમના આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અને નર, અમર અને શિવ-સુખ આપનારી ?

चाराङ्गादिक मतिपूर्णयोप कण्ठोष्ठविप्रमुक्त पठितमत साध्वादेस्तदर्थज्ञानाभावे सति द्रव्यश्रुतत्व भवति, तथैवानुयोगद्वारे द्रव्यश्रुतस्य वर्णनात्। वर्णसकेतरूपा लिपिस्तु न शब्दात्मिका, यतो वर्णस्यैवोच्चारणमुपपद्यते, न तु तत्सकेतस्य लिपिगत पुस्तकादेस्तु श्रुत शिक्षित यावद् वाचनोपगत न भवितुमर्हति अतस्तस्य द्रव्यश्रुतत्व न सगच्छति कथ पुनस्तद्गतत्रिपेस्तत्सभवः ? कथमपि नहि।

किं च-द्रव्यश्रुतस्य वन्ध्यत्वमेव नास्ति, अनुपयुक्तत्वाच्चरणगुणशून्यत्वाच्च, तस्माद् भावश्रुतस्यैव वन्ध्यत्वप्राप्तौ द्रव्यश्रुतनमस्कारकल्पन भ्रान्तिमूलकमेव। 'नमो बभीए लिवीए' अस्यायमर्थ'-वर्णात्मकभावसकेतरूपा लिपिर्ब्राह्मीलिपिः

प्रकार द्रव्यश्रुत का वर्णन अनुयोगद्वार में किया गया मिलता है। अकार आदि वर्णरूप से सकेतित लिपि मे शब्दात्मकता आभी नही सकती है-क्यो कि वर्ण का ही उच्चारण होता है-उसके सकेत का नही। लिपियुक्त पुस्तकादि में भी वाचना आदि कुछ नही होता है। क्यों कि वह जड है-चेतन में ही ये वाचना पृच्छना आदि होते है। अतः उस में द्रव्यश्रुतता मानना सर्वथा अयुक्त है इसलिये यह निश्चित होता है कि अकार आदि वर्णरूप से सकेतित लिपि में और इस लिपि विशिष्ट पुस्तकादिक में द्रव्यश्रुतता किंचित मात्र भी सभवित नही है।

किंच—अनुपयुक्त होने से और चरणगुण शून्य होने से द्रव्यश्रुत में बधता आ ही नही सकती है। भावश्रुत में ही उपयोग सहित और चरणगुण युक्तता होने से बदता आती है-अत द्रव्यश्रुत मे नमस्कार करने की कल्पना करना केवल भ्रान्तिमूलक ही है "नमो बभीए

આ રીને દ્રવ્યશ્રુતનુ વર્ણન અનુયોગ દ્વારમા કરવામા આવ્યુ છે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા શબ્દાત્મકતા આવી શકે તેમ નથી કેમકે ઉચ્ચા રણ તો દ્રવ્યનુ જ થાય છે, તેના સ કેતનુ નહિ લિપિ યુક્ત પુસ્તકો વગેરેમા પણ વાચના વગેરે કઈ જ હોતુ નથી કેમકે તે જડ છે, ચેતનમા જ વાચના પૃચ્છના વગેરે થાય છે એથી તેમા દ્રવ્યશ્રુતતા માનવી આવ અયોગ્ય છે એથી એ વ ત ચોકકસ થાય છે કે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા અને આ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તક વગેરેમા દ્રવ્યશ્રુતતા થોડી પણ સ ભવિત નથી

અને બીજી પણ કે-અનુપયુકત હોવાથી અને ચરણગુણ શૂન્ય હોવાથી દ્રવ્યશ્રુતમા બધતા આવી જ રહતી નથી ભાવશ્રતમા જ ઉપયોગ સહિત અને ચરણગુણ યુક્તતા હોવાથી વદના આવે છે એટલા માટે દ્રવ્યશ્રુતમા નમસ્કાર કરવાની કલ્પના કરવી ભ્રાતિમૂલક જ છે "नमो बभीए लिवीए" આનો અર્થ

यत्तु-अभयदेवीयवृत्तौ सज्ञाक्षरस्य द्रव्य श्रुत नमस्कुर्वताऽ-' णमो बभीए लिवीए ' इत्युक्त तद् भ्रान्तिमूलकम् पुस्तकवर्तिन्या अकारादिवर्णसकेतरूपाया लिपेर्द्रव्यश्रुतत्व न सभवति यत श्रुत नाम द्वादशाङ्गीरूपमर्हत्प्रवचन शास्त्र यस्य कस्यचिज्जीवस्य शिक्षित स्थित जित यावद् वाचनोपगत भवति स जन्तुस्तत्र वाचनामच्छनादिभिर्वर्तमानोऽपि श्रुतोपयोगाभावाद्वागममाश्रित्य द्रव्यश्रुतम्, आ

भावश्रुतरूप कहा गया है-वह श्रुतज्ञान और श्रुतवान में अभेद के उपचार से ही कहा गया समझाना चाहिये। इसी रूप से ही भगवान ने अनुयोग द्वार में स्थापना आवश्यक और स्थापना श्रुत का कथन किया है। अत. लिपि में भावश्रुत की कल्पना से श्रुतज्ञान की स्थापना मानना कथमपि युक्ति सगत नहीं है। इसी प्रकार लिपि में द्रव्यश्रुतता भी नही आती है। क्यो कि द्वादशागीरूप अर्हत प्रवचन का नाम श्रुत है। श्रुतज्ञान का ज्ञाता जब उसमे अनुपयुक्त अवस्थानवाला है। तब वही आगम की अपेक्षा द्रव्यश्रुत कहा जाता है। सज्ञा अक्षर रूप आकृति को द्रव्यश्रुत नहीं कहा है। इस कथन से इस बात की पुष्टि होती है कि-अभयदेव विरचित वृत्ति मे " णमो बभीए लिवीए " इस पद का अर्थ सज्ञा अक्षररूप द्रव्यश्रुत परक मानकर जो नमस्कार किया गया है -वह भ्रान्तिमूलक है, क्यो कि पुस्तक में रही हुई सकेतित अकार आदि वर्ण की आकृति मे द्रव्यश्रुतता सभवित नही होती है। वाचना, पृच्छना आदि से अधिगत श्रुत मे अनुपयुक्तज्ञाता ही द्रव्यश्रुत है इसी

અને શ્રુતવાનમા અભેદોપચારથી જ કહેવાયેલો સમજવો જોઇએ આ રૂપથી જ ભગવાને અનુયોગદ્વારમા સ્થાપના આવશ્યક અને સ્થાપના શ્રુતનુ કથન કર્યું છે એટલા માટે લિપિમા ભાવશ્રુતની કલ્પનાથી શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના માનવી કોઈ પણ રીતે યોગ્ય નથી આ પ્રમાણે જ લિપિના દ્રવ્યશ્રુતતા પણ આવતી નથી કેમકે દ્વાદશાગી રૂપ અર્હંત પ્રવચનનુ નામ શ્રુત છે આ શ્રુતજ્ઞાનનો જ્ઞાતા જ્યારે તેમા અનુપયુક્ત અવસ્થાવાળો હોય છે ત્યારે તે આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્યશ્રુત કહેવાય છે સજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિને દ્રવ્યશ્રુત કહી નથી આ કથનથી આ વાતની પુષ્ટી થાય છે કે અભયદેવ વિરચિત વૃત્તિમા " णमो बभीए लिवीए " આ પદનો અર્થ સજ્ઞા અક્ષર રૂપ દ્રવ્ય શ્રુતપરક માનીને જે નમસ્કાર કરવામા આવ્યા છે તે ભ્રાતિમય છે, કેમકે પુસ્તકમા રહેલી સકેતિત અકાર વગેરે વર્ણની આકૃતિમા દ્રવ્યશ્રુતતા સભવિત નથી હોતી વાચના, પૃચ્છના વગેરેથી અધિગત શ્રુતમા અનુપયુક્ત જ્ઞાતા જ શ્રુત છે

भावलिपिं प्रति समुपजातभक्तिः श्रीसुधर्मा स्वामी लिपिज्ञानस्य माहात्म्य प्रकटयन् भावश्रुत मनि भावलिपे' कारणतयाऽभ्यर्हितत्वेन तत पूर्वं भावलिपिवन्दन कृतवान्, तत्पश्चाद् भावश्रुत नमस्कुर्वन्नवादीत् ' नमः सुयस्स ' इति ।

यत्तु-अभयदेवसूरिणा स्वकृतटीकायामुक्तम् ' जिणपडिमाण अच्चण करेइ ' त्ति एकस्या वाचनायामेतावदेव दृश्यते । वाचनान्तरे तु-' ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिय मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जिणघर अणुपविसइ २ त्ता, जिणपडिमाण

समूहरूप श्रुत को लिपिबद्ध करने की इच्छा से श्री सुधर्मास्वामी कि जिन की भक्ति श्रुतरूप भावलिपि के प्रति जागृत हुई है लिपिज्ञान के माहात्म्य को प्रकट करते हुए भावश्रुत को नमस्कार करने के पहिले भावलिपि को ही नमस्कार करते है क्यों कि भावश्रुत के प्रति भाव लिपि को ही कारणता है, और इसी निमित्त से यह उसकी अपेक्षा पूज्य मानी गई है भावलिपि को नमस्कार करने के पश्चात् ही उन्हो ने " नम-सुयस्स " भावश्रुत को नमस्कार इस सूत्र द्वारा किया है। " जिणपडिमाण अच्चण करेइ " इस पाठ को लेकर जो टीकाकार अभयदेव सूरि ने जिनप्रतिमा कि पूजन करने की बात कही है-सो ठीक नही है। क्यों कि मालूम होता है, कि उन्हें मूल पाठ का निश्चय ही नही हुआ है-कारण कि एक वाचना मे तो यही पाठ मिलता है-तब कि दूसरी वाचना में " ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमई, २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छइ, २

પ્રતિપાદન કરનારા શબ્દોના સમૂહરૂપ શ્રુતને લિપિબદ્ધ કરવાની ઈચ્છાથી શ્રીસુધર્મા સ્વામી-કે જેમની શ્રુતબોધક ભાવલિપિ પ્રત્યે ભક્તિ ઉત્પન્ન થઇ છે-લિપિ જ્ઞાનના માહાત્મ્યને પ્રગટ કરતા ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કરતા પહેલા ભાવલિપિને જ નમસ્કાર કર્યા છે કેમકે ભાવશ્રુત પ્રત્યે ભાવલિપિ જ કારણરૂપ છે અને આ કારણથી જ આ તેના કરતા પૂજ્ય માનવામા આવી છે ભાવલિપિને નમસ્કાર કર્યા બાદ જ તેમણે " नम सुयस्स " આ સૂત્ર વડે ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કર્યા છે " जिणपडिमाण अच्चण करइ " આ પાઠના આધારે જે ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ જીનપ્રતિમાની પૂજાની વાત કહી છે તે યોગ્ય નથી કેમકે તેમને મૂળ પાઠનો નિશ્ચયજ થયો નથી એમ જણાઇ આવે છે કારણ કે એક વાચનામા તો એ જ પાઠ મળે છે ત્યારે બીજી વાચનામા—

(ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमई २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छई, २ जिणघर अणुपविसइ, जिणपडिमाण आलोए

ब्राह्मीशब्दस्य भाषार्थकत्वात्, उक्तं चामरकोशे-'ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग् वाणी सरस्वती' इति। यद्वा-अष्टादशप्रकारा लिपि श्रीमन्नाभेयजिनेन ब्राह्मीनामिका स्वसुता पदर्शिता तस्मात् सा लिपिर्ब्राह्मीत्युच्यते। लिपिज्ञानस्य श्रुतज्ञानोपयोगितया भावश्रुतहेतु लिपिज्ञानरूप भावलिपिं वन्दमान श्रीसुधर्मा स्वामी माह-' नमो बंभीए लिवीए ' इति। श्रुतज्ञान प्रति लिपिज्ञान कारण, यतो लिपिज्ञानेन तत्सकेतितशब्दस्मरण, ततस्तदर्थज्ञान जायते। तस्मादु भगवदुक्तार्थस्य प्रतिबोधनाय तद्बोधकशब्दजातरूप श्रुत लिपिरूढ कर्तुकाम' श्रुतबोधिका

लिवीए " इसका अर्थ इस प्रकारसे सगत बैठता है-अकार आदि वर्णात्मक भाषा के सकेतरूप लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि है-ब्राह्मी शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अमर कोष में भी यही बात कही है-" ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग् वाणी सरस्वती "। अथवा-श्री आदिनाथ प्रभु ने अपनी ब्राह्मी नाम की पुत्री को १८ प्रकार की लिपि कही थी इसलिये भी उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि इस प्रकार से पड़ गया है। श्रुतज्ञान में उपयोगी होने से इस लिपि के ज्ञान को भावश्रुत का कारण माना है। इसलिये लिपि ज्ञानरूप भाव लिपि को वन्दन करते हुए श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं " नमो बंभीए लिवीए "। श्रुतज्ञान के प्रति लिपि ज्ञान कारण है-क्यों कि लिपि के ज्ञान से अकारादि वर्णात्मक लिपि रूप से सकेतित उस उस शब्द का स्मरण होता है और उससे उसके अर्थ का ज्ञान होता है। अत. भगवान द्वारा प्रतिपादित अर्थ को समझाने के लिये उस अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्दों के

આ પ્રમાણે સુસગત બેસી શકે છે કે-અકાર વગેરે વર્ણાત્મક ભાષાના સ કેત રૂપ લિપિનુ નામ બ્રાહ્મી લિપિ છે બ્રાહ્મી શબ્દ ' ભાષા ' આ અર્થમા પ્રયુકત થયેા છે અમરકેાશમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી છે કે " બ્રહ્મી તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાગ્વાણી સરસ્વતી " અથવા તેા શ્રી આદિનાથ પ્રભુએ પેાતાની બ્રાહ્મી નામની પુત્રીને અઢાર પ્રકારની લિપિઓ બતાવી હતી એટલા માટે પણ આ લિપિનુ નામ બ્રાહ્મી લિપિ પડી ગયુ છે શ્રુતજ્ઞાનમા ઉપયેાગી હેાવાથી આ લિપિના જ્ઞાનને ભાવશ્રુતનુ કારણ માનવામા આવ્યુ છે એથી લિપિજ્ઞાન રૂપ ભાવલિપિને વ દન કરતા શ્રીસુધર્માસ્વામી કહે છે કે "नमो बंभीए लिवीए" શ્રુતજ્ઞાનના પ્રતિ લિપિજ્ઞાન કારણ છે કેમકે લિપિના જ્ઞાનથી અકાર વગેરે વર્ણાત્મક લિપિ રૂપથી સ કેતિત તે શબ્દનુ સ્મરણ થાય છે અને તેનાથી તેના અર્થનુ જ્ઞાન થાય છે એટલા માટે ભગવાન્દ્વારા પ્રતિપાદિત અર્થને સમજાવવા

तदनन्तर पुनः प्रतिमापूजकैः स्वीकृते-मूलपाठे-' तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ ' इति दृश्यते, 'नमेइ' इत्यत्र टीकाकारः-' निवेसेइ ' इतिलिखित्वा निवेशयतीत्यर्थ उक्तः', तेनात्र-मूलपाठस्य स्वस्वकपोलकल्पितत्व सि-यति, द्रौपद्याश्चरिते टीकाकृताऽभयदेवसूरिणा पुनरीदृशः पाठो लब्धः-

'ईसिं पच्चुन्नमति २त्ता, करयल० जाव कट्टु एव वयासी-नमोत्थु ण अरिहंताणं भगवंताणं जाव सपत्ताणं वदइ नमसइ २ जिणवराओ पडिनिक्खमइ' इति इम पाठ टीकाया लिखित्वा टीकाकार आह—

'तत्र वन्दते=चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन,नमस्यति=पश्चात् प्रणिधानादियोगेनेति वृद्धा' । न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे इति सूत्र-

---

में जैसा पाठ रचा है उसने उसी प्रकार मूल पाठ में जिन कल्पना का पाठ प्रविष्ट करके पाठ भेद कर दिया है। अतः स्वकपोलकल्पित होने से असली मूल पाठ का निश्चय ही नहीं होता है, द्रौपदी के चरित में टीकाकार अभयदेवसूरि को इस प्रकार का पाठ उपलब्ध हुआ-ईसिं पच्चुन्नमति २, करयल० जाव कट्टु एव वयासी-नमोत्थुण अरिहंताणं भगवंताणं जाव सपत्ताणं वदइ, नमसइ २, जिणवराओ पडिनिक्खमइ इति" पाठ को लिखकर उन्हों ने टीका की। वन्दते-नमस्यति पद के अर्थ का खुलासा करते हुए वे कहते है कि प्रसिद्ध चैत्यवंदन विधि के अनुसार नमन करना वदना और इसके बाद प्रणिधान आदि के योग से नमस्कार करना नमन है ऐसा सिद्धान्त वृद्धों का है। सूत्र मे जब द्रौपदी का प्रणिपात दण्डक मात्र चैत्यवदन कहा है-अर्थात् दण्ड की तरह प्रणाम करने रूप चैत्यवदन कहा गया है-तो इसी से यह

કર્યા ઉમેરો કરીને પા૦ ભેદ કરી નાખ્યો છે એટલા માટે સ્વકપોલકલ્પિત હોવા બદલ અસલ મૂળપાઠનો નિશ્ચય જ થઇ શકે તેમ નથી દ્રૌપદી ચરિતમા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિનો આ જાતનો પા૦ મળ્યો છે કે-(ईसिं पच्चुन्नमत्ति २, करयल० जाव कट्टु एव वयासी-नमोत्थुण अरिहंताण भगवंताण जाव सपत्ताण वदइ, नमसइ २, जिणवराओ पडिनिक्खमइ इति) આ પાઠને લખીને તેમણે ટીકા કરી છે ' वन्दते ' ' नमस्यति ' પદના અર્થનુ સ્પષ્ટીકરણ કરતા તેઓ કહે છે કે પ્રસિદ્ધ ચૈત્ય વદન વિધિ મુજબ નમન કરવુ વદના અને ત્યારપછી પ્રણિધાન વગેરેના યોગથી નમસ્કાર કરવો નમન છે, વૃદ્ધોનો આ જાતનો સિદ્ધાન્ત છે સૂત્રમા જ્યારે પ્રણિપાત દંડક માત્ર ચૈત્યવદન કહ્યુ છે ત્યારે એનાથી જ આ વાત સિદ્ધ થઇ જાય છે કે બીજા શ્રાવકોને પણ આ

आलोए पणाम करेइ २ त्ता, लोमहत्थय परामुसइ २ त्ता, एव जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्व जाव धूव डहइ ' त्ति । तेन मूलपाठस्य निश्चयस्तस्य नाभूदिति विज्ञायते ।

अत' पर च-' वाम जाणु अचेइ दाहिण जाणु धरणियलसि णिवेसेइ २ ' इति प्रतिमापूजकै स्वीकृतो मूलपाठस्तत्र वर्तते, टीकाकारस्तु-' दाहिण जाणु धरणीतलसि निहट्टु ' इति पाठ टीकाया विधिय निगदति-' निहट्टु ' निधत्य स्थापयित्वेत्यर्थ', ' णिवेसेइ ' इत्यत्र-' निहट्टु ' इति पाठभेद' कृतः । तेना प्येतद् विदित भवति-यस्य यादृश मनस्यभिरुचित स तादृशमिह मूलपाठ मर्पयति स्म इति ।

जिणघर अणुपविसइ जिणपडिमाण आलोए पणाम करेइ, २ लोमहत्थय परामुसइ, २ एव जहासूरियाभो जिनपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्व जाव धूव डहइ" त्ति यह पाठ मिलता है। इसके बाद "वाम जाणु धरणियलसि णिवेसेइ २" ऐसा पाठ मिलता है-और यही पाठ प्रतिमा पूजको को समत है। परन्तु टीकाकार श्री अभयसूरि ने "दाहिण जाणु धरणीतलसी निहट्टु ' ऐसा पाठ टीकामें रखकर ' निहट्टु ' इस पद की टीका "स्थापना करके" ऐसी की है। इस प्रकार "णिवेसेइ" की जगह ' निहट्टु ' ऐसा पाठ भेद किया गया है। इसी प्रकार प्रतिमा पूजको द्वारा स्वीकृत "तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलसि नमेइ" इस मूल पाठ में भी परिवर्तन "नमेइ" क्रिया पद में "निवेशयति" इस रूप से कर दिया है। इससे यह बात निश्चित होती है कि जिस के मन

पणाम करेइ, २ लोमहत्थय परामुसइ, २ एव ज०ा सूरियाभो जिनपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्व जाव धूव डहइ) त्ति,

આ પાઠ મળે છે ત્યારપછી "वाम जाणु धरणियलसि णिवेसेइ २" આ જાતનો પાઠ મળે છે અને એ જ પાઠ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીઓને માટે સમત રૂપ છે પણ ટીકાકારશ્રી અભયદેવસૂરિએ "दाहिण जाणु धरणीतलसी निहट्टु" આ જાતનો પાઠ ટીકામા કરીને "निहट्टु", આ પદની ટીકા-સ્થાપના કરીને આ પ્રમાણે કરી છે આ રીતે "णिवेसेइ" ના સ્થાને "निहट्टु" આ જાતનો પા० ભેદ કરવામા આવ્યો છે આ રીતે જ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીઓ વડે સ્વીકૃત (तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणीतलसि नमेइ) આ મૂળપાઠમા પણ "नमेइ" ક્રિયાપદમા "निवेशयति" આ જાતનુ પરિવર્તન કરી નાખ્યુ છે આથી આ વાતની ખાત્રી થાય છે કે જેના મનમા જેવો પાઠ ગમ્યો તેણે તે પ્રમાણે જ ફાવે તેમ પોતાની કલ્પ[illegible] પા०મા

नानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति अन्यथा सूर्याभदेवादिवक्तव्यताया बहूनां शस्त्रादिवस्तूनामर्चन श्रूयते इति तदपि विधेय स्यात् '।

अत्रेद यो यम्–' न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे' इत्यादि वाक्यसन्दर्भेण टीकाकारेणाभयदेवसूरिणा द्रौपद्या वन्दनमेव कृत न तु पूजनादिकमिति बोधयता तावानेव पाठः स्वीकृत इति । तस्माद् विधिरूपेण प्रतिमापूजनाय भगवतोऽर्हत आज्ञा न लभ्यते इति वादस्तावदास्ताम् , चरितानुवाद-रूपेणापि शास्त्रे भगवताऽर्हत्प्रतिमापूजन क्वापि नोक्तमिति सिद्धम् । एव चायमे-

है चरितानुवादरूप वाक्य में विधि और निषेध बोधकता सभवित नही होती है इसी ध्येय से " न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेध साधकानि भवन्ति " ऐसा माना जाता है नही तो फिर, सूर्याभदेव द्वारा जिस प्रकार बहुत शस्त्र आदि वस्तुओं का पूजन करना सुना जाता है उसी प्रकार प्रतिमा पूजकों के लिये भी इनका पूजन विधेय मान लेना चाहिये ।

भावार्थ—" न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवदनमभिहित सूत्रे " इत्यादि वाक्य के द्वारा टीकाकार अभयसूरि ने इतना ही पाठ स्वीकृत किया है कि द्रौपदी ने सिर्फ वदना ही की है, पतिमापूजन नही इसलिये इससे यह बात सिद्ध हो जाती है जब चरितानुवाद रूप से भी शास्त्र में कही भी भगवान ने अर्हंत की प्रतिमा का पूजन नही कहा है । तब विधिरूप से प्रतिमा पूजन के लिये भगवान अर्हंत की आज्ञा है ऐसी मान्यता कोरी कल्पनामात्र ही है । इस प्रकार स्थानक-

કાઇ પણ સ્થાને કહી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાકયના વિધિ અને નિષેધ બોધકતા સભવિત થતી નથી આ ધ્યેયથી (न च चरितानुवादवचनानि विधि निषेधसाधकानि भवन्ति) એમ માનવામા આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણા શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સભળાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઇએ

ભાવાર્થ—" न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवदनमभिहित सूत्रे " વગેરે વાકય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહિ એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે જ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમા કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કહ્યુ નથી ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હંતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા ફક્ત કલ્પનામાત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સપ્રદાયની આ માન્યતા

प्रमाण्यादन्यस्यापि श्रावकादेस्तावदेव वन्दितव्यं, चरितानुवादरूपत्वादस्य, इति । न चैत्यस्य मन्तव्यमित्यत्रान्वयः । द्रौपदी मणिपातदण्डकमात्र-दण्डवत्मणा ममात्ररूप चैत्यवन्दन-प्रतिमावन्दन कृतवतीत्यर्थं युक्तवाऽन्योपि श्रावक एतत्सूत्र प्रमाणमाश्रित्य तावदेव तत् मणिपातदण्डकमात्र वन्दन कुर्यादिति न मन्तव्यम्, तत्र कारणमाह ' चरितानुवादरूपत्वादस्य ' इति । अस्य एतत्सूत्रस्य चरितानुवादरूपत्वात् ज्ञातप्रदर्शकतया यथावृत्तस्य वृत्तचरितस्यानुवादरूपत्वात्, न तु भगवता ' जय चरे जय चिट्ठ ' इत्यादिवत् क्वचिदाज्ञा प्रदत्ता ।

तस्मादस्य विधिनिषेधबोधकत्व न समवतीत्याह-' न च चरितानुवादवच

घात भी सिद्ध हो जाती है कि अन्य श्रावकों को भी इसी प्रकार वन्दन नमन करना चाहिये-सो इस प्रकार का कथन ठीक नहीं है। कारण कि यह चरितानुवाद रूप है।

भावार्थ-कोई अन्य श्रावक जन ऐसा समझकर कि सूत्रमें जब द्रौपदी ने दण्डकी तरह होकर चैत्यवदन किया है तो इसी सूत्रकी प्रमाणता लेकर हमें भी इसी तरहसे प्रणाम करना चाहिये सो इस प्रकार की मान्यता उनकी ठीक नहीं है कारण कि यह चरित का ही अनुवादक है। चरितका अनुवादक वाक्य विधेयरूप से मान्य नहीं होता है। यह सूत्र चरित का अनुवादक रूप है-इसका यह भाव है कि यह वाक्य ज्ञात अर्थ का प्रदर्शक होने से पहिले जो जो बातें २ जिस २ रूपमें हो चुकी हैं उन सब का अनुवादक रूप है। " जय चरे जय चिट्ठे " इत्यदि सूत्र की तरह यह विधि वाक्य नहीं है। इसीलिये भगवान ने प्रतिमा के पूजन और वदना, नमन करने आदि की आज्ञा कहीं भी सूत्र में नहीं दी

પ્રમાણે જ વદન નમન કરવા જોઇએ તો આ જાતનુ કથન યોગ્ય નથી, કેમકે આ ચરિતાનુવાદ રૂપ છે

ભાવાર્થ—ગમે તે શ્રાવક આમ સમજીને કે સૂત્રમા જ્યારે દ્રૌપદીએ દડાકારે થઇને ચૈત્ય વદન કર્યું છે તો આ સૂત્રને જ પ્રમાણ સ્વરૂપ માનીને અમારે પણ આ પ્રમાણે જ પ્રણામ કરવા જોઇએ તો તેમની આ વાત પણ ઠીક કહી શકાય તેમ નથી, કેમકે આ ચરિતનો જ અનુવાદક છે ચરિતનુ અનુવાદક વાક્ય વિધેય રૂપમા માન્ય હોતુ નથી આ સૂત્ર ચરિતનો અનુવાદક રૂપ છે આનો ભાવ એ છે કે આ વાક્ય જ્ઞાત અર્થનો પ્રદર્શક હોવાથી જે જે વાતો જે રૂપમા થઈ ચૂકી છે તે બધાનુ અનુવાદક રૂપ છે-" જય चरे जय चिट्ठे " ઇત્યાદિ સૂત્રની જેમ આ વિધિવાક

नानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति अन्यथा सूर्याभदेवादिवक्तव्यताया बहूना शस्त्रादिवस्तूनामर्चन श्रूयते इति तदपि विधेय स्यात् '।

अत्रेद मो यम्–' न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे' इत्यादि वाक्यसन्दर्भेण टीकाकारेणाभयदेवसूरिणा द्रौपद्या वन्दनमेव कृत न तु पूजनादिकमिति बोधयता तावानेव पाठः स्वीकृत इति । तस्माद् विधिरूपण प्रति मापूजनाय भगवतोऽर्हत आज्ञा न लभ्यते इति नादस्तानदास्ताम् , चरितानुवाद-रूपेणापि शास्त्रे भगवताऽर्हत्प्रतिमापूजन क्वापि नोक्तमिति सिद्धम् । एव चायमे-

है चरितानुवादरूप वाक्य में विधि और निषेध बोधकता सभवित नहीं होती है इसी ध्येय से " न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेध-साधकानि भवन्ति " ऐसा माना जाता है नहीं तो फिर, सूर्याभदेव द्वारा जिस प्रकार बहुत शास्त्र आदि वस्तुओं का पूजन करना सुना जाता है उसी प्रकार प्रतिमा पूजकों के लिये भी इनका पूजन विधेय मान लेना चाहिये ।

भावार्थ—" न च द्रौपद्या. प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवदनमभिहितं सूत्रे " इत्यादि वाक्य के द्वारा टीकाकार अभयसूरि ने इतना ही पाठ स्वीकृत किया है कि द्रौपदी ने सिर्फ वदना ही की है, पतिमापूजन नहीं इसलिये इससे यह बात सिद्ध हो जाती है जब चरितानुवाद रूप से भी शास्त्र में कहीं भी भगवान ने अर्हंत की प्रतिमा का पूजन नहीं कहा है । तब विधिरूप से प्रतिमा पूजन के लिये भगवान अर्हत की आज्ञा है ऐसी मान्यता कोरी कल्पनामात्र ही है । इस प्रकार स्थानक-

કાઈ પણ સ્થાને કહી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાક્યમા વિધિ અને નિષેધ બોધ તા સભવિત થતી નથી આ ધ્યેયથી (न च चरितानुवादवचनानि विधि-निषेधसाधकानि भवन्ति) એમ માનવામા આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણા શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સભળાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઇએ

ભાવાથ—" न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवदनमभिहित सूत्रे " વગેરે વાકય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહિ એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે જ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમા કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કહ્યુ નથી ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હંતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા ફક્ત કલ્પના માત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સપ્રદાયની આ માન્યતા

तद्रूपः स्थानकवासिना सिद्धान्तः शास्त्रानुकूलः सत्य इति निर्णीयताम् । अर्हदिन्द नमपि द्रौपद्या न कृतमित्यग्रे समर्थयिष्यामः ।

किं च-प्रतिमापूजकानां प्रमाणभूते महानिशीथसूत्रेऽपि ' प्रतिमापूजायाः सावद्यतया तदर्थं जिनालयविधानं नात्र भवतीति मत्वा द्रव्यलिङ्गिभिः पृष्टेन कुवलयप्रभनाम्नाऽनगारेण निगदितं नात्रास्माकं वाङ्मात्रेणापि कार्यं" इति । तदेवमनेन भणतासता तीर्थङ्करनामगोत्र कर्मार्जितम् । एकभवावतारीकृतश्च भवोदधिः । ततस्तैः सर्वैरेकमत कृत्वा तस्य नामाचार्य इति नाम दत्त प्रसिद्धिंनीत च । इति प्रतिबोधितम् ।

वासी सम्प्रदाय की यह मान्यता निर्दोष एवं शास्त्रानुकूल और सत्य है कि अर्हंत की प्रतिमा बनाकर पूजना जैन जिनमार्ग से विपरीत मार्ग है । अर्हंत की प्रतिमा की वन्दना भी द्रौपदी ने नहीं की है इस बात को भी हम आगे प्रमाण देकर पुष्ट करेंगे ।

किञ्च—प्रतिमापूजकों द्वारा प्रमाणरूप से स्वीकृत महानिशीथ सूत्र में भी यही समझाया गया है कि प्रतिमापूजन स्वयं एक सावद्यकर्म है, उसके निमित्त जिनालय आदि बनवाना भी सावद्यकर्म है । ऐसा समझकर-कुवलयप्रभनामक आचार्य ने द्रव्य लिंगियों द्वारा पूछे जाने पर यही उत्तर दिया है कि ये सब सावद्यकर्म है, मैं अपने वचनों से भी इस विषय का जरा भी मंडन नहीं कर सकता हूं " इस प्रकार कहने वाले उन कुवलयप्रभनामक आचार्यने तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म उपार्जन करके एकभवावतारी बने । सावद्यकर्म निषेध करने वाले होने से

નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્રાનુકૂલ અને સત્ય છે કે અર્હંતની પ્રતિમા બનાવીને પૂજવી શાસ્ત્રવિહિત માર્ગથી ઉલટો માર્ગ છે અર્હંતની પ્રતિમાની વંદના પણ દ્રૌપદીએ કરી નથી, આ વાતને પણ અમે આગળ સપ્રમાણસિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કરીશું

અને બીજુ પણ કે-પ્રતિમા પૂજકો વડે પ્રમાણ રૂપે સ્વીકૃત મહાનિશીથ સૂત્રમા પણ એ જ વાત સમજાવવામા આવી છે કે પ્રતિમા પૂજન જાતે એક સાવદ્ય કર્મ છે તેના નિમિત્તે જીનાલય વગેરે બનાવવા તે પણ સાવદ્ય કર્મ છે એમ જાણીને જ કુવલયપ્રભ નામના આચાર્યે દ્રવ્યલિંગિઓ વડે પૂછાએલા પ્રશ્નના ઉત્તરમા આ પ્રમાણે જ કહ્યુ છે કે આ બધુ સાવદ્યકર્મ છે હું મારા વચનોથી પણ આ વિષયનુ જરાય પણ મંડન કરી શકુ તેમ નથી આ રીતે કહેનાર તે કુવલયપ્રભ નામક આચાર્યે તીર્થંકર નામ ગોત્રકર્મ ઉપાર્જન કરીને એકભવાવતારી બન્યા સાવદ્યકર્મ નિષેધ કરનાર હોવાથી તે [illegible] એ

भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कथयति-' अस्या ऋषभादिचतुर्विंशतिकायाः प्राक् अतीतकालेन याऽतीता चतुर्विंशतिका, तस्या मत्सदृश सप्तहस्ततनुर्धर्मनामा चरमतीर्थङ्करो बभूव तस्मिंश्च तीर्थङ्करे सप्ताश्चर्याणि अभूवन्। असयतपूजाया प्रवृत्तायामनेके साधुभ्यो गृहीतद्रव्येण स्वस्वकारितचैत्यनिवासिनोऽभूवन्, तत्रैको मरकतच्छविः कुवलयप्रभनामाऽनगारो महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यगणपरिवृत' समागात, तैर्वन्दित्वोक्तम्, तदेव तत्त्वमकरण प्रदर्श्यते, तथा हि—महानिशीथसूत्रे पञ्चमाध्ययने—

जहा ण भयव ! अह तुमंसिहाऽ एगवीसारत्तिय चाउम्पासिय पउजियताणमिन्हाण अणेगे चेइयालया भवंति नूण तज्झाणणत्थीए ता मीरउ अणुग्गहमन्हाण

उन चैत्यवासियो ने मिलकर उनका नाम 'सावद्याचार्य' रख दिया, और प्रसिद्ध भी कर दिया। जैसे-भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कहते हैं-इस ऋषभादि चौवीसी के पहले भूतकालमें जो चोवीसी होगई है उस चौवीसीमे मेरे जैसा सात हाथप्रमाण शरीर वाला धर्म श्री नामका अतिम तीर्थंकर हो गया है, उस तीर्थंकर के समयमे सात आश्चर्य हुए थे, उनमे "असयतपूजा" नामका एक आश्चर्य था। उस असयतपूजाकी प्रवृत्ति होनेपर बहुतसे साधु श्रावको के पैसो से अपने अपने बनवाये हुवे चैत्योमें निवास करते थे अर्थात् चैत्यवासी हो गये थे, वहा पर एक श्याम कांतिवाले कुवलयप्रभ नाम के मुनि महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यपरिवार सहित पधारे थे, उनको उन चैत्यवासियो ने वदना कर के जो कहा सो इस प्रकार है। जिस पाठ का यह कथानक है वह पाठ इस प्रकार है-

---

તેમનુ નામ "સાવદ્યાચાર્ય" એ પ્રમાણે રાખ્યુ અને પ્રસિદ્ધ પણ કર્યુ જેમકે ભગવાન્ શ્રી વર્ધમાનસ્વામી ગૌતમને કહે છે કે-આ ઋષભાદિ ચોવીસીના પહેલા ભૂતકાળમા જે ચોવીસી થઈ ગઇ છે તે ચોવીસીમા મારા જેવા સાત હાથ પ્રમાણ શરીરવાળા ધર્મશ્રી નામના છેલ્લા તીર્થંકર થઈ ગયા છે તે તીર્થંકરના સમયમા સાત આશ્ચર્યો થયા હતા, તેમા "અસયતપૂજા" નામનુ એક આશ્ચર્ય હતુ તે અસયત પૂજાની પ્રવૃત્તિ થઈ ત્યારે અનેક સાધુ-શ્રાવકોના પૈસાથી પોતપોતાના માટે બનાવરાવેલા ચૈત્યોમા વાસ કરતા હતા અર્થાત્ ચૈત્યવાસી થઇ ગયા હતા ત્યા એક શ્યામ વર્ણવાળા કુવલયપ્રભ નામના મુનિમહારાજ કે જેઓ મહા તપસ્વી, ઉગ્ર વિહારી હતા, તેઓ પોતાના શિષ્ય પરિવાર સહિત ત્યા પધાર્યા હતા તેમને તે ચૈત્યવાસીઓએ વદના કરીને જે કહ્યુ તે આ પ્રમાણે છે—

इहेव चाउम्मासिय । ताहे भणिय तेण महाणुभागेण – गोयमा ! जहा भो भो पियवए ! जइ वि जिणालए तहा वि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा । एव च समयसारपर तत्त जहट्ठिय अविपरीत पीसक भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंगीण साहुवेसधारीण मज्झे गोयमा ! आसकलिय तित्थयरनामगोय तेणं कुवलयप्पभेण, एगभवावसेसीकओ भवोयही ॥ इति ।

छाया-यथा खलु भगवन् ! यदि त्वमिहापि एकवर्षारात्रिक चातुर्मासिक मयो क्तणामिच्छया अनेके चैत्यालया भवन्ति नून । तद्ध्यानाज्ञप्त्या तस्मात् करोतु अनुग्रहमस्माकम् इहैव चातुर्मासिकम् । तदा भणित तेन महानुभागेन – गौतम ! यथा भो भो प्रियवदा' ! यद्यपि जिनालय , तथापि सावद्यमिद नाह वाङ्मात्रेणापि आचरामि । एव च समयसारवर तत्त्व यथास्थितम् अविपरीत निःशङ्क भणता तेषा मिथ्यादृष्टिलिङ्गिना साधुवेषधारिणा मध्ये गौतम ! आसकलित तीर्थ करनामकगोत्र तेन कुवलयप्रभेण एकभवावशेषीकृतो भवोदधि' ॥ इति

"जहा ण भयव ? जइ तुमभिहाइ एकवासारत्तिय चाउम्मासिय पउजियताणमिच्छाए अणेगे चेइयालया भवति नूण तज्झाणत्तीए, ता कीरउ अणुग्गहम्हाण इहेव चाउम्मासिय । ताहे भणिय तेण महाणुभागेण गोयमा ! जहा भो भो पियवए जइवि जिणालए तहा वि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा । एव च समयसारपर तत्त जहट्ठिय अविपरीत पीसक भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंगीण साहुवेसधारीण मज्झे गोयमा ! आसकलिय तित्थयरनाम गोत्त तेण कुवलयप्पभेण एगभवावसेसीकओ भवोयही । इति (महा निशीथ पञ्चम अध्ययन) इस सूत्रका भावार्थ इस प्रकार है–

हे भगवन् ! आप यहा एक वर्षारात्रिक चारमहिने ठहरे

"जहा ण भयव ! जइ तुमभिहाइ एकवासारत्तिय चाउम्मासिय पउजियताण मिच्छाए, अणेगे चेइयालया भवति नूण तज्झाणत्तिए ता कीरउ अणुग्गहम्माण इहेव चाउम्मासिय । ताहे भणिय तेण महाणुभागेण गोयमा । जहा भो भो पियवए जइवि जिणालए तहावि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा । एव च समयसारपर तत्त जहट्ठिय अविपरीत पीसक भाणमाणेण तेसि मिच्छदिट्ठिलिगीण साहुवेसधारीण मज्झे गोयमा ? आसकलिय तित्थयरनामगोत्त तेण कुवलयप्पभेण एगभवावसेसीकओ भवोयही । इति (महानिशीथ पञ्चम अध्ययन) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે [illegible]

हेभगवन् ! जइ यदि यथा खलु त्वम् एकवर्षारात्रिक चातुर्मासिक तिष्ठसि प्रयोक्तृणाम्=प्रवर्तकानाम् इच्छया-आज्ञया अनेके चैत्यालया नून भवन्ति=भविष्यन्ति, तत् तस्माद् निवासार्थमाज्ञामुपादाय इहैव चातुर्मासिक कुरु तावदस्माक मनुग्रह कुरु भवदीयाज्ञया बहवश्चैत्यालया भविष्यन्ति। ततश्चास्माकमुपकारः क्रियतामिति भाव' । तदा तेषा सावद्यवृत्तिजाया प्रवृत्ताना द्रव्यलिङ्गिना वचन श्रुत्वा तेन महानुभावेन कुवलयप्रभनाम्नाऽनगारेण भणितम्=उक्तम् , यथा-भो भो प्रिय वदा । भो देवानुप्रिया' ! यद्यपि जिनालय , तथापि सावद्यमिद जिनभवने कृते

-अर्थात् यहीं पर चौमासा व्यतीत करे । प्रवर्तकों की आज्ञा से यहां पर अनेक चैत्यालय बन जायेंगे । उस लिये आप यहीं पर चौमासा व्यतीत करने का अनुग्रह करें । हमारे ऊपर आपका बडा ही अनुग्रह होगा । आपके उपदेश से निश्चय समझिये अनेक चैत्यालयों का निर्माण हो जायगा । इस प्रकार से उन द्रव्यलिंगियो से प्रार्थित होने पर महानुभाव कुवलयप्रभ आचार्य ने कहा कि हे देवानुप्रिय ! यद्यपि तुम जिनालय के विषय मे कहते हो-परन्तु-मैं इस कार्य को करवाने में श्रेय नहीं देखता हूं-कारण कि यह सावद्यकार्य है जिन भवन बनवाना और उसके बनवाने की प्रेरणा करना इन दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों में पृथिवीकाय आदि छह प्रकारके जीवों की विराधना होती है इसी प्रकार से पूजन करने में भी षट्काय के जीव निकायों का आरभ अवश्यभावी है । इसलिये अनेक प्रकार के षट्-काय के जीवो के विघात का हेतु होने से पूजन के निमित्त भी जिन भवन का बनवाना सावद्यतर कार्य है ऐसे सावद्यतर कार्य का मैं किसी भी प्रकारसे उपदेश नहीं दूगा । मैं कभी भीऐसा उपदेश नहीं दूगा कि

तमे अहीं એકવર્ષારાત્રિક-चार मास-રોકાઓ-એટલે કે અહીં તમે ચોમાસુ પુરૂ કરો પ્રવર્તકોની આજ્ઞાથી અહીં ઘણા ચૈત્યાલયો બની જશે એથી તમે અહીં જ ચોમાસુ પુરૂ કરવાની કૃપા કરો, અમારા ઉપર તમારો ભારે અનુગ્રહ થશે તમારા ઉપદેશથી અમને ચોક્કસ ખાત્રી છે કે ઘણા ચૈત્યાલયોનુ નિર્માણ થઈ જશે આ રીતે દ્રવ્ય લિંગિઓની પ્રાર્થના સાભળીને મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ આચાર્યે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! ભલે કે તમે જીનાલયના વિષે કહો છો, પણ મને આ કામ કરાવવામા શ્રેય લાગતુ નથી, કેમકે આ સાવદ્યકર્મ છે જીન ભવન બનાવવુ અને તેને બનાવવાની પ્રેરણા આપવી આ બને જાતની પ્રવૃત્તિઓમા પૃથિવકાય વગેરે છ જાતના જીવોની વિરાધના થાય છે આ રીતે પૂજા કરવામા પણ ષટ્કાયના જીવનિકાયોનો આરભ અવશ્ય ભાવી છે એટલા માટે ઘણી જાતના ષટ્કાયના જીવોના વિઘાતના માટે હેતુરૂપ હોવા બદલ પૂજાના માટે પણ જીનભવન બનાવવુ સાવદ્યતર કાર્ય છે એવા સાવદ્યતર કાર્ય

कारिते च पृथिवीकायादिषड्जीवनिकायविराधना, नैवं जिनपूजायामपि तस्मात् पूजार्थत्वाज्जिनभवनविधान सावद्यतर, ततश्चैतदपि तीव्रोपघातहेतुत्वात् नाह वाङ्मात्रेणाऽपि उपदेशदानरूपेण वाग्योगमात्रेणापि आवयोर्मि=र्वा निनाय वर्तेमुपदेश न करिष्यामीत्यर्थः । एव च=अनेन प्रकारेण, समयसारपर ज्ञातसिद्धान्तसाराऽशेषश्रेष्ठ तच्च त्रिकरणनियोग' प्राणातिपातो वर्जनीय इत्यादिरूप यथावस्थितस्वरूप प्रमाणभूत, अविपरीत=विपर्ययज्ञानाविषय, निगदत्=सत्यमर्पित वचन भणता=कथयता, तेषा मिथ्यादृष्टिलिङ्गिना मिथ्यादृष्टय. तीर्थिकानन्तद्रव्यजी वोपघातकारिणासाधुवेषधारिणा=मध्ये हे गौतम ! आसक्लिष्टम्=सम्यक् सद् हीतम् उपार्जितमित्यर्थ । किमुपार्जितमित्याह-तीर्थंकरनामगो त्र तेन कुवलयप्र भेण, एकभवावशेषी कृतो भवोदधि' । सुगममेतत् ।

जिस में जिनालय बनवाने का विधान हो। इस प्रकार प्रवचन सिद्धान्त की सारभूत वस्तुस्थिति को यथार्थ रूप से चिना किसी सकोच के प्रकट करने वाले उन मुनिराज ने उन साधुवेष धारी द्रव्यलिंगियों के बीच कि जो मिथ्यादृष्टियो की तरह जीवों की हिंसा करने मे प्रवृत्त थे उनके सामने इस प्रकार शुद्ध प्ररूपणा करनेसे हे गौतम ! तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बध किया-और ससार भी उनका एक भव मात्र बाकी रह गया इस उदाहरण से यही समझना चाहिये-कि जब प्रतिमा पूजन के लिये भी मदिर बनवाना सावद्य कर्म है और इस सावद्यकार्य का उपदेश देना भी साधु के लिये वर्जनीय है-इसी अभिप्राय से कुवलयप्रभ सूरि ने इस कार्य का निषेध किया-इस निषेध से उन्हें तीर्थंकर नाम-गोत्र कर्म का बध हुआ और ससार भी उनका एकभव मात्र बाकी बचा-तो फिर सर्व प्रकार से सावद्य कर्मो का परित्याग

માટે હુ કોઈ પણ રીતે ઉપદેશ આપવા તૈયાર નથી, હુ આ જાતનો ઉપદેશ કોઇપણ વખતે આપવા તૈયાર નથી કે જેમા જીનાલય બનાવવાનુ વિધાન સરખુ થાય આ રીતે પ્રવચન સિદ્ધાતની સારભૂત વસ્તુસ્થિતિને સાચા રૂપમા વગર કોઈ પણ જાતના સકોચે-પ્રગટ કરનારા તે મુનિરાજે તે સાધુ વેષધારી દ્રવ્ય લિંગિઓની સામે કે જેઓ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળાઓની જેમ જીવોની હિંસા કરવામા પ્રવૃત્ત હતા-શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરી આ રીતે શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવાથી હે ગૌતમ ! તીર્થંકર નામ-ગોત્રકર્મનો બધ કર્યો અને ત્યાર પણ એક ભવ જેટલો જ શેષ રહ્યો આ ઉદાહરણથી આપણે એજ વાત સમજવી જોઇએ કે જ્યારે પ્રતિમા પૂજન માટે પણ મદિર બનાવવુ સાવદ્યકર્મ છે અને આ સાવદ્યકાર્યનો ઉપદેશ કરવો પણ સાધુના માટે ત્યાજ્ય છે આ હેતુથી જ કુવલયપ્રભસૂરીએ આ કાર્યનો નિષેધ કર્યો છે આ નિયમથી તે કર

अत्रेद बोध्यम्-यत् प्रतिमापूजार्थं क्रियमाणस्य जिनालयस्य वाचोपदेशकरणं सावद्यमिति जानता तत्परिवर्जने कृते तीर्थकर नामगोत्र कर्म समुपार्जितं, तत्र सर्वथा सावद्यमार्गं परिवर्जयता सर्वप्राणिरक्षणार्थमहिंसाधर्मं सर्वतः प्रचारयता प्रवचन-सिद्धान्तसार विजानतां संयममार्गे प्रवृत्तिमता सम्यक्त्वशुद्धिमता प्रतिमापूजामकुर्वता तन्निषेधयता किं नामात्मनः कल्याणकरं कार्यमवशिष्टम्, इति।

अथ विवाहसमये द्रौपदी सम्यक्त्ववती नासीदिति वर्ण्यते-जैनागमाना विद्वांस =सम्यग्विद वदन्ति-सनिदानस्य जीवस्य निदानफलप्राप्तिर्यावन भवति, तावदसौ सम्यक्त्वभ्रंशितो जैनधर्माद् दूर एवावतिष्ठते।

करने वाले, समस्त प्राणियो की रक्षा के निमित्त अहिंसाधर्म का प्रचार करने वाले, प्रवचन सिद्धान्त के सार को जानने वाले, संयममार्ग मे प्रवृत्ति वाले, सम्यक्त्व की शुद्धि से विशिष्ट और प्रतिमा की पूजा नही करने वाले एव उसका निषेध करने वाले ऐसे संयमियों का अब और कौनसा ऐसा कार्य बाकी रहा है जो उनकी आत्मा के लिये कल्याण का साधन न हो।

अब यहा इस बात का वर्णन किया जाता है कि विवाह के समय द्रौपदी सम्यक्त्ववाली नही थी।

जैन आगमों का भलीभाँति परिशीलन करने वाले विद्वान् इस बातको अच्छी तरह जानते है कि जिस जीव ने जो निदान किया है-जबतक उसके फल की प्राप्ति उस जीव को नही हो जाती-तबतक वह जीव सम्यक्त्व से वंचित रहकर जिनधर्म से दूर ही रहता है।

નામ-ગોત્ર કર્મનો બંધ થયો અને સંસાર પણ તેમને માટે એકભવ જેટલો જ શેષ રહ્યો હતો તો પછી સર્વ રીતે સાવદ્યકર્મોનો પરિત્યાગ કરનાર બધા પ્રાણીઓની રક્ષાના નિમિત્તે અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનાર પ્રવચન સિદ્ધાંતના સારને જાણનાર, સંયમ માર્ગમા પ્રવૃત્તિ કરનાર, સમ્યકત્વની શુદ્ધિથી વિશિષ્ટ અને પ્રતિમા પૂજા નહિ કરનારા અને તેને નિષેધ કરનારા એવા સંયમીઓનુ એવુ કયુ કામ શેષ રહ્યુ છે કે જે તેમના આત્માના કલ્યાણનુ સાધનરૂપ ન હોય ?

હવે અહીં આ વાતનુ વર્ણન કરવામા આવે છે કે લગ્નના વખતે દ્રૌપદી સમ્યકત્વવાળી ન હતી

જૈન આગમોનુ સારી રીતે પરિશીલન કરનારા વિદ્વાનો આ વાતને બારી પેઠે જાણે છે કે જે જીવે જે નિદાન કર્યું છે-જ્યા સુધી તેના ફળની પ્રાપ્તિ તે જીવને થઇ જતી નથી ત્યા સુધી તે જીવ સમ્યકત્વથી વંચિત રહીને જીન ધર્મથી દૂર રહે છે

" पुव्वकयनियाणेण चोइज्जमाणी२ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पच पडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ, करित्ता, एव वयासी-एए ण मए पच पडवा वरिया। ' इति सूत्रपाठ प्रामाण्याद् विवाहसमये पूर्वकृतनिदानाधीनतया सम्यक्त्वराहित्य द्रौपद्या आसीत् अतस्तस्यास्तदानी श्राविकात्व न सिध्यति युगपत् पञ्चाना पर्तीना वरणेन तस्याः पूर्वसस्कारोदयवशाद् विपुलसुखभोगलालसाऽपि स्वाभाविकी, अत' सा कौमारे वयसि श्राविका नासीदिति युक्तिसिद्धस्यार्थस्यापलापः केन शक्यते कर्तुम्।

द्रौपदी कस्य पूजन कृतवतीति जिज्ञासाया निर्णीयते—

" पुव्वकयनिव्वाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पच पडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुमदामेण आवेढिय परिवेढिय करेइ। करित्ता एव वयासी-एएण मए पंच पँडवा वरिया " इस प्रकार के इस प्रमाणिक सूत्र पाठ से यह स्पष्टरीति से विदित हो जाता है कि विवाह के समय पूर्वकृत निदान के अधीन होने से द्रौपदी सम्यक्त्व रहित थी इसी लिये उस समय उस में श्राविकापना भी सिद्ध नही होता है। तथा एक ही साथ पाच पांडवों को पतिरूप से वरण करने से उसके पूर्व सस्कार के उदय से विपुल सुख भोगने की लालसा भी स्वभाविकी ज्ञात होती है इसलिये वह कुमार अवस्था में श्राविका नहीं थी इस युक्ति सिद्ध अर्थ का अपलाप कौन कर सकता है।

द्रौपदी ने किस की पूजा की इस प्रकार की जिज्ञासा होने पर

" पुव्वकयनियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, ते पच पडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ। करित्ता एव वयासी-एएण मए पच पडवा वरिया "

આ જાતના આ પ્રામાણિક સૂત્રપાઠથી આ સ્પષ્ટ રૂપમા માલુમ થઈ જાય છે કે લગ્નના વખતે પૂર્વકૃત નિદાનને સ્વાધીન હોવાને કારણે દ્રૌપદી સમ્યકત્વ રહિત હતી એટલા માટે તે સમયે તેમા શ્રાવિકાપણુ સિદ્ધ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એકી સાથે પાચે પાડવોને પતિરૂપમા વરણ કરવાથી તેના પૂર્વ સસ્કારોના ઉદયથી વિપુલ સુખ ભોગવવાની ઇચ્છા પણ સ્વાભાવિકી માલુમ થાય છે એથી તે કુમાર અવસ્થામા શ્રાવિકા હતી નહિ આ યુક્તિ અર્થનો પરિહાર કોણ કરી શકે તેમ છે

દ્રૌપદીએ કોની પૂજા કરી ? આ જાતની જીજ્ઞાસાને સામે ટીકા-

अखण्डसौभाग्यप्रचुरभोगकामनया कामदेवस्यैव पूजन तदानीमुपपद्यते। कामपूजन विवाहोत्सवे निस्तरतो भवतीति लोके प्रसिद्धमस्तीति प्रतिमापूजकोऽपि श्री वर्धमानसूरि' मोक्तवान्। स्पष्ट चैतत् तद्विरचिते आचारदिनकरे द्वितीय-विभागे--" परसमये गणपतिकन्दर्पस्थापनम्। गणपतिकन्दर्पस्थापन सुगम लोकप्रसिद्धम्। " इति।

टीकाकार निर्णय करते हे-

अखड सौभाग्य एव प्रचुर भोग की इच्छा से कामदेव का ही पूजन उस समय द्रौपदी ने किया है-यही बात सगत बैठती है। लोक मे भी यही व्यवहार देखा जाता है कि विवाह के समय अच्छी तरह गाजे बाजे के साथ काम देवका पूजन लोग किया करते हैं। इस बात को वर्धमान सूरि भी जो प्रतिमापूजन के पक्षपाती हैं स्वीकार करते हैं और ऐसा ही कहते है। इसी बात का स्पष्टीकरण उन्हों ने स्वनिर्मित आचारदिनकर के द्वितीय विभाग मे किया है-वे लिखते हें कि-

—" परसमये गणपतिकदर्पस्थापनम्। गणपतिकदर्पस्थापन सुगम लोकप्रसिद्धम् " इति।

लौकिक शास्त्रमें गणपति एव कदर्प (कामदेव) की स्थापना होती है अत' गणपति और कन्दर्पका स्थापन करना सुगम और लोकप्रसिद्ध है।

કાર નિર્ણય કરતા કહે છે કે—

અખડ સૌભાગ્ય તેમજ પ્રચુર ભોગની ઇચ્છાથી જ તે સમયે દ્રૌપદીએ કામદેવનુ જ પૂજન કર્યુ છે, આ વાત જ યોગ્ય લાગે છે લોકમા પણ આ જાતનો જ વહેવાર જોવામા આવે છે કે લગ્નના વખતે વાજા ઓની સાથે સારી રીતે કામદેવનુ પૂજન લોકો કરતા રહે છે આ વાતને વર્ધમાનસૂરિ પણ કે જેઓ પ્રતિમા પૂજનના તરફદાર છે-સ્વીકાર કરે છે અને આ પ્રમાણે જ કહે છે આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ તેમણે સ્વનિર્મિત આચાર દિનકરના બીજા વિભા ગમા કર્યુ છે તેઓ લખે છે કે—

" परसमये गणपतिकदर्पस्थापनम्। गणपतिकदर्पस्थापन सुगम लोक प्रसिद्धम् " इति।

લૌકિક શાસ્ત્રમા ગણપતિ અને કદર્પ (કામદેવ) ની સ્થાપના થાય છે તેથી ગણપતિ કદર્પની સ્થાપના કરવી તેજ સુગમ અને લોકપ્રસિદ્ધ છે

"जिणपडिमाण अच्चण करइ" अत्र जिनशब्द कामदेवपरः। जिनशब्दस्य बहवोऽर्थाः कोशादौ प्रसिद्धाः सन्ति। यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव, जिन सामान्यकेवली।
कन्दर्पोऽपि जिनश्चैव, जिनो नारायणो हरिः॥ इति (हैमी नाममाला)

विजयगच्छीयः श्रीगुणसागरसूरिरपि ढालसागरनामके काव्ये षष्ठखण्डे द्रौपद्या पूज्यदेवं निर्णीतवान्। उक्तं च तेन—

करि पूजा कामदेवनी भावे द्रुपदी नार।
देव दया करी मुझने भलो देजो भरतार॥ १॥

अर्हन् सकलकर्म कषायमोहपरीषहान् जयतीति जिन उच्यते। सामान्य

"जिनपडिमाण अच्चण करेइ" इस सूत्र में जिन शब्द जिनेन्द्र भगवान का वाचक नहीं है, किन्तु कामदेव का वाचक है क्यों कि जिन शब्द के अनेक अर्थ कोषादिक ग्रन्थों में प्रसिद्ध हैं—यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव जिन सामान्यकेवली।
कन्दर्पोऽपि जिनश्चैव जिनो नारायणो हरिः॥
इति (हैमीय नाममाला

विजय गच्छीय श्री गुणसागर सूरि ने भी "ढालसागर" नाम के काव्य में छठवें खंड में द्रौपदी के आराध्य देव का निर्णय किया है। उन्होंने लिखा है—

करि पूजा कामदेव नी भावे द्रुपदी नार।
देव! दया करी मुझने भलो देजो भरतार॥१॥

इस सूत्र में अर्हन्त भगवान को 'जिन' इसलिये कहा गया है

"जिनपडिमाण अच्चण करेइ"

આ સૂત્રમા જીન શબ્દ જીનેદ્ર ભગવાનનો વાચક નથી પણ કામદેવનો વાચક છે કેમકે જીન શબ્દોના ઘણા અર્થો કોષ વગેરે ગ્રન્થોમા પ્રસિદ્ધ છે જેમકે—

અર્હન્નપિ જિનશ્ચૈવ જિન સામાન્યકેવલી।
કદર્પોઽપિ જિનશ્ચૈવ જિનો નારાયણો હરી॥ ઇતિ (હૈમીય નામમાલા)

વિજયગચ્છીય શ્રી ગુણસાગરસૂરિએ પણ 'ઢાલસાગર" નામના કાવ્યના છઠ્ઠા ખંડમા દ્રૌપદીના આરાધ્યદેવનો નિર્ણય કરતા તેમણે કહ્યુ છે કે—

કરિ પૂજા કામદેવની ભાવે દ્રુપદિનર।
દેવ! દયા કરી મુઝને ભલો દેજો ભરતાર॥ १॥

આ સૂત્રમા અર્હંત ભગવાનને 'જીન' એટલા માટે કે તેમણે

केवली घनघातिकर्मचतुष्टय जयतीति जिन उच्यते । विष्णुः स्वभुजबलेन खण्ड-त्रय जयतीति जिन उच्यते । जिनशब्दस्य कामदेवोऽर्थश्चापि सगतः, यत' ससारिणा कामदेवपदवर्तित्वेन लोकत्रयसारित्वाज्जिनत्व कामस्योपपद्यते । रूपरहितस्यापि सिद्धस्य प्रतिमा पूजादिना शास्त्रानुक्तामपि प्रतिमापूजकाः प्रकल्पयन्ति, तद्वदनङ्गस्यापि कामस्य लोकत्रयाक्रमसिद्ध तद्वचनमनुसृत्य प्रतिमा प्रकल्पत इति

कि उन्हों ने समस्त कषाय, कर्म, मोह और परीषहों को जीता है। सामान्य केवली 'जिन' इसलिये कहे गये हैं कि उन्हों ने चार घनघातिया कर्मो को अपनी आत्मा से सकल नष्ट कर दिया है। विष्णु 'जिन' इसलिये कहलाये कि उन्हो ने अपने भुजबल से भरतखंड के छह खंडों मे से तीन खंडों को अपने वश किया है इसी लिये ये अर्द्धचक्री भी कहलाते हैं। कामदेव को 'जिन' इस लिये कहा गया है कि इसके वश समस्त त्रिलोक है त्रिलोक में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं बचा कि जिसे इस ने अपने वश मे न किया हो।

शङ्का—द्रौपदी ने कामदेव की मूर्त्ति की पूजा की—आप की यह बात उस समय मानी जा सकती—जब कि कामदेव की मूर्ति बन सकती होती ? परन्तु कामदेव की मूर्ति तो बन नही सकती क्यों कि वह तो अमूर्तिक-अशरीर-अनङ्ग है। अगवाले की ही मूर्ति बनती है—अनग की नहीं।

અથવા કષાય કર્મ, મોહ અને પરિષહોને જીત્યા છે સામાન્ય કેવલી "જીન" એટલા માટે કહેવામા આવ્યા છે કે તેમણે ચાર ધનપતિઓના કર્મોને પોતાના આત્માથી સમૂળ નષ્ટ કરી નાખ્યા છે વિષ્ણુ 'જીન' એટલા માટે કહેવાય છે કે તેમણે પોતાના ભુજ બળથી ભરતખંડના છ ખંડોમાથી ત્રણ ખંડોને પોતાને વશ કર્યા છે એથી તેઓ અર્દ્ધચક્રી પણ કહેવાય છે કામદેવને 'જીન' એટલા માટે કહેવામા આવ્યો છે કે તેના વશમા ત્રણે લોકો છે ત્રણે લોકોમા એવુ કોઇ પ્રાણી રહ્યુ નથી કે જેને કામદેવે પોતાના વશમા કર્યું ન હોય

શકા—દ્રૌપદીએ કામદેવની મૂર્તિની પૂજા કરી તે તમારી આ વાત ત્યારેજ યોગ્ય કહી શકાય કે જ્યારે કામદેવની મૂર્તિ બની રાકતી હોય ? પણ કામદેવની મૂર્તિ તો તૈયાર થઈ શકે તેમ નથી કેમકે તે તો અમૂર્તિક—અશરીર અનગ છે અગવાળાની જ મૂર્તિ બને છે, અનગની નહિ

नास्त्यत्र संशय । लक्ष्मीगौर्यादिदेव्या अपि स्वाभीष्टपतिप्राप्तिकामनया पूजनं लोके प्रसिद्धमस्ति । लौकिकमन्त्रशास्त्रे मन्त्ररत्नमञ्जूषायां कामदेवाराधनस्यापीष्टपतिलाभहेतुत्वं निगदितम्—

" कन्यामिष्टामवाप्नोति, सापीष्टं पतिमाप्नुयात् ॥ " इति ।

अधुनाऽपि परिणयनसमये कुलदेवपूजनं लोके क्रियमाणं दृश्यते । कामदेवोऽपि

उत्तर—यह कहना ठीक नहीं है क्यों कि मूर्ति पूजक जन अनङ्ग-सिद्धों की भी तो मूर्ति बनाकर उनकी पूजा किया करते हैं । यद्यपि सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं कही गई है-तौ भी मूर्तिपूजक जन अपनी कल्पना से उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजा करते ही हैं—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेव की भी लोग अपनी कल्पनासुर मूर्ति बनाकर पूजते हैं । इस में आपत्ति की कौनसी बात है।

लक्ष्मी, गौरी आदि देवियों की भी पूजा लोक में अपने को अभिलषित पति प्राप्ति की कामना से स्त्रियों द्वारा की ही जाती है । लौकिक मन्त्र शास्त्र में मन्त्ररत्नमञ्जूषा में कामदेव का आराधन-'कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्टं पतिमाप्नुयात्' इस श्लोकार्धद्वारा इच्छित पति प्राप्ति का कारण कहा गया है।

वर्तमान समय में भी देखो ! विवाह के समय में लोक में कुल देवता का पूजन किया ही जाता है यह कुल देवता का पूजन ही एक

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનંગ સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે જો કે શાસ્ત્રોમા સિધ્ધોની મૂર્તિ બનાવવાની આજ્ઞા કરવામા આવી નથી છતાય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ બનાવીને પૂજા કરે જ છે તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ અનંગ કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ બનાવીને તેને પૂજે છે, આમા વાધા જેવી કોઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમા પોતાની ઇચ્છા મુજબ પતિ મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામા આવે જ છે લૌકિક મંત્ર શાસ્ત્રમા મંત્ર રત્ન મંજૂષામા કામદેવનુ આરાધન " कन्यामिष्टामवाप्नोति सामीष्टं पतिं माप्नुयात्" આ અર્ધશ્લોક વડે ઇચ્છિત પ્રતિપ્રાપ્તિનુ કારણ બતાવવામા આવ્યુ છે

વર્તમાન સમયમા પણ આપણે જોઇએ તો લગ્નના સમયે લોકમા કુળ દેવતાનુ પૂજન કરવામા આવે જ છે આ કુળદેવતાનુ પૂજન * રીતે

रागवता गृहस्थाना कुलदेवत्वेन व्यावहियमाण आसीत्। द्रौपद्याऽपि स्वकुलदेवः पूजित इति युक्तमुत्पश्याम.।

अत्र—"नमोऽत्थु ण अरिहंताण" इति पाठस्तु प्रवचनविरुद्ध एव वर्तते, लौकिककुलदेवप्रतिमार्चनप्रकरणे लोकोत्तरस्य भगवतोऽर्हत' प्रसङ्गाभावात्। पूर्वभवकृतनिदानवत्या कामभोगानुरक्त्या द्रौपद्या कामदेवार्चनसमये कामभोग विरतस्य वीतरागमार्गोपदेशकस्य वीतरागस्य भगवतोऽर्हतो वन्दन नैव शास्त्रानुकूलम्। अत्र परिणयावसरे कुलदेवपूजनप्रसङ्गे भगवतोऽर्हत प्रसङ्गएव नास्ति,

---

तरह से कामदेव का पूजन अनुसरण है। एक समय था कि जब कामदेव ही, रागशाली गृहस्थ जनो के लिये कुल देवता के रूप से वैवाहिक व्यवहार में मान्य होता था। द्रौपदीने भी उस समय जो कुल देवता का पूजन किया-वह कामदेव का ही पूजन किया यही युक्ति संगत बैठती है। इस पूजन के प्रकरण में जो "नमोत्थुण अरिहंताण" यह पाठ आता है वह प्रवचन विरुद्ध ही है क्यों कि लौकिक कुलदेवता की प्रतिमा के अर्चन-प्रकरण में लोकोत्तर अर्हंत भगवान के प्रकरण का संबंध ही क्या है। उस समय जब कि वह पूर्व भव में किये गये निदान से युक्त थी-और कामभोग में अनुरक्त हृदयवाली थी उस के लिये कामदेवका अर्चन (पूजन) करनेका समय ही स्पष्टरूपसे ज्ञात होता है कामभोगों से विरत वीतराग मार्ग के उपदेशक वीतरागप्रभु अर्हंत भगवान की पूजन वंदना का नहीं। यही सिद्धान्त शास्त्रानुकूल है-अन्य नहीं। अरे कहीं

કામદેવના પૂજનનુ અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે જ્યારે કામદેવજી, રાગવાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમા લગ્ન-સંબંધી વ્યવહારમા માન્ય ગણાતો હતો. દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનુ પૂજન કર્યું તે કામદેવનુ જ પૂજન કર્યુ હતુ એ જ વાત બરોબર લાગે છે આ પૂજનના પ્રકરણમા જે "नमोत्थुण अरिहंताण" આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિરૂદ્ધ જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમા લોકોત્તર અર્હંત ભગવાનના પ્રકારણનો સંબંધ જ શી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તે વખતે કે જ્યારે તે પૂર્વ ભવમા કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમા અનુરક્ત હૃદયવાળી હતી એવી સ્થિતિમા તો તેના માટે કામદેવની અર્ચના કરવાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઇ આવે છે કામભોગોથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રભુ અર્હંત ભગવાનની પૂજા વંદના માટે તે વખત યોગ્ય કહી શકાય નહિ આ સિધ્ધાંત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ યુધ્ધમાં

नास्त्यत्र संशय । लक्ष्मीगौर्यादिदेव्या अपि स्वाभीष्टपतिप्राप्तिकामनया पूजनं लोके प्रसिद्धमस्ति । लौकिकमन्त्रशास्त्रे मन्त्ररत्नमञ्जूषायां कामदेवाराधनस्यापि इष्टपतिलाभहेतुत्वं निगदितम्—

" कन्यामिष्टामवाप्नोति, सापीष्टं पतिमाप्नुयात् ॥ " इति ।

अधुनाऽपि परिणयनसमये कुलदेवपूजनं लोके क्रियमाणं दृश्यते । कामदेवोऽपि

उत्तर—यह कहना ठीक नहीं है क्यों कि मूर्ति पूजक जन अनङ्ग-सिद्धों की भी तो मूर्ति बनाकर उनकी पूजा किया करते हैं । यद्यपि सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं की गई है-तो भी मूर्तिपूजक जन अपनी कल्पना से उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजा करते ही है—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेव की भी लोग अपनी कल्पनासुर मूर्ति बनाकर पूजते हैं । इस में आपत्ति की कौनसी बात है।

लक्ष्मी, गौरी आदि देवियों की भी पूजा लोक में अपने को अभिलषित पति प्राप्ति की कामना से स्त्रियों द्वारा की ही जाती है । लौकिक मन्त्र शास्त्र में मन्त्ररत्नमञ्जूषा में कामदेव का आराधन-" कन्यामिष्टा मवाप्नोति सापीष्ट पतिमाप्नुयात् ' इस श्लोकार्धद्वारा इच्छित पति प्राप्ति का कारण कहा गया है ।

वर्तमान समय में भी देखो ! विवाह के समय में लोक में कुल देवता का पूजन किया ही जाता है यह कुल देवता का पूजन ही एक

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનંગ સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે જો કે શાસ્ત્રોમા સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવવાની આજ્ઞા કરવામા આવી નથી છતાય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ બનાવીને પૂજા કરે જ છે તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ અનંગ કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ બનાવીને તેને પૂજે છે, આમા વાધા જેવી કોઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમા પોતાની ઈચ્છા મુજબ પતિ મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામા આવે જ છે લૌકિક મંત્ર શાસ્ત્રમા મંત્ર રત્ન મંજૂષામા કામદેવનુ આરાધન " कन्यामिष्टामवाप्नोति सामीष्ट पतिं माप्नुयात्" આ અર્દ્ધશ્લોક વડે ઇચ્છિત પ્રતિપ્રાપ્તિનુ કારણ બતાવવામા આવ્યુ છે

વર્તમાન સમયમા પણ આપણે જોઇએ તો લગ્નના સમયે લોકમા કુળ દેવતાનુ પૂજન કરવામા આવે જ છે આ કુળદેવતાનુ પૂજન રીતે

रागवता गृहस्थाना कुलदेवत्वेन व्यवह्रियमाण आसीत्। द्रौपद्याऽपि स्वकुलदेवः पूजित इति युक्तमुत्पश्यामः।

अत्र—"नमोऽत्थु णं अरिहंताण" इति पाठस्तु प्रवचनविरुद्ध एव वर्तते, लौकिककुलदेवप्रतिमार्चनप्रकरणे लोकोत्तरस्य भगवतोऽर्हतः प्रसङ्गाभावात्। पूर्वभवकृतनिदानवत्या कामभोगानुरक्तया द्रौपद्या कामदेवार्चनसमये कामभोगविरतस्य वीतरागमार्गोपदेशकस्य वीतरागस्य भगवतोऽर्हतो वन्दन नैव शास्त्रानुकूलम्। अत्र परिणयावसरे कुलदेवपूजनप्रसङ्गे भगवतोऽर्हत प्रसङ्गएव नास्ति,

तरह से कामदेव का पूजन अनुसरण है। एक समय था कि जब कामदेव ही, रागशाली गृहस्थ जनों के लिये कुल देवता के रूप से वैवाहिक व्यवहार में मान्य होता था। द्रौपदीने भी उस समय जो कुल देवता का पूजन किया-वह कामदेव का ही पूजन किया यही युक्ति संगत बैठती है। इस पूजन के प्रकरण में जो "नमोत्थुण अरिहंताण" यह पाठ आता है वह प्रवचन विरुद्ध ही है क्यों कि लौकिक कुल देवता की प्रतिमा के अर्चन-प्रकरण में लोकोत्तर अर्हंत भगवान के प्रकरण का संबंध ही क्या है। उस समय जब कि नर पूर्व भव में किये गये निदान से युक्त थी-और कामभोग में अनुरक्त हृदयवाली थी उस के लिये कामदेवका अर्चन(पूजन) करनेका समय ही स्पष्टरूपसे ज्ञात होता है कामभोगों से विरत वीतराग मार्ग के उपदेशक वीतरागप्रभु अर्हंत भगवान की पूजन वंदना का नहीं। यही सिद्धान्त शास्त्रानुकूल है-अन्य नहीं। अरे कहीं

કામદેવના પૂજનનુ અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે જ્યારે કામદેવજ, રાગવાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમા લગ્ન-સંબંધી વ્યવહારમા માન્ય ગણાતો હતો. દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનુ પૂજન કર્યું તે કામદેવનુ જ પૂજન કર્યું હતુ એ જ વાત બરોબર લાગે છે આ પૂજનના પ્રકરણમા જે "नमोत्थुण अरिहंताण" આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિરૂદ્ધ જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમા લોકોત્તર અર્હંત ભગવાનના પ્રકરણનો સંબંધ જ શી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તે વખતે કે જ્યારે તે પૂર્વ ભવમા કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમા અનુરક્ત હૃદયવાળી હતી એવી સ્થિતિમા તો તેના માટે કામદેવની અર્ચના કરવાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઈ આવે છે કામભોગોથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રભુ અર્હંત ભગવાનની પૂજા વંદના માટે તે વખત યોગ્ય કહી શકાય નહિ આ સિધ્ધાંત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ યુધ્ધમા

द्रौपद्याः पूर्वभवकृतनिदानफलप्राप्त्यभावेन सम्यक्त्वरहितत्वात्। यस्य पूजनं तस्यैव वन्दनं तु न्यायोपपन्नं भवति, अत्र पूजनं कुलदेवतायाः, वन्दनं तु वीतरागस्यार्हत इति लोकन्यायविरुद्धम्। तस्माद् द्रौपद्या वीतरागस्यार्हतो वन्दनमपि तदानीं न कृतमिति सर्वप्रमाणसिद्धम्।

अत्राभयदेवसूरिणा स्वकृतवृत्तौ यदुक्तम् एतस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते "जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" इति।

वीररसके सिवाय युद्धमें जानेवाले वीरके लिये मल्हारराग भी आनददायी हो सकता है?। कभी नहीं परिणय-विवाहके अवसर में कुलदेवता की ही पूजा करने का प्रसंग होता है-न कि भगवान अर्हंत की। अतः इस प्रकार का प्रसंग मानना एक मनगढंत कल्पना मात्र ही है। क्यों कि इस समय द्रौपदी पूर्वभव में किये हुए निदान की फल प्राप्ति के अभाव से सम्यक्त्व रहित थी, फिर उसे उस समय कामदेव की ही इच्छित फल प्राप्ति के लिये पूजा की सूझेगी, या उसके अभाव को करने वाले जिन भगवान की पूजा की। यह स्वयं विचारने जैसी बात है जिस का पूजन किया जाता है उसी की वंदना की जाती है-पूजन तो हो कुलदेवतारूप कामदेव का और वंदना की जाय वीतराग प्रभु श्री अरिहंत देव की। इस प्रकार की मान्यता तो लौकिकरीति से भी विरुद्ध पडती है। इसलिये सर्व प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि द्रौपदी ने जिनप्रतिमा का पूजन नहीं किया।

જનાર લડવૈયા માટે વીર રસ સિવાયનો મલ્હાર રાગ પણ શું આનંદ પમાડનાર થઇ શકે છે? નહીં જ લગ્નના સમયે તો ભગવાન અર્હંતની પૂજા કરતા તો કુળદેવતાની પૂજા કરવાનો પ્રસંગજ યોગ્ય લેખાય છે એટલા માટે આ જાતનો પ્રસંગની વાત માનવી એ મનમાની કલ્પના માત્રજ છે કેમકે આ સમયે દ્રૌપદી પૂર્વભવમા કરેલા નિદાનની ફળ પ્રાપ્તિના અભાવને લીધે સમ્યકત્વથી રહિત હતી અને એવી સ્થિતિમા ઇચ્છિત ફળ પ્રાપ્તિ માટે તેને કામદેવની પૂજા કરવાની ઇચ્છા થાય કે તેનાથી વિરૂધ્ધ ફળ આપનાર જીન ભગવાનની પૂજાની? આ જાતે વિચાર કરવા યોગ્ય વાત છે જેની પૂજા કરવામા આવે છે તેને જ વંદના કરવામા આવે છે પૂજા તો કુળ દેવતારૂપ કામદેવની થાય અને વંદના વીતરાગ પ્રભુ શ્રી અરિહંત દેવની કરવામા આવે આ જાતની માન્યતા તો લૌકિક રીતિથી પણ વિરૂધ્ધ છે આ પ્રમાણે બધી રીતે વિચારતા આ સિધ્ધ થાય છે કે દ્રૌપદીએ જીન પ્રતિમાનુ પૂજન કર્યું નથી.

वाचनान्तरे तु 'ण्हाया' इत्यादि, तथा-द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे इति, तदप्यत्र पाठे सिद्धान्तविरुद्धपाठप्रक्षेपसभावनां द्योतयति। अत्र यद्वाच्य तत्पागेव निगदितम्।

मूलम्-तएणं तं दोवइरायवरकन्नं अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति किं ते ? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, तएणं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थं करेइ, तएणं सा दोवई रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरु-

---

अभयदेव सूरि ने स्वरचित वृत्ति में जो यह कहा है कि एक वाचना में "जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ" दूसरी अन्य वाचना में "ण्हाया इत्यादि-तथा द्रौपद्याः प्रणिपात दण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे इति" सो यह उनका कथन इस बात की सभावना को प्रकट करता है कि इस पाठ में सिद्धान्त से विरुद्ध पाठ का प्रक्षेप हुआ है। इस विषय में जो कुछ हमें समाधान करना था वह हमने पहिले ही कर दिया है।

॥ द्रौपदी पूजाचर्चा समाप्त ॥

અભયદેવસૂરિએ સ્વરચિત વૃત્તિમા જે એ કહ્યું છે કે એક વાચનામા "जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ" બીજી વાચનામા 'ण्हाया इत्यादि-तथा द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे इति।" તો તેમનુ આ કથન આ વાતને પ્રકટ કરે છે કે આ પાઠમા સિદ્ધાન્તથી વિરુદ્ધ એવા પાઠનો પ્રક્ષેપ થયો છે આ વિષે જે કઈ ચોગ્ય સ્પષ્ટીકરણ કરવાનુ હતુ તે અમે પહેલા કરી દીધુ છે

દ્રૌપદી પૂજા ચર્ચા સમાપ્ત

हित्ता किड्डावियाए लोहियाए य सद्धिं सयंवरमंडपं अणुप-
विसइ अणुपविसित्ता करयल तेसि वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं
रायवरसहस्साणं पणाम करेइ, तएण सा दोवई रायवर० एग
महं सिरिदामगंडं किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छया-
ईहि गंधद्धाणि मुयत परमसुहफास दरिसणिज्जं गिण्हइ, तएण
सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लग दप्पण
गहेऊण सललिय दप्पणसकतविवसदंसिए य से दाहिणेण
हत्थेण दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीर महु-
रभणिया सा तेसि सव्वेसिं पत्थिवाण अम्मापिऊण वससत्तसा
मत्थगोत्तविक्कतिकंति बहुविह आगममाहप्पख्वजोव्वणगुण
लावण्णकुलसीलजाणिया कित्तण करेइ, पढम ताव वण्हिपुगवाणं
दसदसारवीरपुरिसाण तेलोक्कबलवगाण सत्तुसयसहस्समाणा-
बमद्दगाण भवसिद्धिपवरपुडरीयाण चिल्लगाण बलवीरियरूव-
जोव्वणगुणलावन्नकित्तिया कित्तण करेइ, ततो पुणो उग्गसेण-
माईणं जायवाण, भणइ य—सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिस-
गधहत्थीणं । जो हु ते होइ हिययदइओ, तएणं सा दोवई
रायवरकन्नगा बहूण रायवरसहस्साणं मज्झ मज्झेण समतिच्छ-
माणी२ पुव्वकयणियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते पचपडवे तेण दसद्धवण्णेण
कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ करित्ता एव वयासी-
एएण मए पच पडवा वरिया, तएणं तेसि

बहूणि रायसहस्साणि महया२सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एव वयति सुवग्गिय खलु भो ! दोवइए रायवरकन्नाए२ त्तिकट्टु सयवरमडवाओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया२ आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, तएण धट्ठज्जुण्णे कुमारे पच्च पडवे दोवइं रायवरकण्ण चाउग्घट आसरह दुरूहइ दुरूहित्ता कपिल्लपुर मज्झ मज्झेण जाव सय भवण अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पच्च पडव देवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ दुरूहित्ता सेया पीएहि कलसेहि मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ पचण्ह पडवाण दोवईए य पाणिग्गण करावेइ तएण से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णयाए इम एयारूव पीईदाण दलयइ, त जहा – अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणकणग जाव दलयइ तएण से दुवए राया ताइ वासुदेवपामोक्खाणं विउलेणं असणं४ वत्थगध जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—' तएण त ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ता द्रौपदी राजवरकन्यां 'अतेउरियाओ' आन्तः पुरिक्य'= अन्तःपुरवर्तिन्य स्त्रियः सर्वालंकारविभूषितां कुर्वन्ति, ' किं ते ' तत्–तत्सौन्दर्यं किं वर्णयामि तद् वाचाऽभिलपितु न

तएण त दोवइ रायवरकन्न इत्यादि ।

टीकार्थ–(तए ण) इसके बाद (त दोवइ रायवरकन्न) उस राजवर कन्या द्रौपदी को (अतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसिय करेति) अतः पुर की स्त्रियो ने समस्त अलकारो से विभूषित किया । (किंते) उस समय

तएण त दोवइ रायवरकन्न इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तए ण) ત્યારપછી (त दोवइ रायवरकन्न) તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને (अते उरियाओ–सव्वालंकारविभूसिय करेति) રણવાસની સ્ત્રીઓએ સમસ્ત અલંકારોથી શણગારી (किं ते) તે સમયના તેના સૌદર્યનુ વર્ણન

शक्यत इत्यर्थः । ' वरपायपत्तणेउरा ' वरपादप्राप्तनूपुरा=वरणन्यापित प्रशस्त नूपुरा यावत्- चेडियाचक्कवालमयहरगविन्दपरिक्खित्ता चेटिकाचक्रवालमहत्तरक वृन्देन-अनेकदासीमहत्तरसमूहेन परिक्षिप्ता-परिवृता, अन्तःपुरात् प्रतिनिष्क्रामति -निः सरति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या=बहिः प्रदेशस्था ' उवट्ठाणसाला ' उप स्थानशाला=आस्थानमण्डप -सभामण्डइत्यर्थः, यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथस्तत्रोपाग च्छति, उपागत्य ' किड्डावियाए ' क्रीडिकया-क्रीडनधात्र्या क्रीडया क्रीडिकया इत्याह ' लेहियाए ' इति लेखिकया=राजकुलयशनामादिपरिचारिकया सार्धं

के उसके सौन्दर्य का हम क्या वर्णन करें । यह वाणी द्वारा कहने के योग्य नहीं है अर्थात् वाणी से उसका वर्णन नहीं हो सकता है । (वर पायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंते उराओ पडिणिक्खमइ) चरणों में स्थापित किये गये हैं-पहिराये गये हैं-प्रशस्तनूपुर जिसको ऐसी वह द्रौपदी यावत अनेक समझदार दासियों के महोमहिम समूह से परिक्षिप्त होकर-अन्तःपुर से बाहिर निकली । (पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ) बाहिर निकलकर वह जहां बाहिर में सभामंडप और उसमें भी जहां चारघंटों वाला अश्वरथ था वहां आई। वहां आकर वह अपनी क्रीडनधात्री के कि जो लेखिका राजकुल, यश नाम आदि की परिचायिका थी साथ उस चारघंटोंवाले

આપણે કેવી રીતે કરી શકીયે વાણી વડે તેનુ વર્ણન અશક્ય છે એમ કે વાણીમા એટલી શક્તિ નથી કે તેના સૌદર્યનુ સચોટ વર્ણન કરી શકે

(वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमइ)

પગોમા જેણે સુદર નૂપુર પહેર્યા છે એવી તે દ્રૌપદી ઘણી ચતુર દાસી ઓથી વીંટળાઇને રણુવાસથી બહાર નીકળી

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ)

બહાર નીકળીને તે જ્યા બહારના સભા-મડપમા ચાર ઘટવાળો અશ્વ રથ હતો ત્યા આવી ત્યા આવીને તે પોતાથી ક્રીડન ધાત્રી-કે જે લેખિકા રાજકુલ, વશ નામ વગેરેની પરિચારિકા હતી-તેની સાથે તે ચાર ઘટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઈ ગઇ

चातुर्घण्टमश्वरथं ' दुरुहइ ' दूरोहति=आरोहति । ततस्तदनन्तरं धृष्टद्युम्नः कुमारो द्रौपद्याः कन्यायाः ' सारत्थ ' सारथ्य-सारथिकर्म करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन यत्रैव स्वयम्वरमण्डपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति रथात् प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्य क्रीडिकया लेखिकया च सार्धं स्वयवरमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य करतलपरिगृहीत दशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तेषां वासुदेवप्रमुखाणा बहूण राजवरसह-

अश्वरथ में सवार हो गई। (तएण से धट्ठज्जुण्णे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थ करेइ, तएण सा दोवइ रायवरकण्णा कपिल्लपुर नयर मज्झमज्झेण जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ) उस के सवार होते ही धृष्टद्युम्न कुमार ने उस द्रौपदी कन्या का सारथ्य किया-उसके रथ पर सारथि का काम किया-द्रौपदी के रथ को हाका। इस तरह धृष्ट द्युम्न के द्वारा हाके गये रथ पर बैठी हुई वह राजवर कन्या द्रौपदी कांपिल्य पुर नगर के बीच से होकर जहा स्वयवर-मडप था उस ओर चल दी। (उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं सयवरमडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाण बहूण रायवरसहस्साण पणाम करेइ) वहां पहुचकर उसने रथ को खड़ा करवा दिया-रथके खडे होते ही वह उससे नीचे उतरी, नीचे उतर कर वह उस लेखिका क्रीडन धात्री के साथ स्वयवर मडप में प्रविष्ट हुई। प्रविष्ट होकर के उसने अपने दोनों हाथों को जोड कर उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओ को प्रमाण

(तएण से धट्ठज्जुण्णे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थ करेइ, तएण सा दोवइ रायवरकण्णा कपिल्लपुर नगर मज्झ मज्झेण जेणेव सयवरमडवे तेणेव उवागच्छइ)

જ્યારે તે સવાર થઈ ગઈ ત્યારે કુમાર ધૃષ્ટદ્યુમ્ને તે દ્રૌપદી રાજવર કન્યાના રથ ઉપર બેસીને સારથીનુ કામ સભાળ્યુ આ પ્રમાણે ધૃષ્ટ દ્યુમ્ન વડે હાકવામા આવેલા તે રથ ઉપર સવાર થઈને તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી કાપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યા સ્વયવર મડપ હતો ત્યા આવ્યા થઈ

(उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं सयवरमडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेव पामुक्खाण बहूण रायवरसहस्साण पणाम करेइ)

ત્યા પહોચીને તેણે રથને થોભાવડાવ્યો, જ્યારે રથ થોભ્યો ત્યારે તે રથ ઉપરથી નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે લેખિકા ક્રીડન ધાત્રીની સાથે સ્વયવર મડપમા પ્રવિષ્ટ થઈ પ્રવિષ્ટ થઈને તેણે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને પોતાના બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા

सणा पणामं करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या एकं महत् श्रीदामकाण्डं 'किं ते' किं तत्-तत्सौन्दर्यसौगन्ध्यदर्शनेन किं करोमि ? तत् अपूर्वमितिभावः । 'पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं' पाटलमल्लिकाचम्पक-यावत् सप्तच्छदादिभिः 'गंधद्धाणिं' गन्धघ्राणि गन्धतमि 'सुयं' मुग्धम्=मुदम् प्रकाशयदित्यर्थः परमसुखस्पर्शं दर्शनीयं गृह्णाति । ततः खलु सा नीटिका=क्रीडनशाली यावत् सुरूपा जाव 'वामहत्थेणं चित्तगं दप्पणं' यावत् वामहस्तेन चित्रकं दर्पणम् अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्-सामाविय्यस चोक्खनणस्स उस्सुयकर विचित्तमणिरयण घडच्छरुहं' इति । स्वाभाविकवर्णं=स्वाभाविको नैसर्गिको वर्णो वर्णक यस्य स तथा त दर्पणमित्यन्वयः । स्वभावादेव विमलमित्यर्थः, तथा-चतुर्दशजनस्योत्सवयोग्य= तरुणलोकस्य प्रेक्षणाभिलाषजनक, तथा-विचित्रमणिरत्नबद्धचरुक=विचित्रमणि रत्नैर्बद्धः चरुको-मुष्टि ग्रहणस्थान, यस्य स तथा त, तथा-'चित्तगं' देदीप्य मान, दर्पण-वामहस्तेन "गहेउण" गृहीत्वा 'सललिय' सललित 'दप्पण

किया (तए णं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं किंते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं सुयंत परमसुहफास दरिसणिज्जं गेण्हइ) उसके बाद उस राजवर कन्या द्रौपदी ने एक बडा विस्तृत श्री दामकाड-जिस की सुन्दरता और सुगधि का हम क्या वर्णन करें-जो अपूर्व था-पाटल-गुलाब के पुष्पों से, मल्लिका-मोंगरा के पुष्पो से यावत् सप्तच्छद वृक्ष के पुष्पो के गूथा गया था और जिस में से नासिका को तृप्ति करने वाली गध निकल रही थी। जिसका स्पर्श परम सुख दायक था-तथा जो दर्शनीय था अपने हाथ में लिया (तएणं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं किंते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं सुयंत परमसुहफास दरिसणिज्जं गेण्हइ) ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ એક બહુ મોટો ભારે શ્રીદામકાંડને કે જેની સુંદરતાનુ વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી અને જે અપૂર્વ હતો-પાટલ ગુલાબના પુષ્પોથી, મલ્લિકા-મોગરાના પુષ્પોથી, ચમ્પાના પુષ્પોથી યાવત્ સપ્તચ્છદ વૃક્ષના પુષ્પોથી તે તૈયાર કરવામા આવ્યો હતો અને જેમાથી નાસિકાને તૃપ્તિ થાય તેવી સુવાસ પ્રસરી રહી હતી જેનો સ્પર્શ અત્યંત સુખકારી તેમજ જે દર્શનીય હતો-હાથમા લીધો

(तएणं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं किंते ! पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं सुयंत परमसुहफासं दरिसणिज्जं गेण्हइ) तएणं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं किंते ! पाडलम लिय चंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं सुयंत परमसुहफास दरिसणिज्ज गेण्हइ) ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ એક બહુ મોટો ભારે શ્રીદામકાંડને કે જેની સુંદરતાનુ વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી અને જે અપૂર્વ હતો-પાટલ ગુલાબના પુષ્પોથી, મલ્લિકા-મોગરાના પુષ્પોથી, ચમ્પાના પુષ્પોથી યાવત્ સપ્તચ્છદ વૃક્ષના પુષ્પોથી તે તૈયાર કરવામા આવ્યો હતો અને જેમાથી નાસિકાને તૃપ્તિ થાય તેવી સુવાસ પ્રસરી રહી હતી જેનો સ્પર્શ અત્યંત સુખકારી તેમજ જે દર્શનીય હતો-હાથમા લીધો

(तएणं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं किंते ! पाडलम लिय चंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं सुयंत परमसुहफास दरिसणिज्ज गेण्हइ) ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ એક બહુ મોટો ભારે શ્રીદામકાંડને કે જેની સુંદરતાનુ વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી અને જે અપૂર્વ હતો-પાટલ ગુલાબના પુષ્પોથી, મલ્લિકા-મોગરાના પુષ્પોથી, ચમ્પાના પુષ્પોથી યાવત્ સપ્તચ્છદ વૃક્ષના પુષ્પોથી તે તૈયાર કરવામા આવ્યો હતો અને જેમાથી નાસિકાને તૃપ્તિ થાય તેવી સુવાસ પ્રસરી રહી હતી જેનો સ્પર્શ અત્યંત સુખકારી તેમજ જે દર્શનીય હતો-હાથમા લીધો

(तएणं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं किंते ! पाडलम लिय चंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं सुयंत परमसुहफास दरिसणिज्जं

सकतविवसदसिए य ' दर्पणसंक्रान्तनिजसदर्शितान्=दर्पणे संक्रान्तानि यानि राज्ञां निजानि-प्रतिबिम्बानि, तैः सदर्शिताः=प्रतिबोधितास्ताश्च प्रवरराजसिंहान सिंहसदृशशूरान् श्रेष्ठनृपान् दक्षिणेन हस्तेन ' से ' तस्यां द्रौपद्या ' दरिसए ' दर्शयति इह कर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षाया षष्ठी। तथा-' फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुरभणिया ' स्फुटविशदविशुद्धरिमितगम्भीरमधुरभणिता= अर्थत' हत्येण दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊण वससत्तसामत्थगोत्तविक्कतिकतिबहुविहआगममहप्पसूवजोव्वणगुणलावण्ण कुल जाणिया कित्तण करेइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने अपने हाथ में एक चमकता हुआ दर्पण लिया। यहां दर्पण के इन और विशेषणों का यावत् शब्द से ग्रहण हुआ है वे विशेषण ये हैं ' सामाविवघसं चोद्दसजणस्स उस्सुयकर विचित्तमणिरयणवद्धछरुह " इनका अर्थ इस प्रकार है-यह दर्पण स्वभावतः चिकना था। तथा तरुणजनों के चित्त में अपने को देखने की अभिलाषा का जनक था। मुष्टि से पकडने का जो इसका स्थान था वह विचित्र मणि-रत्नों से निर्मित था। उस दर्पण में जिन २ सिंह जैसे शूरवीर राजाओं के उस समय प्रतिबिम्ब पड़े हुए थे उन प्रतिबिम्बों को लेकर उस धायने उन श्रेष्ठ राजाओं को उस द्रौपदी के लिये अपने दक्षिण हाथ से बतलाया। बतलाते समय उन्हें दिखाते समय-वह धात्री बिलकुल अर्थ की अपेक्षा स्फुट एव वर्ण

रायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाण अम्मापिऊण वससत्तसामत्थगोत्तविक्कतिकतिबहुविहआगममहाप्पसूवजोव्वण गुणलावण्ण कुलजाणिया कित्तण करेइ)

ત્યારપછી તે ક્રીડનધાત્રીએ પોતાના હાથમા એક ચમકતો અરીસો લીધો અહીં ' અરીસા ' માટે યાવત્ શબ્દથી નીચે લખ્યા મુજબ વિશેષણોનુ પણ ગ્રહણ સમજવુ જોઇએ (मामोवियघस चोद्दहजणस्स उस्सुयकर विचित्त मणिरयणवद्धछरुह) આ વિશેષણોનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-તે અરીસો સ્વાભાવિક રીતે લીસો હતો, તેમજ તરુણ સ્ત્રીઓના ચિત્તમા તેને જોવાની સહજ ભાવે ઈચ્છા જાગ્રત થાય તેવો હતો તે અરીસાનો હાથો વિચિત્ર મણીરત્નોથી જડેલો હતો તે અરીસામા સિંહ જેવા શૂરવીર જે જે રાજાઓ દેખાયા તે ધાત્રીએ તે રાજાઓને પોતાના જમણા હાથથી સકેત કરીને બતાવ્યા બતાવતી વખને અને સમજાવતી વખતે તે ધાય અર્થની અપેક્ષાથી

स्फुट, वर्णतो विशद स्फुटविशद-शब्दार्थदोषरहित, रिभित-स्वरयुक्त गम्भीर-मेघध्वनिवत्, मधुर-मिग श्रवणसुखद, भणित भाषित यस्या क्रीडिकाया सा तथा, सा क्रीडिका तेषा धर्मेषा पार्थिवानां ' अम्मापिउण ' मातापित्रोः ' वससत्तसामत्थगोत्तविक्कमकन्तिबहुविधागममाहप्परूवजोव्वणगुणलावण्णकुलसीलजाणिया ' वशसत्त्वसाम र्थगोत्रविक्रान्तिकान्तिबहुविधागममाहात्म्यरूपयौवनगु णलावण्यकुलशीलज्ञायिका=वश-हरिवशादिक, सत्त्वम्-आपत्सु धैर्यम् सामर्थ्य= बल गोत्र=गौतमगोत्रादि, विक्रान्ति-विक्रम, कान्ति-प्रभा, बहुविधागम अनेक शास्त्रविशारद, माहात्म्य-महानुभावता, तथा-रूपयौवनगुणलावण्यानि च तथा-कुल-वशस्यावान्तरभेद, शील च-स्वभाव च जानाति या सा ' कित्तण ' कीर्तन= वशादिवर्णन करोति स्म । प्रथम तावत्-' वण्हिपुगवाण ' वृष्णिपुङ्गवाना ' दस दसारवीरपुरिसाण ' दशाना दशार्हाणा समुद्रविजयादीना वीरपुरुषाणा, ' तेलोक्क बलवगाण ' त्रैलोक्यबलवता ' सचुसयसहस्समाणाणमद्दगाण ' शत्रुशतसहस्रमानाव मर्दकाना, तथा-' भवसिद्धियवरपुडरीयाण ' भवसिद्धिकवरपुण्डरीकाणा=भवति

की अपेक्षा विशद ऐसी विशुद्ध-शब्दार्थ दोष रहित-स्वर युक्त मेघ ध्वनि समान गभीर मधुर वाणी से भाषण करती जाती थी। उस भाषण मे वह उन सब राजाओं के माता, पिता, वश, सत्त्व, सामर्थ्य, गोत्र, विक्रम, कांति, अनेक शास्त्रों का ज्ञातृत्व, माहात्म्य, तथा रूप, यौवन गुण, लावण्य, कुल एव शील की ज्ञाता होने के कारण इन सब का वर्णन करती जाती थी। वश से हरिवश आदि का और कुल से वशके अवान्तर भेद का कथन होता है। (पढम ताव वण्हिपु गवाण दसदसारवीरपुरिसाण तेल्लोक्कबलवगाण सचुसयसहस्समाणाव मद्दगाण भवसिद्धिपवरपुडरीयाण चिल्लगाण बलवीरियरूवजोव्वण

એકદમ સ્ફુટ અને વર્ણની અપેક્ષાથી વિશદ એવી વિશુદ્ધ એટલે કે શબ્દાર્થ દોષરહિત-સ્વરયુક્ત, મેઘધ્વનિ જેવી ગભીર મધુરવાણીનુ ઉચ્ચારણ કરી રહી હતી પોતાના ભાષણ વડે તે ધાય બધા રાજાઓના માતા પિતા વશ, સત્વ, સામર્થ્ય, ગોત્ર, વિક્રમ, કાતિ, શાસ્ત્રજ્ઞાન, મહાત્મ્ય તેમજ રૂપ, યૌવન, ગુણ, લાવણ્ય, કુળ અને શીલ વગેરેની બાબતમા જાણકાર હતી એટલે બધુ વર્ણન કરતી જતી હતી વશથી હરિવશ વગેરે અને કુળથી વશનો અવાન્તર ભેદનુ કથન થયુ છે

(पढम ताव वण्हिपुगवाण दसदसारवीरपुरिसाण तेलोक्कबलवगाण सचु सयसहस्समाणावमद्दगाण भवसिद्धिपवरपुडरीयाण चिल्लगाणं बलवीरियरूव

भाविनी सिद्धिर्येषा, ते भवसिद्धिकास्तेषा मध्ये वरपुण्डरीकाणीव ये श्रेष्ठास्ते तथा तेषा, तथा ' चिल्लगाणं ' तेजसा देदीप्यमानाना ' चिल्लग ' इति देशी शब्दः । तथा- ' बलवीरियरूवजोव्वणगुणलावन्नकित्तिया ' बलवीर्यरूपयौवनगुणलावण्य कीर्तिका=बल-कायिक, वीर्यम्-उत्साहः, रूप-सौन्दर्यं, यौवन-तारुण्य, गुणान्-औदार्यगाम्भीर्यादीन्, लावण्य-यौवनवयोजन्य कान्तिविशेष, कीर्तयति या सा तथा, सा क्रीडिकाधात्री कीर्तन करोति स्मेत्यर्थ । अत्र पूर्वोक्तमपि विशेषण किंचिद् विशेषबोधनार्थं पुनः कथितम् ।

ततस्तदनन्तर पुनः सा क्रीडनधात्री ' उग्गसेणमाईण जायवाण ' उग्रसेनादीना यादवाना बलवीर्यादि कीर्तन करोति कृत्वा भणति च=सा धात्री द्रौपदी

गुणलावण्ण कित्तियाकित्तणं करेइ) सबसे पहिले उस क्रीडन धात्री ने वृष्णिवंश के पुंगव समुद्रविजय आदिदश दशार्हों के कि जो त्रैलोक्य में भी विशिष्ट बलशाली माने जाते थे, लाखो शत्रुओ के मान को मर्दन करने वाले थे, भवसिद्धिक पुरुषों में जो श्रेष्ठ कमल के जैसे माने गये हैं, और जो अपने स्वाभाविक तेज से सदा दमकते रहते थे बल का, वीर्य का, रूप का, यौवन का, गुणो का, लावण्य का, कीर्तिका होने के कारण कीर्तन-वर्णन किया। शारीरिक शक्तिका नाम बल, उत्साह का नाम वीर्य, सौन्दर्य का नाम रूप तारुण्य का नाम यौवन है । औदार्य गाभीर्य आदि गुण है । यौवन वय से जन्य जो कांति शरीर में आती है वह लावण्य है (तओ पुणो उग्गसेणमाईण जायवाण भणइ य सोहग्गरूवकलिए वरेहि वर पुरिसगंधहत्थीण जो हु ते होइ हियय दइओ, तण्ण सा दोवई रायवरकन्नगा वट्टणं रायवरसहस्साण मज्झ

जोव्वणगुणलावण्णकित्तिया कित्तण करेइ)

તે ક્રીડન ધાત્રીએ સૌ પહેલા વૃષ્ણિ વંશમા પુંગવ (શ્રેષ્ઠ) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોનુ-કે જેઓ ત્રણે લોકોમા પણ વિશિષ્ઠ શક્તિશાળી ગણાતા હતા, લાખો શત્રુઓના માનનુ મર્દન કરનારા હતા, ભવસિદ્ધિક પુરૂષોમા જેઓ કમળ ની જેમ શ્રેષ્ઠ ગણાતા હતા અને જેઓ પોતાના સ્વાભાવિક તેજથી હમેશા પ્રકાશતા રહેતા હતા, બળ, વીર્ય, રૂપ, યૌવન, ગુણો, લાવણ્ય, કીર્તિ વગેરેથી સંપન્ન હતા-વર્ણન કર્યુ શારીરિક શક્તિનુ નામ બળ, ઉત્સાહનુ નામ વીર્ય, સૌન્દર્યનુ નામ રૂપ અને તારૂણ્યનુ નામ યૌવન છે ઔદાર્ય, ગાભીર્ય ગુણો છે યુવાવસ્થામા જે શરીર કાંતિવાળુ થાય છે તેને લાવણ્ય કહેવામા આવે છે

(तओ पुणो उग्गसेणमाईण जायवाण भणइ य सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीण जो हु ते होइ हिययदइओ तएण तं दोवई रायवरकन्नगा

पुनराह— 'सोहग्गरूवकलिए' इत्यादि, एतत्पदान्वयमुखेनव्याख्या-'वरपुरिसगंधहत्थीणं' वीरपुरुषगन्धहस्तिना=हस्तिषु गन्धहस्तिन इव ये विशिष्टगुणसद्भावात् पुरुषेषु सर्वतः श्रेष्ठास्ते वरपुरुषगन्धहस्तिनस्तेषां मध्ये 'सोहग्गरूवकलिए' सौभाग्यरूपकलितः-अतिशयेन सौभाग्यसौन्दर्यसमन्वित, यः खलु न तव हृदय दयित=हृदयप्रियः 'होइ' भवति, त 'वरेहि' वरय=पतिभावेन स्वीकुरु इत्यर्थ ।

ततस्तदनन्तर खलु द्रौपदी राजवरकन्या बहूना राजवरसहस्राणा मध्यमध्येन 'समइच्छमाणी २' समतिक्रामन्ती=गच्छन्ती 'पुव्वकयणियाणेण' पूर्वकृतनिदानेन=सुकुमारिकाभवे भर्तृपञ्चकाभिलाषरूप निदान कृत तेन, 'चोइज्जमाणी २' प्रेर्यमाणा २ यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रोपागच्छति, उपागत्य तान् दशार्धवर्णेन-पञ्चवर्णेन कुसुमदाम्ना 'आवेढियपरिवेढिए' आवेष्टितपरिवेष्टितान् करोति,

मज्झेण समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पचपडवा तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने यादव वशवाले उग्रसेन आदि यादवो के बलवीर्य आदि का वर्णन किया-उसने द्रौपदी से कहा ये जैसे हाथियों में गधहस्ती श्रेष्ठ होता है उसी तरह ये पुरुषों मे विशिष्ट गुणोंके सद्भाव के कारण सर्व प्रकार से श्रेष्ठ हैं-उनके बीच में जो तुझे सौभाग्यरूप सकलित प्रतीत हो और तेरे हृदय को प्यारा लगे-उसे तू पतिरूप से वरले । इसके बाद वह राजवर कन्या द्रौपदी उन हजारों राजाओ के बीच से होती हुई सुकुमारिका के भव में कृत निदान के प्रभाव से बार २ प्रेरित होकर जहा पाच पाडव थे-वहा पहूँची-(उवागच्छित्ता ते पच पाडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुम दामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ, करित्ता एव वयासी, एएण मए पच

बहूण रायवरसहस्साण मज्झ मज्झेण समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારપછી ક્રીડન ધાત્રીએ ઉગ્રસેન વગેરેનુ વર્ણન કર્યું અને કહ્યુ કે-હાથીઓમા જેમ ગધ હસ્તી ઉત્તમ ગણાય છે તેમજ પુરૂષોમા સવિશેષ ગુણવાન એવા એઓ બધી રીતે સારા છે, આ બધામા તને જે સૌભાગ્ય શાળી લાગતા હોય અને તને જેઓ ગમતા હોય તેઓને તુ પતિ રૂપમા સ્વીકારી લે ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી તે હજારો રાજાઓની વચ્ચેથી પસાર થઇને પોતાના સુકુમારિકાના ભવમા કરેલા અભિલાષથી પ્રેરાઇને જ્યા પાચ પાડવો હતા ત્યા પહોચી

(उवागच्छित्ता ते पच पाडवे तेण दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेण आवेढिय परिवेढिय करेइ, करित्ता एव वयासी, एएण मए पचपडवा

कृत्वा एवमवादीत्-एते खलु पञ्च पाण्डवा मया वृता इति। ततः खलु 'ताइ वासुदेवपामोक्खाइ बहूणि रायसहस्साणि' तानि वासुदेवप्रमुखानि बहूनि राजसहस्रसंख्यका वासुदेवप्रमुखा राजान इत्यर्थः। महता २ शब्देनोद्घोषयन्त एव वदन्ति-सुवृत्त खलु भोः! द्रौपद्या राजवरकन्यया इति कृत्वा-इत्युक्त्वा स्वयंवरमण्डपात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वका स्वका आवासास्तत्रैवोपागच्छन्ति। ततः खलु धृष्टद्युम्नः कुमारः पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्या चातुर्घण्टमश्वरथं 'दुरूहइ' दूरोहयति=आरोहयति दूरोह कम्पि-

---

पडवा वरिया, तएण तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि, महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयंति, सुवरिय खलु भो! दोवइ एण रायवरकन्नाए त्ति कट्टु सयंवरमडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छंइ) वहा पहुच कर उसने उन पाचो पाडवों को उस पचवर्णवाली माला से अवेष्टित परिवेष्टित कर दिया। करके फिर वह इस प्रकार कहने लगी-ये पांच पाडव मैंने पतिरूप से वर लिये हैं। इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख हजारो राजाओं ने बडे २ जोर के शब्दो से ऐसा कहा इस राजवर कन्या द्रौपदीने बहुत अच्छे वर वरे ऐसा कहकर वे उस स्वयंवर मडप से बाहिर हो गये। बाहिर आकर फिर वे जहा अपने २ आवास स्थान थे वहा चले आये। (उवागच्छित्ता तएण धट्ठज्जुण्णे कुमारे पच पडवे दोवइ रायवरकण्ण चाउग्घट आसरह दुरूहइ, दुरूहित्ता कपिल्लपुर

तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि, महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयंति, सुवरिय खलु भो! दोवइए रायवरकन्नाए २ त्ति कट्टु सयंवरमडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया२ आवासा तेणेव उवागच्छइ)

ત્યા પહોચીને તેણે તે પાચ પાડવોને પાચ વર્ણવાળી માળાથી અવેષ્ટિત, પરિવેષ્ટિત કરી દીધા ત્યારપછી તેઓને કહેવા લાગી કે હે પાચ પાડવો! મે તમને પતિ રૂપમા વરી લીધા છે ત્યારબાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓએ બહુ મોટા સાદથી આ પ્રમાણે કહ્યુ કે આ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ બહુ જ સારા વરો પસદ કર્યા છે આમ કહીને તેઓ સર્વે સ્વયંવર મડપમાથી બહાર નીકળી ગયા બહાર નીકળીને તેઓ જ્યા પોતાના આવાસ સ્થાનો હતા ત્યા જતા રહ્યા

(उवागच्छित्ता तएण धट्ठज्जुण्णे कुमारे पचपडवे दोवइ रायवरकण्णं चाउग्घट आसरह दुरूहइ, दुरूहित्ता कपिल्लपुर मज्झं मज्झेणं जाव सय भवण अणु-

रयपुरस्य मध्यमध्येन यावत् स्वकं भवनमनुप्रविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पट्टए' पट्टकम्=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः 'मज्जावेइ' मज्जयति=स्नपयति अग्निहोम विवाहविधिनाऽग्नौ होम कारयति, पञ्चाना पाण्डवाना द्रौपद्याश्च पाणि ग्रहण कारयति, अत्र पञ्चाना पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपद्या राजवरकन्याया. इममेतद्रूप प्रीतिदान यौतुकदान ददाति,

मज्झ मज्झेण जाव सयभवण अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पच पडवे दोवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ, पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गहण कारवेइ,) इसके बाद धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पाच पाडवो को एव राजवर कन्या द्रौपदी को चारघटो से युक्त उस अश्वरथ पर बैठाया-बैठाकर काम्पिल्यपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहा अपना भवन था वहां आया वहां आकर वह उसमें उन सब के साथ प्रविष्ट हुआ। इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पांचो पांडवों को और राजवर कन्या उस द्रौपदी को एक पट्टक पर बैठा दिया-बैठाकर फिर उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चादी सोने के घड़ो से-अभिषेक करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और उसकी साक्षी पूर्वक पाचो-पाडवो के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का पाणि ग्रहण सस्कार करवा दिया। (तएण से दुवए राया दोवइए राय

पविसइ, तएण दुवए राया पच पडवे दोवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ, पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गहण करावेइ)

ત્યારપછી ધૃષ્ટદ્યુમ્ન કુમારે તે પાચ પાડવોને અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને ચાર ઘટવાળા તે અશ્વરથ ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઇને જ્યા પોતાનુ ભવન હતુ ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેઓ સર્વે તેમા પ્રવિષ્ટ થયા ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે પાચે પાડવોને અને રાજવર કન્યા તે દ્રૌપદીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડી દીધા અને બેસાડીને તેણે તેમનો સફેદ, અને પીળા કળશોથી-એટલે કે ચાદી અને સોનાના કળશોથી અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવીને તેણે અગ્નિહોમ કરાવરાવ્યો અને તેની સાક્ષીમા પોતાની કન્યા [illegible] હસ્તમેળાપ તેઓની સાથે કરાવી દીધો

(तएण से [illegible] ५९ इम

तद् यथा-अष्ट हिरण्यकोटीः, यावत्=अष्ट रजतकोटी, अष्ट सुवर्णकोटी, अष्ट 'पेसणकारीओ' प्रेषणकारिणीः, आज्ञाकारिणीः दासचेटीः-दासपुत्री', अन्न च विपुल धनकनक-यावत् धन-गणिमादिक, कनकम् अघटितस्वर्ण, यावच्छब्देन-रत्नानि-कर्केतनादीनि, मणयश्चन्द्रकान्ताद्या' मौक्तिकानि च शङ्खश्च प्रतीत एव शिलाप्रवालानि च विद्रुमाणि रक्तरत्नानि-पद्मरागादीनि तान्येव सद् विद्यमान यत् सार=प्रधान स्वापतेयं द्रव्यं तद् ददाति स्म।

ततः खलु स द्रुपदो राजा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रमरयकान् राज्ञः विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रगन्धादिभिर्यावत् सत्कारयति समानयति, सत्कार्य समान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २२ ॥

वरकण्णयाए इमं गयासत्त पीईदाणं दलयइ, तं जहा-अट्ठहिरण्ण कोडीओ जाव अट्ठपेसणकारिओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणकणग जाव दलयइ, तएणं से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाणं विउलेण असण४ वत्थगध जाव पडिविसज्जेइ) इसके बाद द्रुपद राजाने राजवर कन्या उस द्रौपदी के लिये इतना इस प्रकार प्रीति दान दिया आठ हिरण्य कोटि-चादी के बने हुए आठ करोड आभूषण, सुवर्ण के बने हुए आठ करोड आभूषण यावत् आज्ञा कारिणी ८ आठ दासियों और भी बहुत सा गणिमादिक रूप धन, अघटित सुवर्ण, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणि, मौक्तिक, शंख, विद्रुम, पद्मरागादि रक्त रत्न। यह सब सारभूत द्रव्य उसके लिये प्रदान किया। इसके बाद द्रुपदराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार एव वस्त्र गध आदि से सत्कृत सन्मानित कर अपने यहा से विदा कर दिया ॥ सू० २२ ॥

दलयइ, तं जहा अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणकणग जाव दलयइ, तएणं से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाण विउलेण असण ८ वत्थ गध जाव पडिविसज्जेइ)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને આ પ્રમાણે પ્રીતિદાન આપ્યુ કે આ० હિરણ્ય-કોટિ-ચાદીના આ० કરોડ આભૂષણો યાવત્ આજ્ઞામા રહેનારી આ० દાસીઓ અને બીજુ પણ ઘણુ ગણિમ વગેરે રૂપ ધન, અઘટિત સુવર્ણ, કેતન વગેરે રત્ન, ચન્દ્રકાત વગેરે મણિ, મૌક્તિક, શ ખ, વિ્રુપ, પદ્મરાગ વગેરે રક્ત રત્નો આપ્યા આ બધુ સારભૂત ધન દ્રૌપદને આપ્યુ ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો અને વસ્ત્ર, ગ ધ વગેરેથી સ કૃત સન્માનિત કરીને પોતાના નગરથી વિદાય કર્યા. ॥ સૂત્ર ૨૨ ॥

रयपुरस्य मध्यमध्येन यावत् स्वक भवनमनुप्रविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पट्टए' पट्टक=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह 'सेयापीतैः कलशैः' मज्जापेइ' मज्जनयति=स्नपयति अग्निहोम विवाहविधिनाऽग्नौ होम कारयति, पञ्चाना पाण्डवाना द्रौपद्याश्च पाणि ग्रहण कारयति, अत्र पञ्चाना पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपद्या राजवरकन्याया. इममेतद्रूप प्रीतिदान यौतुकदान ददाति,

मज्झ मज्झेण जाव सयभवण अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पच पडवे दोवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ, पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गहण कारवेइ,) इसके बाद धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पाच पाडवो को एव राजवर कन्या द्रौपदी को चारघटो से युक्त उस अश्वरथ पर बैठाया-बैठाकर कापिल्यपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहा अपना भवन था वहां आया वहां आकर वह उसमें उन सब के साथ प्रविष्ट हुआ। इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पाचो पांडवों को और राजवर कन्या उस द्रौपदी को एक पट्टक पर बैठा दिया-बैठाकर फिर उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चादी सोने के घड़ो से-अभिषेक करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और उसकी साक्षी पूर्वक पाचो-पाडवो के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का पाणि ग्रहण सस्कार करवा दिया। (तएणं से दुवए राया दोवइए राय

पविसइ, तएणं दुवए राया पच पडवे दोवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ, पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गहण करावेइ)

ત્યારપછી ધૃષ્ટદ્યુમ્ન કુમારે તે પાચ પાડવોને અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને ચાર ઘટવાળા તે અશ્વરથ ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને કપિલપુર નગરની વચ્ચે થઇને જ્યા પોતાનુ ભવન હતુ ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેઓ સર્વે તેમા પ્રવિષ્ટ થયા ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે પાચે પાડવોને અને રાજવર કન્યા તે દ્રૌપદીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડી દીધા અને બેસાડીને તેણે તેમનો સફેદ, અને પીળા કળશોથી-એટલે કે ચાદી અને સોનાના કળશોથી અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવીને તેણે અગ્નિહોમ કરાવરાવ્યો અને તેની સાક્ષીમા પોતાની કન્યા દ્રૌપદીનો હસ્તમેળાપ તેઓની સાથે કરાવી દીધો

(तएणं से दुवए राया दोवइए रायवरकण्णयाए इम

सयाइं२ आवासाइ तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तएणं से पंडुराया हत्थिणाउरणयरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता कोडुंबिय० सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया ! विउल असण४ तहेव जाव उवणेति, तएण ने वासुदेवपामोक्खा बहवे राया एहाया कयवलिकम्मा तं विउल असणं४ तहेव जाव विहरति, तएणं से पंडुराया पच्च पडवे दोवइं च देविं पट्टयं दुरूहेइ दुरूहित्ता सेयपीएहिं कलसेहि एहावेंति एहावित्ता कल्लाणकारि करेइ करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेण असण४ पुप्फवत्थेण सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ बहूहि जाव पडिगयाइ ॥ सू० २३ ॥

टीका-' तएण से ' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु पाण्डु राजा तेषा वासुदेव प्रमुखाणा बहूना राजसहस्राणा करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिया ! हस्तिनापुरे नगरे पञ्चाना पाण्डवाना द्रौपद्याश्च देव्या. कल्याणकरो भविष्यति तत्-तस्मात् यूय खलु हे देवानुप्रियाः-मामनुगृह्णत , अकालपरिहीन=कालविलम्बरहित-शीघ्र समवसरत=आग-

---

' तएण से पडूराया इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पडूराया) उस पांडुराजा ने (तेसिं वासुदेव पामोक्खा ण) उन वासुदेव प्रमुख (बहूण राय० करयल एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पचण्ह पडवाण दोवइए देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम

तएण से पडुराया इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यार्पछी (से पडूराया) ते पाडु राजाओ (ते सिं वासुदेवपामोक्खाण) ते वासुदेव प्रमुख

(बहूण राय० करयल एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पचण्ह पडवाणं दोवइए, देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ त तुब्भेण देवाणुप्पिया ! मम अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह)

मूलम्–तएणं से पडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं राय० करयल एवं वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्ह पंडवाणं दोवइए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह, तएणं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयर जाव पहारेत्थ गमणाए । तएणं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे पचण्ह पडवाणं पच पासायवडिसए कारेह अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेंति, तएणं से पंडुए पचहिं पडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसपरिवुडे कपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ२ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए, तएणं से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता कोडुंबि० सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामुक्खाणं बहूण रायसहस्साण आवासे कारेह अणेगखभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छइ, तएणं से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे पहाए कयबलि० जहा दुवए जाव जहारिह आवासे दलयइ, तएणं ते वासुदेव पा० बहवे ।—जेणेव

मेघकुमार-प्रासादवद् वर्णन विज्ञेयम् यावद् अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टान् प्रति रूपान्=शोभासौन्दर्यसम्पन्नान् । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः-'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=आज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य हस्तिनापुर गत्वा पञ्च प्रासादावतसकान् यावत् कारयन्ति । ततस्तदनन्तर पाण्डुराजा पञ्चभिः पाण्डवै द्रौपद्या देव्या च सार्धं हयगजरथपदातिसपरिवृतः काम्पिल्यपुरात् प्रतिनिष्क्रामति-प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव हस्तिनापुर नगर तत्रैवोपागत ।

तत' खलु स पाण्डूराजा तेषा वासुदेवप्रमुखाणामागमन ज्ञात्वा कौटुम्बिक-पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः !

यद्भुत ऊँचे हो। इन प्रासादों का वर्णन प्रथम अध्ययन में उक्त मेघ कुमार के प्रासादों जैसा जानना चाहिये । यावत् ये प्रासाद अनेक स्त-भशत से युक्त हो-शोभा सौन्दर्य से सपन्न हों। (तएण ते कोडुम्बिय पुरिसा पडिसुणेति, जा करावेति) राजा की इस प्रकार की आज्ञा को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने मान लिया और हस्तिनापुर जाकर उन्होंने पाच प्रासाद कथित रूपसे बनवा दिये। (तएण से पडुए पचहिं पडवेहि दोवइए देवीए सद्धिं हय गय सपरिवुडे कपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए) इसके बाद वे पाडुराजा पाडवों और द्रौपदी देवी को साथ लेकर हय, गज, आदि चतुरगिणी सेना के साथ २ काम्पिल्यपुर नगर से चल दिये-चलकर जहा हस्तिनापुर नगर था-वहा आये (तएण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमणं

પાચે પાડવો માટે પાચ ઉત્તમ મહેલ બનાવડાવો મહેલ ઊચા હોવા જોઇએ આ મહેલોનુ વર્ણન પહેલા અધ્યયનમા વર્ણવવામા આવેલા મેઘ કુમારોના મહેલો જેવુ જાણી લેવુ જોઇએ યાવત્ આ બધા મહેલો ઘણા સે ડો થાભલા ઓથી યુક્ત તેમજ શોભા તથા સૌદર્ય સ પન્ન હોવા જોઇએ (તએણ તે કોડુબિયપુરિસા પડિસુણે તિ જાવ કરાવે તિ) આ જાતની રાજાની આજ્ઞાને કૌટુબિક પુરૂષોએ સ્વીકારી લીધી અને હસ્તિનાપુર જઈને તેઓએ કહેવા મુજબ જ પાચ મહેલો તૈયાર કરાવી દીધા

(तएण से पडुए पचहिं पडवेहिं दोवइए देवीए सद्धिं हयगयसपरिवुडे कपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए)

ત્યારપછી તે પાડુ રાજા પાચે પાડવો અને દ્રૌપદી દેવીને લઇને સાથે ઘોડા, હાથી વગેરેની ચતુરગિણી સેનાની સાથે કાપિલ્યપુર નગરની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યા હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યા પહોચ્યા

(तएण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता कोडुबिय०

मन कुरुत । ततः खलु वासुदेवप्रमुखा प्रत्येक २ यावत् माधारयत गमनाय= हस्तिनापुर नगर गन्तु मवृत्ता इत्यर्थः ।

ततः खलु स पाण्डुनामको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे पञ्चानां पाण्डवानां पञ्च ' पासायवडिंसए ' प्रासादावतंसकान् कारयत । किं भूतानित्याह-' अब्भुग्गयमूसिय ' अभ्युद्गतोच्छ्रितान्-अत्युच्चानित्यर्थः । वर्णक-प्रयमाध्ययनोक्त-

अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीण समोसरह) हजारों राजाओं से अपने दोनों हाथों की अजलि करके और उसे शिर पर रखकर के बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार करके-इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियो ! हस्तिनापुर नगर में पाच पाडवों और द्रौपदी देवी का कल्याणकारी उत्सव होगा इसलिये हे देवानुप्रियों ! आप सब मेरे ऊपर अनुग्रह करके शीघ्र से शीघ्र पधारें । (तएण वासुदेवपामोक्खा पत्तेय २ जाव पहारेत्थ गमणाए) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख प्रत्येक जन वहाँ हास्तिना पुर जाने के लिये प्रस्थित हो गये । (तएण से पडुराया कोडुम्बियपुरिस सद्दावेइ २ एव वयासी-गच्छह णतुब्भे देवाणुप्पिया हत्थिणाउरे पचण्ह पडवाण पच पासायवडिंसए कारेह, अब्भुग्गयमुसिय वण्णओ जाव पडिरूवे) इतने में पाडुराजा ने कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया ओर बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग हस्तिना पुर जाओ वहा जाकर पाचों पाडवों के लिये पांच श्रेष्ठ प्रासाद बनवाओ । ये प्रासाद

હજારો રાજાઓને પોતાના બને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને ખૂબ જ નમ્રપણે નમસ્કાર કર્યા અને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર નગરમા પાચે પાડવો તેમજ દ્રૌપદી દેવીનો કલ્યાણકારી ઉત્સવ થશે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ મારા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે ત્યા પધારો (तएण वासुदेवपामोक्खा पत्तेय २ जाव पहारेत्थ गमणाए) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેક રાજા ત્યાથી હસ્તિનાપુર જવા ઉપડી ગયા

तएण से पडुराया कोडुबियपुरिस सद्दावेइ २ एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया हत्थिणाउरे पचण्ह पडवाण पच पासायवडिंसए कारेह, अब्भुग्गयमुसिय वण्णओ जाव पडिरूवे)

તે વખતે પાડુ રાજાએ કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે હસ્તિનાપુર જાઓ જઈને

उपागत्य तथैव यावद् विहरन्ति । ततः खलु स पाण्डू राजा हस्तिनापुर नगर-मनुप्रविशति, अनुप्रविश्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यूय खलु हे देवानुप्रियाः ! विपुलम् अशनपानखाद्यस्वाद्य, उपस्कारयत, उपस्कार्य यत्रैव वासुदेवप्रमुखास्तत्रैवोपनयत । तथैव यावद् उपनयन्ति, ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव विपुलमशनादि चतुर्विधाऽऽहारमुपस्कारयन्ति उपस्कार्य यावद् वासुदेवादीनामन्तिके-उपनयन्ति=उपस्थापयन्ति ।

नगर था वहा आगये । (तएणं से पडुरायाा तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव जहारिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइ २ आवासाइ तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरति) वासुदेव प्रमुख उन हजारों राजाओं का आगमन जानकर पाडुराजाने हर्षित एव सतुष्ट होकर स्नान किया वायसादि पक्षियों के लिये अन्नादि का देने रूप बलि कर्म किया- जिस प्रकार द्रुपद राजाने यथा योग्य आवास-स्थान इन्हों के लिये दिये थे उसी तरह पाडुराजा ने भी उन्हें जो जिस के योग्य स्थान था वह आवासस्थान दिया । पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहा अपने २ ठहरने के लिये आवासस्थान थे वहा गये वहा जाकर वे उसी तरह से ठहर गये । (तएण से पडूरायाा हत्थिणाउर नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडुबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया ! विउल असण ४ तहेव जाव उव

(तएण से पडुरायाा तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव जहारिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइ २ आवासाइ तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरति)

વાસુદેવ પ્રમુખ તે હજારો રાજાઓનુ આગમન સાભળીને હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને પાડુ રાજાએ સ્નાન કર્યુ કાગડા વગેરે પક્ષીઓના માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું દ્રુપદ રાજાએ જેમ તે રાજાઓને યથા યોગ્ય આવાસ સ્થાનો રહેવા માટે આપ્યા હતા તેમજ પાડુ રાજાએ પણ તેઓ બધાને ઉચિત આવાસો આપ્યા ત્યારપછી તેઓ વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ જ્યા પોતપોતાના રોકાવાના આવાસો હતા ત્યા ગયા, ત્યા પહોચીને તેઓ ત્યા રોકાઈ ગયા

(तएण से पाडुरायाा हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडुबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया ! विउलं असण

हस्तिनापुरस्य नगरस्य बहिः प्रदेशे वासुदेवप्रमुखानां बहूनां राजसहस्राणामावासान् कारयत, कौटुम्बिकपुरुषाः यावत् प्रत्यर्पयन्ति=राज्ञे निवेदयन्ति स्म । ततः खलु वासुदेवप्रमुखा बहवः सहस्रसंख्यका राजानो यत्रैव स्वकाः स्वका आवासास्तत्रैवोपागच्छन्ति, जाणित्ता कोडुंबिय० सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करह) जहां आकर उन पांडुराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का आगमन जानकर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और हस्तिनापुर नगर के बाहिर वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को ठहरने के लिये आवासों को बनवाओ (अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति) ये आवास अनेक सैकडों स्तंभों से युक्त हो। इस प्रकार जैसे आवासों को बनवाने के लिये पांडु राजा ने उन कौटुम्बिक पुरुषों से कहा था-वैसे ही आवास उन कौटुम्बिक पुरुषों ने बनवादिये और बनवाकर पीछे इसकी खबर भी राजा को करदी। इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहां हस्तिनापुर

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह)

ત્યા આવીને તે પાડુ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને આવી ગયેલા જાણીને પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને હસ્તિનાપુર નગરની બહાર વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને રહેવા માટે આવાસો બનાવો

(अणेगखंभसय० तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति)

આ બધા આવાસો સેકડો સ્તંભોથી યુક્ત હોવા જોઇએ આ રીતે પાડુ રાજાએ જે જાતના આવાસો બનાવડાવવાનો હુકમ કર્યો હતો તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ તે જ જાતના આવાસો બનાવડાવી દીધા અને બનાવડાવીને કામ પુરૂ થઇ જવાની રાજાને ખબર આપી ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ જ્યા હસ્તિનાપુર નગર હતુ ત્યા આવી ગયા

स्नपयित्वा ' कल्लाणकारिं ' कल्याणकारि-शुभकारकं कर्म कारयति, कारयित्वा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसख्यकान् राज्ञो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा पुष्पवस्त्रादिभिः सत्कारयति, समानयति, सत्कार्य समान्य यावत् प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसख्यका राजानो यावत् प्रतिगताः ॥ सू०२३ ॥

मूलम्–तएणं ते पच्च पडवा दोवईए देवीए सद्धिं कल्लाकल्लिं वारवारेण ओरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरति, तएणं से पडू राया अन्नया कयाइं पचहि पडवेहि कोंतीए देवीए

को और द्रौपदी देवी को एक पट्टक पर बैठाया–बैठाकर उन का श्वेत पीत कलशों से चादी और सोने के घडो से स्नान करवाया स्नान करवाकर फिर उसने उनका शुभकारक कर्म करवाया । (करित्ता ते वासुदेव पामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेण असण ४ पुप्फवत्थेण सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ बहूहिं जाव पडिगयाइ) शुभकारक कर्म करवाकर बाद में उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का उस पाटुराज ने विपुल अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से एव पुष्प वस्त्रादि से खूब सत्कार किया सन्मान किया । यावत् फिर उन्हें अपने यहासे अच्छी तरह से विदा कर दिया। इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहा २ से जो २ आये थे वहा २ चले गये ॥ सू० २३ ॥

પાચે પાડવો અને દ્રૌપદી દેવીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને સફેદ તેમજ પીળા કળશોથી એટલે કે ચાદી અને સોનાના કળશોથી તેમને સ્નાન કરાવ્યુ સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેમણે તેમની પાસેથી શુભ કર્મો કરાવડાવ્યા

(करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेण असण पुप्फवत्थेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ तएण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ बहूहिं जाव पडिगयाइ)

શુભ કર્મો કરાવ્યા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને તે પાડુ રાજાએ વિપુલ અશન–પાન વગેરે રૂપ ચતુર્વિધ આહારથી તેમજ પુષ્પ વસ્ત્ર વગેરેથીખૂબ જ સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું યાવત ત્યારપછી તેઓને ત્યાથી સારી રીતે વિદાય કર્યા વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ પણ જ્યાથી આવ્યા હતા ત્યા જતા રહ્યા ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

तत खलु ते वासुदेवपमुखा बहवो राजानः स्नाताः कृतबलिकर्माणः= काकादिजीवेभ्यः कृतान्नादिसविभागाः, तद् विपुलम् अशन पान खाद्य स्वाद्य तथैव-आस्वादयन्तो विस्वादयन्त परिभुञ्जाना यावद् विहरन्ति=आसतेस्म। ततस्तदनन्तर स पाण्डुराजा तान् पञ्च पाण्डवान् द्रौपदी च देवीं 'पट्टय' पट्टक= पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरोहयन्ति=आरोहयति। आरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः स्नपयति,

णेति, तएण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा त विउल असण ४ तहेव जाव विहरति-तएण से पडुराया पचपडवे दोवइ च दोवि पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयपीएहिं ण्हावेंति, ण्हाविसा कल्लाण कारि करेइ) इस के बाद पाडुराजा ने हस्तिनापुर नगर में प्रवेश किया प्रवेश कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो! तुम लोग विपुल मात्रामें अशनादि रूप चतुर्विध आहार बनवाओ बनवाकर फिर उसे जहा वासुदेव प्रमुख राजा ठहरे हुए हैं वहा लेजाओ। इस प्रकार की अपने राजाकी आज्ञानुसार उन्होंने वैसा ही किया-चतुर्विध आहार बनवाया और फिर उसे वासुदेव आदि राजाओ के पास पहुँचा दिया। आहार के पहुँचने पर उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने स्नान किया बलिकर्म किया-काक आदि जीवों के लिये कृत अन्नमें से विभाग देनेरूप कियाकी-बादमें उन्हों ने उस चतु र्विध आहार को किया। इसके पश्चात् पाडुराजा ने उन पाचों पाडवों

४ तहेव जाव उवणेंति, तएण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलि कम्मा त विउल असण४ तहेव जाव विहरति-तएण से पडुराया पच पडवे दोवई च देविं पट्टय दुरुहेइ, दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति ण्हाविसा कल्लाणकारि करेइ)

ત્યારપછી પાડુરાજા હસ્તિનાપુર નગરમા પ્રવિષ્ટ થયા પ્રવિષ્ટ થઇને તેઓએ કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો વિપુલ માત્રામા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવો બનાવડાવીને તમે તે આહારને જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ રોકાયા છે ત્યા લઇ જાઓ, આ રીતે પોતાના રાજાની આજ્ઞા સાભ ળીને તે લોકોએ તે પ્રમાણે જ કર્યુ તેઓએ ચાર જાતના આહારો બના વડાવ્યા અને ત્યારપછી તે આહારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓની પાસે પહો ચાડી દીધા આહાર પહોંચાડી દીધા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્નાન કર્યુ અને કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યુ ત્યાર પછી તેઓએ તે ચાર જાતના આહારને જમ્યા ત્યારબાદ રાજાએ તે

त्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वदइ णमसइ महरिहेण आसणेणं उवणिमंतेइ,तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ,तएणं से पंडूराया कोंती-देवीं पच य पंडवा कच्छुल्लणारय आढति जाव पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारय असंजय अविरय अपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ नो पज्जुवासइ ॥ सू० २४ ॥

टीका—' तएणं ते ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते पञ्चपाण्डवा द्रौपद्या देव्या सार्धं ' कल्लाकल्लिं ' कल्याकल्ये प्रतिदिवसं वारंवारेण उदारान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहरन्ति । तत खलु स पण्डु राजाऽन्यदा कदाचित् पञ्चभि. पाण्डवैः कुन्त्या देव्या द्रौपद्या देव्या च सार्धं ' अतो अंतेउरपरियाल '

' तएणं ते पच पंडवा ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते पच पंडवा) वे पांचों पाडव (दोवईए देवीए) द्रौपदी देवी के साथ-(कल्लाकल्लिं वारंवारेण ओरालाइं भोग भोगाइं जाव विहरंति-तएणं से पंडूराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धिं अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ) प्रतिदिन बारी बारी से उदारकाम भोगों को भोगने लगे एक दिन की बात है-कि पांडु राजा किसी एक समय पांचों पांडवों एव अपनी पत्नी कुन्ती देवी और पुत्रवधू द्रौपदी

ટીકાર્થ—" तएणं ते पंच पंडवा इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (ते पंच पंडवा) તે પાંચ પાંડવો (दोवईए देवीए) દ્રૌપદી દેવીની સાથે

(कल्लाकल्लिं वारंवारेण ओरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरंति-तएणं से पंडूराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धिं अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ)

કલ્લાકલ્લિ વારંવારેણ ઉદાર કામભોગ ભોગવવા લાગ્યા. એક દિવસની વાત

दोवइए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लणारए दंसणेणं अइभद्दए विणीए अतोर य कलहसहिए जुज्झत्थोवत्थिए य अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए काल मियचम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगवए धरणिगोयरप्पहाणे सुवरणावरणिओवयणिउप्पयणि लेसणीसु य सकामणिअभिओगपण्णत्ति गमणीथभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे दट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसवअनिरुद्धणिसढ-उम्मुयसारणगयसुमुह दुम्मुयहातीण जायवाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण हियय दइए सथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भडणाभिलासी बहुसु य समरसयसपराएसु दंसणरए समतओ कलहसद्दखण अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाण आमतेऊण त भगवई पक्कमणिं गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभिलघयतो गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडबदोणमुहपट्टणासमसवाहमहस्समडिय थिमियमेइणीतल वसुह ओलोइतो रम्म हत्थिणाउर उवागए पडुरायभवणपि अइवेगेण समोवइए, तएणं से पडुराया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ पासित्ता पच्चहि पडवेहि छुतीए य देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ ॥

रइयवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचित शोभित वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीपवस्त्रधारक' । तथा-' दडकमडलुहत्थे ' दण्डकमण्डलुहस्तः-' जडामउडदित्तसिरए ' जटामुकुटदीप्तशिरस्कः, जण्णोवइयगणेत्तियमुजमेहलावागलधरे ' यज्ञोपवीतगणेत्रिकामुञ्जमेखलावल्कलधरः-तत्र यज्ञोपवीत यज्ञसूत्र गणेत्रिका-रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरण, मुञ्जमेखला-मुञ्जमय कटि बन्धनसूत्र वल्कल वृक्षत्वक्, तेषां धारकः स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत रुद्राक्षमालः, मुञ्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतवल्कल इत्यर्थः । ' हत्थकयकच्छभीए ' हस्तकृतकच्छपिकः-हस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, ' पियगधव्वे ' प्रियगन्धर्वः-गानप्रियः, ' धरणिगोयरप्पहाणे ' धरणिगोचरप्रधान-धरणिगोचराणा-भूमिचारिणा जनाना मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे, जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइयगणेत्तिय मुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसकामणिं अभिओगपण्णत्ति गमणीयभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से सुशोभित था। दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोमे था। जटारूपी मुकुट से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था। यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुञ्जमेखला-मुज का बना हुआ कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्हो ने धारण कररक्खी थी। हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रखी थी। गान इन्हे बहुत प्रिय था। भूमि गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यो कि ये आकाश मे भी विहार

(कालमियचम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइय गणेत्तियमुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य सकामणिं अभिओगपण्णत्ति गमणीयभणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे)

તેમનુ વક્ષસ્થળ કાળા હરણના ચર્મરૂપ ઉત્તરાસગથી શોભતુ હતુ દડ અને કમડળ તેમના હાથોમા હતા જટા રૂપી મુકુટથી તેમનુ મસ્તક પ્રકાશિત થઈ રહ્યુ હતું યજ્ઞ સૂત્ર-જનોઈ, ગણેત્રિકા-કાડામા પહેરવાની આભરણ રૂપ રુદ્રાક્ષની માળા, મુજ-મેખલા-મુજનુ બનેલુ કેડમા પહેાવાનુ બધન સૂત્ર અને વૃક્ષકની છાલ તેઓએ ધારણ કરેલી હતી હાથમા તેઓએ કચ્છપિકા-વીણા ધારણ કરેલી હતી સગીત તેમને ખૂબ જ ગમતું હતુ ભૂમિ ગોચરીઓ[illegible]ચે તેઓ પ્રધાન હતા કેમકે તેઓ આકાશમા વિચરણ કરતા

अन्तः=अन्तःपुरस्य प्रासादमध्ये अन्तःपुरपरिवारेण 'परिवाल' इति लुप्तवती यान्त साधं सपरिवृतः सिंहासनवरगतश्चापि विहरति । 'इम च' अस्मिन् समये खलु 'कच्छुल्लणारए' कच्छुल्लनाम्नाप्रसिद्धो नारदः दर्शनेन 'अइभद्दए' अतिभद्रकः=भद्रदर्शनः 'विणीए' विनीतः=नम्रो यावत 'अतो य' अन्तश्च-कलुषहृदयः, 'मज्झत्थोवत्थिए य' माध्यस्थोपस्थित =यावतो मध्यस्थभाव प्राप्तः 'अल्लीणसोमपियदसणे' आलीनसौम्यप्रियदर्शनः आलीनानामाश्रिताना सौम्यम् =आह्लादकं, प्रिय = प्रीतिकारक दर्शन यस्य स तथा, सुरूपः - सुन्दराकृतिक, तथा-'अमइलसगलपरिहिए' अमलिनसकलपरिहित.=अमलिन सकलम्-अख ण्डम् परिहित-वल्कलरूप परिधान यस्य स तथा, 'कालमियचम्मउत्तरासग

के साथ अतःपुर के प्रासाद के भीतर अन्त पुरपरिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे-कि (इमच ण) इसी समय (कच्छुल्लणारए पडुरायभवणसि अइवेगेण समोवइए दसणे ण अइभद्दए, विणीए, अतोय कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य, अल्लीणसोमपियदसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए) पाडुराजा के भवन में कच्छुल्लनाम से प्रसिद्ध नारद गगन-आकाश-मार्ग से बड़े वेगसे उतर कर आये। नारद देखने में अति भद्र थे। ऊपर से बडे विनीत थे। परन्तु भीतर में इनका हृदय बहुत अधिक कलुषित था। केवल ऊपर से ये माध्यस्थ भाव सपन्न थे। अपने आश्रित व्यक्तियों को इनका दर्शन आह्लादक एव प्रीति कारक होता था। आकृति उनकी बड़ी सुन्दर थी। इनका वल्कल रूप परिधान अमलिन-साफ स्वच्छ और खण्ड रहित था। (कालमिय

છે કે તે પાડુ રાજા કોઈ એક વખતે પાચે પાડવો, પોતાની પત્ની કુંતી દેવી અને પુત્ર વધુ દ્રૌપદીની સાથે રણુવાસના મહેલની અદર પોતાના પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા (इम च ण) તે વખતે

(कच्छुल्लणारए पडुरायभवणसि अइवेगेण, समोवइए दसणे ण अइभद्दए विणीए अतोय कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य, अल्लीणसोमपियदसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए)

પાડુ રાજાના ભવનમા કચ્છુલ્લ નામથી પ્રકાયેલા નારદ ગગન-આકાશ માર્ગથી બહુ જ વેગથી ઉતરીને આવ્યા નારદ દેખાવમા અત્યત ભદ્ર હતા ઉપર ઉપરથી તેઓ એકદમ વિનમ્ર હતા પણ અતર તેમનુ મન ખૂબ જ કલુષિત હતુ ફક્ત ઉપર ઉપરથી જ તેઓ માધ્યસ્થ ભાવ સપન્ન હતા આશ્રિત વ્યક્તિઓને તેમનુ દર્શન આહ્લાદક અને પ્રીતિકારક હતુ તેમની આકૃતિ ખૂબ જ સુદર હતી તેમનુ વલ્કલ રૂપ પરિધાન, એકદમ સ્વચ્છ-નિર્મળ હતુ અને ખડરહિત હતુ

रइयवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचित शोभित वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीयवस्त्रधारक' । तथा-' दडकमडलुहत्थे ' दण्डकमण्डलुहस्तः-' जडामउडदित्तसिरए ' जटामुकुटदीप्तशिरस्क', जण्णोवइयगणेत्तियमुजमेहलावागलधरे ' यज्ञोपवीतगणेत्रिकामुञ्जमेखलावल्कलधरः-तत्र यज्ञोपवीत यज्ञसूत्र गणेत्रिका-रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरण, मुञ्जमेखला-मुञ्जमय कटि बन्धनसूत्र वल्कल वृक्षत्वक्, तेषां धारक. स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत रुद्राक्षमालः, मुञ्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतवल्कल इत्यर्थः । ' हत्थकयकच्छभीए ' हस्तकृतकच्छपिकः-हस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, ' पियगधव्वे ' पियगन्धर्वः-गानप्रिय., ' धरणिगोयरप्पहाणे ' धरणिगोचरप्रधान-धरणिगोचराणा-भूमिचारिणा जनाना मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे, जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइयगणेत्तिय मुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीयभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से सुशोभित था। दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोमें था। जटारूपी मुकुट से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था। यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुञ्जमेखला-मुज का बना हुआ कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्हो ने धारण कररक्खी थी। हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रखी थी। गान इन्हें बहुत प्रिय था। भूमि गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यो कि ये आकाश मे भी विहार

(कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइय गणेत्तियमुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य सकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथभणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे)

તેમનુ વક્ષસ્થળ કાળા હરણના ચર્મરૂપ ઉત્તરાસગથી શોભતુ હતુ દડ અને કમડળ તેમના હાથોમા હતા જટા રૂપી મુકુટથી તેમનુ મસ્તક પ્રકાશિત થઈ રહ્યુ હતું યજ્ઞ સૂત્ર-જનોઈ, ગણેત્રિકા-કાડામા પહેરવાની આભરણ રૂપ રૂદ્રાક્ષની માળા, મુજ-મેખલા-મુજનુ બનેલુ કેડમા પહેાવાનુ બધન સૂત્ર અને વૃક્ષકની છાલ તેઓએ ધારણ કરેલી હતી હાથમા તેઓએ કચ્છપિકા-વીણા ધારણ કરેલી હતી સગીત તેમને ખૂબ જ ગમતું હતુ ભૂમિગોચરીઓને વચ્ચે તેઓ પ્રધાન હતા કેમકે તેઓ આકાશમા વિચરણ કરતા

"सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिश्लेसणीसु य" संवरण्यावरण्यवपतन्युत्पतनी श्लेषणीषु च 'सवरणी-स्वस्यान्तर्धानकारिणी विद्या, आवरणी-परस्यान्तर्धान कारिणी विद्या, अवपतनी अधोऽवतरणी विद्या, उत्पतनी-ऊर्ध्वगमनकारिणी विद्या, श्लेषणी-वज्रलेपादिवत् सन्धानकारिणी विद्या, तासु, तथा-'सक्कामणि अभि ओगपण्णत्ति गमणीथभणीसु य' सक्रमण्यभियोगप्रज्ञप्तिगमनीस्तम्भनीषु च-सक्रामणी-विद्या-विशेषः यया-परशरीरादौ प्रवेष्टु शक्नोति, सा विद्या, अभि योग. स्वर्णादिनिर्माणविद्या वशीकरणविद्या च, प्रज्ञप्ति.=अविदितार्थबोधिनी गमनी

કરતે થે। સવરણી, આવરણી અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી ઇન વિદ્યા ઓ મેં તથા સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞપ્તિ, ગમની સ્તમ્ભિની ઇન નાના પ્રકાર કી વિદ્યા ઔર સબન્ધી વિદ્યાઓં મેં ઇનકી કીર્તિ વિખ્યાત થી। જિસ વિદ્યા કે પ્રભાવ સે અપને આપકો અન્તર્ધાન કર દિયા જાતા જાતા હૈ ઉસકા નામ સવરણી વિદ્યા હૈ। દૂસરા જિસ વિદ્યા સે અન્ત ર્ધાન કરદિયા જાતા હૈ ઉસ વિદ્યા કા નામ આવરણી વિદ્યા હૈ। જિસ વિદ્યા કે પ્રભાવ સે ઊપર સે નીચે ઉતરા જાતા હૈ ઉસકા નામ અવ પતની ઔર જિસકે પ્રભાવ સે ઉર્ધ્વ મેં ગમન કિયા જાતા હૈ ઉસકા નામ ઉત્પતની વિદ્યા હૈ। વજ્રલેપ આદિ કી તરહ જો ચિપકા દેતી હૈ વહ શ્લેષણી વિદ્યા હૈ। જિસ વિદ્યા કે બલ સે દૂસરે કે શરીરમેં પ્રવિષ્ટ હોના હોતા હૈ-ઐસી પરશરીરપ્રવેશકારિણી વિદ્યાકા નામ સક્રમણી વિદ્યા હૈ। સ્વર્ણ આદિ કે બનાને કી જો નિપુણતા હૈ-ઉસ પરકો

હતા સવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા ઓમા તેમજ સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞપ્તિ, ગમની, સ્તભની આ અનેક જાતની વિદ્યાધર સબધી વિદ્યાઓમા તેમની કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલી હતી જે વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સવરણી વિદ્યા છે જે વિદ્યાથી બીજાને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે જે વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના પ્રભાવથી ઉર્ધ્વ (આકાશ) મા ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનુ નામ ઉત્પ તની છે વ વગેરેની જેમ જે ચોટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે વિદ્યા ના શરીરમા પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી વિ છે સોનુ વગેરે બનાવવામા જે નિપુણતા છે

-गमनपकर्षसाधिका-आकाशगामिनी च विद्याविशेषः-स्तम्भनी-स्तम्भनकारिणी विद्या, तासु 'बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु' बहुषु-नानाविद्यासु विद्याधरीषु=विद्याधर सम्बन्धिषु विद्यासु 'विस्सुयजसे' विश्रुतयशा -विख्यातकीर्तिः, इट्ठ=प्रियः, रामस्य=बलदेवस्य केशवस्य=कृष्णवासुदेवस्य च पुन केषा प्रियइत्याह-' पज्जुन्नपईवसब अनिरुद्धनिसढउस्सुयसारणगयसुमुहदुम्मुहाईण जायवाण ' प्रद्युम्न प्रतीपशाम्बानिरुद्धनिषधोत्सुकसारणगजसुमुखदुर्मुखादीना यादवानाम्, प्रद्युम्नादीना सख्यामाह-प्रद्युम्न, प्रतीप, शाम्बः, अनिरुद्धः, निषधः, उत्सुकः,

---

वश मे करने कि जो शक्ति है उस विद्या का नाम अभियोग विद्या है। अविदित अर्थ जिस के प्रभाव से विदित हो जावे वह प्रज्ञप्ति विद्या गमन प्रकर्ष की साधक तथा आकाश में गमन कराने वाली विद्या गमनी विद्या स्तम्भन कराने वाली विद्यास्तम्भिनी विद्या है। (इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसब अनिरुद्धणिसढउम्मुय सारण गयसुमुह दुम्मुहादीण जायवाण अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण हिययदइए सयवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, भडणाभिलासी, बहुसु य समर सयसपराएसु दसणरए, समतओ कलहसदक्खण अणुगवेसमाणे, असमाहिकरे दमारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाण, आमतेऊण त भगवई पक्कमणि गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभिलघयतो गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडबदोणमुहपट्टणासममसवाहसहस्समडिय थिमियमेइणीतल वसुह आलोडतो रम्म हत्थिणाउर उवागए) बलदेव एव कृष्ण वासुदेव को ये इष्ट थे तथा साढे तीन करोड, प्रद्युम्न, प्रतीप, साम्ब, अनिरुद्ध निषध उत्सुक, सारण, गज सुकुमाल सुमुख दुर्मुख

વિદ્યા છે અવિદિત અર્થ જેના પ્રભાવથી જાણી શકાય તે પ્રજ્ઞપ્તિ વિદ્યા, ગમન પ્રકર્ષની સાધિકા તેમજ આકાશમા ગમન કરનારી વિદ્યા ગમની વિદ્યા કહે વાય છે સ્તભન કરાવનારી વિદ્યા સ્તભની વિદ્યા છે (इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसब अनिरुद्धणिसढउस्सुयसारणगयसमुहदुम्मुहतीण जायवाण अद्धुट्ठाणकुमारकोडीग हिययदइए सयवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, भडणाभिलासी, बहुसयसमरसयसपराएसु दसणरए समतओ कलहसदक्खण अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दमारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाण, आमतेऊण त भगवई, पक्कमणि गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभिलघय तो गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडब दोण मुहपट्टणासमसवाहसहस्सम डिय थिमिण मेइणीतल वसुह आलोइ तो रम्म हत्थिणाउर उवागए) બળદેવ તેમજ કૃષ્ણ વાસુદેવને તેઓ ઈષ્ટ હતા અને સાઢા ત્રણ કરોડ પ્રદ્યુમ્ન, પ્રતીપ, સામ્બ, અનિરૂદ્ધ, નિષધ, ઉત્સુક, સારણ, ગજ સુકુમાલ, સુમુખ દુર્મુખવગેરે વદાય કુમારોને માટે તેઓ હૃદયવલ્લભ હતા એટલે કે ખૂબ જ પ્રિય હતા એટલા

"सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिश्लेसणीसु य" सवरण्यावरण्यवपतन्युत्पतनी श्लेषणीषु च 'सवरणी-स्वस्यान्तर्धानकारिणी विद्या, आवरणी-परस्यान्तर्धान कारिणी विद्या, अवपतनीअधोऽवतरणी विद्या, उत्पतनी-ऊर्ध्वगमनकारिणी विद्या, श्लेषणी-वज्रलेपादिवत् सन्धानकारिणी विद्या, तासु, तथा-'सक्कामणि अभि ओगपण्णत्ति गमणीथमणीसु य' सक्रमण्यभियोगप्रज्ञप्तिगमनीस्तम्भनीषु च- सक्रामणी-विद्या-विशेषः यया-परशरीरादौ प्रवेष्टु शक्नोति, सा विद्या, अभि योगः स्वर्णादिनिर्माणविद्या वशीकरणविद्या च, प्रज्ञप्ति-=अविदितार्थबोधिनी गमनी

करते थे। सवरणी, आवरणी अवपतनी, उत्पतनी, श्लेषणी इन विद्या ओं में तथा सक्रमणी, अभियोग, प्रज्ञप्ति, गमनी स्तम्भिनी इन नाना प्रकार की विद्या एवं सबन्धी विद्याओं में इनकी कीर्ति विख्यात थी। जिस विद्या के प्रभाव से अपने आपको अन्तर्धान कर दिया जाता जाता है उसका नाम सवरणी विद्या है। दूसरा जिस विद्या से अन्त र्धान करदिया जाता है उस विद्या का नाम आवरणी विद्या है। जिस विद्या के प्रभाव से ऊपर से नीचे उतरा जाता है उसका नाम अव पतनी और जिसके प्रभाव से ऊर्ध्व में गमन किया जाता है उसका नाम उत्पतनी विद्या है। वज्रलेप आदि की तरह जो चिपका देती है वह श्लेषणी विद्या है। जिस विद्या के बल से दूसरे के शरीरमें प्रविष्ट होना होता है-ऐसी परशरीरप्रवेशकारिणी विद्याका नाम सक्रमणी विद्या है। स्वर्ण आदि के बनाने की जो निपुणता है-एव परको

હતા સવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા ઓમાં તેમજ સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞપ્તિ, ગમની, સ્તભની આ અનેક જાતની વિદ્યાધર સબધી વિદ્યાઓમા તેમની કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલી હતી જે વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સવરણી વિદ્યા છે જે વિદ્યાથી બીજાને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે જે વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના પ્રભાવથી ઉર્ધ્વ (આકાશ) મા ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનુ નામ ઉત્પ તની છે વજ્ર લેપ વગેરેની જેમ જે ચોટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે વિદ્યાના બળથી બીજાના શરીરમા પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી વિદ્યાનુ નામ સક્રમણી વિદ્યા છે સોનુ વગેરે બનાવવામા જે નિપુણતા છે અને બીજાને વશવર્તી કરવાની જે શક્તિ છે તે

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये बलवन्त नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमतेऊण त भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्याह—' पक्कमणिं ' प्रक्रमणीं=प्रकृष्टगमनशक्ति शालिनीं 'गगणगमणदच्छ' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पइओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासमसवाहसहस्समडिय' ग्रामाकर नगरनिगमखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्ग्राम खेट= धूलीप्राकार, कर्वट=कुत्सितनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मडम्ब यत्र जल स्थलमार्गाभ्या, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तन=द्वेधा-जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स सवाह एतैः सहस्रैर्मण्डितं, स्तिमित-मेदिनीतल, ' वसुह' वसुधा भूमिं ' ओलोइतो ' अवलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्ति नापुर नगरमुपागत' पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

तत खलु स पाण्डूराजा कच्छुल्लनारय ' कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभि पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

दशार्ह थे उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे। गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे। ये नारद, गमन से आकशतल को उल्लघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्वट, मडब, द्रोणमुख, पत्तन, सबाह इनके सहस्रों से मडित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहा से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाडुराज के भवन में पहुँचे। ऐसा सबध यहां लगाना

(तएणं से पंडूराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ) इस के बाद पाडुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पासित्ता) तो

ગમનમા વિશિષ્ટ શક્તિ આપનારી અને આકાશમા ઉડાડીને લઇ જનાર તે પગવતી પ્રક્રમણી વિદ્યાના બળથી તેઓ આકાશમા ઉડતા રહેતા હતા આ રીતે આ નારદ ગમનથી આકાશને ઓળગીને સહસ્રો ગ્રામ, આકર નગર, નિગમ ખેટ કર્બટ, મડબ, દ્રોણમુખ, પત્તન,સબાહોથી, મડિત અને સ્તિમિત પૃથ્વીને જોતા રમણીય હસ્તિનાપુર નગરમા આવ્યા અને ત્યાથી આકાશ માર્ગમા થઇને પાડુરાજના ભવનમા પહોચ્યા (तएणं से पाडुराया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) ત્યારબાદ પાડુરાજાએ કચ્છુલ્લનારદને જ્યારે આવતા જોયા (पासित्ता) ત્યારે જોઇને (पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाओ

सारण', गजसुकुमाल', सुमुखः, दुर्मुख, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषां ' अद्धट्ठाणं कुमारकोडीणं ' अर्धचतुर्थानां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिसंमितानां यादव कुमाराणामित्यर्थः ' हिययदइए ' हृदयदयितः=हृदयप्रियः, ' सत्थावए ' सस्ता वहः-यादवानां प्रशंसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवाद, युद्ध= शस्त्रादिभिः प्रहरण, कोलाहलो=जनानां महाध्वनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका यस्य स तथा, ' भंडणामिलासी ' भण्डनाभिलाषी=भण्डन राटि-कलह 'राड' इति भाषायां तस्याभिलाषी तथा-चडुसु च समरसतसंपरायेसु=समरशतसंग्रामेषु दर्शनरत =दर्शनाऽऽसक्त., ' समंतओ ' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्पर च कलहं ' सदक्खणं ' सदाक्षणं=सर्वस्मिन क्षणे ' अणुगवेसमाणे ' अनुगवेषयन्=अन्वेष यन् , ' असमाहिकरे ' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्थैर्यकर केषां चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—' दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाणं ' दशार्हवरवीर पुरुषत्रैलोक्यबलवता-दशार्हा.-समुद्रविजयादयो दशसख्यका त एव वरा श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन प्रिय थे। इसी कारण यादवोंके प्रशंसक थे। कलहविवाद युद्ध एव मनुष्यो का कोलाहल ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राड़ (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसग्राम के देखने में इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કલહ-કકાસ, વિવાદ, યુદ્ધ અને માણસોનો શોરબકોર આ બધુ તેમને બહુ જ ગમતુ હતુ આ બધાથી તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કજીયો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એટલે કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કકાસ કજીયો કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક જોતા રહેતા હતા સેકડો યુદ્ધોના બીભત્સ દૃશ્ય જોવામા તેમને ખૂબ જ આનદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમા જ ચોટી રહેતા હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોક્યમા સવિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરૂષ સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ ता.

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये बलवन्त नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमतेऊण त भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्याह—' पक्कमणिं ' प्रक्रमणीं=प्रकृष्टगमनशक्ति शालिनीं 'गगणगमणदक्ख' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पइओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासमसवाहसहस्समडिय' ग्रामाकर नगरनिगमखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्ग्राम खेट= धूलीप्राकार, कर्वट=कुत्सितनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मडम्ब यत्र जल-स्थलमार्गाभ्या, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तनं=द्विधा—जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स संवाह एतैः सहस्रैर्मण्डित, स्तिमित-मेदिनीतल, ' वसुह' वसुधा भूमिं ' ओलोइतो ' अवलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्ति नापुर नगरमुपागतः पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

तत खलु स पाण्डूराजा कच्छुल्लनारय ' कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति—दृष्ट्वा पञ्चभि' पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

दशार्ह थे उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे। गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे। ये नारद, गमन से आकशतल को उल्लघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्वट, मडंब, द्रोणमुख, पत्तन, सवाह इनके सहस्रों से मडित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहा से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाडुराज के भवन में पहुँचे। ऐसा सबध यहां लगाना (तएणं से पंडूराया कच्छुल्लनारय एज्जमाणं पासइ) इस के बाद पाडुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पासित्ता) तो

ગમનમા વિશિષ્ટ શક્તિ આપનારી અને આકાશમા ઉડાડીને લઇ જનાર તે પગવતી પ્રક્રમણી વિદ્યાના બળથી તેઓ આકાશમા ઉડતા રહેતા હતા આ રીતે આ નારદ ગમનથી આકાશને ઓળગીને સહસ્રો ગ્રામ, આકર નગર, નિગમ ખેટ કર્બટ, મડબ, દ્રોણમુખ, પત્તન,સબાહોથી, મડિત અને સ્તિમિત પૃથ્વીને જોતા રમણીય હસ્તિનાપુર નગરમા આવ્યા અને ત્યાથી આકાશ માર્ગમા થઇને પાડુરાજના ભવનમા પહોચ્યા (तएणं से पाडुराया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) ત્યારબાદ પાડુરાજાએ કચ્છુલ્લનારદને જ્યારે આવતા જોયા (पासित्ता) ત્યારે જોઇને (पचहिं पडवेहि कुंतीए देवीए सद्धि आसणाओ

मारणः, गजसुकुमालः, सुमुखः, दुर्मुख, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषां ' अदट्ठाणं कुमारकोडीणं ' अर्धचतुर्थीनां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिप्रमितानां यादवकुमाराणामित्यर्थः ' हिययदइए ' हृदयदयितः=हृदयप्रियः, ' सयाणए ' सस्तावकः-यादवानां प्रशासकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवाद, युद्ध=शस्त्रादिभिः महारणः, कोलाहलो=जनानां महाध्वनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका यस्य स तथा, ' भडणाभिलासी ' भण्डनाभिलाषी=मण्डनं राटि-कलहः 'राइ' इति भाषायां तस्याभिलाषी तथा-समरशतसमरदंसणरए=समरशतसंग्रामदर्शनरतः=दर्शनाऽऽसक्तः, ' समतओ ' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्परं च कलह ' सदसवणं ' सदाक्षणः=सर्वस्मिन् क्षणे ' अणुगवेसमाणे ' अनुगवेषयन्=अन्वेषयन्, ' असमाहिकरे ' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्थैर्यकरः केषां चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—' दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाणं ' दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवतां-दशार्हाः-समुद्रविजयादयो दशसंख्यकास्त एव वरा श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन्त प्रिय थे। इसी कारण यादवोंके प्रशासक थे। कलहविवाद युद्ध एवं मनुष्यो का कोलाहल ये सब इन्हे बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राड़ (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसंग्राम के देखने में इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કલહ-કંકાસ, વિવાદ, યુધ્ધ અને માણસોનો શોરબકોર આ બધુ તેમને બહુ જ ગમતુ હતુ આ બધાથી તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કજીયો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એટલે કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કંકાસ કજીયો કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક જોતા રહેતા હતા સેંકડો યુદ્ધોના બીભત્સ દૃશ્ય જોવામા તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમા જ ચોટી રહેતા હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોકયમા સવિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરૂષ સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ ता।

सयतस्तथा विधो न भवति यः सोऽसयतः=सयमरहित इत्यर्थः, अविरत =अतीत कालिकपापाज्जुगुप्सापूर्वक, भविष्यति च सवरपूर्वकमुपरतो निवृत्तो विरतस्तथा विधो न भवति यः सोऽविरतः, विरतिरहितः, अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा प्रतिहत=वर्तमानकाले स्थित्यनुभागह्रासेन नाशित तथा प्रत्याख्यात=पूर्वकृताति-

उनके लिये तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया-करके उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे महान् पुरुषों के बैठने योग्य आसन पर बैठने के लिये प्रार्थना की-इस के बाद वे कच्छुल्ल नारद जल के छीटो से सिक्त हुए आसन पर कि जो दर्भ के ऊपर आस्तीर्ण था बैठ गये। बैठकर उन्होंने पाडु राजा से राज्य की यावत् अतः पुर की कुशल वर्ता पूछी। उनके पूछने पर पांडु राजाने कुन्ती देवी ने एव पांचों पाडवों ने उन कच्छुल्ल नारद का खूब आदर किया यावत अच्छी तरह से उनकी पर्युपासना की। द्रौपदी ने उन्हें असयत, अविरत एव अप्रतिहत प्रत्याख्यतपापकर्मा जानकर उनका आदर नहीं किया, उनके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उनके आने पर उठी। वर्तमान कालिक सर्व सावद्य अनुष्टान से जो निवृत्त होता है वह सयत है-ऐसा सयत जो नही होता है वह असयत कहलाता है। अतीत काल में हुए पापों से जुगुप्सा पूर्वक और भविष्यत्काल में उनसे सवर पूर्वक जो उपरत होता

સામે જઇને તેમણે ત્રણવાર તેમની ચોમેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી ત્યારપછી તેમણે વદન તેમજ નમન કર્યા અને પછી તેમને પોતાના કરતા મોટા માણસોને બેસવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનતી કરી ત્યારબાદ તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાટાઓથી ભીના પાથરેલા દર્ભના આસન ઉપર બેભી ગયા બેસીને તેઓએ પાડુરાજાને રાજ્યની યાવત્ રણવાસની કુશળવાર્તા પૂછી પાડુરાજા, કુતીદેવી અને પાચે પાડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર કર્યો યાવત્ સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો નહિ તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને જ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે ઊભી થઇ નહિ વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવદ્ય અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સયત છે, આ વ્યાખ્યા મુજબ જે સયત નથી તે અસયત કહેવાય છે ભૂતકાળમા થઇ ગયેલા પાપકર્મોની જુગુપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્યકાલમા તેમનાથી સવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિરતિથી રહિત છે વર્તમાનકાળમા જેમા

कच्छुल्लनारद सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि. कृत्वः – त्रिवार, 'आयाहिणपयाहिणं' आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्यति वदित्वा, नत्वा, महार्हेण–महतां योग्येन आसनेन उपनिमन्त्रयति । उपवेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाए' उदकपरिस्पृष्टायां जलच्छटेन सिक्तायां 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए' दर्भोपरिप्रत्यवस्तृतायां कुशोपर्यास्तीर्णायां 'भिसियाए' भृष्टायां आसनविशेषे निषीदति=उपविशति, निषद्य पाण्डुराजानं राज्ये यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्तं–कुशलवार्तां पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्तीं देवीं पञ्च च पाण्डवान्, कच्छुल्लनारदं 'आढति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । तत खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम् 'असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु' असंयताविरताप्रतिहता प्रत्याख्यातपापकर्मेति कृत्वा, तत्र–असंयतः–वर्तमानकालिकसर्वसावद्यानुष्ठाननिवृत्तः

देवकर (पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ) ये पाचो पाडवो एव कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे। (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइ पच्चुग्गच्छइ) और उठकर सात आठ पैर कच्छुलनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसीयाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से पंडुराया कोंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढति जाव पज्जुवासति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्हों ने

अब्भुट्ठेइ) તેઓ પાચે પાડવો અને કુંતીની સાથે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइ पच्चुग्गच्छइ) અને ઊભા થઇને કચ્છુલ્લ નારદના સ્વાગત માટે સાત આઠ ડગલા સામે ગયા

(पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ तएणं से पंडुराया कोंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढति जाव, पज्जुवासति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ)

सयतस्तथा विधो न भवति यः सोऽसयतः=संयमरहित इत्यर्थः, अविरत =अतीत कालिकपापाज्जुगुप्सापूर्वक, भविष्यति च समरपूर्वकमुपरतो निवृत्तो विरतस्तथा विधो न भवति यः सोऽविरतः, निरतिरहितः, अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा प्रतिहत=वर्तमानकाले स्थित्यनुभागह्रासेन नाशित तथा प्रत्याख्यात=पूर्वकृताति-

उनके लिये तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया-करके उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे महान् पुरुषों के बैठने योग्य आसन पर बैठने के लिये प्रार्थना की-इस के बाद वे कच्छुल्ल नारद जल के छीटो से सिक्त हुए आसन पर कि जो दर्भ के ऊपर आस्तीर्ण था बैठ गये। बैठकर उन्होंने पांडु राजा से राज्य की यावत् अतः पुर की कुशल वर्ता पूछी। उनके पूछने पर पांडु राजाने कुन्ती देवी ने एव पांचों पांडवों ने उन कच्छुल्ल नारद का खूब आदर किया यावत् अच्छी तरह से उनकी पर्युपासना की। द्रौपदी ने उन्हें असयत, अविरत एव अप्रतिहत प्रत्याख्यतपापकर्मा जानकर उनका आदर नहीं किया, उनके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उनके आने पर उठी। वर्तमान कालिक सर्व सावद्य अनुष्टान से जो निवृत्त होता है वह सयत है-ऐसा सयत जो नही होता है वह असयत कहलाता है। अतीत काल में हुए पापों से जुगुप्सा पूर्वक और भविष्यत्काल में उनसे सवर पूर्वक जो उपरत होता

સામે જઈને તેમણે ત્રણવાર તેમની ચોમેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી ત્યારપછી તેમણે વદન તેમજ નમન કર્યા અને પછી તેમને પોતાના કરતા મોટા માણસોને બેસવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનતી કરી ત્યારબાદ તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાટાઓથી ભીના પાથરેલા દર્ભના આસન ઉપર બેસી ગયા બેસીને તેઓએ પાડુરાજાને રાજ્યની યાવત્ રણવાસની કુશળવાર્તા પૂછી પાડુરાજા, કુંતીદેવી અને પાચે પાડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર કર્યો યાવત્ સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો નહિ તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને જ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે ઊભી થઇ નહિ વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવદ્ય અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સયત છે, આ વ્યાખ્યા મુજબ જે સયત નથી તે અસયત કહેવાય છે ભૂતકાળમા થઇ ગયેલા પાપકર્મોથી જુગુપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્ય કાલમા તેમનાથી સવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિરતિથી રહિત છે વર્તમાનકાળમા જેમા

कच्छुल्लनारद सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गत्य 'तिक्खुत्तो' नि. कृत्वः - त्रिवारं, 'आयाहिणपयाहिण' आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा, नत्वा, महार्हेण-महतां योग्येन आसनेन उपनिमन्त्रयति । उपवेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाए' उदकपरिस्पृष्टाया जलच्छटेन सिक्तायां 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए' दर्भोपरिप्रत्यवस्तृतायां कुशे पर्यन्तीर्णायां 'भिसियाए' दृप्तायां आसनविशेषे निषीदति=उपविशति, निषद्य पाण्डुं राजानं राज्ये यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्तं-कुशलवार्तां पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्ती देवी पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारदं 'आढति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । तत खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम् 'असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु' असंयताविरताप्रतिहता प्रत्याख्यातपापकर्मेति कृत्वा, तम्-अगयत'-वर्तमानकालिकसर्वसावद्यानुष्ठाननिवृत्तः

देवकर (पच्चहिं पडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ) ये पाचो पाडवो एव कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे। (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ) और उठकर सात आठ पैर कच्छुलनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से पडुराया कोंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्हों ने

अब्भुट्ठेइ) તેઓ પાચે પાડવો અને કુંતીની સાથે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ) અને ઊભા થઇને કચ્છુલ્લ નારદના સ્વાગત માટે સાત આઠ ડગલા સામે ગયા

(पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ तएणं से पडुराया कोंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति जाव, पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ)

जाव सरीरा त इच्छामिण देवाणुप्पिया ! दोवइं देवीं इहमाणिय, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एव वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्व वा भविस्स वा जण्ण दोवई देवी पचपंडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेणं सद्धि ओरालाइं जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अह तव पियट्ठतयाए दोवइं देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दे मज्झंमज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तेण कालेणं तेणं समएण हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए सद्धि उप्पि आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवइं देवीं गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठावेइ ठावित्ता ओसोवणि अवहरइ अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी–एसणं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतो पर तुमं जाणसित्तिकट्टु जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २५ ॥

एउजमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंत आपुच्छइ, तएणं से पउमनाभे राया णियग ओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि, त अत्थि आइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए ण मम ओरोहे ?, तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेण रन्ना एव वुत्ते समाणे ईसिं विहासियं करेइ करित्ता एव वयासी -सरिसे णं तुम पउमणाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स, के ण देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ?, एव जहा मल्लिणाए एव खलु देवाणुप्पिया ! जबूदीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अय तव ओरोहो सतिमंपि कल ण अग्घतित्तिकट्टु, पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवईए देवीए रूवे य३ मुच्छिए४ दोवइए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एवं वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहेवासे

जाव सगीरा त इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! दोवइं देवीं इहमाणिय, तएणं पुव्वसगइए देवीए पउमनाभं एवं वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्स वा जण्णं दोवई देवी पचपंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धि ओरालाइ जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवइं देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दे मज्झंमज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तेण कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए सद्धिं उप्पि आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवइ देवीं गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठावेइ ठावित्ता ओसोवणि अवहरइ अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी–एसणं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतो पर तुमं जाणसित्तिकट्टु जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २५ ॥

टीका-' तएण तस्स ' इत्यादि । ततः खलु तस्य कच्छुल्लनारदस्य अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः समुत्पद्यत, अहो! खलु द्रौपदी देवी रूपेण यावत् लावण्येन न पञ्चभिः पाण्डवैरनुरक्ता मां नो आद्रियते यावत् नो पर्युपास्ते, तत्=तस्मात् श्रेय खलु मम द्रौपद्या देव्या' 'विप्पिय करित्तए' विप्रिय कर्तुम्, पाण्डवैरनुरक्तामनादृतां विरक्तिता जाता

-:तएण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) उसके बाद (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) उस कच्छुल्ल नारदको (इमेयारूवे) यह इस रूप (अज्झत्थिए, चिन्तिए, पत्थिए, मणोगए, संकप्पे समुप्पज्जित्था) आध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ। (अहो ण दोवईदेवी रूवेण जाव लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अणुरत्ता समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ त सेय खलु मम दोवईए देवीए विप्पिय करित्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुराय आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवण समुद्दमज्झं मज्झेण पुरत्थाभिमुहे वीइवइउ पयत्ते यावि होत्था) देखो-यह कितने आश्चर्य की बात है कि द्रौपदी देवी ने रूप यावत् लावण्य से पांचों पाडवों के साथ भोगासक्त बनकर मेरा कोइ आदर नहीं किया है यावत् किसी भी प्रकार की पर्युपासना नहीं की है। इसलिये अब मुझे यही उचित- श्रेयस्कर है कि मै इस द्रौपदी देवी का विप्रिय करूँ-अनिष्ट करूँ

तएण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) તે કચ્છુલ્લ નારદને (इमेयारूवे) આ જાતનો (अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए, संकप्पे समुप्पज्जित्था) આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે

(अहोण दोवई देवी रूवेण जाव लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अणुरत्ता समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ त सेय खलु मम दोवईए देवीए विप्पिय करित्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुराय आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवण समुद्द मज्झं मज्झेण पुरत्थाभिमुहे वीइवइउ पयत्ते यावि होत्था)

જુઓ, આ કેવી નવાઈની વાત છે કે દ્રૌપદી દેવીએ રૂપ યાવત્ લાવણ્યથી પાંચે પાંડવોની સાથે ભોગાસક્ત થઈને મારો કોઈ પણ રીતે આદર કર્યો નથી યાવત્ કોઈ પણ જાતની પર્યુપાસના કરી નથી એથી હવે મને એજ યોગ્ય જણાય છે કે ગમે તે રીતે દ્રૌપદીનું વિ [illegible] ચુ

तस्मान्मदापहरणेन अस्या' प्रतिकूलाचरणं श्रेय' इति भावः। इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एव संप्रेक्षते=पर्यालोचयति, समेत्य पाण्डु राजानमापृच्छ्य ' उप्पयणिं विज्ज ' उत्पतनीम्-विद्याम् ' आवाहेइ' आवाहयति स्मरति आवाह्य, मत्वा तया उत्कृष्टया यावद् विद्याधरगत्या लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन पौरस्त्याभिमुखः= पूर्वदिगभिमुख', ' वीइवइउ पयत्ते ' व्यतिव्रजितु प्रवृत्तः=गमनतत्परश्चाप्यभवत्।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' धायईसंडे ' धातकीषण्डे धातकीषण्डनामके, द्वीपे ' पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहवासे ' पौरस्त्यार्धदक्षिणार्ध-भारतवर्षे=पूर्वदिग्वर्तिनि दक्षिणार्धभरतक्षेत्रे अमरकङ्का नाम राजधानी आसीत्। तत्र खलु अमरकङ्काया राजधान्या पद्मनाभो नाम राजाऽभवत्। स कीदृश इत्याह-' महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे ' महा-हिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः=महाहिमवानिव तथा-महामलयमन्दरमहेन्द्रवत् सार=प्रधान। अन्यनृपापेक्षयाऽधिकमहत्त्वादिगुणविभवैश्वर्यसम्पन्न इत्यर्थः, विस्तरतस्तु व्याख्यानमस्याध्ययने कृतम्,

---

यह इस समय पाण्डवों द्वारा कृत सत्कार सम्मान से गर्विष्ट बनी हुई है-सो विवेक रहित बन गई है-इसलिये इसके मद को उतारना चाहिये अतः इसके प्रतिकूल आचरण करना यही मुझे श्रेयस्कर है। इस प्रकार मन में रखकर उन्हों ने विचार किया-विचार करके फिर उन्हों ने पांडुराज से पूछा हे राजन् हम जाते हैं-पूछकर उन्हों ने उत्पतनी नाम की विद्या का आह्वान किया स्मरण किया-स्मरण कर के उस उत्कृष्ट यावत् विद्याधर सम्बन्धी गति से वहां से पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के वे उडने में प्रवृत्त भी हो गये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहे वासे अमरकंका णाम रायहाणी होत्था-तत्थणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णाम राजा होत्था, महया हिमवंत०

તે આ પાંડવો વડે સત્કૃત તેમજ સન્માનીત બનિ ગર્વિષ્ઠા બની ગઈ છે તેથી તે અવિવેકી થઇ પડી છે, એથી હવે એના મદને ઉતારવો જોઈએ, એના વિરૂદ્ધ આચરવુ જોઈએ, આ પ્રમાણે તેઓએ મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેમણે પાંડુરાયને પૂછ્યુ કે હે રાજન્! અમે જઈએ, એ પ્રમાણે પૂછીને તેઓએ ઉત્પતની નામની વિદ્યાનુ આહ્વાન કર્યું, સ્મરણ કર્યું -સ્મરણ કરીને તે ઉત્કૃષ્ટ યાવત્ વિદ્યાધર સંબંધી ગતિથી ત્યાથી પૂર્વ દિશા બાજુ મુખ કરીને ઉડવા લાગ્યા

(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहे वासे अम

[illegible] या तएणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णाम राया

वर्णक=वर्णनं पूर्वोक्तवद् बोध्यम्, तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः 'सत्तदेवीसयाइ' सप्तदेवीशतानि=देवीना राज्ञीनां शतानि-सप्तशतानिभार्याः 'ओरोहे' अवरोधे=अन्तः पुरे आसन् तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः सुनाभो नाम पुत्रो युवराजश्चाप्य भवत्। ततः खलु स पद्मनाभो राजा अन्तः प्रदेशे 'अंतेउरंसि' अन्त पुरे 'आरोहसंपरिवुडे' अवरोधसपरिवृतः - स्त्रीपरिवारसपरिवृत', सिंहासनवरगतो विहरति-आस्तेस्म ।

घण्णओ तस्सण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवीसयाइ ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अतो अतेउरमि ओरोहमपरिवुडे सिंहासण वरगए विहरइ) उस काल और उस समय में धातकी षड नाम के द्वीप मे पूर्व दिग्वर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में अमरकका नाम की राजधानी थी। उस अमरकका नाम की राजधानी में पद्मनाभ नाम का राजा रहता था। यह राजा महा हिमवान् पर्वत की तरह तथा महा मलय, मन्दर एवं माहेन्द्र की तरह अन्य राजाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वादिगुणों से विभव से एवं ऐश्वर्य से सपन्न था। इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है। इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये। उस पद्मनाभ राजा के अतःपुर में ७०० सात सौ रानिया थीं। सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहा एक दिन की बात है

होत्था, महया हिमवत०वण्णओ,तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवी सयाइ ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अतो अते उरसि ओरोहसपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरइ)

તે કાળે અને તે સમયે ધાતકી ષડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો તે રાજા મહા હિમાચલ પર્વતની જેમ તેમજ મહામન્દર, મદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા રાજાઓ કરતા વધારે મહત્ત્વ વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સપન્ન હતો આ પદોનુ સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા આવ્યુ છે આ રાજાનુ વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજવુ જોઇએ તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમા સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા

तत खलु स कच्छुल्लनारदो यत्रैवामरकङ्कारानधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य राज्ञो भवने ' झत्ति ' झटिति वेगेन ' समोवइए ' समुपेत =आकाशादवतीर्णः । ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लं नारद एजमानम्-आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायार्घ्येण यावदासनेन उपनिमन्त्रयति-जलमासन च ग्रहीतु प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्ल

कि अत पुर के भीतर स्त्री परिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे। (तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउम नाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आमणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदग परिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदत आपुच्छइ) वे कच्छुल्ल नारद जहा अमर कका राजधानी थी, जहा पद्मनाभ का भवन था वहाँ आये। आकर के वे पद्मनाभ राजा के भवन में बहुत शीघ्र वेग से उतरे। पद्मनाभ राजा ने जैसे ही कच्छुल्ल नारद को आते हुए देखा तो देखकर के अपने आसन से उठे और उठकर के उन्हो ने उन्हे अर्घ्य यावत् आसन से आमन्त्रित किया।

(तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणसि झत्तिवेगेण समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेण जाव आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदत्त आपुच्छइ)

તે કચ્છુલ્લ નારદ જ્યા અમરકકા રાજધાની હતી, જ્યા પદ્મનાભનુ ભવન હતુ ત્યા આવ્યા, આવીને તે પદ્મનાભ રાજાના ભવનમા શીઘ્ર વેગથી ઉતર્યા પદ્મનાભ રાજાએ જ્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આવતા જોયા ત્યારે તેઓ પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને તેમણે તેઓને અર્ઘ્ય યાવત્

वर्णक =वर्णनं पूर्वोक्तवद् बोध्यम्, तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः 'सत्तदेवीसयाइ' सप्तदेवीशतानि=देवीना राज्ञीनां शतानि-सप्तशतानिसार्धा' 'ओरोहे' अवरोधे= अन्तः पुरे आसन् तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः सुनामो नाम पुत्रो युवराजश्चाप्य भवत्। ततः खलु स पद्मनाभो राजा अन्तः प्रदेशे 'अतेउरसि' अन्त पुरे 'आरोहसंपरिवुडे' अवरोधसपरिवृतः - स्त्रीपरिवारसपरिवृत, सिंहासनवरगतो विहरति-आस्तेस्म ।

चउणओ तस्सण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवीसयाइ ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अतो अतेउरसि ओरोहसपरिवुडे सिंहासण वरगए विहरइ) उस काल और उस समय में धातकी पड नाम के द्वीप मे पूर्व दिग्वर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में अमरकका नाम की राजधानी थी। उस अमरकका नाम की राजधानी में पद्मनाभ नाम का राजा रहता था। यह राजा महा हिमवान् पर्वत की तरह तथा महा मलय, मन्दर एवं माहेन्द्र की तरह अन्य राजाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वादिगुणों से विभव से एवं ऐश्वर्य से संपन्न था। इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है। इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये। उस पद्मनाभ राजा के अतःपुर में ७०० सात सौ रानियां थीं। सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहा एक दिन की बात है

होत्था, महया हिमवत०वण्णओ,तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवी सयाइ ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अतो अते उरसि ओरोहसपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरइ)

તે કાળે અને તે સમયે ધાતકી ખડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો તે ગજા મહા હિમાચલ પર્વતની જેમ તેમજ મહામલય, મદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા ગજાઓ કરતા વધારે મહત્ત્વ વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સપન્ન હતો આ પદોનુ સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા આવ્યુ છે આ રાજાનુ વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજવુ જોઇએ તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમા સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિહાસન ઉપર બેઠા હતા

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्त सन् 'ईषद् विहसित' मन्दहास करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य 'अगडदद्दुरस्स' अगडदर्दुरस्य=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् बहिः प्रदेशे वियमान नकिमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रावस्थित किमपि वस्तु न वेत्सीति भावः । कच्छुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारद पृच्छति-'के ण देवाणुप्पिया ! से अगडददुरे' इति। हे देवानुप्रिय ! कः खलु सोऽगडदर्दुरः ? एव पद्मनाभेन राज्ञा पृष्टः सन् कच्छुल्लनारदः माह—'एव यथा मल्लिणाए' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र बोध्यम् समुद्रददुरकूपदर्दुरयोः परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः । पुनः कच्छुल्ल-

---

कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते रहते हो-तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा अतः पुर पहिले कभी देखा है-जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे-हँसकर तब उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा-हे पद्मनाभ ! तुम उस कूपम डूक के समान हो-जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी प्रदेश में विद्यमान कुछभी नही जानते हो। कच्छुल्ल नारद के वचन सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा-देवानुप्रिय ! वह अगडदर्दुर का आख्यान कैसा है? तब नारद ने उनसे कहा-मल्लि नाम के अध्ययन में कूपमडूक और समुद्र मडूक के परस्पर में वार्तालाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है-सो नारद ने यह आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया- पुन' कच्छुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણવાસ જોયો છે ? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા લાગ્યા, હસીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પદ્મનાભ ! તમે તે કૂપ મડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડુ પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી કચ્છુલ નારદના વચન સાભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ નારદને પૂછયુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે અગડ દર્દુરકનુ આખ્યાન કેવી રીતે છે ? ત્યારે નારદે તેમને મલ્લિ નામે અધ્યયનમા વર્ણવવામા આવેલા કૂપ મડૂક અને સમુદ્ર મડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સભળાવ્યુ

नारदः उदकपरिस्पृष्टायां-जलाभिषिक्तायां दर्भोपरि सत्यरचितायां वृष्यां आस नशेषे निषीदति, यावत् कुशलोदन्त=कुशलवार्ताम् आपृच्छति=पृष्टोपविष्टं तं कच्छुल्लनारद पद्मनाभः कुशलवार्ता पृच्छतीत्यर्थः । तत खलु स पद्मनाभो राजा निजकान्तरीये स्त्रीपरिवारे जातविस्मयः=सञ्जातपद्मगर्वः, कच्छुल्लनारदम् एवमवक्ष्यमाणक्रमेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वं बहून् ग्रामान् यावत् गृहाणि अनुप्रविशसि, तत्=तस्माद् अस्ति 'आइ' इति वाक्यालङ्कारे ते=त्वया कुत्रचिद् ते

इसके बाद वे कच्छुल्लनारद जल के छींटो से सिंचित आसन पर जो दर्भ के ऊपर बिछा हुआ था बैठ गये-बैठकर उन्हों ने पद्मनाभ राजा से कुशलवार्ता पूछा। पद्मनाभ राजा ने भी सुख पूर्वक बैठे हुए उन कच्छुल्ल नारद से उन के कुशल समाचार पूछे। (तएणं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि त अत्थि आइ तेकहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं मम ओरोहे ? तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसिय करेइ, करित्ता एवं वयासी-सरिसेणं तुम पउमणाभा ! तस्स अगडददुरस्स केणं देवाणुप्पिया ! से अगडददुरे ? एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवाणुप्पिया !) इसके बाद पद्मनाभ राजा ने अपने अन्तःपुर में विस्मित बनकर कच्छुल्लनारद से इस प्रकार

આસન ઉપર બેસવા માટે વિનતી કરી ત્યારપછી તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાંટાઓથી સિંચિત દર્ભના ઉપર પાથરેલા આસન ઉપર બેસીને પદ્મનાભ રાજાને તેઓના પરિવારની કુશળતાના સમાચારો પૂછયા પદ્મનાભ રાજાએ પણ આસન ઉપર સુખેથી બેઠેલા તે કચ્છુલ્લનારદને કુશળ સમાચારો પૂછયા

(तएणं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि, त अत्थि आइ ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपूव्वे जारिसए णं मम ओरोहे ? तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसिय करेइ, करित्ता एवं वयासी-सरिसेणं तुम पउमणाभा ! तस्स अगडददुरस्स केणं देवाणुप्पिया ! से अगडददुरे ? एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवाणुप्पिया !)

ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ પોતાના રણવાસના વૈભવને જોઈને આશ્ચર્ય થઈને કચ્છુલ્લ નારદને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ઘણા ગામ યાવત્ ઘરોમા આવજા કરતા રહો છો તો હે દેવાનુપ્રિય ! કયાંક પહેલા

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः। ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्त सन् 'ईषद् विहसित' मन्दहास करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य 'अगडदद्दुरस्स' अगडदर्दुरस्य=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् बहिः प्रदेशे वियमान नकिमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रावस्थित किमपि वस्तु न वेत्सीति भावः। कच्छुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारदं पृच्छति-'के ण देवाणुप्पिया ! से अगडददुरे' इति। हे देवानुप्रिय ! कः खलु सोऽगडदर्दुरः ? एव पद्मनाभेन राज्ञा पृष्टः सन् कच्छुल्लनारदः माह—'एव यथा मल्लिणाए' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र बोध्यम् समुद्रदर्दुरकूपदर्दुरयोः परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः। पुनः कच्छुल्ल-

---

कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते रहते हो-तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा अतः पुर पहिले कभी देखा है-जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे-हँसकर तब उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा-हे पद्मनाभ ! तुम उस कूपम डूक के समान हो-जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी प्रदेश में विद्यमान कुछभी नहीं जानते हो। कच्छुल्ल नारद के वचन सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा-देवानुप्रिय ! वह अगडदर्दुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा-मल्लि नाम के अध्ययन में कूपमडूक और समुद्र मडूक के परस्पर में वार्तालाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है-सो नारद ने यह आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया- पुनः कच्छुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણવાસ જોયો છે ? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા લાગ્યા, હસીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પદ્મનાભ ! તમે તે કૂપ મડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડુ પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી કચ્છુલ નારદના વચન સાભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ નારદને પૂછયુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે અગડ દર્દુરનુ આખ્યાન કેવી રીતે છે ? ત્યારે નારદે તેમને મલ્લિ નામે અધ્યયનમા વર્ણવવામા આવેલા કૂપ મડૂક અને સમુદ્ર-મડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સભળાવ્યુ

नारदोवदति-एव यक्ष्यमाणप्रकारेण खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीप भारते वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः स्नुषा पञ्चाना पाण्डवाना भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते द्रौपद्याः खलु देव्याश्चिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठकस्याय तवावरोध. तवान्तःपुरवर्तिनी काचिदपि देवी 'सयतमपि कल' शततमामपि कलां नार्हति, इति कृत्वा=एव ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति । ततः कच्छुल्लनारदोगन्तुकाम.

फरते हैं कि हे देवानुप्रिय ! सुनो-बात इस प्रकार है-(जबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पडुस्स सुण्हा, पचण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठ सरीरा, दोवईए ण देवीए छिन्नस्स वि पायगुट्ठयस्स अय तव अवरोहो सय ग्घमपि कल ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभ आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडि गए, तएण से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवइए, देवीए रूवे य चिल्लए४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोस हसाला तेणेव उवागच्छइ) जबूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप (मध्य जबुद्वीप में) में भारतवर्ष में, हस्तिनापुर नाम के नगर में द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा, पांडु राजा की स्नुषा-पुत्रवधू-पाच पाडवों की भार्या द्रौपदी देवी है। यह रूप से यावत् उत्कृष्ट शरीर है। तुम्हारा यह अतःपुर उसके कटे हुए पैर के अगूठे के सौवें अश के बराबर

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, વાત એવી છે કે—

(जबू दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पहुस्स सुण्हा, पचण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा, दोवईए ण देवीए छिन्नस्स वि पायगुट्ठयस्स अय तव अवरोहो सयन्नमपि कल ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जाव पडि गए, तएण से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवईए, देवीए रूवेय मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ)

જબૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમા ભારત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નામે નગ રમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચૂલની દેવીની આત્મજા, પાડુ રાજાની સ્નુષા-પુત્રવધૂ પાચ પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે તમારો આ રણવાસ તેના કપાયેલા અગૂઠાના સોમા ભાગની બરોબર પણ નથી, આ બધુ હુ વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છુ દ્રૌપદી જેવી [illegible] પણ

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कार माप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्यया गगनमुल्लयन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

तत खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ण्य निशम्य हृदयेधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः = लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अ युपपन्न. = एकाग्रचित्त सन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पौषधशाला प्रमार्ज्य यावदुच्चम मक्त कृत्वा ' पूर्वसगतिक ' पूर्वमित्र देवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारत वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है। ऐसा म जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। उस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहा से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहा से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एव लावण्य मे मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में बिलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहा पौषधशाला थी वहा गये । (उवागच्छित्ता पोसहसालं जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जबूदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया !

નથી આ પ્રમાણે કહીને તે કચ્છુલ્લ નારદ ત્યાથી ચાલવા માટે તૈયા થઇ ગયા તેમણે પદ્મનાભ રાજાને જવા માટે પૂછયુ, પૂછીને યાવત્ ત્યાથી તેઓ પદ્મનાભ રાજાની પાસેથી સત્કૃત થઇને ઉત્પતની વિદ્યાના પ્રભાવથી આકા શને ઓળગતા જતા રહ્યા ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કચ્છુલ્લ નારદના મુખથી આ સમાચારને સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને દ્રૌપદી દેવીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી મૂર્છિત ૪ થઈ ગયા, યાવત્ તેમનુ મન તેમા એકદમ ચોટી ગયુ આ સ્થિતિમા તેઓ જ્યા પૌષધશાળા હતી ત્યા ગયા

(उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! दोवई देवी इहमाणिय तएण पुव्वसगइए देवे पउमनाभ एवं

नारदोऽवदति-एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः स्नुषा पञ्चाना पाण्डवाना भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते द्रौपद्याः खलु देव्याश्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठकस्याग्र तवावरोध' तवान्तःपुरवर्तिनी काचिदपि देवी 'सयत्तमपि कल' शततमामपि कला नार्हति, इति कृत्वा=एवं ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति । ततः कच्छुल्लनारदोगन्तुकामः

कहते हैं कि हे देवानुप्रिय ! सुनो-बात इस प्रकार है-(जबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चुलणीए देवीए अत्तया पडुस्स सुण्हा, पचण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठ सरीरा, दोवईए ण देवीए छिन्नस्स वि पायगुट्ठयस्स अय तव अवरोहो सय इमपि कल ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभ आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडि गए, तएण से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवइए, देवीए रूवे य चिल्लए४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोस हसाला तेणेव उवागच्छइ) जबूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप (मध्य जबुद्वीप में) में भारतवर्ष मे, हस्तिनापुर नाम के नगर में द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा, पांडु राजा की स्नुषा-पुत्रवधू-पाच पाडवों की भार्या द्रौपदी देवी है। यह रूप से यावत् उत्कृष्ट शरीर है। तुम्हारा यह अतःपुर उसके कटे हुए पैर के अगूठे के सौवें अश के बराबर

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, વાત એવી છે કે—

(जबू दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पडुस्स सुण्हा, पचण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा, दोवईए ण देवीए छिन्नस्स वि पायगुट्ठयस्स अय तव अवरोहो सयन्नमपि कल ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जाव पडि गए, तएण से पउमणाभे राया कच्छुल्लगारयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवईए, देवीए रूवेय मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ)

જબૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમા ભારત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નામે નગ રમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચૂલની દેવીની આત્મજા, પાડુ રાજાની સ્નુષા-પુત્રવધૂ પાચ પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે તમારો આ રણવાસ તેના કપાયેલા અગૂઠાના સોમા ભાગની બરોબર પણ નથી, આ બધુ હુ વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છુ દ્રૌપદી જેવી નારી કોઈ પણ

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कार प्राप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्यया गगनमुल्लङ्घयन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

तत खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ण्य निशम्य हृदयेऽवधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः = लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अ युपपन्नः = एकाग्रचित्त सन् यत्रैव पोषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पोषधशाला प्रमार्ज्य यावदुच्चम भक्त कृत्वा ' पूर्वसगतिक ' पूर्वमित्र देवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है। ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। उस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहा से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पृछा पूछकर यावत् वे वहा से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एव लावण्य मे मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में बिलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहा पौषधशाला थी वहा गये । (उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया !

નથી આ પ્રમાણે કહીને તે કચ્છુલ્લ નારદ ત્યાથી ચાલ્યા જવા માટે તૈયા થઇ ગયા તેમણે પદ્મનાભ રાજાને જવા માટે પૂછયુ તેઓ પદ્મનાભ રાજાની પાસેથી સત્કૃત થઇને ઉત્પતની (શને ઓળગતા જતા રહ્યા ત્યારપછી તે પદ્મનાભ મુખથી આ સમાચારને સાભળીને અને તેને હૃદયમ દેવીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી મૂર્છિત ૪ થઈ તેમા એકદમ ચોટી ગયુ આ સ્થિતિમા તેઓ જ્યા પો

(उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव देवाणुप्पिया ! जबू द्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे ण देवाणुप्पिया ! दोवई देवी इहमाणिय तएवं

दौपदीं देवीम् ' इह माणिय ' इत्यानेतुम् । ततः खलु पूर्वसगतिको देवः पद्मनाभं नृपमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! नो खलु एतद् भूतं वा भवद् वा भविष्यद् वा, यत् खलु द्रौपदी देवी पञ्च पाण्डवान् मुक्त्वाऽन्येन पुरुषेण सार्धमुदारान् भोगान् यावद् विहरति, तथापि च खलु अहं तव प्रीत्यर्थं द्रौपदीं देवीमिह इत्यानयामीति

दोवई देवीं इहमाणिय तणं पुव्वसगइए देवे पउमनाभं एवं वयासी-नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूणं अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव विहरिस्सइ) वहां जाकर उन्हों ने उस पौषध शाला को रजोहरण से साफ किया यावत् अष्टम भक्त कर के पूर्व सगति देव का आराधन किया देवों के आनेपर पूर्व सगतिक देव से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष में हस्तिनापुर नगर में पाडवो की भार्या द्रौपदी देवी है । यह यावत् उत्कृष्ट शरीर है । इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैं उस द्रौपदी देवी को तुमसे यहा ले आने के लिये चाहता हूँ । पद्मनाभ की इस बात को सुनकर पूर्वभव के मित्र उस देव ने उस से तब ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात द्रौपदी के साथ न पहिले हुई है, न आगे होगी-और न अब वर्तमान में हो सकती है, जो द्रौपदी देवी पाच पांडवो को छोड़कर अन्य किसी दूसरे पुरुष के साथ उदार यावत् मनुष्य भव सबन्धी काम सुखो को भोगे (तहावि

वयासी नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूणं अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव, विहरिस्सइ)

ત્યા જઈને તેમણે તે પૌષધશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ ભક્ત કરીને પૂર્વ સગતિ દેવનુ આવાહન કર્યું દેવ જ્યારે આવી ગયો ત્યારે તેમણે પૂર્વસગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભરત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નગરમા પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે પદ્મનાભની આ વાતને સાભળીને પૂર્વભવના મિત્ર [illegible] તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી દેવીની સાથે [illegible] ચરણ ન પહેલા થયુ છે ન ભવિષ્યમા થશે અને ન વર્ત [illegible] છે દ્રૌપદી દેવી પાચે પાડવો સિવાય બીજા [illegible] ભવ સબધી કામસુખો ભોગવે આ

कृत्वा=उक्त्वा पद्मनाभम् आपृच्छति आपृच्छ्य तया उत्कृष्टया देवसम्बन्धिन्या गत्या यावत् लवणसमुद्रस्य मध्यम॰ येन=उपरिभागेन गगनमार्गेण, यत्रैव हस्तिनापुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरो राजा द्रौपद्या सार्धमुपरि आकाशतले=प्रासादाट्टालिकोपरि सुखप्रसुप्तश्चाप्यासीत्, तत॰ खलु स पूर्वसंगतिको देवो यत्रैव युधिष्ठिरो राजा यत्रैव द्रौपदी देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रौपद्यै

य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइ देवीं इह हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) फिर भी मै तुम्हारी प्रीति के निमित्त द्रौपदी देवी को यहाँ शीघ्र लेकर आता हूँ। ऐसा कह-कर उसने जाने के लिये उन पद्मनाभ से पूछा, पूछकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसबन्धी गति से यावत् लवण समुद्र के बीच से होकर जहा हस्तिनापुर नगर था उस ओर चल दिया ! (तेण कालेण तेण समएण हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया,दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ) उस काल और उस समय में हस्तिनापुर नगरमें युधिष्ठिर राजाके साथ द्रौपदी आकाशतलमें-प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सोये हुए थे। वह पूर्व संगतिक देव जहा वे युधिष्ठिर राजा और जहां वह द्रौपदी देवी थी वहां आया-(उवागच्छित्ता

(तहावि य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइ देवीं इह हव्वमाणेमि त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

છતાએ તમને ખુશ કરવા માટે હુ દ્રૌપદી દેવીને શીઘ્ર અહીં લઇ આવુ છુ આમ કહીને તેણે જવા માટે પદ્મનાભ રાજાને પૂછયુ પૂછીને તે પોતાની ઉત્કૃષ્ટ દેવભવ સબધી ગતિથી યાવત્ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને જ્યા હસ્તિનાપુર નગર હતું તે તરફ રવાના થયો

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया, दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ)

તે કાળે અને તે સમયે હસ્તિનાપુર નગરમા યુધિષ્ઠિર રાજા અને દ્રૌપદી દેવી મહેલની અગાશી ઉપર સૂતા હતા તે પૂર્વ સગતિક દેવ જ્યા તે યુધિષ્ઠિર રાજા અને જ્યા તે દ્રૌપદી દેવી હતી ત્યા આવ્યો

द्रौपदीं देवीम् ' इह माणिय ' इत्यानेतुम् । ततः खलु पूर्वसंगतिको देवः पद्मनाभं नृपम् एवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! नो खलु एतद् भूतं वा भवद् वा भविष्यद् वा, यत् खलु द्रौपदी देवी पञ्च पाण्डवान् मुक्त्वाऽन्येन पुरुषेण सार्धमुदारान् भोगान् यावद् विहरति, तथापि च खलु अहं तव प्रीत्यर्थं द्रौपदीं देवीमिह इत्यानयामीति

दोवई देवीं इहमाणिय तिण्णि पुव्वसंगइए देवे पउमनाभं एवं वयासी-नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूणं अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव विहरिस्सइ) वहां जाकर उन्हों ने उस पौषध शाला को रजोहरण से साफ किया यावत् अष्टम भक्त कर के पूर्व संगतिक देव का आराधन किया देवों के आनेपर पूर्व संगतिक देव से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष में हस्तिनापुर नगर में पाडवो की भार्या द्रौपदी देवी है । यह यावत् उत्कृष्ट शरीर है । इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैं उस द्रौपदी देवी को तुमसे यहां ले आने के लिये चाहता हूँ । पद्मनाभ की इस बात को सुनकर पूर्वभव के मित्र उस देव ने उस से तब ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात द्रौपदी के साथ न पहिले हुई है, न आगे होगी-और न अब वर्तमान में हो सकती है, जो द्रौपदी देवी पांच पांडवो को छोड़कर अन्य किसी दूसरे पुरुष के साथ उदार यावत् मनुष्य भव संबन्धी काम सुखों को भोगे (तहावि

वयासी नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूणं अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव, विहरिस्सइ)

ત્યા જઈને તેમણે તે પૌષધશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ ભકત કરીને પૂર્વ સંગતિ દેવનુ આવાહન કર્યું દેવ જ્યારે આવી ગયો ત્યારે તેમણે પૂર્વસંગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભરત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નગરમા પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે પદ્મનાભની આ વાતને સાભળીને પૂર્વભવના મિત્ર તે દેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી દેવીની સાથે આ જાતનુ આચરણ ન પહેલા થયુ છે ન ભવિષ્યમા થશે અને ન વર્તમાનમા થવાની શકયતા છે દ્રૌપદી દેવી પાચે પાડવો સિવાય બીજા કોઈ પુરૂષની સાથે ઉદાર યાવત્ મનુષ્યભવ સબધી કામસુખો ભોગવે આ વાત તદ્દન અસભવિત છે.

यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिय ! मया हस्तिनापुराद् द्रौपदी इह ह्रियमानीता तवाशोकवनिकाया तिष्ठति, अतः पर त्वं जानासि ' इति कृत्वा=उक्त्वा, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू०२५ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी त भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी-नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्तिकट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ, तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकार विभूसिए अंतेउरपरियालं संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देवीं ओहय० जाव झियायमाणी पासइ पासित्ता एव वयासी-किण्णं तुम देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि, एवं

दिया-गाढ निद्रा से रहित कर फिर वह वहां से जहा पद्मनाभ राजा थे वहा गया-वहा जाकर उसने उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! मैं हस्तिनापुर नगर से द्रौपदी को यहा ले आया हूँ। वह तुम्हारी अशोक वाटिका में ठहरी है, अत अब तुम जानो। ऐसा कहकर वह देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वापिस चला गया। सू- २५

કરીને તે જ્યા પદ્મનાભ રાજા હતા ત્યા ગયો ત્યા જઇને તેણે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! હસ્તિનાપુર નગરથી દ્રૌપદી દેવીને હુ અહીં લઇ આવ્યો છુ તે તમારી અશોક-વાટિકામા છે, એથી હવે તમે જાણો। આ પ્રમાણે કહીને તે દેવ જે દિશા તરફથી પ્રકટ થયો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો ॥ સૂત્ર ૨૫ ॥

देव्यै 'आसोयणिय' अवस्वापनीं निद्रां 'दलयइ' ददाति सुखसमुप्तां द्रौपदीं गाढनिद्रयाऽऽक्रान्तां करोतीत्यर्थः। दत्वा-गाढनिद्रावतीं कृत्वा द्रौपदीं देवीं गृहीत्वा तया उत्कृष्टया देवगत्यभिधयागत्या यावत् यत्रैवामरकङ्का राजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य भवने 'असोगवणियाए' अशोकवनिकायाम् अशोकवाटिकाया द्रौपदीं देवीं स्थापयति, स्थापयित्वा 'आसोयणिं अवहरइ' अवस्वापनीं निद्रामपहरति, अपहृत्य

दोवईए देवीए ओसोयणिय दलयइ, दलित्ता दोवईं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठवेइ ठावित्ता ओसोयणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अंतेपुरं तुमं जाणिसि त्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) वहा आकर उसने द्रौपदी देवी को गाढ निद्रा में सुला दिया, सुलाकर फिर उसने उस द्रौपदी को वहा से उठाया-और उठा कर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसबन्धी गति से चलकर यावत् जहा अमरकका नगरी और जहा पद्मनाभ राजा का भवन था वहा आया-। वहा आकर के उसने पद्मनाभ के भवन में अशोकवाटिका में द्रौपदी देवी को रखदिया। रखकर के फिर उसने उसे गाढ निद्रा से रहित कर

(उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोयणिय दलयइ, दलित्ता दोवईं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे-तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठवेइ ठावित्ता ओसोयणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एसण देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अंतेपुरं तुमं जाणिसित्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

ત્યા આવીને તેણે દ્રૌપદીને ગાઢ નિદ્રામા સૂવાડી દીધી, સુવાડીને તેણે તે દ્રૌપદીને ત્યાથી ઉઠાવી અને ઉઠાવીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવભવ સબધી ગતિથી ચાલીને યાવત્ જ્યા અમરકકા નગરી અને જ્યા પદ્મનાભ રાજાનુ ભવન હતુ ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે પદ્મનાભના ભવનમા અશોક-વાટિકામા દ્રૌપદી

मेतद् भवन नो खलु एषाऽस्माक ' सगा ' स्वका=स्वकीया, अशोकवनिका, तद् न ज्ञायते खलु-अह केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा अन्यस्य राज्ञोऽशोकवनिकाया ' साहरिया ' संहृता-आनीताऽस्मि ' इति कृत्वा=इति विचार्य, अपहृतमनःसकल्पा=अनिष्टयोगेन भग्न-मनोरथा विषादमुपगतेत्यर्थ. यावद् ध्यायति=आर्तध्यान करोति ।

ततः खलु पद्मनाभो राजा स्नातो यावत् सर्वालकारविभूषितोऽन्तःपुरपरि-
वारसपरिवृतो यत्रैवाशोकवनिका यत्रैव द्रोपदी देवी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

एसो अम्ह सगा असोगवणिया, त ण णज्जइ, ण अह केणई देवेणवा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्ति कट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ) यह मेरा निज का भवन नही है, यह मेरी निज की अशोक वाटिका नही है। तो पता नही पडना क्या मै किसी दूसरे राजा की अशोकवाटिका में किसी देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर महो रग अथवा, गधर्व के द्वारा हरण कर लाई गई हूँ। इस प्रकार के विचार से उस का मनः सकल्प अपहत हो गया-अनिष्ट के योग से उस का मनोरथ भग्न हो गया और वह खेदखिन्न हो गई यावत् आर्त-ध्यान करने लगी। (तएण से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभू-सिए अतेउरपरियाल सपरिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवई देवी ओहय० जाव झिया-

---

(नो खलु अम्ह एसे सएमत्रणे णो खलु एसा अम्ह सगा असोगवणिया, त ण णज्जइ ण अह केणई देवेग वा दाणवेग वा किंपुरिसेग वा किन्नरेग वा महो-रगेग वा गधव्वेग वा अ नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्ति कट्टु ओहयमण सकप्पा जाव झियायइ)

આ મારૂ ભવન નથી, આ મારી અશોક વાટિકા નથી કઈ ખબર પડતી નથી, શું હુ બીજા કોઈ રાજાની અશોક વાટિકામા કોઈ દેવ, દાનવ, કિંપુરુષ કિન્નર, મહોરગ અથવા તો ગધર્વ વડે અપહૃત થઇને લઈ જવામા આવી છુ આ જાતના વિચારોથી તેનુ મન ઉદાસ થઇ ગયુ, અનિષ્ટના યોગથી તેનો મનોરથ ભગ્ન થઈ ગયો અને તે ખેદ-ખિન્ન થઇ ગઇ યાવત્ આર્તધ્યાન કરવા લાગી

(तएण से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभूसिए अतेउरपरियाल संपरिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

खलु तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूदीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया त मा णं तुम देवाणुप्पिया! ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि, तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे बारवईए णयरीए कण्हे णाम वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, त णं से छण्हं मासाण मम कूव नो हव्वमागच्छइ तएणं अह देवाणुप्पिया ! जं तुम वदासि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि, तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणित्ता२ दोवइं देविं कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्ठ छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० २६ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । तत खलु सा द्रौपदी देवी ततो मुहूर्त्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती तद् भवनम् अशोकवनिका च ' अपच्चभिजाणमाणी ' अप्रत्यभिजानन्ती भवनादिकमपरिचित जानन्ती एवमवादीत्-नो खलु अरमाव

– तएण सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (सा दोवईदेवी) वह द्रौपदीदेवी (ताओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी) १ मुहूर्त्त के बाद जगी सो जग कर उसने (त भवण असोगवणिय च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी) उस भवन को एव उस अशोकवाटिका को अपरिचित जानकर अपने मन में ऐसा विचार किया–(नो खलु अम्ह एसे सएभवणे, णो खलु

तएण सा दावई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) त्यारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (ताओ मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा समाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી અને જાગીને તેણે (त भवण असोगवाणिय च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी) તે ભવન અને તે અશોક વાટિકાને અપરિચિત જાણીને પોતાના મનમા આ જાતનો

खलु त्व हे देवानुप्रिये ! अपहतमनःसङ्कल्पा यावद् ध्याय, आर्त-यान मा कुरु त्व मया सार्धं विपुलान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहर=मदीयमासादे तिष्ठ' इति।

तत खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभमेवमवादीत्–एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे द्वारवत्या नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो मम प्रियभातृक'= ममप्रियस्य भर्तुर्भ्राता परिवसति, तद् यदि खलु म पण्णा मामाना मध्ये 'मम' मा 'कूव' देशीशब्दोऽयम्, अन्वेषयितु ग्रहीतु वा नो शीघ्रमागच्छति–तत खलु

गई हो। इसलिये हे देवानुप्रिये! तुम आपहतमनःसकल्प बनकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो अब मेरे साथ विपुल कामभोगों को भोगती हुई मेरे प्रासाद में रहो। (तएण सा दोवई देवी पउमणाभ एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, त जइण से छण्ह मासाण मम कूव णो हव्व मागच्छइ तएणं अह देवाणुप्पिया ! ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि तएण से पउमे दोवईए एयमट्ठ पडिसुणेइ २ दोवइ देवी कण्णतेउरे ठवेइ, तएण सा दोवई देवी छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण आयबिलपरिग्गहिएण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ) इसके बाद उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ! सुनो–जबूद्वीप नाम के द्वीप में भारतवर्षमें द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव मेरे प्रिय पतिके भ्राता रहते है। वे यदि छह मासके भीतर मुझे अन्वेषण करनेके लिये या

આવી છો એવી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે અપહતમન સકલ્પા થઇને યાવત્ આર્ત્તધ્યાન ન કરો તમે મનુષ્યભવ સબધી કામ ભોગો ભોગવતા મારા મહેલમા રહો

(तएण सा दोवई देवी पउमणाभ एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जबूदीवे दीवे, भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्णे णाम वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ, त जइण से छण्ह मासाण मम कूव णो हव्व मागच्छइ, तएण अह देवाणुप्पिया ! ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि तएण से पउमे दोवईए एयमट्ठ पडिसुणित्ता २ दोवई देवीं कण्णतेउरे ठवेइ, तएण सा दोवई देवी छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेणं आयबिलपरिग्गहिएण तवोकम्मेण अप्पाण भावे माणे विहरइ)

ત્યારપછી દ્રૌપદી દેવીએ પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારત વર્ષમા દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણ વાસુદેવ મારા પ્રિય પતિના ભાઈ રહે છે તેઓ છ મહીનાની અદર મારી તપાસ

द्रौपदीं देवीमपहृतमन सङ्कल्पां यावद् ध्यायन्तीं=आर्तध्यानं कुर्वतीं पश्यति दृष्ट्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वं ' ओहय० जाव झियाहि ' अपहृतमनः सङ्कल्पा यावद् ध्यायसि=त्रिपीदसि एव खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! मम पूर्वसङ्गतिकेन देवेन जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुराद् नगराद् युधिष्ठिरस्य राज्ञो भवनात् संहृता=अपहृताऽसि, ततस्तस्माद् मा

थमाणी पासइ, पासित्ता एव वयासी, किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! मम पुव्वसगइएण देवेण जम्बूदीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, त माण तुम देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुम मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइ जाव विहराहि) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा नहा धोकर यावत् सर्वालङ्कारो से विभूषित हो अपने अतःपुर परिवार से सपरिवृत होकर जहा वह अशोक वाटिका थी-और उसमें भी जहां वह द्रौपदी देवी बैठी थी-वहा आया-वहा आकर के उसने द्रौपदी देवी से अपहृत मनः सकल्पवाली यावत् आर्त्तध्यान करती हुई देखकर इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम क्यों अपहृत मनः सकल्प होकर यावत् आर्त ध्यान कर रही हो-खेद खिन्न हो रही हो तुम यहा हे देवानुप्रिय ! मेरे पूर्व भव के मित्र देव के द्वारा जबूद्वीप नाम के द्वीप से भारतवर्ष के हस्तिनापुर नगर से युधिष्ठिर राजा के भवन से हरण कर ले आई

च्छित्ता दोवई देवी ओहय० जाव झियायमाणी पासइ, पासित्ता एव वयासी किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! ममपुव्वसगइएण देवेण जम्बूदिवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, त माण तुम देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुम मए सद्धिं विपुलाइ भोग भोगाइ जाव विहराहि)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભરાજા સ્નાન કરીને યાવત્ સર્વાલંકારોથી વિભૂષિત થઈને પોતાના રણવાસ-પરિવારને સાથે લઈને જ્યા અશોકવાટિકા હતી અને તેમા પણ જ્યા તે દ્રૌપદી દેવી બેઠી હતી ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે દ્રૌપદી દેવીને અપહૃતમન સકલ્પવાળી યાવત્ આર્ત્તધ્યાન કરતી જોઈને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે શા માટે અપહૃતમન સકલ્પા થઈને યાવત્ આર્ત્તધ્યાન કરી રહી છો ? ખેદ-ખિન્ન થઈ રહ્યા છો ? હે દેવાનુપ્રિયે ! મારા પૂર્વભવના મિત્ર દેવ વડે તમે જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપના, ભારત વર્ષના હસ્તિનાપુર નગરના યુધિષ્ઠિર રાજાના ભવનથી અપહૃત થઈને

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं कयं, तएणं से पंडुराया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया२ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवइए देवीए सुइं वा जाव पवित्तिं वा परिकहेइ तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसपयाणं दाणं दलयइ त्तिकट्टु घोसणं घोसावेह२ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से पंडूराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! बारवइं णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि कण्ह णं पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तिं वा उवलभेज्जा, तएण सा कोंती देवी पंडुरण्णा एव वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखंध-

अह हे देवानुप्रिय ! यत् त्व यदसि=यदिष्यसि ' तस्स ' तत्र ' आणाओवायवय णणिद्देसे ' आज्ञोपपातवचननिर्देशे स्थास्यामि, तवाज्ञाकारिणी वशवर्तिनी भवि ष्यामीत्यर्थ , आज्ञा-अवश्य विधेयतया आदेश', उपपातवचन सेवावचन, निर्देश - कार्याणि मयि मग्नेकृते यन्निपतिष्यति तत्, एवा समाचारवद्धः तत्र, ततः खलु स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या एतमर्थं प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य द्रौपदीं देवीं ' कण्णतेउरे' कन्यान्तः पुरे स्थापयति, ततः खलु सा द्रौपदीदेवी ' छट्ठ छट्ठेण ' षष्ठषष्ठेन षष्ठभक्तानन्तर पुनः षष्ठभक्तेन, ' अनिक्खित्तेण ' अनिक्षिप्तेन=विरामरहितेन अन्तरारहितेनेत्यर्थ', ' आयबिलपरिग्गहिएण ' आयबिलपरिगृहीतेन तपः कर्मणा आत्मान भावयन्ती विहरति ॥ सू० २६ ॥

मूलम्–तएणं से जुहट्ठिले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवइ देविं पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा खुइ वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पडुराया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पडुरायं एवं वयासी एवं–खलु ताओ ! मम आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ

लेने के लिये यहा जल्दी से नहीं आयेगे तो उसके बाद हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूँगी–तुम्हारी आज्ञा कारिणी वशवर्तिनी बन जाऊँगी। ऐसा अर्थ " आणाओवायवयणणिद्देसे " इन पदो का निकलता है। इसके बाद पद्मनाभ राजा ने द्रौपदी के इस कथन को स्वीकार करके उसे कन्या के अन्तः पुर में रखदिया। वहा वह द्रौपदी देवी आयबिल परिगृहीत छट्ठ छट्ठ की अन्तर रहित तपस्या से अपने आप को भावित करती हुई रहने लगी। सू० २६

કરતા કરતા અહીં નહિ આવી શકે તો ત્યારપછી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેમ કહેશો તેમ કરીશ, હુ તમારી આજ્ઞાકારિણી વશવર્તિની બની જઇશ " આ ણા ઓવાયવયણાણિદ્દેસે " આ પદોથી આ જાતનો અર્થ નીકળે છે ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના તે કથનને સ્વીકારી લીધુ અને તેને કન્યાના અન્ત પુરમા મૂકી દીધી ત્યા તે દ્રૌપદી દેવી આયબિલ પરિગૃહીત છઠ્ઠ છઠ્ઠની અન્તર રહિત તપસ્યાથી પોતાની જાતને ભાવિત કરતી રહેવા લ ॥

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गणगवेसणं कय, तएण से पडुराया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया२ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवइए देवीए सुइं वा जाव पवित्ति वा परिकहेइ तस्स णं पडुराया विउल अत्थसपयाणं दाणं दलयइ त्तिकट्टु घोसणं घोसावेह२ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से पडूराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभमाणे कोंती देवीं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! वारवइ णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि कण्ह णं पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुतीं वा खुती वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा, तएण सा कोंती देवी पडुरण्णा एव वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता पहाया कयवलिकम्मा हत्थिखध-

वरगया हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु जणवये मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह–एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भ दसणं कंखइ, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय बारवईए य मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ दुरुहित्ता बारावइए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ । तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं पहायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिलस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण पासइ केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, त इच्छामि णं

देवीए सग्गणगवेसणं करित्तए, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं पिउच्छिं एव वयासी-जं णवरं पिउच्छा ! दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ अड्ढभरहाओ वा समंतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमित्तिकट्टु कोंतीं पिउत्थिं सक्कारेइ समाणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० २५ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स युधिष्ठिरो राजा ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धः सन् द्रौपदीं देवीं पार्श्वे ' अपासमाणो ' अपश्यन्=अनवलोकयन् शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रौपद्या देव्या सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं करोति, कृत्वा द्रौपद्या देव्या ' कत्थइ ' कुत्रापि ' सुइ ' श्रुतिं सामान्यवृत्तान्तं वा, ' खुइ ' क्षुतिं छिक्कादि शब्दं वा ' पवत्तिं ' प्रवृत्तिं वा विशेषवृत्तान्तं अलभमानो

तएणं से जुहिट्ठिल्ले राया इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से जुहिट्ठिल्ले राया) वे युधिष्ठिर राजा (तओ मुहुत्तंतरस्स) एक मुहूर्त्त के बाद (पडिबुद्धे समाणे) जगे-और जगकर उन्होंने (दोवई देवीं) द्रौपदी देवी को (पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ) अपने पास जब नहीं देखा तो वे अपनी शय्या से उठे और उठकर द्रौपदी देवीकी सबओरसे उन्होंने मार्गणा गवेषणाकी (करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया

'तएणं से जुहिट्ठिल्ले राया ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (से जुहिट्ठिल्ले राया) તે યુધિષ્ઠિર રાજા (तओ मुहुत्तंतरस्स) એક મુહૂર્ત બાદ (पडिबुद्धे समाणे) જાગ્યા અને જાગીને તેમણે (दोवई देवी) દ્રૌપદી દેવીને,

(पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ)

જ્યારે પોતાની પાસે જોઈ નહિ ત્યારે પોતાની શય્યા ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને દ્રૌપદી દેવીની ચોમેર માર્ગણા ગવેષણા કરી

(करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे

वरगया हत्थिणाउरं मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु-
जणवये मज्झंमज्झेण जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी
जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव
वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी
तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एव
वयह—एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणा-
उराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दसणं कंखइ, तएणं
ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंबि
यपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय
बारवईए य मज्झमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए
पायग्गहणं करेइ करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखध दुरुहइ
दुरुहित्ता बारावइए णयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ । तएणं से
कण्हे वासुदेवे कोंती देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्त
रागयं जाव सुहासणवरगयं एव वयासी सदिसउ णं पिउच्छा !
किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं
एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिलस्स
आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ ढोवई देवी ण णज्जइ केणइ
अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, त इच्छामि णं

ततः खलु स पाण्डुराजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरमहापथपथेषु महता महता शब्देनोद्घोषयन्त एव वदत-एव खलु हे देवानुप्रिया ! युधिष्ठिरस्य राज्ञ आकाशतलके सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा

और सब प्रकार से मार्गणा और गवेषणा करना चाहता हूँ। (तए णं से पडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुम्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे, सिंघाडगतीय चउक्कचच्चर महा पहपहेसु महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ, देवेण वा दानवेण वा किंनरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा) इस बात को सुनकर के उन पाडुराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग हस्तिनापुर नगर में जाओ-और वहा के शृंगाटक, त्रिक चतुष्क, चत्वर, महापथ इन समस्त मार्गों में बडे जोर २ से ऐसी घोषणा बार २ करो कि हे देवाणुप्रियों ! सुनो प्रासादकी अट्टालिका पर सुखपूर्वक सोये हुए युधिष्ठिर राजा के पास से न मालूम किसी देवने, या दानवने, किसी, किन्नरने,

ગવેષણ કરવ) એટલા માટે હે તાત ! હુ ચોમેર બધી રીને દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા ઇચ્છુ છુ

(तए णं से पडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुम्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे, सिंघाडगतीयचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दानवेण वा किंनरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा)

આ વાતને સાભળીને પાડુ રાજાએ કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો હસ્તિનાપુર નગરમા જાઓ અને ત્યાના શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા માર્ગોમા મોટા સાદે આ જાતની ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, મહેલની અગાશી ઉપર સુખેથી સૂતા યુધિષ્ઠિર રાજાની પાસેથી ન જાણે કોઇ દેવે કે દાનવે અથવા તો કોઈ કિન્નરે કે કિંપુરુષે અથવા કોઇ મહોરગે કે

यत्रैव पाण्डुराजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पाण्डुराजानमेवमवादीत्—हे तात! एवं खलु ममागाशतले प्रासादावतंसिकोपरि 'सुहपसुत्तस्स' सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी 'ण णज्जइ' न ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किन्नरेण वा किंपुरुषेण वा गन्धर्वेण वा हृता वा नीता=अन्यत्र प्रापिता वा अवक्षिप्ता वा? कूपगर्तादौ क्वचित् पातिता वा इत्यर्थः, तत्-तस्माद् इच्छामि खलु हे तातः! द्रौपद्या देव्याः सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं कर्तुम्।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं एवं वयासी एवं खलु ताओ मम आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा) मार्गणा गवेषणा करके जब उसने द्रौपदी देवी की कहीं भी शोध, सामान्य खबर को उस के चिह्नस्वरूप छिंक आदि के शब्द को, अथवा प्रवृत्ति-विशेष वृत्तान्त को नहीं पाया तब वे जहां पांडुराजा थे वहां गये-वहां जाकर के उन्होंने पाडुराजा से इस प्रकार कहा-हे तात! जब मैं प्रासाद की अट्टालिकाके ऊपर सुखसे सो रहा था-तब मेरे पाससे न मालूम द्रौपदी देवी को किसी देवने, दानवने, किन्नरने, किंपुरुषने, महोरगने, गंधर्वने हरण कर कहां रख दिया है।-या उसे किसी कुए में या खड्डे में डाल दिया है (इच्छामि णं ताओ दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण गवेसणं कयं) इस लिए हे तात! मैं द्रौपदी देवी की सब तरफ से

जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं एवं वयासी एवं खलु ताओ मम आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा)

માર્ગણા ગવેષણા કર્યા બાદ પણ જ્યારે તેમણે દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ રીતે, સામાન્ય ખબર અને ચિહ્ન સ્વરૂપ છીંક વગેરે શબ્દને અથવા તો પ્રવૃત્તિ-વિશેષ વૃત્તાત-ની પણ જાણ થઈ નહિ ત્યારે તેઓ જ્યા પાડુરાજા હતા ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેમણે પાડુરાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે તાત! જ્યારે હુ મહેલની અગાશીમા સૂઈ રહ્યો હતો ત્યારે મારી પાસે ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનુ કોઈ દેવે, દાનવે કે કિન્નરે કે કિંપુરુષે કે મહોરગે કે ગંધર્વે હરણ કર્યુ છે અથવા તો દ્રૌપદી દેવીને કોઇયે કૂવામા કે ખાડામા નાખી દીધી છે (इच्छामि ण ताओ दोवईए देवीए सव्वओ मग्गण-

ततः खलु स पाण्डू राजा द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा यावत् प्रवृत्तिम् अलभमानः कुन्तीं देवीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! द्वारवतीं नगरीं कृष्णस्य वासुदेवस्य एतमर्थं निवेदय=सुखप्रसुप्ता द्रौपदी केनाऽपि हृता नीता कूपादौ प्रक्षिप्ता वेति न ज्ञायते इत्येतद्रूप वृत्तान्त कथय, कृष्णः खलु पर वासुदेवो द्रौपद्या मार्गणगवेषण कुर्यात् अन्यथा न ज्ञायते द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा क्षुत्तिं वा उपलभेत ।

पास भेजदी ! इसके बाद जब पाडुराजा ने द्रौपदी देवी की कही पर भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्हो ने कुंति देवी को बुलाया-(सद्दावि०ए०वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा-(गच्छहण तुम देवाणुप्पिया ! बारवइ नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि, कण्हेण पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसण करेज्जा-अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वायुदेव के पास जाओ-और उनसे इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया है। हरण कर उसे कहीं पहुचा दिया है या किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है। पता नही पडता है। वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही द्रौपदी की मार्गणा गवेषणा करेंगे। नही तो द्रौपदी देवी की श्रुति, क्षुति अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी-यह नही कहा जा सकता है।

શ્રુતિ યાવત્ પ્રવૃત્તિ મેળવી નહિ ત્યારે તેમણે કુંતી દેવીને બોલાવી (સદ્દા વિ० ए० વયાસી) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! बारवइ नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि, कण्हेण पर वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसण करेज्जा अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરો કે સુખથી સુતેલી દ્રૌપદીનુ કોઇએ હરણ કરી લીધુ છે હરણ કરીને તેને કયાક ભૂકી દીધી છે અથવા તો કોઇ કૂવામા કે ખાડામા નાખી દીધી છે ન જાણે શુ થઇ ગયુ છે ? કૃષ્ણવાસુદેવ મને ખાત્રી છે કે ચોક્કસ દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા ગવેષણા કરશે નહિતર દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ, ક્ષુતિ અથવા પ્રવૃત્તિની જાણ અમને થશે એવી શકયતા જણાતી નથી.

गन्धर्वेण वा हृता वा नीता वा अपसिप्ता वा, तत्=तस्माद् यः खलु हे देवानुप्रिया ! द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा परिकथयति, तस्य खलु पाण्डुराजा विपुलमर्थसमुदानं दानं ददाति=इति कृत्वा-इत्युक्त्वा घोषणां घोषयत, घोषयित्वा एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः तथैव घोषणां कृत्वा यावदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति=हे स्वामिन् ! मयाज्ञया घोषणा कृताऽस्माभिरिति निवेदयन्ति ।

या किसी किंपुरुष ने या किसी महोरग ने या किसी गन्धर्व ने द्रौपदी देवी को हरण कर लिया है-या हरणकर उसे कहीं रख दिया है अथवा किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है (त जो ण देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स ण पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेइ २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतिं देविं सद्दावेइ) तो हे देवानुप्रियो ! जो कोई भी मनुष्य द्रौपदी देवी की शोध करेगा यावत् उसके विशेषवृत्तान्त को लाकर देगा-हम से आकर कहेगा, उसको पाण्डुराजा बहुत अधिक मात्रा में अर्थ समुदान-दान-देगा । इस प्रकार की तुम घोसणा करो, और घोषणा कर के फिर हमें इसकी पीछे खबर दो । इस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इसी प्रकारकी घोषणा करके इस की खबर राजाके

ગંધર્વે દ્રૌપદી દેવીનું અપહરણ કર્યું છે કે હરણ કરીને તેને કયાંક મૂકી દીધી છે કે કોઇ કૂવામાં અથવા તો ખાડામાં નાખી દીધી છે

(त जो ण देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्सण पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेइ २ इयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ, तएणं ते कौडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतिं देवीं सद्दावेइ)

તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જે કોઈ પણ માણસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત્ તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે, તેને પાંડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર રાજાને આપી ત્યારપછી જ્યારે પાંડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઇ સ્થાને

ततः खलु स पाण्डू राजा द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा यावत् प्रवृत्तिम् अलभमानः कुन्तीं देवीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! द्वारवतीं नगरीं कृष्णस्य वासुदेवस्य एतमर्थं निवेदय=सुखमसुप्ता द्रौपदी केनाऽपि हृता नीता कूपादौ प्रक्षिप्ता वेति न ज्ञायते इत्येतद्रूप वृत्तान्त कथय, कृष्णः खलु पर वासुदेवो द्रौपद्या मार्गणगवेषण कुर्यात् अन्यथा न ज्ञायते द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा क्षुत्तिं वा उपलभेत ।

पास भेजदी ! इसके बाद जब पाडुराजा ने द्रौपदी देवी की कही पर भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्हों ने कुंति देवी को बुलाया-(सद्दावि०ए०वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा-(गच्छहण तुम देवाणुप्पिया ! बारवइ नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि, कण्हेण पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसण करेज्जा -अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ-और उनसे इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया है। हरण कर उसे कही पहुचा दिया है या किसी कुएँ में या खड्डे मे डाल दिया है। पता नही पडता है। वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही द्रौपदी की मार्गणा गवेषणा करेंगे। नही तो द्रौपदी देवी की श्रुति, क्षुति अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी-यह नही कहा जा सकता है।

શ્રુતિ યાવત્ પ્રવૃત્તિ મેળવી નહિ ત્યારે તેમણે કુંતી દેવીને બોલાવી (સદ્દા વિ० ए० વયાસી) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! बारवइ नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि, कण्हेण पर वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसण करेज्जा अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરો કે સુખથી સુતેલી દ્રૌપદીનુ કોઇએ હરણ કરી લીધુ છે હરણ કરીને તેને કયાક મૂકી દીધી છે અથવા તો કોઇ કૂવામા કે ખાડામા નાખી દીધી છે ન જાણે શું થઇ ગયુ છે ? કૃષ્ણવાસુદેવ મને ખાત્રી છે કે ચોક્કસ દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા ગવેષણા કરશે નહિતર દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ, ક્ષુતિ અથવા પ્રવૃત્તિની જાણ અમને થશે એવી શકયતા જણાતી નથી.

गन्धर्वेण वा हृता वा नीता वा अपसिप्ता वा, तत्=तस्माद् यः खलु हे देवानुप्रिया ! द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा परिकथयति, तस्य खलु पाण्डुः राजा विपुलमर्थसमुदानं दानं ददाति=इति कृत्वा-इत्युक्त्वा घोषणां घोषयत, घोषयित्वा एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणां कृत्वा यावदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति=हे स्वामिन् ! भवदाज्ञया घोषणा कृताऽस्माभिरिति निवेदयन्ति ।

या किसी किंपुरुष ने या किसी महोरग ने या किसी गंधर्व ने द्रौपदी देवी को हरण कर लिया है-या हरणकर उसे कहीं रख दिया है अथवा किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है (त जो ण देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेइ २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतिं देविं सद्दावेइ) तो हे देवानुप्रियो ! जो कोई भी मनुष्य द्रौपदी देवी की शोध करेगा यावत् उसके विशेषवृत्तान्त को लाकर देगा-हम से आकर कहेगा, उसको पाण्डुराजा बहुत अधिक मात्रा में अर्थ संप्रदान-दान-देगा । इस प्रकार की तुम घोसणा करो, और घोषणा कर के फिर हमें इसकी पीछे खबर दो। इस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इसी प्रकारकी घोषणा करके इस की खबर राजाके

ગંધર્વે દ્રૌપદી દેવીનું અપહરણ કર્યું છે કે હરણ કરીને તેને કયાંક મૂકી દીધી છે કે કોઇ કૂવામાં અથવા તો ખાડામાં નાખી દીધી છે

(त जो ण देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्सणं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेइ २ हयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कौडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देविं सद्दावेइ)

તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જે કોઈ પણ માણસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત્ તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે, તેને પાંડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર રાજાને આપી ત્યારપછી જ્યારે પાંડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઇપણ જગ્યાને

देवानुप्रियाः ! यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवानुप्रविशत, अनुप्रविश्य कृष्णं वासुदेव करतलपरिगृहीतदशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं वदत एवं खलु हे स्वामिन् ! युष्माकं पितृष्वसा कुन्ती देवी हस्तिनापुराद् नगराद् इह हव्यमागता युष्माकं दर्शनं काङ्क्षति । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् कथयन्ति=कृष्ण-वासुदेवस्य समीपे कुन्तीकथित वचन निवेदयन्तीत्यर्थः । ततः खलु कृष्णो वासु-

---

वह हाथी से नीचे उतरी और उतर कर के उसने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया- बुलाकर उनसे इस प्रकर कहा-(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवईणयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्ह वासुदेव करयल० एव वयह, एवं खलु स्वामी ! तुब्भ पिउच्छा कोती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया,-तुब्भ दंसण कखइ, तएण ते कोडुबिय पुरिसाण जतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखधवरगए हयगयबारवईए य मज्झ मज्झेण जेणेव कोती देवी-तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में जाओ-वहा जाकर कृष्ण वासुदेव को दोनो हाथोंकी अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख-कर शिर झुकाते हुए नमस्कार करना-बादमे उनसे ऐसा कहना-कि हे स्वामिन् ! आपकी पितृष्वसा-बुआ-कुती देवी हस्तिनापुर नगर से यहा अभी -आई है-वे आपके दर्शन करना चाहती है। उन कोटु-म्बिक पुरुषोने कुती देवी की इस आज्ञा को शिरोधार्य कर श्री कृष्ण

રોકાઇ ત્યા જઇને તે હાથી ઉપરથી નીચે ઉતરી અને ઉતરીને તેણે કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्ह वासुदेव करयल० एव वयह एव खलु सामी ! तुब्भ पिउच्छा कोंती देवी हात्थणाउराओ नयराओ इइ हव्वमागया, तुब्भ दसण करइ, तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव कहेति, तएण कण्हे वासुदेवे कोडुबिय पुरि साण अतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखधवरगए हयगयबारवईए य मज्झ मज्झेण जेणेव कोंती देवी-तेणेव उवागच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા જાઓ, ત્યા જઈને કૃષ્ણવાસુ દેવને બને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને માથુ નીચે નમાવીને નમસ્કાર કરજો ત્યારપછી તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરજો કે હે સ્વામિન્ ! તમારી પિતૃષ્વસા-ફોઈ કુતી દેવી હસ્તિનાપુર નગરથી અત્યારે અહીં આવ્યા છે તેઓ તમને જોવા માગે છે તે કૌટુબિક પુરૂષોએ કુતી દેવીની આ આજ્ઞાને સ્વીકારીને શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવને આ સમાચારની જાણ કરી

तए णं सा कुन्ती देवी पाण्डुणा राजा एवमुक्ता समी यावत् प्रतिशृणोति=पाण्डुनृपस्यार्तां स्वीकरोति, पतिशुत्य-स्वीकृत्य स्नाता कृतबलिकर्मा हस्तिस्कन्धवरगता हस्तिनापुरस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य कुरुजनपदस्य=कुरुनाम्नो देशस्य मध्यमध्येन यत्रैव सौराष्ट्रजनपदः, यत्रैव द्वारवती नगरी, यत्रैवाग्रोद्यानम्=यत्रान्यस्थानादागतानां स्थित्यर्थमाराम उद्यानं तिष्ठति तत्र यदि प्रत्यागन्तुमम्, तत्रोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे

(तए णं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउर मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरुजाणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी) इस के बाद पाण्डुराजा द्वारा इस प्रकार कही गई कुंती देवी ने पाण्डुराजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया-और स्वीकार कर के उसने स्नान किया-काक आदि पक्षियों के लिये अन्नदेने रूप बलि कर्म किया। बाद में वह हाथी के ऊपर बैठकर हस्तिनापुर नगर के बीच से होकर निकली -निकलकर वह कुरुदेश के बीच से होती हुई जहां सौराष्ट्र जनपद था और उसमें भी जहां द्वारावती नगरी थी-वहां पर भी जहां वह अग्रउद्यान था कि जिसमें बाहरसे आये हुए पथिक विश्राम के लिये ठहर जाते थे-वहां गई। वहां जाकर

(तए णं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउर मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता कुरुजाणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યારપછી પાંડુરાજા વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલી કુંતી દેવીએ પાંડુરાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેણે સ્નાન કર્યું કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું ત્યારપછી તે હાથી ઉપર સવાર થઈને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળી નીકળીને તે કુરૂદેશની વચ્ચે થઈને જ્યાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતું અને તેમાં પણ જ્યાં અગ્ર ઉદ્યાન હતું-કે જેમાં બહારથી આવનારા પથિકો વિશ્રામ માટે -તેમાં

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्ती देवी स्नाता कृतबलिर्माण काकादिभ्यः कृतान्नसविभागा जिमितभुक्तोत्तरागता जिमिता-भोजन कृतवती भुक्तोत्तरागता-भुक्तोत्तरकाल-भोजनोत्तरकालम्-आगता, ता तया, यावत् सुखासनवरगता=सुख पूर्वक विशिष्टासनोपविष्टाम् एवमवादीत्-हे पितृष्वसः ! सदिशन्तु किमागमनप्रयोजनम् ?, ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे पुत्र ! हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरस्याकाशतले सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि अपहृता यावद् अवक्षिप्ता वा, तत् तस्माद् इच्छामि खलु हे पुत्र !

चले गये। कुन्ती ने वहा जाकर स्नान किया बलिकर्म किया। बाद में चतुर्विध आहार को जीमकर जब वे सुखपूर्वक बैठ गई तब कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा (सदिसउ ण पिउच्छा ! किमागमणपओयण ? तएण सा कोंती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे जुहिट्ठिलस्स अगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा त इच्छामिण पुत्ता ! दोवईए मग्गणगवेसण करित्तए) हे भुआजी ! कहिये-किस कारण से आप यहा पधारी हैं ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर उस कुतीने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-पुत्र ! सुनो-आने का कारण इस प्रकार है-हस्तिनापुर नगरमें प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सुखके साथ सोये हुए युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी न मालूम किसीने हरण करली है-यावत् किसी कुए मे या खड्डे में डाल दी है।

અદર ગયા કુતીએ ત્યા પહોચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું ત્યાર પછી ચાર જાતના આહારો જમીને જ્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઇને બેસી ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યુ કે—

(सदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयण ? तएण सा कोती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्स्स आगासतले सुइपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवीण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा त इच्छामि ण पुत्ता ! दोवईए मग्गणगवेसण करित्तए)

કહો, શા કારણથી તમે અહી આવ્યા છો ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાભળીને કુતી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર ! સાભળો, હુ એટલા માટે અહીં આવી છુ કે હસ્તિનાપુર નગરમા મહેલની અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનુ હરણ કરી લીધુ છે યાવત કોઇ કૂવામા એ કે ખાડામા નાખી દીધી છે એથી હે પુત્ર ! હ મારુ કહ્યુ કે—દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી જોઈએ

देवः कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके श्रुत्वा निशम्य हस्तिस्कन्धवरगतो हयगजरथ पदातिसपरिवृतो द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव कुन्ती देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य कुन्त्या देव्याः पादग्रहणं करोति, कृत्वा कुन्त्या देव्या सार्धं हस्तिस्कन्धं 'दुरुहइ' दूरोहति-आरोहतीत्यर्थः। दूरुह्य द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकं गृहमनुप्रविशति।

वासुदेव के लिये इस समाचार की खबर करदी कृष्ण वासुदेव कौटुम्बिक पुरुषों के पास से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हाथी पर बैठ, हयगज, रथ एवं पदातियों के साथ २ द्वारावती नगरी के बीच से होते हुए जहां कुंतीदेवी थी वहां आये। (उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीदेवीं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी) वहां आकर वे हाथी पर से नीचे उतरे और उतरकर कुंती देवी के चरणों में नमन किया-चरण स्पर्श करके कुंतीदेवी के साथ २ हाथी पर बैठ गये-बैठ कर के द्वारावती नगरी के ठीक भीतर से होकर जहां अपना गृह-प्रासाद-था वहां आये-वहां आकर प्रासाद के भीतर

દીધી કૃષ્ણવાસુદેવે કૌટુમ્બિક પુરુષોની પાસેથી આ સમાચારો સાભળીને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને, હાથી ઉપર સવાર થઈને, ઘોડા, હાથી, રથ અને પાય દળોની સાથે દ્વારાવતી નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યા કુંતી દેવી હતા ત્યા આવ્યા (उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयं गिहं अणुपविसइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं देवीं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सिंहासणवरगयं एवं वयासी)

ત્યા પહોચીને તેઓ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને કુંતી દેવીને પગે લાગ્યા અને પગે લાગીને કુંતી દેવીની સાથે હાથી ઉપર સવાર થયા. સવાર થઈને જ્યા પોતાના [illegible]

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्ती देवीं स्नाता कृतबलिकर्माणं काकादिभ्यः कृतान्नसंविभागां जिमितभुक्तोत्तरागतां जिमिता-भोजन कृतवती भुक्तोत्तरागता-भुक्तोत्तरकाल-भोजनोत्तरकालम्-आगता, तां तथा, यावत् सुखासनवरगतां=सुख-पूर्वक निविष्टासनोपविष्टाम् एवमवादीत्-हे पितृष्वसः ! संदिशन्तु किमागमनप्रयो-जनम् ?, ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णं वासुदेवमेनमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र ! हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरस्यागाशतले सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि अपहृता यावद् अवक्षिप्ता वा, तत् तस्माद् इच्छामि खलु हे पुत्र !

चले गये। कुंती ने वहा जाकर स्नान किया बलिकर्म किया। बाद में चतुर्विध आहार को जीमकर जब वे सुखपूर्वक बैठ गई तब कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा (संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे जुहिट्ठिलस्स अगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी णं णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा त इच्छामिणं पुत्ता ! दोवईए मग्गणगवेसणं करित्तए) हे भुआजी ! कहिये-किस कारण से आप यहा पधारी हैं ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर उस कुंतीने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-पुत्र ! सुनो-आने का कारण इस प्रकार है-हस्तिनापुर नगरमें प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सुखके साथ सोये हुए युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी न मालूम किसीने हरण करली है-यावत् किसी कुए मे या खड्डे में डाल दी है।

અંદર ગયા કુંતીએ ત્યાં પહોંચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું ત્યાર પછી ચાર જાતના આહારો જમીને જ્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઈને બેસી ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યું કે —

(संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिलस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवीणं णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा त इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए मग्गणगवेसणं करित्तए)

કહો, શા કારણથી તમે અહીં આવ્યા છો ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાંભળીને કુંતી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર ! સાંભળો, હું એટલા માટે અહીં આવી છું કે હસ્તિનાપુર નગરમા મહેલની અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનું હરણ કરી લીધું છે યાવત કોઈ કૂવામા એ કે ખાડામા નાખી દીધી છે એથી હે પુત્ર ! હું ઇચ્છું છું કે —દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી જોઈએ

द्रौपद्या देव्या मार्गणगवेषणं 'करित्तए' कर्तुम इति। तत' खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं 'पिउच्छिं' पितृष्वसारमेवमवादीत्-एवं खलु अहं पितृष्वसः! यदि द्रौपद्या देव्या कुत्रापि श्रुतिं वा श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा लप्स्ये, 'तो ण' तर्हि खलु, अहं पातालाद् भवनाद् वा अर्धभरताद् वा=अर्धभरतक्षेत्रमध्यात् समस्तात्=सर्वतः स्थानाद्, द्रौपदीं देवीं 'साहत्थिं' स्वहस्तेन 'उवणेमि' उपनयामि, इति कृत्वा==इत्युक्त्वा कुन्तीं 'पिउच्छिं' पितृष्वसारं सत्कारयति समानयति, सत्कार्य

इस लिये हे पुत्र! मैं चाहती हूँ कि द्रौपदी की मार्गणा एवं गवेषणा होनी चाहिये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं पिउच्छिं एवं वयासी-ज णवर पिउच्छी दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो ण अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्ध भरहाओ वा, समतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमि त्ति कट्टु कोंती पिउच्छिं सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी कण्हेण वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया) तब कृष्ण वासुदेव ने अपनी भुआ कुंती देवी से इस प्रकार कहा-हे भुआ! मैं और अधिक तो क्या कहूँ-द्रौपदी देवी की यदि मैं कहीं पर भी श्रुतिश्रुति, और प्रवृत्ति पा लेता हूँ तो मैं चाहे वह पाताल में हो, या किसीके भवन में हो, या अर्ध भरत क्षेत्र में से कहीं पर भी क्यों न हो-उस द्रौपदी देवी को सब जगह से अपने हाथों से ला कर दूँगा। इस प्रकार कहकर उन कृष्ण वासुदेव ने अपनी पितृष्वसा कुंती देवी का सत्कार किया।

(तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंत पिउच्छिं एवं वयासी ज णवर पिउच्छा दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो ण अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्ध भरहाओ वा, समतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमित्ति कट्टु कोंती पिउच्छिं सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी कण्हेण वासुदेवेण पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया)

ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના ફોઈ કુંતી દેવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ફોઇ! હું વધારે શું કહું, દ્રૌપદી દેવીની જો હું કોઈ પણ સ્થાને શ્રુતિ, ક્ષુતિ અને પ્રવૃત્તિ મેળવી લઈશ તો ભલે તે પાતાળમા હોય, કોઇના ભવનમા હોય કે અર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા ગમે ત્યા કેમ ન હોય તે દ્રૌપદી દેવીને ગમે ત્યાથી હું લાવી આપને આપીશ તેમ કહુ આ પ્રમાણે કહીને તે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના ફોઈ પિતૃશ્વસા-કુંતીદેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર ને

समान्य यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णेन वासुदेवेन प्रतिविसर्जिता सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगिता । सू०२७॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवइ एवं जहा-पडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा तएण से कण्हे वासुदेवे अन्नया अतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोवडए जाव णिसीइत्ता कण्ह वासुदेवं कुसलोदंत पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एवं वयासी-तुम णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामा जाव अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिं वि दोवइए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा ?, तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेव एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढभरहवास अवरकंकारायहाणिं गए, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रन्नो भवणसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था तएण कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुब्भ चेव णं देवाणुप्पिया ! एव पुव्वकम्म, तएणं से कच्छुल्ल-

नारए कण्हेण वासुदेवेणं एव वुत्ते समाणे उप्पयणि विज्जं

सन्मान किया, सत्कार सन्मान कर यावत् उन्हें प्रति विसर्जित कर दिया । इसके बाद वे कुंती देवी वहा से प्रतिविसर्जित होकर जिस दिशा से प्रकट हुई थी-उसी दिशा की ओर चली गई ॥ सू०२७॥

કરીને તેમને વિદાય કર્યા, ત્યારપછી તે કુંતીદેવી ત્યાથી વિદાય મેળવીને જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે જ તરફ પાછા રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૨૭ ॥

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥ सूत्र २८ ॥

आवाहेइ आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमड्ढे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवइए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवालेमाणा चिट्ठंतु, तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह, ते वि –तालेंति, तएणं तेसिं सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया गयगया जाव रहसंपरिवुडा जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेणं बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलित्ता खंध [illegible] करेइ

करित्ता पोसहसाल अणुपविसइ अणुपविसित्ता सुट्ठिय देवं मणसि करेमाणे२ चिट्ठइ, तएण कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणसि सुट्ठिओ आगओ, भणदेवाणुप्पिया ! ज मए कायव्व, तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी जाव पउमनाभस्स भवणसि साहरिया तण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पंचहि पंडवेहि सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्ण अह अमरकंकारायहाणी दोवईए कूवं गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-किण्ह देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएणं देवेण दोवई जाव संहरिया तहा चेव दोवइं देविं धायइसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुर साहरामि, उदाहु पउमणाभ राय सपुरबलवाहण लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?, तएण कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी-मा ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण मग्गं वियराहि, सयमेव ण अह दोवईए कूव गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव होउ, पचहिं पडवेहिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ, तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीसेण पडिविसज्जेइ-पडिविसज्जित्ता पचहि पंडवेहि सद्धि अप्पछट्ठे छहि रहेहि लवणसमुद्द

आवाहेइ आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमड्ढे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवइए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए सम पडिवालेमाणा चिट्ठंतु, तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह, ते वि –तालेंति, तएणं तीसे सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसा हस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेणं चारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलित्ता [illegible] करेइ

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि त्तिकट्टु दारुयं सारहि एव वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्तिकट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एव वयासी--एवं खलु अह सामी ! तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिय ! द्वारवतीं नगरीम् , 'एव यथा पाण्डुस्तथा घोषणां घोषयत '-यथा पाण्डू राजा हस्तिनापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—:तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दाविता) बुलाकर (एव वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया बारवइ) हे देवानुप्रियों ! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एव जहा पडु तहा घोसण घोसावेंति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) वहा पांडु राजाकी तरह घोषणा करो-अर्थात् पाडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी-इसी प्रकार की घोषणा करने के

' तएण से कण्हे वासुदेवे ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ વાસુદેવે (कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दाविचा) બોલાવીને (एव वयासी) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया बारवई) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારવતી નગરીમા જાઓ (एव जहा पडु तहा घोसण घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) ત્યા પાડુ રાજાની જેમ જ ઘોષણા કરો એટલે કે પાડુ રાજાએ જેમ દ્રૌપદીની શોધ કરવા માટેની દ્રવ્ય આપવાની ઘોષણા હસ્તિનાપુર નગરમા કરાવી હતી તે પ્રમાણે જ ઘોષણા કરવા

मज्झमज्झेणं वीइवयइ वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका राय हाणी जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवा गच्छित्ता रहं ठवेइ ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि२ पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चाडिक्किए एव वयासी- हं भो पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया दुरतपंतलक्खणा हीणपुन्नचा उद्दसा सिरीहिरिधी परिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि एस ण कण्हे वासुदेवे पंचहि पडवेहि अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता अमरकका रायहाणि अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एव वयासी--एस ण सामी ! मम विणयपडिवत्ती इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमइ अणुक्कमित्ता कोंतग्गेणं लेह पणामइ पणामित्ता जाव कूव हव्वमागए, तएणं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते त्तिवलि भिउडि निडाले साहट्टु एव वयासी -णो अप्पिणामि णं अह देवाणुप्पिया !

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि त्तिकट्टु दारुय सारहि एव वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्तिकट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एव वयासी--एवं खलु अहं सामी ! तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिय ! द्वारवतीं नगरीम् , 'एव यथा पाण्डुस्तथा घोषणां घोषयत '-यथा पाण्डू राजा हस्तिनापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—:तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता) बुलाकर (एव वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया वारवइ) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एव जहा पडु तहा घोसण घोसावेंति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) वहा पांडु राजाकी तरह घोषणा करो-अर्थात् पाडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी-इसी प्रकार की घोषणा करने के

' तएण से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ વાસુદેવે (कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता) બોલાવીને (एव वयासी) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया वारवई) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારવતી નગરીમા જાઓ (एव जहा पडु तहा घोसण घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) ત્યા પાડુ રાજાની જેમ જ ઘોષણા કરો એટલે કે પાડુ રાજાએ જેમ દ્રૌપદીની શોધ કરવા માટેની દ્રવ્ય આપવાની ઘોષણા હસ્તિનાપુર નગરમા કરાવી હતી તે પ્રમાણે જ ઘોષણા કરવા

कृत्वा 'जाव पच्चप्पिणंति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति-घोषणां कृत्वा-कृष्णस्य वासुदेवस्यान्तिके ते कौटुम्बिकपुरुषा निवेदयन्ति-द्वारवत्यां नगर्यां सर्वत्र घोषणाकृता ऽस्माभिरिति। 'पडुस्स जहा' पाण्डोर्यथा यथा पाण्डो र्नृपस्य वर्णकस्तथाऽत्रापि बोध्यः। यथा पाण्डूराज्ञा द्रौपद्याः श्रुतिं यावन् मार्गणं न लब्धवान्, तथा कृष्णवासुदेवोऽपि द्रौपद्याः श्रुत्यादिकं न प्राप्तवानिति भावः। ततः खलु कृष्णो वासुदेवः अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये 'अंतो' अन्तः-स्वभावाद अन्तःपुरगतो ऽन्तःपुरे यावद् विहरति। 'इम च ण' अस्मिन् समये च खलु 'कच्छुल्लए' कच्छुलो नारदो यावद् समवसृतः= गगनतलादवतीर्य कृष्णभवनं समागत यावत् निषद्य=उपविश्य गगनतलादवतरन् कृष्णभवनं समागतः, यावत् निषद्य=उपविश्य

लिये कृष्ण वासुदेव ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को आदेश दिया कि वे भी द्वारावती में इसी तरह की घोषणा करें। अपने राजा की आज्ञानुसार उन्हों ने द्वारावती में घोषणा करदी और इस की खबर पीछे कृष्ण वासुदेव को कर दी। यहां अवशिष्ट वर्णन पांडु राजा के जैसा वर्णन है वैसा ही जानना चाहिये। अर्थात् घोषणा कराने पर भी द्रौपदी की किसी भी प्रकार की खबर वगैरह का कोई भी समाचार पाडु राजा को नहीं मिला वैसा कृष्ण वासुदेव को भी नहीं मिला (तएणं) तब (से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोसरए) वे कृष्ण वासुदेव एक दिन की बात है कि अपने अन्त पुर के प्रासाद के भीतर अन्त पुर की स्त्रियों के साथ बैठे हुए थे कि इसी समय वे कच्छुल्ल नाम के नारद आकाश मार्ग से

માટે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને આજ્ઞા કરી કે તેઓ પણ દ્વારાવતી નગરીમા આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરે પોતાના રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે તે લોકોએ દ્વારવતી નગરીમા ઘોષણા કરી અને ઘોષણાનુ કામ થઈ ગયુ છે તેની ખબર પણ કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે પહોચાડી દીધી અહી અવશિષ્ટ વર્ણન પાડુ રાજાનુ જેવુ છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવુ જોઇએ એટલે કે ઘોષણા કર્યા પછી પણ પાડુ રાજાને દ્રૌપદી દેવીની કોઈ પણ જાતની ખબર કે સમાચાર મળ્યા નહિ તે પ્રમાણે કૃષ્ણ વાસુદેવને પણ કોઈ પણ સમાચારો ઘોષણા બાદ મળ્યા નહિ (तएणं) ત્યારે (से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोसरए) એક દિવસની વાત છે કે તે કૃષ્ણ વાસુદેવ પોતાના મહેલની અંદર રણવાસની સ્ત્રીઓની સાથે બેઠા હતા તે વખતે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ મા[illegible]ર્યા

कृष्ण वासुदेवं कुशलोदन्त=कुशलवार्ता पृच्छति, तत. खलु स कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्ल नारदमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्व खलु बहूनि ग्रामाकरादीनि परिभ्राम्यसि, तत्र बहूनि गृहाणि यावदनुप्रविशसि तत् तस्मादस्ति 'आइ' इति वाक्यालङ्कारे ते त्वया यदि कुत्रचिद् द्रौपद्यादेव्या श्रुतिर्वा यावद् उपलब्धा=ज्ञाता ? तर्हि कथय' इति भावः । ततः खलु स कच्छुल्लनारद कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रियाः अहमन्यदाकदाचिद् धातकीषण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे=पूर्वदिग्भागव र्तिनि, दक्षिणार्धभरतवर्षे-अमरकङ्कानाम्नी राजधानी गत । तत्र खलु मया

उतरकर वहा आये-(जाव णिसी इत्ता कण्ह वासुदेव कुसलोदत पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुम ण देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणुपविससि त अत्थि आइ ते कहिं वि दोवईए देवीए सुतीवा जाव उवलद्धा तएण से कच्छुल्ले कण्ह वासुदेव एव वयासी) यावत् बैठकर उन्हो ने कृष्ण वासुदेव से कुशल वृत्तान्त पूछा -कृष्णवासुदेव ने तब कच्छुल्ल नारद से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम आकर आदिस्थानों में परिभ्रमण करते रहते हो-अनेक गृहादिको में आते जाते रहते हो तो कहो-कही पर क्या तुम्हें द्रौपदी देवी की श्रुति उपलब्ध हुई है-उसकी तुम्हें किसी प्रकार की कोई खबर मिली है-उसका किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह उपलब्ध हुआ है ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर कच्छुल्ल नारद ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइ

આવ્યા (जाव णिसीइत्ता कण्ह वासुदेव कुसलोदत पुच्छइ, तएण से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी, तुम ण देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणुपविससि त अत्थि आइ ते कहि वि दोवईए देवीए सुतीं वा जाव उवलद्धा-तएण से कच्छुल्ले कण्ह वासुदेव एव वयासी) त्या आवीने બેઠા અને બેસીને તેમણે કૃષ્ણ વાસુદેવને કુશળ વાર્તા પૂછી વાસુદેવે ત્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ઘણા ગ્રામ, આકર વગેરે સ્થાનોમા પરિ ભ્રમણ કરતા રહેા છેા, ઘણા ઘરેા વગેરેમા આવજા કરતા રહેા છેા તેા કહેા, કોઇ પણ સ્થાને તમને દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ મળી છે-તેના તમને કોઇ પણ જાતના સમાચારેા મળ્યા છે, તેનુ કોઈ પણ જાતનુ ચિહ્ન તમને મળ્યુ છે ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાભળીને કચ્છુલ્લ નારદે તે કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે —

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइ धायईसडे दीवे पुरत्थिमद्ध

पद्मनाभस्य राज्ञो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी स्वपूर्वं चाप्यगमत्, अथ भावः-काचिद्द्रौपदीसदृशी दृष्टा किन्तु सा मया न सम्यग् ज्ञाता नापि सम्यक्परिचिता, इति । ततः खलु कृष्णो वासुदेव. कच्छुल्लनारदमेव मवादीत्-हे देवानुप्रियाः युष्माभिरेव खलु 'इदम्' इदृश 'पुव्वकम्म' पूर्वकर्म -पूर्वकृत कर्म, युष्माभिरेवेदृश कर्म पूर्वं कृतमित्यर्थ । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्त सन् उत्पतनीं विद्यामावाहयति। आवाह्य यस्याः एतद्दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो दृत शब्दयति=

धायईसडे दीवे पुरत्थिमद्ध दाहिणड्ढभरहवास अमरकका रायहाणि गए तत्थ ण मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा णाचि होत्था, तएण कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुब्भ चेव ण देवाणुप्पिया ! एव पुव्वकम्म-तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए) सुनो मैं तुम्हें बताता हूँ -हे देवाणुप्रिय ! मैं किसी एक समय द्वितीय धातकी खंड द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकका नाम की राजधानी में गया हुआ था वहा मैंने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सब से पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दाहिणड्ढभरहवास अमरकका रायहाणि गए, तत्थण मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी, जारिसिया दिट्ठपुव्वा णाचि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुब्भ चेवण देवाणुप्पिया ! एव पुव्व कम्म-तएण से कच्छुल्ल नारए कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसि पाउब्भुए तामेव दिसि पडिगए)

સાભળો, તમને હુ બધી વિગત બતાવું છુ હે દેવાનુપ્રિય ! કોઇ એક વખતે હુ ધાતકી ષડ્દ્વીપમા, પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા, અમરકકા નામે રાજધાનીમા ગયેા હતેા ત્યા મે પદ્મનાભ રાજાના ભવનમા દ્રૌપદી દેવી જેવી નારી જોઈ હતી પણ હુ તેને સારી પેઠે ઓળખી શકયેા નહિ પરિચિત થઇ શકયેા નારદની આ વાત સાભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે કહ્યું નહિ ! સૌ પહેલા તમે જ આ કામ કર્યું છે ત્યારે નારદની આ વાત સાભળીને

आह्वयति, शब्दयित्वा-एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुर पाण्डोराज्ञ एतमर्थं निवेदय-एव खलु हे देवानुप्रिय ! धातकीपण्डे द्वीपे 'पुरत्थिमद्धे' पौरस्त्यार्धे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरकङ्काया राजधान्या पद्मनाभभवने द्रौपद्या देव्याः मवृत्तिरुपलब्धा, तत्=तस्मात् गच्छन्तु पञ्च पाण्डवाश्चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृता 'पुरत्थिमवेयालीए' 'पौरस्त्यवेलायां-पूर्वदिग्वर्तिनि लवणसमुद्रे मा 'पडिवालेमाणा' मतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा स्तिष्ठन्तु, ततस्त दनन्तर स दूतो यावत् पाण्डोरग्रे गत्वा कृष्णवासुदेवोक्त वचन भणति=कथयति='पडिवालेमाणा चिट्ठइ' अय भावः-'धातकीपण्डे द्वीपे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरकङ्काया राजधान्या पद्मनाभभवने द्रौपद्या' प्रवृत्तिरुपलब्धा, तस्मात् पञ्च पाण्ड-

---

इस प्रकार कहे जाने पर अपनी उत्पत्तनीविद्याका स्मरण किया। स्मरण करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की ओर चले गये। (तएण से कण्हे वासुदेवे दूय सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छण तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर पडुरस रण्णो एयमट्ठ निवेदेहि) इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने दूत को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहां पाडु राजा से ऐसा कहना-(एव खलु देवाणुप्पिया ! धायइसडे दीवे पुरित्थिमद्धे अमरकङ्काए रायहाणीए पउमणाभभवणसि दोवईए देवीए पउत्तीं उवलद्धा-त गच्छतु पच पडवा चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडा पुरित्थिमवेयालीए मम पडिवालेमाणा चिट्ठतु) हे देवानुप्रिय ! वह वक्तव्य विषय यह है-धातकी षंड नाम के द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र मे वर्तमान अमरकका नाम की राजधानी मे पद्मनाभ राजा

વિધાનુ સ્મરણ કર્યું સ્મરણ કરીને પછી તેઓ જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે જ દિશા તરફ પાછા રવાના થઇ ગયા (तएण से कण्हे वासुदेवे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर पडुरस रण्णो एयमट्ठ निवेदेहि) ત્યારપછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવે દૂતને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હસ્તિનાપુર નગરમા જાઓ-અને ત્યા પાડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહેા કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया! धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धे अमरकङ्काए राय हाणीए पउमणाभा भवणसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा-त गच्छतु पच पडवा चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवाले माणा चिट्ठतु) હે દેવાનુપ્રિય ! ધાતકી ષડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રના વિદ્યમાન અમરકકા નામની રાજધાનીમા પદ્મનાભ રાજાના ભવ

पद्मनाभस्य राज्ञो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी रूपपूर्वा यावत्पश्यन्, अयं भावः-काचिद्द्रौपदीसदृशी दृष्टा किन्तु सा मया न सम्यग् ज्ञाता नापि सम्यक्परिचिता, इति । तत खलु कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः युष्माभिरेव खलु 'इदम्' एतत् 'पुव्वकम्म' पूर्वकर्म-पूर्वकृतं कर्म, युष्मादृशैरेतत् कर्म पूर्वं कृतमित्यर्थः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः सन् उत्पतनीं विद्यामावाहयति। आवाह्य यस्याः एवदिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो दूतं शब्दयति-

धायईसण्डे दीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणद्धभरहवासे अमरकंका रायहाणिं गए तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा णवि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्वकम्म-तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) सुनो मैं तुम्हें बताता हूँ-हे देवानुप्रिय ! मैं किसी एक समय द्वितीय धातकी खंड द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकंका नाम की राजधानी में गया हुआ था वहां मैंने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सब से पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दाहिणद्धभरहवास अमरकंका रायहाणिं गए, तत्थणं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी, जारिसिया दिट्ठपुव्वा णवि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेवणं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्वं कम्म-तएणं से कच्छुल्ल नारए कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

સાભળો, તમને હુ બધી વિગત બતાવું છુ હે દેવાનુપ્રિય ! કોઇ એક વખતે હુ ધાતકી ષડ્દ્વીપમા, પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા, અમરકકા નામે રાજધાનીમા ગયેા હતેા ત્યા મે પદ્મનાભ રાજાના ભવનમા દ્રૌપદી દેવી જેવી એક નારી જોઈ હતી પણ હુ તેને સારી પેઠે ઓળખી શકયેા નહિ અને ન તેનાથી પરિચિત થઇ શકયેા નારદની આ વાત સાભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! સૌ પહેલા તમે જ આ કામ કર્યું છે ત્યારપછી તે કચ્છુલ્લનારદે કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાભળીને ગ

शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया सानाहिकी सैनिकानां सज्जीभवनार्थं नादो यस्यास्ता भेरीं ताडयत तेऽपि ताडयन्ति, ततः खलु तस्या सानाहिक्या भेर्याः शब्द श्रुत्वा समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हा यावत् ' छप्पण्ण बलवयसाहस्सीओ ' षट् पञ्चाशद् बलवत्साहस्र्यः=षट्पञ्चाशत्सहस्रप्रमिता बलवन्त इत्यर्थः ' सन्नद्धबद्ध-जाव गाहियाउहपहरणा ' अत्र यावत्करणेनैव द्रष्टव्यम्-सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा उत्पीडितशरासनपट्टकाः पिनद्धग्रैवेयकबद्धाविद्धविमल वरचिह्नपटाः गृहीतायुधप्रहरणा इति । व्याख्याऽस्मिन्नेवा ऽयने पूर्वमुक्ता अप्येकिकाः=केचिद् हयगताः केचिद् गजगता यावद् वागुरापरिक्षिप्ताः=मनुष्यवृन्दैः परिवृता', यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य करतल० यावद् जयेन विजयेन वर्धयन्ति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवो हस्तिस्कन्धवरगतः सको

उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम सुधर्मा सभा में जाओ वहाँ जाकर तुम सानाहिकी भेरी बजाओ-। कौटुम्बिक पुरुषोंने ऐसा ही किया सुधर्मा सभामें जाकर उस सानाहिकी भेरीको बजाया-। इस सानाहिकी भेरीकी गर्जनाको सुनकर समुद्रविजय आदि दश दशार्ह यावत् ५६,हजार प्रमित बलवीर पुरुष सन्नद्ध बद्धवर्मितकवच होकर, यावत् आयुध प्रहरणों को लेकर तैयार सुसज्जित हो गये। यहाँ यावत् शब्द से उत्पीडितशरासन पट्टकाः, " पिनद्धाग्रैवेयकबद्धविद्धविमलवरचिह्नपट्टाः " इस पाठ का संग्रह हुआ है। इन शब्दो की व्याख्या इसी अ ययन मे पहिले की जा चुकी है। इनमें कितनेक घोडों पर, कितनेक हाथियो पर, बैठकर अन्य मनुष्यो के समूह से परिवृत्त हो जहा वह सुधर्मा सभा और जहा वे कृष्णवासुदेव थे वहाँ आये। (उवागच्छित्ता करयल जाव

કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સુધર્મા સભામા જાઓ, ત્યા જઈને તમે સાનાહિકી ભેરી વગાડો, તે કૌટુબિક પુરુષોએ પણ તે પ્રમાણે જ આજ્ઞાનુ પાલન કર્યું સુધર્મા સભામા જઈને તેઓએ સાનાહિકી ભેરી વગાડી સાનાહિકી ભેરીનો અવાજ સાભળીને સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ ૫૬ હજાર પ્રમિત બળવીર પુરૂષો કવચો વગેરેથી સુસજ્જ થઈને યાવત્ આયુધ પ્રહરણોને લઈને તૈયાર થઇ ગયા અહીં યાવત્ શબ્દથી " उत्पीडितशरासनपट्टका , पिनद्ध ग्रैवेयक बद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टा " આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે આ શબ્દોની વ્યાખ્યા આ અધ્યયનમા જ પહેલા કરવામા આવી છે આમા કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર બેસીને તેમજ કેટલાક માણસોના સમૂહોથી પરિવૃત થઈને જ્યા તે સુધર્મા, સભા અને જ્યા કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યા આવ્યા

यावत्तुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सम्परिवृता पौरस्त्यमेलागं मां प्रतिपालयन्तिष्ठन्तु' इति । एवं सुतमुखात् कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं श्रुत्वा तेऽपि=पञ्च पाण्डवा यावत् तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति,

के भवन में द्रौपदी देवी की खबर मिली है-इसलिये पाचो पाडव चतुरगिणी सेना के साथ युक्त होकर लवण समुद्र की पूर्व दिग्भाग वर्तिनी वेला पर जाकर वहां मेरी प्रतीक्षा करें। (तएण से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह, ते वि जाव चिट्ठति, तएण से कण्हे वासुदेवे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुम्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहिय भेरिं ताडेह ते वि ताडेति, तएणं तीसे सण्णाहियाए भेरिए सद्द सोच्चा विजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पण्ण बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छह) इस प्रकार अपने राजा कृष्णवासुदेव की आज्ञा लेकर वह दूत हस्तिनापुर गया वहाँ जाकर उसने इस समाचार को पाडुराजा से कह दिया। वे पाचों पाडव इस समाचार को दूत के मुख से सुनकर चतुरगिणी सेना के साथ लवण समुद्र के पूर्व दिग्भागवर्ती तट पर जाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा में ठहर गये। इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर

નમા દ્રૌપદી દેવીના વાવડ મળ્યા છે તો હવે પાચે પાડવો ચતુરગિણી સેનાની સાથે પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર પહોચીને મારી પ્રતીક્ષા કરે

(तएण से दूए जाव भणइ, पडिवाले माणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठति, तएण से कण्हे वासुदेवे कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहिय भेरिं ताडेह ते वि ताडेति, तएण से सण्णाहियाए भेरीए सद्द सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पण्ण बल वय साहस्सीओ सन्नद्धबद्धजाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે પોતાના રાજા કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા મેળવીને તે દૂત હસ્તિનાપુર તરફ રવાના થયો ત્યા પહોચીને તેણે પાડુ રાજાને બધા સમાચારો કહી સભળાવ્યા પાચે પાડવો દૂતના મુખથી આ સમાચાર સાભળીને પોતાની ચતુરગિણી સેના સાથે ત્યાથી પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર પહોચીને ત્યા કૃષ્ણ વાસુદેવની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઇ ગયા ત્યારપછી કૃષ્ણ વાસુદેવે કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમ

एकतः एकस्मिन् स्थाने मिलति, मिलित्वा स्कन्धावारनिवेश=सैनिकानामावास करोति कृत्वा पौषधशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य " सुट्ठिय देव " सुस्थित-सुस्थितनामान देव लवणसमुद्राधिष्ठित मनसि कुर्वन्=स्मरन् तिष्ठति, तत' खलु कृष्णस्य वासुदेवस्याष्टमभक्ते परिणममाणे सुस्थितो देव आगतः, आगत्य वदति-हे देवानुप्रियाः ! भणन्तु कथयन्तु यन्मया कर्तव्यमिति ततः खलु स कृष्णो वासुदेव सुस्थितदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभस्य भवने सहता, तत्=तस्मात् खलु त्व हे देवानुप्रिय ! मम पञ्चभिः पाण्डवै. सार्ध ' अप्पउट्ठस्स ' आत्मपृष्ठस्य-आत्मा-अह पृष्ठो यत्र तस्य समुदायस्य-अस्माकं पृष्ठगामित्यर्थः, पृष्ठगा स्थाना लवणसमुद्रे मार्ग वितर=देहि, येनाहममरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ' क्व ' प्रत्यानयनकर्तु गच्छामि ।

वहा पहुँचकर वे पांच पांडवों के साथ एक स्थान पर समिलित हुए। समिलित होकर उन्होंने अपनी सेना को ठहरने का स्थान नियत किया-स्थान नियतकर के फिर वे पौषधशाला में प्रविष्ट हो गये वहां प्रविष्ट होकर उन्हो ने लवण समुद्र के अधिपति सुस्थित देव का स्मरण किया-। इसके बाद जब कृष्णवासुदेव का अष्टमभक्त समाप्त हो रहा था-तब वह सुस्थित देव उनके पास आया-और कहने लगा-हे देवानुप्रिय ! कहिये-मेरे लायक क्या काम है ? (तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी, जाव पउमनाभस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवाणुप्पिया मम पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्ण अह अमरकंकारायहाणी दोवईए देवीए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं

હતો ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓ પાચે પાડવોની સાથે એક સ્થાને એકત્ર થયા એકત્ર થઈને તેમણે પોતાના સૈન્યના પડાવનુ સ્થાન નક્કી કર્યું સ્થાન નક્કી કરીને તેઓ પૌષધશાળામા પ્રવિષ્ટ થયા ત્યા જઈને તેઓએ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવનુ સ્મરણ કર્યું ત્યારબાદ જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવનો અષ્ટમ ભક્ત પૂરો થઈ રહ્યો હતો, ત્યારે તે સુસ્થિત દેવ તેમની પાસે આવ્યો અને કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! બોલો, મારા લાયક શું કામ છે ?

(तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवईदेवी, जाव पउमनाभस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवाणुप्पिया मम पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियरेहि, जण्ण अह अमरकका रायहाणीं दोवईए कूव गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह

रण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण धार्यमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः, हयगजरथप्रवरि सपरिवृतो महाभटचटकरप्रकरेण द्वारवत्या नगर्या मध्यमेन निर्गच्छति, यत्रैव पौरस्त्यवेला तत्रोपागच्छति उपागत्य पञ्चभिः पाण्डवैः सह 'एगयओ'

बद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय महया भडचडगरपहकरेणं बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारणिवेसं करेइ, करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ मणं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं) वहां आकर उन सबने कृष्णवासुदेव को दोनों हाथ जोड़कर बड़े विनय के साथ नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा बधाई दी। इसके बाद वे कृष्णवासुदेव हाथी पर सवार हुए। सवार होते ही छत्र धारियों ने उन पर कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र ताना, चामर ढोरने वालों ने उनपर श्वेत चामर ढोरना प्रारंभ करदिया। इस प्रकार हय, गज, रथ, एवं पैदलसेना से घिरे हुए वे कृष्णवासुदेव महाभटों के समूह के साथ २ द्वारावती नगरी के बीच से होकर निकले, निकलकर जहां वह लवणसमुद्र की पूर्व दिग्भागवर्तिनी वेला थी वहां पहुँचे।

(उवागच्छित्ता करयल जाव बद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय महया भडचडगरपहकरेणं बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावार णिवेसं करेइ, करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ मणदेवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं)

ત્યાં પહોંચીને તે બધાએ બંને હાથ જોડીને બહુ જ વિનમ્રતાથી નમસ્કાર કરતા જયવિજય શબ્દોથી તેમને વધામણી આપી ત્યારપછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવ હાથી ઉપર સવાર થયા સવાર થતા જ છત્રધારીઓએ તેમની ઉપર કોરંટ પુષ્પોની માળાથી શોભતુ છત્ર તાણ્યુ તેમજ ચામર ઢોળનારાઓએ ચામર ઢોળવાની શરૂઆત કરી આ પ્રમાણે ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળથી પરિવૃત્ત થયેલા તે કૃષ્ણ–વાસુદેવ મહાભટોના સમૂહની સાથે સાથે દ્વારાવતી નગરીની વચ્ચે થઈને પસાર થયા અને જ્યા તે લવણ

भवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय ! यावत् सहर, त्व खलु हे देवानुप्रिय ! लवणसमुद्रे आत्मपष्ठस्य पण्णा रथानां मार्गं ' वियराहि ' वितर=देहि, स्वयमेव खल्वह द्रौपद्या देव्या ' क्व ' मत्यानयनकर्तुं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्म नाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकता हूँ (तएण कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस प्रकार कहा-(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियराहि सयमेव ण अह दोवईए देवि क्व गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाणं लवणसमुद्दे मग्ग वियरइ तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर, सैनिक एव वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो । मैं

તમારી આજ્ઞા હોય તો નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત પદ્મનાભ રાજાને લવણસમુદ્રમા ડુબાડી શકુ તેમ છુ (तएण कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સ્વસ્તિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियराहि सयमेव ण अह दोवईए देवि क्व गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियरइ, तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ પ્રમાણે કરવાની તસ્દી લો નહિ કોટવે કે પદ્મનાભના ભવનમાથી દ્રૌપદી દેવીનુ હરણ કરો નહિ તેમજ પદ્મનાભ રાજાને નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત લવણ સમુદ્રમા ફેકો પણ નહિ તમે તો હે દેવાનુપ્રિય ! ફક્ત અમારા છએ રથો માટે લવણ સમુદ્રમા માર્ગ આપો

तत खलु स सुस्थितो देवः कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्—हे देवानुप्रिय ! किं खलु यथैव पद्मनाभस्य राज्ञः पूर्वसगतिकेन देवेन द्रौपदी यावत् महृता, तथैव द्रौपदीं देवीं धातकीषण्डाद् द्वीपाद् भारताद् यावद् हस्तिनापुरं संहरामि ? 'उदाहु' उताहो ! =अथवा, कथय, पद्मनाभ राजान सपुरबलवाहनं=नगरसैनिकवाहन सहित लवणसमुद्रे मार्गयामि ? ततः खलु कृष्णो वासुदेवः सुस्थित देवम् एव

वासुदेव एव वयासी किण्ह देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसगइएण देवेण दोवई जाव साहरिया, तहा चेव दोवई देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायमपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?) तब कृष्णवासुदेव ने उस सुस्थित देव से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! सुनो-द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभ के भवन में हरण कर रखी गई है इसलिये हे देवानुप्रिय ! तुम आत्मपक्ष मेरे पाच पाडवो के साथ उन रथों को लवण समुद्र में मार्ग प्रदान करो। अर्थात् पाच पाडवों के और छटे मेरे इस प्रकार हमारे उन रथों को जाने के लिये रास्ता दो-कि जिससे मैं अभ रकका राजधानी में द्रौपदीदेवी को वापिस ले आने के लिये जा सकू। तब सुस्थित देव ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-हे देवानु प्रिय ! जिस प्रकार पद्मनाभ राजा के पूर्व सगतिक देवने द्रौपदीदेवी का यावत् हरण किया है, उसी तरह मैं भी द्रौपदी देवी को धातकी खड द्वीप के भरत क्षेत्र से यावत् हस्तिनापुर में हरणकर ला सकता हूँ-

વાસુદેવ एव વયાસી किण्ह देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्व सगइएण देवेण दोवई जाव साहरिया, तहा चेव दोवई देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभ राय सपुरबल वाहण लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ પ્રિય ! સાભળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના ભવનમા હરણ કરાઇને રાખ વામા આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે 'આત્મપક્ષ' મારા તેમજ પાચે પાડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમા થઇને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો એટલે કે પાચે પાડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા માટે રસ્તો આપો જેથી હુ દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકકા રાજધાનીમા જઈ શકુ ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનુ યાવત્ હરણ કર્યુ છે, તેમજ હુ પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખડદ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમા હરણ કરીને લાવી શકુ ને અને લે

भवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय ! यावत् सहर, त्व खलु हे देवानुप्रिय ! लवणसमुद्रे आत्मपष्ठस्य पण्णा रथानां मार्गं ' वियराहि ' वितर=देहि, स्वयमेव खल्वह द्रौपद्या देव्या ' क्रन ' मत्यानयनकर्तुं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्म नाभ राजा को लवण समुद्र में छुपा दे सकता हूँ (तएण कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस प्रकार कहा-(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियराहि सयमेव ण अह दोवईए कण्ह वासुदेव एव वयासी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाणं लवणसमुद्दे मग्ग वियरइ तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर, सैनिक एव वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो । मैं

તમારી આજ્ઞા હોય તો નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત પદ્મનાભ રાજાને લવણસમુદ્રમા ફુમાડી શકુ તેમ છુ (तएण कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સ્વસ્તિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियराहि सयमेव ण अह दोवईए कण्ह वासुदेव एव वयामी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियरइ, तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ પ્રમાણે કરવાની તસ્દી લો નહિ ચોટલે કે પદ્મનાભના ભવનમાથી દ્રૌપદી દેવીનુ હરણ કરો નહિ તેમજ પદ્મનાભ રાજાને નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત લવણ સમુદ્રમા ફેકો પણ નહિ તમે તો હે દેવાનુપ્રિય ! [illegible]રા છએ રથો માટે લવણ સમુદ્રમા માર્ગ આપો

तत खलु स सुस्थितो देव कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्—ह देवानुप्रिय । किं खलु यथैव पद्मनाभस्य राज्ञः पूर्वसगतिकेन देवेन द्रौपदी यावत् हृता, तथैव द्रौपदीं देवीं धातकीषण्डाद् द्वीपाद् भारताद् यावद् हस्तिनापुरं संहरामि । 'उदाहु' उताहो ! =अथवा, कथम्, पद्मनाभ राजान सपुरबलवाहन=नगरसैनिकवाहन सहित लवणसमुद्रे मार्गयामि ? तत खलु कृष्णो वासुदेवः सुस्थित देवम् एव

वासुदेव एव वयासी किण्ह देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसगइएण देवेण दोवई जाव सहरिया, तहा चेव दोवई देविं धायईसडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुर साहरामि, उदाहु पउमणाभ राय सपुरबल वाहण लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના ભવનમા હરણ કરાઇને રાખવામા આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે 'આત્મપક્ષ' મારા તેમજ પાચે પાડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમા થઇને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો એટલે કે પાચે પાડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા માટે રસ્તો આપો જેથી હુ દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકકા રાજધાનીમા જઈ શકુ ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનુ યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હુ પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખડદ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમા હરણ કરીને લાવી શકુ છે

प्रविश्य पद्मनाभस्य राज्ञो वामेन पादेन ' पायपीढ ' पादपीठम् सिंहासनसलग्न-सोपानम् आक्रम्य कुन्ताग्रेण लेख प्रतिका ' पणामेहि ' अर्पय=देहि अर्पयित्वा ' तिवलिय ' त्रिवलिकां रेखात्रययुक्ता ' भिउडिं ' भ्रूकुटिं-' णिड़ाले ' ललाटे ' साहट्टु ' संहृत्य-उन्नीय ' आसुरुत्ते ' आशुरुप्तः=शीघ्र क्रोधाविष्टः ' रुट्ठ ' रुप्टः ' कुद्धे ' क्रुद्धः ' कुविए ' कुपितः चडिक्किए ' चाण्डिक्यितः-रोपयुक्तः, एवमवादीत्-ह भो ! पद्मनाभ ! ' अप्पत्थियपत्थिया ' अप्रार्थितप्रार्थित !-मरणवाञ्छक ! ' दुरंतपंतलक्खण ! ' दुरन्तप्रान्तलक्षण ! [पूर्वं व्याख्यातमेतत्,

पायपीढ अक्कमित्ता कुन्तग्गेण लेह पणामेहि, तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चडिक्किए एव वयासी ह भो पउमणाहा अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरिहिरि धी परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि) रथ को रोककर वहां स्थापित कर-दारुक सारथि को बुलाया बुलाकर के उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय तुम जाओ-अमरकका राजधानी में जाओ वहां जाकर पद्मनाभ राजाके पादपीठको वाम पादसे आक्रमित कर, कुन्त (भाला)के अग्रभाग से उसे पत्रिका दो देकर के अपनी भ्रुकुटी को भालपर चढाकर, इकदम गुस्से में आकर, रुष्ट, कुपित एव क्रुद्ध होकर क्रोध के आवेश से तम तमाते हुए तुम उससे ऐसा कहों-अरे ओ पद्मनाभ ! अप्रार्थित प्रार्थित ! मरणवाञ्छक-! दुरंतप्रान्त लक्षण ! मालुम होता है

पाएण पायपीढ अक्कमित्ता कुन्तग्गेण लेह पणामेहि, तिवलिय भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चडिक्किए एवं वयासी ह भो पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि हिरिधी परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि)

રથને ઊભો રાખીને, ત્યા જ રથને ભૂકીને દારૂક સારથિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમરકકા રાજધાનીમા જાઓ અને ત્યા જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડાબા પગથી આક્રમિત કરીને કુતના અગ્ર ભાગથી તેને પત્રિકા આપો પત્રિકા આપીને તમે પોતાની ભ્રમરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રૂષ્ટ, કુપિત અને ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમા આવીને તેને આ પ્રમાણે કહો કે અરે ઓ પદ્મનાભ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણ વાછક ! દુરંત પ્રાત લક્ષણ ! (નીચ

देवं कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं भवतु इति, ततोऽसौ पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धम् आत्मषष्ठस्य पण्णां रथानां लवणसमुद्रे मार्गं विवरति सति स्वयमेव कृष्णो वासुदेवश्चतुरङ्गिणीं सेनां प्रतिविसर्जयति, प्रतिविसर्ज्य पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठं षड्भीरथैर्लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीइवयइ' व्यतिव्रज्य यत्रैवामरकङ्का राजधानी, यत्रैवामरकङ्काया अग्रोद्यानं तत्रोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा दारुकं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! अमरकङ्कां राजधानीमनुप्रविश, अनु

स्वयं ही द्रौपदी देवी को वहां से वापिस ले आऊँगा। अथवा मैं स्वयं ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊँगा तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-अच्छा ऐसा ही हो-इस प्रकार कह कर उसने आत्म षष्ठ के छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग विवरित कर दिया। तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरंगिणी सेना को वहां से वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पांच पांडवों के साथ छहों रथों को-१ एक अपने रथको और पांच पाडवोंके रथोंको-लेकर लवणसमुद्रके भीतरसे होकर चलने लगे। चलते २ वे जहां अमरकका राजधानी थी-और उसमें भी जहां वह अग्रोद्यान था वहां पहुँचे। (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ) वहां पहुँच कर उन्होंने अपने रथ को रोक दिया-(ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि२, पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं

ત્યાં જઇને હું જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને ત્યાંથી પાછી લઈ આવીશ એટલે કે હું જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે જઇશ ત્યારે તે સુસ્થિત દેવે કૃષ્ણ-વાસુદેવને કહ્યું કે સારૂ, આમ જ કરો આ પ્રમાણે કહીને તેણે આત્મષષ્ઠના છએ રથોને લવણ સમુદ્રમા રસ્તો આપ્યો ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે પોતાની ચતુરંગિણી સેનાને ત્યાંથી પાછી વળાવી દીધી અને પાછી વળાવીને તેઓ પાચે પાડવોની સાથે છએ રથોને-એક પોતાના રથને અને પાચ પાડવોના રથોને-લઇને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થવા લાગ્યા આમ પસાર થતા તેઓ જ્યા અમરકકા રાજધાની અને તેમા પણ જ્યા તે અગ્રોદ્યાન હતુ ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ) ત્યા પહોચીને તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો.

(ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अमरकका रायहाणीं अणुपविसाहि २ वामेणं

प्रविश्य पद्मनाभस्य राज्ञो वामेन पादेन ' पायपीढ ' पादपीठम् सिंहासनसलग्न-सोपानम् आक्रम्य कुन्ताग्रेण लेख प्रतिका ' पणामेहि ' अर्पय=देहि अर्पयित्वा ' तिवलिय ' त्रिवलिकां रेखात्रययुक्ता ' भिउडिं ' भ्रूकुटिं-' णिडाले ' ललाटे ' साहट्टु ' सहत्य-उन्नीय ' आसुरुत्ते ' आशुरुप्तः=शीघ्र क्रोधाविष्टः ' रुट्ठ ' रुष्टः ' कुद्धे ' क्रुद्धः ' कुविए ' कुपितः चडिक्किए ' चाण्डिक्यितः-रोषयुक्तः, एवमवादीत्-ह भो ! पद्मनाभ ! ' अप्पत्थियपत्थिया ' अप्रार्थितप्रार्थित !-मरणवाञ्छक ! ' दुरतपतलक्खण ! ' दुरन्तप्रान्तलक्षण ! ' पूर्वं व्याख्यातमेतत्,

पायपीढ अक्कमित्ता कुन्तग्गेण लेह पणामेहि, तिवलिय भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चडिक्किए एव वयासी ह भो पउमणाहा अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरिहिरि धी परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि) रथ को रोककर वहां स्थापित कर-दारुक सारथि को बुलाया बुलाकर के उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय तुम जाओ-अमरकका राजधानी में जाओ वहां जाकर पद्मनाभ राजाके पादपीठको वाम पादसे आक्रमित कर, कुन्त (भाला)के अग्रभाग से उसे पत्रिका दो देकर के अपनी भ्रुकुटी को भालपर चढा कर, इकदम गुस्से में आकर, रुष्ट, कुपित एव क्रुद्ध होकर क्रोध के आवेश से तम तमाते हुए तुम उससे ऐसा कहो-अरे ओ पद्मनाभ ! अप्रार्थित प्रार्थित ! मरणवाञ्छक-! दुरतप्रान्त लक्षण ! मालुम होता है

पाएण पायपीढ अक्कमित्ता कुन्तग्गेण लेह पणामेहि, तिवलिय भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चडिक्किए एवं वयासी ह भो पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि हिरिधी परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुमं ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि)

રથને ઊભો રાખીને, ત્યા જ રથને મૂકીને દારુક સારથિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમરકકા રાજધાનીમા જાઓ અને ત્યા જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડાબા પગથી આક્રમિત કરીને કુતના અગ્ર ભાગથી તેને પત્રિકા આપો પત્રિકા આપીને તમે પોતાની ભ્રમરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રૂષ્ટ, કુપિત અને ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમા આવીને તેને આ પ્રમાણે કહો કે અરે ઓ પદ્મનાભ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણ વાછક ! દુરત પ્રાત લક્ષણ ! (નીચ

देव कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एव भवतु इति, ततोऽसौ पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धम् आत्मपष्ठस्य पण्णा रथाना त्रवणसमुद्रे मार्गं विवरति तत स्वक्त स कृष्णो वासु देवश्चतुरङ्गिणीं सेना प्रतिनिवर्तयति, प्रतिनिवर्त्य पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्म पष्ठ पड्भीरथैर्लवणसमुद्र मध्यमध्येन 'पीइवगइ' -गतिव्यति-गच्छति. व्यतिव्रज्य यत्रैवामरकङ्का राजधानी, यत्रैवामरकङ्काया अग्रोद्यान तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथ स्थापयति, स्थापयित्वा दारुक सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एव मवादीत्—गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिय ! अमरकङ्कारा राजधानीमनुप्रविश, अनु

स्वय ही द्रौपदी देवी को वहा से वापिस ले आऊँगा । अथवा मैं स्वय ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊँगा तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-अच्छा जैसा ही हो-इस प्रकार कह कर उसने आत्म पष्ठ के छहों रथो को लवणसमुद्र में मार्ग विवरित कर दिया । तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरगिणी सेना को वहा से वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पाच पाडवों के साथ छहो रथों को-१ एक अपने रथको और पांच पाडवोंके रथोंको-लेकर लवणसमुद्रके भीतरसे होकर चलने लगे । चलते २ वे जहा अमरकका राजधानी थी-और उसमें भी जहा वह अग्रोद्यान था वहा पहुँचे । (उवागच्छित्ता रह ठवेइ) वहा पहुँच कर उन्होने अपने रथ को रोक दिया-(ठवित्ता दारुय सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! अमरककारायहाणी अणुपविसाहि२, पउमणाभस्स रण्णो वामेण पासण

ત્યાં જઇને હુ જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને ત્યાથી પાછી લઈ આવીશ એટલે કે હુ જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે જઇશ ત્યારે તે સુસ્થિત દેવે કૃષ્ણ-વાસુદેવને કહ્યુ કે સારૂ, આમ જ કરો આ પ્રમાણે કહીને તેણે આત્મષષ્ઠના છએ રથોને લવણ સમુદ્રમા રસ્તો આપ્યો ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે પોતાની ચતુરગિણી સેનાને ત્યાથી પાછી વળાવી દીધી અને પાછી વળાવીને તેઓ પાચે પાડવોની સાથે છએ રથોને-એક પોતાના રથને અને પાચ પાડવોના રથોને-લઇને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થવા લાગ્યા આમ પસાર થતા તેઓ જ્યા અમરકકા રાજધાની અને તેમા પણ જ્યા તે અગ્રોદ્યાન હતુ ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता रह ठवेइ) ત્યા પહોચીને તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો

(ठवित्ता दारुय सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी, गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! अमरकका रायहाणीं अणुपविसाहि २ , वामेण

ततः खलु स दारुक सारथिः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः सन् हृष्टतुष्टो यावत् प्रतिशृणोति 'तथाऽस्तु' इति कृत्वाऽऽज्ञां स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य=अमरकङ्कराजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावद् वर्धयति-जयेन विजयेन चाभिनन्दयति । वर्धयित्वा-अभिनन्द्य एवमवादीत्-एषा खलु हे स्वामिन् ! मम विनयप्रतिपत्तिः इयमन्या मम स्वामिनो विनयप्रतिपत्तिः, "समु-

समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, अमरकका रायहाणिं अणु पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता, करयल जाव वद्धावेत्ता एव वयासी-एसण सामी मम विण यपडिवित्ती, इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्ति त्ति कट्टु अासुरुत्ते नाम पाएण पायपीढ अणुक्कमइ) पाच पाडवों के साथ आत्म पष्ठ होकर द्रौपदी देवी को लेने के लिये अभी अभी आये हुए है। इस प्रकार कृष्णवासुदेव के द्वारा कहे गये उस दारुक सारथि ने हृष्ट तुष्ट होकर कृष्णवासुदेव की आज्ञा स्वीकार करली। स्वीकार कर के फिर वह अमरकका राजधानी में प्रवेश किया वहा प्रवेश कर वह वहा पहुँचा जहा पद्मनाभ राजा थे। उनके समीप जाकर उस ने पहिले उन्हें दोनों हाथों की अजलि बना कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-जय विजय शब्दों से उन्हें बँधाया-बाद में उसने इस प्रकार कहना प्रारभ किया-हे स्वामिन् ! यह तो मेरी विनय प्रतिपत्ति है-दूत

सारही कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता, अमरकका रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता,करयल जाव वद्धावेत्ता एव वयासी-एस ण सामी मम विणय-पडिवित्ती, इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्ति त्ति कट्टु आसुरुत्ते नामपाएण पायपीढ अणुक्कमइ)

પછી પાડવોની સાથે આત્મપષ્ઠ થઈને દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવી ગયા છે આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવ વડે કહેવામા આવેલા વચનો સાભળીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈને તે દારુક સારથીએ તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી સ્વીકારીને તે અમરકકા રાજધાનીમા પ્રવિષ્ટ થયો પ્રવિષ્ટ થઈને તે જ્યા પદ્મ નાભ રાજા હતા તેમની પાસે જઈને જો પહેલા તેણે બને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યો અને જય વિજય શબ્દોથી રાજાને વધામણી આપી ત્યારપછી તેણે આ પ્રમાણે કહેવાની શરૂઆત કરી કે હે સ્વામી ! આ તો મારી વિનય પ્રતિપત્તિ છે દૂતની ફરજ બજાવતા મે

' हीणपुण्णचाउद्दसा ! ' हीनपुण्यचातुर्दशिकः - अल्पपुण्यचातुर्दशिकजन्मा, चतुर्दशीजातो हि भाग्यवान् भवति । तथा-' सिरी हिरि धी परिवज्जिया ! ' श्री ह्री धी परिवर्जिता! लक्ष्मी लज्जा बुद्धि रहित !, अथ न वेत्सि, किं खलु त्वं न जानासि, कृष्णस्य वासुदेवस्य भगिनीं द्रौपदीं देवीमिह ' इह आनीयमाणे ' ह्रियमाणयत् , 'त' तत्-तस्मात् ' एयमवि ' एतामपि=आनीतामपि आङ् पूर्वकाद् हृञ्गतौ ' इत्यस्मात्क्त प्रत्ययः, ' अदय ' अद्या खलु ' जुद्ध सज्जे ' युद्ध सज्जः-युद्धाय सज्ज.=सन्नद्धः सन् ' निग्गच्छाहि ' निर्गच्छ-बहिर्निर्गम कुरु एष खलु कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवै. सह ' अणट्ठे ' आत्मषष्ठ =आत्मा षष्ठो यत्र स समूहे, द्रौपदी देव्या. ' हव ' प्रत्यानयन कर्तुं ह्रियमाण ।

तू अलब्ध पुण्य चातुर्दशिक जन्म वाला है-तू-चतुर्दशी में उत्पन्न हुआ नहीं है-क्यों कि चतुर्दशी के दिन उत्पन्न हुआ व्यक्ति भाग्यशाली होता है किन्तु तू ऐसा नहीं है अर्थात् अभागा है तू श्री ह्री, बुद्धि से रहित है। याद रख-या तो आज तू नहीं है या मैं नहीं हूं तुझे यह खयाल नहीं है-कि यह द्रौपदी देवी कृष्ण वासुदेव की बहिन है जिसे तूने यहां हरण करवा कर मगवाई है। अत. यदि अपनी कुशल चाहता है, तो तू इस हरण करवा कर अपने यहां मगवाई गई द्रौपदी देवी को कृष्ण वासुदेव के पास जाकर पीछे वापिस पहुँचा दे। नहीं तो युद्ध के लिये सज्जित होकर घर से बाहिर निकल आ। (एसण कण्हे वासुदेवे) ये कृष्ण वासुदेव (पचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूव ह्व्वमागए, तएण से दारुए सारही कण्हे ण वासुदेवे ण एव वुत्ते

વિચારો તેમજ નીચ લક્ષણો યુક્ત) અમને એમ લાગે છે કે તું અલબ્ધ પુણ્ય ચાતુર્દશિક જન્મવાળો છે, એટલે કે તુ ચૌદશને દિવસે જન્મ્યો નથી કેમકે ચૌદશને દિવસે ઉત્પન્ન થનારી વ્યક્તિ ભાગ્યશાળી હોય છે તુ શ્રી, હ્રી અને બુદ્ધિ વગરનો છે બરોબર સાભળી લે કે આજે કા તો તું નહિ કે મા હું નહિ તને એટલી પણ ખબર નથી કે આ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ-વાસુદેવની બહેન છે-કે જેને તે હરણ કરાવીને અહીં મગાવી છે હવે જો તું પોતાનુ ભલુ ઈચ્છતો હોય તો તુ આ હરણ કરાવીને પોતાને ત્યા રાખી રાખેલી દ્રોપદી દેવીને કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે જઈને પાછી સોપી દે નહિતર યુદ્ધના માટે તૈયાર થઈને બહાર મેદાનમા આવી જા (एस ण कण्हे वासुदेवे) આ કૃષ્ણવાસુદેવ

(पचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूव ह्व्व ` दारुए

दारुक सारथिमेवमवादीत्—
केवल भोः ! ' रायसत्थेसु ' राजशास्त्रेषु-राजनीतिषु दूतः ' अवज्झे ' अवध्यः= न हन्तव्यः, इत्युक्तमस्ति तस्मात् त्वा मुञ्चामि इति कृत्वा=इत्युक्त्वा त दूतम् असत्कार्य, असम्मान्य अपद्वारेण ' णिच्छुभावेइ ' निक्षोभयति-निष्कासयति, तत खलु स दारुकः सारथिः पद्मनाभेनासत्कार्य यावत्-' णिच्छूढे ' निक्षोभितः-निःसारितः समाणे ' सन्, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्त मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा कृष्ण यावद् एवमवादीत्-

जुद्धसज्जो णिगच्छामि,त्ति कट्टु दारुय सारय एव वयासी-केवल भो रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ) तब वह पद्मनाभ जब दारुक सारथि ने इस प्रकार कहा तो इकदम क्रोधित होकर त्रिवलि युक्त भ्रकुटि को माथे पर चढा कर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिय ! मैं द्रौपदी को कृष्णवासुदेव के लिये अर्पित नही करता हू-पीछी नही देता हू—। इसके लिये मैं अभी स्वय ही युद्ध करने को तैयार हूँ-। इस प्रकार कहकर फिर उसने उस दारुक सारथि से ऐसा कहा अरे ! राजनीति के शास्त्रों में दूत अवध्य कहा गया है-इस लिये तुझे छोड़ देता हूँ । इस तरह कहकर उसने दूत को असत्कृत और असमानित कर पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया ! (तएण दारुए सारही पउमणाभेण असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा

कण्हस्स वासुदेवस्स दोवई, एसण अह सयमेव जुद्धसज्जो णिगच्छामि त्ति कट्टु दारुय सारहिं एव वयासी-केवल भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ)

દારુક સારથિના આ પ્રમાણે વચનો સાભળીને પદ્મનાભ એકદમ ક્રોધમા લાલચોળ થઈ ગયો અને ભ્રમ્મરો ચઢાવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! હુ કૃષ્ણ-વાસુદેવને દ્રૌપદી કોઇપણ સ્થિતિમા સોપવા તૈયાર નથી એના માટે હુ અત્યારે પણ યુદ્ધ કરવા તૈયાર છુ આ પ્રમાણે કહીને તેણે દારુક સારથીને કહ્યુ કે અરે ! રાજનીતિના શાસ્ત્રોમા દૂત અવધ્ય કહેવામા આવ્યો છે એથી તને જતો કરૂ છુ આ પ્રમાણે કહીને તેણે દૂતને અસત્કૃત અને અસમાનિત કરીને પાછલા બારણેથી બહાર કઢાવી મૂક્યો

(तएण दारुए सारही पउमणाभेण असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० कण्ह जाव एव

टाणत्ति " स्वमुखानाप्ति.-स्वमुखेन कथिता आज्ञप्तिः-आज्ञा ' इति कृत्वा 'आसुरुत्ते ' आशुरुप्तः शीघ्र क्रोधाविष्ट', यानपादेन पादपीठ ' अणुक्कमइ ' अनुक्रामति, अनुक्रम्य कुन्ताग्रेण लेख-पत्रिका ' पणामइ ' अर्पयति । अर्पयित्वा यावत् ' कूव ' मत्यानयन कृते व्यापारितः । तत खलु स पद्मनाभो दारुकेण सारथिना एवमुक्त' सन् अणुरुप्त'=शीघ्रः क्रोधाक्रान्त, त्रिवलिकां रेखात्रययुक्तां भृकुटिं-' निडाले ' ललाटे-भालप्रदेशे 'साहट्टु' सहृत्य-उत्पाद्य, एवमवादीत्-नो अर्पयामि खलु अहं हे देवानुप्रिय कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीम्, एष खलु अहं स्वयमेव युद्धसज्जो निर्गच्छामि=भवामि एव युद्धाय यदि मां रोचते इतिकृत्वा

के कर्तव्य अनुसार मैंने यह आपको नमस्कार किया है जय विजय आदि शब्दों द्वारा बधाई दी है-परन्तु मेरे स्वामीकी उनके मुखसे आपके लिये जो आज्ञा दी गई है वह दूसरी है-और वह इस प्रकार है-इस प्रकार अपने मुख से कहकर वह शीघ्र क्रोध से भर गया, और वामपाद से उसके पादपीठ पर चढ गया। (अवक्कमित्ता) चढकर फिर (कोतग्गेण लेहपणामइ) फिर उसने उसके लिये कुन्त के अग्रभाग से पत्रिका अर्पित की। (पणामित्ता जाव कूव हव्वमागए) पत्रिका अर्पित करके यावत् कृष्णवासुदेव पाचो पाडवों के साथ यहा द्रौपदी देवी को वापिस लेने के लिये हव्व-अभी अभी-आये है यह सब समाचार उसे सुना दिया। (तएण से पउमणाभे दारुएण सारहिणा एववुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एव वयासी णो अप्पिणामि, ण अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं, एस ण अहं सयमेव

વિનયોપચાર માટે નમસ્કાર કર્યો છે તેમજ જય વિજય વિજય શબ્દો દ્વારા તમને વધામણી આપી છે પરતુ મારા સ્વામીએ તેમના મુખથી તમારે માટે જે કઈ આજ્ઞા આપી છે તે કઇક બીજી જ છે અને તે આ પ્રમાણે છે કે- દ્રુત આમ કહીને એકદમ ક્રોધમા લાલચોળ થઈ ગયો અને ડાબા પગથી તેના પાદાસન ઉપર ચઢી ગયો (અવક્કમિત્તા) ચઢીને (કોતગ્ગેણ લેહપણામઇ) તેણે રાજાને કુત (ભાલા) ના અગ્રભાગથી પત્રિકા આપી (પણામિત્તા જાવ કૂવ હવ્વમાગએ) પત્રિકા આપીને યાવત કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાચે પાડવોની સાથે અહી દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવ્યા છે આ જાતના બધા સમાચારો તેને કહી સભળાવ્યા

(तएण से पउमणाभे दारुयेण सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एव वयासी-णो अप्पिणामि

एव वयासी- ह भो दारगा ! किन्न तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ?, तएण ते पंच पंडवा कण्ह वासुदेव एवं वयासी--अम्हे णं सामी ! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छंइ उवागच्छित्ता एव वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था, तएण से पउमनाभे राया तं पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्धधूयपडागा जाव दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेण रन्ना हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव आधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पच्च पडवे एवं वयासी--कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा ?, तएण ते पच्च पडवा कण्हं वासुदेव एव वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे तं पच्च पडवे एवं वयासी- जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण सद्धि सपलग्ग ताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहिय पवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं

एव खलु अह हे स्वामिन् ! युष्माकं वचनेन यावत् ' णिच्छुभावेइ ' निष्कासयति= पद्मनाभः क्रोधाविष्टः सन् द्रौपदीं न दास्यामीत्युक्त्वा दूतो न हन्तव्य इति कृत्वा माममत्कार्यं, असमान्यापद्वारेण निःसारयति स्म ' इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्–तएणं से पउमणाभे बलवाउय सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, तयाणंतरं च णं से बलवाउए छेयायरियउव देसमइविकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ, तएणं से पउमनाहे सन्नद्ध० अभिसेयं दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं रायाण एज्जमाण पासइ पासित्ता त पंच पडवे

गच्छइ उवागच्छित्ता करयल० कण्ह जाव एव वयासी–एव खलु अह सामी ! तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ) इस प्रकार जब वह दारुक सारथि पद्मनाभ के द्वारा असत्कृत यावत् होकर बाहिर निकला दिया, तब वह वहा से चलकर जहाँ कृष्णवासुदेव थे वहा आया । वहा आकर उसने दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा–हे स्वामिन् ? मैंने पद्मनाभ राजा से आपके वचन जैसे ही कहे वैसे ही उसने "क्रोध में आकर" मैं नहीं दूगा दूतमारने योग्य नहीं होता है–इत्यादि कहकर मुझे असत्कृत एव असमानित कर अपने यहाँ से पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया है ॥ सूत्र २८ ॥

वयासी–एव खलु अह सामी ! तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ)

આ પ્રમાણે જ્યારે તે દારુક સારથિ પદ્મનાભ રાજા વડે અસત્કૃત યાવત અસમાનિત થઇને બહાર કઢાવી મૂકાયો ત્યારે તે ત્યાથી બહાર આવીને જ્યા કૃષ્ણ–વાસુદેવ હતા ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે બને હાથોથી અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને કૃષ્ણ–વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામી ! પદ્મ નાભ રાજાને મે જ્યારે તમારો સદેશ કહી સભળાવ્યો ત્યારે સાભળતાની સાથે જ તે ક્રોધમા ભરાઇને "હુ દ્રૌપદી દેવી પછી આપીશ નહિ, યાવત દૂત અવધ્ય હોય છે" વગેરે વચનોથી અસત્કૃત તેમજ અસમાનિત કરીને મને તેણે પોતાના ભવનના પાછલા બારણેથી બહાર કઢાવી મૂક્યો

एवं वयासी--ह भो दारगा ! किन्न तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ?, तएण ते पंच पंडवा कण्ह वासुदेवं एवं वयासी--अम्हे णं सामी ! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तएण से पउमनाभे राया त पंच पडवे खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्धूयपडागा जाव दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेण रन्ना हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव आधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा ?, तएण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे तं पच पडवे एव वयासी--जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण सद्धि सपलग्गं ताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहियपवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं

दुरुहइ दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेय गोखीरहारधवल तणलोलियसिंदुवारकुंदेंदुम ल्लिगासं नियगबलस्स हरिसजणणं रिउमेण्णविणासकरं पञ्च जण्णं सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपुरियं करेइ, तएणं तस्स पउमणाहस्स तेणं सखसद्देणं बलइभाए हयजाव पडिसेहिए, तएणं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो धणुं पूरेइ पूरित्ता धणुसद्दं करेइ, तएण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेण धणुसद्देण हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभे राया तिभाग बलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्तिकट्टु सिग्घं तुरिय जेणेव अमरकका तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता अमरकक रायहाणिं अणुपविसइ अणुप विसित्ता दाराइ पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रह ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमु ग्घाएण समोहणइ, एगं महं णरसीहरूवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया महया सद्देणं पाददद्दरयं करेइ, तएण से कण्हेण वासुदेवेण महया महया सद्देणं पाददद्दरएण कएण समाणेणं अमरकका रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणपल्हत्थियपव-रभवणासिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तएण से पउमणाभे राया अमरकक रायहाणिं सभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ ---सा

दोवईदेवी पउमनाभ रायं एव वयासी – किण्णं तुम देवाणुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे मम इहं हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइं रयणाइं गहाय मम पुरओ काउं कण्ह वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तएणं से पउमनाभे, दोवइए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ उवित्ता करयल० एवं वयासी–दिट्ठाण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! जाव खमंतु णं जाव णाह भुज्जो२ एवं करणयाएत्तिकट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थिं उवणेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी–ह भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया४ किण्ण तुम ण जाणसि मम भगिणि दोवइदेवी इह हव्वमाणमाणे त एवमवि गए णत्थि ते ममाहि तो इयाणि भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ गिण्हित्ता रहं दुरूहेइ दुरूहित्ता जेणेव पच पडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचण्हं पडवाणं दोवइ देविं साहत्थिं उवणेइ, तएण से कण्हे पचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण जेणेव जबूद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २१ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स पद्मनाभः ' बलवाउय ' बलव्यापृत-सैन्यनायक शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव-शीघ्रमेव भो देवानुप्रिय ! ' आभिसेक्क ' आभिषेक्यं प्रधान हस्तिरत्नं ' पडिकप्पेह ' प्रतिकल्पय सुसज्जितं कुरु, तदनन्तरं च स बलव्यापृत खलु " नेयायरियउवदेसमइ विकप्पणाविगप्पेहिं " नैकाचार्योपदेशमतिविकल्पनाविकल्पैः-तत्र नैकः-निपुणः, आचार्य'-कलाशिक्षक, तस्योपदेशाद् या मति 'स्तिस्तस्या विकल्पना-विचारणा, तज्जनितो विकल्प.-विशिष्ट रचनाशक्तिर्येषां तैः, ' जाव उवणेइ ' यावद् उपत-

-तएण से पउमणाभे इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पउमणाभे) उन पद्मनाभ राजा ने (बलवाउय सद्दावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सद्दावित्ता) और बुलाकर फिर उनसे (एव वयासी) इस प्रकार कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो। (तयाणतर च ण से बलवाउए नेयायरिय उवदेसमइ विकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुण कला शिक्षक के उपदेश से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो शोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया। जब उन्हो ने उस हस्तिरत्न को चर्म कीले निर्मल वेष से शीघ्र परिवस्त्रित-करदिया। वस्त्राच्छादन द्वारा

तएण से पउमणाभे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से पउमणाभे) તે પદ્મનાભ રાજાએ (बलवाउय सद्दावेइ) પોતાના સૈન્ય નાયકને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता) અને બોલાવીને તેને (एव वयासी) આ પ્રમાણે કહ્યું કે (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयण पडिकप्पेह) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સત્વરે પ્રધાન હસ્તિરત્નને સુસજ્જ કરો (तयाणतर च ण से बलवाउए नेयायरियउवदेसमइविकप्पणा विगप्पेहि निउणेहिं जाव उवणेइ) ત્યારપછી તે સૈન્ય નાયકે નિપુણ કલાશિક્ષકના ઉપદેશથી જેમણે વિશિષ્ટ રચના માટે બુદ્ધિ તેમજ કલ્પના શક્તિ મેળવી છે, તેમજ શૃંગાર કલામા જેઓ અતીવ ચતુર છે તેવા માણસો વડે હસ્તિરત્નને સુસજ્જિત કરાવ્યો જ્યારે સત્વરે તેમણે તે હસ્તિરત્નને ચમકતા નિર્મળ વેષથી પરિવસ્ત્રિત કરી દીધો-વસ્ત્રાચ્છાદન વડે આચ્છાદિત કરીને સુયો

यति-अत्र यावच्छब्देन नोह्यम्-सुनिउणेहिं नरेहिं हत्थिरयण परिकप्पेउ, उज्जलनेवत्थ हव्वपरिवत्तिय सुसज्ज इत्यादि परिकप्पित्ता ' इति सुनिपुणै.=शोभाकरणचतुरैः, नरैर्हस्तिरत्न परिकल्पयति-शोभयति किं भूतं हस्तिरत्न-उज्ज्वलनेपथ्यहव्यपरिवस्तित उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेषेण शोभन परिवस्तितः वस्त्राच्छादनसुशोभितः, तथा-सुसज्ज-घण्टाभरणादिभि. समलङ्कृत, एव परिकल्प्य सबल्व्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति। तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धबद्धवर्मितकवच - आभिषेक्य हस्तिरत्न दूरोहति-आरोहति दूरुह्य हयगजरथपदातिपरिवृत यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव प्रायारयद् गमनाय।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभ राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त पश्यति। दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत-ह भो! दारकाः भो वत्सा!

आच्छादित कर सुशोभित करदिया-अर्थात्-झूल वगैरह डालकर उसे बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अलकृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ राजा के पास पहुँचा (तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ, दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, बद्ध, वर्मित कवच वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ हो गया और आरूढ होकर हय, गज, रथ, एव पैदल सैन्य को साथ लेकर जहा कृष्णवासुदेव थे उस ओर चल दिया। जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पाच पाडवो से ऐसा कहा-(ह भो

ભિત કરી દીધો એટલે કે ઝૂલ વગેરે નાખીને બહુજ સરસ રીતે સુસજ્જિત કરી દીધો તેમજ ઘટ, આભરણો વગેરેથી તેને અલકૃત કરી દીધો ત્યારે તે સૈન્ય નાયક તે હસ્તિરત્નને લઈને પદ્મનાભ રાજાની પાસે ગયો.

(तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કવચ તેમજ બીજા શસ્ત્રોથી સજ્જ થઈને તે પ્રધાન હસ્તિરત્ન ઉપર સવાર થઈ ગયો. અને સવાર થઈને ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળ સેનાને સાથે લઈને કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા તે તરફ રવાના થયો. કૃષ્ણ-વાસુદેવે જ્યારે પદ્મનાભ રાજાને આવતો જોયો ત્યારે તેને જોઈને પાંચ

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततः खलु स पद्मनाभः ' बलवाउयं ' बलव्याकृत-सैन्यनायकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—खिप्रमेव-शीघ्रमेव भो देवानुप्रिय ! ' आभिसेक्कं ' आभिषेक्यं प्रधानं हस्तिरत्नं ' पडिकप्पेह ' प्रतिकल्पय सुसज्जितं कुरु, तदनन्तरं च स बलव्याकृतः खलु " छेयायरियउवदेसमइविकप्पणाविगप्पेहिं " छेकाचार्योपदेशमतिविकल्पनाविकल्पैः-तत्र छेकः-निपुणः, आचार्यः-कलाशिक्षकः, तस्योपदेशाद् या मतिः 'बुद्धिस्तस्या विकल्पना-विचारणा, तज्जनितो विकल्पः-विशिष्टरचनाशक्तिर्येषां ते, ' जाव उवणेइ ' यावद् उपनयति

-तएणं से पउमणाभे इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) उसके बाद (से पउमणाभे) उस पद्मनाभ राजा ने (बलवाउयं सद्दावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सद्दावित्ता) और बुलाकर फिर उससे (एवं वयासी) इस प्रकार कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो। (तयाणंतरं च णं से बलवाउए छेयायरिय उवदेसमइ विकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुण कला शिक्षक के उपदेश से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो शोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया। जब उन्हो ने उस हस्तिरत्न को चमकीले निर्मल वेष से शीघ्र परिवस्त्रित-करदिया। वस्त्राच्छादन द्वारा

तएणं से पउमणाभे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (से पउमणाभे) તે પદ્મનાભ રાજાએ (बलवाउयं सद्दावेइ) પોતાના સૈન્ય નાયકને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता) અને બોલાવીને તેને (एवं वयासी) આ પ્રમાણે કહ્યું કે (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સત્વરે પ્રધાન હસ્તિરત્નને સુસજ્જ કરો (तयाणंतरं च णं से बलवाउए छेयायरियउवदेसमइविकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ) ત્યારપછી તે સૈન્ય નાયકે નિપુણ કલાશિક્ષકના ઉપદેશથી જેમણે વિશિષ્ટ રચના માટે બુદ્ધિ તેમજ કલ્પના શક્તિ મેળવી છે, તેમજ શૃંગાર કલામા જેઓ અતીવ ચતુર છે તેવા માણસો વડે હસ્તિરત્નને સુસજ્જિત કરાવ્યો જ્યારે સત્વરે તેમણે તે હસ્તિરત્નને ચમકતા નિર્મળ વેષથી પરિવસ્ત્રિત કરી દીધો-વસ્ત્રાચ્છાદન વડે આચ્છાદિત [illegible] સુધી

यति-अत्र यावच्छब्देनैव योध्यम्-सुनिउणेहिं नरेहिं हत्थिरयण परिकप्पेह, उज्जलनेवत्थ हव्वपरिवत्थिय सुसज्ज इत्यादि परिकप्पित्ता ' इति सुनिपुणै.=शोभाकरणचतुरैः, नरैर्हस्तिरत्न परिकल्पयति-शोभयति किं भूत हस्तिरत्न-उज्ज्वलनेपथ्यहव्यपरिवस्त्रित उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेषेण शोभन परिवस्त्रितः वस्त्राच्छादनसुशोभितः, तथा-सुसज्ज-घण्टाभरणादिभि. समलङ्कृत, एव परिकल्प्य सबल्व्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति। तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धबद्धवर्मितकवच - आभिषेक्य हस्तिरत्न दूरोहति-आरोहति दूरुह्य हयगजरथपदातिपरिवृत यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव पायारयद् गमनाय।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभं राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त पश्यति। दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत-हं भो! दारकाः भो वत्सा!

आच्छादित कर सुशोभित करदिया-अर्थात्-झूल वगैरह डालकर उसे बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अलकृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ राजा के पास पहुँचा (तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ, दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, बद्ध, वर्मित कवच वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ हो गया और आरूढ होकर हय, गज, रथ, एव पैदल सैन्य को साथ लेकर जहां कृष्णवासुदेव थे उस ओर चल दिया। जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पाच पाडवो से ऐसा कहा-(ह भो

ભિત કરી દીધો એટલે કે ઝૂલ વગેરે નાખીને બહુજ સરસ રીતે સુસજ્જિત કરી દીધો તેમજ ઘટ, આભરણો વગેરેથી તેને અલકૃત કરી દીધો ત્યારે તે સૈન્ય નાયક તે હસ્તિરત્નને લઈને પદ્મનાભ રાજાની પાસે ગયો

(तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કવચ તેમજ બીજા શસ્ત્રોથી સજ્જ થઈને તે પ્રધાન હસ્તિરત્ન ઉપર સવાર થઈ ગયો અને સવાર થઈને ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળ સેનાને સાથે લઈને કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા તે તરફ રવાના થયો કૃષ્ણ-વાસુદેવે જ્યારે પદ્મનાભ રાજાને આવતો જોયો ત્યારે તેને જોઈને પાંચ

किं खलु यूयं पद्मनाभेन सार्धं 'जुज्झिहिह' युद्धं यत ! 'उयाहु' उताहो-अथवा 'पेच्छिहिह' प्रेक्षध्वे, ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-यद्यं खलु हे स्वामिन् ! युद्धाम., यूयं प्रेक्षध्वम् । ततः खलु पञ्च पाण्डवाः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावत् गृहीतायुधप्रहरणाः रथानारूढाः स्व रथोपरि दूरोहन्ति=आरोहन्ति दूरोह्य यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवदन्-'अम्हे वा पउमणाभे वा राया' यद्य वा राजन् ! पद्मनाभो वा राजा, इति

दारगा ! किन्न तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ? तएणं ते पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) हे वत्सो ! क्या तुमलोग पद्मनाभ के साथ युद्ध करोगे-या युद्ध को देखोगे ? तब उन पाण्डवों ने कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा-(अम्हेणं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह, तएणं पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति, दुरूहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था) हे स्वामिन् ! हम तो युद्ध करेंगे-आप उस का निरीक्षण करें । इसके बाद वे पाचो पाडव सन्नद्धबद्धवर्मित कवचवाले होकर यावत् आयुध प्रहरणों को ले २ कर अपने २ रथों पर सवार हो गये । सवार होकर फिर वे जहा पद्मनाभ राजा थे-उस ओर गये-वहां जाकर उन्हों ने पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-या तो आज हम नहीं या पद्म

પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું-(हं भो दारगा ! किन्न तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ? तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) હે વત્સ ! શું તમે પદ્મનાભ રાજાની સાથે મેદાને ઉતરશો ? કે ફક્ત યુદ્ધને જોશો ? ત્યારે તે પાંડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે:—

(अम्हेणं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह, तएणं पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति, दुरूहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था)

હે સ્વામી ! અમે તો યુદ્ધ ખેડીશું, તમે અમારા યુદ્ધને જુઓ ત્યાર પછી તે પાંચે પાંડવો કવચથી સુસજ્જ થઈને આયુધ પ્રહરણોને લઈને પોત પોતાના રથો ઉપર સવાર થઇ ગયા સવાર થઇને તેઓ પદ્મનાભ રાજા તરફ રવાના થયા પદ્મનાભ રાજાની પાસે પહોંચીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે— ' આજે કા તો અમે નહિં અને કા પદ્મનાભ નહિં " આમ કહીને તેઓ પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા

कृत्वा=इत्युक्त्वा-पद्मनाभेन सार्धं योद्धुं संप्रलग्नाश्चाप्यभवन्, तत खलु स पद्म नाभो राजा तान् पञ्च पाण्डवान् क्षिप्रमेव 'हयमहियपवरनिवडियचिन्धद्धयपडागा' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्नध्वजपताकान्-तत्र हया'-अश्वा मथिता-पीडिताः, प्रवराः-प्रशस्ताः, चिह्न-वजपताका निपातिता येषा तान्, शस्त्रास्त्रप्रहारजनित मासान् इत्यर्थः, यावद् दिशो दिश=सर्वतः 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=प्रतिनिवर्तयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पद्मनाभेन राजा हयमथितप्रवरनिप तित यावत् प्रतिषेधिताः सन्तः 'अत्थामा' अस्थामानः-बलरहिता, 'जाव अधारणिज्जा' अत्र यावच्छब्देन-'अबला अवीर्या' इत्यनयोः संग्रहः। अबलाः-

---

नाम राजा ही नहीं" ऐसा कहकर वे पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करने में सलग्न हो गये। (तएणं से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया, समाणा, अत्थामा जाव अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से वासुदेवे ते पच पडवे एवं वयासी कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमनाभेण रन्ना सद्धिं सपलग्गा? तएण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ) तब पद्म नाभ राजा ने उन पांचो पाडवो को बहुत जल्दी पीडित घोडों वाला एव निपातित प्रशस्त चिह्नध्वज पताका वाला कर दिया। यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से भी उन्हें रोक दिया अथवा-एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड दिया। इस तरह वे पाचो पाडव पद्म नाभ राजा के द्वारा पीडित घोडोवाले, एव निपातित प्रशस्त चिह्न ध्वज पताका वाले जब बन गये और एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से रोक दिये गये-अथवा खदेड़ दिये गये तब बलरहित बनकर यावत्

(तएण से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया समाणा, अत्थामा जाव अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पच पडवे एव वयासी कहण्ण तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमनाभेण रन्ना सद्धिं सपलग्गा? तएण ते पच-पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ)

ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ તે પાચે પડવોને ઘોડા વગરના બીડિત ઘોડાઓવાળા તેમજ નિપાતિત પ્રશસ્ત ચિહ્નધ્વજ પતાકાવાળા બનાવી દીધા યાવત એક દિશામાથી બીજી દિશા તરફ જઈ શકે નહિ તેમ તેઓએ રસ્તો રોકી લીધો અથવા તો એક દિશામાથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂક્યા આવી

सन्यद्धीना' अधीरौ -आन्तरिकशक्तिरहिताः, उत्साहहीनात्मानः, तथा-अधारणीयाः=आत्मान रणभूमौ धारयितुमशक्ताः, इति कृत्वा-इति विचार्य, यत्रैव कण्हो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति । ततः खलु स कण्हो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-' कण्हा ' कथं खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! पद्मनाभेन राजा सार्धं योद्धुं समत्थना. ?, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय' ! वयं युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचाः रथान् ' दुरुहामो ' दूरोहामः-आरोहामः आरुह्य, आरुह्य यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैव गत्वा युद्धाय सन्नद्धाः ततः पराजय प्राप्ता यावत् प्रतिषेधिता ' इति । तत' खलु स कृष्णो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवा

रणभूमि में अपने आपको दीक्षा ले में भी असमर्थ जानकर जहा कृष्ण वासुदेव थे वहा आये । वहा पहुँच तेही कृष्णवासुदेवने उनसे-उन पाँचो पाडवों से-इस प्रकार कहा- जब आपलोग पराजित हो गये तो पद्म नाभ राजा के साथ युद्धरत हुए-लड़े-तब उन पाचो पाडवो ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा, हे देवानुप्रिय ! हमलोगो ने आप से अभ्य नुज्ञात होकर ही कवच आदि से सुसज्जित हो रथों पर आरोहण किया, और आरोहण कर जहा पद्मनाभ राजा था वहां हमलोग पहुँचे। वहा पहुँचकर हमलोग उनके साथ युद्धरत हो गये। बाद में पराजित हो गये। और पराजित होकर फिर ऐसे बन गये जो उसने हमें एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड दिया या जाने से रोक दिया। (तएण से कण्हे वासुदेवे ते प प) तब कृष्णवासुदेव ने उन पाचो पांडवो से

પરિસ્થિતિમાં લાચાર થઈને યાવત્ યુદ્ધભૂમિમા પોતાની જાતને ટકાવી શક વામા પણ અસમર્થ જાણીને પાચે પાડવો જ્યા કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યા આવ્યા ત્યા પહોચતા જ કૃષ્ણ-વાસુદેવે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તમે લોકો પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધરત થઈને પરાજીત થઈ ગયા છો ? ત્યારે તે પાચે પાડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા આપની આજ્ઞા મેળવીને કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઈને રથો ઉપર સવાર થયા સવાર થઈને અમે જ્યા પદ્મનાભ રાજા હતો ત્યા ગયો ત્યા પહોચીને અમે બધા તેની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા અને તેને પરિણામે અમે હારી ગયા છીએ હાર પામીને અમે એવી ભયકર પરિસ્થિતિમા સપડાઇ ગયા હતા કે જેથી એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જવામા પણ અસમર્થ થઇ ગયા અથવા તો તેણે અમને એક દિશામાથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂકયા છે (તએણ સે કણ્હે વાસુદેવે તે પ પ) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે પાચ પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

दीत्-यदि खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! पूर्वमेव वक्तारो भवत, 'अम्हे,' णो पउमनाभे राया ' इति ' वयं भवामः, नो पद्मनाभो राजा ' इति " वयमेवजेष्यामो न तु पद्मनाभो राजा ' इत्यर्थः तथा-यदि पूर्वम्-इति कृत्वा=इत्येव निश्चय मनसि निधाय, पद्मनाभेन सार्धं ' सपलग्गता ' युद्धाय समलग्ना भवत, ' तो ण तर्हि खलु ' तुब्भे, णो पउमणाहे ' यूय नो पद्मनाभ =यूयमेव जेतारो भवेत, न तु पद्मनाभः, तथा यूय त हयमथितप्रवरनिपतित चिह्न ध्वजपताक यावत्-पद्मनाभ ' पडिसेहते ' प्रतिषेधयेत=प्रतिनिवर्तयेत । तत्=तस्मात् ' पेच्छह ' प्रेक्षध्व, खलु

इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धिं सपलग्गताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे, हय-महिय-पवर-जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! अह णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि, रह दुरूहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेय गोखीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवारकुदेदु सन्निगास निययबलस्स हरिसजणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ) हे देवानुप्रिय ! तुम तो पहिले ऐसा कहते थे कि हम जीतेंगे, पद्मनाभ राजा नही जीतेगा-और ऐसा ही मन मे विचार कर-निश्चय कर-तुमलोगों ने पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करना प्रारभ किया-तो तुमलोगो को ही जीतना चाहिये था। पद्मनाभ राजा को नही-और तुम्हीं लोग उसे पीडित घोडो वाला एव निपातितप्रव-

(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धिं सपलग्गताओ ण तुब्भे णो पउमणाहे, हयमहियपवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! अह णो पउमणाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि, रह दुरूहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेय गोखीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवार कुदेंदु सन्निगास निययबलस्स हरिसजणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે તો પહેલેથી જ આ પ્રમાણે કહેતા હતા કે અમે જ જીતીશુ, પદ્મનાભ રાજા જીતશે નહિ અને આ પ્રમાણે વિચાર કરીને જ તમે લોકોએ પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધની શરૂઆત કરી હતી, આવી પરિસ્થિતિમા તો તમારે જીત મેળવવી જોઇએ પદ્મનાભ રાજાની જીત નહિ થવી જોઇએ તમે લોકો તેને પીડિત ઘોડાઓવાળો બનાવત, તમને તે નહિ પણ આ બાબતી તમારી મનની ઇચ્છા સફળ થઈ શકી નહિ એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! હવે જુઓ,

यूयं हे देवानुप्रियाः ! ' अहं नो पउमणाभं गच्छामि ' ' अहं नो पद्मनाभो राजा'= अहमेव जेता भवामि, न तु पद्मनाभो राजा, इति कृत्वा पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं युध्यामि, इत्युक्त्वा रथं ' दुरुहइ ' दूरोहति-आरोहति-स्म कृष्णो वासुदेवः पद्म नाभेन सह योद्धुं रथमारूढवान इत्यर्थः । आरुह्य यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य ' सेयं ' श्वेत-गोक्षीरहारधवलम्=गोदुग्धवत्-हारवच्च धवल शुक्ल ' तगमोल्लियमिंदुवारकुंदेंदुनिगासं ' ' तगमोल्लिया ' मल्लिका अय देशीयः शब्दः मिन्दुवारो=निर्गुण्डी, कुन्द-कुन्दनाम्ना भवितः श्वेतपुष्पविशेषः, इन्दुश्चन्द्रस्तद्वत् सन्निकाशः-प्रभा यस्य स तं, तथाविधं ' निनायवलम्म ' निनादयति-शब्दयति यत्कृत्वा यसैनाय ' हरिसजणगं ' हर्षजनन-हर्षोत्पादकं, ' रिउसेण्ण विणासकरं' रिपुसैन्य विनाशकर=शत्रुसैन्यबलहारकं पाञ्चजन्यं शङ्खं पाञ्चजन्यनामकं शङ्खं 'परामुसइ' परा मृशति हस्ते गृह्णाति, परामृश्य 'मुहवायपूरियं करेइ' मुखवातपूरितं मुखवायुना-मात करोति-वादयतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य तेन शङ्खशब्देन 'तब

स्त चिह्नध्वज पताका वाला बनाते-वह तुम्हें ऐसा नहीं बनाना-परन्तु ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विचार सफली भूत नहीं हुआ अतः देवानुप्रियो ! अब देखो-मैं उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं । ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर सवार हो गये । और सवार होकर वे वहां पहुँचे जहां पद्मनाभ राजा था । वहां पहुँच कर उन्हों ने अपने पाचजन्य श्वेतशख को जो अपनी सेनाको हर्ष का जनक एव शत्रु सेना का सहारक था एव गोक्षीर तथा हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया । इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुंठी कुंदपुष्प एव चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी ।(परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) उसे उठाकर उन्हों ने मुँह से बजाया-(तएणं तस्स पउमणाहस्स तेणं सखसद्देणं बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) तब उस पद्मनाभ की सेना

તેની સાથે હુ હવે મેદાને પડુ છુ આમા વિજય મને જ પ્રાપ્ત થશે, પદ્મ નાભ રાજાને નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ-વાસુદેવ રથ ઉપર સવાર થઈ ગયા અને સવાર થઇને જ્યા પદ્મનાભ રાજા હતો ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે પોતાના પાચજન્ય સફેદ શખને-કે જે તેમની સેના માટે હર્ષોત્પાદક તેમજ શત્રુઓની સેના માટે સહાર રૂપ હતો તથા ગાયના દૂધ અને હારના જેવો સફેદ હતો-હાથમા લીધો તે શખની કાતિ મલ્લિકા નિર્ગુંઠી કુદ પુષ્પ અને ચન્દ્ર જેવી હતી (परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) લઈને તેમણે મુખથી વગાડયો (तएणं तस्स पउमणाहस्स तेणं सखसद्देणं बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) ત્યારે પદ્મનાભ રાજાની સેના

तिभाए हते ' बलतिभागो हत.-सैन्यस्य तृतीयाशो हतमथित यावत दिशोदिश मतिषेधित -मतिनिवृत्तः पलायित इत्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासुदेवो धनु परामृशति गृह्णाति, परामृश्य ' वेढो ' वेष्टं वर्णकः धनुर्विषयक वर्णन जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तितो विज्ञेयमित्यर्थः, ' धणु पूरेइ ' धनुः पूरयति धनुषि गुणमारोपयति पूरयित्वा धनुः शब्द करोति तत खलु तस्य पद्मनाभस्य द्वितीयवार ' बल तिभाए ' बलतिभाग बलस्य सैन्यस्य तृतीयोभागस्तेन धनुः शब्देन ' हयमहिय पवरनिवडिय विद्धयपडागे ' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्न-ध्वजपताको यावद्

का त्रिभाग उस शख के शब्द से हत हो गया मथित हो गया यावत् एक दिशो से दूसरी दिशा की तरफ भाग गया। तएण से कण्हे वासुदेवे धणु परामुसइ, वेढोधणु पूरेइ, पूरित्ता धणुसद्द करेइ) इसके बाद कृष्ण वासुदेवने धनुष को उठाया। इस धनुष का वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में किया गया है। सो वहा से जानना चाहिये उठाकर उन्होंने उस पर ज्या का आरोपण किया फिर उसे चढाया-सो उससे शब्द हुआ (तएण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेण धणुसद्दण हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घ तुरिय जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ) तब उस पद्मनाभ राजा की सैन्य का तृतीयभाग उस धनुष के शब्द से हत हो गया, मथित हो गया, उस की प्रवर चिन्ह स्वरूप ध्वजापताकाएँ सब गिर गई यावत्

શબ્દથી જ હત થઈ ગયેા, મથિત થઈ ગયેા યાવત્ એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ નાસી ગયેા (तएण से कण्हे वासुदेवे धणु परामुसइ, वेढो धणु पूरेइ, पूरित्ता धणुसद्द करेइ) ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે ધનુષ ઉઠાવ્યુ આ ધનુષનુ વર્ણન જબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા કરવામા આવ્યુ છે જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી જાણી લેવુ જોઇએ ઉઠાવીને તેઓએ તેની ઉપર પ્રત્યચા ચઢાવી ત્યારપછી ધનુષને ચઢાવ્યુ અને તેનાથી શબ્દ થયેા—

(तएण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेण धणुसद्देण हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घ तुरिय जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ)

તે પદ્મનાભ રાજાની સેનાનેા ત્રીજો ભાગ તે ધનુષના શબ્દથી જ હત થઈ ગયેા, મથિત થઈ ગયેા, તેની પ્રવર ચિહ્ન-સ્વરૂપ ધ્વજા પતાકાઓ બધી પડી

यूयं हे देवानुप्रियाः ! ' अहं नो पउमणाभं राया ' ' अहं नो पद्मनाभो राजा'= अहमेव जेता भवामि, न तु पद्मनाभो राजा, इति कृत्वा पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं युध्यामि, इत्युक्त्वा स ' दुरुहइ ' दूरोहति-आरोहति-स कृष्ण वासुदेवः पद्म नाभेन सह योद्धुं रथमारूढवान इत्यर्थः। आरूढ यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य ' सेयं ' श्वेत-गोक्षीरहारधवल=गोदुग्धवत्-हारवच्च धवल शुक्ल ' तगमोल्लियसिंदुवारकुंदंदुनिगास ' ' तगमोल्लिया ' मल्लिका अय देशीयः शब्द. सिन्दुवारो=निर्गुण्डी, कुन्द-कुन्दनाम्ना प्रसिद्धः श्वेतपुष्पविशेष', इन्दुश्चन्द्रस्तद्वत् सनिकाश -प्रभा यस्य स त, नियय वलम्म ' निनदस्य स्वकी यसैनाय ' हरिसजणग ' हर्षजनन-हर्षोत्पादक, ' रिउसेण्ण विणासयर' रिपुसैन्य विनाशकर=शत्रुसैन्यबलहारक पाञ्चजन्य शङ्ख पाञ्चजन्यनामक शङ्ख 'परामुसइ परा मृशति हस्ते गृह्णाति, परामृश्य 'मुहवायपूरियं करेइ' मुखवातपूरितं मुखवातेन पात करोति-वादयतीत्यर्थः। ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य तेन शङ्खशब्देन 'त

स्त चिह्नध्वज पताका घाला बनाते-वह तुम्हें ऐसा नहीं बनाना-परन्तु ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विचार सफली भूत नहीं हुआ अतः देवानुप्रियो ! अब देखो-मैं उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं। ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर सवार हो गये। और सवार होकर वे वहां पहुँचे जहां पद्मनाभ राजा था। वहां पहुँच कर उन्हों ने अपने पाचजन्य श्वेतशख को जो अपनी सेनाको हर्ष का जनक एव शत्रु सेना का सहारक था एव गोक्षीर तथा हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया। इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुंडी कुंदपुष्प एव चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी।(परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) उसे उठाकर उन्हों ने मुँह से बजाया-(तएणं तस्स पउमणाहस्स तेणं सखसद्देणं बलहभाए हय जाव पडिसेहिए) तब उस पद्मनाभ की सेना

તેની સાથે હુ હવે મેદાને પડુ છુ આમા વિજય મને જ પ્રાપ્ત થશે, પદ્મ નાભ રાજાને નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ-વાસુદેવ રથ ઉપર સવાર થઈ ગયા અને સવાર થઇને જ્યા પદ્મનાભ રાજા હતો ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે પોતાના પાચજન્ય સફેદ શખને-કે જે તેમની સેના માટે હર્ષોત્પાદક તેમજ શત્રુઓની સેના માટે સહાર રૂપ હતો તથા ગાયના દૂધ અને હારના જેવો સફેદ હતો-હાથમા લીધો તે શખની કાતિ મલ્લિકા નિર્ગુંઠી કુદ પુષ્પ અને ચન્દ્ર જેવી હતી (परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ) લઈને તેમણે મુખથી વગાડયો (तएण तस्स पउमणाहस्स तेण सखसद्देण बलहभाए हय जाव पडिसेहिए) તે વખતે તે પદ્મનાભ રાજાની સેનાનો

वासुदेवो यत्रैवामरकङ्का तत्रोपागच्छति, उपागत्य रथ स्थापयति, रथात् प्रत्यव रोहति प्रत्यवरुह्य, ' वेउव्वियसमुग्घाएण ' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीर निर्मातु मात्मप्रदेशाना बहिर्निसारणेन खलु ' समोहणइ ' समुद्घात करोति समुद्घन्ति एक महत् ' णरसीहरूव ' नरसिंहरूप ' विउव्वइ ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन करोति विकुर्व्य महता २ शब्देन ' पाददद्दरय ' पाददर्दरक=भूमौ चरणाघात करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्कारा जधानी ' सभग्गपागारगोपुराट्टालचरिय-तोरणपल्हत्थियपवरभवणसिरिधरा ' सम्भग्नप्राकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्य-स्तितप्रवरभवनश्रीगृहा=तत्र सभग्नानि-प्राकारश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहावह अमरकका थी वहा गये(उवा०) वहा जाकर के (रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोह-णइ) उन्होंने अपने रथको खडा किया-खडा करके फिर वे उससे नीचे उतरे। नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया। वैक्रियशरीरको निर्माण करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होता है-उसका नम वैक्रिय समुद्घात है। (एग महं णरसिंहरूव विउव्वइ विउव्वित्ता महया २ सद्देण पाददद्दरएण कएण समाणेण अमरकंका रायहाणी सभग्ग पागारगोपुराट्टालचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्स रस्स धरणियले सन्निवइया) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके अपनी भयकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया। इस तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकका राजधानी की

ગયા (उवा०) त्या જઇને (रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ) तेमणे पोताना रथने ઊભो राખ्यो, ઊભो राખीने तेओ तेमाथी नीचे उतर्या नीचे उतरीने तेमणे वैक्रिय समुद्घात કર્યો वैક्रिय शरीरने બनाववा माटे જे आत्मप्रદेशोने બહार કાढवामा आवे छे ते वैक्रिय समुद्घात કહેવાय छे

(एग महं णरसिंहरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सद्देण पाददद्दरएण कएण समाणेण अमरकका रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया)

આ समुद्घात વડે तेमणे એક विशाળ काय नरसिंह રૂપની विકुर्वणा કरी नरसिंह રૂપની विકुर्वणा કरीने पोतानी भय કर गर्જनाथी भूमि ઉपर ચरણोनो आघात કर्यो आ रीते गर्જनापूर्वक કरायेલा चरणाघातथी अमर-

दिसो दिसं पडिसेधितः, तत्थ गए वि पउमनाभे राया ' तिभागबलावसेसे ' त्रिभागबलावशेषः तृतीयांशावशिष्टसैन्यवान् सन् अस्थामा, अबलः, अवीर्यः, अस्थामेत्यादि प्राग्व्याख्यातम् अपुरिसकारपरक्कम'-पौरुषपराक्रमरहितः, अप्पाणंपि धारणिज्जं-प्राणान् धारयितुमशक्तः, इति कट्टु=इति विचार्य शीघ्र त्वरित यत्रैव अमरकङ्का तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अमरकङ्का राजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य द्वाराणि ' पिहेइ ' पिधत्ते, रोधसज्ज'=दुर्ग निरुध्य तिष्ठति, ततः खलु स कृष्णो

वह एकदिशा से दूसरी दिशा में भाग गया अथवा भागने में असमर्थ बन गया। इस के बाद तृतीयांशावशिष्ट सेना वाला होकर वह पद्म नाभराजा बल रहित हो गया, पर्याप्त सैन्य रहित हो गया एवं आन्तरिक शक्ति-उत्साह हीन हो गया। अतः वह पौरुष पराक्रम से रहित होने के कारण रणभूमि में ठहरने के योग्य नहीं रहा। अथवा प्राणों को धारण करने में भी असमर्थ बन गया। इसलिये बल वहां से शीघ्र बड़ी उतावली से जहां अमरकङ्का नगरी थी वहां आ गया। (उवागच्छित्ता अमरकङ्कं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दाराइं पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकङ्का तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर वह अमरकङ्का राजधानी में गया। जाकर उसने दरवाजोंको बंद करवा दिया। बंद करवाकर फिर वह अपने दुर्ग (किल्ला) की रक्षा करता हुआ वहीं ठहरा। इसके बाद कृष्णवासुदेव

ગઈ યાવત્ તે સેનાનો ભાગ એક દિશા તરફથી બીજીદિશા તરફ નાશી ગયો અથવા તો તે નાશી જવામા પણ અસમર્થ થઇ ગયો ત્યારપછી ત્રીજા ભાગ જેટલી સેના જ જેની પાસે રહી છે એવો તે પદ્મનાભ રાજા સાવ નિબળ થઈ ગયો, પર્યાપ્ત સૈન્ય રહિત થઈ ગયો અને આતરિક શક્તિ-ઉત્સાહ રહિત થઇ ગયો તે પૌરૂષ પરાક્રમ વગરનો થઈ તે રણભૂમિમા ટકી શકે તેમ પણ રહ્યો નહિ અથવા તો તે પ્રાણોને ધારણ કરવામા પણ અસમર્થ થઇ ગયો એથી તે સત્વરે જ્યા અમરકંકા નગરી હતી ત્યા આવી ગયો

(उवागच्छित्ता अमरकङ्कं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता-दाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएणं मे कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकङ्का तेणेव उवागच्छइ)

ત્યા આવીને તે અમરકંકા રાજધાનીમા ગયો, ત્યા જઇને તેણે દરવાજાઓને બંધ કરાવી દીધા બંધ કરાવીને તે પોતાના દુર્ગની રક્ષા કરતા ત્યાજ રોકાયો ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યા તે અમરકંકા નામે ન ત્યા

वासुदेवो यत्रैवामरकङ्का तत्रोपागच्छति, उपागत्य रथ स्थापयति, रथात् प्रत्यव रोहति प्रत्यवरुह्य, ' वेउव्वियसमुग्घाएण ' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीर निर्मातु मात्मप्रदेशाना बहिर्नि सारणेन खलु ' समोहणइ ' समुद्घात करोति समुद्घन्ति एक महत् ' णरसीहरूव ' नरसिंहरूप ' विउव्वइ ' निकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन करोति विकुर्व्य महता २ शब्देन ' पाददद्दरय ' पादर्दरक=भूमौ चरणाघात करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराजधानी ' संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरिय तोरणपल्हत्थिय पवरभवणसिरिधरा ' सम्भग्नप्राकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्य-स्तितप्रवरभवनश्रीगृहा=तत्र सभग्नानि-प्राकाराश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहांपर अमरकंका थी वहां गये(उवा०) वहां जाकर के (रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ) उन्होंने अपने रथको खडा किया-खडा करके फिर वे उससे नीचे उतरे। नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया। वैक्रियशरीरको निर्माण करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होता है-उसका नम वैक्रिय समुद्घात है। (एग महं णरसिंहरूवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया २ सद्देण पाददद्दरएण कएण समाणेण अमरकंका रायहाणी सभग्ग पागारगोपुराट्टालचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्स रस्स धरणियले सन्निवइया) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके अपनी भयकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया। इस तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकंका राजधानी की

ગયા (उवा०) त्या જઈને (रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ) તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો, ઊભો રાખીને તેઓ તેમાથી નીચે ઉતર્યા નીચે ઉતરીને તેમણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો વૈક્રિય શરીરને બનાવવા માટે જે આત્મપ્રદેશોને બહાર કાઢવામા આવે છે તે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કહેવાય છે

(एग महं णरसिंहरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सद्देण पाददद्दरएण कएण समाणेण अमरकंका रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया)

આ સમુદ્ઘાત વડે તેમણે એક વિશાળ કાય નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરી નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરીને પોતાની ભયકર ગર્જનાથી ભૂમિ ઉપર ચરણોનો આઘાત કર્યો આ રીતે ગર્જનાપૂર્વક કરાયેલા ચરણાઘાતથી અમર-

च तोरणानि च यस्यां सा तथा, तत्र गोपुराणि-मनोज्ञाः अट्टालका'-आकाशे परिस्थान् विशेषाः, चरिका-नगरप्राकारान्तरइतस्ततोमार्ग'। तथा-पर्यस्तानि-सर्वतः क्षिप्तानि मणिरत्नानि श्रीगृहाणि-भाण्डागाराणि कोष्ठागाराणि च यस्यां सा तथा, ततो द्विपदः कर्मधारय । कण्डयानुदंडन भूमौ चरणाघातशब्देन अमर कंकाराजधान्याः प्राकारगोपुरादिक विचलितमित्यर्थं, तथा-' सरस्सरस्स ' अनुकरणशब्दोऽयम् निपतनक्रियाविशेषण धरणितले सनिपतिता=अमरकंका राजधानी मरस्सरस्सेति शब्द कुर्वाणा भूमौ पतितेत्यर्थः । ततः खलु स पद्मनाभो राजा अमरकंकां राजधानीं समग्रप्राकारादिका यावत्-धरणितले सनिपतिता दृष्ट्वा भीतः त्रस्त , उद्विग्न', सजातभय , द्रौपद्या देव्या शरणमुपैति प्राप्नोति, ततः खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभ राजानमेवमवादीत्-किं खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! न जानासि कृष्णस्य वासुदेवस्योत्तमपुरुषस्य विप्रिय कुर्वन् मामिह अत्र

गलियों को अट्टारियों को, चरिकाओं को, श्री गृहों को कोष्ठागारों को श्री कृष्ण ने ध्वस्त करदिया। तथा वह अमरकका राजधानी भी मरसर शब्द करती हुई उस गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से जमीन पर गिर पडी। (तएण से पउमणाभे राया, अमरकका रायहाणिं सभग्ग जाव पासित्ता, भीए दोवईए देवीए सरण उवेइ) तब पद्मनाभ राजा अमरकका राजधानी को प्राकार गोपुर आदि की ध्वस्त अवस्थावाली देखकर अत्यन्त भीत हुआ त्रस्त हुआ, उद्विग्न हुआ। और सजात भय सपन्न होकर द्रौपदी देवी की शरण में पहुँचा। (तएण सा दोवई देवी, पउमनाभ राय एव वयासी) तब उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! न जाणासि कण्ह

કિલ્લા રાજધાનીની શેરીઓને, અગાશીઓને ચરિકાઓને, શ્રીગૃહોને, કોશા ગારોને શ્રીકૃષ્ણે નષ્ટ કરી નાખ્યા તેમજ તે અમરકકા રાજધાની પણ સ સર શબ્દ કરતી ગર્જનાપૂર્વક કરવામા આવેલા ચરણાઘાતથી જમીનદોસ્ત થઈ ગઈ

(तएण से पउमणाभे राया, अमरकका रायहाणिं समग्ग जाव पासित्ता, भीए दोवईए देवीए सरण उवेइ)

પદ્મનાભ રાજા અમરકકા રાજધાનીના પ્રાકાર, ગોપુર વગેરેનો વિનાશ જોઈને ખૂબ જ ભયભીત થઈ ગયો, ત્રસ્ત થઈ ગયો તેમજ ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયો અને સમતભય સપન્ન થઈને દ્રૌપદી દેવીની શરણે પહોચ્યો (तएण सा दोवई देवी पउमनाभ राय एव वयासी) ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

हव्य–शीघ्रम् आनयसि–आनीतवानसि तत्-तस्मात्–' एवमवि गए ' एवमपि गते–इत्थंममापहरणे कृतेऽपि, गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिय ! स्नातः ' उल्लपड-साडए ' आर्द्रपट्टसाटकः स्नानेनाऽऽर्द्रीकृतोत्तरीयपरिधानवस्त्रधारी ' अचूलग-वत्थणियत्थे ' अचूलकवस्त्रणियत्थः=अचूलकम्–अधोमुख नीचैर्लम्बमान चूल-वस्त्राञ्चल–वस्त्रप्रान्त यथा भवति तथा ' णियत्थ' परिहित वस्त्र येन स तथा–स्त्रीणा परिधानमिव चरणपर्यन्तलम्बितवस्त्रान्त यथास्यात्तथा परिहितवस्त्र इत्यर्थ' । ' अतेउरपरियालसपरिवुडे ' अन्त पुरपरिवारसपरिवृतः=स्त्री परिवारेण सहितः, ' अग्गाइ ' अग्र्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा मा पुरतः ' काउ ' कृत्वा कृष्ण

स्स वा सुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि) हे देवानुप्रिय ! क्या तुम उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव को नहीं जानते हो जो उनको अनिष्ट कर तुम मुझे यहां ले आये हो । (त एवमविगए गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अचूलगवत्थणियत्थे अतेउरपरियालसपरिवुडे, अग्गइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरओ, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि) खैर अब इस बात को जाने दो–हे देवानुप्रिय ! तुम स्नान करो, और गीले वस्त्र पहिने हुए ही श्री कृष्णवासुदेव की शरण मे जाओ । जाते समय तुम स्त्रीयों के परिधान के समान चरण पर्यन्त लटकते हुए वस्त्र पहिनकर जाना । अकेले मत जाना किन्तु अपने अत पुर की समस्त स्त्रियों को साथ में ले जाना । रीते हाथ भी मत जाना किन्तु भेट निमित्त वेश कीमती रत्नो को लेकर और मुझे आगे करके चलना ।

(किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! न जाणासि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि)

હે દેવાનુપ્રિય ! શુ તમે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ-વાસુદેવને ઓળખતા નથી મને અહીં લાવીને તમે તેમનુ જ અનિષ્ટ કર્યું છે

(त एवमविगए गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अच चूल्गवत्थणियत्थे अतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरतो, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि)

ખેર, છોડો એ વાતને હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હવે સ્નાન કરો અને ભીના વસ્ત્રોથી જ શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવની શરણમા જાઓ જતી વખતે તમે સ્ત્રીઓના પરિધાન (ચણિયા) ની જેમજ પગ સુધી લટકતા વસ્ત્રો પહેરજો તમે એકલા જતા નહિ પરતુ રણવાસની બધી સ્ત્રીઓને સાથે લઈને જજો તમે ખાલી હાથે તેમની પાસે જતા નહિ પણ કઈક ભેટ સ્વરૂપ કિંમતી વસ્ત્રોને લઈને

वासुदेव 'करयलपायपडिए' करतलपादपतितः-संयोजितकरतलद्वयः, पादयोः पतितः सन् नमन उपैति-प्राप्नवनमिति यद् उपगो भवेत्यर्थः। हे देवानुप्रिय! 'पणिवइयवच्छला' प्रणिपतितवत्सला-चरणोपनिपतितानां वत्सलाः स्नेहवन्त खलु उत्तमपुरुषा भवन्ति प्रणाममात्रेण महापुरुषाः प्रसीदन्तीत्यर्थः। ततस्तदनन्तर स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या देव्या एनमर्थं=उक्तकथनरूपमर्थं प्रतिशृणोति-स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य स्नातो यावत् शरणमुपैति द्रौपदीवचनमनुसृत्य पद्मनाभो राजा कृष्णवासुदेवस्य शरणमुपगत इत्यर्थः। उपेत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=उक्तवान्।

घर पहुँच कर तुम दोनो हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना (पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा तएण से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पहाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता करयल० एव वयासी,दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया!) हे देवानुप्रिय! उत्तम पुरुष जो हुआ करते हैं वे प्रणिपतितवत्सल हुआ करते हैं-प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रसन्न हो जाया करते हैं-अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके कहे अनुसार कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुंच गया। शरण में पहुँच कर उसने अपने दोनों हाथों को जोड़कर अजलि बनाई और आदक्षिण प्रदक्षिण करके उसे शिरपर रखा। फिर इस प्रकार बोला-आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલતો ત્યા પહોચીને તમે બને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો

(पणिवइय वच्छलाण देवाणुप्पिो उत्तमपुरिसा, तएण से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता करयल० एव वयासी,दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया!)

હે દેવાનુપ્રિય! ઉત્તમ પુરૂષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે આ બધુ સાભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રોપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રોપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણમા ગયો શરણમા જઈને તેણે પોતાના બને હાથ જોડીને અજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

खलु देवानुप्रियाणाम् ऋद्धिर्यावत् पराक्रमः-तत्=तस्मात् क्षमयामि खलु हे देवानुप्रियाः ! यावत् क्षमन्तु खलु यावत् नाह भूयो भूयः एव करणतया=पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा-इत्युक्त्वा-' पंजलिउडे ' प्राञ्जलिपुट -संयोजित-करतलद्वयः पादपतितः कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीं ' साहत्थिं ' स्वहस्तेन, उपनयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेव पद्मनाभमेवमवादीत्-ह भोः ! पद्मनाभ ! अप्रार्थितप्रार्थित !=हे मरणवाञ्छक ! ४ किं खलु त्वं न जानासि मम भगिनीं द्रौपदी देवीमिहहव्यमानयन्, ' त ' तत्-तस्मात् ' एवमवि गए ' एवमपिगते अनेनप्रकारेण शरण प्राप्ते सति, नास्ति ते तव मद्भयमिदानीमिति कृत्वा प्रतिविसर्जयति । प्रतिविसृज्य द्रौपदीं देवीं गृह्णाति, गृहीत्वा रथं दूरोहति=आरोहयति

देखली, यावत् पराक्रम देख लिया । हे देवानुप्रिय ! मैं अपने अपराध की क्षमा मांगता हूँ । (जाव खमतु) यावत् आप मुझे क्षमा दें । (ण जाव णा हं भुज्जो २ एव करणाए) अब मैं पुनः ऐसा नहीं करूंगा । (त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थिं उवणेइ) इस प्रकार कहकर वह दोनों हाथ जोड उन कृष्णवासुदेव के पैरों पर गिर पडा और अपने हाथ से ही उसने फिर उनके लिये द्रौपदी सौंपदी । (तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एव वयासी -ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुमं ण जाणासि मम भगिणिं दोवइं देविं इह हव्वं माणमाणे तं एवमविगए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्ति कट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरुहेइ, दुरुहित्ता जेणेव

મે ઋદ્ધિ જોઇ લીધી છે, યાવત્ તમારૂ પરાક્રમ પણ મે જોઈ લીધુ છે હે દેવાનુપ્રિય ! હુ આપ અપરાધ બદલ ક્ષમા માગુ છુ (जाव खमतु) યાવત્ તમે મને ક્ષમા કરો (ण जाव णाह भुज्जो २ एवं करणाए) હવે ફરી હુ આવુ કદાપિ નહિ કરૂ (त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थिं उवणेइ) આ પ્રમાણે કહીને તે બને હાથ જોડીને કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગોમા આળોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ દ્રૌપદી તેમને સોપી દીધી

(तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी-ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुमं ण जाणासि मम भगिणिं दोवइं देविं इह, हव्वं माणमाणे तं एवमपि गए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरुहेइ,

वासुदेव 'करयलपायवडिय' करतलपादपतित'-संयोजितकरतलद्वयः, पादयोः पतितः सन् शरणं उपैति-आश्रयमभिलषन् उपगच्छति भवेदित्यर्थः। हे देवानुप्रिय! 'पणिवइयवच्छला' प्रणिपतितवत्सला-चरणोपरिनिपतितानां वत्सलाः स्नेहवन्त खलु उत्तमपुरुषा भवन्ति प्रणाममात्रेण महापुरुषाः प्रसीदन्तीत्यर्थः। ततस्तदनन्तर स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या देव्या एतमर्थं=उक्तरूपमर्थं प्रतिशृणोति-स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य स्नातो यावत् शरणमुपैति द्रौपदीवचनमनुसृत्य पद्मनाभो राजा कृष्णवासुदेवस्य शरणमुपगत इत्यर्थः। उपेत्य करतलपरिगृहीत

दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, जयादीद्=इदम्

चरण पहुँच कर तुम दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना (पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा तएण से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता करयल० एवं वयासी, दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया।) हे देवानुप्रिय! उत्तम पुरुष जो हुआ करते हैं वे प्रणिपतितवत्सल हुआ करते हैं-प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रसन्न हो जाया करते हैं-अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके कहे अनुसार कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुंच गया। शरण में पहुँच कर उसने अपने दोनों हाथो को जोडकर अजलि बनाई और आदक्षिण प्रदक्षिण करके उसे शिरपर रखा। फिर इस प्रकार बोला-आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલતો ત્યાં પહોંચીને તમે બને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો

(पणिवइय वच्छलाण देवाणुप्पिो उत्तमपुरिसा, तएण से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता करयल० एव वयासी, दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया!)

હે દેવાનુપ્રિય! ઉત્તમ પુરૂષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે આ બધુ સાભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રોપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રોપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણમા ગયો શરણમા જઈને તેણે પોતાના બને હાથ જોડીને અજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી-ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

खलु देवानुप्रियाणाम् ऋद्धिर्यावत् पराक्रमः-तत्=तस्मात् क्षमयामि खलु हे देवानुप्रियाः ! यावत् क्षमन्तु खलु यावत् नाह भूयो भूय एव करणतया=पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा-इत्युक्त्वा-' पंजलिउडे ' प्राञ्जलिपुट -संयोजित-करतलद्वयः पादपतितः कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीं ' साहत्थिं ' स्वहस्तेन, उपनयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेव पद्मनाभमेवमवादीत्-ह भोः ! पद्मनाभ ! अप्रार्थितप्रार्थित !=हे मरणवाञ्छक ! ४ किं खलु त्वं न जानासि मम भगिनीं द्रौपदीं देवीमिहहव्यमानयन्, ' त ' तत्-तस्मात् ' एवमवि गए ' एवमपिगते अनेनप्रकारेण शरण प्राप्ते सति, नास्ति ते तव मद्भयमिदानीमिति कृत्वा प्रतिविसर्जयति । प्रतिविसृज्य द्रौपदीं देवीं गृह्णाति, गृहीत्वा रथं दूरोहति=आरोहयति

देखली, यावत् पराक्रम देख लिया । हे देवानुप्रिय ! मैं अपने अपराध की क्षमा मांगता हूँ । (जाव खमतु) यावत् आप मुझे क्षमा दें । (ण जाव णा ह भुज्जो २ एव करणाए) अब मैं पुनः ऐसा नहीं करूंगा । (त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थिं उवणेइ) इस प्रकार कहकर वह दोनों हाथ जोड उन कृष्णवासुदेव के पैरों पर गिर पडा और अपने हाथ से ही उसने फिर उनके लिये द्रौपदी सौंपदी । (तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी -ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुम ण जाणासि मम भगिणि दोवइ देविं इह हव्व माणमाणे त एवमवि गए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्ति कट्टु पउमणाभ पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरूहेइ, दुरूहित्ता जेणेव

मे ऋद्धि जोइ लीधी छे, यावत् तमारु पराक्रम पण मे जोई लीधु छे हे देवानुप्रिय ! हु मारा अपराध बदल क्षमा मागु छु (जाव खमतु) यावत् तमे मने क्षमा करो (ण जाव णाह भुज्जो २ एव करणाए) हवे फरी हु आवु कदापि नहि करु (त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देवि साहत्थि उवणेइ) आ प्रमाणे कहीने ते एमने हाथ जोडीने कृष्ण-वासुदेवना पगोमा आळोटी गयो अने त्यारपछी तेणे पोताना हाथथीज द्रौपदी तेमने सोपी दीधी

(तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी-ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुम ण जाणासि मम भगिणिं दोवइ देविं इह, हव्व माणमाणे त एवमपि गए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभ पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रह दुरुहेइ,

वासुदेव ' करयलपायपडिए ' करतलपादपतितः-मनोज्ञितकरतलद्वयः, पादयोः पतितः सन् शरण उपैति-त्रायस्वमामितिभदन उपगतो भवेत्यर्थः । हे देवानुप्रिय ! ' पणिवइयवच्छला ' प्रणिपतितवत्सला-चरणोपरिपतितानां वत्सलाः स्नेहवन्त खलु उत्तमपुरुषा भवन्ति प्रणाममात्रेण महापुरुषा प्रसीदन्तीत्यर्थः । ततस्तदनन्तर स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या देव्या एनमर्थं=उक्तकथनरूपमर्थं प्रतिशृणोति-स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य स्नातो यावत् शरणमुपैति द्रौपदीवचनमनुसृत्य पद्मनाभो राजा कृष्णवासुदेवस्य शरणमुपगत इत्यर्थः । उपेत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एनं=राजानमेवमवादीद्=उक्तवान्।

वहां पहुँच कर तुम दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना (पणिवइयवच्छलो ण देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा तएण से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता, करयल०एव वयासी दिट्ठाण देवानुप्पियाण इड्ढी, जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया।) हे देवानुप्रिय ! उत्तम पुरुष जो हुआ करते हैं वे प्रणितपतितवत्सल हुआ करते हैं-प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रसन्न हो जाया करते हैं-अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके कहे अनुसार कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुच गया। शरण में पहुँच कर उसने अपने दोनों हाथों को जोडकर अजलि बनाई और आदक्षिण प्रदक्षिण करके उसे शिरपर रखा। फिर इस प्रकार बोला-आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યા પહોચીને તમે બને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો

(पणिवइय वच्छलाण देवाणुप्पिो उत्तमपुरिसा, तएण से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता करयल० एव वयासी,दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया!)

હે દેવાનુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરૂષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે આ બધુ સાભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણમા ગયો શરણમા જઈને તેણે પોતાના બને હાથ જોડીને અજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી [illegible] માથા ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો [illegible]

मूलम्-तेणं कालेण तेणं समएणं धायइसडे दीवे पुरत्थिमिल्ले भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया हिमवंत० वण्णओ, तेण कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा चपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्म सुणेइ तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्म सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्दं सुणेइ, तएण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था – किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स ण अय संखसद्दे ममपिव मुहवायपूरिए वीय भवइ,तएण मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एवं वयासी-से णूण ते कविला वासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए कि मन्ने जाव वीय भवइ, से णूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता ! अत्थि, नो कविला ! एव भूय वा३ जन्न एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे अरहता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु उप्पज्जिति उप्पज्जिस्सति वा,एव खलु वासुदेवा ! जबूद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रण्णो पुत्व-

---

बीच हो जहा जबूद्वीप नाम का द्वीप, जहा भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था उस ओर चल दिये ॥ सू०२९ ॥

રથોને લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યા જબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, અને તેમા પણ જ્યા ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર હતુ તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

आरोह यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपदीं देवीं 'साहत्थिं' स्वहस्तेन, उपनयति=ददाति । ततः खलु स कृष्णः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मपञ्चमैः पञ्चभीरथैर्लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपः, यत्रैव भारतं वर्षं तत्रैव प्रयातुं प्रवृतः ॥ सू० २०॥

पच्च पडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच्चण्ह पडवाण दोवइ देविं साहत्थिं उवणेइ) तब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा अरे ओ पद्मनाभ ! तुम इस तरह से अकाल में ही मरण के अभिलाषी क्यों बने ? क्या तुझे यह पता नहीं था कि द्रौपदी मेरी बहिन है । क्यों तू इस को यहां ले आया ! खैर-जब तू इस रूप में मेरी शरण में आचुका है-तो अब तुझे किसी भी प्रकार का मेरी तरफ से भय नहीं रहा-ऐसा कहकर कृष्णवासुदेव ने उसे विसर्जित कर दिया-अपने स्थान पर उसे जाने की आज्ञा देदी-। बाद में द्रौपदी को साथ में लिया और लेकर वे रथ पर आरूढ हुए। आरूढ होकर फिर वे, वहां आये-जहां पांचों पांडव थे वहां आकर उन्हों ने द्रौपदी को अपने हाथों से पांचो पाडवों के सुपुर्द कर दिया। (तएणं कण्हे पचेहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इसके बाद वे कृष्णवासुदेव पांचों पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छहो रथों को ले लवण समुद्र से बीचों

पडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचण्ह पडवाण दोवइ

)

મદ્દેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ ! મયમા જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો, શું કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તુ એને અહીં શા માટે લઈ ારે આ સ્થિતિમા મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે જાતનો ભય રાખવો જોઇએ નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ ી ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઇને તેઓ રથ ઉપર તેઓ જ્યા પાચે પ ડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા ી દ્રૌપદીને પાચે પાડવોને સોપી દીધી

સદ્ધિં અપ્પ છટ્ઠે છહિં રહેહિં લવણસમુદ્દ જેણેવ ભારહેવાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાએ)

પાડવોની સાથે આર થઈને છએ

मूलम्-तेणं कालेण तेणं समएण धायइसंडे दीवे पुरत्थिमिल्ले भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थ णं चपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया हिमवंत० वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा चपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्म सुणेइ तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्म सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्दं सुणेइ, तएण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था – किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स णं अय संखसद्दे ममंपिव मुहवायपूरिए वीयं भवइ,तएणं मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एव वयासी-से णूण ते कविला वासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मन्ने जाव वीयं भवइ, से णूणं कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता ! अत्थि, नो कविला ! एव भूय वा३ जन्न एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे अरहता वा चक्कवट्टी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु उप्पज्जिति उप्पज्जिस्सति वा,एवं खलु वासुदेवा ! जबूद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पडुस्स रण्णो पुव्व-

---

बीच हो जहा जबूद्वीप नाम का द्वीप, जहा भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था उस ओर चल दिये ॥ सू०२९ ॥

રથને લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યા જબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, અને તેમા પણ જ્યા ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર હતુ તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

आरोह यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपदीं देवीं 'साहत्थिं' स्वहस्तेन, उपनयति=ददाति । ततः खलु स कृष्णः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठः षड्भी रथैर्लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपः, यत्रैव भारतं वर्षं तत्रैव प्रधारयद्गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ॥ सू० २० ॥

पंच पडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचण्ह पडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ) तए कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा अरे ओ पद्मनाभ ! तुम इस तरह से अकाल में ही मरण के अभिलाषी क्यों बने ४क्यातुझे यह पता नहीं था कि द्रौपदी मेरी बहिन है । क्यों तू इस को यहां ले आया ! खैर-जब तू इस रूप में मेरी शरण में आचुका है-तो अब तुझे किसी भी प्रकार का मेरी तरफ से भय नहीं रहा-ऐसा कहकर कृष्णवासुदेव ने उसे विसर्जित कर दिया-अपने स्थान पर उसे जाने की आज्ञा देदी-। बाद में द्रौपदी को साथ में लिया और लेकर वे रथ पर आरूढ हुए। आरूढ होकर फिर वे, वहां आये-जहां पांचों पांडव थे वहां आकर उन्हों ने द्रौपदी को अपने हाथों से पांचो पांडवों के सुपुर्द कर दिया। (तएणं कण्हे पंचेहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इसके बाद वे कृष्णवासुदेव पांचों पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छहो रथों को ले लवण समुद्र से बीचों

दुरूहित्ता जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचण्ह पंडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ ! તમે આ પ્રમાણે અસમયમાં જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો ૪, શું તમને ખબર નહોતી કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તું એને અહીં શા માટે લઈ આવ્યો ? ખેર, તું જ્યારે આ સ્થિતિમાં મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે મારા તરફથી કોઈ પણ જાતનો ભય રાખવો જોઇએ નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ વાસુદેવે તેને વિદાય કર્યો ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઇને તેઓ રથ ઉપર સવાર થયા સવાર થઇને તેઓ જ્યાં પાંચે પાંડવો હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે પોતાના હાથથી દ્રૌપદીને પાંચે પાંડવોને સોંપી દીધી

(तएणं से कण्हे पंचेहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्प छट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યારબાદ તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને છએ

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणि सभग्गतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी-किन्नं देवाणुप्पिया! एसा अमरकका सभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएण से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी-एव खलु सामी! जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया, तएण से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा पउमणाह एव वयासी हं भो! पउमणाभा! अपत्थियपत्थिया किन्न तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—' तेणं कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकीपण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत्। तस्या बहिर्भागे पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत्। तत्र=तस्या खलु चम्पानगर्यां

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस कालमें और उस समयमें (धायइसडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्ण भद्दे चेइए) धातकी षड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

' तेणं कालेण तेण समएण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (धायइ सडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए) धातકी ષડદ્વીપમા પૂર્વ દિગ્ભાગવર્તી ભરતક્ષેત્રમા ચપા નગરી હતી, તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ

संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगामे सगामेमाणस्स अय संखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइ भवइ, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वदइ२ एवं वयासी–गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हे वासुदेवे उत्तमपुरिसे सरिसपुरिसे पासामि, तएण मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एव वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा३ जण्ण अरहतो वा अरहतं पासइ चक्कवट्टी वा चक्कवट्टि पासइ बलदेवा वा बलदेव पासइ वासु देवो वा वासुदेव पासइ, तहवि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखध दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्घ२ जेणेव वेला उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवण समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासु देवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकट्टु पचजन्न सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता पचजन्न जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एव वयासी–किन्न देवाणुप्पिया! एसा अमरकंका सभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एव वयासी–एव खलु सामी! जंबूद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा पउमणाह एवं वयासी ह भो! पउमणाभा! अपत्थियपत्थिया किन्न तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकीपण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत् । तस्या बहिर्भागे पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत् । तत्र=तस्यां खलु चम्पानगर्यां

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तेणं कालेण तेण समएणं) उस कालमें और उस समयमें (धायइसडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्ण भद्दे चेइए) धातकी षड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

' तेणं कालेण तेण समएण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ–(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (धायइ सडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए) धातडी ષડદ્વીપમા પૂર્વ દિગ્ભાગવર્તી ભરતક્ષેત્રમા ચપા નગરી હતી, તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ

संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे वासुदेवे पंचहि पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहि अमरकंकरायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामे संगामेमाणस्स अयं सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइ भवइ, तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइ२ एवं वयासी–गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हे वासुदेवे उत्तमपुरिसे सरिसपुरिसे पासामि, तएण मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एवं वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा३ जण्णं अरहंतो वा अरहंत पासइ चक्कवट्टी वा चक्कवट्टि पासइ बलदेवा वा बलदेव पासइ वासुदेवो वा वासुदेव पासइ, तहवि य णं तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता हत्थिखंध दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्घ२ जेणेव बेला उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवण समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकट्टु पंचजन्न सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता पंचजन्नं जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि

समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य खलु अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखवातपूरित -मद्वादित-शङ्ख-ध्वनिरिवेत्यर्थः, ' वीय भवइ ' द्वितीयो भवति । तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिल वासुदेवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–' से णूण इत्यादि—' से ' नून ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्मं 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः= शृण्वतः, शङ्खशब्दम् ' आकण्णित्ता ' आकर्ण्य=श्रुत्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः सङ्कल्पो विचारः समुदपद्यत–किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति ' से ' अथ नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थ' समर्थ'=किं सत्य ?, कपिल वासुदेवः प्राह–हता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो ! अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतं भगवानाह–हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्= ईदृश, ' भूय वा ' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अनागत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, ' जन्न ' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक

भवइ) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस कपिल वासुदेवने मुनिसुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण वासुदेवकी शखध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ–क्या धातकीषड नामके द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ? कि जिसके शखका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शंखके शब्द जैसा हुआ है ? (तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी–से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए कि मण्णे जाव वीय भवइ से णूण कविला वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा३ जन्नं

તેમની પાસે તે કપિલ વાસુદેવ ધર્મોપદેશ સાભળી રહ્યા હતા તે કપિલ વાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુની પાસે ધર્મોપદેશ સ ભળતા જ કૃષ્ણવાસુદેવના શ ખનો ધ્વનિ સ ભળ્યો ત્યારે તે કપિલ વાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ કલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે શું ધાતકી ખ ડ નામના દ્વીપમા વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રમા કોઇ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે ? કેમકે તેના શ ખનો આ ધ્વનિ મારા વડે વગાડવામા આવેલા શ ખના ધ્વનિ જેવો જ છે

(तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी–से णूण ते कविलावासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ, से णूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता, अत्थि, नो खलु कविला एय भूयं वा ३ जन्न एगखेत्ते एगे जुगे

'कविले णाम' कपिलो नाम वासुदेवो राजाऽऽसीत् 'महया हिमवत०' वण्णओ' महाहिमवानित्यादि वर्णकः=वर्णन पूर्वोक्तवद् बोध्यम् ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये मुनिसुव्रतोऽर्हन् चम्पाया नगर्यां पूर्णभद्रे नाम्नि चैत्ये समवसृतः । तस्य समीपे कपिलो नाम वासुदेवो धर्मं शृणोति । ततः खलु स कपिलो वासुदेवः मुनिसुव्रतस्यार्हतोऽन्तिके धर्मं शृण्वन् कृष्णस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दं शृणोति ततः खलु तस्य कपिलस्य वासुदेवस्य अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणस्वरूपः, 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः=आत्मगतः सङ्कल्पो=विचारः, यावद् समुद्रपर्यन्त-किम्-अन्यो धातकीपण्डे द्वीपे भारते वर्षे द्वितीयो वासुदेव

नामकी नगरी थी। उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था। (तत्थण चपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवत वण्णओ तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा, चपाए पुण्णभद्दे समोसढे) उस चपानगरीमें कपिल नाम के वासुदेव राज्य करते थे। ये महा हिम वान् पर्वत जैसे गुणोंसे पूर्ण थे। पहिले जैसा वर्णन राजाओंका भिन्न २ जगह किया गया है वैसा ही वर्णन इसका भी जानना चाहिये। उस काल और उस समय में मुनि सुव्रत तीर्थंकर चपा नगरी में इस पूर्ण भद्र उद्यान में आये हुए थे (कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहाओ धम्म सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्द सुणेइ, तएण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे,धायइसडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे? जस्सण अय सखसद्दे ममपिव मुहवायपूरिए बीय

(तत्थण चपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवत वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा, चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे)

તે ચપા નગરીમા કપિલ નામે વાસુદેવ રાજ કરતા હતા તેઓ મહા હિમવાન વગેરે જેવા બળવાન હતા પહેલા જુદા જુદા રાજાઓનુ જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તે પ્રમાણે આ રાજાનુ પણ વર્ણન જાણી લેવુ જોઇએ તે કાળે અને તે સમયે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર ચપા નગરીમા તે પૂર્ણ-ભદ્ર ઉદ્યાનમા પધાર્યા હતા

(कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ, तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वयस्स अरहाओ धम्म सुणेमाणे, कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्द सुणेइ, तए ण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे धायइसडे दीवे भारहेवासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णो? जस्स ण अय सखसद्दे मम पिव मुहवाय पूरिए वीय भवइ)

समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य खलु अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखवातपूरित -मद्वादित-शङ्ख -वनिरिवेत्यर्थः, ' वीय भवइ ' द्वितीयो भवति । तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिल वासुदेवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-' से णूण इत्यादि—' से ' नून ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्मं 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः= शृण्वत', शङ्खशब्दम् ' आकण्णित्ता ' आकर्ण्य=श्रुत्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः सङ्कल्पो विचारः समुदपद्यत-किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति ' से ' अथ नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थः समर्थः=किं सत्य ?, कपिल वासुदेवः प्राह-हता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो ! अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रते भगवानाह-हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्= ईदृश, ' भूय वा ' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अनागत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, ' जन्न ' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक

भवट) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे। सो उस कपिल वासुदेवने मुनि सुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण वासुदेवकी शख-ध्वनि सुनि। तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ-क्या धातकीषड नामके द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ? कि जिसके शखका यह शब्द मेरे द्वारा वजाये गये शंखके शब्द जैसा हुआ है ? (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से णूण ते कविला वासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए कि मण्णे जाव वीय भवइ से णूण कविला वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा३ जन्न

તેમની પાસે તે કપિલ વાસુદેવ ધર્મોપદેશ સાભળી રહ્યા હતા તે કપિલ વાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુની પાસે ધર્મોપદેશ સ ભળતા જ કૃષ્ણવાસુદેવના શ ખનો ધ્વનિ સ ભળ્યો ત્યારે તે કપિલ વાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે શું ધાતકી ષડ નામના દ્વીપમા વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રમા કોઇ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે ? કેમકે તેના શ ખનો આ ધ્વનિ મારા વડે વગાડવામા આવેલા શ ખના ધ્વનિ જેવો જ છે

(तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से णूण ते कविलावासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ, से णूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता, अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा ३ जन्न एगखेत्ते एगे जुगे

स्मिन् युगे, एकस्मिन् समये द्वावर्हन्तौ वा चक्रवर्तिनौ वा बलदेवौ वा वासुदेवौ वा ' उप्पज्जिंसु ' उदपद्येताम् , ' उप्पज्जिंति ' उत्पद्येते ' उप्पज्जिस्संति ' उत्पत्स्येते वा, एवं खलु हे वासुदेव ! जम्बूद्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुरनगरात् पाण्डो राज्ञः ' सुण्हा ' स्नुषा=पुत्रवधूः, पञ्चाना पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी तव पञ्च

एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा,चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा,) तब मुनिसुव्रत तीर्थंकर प्रभुने उन कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा है कपिल वासुदेव ! मेरे पास धर्म को सुनते समय तुम्हे शंख शब्द श्रवण कर इस प्रकार का यह आध्यात्मिक संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ है, कि क्या कोई दूसरा वासुदेव उत्पन्न हो गया है-जिसके शंख का शब्द मुझे सुनाई दिया है । कहो कपिल वासुदेव ! यही बात है न ? तब कपिल वासुदेवने कहा-हा प्रभो ! यही बात है-ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ है-तब मुनिसुव्रत भगवान्ने कपिल वासुदेवसे कहा-हे कपिल वासुदेव ऐसी बात न भूतकाल में हुई है और न भविष्यकाल में होगी-न वर्तमान् मे होती है कि जो एक ही क्षेत्रमें एक ही युगमें एक ही समय में दो अर्हंत प्रभु, दो चक्रवर्ती, दो बलदेव, दो वासुदेव, उत्पन्न हो रहे हों, उत्पन्न हुए हो और आगे उत्पन्न हो ! (एव खलु वासुदेवा ! जबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पडुस्सरण्णो सुण्हा

एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાભળતા શંખ-શબ્દ સાભળીને તમને આ જાતનો આધ્યાત્મિક સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શંખનો ધ્વનિ મને સભળાઈ રહ્યો છે બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમા એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમા થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમા થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમા સભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમા, એક જ યુગમા, એક જ સમયમા બે અર્હંત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઇ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(एव खलु वासुदेवा ! जबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पडुस्सरण्णो, सुण्हा पचण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी तव

नाभस्य राज्ञः पूर्वसगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरीं 'साहरिया' सहृता=आनीता, ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सर्धं आत्मषष्ठः षड्भीरथैरमरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः 'कव' देशी शब्दोय प्रत्यानयनार्थकः प्रत्यानयन कर्तुं हव्यमागत., ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं 'सगाम' संग्राम=युद्ध 'सगामेमाणस्स' युध्यत, अय शङ्खशब्दस्तवसु खवातपूरित इव द्वितीयो भवति। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनिसुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अह हे

पचण्ह पडवाण भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगईएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया, तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्हमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इवधीय भवइ) सुनो बात इस प्रकार है जबूद्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पाच पाडवो की पत्नी द्रौपदी देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण कर अमरकका नगरी में ले आया। तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण पाच पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकका नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये। तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय शंख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है। (तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदति, २ एव वयासी गच्छामि ण

रण्णो पुव्वसगइएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामे माणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीय भवइ)

સાભળો, વિગત એવી છે કે જબૂદ્વીપના ભરતક્ષેત્રમા વિદ્યમાન હસ્તિનાપુર નગરથી પાડુરાજાની પુત્રવધૂ પાચે પાડવોની પત્ની દ્રૌપદી દેવીને તમારા પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વભવનો મિત્ર કોઈ દેવ હરીને અમરકકા નગરીમાં લઈ આવ્યો હતો ત્યારપછી ભરતક્ષેત્રના વાસુદેવ કૃષ્ણ પાચે પાડવોની સાથે આત્મ ષષ્ઠ થઈને છ રથો ઉપર સવાર થયા અને સત્વરે દ્રૌપદી દેવીને પાછા મેળવવા માટે ત્યા પહોચી ગયા પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરતા કૃષ્ણવાસુદેવે જે શખધ્વનિ કર્યો છે તે તમારા શખના ધ્વનિ જેવો છે

(तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वय वदति, २ एव वयासी, गच्छामि

स्मिन् युगे, एकस्मिन् समये द्वावर्हन्तौ वा चक्रवर्तिनौ वा बलदेवौ वा वासुदेवौ वा 'उप्पज्जिंसु' उदपद्येताम्, 'उप्पज्जिंति' उत्पद्येते 'उप्पज्जिस्संति' उत्पत्स्येते वा, एवं खलु हे वासुदेव ! जम्बूद्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुरनगरात् पाण्डो राज्ञः 'सुण्हा' स्नुषा=पुत्रवधूः, पञ्चाना पाण्डवाना भार्या द्रौपदी देवी तव पञ्च

एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा,) तब मुनिसुव्रत तीर्थंकर प्रभुने उन कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा हे कपिल वासुदेव ! मेरे पास धर्म को सुनते समय तुम्हे शंख शब्द श्रवण कर इस प्रकार का यह आध्यात्मिक सकल्प-विचार उत्पन्न हुआ है, कि क्या कोई दूसरा वासुदेव उत्पन्न हो गया है-जिसके शंख का शब्द मुझे सुनाई दिया है। कहो कपिल वासुदेव ! यही बात है न ? तब कपिल वासुदेवने कहा-हा प्रभो ! यही बात है-ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ है-तब मुनिसुव्रत भगवान्ने कपिल वासुदेवसे कहा-हे कपिल वासुदेव ऐसी बात न भूतकाल में हुई है और न भविष्यकाल में होगी-न वर्तमान् मे होती है कि जो एक ही क्षेत्रमें एक ही युगमें एक ही समय में दो अर्हत प्रभु, दो चक्रवर्ती, दो बलदेव, दो वासुदेव, उत्पन्न हो रहे हों, उत्पन्न हुए हो और आगे उत्पन्न हो ! (एव खलु वासुदेवा ! जंबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पंडुस्सरण्णो सुण्हा

एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાભળતા શંખ-શબ્દ સાભળીને તમને આ જાતનો આધ્યાત્મિક સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઇ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શંખનો ધ્વનિ મને સંભળાઇ રહ્યો છે બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમા એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમા થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમા થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમા સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમા, એક જ યુગમા, એક જ સમયમા બે અર્હંત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઇ ગયા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(एव खलु वासुदेवा ! जंबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पंडुस्स रण्णो, सुण्हा पंचण्ह पंडवाण भारिया दोवई देवी तव

नाभस्य राज्ञः पूर्वसंगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरी 'साहरिया' सहृता=आनीता, ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धं आत्मषष्ठः षड्भीरथैरमरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः 'झत्ति' देशी शब्दोयं प्रत्यानयनार्थकः प्रत्यानयन कर्तुं हव्यमागत., ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं 'सगाम' संग्राम=युद्ध 'सगामेमाणस्स' युध्यत, अथ शङ्खशब्दस्तवमु खवातपूरित इव द्वितीयो भवति। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनिसुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अह हे

पचण्ह पडवाण भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगईएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया, तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इवथीय भवइ) सुनो बात इस प्रकार है जबूद्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पाच पाडवो की पत्नी द्रौपदी देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण कर अमरकका नगरी में ले आया। तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण पाच पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकका नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये। तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय शख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है। (तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदति, २ एव वयासी गच्छामि णं

रण्णो पुव्वसगइएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामे माणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीय भवइ)

સ ભળો, વિગત એવી છે કે જબૂદ્વીપના ભરતક્ષેત્રમા વિદ્યમાન હસ્તિનાપુર નગરથી પાડુરાજાની પુત્રવધૂ પાચે પાડવોની પત્ની દ્રૌપદી દેવીને તમારા પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વભવનો મિત્ર કોઈ દેવ હરીને અમરકકા નગરીમાં લઈ આવ્યો હતો ત્યારપછી ભરતક્ષેત્રના વાસુદેવ કૃષ્ણ પાચે પાડવોની સાથે આત્મ ષષ્ઠ થઈને છ રથો ઉપર સવાર થયા અને સત્વરે દ્રૌપદી દેવીને પાછા મેળવવા માટે ત્યા પહોચી ગયા પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરતા કૃષ્ણવાસુદેવે જે શખધ્વનિ કર્યો છે તે તમારા શખના ધ્વનિ જેવો છે

(तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वय वदति, २ एव वयासी, गच्छामि

स्मिन् युगे, एकस्मिन् समये द्वावर्हन्तौ वा चक्रवर्तिनौ वा बलदेवौ वा वासुदेवौ वा ' उप्पज्जिंसु ' उदपद्येताम् , ' उप्पज्जिंति ' उत्पद्येते ' उप्पज्जिस्संति ' उत्पत्स्येते वा, एवं खलु हे वासुदेव ! जम्बूद्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुरनगरात् पाण्डो राज्ञः ' सुण्हा ' स्नुषा=पुत्रवधूः, पञ्चाना पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी तव पञ्च

एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा,) तव मुनिसुव्रत तीर्थंकर प्रभुने उन कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा है कपिल वासुदेव ! मेरे पास धर्म को सुनते समय तुम्हे शंख शब्द श्रवण कर इस प्रकार का यह आध्यात्मिक सकल्प-विचार उत्पन्न हुआ है, कि क्या कोई दूसरा वासुदेव उत्पन्न हो गया है-जिसके शंख का शब्द मुझे सुनाई दिया है । कहो कपिल वासुदेव ! यही बात है न ? तब कपिल वासुदेवने कहा-हा प्रभो ! यही बात है-ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ है-तब मुनिसुव्रत भगवान्ने कपिल वासुदेवसे कहा-हे कपिल वासुदेव ऐसी बात न भूतकाल में हुई है और न भविष्यकाल में होगी-न वर्तमान् मे होती है कि जो एक ही क्षेत्रमें एक ही युगमें एक ही समय में दो अर्हंत प्रभु दो चक्रवर्ती, दो बलदेव, दो वासुदेव, उत्पन्न हो रहे हों, उत्पन्न हुए हो और आगे उत्पन्न हों ! (एव खलु वासुदेवा ! जबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयरोओ, पडुस्सरण्णो सुण्हा

एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાભળતા શ ખ-શબ્દ સાભળીને તમને આ જાતનો આધ્યાત્મિક સ કલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શુ કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શ ખનો ધ્વનિ મને સ ભળાઈ રહ્યો છે બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા, પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમા એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમા થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળ મા થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમા સ ભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમા, એક જ યુગમા, એક જ સમયમા બે અર્હંત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બ ગદેવ, બે વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(एव खलु वासुदेवा ! जबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पडुस्सरण्णो, सुण्हा पचण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी तव

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजाग्राणि ' पासिहिसि ' द्रक्ष्यसि । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २ यत्रैव ' वेलाउले ' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कृष्णस्य वसुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन ' वीइवयमाणस्स ' व्यतिव्रजत = गच्छत , श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन ' वीइवयइ ' व्यतिव्रजति= गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्यं शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखवातपूरित करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्ख वादयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बलदेव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता है। (तह वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेया पीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, इतना हो सकता हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे होवें तब तु मउनकी श्वेत पीत ध्वजाओंके अग्र भाग को देख सकते हा। (तएण से कविले वासुदेवेमुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वंदित्ता,नमसित्ता, हत्थिखध दुरूहइ, दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले,तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिंधयग्गाइ पासइ,पासित्ता एव वयइ-एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्ति कट्टु

તીર્થંકરની સાથે બીજા તીર્થંકરનો મેળાપ કોઇ પણ સંજોગોમા થતો નથી એક ચક્રવર્તીનો બીજા ચક્રવર્તીની સાથે, એક બળદેવનો બીજા બળદેવની સાથે તેમજ એક વાસુદેવનો બીજા કોઈ પણ વાસુદેવની સાથે કદાપિ મેળાપ થતો નથી (तह वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) હા, એમ થઇ શકે છે કે જ્યારે તે કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થતા હોય ત્યારે તમે તેમની સફેદ, પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોઇ શકો છો (तएण से)

कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरूहइ, दुरूहित्ता सिंग्घ२ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहि धयग्गाइ पास२, पासित्ता एव वयइ, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

भदन्त ! कृष्ण वासुदेवमुत्तमपुरुष पश्यामि तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन कपिलं वासुदेवम् एवमवादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एव भूत वा, भवति वा भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्त पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिन पश्यति बलदेवो वा बलदेव पश्यति वासुदेवो वा वासुदेव पश्यति, तथा ऽपि च खलु त्व

अह भते ! कण्ह वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि) इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को वदना की-नमस्कार किया वदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा -हे भदत ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो मेरे जैसे पुरुष हैं-वासुदेव पद के धारक हैं-जाकर मिलता हूँ। (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ६ जण्ण अरहतो, वा अरहंत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्क वट्टि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ) हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भविष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिलें, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिलें, एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिलें। ऐसा सिद्धान्त का नियम है कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है।

णं अहभते ! कण्ह वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि)

આ પ્રમાણે સાભળીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વદન તેમજ નમન કર્યા વદન અને નમન કરીને તેમની સામે આ પ્રમાણે વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે ભદત ! હુ જાઉ છુ અને જઇને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે-તેમને મળુ છુ (તएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ३ जण्ण अरहतो वा अरहत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સભવી નથી, વર્તમાનમા પણ સભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમા પણ સભવી શકશે નહિ કે એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે, એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો [illegible] છે કે એક

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजाग्राणि ' पासिहिसि ' द्रक्ष्यसि । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २ यत्रैव ' वेलाउले ' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कृष्णस्य वसुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन ' वीइवयमाणस्स ' व्यतिव्रजत = गच्छत , श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन ' वीइवयइ ' व्यतिव्रजति= गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्य शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखवातपूरित करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्ख वादयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बलदेव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नही होता है। (तह वि य ण तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेया पीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, इतना हो सकता हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे होवें तब तु मउनकी श्वेत पीत ध्वजाओके अग्र भाग को देख सकते हा। (तएण से कविछे वासुदेवेमुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता,नमसित्ता, हत्थिखध दुरूहइ, दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले,तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिंधयग्गाइ पासइ,पासित्ता ण्व वयइ-एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्ति कट्टु

તીર્થંકરની સાથે બીજા તીર્થંકરનો મેળાપ કોઇ પણ સંજોગોમા થતો નથી એક ચક્રવર્તીનો બીજા ચક્રવર્તીની સાથે, એક બળદેવનો બીજા બળદેવની સાથે તેમજ એક વાસુદેવનો બીજા કોઈ પણ વાસુદેવની સાથે કદાપિ મેળાપ થતો નથી (तह वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) હા, એમ થઇ શકે છે કે જ્યારે તે કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થતા હોય ત્યારે તમે તેમની સફેદ, પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોઇ શકો છો (तएण से) कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरूहइ, दुरूहित्ता सिंग्घर जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइ पासइ। पासित्ता एव वयइ, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

भदन्त ! कृष्णं वासुदेवमुत्तमपुरुषं पश्यामि तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिलं वासुदेवम् एवमवादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एष भूत वा, भवति वा भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्त पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिन पश्यति बलदेवो वा बलदेव पश्यति वासुदेवो वा वासुदेव पश्यति, तथा ऽपि च खलु त्व

अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि)

इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को वदना की-नमस्कार किया वदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा -हे भदत ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो मेरे जैसे पुरुष हैं-वासुदेव पद के धारक है-जाकर मिलता हूँ। (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ६ जण्ण अरहतो, वा अरहत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्क वट्टिं पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ) हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भविष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिलें, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिलें, एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिलें। ऐसा सिद्धान्त का नियम है कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है।

ण अहमते ! कण्ह वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि)

આ પ્રમાણે સાભળીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વદન તેમજ નમન કર્યા વદન અને નમન કરીને તેમની સામે આ પ્રમાણે વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે ભદત ! હુ જાઉ છુ અને જઇને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે-તેમને મળુ છુ (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ३ जण्ण अरहतो वा अरहत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्कवर्ट्टि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સભવી નથી, વર્તમાનમા પણ સભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમા પણ સભવી શકશે નહિ કે એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે, એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો નિયમ છે કે એક

ततस्तदनन्तर स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यामरकङ्कां राजधानीं सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवादीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकङ्का सभग्नतोरणा यावत्-सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन 'तुब्भे परिभूए' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् सनिपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी) तब कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को सुना सुनकर उन्हो ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से पूरित किया-बजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले। अब वे कपिल वासुदेव जहा वह अमरकंका नगरी थी वहां आये। वहां आकर उन्होंने अमर-कका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा। देखकर तब पद्म-नाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसा अमरकका सभग्ग जाव सन्निवइया ? तएण से पउमणाहे कविलं वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ? जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी)

જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે કપિલ વાસુદેવના શખનો ધ્વનિ સાભળ્યો ત્યારે તેમણે પણ પોતાના પાચજન્ય શખને મુખના પવનથી પૂરિત કર્યો અને વગાડયો આ રીતે તેઓ બને વાસુદેવ પ્રત્યક્ષ રીતે નહિ પણ શખના ધ્વનિથી પરસ્પર મળ્યા ત્યારપછી તે કપિલ વાસુદેવ જ્યા તે અમરકકા નગરી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે અમરકકા રાજધાનીને ધજાઓ વગે રેથી નષ્ટ થયેલી જોઇ, જોઇને તેમણે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(किण्ण देवाणुप्पिया ऐसा अमरककका संभग्ग जाव सन्निवइया ? तएण से पउमणाहे कविल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरककका जाव सन्निवाडिया)

कस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दम् ' आयन्नेइ ' आकर्णयति=गृणोति, आकर्ण्य पाञ्चजन्य यावत् मुखवातपूरित करोति=कृष्णो वासुदेव स्वकीय शङ्ख वादयति, तत' खलु द्वावपि वासुदेवौ ' संखसद्दसामायारिं ' शङ्खशब्दसामाचारिं=शङ्खशब्देन परस्परमिलन कुरुतः ।

पचयन्न सख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ) इस प्रकार प्रभु का आदेश सुनकर उन कपिलवासुदेव ने उन प्रभु मुनिसुव्रत भगवत को वदना की, नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर वे अपने प्रधान हस्ती पर आरूढ हुए। और आरूढ होकर शीघ्र जहां लवणसमुद्र का वेलातट था –वहां पहुँचे। वहा पहुँचकर उन्होंने लवण समुद्र के बीच से होकर जाते हुए कृष्णवासुदेव की श्वेत पीत ध्वजाओं के अग्रभाग को देखा देखकर तब मनमें विचार–किया ये ही मेरे जैसे उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव लवणसमुद्र के बीच से होकर जारहे हैं– ऐसा विचार कर उन्हों ने अपने पाचजन्य शख को उठाया और उठा कर उसे अपने मुख की वायु से पूरित किया (तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ, आयन्नित्ता, पचजन्ने, जाव पूरिय करेइ, तएण दो वि वासुदेवा सखसद्दसामायारिं करेइ, तएण

लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्ति कट्टु पचजन्न सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ)

આ રીતે પ્રભુની આજ્ઞા સાભળીને તે કપિલ વાસુદેવે તે પ્રભુ મુનિસુવ્રત ભગવતને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ પોતાના પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર થયા અને સવાર થઇને જ્યાં લવણ સમુદ્રનો કિનારો હતો ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે 'લવણસમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થતા કૃષ્ણવાસુદેવની સફેદ–પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોયો અને જોઇને મનમા વિચાર કર્યો કે મારા જેવા ઉત્તમ પુરુષ કૃષ્ણવાસુદેવ એ જ છે કે જેઓ લવણ–સમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થઈ રહ્યા છે આમ વિચાર કરીને તેમણે પાચ જન્ય શખને ઉઠાવ્યો અને ઉઠાવીને પોતાના મુખના પવનથી તેને પૂરિત કર્યો

(तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ, आयन्नित्ता, पचजन्न जाव पूरिय करेइ तएण दो वि वासुदेवा सखसद्द सामायारिं करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव

ततस्तदनन्तर स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यामरकङ्कां राजधानी सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवादीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकङ्का सभग्नतोरणा यावत्-सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन 'तुब्भे परिभूए' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् सनिपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी) तब कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को सुना सुनकर उन्हों ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से पूरित किया-बजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले। अब वे कपिल वासुदेव जहा वह अमरकका नगरी थी वहां आये। वहा आकर उन्होंने अमर-कका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा। देखकर तब पद्म-नाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसा अमरकंका सभग्ग जाव सन्निवडया ? तएण से पउमणाहे कविल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ? जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी)

જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે કપિલ વાસુદેવના શખનો ધ્વનિ સાભળ્યો ત્યારે તેમણે પણ પોતાના પાચજન્ય શખને મુખના પવનથી પૂરિત કર્યો અને વગાડયો આ રીતે તેઓ બને વાસુદેવ પ્રત્યક્ષ રીતે નહિ પણ શખના ધ્વનિથી પરસ્પર મળ્યા ત્યારપછી તે કપિલ વાસુદેવ જ્યા તે અમરકકા નગરી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે અમરકકા રાજધાનીને ધજાઓ વગે રેથી નષ્ટ થયેલી જોઇ, જોઇને તેમણે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(किण्ण देवाणुप्पिया ऐसा अमरककका सभग्ग जाव सन्निवडया ? तएण से पउमणाहे कपिल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरककका जाव सन्निवाडिया)

ततः खलु स कपिलो वासुदेवः पद्मनाभस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा पद्मनाभम् एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-ह भो ! पद्मनाभ ! अप्रार्थित प्रार्थित ! =मरण वाञ्छक !, किं खलु त्वं न जानासि मम सदृशपुरुषस्य वासुदेवस्य विप्रियं=विरुद्धं कुर्वत्', इत्युक्त्वा आशुरुक्षः=शीघ्र क्रोधाऽऽक्रान्त, यावत् पद्मनाभं 'णिव्विसयं' निर्विषय=विषयात् स्वराज्याद् निर्गत-निष्कासित कर्तुम् 'आणवेइ' आज्ञापयति पद्मनाभस्य पुत्रममरकङ्कराजधान्या महता महता राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति,

सभग्न तोरण आदि वाली होकर भूमिसात् हो गई है। तब पद्मनाभ राजा ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-हे स्वामिन् ! इसका कारण इस प्रकार है-जम्बूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप से भरतक्षेत्र में यहाँ बहुत ही शीघ्र आकर कृष्ण वासुदेव ने आपकी कुछ भी परवाह न करके-कपिल वासुदेव हमारी कुछ भी हानि नहीं कर सकते हैं-ऐसा अपने मन में समझ करके-अमरकङ्का में आकर-उसे पहिले सभग्न तोरण वाली किया-और बाद में विध्वस्तकर दिया। (तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी) तब पद्मनाभ राजा के मुख से इस समाचार को सुनकर के उस कपिल वासुदेव ने उस पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-(ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्न तुमं न जाणासि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? असुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंका रायहाणीए महया

હે દેવાનુપ્રિય ! શા કારણથી આ અમરકંકા નગરીની ધજાઓ વગેરે પણ તૂટી ગઇ છે અને સંપૂર્ણ નગરી વિનષ્ટ થઈ ગઈ છે ! ત્યારે પદ્મનાભ રાજાએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! વાત એવી છે કે જંબૂદ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપના ભરતક્ષેત્રથી અહીં બહુ જ જલ્દી આવીને કૃષ્ણવાસુદેવે તમારી જરાએ દરકાર કર્યા વગર "કપિલ વાસુદેવ અમારું કંઈજ કરી શકશે નહિ" આ જાતનો પોતાના મનમા વિચાર કરીને પહેલા તો અમરકંકાના તોરણો નષ્ટ કર્યાં અને ત્યારપછી આ નગરીને પણ જમીનદોસ્ત કરી નાખી છે (तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी) ત્યારે પદ્મનાભ રાજાના મુખથી આ બધી વિગત સાંભળીને તે કપિલવાસુદેવે તે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्न तुमं न जाणासि मम सरिस पुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? आसुरुत्ते जाव

यावत् प्रतिगत =पद्मनाभस्य पुत्र राज्येऽभिषिच्य कपिलवासुदेवो यस्यादिशः प्रादुर्भूतस्ता दिश प्रतिगत इति भाव ॥ सू०३० ॥

मूलम्–तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, त पच्च पडवे एवं वयासी–गच्छह ण तुब्भे देवानुप्पिया ! गंगामहानइं उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, तए णं त पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानई तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेति करित्ता एगट्ठियाए नावाए गंगामहानइ उत्तरति उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति–पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगामहाणइं बाहाहि उत्तरित्तए उदाहु णो पभू उत्तरित्तएत्ति कट्टु एगट्ठियाओ नावाओ महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए) अरेओ मरणवाञ्छक पद्मनाभ ! मेरे जैसे पुरुष कृष्ण वासुदेव का विप्रिय–अनिष्ट–करते हुए तुमने मेरा कुछभी ख्याल नहीं किया ? इस प्रकार कह कर वे उस पर बहुत अधिक कुपित हो गये। यावत् उस पद्मनाभ राजा को उन्हों ने अपने देश से बाहिर भी निकालदिया। तथा–उसका जो पुत्र सुनाभ था। उस को बडे भारी उत्सवके साथ राज्य में अभिषिक्त किया। इस प्रकार पद्मनाभ के पुत्र को राज्य में अभिषिक्त करके वे कपिल वासुदेव जिस दिशासे आये थे उस दिशाकी ओर वापिस चले गये ॥सू३०॥

सय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्त अमरकका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ, जाव पडिगए)

અરે, ઓ મૃત્યુને ઇચ્છનાર પદ્મનાભ ! મારા જેવા પુરુષ કૃષ્ણવાસુદેવનુ ણુ કરતા તે મારી પણ દરકાર કરી નહિ ? આ પ્રમાણે કહીને તેઓ ખૂબજ ક્રોધિત થઇ ગયા યાવત્ તે પદ્મનાભ રાજાને પોતાના દેશથી બહાર પણ નસાડી મૂક્યો ત્યારપછી તેના પુત્ર સુનાભનો ભારે ઉત્સવની સાથે રાજ્યાભિષેક કર્યો આ રીતે પદ્મનાભના પુત્રને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને કપિલ વાસુદેવ જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે દિશા તરફ પાછા જતા રહ્યા ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

णूमेंति णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा२ चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ पासित्ता जेणेव गंगामहाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए वाहाए रहं सतुरगं ससारहिंगेण्हइ एगाए वाहाए गंगं महाणइं वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयणं च विच्छिन्न उत्तरिउ पयत्ते यावि होत्था, तएण से कण्हे वासुदेवे गंगामहाणईए बहुमज्झदेस-भागं सपत्ते समाणे सते तते परितते वद्धसेए जाए यावि होत्था तएण कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था अहो ण पंच पंडवा महाबलवगा जेहि गंगा-महाणई वासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा वाहाहिं उत्तिण्णा, इत्थभूएहि णं पचहि पंडवेहि पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए, तएण गगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एया-रूव अज्झत्थिय जाव जाणित्ता थाह वितरइ, तएण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्ततर समासासइ समासासित्ता गंगामहाणइं वावट्ठिं जाव उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ उवा-गच्छित्ता पच पडवे एव वयासी–अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गंगामहाणई वासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इत्थ भूएहि तुब्भेहि पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेणं एव वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेव एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहि विसज्जिया समाणा

जेणेव महाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो तएण से कण्हे वासुदेवे तेसि पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवालियं एव वयासी—अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्ण वीइवइत्ता पउमणाभ हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकका संभग्ग० देवई साहत्थिं उवणीया तया ण तुब्भेहि मम महप्पं ण विण्णायं इयाणि जाणिस्सहत्तिकट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेइ चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रह महणे णाम कोडे णिविट्ठे, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खधावारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सएणं खधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अणुपविसइ ॥सू० ३१॥

टीका—' तएण से इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासुदेवो लवण समुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजति=गच्छति व्यतिव्रज्य तान् पञ्च पाण्डवान् एव मवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया !' गङ्गामहानदीमुत्तरत्त=उतीर्णा भवत,

---

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्णवासुदेवने (लवणसमुद्द) जब लवण समुद्र में (मज्झ मज्झेण वीइवयइ) बीच से होकर वे चले जा रहे थे। (ते पच पडवे एव वयासी) तब पाच पाडवों से ऐसा कहा-(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहानइ उत्तरह जाव

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) त्यारपछी (से कण्हे वासुदेवे) ते કૃષ્ણવાસુદેવે (लवणसमुद्द) કે જ્યારે તેઓ લવણ સમુદ્રની (मज्झ मज्झेण वीइवयइ) વચ્ચે થઇને પસાર થતા હતા ત્યારે (ते पच पडवे एव वयासी) પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ (गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गगा महानदिं उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठिय

यावत् तावदहं सुस्थितं देवं लवणाधिपतिं पश्यामि, सुस्थितेन देवेन सह मिलित्वा तमापृच्छ्यागच्छामि, ततः खलु ते पञ्चपाण्डवा कृष्णेन वासुदेवेन एवमुक्ताः सन्तो यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'एगट्ठियाए' एकार्थिकायाः=महानौकासमानकार्यकारिण्या 'णावाए' नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं कुर्वन्ति। कृत्वा=मार्गणगवेषणं कृत्वा नौकायामारुह्य ते पञ्च पाण्डवा एकार्थिकया नावा गङ्गामहानदीं समुत्तरन्ति, उत्तीर्य अन्योन्यम्=परस्परमेवं वदन्ति-'पहू' प्रभुः=समर्थः, खलु हे देवानुप्रियाः! कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानदीं 'बाहाहिं' बाहुभ्याम्=भुजाभ्याम् 'उत्तरित्तए' उत्तरीतुम् 'उदाहु' उताहो-अथवा नो

ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि) हे देवानुप्रियों! तुमलोग जाओ-और गंगानदी को पार करो तबतक मैं लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर और उनकी आज्ञा लेकर आता हूँ। (तएणं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए गंगामहानइं उत्तरंति) इस तरह कृष्ण वासुदेव द्वारा कहे गये वे पांचों पांडव जहां गंगा महानदी थी-वहां आये। वहां आकर के उन्होंने एकार्थिक-महानौकासे जैसी कार्य साधक-नौका मार्गणा एवं गवेषणा की, मार्गणा गवेषणा कर के वे पांचो पांडव नौका पर चढ गंगा महानदीसे पार हो गये। (उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूणं देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गंगा महानई बाहाहिं उत्तरि-

---

લવણાહિવઇ પાસામિ) હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો હવે જાઓ અને ગંગા નદીને ઓળંગો ત્યાંસુધી હું લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવને મળીને અને તેમની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને આવું છું

(तएणं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा, जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए नावाए गंगा महानइं उत्तरंति)

આ રીતે કૃષ્ણવાસુદેવ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા તે પાંચે પાંડવો જ્યાં ગંગા મહા નદી હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે એકાર્થિક મહાનૌકા જેવી કામમાં આવી શકે તેવી નૌકાની માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરી માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને તે પાંચે પાંડવો નૌકા ઉપર સવાર થઈને ગંગા મહા નદીને પાર ઉતરી ગયા

(उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूणं देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गंगा-

प्रभुः=समर्थ उत्तरीतुम् , इति कृत्वा गङ्गामहानद्या बाहुभ्यामुत्तरणे कृष्णवासुदेवस्य सामर्थ्यमस्ति, नास्ति वा तद् विजानामीति विचार्य एकार्थिका नावः=नौका ' णूमेति ' गोपयन्ति । गोपयित्वा कृष्ण वासुदेव ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्त =प्रतीक्षमाणाः तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित देव लवणाधिपतिं पश्यति=सुस्थितेन साक मिलति दृष्ट्वा तमापृच्छ्य यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एकार्थिकाया नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं करोति, कृत्वा, एकार्थिकां नावमपश्यन् एकेन बाहुना रथ सतुरग=सहाश्व,

त्तए उदाहुणो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टटु एगट्ठियाओ णावाओ णूमेंति, णूमित्ता कण्हं वासुदेव पडिवाले माणा २ चिट्ठति, तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय लवणाहिवइ, पासइ, पासित्ता जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ) जब पार होकर वे तट पर पहुँच चुके-तब परस्पर में उन्हों ने ऐसा विचार किया-हे देवानुप्रियों ! देखो कृष्ण वासुदेव गगा महानदी को हाथों से तैरकर पार करने में समर्थ हो सकते हैं या नहीं हो सकते हैं ? इस प्रकार विचार करके उन्हों ने उस एकार्थि नौका को कृष्ण वासुदेव के आने के लिये वापिस उस पार भेजा नहीं वहीं पर छिपा दिया। और छिपाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा करते वे वही ठहरे रहे। उधर-कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से जाकर मिले और उसकी आज्ञा लेकर जहां गगा नदी थी वहा आये। (उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेई, करित्ता एगट्ठिय अपासमाणे एगाए बाहाए रह सतुरगं ससारहिं गेण्हइ

महानई बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु णो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टटु एगट्ठियाओ णावाओ णूमेति, णूमित्ता कण्ह वासुदेव पडिवालेमाणा२ चिट्ठति, तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय लवणाहिवइ, पासइ, पासित्ता जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ)

પાર ઉતરીને જ્યારે તેઓ કિનારે પહોચી ગયા ત્યારે તેમણે પરસ્પર વિચાર કર્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! કૃષ્ણવાસુદેવ ગગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી શકે કે નહિ ? આમ વિચાર કરીને તેમણે તે 'એકાર્થિ' નૌકાને કૃષ્ણવાસુદેવને લાવવા માટે પાછી મોકલી નહિ પણ ત્યાજ છુપાવી દીધી અને છુપાવીને તેઓ ત્યાજ કૃષ્ણવાસુદેવની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રાધિપતિ સુસ્થિતદેવને મળ્યા અને તેની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને જ્યાં ગગા નદી હતી ત્યા આવ્યા

(उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ, करित्ता एगट्ठिय अपासमाणे एगाए बाहाए रह सतुरग ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए

ससारयिं गृह्णाति एकेन बाहुना गङ्गा महानदीं 'बासट्ठिं' द्वाषष्टिं योजनानि अर्धयोजनं च 'वित्थिन्न' विस्तीर्णाम्, उत्तरितु प्रवृत्तश्चाप्यभवत्, ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानद्या बहुमध्यदेशभाग सम्प्राप्तः सन् 'सते' श्रान्तः=श्रमप्राप्तः, 'तते' तान्तः=खिन्न 'परितते' परितान्त'=पर्याप्त खिन्नः 'बद्धसेए' समागतस्वेदः, जातश्चाप्यभवत् ।

ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्यायमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् मनोगत सकल्पः समुदपद्यत-अहो खलु पञ्च पाण्डवा महाबलवन्त', यैर्गङ्गामहानदी द्वाषष्टिं योजनानि अर्धयोजनं च वित्थिना-विस्तीर्णा बाहुभ्यामुत्तीर्णा, 'इत्थभूएहिं' इत्थभूतैः-ईदृशपराक्रमशालिभि. खलु पञ्चभिः पाण्डवैः पद्मनाभो राजा यावत् नो

एगाए बाहाए गंग महाणइं वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिन्नं उत्तरिपयत्तं यावि होत्था) वहा आकर के उन्हों ने एकार्थिक नौका की सब तरफ सब प्रकारसे मार्गणा गवेषणा की 'मार्गणागवेषण करके जब उनके देखने में एकार्थिक नौका नहीं आई, तब सारथि और घोडों से युक्त रथ को उन्हों ने एक हाथ से पकडा और एक हाथ से ६२॥, साढे बासठ, योजन विस्तीर्ण उस गगा महानदी को तैरकर पार करना प्रारभ किया। (तएण से कण्हे वासुदेवे गगा महाणईए बहुमज्झदेस भाग सपत्ते समाणे सते, तते, परितते, बद्धसेए जाए यावि होत्था, तएण कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था -अहोण पच पडवा महाबलवगा, जेहिं गगामहाणई वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा इत्थभूएहिं ण पचहिं पड

गग महाणइ वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिन्न उत्तरिपयत्ते यावि होत्था)

ત્યા આવીને તેમણે 'એકાર્થિક' નૌકાની ચોમેર બધી રીતે માર્ગણા ગવેષણા કરી માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને જ્યારે 'એકાર્થિક' નૌકા તેમના જોવામા આવી નહિ ત્યારે સારથિ અને ઘોડાથી યુક્ત રથને તેમણે એક હાથમાં ઉપાડયો અને એક હાથ વડે ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગગા મહા નદીને તરીને પાર કરવા લાગ્યા

(तएण से कण्हे वासुदेवे गगा महाणईए बहुमज्झदेस भाग सपत्ते समाणे सते, तते, परितते, बद्धसेए जाए यावि होत्था, तएण कण्हस्स वासुदे वस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहोण पच पडवा महाबलवगा जेहिं गगा महाणई वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिण्णा बाहाहिं

प्रतिषेधितः=नो पराजितः, इदमाश्चर्यम् , ततः खलु गङ्गादेवी कृष्णस्य वासुदेवस्य इममेतद्रूपमाध्यात्मिक यावत् मनोगत सङ्कल्प ज्ञात्वा ' थाह ' स्ताघ=गाधवित-रति,=ददाति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मुहूर्तान्तरे ' समासासइ ' समाश्व सिति=विश्राम प्राप्नोति समाश्वस्य गङ्गामहानदीं द्वापष्ठि यावद् उत्तरति, उत्तीर्य

वेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह वितरइ) तैरते २ जब वे कृष्णवासुदेव गंगा महानदी के ठीक मज्झ-मध्य भाग में आये-तब वहा तक आते २ वे श्रम प्राप्त हो गये, खेदखिन्न बन गये, और सर्वथा थक गये। यहा तक कि उनके शरीर भर में थकावट की वजह से पसीना २ हो गया। तब उन कृष्णवासुदेव को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ । देखो-ये पाचो पाडव बड़े बलिष्ट है-जिन्हों ने ६२॥, योजन विस्तीर्ण इस गंगा महा-नदी को हाथों से तैरकर पार कर दिया परन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात हैं-कि ऐसे पराक्रम से युक्त होते हुए भी इन पाडवों से वह पद्मनाभ राजा प्रतिषेधित नही हो सका-जीता नही जा सका। इस प्रकार के उन कृष्णवासुदेव के इस रूप इस आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प को गंगादेवी ने जानकर उन्हें थाह दे दी (अधार दिया)। (तएण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तन्तर समासासइ) थाह प्राप्त कर कृष्णवासुदेव ने वहा

भूएहिं ण पचहिं पडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह वितरइ)

તરતા તરતા જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવ ગગા મહાનદીના એકદમ મધ્યમા આવ્યા-ત્યાસુધી આવતા આવતા તો તેઓ થાકી ગયા, ખેદખિન્ન થઈ ગયા, અને એકદમ થાકી ગયા થાકને લીધે તેમનુ સપૂર્ણ શરીર પરસેવાથી તરબોળ થઈ ગયુ ત્યારે તે કૃષ્ણવાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે જુઓ આ પાચે પાડવો કેટલા બધા બલિષ્ઠ છે કે જેમણે ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે)ણ એની સાથે આ પણ એક નવાઈ જેવી વાત છે કે એવા પરાક્રમી હોવા છતાએ આ પાડવોથી તે પદ્મનાભ રાજા યાવત્ પરાજીત કરી શકાયો નહિ કૃષ્ણવાસુદેવના ગગા મહાનદીએ આ જાતના આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ જાણીને તેમના માટે થાહ આપી (तएण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तन्तर समासासइ) થાહ મેળવીને કૃષ્ણવાસુદેવે થોડીવાર ત્યા વિશ્રામ કર્યો (समासा०) विश्राम कर्या थाह तेमणे

यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्—अहो खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! महाबलवता येन युष्माभिर्गङ्गा महानदी द्वाषष्टि योजनानि अर्धयोजन च विस्तीर्णा यावत् उत्तीर्णा, इत्थभूतैर्युष्माभिः पद्मनाभो यावत् नो मतिपेधित *पराजय न प्रापितः, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः

थोड़ी देर तकविश्राम किया (समासा०) विश्राम करके फिर उन्होंने (गगा महाणइ बावट्ठिं जाव उत्तरइ,उत्तरित्ता जेणेव पचपडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी–अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महा बलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इत्थभूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पचपडवा कण्हे ण वासु देवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एवं वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो) साढे बासठ योजन विस्तीर्ण उस गगा महानदी को तैरकर पार कर दिया। पार करके फिर वे वहां आये–जहां ये पाचो पाडव थे। वहा आकर उन्हों ने उन पांचो पाडवों से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियों ! तुमलोग बहुत ही अधिक बलशाली हो जो तुमलोगों ने ६२॥ योजन विस्तीर्ण इस गगा महानदी को बाहुओं से तैरकर पार कर दिया। परन्तु यह आश्चर्य की बात हैं कि इतने बल शाली होकर भी जो तुम से पद्मनाभ राजा पराजित नही हो सका।

(गगा महाणइ बावट्ठिं जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी–अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा इत्थ भूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच पडवा कण्हे ण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विस ज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण गवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो)

૬૨” યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગગા મહાનદીને તરીને પાર પહોચી ગયા પાર પહોચીને તેઓ જયા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો કેમકે તમે લોકોએ ૬૨” યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ એક નવાઇ જેવા વાત ` ` તૂમે આટલા બધા બળવાન હોવા છતા પણ પદ્મનાભ રાજાને ૨

कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तः कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रियाः ! वय युष्माभिर्विसर्जिताः सन्तो यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैवोपागच्छामः, उपागत्य ' एगट्ठियाए ' एकार्थिकाया नावो मार्गणगवेषण कृत्वा ' तं चेव जाव णूमेमो ' तदेव=यदुक्त पूर्व तदेवात्र बोध्यमित्यर्थः-ता नावमधिरुह्य वय गङ्गामहानदीमुत्तीर्णाः, ततः खलु हे देवानुप्रियाः ! गङ्गा महानदीं बाहुभ्यामुत्तरितु भवन्तः शक्नुवन्ति नवा, इति ज्ञातु वयमेकार्थिका नौका यावद् 'णूमेमो' गोपयामः, युष्मान् ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा वय तिष्ठामः।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तेषा पञ्चाना पाण्डवानाम् एतमर्थं श्रुत्वा आकर्ण्य निशम्य हृदयेऽवधार्य आशुरुप्ताः-शीघ्र सजातकोप, यावत् त्रिवलिकां=रेखा

इस प्रकार जब कृष्णवासुदेवने उन पांचो पांडवों से कहा तब उन्हो ने कृष्णवासुदेव से ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! सुनिये-बात इस प्रकार है जब हमलोगों को आपने वहां से विसर्जित कर दिया-तब हमलोग जहा गगा महानदी थी-वहां आये-वहा आकर हमलोगों ने एकार्थिक नौका की मार्गणा गवेषणा की-नाव के मिलते ही हमलोग उसपर चढ-कर यहां गंगा नदी को पार कर आये हैं। हमलोगों ने यहा आकर फिर हे देवानुप्रिय ! ऐसा विचार किया - कि - कृष्णवासुदेव गगा महानदी को हाथों से पार कर सकते है या नही-इसी बात को जानने के लिये हमलोगो ने उस एकार्थिक नौका को यही छिपा कर रख दिया है। और आपकी प्रतीक्षा में यहा ठहरे हुए हैं। (तएण से कण्हे वासुदेवे तेसिं पचण्हं पाडवाण एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिव-

---

આ રીતે જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તે પાચે પાડવોને કહ્યું ત્યારે તેમણે કૃષ્ણવાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, વાત એવી છે કે અમને બધાને તમે જ્યારે વિદાય કર્યા ત્યારે અમે લોકો જ્યા ગગા મહાનદી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને બધાએ એકાથિક નૌકાની માર્ગણા ગવેષણા કરી નૌકા પ્રાપ્ત થતા જ અમે બધા તેમા બેસીને ગગા મહાનદીને પાર કરીને આ તરફ આવી ગયા આ તરફ આવીને હે દેવાનુપ્રિય ! અમે લોકોએ આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે-કૃષ્ણવાસુદેવ ગગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી શકશે કે કેમ ? આ વાત જાણવા માટે જ અમે લોકોએ તે એકાર્થિક નૌકાને છુપાવીને તમારી પ્રતીક્ષા કરતા અમે અહીં જ બેસી રહ્યા હતા

(तए ण से कण्हे वासुदेवे तेसिं पचण्ह पाडवाण एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलिय एव वयासी-अहोण जया मए लवणसमुद्द दुवे जोयण

यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्—अहो खलु यूय हे देवानुप्रियाः। महाबलवता येन युष्माभिर्गङ्गा महानदी द्वाषष्टि योजनानि अर्धयोजन च विस्तीर्णा यावद् उत्तीर्णा, इत्थंभूतैर्युष्माभिः पद्मनाभो यावत् नो मतिपेधित पराजय न मापितः, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः

थोड़ी देर तकविश्राम किया (समासा०) विश्राम करके फिर उन्होंने (गगा महाणइ बावट्ठि जाव उत्तरइ,उत्तरित्ता जेणेव पचपडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी-अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठि जाव उत्तिण्णा, इत्थभूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पचपडवा कण्हे ण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो) साढे बासठ योजन विस्तीर्ण उस गगा महानदी को तैरकर पार कर दिया। पार करके फिर वे वहां आये-जहां ये पाचो पाडव थे ! वहा आकर उन्हों ने उन पांचो पाडवों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुमलोग बहुत ही अधिक बलशाली हो जो तुमलोगों ने ६२॥ योजन विस्तीर्ण इस गगा महानदी को बाहुओं से तैरकर पार कर दिया। परन्तु यह आश्चर्य की बात हैं कि इतने बल शाली होकर भी जो तुम से पद्मनाभ राजा पराजित नहीं हो सका।

(गगा महाणइ बावट्ठि जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी-अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठि जाव उत्तिण्णा इत्थ भूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच पडवा कण्हे ण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण गवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो)

૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગગા મહાનદીને તરીને પાર પહોચી ગયા પાર પહોચીને તેઓ જયા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો કેમકે તમે લોકોએ ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ એક નવાઇ જેવા વાત છે કે તમે આટલા બધા બળવાન હોવા છતા પણ પદ્મનાભ રાજાને

प्रतिषेध-य-हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताक यावत् प्रतिषेध्य = सग्रामात् प्रतिनिवर्त्य-पद्मनाभ विजित्येत्यर्थः, अमरकका राजधानीं सभग्नतोरणा यावद् विनिपातिता-विध्वसिता,तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=मवद्भ्यः प्रदत्ताः, ' तयाण ' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम ' माहप्प ' माहात्म्य=महत्त्वं बलं, ' ण विण्णाय ' न विज्ञातम् ' इयाणिं ' इदानीम्-अस्मिन् समये ' जाणिस्सह ' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्ड ' परामुसइ ' परामृशति-गृह्णाति पञ्चाना पाण्डवाना रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा ' णिव्विसए आणवेइ ' निर्विषयान् आज्ञापयति-विषयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्यात इति निर्विषयास्तान्, यूय मम देशात् निर्गच्छत, इत्याज्ञापयति स्म ' इत्यर्थ । आज्ञाप्य तत्र खलु ' रहमद्दणे णाम कोट्ठे णिविट्ठे ' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्ट'-रथमर्दनपुर नाम नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तर स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वक =निज , ' खधावारे ' स्कन्धावारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-सैनिकेन सार्धम् अभिसमन्वागतः=मिलितश्चाप्यभवत् । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुप्रविशति ॥सू० २१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने हाथ से लाकर तुमलोगों को दिया उस समय तुमलोगो ने मेरे बल को नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह दंडे को उठाया-और उससे पाचो पाडवों के रथों को चूर २ कर दिया। चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी । आज्ञा देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा दिया । इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहां अपना स्कधावार था वहां

જમીનદોસ્ત કરી નાખી તેની રાજધાની અમરકકા નગરીને નષ્ટ કરી નાખી અને તેની પાસેથી દ્રૌપદીને લાવીને તમને સોપી દીધી તે વખતે તમે લોકો મારા બળને જાણી શકયા નહિ તો હવે મારા બળને તમે જુઓ-આમ કહીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે લોહદંડને હાથમા લીધો અને તેનાથી તેમણે પાચે પાડવોના રથોના ભૂકેભૂકા ઉડાવી દીધા રથોને નષ્ટ કરીને તેમણે પાચે પાડવોને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી આજ્ઞા આપીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે તે સ્થળેજ એક રથમર્દન નામે નગર વસાવ્યુ ત્યારપછી તે કૃષ્ણવાસુદેવ જ્યા પોતાના સૈન્યની છાવણી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના સૈનિકોને

त्रयुक्ता भ्रुकुटिं ललाटे उन्नीय मदर्श्य, एवमवादीत्-अहो-आश्चर्यं खलु ' जया ' यदा-यस्मिन् समये, मया लवणसमुद्र ' दुवे जोयणसयसहस्सा वित्थिण्णं ' द्वियो जनशतसहस्रविस्तीर्णं द्विलक्षयोजनपरिमित विस्तीर्णं ' वीइवइत्ता ' व्यतिव्रज्य-समुल्लङ्घ्य, पद्मनाभ राजान ' हयमहिय-जाव पडिसेहित्ता ' हतमथित-यावत्

लिय एव वयासी-अहोण जया मए लवणसमुद्द दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिन्न वीइवइत्ता पउमणाभ हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकका सभग्ग० दोवई सारत्थिं उवणीया तया ण तुब्भेहिं मम माहप्प ण विण्णाय इयाणिं जाणिस्सह, त्ति कट्टु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पडवाण रहे चूरेइ, चूरित्ता णिच्चिसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रहमद्दणे णाम कोट्टडे णिवेट्टे,तण्ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएण खधावारेण सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ) उन पाचो पाडवों के मुख से इस कथन रूप अर्थ को सुनकर और उसे अपने हृदय में अवधारित कर उन कृष्णवासुदेव को इकदम क्रोध आ गया। त्रिवलियुक्त उनकी दोनों भृकुटिया ललाटतट पर चढ गई। उसी समय उन्हों ने उन पाडवों से कहा यह बडे आश्चर्य की बात है-जिस समय मैंने २ दो लाख योजन विस्तारवाले लवणसमुद्र को उल्लघन कर पद्मनाभ राजा को सग्राम मे जीता-उस की सेना को हत मथित किया-राजचिन्हस्वरूप उसकी

सयसहस्सा विच्छिन्न वीइवइत्ता पउमणाभ हय महिय जाव पडिसेहित्ता अमरकका सभग्ग० दोवई सारत्थिं उवणीया तयाण तुब्भेहिं मम माहप्प ण विण्णाय इयाणिं जाणिस्सह, त्तिकट्टु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पडवाण रहे चूरेइ, चूरित्ता णिच्चिसए आणवेइ आणवित्ता तत्थण रहमद्दणे णाम कोट्टडे णिवेट्टे, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएण खधावारेण सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ)

તે પાચે પાડવોના મુખથી આ કથનરૂપ અર્થને સાભળીને અને તેને પોતાના હૃદયમા અવધારિત કરીને તે કૃષ્ણવાસુદેવ એકદમ ક્રોધાવિષ્ટ થઈ ગયા ત્રિવલિયુક્ત તેમના બને ભમ્મરો વક્ર થઈ ગયા તેમણે તે જ સમયે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે આ ખરેખર નવાઇ જેવી વાત છે કે જ્યારે મે ૨ લાખ યોજન વિસ્તીર્ણ લવણ સમુદ્રને ઓળગીને પદ્મનાભ રાજાને યુદ્ધમા જીત્યો, તેની સેનાને મથી નાખી, રાજચિહ્ન સ્વરૂપ તેની પ્રશસ્ત ધ્વજા પતાકાઓને

प्रतिषे ध-हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताक यावत् प्रतिषेध्य = सग्रामात् प्रतिनिवर्त्य-पद्मनाभ विजित्येत्यर्थ., अमरकका राजधानीं सभग्नतोरणा यावद् विनिपातिता-विध्वसिता,तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=भवद्भ्यः प्रदत्ता., 'तयाण' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माहप्प' माहात्म्य=महत्त्वं बल, 'ण विण्णाय' न विज्ञातम् 'इयाणिं' इदानीम्-अस्मिन् समये 'जाणिस्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्ड 'परामुसइ' परामृशति-गृह्णाति पञ्चाना पाण्डवाना रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिव्विसए आणवेइ' निर्विषयान् आज्ञापयति-विषयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्यांता इति निर्विषयास्तान्, यूय मम देशात् निर्गच्छत, इत्याज्ञापयति स्म' इत्यर्थ । आज्ञाप्य तत्र खलु 'रहमद्दणे णाम कोट्ठे णिव्विट्ठे' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्ट.-रथमर्दनपुर नाम नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तर स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वक =निज, 'खधावारे' स्कन्धावारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-सैनिकेन सार्धम् अभिसमन्वागतः=मिलितश्चाप्यभवत् । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुप्रविशति ॥सू० २१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने हाथ से लाकर तुमलोगों को दिया उस समय तुमलोगों ने मेरे बल को नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह दंडे को उठाया-और उससे पाचो पाडवों के रथों को चूर २ कर दिया। चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी। आज्ञा देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा दिया। इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कधावार था वहाँ

જમીનદોસ્ત કરી નાખી તેની રાજધાની અમરકકા નગરીને નષ્ટ કરી નાખી અને તેની પાસેથી દ્રૌપદીને લાવીને તમને સોપી દીધી તે વખતે તમે લોકો મારા બળને જાણી શકયા નહિ તો હવે મારા બળને તમે જુઓ-આમ કહીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે લોહદંડને હાથમા લીધો અને તેનાથી તેમણે પાચે પાડવોના રથોના ભૂકેભૂકા ઉડાવી દીધા રથોને નષ્ટ કરીને તેમણે પાચે પાડવોને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી આજ્ઞા આપીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે તે સ્થળેજ એક રથમર્દન નામે નગર વસાવ્યુ ત્યારપછી તે કૃષ્ણવાસુદેવ જ્યા પોતાના સૈન્યની છાવણી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના સૈનિકોને

मूलम्–तएणं ते पंच पडवा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जेणेव पंडू तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल एवं वयासी–एव खलु ताओ ! अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता, तएणं पंडुराया ते पंच पडवे एव वयासी–कहण्णं पुत्ता ! तुब्भे कण्हेण वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता?, तएण ते पच पंडवा पंडुराय एव वयासी–एव खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्द दोन्नि जोयणसयसहस्साइ वीइवइत्ता तएण से कण्ह अम्हे एव वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहाणइ उत्तरह जाव चिट्ठह ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो, तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण त चेव सव्वं नवर कण्हस्स चिंता ण जुज्जइ जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ,तएणं से पंडुराया ते पच पडवे एव वयासा–दुट्ठु णं पुत्ता ! कय कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणेहिं, तएण से पडुराया कोंति देवि सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइ कण्हस्स वासुदेवस्स णिवेदेहि- एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता तुम च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी त सदिसतुण देवाणुप्पिया पच पडवा कयर दिसिं वा विदिस

आये। वहाँ आकर वे अपने सैनिको के साथ मिले। बाद में जहा द्वारावती नगरी थी उस ओर चल दिये वहाँ पहुँच कर वे द्वारावती नगरी में प्रविष्ट हुए ॥ सू० ३१ ॥

મળ્યા, ત્યારબાદ તેઓ જે તરફ દ્વારાવતી નગરી હતી તે તરફ રવાના થયા ત્યા પહોચીને તેઓ દ્વારાવતી નગરીમા પ્રવિષ્ટ થયા ॥ સ-

वा गच्छंतु ?, तएणं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरूहइ दुरुहित्ता जहा चेट्टा जाव सदिसतु णं पिउत्था। किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती कण्ह वासुदेव एवं वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुम पच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुम च णं दाहिणड्ढभरह जाव विदिस वा० गच्छतु ?, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंति देवि एव वयासी-अपूईवयणाणं पिउत्था ! उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी त गच्छतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पडवा दाहिणिल्ल वेलाऊल तत्थ पडुमहुर णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्तिकट्टु कोंति देवि सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी जाव पडुस्स एयमट्ठ णिवेदेइ, तएणं पडू पच पडवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाऊल तत्थ णं तुब्भे पडुमहुरं णिवेसेह, तएणं पच पडवा पडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेति सबलवाहणा हयगय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमति पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरि निवेसेति निवेसित्ता तत्थ णं ते विपुलभोगसमिति समणुभागया यावि होत्था ॥ सू० ३२ ॥

टीका—' तएणं ते इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव हस्तिनापुर नगर तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यत्रैव पाण्डू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति,

-. तएणं ते पच पडवा इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते पच पडवा) वे पाचो पाडव (जेणेव हत्थिणा उरे) जहा हस्तिनापुर नगर था (तेणेव उवागच्छति) वहां

तएणं ते पच पडवा इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (ते पच पडवा) ते पाचे पाडवो (जेणेव हत्थिणा चरे) ज्या हस्तिनापुर नगर हतु (तेणेव उवागच्छति) त्या आव्या (तया

उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः-एवं खलु हे तात ! वयं कृष्णेन निर्विषयाः=विषयात् मम देशाद् बहिर्निर्गताः आज्ञप्ताः=कृष्णोऽस्मान् देशाद् बहिः निर्गन्तुमाज्ञप्तवानित्यर्थः । ततः खलु पाण्डू राजा तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-' कहण्णं' कथं केन कारणेन खलु हे पुत्र ! यूयं कृष्णेन निर्विषया आज्ञप्ताः ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुं राजानम् एवमवदन्-एवं खलु हे तात ! वयममरकङ्कातः प्रतिनिष्टत्ता लवणसमुद्रं ' दोन्निजोयणसय सहस्साइं ' द्वियोजनशतसहस्राणि द्विलक्ष योजनपरिमितं ' वीइवइत्ता ' व्यतिव्रजिताः-उल्लङ्घिताः । ततः खलु स कण्हो

आगए (उवागच्छित्ता) वहा आकर के (जेणेव पडू) वे जहा पांडु राजा थे (तेणेव उवागच्छंति) वहां गये (उवागच्छित्ता) वहा जाकर (करयल०एव वयासी) उन्हों ने अपने २ दोनों हाथों को जोड़कर उनसे इस प्रकार कहा-(एव खलु ताओ !) हे पिताजी ! सुनो-(अम्हे कण्हे ण णिव्विसया आणत्ता) हमलोगों को कृष्ण वासुदेव ने देश से निकल जाने को कहा है (तएण पडुराया पच पडवे एव वयासी) तब पाडु राजा ने उन पाचों पाडवो से इस प्रकार कहा-(कहण्ण पुत्ता तुब्भे कण्हेण वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! किस कारण को लेकर कृष्ण वासुदेव ने तुमलोगों को देश से बाहिर निकल जाने को कहा है (तएण ते पच पडवा पडुराया एव वयासी) तब उन पांचो पाडवों ने पाडु राजा से इस प्रकार कहा-(एव खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्द दोन्नि जोयणसयसहस्साइ वीइवइत्ता) हे तात !

गच्छित्ता) त्या आवीने (जेणेव पडू) तेओ ज्या पाडु राजा हता (तेणेव उवागच्छंति) त्या गया (उवागच्छित्ता) त्या जईने (करयल० एव वयासी) तेमणे पोतपोताना ओ ने हाथो जोडीने तेमने आ प्रमाणे विनती करी के (एव खलु ताओ) हे पिता ! साभळो, (अम्हे कण्हेण णिव्विसया आणत्ता) कृष्णवासुदेवे अमने देशथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे (तएण पडु राया पच पडवे एव वयासी) त्यारे पाडु राजाओ पाचे पाडवोने आ प्रमाणे कहु के-(कहण्ण पुत्ता तु-भे कण्हेण वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! कृष्णवासुदेवे शा कारणथी तमने देशमाथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे ? (तएण ते पच पडवा पडुराया एव वयासी) त्यारे ते पांचे पाडवोओ पाडु राजाने आ प्रमाणे कहु के-(एव खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवण-समुद्द दोन्नि जोयणसयसहस्साइ वीइवइत्ता) हे [illegible] ! साभळो,

ऽस्मान् एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! गङ्गामहानदीमुत्तरत, यावत् तिष्ठत । तावद अह एव तहेव ' जाव चिट्ठामो ' एवं यथा कृष्णवासुदेवस्य वाक्य पूर्वमुक्त तथैवात्र बोध्यम्-तावदह सुस्थित लवणाधिपतिं पश्यामीति । ' जाव चिट्ठामो ' यावत्तिष्ठामः-अत्र यावच्छब्देनैवं योजनीयम्-ततः खलु वय कृष्णवासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो नौकया गङ्गामहानदीमुत्तीर्य, कृष्णो बाहुभ्यां गङ्गा महानदीमुत्तरितु समर्थो न वेति विज्ञातु ता नौका सगोपितवन्त, ततः कृष्ण प्रतीक्षमाणास्तिष्ठाम इति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित लवणाधिपतिं दृष्ट्वा, ' त चेव सव्व ' तदेव सर्वं-गङ्गामहानद्यास्तटे समागत्य, एकार्थिका नाव-

---

सुनो-बात इस प्रकार है-जब हमलोग अमरकका नगरी से पीछे आकर २, दो लाख योजन विस्तार वाले लवणसमुद्र को पार कर चुके (तएण) तब (से कण्हे अम्हं एव वयासी) उन कृष्ण वासुदेव ने हमलोगों से इस प्रकार कहा-(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गगा महाणइ उत्तरह जाव चिट्ठह-ताव-अह एव तहेव जाव चिट्ठामो) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग चलो और गगा महानदी को पारकरो-तब तक मैं सुस्थित देव से मिलकर और आज्ञा प्राप्तकर आता हूँ। कृष्ण वासुदेव द्वारा इस प्रकार आज्ञप्त हुए हमलोगों ने नौका से गगा महानदी को पार करके वही पर उस नौका को छुपा दिया-इस अभिप्रायसे कि देखें कृष्ण वासुदेव अपने हाथों से तैर कर इस गगा महानदी को पार कर ने में समर्थ हो सकते हैं या नही। नौका को छिपाकर हमलोग वही पर उनकी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे। (तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय लवणाहिवइ

વાત આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે અમે અમરકકા નગરીથી પાછા વળતા ૨ લાખ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળા લવણ સમુદ્રને પાર કરી ચૂકયા (तएण) ત્યારે (से कण्हे अम्ह एव वयासी) તે કૃષ્ણવાસુદેવે અમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(गच्छइण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गगा महाणइ उत्तरह जाव चिट्ठह-ताव अह एव तहेव जाव चिट्ठामो) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને ગગા મહાનદીને પાર કરો તેટલામા હુ સુસ્થિત દેવને મળીને અને તેમની પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને આવુ છુ આ પ્રમાણે કૃષ્ણવાસુદેવ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા અમે નૌકા વડે ગગા મહાનદીને પાર કરીને ત્યા જ તે નૌકાને છુપાવી દીધી નૌકાને છુપાવવા પાછળ અમારો એ જાતનો આશય હતો કે કૃષ્ણવાસુદેવ પોતાના હાથોથી તરીને ગગા મહાનદીને પાર કરી શકે છે કે નહિ ? નૌકાને છુપાવીને અમે ત્યા જ તેમની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા (तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं

उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः-एवं खलु हे तात ! वयं कृष्णेन निर्विषयाः=विषयाद् मम देशाद् बहिर्निर्गताः आज्ञप्ताः=कृष्णोऽस्माद् देशाद् बहि र्निर्गन्तुमाज्ञप्तवानित्यर्थः । ततः खलु पाण्डू राजा तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-' कहण्णं' कथं केन कारणेन खलु हे पुत्र ! यूयं कृष्णेन निर्विषया आज्ञप्ताः ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुं राजानम् एवमवदन्-एवं खलु हे तात ! वयममरकङ्कातः प्रतिनिष्क्रान्ता लवणसमुद्रं ' दोन्निजोयणसय सहस्साइं ' द्वियोजनशतसहस्राणि द्विलक्ष योजनपरिमितं ' वीइवइत्ता ' व्यतिव्रजिताः-उल्लङ्घिताः । ततः खलु स कृष्णो

आगए (उवागच्छित्ता) वहा आकर के (जेणेव पडू) वे जहा पांडु राजा थे (तेणेव उवागच्छंति) वहा गये (उवागच्छित्ता) वहा जाकर (करयल०एव वयासी) उन्हों ने अपने २ दोनों हाथों को जोड़कर उनसे इस प्रकार कहा-(एवं खलु ताओ !) हे पिताजी ! सुनो-(अम्हे कण्हेण णिव्विसया आणत्ता) हमलोगों को कृष्ण वासुदेव ने देश से निकल जने को कहा है (तएणं पडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) तब पांडु राजा ने उन पांचों पांडवो से इस प्रकार कहा-(कहण्णं पुत्ता तुब्भे कण्हेण वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! किस कारण को लेकर कृष्ण वासुदेव ने तुमलोगों को देश से बाहिर निकल जाने को कहा है (तएणं ते पंच पंडवा पंडुराया एवं वयासी) तब उन पांचो पांडवों ने पांडु राजा से इस प्रकार कहा-(एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे तात !

गच्छित्ता) त्या आवीने (जेणेव पडू) तेओ क्यां पांडु राजा हता (तेणेव उवागच्छंति) त्या गया (उवागच्छित्ता) त्या जईने (करयल० एवं वयासी) तेमणे पोतपोताना बन्ने हाथो जोडीने तेमने आ प्रमाणे विनती करी के (एवं खलु ताओ) हे पिता ! सांभळो, (अम्हे कण्हेण णिव्विसया आणत्ता) कृष्णवासुदेवे अमने देशथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे (तएणं पंडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) त्यारे पांडु राजाओ पांचे पांडवोने आ प्रमाणे कहुं के-(कहण्णं पुत्ता तुब्भे कण्हेण वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! कृष्णवासुदेवे शा कारणथी तमने देशमाथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे ? (तएणं ते पंच पंडवा पंडुराया एवं वयासी) त्यारे ते पांचे पांडवोओ पांडु राजाने आ प्रमाणे कहुं के-(एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवण-समुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे पिता ! सांभळो,

नगरीं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एव खलु हे देवानुप्रियाः ! युष्माभि' पञ्च पाण्डवा निर्विषयाः देशनिष्कासिता' आज्ञप्ताः, यूय च खलु हे देवानुप्रियाः ! दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिन । ' त ' तत्=तस्मात् सदिशन्तु=कथयन्तु हे देवानुप्रिया । ते पञ्च पाण्डवाः कतरा दिश विदिश वा गच्छन्तु ? यतोऽयेव सर्वे देशा', तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्त । तत. खलु सा कुन्ती पाण्डुना राज्ञैवमुक्ता सती हस्तिस्कन्ध दूरोहति-आरोढयति-दूरुह ' जहाहेट्ठा '

देवाणुप्पिया ! बारवइ कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पंच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, त सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ते पच पडवा कयर दिसि वा विदिसि वा गच्छतु ?) तब पांडु राजा ने उन पाचों पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगो ने यह सुन्दर काम नहीं किया जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हें नहीं रुचने वाला काम किया इस प्रकार कहकर पांडु राजा ने उसी समय कुती देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो -कि आपने पाच पाडवो को देश से बाहिर निकल जानेके लिये आज्ञा दी है-सो हेदेवानुप्रिय ! आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-अत. कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जब आपके ही सर्व देश हैं-तो ये कहाँ जावें आप कहें । (तएण सा कोती

वित्ता एव वयासी-गच्छहइ ण तुम देवाणुप्पिया ! बारव कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहिं एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, त सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ते पच पडवा कयर दिसिं वा विदिसि वा गच्छतु ?)

ત્યારે પાડુ રાજાએ તે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તમે લોકોએ કૃષ્ણવાસુદેવનુ બુરૂ કરીને સારૂ કર્યું નથી તેમને અણુગમતુ કામ તમે કર્યું છે આ પ્રમાણે કહીને પાડુ રાજાએ તે જ વખતે કુતી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ,કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને વિનતી કરો કે તમે પાંચે પાડવોને દેશથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી છે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે દક્ષિણાર્ધ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ છો તો બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય જ્યારે બધા દેશો તમારા જ છે ત્યારે બતાવો કે આ લોકો કયા જાય ?

महद्भ्या एकेन बाहुना रथ मतुरग ससारथि गृहीत्वा, एकेन बाहुना गङ्गामहानदी मुत्तीर्य, समागत. । ' नवर कण्हस्स चिंता न घुज्झइ ' नवर कृष्णस्य चिन्ता न बुध्यते नवर=विशेषस्तु हे तात ! नौकाया सगोपिताया तस्या कृष्णः केनोपायेन गङ्गामहानदी तरिष्यति इति चिन्ताऽस्माभिर्न बुध्यते=न क्रियतेस्म, अनेनापरा धेन ' जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ ' यावत्-रथाश्वूर्णीकरणाज्ज्ञार निर्विषयान् आज्ञापयति । ततस्तदनन्तर स पाण्डु राजा तान पञ्चपाण्डवानेवमवादीत्- ' दुरुहुण ' दुष्टु=भशोभन खलु हे पुत्राः ! कृत युष्माभिः कृष्णस्य वासुदेवस्य विप्पिय ' विप्रियम्-अनिष्टम् कुर्वद्भिः, तत खलु स पाण्डु राजा कुन्तीं देवीं शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिये ! द्वारवतीं

दट्ठुण तचेव सव्व-नवर कण्हस्स चिंता न जुज्झति जाव अम्हे णिव्वि सये आणवेइ) बाद में कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर ज्यो ही गगा महानदी के तट पर आये-तो उन्हें वह नौका नही मिली-इस कारण वे १ एक हाथ से तुरग एव सारथि युक्त रथ को ले दूसरे हाथ से गगा महानदी को तैर कर जहा हमलोग थे-वहा आ गये। "कृष्णजी किस तरह गगा महानदी को पार करेंगे" यह विचार हमयोगो ने नौका को छिपाते समय नहीं किया। इसी अपराध से उन्हों ने हमारे रथों को चकना चूर कर देश से बाहिर निकल जाने के लिये आज्ञा दी है। (तएण से पडुराया ते पच पडवा एव वयासी-दुट्ठुण पुत्ता ! कय कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं-तएण से पडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुम

लवणाहिवइ दट्ठुण त चेव सव्व-नवर कण्हस्स चित्ता न जुज्जति जाव अम्हे णिव्विसये आणवेइ) त्यारपछी कृष्णवासुदेव लवण समुद्रना अधिपति सुस्थित देवने मणीने ज्यारे गगा महानदीना किनारा उपर आव्या त्यारे तेमने नौका जडी नहि त्यारे तेओ એક હાથમા ઘોડા અને સારથિ સહિત રથને ઉચકીને બીજા હાથથી ગગા મહાનદીને તરીને જ્યા અમે હતા त्या आवी गया "कृष्णवासुदेव केवी रीते गगा महानदीने पार करशे" नौकाने छुपावता अमे आ विषे विचार જ કર્યો નહોતો આ અપરાધથી તેમણે અમારા રથોને નષ્ટ કરી નાખ્યા અને અમને દેશની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા કરી છે

(तएण से पडुराया ते पच पडवे एव वयासी-दुट्ठुण पुत्ता ! कय कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणेहिं-तएण से पडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दा

नगरीं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एव खलु हे देवानुप्रियाः ! युष्माभिः पञ्च पाण्डवा निर्विषयाः देशनिष्कासिताः आज्ञप्ताः, यूयं च खलु हे देवानुप्रियाः ! दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिन । ' त ' तत्=तस्मात् सदिशन्तु=कथयन्तु हे देवानुप्रिया ! ते पञ्च पाण्डवाः कतरा दिशं विदिशं वा गच्छन्तु ? भवतामेव सर्वे देशाः, तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्त । तत. खलु सा कुन्ती पाण्डुना राज्ञैवमुक्ता सती हस्तिस्कन्धं दूरोहति-आरोहयति-दूरुह्य ' जद्दाहेट्ठा '

देवाणुप्पिया ! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, त सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ते पच पडवा कयर दिसिं वा विदिसि वा गच्छतु ?) तब पांडु राजा ने उन पाचों पाडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगो ने यह सुन्दर काम नही किया जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हे नहीं रुचने वाला काम किया इस प्रकार कहकर पांडु राजा ने उसी समय कुती देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो -कि आपने पाच पाडवो को देश से बाहिर निकल जानेके लिये आज्ञा दी है-सो हेदेवानुप्रिय ! आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जब आपके ही सर्व देश हें-तो ये कहां जावें आप कहें । (तएण सा कोती

वित्ता एव वयासी-गच्छहइ ण तुम देवाणुप्पिया ! बारव कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहिं एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, त सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ते पच पडवा कयर दिसिं वा विदिसि वा गच्छतु ?)

ત્યારે પાડુ રાજાએ તે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તમે લોકોએ કૃષ્ણવાસુદેવનુ બુરૂ કરીને સારૂ કર્યું નથી તેમને અણુગમતુ કામ તમે કર્યું છે આ પ્રમાણે કહીને પાડુ રાજાએ તે જ વખતે કુતી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ,કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને વિનતી કરો કે તમે પાચે પાડવોને દેશથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી છે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે દક્ષિણાર્ધ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ છો તો બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય જ્યારે બધા દેશો તમારા જ છે ત્યારે બતાવો કે આ લોકો કયા જાય ?

यथा अधः, यथापूर्वं द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि चो यम् यावत् सदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैव बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन सत्कृता स्नाता कृतभोजना सुखासनवरगताऽभवत् इति, ततस्तां कृष्ण पृच्छति सदिशन्तु=कथयन्तु खलु हे

पडुणा एव वुत्ता समाणी, हत्थिखधं दुरुहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव सदिसतु ण पिउत्था ! किमागमणपओयण ? तएण सा कोंती कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणड्ढ भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्हे वासुदेवे कोतीदेविं एव वयासी-अपूई वयणा ण पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, बलदेवा, चक्कवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थ पडुमहुर णिवेसतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्टु कोंती देविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ) पाडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी हाथी पर चढी और चढ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह वहा पहुँची। यहा यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका सबन्ध लगा लेना चाहिये-जब कुती द्वारावती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया। बडे ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुतीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निवट कर आनद के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुखासन पर

(तएण सा कोंती पडुणा एव वुत्ता समाणि, हत्थिखध दुरुहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव सदिसतु ण पिउत्था ! किमागमणपओयण ? तएण सा कोंती कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणड्ढ भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्हे वासुदेवे कोंती देविं एव वयासी-अपूई वयणा ण पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, बलदेवा, चक्कवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल्लतत्थ पडुमहुर णिवेसतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्टु कोंती देविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)

આ પ્રમાણે પાડુ વડે આજ્ઞાપિત થયેલી કુતી દેવી હાથી ઉપર સવાર થઈ અને સવાર થઇને પહેલા જેમ તે દ્વારાવતી નગરી ગઈ હતી તેમજ અત્યારે પણ પહોચી અહીં યાવત્ શબ્દથી આ જાતનો પાઠ સમજવો જોઇએ કે જ્યારે કુતી દ્વારાવતી નગરીમા આવી ત્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તેમનો ખૂબ જ સત્કાર કર્યો બહુ જ ઠાઠથી તેમનો પ્રવેશો સવ ઉજવ્યો કુતીએ પણ સ્નાન વગેરે નિત્યકર્મોથી પરવારીને સુખેથી ચતુર્વિધ આહાર કર્યો ત્ય ^ ^ મ

पितृष्वसः ! किमागमनप्रयोजनम् ', ततः खलु सा कुन्ती कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—एव खलु हे पुत्र ! त्वया पञ्च पाण्डवा निर्विषया आज्ञप्ताः त्व च खलु दक्षिणार्धभरतस्य यावत् स्वामी, तत् कथय ते पञ्च पाण्डवाः कतरा दिश विदिश वा गच्छन्तु ?। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं देवीमेवमवादीत्–' अपूइवयणा ण ' अपूतिवचनाः=सकृद्वचनाः खलु हे पितृष्वसः ! उत्तमपुरुषाः वासुदेवा बलदेवाश्चक्रवर्तिन', ' त ' तत्–तस्मात् गच्छन्तु खलु हे देवानुप्रिये ! पञ्च पाण्डवाः ' दाहिणिल्ल ' वेलाऊल ' दाक्षिणात्य वेलाकूल–दक्षिणसमुद्रतटम् , तत्र ' पडुमहुर ' पाण्डुमथुरा नगरीं ' णिवेसतु ' निवेशयन्तु, ममादृष्टसेवका भवन्तु,

---

उन्होंने आराम किया। इतने में कृष्ण वासुदेव ने जब वे चि श्राम कर चुकीं उन से पूछा-कहिये भुआ जी ! किस प्रयोजन को लेकर यहां आपका आगमन हुआ है तब कुती ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा हे पुत्र ! आनेका प्रयोजन इस प्रकार है-तुमने जो पाचों पाडवों को अपने देश से बाहिर निकल जाने की आज्ञा दी है-सो इस विषय में यह पूछना है कि तुम तो दक्षिणार्ध भरत के अधिपति हो अत हमें समझाइये कौनसी दिशा या विदिशा में जावें ? इस प्रकार कुतीदेवीके मुखसे सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उससे ऐसा कहा-हे भुआ जी-उत्तम पुरुष, वासुदेव, बलदेव, एव चक्रवर्ती ये सब अपूतिवचन वाले होते हैं-जो कुछ कहते हैं वह एक ही बार कहते हैं-उसमें परिवर्तन नहीं होता है-इसलिये हे देवानुप्रिय ! पाचों पांडव दक्षिणसमुद्र पर जावे और वहा पांडु मथुरा नगरी को बसावें-स्थापित करें-और मेरे अदृष्ट सेवक

માટે તેમણે સુખાસન ઉપર આરામ કર્યો જ્યારે તેઓ સારી રીતે વિશ્રામ કરી ચૂકયા ત્યારે તેમને કૃષ્ણવાસુદેવે પૂછયુ કે-બોલો, ફોઇબા, શા કારણથી તમે અહીં પધાર્યા છો ? ત્યારે કુતીએ કૃષ્ણવ સુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર ! હુ એટલા માટે આવી છુ કે તમે પાચે પાડવોને પોતાના દેશમાથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા કરી છે તો આ વિષે મારે આ વાતનુ સ્પષ્ટી કરણ કરવું છે કે તમે તો દક્ષિણાર્ધ ભરતના અધિપતિ છો, તો આવી પરિ સ્થિતિમા તમે જ અમને બતાવો કે તેઓ કઇ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય ? આ પ્રમાણે કુતી દેવીના મુખથી બધી વાત સાભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ફોઇબા ! વાસુદેવ, બળદેવ અને ચક્રવર્તી આ બધા ઉત્તમ પુરૂષો અપ્રતિ વચનવાળા હોય છે-તેઓ જે કઈપણ કહે છે તે એકજ વાર કહે છે તેમા કોઈ પણ જાતનો ફેરફાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! પાચે પાડવો દક્ષિણ સમુદ્ર તરફ જાય અને ત્યા પાડુ મથુરા

यथा अधः, यथापूर्वं द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि वो यम् यावत् सदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैव वोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन गतहृता स्नाता कृतभोजना सुखासनवरगताऽभवत् इति, ततस्ता कृष्ण पृच्छति सदिशन्तु=कथयन्तु खलु हे

पडुणा एव वुत्ता समाणी, हत्थिखध दुरुहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव सदिसतु ण पिउत्था ! किमागमणपओयण ? तएण सा कोंती कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणड्ढ भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्हे वासुदेवे कोंतीदेविं एव वयासी-अपूई वयणा ण पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, वलदेवा, चक्कवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थ पडुमहुर णिवेसतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्टु कोंती देविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ) पाडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी हाथी पर चढी और चढ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह वहा पहुँची। यहा यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका सबन्ध लगा लेना चाहिये-जब कुती द्वारावती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया। बडे ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुतीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निवट कर आनद के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुखासन पर

(तएण सा कोंती पडुणा एव वुत्ता समाणि, हत्थिखध दुरुहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव सदिसतु ण पिउत्था ! किमोगमणपओयण ? तएण सा कोंती कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणड्ढ भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्हे वासुदेवे कोंती देविं एव वयासी-अपूई वयणा ण पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, वलदेवा, चक्कवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल्ल तत्थ पडुमहुर णिवेसतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्टु कोंती देविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)

આ પ્રમાણે પાડુ વડે આજ્ઞાપિત થયેલી કુતી દેવી હાથી ઉપર સવાર થઈ અને સવાર થઇને પહેલા જેમ તે દ્વારાવતી નગરી ગઈ હતી તેમજ અત્યારે પણ પહોચી અહી યાવત્ શબ્દથી આ જાતનો પાઠ સમજવો જોઇએ કે જ્યારે કુતી દ્વારાવતી નગરીમા આવી ત્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તેમનો ખૂબ જ સત્કાર કર્યો અહુ જ ઠાઠથી તેમનો પ્રવેશોત્સવ ઉજવ્યો કુતીએ પણ સ્નાન વગેરે નિત્યકર્મોથી પરવારીને સુખેથી ચતુર્વિધ આહાર કર્યો ર વિશ્રામ

इति कृत्वा कुन्ती देवीं सत्कारयति समानयति, सत्कार्य, समान्य यावद् विसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिनमारुह्य हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डो राज्ञ एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डु राजा पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे पुत्रा' ! 'दाक्षिणिल्ल वेलाकूल' दाक्षिणात्यवेलाकूल-दक्षिणसमुद्रतट, तत्र खलु यूय पाण्डुमथुरा नगरीं निवेशयत ।

होकर रहें । इस प्रकार करके उन्हों ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें अपने यहा से विदा दिया । (तएण सा कोंती देवी जाव पडुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे पुत्ता ! दाक्षिणिल्ल वेलाउल तत्थण तुब्भे पडुमहुर णिवेसेह तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमति,पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरिं णिवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था) वहा से हाथी के ऊपर बैठ कर कुतीदेवी हस्तिनापुरमें आगई, यावत पाडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्हो ने सुना दिया। इसके बाद पाडु राजा ने पांचों पाडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहा से दक्षिण दिग्वर्ती समद्र तट पर जाओ और वहा पाडु मथुरा

નગરીને વસાવે અને મારા અદૃષ્ટ સેવકો થઇને ત્યા નિવાસ કરે આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુતી દેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુતીદેવીને ત્યાથી વિદાય કર્યા

(तएण सा कोंती देवी जाव पडुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे पुत्ता ! दाक्षिणिल्ल वेलाउल तत्थण तुब्भे पडुमहुर णिवेसेह तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरिं णिवेसेंति निवेसित्ता, तत्थण ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था)

त्याथी हाथी ઉપર સવાર થઇને કુતીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયા યાવત્ કૃષ્ણવાસુદેવની જે કઇ આજ્ઞા હતી તે પાડુ રાજાને કહી સભળાવી ત્યારપછી પાડુ રાજાએ પાચે પાડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્રો ! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યા પાડુ-મથુરા નગરીને વસાઓ પિતા પાડુ ર —આ પ્રમાણે

तत खलु पञ्च पाण्डवाः पाण्डो राज्ञो वचन यावत्-' तहत्ति ' तथाऽस्तु ' इति कृत्वा प्रतिशृण्वन्ति = स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य सबलवाहनाः-सैन्ययानसहिताः, हयगजरथपदातिसपरिवृताः, हस्तिनापुरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव ' दाहिणिल्लं वेलाऊल ' दाक्षिणात्य वेलाकूल तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पाण्डुमथुरा नगरीं निवेशयन्ति निवेश्य तत्र खलु ते विपुलभोगसमिति समत्या-गताश्चाप्यभवन् ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी अन्नया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था, तएण सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूव दारगं पयाया सूमालणिव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूव गुणनिप्फन्न नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्ह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्ज पडुसेणे, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेंतिपडुसेणत्ति, वावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समोसढा परिसा निग्गया पडवा निग्गया धम्म सोच्चा एव ज णवर देवाणुप्पिया ! दोवइ देवि आपुच्छामो पडुसेण च

नगरी को बसाओ। पिता पाडु राजा की इस आज्ञा को उन पाचों पाडवो ने "तहत्ति" कहकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर वे हय, गज, रथ, एव पदातिरूप चतुरगिणी सेना से परिवृत होकर हस्तिनापुर नगर से निकले और निकलकर जहा दाक्षिणात्य वेलाकूल था वहां आये-वहां आकर उन्हो ने पाडु मथुरा नगरी को बसाया। बसाकर वहा के विपुल भोगों को भोगते हुए रहने लगे ॥ सू० ३२ ॥

આજ્ઞાને તે પાચે પાડવોઓ "તહત્તિ" કહીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કરીને તેઓ ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળવાળી ચતુરગિણી સેનાની સાથે હસ્તિના પુર નગરથી બહાર નીકળ્યા-અને નીકળીને જ્યા દક્ષિણ દિશાનો સમુદ્રનો કિનારો હતો ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેમણે પાડુ-મથુરા નગરી વસાવી . વસાવીને તેઓ ત્યા પુષ્કળ કામભોગો ભોગવતા રહેવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર ૩૨ ॥

इति कृत्वा कुन्तीं देवीं सत्कारयन्ति संमानयन्ति, सत्कार्य, संमान्य यावद् विसर्जयन्ति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिनमारुह्य हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डो राज्ञ एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डू राजा पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे पुत्राः ! 'दाहिणिल्लं वेलाऊलं' दाक्षिणात्यवेलाकूलं-दक्षिणसमुद्रतट, तत्र खलु यूय पाण्डुमथुरा नगरीं निवेशयत ।

होकर रहें । इस प्रकार कहकर उन्हों ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें अपने यहां से विदा दिया । (तएणं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थणं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था) वहां से हाथी के ऊपर बैठ कर कुंतीदेवी हस्तिनापुरमें आगई, यावत पांडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्हों ने सुना दिया । इसके बाद पांडु राजा ने पांचों पांडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहां से दक्षिण दिग्वर्ती समुद्र तट पर जाओ और वहां पांडु मथुरा

નગરીને વસાવે અને મારા અદૃષ્ટ સેવકો થઈને ત્યાં નિવાસ કરે આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુંતી દેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુંતીદેવીને ત્યાંથી વિદાય કર્યાં

(तएणं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थणं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति निवेसित्ता, तत्थणं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था)

ત્યાંથી હાથી ઉપર સવાર થઈને કુંતીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયા યાવત્ કૃષ્ણવાસુદેવની જે કંઈ આજ્ઞા હતી તે પાંડુ રાજાને કહી સંભળાવી ત્યારપછી પાંડુ રાજાએ પાંચે પાંડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્રો ! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યાં પાંડુ-મથુરા નગરીને વસાઓ પિતા પાંડુ ર -આ પ્રમાણે

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् ' आवण्णसत्ता ' आपन्नसत्त्वा=गर्भवती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु संपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुरूप सुन्दर दारक=बालक ' पयाया ' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक-सुमाल=सुकुमारपाणिपाद, ' णिव्वत्तबारसाहस्स ' निर्वृत्तद्वादशाहस्स-समाप्त द्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूप गुणनिष्पन्न नामधेय कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेष दारकः पञ्चानां पाण्डवाना पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, 'त' तत्-तस्माद्

-:तएण सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) गर्भावस्थासे सपन्न हुई। (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारगं पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया । यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सूमालणिव्वत्तबारसाहस्सइम एयारूव गुणनिप्फन्न नामधिज्ज करेंति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्ज पडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे। जब बारहवां दिन लगा -तब माता पिताओ ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्-यह पुत्र हम पाचो पाडवो का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (सा दोवई देवी) તે દ્રૌપદી દેવી (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) સગર્ભા થઇ (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारग पयाया) જ્યારે ગર્ભ નવ માસ ૭॥ દિવસનો થઇ ગયો ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો, તે બાળક ખૂબ જ સુન્દર હતુ

(सूमालणिव्वत्तबारसाहस्स इम एयारूव गुणनिप्फन्न नामधिज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह एसदारए पचण्ह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्ह इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पडुसेणे)

તેના હાથ પગ વગેરે બધા અવયવો ખૂબ જ સુકોમળ હતા જ્યારે બારમો દિવસ આવ્યો ત્યારે માતા-પિતાએ તે પુત્રનુ નામ તેના ગુણો વિષે વિચાર કરતા આ પ્રમાણે રાખ્યુ કે આ પુત્ર અમારા પાચે પાડવોનો છે,

कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया ! अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइ देविं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! कि करेसि ?, तएण सा दोवई देवी ते पंच पडवे एव वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलवे वा जाव भविस्सइ ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहि सद्धिं पव्वइस्सामि, तएण ते पच पडवा पडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएण ते पच पडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं रायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेण राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइ अहिज्जंति अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहि अप्पाण भावेमाणा [९२] २॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् ' आवण्णसत्ता ' आपन्नसत्त्वा=गर्भवती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु सपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुरूप सुन्दर दारक=बालकं ' पयाया ' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक-सुमाल=सुकुमारपाणिपाद, ' णिव्वत्तबारसाहस्स ' निर्वृत्तद्वादशाहस्स-समाप्त द्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूप गुणनिष्पन्न नामधेयं कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेष दारकः पञ्चाना पाण्डवाना पुत्रो द्रौपद्या आत्मज', 'त' तत्-तस्माद्

-:तएण सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) गर्भावस्थासे सपन्न हुई । (तएणं सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारग पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया । यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सूमालणिव्वत्तबारसाहस्सइम एयारूव गुणनिप्फन्नं नामधिज्ज करेंति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्हं पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्ज पडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे । जब बारहवां दिन लगा -तब माता पिताओ ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्-यह पुत्र हम पाचो पाडवो का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (सा दोवई देवी) તે દ્રૌપદી દેવી (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) સગર્ભા થઈ (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारग पयाया) જ્યારે ગર્ભ નવ માસ ૭॥ દિવસનો થઈ ગયો ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો, તે બાળક ખૂબ જ સુન્દર હતુ

(सूमालणिव्वत्तबारसाहस्स इम एयारूव गुणनिप्फन्न नामधिज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह एसदारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्ह इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पडुसेणे)

તેના હાથ પગ વગેરે બધા અવયવો ખૂબ જ સુકોમળ હતા જ્યારે બારમો દિવસ આવ્યો ત્યારે માતા-પિતાએ તે પુત્રનુ નામ તેના ગુણો વિષે વિચાર કરતા આ પ્રમાણે રાખ્યુ કે આ પુત્ર અમારા પાચે પાડવોનો છે,

कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया ! अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुह देवाणुप्पिया !, तएणं ते पंच पडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुम देवाणुप्पिए ! कि करेसि ?, तएण सा दोवई देवी ते पंच पडवे एवं वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलवे वा जाव भविस्सइ ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धि पव्वइस्सामि, तएण ते पच पडवा पडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएण ते पच पडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं रायाण आपुच्छंति, तएण से पंडुसेण राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइ अहिज्जति अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा [९२]

अथ कदाचित् तत्र-' थेरा समोसढा ' स्थविराः समवसृताः, परिनिर्गता, पाण्डवा अपि स्थविराणा वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवा प्रतिबुद्धा. सन्त एवमवदन्-यत् नवर हे देवानुप्रिया. द्रौपदी देवीमापृच्छामः, पाण्डुसेन च कुमार राज्ये स्थापयाम, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्या गृह्णीम., तदा स्थविरा ऊचुः-' अहासुह देवानुप्पिया ! ' हे देवानुप्रिया यथासुख=सुख यथा भवति तथा कुरुत, अत्र विलम्बेन इति भाव । तत खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वक गृह तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदी देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमवदन्-एव खलु हे देवानुप्रिये ! वय स्थविरा-

व्यतीत करने लगा। एक समय की बात है कि पाडु मथुरा नगरी में स्थविरो का आगमन हुआ। स्थविरों का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वदना एव धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने २ घर से निकले पाचों पाडव भी निकले- परिषद को आयी हुई देखकर स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद पीछे चली गई। पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गये-उसी समय उन्हों ने उन स्थविरों से कहा-हे देवानुप्रियो ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूछकर और पाडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियो के समीपमुडित होकर यावत् प्रव्रज्या अगीकार करना चाहते हैं। पांडवो की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरों ने पाडवो से इस प्रकार कहा-(अहासुह देवाणुप्पिया ! तएण ते पच पडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देवि सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी एवं खलु देव णुप्पिया !

સ્થવિરો પધાર્યા સ્થવિરોના આગમનની જાણ થતા નગરીના બધા લોકો તેમની વદના તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે પોતપોતાના ઘેરથી નિકળ્યા, પાચે પાડવો પણ ત્યા પહોચ્યા પરિષદને આવેલી જોઇને સ્થવિરોએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને પરિષદ જતી રહી પાડવો ને ધર્મનો ઉપદેશ સાભળીને પ્રતિબોધિત થઇ ગયા તેમણે તે જ સમયે સ્થવિરોને વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમે દ્રૌપદી દેવીને પૂછી તેમજ પાડુસેન કુમારને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને તમારી પાસે મુડિત થઇને યાવત્ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની અભિલાષા રાખીએ છીએ પાડવોની આ જાતની હાર્દિક ઇચ્છા જાણીને તે સ્થવિરોએ તે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-

(अहासुह देवाणुप्पिया ! तएण ते पच पडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी, एव

नवनु अस्माकमस्य दारकस्य नामधेय 'पाण्डुसेन' इति। ततः खलु तस्य दारकस्याम्बापितरौ नामधेयं कुर्वन्ति-'पाण्डुसेन' इति। 'बावत्तरिं कलाओ' द्वासप्ततिं कलाः शिक्षिताः, यावद् भोगसमर्थो जातः, राजकन्या परिणीय युवराजो यावत् मानुष्यकान् भोगान् भुञ्जानो विहरति-आस्ते।

उत्पन्न हुआ है-अतः हमारे इस पुत्र का नाम पाण्डुसेन होना चाहिये (तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति) इस ख्याल से उन्हों ने उस नवजात पुत्र का नाम पांडुसेन रख दिया। (बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ थेरा समोसढा, परिसा निग्गया, पढवा निग्गया, धम्मं सोच्चा एवं वयासी जं णवरं देवानुप्पिया! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवानुप्पिया! अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो) पाण्डुसेन कुमार को ७२ कलाओं में निपुण बनाने के लिये माता पिताने उसे कलाचार्य के पास भेज दिया। धीरे २ वह ७२, कलाओं में निष्णात बन गया। यावत् भोग भोगने के लायक अवस्था सपन्न भी हो गया। राजकन्याओं के साथ इसका वैवाहिक सबन्ध कर के पिताओं ने इसे युवराज पद प्रदान भी कर दिया-यावत् यह मनुष्यभव सबन्धी काम सुखो को अनुभव करता हुआ अपने समय को आनन्द के साथ

તેમજ દ્રૌપદી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો છે, એટલા માટે અમારા આ પુત્રનુ નામ પાંડુસેન હોવુ જોઇએ

(तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति)

આ વિચારથી તેમણે તે નવજાત પુત્રનુ નામ પાંડુસેન રાખ્યુ

(बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समोसढा, परिसा निग्गया, पढवा निग्गया धम्मं सोच्चा एवं वयासी जं णवरं देवानुप्पिया! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो तओपच्छा देवाणुप्पिया! अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो)

પાંડુસેન કુમારને ૭૨ કળાઓમા નિપુણ બનાવવા માટે માતાપિતાઓએ કલાચાર્યની પાસે મોકલ્યો આમ ધીમે ધીમે તે ૭૨ કળાઓમા નિષ્ણાત બની ગયો યાવત્ તે સંસારના ભોગો ભોગવવા યોગ્ય અવસ્થાવાળો પણ થઇ ગયો ૮ રાજકન્યાઓની સાથે લગ્નો કરાવીને પિતાઓએ તેને યુવરાજ પદ પણ સોપી દીધુ યાવત્ તે મનુષ્ય-ભવ સબંધી કામસુખોને અનુભવતો પોતાના વખતને સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો એક વખતની વાત છે કે પાંડુ-મથુરા નગરીમા

अथ कदाचित् तत्र-' थेरा समोसढा ' स्थविराः समवसृताः, परिषन्निर्गता, पाण्डवा अपि स्थविराणा वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवा प्रतिबुद्धाः सन्त एवमवदन्-यत् नवर हे देवानुप्रियाः द्रौपदी देवीमापृच्छामः, पाण्डुसेन च कुमार राज्ये स्थापयाम, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्या गृह्णीमः, तदा स्थविरा ऊचुः-' अहासुह देवानुप्पिया ! ' हे देवानुप्रिया यथासुख=सुख यथा भवति तथा कुरुत, अल त्रिलम्बेन इति भाव । तत खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वक गृह तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदी देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमवदन्-एव खलु हे देवानुप्रिये ! वयं स्थविरा-

व्यतीत करने लगा। एक समय की बात है कि पाडु मथुरा नगरी में स्थविरो का आगमन हुआ। स्थविरों का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वदना एव धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने २ घर से निकले पाचों पाडव भी निकले- परिषद् को आयी हुई देखकर स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद् पीछे चली गई। पाडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गये-उसी समय उन्हों ने उन स्थविरों से कहा-हे देवानुप्रियो ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूछकर और पाडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियों के समीपमुडित होकर यावत् प्रव्रज्या अगीकार करना चाहते हैं। पांडवो की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरों ने पाडवो से इस प्रकार कहा-(अहासुए देवाणुप्पिया ! तएण ते पच पडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी एवं खलु देव णुप्पिया !

સ્થવિરો પધાર્યા સ્થવિરોના આગમનની જાણ થતા નગરીના બધા લોકો તેમની વદના તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે પોતપોતાના ઘેરથી નિકળ્યા, પાચે પાડવો પણ ત્યા પહોચ્યા પરિષદને આવેલી જોઇને સ્થવિરોએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને પરિષદ જતી રહી પાડવો તે ધર્મનો ઉપદેશ સાભળીને પ્રતિબોધિત થઇ ગયા તેમણે તે જ સમયે સ્થવિરોને વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમે દ્રૌપદી દેવીને પૂછી તેમજ પાડુસેન કુમારને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને તમારી પાસે મુડિત થઇને યાવત્ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની અભિલાષા રાખીએ છીએ પાડવોની આ જાતની હાર્દિક ઇચ્છા જાણીને તે સ્થવિરોએ તે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-

(अहासुह देवाणुप्पिया ! तएण ते पच पडवा जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी, एव

णामन्तिके धर्मं श्रुतवन्तो यावत् प्रव्रजामः, तत् हे देवानुप्रिये ! किं करोषि किं करिष्यसि ? । ततः खलु सा द्रौपदी तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-यदि खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! संसारभयोद्विग्नाः=जन्ममरणादि दुःखाद् भीताः सन्तो यावत् प्रव्रजथ, मम कोऽन्य आलम्बो वा यावद् भविष्यति ?, अहमपि च खलु संसारभयोद्विग्ना देवानुप्रियैः सार्धं प्रव्रजिष्यामि, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुसेनस्य अभिषेकः=राज्याभिषेकं कृत्वा स्वराज्ये स्थापितवन्तः, यावद् राजा जातः, यावद् राज्यं प्रशासयन्=राज्यपालनं कुर्वन् विहरति=आस्तेस्म ।

अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो-तुम देवाणुप्पिए ! किं करेसि) हे देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुम्हें सुख मिले वैसा तुम करो ! अच्छे काम में विलम्ब मत करो। इसके बाद-वे पांचों पाडव जहां अपना घर था वहां आये-वहां आकर के उन्हों ने द्रौपदी देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! सुनो बात इस प्रकार है-हमलोगों ने स्थविरोंके पास धर्मका श्रवण किया है। अब हमलोगों की भावना मुडित होकर उनके पास प्रव्रजित होने की है। अब-तुम्हारी भावना क्या है-हे देवानुप्रिये करोगे तुम हमारे बाद क्या करोगी-(तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ ? अह णं तुब्भे संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्जं पसाहे

खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुम देवाणुप्पिए ! किं करेसि)

હે દેવાનુપ્રિયે ! જેમ તમને સુખ મળે તેમ કરો સારા કામમાં મોડું કરો નહિ ત્યારપછી તેઓ પાંચે પાંડવો જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે દ્રૌપદી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાંભળો, વાત એવી છે કે અમોએ સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, એટલા માટે અમારી ઇચ્છા મુંડિત થઇને તેમની પાસેથી પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની છે હવે તમારી શી ઇચ્છા છે ? હે દેવાનુપ્રિયે ! અમને કહો અમે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી લઇશું ત્યારબાદ તમે શું કરશો ?

(तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह, मम के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ ? अह णं तुब्भे संसारभउव्विग्गा, देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरइ)

ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा द्रौपदी च देवी अन्यदा कदाचित् पाण्डुसेन राजानमापृच्छन्ति, तत खलु स पाण्डुसेनो राजा कौडुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो ! देवानुप्रियाः ! निष्क्रमणाभिषेक=दीक्षोपयोगवस्तूनि यावद् उपस्थापयत, पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका उपस्थापयत, ' यावत् प्रत्यवरोहन्ति=अत्र यावच्छब्देनेद बोध्यम्, तत पाण्डुसेनस्य राज्ञोवचनमाकर्ण्य ते

माणे विहरइ) इस प्रकार पाडवो का कहना सुनकर द्रौपदी देवी ने उन पाचो पांडवों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुमलोग यदि ससार भय से उद्विग्न होकर प्रव्रजित होना चाहते हो, तो फिर मेरे लिये आप के सिवाय और कौन दूसरा आलबन अथवा आधार होगा। अतः मैंभी आप देवानुप्रियों के साथ ससार भय से उद्विग्न होकर दीक्षित होऊँगी। इस प्रकार द्रौपदी देवी का कथन सुनकर उन पांचो पांडवों ने पाडुसेन कुमार का राज्याभिषेक करके उसे राज्यपद में स्थापित किया। इस तरह पांडुकुमार राजा हो गया। यावत् राज्य का वह अच्छी तरह पालन करने लगा। (तएण ते पच पडवा दोवईय देवी अन्नया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेणे राया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ सिबियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरूहति, पच्चोरूहित्ता जेणेव थेरा उवा-

આ પ્રમાણે પાડવોનુ કથન સાભળીને દ્રૌપદી દેવીએ તે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જ્યારે સ સારભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા વગર મારા માટે આ સ સારમા બીજુ કયુ આલબન અથવા તો બીજો કયો આધાર થશે ? એટલા માટે હુ પણ તમારી સાથે સ સારભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઈચ્છુ છુ આ પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીનુ કથન સાભળીને તે પાચે પાડવોએ પાડુસેન કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરીને તેને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો આ પ્રમાણે પાડુસેન કુમાર રાજા થઈ ગયો યાવત્ તે રાજ્યનુ સારી રીતે રક્ષણ કરવા લાગ્યો

(तएण ते पच पडवा दोवईय देवी अन्नया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेणे राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ सिबियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव उवाग० आलित्तेण जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जति, अहिज्जित्ता बहूणि

कौटुम्बिकपुरुषास्तथास्तु ' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, ततः ते पञ्च पाण्डवाः पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिकाः आरूढाः, पाण्डुमथुरायाः नगर्याः मध्यमध्येन निर्गच्छन्ति, निर्गत्य शिबिकाभ्यः प्रत्यवरोहन्ति=प्रत्यवतरन्ति । प्रत्यवरुह्य, 'जेणेव' यत्रैव स्वकं निवासस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः—' आलित्ते ण जाव समणा

गच्छइ आलित्तेण जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जति, अहिज्जित्ता, बहूणि वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरति) इसके बाद पाचो पाडवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पांडुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूछा। तब पांडुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो-तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो-इस प्रकार पाडुसेन राजा के वचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने " तथास्तु " कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया-और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एव पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया। तब वे पांचो पाडव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ होकर पांडु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले। वहा से निकलकर वे जहां स्थविर ठहरे हुए थे-वहां-आये-वहा आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरति)

ત્યારપછી પાચે પાડવોએ અને દ્રૌપદી દેવીએ કોઈ એક વખતે પાડુસેન રાજાને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા માટે પૂછયુ ત્યારે પાડુસેન રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દીક્ષા વખતે ઉપયોગમા આવનારી બધી વસ્તુઓ જલ્દી લઇ આવો તેમજ પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી પણ લઇ આવો આ પ્રમાણે પાડુસેન રાજાના વચન સાભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ' તથાસ્તુ ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને દીક્ષા માટે ઉપયોગી એવી બધી વસ્તુઓ તેમજ પુરુષ-સહસ્રવાહિની પાલખી લઈ આવ્યા ત્યારપછી તે પાચે પાડવો તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓ ઉપર સવાર થઈને પાંડુ-મથુરા નગરીની વચ્ચે થઈને નીકળ્યા ત્યાથી નીકળીને તેઓ જ્યાં સ્થવિર હતા ત્યાં પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેઓ બધા પાલખીઓમાથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને સ્થવિરોની

जाया ' आदीप्तोऽयं लोक खलु इत्यादि । यावद् श्रमणा जाताः, चतुर्दशपूर्वाणि अधीयते स्म,अधीत्य बहूनि वर्षाणि षष्ठाष्टमदशम द्वादशैर्मासार्धमासक्षपणैस्तपोभिरात्मान भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू९ ३३ ॥

मूलम्–तएणं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारस अंगाइ अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहि जाव विहरइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु सा द्रोपदी देवी शिविकातः प्रत्यवरोहति प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यावत् प्रव्रजिता–दीक्षा गृहीतवती । ' सुव्वयाए ' सुव्रतायै=सुव्रतानामधेयायै ' अज्जाए ' आर्यायै 'सिस्सिणीयत्ताए'

नीचे उतरे। नीचे उतरकर स्थविरों के पास पहुँचे। वहां पहुँचकर उन्हों ने स्थविरों से इस प्रकार कहा–हे भदंत ! यह समस्त लोक आदीप्त–हो रहा है इत्यादिरूप से अपनी भावना प्रदर्शित कर यावत् वे श्रमण हो गये। चौदह पूर्वों का उन्हों ने अध्ययन किया। अध्ययन करके अनेक वर्षों तक षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मास अर्धमास की तपस्याओं को वे करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ३३ ॥

' तएण सा दोवई ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (दोवई देवी) द्रौपदीदेवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) अपनी शिविका से नीचे उतरी–(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाइ

પાસે પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે સ્થવિરોને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ભદન્ત ! આ સપૂર્ણ જગત સળગી રહ્યુ છે વગેરે રૂપથી પોતાની ભાવના પ્રકટ કરીને યાવત્ તેઓ શ્રમણ થઈ ગયા ચૌદ પૂર્વોનુ તેમણે અધ્યયન કર્યુ, અધ્યયન કરીને ઘણા વર્ષો સુધી તેઓ ષષ્ઠ, અષ્ટમ દશમ, દ્વાદશ, માસ અર્ધમાસની તપસ્યાઓ કરતા રહ્યા ॥ સૂત્ર ૩૩ ॥

तएण सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ–(तएण) त्यारपछी (दोवई देवी) द्रौपदी देवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) पोतानी पालणीमा नीचे उतरी

(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ

कौटुम्बिकपुरुषास्तथास्तु ' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा ते पञ्च पाण्डवा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका आरूढा, पाण्डुमथुरायां नगर्यां मध्यमध्येन निर्गच्छन्ति, निर्गत्य शिबिकाभ्यः प्रत्यवरोहन्ति=प्रत्यवतरन्ति । प्रत्यवतीर्य, 'जेणेव' यत्रैव स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः–' आलित्ते णं जाव समणा

गच्छह आलित्तेण जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) इसके बाद पाचो पाडवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पांडुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूछा। तब पांडुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा–भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो–तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो–इस प्रकार पांडुसेन राजा के वचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने " तथास्तु " कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया–और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एव पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया। तब वे पाचो पाडव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ होकर पाडु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले। वहा से निकलकर वे जहा स्थ विर ठहरे हुए थे–वहां–आये–वहा आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति)

ત્યારપછી પાચે પાડવોએ અને દ્રૌપદી દેવીએ કોઈ એક વખતે પાડુસેન રાજાને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા માટે પૂછયુ ત્યારે પાડુસેન રાજાએ કૌટુંબિક પુરુ ષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દીક્ષા વખતે ઉપયોગમા આવનારી બધી વસ્તુઓ જલ્દી લઇ આવો તેમજ પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી પણ લઇ આવો આ પ્રમાણે પાડુસેન રાજાના વચન સાભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ' તથાસ્તુ ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને દીક્ષા માટે ઉપયોગી એવી બધી વસ્તુઓ તેમજ પુરુષ–સહસ્રવાહિની પાલખી લઈ આવ્યા ત્યારપછી તે પાચે પાડવો તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓ ઉપર સવાર થઈને પાંડુ–મથુરા નગરીની વચ્ચે થઈને નીકળ્યા ત્યાથી નીકળીને તેઓ જ્યા સ્થવિર હતા ત્યાં પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેઓ બધા પાલખીઓમાથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને સ્થવિરોની

अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता थेरं भगवंतं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया संमाणा अरहं अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा । थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अतियाओ पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगाम दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरति, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति बीयाए एव जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति, एव खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहि छत्तीसेहि अणगारसएहि सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति पडिणिक्खमित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चक्खंति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति पडि-

शिष्यात्तया ददाति पाण्डुसेनो राजा द्रौपदीं सुव्रतायै शिष्यारूपेण दत्तवानिति भाव । एकादशाङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि षष्ठाऽष्टमदशमद्वादशैस्तपोभिर्यावदात्मान भावयन्ती विहरति ॥सू०३४॥

मूलम्-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पडुमहुराओ णयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ०-एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि०, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्न सद्दावेंति सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु० जाव विहरइ, त सेयं खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमि वदणाए गमित्तए

छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ) नीचे उतरकर यावत् वह भी प्रव्रजित हो गई। पांडुसेन राजा ने उसे-द्रौपदी को सुव्रता नाम की साध्वी के शिष्यारूप से प्रदान किया। द्रौपदी आर्या ने ग्यारह अगों का अध्ययन किया। बाद में अनेक वर्षों तक छट्ठ अष्टम, दशम, द्वादश तपस्याओं से अपने आपको उसने भावित किया॥ सू०३४॥

अहिज्जइ, बहूणि वासाइ छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ)

નીચે ઉતરીને યાવત્ તે પણ પ્રવ્રજિત થઈ ગઇ પાડુસેન રાજાએ દ્રૌપદીને સુવ્રતા નામની સાધ્વીને શિષ્યાના રૂપમા અર્પિત કરી દ્રૌપદી આર્યાએ અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન કર્યું ત્યારપછી ઘણા વર્ષો સુધી છઠ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ તપસ્યાઓથી પોતાના આત્માને તેણે ભાવિત કર્યા ॥ સૂ ૩૪ ॥

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन् विहरति। ततः खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञापयति-एव खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति। ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमवदन्, एव खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमति) विहार किया (पडिणिक्खमित्ता) विहार करके (बहिया जणवयविहार विहरति) बाहिर के जनपदों में विचरने लगे (तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयंसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु विहार करते हुए जहां सौराष्ट्र जनपद था-वहां आये वहा आकर के वे उस सौराष्ट्र जनपद में सयम और तप से अपने आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। जब वहा के अनेक लोगो को इसकी खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एव खलु देवाणुप्पिया! अरिहा। अरिट्ठनेमी सुरट्ठा जणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्न-

णिक्खमति) વિહાર કર્યો (पडिणिक्खमित्ता) વિહાર કરીને તેઓ (बहिया जणवयविहार विहरति) બહારના જનપદોમા વિહાર કરવા લાગ્યા

(तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे एवमाइक्खइ)

તે કાળે અને તે સમયે અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ વિહાર કરતા કરતા જ્યા સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ તે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા સયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરણ કરવા લાગ્યા જ્યારે ત્યાના ઘણા લોકોને આ વાતની જાણ થઈ ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी

क्खमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति पडिदंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्तए 'संलेहणा झूसणा झूसियाणं' कालं अणवकखमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुजे पव्वए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सेत्तुजं पव्वय दुरूहंति दुरूहित्ता जाव कालं अणवकखमाणा विहरंति। तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं०बहूणि वासाणि० दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेंति तमट्ठमाराहित्ता अणते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा ॥ सू० ३३ ॥

टीका—' तएणं थेरा ' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु स्थविरा भगवन्तोऽन्यदाकदाचित् पाण्डुमथुरातो नगरीतो सहस्राम्रवणादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति=निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहार विहरन्ति।

-:तएणं थेरा भगवंता इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (थेरा भगवंतो) उन स्थविर भगवंतोंने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (पंडुमहुराओ) पांडु मथुरा (णयरीओ) नगरी से (सहसंबवणाओ) सहस्राम्रवन नाम के (उज्जा

तएणं थेरा भगवंता इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारबाद (थेरा भगवंतो) ते स्थविर भगवंतोओ (अन्नया कयाइ) कोइ એક વખતે (पंडु महुराओ) પાંડુ મથુરા (णयरीओ) નગરીથી (सहस्संबवणाओ) સહસ્રામ્રવન નામના (उज्जाणाओ) ઉદ્યા

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन् विहरति। ततः खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञापयति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति। ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमवदन् ,एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमति) विहार किया (पडिणिक्खमित्ता) विहार करके (बहिया जणवयविहार विहरति) बाहिर के जनपदों में विचरने लगे (तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु विहार करते हुए जहां सौराष्ट्र जनपद था-वहा आये वहां आकर के वे उस सौराष्ट्र जनपद मे सयम और तप से अपने आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। जब वहां के अनेक लोगो को इसकी खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा। अरिट्ठनेमी सुरट्ठा जणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्न-

णिक्खमति) વિહાર કર્યો (पडिणिक्खमित्ता) વિહાર કરીને તેઓ (बहिया जणवयविहार विहरति) બહારના જનપદોમા વિહાર કરવા લાગ્યા

(तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे एवमाइक्खइ)

તે કાળે અને તે સમયે અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ વિહાર કરતા કરતા જ્યા સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ તે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા સયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરણ કરવા લાગ્યા જ્યારે ત્યાના ઘણા લોકોને આ વાતની જાણ થઈ ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी

नुपूर्व्या=तीर्थकराणां मर्यादया यावद् विहरति, 'त' तत्-तस्मात् 'सेय' श्रेयः खलु अस्माकं यत् स्थविरान् आपृच्छ्यार्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दनायै गन्तुम् । अन्योन्यस्य =परस्परस्यैतमर्थं सर्वे पञ्चानगाराः प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तान् स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति च वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादिषु -इच्छामः खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तोऽर्हन्तमरिष्टनेमिं यावद् गन्तुम् । स्थविरा ऊचुः यथासुखं हे देवानुप्रिया!

मन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं वदणाए गमित्तए) हे देवानुप्रियों ! सुनो-अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए यावत् सौराष्ट्र जनपद में आये हुए हैं। लोगों के मुख से इस बात को उन पांच युधिष्ठिर आदि अनगारो ने सुना-तब आपस में एक दूसरे को-बुलाया-और बुलाकर इस प्रकार कहा-देवानुप्रियो ! सौराष्ट्र जनपद में तीर्थंकर परम्परा के अनुसार भगवान् अरिष्टनेमि विहार कर रहे हैं-अतः हमलोगों को स्थविरो की आज्ञा लेकर अर्हत अरिष्टनेमि को वदना करने के लिये चलना बहुत अच्छा है-उचित है-(अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामो ण

पुव्वाणु० जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं वदणाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તિર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતા યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા પધારેલા છે લોકોના મુખથી આ વાતને તે પાચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સાભળી ત્યારે તેઓએ પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થંકર પરપરા મુજબ ભગવાન અરિષ્ટનેમિ વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિષ્ટનેમિને વદન કરવા માટે અમારે જવુ જોઇએ

(अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामो ण तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा अरह अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखा' पञ्चानगाराः स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञाताः सन्त स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा, नमस्थित्वा स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, मास-मासेन 'अणिक्खित्तेण' अनिक्षिप्तेन=अन्तररहितेन तपः

तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, मास मासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति-तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति, बीयाए जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति) इस प्रकार का परस्पर का यह विचार उन्हों ने स्वीकार कर लिया-स्वीकार करके फिर वे जहां स्थविर भगवंत थे-वहां गये-वहां जाकर उन्हों ने उन स्थविर भगवंतों को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर फिर उनसे इस प्रकार कहा हमलोग आप भगवंतों से आज्ञा प्राप्त कर अर्हंत नेमिनाथ प्रभु को वंदना करने के लिये सौराष्ट्र जनपद जाना चाहते हैं। तब उन स्थविर भगवंतों ने उनसे कहा हे देवानुप्रियों! यथासुखम्-तुम्हें जैसे सुख हो-वैसा करो इस प्रकार उनस्थविर भग

अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा, थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, मासमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति, बीयाए एव जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति)

આ રીતે તેઓએ એકબીજાના વિચારોને સ્વીકારી લીધા, સ્વીકારીને તેઓ જ્યાં સ્થવિર ભગવંત હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે તે સ્થવિર ભગવંતોને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે અમે આપ ભગવંતની આજ્ઞા મેળવીને અર્હંત નેમિનાથ પ્રભુના વંદન માટે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં જવા ઇચ્છીએ છીએ ત્યારે તે સ્થવિર ભગવંતોએ તેમને આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! 'યથા સુખમ્' તમને જે કામમાં આનંદ પ્રાપ્ત થાય તે કરો આ પ્રમાણે તે સ્થવિર

नुपूर्व्या=तीर्थकराणां मर्यादया यावद् विहरति, 'त' तत्-तस्माद् 'सेय' श्रेय' खलु अस्माकं यत् स्थविरान् आपृच्छ्यार्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दनायै गन्तुम् । अन्योन्यस्य =परस्परस्यैतमर्थं सर्वे पञ्चानगाराः प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तान् स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति च वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादिषु -इच्छामः खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तोऽर्हन्तमरिष्टनेमिं यावद् गन्तुम् । स्थविरा ऊचु' यथासुखं हे देवानुप्रिया!

मन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्वीए जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए) हे देवानुप्रियों! सुनो-अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए यावत् सौराष्ट्र जनपद में आये हुए हैं। लोगों के मुख से इस बात को उन पांच युधिष्ठिर आदि अनगारो ने सुना-तब आपस में एक दूसरे को-बुलाया-और बुलाकर इस प्रकार कहा-देवानुप्रियो! सौराष्ट्र जनपद में तीर्थंकर परम्परा के अनुसार भगवान् अरिष्टनेमि विहार कर रहे हैं-अतः हमलोगों को स्थविरो की आज्ञा लेकर अर्हंत अरिष्टनेमि को वदना करने के लिये चलना बहुत अच्छा है-उचित है-(अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमंसति, वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो ण

पुव्वाणु० जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वदणाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો! સાભળો, અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તિર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતા યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા પધારેલા છે લોકોના મુખથી આ વાતને તે પાચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સાભળી ત્યારે તેઓએ પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થંકર પરંપરા મુજબ ભગવાન અરિષ્ટનેમિ વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિષ્ટનેમિને વદન કરવા માટે અમારે જવુ જોઈએ

(अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमंसति, वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो ण तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचमध्यमकुलानि ' अडमाणा ' अटन्त बहुजनशब्द निशामयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह-' एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अर्हन् अरिष्टनेमिः ' उर्जितसेलसिहरे ' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासिकेन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः ' पञ्चहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं ' पञ्चभि षट्त्रिंशताऽनगारशतैः=षट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिर्वृत सर्वदुःखप्रहीणो जात '।

' तएण ' ति ' तत खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वरोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

---

कल्प नगर में उच्च, नीच एव मध्यम कुलों में गोचरी के लिये आये। उस समय इन्हो ने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एव देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति) देवानुप्रियों ! अर्हत अरिष्टनेमि ऊर्जयतशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारो के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत हो कर सर्व दुखों से रहित हो गये है। इस प्रकार अनेक मनुष्यो के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्सवणे उज्जाणे जेणेव

અને મધ્યમ કુલોમા ગોચરી માટે આવ્યા તે સમયે તેમણે ઘણા માણસોના મુખથી એ જાતના સમાચારો સાભળ્યા કે—

(एव देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! અર્હંત અરિષ્ટનેમિ ઊર્જયત શૈલશિખર ઉપર-ગિરનાર પર્વત ઉપર-એક માસના ચારે જાતના આહારના પરિત્યાગ રૂપ ભક્ત પ્રત્યાખ્યાનથી ૫૩૬ અનગારોની સાથે કાળગત યાવત્ સિદ્ધ, બુદ્ધ, પરિનિવૃત થઈને સર્વ દુઃખોથી મુક્ત થઇ ગયા છે આ પ્રમાણે ઘણા માણસોના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાભળીને તે યુધિષ્ઠિર વગરના ચારે અનગારો તે હસ્તિકલ્પ નગરથી નીકળ્યા

कर्मणा ग्रामानुग्राम ' दूइज्जमाणा ' द्रवन्तः=गच्छन्तः, यावत् यत्रैव ' हत्थिकप्पे नयरे ' हस्तिकल्प नगर तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिकल्पस्य बहिः सहस्राम्रवने उद्याने यावद् विहरन्ति। ततः खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा मास क्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां स्वाध्यायं कुर्वन्ति, ' बीयाए ' द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानं ध्यायन्ति तृतीयायां पौरुष्यामत्वरितमचपलमसम्भ्रान्तमदोरकमुख वस्त्रिकां प्रतिलेखयन्ति, भाजनवस्त्राणि प्रतिलेखयन्ति, भाजनानि च-पात्राणि प्रमार्जयन्ति, भाजनान्युद्गृह्णन्ति, गृहीत्वा एव यथा गौतमस्वामी श्रमण महावीर मापृच्छति तथर-अयमत्र विशेषः अत्र चत्वारोऽनगाराः युधिष्ठिरमापृच्छन्ति यावत्

चतों से आज्ञा प्राप्त कर वे युधिष्ठिर प्रमुख पांच अनगार उन स्थविर भगवत को वंदना नमस्कार करके उनके पास से चले आये और निरन्तर मास मास क्षमण करते हुए एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करने लगे। इस तरह ग्रामानुग्राम विहार करते हुए वे पांचो अनगार जहा हस्तिकल्पनाम का नगर था वहा आये। वहा आकर वे हस्तिकल्प नगर के बाहिर सहस्राम्रवन उद्यान में जाकर ठहर गये। इसके बाद वे युधिष्ठिर के सिवाय चारो अनगार मासक्षपण के दिन प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते, द्वितीय पौरुषी में ध्यान करते, और तृतीय पौरुषी में अत्वरित, अचपल एव असभ्रान्त होकर सदोरकमुखवस्त्रिकाकी प्रतिलेखना करते, भाजन और वस्त्रोंकी प्रतिलेखना करते-फिर उन्हें उठाते-और लेकर जिस प्रकार गौतम स्वामी श्रमण महावीर स्वामी से पूछकर गोचरी के लिये निकलते उसी प्रकार ये भी युधिष्ठिर से पूछ कर हस्ति

ભગવતોની આજ્ઞા મેળવીને તે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાચે અનગારો તે સ્થવિર ભગવતોને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી આવતા રહ્યા અને સતત માસ ખમણ કરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવા લાગ્યા આ રીતે ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતા તે પાચે અનગારો જ્યા હસ્તિકલ્પ નામે નગર હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ હસ્તિકલ્પ નગરની બહાર સહસ્રામ્રવન ઉદ્યાનમા જઇને મુકામ કર્યો ત્યારબાદ તે યુધિષ્ઠિર સિવાયના ચારે અનગારો માસક્ષપણ પારણાના દિવસે પ્રથમ પૌરૂષીમા સ્વાધ્યાય કરતા, દ્વિતીય પૌરૂષીમા ધ્યાન કરતા અને તૃતીય પૌરૂષીમા ગોચરી માટે નીકળતી વખતે પણ અચપળ અસભ્રાત થઇને સદોરકમુખવસ્ત્રિકાની પ્રતિલેખના કરતા, ભાજન અને વસ્ત્રોની પ્રતિલેખના કરતા, ત્યારબાદ તેમને ઉપાડતા અને ઉપાડીને જેમ ગૌતમ સ્વામી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને ગોચરી માટે નીકળતા તેમજ તેઓ પણ યુધિષ્ઠિરની આજ્ઞા મેળવીને હસ્તિકલ્પ નગરમા ઉચ્ચ, નીચ,

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचम यमकुलानि ' अडमाणा ' भटन्त बहुजनशब्द निशामयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह-' एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अर्हन् अरिष्टनेमिः ' उज्जिंतसेलसिहरे ' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासिकेन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः ' पञ्चहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं ' पञ्चभि षट्त्रिंशताऽनगारशतैः=शट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिर्वृत सर्वदुःखप्रहीणो जात '।

' तएण ' ति ' तत खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वरोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

---

कल्प नगर में उच्च, नीच एव मध्यम कुलों में गोचरी के लिये आये। उस समय इन्हों ने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एव देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति) देवानुप्रियों ! अर्हत अरिष्टनेमि ऊर्जयतशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत्त हो कर सर्व दुःखों से रहित हो गये हैं। इस प्रकार अनेक मनुष्यो के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव

અને મધ્યમ કુલોમા ગોચરી માટે આવ્યા તે સમયે તેમણે ઘણા માણુસોના મુખથી એ જાતના સમાચારો સાભળ્યા કે—

(एव देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! અર્હંત અરિષ્ટનેમિ ઊર્જયત શૈલશિખર ઉપર-ગિરનાર પર્વત ઉપર-એક માસના ચારે જાતના આહારના પરિત્યાગ રૂપ ભક્ત પ્રત્યાખ્યાનથી ૫૩૬ અનગારોની સાથે કાળગત યાવત્ સિદ્ધ, બુદ્ધ, પરિનિવૃત થઇને સર્વ દુઃખોથી મુક્ત થઇ ગયા છે આ પ્રમાણે ઘણા માણુસોના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાભળીને તે યુધિષ્ઠિર વગરના ચારે અનગારો તે હસ્તિકલ્પ નગરથી નીકળ્યા

भ्रवणमुद्यान यत्रैव युधिष्ठिरोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य भक्तपान 'पच्च क्खति ' मत्याख्यान्ति=प्रत्याख्याय ' गमनागमनस्स ' गमनागमन प्रतिक्रामन्ति ईर्यापथिकीं कुर्वन्ति प्रतिक्रम्य ' एसणमणेसण ' एषणामनेषणाम् आलोचयन्ति, आलोच्य भक्तपान-मतिदर्शयन्ति-युधिष्ठिरस्य पुरोऽवस्थाप्य प्रतिदर्शयन्ति, मति दर्श्य एवमवादिषुः-एव खलु हे देवानुप्रिय ! यावत् कालगतः=अर्हन् अरिष्टनेमि र्मोक्षमाप्तः, ' त ' तस्मात् श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रियाः ! इम पूर्वगृहीत

जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्च क्खति, पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति पडिक्कमित्ता एसणम नेसण आलोएँति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदंसेंति पडिदंसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए त सेय खलु अम्ह देवा णुप्पिया ! इम पुव्वगहिय भत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुंज पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्तए) निकलकर वे जहाँ सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था और उस में भी जहा युधिष्ठिर अनगार विराजमान थे, वहा आये। वहां आकर उन्हों ने उनकी साक्षी से भक्त प्रत्याख्यान करदिया और भक्त प्रत्याख्यान करके फिर उन्हो ने ईर्यापथ शुद्धि की। शुद्धि करके एषणा अनेषणा की आलोचना करके फिर उन्होंने लाये हुए उस आहार को युधिष्ठिर अनगार के समक्ष रख कर दिखलाया। दिखलाकर फिर वे इस प्रकार कहने लगे। हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि मुक्ति को प्राप्त हो चुके है-इसलिये हे देवानुप्रिय ! हमको अब यही उचित

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहसम्बवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्चक्खति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एसणमनेसण आलोएति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदंसेंति पडिदंसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए त सेय खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इम पुव्वगहियभत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्तए)

નીકળીને તેઓ જ્યા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતુ અને તેમા પણ જ્યા યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે તેમની સામે ભક્ત પાનનુ પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઇર્યાપથની શુદ્ધિ કરી શુદ્ધિ કરી અને અનેષણા કરી, આલોચના કરી આલોચના કરીને તેમણે । તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને બતાવ્યો -પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે ! અર્હંત છે એટલા માટે

भक्तपान परिष्ठाप्य ' सेत्तुज ' शत्रुजय-शत्रुजयनामक पर्वत शनैः शनैर्दूरोहितुम् =आरोहितुम्, तथा-' सलेहणाझूसणाझूसियाण ' संलेखना जोषणाजुष्टाना=सलेखनाया कषायशरीरकृषीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा वा तया जुष्टा-सेवितास्तेषा=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थः-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनिच्छताम् विहर्त्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य यत्रैव शत्रुजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुजय पर्वत शनै. शनैर्दूरोहन्ति आरोहन्ति, दूरूह्य यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुजय नामके पर्वत पर धीरे धीरे चढे (सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकख माणाण विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहिय भत्तपाण एगते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति) और वहां काय और कषाय को कृश करनेवाली सलेखना मरणाशसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक धारण करे इस प्रकार विचार करकेउन्हों ने परस्पर के इस विचार रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त पान को उन्होने एकान्त स्थान मे परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित करके वे सब जहा शत्रुजय पर्वत था वहां चले गये (उवागच्छित्ता) वहा जाकर के (सेत्तुज पव्वय दुरूहति, दुरूहित्ता जाव काल अणव-

હવે અમને એ જ વાત યોગ્ય લાગે છે કે અમે આ પૂર્વગૃહિત ભક્તપાનનુ પરિષ્ઠાપન કરીને શત્રુજય નામના પર્વત ઉપર ધીમે ધીમે ચઢીએ

(सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकखमाणाण विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता त पुव्वगहिय भत्तपाण एगते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति)

અને ત્યા કાય અને કષાયને કૃશ કરનારી સલેખનાને મરણાશા સાથી રહિત થઇને પ્રેમપૂર્વક ધારણ કરીએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના આ વિચાર રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેમણે તે પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનને એકાંત સ્થાને પરિષ્ઠાપિત કરી દીધુ અને પરિષ્ઠાપિત કરીને તેઓ સર્વે જ્યા શત્રુજય પર્વત હતો ત્યા ચાલ્યા ગયા (उवागच्छित्ता) ત્યાં જઇને—

([illegible] जाव काल अणवकखमाणा विहरंति,

मरणमुद्घात यत्रैव युधिष्ठिरोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य भक्तपान 'पच्च क्खति ' प्रत्याख्यान्ति=प्रत्याख्याय ' गमनागमनस्स ' गमनागमन प्रतिक्रामन्ति ईर्यापथिकीं कुर्वन्ति प्रतिक्रम्य ' एसणमणेसण ' एषणामनेषणाम् आलोचयन्ति, आलोच्य भक्तपान-प्रतिदर्शयन्ति-युधिष्ठिरस्य पुरोऽवस्थाप्य प्रतिदर्शयन्ति, प्रति दर्श्य एवमवादिषुः-एव खलु हे देवानुप्रिय ! यावत् कालगतः=अर्हन् अरिष्टनेमि र्मोक्षप्राप्त., ' त ' तस्मात् श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रिया. ! इम पूर्वगृहीत

जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्च क्खति, पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति पडिक्कमित्ता एसणम नेसण आलोएँति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदंसेति पडिदंसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए त सेय खलु अम्ह देवा णुप्पिया ! इम पुव्वगहिय भत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय सणिय दुरुहित्तए) निकलकर वे जहाँ सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था और उस में भी जहा युधिष्ठिर अनगार विराजमान थे, वहा आये। वहां आकर उन्हो ने उनकी साक्षी से भक्त प्रत्याख्यान करदिया और भक्त प्रत्याख्यान करके फिर उन्हो ने ईर्यापथ शुद्धि की। शुद्धि करके एषणा अनेषणा की आलोचना करके फिर उन्होंने लाये हुए उस आहार को युधिष्ठिर अनगार के समक्ष रख कर दिखलाया। दिखलाकर फिर वे इस प्रकार कहने लगे। हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं-इसलिये हे देवानुप्रिय ! हमको अब यही उचित

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहसम्बवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्चक्खति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एसणमनेसण आलोएति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदंसेति पडिदंसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए त सेय खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इम पुव्वगहियभत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्तए)

નીકળીને તેઓ જ્યા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતુ અને તેમા પણ જ્યા યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે તેમની સામે ભક્ત પાનનુ પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઇર્યાપથની શુદ્ધિ કરી શુદ્ધિ કરીને એષણા અને અનેષણા કરી, આલોચના કરી આલોચના કરીને તેમણે લઇ આવેલા તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને બતાવ્યો બતાવ્યા બાદ તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે [illegible] ! અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુએ મુક્તિ મેળવી છે એટલા માટે !

भक्तपान परिष्ठाप्य ' सेत्तुज ' शत्रुञ्जय-शत्रुजयनामकं पर्वत शनैः शनैर्दूरोहितुम् =आरोहितुम्, तथा-' सलेहणाझूसणाझूसियाण ' संलेखना जोषणाजुष्टाना=सलेखनाया कषायशरीरकृषीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा वा तया जुष्टा-सेवितास्तेषा=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थ'-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनिच्छताम् विहर्त्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य यत्रैव शत्रुजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुजय पर्वत शनै. शनैर्दूरोहन्ति आरोहन्ति, दूरुह्य यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुजय नामके पर्वत पर धीरे धीरे चढे (सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकखमाणाण विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहिय भत्तपाणं एगते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति) और वहां काय और कषाय को कृश करनेवाली सलेखना मरणाशसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक धारण करे इस प्रकार विचार करकेउन्हों ने परस्पर के इस विचार रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त पान को उन्होंने एकान्त स्थान मे परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित करके वे सब जहां शत्रुजय पर्वत था वहां चले गये (उवागच्छित्ता) वहा जाकर के (सेत्तुज पव्वय दुरूहति, दुरूहित्ता जाव काल अणव-

હવે અમને એ જ વાત યોગ્ય લાગે છે કે અમે આ પૂર્વગૃહિત ભક્તપાનનુ પરિષ્ઠાપન કરીને શત્રુજય નામના પર્વત ઉપર ધીમે ધીમે ચઢીએ

(सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकखमाणाण विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता त पुव्वगहिय भत्तपाण एगते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति)

અને ત્યા કાય અને કષાયને કૃશ કરનારી સલેખનાને મરણાશ સાથી રહિત થઇને પ્રેમપૂર્વક ધારણ કરીએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના આ વિચાર રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેમણે તે પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનને એકાંત સ્થાને પરિષ્ઠાપિત કરી દીધુ અને પરિષ્ઠાપિત કરીને તેઓ સર્વે જ્યા શત્રુજય પર્વત હતો ત્યા ચાલ્યા ગયા (उवागच्छित्ता) ત્યાં જઇને—

(सेत्तुज पव्वय दुरूहति, दुरूहित्ता जाव काल अणवकखमाणा विहरति,

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगाराः 'सामाइयमाइयाइ' सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा षष्ठाष्टमादितपः कृत्वा द्विमासिकया संलेखनयाऽऽत्मानं 'झोसित्ता' जुष्ट्वा सेवित्वा यस्यार्थाय क्रियते नग्नभावो=निर्ग्रन्थभाव यावत् तमर्थमाराधयति, आराध्य अनन्तम् अनन्तार्थविषयकं यावत् 'केवलवरणाणदंसणे' केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नं यावत् सिद्धा'=सिद्धिगतिं प्राप्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३५ ॥

कखमाणा विहरति, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं बहूणि वासाणि० दो मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेति, तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा) वे शत्रुजय पर्वत पर चढ़े चढ़कर के उन्होंने मरणाशसा से रहित होकर संलेखना धारण करली। इस तरह उन युधिष्ठिर प्रमुख पंच अनगारोंने सामायिक आदि चतुर्दश पूर्वोंका अध्ययन करके अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन करके तथा षष्ठ, अष्टम, आदि तपस्याओं को करके अन्त में दो मास की संलेखना से अपने आप की प्रीति पूर्वक सेवित किया और जिस निमित्त नग्न भाव-निर्ग्रंथ अवस्था धारण की थी उस अर्थ को उन्हों ने सिद्ध कर लिया। सिद्ध करके-आराधित कर के अनंत अर्थ को विषय करने वाले केवलवरज्ञानदर्शन को उत्पन्नकर यावत् वे सिद्धि गति को प्राप्त हो गये॥ सूत्र ३५ ॥

तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि वासाणि० दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेति, तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा)

તેઓ શત્રુંજય પર્વત ઉપર ચઢયા અને ચઢીને તેમણે મરણાશ સાથી રહિત થઇને સલેખના ધારણ કરી લીધી આ પ્રમાણે તે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાંચે અનગારોએ સામાયિક વગેરે ચતુર્દશ પૂર્વોનુ અધ્યયન કરીને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનુ પાલન કરીને તેમજ ષષ્ઠ અષ્ટમ વગેરે તપસ્યાઓને કરીને છેવટે બે માસની સલેખનાથી પ્રેમપૂર્વક પોતાની જાતને સેવિત કરી અને જે નિમિત્તને લઇને નગ્નભાવ-નિર્ગ્રંથ અવસ્થા ધારણ કરી હતી તે અર્થને તેમણે સિદ્ધ કરી લીધો સિદ્ધ કરીને આરાધિત કરીને અનંત અર્થને વિષયરૂપ બનાવનાર કેવળજ્ઞાન દર્શનને ઉત્પન્ન કરીને યાવત્ તેઓએ સિદ્ધગતિ મેળવી લીધી ॥ સૂત્ર ૩૫ ॥

मूलम्–तएणं सा दोवई अज्जा सुव्वयाण अज्जियाण अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, से णं भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झइ जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ३४ ॥ सोलसमं नायज्झयणं समत्त ॥ १६ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु सा द्रोपदी आर्या साध्वी सुव्रतानामार्यिकाणामन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा मासिक्या सलेखनया आलोचित प्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा 'बंभलोए पंचमे ब्रह्मलोके देवत्वेन ' उववन्ना '

' तएणं सा दोवई ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा दोवई अज्जा) उस द्रौपदी आर्याने (सुव्वयाण अज्जियाण अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ) सुव्रता आर्या के पास सामायिक आदि ११ अंगो का अध्ययन किया (अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइय पडिक्कंता कालमासे काल किच्चा बंभलोए उववन्ना) अध्ययन करके अनेक वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर एक मास की सलेखना

તએણ સા દોવઈ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-(તએણ) ત્યારપછી (સા દોવઈ અજ્જા) તે દ્રૌપદી આર્યાએ (સુવ્વયાણ અજ્જિયાણ અંતિએ સામાઇયમાઇયાઇ એક્કારસઅંગાઇ અહિજ્જઇ) સુવ્રતા આર્યાની પાસે સામાયિક વગેરે ૧૧ અંગોનુ અધ્યયન કર્યું

(અહિજ્જિત્તા બહૂણિ વાસાણિ० માસિયાએ સલેહણાએ० આલોઈય પડિક્કંતા કાલમાસે કાલકિચ્ચા બંભલોએ ઉવવન્ના)

અધ્યયન કરીને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું ત્યાર

उत्पन्ना, तत्र तस्मिन् देवलोके-खलु अस्त्येकेषां=केषांचिद्देवानाम् दशसागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र खलु द्रौपदेवस्यापि दशसागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता तत्र खलु गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! सा खलु द्रौपदी देवी आयुर्भवस्थितिक्षयेण 'ताओ' तस्माद् देवलोकाच्च्युत्वा कुत्रगमिष्यति कुत्रोत्पत्स्यते ? भगवान् प्राह-' जाव ' इति यावन्महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति, यावत् सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ।

से आलोचित प्रतिक्रान्त बन वे काल अवसर काल कर के पाचवें ब्रह्म लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई । (तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं दुवयस्स दवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, सेणं भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहि, जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उस देवलोक में कितनेक देवों की दश सागर की स्थिति प्रज्ञप्त हुई है। सो वहा द्रौपदी देव की दश सागर की स्थिति हुई। अब गौतम पूछते है हे भदत ! वह द्रौपदी देव आयु एव भवस्थिति के क्षय होने पर वहा से चव कर कहां जावेगा-कहा उत्पन्न होगा ? उत्तर में भगवान कहते हैं-हे गौतम ! वह द्रौपदी देव वहां से चव कर महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगा और वहीं से सिद्ध बनेगा यावत् समस्त दुःखों का अत करेगा ।

પછી એક માસની સલેખનાથી આલોચિત પ્રતિક્રાત બનીને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને પાચમા બ્રહ્મલોકમા દેવના પર્યાયથી જન્મ પામી

(तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, सेणं भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहि, जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તે દેવલોકમા કેટલાક દેવો ની દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞપ્ત થઈ છે આ પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીની ત્યા દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞપ્ત થઈ

હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદન્ત ! તે દ્રૌપદી દેવીની આયુ અને ભવસ્થિતિ પૂરી થયા બાદ ચવીને ક્યા જશે ? ક્યા ઉત્પન્ન થશે ?

તેના ઉત્તરમા ભગવાન કહેવા લાગ્યા કે હે ગૌતમ ! તે દ્રૌપદી દેવ ત્યાથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ બનશે યાવત્ તેઓ પોતાના સમસ્ત દુખોનો અત કરશે

सुधर्मास्वामी कथयति-' एव खलु ' इत्यादि। एव खलु हे जम्बू! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायं=पूर्वकथितः अर्थः=द्रौपदीदृष्टान्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः, प्ररूपितः, इति ब्रवीमि व्याख्यापूर्ववत् ॥ ३४ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-प्रतिविरचितायां ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्या, अनगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां षोडशमध्ययन समाप्तम् ॥ १६ ॥

सुधर्मा स्वामी कहते हैं हे जबू! श्रमण भगवान महावीर ने जो सिद्धि गतिनामक स्थान को प्राप्त हो चुके है इस षोडश ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त द्रौपदी दृष्टान्त रूप भाव अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं उन्ही श्रमण भगवान महावीर के द्वारा कहे श्रुत उपदेश के अनुसार कहता हूँ ॥ सूत्र ३६ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत

"ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका

सोलहवा अध्ययन समाप्त ॥ १६ ॥

સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે આ સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વે વર્ણવેલો દ્રૌપદી દૃષ્ટાત રૂપ ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર વડે કહેવાએલા શ્રુત ઉપદેશ મુજબ જ તમને હુ કહી બતાવું છું ॥સૂ૦૩૬॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી

વ્યાખ્યાનુ સોળમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

नाए जाव उवायमाणा२ चिट्ठति, तएण से णिज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे ण देवाणुप्पिया ! कालियदीवे तेणं सवूढा एसण कालियदीवे आलोक्इ, तएणं ते कुच्छिधारा य४ तस्स णिज्जामगस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेण वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोय वहणं लवेंति लवित्ता एगट्टियाहिं कालियदीव उत्तरति, तत्थ ण ते बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासति, कि ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएण ते आसा ते वाणियए पासति पासित्ता तेसि गंध अग्घायंति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा तओ अणेगाइ उब्भमति, तेण तत्थ पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः-

-:जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ-(भते ! हे भदत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण) यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धिगति नामकस्थान को प्राप्तकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तर-

---

जइण भते ! इत्यादि—

टीकार्थ-(भते !) હે ભદન્ત ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण) જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिशीर्षं नाम नगरमासीत् । ' वण्णओ ' वर्णकः=' ऋद्धे ' त्यादि-नगरवर्णनम् पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् ' वण्णओ ' वर्णकः-' महयाहिमवते ' त्यादि राजवर्णन पूर्ववद् बोध्यम् । तत्र खलु हस्तिशीर्षे

मस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते) सोलहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है-तो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है (एव खलु जम्बू !) इस प्रकार जम्बू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी अब उन्हें समझाते हैं-वे कहते है हे जम्बू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है:-

(तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण कणगकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण हत्थिसीसे णयरे बहवे सजत्ता णावा वाणिगया परिवसति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था) उस काल और उस समय मे हस्तिशीर्ष नाम का नगर था। "ऋद्ध" इत्यादि रूपसे पूर्व अध्ययनों में वर्णित पाठ की तरह इस नगर का वर्णन जानना चाहिये। उस नगर मे कनक केतु नामका राजा रहता था। इसका भी वर्णन " महया हिमवत " इत्यादिरूप से पहिले के अध्ययनोंमे वर्णित राजाओंके वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। उस

(सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तरमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते)

સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોકત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ત્યારે સિદ્ધ ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકેલા તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સત્તરમા જ્ઞાતા ધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે

(एव खलु जम्बू) આ રીતે જબૂના પ્રશ્નને સાભળીને તેમને સમજાવતા સુધર્મા સ્વામી કહેવા લાગ્યા કે હે જબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે —

(तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थण कणगकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थण हत्थिसीसे णयरे बहवे सजत्ता णावा वाणियगा परिवसति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था)

તે કાળે અને તે સમયે હસ્તિશીર્ષ નામે નગર હતું " ऋद्ध " વગેરે રૂપમા પહેલાના અધ્યયનોમા વર્ણન કરવામા આવેલા પાઠની જેમ આ નગરનુ વર્ણન પણ જાણી લેવુ જોઇએ તે નગરમા કનકકેતુ નામે રાજા રહેતો હતો

नाए जाव उवायमाणा२ चिट्ठंति, तएणं मे णिज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालियदीवे तेण सवूढा एसएण कालियदीवे आलोक्इ, तएणं ते कुच्छिधारा य४ तस्स णिज्जामगस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयाखिणाणुकूलेण वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोयवहण लवेंति लवित्ता एगट्ठियाहिं कालियदीव उत्तरति, तत्थ णं ते बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासति, कि ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासति पासित्ता तेसि गंध अग्घायंति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा तओ अणेगाइ उब्भमंति, तेणं तत्थ पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरंति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः-

---

-:जइण भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थ-(भंते ! हे भदंत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण) यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धिगति नामकस्थान को प्राप्तकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तर-

---

जइण भंते ! इत्यादि—

टीकार्थ-(भंते !) હે ભદન્ત ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण) જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

माना ' सखोहिज्जमाणी २ ' सक्षोभ्यमाणा २ पुनः पुनः क्षोभ प्राप्यमाणा सती तत्रैव=एकस्थान एवेतस्ततः परिभ्राम्यति किन्तु ततः पर गन्तु न प्रभवतीति भावः। ततः खलु स निर्यामकः=नाविक ' णट्ठमइए ' नष्टमतिक -मतिज्ञानरहितः ' णट्ठसुइए ' नष्टश्रुतिक -विस्मृतनिर्यामकशास्त्रः दिग्निर्णय कर्तुमशक्तत्वात् णट्ठसण्णे ' नष्टसञ्ज्ञः=मार्गज्ञानरहितः ' मूढदिसाभाए ' मूढदिग्भागः=पूर्वादि दिग्विभागज्ञानरहितः जातश्चप्यासीत्, पुनश्च स न जानाति यत् कतर=क देश

२ तत्थेव परिभमइ, तएण से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठ सुइए णट्ठ सण्णे मूढदिसभाए जाए यावि होत्था) एक दिनकी बात है कि जब ये सांयात्रिक पोत वणिक एक जगह मिलकर बैठे हुए थे तब अष्टम अध्ययन में वर्णित अरहन्नक सेठ की तरह इनका लवण समुद्रसे होकर परदेश में व्यापर निमित्त जाने का विचार हुआ। विचार स्थिर होते ही ये जब नौका द्वारा लवण समुद्र मे सैकडो योजन तक निकल चुके तब इनके लिये जिन रक्षित और जिनपालितकी तरह आकस्मिक अनेक उत्पातशत (सैकडों)हुए। उस समय प्रलय कालकी तरह प्रचण्ड वायु उठी। उससे उनकी नौका बार २ डगमगा ने लगी इधर से उधर फिर ने लगी। बार २ चञ्चल होकर बार २ क्षुभित होकर एक ही स्थान पर नीची ऊँची होने लगी-उससे आगे वह नहीं बढी। इससे निर्यामिक-नाविक-मतिज्ञान से रहित हो गया। दिशाओं का निर्णय करने का ज्ञान उसका जाता रहा। वह मार्ग ज्ञान रहित होकर दिग्मूढ बन गया। (ण जोणइ

२ सखोहिज्जमाणी १ तत्थे वपरिभमइ, तएण से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठसुइए णट्ठसण्णे मूढ दिसाभाए जाए यावि होत्था)

એક દિવસની વાત છે કે જ્યારે તેઓ સર્વે સાયાત્રિક પોતવણિકો એક સ્થાને એકત્ર થઈને બેઠા હતા ત્યારે આઠમા અધ્યયનમા વર્ણિત અરહન્નક શેઠની જેમ તેમનો પણ લવણ સમુદ્રમા થઈને પરદેશમા વેપાર માટે જવાનો વિચાર થયો વિચાર સ્થિર થતા જ તેઓ જ્યારે નૌકા વડે લવણ સમુદ્રમા સેકડો યોજન સુધી પહોચી ગયા ત્યારે જીનપાલિત અને જીનરક્ષિતની જેમજ તેમના માટે પણ સેકડો અનિચ્છિતા ઉપદ્રવો ઉત્પન્ન થયા તે વખતે પ્રલય કાળના જેવો પ્રચડ વાયુ ફુકાવા લાગ્યો તેથી તેમની નૌકા વારવાર ડગ મગવા લાગી, આમથી તેમ ફરવા લાગી વારેઘડીએ ચચળ થઈને, વારવાર ક્ષુભિત થઈને એક જ સ્થાન ઉપર નીચે ઉપર થવા લાગી, તેનાથી આગળ વધી નહિ તેથી નિર્યામિક-નાવિક મતિજ્ઞાનથી રહિત વઈ ગયો દિશા ઓને જાણવાનુ તેનુ જ્ઞાન જતું રહ્યુ માર્ગજ્ઞાનથી રહિત થઈને દિગ્મૂઢ બની

नगरे बहवः ' सजत्ताणावावाणियगा ' सयात्रानौकावाणिजका'=स=सहिता यात्रा=देशान्तरगमन सयात्रा, तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः=पोतवणिज.-सयात्रा नौका वाणिजकाः परिवसति कीदृशाः ? इत्याह-आढया यावत् ' बहुजणस्स ' बहुजनस्य सम्बन्धसामान्ये षष्ठीजनसमुदायेनेत्यर्थः ' अपरिभूया ' अपरिभूताः= पराभवरहिता चाप्यासन् । तत खलु तेषा सयात्रानौका वाणिजकानाम् अन्यदा= अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समय ' एगयओ ' एकत एकत्रमिलित्वा ' जहा अरहण्णओ ' यथा अर्हन्नक =अत्रेदमिदं यथनोक्तार्हन्नकवत् यावत् लवणसमुद्रमनेकानि योजन शतानि ' ओगाढा ' अवगाढाः=उत्तीर्णाश्चिप्यागन् । तत =तत्र खलु तेषा यावत् बहूनि ' उप्पाइयसयाइ ' औत्पातिकशतानि=आकस्मिकोत्पातशतानि यथा माक न्दिकदारकयोः-जिनरक्षितजिनपालितयोः सजातानि तथैतस्यापि यावत् ' कालि यवाए ' कालिकवातः मलयकालिकवत्प्रचण्डवातश्च तत्र समुत्थितः । तत.=तदन न्तर खलु सा नौका तेन कालिकवातेन ' आघोलिज्जमाणी २ ' आघूर्ण्यमाना २ पुनः पुनर्भ्राम्यन्ती ' सचालिज्जमाणी २ ' सचाल्यमाना २ पुन' पुनश्चाल्य

हस्तिशीर्ष नगरमें अनेक पोत वणिक (नावसे व्यापार करने वाले) रहते थे। ये एक साथ मिलकर ही परदेश में जाकर व्यापार किया करते थे। इनकी उस नगर में अच्छी प्रतिष्ठा थी-कारण ये सब के सब लक्ष्मीदेवी के विशेष रूप से कृपापात्र थे। (तएण तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया एगयाओ जहा अरहण्णाओ जाव लवणसमुद्द अणेगाइ जोयण सयाइ ओगाढा यावि होत्था, तएण तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइ जहा मागदियदारगाण जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए, तएण सा तेण कलियवाएण आघोलिज्जमाणी २ सचालिज्जमाणी २ सखोहिज्जमाणी

આ રાજાનુ વર્ણન પણ " મહયા હિમવત " વગેરે રૂપમા પહેલાના અધ્યયનોમા વર્ણિત રાજાઓના વર્ણન જેવુ જ જાણી લેવુ જોઇએ તે હસ્તિશીર્ષ નગરમા ઘણા પોતવણિકો (વહાણ વડે વેપાર કરનારા) રહેતા હતા તેઓ સર્વે એકી સાથે મળીને પરદેશમા જતા અને ત્યા વેપાર કરતા હતા તે નગરમા તેમની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી જેમકે ખાસ કરીને તેઓ સર્વે લક્ષ્મીના કૃપાપાત્ર હતા

(तएण तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाण अन्नया एगयाओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा यावि होत्था, तएण तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइ जहा मागदियदारगाण जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए, तएण सा णावा तेण कलियवाएण आघोलिज्जमाणी २

प्रविशन्ति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत् तत्प्राभृतम् ' उवणेंति ' उपनयन्ति भूपसमीपे स्थापयन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्ताणावावाणियगाणं त महत्थ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता त सजत्ताणावावाणियगा एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्द च अभिक्खणं२ पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थि आइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?, तएणं ते सजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ एव वयासी—एव खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो त चेव जाव कालियदीव तेणं सवूढा, तत्थ ण बहवे हिरण्णागरा य जाव

कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उवर्वेति) वहां आकर के वे लोग उस हस्तिशीर्ष नगर के बाहर के प्रधान उद्यान में ठहर गये वहा ठहर उन्हो ने वहीं पर शकटी—गाडी शाकटो—गाडों की ढील—ठहरा दिया। ढीलकर के बाद में महार्थ—महाप्रयोजन साधक भूत —यावत् प्राभृत भेट को उन्हों ने अपने २ हाथो मे लिया—और लेकर के वे हस्तिशीर्ष नगर में प्रविष्ट हुए नगर में प्रविष्ट होकर वे जहा कनक केतु राजा थे वहा पहुँचे। वहा पहुँचकर उन्हो ने उस महाप्रयोजन साधक भूत प्राभृत को राजा के पास रख दिया ॥ सू० २ ॥

हत्थिसीस नगर अणुपविसति, अणुपविसित्ता, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उवर्वेति)

ત્યા આવીને તેઓ બધા તે હસ્તિશીર્ષ નગરની બહારના મુખ્ય ઉદ્યાનમા રોકાઈ ગયા, ત્યા રોકાઇને તેમણે ત્યા જ શકટી—ગાડી અને શાકટો—ગાડાઓને છોડી મૂકયા ત્યારબાદ તેમણે મહાર્થ—મહાપ્રયોજન સાધક ભૂત યાવત્ ભેટને પોતપોતાના હાથોમા લીધી અને લઈને તેઓ હસ્તિશીર્ષ નગરમા પ્રવિષ્ટ થયા નગરમા પ્રવિષ્ટ થઇને તેઓ જ્યા કનકકેતુ રાજા હતો ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે તે મહાપ્રયોજન સાધક રૂપ ભેટને રાજાની સામે મૂકી દીધી ॥ સૂત્ર ૨ ॥

वा दिशं वा विदिशं वा प्रति मे पोतवहनम् नौकायानं ' अवहिए ' अपहृतम् महा वातेन नीतम् , इति । इति कृत्वा=इतिमनसि निधाय अपहृतमनः सङ्कल्पो यावत् ध्यायति=आर्त्तध्यानं करोति । तत खलु ते बहवः कुक्षिधाराश्च=पार्श्वतो नौका चालकाः कर्णधाराश्च=नाविकाः । ' गब्भिल्लगाय ' गार्भेयकाश्च नौमध्ये यथावत् सर कर्मकराः, सयात्रानौका वाणिजकाः=भाण्डपतयश्च यत्रैव स निर्यामकः=नौकाधिपतिरत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः-किं खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! अपहृतमनःसङ्कल्पाः निरुत्साहमनस्का यावत् ' झियायह ' ध्यायथ आर्त्तध्यानं कुरुथ, आर्षत्वे बहुवचनम् । तत खलु स निर्यामकस्तान् बहून् कुक्षिधाराश्च ४

कयर देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे अवहिए त्ति कट्टु) अतः जब उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं रहा कि यह महावात मेरी नौका को किस दिशा अथवा विदिशा की ओर ले गया है-तब इस प्रकार मन में विचार कर के वह (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) अपहृत मन. सकल्पवाला बनकर यावत् आर्तध्यान करने लगा। (तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य सजत्ता णावा वाणिया य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ) इतने में अनेक कुक्षिधर-पार्श्व में बैठकर नौका चलाने वाले कर्णधार-नाविक, गार्भेयक-नौका के भीतर यथावसर काम करने वाले और सांयात्रिक पोत वणिक जहां वह निर्यामक था-वहां आये। (उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्न तुम देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएणं से णिज्जामए

गयेा (ण जाणाइ कयर देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे अवहिएत्ति कट्टु) એથી જ્યારે તેને આ વાતની પણ ખબર રહી નહિ કે આ મહાવાત અમારી નૌકાને કઈ દિશા અથવા તો વિદિશા તરફ લઈ ગયેા છે ત્યારે મનમા આ જાતનેા વિચાર કરીને તે (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) અપહતમન સકલ્પવાળેા થઇને યાવત્ આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યેા

(तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य सजत्ता णावा वाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ)

એટલામા ઘણા કુક્ષિધર-પાર્શ્વમા બેસીને નૌકા ચલાવનારા, કર્ણધાર નાવિક, ગાર્ભેયક-નૌકામા યથા સમય કામ કરનારા અને સાયાત્રિકેા-પેાત વણિકેા જ્યા તે નિર્યામક હતેા ત્યા ગયા

(उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्न तुम देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-

य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिला-
वट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसि च फासिदिय पाउग्गाणं
दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति भरित्ता सगडीसागडं जोएंति
जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति उवाग-
च्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति सज्जित्ता
तेसि उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य
पाणियस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसि
च बहूण पोयवहणपाउग्गाण पोयवहणं भरेंति भरित्ता दक्खि
णाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरस
रूवगधाइं एगट्ठियाहि कालियदीवे उत्तारेंति । जहि २ च णं
ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा
तहि २ च णं ते कोडुंवियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्त
वीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि
समुदीरेमाणा चिट्ठंति तेसि परिपरंतेण पासए ठवेंति ठवित्ता
णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति
वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुवियपुरिसा बहूणि
किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य जाव सघाइमाणि य अन्नाणि
य बहूणि चक्खिदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति तेसि परि-
पेरतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया
चिट्ठंति जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ ण तेसिं बहूणं

घहवे तत्थ आसा किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइ उव्भमंति, तएणं सामी अन्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे, तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते सजत्तए एवं वयासी–गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया मम कोडुंबियपुरिसेहि सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएण ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ रायं एवं वयासी–एवं सामि त्तिकट्टु आणाए पडिसुणेंति, तएणं कणगकेऊ राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्तिएहि सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति, तएणं ते कोडुविय० सगडीसागडं सज्जेंति सज्जित्ता तत्थ णं वहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य वित्तवीणाण य अन्नेसि च वहूण सोतिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागडं भरेंति भरित्ता वहूणं किण्हाण य जाव सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव सघाइमाण य अन्नेसिं च वहूणं चक्खिदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागड भरेंति वहूणं कोट्टपुडाण य केयईपुडाण य जाव अन्नेसि च वहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाण सगडीसागडं भरेंति बहुस्स खडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराण य अन्नेसि च जिब्भिदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागड भरेंति । वहूण कोयवियाण य कवलाण

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कनककेतू राजा तेषां सयात्रनौकावाणिजकाना तन्महार्थं यावत् प्राभृतं ' पडिच्छइ ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति प्रतीष्य तान् सयात्रनौकावाणिजकान् एवमवादीत्-यूय खलु हे देवानुप्रियाः ! गामागर जाव अहिंडह ' ग्रामाकर यावत् - ग्रामाकरनगरादिषु आहिण्डथ= गच्छत, लवणसमुद्रं च अभीक्ष्ण २ पोतवहनेन अवगाहध्वे ' त ' तत्=तर्हि अस्ति ' आउ ' इतिनाक्यालङ्कारे किमपि ' भे ' युष्माभिः ' कहिंचि ' कुत्रचिद् ' अच्छेरए ' आश्चर्यकर्म=आश्चर्यजनकवस्तु 'दिट्ठपुव्वे ' दृष्टपूर्वम् ? यदि दृष्टमस्ति तर्हि कथयतेतिभाव' । ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजका कनककेतुमेवमव

-:तएण से कणगकेऊ राया इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कणगकेऊ राया) उस कनककेतु राजा ने (तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाण त महत्थ जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता-ते सजत्ता णावा वाणियगा एव वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! गामगर जाव आहिंडह लवणसमुद्द च अभिक्खण २ पोयवहणेण ओगाहह त अत्थिआइ केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?) उन सायात्रिक पोतवणिक जनों की उस महार्थसाधक भेंट को स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके फिर उन सायात्रिक पोतवणिक जनों से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियों तुमलोग अनेक ग्राम आकर नगर आदि स्थानों में जाते रहते हो और बार २ पोतवहन द्वारा लवणसमुद्र में अवगाहन करते रहते हो तो करो कहीं पर तुम ने यदि कोई आश्चर्य कारी वस्तु देखी हो तो कहो-(तएणं ते सजत्ता णावा वाणियगा कण

तएण से कणगकेऊ राया इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારપછી (से कणगकेऊ राया) તે કનકકેતુ રાજાએ

(तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाण त महत्थ जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता-ते सजात्ता णावा वाणियगा एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया ! गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्र च अभिक्खण २ पोयवहणेणं ओगाहह त अत्थि आइ केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?)

તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોની તે મહાર્થ સાધક ભેટને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો ઘણા ગામ, આકર, નગર વગેરે સ્થાનોમા આવજા કરતા રહો છો અને વહાણ વડે લવણ સમુદ્રની વારવાર યાત્રા કરતા રહો છો તો અમને કહો કે તમે કોઈ નવાઈ પમાડે તેવી અદ્ભુત વસ્તુ જોઇ છે ?

कोट्टपुडाणा य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णिअरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति जत्थ २ णं ते आसा आसयति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाय दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति करित्ता विअरए खणंति खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूण पाणगाण वियरे भरेंति भरित्ता तेसि परिपेरतेण पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति, जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयविया य जाव हसगब्भा य अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइ ठवेंति ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति, तएणं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तत्थेण अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूवगंधा इतिकट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिस-रसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाण सद्द जाव गंधाणं दूरदूरेणं अवक्कमंति, तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहसुहेण विहरंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्ह णिग्गथो वा णिग्गथी वा जाव सद्दफरिसरसरूवगंधेसु णो सज्जइ णो रज्जइ णो गिज्झइ, णो मुज्झइ णो अज्झोववज्जेइ से णं इहलोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीइ-वइस्सइ ॥ सू० २ ॥

कनककेतू राजा तेषा 'सजत्तिगाण' सायात्रिकाणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा तान् सायात्रिकान् एवमवदत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! मम कौटुम्बिकपुरुषैः सार्द्धं कालिकद्वीपात्तानश्वानानयत । ततः खलु ते सयात्रानौकावाणिजका कनककेतु राजानमेवमवादिषुः हे स्वामिन् ! एवमस्तु 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा= इत्युक्त्वा 'आणाए' आज्ञायाः=आज्ञामित्यर्थ,—'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति=

कर वहांसे कइ योजन दूरतक जंगलमें भाग गये । अतः हे देवानुप्रिय "कालिकद्वीप में हमलोगों ने उन घोडों रूपी आश्चर्य को देखा है। (तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तिगाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा ते सजत्तिए एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंबिय पुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह तएण ते सजत्ता णावा वाणिगया कणगकेऊ राय एव वयासी एव सामित्ति कट्टु आणाए पडिसुणेति, तएण कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेति) इसके बाद कनक केतु राजा ने उन सायात्रिक पोतवणिक्जनो के मुख से इस अर्थ को सुनकर उन सायात्रिकों से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियो ! तुमलोग जाओ और मेरे कौटुम्बिक पुरुषो के साथ कालिकद्वीप से उन अश्वो को लाओ। इस प्रकार सुनकर पोतवणिक् जनो ने कनक केतु राजा से ऐसा कहा

વનમા નાસી ગયા હે દેવાનુપ્રિય ! અમોએ કાલિક દ્વીપમા તે અશ્વ રૂપી અદ્ભુત વસ્તુને જોઈ છે

(तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तिगाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा ते सजत्तिए एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा कणगकेऊ राय एव वयासी एव सामी त्ति कट्टु आणाए पटिसुणेंति, तएण कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति)

ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોના મુખથી આ વાતને સાભળીને તે સાયાત્રિકોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો મારા કૌટુંબિક પુરુષોની સાથે કાલિક દ્વીપમા જાઓ અને ત્યાથી તે અશ્વોને લાવો આ પ્રમાણે કનકકેતુની આજ્ઞા સાભળીને તે પોતવણિકજનોએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામી ! તમારી આજ્ઞા અમારા માટે પ્રમાણ સ્વરૂપ છે આમ કહીને તેમણે કનકકેતુ રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી ત્યાર

दन्-एव खलु वयं हे देवानुप्रियाः ! इहैव हस्तिशीर्षे नगरे परिवसामः, 'तंचेव' तदेव पूर्वोक्तवर्णनं सर्वमत्र वाच्यम् 'जाव' यावत् कालिकद्वीपान्ते=कालिक द्वीपसमीपे खलु 'सवूढा' सव्यूढाः-प्राप्ताः, तत्र खलु बहवो हिरण्याकराश्च यावद् बहवस्तत्राश्वाः सन्ति, किंते' किम्भूतास्ते ? इत्याह-'हरिरेणु जाव' हरिद्रेणु श्रोणि सूत्रकाः यावद्-तेऽस्मद्गन्धमात्राय भीताः सन्तः अनेकानि योजनानि दूरम् 'उब्भमंति' उद्भ्रमन्ति पलायन्ते स्म, तत्. खलु हे स्वामिन् ! अस्माभि "कालिक-द्वीपे तेऽश्वाः सन्ति" तदेव 'अच्छेरए' आश्चर्यक दृष्टपूर्वमिति । ततः खलु स

गकेऊ एव वयासी एव खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे वसामो त चेव जाव कालियदीव तेण सवूढा तत्थ ण बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किंते ? हरिणेणु जाव अणेगाइ जोयणाइ उब्भमंति-तएण सामी अम्हें हि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे) इस प्रकार राजा की बात सुनकर उन सांयात्रिक पोतवणिग्जनों ने उन कनककेतु राजा से कहा हे देवानुप्रिय ! हमलोग इसी हस्तिशीर्ष नगर में रहते हैं। हमलोग यहा से लवणसमुद्र में होकर व्यापार के निमित्त बाहर परदेश गये हुए थे-। मार्ग में हमलोगो को अनेक प्रकार के सैकडो उपद्रव हुए-उनसे जिस किसी तरह सुरक्षित हो हमलोग कालिकद्वीप के समीप पहुँच गये। वहाँ हमने अनेक हिरण्य आदि की खानो को एव अनेक अश्वों को कि जिनका कटिभाग हरिद्रर्णवाली धूलि से रचित कटिसूत्रसे चिन्हित था देखा, वे हमलोगों की गध को सूघ

(तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा कणगकेऊ एव वयासी-एव खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे वसामो त चेव जाव, कालिअ दीव तेण सवूढा, तत्थ ण बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किं ते ? हरि-रेणु जाव अणेगाइ जोयणाइ उब्भमंति-तएण सामी अम्हेंहि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे)

આ પ્રમાણે રાજાની વાત સાભળીને તે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોએ તે કનકકેતુ રાજાને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા આ હસ્તિશીર્ષ નગર મા જ રહીએ છીએ અમે બધા વ્યાપાર ખેડવા માટે અહીંથી લવણ સમુદ્રમા થઈને બહાર પરદેશમા ગયા હતા રસ્તામા ઘણી જાતના સેકડો ઉપદ્રવો થયા છેવટે ગમે તેમ કરીને સુરક્ષિત રૂપમા અમે બધા કાલિકદ્વીપની પાસે ગયા ત્યા અમોએ ઘણી હિરણ્ય વગેરે ની ખાણોને અને ઘણા અશ્વોને-કે જેમના કટિભાગો લીલા રંગની માટીથી બનાવેલા કટિસૂત્રથી ચિહ્નિત હતા-જોયા અમારી ગંધને સૂઘીને તે અશ્વો ત્યાથી કેટલાક યો [illegible] કર સુધી

'वित्तवीणाणय' वृत्तवीणाना=गोलाकार वीणाना च-अन्येषा च बहूनां नानाविधानां 'सोइंदियपाउग्गाण' श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणा=कर्णेन्द्रियसुखजनकाना द्रव्याणां= तन्त्र्यादिरूपाणा शकटीशाकट भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थ, भृत्वा बहूना 'किण्हाणय जाव सुक्काणय' कृष्णाना यावत्-नीलाना पीताना रक्ताना शुक्लानां च कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्ताना 'कट्ठकम्माण य' काष्ठकर्मणा=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादीनाम्, 'पोत्थकम्माणय' पुस्तपु कर्मगा-पुस्तेषु=वस्त्रताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि= लेखनकर्माणि, तेषाम्, 'चित्तकम्माण य' चित्रकर्मणा=पट्टकादिषु चित्ररूपाणाम्, 'लेप्पकम्माणय' लेप्यकर्मणा=मृत्तिकासेटिकादिना वल्ल्याद्याकाररचना विशेषरूपाणाम्, तथा-'गथिमाण य' ग्रन्थिमाना=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानाम्-यावत्-'वेढिमाण य' वेष्टिमाना=लतादि वेष्टनतो निष्पादितानाम्, 'पूरिमाण य' पूरिमाणा=कनकादिषु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो-को, षड् भ्रामरियों को -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखजनक तन्त्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त, शुक्ल और कृष्ण रग से रगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्तकर्मों को-वस्त्र, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के लेखों को, निबन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई कविता आदि को को-चित्रकर्मों को-पटिया आदि पर उकेरे गये विविध चित्रों को-लेप्यकर्मो को-मृत्तिका सेटिका आदि से वल्ली आदि रूप में बनाये गये चित्रों को, ग्रथिमों को विशेष चतुराई के साथ गांठों से बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रचीं गई चीजों को,-टोपियों को, हाथों की पैरों की अगुलियों में पहिरने योग्य

જેવી વીણાઓ, ભભાઓ-ભેરીઓ (નગારાઓ) ષડ્-ભ્રામરીઓ, ગોળ આકાર વાળી વીણાઓ તેમજ બીજા પણ ઘણા કર્ણેંદ્રિયને સુખ આપે તેવા તંત્રી વગેરે સાધનોને ભર્યા ભરીને લીલા, પીળા, રાતા, સફેદ અને કાળા રંગોથી રંગાએલા લાકડાના બનેલા રમકડાને, પુસ્તકર્મોને-વસ્ત્ર તાડપત્ર અને કાગળ વગેરે ઉપર લખાએલા જાતજાતના લેખોને, નિબંધોને, દૂહા, ચોપાઇ વગેરેમા લખાએલી ઉપદેશક કવિતાઓ વગેરેને, ચિત્ર કર્મોને-ફલક વગેરે ઉપર ચિત્રિત કરેલા ઘણા ચિત્રોને લેપ્ય કર્મોને, માટી સેટિકા વગેરેથી લતા વગેરે રૂપમા બનાવવામા આવેલા ચિત્રોને, ગ્રથિમોને-વિશેષ ચાતુર્યથી ગાઠોથી બનાવવામા આવેલા રમકડાને, લતાઓ વગેરે વડે વેષ્ટિત કરીને બનાવવામા આવેલી વસ્તુ

स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु कनकके तू राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! सांयात्रिकै: साई कालिकद्वीपात् मह्यम् अश्वानानयत। तेऽपि=कौटुम्बिकपुरुषाः 'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति 'तथास्तु' इत्युक्त्वा राज्ञाज्ञां स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः शकटीशाकटं 'सज्जेंति' सज्जयन्ति=कालिकद्वीपे गमनार्थं सज्जीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा तत्र खलु शकटीशाकटे बहूना च वल्लकीनां च, भ्रामरीणां च 'कच्छभीण य' कच्छभीनां च-'कच्छभी' इति वल्लाकारवीणाविशेषः, भभाना=भेरीणा च, षड्भ्रामरीणां च,

હે-સ્વામિન્! હમેં આપકી આજ્ઞા પ્રમાણ હૈ-ઐસા કહકર ઉન્હોં ને કનક કેતુ રાજા કી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા। ઇસકે બાદ કનક કેતુ રાજા ને અપને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો બુલાયા-ઔર બુલાકર ઉનસે ઐસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયો! તુમ સાયાત્રિક પોતવણિક્ જનોં કે સાથ જાઓ -ઔર કાલિકદ્વીપ સે મેરે લિયે ઘોડોં કો લે આઓ। રાજા કી ઇસ આજ્ઞા કો ઉન લોગોં ને ભી સ્વીકાર કર લિયા। (तएण ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थण बहूण वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भभाण य छब्भामरीण य विचित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूण सोइंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागडं भरेंति, भरित्ता बहूण किण्हाण य जाव सवाइमाण य अन्नेसिं च बहूण चक्खिंदियपाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति) ઇસકે બાદ ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને ગાડ઼ી ઔર ગાડ઼ોં કો સજ્જિત કિયા-સજ્જિત કરકે ઉનમેં ઉન્હોં ને અનેક વીણાઓં કો, વલ્લકિયોં કો, ભ્રામરિયોં કો, કચ્છપ

બાદ કનકકેતુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોની સાથે જાઓ અને કાલિક દ્વીપમાંથી મારા માટે ઘોડાઓને લાવો રાજાની આ આજ્ઞાને તે લોકોએ પણ સ્વીકારી લીધી

(तएण ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थण बहूण वीणाण य वल्लकीण य भामरीणय कच्छभीणय भभाण य छब्भामरीण य विचित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूण सोइंदियपउग्गाण दव्वाण सगडीसागडं भरेंति, भरित्ता बहूण किण्हाण य जाव सवाइमाण य अन्नेसिं च बहूण चक्खिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागडं भरेंति)

ત્યારપછી તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતયાં જોતરીને તેમા તેમણે ઘણી વીણાઓ, વલ્લકીઓ ભ્રામરીઓ, કાચબાના આકાર

'वित्तवीणाणय' वृत्तवीणाना=गोलाकार वीणाना च-अन्येषा च बहूनां नानाविधानां 'सोइंदियपाउग्गाण' श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणा=कर्णेन्द्रियसुखजनकाना द्रव्याणां=तन्त्र्यादिरूपाणा शकटीशाकट भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थ, भृत्वा बहूना 'किण्हाणय जाव सुक्काणय' कृष्णाना यावत्-नीलाना पीताना रक्ताना शुक्लानां च कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्ताना 'कट्ठकम्माण य' काष्ठकर्मणा=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादीनाम्, 'पोत्थकम्माणय' पुस्तघु कर्मगा-पुस्तेषु=वस्त्रताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि=लेखनकर्माणि, तेषाम्, 'चित्तकम्माण य' चित्रकर्मणा=पट्टकादिषु चित्ररूपाणाम्, 'लेप्पकम्माणय' लेप्यकर्मणा=मृत्तिकासेटिकादिना वल्ल्याद्याकाररचना विशेषरूपाणाम्, तथा-'गथिमाण य' ग्रन्थिमाना=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानाम्-यावत्-'वेढिमाण य' वेष्टिमाना=लतादि वेष्टनतो निष्पादितानाम्, 'पूरिमाण य' पूरिमाणा=क्नकादिषु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो-को, षट्ट भ्रामरियों को -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखजनक तन्त्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त, शुक्ल और कृष्ण रग से रगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्तकर्मों को-वस्त्र, ताडपत्र एव कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के लेखों को, निबन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई कविता आदि को को-चित्रकर्मों को-पटिया आदि पर उकेरे गये विविध चित्रों को-लेप्यकर्मो को-मृत्तिका सेटिका आदि से बल्ली आदि रूप में बनाये गये चित्रों को, ग्रथिमों को विशेष चतुराई के साथ गाठों से बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रचीं गई चीजों को,-टोपियों को, हाथों की पैरों की अगुलियों में पहिरने योग्य

જેવી વીણાઓ, ભભાઓ-ભેરીઓ (નગારાઓ) ષટ્ટ-ભ્રામરીઓ, ગોળ આકાર વાળી વીણાઓ તેમજ બીજા પણ ઘણા કર્ણેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા તન્ત્રી વગેરે સાધનોને ભર્યા ભરીને લીલા, પીળા, રાતા, સફેદ અને કાળા રંગોથી રંગાએલા લાકડાના બનેલા રમકડાને, પુસ્તકર્મોને-વસ્ત્ર તાડપત્ર અને કાગળ વગેરે ઉપર લખાએલા જાતજાતના લેખોને, નિબંધોને, દૂહા, ચોપાઇ વગેરેમા લખાએલી ઉપદેશક કવિતાઓ વગેરેને, ચિત્ર કર્મોને-ફલક વગેરે ઉપર ચિત્રિત કરેલા ઘણા ચિત્રોને લેપ્ય કર્મોને, માટી સેટિકા વગેરેથી લતા વગેરે રૂપમા બનાવવામા આવેલા ચિત્રોને, ગ્રથિમોને-વિશેષ ચાતુર્યથી ગાઠોથી બનાવવામા આવેલા રમકડાને, લતાઓ વગેરે વડે વેષ્ટિત કરીને બનાવવામા આવેલી વસ્તુ

निष्पादितानाम्, 'संघाइमाण य' सङ्घातिमानां=लोहकाष्ठादिभी रथादिषु वस्तु-समूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अन्नेसिं च बहूणं 'चक्खिंदियपाउग्गाण' चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणां=नयनानन्दजनकानां द्रव्याणां संकड्ढीसाकड्ढं भरन्ति। तथा बहूनां 'कोट्ठपुडाण य' कोष्ठपुटानां = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतकीपुटानां च यावत्-एलापुटानां च, कुसुमपुटानां च, उशीरपुटानां=' खस ' इतिभाषा प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लवङ्गपुटानां चेत्यादि। अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्याणां द्रव्याणां संकड्ढीसाकड्ढं भरन्ति। तथा बहोः खण्डस्य च गुडस्य च शर्करायाश्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः 'मच्छंडियाए य' मत्स्यण्डिकायाः= ' कालीमिसरी ' इति भाषा प्रसिद्धायाः, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुलकन्द ' इति प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां संकड्ढीसाकड्ढं भरन्ति। तथा बहूनां ' कोयविगाण य ' कोयविकानां = रूतपूरितमावरणविशेषाणां ' रजाई ' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलानां=रत्नकम्बलानाम्, प्रावरणानां=शाटिकानां ' चद्दर ' इति प्रसिद्धानाम्, ' नवतयाण य ' नवतकानाम्=ऊर्णामयपर्याणानां

आभूषण आदि कों को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों पर कृत छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम है इन पूरिमों को और संघातिमों को-लोहकाष्ट आदि की तरह अनेक वस्तुओं के समुदाय से निष्पादित चित्रो को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा। (बहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाणं संगडीसागड भरेति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराणय अन्नेसिं च जिब्भिंदिय पाउग्गाण दव्वाण संगडीसागड भरेति बहूण कोयविगाण य केवलाणय पावरणोण य नवतयाण य

એને-ટોપીઓને, હાથો, પગો અને આગળીઓમા પહેરવાના આભૂષણ વગે રેને પૂતળીની જેમ જે સુવર્ણ વગેરેના પતરા ઉપર કાણા પાડીને તેમને પૂરીને બનાવવામા આવેલા ચિત્રો એટલે કે પૂરિમોને અને સ ઘ તિમોને લોખડ, કાષ્ઠ વગેરેથી બનાવવામા આવેલા રથ વગેરેની જેમ ઘણી વસ્તુઓને એકત્રિત કરીને તેમના વડે બનાવવામાં આવેલા ચિત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા નેત્ર ઇન્દ્રિયને ગમે તેવા દ્રવ્યોને ભર્યા

(बहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदिय पाउग्गाण दव्वाण संगडीसागड भरेंति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाण दव्वाण संगडीसागड भरेंति बहूण कोयविगाण य केवलाण य पावरणाण

'जीन' इति प्रसिद्धानाम्, मलयाना च=मलयदेशोत्पन्नवस्त्रविशेषाणाम्, 'मसूराण य' मसूरकाणा=वस्त्रादिनिर्मित वृत्ताकारासनविशेषाणाम्, 'सिलावट्टाण य' शिलापट्टानां=पट्टाकारचिक्कणशिलाना यावत् हसगर्भाणा=हसः=चतुरिन्द्रियकृमिविशेषः, गर्भः=तन्निर्वर्तित कोसिकारोरुतरूपः, तन्मयवस्त्राण्यपि हंसगर्भाणीत्यु-

मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति) इसी तरह अनेक कोष्टपुटो को-सुगंधित द्रव्य विशेषों को केतकीपुटो को-सुगधित पुष्पों यावत् एलापुटो को-इलायचियों को, उखीरपुटों को, खश के समुदाय को-कुकुमपुटों को तथा और भी अनेक, घ्राणेन्द्रिय को तृप्ति कारक द्रव्यों को उन लोगो ने गाडी और गाडो में भरा। वहुत सी खाड, वहुत से गुड वहुत सी शर्करा- मिसरी-वहुत सी मत्स्यण्डी-कालपी मिसरी वहुत से गुलकद, वहुतसे पद्मपाक को तथा और भी जिह्वाइन्द्रिय को तृप्ति करने वाले द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाडों में भरा। इसी तरह स्पर्शन इन्द्रिय को आनददेने वाले कोयविको को-रूई कपास-से भरे हुए प्रावरण विशेषों को-रजाइयो को-कम्वलों को-रत्न कम्वलों को-प्रावरणो को-चद्दरो को-नवलको को-ऊन के वने हुए पलेंचों को-जीनो को-मलयदेश के वने हुए वस्त्रों को, मसूरकों को-वस्त्रों से वनाये हुए गोलाकार आसनों को-शिलापट्टो को-पट्टाकार चिकनी

य मलयागय मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति)

આ પ્રમાણે ઘણા કોષ્ટ પુટકોને-સુગધિત દ્રવ્ય-વિશેષોને, કેતકી પુટોને કેવડાના પુષ્પોને યાવત્ એલાપુટોને, એલચીઓને, ઉશીર પુટોને-ખશના સમુદાયોને, કુકુમ પુટોને તેમજ બીજા પણ ઘણા ઘ્રાણેન્દ્રિય (નાક) ને તૃપ્તિ પમાડનારા દ્રવ્યોને તેઓએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભર્યા - બહુ જ પુષ્કળ પ્રમાણમા ખાડ, ગોળ, સાકર મિશ્રી, મત્સ્ય ડી કાલપી મિશ્રી, (ઉચી જાતની સાકર) ગુલકદ, પદ્મપાકો તેમજ બીજા પણ ઘણા જીહ્વાઈ ઇન્દ્રિય (જીભ) ને તૃપ્તિ આપનાર દ્રવ્યોને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભર્યા આ પ્રમાણે સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપનારી કોયવિકોને રૂથી ભરેલા પ્રાવરણ વિશેષોને-રજાઓને, કામળોને, રત્ન કામળોને, પ્રાવરણોને, ચાદરોને, નવલકોને, ઊનથી બનાવવામા આવેલા પલેચાઓને-જીનોને-મલય દેશના વસ્ત્રોને, મસૂરકોને-વસ્ત્રો વડે બનાવવામા આવેલા ગોળ આકાર આસનોને, શિલાપટ્ટકોને-પટ્ટના આકારની

निष्पादितानाम्, 'संघाइमाण य' सङ्घातिमानां=लोष्टकाष्टादिनी स्थादिषु वस्तु-समूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अ नेगा च वहूना ' चक्खिंदियपाउग्गाण ' चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणा=नयनानन्दजनकाना द्रव्याणा शब्दीशाकट भरन्ति। तथा वहूना ' कोट्ठपुडाण य ' कोष्ठपुटाना = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतकीपुटानां च यावत्-एलापुटाना च, कुङ्कुमपुटानां च, लवङ्गपुटानां=' खम ' इतिभाषा प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लवङ्गपुटाना चेत्यादि। अन्येषां च वहूना घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्याणा द्रव्याणा शब्दीशाकट भरन्ति। तथा गुडस्य खण्डस्य च शर्कराया श्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धाया 'मच्छंडियाए य' मत्स्यण्डिकाया:= 'कालपीमिसरी' इति भाषा प्रसिद्धाया, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणा=गुलकन्द' इति प्रसिद्धाना च, अन्येषा च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणा द्रव्याणां शब्दीशाकट भरन्ति। तथा वहूनां 'कोयविगाण य' कोयविकाना = रूतपूरितमावरणविशेषाणा 'रजाई' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलाना=रत्नकम्बलानाम्, पावरणाना=शाटिकाना 'चद्दर' इति प्रसिद्धानाम्, 'नवतयाण य' नवतत्रानाम्=ऊर्णामयपर्याणानां

आभूषण आदि कों को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों पर कृत छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन पूरिमों को और सघातिमों को-लोहकाष्ट आदि की तरह अनेक वस्तुओं के समुदाय से निष्पादित चित्रो को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा। (वहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च वहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागड भरेति, वहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराणय अन्नेसिं च जिब्भिंदिय पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति वहूण कोयविगाण य केवलाणय पावरणाण य नवतयाण य

ઓને-ટોપીઓને, હાથો, પગો અને આગળીઓમા પહેરવાના આભૂષણ વગેરેને પૂતળીની જેમ જે સુવર્ણ વગેરેના પતરા ઉપર કાણા પાડીને તેમને પૂરીને બનાવવામા આવેલા ચિત્રો એટલે કે પૂરિમોને અને સ ઘ તિમોને લોખડ, કાષ્ઠ વગેરેથી બનાવવામા આવેલા રથ વગેરેની જેમ ઘણી વસ્તુઓને એકત્રિત કરીને તેમના વડે બનાવવામાં આવેલા ચિત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા નેત્ર ઇન્દ્રિયને ગમે તેવા દ્રવ્યોને ભર્યા

(वहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च वहूण घाणिंदिय पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति, वहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति वहूण कोयविगाण य केवलाण य पावरणाण य नवतयाण

गोधूमादीनामङ्गकस्य ' आटा ' इति प्रसिद्धस्य, ' गोरसस्स य ' गोरसस्य=घृतादिकस्य च यावत् अन्येषा च बहूना पोतवहनप्रायोग्याणा द्रव्याणां पोतवहन भरन्ति, भृत्वा ' दक्खिणाणुकूलेण ' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन ' लंबेंति ' लम्बयन्ति=तीरस्थापितरङ्कुषु बध्नन्ति, बद्ध्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान् शब्दस्पर्शरसरूपग धान् ' एगट्ठियाहिं ' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः ' कालियदीवे ' कालिकद्वीपे ' उत्तारेंति ' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यो को उस नौका में भरदिया। (भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरस रूप गधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तविणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति) भर करके फिर ये लोग जब पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहा से चलकर जहा कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगो ने लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

ઘઉના લોટને, ગોરસ ઘી વગેરેને યાવત્ બીજા પણ ઘણા વહાણુ યાત્રામા કામ લાગે તેવા દ્રવ્યોને તે નૌકામા ભર્યા

(भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरसरूपगधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तविणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति)

ભરીને તેઓ બધા જ્યારે પાછળથી વહેતો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાથી રવાના થઈને જ્યા કાલિક દ્વીપ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ લગર નાખ્યુ લગર નાખીને વહાણુમાથી શબ્દના સાધન રૂપ વીણા વગેરેને, કોમળ સ્પર્શના સાધનભૂત રૂથી ભરેલા રજાઈ વગેરે વસ્ત્રોને, રસના (જીભ) ઈન્દ્રિયને ગમતા ખાડ વગેરે પદાર્થોને, નેત્ર ઈન્દ્રિયને આનદ

चयन्ते, तेषां कौशेयवस्त्राणां 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियसायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरम्=गम्भीरनामकं पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा 'पोयवहणं' पोतवहनं=नौकां सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् 'उक्किट्ठाण' उत्कृष्टानां=श्रेष्ठानां शब्दस्पर्शरसरूप गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च 'सामियस्स य' समीतस्य=

शिलाओं को, इस गभों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाडी और गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता पोयवहणे सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाणय समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाडी और गाडों को जोत दिया। जोतकर के फिर वे वहां आये-जहां गभीर नाम का पोतस्थान था-बद-रगाह था। वहा आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को ढील-रोक दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तेयार करके बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एव गधोंको काष्ठको तृण को पानीय द्रव्य को तन्दुलों को, गेहुँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીસી શિલાઓને, હસ ગર્ભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજી પણ ઘણી સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભરી

(भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूपगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યા જોતરીને તેઓ ત્યાથી જ્યા ગભીર નામે પોતસ્થાન (બદર) હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂકયા અને ત્યારપછી નૌકાઓને સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કરી બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તંદુલો (ચોખા) ને,

गोधूमादीनामट्टकस्य ' आटा ' इति प्रसिद्धस्य, ' गोरसस्स य ' गोरसस्य=घृतादिकस्य च यावत् अन्येषा च बहूना पोतवहनप्रायोग्याणा द्रव्याणां पोतवहन भरन्ति, भृत्वा ' दक्खिणाणुकूलेण ' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन ' लंबेंति ' लम्बयन्ति=तीरस्थापितशङ्कुषु बध्नन्ति, बद्ध्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान् शब्दस्पर्शरसरूपग धान् ' एगट्ठियाहिं ' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभि ' कालियदीवे ' कालिकद्वीपे ' उत्तारेंति ' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यो को उस नौका में भरदिया। (भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरस रूप गधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति) भर करके फिर ये लोग जब पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु बहा तब वहा से चलकर जहा कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

ઘઉના લોટને, ગોરસ ઘી વગેરેને યાવત્ બીજા પણ ઘણા વહાણુ યાત્રામા કામ લાગે તેવા દ્રવ્યોને તે નૌકામા ભર્યા

(भरित्ता दक्खिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरसरूपगधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तविणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति)

ભરીને તેઓ બધા જ્યારે પાછળથી વહેતો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાથી રવાના થઈને જ્યા કાલિક દ્વીપ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ લગર નાખ્યુ લગર નાખીને વહાણુમાથી શબ્દના સાધન રૂપ વીણા વગેરેને, કોમળ સ્પર્શના સાધનભૂત રૂથી ભરેલા રજાઈ વગેરે વસ્ત્રોને, રસના (જીભ) ઈન્દ્રિયને ગમતા ખાડ વગેરે પદાર્થોને, નેત્ર ઈન્દ્રિયને આનદ

च्यन्ते, तेषां कौशेयवस्त्राणां 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-अन्येषा च स्पर्शेन्द्रियसायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकट भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरक=गम्भीरनामक पोतस्थान तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शकटीशाकट मोचयन्ति, मोचयित्वा 'पोयवहण' पोतवहन=नौकां सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् 'उक्किट्ठाण' उत्कृष्टाना=श्रेष्ठाना शब्दस्पर्शरसरूप गन्धाना काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलाना च 'सामियस्स य' समीतस्य=

शिलाओं को, इस गर्भों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाडी और गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागड जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता पोयवहणे सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरसरूवगधाण कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंडुलाणय समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूण पोयवहणपाउग्गा ण पोयवहण भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाडी और गाडों को जोत दिया। जोतकर के फिर वे वहाँ आये-जहां गभीर नाम का पोतस्थान था-यह रगाह था। वहा आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को ढील-रोक दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तेयार करके बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गधोंको काष्ठको तृण को पानीय द्रव्य को तन्दुलों को, गेहुँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીસી શિલાઓને, હસ ગર્ભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજી પણ ઘણી સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભરી

(भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरसरूपगधाण कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरमस्स य जाव अन्नेसिं च बहूण पोयवहण पाउग्गाण पोयवहण भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યા જોતરીને તેઓ ત્યાથી જ્યા ગભીર નામે પોતસ્થાન (બદર) હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂકયા અને ત્યારપછી નૌકાઓને સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તદુલો (ચોખા) ને,

गोधूमादीनामट्टकस्य ' आटा ' इति प्रसिद्धस्य, ' गोरसस्स य ' गोरसस्य=घृतादिकस्य च यावत् अन्येषा च बहूना पोतवहनप्रायोग्याणा द्रव्याणा पोतवहन भरन्ति, भृत्वा ' दक्खिणाणुकूलेण ' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन ' लबेंति ' लम्बयन्ति=तीरस्थापितशङ्कुषु बध्नन्ति, बद्ध्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान् शब्दस्पर्शरसरूपग धान् ' एगट्ठियाहिं ' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभि ' कालियदीवे ' कालिकद्वीपे ' उत्तारेति ' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यो को उस नौका में भरदिया। (भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहण लबेंति, लबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरस रूप गधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्टति वा तहिं२ च ण ते कोडुबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति) भर करके फिर ये लोग जब पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहा से चलकर जहा कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगो ने लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

ઘઉના લોટને, ગોરસ ઘી વગેરેને યાવત્ બીજા પણ ઘણા વહાણુ યાત્રામા કામ લાગે તેવા દ્રવ્યોને તે નૌકામા ભર્યા

(भरित्ता दक्खिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लबेति, लबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरसरूपगधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेति। जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्टति वा तहिं २ च ण ते कोडुबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति)

ભરીને તેઓ બધા જ્યારે પાછળથી વહેતો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાથી રવાના થઈને જ્યા કાલિક દ્વીપ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ લગર નાખ્યુ લગર નાખીને વહાણુમાથી શબ્દના સાધન રૂપ વીણા વગેરેને, કોમળ સ્પર્શના સાધનભૂત રૂથી ભરેલા રજાઈ વગેરે વસ્ત્રોને, રસના (જીભ) ઈન્દ્રિયને ગમતા ખાડ વગેરે પદાર્થોને, નેત્ર ઈન્દ્રિયને આનદ

च्यन्ते, तेषां कौशेयवस्त्राणां 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियसुखयोग्यानां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरक=गम्भीरनामक पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा 'पोयवहणं' पोतवहन=नौकां सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् 'उक्किट्ठाण' उत्कृष्टानां शब्दस्पर्शरसरूप गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च 'सामियस्स य' समीतस्य=

शिलाओं को, इस गर्भों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाडी और गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता पोयवहणे सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाणय समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाडी और गाडों को जोत दिया। जोतकर के फिर वे वहां आये-जहां गभीर नाम का पोतस्थान था-बन्दरगाह था। वहा आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को ढील-रोक दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एव गंधोंको काष्ठको तृण को पानीय द्रव्य को तन्दुलों को, गेहूँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીસી શિલાઓને, હસ ગર્ભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજી પણ ઘણી સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભરી

(भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरसरूपगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યા જોતરીને તેઓ ત્યાથી જ્યા ગભીર નામે પોતસ્થાન (બદ્દર) હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂકયા અને ત્યારપછી નૌકાઓને સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કરી બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તદુલો (ચોખા) ને,

कर्माणि यावत् सघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाना परिपर्यन्तेन=सर्वत' समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा बहूना कोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणा

जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-वीणा आदिको को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये विना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह-जिस२ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौडुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुख वनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हे उन अश्वो की चारो दिशाओ मे रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणिय जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला, णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति)

તેમની ચોમેર, ચારે ચાર દિશાઓમા વીણાઓ વગેરે મૂકી મૂકીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ-હલન ચલનની ક્રિયાથી રહિત થઇને અગોને હલાવ્યા વગર ચુપચાપ ત્યાં બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનમા અશ્વો (ઘોડાઓ) બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા તે તે વનમા તે કૌટુબિક પુરુષોએ સાથે લાવેલી ઘણી કાળી, નીલી, પીળી રાતી, સફેદ રગની કાષ્ઠકર્મ વગેરે સઘાતિમ સુધીની બધી વસ્તુઓને કે જેઓ ચક્ષુ (આખ) ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી હતી તેમજ બીજી પણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને સુખ આપ નારી જેટલી સારી વસ્તુઓ હતી તેમને ભેગી કરી અને અશ્વોની ચોમેર તેમને ગોઠવી દીધી ગોઠવીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ, નિસ્પદ થઇને ચુપચાપ ત્યા જ બેસી ગયા

(जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ ण तेसिं बहूण फोट्ठपुटाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाण पुजेय णियरे य करेति,

'जहिं २ च ण' यत्र यत्र च खलु ते 'आसा' अश्वाः=जात्या अश्वाः 'आसयंति वा' आसते=उपविशन्ति 'सयंति वा' शेरतेस्वपन्ति वा' चिट्ठंति वा' तिष्ठन्ति वा, 'तुयट्टंति वा' त्वग्वर्तयन्ति=शरीर प्रसार्य स्वपन्ति वा 'तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'ताओ' ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि 'समुदीरेमाणा' समुदीरयन्त'=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषा मश्वाना 'परिपेरतेण' परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थ 'पासए' पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः 'निच्चला' निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः 'णिप्फंदा' निः स्पन्दा =हस्तादिप्रयत्नसंचाररहिताः 'तुसिणीया' वचन व्यापाररहिताः 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् त्वग्वर्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा' बहूनि कृष्णानि च *=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ-

---

नेत्र इन्द्रिय को आनद देनेवाले नीले पीले आदि रगवाले चित्रो को एव घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद में जहा २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनो को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहावनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये। और (तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ २ ण ते कोडुंबिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य

પમાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણુ (નાક) ઇન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ વગેરે સુગધિત દ્રવ્યોને વહાણુમાથી નાની નાની હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યા તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યા તે કૌટુંબિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલા વીણાથી માડીને વૃત્ત વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજા પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યા રોકાઈ ગયા અને—

(तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ २ कोडु-

कर्माणि यावत् सघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाना परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चला', निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा बहूना कोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणा

जाव संघाडमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-वीणा आदिको को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये विना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह-जिस२ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुख वनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हे उन अश्वो की चारो दिशाओ मे रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणिय जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठति)

તેમની ચોમેર, ચારે ચાર દિશાઓમા વીણાઓ વગેરે મૂકી મૂકીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ-હલન ચલનની ક્રિયાથી રહિત થઇને અગોને હલાવ્યા વગર ચુપચાપ ત્યાં બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનમાં અશ્વો (ઘોડાઓ) બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા તે તે વનમા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સાથે લાવેલી ઘણી કાળી, નીલી, પીળી રાતી, સફેદ રગની કાષ્ઠકર્મ વગેરે સઘાતિમ સુધીની બધી વસ્તુઓને કે જેઓ ચક્ષુ (આખ) ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી હતી તેમજ બીજી પણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને સુખ આપ નારી જેટલી સારી વસ્તુઓ હતી તેમને ભેગી કરી અને અશ્વોની ચોમેર તેમને ગોઠવી દીધી ગોઠવીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ, નિસ્પદ થઇને ચુપચાપ ત્યા જ બેસી ગયા

(जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ ण तेसिं बहूण फोट्टपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाण पुजेय णियरे य करेंति,

'जहिं २ च ण' यत्र यत्र च खलु ते 'आसा' अश्वाः=जात्या अश्वाः 'आसयंति वा' आसते=उपविशन्ति 'सयंति वा' शेरतेस्वपन्ति वा' चिट्ठंति वा' तिष्ठन्ति वा, 'तुयट्टंति वा' त्वग्वर्त्तयन्ति=शरीर प्रसार्य स्वपन्ति वा 'तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'ताओ' ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्यानि च द्रव्याणि 'समुदीरेमाणा' समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषा मश्वाना 'परिपेरंतेण' परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थः 'पासए' पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः 'निच्चला' निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः 'णिप्फंदा' निः स्पन्दा=हस्ताद्यवयवसंचाररहिताः 'तुसिणीया' वचन व्यापाररहिताः 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् स्वग्वर्त्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः बहूनि कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ-

---

नेत्र इन्द्रिय को आनद देनेवाले नीले पीले आदि रगवाले चित्रो को एव घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद में जहा २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनो को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहावनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये। और (तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ २ ण ते कोडुंबिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य

પમાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણુ (નાક) ઇન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યોને વહાણુમાથી નાની નાની હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યા તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યા તે કૌટુંબિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલી વીણાથી માડીને વૃત્ત વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજા પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યા રોકાઈ ગયા અને—

(तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ २ कोडु-

कर्माणि यावत् सघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाना परिपर्यन्तेन=सर्वत. समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा बहूना कोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणा

जाव सघाडमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-वीणा आदिको को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये विना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह-जिस२ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुख बनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हे उन अश्वो की चारो दिशाओ मे रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणिय जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला, णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति)

તેમની ચોમેર, ચારે ચાર દિશાઓમા વીણાઓ વગેરે મૂકી મૂકીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ-હલન ચલનની ક્રિયાથી રહિત થઇને અગોને હલાવ્યા વગર ચુપચાપ ત્યા બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનમા અશ્વો (ઘોડાઓ) બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા તે તે વનમા તે કૌટુબિક પુરુષોએ સાથે લાવેલી ઘણી કાળી, નીલી, પીળી રાતી, સફેદ રગની કાષ્ઠકર્મ વગેરે સઘાતિમ સુધીની બધી વસ્તુઓને કે જેઓ ચક્ષુ (આખ) ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી હતી તેમજ બીજી પણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી જેટલી સારી વસ્તુઓ હતી તેમને ભેગી કરી અને અશ્વોની ચોમેર તેમને ગોઠવી દીધી ગોઠવીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ, નિસ્પદ થઇને ચુપચાપ ત્યા જ બેસી ગયા

(जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ २ ण तेसिं बहूण फोट्टपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाण पुजेय णियरे य करति,

'जहिं २ च णं' यत्र यत्र च खलु ते 'आसा' अश्वाः=जात्या अश्वाः 'आसयंति वा' आसते=उपविशन्ति 'सयंति वा' शेरतेस्वपन्ति वा' चिट्ठंति वा' तिष्ठन्ति वा, 'तुयट्टंति वा' त्वग्वर्तयन्ति=शरीर मरार्थं स्वपन्ति वा 'तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'ताओ' ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियमायोग्यानि च द्रव्याणि 'समुदीरेमाणा' समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषा मश्वाना 'परिवेरतेण' परिवर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थं 'पासए' पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः 'निच्चला' निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः 'णिप्फंदा' निः स्पन्दा=हस्ताद्यवयवसचाररहिताः 'तुसिणीया' वचन व्यापाररहिता, 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् त्वग्वर्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा' बहूनि कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ

नेत्र इन्द्रिय को आनद देनेवाले नीले पीले आदि रगवाले चित्रों को एव घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद में जहा २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनो को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहावनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये। और (तेसिं परिवेरतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ ण ते कोडुबिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य

૫માડનાર નીલા, પીળા વગેરે ૨ ગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણુ (નાક) ઇન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ વગેરે સુગધિત દ્રવ્યોને વહાણુમાથી નાની નાની હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યા તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યા તે કૌટુબિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલી વીણાથી માડીને વૃત્ત વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજા પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યા રોકાઈ ગયા અને—

(तेसिं परिवेरतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ ते कोडु-

रए ' विवराणि=गर्त्तानि खनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषा च बहूना पानकाना विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषा परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रूतपूरितप्रावरणविशेषान् यावत् हसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्युय पच्चत्थुयाइ ' आस्तृतप्रत्यवस्तृतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषा परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

द्रव्योंके पुज एव निकर लगाकर खडे कर दिये । एक ही वस्तुओंकी जो राशि होती है उसका नाम पुज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है । बाद मे वहीं पर उन्हों ने अनेक गर्त खड्डे किये । गर्त करके उनमें गुडपानक खडपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये । बाद में वहा पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । इसी तरह जिन २ वनो में वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, एव लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषो ने अनेक रूई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शनइन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रो को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया । बाद मे वे उनके चारों ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा-

---

બિક પુરુષોએ ગોળના યાવત્ બીજા ઘણા રસનેન્દ્રિય (જીભ) ને સુખ પમાડે તેવા દ્રવ્યોના પુજો અને નિકરો લગાવીને ખડકી દીધા એજ વસ્તુના ઢગલાને પુજ તેમજ જુદી જુદી વસ્તુઓના ઢગલાઓને નિકર કહે છે ત્યારપછી તે લોકોએ ત્યા જ ઘણા ખાડાઓ તૈયાર કર્યા તે ખાડાઓમા તેઓએ ગોળ પાનક, ખાડપાનક, યાવત્ બીજા પણ ઘણી જાતના પાનકો ભરી દીધા ત્યાર બાદ તેઓ ત્યા જ તેમની ચારે તરફ નિશ્ચલ-નિસ્પદ થઈને ચુપચાપ બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનોમા તે ઘોડાઓ બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા અને આરામ કરતા હતા ત્યા ત્યા તે કૌટુબિક પુરુષોએ ઘણા રૂના પ્રાવરણોને યાવત્ હસગર્ભોને, રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા વસ્ત્રોને લીમા પ્રાવરણોથી આચ્છાદિત કરી દીધા ત્યારપછી તેઓ બધા ચુપચાપ તેની ચારે તરફ બેસી ગયા

(तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवाग-

द्रव्याणां पुञ्जांश्च एकत्रं कुर्वन्ति, कृत्वा तेषामश्वानां परिपार्श्वतेन=सर्वासु यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ३ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आगते ४ तत्र तत्र खलु गुडस्य यावद् अन्येषां च बहूना स्निग्धेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां पुञ्जांश्च निकरांश्च कुर्वन्ति, कृत्वा 'त्रिय

२ ण तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाणं य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णिगरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरंतेण जाव चिट्ठति, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णिगरे य करेंति, करित्ता तियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं तियरे भरेंति-भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयवित्तिया य जाव गब्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति) जहां जहां वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उन अनेक कोष्ठ पुटों के यावत् अन्य और घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्य द्रव्यों, के पुञ्जों को निकरों को एकत्रित कर दिया और करके फिर वे उन अश्वों की चारों दिशाओं में यावत् चुपचाप बैठ गये। जहां २ वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां२ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने गुड़ के यावत् दूसरे और रसनेन्द्रिय आल्हादक

करित्ता तेसिं परिपेरंतेण जाव चिट्ठति, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णिगरे य करेंति, करित्ता तियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं तियरे भरेंति-भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयवित्तिया य जाव गब्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति)

જ્યાં જ્યાં તે ઘોડાઓ બેસતા હતા સૂતા હતા રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે ઘણા કોષ્ઠ પુટકોને યાવત્ બીજી પણ ઘણી ઘ્રાણેન્દ્રિય (નાક) ને સુખ પમાડે તેવી વસ્તુઓને પુષ્કળ પ્રમાણમાં ત્યાં ગોઠવી દીધી, એકઠી કરી દીધી અને એકઠી કરીને તેઓ તે ઘોડાઓને ચારે તરફ યાવત્ ચુપચાપ થઈને બેસી ગયા તે ઘોડાઓ જ્યાં જ્યાં બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટુ

रए ' विवराणि=गर्त्तानि खनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषां च बहूना पानकाना विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषा परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रूतपूरितमावरणविशेषान् यावत् हसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियसायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्युय पच्चत्थुयाइ ' आस्तृतप्रत्यवस्तृतानि=श्लक्ष्णप्रावरणमावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषा परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

द्रव्योंके पुज एव निकर लगाकर खडे कर दिये। एक ही वस्तुओकी जो राशि होती है उसका नाम पुज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है। बाद मे वहीं पर उन्हों ने अनेक गर्त खड्डे किये। गर्त करके उनमें गुडपानक खडपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये। बाद में वहा पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। इसी तरह जिन २ वनो में वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, एव लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषो ने अनेक रूई के भरे हुए प्रावरणो को यावत् हसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शनइन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रो को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया। बाद मे वे उनके चारो ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा-

---

ભિક્ષ પુરુષોએ ગોળના યાવત્ બીજા ઘણા રસનેન્દ્રિય (જીભ) ને સુખ પમાડે તેવા દ્રવ્યોના પુંજો અને નિકરો લગાવીને ખડકી દીધા એક જ વસ્તુના ઢગલાને પુંજ તેમજ જુદી જુદી વસ્તુઓના ઢગલાઓને નિકર કહે છે ત્યારપછી તે લોકોએ ત્યા જ ઘણા ખાડાઓ તૈયાર કર્યા તે ખાડાઓમા તેઓએ ગોળ પાનક, ખાડપાનક, યાવત્ બીજા પણ ઘણી જાતના પાનકો ભરી દીધા ત્યાર બાદ તેઓ ત્યા જ તેમની ચારે તરફ નિશ્ચલ-નિસ્પદ થઈને ચુપચાપ બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનોમા તે ઘોડાઓ બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા અને આરામ કરતા હતા ત્યા ત્યા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ઘણા રૂના પ્રાવરણોને યાવત્ હંસગર્ભોને, રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા વસ્ત્રોને લીસા પ્રાવરણોથી આચ્છાદિત કરી દીધા ત્યારપછી તેઓ બધા ચુપચાપ તેની ચારે તરફ બેસી ગયા

(तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगधा तेणेव उवाग-

उपागत्य तत्र खलु-'अत्थेगइया' अन्येके=केचित् अश्वा-' अपूर्वाः=अदृष्टपूर्वाः खलु इमे शब्दस्पर्शरसरूपगन्धाः सन्ति' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य तेषु उत्कृष्टेषु= आकर्षकेषु शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु ' अमुच्छिया ' अमूर्च्छिता =मूर्छारहिता, मातहेयोपादेयविवेकाः अगृद्धा =गमक्तिरहिताः, अगथिताः=लोभतन्तुभिरबद्धाः, अनध्युपपन्ना'=तदेकाग्रतारहिताः किञ्चिन्मात्रमपि तेष्वासक्तिमकुर्वाणाः सन्तः तेषामुत्कृष्टानां ' सद्द जाव गंधाण ' शब्दस्पर्शरसरूपगन्धानां दूरदूरेण=अतिदूरत एव ' अवक्कमति ' अपक्रामन्ति=पलायन्ते स्म । ते च खलु तत्र प्रचुरगोचराः= प्रचुरचरणभूमयः प्रचुरतृणपानीया , निर्भयाः, निरुद्विग्नाः ' सुह सुहेण ' सुख सुखेन=सुखपूर्वक विहरन्ति ।

गच्छति, उवागच्छित्ता तत्थ णं अत्थे गइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्द-फरिसरसरूवगंधाइ त्ति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरं दूरेण अवक्कमति) घोडाओ वे अश्व जहा ये पूर्वोक्त उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप गंध और स्पर्शवाले पदार्थ थे वहां पर आये वहां आकर के इनमें कितनेक अश्व " ये शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध अदृष्टपूर्व हैं " ऐसा विचार कर उन आकर्षक शब्द रूप, रस, स्पर्श एवं गंधों में-उन पदार्थों में-मूर्च्छित नहीं बने। हेय उपादेय के विवेक से युक्त बने हुए वे कितनेक अश्व उन में आसक्ति से रहित ही रहे लोभरूपतन्तु से बन्धे नहीं। तथा किञ्चिन्मात्र भी उनमें आसक्ति नहीं करते हुए वे उन शब्द, स्पर्श रूप, और गंधों को बहुत ही दूर से छोड़कर चल दिये। (तेण तत्थ पउरगोयरा

च्छति, उवागच्छित्ता तत्थण अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूव त्ति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरं दूरेणं अवक्कमति)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ આ બધા પૂર્વે મૂકેલા ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓમાથી કેટલાક ઘોડાઓ ' આ શબ્દ સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ અદૃષ્ટપૂર્વ છે " આમ વિચાર કરીને તે આકર્ષક શબ્દ, રૂપ, રસ, સ્પર્શ અને ગંધોવાળા તે પદાર્થોમા મૂર્છિત (મોહાધ-લોલુપ) થયા નહિ હેય અને ઉપાદેયના વિવેકથી સાવધ બનેલા કેટલાક ઘોડાઓ તે પદાર્થોમા નિરાસક્ત જ રહ્યા તેઓ લોભ રૂપી દોરીથી બંધાયા નહિ થોડી પણ આસક્તિ બતાવ્યા વગર તેઓ તે શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થોને બૂમ દૂરથી જ છોડીને જતા રહ્યા (तेण तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुह

अथोपनयं प्रदर्शयति,—'एवामेव' एवमेव=शब्दाद्यमूर्छिताकीर्णाश्ववत् 'समणाउसो' हे आयुष्मन्त श्रमणा ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा यावत्–आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु 'नो सज्जइ' नो सज्जते=आसक्तिमान् न भवति 'नो रज्जइ' नो रज्यते अनुरक्तो न भवति, नो गृध्यति, न वाञ्छति, नो मुह्यति=न मूर्छति, नो अध्युपपद्यते=न तल्लीनो भवति, स खलु इह लोके एव बहूनां श्रमणादीनां चतुर्विधसङ्घस्य अर्च्चनीयः=संमाननीयः यावत् चातुरन्तसंसारकान्तारं 'वीइवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति–पारं गमिष्यतीत्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहं सुहेण विहरति) और जंगल में ही जो प्रचुरचरने की जमीन थी–जिसमें अधिक से अधिक मात्रा मे तृण और पानी भरा हुआ रहता था उसमे ही निर्भय, निरुद्विग्न होकर सुखपूर्वक रहे। अब इस दृष्टान्त का उपनय प्रदर्शित करने के लिये सूत्रकार कहते है–। (एवामेवसमणाउसो! जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव सद्दफरिसरसरूवगंधेसु णो सज्जइ णो णो रज्जइ, जो गिज्झइ, णो मुज्झइ, णो अज्झोववज्जेइ, से ण इहं लोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ) हे आयुष्मत श्रमणो! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रंथ साधुजन एव निर्ग्रन्थी साध्वी जन अचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर शब्द स्पर्श, रस, रूप, और गध इन पांचो इन्द्रियो के विषयो में आसक्ति युक्त नही होता है, अनुरक्त नही बनता है, उन्हें चाहता नही है, उनमें मूर्छित नहीं होता है, उनमें तल्लीन नहीं होता है, वह इस लोक मे ही अनेक

सुहेण विहरति) અને વનમા જ પ્રચુર ચરવાની જમીન હતી, જ્યા વધારેમા વધારે ઘાસ અને પાણી હતા ત્યા જ નિર્ભય, નિરૂદ્વિગ્ન થઇને સુખથી રહેવા લાગ્યા હવે આ દૃષ્ટાન્તનો ઉપનય સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે —

(एवामेव समणाउसो जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव सद्दफरिसरसरूवगंधेसु णो सज्जइ णो रज्जइ, जो गिज्झइ, णो मुज्झइ, णो अज्झोववज्जेइ, से ण इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ)

હે આયુષ્મત શ્રમણો! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ કે નિર્ગ્રંથ સાધ્વીઓ આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઇને શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી અનુરક્ત થતા નથી, તેમને ઇચ્છતા નથી, તેઓમા મૂર્છિત થતાઓ

शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'आसेवमाणा' आसेवमानाः तदुत्कृष्टानुभव कुर्वाणाः तैर्वा दुभि रूढैश्च बन्धनविशेषैः, पाशैश्च रज्ज्वादिरूपैः गलेषु=गण्डेषु=कण्ठेषु पादेषु च 'बज्झति' बध्यन्ते-ते कौटुम्बिकपुरुषास्तानश्वान बध्नन्ति स्मेत्यर्थः। तत

घोड़ों मे से कितनेक घोड़े ऐसे भी थे जो जहा वे उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप एव गध ये पांचो इन्द्रियो के आकर्षक विषय थे वहा आकर उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श आदि विषयो में मूर्छित यावत् तल्लीन बनगये। और उन्हें सेवन करने में प्रवृत्त भी हो गये। (तएण ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेसिं बहूहिं कूडेहिं य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झति, तएण ते कोडुबियपुरिसा ते आसे गिण्हति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे सचारेंति, सचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लवेंति-लवित्ता ते आसे उत्तारेंति) इसके बाद वे घोड़े उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप, एव गध इन पाचों इन्द्रियों के विषयों को सेवन करते हुए रज्वादिरूपबन्धन विशेषों द्वारा कठों और पैरोंमें बाँध लिये गये। अर्थात् उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इन घोड़ों को उस समय रस्सियो द्वारा बांध लिया। बाध करके फिर उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उन्हें पकड लिया पकड

જ્યા તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધ આ પાચે ઇન્દ્રિયોના આકર્ષક વિષયો હતા ત્યા આવીને તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ વગેરે વિષયોમા મૂર્છિત (આસક્ત) યાવત્ તલ્લીન થઈ ગયા અને તેમના સેવનમા પ્રવૃત્ત પણ થઈ ગયા

(तएण ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेसिं बहूहिं कूडेहिं य पासेहिय गलएसु य पाएसु य बज्झति, तएण ते कोडुबियपुरिसा ते आसे गिण्हति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे सचारेंति, सचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लवेंति-लवित्ता ते आसे उत्तारेंति)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધ આ પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોનુ સેવન કરતા દોરડાઓ વગેરે રૂપ બધન વિશેષથી બાંધેા અને પગોમા બધાઈ ગયા એટલે કે તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ તે ઘોડા ઓને દોરડાઓથી બાધી લીધા બાધીને તે કૌટુમ્બિક પુર

खलु ते कोटुम्बिकपुरुषास्तानश्वान् गृह्णन्ति, गृहीत्वा 'एगट्ठियाहिं एकार्थिकाभि'= लघुनौकाभि पोतवहने=बृहन्नौकाया 'सचारेंति' सञ्चारयन्ति=आरोहयन्ति सञ्चार्य तृणस्य काष्ठस्य च यावत् पोतवहन भरन्ति तृणकाष्ठादिभिरितिभावः। ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजकाः दक्षिणानुकूलेन=स्वानुकूलेन यातेन यत्रैव गम्भीरपोतपत्तन=पोतलम्बनस्थान तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहन 'लंबेंति' लम्बयन्ति=शकुषु बद्ध्वा स्थापयन्ति, लम्बयित्वा तान्=अश्वान् 'उत्तारेंति' उत्तारयन्ति, उत्तार्य यत्रैव हस्तिशीर्षं नगर यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीत शिरआवर्त्तं दशनख मस्तके-

कर फिर उन्हें छोटी २ नौकाओ द्वारा लाकर बडी नौका में चढाया-चढा करके फिर उसमें तृण और काष्ट आदि को भरा। इसके बाद वे सांयात्रिक पोतवणिक्क दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर जहा गभीर नामका पोतपट्टण (बन्दरगाह) था वहा आये। वहां आकर के उन्हों ने अपने पोत को लगर डालकर ठहरा दिया। ठहरा कर उन अश्वों को उस पोत से फिर उन्हों ने नीचे उतार लिया। (उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण से कणकेऊ तेसिं सजत्ता णावावाणियगाण उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता सक्कारेइ समाणेइ सक्कारित्ता समाणित्ता पडिविसज्जेइ) उतार कर फिर वे वहां उन्हें ले गये जहा हस्तिशीर्ष नगर और उसमें भी

પકડી લીધા પકડીને તેમણે નાની નાની હોડીઓ વડે મોટા વહાણમા ચઢાવ્યા ચઢાવ્યા બાદ તેઓએ તેમા ઘાસ એને કાષ્ઠ ભર્યા ત્યારપછી તે સાયાત્રિક પોતવણિકો દક્ષિણનો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાથી રવાના થઇને જ્યા ગભીર નામે પોતપટ્ટણ (બદર) હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે પોતાના વહાણને લગર નાખીને રોકયુ ત્યરબાદ તેમણે ઘોડાઓને વહાણ માથી નીચે ઉતાર્યા

(उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण से कणगकेऊ तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाण उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता सक्कारेइ, समाणेइ, सक्करित्ता, समाणित्ता पडिविसज्जेइ)

નીચે ઉતારીને તેઓ તે ઘોડાઓને હસ્તિશીર્ષ નગરમા જ્યા કનકકેતુ રાજા હતો ત્યા લઈ ગયા ત્યા જઇને પહેલા તેમણે બને હાથ જોડીને રાજા

ऽञ्जलिं कृत्वा 'वद्धावेंति' वर्द्धयन्ति जयविजयशब्देनाभिनन्दन्ति, वर्द्धयित्वा तान् अश्वान् राज्ञः समीपे 'उवणेंति' उपनयन्ति। ततः खलु स कनककेतू राजा तेषां सयात्रनौकावाणिजकानाम् 'उस्सुक्कं' उत्शुल्कम्=' शुल्क केनापि करो न ग्राह्य ' इत्येवम्पमाज्ञापत्रं वितरति=ददाति. तृतीयं सत्करोति-मधुर वचनादिभि., सम्मानयति-वस्त्रादिभि', सत्कारं सम्मान्य प्रतिविसर्जयति।

ततः खलु स कनककेतू राजा 'आसमद्दए' अश्वमर्दकान्=अश्वशिक्षकान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यूयं खलु हे देवानुप्रियाः! ममाश्वान् 'विणएह' विनयत=शिक्षयत-गत्यादिकुशलान् कुरुतेत्यर्थः। ततः खलु तेऽश्वमर्दकाः 'तहत्ति' तथेति 'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=नृपाज्ञां स्वीकुर्वन्ति,

---

जहां कनककेतु राजा थे। वहां जाकर उन्होंने पहिले दोनों हाथ जोड़ कर राजा कनककेतु को नमस्कार किया-जय विजय शब्दों द्वारा उन्हें वधाई दी-वधाई देकर बाद में उन घोड़ों को उनके समक्ष उपस्थित करदिया इसके बाद कनककेतु राजा ने उन सांयात्रिक पोतवणिक्जनों के लिये निःशुल्क (करराहित) अवस्था वितरित की इन्हों से कोई भी राज्यकर्मचारी टेक्स न लेवें इस प्रकार का आज्ञापत्र उन्हे लिखकर दे दिया। आज्ञापत्र लिखकर देने के बाद राजाने उनका मधुर वचनों द्वारा सत्कार किया। वस्त्रादि प्रदान पूर्वक उनका सन्मान किया। फिर सत्कार सम्मान करके उन्हें विसर्जित कर दिया। (तएणं से कणककेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता सक्कारेंति० पडिविसज्जेइ, तएणं से कणगकेऊराया आसमद्दए सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी तुब्भेणं देवानुप्पिया! मम आसे विणएह) इस के बाद कनककेतु राजाने कौड़

કનકકેતુને નમસ્કાર કર્યા અને જય-વિજય શબ્દો વડે તેમને વધામણી આપી વધામણી આપીને તેમણે તે બધા ઘોડાઓને તેમની સામે ઉપસ્થિત કર્યા ત્યારપછી કનકકેતુ રાજાએ તે સાયાત્રિક પોતવણિકોને માટે કર માફી કરી આપી તેમની પાસેથી કોઈ પણ રાજ્ય કર્મચારી કર (ટેકસ) લે નહિ તેવુ આજ્ઞાપત્ર તેમને લખી આપ્યુ આજ્ઞાપત્ર આપીને રાજાએ તેમનો મધુર વચનો વડે સત્કાર કર્યો અને વસ્ત્રો વગેરે આપીને તેમનુ સન્માન કર્યું ત્યારપછી તેમને વિદાય કર્યા

(तएणं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता सक्कारेंति० पडिविसज्जेइ, तएणं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया! मम आसे विणएह)

प्रतिश्रुत्य तान् अश्वान् बहुभिर्मुखबन्धैश्च कर्णबन्धैश्च नासाबन्धैश्च वालबन्धैश्च केशबन्धैरित्यर्थः खुरबन्धैश्च ' खलिणबंधेहि य ' खलीनबन्धैः ' लगाम ' इति प्रसिद्धबन्धनैः, ' अहिलाणेहि य ' अभिलानैः=' जीन ' इति प्रसिद्धैः, पडियाणेहि ' पर्याणकैः=' तग ' इति प्रसिद्धैश्चर्ममयैरश्वोपकरणविशेषैः, ' अक्कणाहि य ' अङ्कनाभि'=तप्तलोहशलाकादिभिरङ्कनकरणैश्च ' वित्तप्पहारेहि य ' वेत्रप्रहारैश्च

मित्रक पुरुषो को बुलाया, बुलाकर उनका आदर सत्कार किया। फिर उन्हें विसर्जित कर दिया। इसके पश्चात् कनककेतु राजा ने अश्वशिक्षकों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम इन हमारे इन घोडों को शिक्षित बनाओ-गत्यादिकला में निपुण करो। (तएण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहूहि मुह बंधेहि य कण्णबंधेहि णासा बंधेहि य वालबंधेहि य खुरबंधेहि य खलिणबंधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अक्कणाहि य वित्तप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति) राजा कनककेतु की इस आज्ञा को उन अश्वमर्दकों ने "तहत्ति" कहकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्हों ने अनेक विध मुख बधनों से, कर्णबधनों से नासाबंधनों से लगामरूप बधनो से अभिलानों से-पलेचाओ से-पर्याणकों से तगो के कसने से-अकनों से-तप्त हुई लोहकी शलाकाओं द्वारा डाम लगाने से वेत्र के प्रहारों से, लताओंके प्रहारोंसे, चाबुकों के

ત્યારપછી કનકકેતુ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા, બોલાવીને તેમનો સત્કાર કર્યો અને પછી તેમને વિદાય કર્યા ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ અશ્વશિક્ષકોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે અમારા આ ઘોડાઓને શિક્ષિત બનાવો, દોડવા વગેરેની કળાઓમા નિપુણ બનાવો

(तएण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहूहिं मुह बंधेहि य कण्ण बंधेहिं णासा बंधेहि य वालबंधेहि य खुर बंधेहि य खलिण बंधेहि य अहि लाणेहि य पडियाणेहि य अक्कणाहि य वित्तप्पहारेहिय लयप्पहारेहिय कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति)

રાજા કનકકેતુની આજ્ઞાને તે અશ્વમર્દકોએ "तहत्ति" કહીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કરીને તેમણે ઘણી જાતના મુખ બંધનોથી, કર્ણ બંધનોથી, નાસા બંધનોથી, વાળ બંધનોથી, ખુર બંધનોથી, લગામ રૂપ બંધનોથી, અભિલાનોથી, પલેચાઓથી, પર્યાણકોથી, તગોને કસવાથી, અંકનોથી, તપાવવામા આવેલી લોખંડની શળીઓ વડે ડામવાથી, વેતોના આઘાતોથી લતા

'लयप्पहारेहि य' लतामहारैश्च, 'वेत्तप्पहारेहि य' वेत्रमहारैश्च 'चाबुक' इति भाषायाम्, 'छिवप्पहारेहि य' छिवामहारैः=चर्ममयचिक्कणकशा महारैश्च 'विणयंति' विनयन्ति=शिक्षयन्ति, विनीय=शिक्षयित्वा कनककेतो राज्ञ उपनयन्ति। तए णं खलु से कनगकेऊ राजा ताने अस्समद्दए सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ, तए णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहिं जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमानसाणी दुक्खाइ पावेंति) शिक्षित बनाकर फिर वे उन घोडों को कनककेतु राजा के पास ले गये। बादमें राजा कनककेतु ने उन अश्वमर्दकों का सत्कार सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें विसर्जित कर दिया। वे घोडे लेकर अनेक विध उन मुख बधनों से यावत् चर्ममय चिक्कणकशाओं के प्रहारों से नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दुःखों को पाने लगे। (एवामेव समणाउसो! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु य सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ,

---

ओना प्रहारोथी चाबुकना प्रहारोथी, छिपा चामडाना बनेला लीसा चाबुकोना प्रहारोथी ते घोडाओने केळव्या

('विणयित्ता कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ, सक्कारित्ता पडिविसज्जेइ तए णं ते आसा बहूहिं मुह बंधेहिं जाव छिवप्पहारेहिं य बहूणि सारीरमानसाणि दुक्खाइ पावेंति)

કેળવીને-શિક્ષિત બનાવીને તે ઘોડાઓને તેઓ કનકકેતુ રાજા પાસે લઇ ગયા ત્યારપછી કનકકેતુએ તે અશ્વમર્દકોનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કરીને તેમને વિસર્જિત કર્યા તે ઘોડાઓ ઘણા મુખ બધનોથી યાવત્ ચામડાના લીસા ચાબુકોના પ્રહારોથી અનેક જાતના શારીરિક અને માનસિક દુઃખો ભોગવવા લાગ્યા

(एवामेव समणाउसो! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्झइ, मुज्झइ,

भवति, ' रज्जइ ' रज्यते=अनुरक्तो भवति, ' गिज्झइ ' गृध्यति=तद्वाञ्छासक्तो भवति, ' मुज्झइ ' मुह्यति=मूर्छितो भवति, ' अज्झोववज्जइ ' अध्युपपद्यते=सर्वथा तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव बहूना श्रमणाना च यावत्-श्रमणीनां श्रावकाणा श्राविकाणा च ' हीलणिज्जे ' हीलनीय यावत् चातुरन्तसंसारकान्ता-रम् ' अणुपरियट्टिस्सइ ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यतीति भावः ॥सू०४॥

मूलम्-कलरिभियमहुर ततीतलतालवंसकउहाभिरामेसु ।
सद्देसु रज्जाणा रमति सोइंदियवसट्टा ॥ १ ॥
सोइंदियदुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
दीविगरुयमसहसो बहवध तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥

टीका-अथेन्द्रियासंवरणदोषान् गाथाभिः प्रदर्शयति-' कलरिभिय० ' इत्यादि
कलरिभितमुरतन्त्री तल तालवसकुदाभिरामेषु ।

रूवगधेसु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्झइ, मुज्झइ, अज्जोववज्जइ, सेणं इहलोए चेव बहूण समणाण य जाव साविगाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ) इसी प्रकार हे आयुष्मंन श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पाचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होता है, अनुरक्त होता है, उनकी चाह से बधता है, उनमें मूर्च्छित बनता है, सर्व प्रकार से उनमें तल्लीन होता है वह इस लोक में ही अनेक श्रमणजनों द्वारा श्रमणी, श्रावक और श्राविकाओं द्वारा हीलनीय-निन्दा का पात्र-होता है यावत् वह चतुर्गतिरूप इस ससार कान्तार में भटकता है ॥ सू०४ ॥

सेण इहलोए चेव बहूण समणाण य जाव साविगाण य हीलणिज्जे जाव अणु परियट्टिस्सइ)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજનો કે સાધ્વીજનો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને ઈષ્ટ, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધ આ પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત હોય છે, અનુરક્ત હોય છે, તેમની ઈચ્છા કરીને તેઓમા બધાઈ જાય છે, તેઓમા મૂર્છિત બની જાય છે, બધી રીતે તેઓમા તલ્લીન બની જાય છે તે આ લોકમા જ ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ઘણી શ્રમણી, શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય-નિન્દનીય-હોય છે યાવત્ તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સસાર-કાતારમા ભટકતો રહે છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥

शब्देषु रज्यमाना, रमन्ते श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्ता ॥ १ ॥
श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अय एतावान् भवति दोषः ।
द्वीपिकारुतमसहमानो,—यथवन्य तित्तिर मांसः ॥ २ ॥

श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्ताः=कर्णेन्द्रियवशवर्त्तिन. एते श्रवणसुखदाः रिभिताः स्वरा घोलनाविशेषयुक्ता मधुराः-प्रियाः कलरिभितमधुरध्वनिजनकत्वात् तथा ये तन्त्री-तलतालवंशा -वीणा-करताल वेणवस्ते समुदायात्मकत्वात्-मधुर'-मनोज्ञाः, अभिरामाः-मनोहरास्तेषु-शब्देषु रज्यमानाः=अनुरक्ताः सन्तः रमन्ते=मोदन्ते ॥ १ ॥
' सोइंदिये ' त्यादि । ' सोइंदियदुद्दंतत्तणस्स ' श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य श्रोत्रेन्द्रिय दुर्दान्त यस्य स श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्त =श्रोत्रेन्द्रियस्य जेतुमशक्यतया तद्वशवर्त्तीत्यर्थः, तस्य भावस्तत्त्व, तस्य, श्रोत्रेन्द्रियाधीनतायाः, ' एत्तिओ ' एतावान्=वक्ष्यमाण प्रकारकः दोषो भवति । तं दृष्टान्तं प्रदर्शयति-'दीविगरुयमसहतो ' द्वीपिकारुतमसहमान'-द्वीपिका=व्याध पञ्जरस्थतित्तिर', तस्याः रुत शब्दम् असहमान =

' कलरिभिय ' इत्यादि ।

अब सूत्रकार, इन्द्रियों के असंवरण से जो दोष उत्पन्न होते हैं उन्हें इन गाथाओं द्वारा प्रदर्शित करते हैं-कर्णेन्द्रिय के वशवर्ती बने हुए प्राणी फल-श्रवण सुखद, रिभित-स्वरों के घोलना विशेष से युक्त ऐसे मधुरप्रिय, तन्त्री-वीणा, तलताल-करताल, वंशरासुरी इन से उत्पन्न होने की वजह से कलुद-अत्यन्त, अभिराम-मनोहर ऐसे शब्दो में अनुरक्त होते हुए यद्यपि मुदितमन होते हैं परन्तु श्रोत्रेन्द्रिय उनको दुर्दमन होनेके कारण-श्रोत्रेन्द्रिय उनकी जितनेमें अशक्य होनेके कारण तद्वशवर्ती बने हुए वे प्राणी जिस तरह व्याध के पंजर में रही हुई तित्तिरी के शब्द को सुनकर तीतरपक्षी-कामराग के वश से आकृष्ट

' कलरिभिय ' इत्यादि—

સૂત્રકાર હવે ઇન્દ્રિયોના અસંવરણથી જે દોષો ઉત્પન્ન થાય છે તેમને આ ગાથાઓ વડે પ્રદર્શિત કરે છે કર્ણેન્દ્રિયના વશમા થયેલા પ્રાણીઓ કલ-શ્રવણ સુખદ, રિભિત સ્વરોને વિશેષ રૂપમા મેળવવાથી ઉત્પન્ન થયેલો ધ્વનિ, મધુર-પ્રિય, તંત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાળ, વંશ-વાસળી એમનાથી ઉત્પન્ન હોવા બદલ કકુદ-અત્યંત, અભિરામ-મનોહર એવા શબ્દોમા અનુરકત થતા હોવા બદલ એટલે કે તેઓ મુદિતમન-પ્રસન્ન થાય છે પરંતુ તેમની શ્રોત્રેન્દ્રિય (કાન) દુર્દમનીય હોવા બદલ એટલે કે મશ્રોત્રેન્દ્રિય ઉપર કાબુ મેળવવાનુ કામ તેમના માટે અશકય હોવા બદલ તેને વશ થયેલા પ્રાણીઓ જેમ વ્યાધા-શિકારીના પીંજરામા સપડાઇ ગયેલી તિત્તિરીના શબ્દને સાભળીને તીતર પક્ષી ના

तित्तिर वध=मरण वन्ध=पञ्जरादि मन्यन प्राप्नोतीत्यर्थः 'अथ' वाक्यालङ्कारे ॥ २ ॥

मूलम्–थणजहणवयणकरचरणणयणगव्वियविलासियगईसु ।
रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिंदियवसट्टा ॥ ३ ॥
चक्खिंदियदुद्दतत्तणस्स अह एत्तिओ भवइ दोसो ।
जं जलणंमि जलते पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥

टीका–स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु रज्यमाना,–रमन्ते चक्षुरिन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ३ ॥
चक्षुरिन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अथ एतावान् भवति दोषः ।
यद्ज्वलने ज्वलति, पतति पतङ्गः अबुद्धिकः ॥ ४ ॥

'थणे' त्यादि । चक्षुरिन्द्रियवशार्त्ताः स्त्रीणा स्तनजघनादि रूपेषु रज्यमानाः =अनुरक्ता रमन्ते ॥ ३ ॥

ज्वलने=अग्नौ । शेष सुगमम् ॥ ४ ॥

होकर वध और बधन को पाता है उसी तरह नाना प्रकार के वध बधनो को पाया करते है ॥ गा० १–२ ॥

'थणजहण, चक्खिंदिय' इत्यादि ।

यद्यपि चक्षुन्द्रिय के विषय की प्राप्ति करने मे व्याकुल हुए प्राणी उस विषय की प्राप्ति होने पर आनन्दमग्न बन जाया करते है–वे स्त्रियों के स्तन, जघन, वदन, कर, चरण, नयन, गर्वित विलासयुक्त गमना दिरूप चक्षुइन्द्रिय के विषय को बार बार देखकर आसक्त होते हैं– परन्तु यह इन्द्रिय जब दुर्दान्त बन जाया करती है–तब ऐसे प्राणी जिस

આવેશમા આવાને મૃત્યુ તેમજ બધનને પ્રાપ્ત કરે છે, તેમ જ અનેક જાતના વધબધનો મેળવે છે "ગા ૧–૨"

થણ જહણ ચક્ખિંદિય ઇત્યાદિ—

જે કે ચક્ષુન્દ્રિયોના વિષયોને મેળવવા માટે અત્યત ઉત્સુક બનેલા પ્રાણીઓ તે વિષયોની પ્રાપ્તિ થઇ જતા બાદ આનદમગ્ન થઇ જાય છે–તેઓ સ્ત્રીઓના સ્તન, જઘન, મુખ, હાથ, ચરણ, નયન ગર્વિત વિલાસ–યુક્ત ગમન વગેરે રૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયોના વિષયોને વાર વાર જોઇને આસક્ત થઈ જાય છે, પરતુ આ ઇન્દ્રિય જ્યારે દુર્દાત બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ અજ્ઞાની પતગની

मूलम्–अगुरुवरपवरधूवण उउय मल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा ॥ ५ ॥
घाणिंदियदुद्दंतत्तणस्स अहं पत्तिओ हवइ दोसो ।
ज ओसहिगंधेणं विलाओ निद्धावइ उरगो ॥ ६ ॥

टीका–अगुरुवरप्रवरधूपन ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु रज्यमाना,–रमन्ते घ्राणेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ५ ॥
घ्राणेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अय एतावान् भवति दोषः ।
यद् औषधिगन्धेन बिलाद् निर्धावति उरगः ॥ ६ ॥

घ्राणेन्द्रियवशार्त्ता अगुरुवरः=कृष्णागुरुः, प्रवरधूपन=दशाङ्गादिरूपो धूपः, 'उउयमल्ल' ऋतुजमाल्यानि=उक्तर्तुकानां पुष्पाणि, अनुलेपनानि=चन्दनकुङ्कुमादिरूपाणि, तेषा विषयः=प्रकारा येषु गन्धेषु तत्र रज्यमाना'=अनुरक्ता. सन्तो रमन्ते ॥ ५ ॥

'ओसहिगंधेण' ओषधिगन्धेन=केतक्यादिवनस्पतिसुगन्धानुरागवशेन

प्रकार अज्ञानी पतंग अपने प्राणों को अग्नि में डाल देता है उसी प्रकार उसी विषय में अपने प्राणों का नाश करते हैं ॥ गा० ॥ ३–४ ॥

अगुरुवर, घाणिंय इत्यादि ।

घ्राणइन्द्रिय के वशवर्ती बने हुए प्राणी अगुरुवर–कृष्णागुरु, प्रवर, धूपन,–दशाङ्गादिरूप धूप, ऋतुजमाल्य–तत्तद्ऋतु के पुष्प, अनुलेपन–चन्दन कुङ्कुम आदि के विविध लेप रूप गंध में अनुरक्त होते हुए हर्षित मन होते हैं, परन्तु वे इस इन्द्रिय की दुर्दमनता का कुछ भी विचार नहीं करते हैं। जब यह इन्द्रिय दुर्दमन बन जाती है–तब ऐसे प्राणी

જેમ પોતાના પ્રાણોને અગ્નિમા હોમી દે છે, તેમજ તે પણ તે વિષયમા જ પોતાના પ્રાણોને નષ્ટ કરી નાખે છે " ગા ૩–૪ "

અગુરુવર, ઘાણિંદિય ઇત્યાદિ ।

ઘ્રાણેન્દ્રિયના વશમા પડેલા પ્રાણીઓ અગુરૂવર–કૃષ્ણાગુરૂ, પ્રવર, ધૂપન દશાગાદિ રૂપ ધૂપ ઋતુ જ માલ્ય–તત્તદ્ ઋતુના પુષ્પો, અનુલેપન ચદન–કુંકુમ વગેરેના જાતજાતના લેપના ગધમા અનુરક્ત થઇને હર્ષિત થઇ જાય છે, પરતુ હકીકતમા તો તેઓ તે ઇન્દ્રિયની દુર્દમતા વિષેનો કોઇ પણ જાતનો વિચાર કરતા જ નથી ત્યારે તે ઇન્દ્રિય દુર્દમ બની જાય છે

उरग =सर्पः बिलात् 'निधावई' निर्धावति=निस्सरति, ततो वध बन्धनं च प्राप्नोतीति भावः । शेष स्पष्टम् ॥ ६ ॥

मूलम्-तित्तकडुय कसायंबमहुखज्जपेज्जलेज्झेसु ।
आसाएसु य गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा ॥ ७ ॥
जिब्भिंदिय दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
ज गललग्गुक्खित्तो फुरइ थलविरल्लिओ मच्छो ॥ ८ ॥

छाया-तिक्तकटुककषायाम्लमधुरबहुखाद्यपेयलेह्येषु ।
आस्वादेषु च गृद्धा, रमन्ते जिह्वेन्द्रियवशार्त्ता ॥ ७ ॥
जिह्वेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य, अथ एतावान् भवति दोषः ।
यद् गललग्नोत्क्षिप्तः, स्फुरति स्थलविरल्लितो मत्स्यः ॥ ८ ॥

टीका-जिह्वेन्द्रियवशार्त्ता -तिक्त=मरीचादिक, कटुक=नागरवेल्लादिक, कषाय=आमलकादिकम्, अम्ल=कपित्थादिक, मधुर=मोदकादिक, बहु=अनेकविध 'खज्ज' खाद्य-कदलीफलादिक, 'पेज्ज' पेय=दुग्धादिक, 'लेज्झ' लेह्य=दधिशर्करादि-

केतकी आदि की गंध से आकृष्ट बनकर जिस प्रकार बिल से निकला सर्प वधबंधन आदि कष्टों को पाता है वैसे कष्ट पाते हैं ॥ गा० ५-६ ॥

'तित्तकडुय जिब्भिंदिय' इत्यादि ।

जो प्राणी जिह्वाइन्द्रिय के वशवर्ती बना रहता है वह मरीच आदि के जैसे तिक्त स्वाद में करेला के जैसे कटुक स्वाद में, आमल आदि के जैसे कषायरस में कपित्थादिके जैसे अम्ल-खट्टे रस में, मोदकादि के जैसे मधुर स्वाद में तथा विविध प्रकार के कदली फलादिक खाद्य पदार्थों में, दुग्धादि पेयपदार्थों में, एवं दधि और शक्कर आदि से निष्पन्न हुए

કેતકી વગેરેની ગંધથી આકૃષ્ટ થઈને જેમ દરમાંથી નીકળેલો સાપ વધબંધન વગેરે કષ્ટોને પ્રાપ્ત કરે છે તેમજ કષ્ટ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ ગા ૫-૬ ॥

तित्तकडुय जिब्भिंदिय इत्यादि ।

જે પ્રાણી જીહ્વા ઇન્દ્રિય (જીભ) ને વશ થયેલો હોય છે, તે મરચું વગેરેના જેવા તીખા સ્વાદમા, કારેલા જેવા કડવા સ્વાદમા, આમલી વગેરેના જેવા કષાય રસમા કરબાદિના જેવા અમ્લ-ખાટા રસમા, લાડવા વગેરેના જેવા મધુર સ્વાદના તેમજ જાતજાતના કેળા વગેરેના ખાદ્ય પદાર્થોમાં, દૂધ વગેરે જેવા પેય પદાર્થોમા, અને દહીં તેમજ ખાંડ વગેરેથી તૈયાર થયેલા

निष्पन्न श्रीखण्डादिकम्, एतेषा द्वन्द्वः, तेषु आस्वादेषु=आस्वाद्यन्ते इति आस्वादाः रसास्तेषु गृद्धाः=आसक्ताः सन्तः रमन्ते ॥ ७ ॥

'निच्चिमदिये' त्यादि । पूर्वं गले=मत्स्यवेधने स्नान, मत्स्यवेधनेन मुखे विद्ध इत्यर्थः, पश्चाद् उत्क्षिप्त=जलादुद्धृतः इति कर्मधारयः, एवभूतो मत्स्य स्थलविरल्लितः=स्थले निपातितः सन स्फुरति व्याकुलो भूत्वा भूमौ लुठति। शेष स्पष्टम् ॥ ८ ॥

मूलम्-उउभयमाणा सुहेसु य पविभत्तहिययमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदियवसट्टा ॥ ९ ॥
फासिंदिय दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
ज खणइ मत्थय कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥

छाया-ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभक्तहृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु रज्यमाना, रमन्ते स्पर्शेन्द्रियवशार्त्ता. ॥ ९ ॥
स्पर्शेन्द्रिय दुर्दान्तत्वस्य, अय एतावान् भवति दोष. ।
यत् खनति मस्तक कुञ्जरस्य लोहाङ्कुशस्तीक्ष्णः ॥ १० ॥

टीका-'उउभये' त्यादि । स्पर्शेन्द्रियवशार्त्ता -'उउभयमाणसुहेसु य' ऋतुभज्यमानसुखेषु ऋतुषु=हेमन्तादिषु भज्यमानानि=सेव्यमानानि सुखानि, येषु ते,

श्री खड आदि लेह्य पदार्थों में आसक्तमति होकर बड़ा हर्ष मनाया करते हैं। परन्तु जब इनकी यह इन्द्रिय दुर्दान्त बन जाती है तब ऐसे प्राणी जैसे मत्स्यवेधन से-मछली पकड़ने के काटे-बशी-से मुख में विद्ध हुआ मत्स्य जल में से खींचकर बाहर भूमिपर डाल दिया जाता है और वह भूमिपर तड़पू २ कर मर जाता है उस इन्द्रिय के विषय में फँसकर तडपू २ कर मर जाया करते हैं ॥ गा० ७-८ ॥

શ્રીખડ વગેરે લેહ્ય (ચાટીને ખાઈ શકાય તેવા) પદાર્થોમા આસક્ત થઇને ખૂબ જ હર્ષિત થતા રહે છે પરતુ જ્યારે તેમની આ ઇન્દ્રિય દુર્દાત બની જાય છે, ત્યારે એવા પ્રાણી જેમ મત્સ્યવેધનથી-માછલી પકડવાના કાટાથી મુખમા વિદ્ધ થયેલુ માછલુ પાણીમાથી બહાર ખેચીને બહાર જમીન ઉપર નાખવામા આવે છે અને તે જમીન ઉપર તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે, તેમજ તે ઇન્દ્રિયના વિષયમા ફસાઇને તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે ॥ ગા ૭-૮ ॥

तेषु तथोक्तेषु तथा सविभवाना-सपत्तिशालिना हृदयस्य मनसश्च निर्वृत्तिकरेषु सुखकरेषु। एव भूतेषु स्पर्शेषु रज्यमानाः=अनुरक्ताः रमन्ते ॥ ९ ॥

'फासिंदिये' त्यादि। कुञ्जरस्य=करिणीस्पर्शलुब्धस्य हस्तिनो मस्तक तीक्ष्णो-लोहाङ्कुशः खनति=विदारयति। शेष सुगमम् ॥ १० ॥ ५ ॥ सू० ॥

मूलम्—कलरिभिय महुरतंतीतलतालवसकउहाभिरामेसु ।
सद्देसु जं न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥
थणजहणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगईसु ।
रूवेसु न रत्ता वसट्टमरण न ते मरए ॥ १२ ॥
अगुरुवरपवरधूवण उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गधेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥
तित्तकडुयकसायवमहुरवहुखज्जपेज्जलेज्झेसु ।
आसाएसु न गिद्धा वसट्टमरण न ते मरए ॥ १४ ॥

(उउभयमाण, फासिंदियदुद्दत इत्यादि,

टीकार्थ—जो प्राणी स्पर्शन इन्द्रियके वशवर्ती होते हैं वे अपनी स्पर्शनेन्द्रियकी लोलुपतासे हेमन्त आदि प्रत्येक ऋतु सबन्धी सुख भोगते हैं। तथा सपत्तिशालियों के हृदय में और मन सुखकर स्पर्शों में अनुरक्त बने रहते हैं। इस तरह करते २ जब इनकी यह स्पर्शन इन्द्रिय दुर्दान्त बन जाती है तब वे प्राणी जिस प्रकार तीक्ष्ण लोह का अकुश करिणी (हस्तिनी) के स्पर्श करने में लुब्धक बने हुए मत्त गजराज के मस्तक को विदार देता है उसी तरह इस स्पर्शन इन्द्रिय के द्वारा विनष्ट कर दिये जाते हैं॥ गा० ९-१० ॥

ઉ ઉ મયમાણ, ફાસિંદિયદુદ્દત ઇત્યાદિ।

જે પ્રાણીઓ સ્પર્શેન્દ્રિયને વશ થાય છે, તેઓ પોતાની સ્પર્શેન્દ્રિયની લોલુપતાથી હેમત વગેરે દરેકે દરેક ઋતુઓના સુખો ભોગવે છે તેમજ સપત્તિવાળાઓના હૃદય અને મનસુખદ સ્પર્શોમા આસક્ત બનીને રહે છે આમ કરતા કરતા જ્યારે તેમની આ સ્પર્શેન્દ્રિય દુર્દાત બની જાય છે ત્યારે તે પ્રાણીઓ (હાથિણી) ને સ્પર્શવામા લુબ્ધ બનેલા મત્ત ગજરાજના મસ્તકને વિદીર્ણ કરી નાખે છે તેમજ આ સ્પર્શેન્દ્રિય વડે વિનષ્ટ કરી નાખવામા આવે છે ॥ ગા ૯-૧૦ ॥

उउभयमाणसुहेसु य सन्निभवहियमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्ताना प्रशस्तमरण न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशकुहराभिरामेसु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरपवरधूपन,—ऋतुमाद्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुसाधपेय लेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नही बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द मे, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गध मे जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, થણજહણ, અગુરુવરપવર, તિત્તકડુય ઉ ઉ ભયમાણ, ઇત્યાદિ ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી, તેમનુ વશાત મરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણેઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમા, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગધમા, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમા તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમા અત્યત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसुय भद्दपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥
गंधेसु य भद्दपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण न समणेण सया ण होयव्व ॥ २० ॥

एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ।

॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोधयति—' सद्देसु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥

अब सूत्रकार इन पाच गाथाओं द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

સદ્દેસુય, ફાસેસુય ઇત્યાદિ

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥

સૂત્રકાર હવે આ પાચ ગાથાઓ વડે એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા શ્રમણજનોને કદાપિ રાગ-દ્વેષ નહિ

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियय मणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्ता वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह-' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवशफुल्लाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,-ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेय लेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते है उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, થણજહણ, અગુરુવરપવર, તિત્ત કડુય ઇ ઉ ભયમાણ, ઇત્યાદિ ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી, તેમનુ વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણેન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમા, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમા, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમા તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમા અત્યત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियय मणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्ताना वशार्त्तमरण न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह-' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवशफुडसमिरामेसु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,-वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,-ऋतुमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुसाद्यपेय लेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,-वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नही बनते है उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द मे, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नही होते है ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, થણજહણ, અગુરુવરપવર, તિત્તકડુય ઉ ઉ ભયમાણ, ઇત્યાદિ ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી, તેમનુ વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી વર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમા, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગધમા, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમા તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમા અત્યત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसुय भद्दपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥
गधेसु य भद्दपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भाविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण न समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ।

॥ सत्तरसमं नायज्झयण समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोधयति—' सद्देसु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥

अब सूत्रकार इन पाच गाथाओ द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥

સૂત્રકાર હવે આ પાચ ગાથાઓ વડે એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઈચ્છે છે કે અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા શ્રમણજનોને કદાપિ રાગ-દ્વેષ નહિ

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशकुहराभिरामेसु ।
सद्देसु ये न गिद्धा,—वसट्टमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिसु ।
रूवेसु ये न रत्ता,—वसट्टमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरपवरधूपन,—ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिसु ।
गन्धेसु ये न गृद्धा,—वसट्टमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेय लेह्येसु ।
आस्वादेसु न गृद्धा,—वसट्टमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेसु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेसु ।
स्पर्शेसु ये न गृद्धा—वसट्टमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते है कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नही बनते है उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द मे, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गध मे जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नही होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, થણજહણ, અગુરુવરપવર, તિત્ત કડુય ઇ ઉ ભયમાણ, ઇત્યાદિ ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી, તેમનુ વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણેન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમા, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગધમા, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમા તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય ભૂત સ્પર્શમા અત્યત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसुय भद्दपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥
गधेसु य भद्दपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण न समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥
एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ।

॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोधयति—' सद्देसु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥

अब सूत्रकार इन पाच गाथाओ द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

સદ્દેસુય, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥

સૂત્રકાર હવે આ પાચ ગાથાઓ વડે એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઈચ્છે છે કે અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા શ્રમણજનોને કદાપિ રાગ-દ્વેષ નહિ

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियय मणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्ताना वशार्त्तमरण न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतन्त्रीवशकृद्दाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,—ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुकरूपायाम्ल, मधुरमृदुरसाद्यपेय लेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नही बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द मे, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गध मे जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नही होते हैं ॥ गा० ११–१५ ॥

કલરિભિય, થણજહણ, અગુરુવરપવર, તિત્ત કડુય ઉ ઉ ભયમાણ, ઇત્યાદિ ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી, તેમનુ વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણેન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમા, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગધમા, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમા તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય ભૂત સ્પર્શમા અત્યત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧–૧૫ ॥

' सद्देसु य ' इत्यादि, गाथा पञ्चकं सुगमम् ॥

सुधर्मास्वामी आह-' एवं खलु हे खम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्समाप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः। इति ब्रवीमि-व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक - प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृत-तत्वर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तदशमध्ययनं समाप्तम् ॥ १७ ॥

---

८ आठ प्रकार का स्पर्श चाहे वह अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल हो-जब २ स्पर्शन इन्द्रिय का विषय हो उसमें साधु को किसी भी तरह से कभी भी तुष्ट एव रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ २० ॥

इस प्रकार हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके है इस सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा में उन्ही के कहे अनुसार कह रहा हूँ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का सत्रहवा अध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

---

૮ જાતનો સ્પર્શ—ભલે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમા સાધુને કોઈ પણ રીતે કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા. ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવ્યુ છે-આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આવુ હુ તેમના કહ્યા મુજબ જ તમને કહી રહ્યો છુ

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ સત્તરમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

रूपेषु च भद्रकपापकेषु, चक्षुर्विषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १७ ॥
१-भद्रकपापकेषु=अनुकूल-प्रतिकूलेषु ।
ग धेषु च भद्रकपापकेषु, घ्राणविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १८ ॥
रसेषु च भद्रकपापकेषु, जिह्वाविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १९ ॥
स्पर्शेषु च भद्रकपापकेषु, कायविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ २० ॥

विषय को समझाते हैं यहां भद्रक शब्द का अर्थ अनुकूल और पापक शब्द का अर्थ प्रतिकूल है। जब शब्द रूप विषय श्रोत्रेन्द्रिय का हो तो उस समय चाहे वह मनोज्ञ हो या अमनोज्ञ हो कैसा ही क्यों न हो उसमें श्रमण-साधु-को कभी भी तुष्ट अथवा रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० ॥ १६ ॥

चक्षुइन्द्रिय का विषयभूतरूप जब उस इन्द्रिय द्वारा ग्रहण करने में आवे-तब वह चाहे मनोज्ञ हो या अमनोज्ञ हो उसमें श्रमण जन को कभी भी हर्ष विषाद-तुष्ट रुष्ट-नहीं होना चाहिये ॥ गा० १७ ॥

मनोज्ञ एव अमनोज्ञ गध जब घ्राणइन्द्रिय का विषय हो तब साधु को उस विषय में कभी भी तुष्ट रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० १८ ॥

मनोज्ञ अथवा अमनोज्ञ रस जिह्वाइन्द्रिय का विषय हो-तब उसमें श्रमण जन को कभी भी तुष्ट और रुष्ट नही होना चाहिये ॥ गा० १९ ॥

કરવો જોઇએ અહીં ભદ્રક શબ્દનો અર્થ અનુકૂળ અને પાપક શબ્દનો અર્થ પ્રતિકૂળ છે જ્યારે શબ્દરૂપ વિષય શ્રોત્ર ઈન્દ્રિયનો હોય તો ભલે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, ગમે તેવો કેમ ન હોય, તેમા શ્રમણ-સાધુ-ને કદાપિ તુષ્ટ કે રૂષ્ટ થવુ જોઇએ નહિ ॥ ગા ૧૬ ॥

ચક્ષુ ઈન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપ જ્યારે તે ઈન્દ્રિય વડે ગ્રહણ કરવામા આવે ત્યારે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, શ્રમણને કદાપિ તેમા હર્ષ વિષાદ-તુષ્ટ-રૂષ્ટ નહિ થવુ જોઇએ ॥ ગા ૧૭ ॥

મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ ગધ જ્યારે ઘ્રાણ ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે સાધુને તે વિષયમા કદાપિ તુષ્ટ કે રૂષ્ટ નહિ થવુ જોઇએ ॥ ૧૮ ॥

મનોજ્ઞ અથવા તો અમનોજ્ઞ રસ જ્યારે જીહ્વા ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે તેમા શ્રમણ-જનને કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવુ જોઇએ નહિ ॥ ૧૯ ॥

' सद्देसु य ' इत्यादि, गाथा पञ्चकं सुगमम् ॥

सुधर्मास्वामी पाह–' एवं खलु हे खम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः। इति ब्रवीमि–व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात – जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक - प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृत-तत्वर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तदशमध्ययनं समाप्तम् ॥ १७ ॥

---

८ आठ प्रकार का स्पर्श चाहे वह अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल हो–जब २ स्पर्शन इन्द्रिय का विषय हो उसमें साधु को किसी भी तरह से कभी भी तुष्ट एवं रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ २० ॥

इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुसार कह रहा हूँ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का सत्रहवा अध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

---

૮ જાતનો સ્પર્શ—ભલે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમા સાધુને કોઈ પણ રીતે કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવ્યુ છે–આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આવુ હુ તેમના કહ્યા મુજબ જ તમને કહી રહ્યો છુ

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ સત્તરમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्ध -पूर्वस्मिन् अध्ययने इन्द्रियवशवर्त्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थौ प्रोक्तौ, इह तु लोभाविष्टानां लोभरहितना च तावेवोच्येते, इत्येव पूर्वेण सह संबद्धमिदमध्ययनम्, तस्येदमादिम सूत्रम्-' जइण भंते' इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भंते। समणेणजाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारसस्स ण भंते। णायज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहं णामं णयरे होत्था। वण्णओ०। तत्थ णं धण्णे णाम सत्थवाहे। भद्दाभारिया तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंचसत्थवाह-

---

अठारहवां अध्ययन प्रारंभ

सुसमादारिका का वर्णन

सत्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका हैं। अब १८ वा अध्ययन प्रारंभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबंध है--कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशकृत इन्द्रियवाले जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं। इस अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है-' जइण भंते ' इत्यादि।

અઢારમા અધ્યયનનો પ્રારંભ

સુસમાદારિકાનુ વર્ણન

સત્તરમું અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે અઢારમા અધ્યયનની શરૂઆત થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પહેલા અધ્યયનમા ઈન્દ્રિય વશવર્તી તેમજ વશીકૃત ઈન્દ્રિયોવાળા જીવોને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વિષે કહેવામા આવ્યુ છે સૂત્રકાર હવે આ અધ્યયનમા આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરશે કે જે જીવો લોભકષાયથી તેમજ લોભકષાયથી રહિત હોય છે તેઓ અનર્થ અને અર્થ પ્રાપ્તિને લાયક ઠરે છે આ અધ્યયનનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—જઇણ ભંતે સમણેણ મહાવીરેણ ઇત્યાદિ—

दारगा होत्था, तं जहा—धण्णे धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्सधूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजातीया सुंसुमाणामं दारिया होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए नाम दासचेडे होत्था, अहीणपचिंदियसरीरे ससोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था। तएणं से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था। सुंसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता, बहूहिं दारएहि य दारियाहि य बालेहि बालियाहि य डिभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि आभिरममाणे२ विहरइ। तएणं से चिलाए दासचेडे तेसि बहूणं दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एव वट्टइ आगेलियाओ, तेदुसए, पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालकारं अवहरइ अप्पेगइए आउस्सइ, एव अवहसइ निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ। तएणं ते बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कदमाणा य साण २ अम्मापिऊण णिवेदेति। तएणं तेसि बहूणं दारगाणय ६ जाव अम्मापियरो जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धन्ने सत्थवाहे बहूहिं खिज्जणाहि य रुटणाहि य उवलभणाहि य खिज्जमाणाहिय रुटमाणाहि य उवलभमाणा य धण्णस्स एयमट्ठ णिवेदेंति ॥ सू० १ ॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्ध -पूर्वस्मिन् अध्ययने इन्द्रियवशवर्त्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थौ प्रोक्तौ, इह तु लोभाविष्टाना लोभरहिताना च तावेवोच्येते, इत्येव पूर्वेण सह संबद्धमिदमध्ययनम्, तस्येदमादिम सूत्रम्-' जइणं भंते' इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहं णाम णयरे होत्था । वण्णओ० । तत्थ णं धण्णे णाम सत्थवाहे । भद्दाभारिया तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पञ्चसत्थवाह-

---

अठारहवां अध्ययन प्रारंभ
सुंसमादारिका का वर्णन

सत्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका हैं। अब १८ वा अध्ययन प्रारंभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबंध है-कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशकृत इन्द्रियवाले जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते है। इस अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है-' जइणं भंते ' इत्यादि।

અઢારમા અધ્યયનનો પ્રારંભ
સુસમાદારિકાનુ વર્ણન

સત્તરમું અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે અઢારમા અધ્યયનની શરૂઆત થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પહેલા અધ્યયનમા ઈન્દ્રિય વશવર્તી તેમજ વશીકૃત ઈન્દ્રિયોવાળા જીવોને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વિષે કહેવામા આવ્યુ છે સૂત્રકાર હવે આ અધ્યયનમા આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરશે કે જે જીવો લોભકષાયથી તેમજ લોભકષાયથી રહિત હોય છે તેઓ અનર્થ અને અર્થ પ્રાપ્તિને લાયક ઠરે છે આ અધ્યયનનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—જઇણ ભંતે સમણેણ મહાવીરેણ ઇત્યાદિ—

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाह्या आत्मजा धनादीना पञ्चाना पुत्राणाम् ' अणुमग्गजाइया ' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्गं जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिका आसीत् । कीदृशी सा ?–' सूमालपाणिपाया ' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरचरणा । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेट.=दासपुत्र आसीत् । योहि ' अहिण-

धण्णे २– धणपाले–२ धणदेवे ३, धणगोवे–४ धणरक्खिए–५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था। इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये। उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था। इसकी पत्नी का नाम भद्रा था। उस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पांच पुत्र थे–धन–१ धनपाल–२ धनदेव–३ धन-गोप–४ और धनरक्षित–५।

(तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थ वाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी-जो धनादिक पाच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी। इसके कर, चरण बड़े कोमल थे। इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट–दास पुत्र–था–जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा–धण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे–४, धणरक्खिए–५)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેનુ વર્ણન પહેલાની જેમ સમજી લેવુ જોઈએ તે નગરમા ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ ભદ્રા હતું તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે–ધન–૧,ધનપાલ–૨,ધનદેવ–૩,ધનગોળ–૪,અને ધનરક્ષિત–૫

(तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताण अणु मग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए णाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા–ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ Cત્પન્ન થઈ હતી તેના હાથ–પગ બહુ જ કોમળ હતા તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

टीका-' जइण भन्ते ! ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावन्मोक्ष सम्माप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः नितेन्द्रियाऽजितेन्द्रियागामर्थनिर्यमाप्तिरूपो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, अष्टादशस्य तु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावन्मोक्ष सम्माप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्त ? सुधर्मास्वामी माह-एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरमासीत् , ' वण्णओ ' वर्णकः=नगरवर्णन पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु धन्यो नाम सार्थवाहः परिवसति । तस्य भद्रा नाम भार्याऽसीत् । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य पुत्राः, भद्राया आत्मजाः पञ्च सार्थवाहदारका आसन । तेषा नामान्याह-' त जहा ' तद्यथा-

टीकार्थ-जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि-(जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?) हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीर ने जो कि सिद्धिगति नाम क स्थान को प्राप्त कर चुके हैं सत्रहवे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है-तो उन्हों सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १८ वें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? (एव खलु जंबू !) इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जंबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम णयरे होत्था । वण्णओ० तत्थण धण्णे णामं सत्थवाहे-भद्दाभारिया-तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा-

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?)

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકયા છે-સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તે જ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ૧૮ મા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ?

(एव खलु जंबू !) આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછયો ત્યારબાદ શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—

(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम णयरे होत्था । वण्णओ० तत्थण धण्णे णाम सत्थवाहे-भद्दा भारिया-तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाह्या आत्मजा धनादीना पञ्चाना पुत्राणाम् ' अणुमग्गजाइया ' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्गं जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिका आसीत् । कीदृशी सा ?–' सूमालपाणिपाया ' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरचरणा । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेटः=दासपुत्र आसीत् । योहि ' अहिण-

धण्णे २– धणपाले–२ धणदेवे ३, धणगोवे–४ धणरक्खिए–५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था। इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये। उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था। इसकी पत्नी का नाम भद्रा था। उस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पांच पुत्र थे–धन–१ धनपाल–२ धनदेव–३ धन गोप–४ और धनरक्षित–५।

(तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थ वाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी– जो धनादिक पाच पुत्रो के पीछे उत्पन्न हुई थी। इसके कर, चरण बड़े कोमल थे। इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट–दास पुत्र–था–जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा–धण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे–४, धणरक्खिए–५)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેનુ વર્ણન પહેલાની જેમ સમજી લેવુ જોઈએ તે નગરમા ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ ભદ્રા હતુ તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે–ધન–૧,ધનપાલ–૨,ધનદેવ–૩,ધનગોળ–૪,અને ધનરક્ષિત–૫

(तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताण अणु-मग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए णाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા–ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી તેના હાથ–પગ બહુ જ કોમળ હતા તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

पञ्चेन्द्रियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=परिपूर्णसर्वेन्द्रियशरीरः, ' पमाणपडि ' मांसोपचितः=मांसैरुपचित', पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालकीलावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलश्चापि आसीत् । तत खलु स दासचेट' सुसुमाया दारिकायाः ' बालग्गाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितु नियुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जातश्चाप्यभवत् । ततः चिलातः सुसुमां दारिका कटयां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च बालकैश्च बालिकाभिश्च, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालककुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दासचेट' तेषां बहूनां ' दाराण जाव ' दारकाणा यावत्=दारकाणा दारिकाणा डिम्भकाना डिम्भिकाना कुमाराणां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था। जो प्रमाणोपेत पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था। मासोपचित था पुष्ट देहवाला था। यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था। (तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहि य विहरइ-तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वद्दए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालंकार अवहरइ, अप्पेगइयाए आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए ताडेइ) इसलिये वह दासचेट सुसमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया। अतः वह चिलात दास चेटक सुसमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिंभक डिंभिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

નામ ચિલાત હતુ તે સપ્રમાણ પાચે ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ શરીરવાળો હતો. તે માસલ તેમજ પુષ્ટ શરીરવાળો હતો તે બાળકોને રમાડવામા સવિશેષચતુર હતો.

(तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वद्दए आडोलियाओ तेंदुरुए पोत्तुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लालंकार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहसइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए ताडेइ)

તેથી તે દાસચેર સુસમા દારિકાને રમાડવા માટે નિયુક્ત કરવામા આવ્યો આ પ્રમાણે તે ચિલાત દાસ ચેરક સુસમા દારિકાને ખોળામા લેસા ડીને ઘણા દારક દારિકાઓની સાથે બાળક તેમજ બાળાઓની

च मध्ये 'अप्पेगइयाण' अप्येकेषाम् 'खुल्लए' क्षुल्लकान्=कपर्दकनिशेपान् 'कोडी' इति भापा प्रसिद्धान् अपहरति=चोरयति। एव 'वट्टए' वर्तकान्=जत्वादिमयगोलकान् 'आडोलियाओ' आडोलिका इति नाम्नाप्रसिद्धान् वाल क्रीडनवस्तुविशेपान् 'वेंदूसए' देशीशब्दोऽयम्-गेन्दुकान् 'पोत्तुल्लए' वस्त्रमयपुत्तलिकाः, 'साडोल्लए' उत्तरीयवस्त्राणि चोरयति । तथा अप्येकेषाम् आभरणमाल्यालङ्कारान् अपहरति । अनन्तरम् 'अप्पेगइए' अप्येकान् 'आउस्सइ' आक्रुश्यति=निष्ठुरवचनेन 'एव' अवहसइ' अपहसति=अपशब्दमुच्चार्य हास्यं करोति, 'निच्छोडेइ' निर्छोटयति='यदि त्व किमपि वदिष्यसि तदा त्वा वहिर्निष्काशयिष्यामीत्यादि शब्दैस्तान् भीपयति, तथा 'णिब्भच्छेइ' निर्भर्त्सयति=तेषा निर्भर्त्सना करोति, एव 'तज्जेइ' तर्जयति 'मया कृत किमपिकार्यं यदि स्त्र मातापितृभ्यो यूय वदिष्यथ

के साथ वार २ खेलने में लगा रहता। खेलते २ वह चिलात दास चेटक उन अनेक दारक दारिका, डिम्भका, डिम्भिका, कुमार कुमारिकाओं में से कितनेक बच्चो के खेलने के साधन भूत कपर्दक विशेषों को कौडियो को चुरा लेता कितनेक के जतुके बने हुए चपेटो को, कितनेक के अडोलिक नाम से प्रसिद्ध खिलोनों को, कितनेक बच्चों की गेंदों को कितनेक बच्चो की वस्त्र के बनी हुई गुडियो को, तथा कितनेक बच्चो के उत्तरीयवस्त्रों-को फरियो को चुरालेता था। कितनेक बच्चों के आभरणो को मालाओं को और अलकारो को भी चुरालिया करता था कितनेक बच्चो को गाली देना कितनेक बच्चो की वह निष्ठुर वचनो को उच्चारण कर हँसी मजाक करने लग जाता था। यदि तू कुछ कहेगातो मैं तुझे यहाँ से वाहिर निकाल दूगा इत्यादि शब्दों से कितनेक बच्चों को वह डरा दिया करता था। कितनेक बच्चों को

અને ડિભિકઓ સાથે અને કુમાર કુમારિકાઓની સાથે વારવાર રમવામા જ ચોટી રહેતો હતો તે ચિલાત દાસચેર રમતા રમતા ઘણા દારક-દારિક, ડિભક-ડિભિક, કુમાર-કુમારિકાઓમાથી કેટલાક બાળકોના રમવાના સાધન કપર્દક વિશેષોને-કોડીઓને ચોરી લેતો, કેટલાકના લાખના બનેલા ચપેટાઓને, કેટલાકના અડોલિક નામથી પ્રસિદ્ધ એવા રમકડાઓને, કેટલાક બાળકોની દડીઓને, કેટલાક બાળકોની વસ્ત્રથી બનેલી ઢીંગલીઓને તેમજ કેટલાક બાળકોના ઉત્તરીય વસ્ત્રોને ચોરી જતો હતો તે કેટલાક બાળકોના આભરણોને, માળાઓને અને ઘરેણાઓને પણ ચોરી જતો હતો તે કેટલાક બાળકોને ગાળો દેતો અને કેટલાક બાળકોની નિષ્ઠુર વચનો બોલીને ઠઠા-મશ્કરી કરવા લાગતો હતો "ને તું કઈ પણ બોલશે તો હુ તને અહીંથી બહાર કાઢી

पञ्चिंदियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=परिपूर्णसर्वेन्द्रियशरीरः, ' मंसोवचिए ' मांसोपचितः=मांसैरुपचितः, पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालकीलावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलश्चापि आसीत् । तत खलु स दासचेट' सुसुमाया दारिकायाः ' बालग्गाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितु नियुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जातश्चाप्यभवत् । सहि चिलातः सुसुमा दारिका कट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च बालकैश्च बालिकाभिश्च, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालकुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेय', अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दासचेट' तेषां बहूना ' दाराण जाव ' दारकाणा यावत्=दारकाणा दारिकाणा डिम्भकाना डिम्भिकाना कुमाराणां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था। जो प्रमाणोपेत पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था। मासोपचित था पुष्ट देहवाला था। यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था। (तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ-तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वहए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालंकार अवहरइ, अप्पेगइयाए उद्दवेइ, एव अवहरइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए ताडेइ) इसलिये वह दासचेट सुसमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया। अतः वह चिलात दास चेटक सुसमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिंभक डिंभिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

નામ ચિલાત હતુ તે સપ્રમાણ પાચે ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ શરીરવાળો હતો તે માસલ તેમજ પુષ્ટ શરીરવાળો હતો તે બાળકોને રમાડવામા સવિશેષચતુર હતો

(तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वहए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहसइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए ताडेइ)

તેથી તે દાસચેર સુસમા દારિકાને રમાડવા માટે નિયુક્ત કરવામા આવ્યો આ પ્રમાણે તે ચિલાત દાસ ચેરક સુસમા દારિકાને ખોળામા બેસાડીને ઘણા દારક દારિકાઓની સાથે બાળક તેમજ બાળાઓની ડિભક

कादीना अम्बापितर यत्रैव धन्य सार्थवाहस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य धन्य सार्थवाह बहुभिः 'खिज्जणाहि य' खेदनाभिश्च=खेदजनकवाग्भिः 'रुटणाहि य' रोदनाभिः माशुरुदितवाग्भिः, 'उवलभणाहि' उपालम्भनाभि'=किमेतदुचितम्? भवादृशाम्? इत्यादि वाग्भिश्च 'खेज्जमाणा' खेदयन्तः स्वखेद' प्रकाशयन्तः 'रुटमाणा य' रूदन्त उवलभमाणा य' उपालम्भयन्तश्च धन्याय सार्थवाहाय एतमर्थं=चिलातकृत्याऽपराधरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तएणं से धण्णे सत्थवाहे चिलाय दासचेड एय-मट्ठ भुज्जो भुज्जो णिवारेइं, णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ। तएण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ। तएणं ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव णिवेदेंति। तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव

की शिकायत करने लगें। अपने २ बालकों के मुख से इस प्रकार की दासचेटक की हरकत सुनकर उन दारक आदि को के माता पिता जहा धन्य सार्थवाह होता था वहा आते और आकर के धन्य सार्थवाह को अनेक खेदजनक वचनों द्वारा रोते २ उपालभ=उलहना दिया करते-क्या आप जैसे व्यक्तियो को यह उचित-है-इस तरह से उससे कहा करते। इस तरह वे खेदजनक तथा अश्रु भरकर कही गई वाणियों द्वारा अपना खेदप्रकाशित करते हुए रोते हुए एव उलहना देते हुए धन्यसार्थ वाह के लिये चिलातकृत अपराध रूप अर्थ की निवेदना करते ॥सू० १॥

મુખેથી આ પ્રમાણે દાસ ચેટકની ખરાબ વર્તણુક વિષેની વિગત સાભળીને તે દારક વગેરેના માતાપિતા જ્યા ધન્યસાર્થવાહ હતો ત્યા આવતા અને આવીને ધન્યસાર્થવાહને ઘણા કઠોર વચનોથી રડતાં રડતા ઠપકો આપતા રહેતા હતા ' શું તમારી જેવી વ્યક્તિને આ વાત શોભે છે ? " આ પ્રમાણે તે કહ્યા કરતા હતા આ પ્રમાણે તેઓ ખેદજનક તેમજ અશ્રુભીની હાલતમા કહેલી વાણીઓ વડે પોતાનુ દુખ પ્રકટ કરતા, રડતા તેમજ ઠપકો આપતા ધન્ય સાર્થવાહને ચિલાતે જે કઈ, ખરાબ વર્તણુક કરી હોય તે બદલ ફરિયાદો કરતાં રહેતા હતા ॥ સૂત્ર ૧ ॥

तदापुत्मांक प्राणान् अपहरिष्यामीत्येवरूपैरांक्रोशैरङ्गुलिनिर्देशपूर्वक तेषु भीतिमुत्पा दयति। तथा अप्येककान् बालकान् 'ताडेइ' ताडयति चपेटादिभि। तत खलु ते बहवो दारकश्च यावत्-कुमारिकाश्च सर्वे बाला 'रोयमाणा य' रुदन्तश्च 'कंद माणा य' क्रन्दन्तश्च=उच्चैः स्वरेण चीत्कार कुर्वन्त 'माण २' स्वेषाम् २ 'अम्मापिऊण' अम्बापितृभ्यइदमर्थं निवेदयन्ति। ततः खलु तेषा बहूना=दार-

भूडीश वगेरे वज्रनोथी केटलाक बाळकोने ते भीवडावी देतो हतो केटलाक बाळकोनी ते भर्त्सना पण करतो हतो-मारी कोई पण वात तमे तमारा मातापिताने कहेशो तो याद राखजो हु तमने जीवता नहि छोडु तमने हु जनथी मारी नाखीश" आ प्रमाणे केटलाक बाळकोनी साथे ते आगळीओ चीधी चीधीने भीवडावी देतो हतो केटलाक बाळकोने ते तमाचो वगेरे पण लगावी देतो हतो।

(तएण ते बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कदमाणा य ४ साय २ अम्मापिऊण णिवेदेंति, तएण तेसिं बहूण दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह बहूहि खिज्ज णाहि य रुडणाहि य उवलभणाहि य खिज्जमाणा य रुडमाणा य उवल भेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठ णिवेदेंति)

આ પ્રમાણે તે ઘણા દારક યાવત્ કુમારિકાઓ રડતા રડતા, આક્રંદ ન કરતા કરતા, મોટા સાદે ચીત્કાર કરીને પોતપોતાના માતાપિતાને તે દાસ ચેટકની અશર્ણ વર્તણુક વિષે ફરિયાદ કરવા લાગ્યા પોતાના

कादीना म ये अप्येकेषा ' खुल्लए ' क्षुल्लकान्=कपर्दकविशेषान् अपहरति ' जाव ताडेइ ' यावत्ताडयति=पूर्वोक्तक्रमेण एव कपर्दकाद्यपहरण यावत्तर्जनं ताडनं च करोति । ततः खलु बहवो दारकाश्च दारकादयो रुदन्तश्च यावत् स्वेषा २ अम्बापितृभ्यो निवेदयन्ति । तत खलु ते आशुरुप्ताः=स्व पुत्रवचन श्रुत्वा झटिति क्रोधाविष्टमानसा यत्रैव धन्य सार्थवाहः तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य बहूभिः ' खेज्जणाहि जाव एयमट्ठ ' खेदनाभिर्यावत् एतमर्थम्=खेदसूचनाभिर्यावत् उपालम्भनयुक्ताभिर्वाग्भिः चिलातदासचेटक कृताऽपराधलक्षणम् अर्थम् निवेदयन्ति। ततः खलु धन्यः सार्थवाहो बहूना ' दारगाण ' दारकाणा ६=दारकादीनाम् अम्बापितृणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुप्तः चिलात दासचेटम् ' उच्चावचाभिः=अनेकविधाभिः ' आउसणाहिं ' आक्रोशनाभिः=क्रोपजनकैर्वचनैः ' आउसइ ' आक्रुश्यति=आक्षिपति ' उद्धसइ ' उद्धर्षयति=नामगोत्रादिनाऽधः पातयति–निन्दतीत्यर्थः । नेत्रमुखादि वक्रीकरणेन ' णिब्भच्छेइ ' निर्भर्त्सयति=

अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण जाव णिवेदेंति) इस तरह समझाने पर भी वह चिलात दासचेट उन अनेक दारको आदि में से कितनेक दारक आदिको के कपर्दक (कौड़ी) विशेषों को चुराता रहा यावत् उन्हें ताडित करता रहा-मारता पीटता रहा। और वे बालक आदि भी रोते हुए अपने २ माता पिताओं से उस के अपराध को जा २ कर कह देते रहे। (तएण ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, बहूहिं खेज्जाणाहिं जाव एयमट्ठ णिवेदेंति, तएण से धण्णे सत्थवाहे बहूण दारगाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरूत्ते चिलायदासचेड उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उद्धसइ णिब्भच्छेइ,) इस प्रकार अपने २ बालकों के मुख से बार २

खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण जाव णिवेदेंति)

આ પ્રમાણે સમજાવવા છતાએ તે ચિલાત દાસચેટક ઘણા દારકો વગેરેમા કેટલાક દારકો વગેરેની કોડીઓને ચોરતો જ રહ્યો યાવત્ તે બાળકોને તાડિત કરતો રહ્યો, તેમજ મારતો પીટતો રહ્યો અને તે બાળકો વગેરે પણ રડતા રડતા પોતપોતાના માતાપિતાને આની ફરિયાદો કરતા જ રહ્યા

(तएण ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहि जाव एयमट्ठ णिवेदेंति, तएण से धण्णे सत्थवाहे बहूण दारगाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरूत्ते चिलाय दासचेड उच्चावयाहि आउसणाहि आउसइ उद्धसइ, णिब्भच्छेइ)

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं णिवेदेंति । तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६ अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलाय दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ, उद्धंसइ, णिब्भच्छेइ निच्छोडेइ, तज्जेइ उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ । तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहं सुहेणं परिवड्ढइ ॥सू० २॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततः खलु धन्य सार्थवाहः चिलात दास चेटम् ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्=एतस्मादर्थात् दारकादीनां कपर्दकापहरणादिरूपाद् अर्थात् भूयोभूयो निवारयति । नो चैव खलु दासचेट एतस्मादुष्कृत्यादुपरमते । ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूना ' दारगाण य ' दारकाणां च-दार

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण से धण्णे सत्थवाहे) इसके बाद उस धन्यसार्थवाहने (चिलाय दासचेड) चिलात दास पुत्र को (एयमट्ठ भुज्जो २ णिवारेइ) बालको के कपर्दक आदि चुराने रूप अर्थ से बार २ मना किया, परन्तु (णो चेव ण चिलाए दासचेडे उवरमइ) वह चिलात दारक उस काम से विरक्त नहीं हुआ । (तएण से दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य ६

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण से धण्णे सत्थवाहे) ત્યારબાદ તે ધન્ય સાર્થવાહે (चिलाय दास चेड) ચિલાત દાસપુત્રને (एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेइ) બાળકોની કોડીઓ વગેરેને ચોરી જવા બદલ વારવાર મનાઇ કરી પરંતુ (णो चेव ण चिलाए दासचेडे उवरमई) તે ચિલાત દારક પોતાની બરબર વર્તણુક છોડીને સુધર્યો નહિ

(तएण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवड्ढइ' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसगी चोज्जप्पसंगी मस-
पसगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहसुहेण परिवड्ढइ) और यहां तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड भी देता रहा और कभी २ तू मेरे घर मे से निकल जा नही तो मै तुझे मारूँगा इस तरह के वचनों से उस को तिरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलात दासचेटक पर कुछ भी प्रभाव नही पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताडनाओं से ताडित कर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया–तब यह राजगृह नगरमें शृंगाटक आदि मार्गों में अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में–प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहो में घूम फिर कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू० २॥

અને છેવટે આ વાત ત્યા સુધી પહોચી કે કોઈ કોઈ વખતે તે તેને બહાર પણ કાઢી મૂકતો હતો અને કોઈ કોઈ વખતે તેને આ જાતના વચનોથી ઠપકો પણ આપતો રહેતો હતો કે તું મારા ઘરમાથી નીકળી જા નહિ તર તને હુ મારી નાખીશ પરતુ જ્યારે આ જાતની શિક્ષાઓની કે ભય પ્રદર્શનની તે દાસ ચેટક ઉપર કશી અસર થઈ નહિ ત્યારે છેવટે ધન્યસાર્થવાહે હતાશ થઇને તેને લાકડી, મુક્કીઓ વગેરેથી તાડિત કરીને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકયો આ પ્રમાણે જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે તેને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકયો ત્યારે તે રાજગૃહ નગરના શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમા રખડેલની જેમ ભટકવા લાગ્યો અને દેવકુળોમા, સભાસ્થાનોમા, પરબોમા, જુગારના અડ્ડાઓમા, વેશ્યાઓના ઘરોમા અને શરાબખાનાઓમા ભટકીને જેમ તેમ કરીને પોતાનુ પાલન–પોષણ કરવા લાગ્યો ॥ સૂત્ર ૨ ॥

तिरस्करोति, 'निच्छोडेइ' निष्क्रोटयति=त्यजति, 'तज्जेइ' तर्जयति='निस्सर मम गृहात् नोचेत्त्वां ताडयिष्यामि' इत्यादि वचनेन भर्त्सयति 'उच्चावयाहिं तालणाहिं' उच्चावचाभिर्यष्टिमुष्ट्याद्यनेकविधाभिस्ताडनाभिः 'तालेइ' ताडयति 'साओ गिहाओ' स्वस्माद् गृहात् 'णिच्छुभइ' निक्षिपति=नि. सारयति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेन सार्थवाहेन स्वस्माद् गृहात् 'णिच्छूढे' निक्षिप्त=नि. सारितः सन् राजगृहे नगरे सिंघाडग जाव गहेसु शृङ्गाटक यावन्महापथपथेषु चतुष्पथादिषु सर्वत्र स्थलेषु, देवकुलेषु च सभासु च

चिलात दासचेटक की पूर्वोक्त अपराधों को जब २ वे सुना करते तब वे गुस्से में भर २ कर जहां धन्यसार्थवाह होता वहां चले जाते रहे। और वहां जाकर बडे खेद के साथ रोते हुए अपने २ दुःखों को प्रकट करते रहे इस तरह बार २ उन दारक आदि के माता पिताओं के मुख से इस दासचेटक के दुष्कृत्य को सुनकर वह धन्य सार्थवाह क्रोध में आकर उस दासचेटक चिलात को अनेक विधकोप जनक ऊँचे नीचे शब्दो से धिक्कार ने लगते थे उसका नाम गोत्र आदि की निंदा करने लग जाते थे। नेत्र, मुख, आदि को टेढा करके उसका तिरस्कार भी करते थे। (णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ, तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु

આ પ્રમાણે પોતપોતાના બાળકોને મુખેથી વારવાર ચિલાત દાસચેટકની ફરિયાદો જ્યારે જ્યારે તેઓ સાભળતા ત્યારે ત્યારે તેઓ ગુસ્સે થઈને જ્યા ધન્યસાર્થવાહ હતા ત્યાં જતા હતા અને ત્યા જઈને તેઓ બહુ જ દુખની સાથે રડતા રડતા પોતપોતાનાં દુખેને પ્રકટ કરતા રહેતા હતા આ પ્રમાણે વારવાર તે દારક વગેરેના માતાપિતાનો મુખથી તે દાસચેટકની બરાબર વર્તણુક વિષેની વિગત સાભળીને તે ધન્યસાર્થવાહ ક્રોધમા ભરાઈને તે દાસ ચેટક ચિલાતને ઘણો ક્રોધ ઉત્પન્ન કરે-તેવા બરાબ વચનોથી ધિક્કારવા લાગતો હતો તેમજ તેના નામ ગોત્ર વગેરેની નિંદા કરવા લાગતો હતો, આંખો મુખ વગેરે બગાડીને તેનો તિરસ્કાર પણ કરતા રહેતા હતા

(णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहि तालणाहि तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ, तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु य पवासु य जूय खलएसु य वेसा घरेसु य पाणघरेसु य सुह सुहेण परिवड्ढइ)

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवड्ढइ' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी मंसपसंगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयग्वलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहंसुहेण परिवड्ढइ) और यहां तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड भी देता रहा और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नहीं तो मै तुझे मारूंगा इस तरह के वचनों से उस को निरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलात दासचेटक पर कुछ भी प्रभाव नहीं पडा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताडनाओं से ताडित कर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया–तब यह राजगृह नगरमें शृंगाटक आदि मार्गों में अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों में सभास्थानों में, पानीय शालाओ में–प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहो में घूम फिर कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू० २॥

અને છેવટે આ વાત ત્યા સુધી પહોચી કે કોઈ કોઈ વખતે તે તેને બહાર પણ કાઢી મૂકતો હતો અને કોઈ કોઈ વખતે તેને આ જાતના વચનોથી ઠપકો પણ આપતો રહેતો હતો કે તું મારા ઘરમાથી નીકળી જા નહિ તર તને હુ મારી નાખીશ પરતુ જ્યારે આ જાતની શિક્ષાઓની કે ભય પ્રદર્શનની તે દાસ ચેટક ઉપર કશી અસર થઈ નહિ ત્યારે છેવટે ધન્યસાર્થવાહે હતાશ થઇને તેને લાકડી, મુક્કીઓ વગેરેથી તાડિત કરીને પોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકયો આ પ્રમાણે જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે તેને પોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકયો ત્યારે તે રાજગૃહ નગરના શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમા રખડેલની જેમ ભટકવા લાગ્યો અને દેવકુળોમા, સભાસ્થાનોમા, પરઓમા, જુગારના અડ્ડાઓમા, વેશ્યાઓના ઘરોમા અને શરાબખાનાઓમા ભટકીને જેમ તેમ કરીને પોતાનુ પાલન–પોષણ કરવા લાગ્યો ॥ સૂત્ર ૨ ॥

होत्था। तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिण-पुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम चोरपल्ली होत्था, विसम-गिरिकडगकोडवसंनिविट्ठा, वंसी कलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफालिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-खंडी विदियजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्ल भजलपेरंता सुबहुस्स वि कुवियबलस्स आयगस्स दुप्पहंसा यावि होत्था। तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिए जाव अधम्मकेऊ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्ह चोरसयाणं आहेव-च्च जाव विहरइ। तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य सधि-च्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य विसभघायगाण य जूयकाराण य खडरक्खाण य अन्नेसि च बहूणं छिन्नभिन्नबहिराययाण कुडगे यावि होत्था। तएणं से विजए तक्करे चोर-सेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमे जणवय बहूहि गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहि य पथकुट्टणेहि य उवलेमाणे २ विद्धंसे माणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरइ। तएणं से विजए दालचेडे रायगिहे बहुहि अत्थाभि संकीहि चोज्जामि

संकीहिय दाराभिसकीहि य धणिएहि य जूइकरेहि य परभवमाणे२ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता, जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता विजय चोरसेणावइ उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ सू०३ ॥

टीका—' तएण से इत्यादि । तत' खलु स चिलातो दासचेटः ' अणोहट्टिए ' अनपघट्टितः, यो हि दुष्कृतौ प्रवर्तमान कमपि हस्तौ धृत्वा निवारयति, सोऽपघट्टकः, निवार्यमाणस्तु अपघट्टित', अय हि निवारयितुरभावात् अनपघट्टितः= निरङ्कुश ' अणिवारिए ' अनिवारित', हितोपदेशकस्याभावात् अनिवारितः,

---

' तएण से चिलाए दासचेडे' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह चिलात दासचेटक (अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसगी मसप्पसगी, जूयप्पसगी, वेसापसगी, परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था) अनपघट्टित-निरङ्कुश बन गया-जो दुष्कर्म में प्रवर्तमान किसी को भी हाथ पकडकर उससे निवारित कर देता है उसका नाम अपघट्टक और जो दूर किया जाता है वह अपघट्टित कहलाता है । निवारण करनेवाले का अभाव होने से यह चिलात दासचेटक अनपघट्टित इस कारण से बन गया । हितोपदेशक कोई उसका रहा नही अत यह कुत्सित काम करने से पीछे नही हटता-इसलिये यह अनिवारित होकर जो मन में आता उसे कर डालता-अत' उद्दण्ड बन गया । स्वच्छन्द

तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण') त्यारपछी (से चिलाए दासचेडे) ते चिलात दास चेटक (अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छदमई, सइरप्पयारी मज्जप्पसगी, चोज्जप्पसगी मसप्पसगी, जूयप्पसगी, वेसापसगी, परदारप्पसगी, जाए यावि होत्था)

અનપઘટ્ટિત-સ્વચ્છંદ બની ગયેા, દુષ્કર્મમા પડેલા ગમે તેને જે હાથ પકડીને તેમાથી તેને દૂર કરે છે તેનુ નામ અપઘટ્ટક અને જે દૂર કરવામા આવે છે તે અપઘટ્ટિત કહેવાય છે ચિલાત દાસચેટકને ખોટા કામોથી દૂર લઈ જનાર-તેને નિવારણ કરનાર કોઈ હતું નહિ એથી તે અનપટ્ટિત થઈ ગયેા હતેા તેને કોઈ હિતોપદેશક હતેા નહિ તેથી તે કુત્સિત કામ કરવામા પણ પીછેહઠ કરતેા ન હતેા, ખરાબ કામોથી તેને રોકનાર નહિ હોવાને કારણે તે મનમા આવે તેમ કરતેા હતેા એથી તે ઉદ્દડ બની ગયેા હતેા તે

'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः=स्वाभिप्रायचर्यो-उद्दण्डइत्यर्थः, अतएव 'सइरप्पयारी' स्वैरप्रचारी = स्वच्छन्दविहारी 'मज्जप्पसंगी' मद्यप्रसङ्गी मद्यपायी, 'चोज्जप्पसंगी' चौर्यप्रसङ्गी=चौर्यकर्मणि परायण, 'मंसप्पसंगी' मांसप्रसङ्गी=मांसभक्षणशीलः, 'जूयप्पसंगी' द्यूतप्रसङ्गी द्यूतक्रीडाप्रसक्तः, 'वेसाप्पसंगी' वेश्यालम्पटः, एव 'परदारप्पसंगी' परदारप्रसङ्गी=परदाररतो जातश्चापि आसीत्। ततः खलु राजगृहस्य नगरस्य अदूरसामन्ते दक्षिणपौरस्त्ये दिग्भागे अग्निकोणे सिंहगुहानाम चोरपल्ली आसीत्, या हि पल्ली 'विसमगिरिकडगकोडवसन्निविट्ठा' विषमगिरिकटककोडवसन्निविष्टा=विषमो निम्नोन्नतो यो गिरिकटकः=पर्वत मध्यभागः, तस्य यः कोडम्बः प्रान्तभाग, तत्र सन्निविष्टा=स्थिता आसीत्। पुनः 'वसीकलकपागारपरिक्खित्ता' वंशीकलकप्राकारपरिक्षिप्ता=वंशीकलङ्का वंशजालमयी वृतिः, सैव प्राकारः, तेन परिक्षिप्ता=परिवेष्टिता=वंशनिर्मितजालमयप्राकारैः समन्तात्-परिवेष्टिता, 'छिण्णसेलविसमप्पवायफालिहोवगूढा' छिन्नशैलविषमप्रपातपरिखोपगूढा=छिन्नोऽयमात्तरापेक्षया विभक्तो यः शैलः=पर्वतः, तत्सम्बन्धिनो ये विषमाः प्रपाता गर्ताः, त एव परिखा, तया उपगूढा=आश्लिष्टा परिवेष्टिता विभक्तशैलावयवनिर्गतविषमप्रपातरूपपरिखापरिवेष्टितेत्यर्थः 'एगदुवारा' एकद्वारा=एक द्वार=प्रवेशनिर्गमरूप यस्या सा=एकप्रवेशनिर्गमा, 'अणेगखंडी' अनेकखण्डा=अनेकानि खण्डानि=विभागा रक्षाहेतोर्यस्यां सा अनेकखण्डा, यत्र=स्वरक्षार्थं अनेकानि स्थानानि सन्ति, 'विदियजणणिग्गमपवेसा'

विहारी हो गया-मद्यप्रसगी हो गया-मदिरा पीने लग गया। मास खाने लग गया, चोरी करने लगा, जूआ खेलने लगा, वेश्यासेवन करने लगा, और परदार सेवन करने मे भी लपट हो गया। (तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम चोरपल्ली होत्था-विसमगिरिकडगकोडवसन्निविट्ठा वसीकलकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफालिहोवगूढा एगदुवारा, अणेगखंडी, विदियजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजल

સ્વેચ્છ વિહારી થઈ ગયેા હતેા, દારૂ પિનારેા થઈ ગયેા હતેા તે માસ ખાવાલાગ્યેા, ચેારી કરવા લાગ્યેા, જુગાર રમવા લાગ્યેા, વેશ્યા-સેવન કરવા લાગ્યેા અને પરસ્ત્રી સેવનમા પણ લપટ થઈ ગયેા હતેા

(तएण रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम चोरपल्ली होत्था / रिकडगकोडवसन्निविट्ठा वसीकलकपागारपरिक्खित्ता, छिण्णा सेल एगदुवारा, अणेगखंडी, विदियजणणिग्गमपवेसा

विदितजननिर्गप्रवेशा=विदितजनानामेव=विश्वासवतामेव निर्गमप्रवेशौ यस्या सा=विश्वस्तजननिर्गमप्रवेशवती 'अब्भितरपाणिया' अभ्यन्तरपानीया=मध्यस्थित-

---

पेरता, सुबहुस्स विकूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहसा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेऊसमुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे, सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही-सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोर सयाण आहेवच्च जाव विहरइ) उसी राजगृह नगर के न अधिक दूर पर और न अधिक पास में दक्षिण पौरस्त्य दिग्विभाग में-अग्निकोण में-सिंहगुहा नाम की एक चोर पल्ली थी-यह चोरपल्ली विषम गिरि-कटक के प्रान्त भाग में-निम्नोन्नतपर्वत के मध्यभाग के अन्त भाग में स्थित थी। इसके चारों ओर वासों की बाड़ थी-यह बाड ही इसका प्राकार (किला) था-उससे यह घिरी हुई थी। अवयवान्तरों की अपेक्षा से विभक्त जो पर्वत तत्सबन्धी जो विषम प्रपात खड्डा उन विषम खड्डेरूप परिखा से यह परिवेष्टित थी। निकलने का और आने का इस में एक ही द्वार था। इसमें रक्षा के निमित्त चोरोने अनेक स्थान बना रखे थे। परिचित-विश्वासवाले-व्यक्ति ही इसमें आ जा सकते थे।

अब्भितरपाणिया, सुदुल्लभजलपेरंता, सुबहुस्स वि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहसा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेउ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे, सूरे दढप्पहारी, साहसिए सद्दवेही सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण अहिवच्च जाव विहरइ)

તે રાજગૃહ નગરથી ઘણે દૂર પણ નહિ અને ઘણી નજીક પણ નહિ એવી, દક્ષિણ પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમા અગ્નિકોણમા-સિંહગુહા નામે એક ચોરપલ્લી હતી તે ચોરપલ્લી ઊચી નીચી ગિરિમાળાઓના પ્રાત ભાગમા નિમ્નોન્નત પર્વતના મધ્યભાગના અતભાગમા આવેલી હતી તેની ચોમેર વાસોની વાડ હતી તે વાડ જ તેનો કોટ (કિલ્લો) હતો તેનાથી તે ઘેરા એલી હતી અવયવાતરોની અપેક્ષાએ વિભક્ત જે પર્વત અને તત્સબધી જે વિષમ પ્રપાત-આડો-તે વિષમ આડારૂપી પરિખાથી તે પરિવેષ્ટિત હતી આવવા અને જવા માટે તેમા એક જ દરવાજો હતો ચોરોએ પોતાની રક્ષા માટે ઘણા સ્થાનો બનાવેલા હતા પરિચિત વિશ્વાસુ માણસો જ તેમા આવજા કરી શકતા હતા પાણી માટે તેની વચ્ચે એક જળાશય હતું, તેની બહાર

जलाशया ' खुड्डलगजलपेरंता' क्षुद्रकेभनम्पर्यन्ता=क्षुद्रकेभ जलं पर्यन्ते=पान्त भागे=बहिर्भागे यस्या सा=जलरहितबहिर्भागा ' सुबहुस्स वि ' सुबहोरपि कूविपबलस्स ' कूपिकबलस्य=चोरगवेषकसैन्यस्य ' आगयस्स ' आगतस्य ' दुप्प हंसा ' दुष्पधर्षा दुर्धर्षणीया चापि आसीत् । तत्र खलु सिंहगुहाया चोरपल्ल्यां विजयो नाम चोरसेनापति=चोरनायकः परिवसति यो हि ' अहम्मिए जाव ' अधार्मिको यावत्=अधर्मेण चरति अधार्मिकः अधर्माचरणशीलः-अत्र यावत्पदेन-इतआरभ्य ' घायाए वहाए अच्छायणाए ' इत्यन्तः पाठो ग्राह्यः, तथाहि-' अधम्मिट्ठे ' अधर्मिष्ठ'=सर्वथा धर्मरहितः, ' अधम्मक्खाई ' अधर्माख्यायी-अधर्मक थक, ' अधम्माणुगे ' अधर्मानुग =अधर्मानुगामी ' अधम्मपलोई ' अधर्मप्रलोकी= अधर्मदर्शी ' अधम्मपलज्जणे ' अधर्मप्ररञ्जन=अधर्मानुरक्तः, ' अधम्मसीलसमुदायारे ' अधर्मशीलसमुदाचार =अधर्म एव शील स्वभाव समुदाचारश्चेष्टा यस्य सः,

पानी के लिये इसमें बीच में एक जलाशय था-इसके बाहिरी भाग में जल नहीं था। अनेक भी चोर गवेषक सेनाजन यहां आजावें तो भी वे इस पल्ली का नाश नहीं कर सकते थे। इस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में विजय नाम का एक चोर सेनापति रहता था। यह अधार्मिक यावत् अधर्म केतुग्रह जैसा उदित हुआ था। यहां यावत् शब्द से "घायाए वहाए अच्छायणाए" यहां तक का पाठ ग्रहण किया गया है-इस का खुलासा भाव इस प्रकार है-अधार्मिक शब्द का अर्थ होता है अधर्माचरणशील-यह विजय नामका चोर अधर्माचरणशील था। अधर्मिष्ठ था-सर्वथा धर्मसे रहित था, अधर्माख्यायी था-अधर्मका कथन करनेवाला था, अधर्मानुग था-अधर्म का अनुगामी था, अधर्मप्रलोकी था-अधर्म का ही देखने वाला था-अधर्मप्ररञ्जन था अधर्म में अनुरक्त था

પાણી હતું નહિ ઘણા ચોરોની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યા આવે છતાએ તે પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમા વિજય નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની જેમ ઉદય પામ્યો હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી " घायाए वहाए अच्छायणाए " અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી હતે, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુરાગી હતો, અધર્મનો અનુગામી એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર હતો, અધર્મપ્રરજન હતો, અધર્મમા આસક્ત હતો, અધર્મશીલ

अधर्मशीलोऽधर्माचरणश्चेत्यर्थः, 'अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पे माणे विहरइ' अधर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन् विहरति=अधर्मेणैव सावद्यानुष्ठानेनैव, वृत्तिं कल्पयन्=जीविकामुपार्जयन् 'विहरइ' विहरति=आस्ते। पुनः 'हण छिंद भिंद वियत्तए' जहि छिन्धि भिन्धि विकर्तकः='हण' जहि=मारय यष्ट्यादिना 'छिंद' छिन्धि=छेदय-खड्गादिना, 'भिंद' भिन्धि=भेदय भल्लादिना, इतिशब्दैः स्वानुयायिन प्रेरयन् प्राणिनो विकृन्तति यः सः, जहि छिन्धिभिन्धि विकर्तक., इति, 'लोहियपाणी' लोहितपाणिः=लोहितौ पाणी यस्य सः, रक्तरञ्जितकरयुगलः 'चंडे' चण्ड उत्कटरोषः 'रुद्दे' रौद्रः=भयानकः 'छुल्ले' क्षुद्र =क्षुद्रकर्मचारी 'उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसपयोगबहुले' उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिकपटकूटसाइसप्रयोग-

---

अधर्मशील समुदाचारवाला था-अर्थात् इसका स्वभाव और आचरण दोनों अधर्ममय थे-अधर्म ही इस का स्वभाव था और अधर्म ही इस का आचरण था। अतः अपनी जीविका का निर्वाह सावद्य अनुष्ठानों (अधर्म) द्वारा ही किया करता था। यष्टयादि द्वारा इसे मारो, खड्गादि द्वारा इसे छेदो भल्लादि द्वारा इसे भेदो इस प्रकार के शब्दो से यह अपने अनुयायियों को सदा प्रेरित करता हुआ स्वय जीवों का छेदन भेद न किया करता था। इसके दोनों हाथ रक्त से रजित रहते थे। इस का क्रोध बहुत प्रचड था देखने में यह बडा भयानक दिखता था। क्षुद्र कर्मकारी था। "उक्कचणवंचणमायानियडिककूवडडसाइसपओग बहुले" उत्कचन, वचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साइ, इनका व्यव-

---

હતો-એટલે કે તેનો સ્વભાવ અને આચરણ બને અધર્મમય હતા અધર્મ જ તેનો સ્વભાવ હતો અને અધર્મ જ તેનુ આચરણ હતુ એથી તે પોતાનુ જીવન સાવદ્ય અનુષ્ઠાનો વડે એટલે કે અધર્મનુ આચરણ કરીને પુરૂ કરતો હતો લાકડી વગેરેથી એને મારો, તરવાર વગેરેથી એને કાપી નાખો, ભાલાઓ વગેરેથી એને ભેદી નાખો આ જાતના શબ્દોથી તે પોતાના અનુયાયીઓને હમેશા હુકમ કરતો રહેતો હતો તે પોતે પણ જીવોનુ છેદન-ભેદન કરતો રહેતો હતો તેના બને હાથો લોહીથી ખરડાએલા રહેતા હતા તેનો ક્રોધ અત્યત પ્રચડ હતો દેખાવમા તે ખૂબ જ ભયાનક લાગતો હતો, તે ક્ષુદ્ર કર્મ કરનાર હતો

(उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसपओगबहुले) उत्कंचन, वंचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साई આ બધાનો વહેવાર તેના જીવનમા

जलाशया 'सुदुल्लभजलपेरंता' सुदुर्लभजलपर्यन्ता=सुदुर्लभं जलं पर्यन्ते=पार्श्वभागे=बहिर्भागे यस्या सा=जलरहितबहिर्भागा 'सुबहुस्स वि' सुबहोरपि कूविययलस्स 'कूपिकबलस्य=चोरगवेषकसैन्यस्य 'आगयस्स' आगतस्य 'दुप्पहंसा' दुष्प्रधर्षा दुर्धर्षणीया चापि आसीत्। तत्र खलु सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां विजयो नाम चोरसेनापति=चोरनायकः परिवसति यो हि 'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्=अधर्मेण चरति अधार्मिकः अधर्माचरणशीलः-अत्र यावत्पदेनेतभारभ्य 'घायाए वहाए अच्छायणाए' इत्यन्तः पाठो ग्राह्यः, तथाहि-'अधम्मिट्ठे' अधर्मिष्ठः=सर्वथा धर्मरहितः, 'अधम्मक्खाई' अधर्माख्यायी-अधर्मकथकः, 'अधम्माणुगे' अधर्मानुग=अधर्मानुगामी 'अधम्मपलोई' अधर्मप्रलोकी=अधर्मदर्शी 'अधम्मपलज्जणे' अधर्मप्ररञ्जन=अधर्मानुरक्तः, 'अधम्मसीलसमुदायारे' अधर्मशीलसमुदाचार=अधर्म एव शील स्वभाव समुदाचारश्च यस्य सः,

पानी के लिये इसमें बीच में एक जलाशय था-इसके बाहिरी भाग में जल नहीं था। अनेक भी चोर गवेषक सेनाजन यहां आजावें तो भी वे इस पल्ली का नाश नहीं कर सकते थे। इस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में विजय नाम का एक चोर सेनापति रहता था। यह अधार्मिक यावत् अधर्म केतुग्रह जैसा उदित हुआ था। यहां यावत् शब्द से "घायाए वहाए अच्छायणाए" यहां तक का पाठ ग्रहण किया गया है-इस का खुलासा भाव इस प्रकार है-अधार्मिक शब्द का अर्थ होता है अधर्माचरणशील-यह विजय नामका चोर अधर्माचरणशील था। अधर्मिष्ठ था-सर्वथा धर्मसे रहित था, अधर्माख्यायी था-अधर्मका कथन करनेवाला था, अधर्मानुग था-अधर्म का अनुगामी था, अधर्मप्रलोकी था-अधर्म का ही देखने वाला था-अधर्मप्ररञ्जन था अधर्म में अनुरक्त था

પાણી હતું નહિ ઘણા ચોરોની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યા આવે છતાએ તે પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમા વિજય નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની જેમ ઉગ્ય પામેલ હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી "ઘાયાએ વહાએ અચ્છાયણાએ" અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર અધર્માચિરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુરાગી હતો, અધર્મનો અનુગામી એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર હતો, અધર્મપ્રરજન હતો, અધર્મમા આસક્ત હતો, અધર્મશીલ સમુદાચારી

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिप्रकलजीवानां सर्वथा नाशाय च, ' जधम्मकेऊ समुट्ठिए ' अधर्मकेतु' समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतु=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुणगर-णिग्गयजसे ' बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः ' दढप्पहारी ' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः ' साहसिए ' साहसिक=अविमृश्यकारी ' सद्दवेही ' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। ' से ' सः = विजयश्चौर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् ' आहेवच्च जाव ' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना चोराणा च ' पारदारियाणय ' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च ' गठिभेय गाणय ' ग्रन्थिभेदकानां ' सधिच्छेयगाणय ' सन्धिच्छेदकाना=भित्तिसधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, ' खत्तखणगाण य ' क्षात्र-खनकाना=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, ' रायावगारीणय ' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये,वधके लिये,तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शुरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने मे बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली मे पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

ઘણા દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી, સરીસૃપ (સાપ) વગેરે પ્રાણીઓના ઘાત માટે, વધ માટે તેમજ તેમના સર્વનાશ માટે તે અધર્મ કેતુગ્રહની જેમજ ઉદય પામ્યો હતો ઘણા નગરોમા તે કુખ્યાત થઈ ચુકયો હતો તે ભારે શૂરવીર હતો, તેનો પ્રહાર ખૂબ જ ભારે થતો હતો વગર વિચાર્યા કામ કરવામા જ તેનો સ્વભાવ હતો શબ્દ શ્રવણ કરીને તે પોતાના લક્ષ્યને વીંધી નાખવામા ખૂબ જ નિપુણ હતો તે વિજય ચોર સિંહ ગુફા નામની તે ચોર પલ્લીમા પાચસો ચોરોનો સ્વામી-યાવત્ સ્વામિત્વ ભોગવતો રહેતો હતો

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऋण

बहुलः, तत्र-उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनमदृष्टस्य समीपागतविनक्षणमयात् तत्रापे वञ्चनाकरणम् वञ्चन=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृतिः=मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनकादीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभावः, एषां समवेतो व्यवहारः स एव बहुलः प्रचुरो यस्य सः, 'निस्सीले' निःशील'=शीलरहित', 'निव्वए' निर्व्रतः=अणुव्रतरहित, 'निग्गुणे' निर्गुण=गुणव्रतरहितः, 'निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे' निष्प्रत्याख्यान पौषधोपवासः = प्रत्याख्यानपोषधोपवासरहितः 'बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए' बहूना द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणा घातनाय, वधाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वचन करने में प्रवृत्त हुआ वचक जन जब पास में आवे हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस का नाम उत्कचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वचन है। दूसरों का वचन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस का नाम निकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है। तराजू एव तोलने आदि के बाटों को कमती बढती रखना इसका नाम कूट है। "साइ" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्व्रत था-व्रत रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से वर्जित था "बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

---

પુષ્કળ પ્રમાણમા હતો ભોળા માણસોના વચનમા પ્રવૃત્ત થયેલો વચક જ્યારે પાસે આવેલા માણસને બીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે પ્રતારણ નામ વચન છે બીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનુ નામ માયા છે પોતાની માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજી માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે તેનુ નામ નિકૃતિ છે વેશ વગેરે બદલવુ તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ તોળવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનુ નામ કૂટ છે "સાઇ" આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિ શીલ હતો,-શીલ રહિત હતો, નિર્વ્રત વ્રત રહિત હતો નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત હતો પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો "बहूण दुपयचउप्पय मियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए – उच्छायणाए

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिसकलजीवाना सर्वथा नाशाय च, ' अधम्मकेऊ समुट्ठिए ' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतु.=उत्पातरूप धूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुणगर-णिग्गयजसे ' बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः ' दढप्पहारी ' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः ' साहसिए ' साहसिक=अविमृश्यकारी ' सद्दवेही ' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। ' से ' सः = विजयश्चौर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् ' आहेवच्च जाव ' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्कर. चोरसेनापति बहूना चोराणा च ' पारदारियाणय ' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च ' गठिभेय गाणय ' ग्रन्थिभेदकानां ' सधिच्छेयगाणय ' सन्धिच्छेदकाना=भित्तिसधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते सधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, ' खत्तखणगाण य ' क्षात्र-खनकाना=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, ' रायावगारीणय ' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये,वधके लिये,तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शुरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

ઘણા દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી, સરીસૃપ (સાપ) વગેરે પ્રાણીઓના ઘાત માટે, વધ માટે તેમજ તેમના સર્વનાશ માટે તે અધર્મ કેતુગ્રહની જેમજ ઉદય પામ્યો હતો ઘણા નગરોમા તે કુખ્યાત થઈ ચુકયો હતો તે ભારે શૂરવીર હતો, તેનો પ્રહાર ખૂબ જ ભારે થતો હતો વગર વિચાર્યા કામ કરવામા જ તેનો સ્વભાવ હતો શબ્દ શ્રવણ કરીને તે પોતાના લક્ષ્યને વીંધી નાખવામા ખૂબ જ નિપુણ હતો તે વિજય ચોર સિંહ ગુફા નામની તે ચોર પલ્લીમા પાચસો ચોરોનો સ્વામી-યાવત્ સ્વામિત્વ ભોગવતો રહેતો હતો

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहुण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणच, रायावगारीण य ऋण

बहुलः, तत्र-उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपागतविनश्यज्जनभयात् तत्प्रति वञ्चनाकरणम् वञ्चन=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृति.=मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनकादीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभाव., अथवा सह योगो व्यवहारः स एव बहुकः प्रचुरो यस्य सः, 'निस्सीले' निःशीलः=शीलरहितः, 'निव्वए' निर्व्रतः=अणुव्रतरहितः, 'निग्गुणे' निर्गुण=गुणव्रतरहितः, 'निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे' निष्प्रत्याख्यान पौषधोपवास.=प्रत्याख्यानपौषधोपवासरहितः 'बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए' बहूना द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणा घाताय, वधाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वचन करने में प्रवृत्त हुआ वचक जन जब पास में आवे हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस का नाम उत्कचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वंचन है। दूसरों का वचन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस का नाम निकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है। तराजू एव तोलने आदि के बाटों को कमती बढती रखना इसका नाम कूट है। "साइ" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्व्रत था-व्रत रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से वर्जित था "बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

---

પુષ્કળ પ્રમાણમા હતો ભોળા માણસોના વચનમા પ્રવૃત્ત થયેલો વચક જ્યારે પાસે આવેલા માણસને બીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે પ્રતારણ નામ વચન છે બીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનુ નામ માયા છે પોતાની માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજી માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે તેનુ નામ નિકૃતિ છે - વેશ વગેરે બદલવુ તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ તોળવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનુ નામ કૂટ છે "સાઇ" આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિ શીલ હતો,-શીલ રહિત હતો, નિર્વ્રત વ્રત રહિત હતો નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત હતો પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો "बहूण दुपयचउप्पय मियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए - उच्छायणाए"

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिसकलजीवाना सर्वथा नाशाय च, ' जधम्मकेऊ समुट्ठिए ' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतु.=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुणगर-णिग्गयजसे ' बहुनगरनिर्गतयशा', बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः ' दढप्पहारी ' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः ' साहसिए ' साहसिक=अविमृश्यकारी ' सद्दवेही ' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। ' से ' सः = विजयश्चोर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् ' आहेवच्च जाव ' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्कर. चोरसेनापति बहूना चोराणा च ' पारदारियाणय ' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च ' गठिभेय गाणय ' ग्रन्थिभेदकानां ' सधिच्छेयगाणय ' सन्धिच्छेदकाना=भित्तिसधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते सधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, ' खत्तखणगाण य ' क्षात्र-खनकाना=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, ' रायावगारीणय ' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये,वधके लिये,तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शुरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

ઘણા દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી, સરીસૃપ (સાપ) વગેરે પ્રાણીઓના ઘાત માટે, વધ માટે તેમજ તેમના સર્વનાશ માટે તે અધર્મ કેતુગ્રહની જેમજ ઉદય પામ્યો હતો. ઘણા નગરોમા તે કુખ્યાત થઈ ચુકયો હતો. તે ભારે શૂરવીર હતો, તેનો પ્રહાર ખૂબ જ ભારે થતો હતો. વગર વિચાર્યા કામ કરવામા જ તેનો સ્વભાવ હતો. શબ્દ શ્રવણ કરીને તે પોતાના લક્ષ્યને વીંધી નાખવામા ખૂબ જ નિપુણ હતો. તે વિજય ચોર સિંહ ગુફા નામની તે ચોર પલ્લીમા પાચસો ચોરોનો સ્વામી–યાવત્ સ્વામિત્વ ભોગવતો રહેતો હતો.

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य कण

बहुलः, तत्र-उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनमतुरस्य समीपागतविवक्षणमया तस्याने वञ्चनाकरणम् वञ्चन=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृति.=मायाप्रच्छाद नार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनका दीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभाव., एषां समयोगो व्यवहारः स एव बहुलः प्रचुरो यस्य स', 'निस्सीले' निःशील=शीलरहित', 'निव्वए' निर्व्रतः=अणुव्रतरहित, 'निग्गुणे' निर्गुण=गुणव्रतरहितः, 'निप च्चक्खाणपोसहोववासे' निष्प्रत्याख्यान पौषधोपवास = प्रत्याख्यानपौषधोप वासरहितः 'बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छाय णाए' बहूना द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणा घाताय, वधाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वचन करने में प्रवृत्त हुआ वञ्चक जन जब पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस का नाम उत्कञ्चन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वचन है। दूसरों का वञ्चन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस का नाम निकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है। तराजू एव तोलने आदि के बाटों को कमती बढती रखना इसका नाम कूट है। "साइ" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्व्रत था-व्रत रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से वर्जित था "बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए अधम्मकेउ समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

---

પુષ્કળ પ્રમાણમા હતો ભોળા માણુસોના વચનમા પ્રવૃત્ત થયેલો વચક જ્યારે પાસે આવેલા માણુસને બીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે પ્રતારણ નું નામ વચન છે બીજા માણુસને ઠગવાની બુદ્ધિનુ નામ માયા છે પોતાની માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજી માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે તેનુ નામ નિકૃતિ છે વેશ વગેરે બદલવુ તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ તોળવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનુ નામ કૂટ છે "સાઇ" આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અથ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિ શીલ હતો,-શીલ રહિત હતો, નિર્વ્રત વ્રત રહિત હતો નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત હતો પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો "बहूण दुपयचउप्पय मियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिप्रकलजीवाना सर्वथा नाशाय च, ' अधम्मकेऊ समुट्ठिए ' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतु=उत्पातरूप धूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुणगर-णिग्गयजसे ' बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः ' दढप्पहारी ' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः ' साहसिए ' साहसिक=अविमृश्यकारी ' सद्दवेही ' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। ' से ' सः = विजयश्चोर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् ' आहेवच्च जाव ' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना चोराणा च ' पारदारियाणय ' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च ' गठिभेय गाणय ' ग्रन्थिभेदकानां ' सधिच्छेयगाणय ' सन्धिच्छेदकाना=भित्तिसधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, ' खत्तखणगाण य ' क्षात्र-खनकाना=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, ' रायावगारीणय ' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये,वधके लिये,तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शुरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने मे बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली मे पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

ઘણા દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી, સરીસૃપ (સાપ) વગેરે પ્રાણીઓના ઘાત માટે, વધ માટે તેમજ તેમના સર્વનાશ માટે તે અધર્મ કેતુગ્રહની જેમજ ઉદય પામ્યેા હતેા ઘણા નગરેામા તે કુખ્યાત થઈ ચુકયેા હતેા તે ભારે શૂરવીર હતેા, તેનેા પ્રહાર ખૂબ જ ભારે થતેા હતેા વગર વિચાર્યા કામ કરવામા જ તેનેા સ્વભાવ હતેા શબ્દ શ્રવણ કરીને તે પેાતાના લક્ષ્યને વીંધી નાખવામા ખૂબ જ નિપુણ હતેા તે વિજય ચેાર સિંહ ગુફા નામની તે ચેાર પલ્લીમા પાચસેા ચેારેાનેા સ્વામી–યાવત્ સ્વામિત્વ ભેાગવતેા રહેતેા હતેા

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहुण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य कण

राजद्रोहिणां ' अणधारगाणय ' ऋणधारकाणाम् ऋणदातॄणां ' वीसभवायगाण य ' विश्रम्भघातिना धूतकारकाणां ' खडरक्खाण य ' खण्डरक्षाणां=राजविरोधेन भूमिखण्डधारिणाम् ' णय अन्नेसां च बहूनां ' छिन्नभिन्नवहिरायताणाम्-छिन्ना=छिन्नहस्तादिका', भिन्नाः=भिन्नकर्णनासिकादिकाः, बहिरायता=राजापराधेन देशनिष्काशिताः, एतेषां द्वन्द्वः, तेषां च ' कुडुगे ' कुटङ्कः=कुटङ्क इव कुटङ्क - यथान रक्षार्थमाश्रयणीयत्वसाम्यात्

धारगाणय वालधायगाण य वीसभवायगाण य जूयकाराण य खडरक्खाण य अन्नेसिं बहूण छिन्नभिन्नवहिरायताणं कुडगे यावि होत्था)

ते विजय तस्कर चोर सेनापति धणु चोरो, धणु परस्त्री लंपटो, अधिछेदको, सधिच्छेदको-भोंकोरु पाडीने धन्नु अपहरण करनाराओ, क्षात्र धनको-सधिलाग वगरनी लीतमा भोंकोरु पाडीने चोरी करनाराओ, राजना अपकारको-राजद्रोहीओ, ऋण करनाराओ (देवादारो) बालहत्या करनाराओ, बालहत्या करनाराओ, विश्वासघात करनाराओ, जुगार रमनाराओ, राजनी आज्ञा लीधा वगर ज थोडी जमीनने पोताना अधिकारमा लेनाराओ तेमज बीजा पण घणा छिन्न, भिन्न बहिरावेल लोकोना माटे ते कुडंक जेवो हतो जेमना हाथ पग वगेरे कापी नाखवामा आव्या छे एवा प्राणीओ, छिन्न शब्द वडे जेमना नाक वगेरे कापवामा आव्या छे एवा प्राणीओ, भिन्न शब्द वडे अने राज्यापराध बदल जे देशमाथी बहार काढी मूकवामा आव्या छे एवा माणसो अहीं " बहि आहत ' शब्द वडे समोडि ' आव्या

चापि अभूत् । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापतिः राजगृहस्य ' दाहिणं पुरत्थिम ' दक्षिणपौरस्त्य अग्निकोणस्थित जनपद बहुभिः ' गामघाएहिं ' ग्राम घातै =ग्रामविनाशैश्च, नगरघातैश्च, ' गोग्गहणेहिय ' गो ग्रहणै =गवां लुण्ठनैः, वदिग्गहणेहिय ' वन्दिग्रहणै =लुण्ठने ये जना गृहीतास्ते वन्दिनउच्यन्ते, तेषा ग्रहणैः=स्वकाराया स्थापनैः, ' खत्तखणणेहिय ' क्षात्रखननैश्च एवं विधैर्दुकृत्यै

से प्रतिबोधित किये गये हैं। रक्षणार्थ आश्रयणीय होने की समानता से इसे कुटक-वशावन-जैसा कहा गया है। (तएण से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवय बहूहिं गामघाएहिं य नगरघाएहिं य गोग्गहणेहि य वदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहिय, पथकुद्दणेहि य उवीले माणे २ विद्धसणे माणे २ णित्थाण, णिद्धण करेमाणे विहरइ, तएण से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसकीहि य चोज्जाभिसकीहि य दाराभिसकीहि य धणिएहि य जूयकरेहि य पर-ब्भवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवाच्छित्ता विजय चोरसेणावइ उवसपज्जित्ताण विहरइ) चोरों का सेनापति वह विजय तस्कर राज-गृह नगर के अग्निकोण में स्थित जनपदो को, अनेक ग्रामो के विनाश से नगरों के घात से, गायों के लूटने से, लूटते समय पकडे गये मनुष्य को अपने कारागार में बद करने से, क्षत्रखनन से-मकानो में खातदेने

છે રક્ષણ માટે આશ્રયણીય હોવાના સામ્યથી તેને કુટક-વાસનાવન'ની જેમ બતાવવામા આવ્યો છે

(तएण से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिम जणवय बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य वदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहि य पथकुद्दणेहि य उवीलेमणे२ विद्धसणे माणे२ णित्थाण, णिद्धण करेमाणे विहरइ, तएण से चिलाए दास चेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसकीहि य चोज्जाभिसकीहि य धणियेहि य जूयकरेहि य परुभवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजय चोरसेणावइ उवसपज्जित्ताण विहरइ)

ચોરોનો સેનાપતિ તે વિજય તસ્કર રાજગૃહ નગરના અગ્નિકોણના જનપદોને, ઘણા ગામોનો વિનાશ કરીને નગરોનો ઘાત કરીને ગાયોને લૂટીને લૂટતી વખતે પકડી પાડેલા માણસોને પોતાના કારાગારમા પૂરી દઈને, ક્ષત્ર ખનન કરીને, મકાનોમા ખાતર પાડીને અને મુસાફરોને મારીને નિરન્તર

पयकुट्टणेहिय ' पान्थकुट्टनैः=पथिकजनमारणैश्च ' उवीलेमाणे २ ' उत्पीडयन् २=सन्ततमुत्पीडन कुर्वन्, ' विद्धंसेमाणे २ ' विध्वंसयन् २-सर्वदा विध्वंस कुर्वन्, ' णित्थाण ' निः स्थान=गृहरहित, ' णिद्धण ' निर्धनम्=धनरहित कुर्वन् विहरति । तत' खलु स चिलातो दासचेटः राजगृहे बहुभिः ' अत्थाभिसंकीहिय' अर्थाभिशङ्किभिः=अयं चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, ग्रहीष्यति वा इत्यभिशङ्कन शीलै ' चोज्जाभिसंकीहिय ' चौर्याभिशङ्किभिः=अयं मम गृहे चौर्यं कृतवान् करिष्यति वेत्यभिशङ्कन शीलैश्च ' दाराभिसंकीहि ' दाराभिशङ्किभिः=' अयं मम दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति चेत्यभिशङ्कनशीलै तथा धनिकैश्च द्यूतकरैश्च पराभूयमाणः २= पुनः पुन पराभव प्राप्यमाणो राजगृहात् नगराद् बहि निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य निजय चोरसेनापतिम् उपसंपद्य=प्राप्य विहरति ॥ सू० ३ ॥

से, एव पथिकजनो के मारने से, निरन्तर पीडित करता विध्वस करता करता और गृह विहिन करता रहता था। इस के पश्चात् वह दासचेटक चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिशक-इस चिलात ने हमलोगों के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-प्रकार की शका करने वाले, चौर्याभिशंकी इसने हमलोगों के घर में घुसकर पहिले चोरी की है-तथा इसी तरह यह आगे भी करेगा-इस प्रकार की आशका करने वाले, दाराभिशकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस तरह की अपनी स्त्रियो के साथ बलात्कार करने की आशकावाले पुरुषों के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियो के द्वारा, जुआ खेलने वाले ज्वारियो के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

પીડિત કરતો, વિધ્વસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્થાભિશકઃ-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનુ હરણ કર્યુ છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ હરણ કરશે, આ જાતની શકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશકી-એણે અમારા ઘરોમા પેસીને પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ જાતની ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ તે ચોક્કસ આવુ કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરૂષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારવાર

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहुपि हु कुवियबल हयविमद्दिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्कर बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था । तएणं ताइं पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया२ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता बहुइ लोइयाइं मयकिच्चाइ करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तएण ताइ पच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी–एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अय च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्कर सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति । तएणं से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहाँ आया वहा आकर वह चोर सेनपति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र–३ ॥

રાજગૃહ નગરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યા તે સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી ત્યા આવ્યો, ત્યા આવીને ચોર સેનાપતિની સાથે રહેવા લાગ્યો ॥સૂ૦૩॥

'पयकुट्टणेहिय' पान्थकुट्टनैः=पथिकजनमारणैश्च 'उवीलेमाणे २' उत्पीडयन् २=सन्ततमुत्पीडन कुर्वन्, 'विद्धंसेमाणे २' विध्वंसयन् २-सर्वदा विध्वंस कुर्वन्, 'णित्थाणं' निः स्थान=गृहरहित, 'णिद्धणं' निर्धनम्=धनरहित कुर्वन् विहरति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः राजगृहे बहुभिः 'अत्थाभिसंकीहिय' अर्थाभिशङ्किभिः=अयं चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, ग्रहीष्यति वा इत्यभिशङ्कनशीलैः 'चोज्जाभिसंकीहिय' चौर्याभिशङ्किभिः=अयं मम गृहे चौर्यं कृतवान् करिष्यति वेत्यभिशङ्कनशीलैश्च 'दाराभिसंकीहि' दाराभिशङ्किभिः=' अयं मम दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति वेत्यभिशङ्कनशीलैः तथा धनिकैश्च द्यूतकरैश्च पराभूयमाणः २= पुनः पुनः पराभवं प्राप्यमाणो राजगृहात् नगराद् बहिः निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य निजकं चोरसेनापतिम् उपसंपद्य=प्राप्य विहरति ॥ सू० ३ ॥

से, एवं पथिकजनों के मारने से, निरन्तर पीडित करता विध्वंस करता करता और गृह विहिन करता रहता था। इस के पश्चात् वह दासचेटक चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिशक-इस चिलात ने हमलोगों के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-प्रकार की शका करने वाले, चौर्याभिशकी इसने हमलोगों के घर में घुसकर पहिले चोरी की है-तथा इसी तरह यह आगे भी करेगा-इस प्रकार की आशका करने वाले, दाराभिशकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस तरह की अपनी स्त्रियो के साथ बलात्कार करने की आशकावाले पुरुषों के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियो के द्वारा, जुआ खेलने वाले ज्वारियो के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

પીડિત કરનો, વિધ્વંસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્થાભિશકા-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનુ હરણ કર્યુ છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ હરણ કરશે, આ જાતની શકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશકી-એણે અમારા ઘરોમા પેસીને પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ જાતની ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ તે ચોક્કસ આવુ કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરૂષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારંવાર

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहुपि हु कुवियबल हयविमद्दिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्कर बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था । तएण ताइं पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया२ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता बहुइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तएण ताइ पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी–एव खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, त सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति । तएण से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहाँ आया वहा आकर वह चार सेनपति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

રાજગૃહ નગરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યા તે સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી ત્યા આવ્યો, ત્યા આવીને ચોર સેનાપતિની સાથે રહેવા લાગ્યો ॥સૂ૦૩॥

'पथकुट्टणेहिय' पान्थकुट्टनैः=पथिकजनमारणैश्च 'उप्पीलेमाणे २' उत्पीडयन् २=सन्ततमुत्पीडन कुर्वन्, 'विद्धंसेमाणे २' विध्वंसयन् २-सर्वदा विध्वंस कुर्वन्, 'णित्थाण' निः स्थान=गृहरहित, 'णिद्धणं' निर्धनम्=धनरहित कुर्वन् विहरति। ततः खलु स चिलातो दासचेट. राजगृहे बहुभिः 'अयमिम कीहिय' अर्थाभिशङ्किभिः=अय चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, ग्रहीष्यति वा इत्यभिशङ्कन शीलै 'चोज्जमिस कीहिय' चौर्याभिशङ्किभिः=अय मम गृहे चौर्यं कृतवान् करिष्यति वेत्यभिशङ्कन शीलैश्च 'दारामिस कीहि' दाराभिशङ्किभिः=' अय मम दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति वेत्यभिशङ्कनशीलै तथा धनिकैश्च द्यूतकरैश्च पराभूयमाणः २= पुनः पुन पराभव प्राप्यमाणो राजगृहात् नगराद् बहि निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य निजय चोरसेनापतिम् उपसपद्य=प्राप्य विहरति ॥ सू० ३ ॥

से, एव पथिकजनो के मारने से, निरन्तर पीडित करता विध्वस करता करता और गृह विहिन करता रहता था। इस के पश्चात् वह दासचेटक चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिशक-इस चिलात ने हमलोगों के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-प्रकार की शका करने वाले, चौर्याभिशकी इसने हमलोगों के घर में घुसकर पहिले चोरी की है-तथा उसी तरह यह आगे भी करेगा-इस प्रकार की आशका करने वाले, दाराभिशकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस तरह की अपनी स्त्रियो के साथ बलात्कार करने की आशकावाले पुरुषों के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियो के द्वारा, जुआ खेलने वाले जुवारियो के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

પીડિત કરનો, વિધ્વંસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્થાભિશકા-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનુ હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ હરણ કરશે, આ જાતની શકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશકી-એણે અમારા ઘરોમા પેસીને પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ જાતની ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ તે ચોક્કસ આવુ કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરૂષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વાર વાર

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहुपि हु कुवियबल हयविमद्दिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्कर बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था । तएण ताइं पचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया२ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता बहुइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तएणं ताइ पंच चोरसयाइ अन्नमन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी–एव खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्कर सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति । तएण से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहां आया वहां आकर वह चार सेनपति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र–३ ॥

રાજગૃહ નગરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યા તે સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી ત્યા આવ્યો, ત્યા આવીને ચોર સેનાપતિની સાથે રહેવા લાગ્યો ॥સૂ૦૩॥

चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई चोराणय जाव कुटुंबे यावि होत्था। से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवयं जाव नित्थाणं निज्झण करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४॥

टीका—' तएण ' इत्यादि। ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य चोरसेनापतेरभूत्=प्रधान ' असियट्ठिग्गाहे ' असियष्टिग्राहः=असि'=करवाल, यष्टि=प्रशस्तदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियष्टिग्राहः=असियष्ट्यादिसंचालनचतुरो जातश्चापि अभूत्। ' जाहे वि य ण ' यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर का (अग्गे यावि होo) सब से प्रधान असि, यष्टि, ग्रह–तलवार और लाठी के चलाने मे चतुर–बन गया। (जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावईगामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउ वच्चइ, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हू कूवियबल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लिं हव्वमाग च्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

---

(तएण स चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ–(तएण) त्यारपछी (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करनो (अग्गे यावि होo) सौथी प्रधान आसि, यष्टि (लाकडी) ग्राह, तरवार अने लाठी चलाववामा चतुर बनी गयेा

(जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हू कूवियबल हयविम हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ)

ज्यारे ते चोर सेनापति विजय ग्रामोना घात माटे यावत् पथिकोने लुटवा माटे नीकळतो हतो त्यारे ते दास चेटक चिलात चोरो माटे

ग्रामघात वा यावत् ' पथकोट्टिं ' पान्थकुट्टिम्=पथिकजनलुण्टन वा ' काउ ' कर्तुं ' वच्चइ ' व्रजति=गच्छति ' ताहेवि य ' तदाऽपि च खलु स चिलातो दासचेटः सुबहु अपि ' हु ' इति वाक्यालङ्कारे कूविययल ' कूपिकबल=चोरगवेषकसैन्य ' हयविमहिय जाव ' हतविमथित यावत्-सर्वथा विध्वस्त कृत्वा ' पडिसेहेइ ' प्रतिषेधयति=निवारयति । पुनरपि ' लद्धट्ठे ' लब्धार्थ=लब्धः प्राप्तः, अर्थ = स्वाभिलषित येन स'=प्राप्तस्वाभिलषितः, अत एव ' कयकज्जे ' कृतकार्यः=कृत कार्य येन स, कृतनिजकृत्यः ' अणहसमग्गे ' अनघसमग्रः=अनघम्=अक्षतम्-अन्तराले केनाप्यनपहृत समग्र=समस्त चौर्याद्यपहृतवस्तुजात यस्य सः=अलुण्टित सर्वस्वः सिंहगुहा चोरपल्लिं ' हव्व ' शीघ्रमागच्छति । ततः खलु स विजयश्चोर-सेनापति. चिलात तस्कर बहूनां चोरविद्याश्च चोरमन्त्राश्च चोरमायाश्चोरनिकृतीश्च मायायाः प्रच्छादनार्थं या माया सा ' निकृतिः ' उच्यते ता' ' सिक्खावेइ '

यावत् पथिक जनों को लूटने के लिये चलता था-तब वह दास चेटक चिलात भी चोर गवेषक सैन्य को हत, विमथित यावत सर्वथा विध्वस्त करके पीछे भगा देता था-और स्वाभिलषित अर्थ को प्राप्तकर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर लिया करता था। इस तरह वह चोरी में मिले हुए द्रव्य को सुरक्षित रखता हुआ-बीच में किसी के भी द्वारा द्रव्य की छीना झपटी से रहित होता हुआ उस सिंहगुहा नाम के चोरपल्ली में बहुत जल्दी लौट आता था ' (तएण से विजए चोर सेनावई चिलाय तक्कर बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमते य चोर मायाओ चोर निगडीओ य सिक्खावेइ) उस चोर सेनापति विजय तस्कर ने चिलात चोर के अनेक चोर विद्याओ को, अनेक चोरमत्रो को अनेक विध चोर सम्बन्धी मायाचारी को और माया को छिपाने के

આવેલા સૈન્યને હત, વિમથિત યાવત્ સપૂર્ણ રીતે વિધ્વસ્ત કરીને ભગાડી મૂકતો હતો અને પોતાના ઇચ્છિત અર્થને પ્રાપ્ત કરીને પોતાના કાર્યમા સફળતા મેળવતો હતો આ પ્રમાણે તે ચોરીમા મેળવેલા દ્રવ્યને સુરક્ષિત રાખતો વચ્ચે કોઈ પણ બીજા વડે દ્રવ્યની લૂટ-પાટ ન થાય-તેમ પોતાની જાતને સુરક્ષિત રાખતો તે શીઘ્ર સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લીમા પાછો આવતો રહેતો હતો.

(तएण से विजए चारसेनावई चिलाय तक्कर बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ)

તે ચોર સેનાપતિ વિજય તસ્કરે ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓને, ઘણા ચોરમત્રોને, ઘણી ચોર સબધી માયાચારીઓને અને માયાને છુપાવવા માટે બીજી માયાચારીઓ શીખવાડી

चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई चोराणय जाव कुटंगे यावि होत्था। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवयं जाव नित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥ सू० २॥

टीका—' तएण ' इत्यादि। ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य चोरसेनापतेरग्रयः=प्रधान ' असियट्ठिग्गाहे ' असियष्टिग्राहः=असि=करवालः, यष्टि=लगुडदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियष्टिग्राहः=असियष्ट्यादिप्रचालनचतुरो जातश्चापि अभूत्। ' जाहे वि य णं ' यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर का (अग्गे यावि हो०) सब से प्रधान असि, यष्टि, अर्थात्-तलवार और लाठी के चलाने मे चतुर-बन गया। (जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावईगामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कूवियबल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लिं हव्वमाग च्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

---

(तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારપછી (से चिलाए दासचेडे) તે દાસ ચેટક ચિલાત (विजयस्स चोरसेणावइस्स) ચોર સેનાપતિ તે વિજય તસ્કરનો (अग्गे यावि हो०) સૌથી પ્રધાન આસિ, યષ્ટિ (લાકડી) આહ, તરવાર અને લાઠી ચલાવવામા ચતુર બની ગયેા.

(जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कूवियबल हयविम हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ)

જ્યારે તે ચોર સેનાપતિ વિજય ગ્રામોના ઘાત માટે યાવત્ પથિકોને લુટવા માટે નીકળતો હતો ત્યારે તે દાસ ચેટક ચિલાત ચોરો

खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! विजयश्चोरसेनापतिः कालधर्मेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहूईओ चोरविज्जाओ जाव ' बहव्यः चोरविद्या यावत्—चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षासु ' सिक्खिए ' शिक्षितः=पारङ्गमितः, ' त ' तस्मात् कारणात् ' सेय ' श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! चिलात तस्कर सिंहगुहायाश्चोरपल्ल्याश्चोरसेनापतितयाऽभिषिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलात तस्करोऽस्माभिः चोरसेनापतिपदे नियोज्य, ' त्ति कट्टु ' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमट्ठ ' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-(एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा सजुत्ते, अय च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! चिलाय तस्कर सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं। उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याएँ आदि सब कुछ सिखलादी दिया है। अत हमलोगों को अब यही उचित है कि हमलोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पल्ली का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करले अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें इस प्रकार विचार करके उन्होने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा सजुत्ते, अय च णं चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्कर सीह गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ, અમારા નાયક ચોર સેનાપતિ વિજય તો હવે મરણ પામ્યા છે તેમણે આ ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓ વગેરે બધુ શીખવ્યુ જ છે એટલા માટે હવે અમને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે અમે લોકો ચિલાત ચોરને આ સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો ચોર સેનાપતિ બનાવી લઇએ એટલે કે ચોર સેનાપતિના સ્થાને આ ચિલાત ચોરની નીમ ણુક કરી લઇએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના વિચાર રૂપ

शिक्षयति । ततः खलु स विजयो चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् 'कालधर्मेण=मृत्युना संयुक्तश्चापि अभवत् मृतइत्यर्थः । ततः खलु तानि पञ्चचोर शतानि=पञ्चशतसंख्यकाश्चोराः, विजयस्य चोरसेनापतेः महता २ ऋद्धिसत्कार समुदएण' ऋद्धिसत्कारसमुदयेन 'णीहरण' निर्हरण=श्मशानभूमिनयन 'करेंति' कुर्वन्ति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि कुर्वन्ति, कृत्वा यावत् विगत शोका जाताश्चापि अभवन् । ततः खलु तानि पञ्चचोरशतानि अन्योऽन्यं शब्द यति शब्दयित्वा एवमवादिषु'-सर्वे मिलित्वा परस्परमेव विचारितवन्तइत्यर्थ एव

लिये दूसरी ओर माया चारी को मिलवा दिया। (तएण से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तएण ताइ पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कार समुदएण णीहरणं करेंति करित्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएणं ताइं पंच चोर सयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी) इस से बाद वह चोर सेनापति विजय किसी एक दिन कालधर्मगत हो गया। तब उन पांच सौ चोरो ने चोर सेनापति विजय तस्कर को बड़े ठाट बाट के साथ अर्थी-श्मशान यात्रा निकाली बादमें उन्हों ने मृत्यसंबन्धी जितने भी लौकिक कृत्य होते हैं वे सब किये। लौकिक कृत्य करके सबके सब धीरे २ शोक रहित जब बन चुके-तब उन पांच सौ चोरो ने परस्पर में एक दूसरे को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-विचार

(तएण से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तएण ताइं पंच चोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कारसमुदएण णीहरणं करेंति करित्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएणं ताइं पंच चोर सयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी)

ત્યારપછી તે ચોર સેનાપતિ વિજય કોઈ એક દિવસે મૃત્યુ પામ્યો ત્યારે તે પાંચસો ચોરોએ ચોર સેનાપતિ વિજય તસ્કરની ભારે ઠાઠથી શ્મશાનયાત્રા કાઢી ત્યારપછી તેમણે તેના મૃત્યુ સંબંધી લૌકિક કૃત્યો કર્યા લૌકિક કૃત્યો પૂરા કર્યા બાદ ધીમે ધીમે જ્યારે બધા શોક રહિત થયા ત્યારે તે પાંચસો ચોરોએ પરસ્પર એકબીજાને બોલાવ્યા અને એક સ્થાને એકત્ર થઈને તેમણે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે—

खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! विजयश्चोरसेनापतिः कालधर्मेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहूईओ चोरविज्जाओ जाव ' बहव्यः चोरविद्या यावत्-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षासु ' सिक्खिवए ' शिक्षितः=पारङ्गमितः, ' त ' तस्मात् कारणात् ' सेय ' श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रिया ! चिलातं तस्करं सिंहगुहायाश्चोरपल्ल्याश्चोरसेनापतितयाऽभिषेचयितुम्, अर्थात् अयं चिलातः तस्करोऽस्माभिः चोरसेनापतिपदे नियोज्यः, ' त्ति कट्टु ' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-(एवं खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूई ओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया! चिलायतस्कर सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं। उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याएं आदि सब कुछ सिखलादी दिया है। अतः हमलोगों को अब यही उचित है कि हमलोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पल्ली का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करलें अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एवं खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ, અમારા નાયક ચોર સેનાપતિ વિજય તો હવે મરણ પામ્યા છે તેમણે આ ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓ વગેરે બધું શીખવ્યું જ છે એટલા માટે હવે અમને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે અમે લોકો ચિલાત ચોરને આ સિંહગુફા નામની ચોરપલ્લીનો ચોર સેનાપતિ બનાવી લઈએ એટલે કે ચોર સેનાપતિના સ્થાને આ ચિલાત ચોરની નીમણૂક કરી લઈએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના વિચાર રૂપ

'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य, चिलात तस्कर चोरसेना पतित्वया अर्थात् चोरसेनापतिपदे अभिषिञ्चति। तत' खलु स चिलातः चोरसेना पतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह-'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्-विजयचोर सेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भवन् विहरति। ततः खलु स चिलातः चोर सेनापति 'चोराण य जाव' चोराणा च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च 'कुडगे' कुडङ्गः आश्रयस्थान चाऽपि आसीत्। स खलु तत्र सिंहगुहायां चोर पल्ल्या पञ्चाना चोरशताना च एव यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्च शताना चोराणामुपरि आधिपत्य कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्थ

स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली का उन्हों ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया। (तएण से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ) इस तरह वह चिलात चोर सेनापति बन गया। चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया। अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडग की तरह वासों के वन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पल्ली में पाचसौ चौरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

અર્થને સ્વીકારી લીધો અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરનો તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો તેમજ ચોર સેનાપતિના રૂપમા અભિષેક કરી દીધો

(तएण से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिण पुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઇ ગયો ચોર સેનાપતિ બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જેવો થઇ ગયો તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોનો યાવત્ પારદારિક વગેરેનો કુડગની જેમ-વાસોના વનની જેમ-આશ્રયસ્થાન બની ગયો

जनपद ' नित्थाण निद्धण ' निस्थान निर्धन गृहरहित धनरहित च कुर्वन् विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्–तएणं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइ विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पच चोरसए आमतेइ। तओ पच्छा ण्हाए कयवलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहि पचहि चोरसएहि सद्धिं विउल असणं पाणं खाइमं साइम सुर च जाव पसण्ण च आसाएमाणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पच चोरसए विउलेण धूवपुप्फगंधमल्लालकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्ढे०, तस्स णं धूया, भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसुमा णाम दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा, त गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह विलुंपामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले सम सुसुमा दारिया। तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेति। तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहि पचहि चोरसएहि सद्धि अल्लचम्म दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयसि पंचहि चोरसएहि सद्धि सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहि फलएहि णिकट्ठाहि असिलट्ठीहि असगएहि तोणेहि

की तरह राजगृह नगर के बाहिर के अग्निकोणस्थ जनपदो को गृह रहित और धन रहित करने लग गया।' सूत्र ४ ॥

નામની ચોરપલ્લીમા પાચસો ચોરોનો અધિપતિ થઇને વિજય તસ્કરની જેમ રાજગૃહ નગરની બહારના અગ્નિકોણ તરફના જનપદોને ગૃહરહિત અને ધન રહિત એટલે કે બરબાદ કરવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર ૪ ॥

'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य, चिलात तस्कर चोरसेना पतित्वया अर्थात् चोरसेनापतिपदे अभिषिञ्चन्ति। ततः खलु स चिलात' चोरसेना पतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह-'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्-विजयचोर सेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भवन् विहरति। ततः खलु स चिलातः चोर-सेनापति 'चोराण य जाव' चोराणां च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च 'कुडगे' कुडङ्गः आश्रयस्थान चाऽपि आसीत्। स खलु तत्र सिंहगुहायां चोर पल्ल्या पञ्चाना चोरशताना च एव यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्च शताना चोराणामुपरि आधिपत्य कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्य

स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली का उन्हों ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया। (तएणं से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएणं से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ) इस तरह वह चिलात चोर सेनापति बन गया। चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया। अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडग की तरह वासों के वन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पल्ली में पाचसौ चौरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

અર્થને સ્વીકારી લીધો અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરનો તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો તેમણે ચોર સેનાપતિના રૂપમા અભિષેક કરી દીધો.

(तएणं से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएणं से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिण पुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઇ ગયો. ચોર સેનાપતિ બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુ જેવો થઇ ગયો તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોનો યાવત્ પારદારિક વગેરેનો કુડગની જેમ-વાસોના વનની જેમ-આશ્રયસ્થાન બની ગયો.

भुत्तुत्तरागए ' जिमितभुक्तोत्तरागत =जिमितः=कृतभोजनः भुक्तोत्तरकालमागत यावत् परमशुचिभूत. सुखासनवरगतः सन् तानि पञ्च चोरशतानि विपुलेन=अत्यर्थेन ' धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेण '=धूप पुष्पगन्धमाल्यालंकारेण=धूपः=सुगन्धित द्रव्येण उत्पन्नो धूमः, पुष्प=कुसुमम् , गन्धः=चन्दनादि माल्यम्-माला, अलङ्काराणि=आभरणानि, एतेषा च समाहारद्वन्द्वः, तेन सत्करोति, सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य एवम्-अवदत्-एव खलु हे देवानुप्रिया' ! राजगृहे नगरे धन्यो

ल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी) विपुल मात्रा मे, अशन पान, खादिम एव स्वादिमरूप चारो प्रकार का आहार बनवा कर उन पांचसौ चोरो को आमन्त्रित किया। जब वे सब आचुके-तब उस चिलात चोर ने स्नान से निवट कर और वायसादि को अन्नादिका भाग देनेरूपबलिकर्म आदि कर भोजन मडपमे बैठकर उन पाच सौ चोरो के साथ उस विपुलमात्रा में निष्पन्न हुए अशन, पान, खादिम, एव स्वादिमरूप चारो प्रकार के आहार को तथा सुरा, यावत् प्रसन्न मदिरा को खूब मनमाने रूप में पिया खाया जब वे सब के सब अच्छी तरह भोजन कर उत्तर काल में परमशुचिभूत होकर आनद के साथ एक स्थान पर आकर बैठचुके तब उस चिलात चोर सेनापति ने उनका धूप से-सुगधित द्रव्य से निष्पन्न हुए धूप से, पुष्पो से, चंदन आदि से, मालाओ से, और आभरणो से सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उनसे उसने इस प्रकार

પુષ્કળ પ્રમાણુમા અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ ચારે જાતનો આહાર બનાવડાવીને તે પાચસો ચોરોને આમત્રિત કર્યા જ્યારે તેઓ બધા આવી ગયા ત્યારે તે ચિલાત ચોરે સ્નાન કર્યું અને ત્યારપછી તેણે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ વગેરે કર્યું ત્યારબાદ તેણે ભોજન મડપમા બેસીને તે પાચસો ચોરોની સાથે તે પુષ્કળ પ્રમાણુમા બનાવડાવેલા, અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ રૂપ ચારે પ્રકારના આહારને તેમજ સુરા યાવત્ પ્રસન્ન મદિરાને ખૂબ ધરાઇ ધરાઇને ખાધા-પીધા જ્યારે તેઓ બધા સારી રીતે જમીને પરમશુચીભૂત થઇને આનદપૂર્વક એક સ્થાન ઉપર આવીને એકઠા થયા-બેસી ગયા, ત્યારે તે ચિલાત ચોર સેનાપતિએ તેમનો ધૂપથી, પુષ્પોથી, ચદન વગેરેથી, માળાઓથી અને આભરણોથી સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

सजीवेहि धणूहि समुक्खित्तेहि सरेहि समुल्लालियाहि दीहाहि ओसारियाहिं उरुघंटयाहिं छिप्पतूरेहि वज्जमाणेहि महया महया उक्किट्ठसीहणायचोरकलकलरव समुद्दरवभूय करेमाणे सीहयुहाओ चोरपल्लीओ पडिणिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामते एग महं गहण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, दिवस खवेमाणे चिट्ठइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् विपुलम् अशनपानखादिमस्वादिमम् ' उवक्खडेत्ता ' उपस्कार्य=निष्पाद्य पञ्च चोरशतानि आमन्त्रयति । ततः पश्चात् स्नात ' कयबलि कम्मे ' कृतबलि कर्मा=कृत बलिकर्म येन सः, काकादीना कृतेदत्त भोजनोपहारो भोजनमण्डपे तैः पञ्चभि चोरशतैः सार्ध ' विउल ' विपुलम्=अत्यर्थम्, अशन पान खाद्यस्वाद्य सुरां च यावत् प्रसन्ना च ' आसाएमाणे ' आस्वादयन् विहरति । पुनश्च ' जिमिय

' तएण से चिलाए चोरसेणावई ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (चोर सेणावई चिलाए) चोर सेनापति चिलात चोर ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (विउल असण पाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पचचोरसए आमतेइ – तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे, भोयणमडवसि तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउल असण पाण खाइम साइम सुर च जाव पसण्ण च आसाए माणे ४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पच चोरसए विउलेण धूवपुप्फगधमल्लालकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता [illegible] वयासी)

तएण से चिलाए चोरसेणावई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (चोरसेणावई चिलाए) ये २ सेनापति चिलात चोरे (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पच चोरसए आमतेइ–तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे, भोयण मडवसि तेहिं पचहिं चोरसएहि सद्धिं विउल असण पाण खाइम साइम सुर च जाव पसण्ण च आसाए माणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पच चोरसए विउलेण धूवपुप्फगधमल्लालकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता [illegible] वयासी)

यावत् शिलप्रवाल., मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि युष्माकं भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका भविष्यति। तत खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तै पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं 'अल्लचम्म' आर्द्रचर्मं दूरोहति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात् पूर्वं माङ्गल्यार्थमार्द्रचर्मण्यारोहन्तीति तेषा व्यवहार, दूरुह्य, 'पुव्वावरण्हकालसमयसि' पूर्वापराह्णकालसमये '=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धं 'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरण.=सन्नद्धबद्ध वर्मितकवचः=सनद्ध'=सज्जीकृतः, बद्धः=कशावन्धनेन सबद्धः, वर्मितः=अङ्गे परिहितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरण' ' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि, मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एक वह सुसमादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति चिलात चोर की इस बात को मान लिया। इसके बाद यह चोर सेनापति चिलात, उन पाचसौ चोरों के साथ गीले चमडे पर बैठ गया। लुटेरे लूटने के लिये जब प्रस्थान करते है तब वे पहिले गीले चमडे पर शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते है ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पाचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से निकला। (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો! આપણે બધા ત્યા જઇએ અને ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લુટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશુ તેમાથી ધન, કણક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે અને ફક્ત તે સુસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાચસો ચોરોએ પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી ત્યારપછી તે ચોર સેનાપતિ ચિલાત, તે પાચસો ચોરોની સાથે સાથે ભીના ચામડા ઉપર બેસી ગયો લુટારાઓ લુટવા માટે જ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલા શુભ શકુન માટે ભીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ જાતનો તેઓમા રિવાજ છે ભીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહોરમા પાચસો ચોરોની સાથે (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમાથી નીકળ્યો

नाम सार्थवाह आढ्योऽस्ति । तस्य खलु दुहिता भद्रायाः आत्मजा पञ्चानां पुत्राणामनुमार्गजातिका=पञ्चानां पुत्राणां जननान्तरं समुत्पन्ना सुसुमा नाम दारिका चापि अस्ति, कीदृशी सा ? ' अहीण जाव सुरूवा ' अहीन यावत् सुरूपा=अहीन पञ्चेन्द्रियशरीरा यावत् सुरूपवती, ' त ' तत्=तस्माद् गच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं विलुम्पाम'=लुण्ठामः, युष्माकं धनकनक

कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्ढे० तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसमा णाम दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले, मम सुसुमा दारिया ! तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति । तएणं से-चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं) हे देवानुप्रियो ! सुनो-एक बात कहना है-वह इस प्रकार है-राजगृह नगर में धन्य नाम का एक धनिक एव सर्वजन मान्य सार्थवाह रहता है । इस की एक लडकी है । जिसका नाम सुसमा है । यह उसकी पत्नी भद्रा भार्या से पांच पुत्रों के बाद उत्पन्न हुई है । यह अहीन पाचों इन्द्रियों से युक्त शरीरवाली है तथा बहुत अधिक सुकुमार एव सुन्दर है । इसलिये -चलो हे देवानुप्रियो ! हम सब चलें और धन्य सार्थवाह के घर को

(एव खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्ढे० तस्सणं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसमा णाम दारिया यावि होत्था अहीण जाव सुरूवा तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धणस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले, मम सुसमा दारिया ! तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति । तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, તમને મારે એક વાત કહેવી છે તે આ પ્રમાણે છે કે રાજગૃહ નગરમા ધન્ય નામે એક ધનિક અને સર્વજનમાન્ય સાર્થવાહ રહે છે તેને એક પુત્રી છે, તેનુ નામ સુસમા છે ધન્યની પત્ની ભદ્રાભાર્યાના ગર્ભથી તે પુત્રો પાચે ભાઇઓ બાદ જન્મ પામી છે તે અહીન પાચે ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત શરીરવાળી છે તેમજ ખૂબ જ સુકુ

यावत् शिलप्रवालः, मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि युष्माक भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका भविष्यति। तत खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तै पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं 'अल्लचम्म' आर्द्रचर्मं दूरोहति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात् पूर्वं माङ्गल्यार्थमार्द्रचर्मण्यारोहन्तीति तेषा व्यवहार, दूरुह्य, 'पुव्वावरण्हकालसमयसि' पूर्वापराह्णकालसमये '=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धं 'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरण.=सन्नद्धबद्ध वर्मितकवचः=सनद्ध'=सज्जीकृतः, बद्धः=कशावन्धनेन सबद्धः, वर्मितः=अङ्गे परिहितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरणः' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि, मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एक वह सुसमादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति चिलात चोर की इस बात को मान लिया। इसके बाद यह चोर सेनापति चिलात, उन पाचसौ चोरों के साथ गीले चमडे पर बैठ गया। लुटेरे लूटने के लिये जब प्रस्थान करते है तब वे पहिले गीले चमडे पर शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते है ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पाचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से निकला। (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો! આપણે બધા ત્યા જઇએ અને ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લુટી લઇએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશું તેમાથી ધન, કણક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે અને ફક્ત તે સુસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાચસો ચોરોએ પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી ત્યારપછી તે ચોર સેનાપતિ ચિલાત, તે પાચસો ચોરોની સાથે સાથે ભીના ચામડા ઉપર બેસી ગયો લુટારાઓ લુટવા માટે જ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલા શુભ શકુન માટે ભીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ જાતનો તેઓમા રિવાજ છે ભીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહોરમા પાચસો ચોરોની સાથે (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમાથી નીકળ્યો

येन स', गृहीतायुधप्रहरणः, 'माइयगोमुहिएहि' माइकगोमुखिकै = माइकानि= पक्ष्मकानि, गोमुखिकानि=गोमुखाकाराणि=माइकानि च तानि गोमुखिकानि तै'=उदरक्षार्थं भल्लरोमाञ्चैर्गोमुखाकारैः 'फलएहि' फलकै'=यष्टिकेति प्रसिद्ध' 'णिकट्ठाहि असिलट्ठीहि' निष्कृष्टाभि' असियष्टिभि', कोशयष्टिकल्पैः खड्गैः, 'असगएहि तोणेहि' असगतैस्तूणी'=स्कन्धस्थितैस्तूणीरैः, 'सजीवेहि धनूहि' सज्जीवैर्धनुभिः=कोट्यारोपितप्रत्यञ्चैर्धनुभि', 'समुक्खित्तेहि सरेहि' समुत्क्षिप्तै शरै.=तूणीरसकाशान्निष्काशितैर्बाणैः, 'समुल्लालियाहि दीहाहि' समुल्लालिताभि दीर्घाभि'=समुच्छालितैः शस्त्रविशेषै 'ओसारियाहि' अवस्तरिताभिः= नादिताभि 'उरुघटियाहि' उरुघण्टिकाभि =विशालयष्टाभि' 'छिप्पतूरेहि

णिकट्ठाहि असिलट्ठीहि असगएहि तोणेहि सजीवेहि धणूहि, समुक्खित्तेहि सरेहि समुल्लालियाहि दीहाहि, ओसारियाहि उरुघटयाहि छिप्प तूरेहि वज्जमाणेहि महया२ उक्किट्ठी सीहणाये चोरकलकल रव समुद्दरव भूय करेमाणे) चोरपल्ली से वह किस तरह की स्थिति में निकला-यही बात सूत्रकार इन पंक्तियों में कह रहे हैं-वे कहते हैं कि जब वह अपनी चोरपल्ली में से निकला तो उस समय उसने अपने शरीर पर कवच को सज्जित करके कशाप्रधन से अच्छी तरह बाध रखा था "गृही तायुधप्रहरण " आयुध और प्रहरण उसके दोनों हाथों में थे। रीछ के रोम से युक्त गोमुखाकार पट्टिका से, म्यान से बाहिर खेंची हुई तलवारों से, कधो पर लटकते हुए भाथोंतूणीरों-से ज्यापर चढे हुए धनुषों से, तूणीर से निकाले गये बाणों से ऊपर उछालेगये शस्त्र विशेषों से,

---

(सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहि फलएहि णिकट्ठाहि असिलट्ठीहि असगएहि तोणेहि सजीवेहि धणूहि समुक्खित्तेहि सरेहि समुल्ला लियाहि दिहाहि ओसारियाहि उरूघरियाहि छिप्पतूरेहि वज्जमाणेहि महया २ उक्किट्ठसीहणाये चोरकलकलरव समुद्दरव भूय करेमाणे)

ચોરપલ્લીમાથી તેઓ કેવા રીતે બહાર નીકળ્યા એ જ વાત સૂત્રકાર આ પંક્તિઓમા સ્પષ્ટ કરી રહ્યા છે તેઓ કહે છે કે જ્યારે તે પોતાની ચોરપલ્લીમાથી નીકળ્યો ત્યારે તેણે પોતાના શરીર ઉપર કવચ ધારણ કરીને તેને કશાબધનથી સારી રીતે બાધી રાખ્યુ હતુ " गृहितायुधप्रहरण " આયુધ અને પ્રહરણ તેના બને હાથોમા હતા રીંછના રોમથી યુક્ત ગોમુ ખાકાર પટ્ટિકાથી, મ્યાનમાથી બહાર કાઢેલી તલ્વારોથી બખ્તરો ઉપર લટ કતા તૂણીરોથી, જ્યા ઉપર ચઢેલા ધનુષોથી, તૂણીરમાથી કા ઢમાં આવેલા બાણોથી, ઉપર ફેકવામાં આવેલા શસ્ત્ર વિશેષોથી, "

वज्जमाणेहिं ' क्षिप्रतूर्यैः वाद्यमानैः=द्रुत वाद्यमानैः तूर्यैः उपलक्षितः सन् ' महया-महया उक्किट्ठसीहणाये चोरकलकलरव ' महामहोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलरव-अत्यन्तोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलशब्दं समुद्ररवभूत=समुद्रवेलावृद्धिसमये ध्वनि मिवकुर्वन्, यद्वा महता महता उत्कृष्टसिंहनादेन-' लुप्ततृतीयान्त पदम् ' स्वकृतोत्कृष्टसिंहनादेनेत्यर्थः, शेष पूर्ववत् । सिंहगुहातश्चोरपल्लीतः प्रतिनिष्क्रा म्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव राजगृह नगर तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य राजगृहस्य नगरस्य अदूरसामन्ते एक महद् ' गहण ' गहनम्=वनम् अनुपविशति, अनुपविश्य, दिवसम्=शेषदिवसभाग क्षपयन्=व्यतियन् तिष्ठति ॥ सू०५ ॥

शब्दायमान-बडे २ घटों से जल्दी २ बजते हुए बाजोंसे वह उपलक्षित -युक्त था। तथा उसके निकलने पर जो चोरों का कलकल रव हुआ-वह सिंह की गर्जना के जैसा महान उच्चस्वर था-। तथा जिस समय समुद्र बढता है उस समय जैसा उसका शब्द होता है-वैसा ही वह कल २ रव गंभीर था। (पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवाग च्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूर सामते एगं महं गहण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवस खवेमाणे चिट्ठइ) चोरपल्ली से निकलकर वह जहा राजगृह नगर था वहां आया-वहां आकर के वह राजगृह नगर के अदूरसामत-न अति दूर न अति समीप रहे हुए एक महान जगल मे छिप रहे वहा छिपकर उसने अपना वह दिवस वही पर ठहर कर समाप्त कर दिया ॥ सू०५ ॥

જલ્દી જલ્દી વાગતા વાજાઓથી તે યુક્ત હતો તેમજ જ્યારે તે નીકળ્યો ત્યારે ચોરોને જે ઘોઘાટ થયો તે સિંહની ગર્જના જેવો મહા ધ્વનિ હતો તેમજ જ્યારે સમુદ્રમા ભરતી આવે છે અને ત્યારે જેવો તેનો ધ્વનિ હોય છે, તે માણસોનો ધ્વનિ પણ તેવો જ ગભીર હતો (पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामते एग महं गहण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवस खवेमाणे चिट्ठइ) ચોરપલ્લીમાથી નીકળીને જ્યા રાજગૃહ નગર હતું ત્યા તે આવ્યો ત્યા આવીને તે રાજગૃહ નગરથી ઘણો દૂર પણ નહિ અને ઘણા નજીક પણ નહિ એવા એક મોટા વનમા છુપાઈને રહ્યા ત્યા છુપાઇને તેણે પોતાનો તે દિવસ ત્યા જ પસાર કરી દીધો ॥સૂ०५॥

मूलम्–तएणं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसत पडिनिसतंसि पचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहिएहि फलएहि जाव मूढआहि उरुघंटियाहि जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ, आयते चोक्खे सुइभूए तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणे२ एवं वयासी –एव खलु अह देवाणुप्पिया ! चिलाए णाम चोरसेणावई पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जो णं णवियाए माउयाए दुद्ध पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिह विहाडेइ। तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहि पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता, रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः ' अद्ध रत्तकालसमयंसि' अर्धरात्रकालसमये=मध्यरात्रे, कीदृशे 'निसतपडिनिसते'निशान्त-मतिनिशान्ते=निशान्त=जन ध्वनिरहित मतिनिशान्त=मत्येकगृह यस्मिन् तस्मिन् , जने मसुप्ते सतीत्यर्थः, पञ्चभिश्चोरशतै सार्द्धम् ' माइयगोमुहिएहिं ' माइकगोमुखितैः, उदररक्षार्थं भल्लूकरोमावृतैर्गोमुखाकारैः 'फलएहिं' फलकै =पट्टकैः उदरव-द्धकाष्ठफलकैरित्यर्थः, यावत् 'मूइआहिं उरुघटियाहिं' मूकिताभिरुरुघंण्टिकाभिः= निः शब्दी कृताभि विशालघण्टाभिर्युक्तः यत्रैव राजगृहस्य नगरस्य पौरस्त्य द्वार तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, 'उदगवत्थिं' उदकवस्ति=चर्ममयजलपात्रम् , 'ममक' इति प्रसिद्धम् ' परामुसइ ' परामृशति=गृह्णाति, अनन्तरम् ' आयते ' आचान्त = कृतमुखादि प्रक्षालनः ' चोक्खे ' चोक्षः=स्वच्छः अतएव ' तालुग्घाडणिं विज्ज '

' तएण से चिलाए चोरसेणावई ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (चोरसेणावई से चिलाए) चोरसेनापति वह चिलात चोर (निसतपडिनिसते अद्धरत्तकालसमयंसि) जब जन ध्वनिरहित प्रत्येक घर हो गया ऐसे मध्यरात्रिके समयमें (पचहिं चोर सएहिं सद्धिं) उन पांचसौ चोरों के साथ (माइय गोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघटियाहिं जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ) अपने उदर की रक्षा के निमित्त बद्धभल्लूक के रोमों से आवृत हुए गोमुखाकार काष्ठफलको से यावत् निःशब्दीभूत विशाल घटिकाओ से युक्त होकर जहा राजगृह नगर का पूर्वदिशा का द्वार था वहा आया। (उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ, आयते, चोक्खे, सुइभूए, तालुग्घाडणिविज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स

' तएण से चिलाए चोरसेणावइ' इत्यादि--

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારબાદ ,चोरसेणावई से चिलाए) ચોર સેનાપતિ તે ચિલાત ચોર (निसतपडिनिसते अद्धरत्तकालसमयंसि) જ્યારે દરેકે દરેક ઘરમા માણસોનો અવાજ એકદમ બધ થઈ ગયો, એવા તે મધ્યરાત્રિના સમયે (पचहिं चोरसएहि सद्धि) તે પાચસો ચોરોની સાથે

(माइय गोमुहिएहि फलएहि पाव मूइआहि उरुघटियाहि जेणेव राय गिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ)

પોતાના પેટની રક્ષા માટે રીછના રોમોથી આવૃત્ત થયેલા ગોમુખાકાર કાષ્ઠ ફલકોથી યાવત્ ચાત થઈ ગયેલી મોટી ઘટિકાઓથી યુક્ત થઈને જ્યા રાજગૃહ નગરનુ પૂર્વ દિશાનુ દ્વાર હતુ ત્યા આવ્યા (उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ आयते चोक्खे सुइभूए, तालुग्घाडणि विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता

मूलम्–तएणं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसत पडिनिसतंसि पचहिं चोरसएहि सद्धिं साइयगोमुहिएहि फलएहि जाव मूइआहि उग्घाडियाहि जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ, आयंते चोक्खे सुइभूए तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणे२ एव वयासी –एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए णामं चोरसेणावई पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जो ण णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिह विहाडेइ। तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहि पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता, रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह 'घाउकामे' घातयितुकामः=लुण्ठयितुकामः हे देवानुप्रियाः ! यूयं शृणुत, पञ्चशतचौरैः सहाह चिलातश्चोरसेनापतिरत्र धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् ' जो ण ' यः खलु ' णवियाए माउआए ' नव्याया मातृकाया 'दुद्ध पाउकामे' दुग्ध पातुकाम =यः खलु मदीयहस्तान्मृत्यु प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया मातुर्दुग्धाभिलाषीभवेत् ' सेण ' स खलु ' णिग्गच्छउ ' निर्गच्छतु मम सम्मुख मागच्छतु 'त्ति कट्टु' इतिकृत्वा=इत्यमुक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह तत्रैव

पाचसौ चोरों के साथ यहा सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से आया हुआ हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्थवाह के घर को लूटने की है-(त) इसलिये -(जो ण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गिह विहाडेइ। तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोर-सएहिं सद्धिं गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगत अवक्कमइ,। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ, घाइत्ता सुबहुधणकणग जाव सावएज्ज सुसम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमइ,। पडिणिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

ચિલાત નામે ચોર છુ હમણા જ હુ પાંચસો ચોરોની સાથે અહીં સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી આવ્યો છુ ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લૂટવાની મારી ઇચ્છા છે (ત) માટે

(जोण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्ति कट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिह विहाडेइ, तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थेव४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगत अवक्कमइ। तएण से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ, घाइत्ता सुबहु धणकणग जाव सावएज्ज सुसम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडि णिक्खमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

જે નવી માતાનુ દૂધ પીવા ઇચ્છે છે એટલે કે મારા હાથથી મૃત્યુ પામીને ફરી બીજા ભવમા બનારી માતાનુ દૂધ પીવા જે ઇચ્છતો હોય તે

तालोद्घाटिनी विद्याम् ' आवाहेइ ' आवाहयति=स्मरति ' आवाहित्ता ' आवाह्य= स्मृत्वा राजगृहस्य द्वारकपाटानि उदकेन ' आच्छोडेइ ' आच्छोटयति=अभिषिञ्चति, ' आच्छोडित्ता ' आच्छोट्य=अभिषिच्य, कपाट ' विहाडेइ ' विघाटयति= उद्घाटयति, विघाट्य सकलचौरैः सहितः राजगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य महता महता=अतिमहता शब्देन ' उग्घोसमाणे २ ' उद्घोषयन २=मुहुर्मुहुर्घोषणा कुर्वन् एवमवदत्, घोषणामकारमाह-एव खलु अह हे देवानुप्रिया ! चिलातो नाम चोरसेनापतिः पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धम् सिंहगुहातश्चोरपल्लीत इह ' हव्व ' हव्य=

दुवारे कवाडे उदएण अच्छोडेइ कवाड विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिह अणुपविसइ अणुपविसित्ता महया २ सद्देण उग्घोसेमाणे २ एव वयासी -एव खलु अह देवाणुप्पिया चिलाए नाम चोरसेणावई पचहिं चोरस एहिं सद्धिं सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए (धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे) वहां आकर के उसने चर्ममय जलपात्र को-मसक को-अपने हाथ में लिया-और उसके जल से आचमन किया-आचमन करके जब वह शुद्ध परमशुचीभूत हो चुका-तब उसने तालोद्घाटिनी विद्या का आवाहन किया-स्मरण किया-और स्मरण करके राजगृह के द्वार कपाटों को उदक के छींटों से सिञ्चित किया। सिञ्चित करके फिर उसने उन किवाडों को खोला और खोल करके फिर वह समस्त चोरों के साथ राजगृह नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया। प्रविष्ट होकर के उसने वहां बड़े२ आवाजसे वारवार घोषणा करते हुए इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! सुनो-मैं चोरसेनापति चिलात नाम का चोर हूँ-अभी २

रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ कवाड विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिह अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया चिलाए नाम चोरसेणावई पचहि चोरसएहि सद्धि सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए (धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे)

ત્યા આવીને તેણે ચામડાની થેલી-મશક-ને પોતાના હાથમા લીધી અને તેના પાણીથી આચમન કર્યુ આચમન કરીને જ્યારે તે શુદ્ધ પરમ શુચીભૂત થઈ ચૂકયેા ત્યારે તેણે તાલેાદ્ઘાટિની વિદ્યાનુ આવાહન કર્યું-સ્મરણ કર્યું, અને સ્મરણ કરીને રાજગૃહના દરવાજાના કમાડેાને પાણીથી સિંચિત કરીને તેણે તે કમાડેાને ઉઘાડયા ઉઘાડીને તે બધા ચેારેાની સાથે રાજગૃહ નગરની અદર પ્રવિષ્ટ થઈ ગયેા પ્રવિષ્ટ થઈને તેણે ત્યા મેાટા સાદે વારવાર ઘેાષણા કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયેા ! સાભળેા ચેાર સેનાપતિ

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह 'घाउकामे' घातयितुकामः=लुण्ठयितुकामः हे देवानुप्रियाः ! यूय शृणुत, पञ्चशतचौरैः सहाह चिलातश्चोरसेनापतिरत्रधन्यस्य सार्थवाहस्य गृह लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् 'जो ण' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्याया मातृकाया 'दुद्ध पाउकामे' दुग्ध पातुकाम =यः खलु मदीयहस्तान्मृत्यु प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया मातुर्दुग्धाभिलाषीभवेत् 'सेण' स खलु 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छतु मम सम्मुख मागच्छतु 'त्ति कट्टु' इतिकृत्वा=इत्यमुक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह तत्रैव

पाचसौ चोरों के साथ यहां सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से आया हुआ हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्थवाह के घर को लूटने की है-(त) इसलिये -(जो ण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गिह विहाडेइ। तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगतं अवक्कमइ,। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहुधणकणग जाव सावएज्ज सुसम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमइ,पडिणिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

ચિલાત નામે ચોર છુ હમણા જ હુ પાંચસો ચોરોની સાથે અહીં સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી આવ્યો છુ ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લૂટવાની મારી ઇચ્છા છે (ત) માટે

(जोण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्ति कट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिह विहाडेइ, तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थेथ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगत अवक्कमइ। तएण से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ, घाइत्ता सुबहु धणकणग जाव सावएज्ज सुसम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडि णिक्खमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

જે નવી માતાનુ દૂધ પીવા ઇચ્છે છે એટલે કે મારા હાથથી મૃત્યુ પામીને ફરી બીજા ભવમા બનારી માતાનુ દૂધ પીવા જે ઇચ્છતો હોય તે

उपागच्छति, उपाग त्य धन्यस्य गृह ' विहाडेइ ' विघाटयति=उद्घाटयति । तत खलु स धन्यः सार्थवाहः चिलातेन चोरसेनापतिना पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं गृहं ' घाइज्जमाण ' घात्यमान=लुण्ठ्यमान पश्यति दृष्ट्वा, भीतः=भय प्राप्तः, त्रस्तः=त्रासगतः, त्रसितः=विशेषतस्त्रास प्राप्तः ' उव्विग्गे ' उद्विग्नः=भयमस्माक सर्वस्व मपहरति अहमस्य किमपि कर्तुं न शक्नोमीति हेतोः परमचिन्तामापन्नः, पञ्चभिः पुत्रैः सार्धम् ' एगत ' एकान्तम्=भयरहित स्थानम् ' अवक्कमइ ' अपक्राम्यति=अपगच्छति । ततः खलु स चिलात. चोरसेनापतिः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह घातयति=लुण्ठयति घातयित्वा लुण्ठयित्वा गुरुहु ' जणकणग जाव सावएज्जं ' धनकनक यावत् स्वापतेयम्=धनकनक मणिमौक्तिकादिक द्रव्य सुसुमा च दारिका गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सिंहगुहा तत्रैव माधारयद् गमनाय=गन्तुमुद्यतोऽभूत् ॥ सू० ६ ॥

-वही मेरे सम्मुख आवे-इस प्रकार कहकर वह जहा धन्यसार्थवाह का घर था वहा गया-वहा जाकर उसने धन्यसार्थवाह के घर को खोला जब धन्यसार्थवाह ने पाचसौ चोर के साथ चोरों सेनापति चिलात के द्वारा अपने घर को लुटता हुआ देखा-तो देखकर वह भय को प्राप्त हो गया-और त्रस्त एव त्रसित-विशेष त्रास को प्राप्त होकर अन्त में वह उद्विग्न बन गया यह हमारा सर्वस्व हरण कर रहा है और मै इसका कुछ भी नही कर सकता हूँ-इस ध्यान से वह चिन्ताकुल हो गया-और चिन्ताकुल होकर अपने पाचो पुत्रों के साथ वहा से निर्भय स्थान में चला गया। चोर सेनापति चिलात ने धन्य सार्थवाह को खूब मनमाना लूटा और लूट करके उसमेंसे बहुत सा धन कनक, मणि, मौक्तिक आदि द्रव्यो को एव सुसमादारिका को ले लिया-। लेकर वह राजगृह नगर से

મારી સામે આવે આ પ્રમાણે કહીને તે જ્યા ધન્ય સાર્થવાહનુ ઘર હતુ ત્યા ગયેા ત્યા જઇને તેણે ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને ઉઘાડયુ જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે પાચસેા ચેારેાની સાથે ચેાર સેનાપતિ ચિલાત વડે પેાતાના ઘરને લુટાતુ જોયુ ત્યારે જોઇને તે ભયભીત થઇ ગયેા અને ત્રસ્ત તેમજ ત્રાસિત (વિશેષ ત્રાસ) પ્રાપ્ત કરીને છેવટે ઉદ્વિગ્ન થઇ ગયેા આ અમારૂ સર્વસ્વ હરણ કરી રહ્યો છે અને હુ એનુ કઈજ બગાડી શકતેા નથી આ જાતનેા વિચાર કરીને તે ચિંતાકુળ થઈ ગયેા અને ચિંતાકુળ થઇને તે પેાતાના પાચે પુત્રેાની સાથે ત્યાથી નિર્ભય સ્થાનમા જતેા રહ્યો ચેાર સેનાપતિ ચિલાતે ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને ખૂબ ઇચ્છા મુજબ લૂટયુ અને લૂટીને તેમાથી ઘણુ ધન, કનક, મણિ, મેાતી વગેરે દ્રવ્યેા તેમજ સુસમા દારિકાને લઈ લીધી ત્યાર બાદ ગૃહ

मूलम्–तएणं से धन्ने सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं धणकणगं सुसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता, महत्थ महग्घं महरिह पाहुड गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, त महत्थं महग्घ महरिह पाहुड जाव उवणेंति, उवणित्ता, एवं वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पचहि चोरसएहि सद्धि ममगिह घाएत्ता धणकणगं सुंसुमं च दारिय गहाय जाव पडिगए। त इच्छामो ण देवाणुप्पिया ! सुसुमा दारियाए कूव गमित्तए, तुब्भ णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे, ममं सुंसुमा दारिया। तएणं ते णगरगुत्तिया धण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता संनद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया२ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता, जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, चिलाएणं चोरसेणाव-इणा सद्धि संपलग्गा यावि होत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेति। तएण ते पच्च चोरसया णयरगोत्तिएहि हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ

वापिस निकला-और निकल करके जहा सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी-उस ओर चलने के लिये उद्यत हो गया ॥ सू० ६ ॥

નગરમાથી પાછો બહાર આવ્યો અને આવીને જ્યા સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી તે તરફ રવાના થવા તૈયાર થઈ ગયો ॥ સૂત્ર ૬ ॥

समंता विप्पलाइत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया ते विउलं धण कणगं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति । तएण से चिलाए त चोरसेणं तेहि णयरगुत्तिएहि हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसुम दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीह-मद्ध अडवि अणुप्पविट्ठे । तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारिय चिलाएणं अडवीमुह अवहीरमाणि पासित्ताणं पचहि पुत्तेहि सद्धि अप्पछट्ठे सन्नद्धवद्ध० चिलायस्स पदमग्गवीहि अणुगच्छ-माणे अभिगज्जते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ । तएण से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहि पुत्तेहि सद्धिं अप्पछट्ठं सन्नद्धवद्ध० समणुगच्छ माण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कार-परक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसुम दारिय णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते नीलुप्पल० असि परामुसइ, परामुसित्ता सुसुमाए दारियाए उत्तमगं छिदइ, छिदित्ता, त गहाय त अग्गामियं अडवि अणुप्पविट्ठ। तएण से चिलाए तीसे अगा-मियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठ दिसाभाए, सीहगुह चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओ-रालियसरीरस्स वतासवस्स जाव विद्धसणधम्मस्स वण्णहेउ जाव आहार आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं४ हिलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से चिलाए तक्करे ॥ सू० ७ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । तत' खलु स धन्य' सार्थवाहो यत्रैव स्वक गृह तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुबहु धनकनक सुसुमा च दारिकाम् अपहृता ज्ञात्वा ' महत्थ महग्घ महरिह ' महार्थं महार्घं महार्हम्=महानर्थः प्रयोजन यस्मिन् तत्=महार्थं=महाप्रयोजनम् , बहुमूल्य पुनः महता योग्यम् ' पाहुडं ' प्राभृत= उपायन गृहीत्वा यत्रैव ' णगरगुत्तिया ' नगरगोप्तृकाः=नगररक्षका' कोट्टपाला-दयः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत्=महार्घं महार्हं प्राभृतम् ' उवणेइ ' उपनयति=समर्पयति, उपनीय=समर्प्य एवमवदत्–एव खलु हे देवानु-

---

' तएण से धन्ने सत्थवाहे' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से धन्ने सत्थवाहे) वह धन्य सार्थवाह (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) जहा अपना घर था वहाँ आया (उवागच्छित्ता सुबहु धणकणग सुसम च दारिय अवहरियं जोणित्ता महत्थं महग्घ महरिय पाहुड गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ) वहा आकरके उसने अपने घरमें से बहुत सा धन कनक एव सुसमा दारिका को हरण किया हुआ जब जाना तब वह महार्थ बहुमूल्य एव महापुरुषो के योग्य भेंट लेकर जहां नगर रक्षक –कोट्टपाल–आदि थे वहा गया–(उवागच्छित्ता त महत्थ महग्घ महरिह पाहुड जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) वहा जाकर उसने उस महाप्रयोजन साधक भूत बहुमूल्य तथा महापुरुषों के योग्य भेंट को उनके समक्ष रखदिया–और रखकर उनसे उसने इस प्रकार कहा–(एव

' तएण से धन्ने सत्थवाहे ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (से धन्ने सत्थवाहे) ते धन्य सार्थवाह (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) જ્યા પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યો.

(उवागच्छित्ता सुबहु धणकणग सुसम च दारिय अवहरिय जाणित्ता महत्थ महग्घ महरिय पाहुड गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ)

ત્યા આવીને તેણે પોતાના ઘરમાથી પુષ્કળ પ્રમાણમા ધન, કનક અને સુસમા દારિકાનુ હરણ કરવામા આવેલુ જાણીને તે મહાર્થ, બહુ કિંમતી અને મહાપુરુષોને યોગ્ય ભેટ લઈને જ્યા નગર–રક્ષક–કોટ્ટપાળ–વગેરે હતા ત્યા ગયો. (उवागच्छित्ता त महत्थ महग्घ महरिह पाहुड जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) ત્યા જઈને તેણે તે મહાપ્રયોજન સાધકભૂત બહુ કિંમતી તેમજ મહા પુરુષોને રે ય ભેગને તેમની આગે મૂકી દીધી અને મૂકીને તેમને તેણે આ પ્રમાણે વિનતી કરતા કહ્યુ કે—

मियाः ! चिलातश्चोरसेनापतिः सिंहगुहायाश्चोरपल्याः इह शीघ्रमागत्य पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धम् मम गृहं 'घाएत्ता' घातयित्वा=हत्वा सुबहु धनकनकं सुंसुमां च दारिकां गृहीत्वा 'जाव पडिगए' यावत् प्रतिगतः=पञ्चभिश्चोरशतैः सार्धं सिंहगुहा चोरपल्लीं प्रतिनिवृत्त इत्यर्थः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् इच्छामः खलु हे देवानुप्रिया ! 'सुंसुमा दारियाए सुंसुमा दारिकायाः 'कूवं' प्रत्यानयने 'गमित्तए' गन्तुम् । 'तुब्भेण देवाणुप्पिया !' युष्माकं खलु हे देवानुप्रिया ! तत्=अपहृतं विपुलं धनकनकम्=हे देवानुप्रियाः ! चोराऽपहृतं धनकनादिकं सर्वं युष्माकं भवतु, मम सुंसुमा दारिका भवतु । ततः खलु ते नगरगोप्तृका

खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहुं धण कणगं सुसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए-तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुसमं दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया) हे देवानुप्रियों सुनो चोर सेनापति चिलात चोर ने सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से यहां शीघ्र आकर पांचसौ चोरों के साथ मेरे घर पर डाका डाला है। उसमें उसने बहुत सा धन, कनक एवं सुसमा दारिका को लूटा है और-लूटकर वह वहां वापिस अपने स्थान पर चला गया है। अतः हे देवानुप्रियो ! मैं चाहता हूँ कि आप लोग उस सुसमा दारिका को लेने के लिये जावें, मिलने पर वह हृत धनकनक आदि सब आपका रहे-और सुसमा दारिका मेरी

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहुं धणकणगं सुसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुसमं दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાચસો ચોરોની સાથે મારા ઘરમા ધાડ પાડી છે તેમા તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂટ કરી છે લૂટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! મારી ઈચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને મેળવી લીધા બાદ તે અપહૃત કરાયેલુ ધન કનક વગેરે બધુ તમે રાખજો અને સુસમા દારિકાને મને સોપી દેજો

पुरुषा धन्यस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य ' सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा ' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहणाः=सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणा इत्यस्य व्याख्या पूर्ववद् बोध्या, ' महया २ उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयपिव ' महा महोत्कृष्ट यावत् समुद्दरवभूतमिव, वेलावृद्धिसमये समुद्रध्वनिमिव महाध्वनिं ' करेमाणा ' कुर्वन्तो राजगृहात् निर्गच्छन्ति, निर्गत्य

रहे। (तएण ते णगरगुत्तिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया २ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयं पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति णिग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे-तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएण चोरसेणावइणा सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था तएण ते णगरगुत्तिया चिलाय चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेंति, तएणं ते पच चोरसया णयरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणग विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समता विप्पलाइत्था) धन्य सार्थवाह की इस बात को सुनकर उन नगर रक्षकों ने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उसी समय उन्हो ने अपने २ शरीरपर कवच को सजित करके कशावधन से बाध लिया यावत् आयुध और प्रहरणो को ले लिया-। वेलावृद्धिके समय में जिस प्रकार समुद्र की ध्वनि होती है-उसी प्रकार की महाध्वनि करते हुए फिर वे राजगृह नगर

(तएण ते णगरगुत्तिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपरणा महया २ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूय पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति, णिगच्छित्ता जेणेव चिलाए चोर-तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएण चोरसेणावइणा सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था-तएण ते णगरगुत्तिया चिलाय चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेंति, तएण ते पच चोरसया णयरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणग विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समता विप्पलाइत्था)

ધન્ય સાથવાહની તે વાતને સાભળીને નગર રક્ષકોએ તેને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેમણે તરત જ પોતપોતાના શરીરો ઉપર કવચો પહેરીને કશા બધનોથી બાધ્યા યાવત્ આયુધ અને પ્રહરણોને સાથે લઇ લીધા ભરતીના સમયે જેવો સમુદ્રનો ધ્વનિ હોય છે તેવો જ મહાધ્વનિ કરતા તેઓ રાજગૃહ નગરમાથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યા ચોર સેનાપતિ તે

मिया ! चिलातश्चोरसेनापतिः सिंहगुहायाश्चोरपल्याः इह हव्यमागत्य पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धम् मम गृहं 'घाएत्ता' घातयित्वा=लुण्ठयित्वा सुबहु धनकनकं सुसुमां च दारिकां गृहीत्वा 'जाव पडिगए' यावत् प्रतिगतः=पञ्चभिश्चोरशतैः सार्धं सिंहगुहां चोरपल्लीं प्रतिनिवृत्त इत्यर्थः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् इच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः ! 'सुसुमा दारियाए सुसुमा दारिकायाः 'कूव' प्रत्यानयने 'गमित्तए' गन्तुम् । 'तुब्भेण देवाणुप्पिया !' युष्माकं खलु हे देवानुप्रिया ! तत्=अपहृतं विपुलं धनकनकम्=हे देवानुप्रियाः ! चोराऽपहृतं धनकनकादिकं सर्वं युष्माकं भवतु, मम सुसुमा दारिका भवतु । ततः खलु ते नगरगोप्तृका

खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहुं धण कणगं सुसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए-तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुसमा दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया) हे देवानुप्रियो सुनो चोर सेनापति चिलात चोर ने सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से यहां शीघ्र आकर पाचसौ चोरों के साथ मेरे घर पर डाका डाला है। उसमें उसने बहुत सा धन, कनक एव सुसमा दारिका को लूटा है और-लूटकर वह वहा वापिस अपने स्थान पर चला गया है। अतः हे देवानुप्रियों ! मैं चाहता हूँ कि आप लोग उस सुसमा दारिका को लेने के लिये जावें, मिलने पर वह हृत धनकनक आदि सब आपका रहे-और सुसमा दारिका मेरी

(एव खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहुं धणकणगं सुसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए त इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुसमा दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાચસો ચોરોની સાથે મારા ઘરમા ધાડ પાડી છે તેમા તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂટ કરી છે લૂટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! મારી ઇચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને મેળવી લીધા બાદ તે અપહૃત કરાયેલુ ધન કનક વગેરે બધુ તમે રાખજો અને સુસમા દારિકાને મને સોપી દેજો

नगरगोप्तृकाः=नगररक्षकाः=त विपुल धनकनक०=धनकनकादिक गृह्णन्ति, गृहीत्वा, यत्रैव राजगृह नगर तत्रैव उपागच्छन्ति । ततः खलु स चिलातः ता चोरसेना ' हयमहिय जाव ' हतमथित यावत्=हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतित चिह्नध्वजपताकाम् यावद् दृष्ट्वा भीतत्रस्तः सुंसुमा दारिका गृहीत्वा एका महतीम् ' अग्गामिय ' अग्रामिकाम्=ग्रामरहिताम् ' दीहमद्ध ' दीर्घाध्वां=दीर्घमार्गाम् ' अडविं ' अटवीम्-अनुप्रविष्टः । ततः खलु धन्य' सार्थवाह. सुसुमा दारिका चिलातेन ' अडवीमुह ' अटवीमुखम्=अरण्यमम्मुखम् ' अवहीरमाणिं ' अपहियमाणाम्-नीयमाना ' पासित्ता ' दृष्ट्वा पञ्चभि पुत्रै सार्द्धम् ' अप्पछट्ठे ' आत्मषष्ठ. ' सनद्धबद्ध० ' सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः चिलातस्य ' पदमग्गवीहिं ' पद

गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छति । तएण से चिलाए त चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसम दारिय गहाय एग मह अग्गामिय दीहमद्ध अडविं अणुप्पविट्ठे) उन नगर रक्षको ने उस विपुल धन कनक आदिको ले लिया और लेकर राजगृह नगर में वापिस आ गये। इस के बाद वह चिलात चोर अपनी उस सेना को नगर रक्षकों द्वारा हत मथित प्रवल वीरवाली एव घातित तथा निपतित चिन्ह ध्वज पताका वाली देखकर त्रस्त हो गया और सुसमादारिका को लेकर एक बडी भारी ग्रामरहित अटवी में घुस गया (तएण धण्णे सत्थवाहे सुसम दारियं चिलाएण अडवीमुह अवहिरमाणिं पासित्ता ण पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध चिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हाक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे

(तएण ते णयर गुत्तिया त विउल धणकणग गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छति । तएण से चिलाए त चोरसेण तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसम दारिय गहाय एग मह अग्गामिय दीहमद्ध अडविं अणुप्पविट्ठे)

તે નગર રક્ષકોએ તે પુષ્કળ પ્રમાણમા પડેલા ધન, કનક વગેરેને લઇ લીધુ અને લઈને રાજગૃહ નગરમા પાછા આવી ગયા ત્યારપછી તે ચિલાત ચોરે પોતાની તે ચોર સેનાને નગર રક્ષકો વડે હત, મથિત તેમજ ઘાતિત અને નિપતિત ચિહ્નધ્વજ પતાકાઓવાળી જોઇને ત્રસ્ત થઈ ગયો અને સુસમા દારિકાને લઇને એક ભારે મોટી ગ્રામરહિત અટવીમા પેસી ગયો।

(तएण धण्णे सत्थवाहे सुसम दारिय चिलाएण अडवीमुह अवहीरमाणिं पासित्ता ण पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्धचिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हाक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभिहासे-

यत्रैव चिलातश्चोरः, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य चिलातेन चोरसेनापतिना सार्धं 'संपलग्गा' संप्रवृत्ताः=युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चापि अभवन् । तत खलु नगर गोप्तृकाः चिलात चोरसेनापतिं 'हयमहिय० जाव' हतमथित यावत्=हतमथित प्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताक=हता=मारिता', मथिताः=निश्शेषता प्रापिताः, प्रवरवीरा=श्रेष्ठवीरा यस्यासौ हतमथितप्रवरवीर., घातितः=घातः शस्त्रादिप्रहारेण क्षतिः, स संजातोऽस्य घातितः क्षत इत्यर्थः, निपतिता=भूमौ पतिता चिह्नध्वज पताका यस्याऽसौ, निपतितचिह्नध्वजपताकः, एतेषां कर्म धारयः, तम्, यावत् प्रतिषेधयन्ति=निवारयन्ति । ततः खलु ते 'पंचचोरसया' पञ्चशतचौरा 'णगरगोत्तिएहिं' नगरगोप्तृकैः=नगररक्षकैः पुरुषैः 'हयमहिय जाव पडिसेहिया' हतमथितयावत्प्रतिषेधिताः=प्रतिषेधिताः सन्तः तत् विपुल धनकनक=धनकनकमणिमौक्तिकादिकं 'विच्छड्डेमाणा' विच्छर्दयन्तः=प्रक्षिपन्तः 'विप्पकिरेमाणा य' विप्रकिरन्तश्च=इतस्ततो विकिरणं कुर्वन्तः 'सव्वओ समंता' सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिक्षु 'विप्पलाइत्था' विप्रलायन्त=पलायिताः ततः खलु ते

से बाहर निकले-और निकलकर जहा चोर सेनापति वह चिलात चोर था वहा गये-वहा पहुँचते ही उनका चोर सेनापति उस चिलात चोर के साथ युद्ध होना प्रारभ हो गया-उस युद्ध में उन्हों ने उस चिलात के सैन्य को पहिले खूब मारा-पीटा-बाद में उन्हें बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर दिया। कितनेक चोरो को उन्हों ने क्षत किया। उसकी चिह्न ध्वजपता काओं को जमीन पर डाल दिया। इस प्रकार उसे इरतरह परास्त कर दिया। जब वे पाचसौ चोर नगररक्षक पुरुषो द्वारा हर प्रकारसे हतमथित यावत् प्रतिषेधित हो चुके तब वे उस विपुल धनकनक मणिमौक्तिक आदिको छोडकर तथा इधर उधर डालकर सर्व प्रकारसे चारो दिशाओंमें इधर उधर भाग गये। (तएण ते णयरगुत्तिया त विउल धणकणग

ચિલાત ચોર હતો ત્યા ગયા ત્યા જતાની સાથે જ ચોર સેનાપતિ ચિલાતની સાથે તેમનુ યુદ્ધ શરૂ થઈ ગયુ યુદ્ધમા તેમણે પહેલા તો ચિલાતની સેના સાથે ખૂબ માર-પીટ કરી અને ત્યારપછી તેને નષ્ટ-ભ્રષ્ટ કરી નાખી કેટલાક ચોરોને તો તેમણે ક્ષત (ઘવાયેલા) કર્યા તેમની ચિહ્નભૂત ધ્વજા પતાકાઓને જમીનદોસ્ત કરી નાખી આ પ્રમાણે તેને બધી રીતે હરાવી દીધો જ્યારે તે પાંચસો ચોરો નગર રક્ષક પુરુષો વડે સર્વ રીતે હત, મથિત યાવત્ પ્રતિષેધિત થઈ ગયા ત્યારે તેઓ તે વિપુલ ધન, કનક, મણી, મોતી વગેરેને ત્યા જ મૂકીને આમતેમ નાખીને ચારે દિશાઓમા આમતેમ પલાયન

पुरुषकारः=पौरुषम्, पराक्रमः=सामर्थ्यं, तद्रहितः सन् 'जाहे' यदा नो शक्नोति सुसुमा दारिकां 'णिव्वाहित्तए' निर्वाहयितुम्=वोढुम्, 'ताहे' तदा 'सते' श्रान्तः=परिश्रम गतः, 'तते' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, 'परितते' परितान्तः= सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, 'नीलुप्पल०' नीलोत्पल०=नीलोत्पगवलगुलिकादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् 'असिं' करवालं 'परामुसइ' परामृशति= कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुसुमाया दारिकायाः 'उत्तमग' उत्तमाङ्ग=शिरः

अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसम दारिय णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिंदइ, छिंदित्ता, त गहाय त अग्गामिय अटविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीह गुहं चोरपल्लिं असपत्ते अतराचेव कालगए) जब चिलात चोर ने उस धन्यसार्थवाह को पाचो पुत्रों के साथ आत्मपष्ठ होकर एव कवच आदि से सुसज्जित होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देख कर आत्मबल रहित हो गया। इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुसमा दारिका को अपने पास रखने के लिये शक्तिशाली नही हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि युक्त और परितात सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल, गवलगुलिका, आदि विशेषणो वाली अपनी तलवार को उठाया-म्यान

परक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसम दारिय णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिंदइ, छिंदित्ता, त गहाय त अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुह चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए)

જ્યારે ચિલાત ચોરે તે ધન્ય સાર્થવાહને પાચે પુત્રોની સાથે આત્મપષ્ઠ થઇને તેમજ કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઇને પોતાની પાછળ પાછળ આવતો જોયો ત્યારે તે જોઇને આત્મબળ વગરનો થઈ ગયો આ પ્રમાણે સેના રહિત ઉત્સાહ રહિત તેમજ પૌરુષ અને પરાક્રમ રહિત થઇ ગયેલો તે જ્યારે સુસમા દારિકાને પોતાની પાસે રાખવામા પણ અસમર્થ થઈ ગયો ત્યારે તેણે શ્રાત, તાત, ગ્લાનિ યુક્ત અને પરિતાત તેમજ બધી રીતે ખિન્નતા પ્રાપ્ત કરીને નીલોત્પલ, ગવલ ગુલિકા વગેરે વિશેષણોવાળી પોતાની તરવારને ઉપાડી અને મ્યાનમાથી બહાર કાઢી અને બહાર કાઢીને સુસમા દારિકાનુ માથુ કાપી

मार्गविधिं=पदमार्गप्रचारम्=चरणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो धावन् 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघवद्गर्जनां कुर्वन् 'हक्कारेमाणे' 'हभो' दुष्ट! तिष्ठ-तिष्ठ' इत्यादि, वाक्यैः हकारयन्=आह्वयन् 'पुक्कारेमाणे' पूत्कारयन् 'तिष्ठ २, नोचेत्त्वा हनिष्यामीत्यादिवाक्यैः' तमाक्रोशयन् 'अभितज्जेमाणे' अभितर्जन्=' रे निर्लज्ज ' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कुर्वन्, 'अभितासेमाणे' अभित्रासयन्=शस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् ' पिट्ठओ ' पृष्ठतः=चिलातचोरस्य पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=पश्चाद्धावति। ततः खलु स चिलातः तं धन्यं सार्थवाहं पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् ' अप्पछट्ठ ' आत्मषष्ठं ' सन्नद्धबद्धवर्मितकवच यावत् समनुगच्छन्तं=पश्चाद्धावन्तं पश्यति, दृष्ट्वा ' अत्थामे ४ ' अस्थामा=आत्मबल रहितः, अबलः=सैन्यरहितः, अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रम सन्

अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ) धन्यसार्थवाह ने जब सुसमा दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई जब जाना-तब वह अपने पाचों पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ होकर कवच बाध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट! ठहर ठहर इस प्रकार से कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा--नहीं तो में तुझे मार डालूगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज! इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला।

(तएण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठ अन्नद्धबद्ध० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्ठओ अणुगच्छइ)

જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે સુસમા દારિકાને ચિલાત ચોર વડે અટવીમા હરણ કરીને લઈ જવાયેલી જાણી, ત્યારે તે પોતાના પાચ પુત્રોની સાથે આત્મ ષષ્ઠ થઈને કવચ બાધીને તે ચિલાત ચોરની પાછળ તેના પદ ચિહ્નોનુ અનુ સરણ કરતો મેઘના જેવી ધ્વનિ કરતો "અરે ઓ દુષ્ટ! ઊભોરે, ઊભોરે," આ પ્રમાણે કહેતો "ઊભોરે, ઊભોરે, નહિતર મરી ગયેલો જાણજે" આ પ્રમાણે હાકલ કરતો, તેને બોલાવતો 'અરે નિર્લજ્જ!' આમ તર્જિત કરતો તેમજ શસ્ત્ર અસ્ત્ર વગેરેને બતાવીને તેને ત્રસિત કરતો ચાલ્યો

(तएण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठ सन्नद्ध बद्ध० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

पुरुषकारः=पौरुषम्, पराक्रमः=सामर्थ्यं, तद्रहितः सन् 'जाहे' यदा नो शक्नोति सुसुमा दारिकां 'णिव्वाहित्तए' निर्वाहयितुं=वोढुम्, 'ताहे' तदा 'सते' श्रान्तः=परिश्रम गतः, 'तते' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, 'परितते' परितान्तः=सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, 'नीलुप्पल०' नीलोत्पल०=नीलोत्पगवलगुलिकादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् 'असिं' करवाल 'परामुसइ' परामृशति=कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुसुमाया दारिकायाः 'उत्तमग' उत्तमाङ्ग=शिरः

अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसम दारिय णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिंदइ, छिंदित्ता, त गहाय त अग्गामिय अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीह गुहं चोरपल्लिं असपत्ते अतराचेव कालगए) जब चिलात चोर ने उस धन्यसार्थवाह को पाचो पुत्रों के साथ आत्मपष्ट होकर एव कवच आदि से सुसज्जित होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देख कर आत्मबल रहित हो गया। इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुसमा दारिका को अपने पास रखने के लिये शक्तिशाली नही हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि युक्त और परितात सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल, गवलगुलिका, आदि विशेषणो वाली अपनी तलवार को उठाया-म्यान

परक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसम दारिय णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिंदइ, छिंदित्ता, त गहाय त अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुह चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए)

જ્યારે ચિલાત ચોરે તે ધન્ય સાથવાહને પાચે પુત્રોની સાથે આત્મપષ્ઠ થઇને તેમજ કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઇને પોતાની પાછળ પાછળ આવતો જોયો ત્યારે તે જોઇને આત્મબળ વગરનો થઈ ગયો આ પ્રમાણે સેના રહિત ઉત્સાહ રહિત તેમજ પૌરુષ અને પરાક્રમ રહિત થઇ ગયેલો તે જ્યારે સુસમા દારિકાને પોતાની પાસે રાખવામા પણ અસમર્થ થઈ ગયો ત્યારે તેણે શ્રાત, તાત, ગ્લાનિ યુક્ત અને પરિતાત તેમજ બધી રીતે ખિન્નતા પ્રાપ્ત કરીને નીલોત્પલ, ગવલ ગુલિકા વગેરે વિશેષણોવાળી પોતાની તરવારને ઉપાડી અને મ્યાનમાથી બહાર કાઢી અને બહાર કાઢીને સુસમા દારિકાનુ માથુ કાપી

मार्गविधि=पदमार्गप्रचारम्=चरणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो यावन् 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघवद्गर्जनां कुर्वन् 'हक्कारेमाणे' 'हभो' दुष्ट! तिष्ठ-तिष्ठ' इत्यादि, वाक्यैः हकारयन्=आकारयन् 'पुक्कारेमाणे' पूत्कारयन् 'तिष्ठ २, नोचेत्त्वा हनिष्यामीत्यादिवाक्यैः तमाक्रन्दयन् 'अभितज्जेमाणे' अभितर्जयन्=' रे निर्लज्ज ' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कुर्वन्, ' अभितासेमाणे ' अभित्रासयन्=अस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् ' पिट्ठओ ' पृष्ठतः=चिलातचोरस्य पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=तमाद्धावति। तए णं से चिलाए त धन्य सार्थवाह पञ्चभि पुत्रै सार्द्धम् ' अप्पछट्ठ ' आत्मषष्ठ ' सन्नद्धबद्धवर्मितकवच यावत् समनुगच्छन्त=तमाद्धावन्त पश्यति, दृष्ट्वा ' अत्थामे ४ ' अस्थामा=आत्मबल रहितः, अबलः=सैन्यरहितः, अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रम सन्

अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ) धन्यसार्थवाह ने जब सुसमा दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई जब जाना-तब वह अपने पांचों पुत्रो के साथ आत्मषष्ठ होकर कवच बांध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट! ठहर ठहर इस प्रकार से कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे मार डालूगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज! इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला।

(तएण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठ अन्नद्धबद्ध० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्ठाओ अणुगच्छइ)

જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે સુસમા દારિકાને ચિલાત ચોર વડે અટવીમા હરણ કરીને લઈ જવાયેલી જાણી, ત્યારે તે પોતાના પાચે પુત્રોની સાથે આત્મ ષષ્ઠ થઇને કવચ બાધીને તે ચિલાત ચોરની પાછળ તેના પ૬ ચિહ્નોનુ અનુ સરણ કરતો મેઘના જેવી ધ્વનિ કરતો "અરે ઓ દુષ્ટ! ઊભોરે, ઊભોરે," આ પ્રમાણે કહેતો "ઊભોરે, ઊભોરે, નહિતર મરી ગયેલો જાણજે" આ પ્રમાણે હાકલ કરતો, તેને બોલાવતો 'અરે નિર્લજ્જ!' આમ તર્જિત કરતો તેમજ શસ્ત્ર અસ્ત્ર વગેરેને બતાવીને તેને ત્રસિત કરતો ચાલ્યો

(तएण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठ सन्नद्ध बद्ध० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

बलहेतु=शरीरबलवर्धनार्थम्, ' वीरियहेउ ' वीर्यहेतुम्=आन्तरिकशक्तिसम्पादनार्थम्, आहारम् आहारयति, स खलु इह लोके एव बहूना श्रमणाना श्रमणीना श्रावकाणा श्राविकाणा च ' हीलणिज्जे जाव ' हीलनीयो यावत्, यावत्पदेन, निन्दनीय, खिंसनीय गर्हणीयो भवेत्, परलोकेऽपि दुःख प्राप्नोति, यावत्-चातुरन्तसंसारकान्तारम् ' अणुपरियट्टिस्सइ ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यति, यथा स चिलातस्तस्करः-चिलाततस्करवदिति भाव ॥सू०७॥

मूलम्-तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलाय परिधाडेमाणे२ तण्हाए छुहाए य सते तते परितंते

णाण ४ हीलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्टिरसइ जहाव से चिलाए तक्करे)
अब प्रभु इस चिलात के दृष्टान्त से निर्ग्रन्थ आदिको को संबोधित कर प्रतिबोधित करते हैं-हे आयुष्मत श्रमणों! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर वान्तास्रववाले यावत् विध्वसन धर्मवाले इस औदारिक शरीर में कान्ति विशेष प्राप्ति के लिये सौन्दर्य आदिरूप विशेष के लिये, बलवर्धन के लिये तथा आन्तरिक शक्ति वृद्धिके लिये आहार को लेता है-करता है - वह इस लोक में अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक तथा श्राविका जनों द्वारा हीलनीय यावत् निंदनीय, खिंसनीय गर्हणीय तो होता ही है-परन्तु पर भवमें भी वह दुःखो कोही पाता है। यावत् ऐसा जीव इस चतुर्गतिरूप संसार कान्तार में चिलात चोर की तरह परिभ्रमण ही करता रहता है॥ सूत्र ७ ॥

चेव वहूण समणाण४ हीलणिज्जे २ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहाव से चिलाए तक्करे)
હવે પ્રભુ તે ચિલાતના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને નિર્ગ્રંથ વગેરેને સંબોધિત કરીને આજ્ઞા કરે છે કે હે આયુષ્મત શ્રમણો! આ પ્રમાણે જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને વાન્તાસ્રવવાળા યાવત વિધ્વંસન ધર્મવાળા આ ઔદારિક શરીરમા કાંતિ વિશેષની પ્રાપ્તિ માટે, સૌંદર્ય વગેરે રૂપ વિશેષના માટે, બળવર્ધન માટે તેમજ આંતરિક શક્તિને વધારવા માટે આહાર ગ્રહણ કરે છે તે આ લોકમા ઘણા શ્રમણ, શ્રમણી, શ્રાવક તેમજ શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય યાવત્ નિંદનીય, ખિંસનીય અને ગર્હણીય તો હોય જ છે પણ સાથે સાથે તે પરભવમા પણ દુખ જ મેળવે છે યાવત એવો જીવ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારમા ચિલાત ચોરની જેમ ભટકતો જ રહે છે ॥ સૂત્ર ૭ ॥

छिनत्ति, छित्त्वा, ' त ' तत्=उत्तमाङ्गं गृहीत्वा ताम् अग्रामिकाम्=जनवासरहितां अटवीमनुप्रविष्टः=प्रवेशं कृतवान् । ततः खलु विजयतस्करस्तस्यामग्रामिकायां अटव्यां ' तण्हाए ' तृष्णया=पिपासया अभिभूतः सन् ' दिसामूढे ' दिग्मूढः=पूर्वादिदिशाविवेकविकलः सन् सिंहगुहां चोरपल्लीम् ' अणुपत्ते ' अनुप्राप्तः ' अंतराचेव ' अन्तरा एव=मध्य एव ' कालगए ' कालगतः=मृतो चोरो मृत्यु प्राप्तवान् । अस्य शेषचरितं ग्रन्थान्तरादवसेयम् , शास्त्रेतु-उपयोगि चरितं तावन्मात्रं भगवतोपदिष्टम् ।

अथ विजयतस्करदृष्टान्तेन भगवान् निर्ग्रन्थादीन् सबोध्य प्रतिबोधयति —' एवामेव ' एवमेव=अनेन प्रकारेणैव ' समणाउसो ' आयुष्मन्तः श्रमणाः ! ' जाव पव्वइए समाणे ' यावत् प्रव्रजितः सन्=योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्यो पाध्यायानां समीपे प्रव्रजितः सन् ' इमस्स ' अस्य ' ओरालियसरीरस्स ' औदारिकशरीरस्य यान्तास्रवस्य यावद् विध्वंसनधर्मणस्य ' वण्णहेउ ' वर्णहेतु = कान्तिविशेषप्राप्त्यर्थम् , यावत्-' रूवहेउ ' रूपहेतु=सौन्दर्यार्थम् , ' बलहेउ '

से बाहर किया और उठाकर सुसमा दारिका के मस्तक को काट डाला। उस कटे हुए मस्तक को लेकर फिर निर्जन अटवी में प्रवेश कर गया। उस अटवी में पिपासा से व्याकुल होकर वह पूर्वादि दिशाओं के विवेक से रहित हो गया-इस तरह वह पुनः वहां से पीछे वापिस अपनी सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में नहीं आ सका-और बीच ही में काल कवलित बन गया। इसका अवशिष्ट चरित्र ग्रंथान्तर से जान लेना चाहिये। यहां तो भगवान् ने जितना चरित्र इसका उपयोगी जाना उतनाही उपदिष्ट किया है '-(एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउ जाव आहार आहारेइ से ण इहलोए चेव बहूण सम

નાખ્યુ તે કપાએલા માથાને લઈને તે નિર્જન-ભયકર અટવીમા પેસી ગયો અટવીમા તે તરસથી વ્યાકુળ થઈને પૂર્વ વગેરે દિશાઓના વિવેકથી રહિત થઈ ગયો અને આ પ્રમાણે તે ફરી ત્યાથી તે પોતાની સિંહગુહા નામની ચોર પલ્લીમા કોઇ પણ દિવસે પાછો આવી શક્યો નહિ અને વચ્ચે જ મૃત્યુ પામ્યો તેનુ બાકીનુ ચરિત્ર બીજા ગ્રથમાથી જાણી લેવુ જોઈએ, અહીં તો ભગવાને જેટલુ ચરિત્ર તેનું ઉપયુક્ત જાણ્યુ તેટલુ કહ્યુ છે

(एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउ जाव आहार

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणिय च आहारेइ, आहारित्ता, तेण आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इम अग्गामिय अडवि णित्थरिहिह, रायगिह च संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएण से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाहं वयासी—तुब्भे ण ताओ ! अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं मस च सोणिय च आहारेमो ? त तुब्भे ण तातो ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मसं च सोणिय च आहारेह, अग्गामिय अडवि णित्थरह, त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी—मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठ भायर गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे ण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एव पच्चमे पुत्ते तएण से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता, त पच पुत्ते एव वयासी—मा ण अम्हे पुत्ता ! एगमविजीवियाओ ववरोवेमो, एसण सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्पजढे, त सेयं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेत्तए । तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्ध, त्थासमाणा रायगिह सपाउणिस्सामो । तएण त पंच पुत्ता

नो संचाएइ चिलाय चोरसेणावइं साहत्थिं गिण्हित्तए । से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया चिलाएण जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सुसुमं दारिय चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि निवडइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहि पुत्तेहि सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया२ सद्देणं कुहू२ सुपरुन्ने सुचिर काल वाहमोक्ख करेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहि पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिघाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता सते तते परितते, णिव्विन्ने, तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणदत्तं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य आभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदग्गस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव ण उदगं आसादेमो, तएणं उदगं, अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिहं सपा[illegible] तएणं

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मसं च सोणियं च आहारेइ, आहारित्ता, तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडवि णित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएणं से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं वयासी—तुब्भे ण ताओ ! अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइट्ठावगा सरक्खगा संगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे ण मसं च सोणियं च आहारेमो ? त तुब्भे णं तातो! मम जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अग्गामिय अडवि णित्थरह, त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएणं धण्णं सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी—मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठ भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एव पच्चमे पुत्ते तएणं से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता, त पच्च पुत्ते एव वयासी—मा ण अम्हे पुत्ता ! एगमविजीवियाओ ववरोवेमो, एसण सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्पजढे, त सेय खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए मस च सोणियं च आहारेत्तए । तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्ध, त्थासमाणा रायगिह सपाउणिस्सामो । तएण त पंच पुत्ता

धण्णेणं सत्थवाहेणं एव वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं-पाडेइ, पाडित्ता, अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइ परि-क्खेवेइ, परिक्खेवित्ता, अग्गिंपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंसुमाए दारियाए मंस च सोणियं च आहारेंति। ते णं आहारेण अवि छत्था समाणा रायगिहं नयर संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणा-गया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया यावि होत्था। तएण से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइ लोइयाइ जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सू०८ ॥

टीका—' तएण से' इत्यादि। ततः खलु स धन्य' सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रै सह आत्मपष्ठः चिलात ' परिधाडेमाणे २ ' परिधावन् २=चिलात ग्रहीतुकामस्त स्पृष्ठतोऽनुधावन् ' तण्हाए छुहाए य ' तृष्णया क्षुधया च ' सते ' श्रान्त ,=मनसा खिन्नः, ' तते ' तान्त =शरीरेण क्लात', 'परितते' परितान्तः=मनमा शरीरेण च

-:तएण से धण्णे सत्थवाहे। इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ छठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड ने की इच्छा से उस के पीछे २ बार बार दौडता हुआ, (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थिं गिण्हित्तए) पिपासा और

'तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારપછી (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) પાચે પુત્રોની સાથે છઠ્ઠો તે ધન્ય સાર્થવાહ (चिलाय परिधाडेमाणे २) ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ તેને પકડી પાડવા માટે વાર વાર દોડતા દોડતાં (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाएइ चिलाय चोरसेणावइ साहत्थिं गिण्हित्तए) તરસ અને ભૂખથી શ્રાત થઈ ગયેા, ખિન્ન બની ગયેા. થઇ

खिन्नः, ' नो सचाएइ ' नो शक्नोति चिलात चोरसेनापतिं ' साहत्थि ' स्वहस्तेन ग्रहीतुम् । तदा स खलु ' तओ ' तत =चिलातग्रहणव्यापारात् , ' पडिनियत्तइ ' प्रति निवर्तते, प्रतिनिवृत्य, यत्रैव सा सुसुमा दारिका चिलातेन जीवितात् ' ववरोविया ' व्यपरोपिता=पृथक्कृता=मारिता सती पतिता आसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुसुमा दारिका चिलातेन जीवितात् व्यपरोपिता पश्यति, दृष्ट्वा ' परसुनियत्तेव ' परशुनिकृत्त इव=परशुच्छिन्नो यथा चम्पकवरपादपस्तद्वत्

क्षुधा से श्रान्त हो गया-खिन्न बन गया, तान्त हो गया-शरीर से मुरझा गया-परितान्त हो गया-इकदम उत्साह रहित बन गया-सो वह उसे अपने हाथ से पकडने के लिये शक्तिशाली नही हो सका-(सेण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसमा दारिया चिलाएण जीवियाओ ववरोविया-तेणेव उवागच्छइ) अतः-वह वहा से लौट आया-और लौटकर वहां गया जहा वह अपनी पुत्री सुसमा चिलातचोर के द्वारा-जीवन से रहित की गई पडी थी। (उवागच्छित्ता सुसमा दारिय चिलाएण जीवियाओ ववरोविय पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ-तएणं से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर कालवाहमोक्ख करेइ) वहा जाकर उसने सुसमा दारिका को चिलातचोर के द्वारा जीवन से रहित की गई देखा। देखते ही वह पुत्रों सहित परशु से काटे गये उत्तम

ગયેા-શરીર તેનુ ચિમડાઈ ગયુ પરિતાત થઈ ગયેા-સાવ નિરૂત્સાહી બની ગયેા એવી હાલતમા તે પેાતાના હાથથી તેને પકડી પાડવામા સમર્થ થઇ શકયેા નહિ (સે ણ તઓ પડિનિયત્તઇ, પડિનિયત્તિત્તા જેણેવ સા સુસમા દારિયા ચિલાએણ જિવિયાઓ વવરોવિયા તેણેવ ઉવાગચ્છઇ) તેથી તે ત્યાથી પાછેા ફરી ગયેા અને પાછેા ફરીને તે જ્યા ચિલાત ચેાર વડે હણાયેલી પેાતાની પુત્રી સુસમા દારિકા પડી હતી ત્યા ગયેા

(उवागच्छित्ता सुसुमा दारिय चिलाएण जीवियाओ ववरोविय पासइ पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ,-तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर काल वाहमोक्ख करेइ)

ત્યા જઇને તેણે સુસમા દારિકાને ચિલાત ચેાર વડે હણાયેલી જોઈ જોતાની સાથે જ તે પુત્રોની સાથે પરશુ વડે કપાએલા ઉત્તમ ચપક વૃક્ષની

धण्णेणं सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं धण्णे सत्थवाहे पचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं-पाडेइ, पाडित्ता, अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइ परि-क्खेवेइ, परिक्खेवित्ता, अग्गिंपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंसुमाए दारियाए मंस च सोणियं च आहारेंति। ते णं आहारेण अवि-च्छत्था समाणा रायगिहं नयरं सपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणा-गया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया यावि होत्था। तएण से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइ लोइयाइ जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सू०८ ॥

टीका—' तएण से' इत्यादि। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रै सह आत्मषष्ठः चिलात ' परिधाडेमाणे २ ' परिधावन् २=चिलात ग्रहीतुकामस्त स्पृष्ठतोऽनुधावन् ' तण्हाए छुहाए य ' तृष्णया क्षुधया च ' सते ' श्रान्त ,=मनसा खिन्नः, ' तते ' तान्त =शरीरेण क्लातः, 'परितते' परितान्तः=मनसा शरीरेण च

-:तएण से धण्णे सत्थवाहे। इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ छठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड ने की इच्छा से उस के पीछे २ बार बार दौडता हुआ, (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थिं गिण्हित्तए) पिपासा और

'तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (पचहि पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पाचे पुत्रोनी साथे छठ्ठो ते धन्य सार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलात चोरनी पाछळ पाछळ तेने पकडी पाडवा माटे वार वार दोडता दोडतां (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाएइ चिलाय चोरसेणावइ साहत्थिं गिण्हित्तए) तरस अने भूखथी श्रात थई गयेा, खिन्न थनी [illegible] थई

माणे ' परिधावन् तृष्णया क्षुधया च ' परिभूए ' परिभूतः सन् तस्यामग्रामि कायामटव्या सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिक्षु ' उदगस्स ' उदकस्य=जलस्य ' मग्गण-गवेसण ' मार्गणगवेषणम्=अन्वेषण करोति, कृत्वा श्रान्तः, तान्त, परितान्त ' णिव्विन्ने ' निर्विण्ण=औदासीन्य प्राप्तः । तस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषण कुर्वन नो चैव खलु उदकम् ' आसादेइ ' आसादयति=प्राप्नोति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाह आत्मपष्ठ उदकमनासादयन् पानीयमप्राप्नुवन् यत्रैव सुसुमा जीविताद् व्यपरोपिता मारिता सती पतिताऽऽसीत् तत्रैव उपाग च्छति, उपागत्य ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्—एव खलु

में चारो दिशाओ में जल की मार्गणा और गवेषणा करने लगा (करित्ता सते तते परितते णिव्विन्ने तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण गवेसण करेमाणे णो चेव ण उदग आसाएइ) मार्गणा गवेषणा करके वह श्रान्त, मन से खिन्न, तान्तशरीर से खिन्न और परितान्त—बन गया शरीर एव मन इन दोनो से खिन्न हो गया इस तरह उस अग्रा-मवाली अटवी में उदकपानी की मार्गणा और गवेषणा करते हुए भी उसे जल नही मिला (तएण से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदग अणा-साएमाणे जेणेव सुसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविया—तेणेव उवाग-च्छइ) तब आत्मषष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उदक प्राप्त नहीं करता हुआ जहाँ सुसुमादारिका का शव पडा हुआ—था वहा आया —(उवागच्छित्ता जेट्ठ पुत्त धणदत्त सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

અને ક્ષુધા (તરસ અને ભૂખ) થી પીડાઇને તે ગામ વગરની અટવીમા ચોમેર પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા લાગ્યો.

(करित्ता सते तते परितते णिव्विन्ने तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणे णो चेव ण उदग आसाएइ)

માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને તે શ્રાત, મનથી ખિન્ન, તાત શરીરથી ખિન્ન અને પરિતાત બની ગયો. શરીર તેમજ મન આ બનેથી તે ખિન્ન થઈ ગયો. આ પ્રમાણે તે ગામ વગરની અટવીમા ઉદક—પાણી—ની માર્ગણા ગવે ષણા કરતા તેને પાણી મળ્યુ નહિ

(तएण से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदग अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારે આત્મષષ્ઠ બનેલો તે ધન્ય સાર્થવાહ પાણી ન મેળવતા ત્યા સુસમા દારિકાનુ મડદુ પડયુ હતુ ત્યા આવ્યો (उवागच्छित्ता जेट्ठ पुत्त धण दत्त सद्दावेई सद्दावित्ता एव वयासी) ત્યા આવીને તેણે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

सपुत्रो धन्यः सार्थवाहः ' धसत्ति ' धस ' इति शब्दपूर्वकं धरणीतले निपतितः। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः आश्वस्तः ' आसत्थे ' आश्वस्त=उच्छ्वास मुञ्चन सचेष्टः सन ' कुव्वमाणे ' कूजन्=अव्यक्तशब्दं कुर्वन् ' कंदमाणे ' क्रन्दन् उच्चस्वरेण, पुनः ' विलवमाणे ' विलपन्=विलाप कुर्वन ' महया महया सद्देण ' महतामहता शब्देन=अत्युच्चै. शब्देन ' कुहू २ सुपरुन्न ' कूहू २ सुपरुदन्-कूहू कूहू इति शब्दमुच्चार्यार्त्यर्थं रुदितः सन् सुचिरकालं=बहुकालपर्यन्त ' वाहमोक्ख ' वाष्पमोक्षम्=अश्रुमोचन करोति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मपञ्चः चिलातं तस्यामग्रामिकायाम् अटव्या सर्वतः समन्तात् ' परिधावे

चपक वृक्ष के समान " धस " इस शब्द पूर्वक भूमिपर गिर पडा। बाद मे पांच अपने पुत्रो के साथ आत्मपष्ट बना हुआ वह धन्यसार्थवाह आश्वस्त, उच्छ्वास छोड़ता हुआ सचेष्ट-हो गया सो अव्यक्त शब्द करता हुआ खूब जोर २ से रोने लगा, विलाप करने लगा। एव बहुत ऊँचे २ शब्दों से कुहू कुहू करता हुआ-हाय साँसे लेता हुआ-बहुत देरतक रोता रहा-अश्रुमोचन पूर्वक आक्रदन करता रहा-(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलाय तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाडे माणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गणगवेसण करेइ) इसके बाद पाचो पुत्रों के साथ आत्मपष्ट बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उस अग्रामवाली अटवी में चिलातचोर के पीछे पीछे बार २ दौड़ता हुआ तृषा और क्षुधा से पीडित होकर उस अग्रामवाली अटवी

જેમ " ધમ " શબ્દની સાથે જમીન ઉપર પડી ગયો. ત્યારપછી પાચે પુત્રો તેમજ છઠ્ઠો તે ધન્યસાર્થવાહ આશ્વસ્ત-ઉચ્છ્વાસ છોડતો-નિસાસા નાખતો સચેષ્ટ થઈ ગયો અને અવ્યકત શબ્દ કરતો ધ્રૂસકે ધ્રૂસકે ખૂબ જોરથી રડવા લાગ્યો, વિલાપ કરવા લાગ્યો અને બહુ મોટા સાદે ' કુહૂ કુહૂ ' કરતો હાય હાય કરીને શ્વાસો લેતો ઘણીવાર સુધી રડતો રહ્યો તેમજ આસૂ પાડતો આક્રંદ કરતો રહ્યો

(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलाय तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गणगवेसण करेइ)

ત્યારબાદ પાચે પુત્રોની સાથે છઠ્ઠો તે ધન્યસાર્થવાહ તે ગામ વગરની નિર્જન અટવીમા ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ વારવાર [illegible] તો તૃષા

मटवीं ' णित्थरिहिह ' निस्तरिष्यथ=पारङ्गमिष्यथ, राजगृह च ' सपाविहिह ' समाप्स्यथ ' मित्तणाई० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभि. सह सगता भविष्यथ, तथा च ' अत्थस्स ' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च 'आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्यं सार्थवाहमेव मवदत्-हे तात ! यूय खलु अस्माक पिता ' गुरुजणदेवयभूया ' गुरुजनदैवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइट्ठावका' प्रतिष्ठापका =राजादिसमक्ष स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा 'संरक्खगा'

रिहिय रायगिह च सपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे। (मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते) वहा पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेणं सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुब्भे ण ताओ ! अम्ह पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडविं णित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મને મારી નાખો અને મારા માસ અને રક્તને ખાવો, પીવો ખાધા પીધા પછી તમે શરીરના વિનાશથી ઊગરી જશો અને તૃપ્તિ મેળવીને આ ગામવગરની અટવીને પાર કરી જશો અને છેવટે રાજગૃહ નગરમા પહોચી જશો।

(मित्तणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएणं से जेट्ठे पुत्ते)

ત્યા પહોચીને તમે પોતાના મિત્ર,જ્ઞાતિ, સ્વજન,સબધી પરિજનોની સાથે મળશો। તેમજ ધન, ધર્મ અને પુણ્યોનો ઉપભોગ કરશો। ત્યારપછી મોટા પુત્ર ધનદત્તે

(धण्णेण सत्थवाहेण एवे वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी

ધન્ય સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયા બાદ પોતાના પિતા ધન્ય સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

हे पुत्राः ! एव खलु सुंसुमाया दारिकायाः ' अट्ठाए ' अर्थाय=निमित्तं चिलातं तस्करं मति ' सव्वओ समंता ' सर्वतः समन्तात्=सर्वासां चतुर्दिक्षु ' परिधावेमाणा ' परिधावन्तः ' तण्हाए ' तृष्णया=पिपासया, ' छुहाए ' क्षुधया च अभिभूता सन्तः अस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो नो चैव खलु उदकमासादयामः, तत् खलु उदकम् अनासादयन्तः=अलभमानाः नो शक्नुमो राजगृहं समाप्तुम्, ' तण्ण ' तत्खलु=तस्मात् कारणात् खलु यूयं मा हे देवानुप्रियाः ! जीवितात् व्यपरोपयत, मांसं च शोणितं च ' आहारेह ' आहारयत, आहार्य=भुक्त्वा, ' तेण आहारेण ' तेन आहारेण ' अविद्धत्था ' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ता' सन्तः तृप्ता सन्तः ' तओपच्छा ' तत पश्चात् इमामग्रामिका

वहां आकर के उसने अपने जेष्ठ पुत्र धनदत्त को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-(एव खलु पुत्ता ! अम्हे सुसमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाएमो-तएण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए) हे पुत्र सुनो अपने लोग सुसमा दारिका के निमित्त चिलातचोर के पीछे २ सब तरफ सब प्रकार से दौड़ते २ प्यास और भूख से दुःखी हो गये हैं हमने इस अग्राम वाली अटवी में पानी की मार्गणा और गवेषणा भी की-परन्तु वह मिला नहीं अतः पानी की प्राप्ति के अभाव में अब राजगृह नगर में पहुँचने के लिये हम असमर्थ बन चुके हैं। (तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इम अग्गामिय अडविं णित्थ

(एव खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाए मो-तएण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए)

હે પુત્ર ! સાભળ, અમે સુસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતા ભટકતા તરસ અને ભૂખથી દુ ખી થઇ ગયા છીએ અમોએ આ ગામ વગરની અટવીમા પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા પર કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શકયા નથી એથી હવે પાણીના અભાવમા અમે રાજગૃહ નગરમા પહોચી શકીશુ તેમ લાગતું નથી

(तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ अग्गामियं

मटवीं ' णित्थरिहिह ' निस्तरिष्यथ=पारङ्गमिष्यथ, राजगृह च ' सपाविहिह ' समाप्स्यथ ' मित्तणाई० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभि' सह सगता भविष्यथ, तथा च ' अत्थस्स ' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च 'आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्य सार्थवाहमेव मवदत्-हे तात ! यूय खलु अस्माक पिता ' गुरुजणदेवयभूया ' गुरुजनदैवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइट्ठावका' प्रतिष्ठापका =राजादिसमक्ष स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा 'सरक्खगा'

रिहिय रायगिह च सपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे। (मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते) वहा पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेणं सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुब्भे ण ताओ ! अम्ह पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडविं णित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મને મારી નાખો અને મારા માસ અને રક્તને ખાવો, પીવો ખાધા-પીધા પછી તમે શરીરના વિનાશથી ઊગરી જશો અને તૃપ્તિ મેળવીને આ ગામવગરની અટવીને પાર કરી જશો અને છેવટે રાજગૃહ નગરમા પહોચી જશો

(मित्तणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते)

त्या पहोचीने तमे चो ।ना मित्र,ज्ञाति, स्वजन,स ब धी परिजनोनी साथे भळशो। तेमज धन, धर्म अने पुण्येानेा उपभेा'ग करशो। त्यारपछी मेाटा पुत्र धनदत्ते

(धण्णेण सत्थवाहेण एवे वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी

ધન્ય સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયા બાદ પેાતાના પિતા ધન્ય સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

हे पुत्राः ! यय खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए ' अट्ठाए ' अर्थाय=निमित्तं चिलात तस्करं प्रति ' सव्वओ समंता ' सर्वतः समन्तात्=सर्वथा चतुर्दिक्षु ' परिधाडेमाणा ' परिधावन्तः ' तण्हाए ' तृष्णया=पिपासया, ' छुहाए ' क्षुधया च अभिभूता सन्तः अस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो नो चैव खलु उदकमासादयाम', तत खलु उदकम् अनासादयन्त'=अलभमानाः नो शक्नुमो राजगृहं समाप्तुम्, ' तण्ण ' तत्खलु=तस्मात् कारणात् खलु यूय मा हे देवानुप्रियाः ! जीवितात् व्यपरोपयत, मांस च शोणितं च ' आहारेह ' आहारयत, आहार्य=भुक्त्वा ' तेण आहारेण ' तेन आहारेण ' अविद्धत्था ' अविध्वस्ताः= शरीरनाशमप्राप्ता' सन्तः इमा सतः ' तओपच्छा ' तत पश्चात् इमामग्रामिका

वहा आकर के उसने अपने जेष्ट पुत्र धनदत्त को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-(एव खलु पुत्ता ! अम्हे सुसमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमी से अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण गवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाएमो-तण्ण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए) हे पुत्र सुनो अपने लोग सुसमा दारिका के निमित्त चिलातचोर के पीछे २ सब तरफ सब प्रकार से दौड़ते २ प्यास और भूख से दुःखी हो गये हैं हमने इस अग्राम वाली अटवी में पानी की मार्गणा और गवेषणा भी की-परन्तु वह मिला नहीं अतः पानी की प्राप्ति के अभाव में अब राजगृह नगर में पहुँचने के लिये हम असमर्थ बन चुके हैं। (तण्ण तुम्हे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इम अग्गामिय अडविं णित्थ

(एव खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाए मो-तण्ण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए)

હે પુત્ર ! સાભળ, અમે સુસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતા ભટકતા તરસ અને ભૂખથી દુ ખી થઇ ગયા છીએ અમોએ આ ગામ વગરની અટવીમા પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા પર કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શકયા નથી એથી હવે પાણીના અભાવમા અમે રાજગૃહ નગરમા પહોચી શકીશુ તેમ લાગતું નથી

(तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा अग्गामिय

रह ' निस्तरत=पारगच्छत, ' तचेव सव्व भणइ ' तदेवसर्वं भणति=यथा धन्य सार्थवाहो ज्येष्ठ पुत्रमवदत्, तथैवायमपि तदेव सर्वं कथयति, यावत् अर्थस्य धर्मस्य पुण्यस्य च आभागिनो भविष्यथ। ततः खलु धन्य सार्थवाह ' दोच्चे ' द्वितीय' पुत्रधनपालनामा एवमवदत्-मा खलु हे तात ! अस्माक ज्येष्ठ भ्रातर 'गुरु देवय ' गुरुदैवत=देव-गुरुसदृशम्, जीवितात् व्यपरोपयाम.=मारयाम', यूय खलु हे तात ! ' मम ' मा=धनपालनामान जीवितात् व्यपरोपयत यावत् अर्थाद्दिफलभाजो भविष्यथ। ' एव =अनेन प्रकारेण ' जाव पचमेपुत्ते ' यावत्

पहुच कर वहा अपने मित्रादि परिजनों के साथ मिल सके। तथा धन धर्म एव पुण्य के भोक्ता बन सके। "त चेव सव्व भणइ" इसका तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार धन्यसार्थवाह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र, धनदत्त से कहा-उसी प्रकार धनदत्त ने भी अपने पिता से वैसाही कहा-(तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी-माण ताओ ! अम्हे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो-तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामिय अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह) इसके बाद धन्यसार्थवाह से उसके द्वितीय पुत्र ने इस प्रकार कहा-हे तात ! आप हमारे गुरु देवतातुल्य ज्येष्ठ भाई को जीवन से रहित मत कीजिये किन्तु आप तो हे तात ! मुझे ही जीवितसे रहितकर दीजिये-और मेरे ही रक्त एव मास को आप खाईये पीईये-ताकि इस अग्रामिक अटवी से पार हो सके इत्यादि पहिले जैसा ही इसने

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકે। તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોકતા બની શકે। "त चेव सव्व भणइ" આનો અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાથવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યુ તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યુ

(तएण धण्ण सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी-माणं ताओ ! अम्हे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामि य अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા મોટા ભાઇને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માસને તમે ખાઓ પીઓ જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

सरक्षकाः पदस्थानापत्तेः ' सगोवगा ' सगोपका दुश्चरितप्रवृत्तेः, ' तं ' तत्=तस्मात् कारणात् ' कहण्णं ' कथं खलु=केन प्रकारेण खलु हे तात ! वयं युष्मान् जीवितात् व्यपरोपयामः=मारयामः, युष्माकं खलु मांसं च शोणितं च कथम् आहारयाम ? ' त ' तत्=तस्मात् यूयं खलु हे तात! मां धनदत्तनामानं जीवितात् व्यपरोपयत=मारयत मम मांसं च शोणितं च आहारयत. अग्रामिकाम् अटवीं ' णित्थ

पइट्ठावगा संरक्खगा सगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भ ण मस च सोणिय च आहारेमो अगामिय अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सइ) हे तात ! आप हमारे पिता है इसलिये आप मेरे लिये देव, गुरु जन के स्थान भूत हैं। नीति धर्म आदि में मुझे स्थापित करते रहते हैं। राज आदि समक्ष आप अपने पद पर मुझे बैठाते है इसलिये आप मेरे लिये स्थापक एव प्रतिष्ठापक हैं यथेच्छा प्रवृत्ति से आप हमारी सदा रक्षा करते रहते हैं इसलिये आप मेरे सरक्षक हैं, दुश्चरित-प्रवृत्ति से आप हमे रोकते रहते हैं इसलिये आप मेरे सगोपक हैं, तो कैसे मैं हे तात ! आप को जीवन से रहित कर सकता हूँ। और कैसे आप के शोणित और मास को खा सकता हूँ। इसलिये हे तात ! आप ही मुझे जीवन से रहित कर दीजीये और मेरे खून और मास को आप खाइये ताकि आप इस अग्रामिक अटवी को पार कर सके और राजगृह नगर

(तुब्भेण ताओ ! अम्ह पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा पइट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा त कहण्ण अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भ ण मस च सोणिय च आहारेमो अगामिय अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सइ)

હે તાત ! તમે અમારા પિતા છો, એથી તમે અમારા દેવ અને ગુરૂના સ્થાને છો તમે મને નીતિ ધર્મ વગેરેમા પ્રવૃત્ત પણ કરતા રહો છો રાજા વગેરેની સામે તમે પોતાના સ્થાને મને બેસાડો છો એથી તમે મારા સ્થાપક અને પ્રતિષ્ઠાપક છો યથેચ્છા પ્રવૃત્તિથી તમે મારી રક્ષા કરતા રહો છો એથી તમે મારા સરક્ષક છો, દુશ્ચરિત પ્રવૃત્તિથી તમે મને રોકતા રહો છો, એથી તમે મારા સગોપક છો તો આવી પરિસ્થિતિમા હે તાત ! હુ તમને કેવી રીતે જીવન રહિત બનાવી શકુ અને કેવી રીતે તમારા શોણિત અને માસનુ ભક્ષણ કરી શકુ ! એથી હે તાત ! તમે મુજ ધનદત્તને જ જીવન રહિત બનાવી દો અને મારા ખૂન અને માસનુ તમે ભક્ષણ કરો જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો અને રાજગૃહ નગરમા ત્યાં

रह ' निस्तरत=पारगच्छत, ' तचेव सव्व भणइ ' तदेवसर्वं भणति=यथा धन्य सार्थवाहो ज्येष्ठ पुत्रमवदत्, तथैवायमपि तदेव सर्वं कथयति, यावत् अर्थस्य धर्मस्य पुण्यस्य च आभागिनो भविष्यथ। ततः खलु धन्य सार्थवाह ' दोच्चे ' द्वितीय' पुत्रधनपालनामा एवमवदत्-मा खलु हे तात ! अस्माक ज्येष्ठ भ्रातर 'गुरु देवय ' गुरुदैवत=देव-गुरुसदृशम्, जीवितात् व्यपरोपयाम.=मारयाम', यूय खलु हे तात ! ' मम ' मा=धनपालनामान जीवितात् व्यपरोपयत यावत् अर्थादिफलभाजो भविष्यथ। ' एव =अनेन प्रकारेण ' जाव पचमेपुत्ते ' यावत्

पहुच कर वहा अपने मित्रादि परिजनों के साथ मिल सके। तथा धन धर्म एव पुण्य के भोक्ता बन सके। "त चेव सव्व भणइ" इसका तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार धन्यसार्थवाह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र, धनदत्त से कहा-उसी प्रकार धनदत्त ने भी अपने पिता से वैसाही कहा-(तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी-माण ताओ ! अम्हे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो-तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामिय अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह) इसके बाद धन्यसार्थवाह से उसके द्वितीय पुत्र ने इस प्रकार कहा-हे तात ! आप हमारे गुरु देवतातुल्य ज्येष्ठ भाई को जीवन से रहित मत कीजिये किन्तु आप तो हे तात ! मुझे ही जीवितसे रहितकर दीजिये-और मेरे ही रक्त एव मास को आप खाईये पीईये-ताकि इस अग्रामिक अटवी से पार हो सके इत्यादि पहिले जैसा ही इसने

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકે। તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોકતા બની શકે। " त चेव सव्व भणइ " આનો અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાથવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યુ તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યુ

(तएण धण्ण सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी-माण ताओ ! अम्हे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामि य अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા મોટા ભાઇને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માસને તમે ખાઓ પીઓ જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

पञ्चमः पुत्रः=तृतीयो धनदेवश्चतुर्थो धनगोपः, पञ्चमो धनरक्षितश्चाऽप्येवमेव । ततः इत्थं तेषां वचनश्रवणानन्तरं, खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'हियइच्छिय' हृदयेष्टम्=हृदयेप्सितं माता तान् पुत्रान् एवमवादीत्-मा खलु वयं हे पुत्राः ! एकमपि अस्माकं मध्येऽन्यमपि जीवितादू व्यपरोपयाम एतत् खलु सुसुमायाः दारिकायाः शरीरं 'णिप्पाण' निष्प्राणम्=प्राणरहितम्, 'णिच्चेट्ठ' निश्चेष्टं=चेष्टारहितम् 'जीवविप्पजढं' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्तीत्यर्थः, तच्छ्रेय=उचितं खलु हे पुत्राः 'अम्ह' अस्माकम् सुसुमायाः दारिकायाः मांसं च शोणितं च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तरं च खलु वयं तेन आहारेण 'अ

सय कहा (एव पचमे पुत्ते) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ धनगोपने एव पाचवे धनरक्षित ने भी कहा-(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता त पचपुत्ते एव वयासी) इस के बाद उस धन्यसार्थवाह ने पाचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन अपने पाचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा-(माण अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसण सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाण णिच्चेट्ठं जीवविप्पजढे-त सेय खलु पुत्ता ! अम्ह सुसमाए दारियाए मस च सोणिय च अहारेत्तए) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुसमादारिका का शरीर जो कि निष्प्राण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है-इसलिये हमे उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुसमदारिका का मास एव शोणित

તેણે પહેલાની જેમ જ બધુ કહ્યું (एव पचमे पुत्ते) આ પ્રમાણે જ તેને ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યું

(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता त पच पुत्ते एव वयासी)

ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્થવાહે પાચે પુત્રોની હૃદયની અભિલાષા જાણીને પોતાના તે પાચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(माणं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसण सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे-त सेय खलु पुत्ता ! अम्ह सुसमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेत्तए)

હે મારા પુત્રો ! તમારામાથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી પરતુ આ સુસમા દારિકાનુ શરીર કે જે નિષ્પ્રાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ બની ગયુ છે-એટલા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ યોગ્ય છે કે આપણે આ સુસમા દારિકાના માસ અને શોણિતને ખાઇએ

विद्धत्था समाणा ' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्त राजगृह ' सपाउणिस्सामो ' समाप्स्याम । ततः खलु ते पञ्चपुत्रा धन्येन सार्थवाहेन एवमुक्ताः सन्तः ' एयमट्ठ ' एतमर्थम् पूर्वोक्तरूपम् ' पडिसुणेंति ' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । तत खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रै सार्द्धम् ' अरणिं ' अरणिं यस्मिन् मथ्यमानेऽग्निरुत्पद्यते तत्काष्ठम् 'करेइ' करोति=सगृह्णाति, कृत्वा 'सरगं' सरकम्=निर्मन्थनकाष्ठ करोति=आनयति कृत्वा, सरकेण अरणिं मन्थति=घर्षयति मथित्वा, ' अग्गिं पाडेइ ' पातयति=मन्थनवशादग्निमुत्पादयति ' पाडित्ता ' पात

खावें। (तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं सपाउणिस्सामो-तएण ते पच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेण एववुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेति) इस से हमलोग उस आहार से शरीर नाश को अप्राप्त होकर राजगृह नगर में पहुँच जावेंगे। इस प्रकार धन्यसार्थवाह के द्वारा कहे गये उन पाचों पुत्रो ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को स्वीकार कर लिया। (तएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिंकरेइ, करित्ता सरगंच करेइ, करित्ता सरएण अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं सधुक्खेइ, सधुक्खित्ता दारुयाइं परिक्खवेइ परिक्खवित्ता अग्गिं पज्जालेइ पज्जालित्ता सुसमाए मसं च सोणियं च आहारेति) इस के बाद धन्यसार्थवाह ने पांचो पुत्रों के साथ मिलकर अरणिकाष्ठ को एकत्रित किया। एकत्रित कर के फिर वह सरक काष्ठ को निर्मथनकाष्ठ को ले आया-उसे लेकर के उसने उससे अरणि का घर्षण किया। इस तरह घर्षण से अग्नि उत्पन्न हो गई। अग्नि के

(तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं सपाउणिस्सामो तएण ते पच पुत्ता धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्तासमाणा एयमट्ठं पणिसुणेंति)

એથી આપણે બધા આ આહારથી શરીર નાશથી ઊગરી જઈને રાજગૃહ નગરમા પહોચી જઇશુ આ પ્રમાણે ધન્ય સાર્થવાહ વડે કહેવાયેલા પાચે પુત્રોએ ધન્ય સાર્થવાહની તે વાતને સ્વીકારી લીધી

(तएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता सरएण अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं सधुक्खेइ, सधुक्खित्ता दारुपाइं परिक्खवेइ, परिक्खवित्ता अग्गिं पज्जालेइ, पज्जालित्ता सुसमाए दारियाए मसं च सोणियं च आहारेंति)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહે પાચે પુત્રોની સાથે મળીને અરણિ કાષ્ઠને એકઠુ કર્યું એકઠુ કરીને તેઓ સરક કાષ્ઠને-નિર્મંથન કાષ્ઠને લઈ આવ્યા તેને લઇને તેણે તેથી અરણિકા કાષ્ઠનુ ઘર્ષણ કર્યું આ પ્રમાણે ઘર્ષણથી અગ્નિ

पञ्चमः पुत्रः=वतीयो धनदेवश्चतुर्थो धनगोपः, पञ्चमो धनरक्षितश्चाऽप्येवमवदत् । ततः इत्थं तेषां वचनश्रवणानन्तरं खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'हियइच्छिय' हृदयेप्सितम्=हृदयेप्सितं ज्ञात्वा तान् पुत्रान् एवमवादीत्-मा खलु यूयं हे पुत्राः ! एकमपि अस्माकं मध्येऽप्येकमपि जीवितादव्यपरोपयाम एतत् खलु सुसुमायाः दारिकायाः शरीरं 'णिप्पाण' निष्प्राणम्=प्राणरहितम्, 'णिच्चेट्ठ' निश्चेष्टम्=चेष्टारहितम् 'जीवविप्पजढं' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्तीत्यर्थः, तच्छ्रेय=उचितं खलु हे पुत्राः 'अम्ह' अस्माकम् सुंसुमायाः दारिकायाः मांसं च शोणितं च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तरं च खलु वयं तेन आहारेण 'अ

सप कहा (एव पचमे पुत्ते) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ धनगोपने एव पांचवे धनरक्षित ने भी कहा-(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचण्हं पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता त पचपुत्ते एव वयासी) इस के बाद उस धन्यसार्थवाह ने पाचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन अपने पाचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा-(माण अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसण सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाए णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे-त सेय खलु पुत्ता ! अम्ह सुसमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेत्तए) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुसमादारिका का शरीर जो कि निष्प्राण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है-इसलिये हमें उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुसमदारिका का मास एव शोणित

તેણે પહેલાની જેમ જ બધુ કહ્યુ (एव पचमे पुत्ते) આ પ્રમાણે જ તેને ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યુ

(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता त पच पुत्ते एव वयासी)

ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્થવાહે પાચે પુત્રોની હૃદયની અભિલાષા જાણીને પોતાના તે પાચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(माण अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसण सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे-त सेय खलु पुत्ता ! अम्ह सुसमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेत्तए)

હે મારા પુત્રો ! તમારામાથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી પરતુ આ સુસમા દારિકાનુ શરીર કે જે નિષ્પ્રાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ બની ગયુ છે-એ લા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ યોગ્ય છે કે આપણે આ સુસમા દારિકાના માસ અને શોણિતને ખાઇએ

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे ' विगयसोगे ' विगतशोक =सुसुमामरणजनितशोक-रहितो जातश्चास्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे गुणासिलए चेइए समोसढे। से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पठवइए, एक्कारसंगवी। मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। जहा वि य णं जम्बू! धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मससोणिए आहारिए, नन्नत्थ एगाए रायगिहं सपावणट्ठयाए। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियठवस्स वा नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा आहारे आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविआण अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ ।

एव खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥सू०९॥

॥ अट्ठारसम अज्झयण समत्त ॥

टीका—' तण कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरो गुणशिलके चैत्ये ' समोसढे ' समवसृत.=तीर्थंकरपरम्परया

सुसमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य कियेजाते –वे सब भी उन्होने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए।सू०८।

લૌકિક કૃત્યો કરવા જોઇએ તે સર્વે તેમણે પતાવ્યા અને ધીમે ધીમે તેઓ શોકરહિત પણ બની ગયા ॥ સૂત્ર ૮ ॥

यित्वा=उत्पाद्य अग्निं ' संधुक्खेइ ' संधुक्षयति=उद्दीपयति, संधुक्ष्य=उद्दीप्य 'दारुयाइं ' दारुकाणि=इन्धनानि तत्र ' परिक्खिवइ ' परिक्षिपति, परिक्षिप्य, अग्निं मज्जालयति, मज्जालय, सुसुमाया दारिकाया मांसं च शोणितं च ' आहारेइ ' आहारयति । अनन्तरं तेन आहारेण ' अविद्धत्था ' अविध्वस्ताः=शरीरेण समर्थाः सन्तो राजगृहं नगरं समागताः ' मित्तणाई० अभिसमण्णागया ' मित्रज्ञातिं=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनं सह 'अभिसमन्वागताः' अभिसमन्वागता'= समिलिताः सन्तः तस्य च विपुलस्य 'धणकणगरयण जाव' धनकनकरत्न यावत् =धनकनकरत्नादिकस्य ' आभागी जाया यावि होत्था ' आभागिनी जाताश्चाप्यभवन् । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः सुसुमायाः दारिकायाः बहूनि लौकिकानि

उत्पन्न होने पर उसने फिर उसे धौंका-उद्दीपित किया-जब वह उद्दीपित हो चुकी-तब उसने उसमें लकडियों को लगाया-। इस तरह की क्रिया से जब अग्नि अच्छी तरह प्रज्वलित हो चुकी-तब उसमें सुसमा दारिका के मास को और खून को भूजा-भूजकर उसे सबने खाया पीया (तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं सपत्ता मित्त णाइ० अभिसमण्णागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी-जाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुसमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगय सीए यावि होत्था) इस प्रकार उस आहार की सहायता से अविध्वस्त शरीर होकर वे वहां से चल कर राजगृह नगर में आ गये। वहां आकार वे अपने मित्रज्ञाति आदि परिजनों से खूब हिले मिले। एवं धनकनक आदि द्रव्य के भोक्ता भी बन गये।

ઉત્પન્ન થઈ ગયો અગ્નિ ઉત્પન્ન થયા બાદ તેણે તેને ઉદ્દીપિત કર્યો જ્યારે તે ઉદ્દીપિત થઇ ગયો ત્યારે તેણે તેમા લાકડીઓ મૂકી આ રીતે જ્યારે સારી રીતે અગ્નિ પ્રજ્વલિત થઇ ગયો ત્યારે તેમા સુસમા દારિકાના માંસને અને લોહીને શેકયા, શેકયા બાદ તેને બધાએ ખાધા-પીધા

(तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं सपत्ता, मित्तणाइ० अभिसमणागया, तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागीजाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुसमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगय सीए यावि होत्था)

આ પ્રમાણે તે આહારની સહાયતાથી અવિનષ્ટ શરીરવાળા થઈને તેઓ ત્યાથી રવાના થઇને રાજગૃહ નગરમા આવી ગયા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોની સાથે ખૂબ આનદ-પૂર્વક મળ્યા, અને ધન, કનક વગેરે દ્રવ્યોને ભોગવવા લાગ્યા સુસમા દારિકાના મ ૂ । જેટલા

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे ' विगयसोगे ' विगतशोक =सुसुमामरणजनितशोक-रहितो जातश्चास्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे। से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए, एक्कारसंगवी। मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। जहा वि य णं जम्बू! धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मससोणिए आहारिए, नन्नत्थ एगाए रायगिहं सपावणट्ठयाए। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स वा नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा आहारे आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविआण अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ ।

एव खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥सू०९॥

॥ अट्ठारसम अज्झयण समत्त ॥

टीका—' तण कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरो गुणशिलके चैत्ये ' समोसढे ' समवसृत'=तीर्थंकरपरम्परया

सुसमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य कियेजाते -वे सब भी उन्होने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए।सू०८।

લૌકિક કૃત્યો કરવા જોઇએ તે સર્વે તેમણે પતાવ્યા અને ધીમે ધીમે તેઓ શોકરહિત પણ બની ગયા ॥ સૂત્ર ૮ ॥

समागतः। अनन्तर स धन्यः सार्थवाह सपुत्रो धर्म श्रुत्वा प्रव्रजित', प्रव्रज्यानन्तरम् ' एक्कारसगी ' एकादशाङ्गविद्=एकादशाङ्गवित्रो जातः ' मासियाए ' मासिक्या सलेखनया कालं कृत्वा ' सोहम्मे' सौधर्म कल्पे 'उपपन्नः'। पुनः तत श्च्युतः महाविदेहवर्षे' सिज्झिहिइ' सेत्स्यति-मुक्ति प्राप्स्यति। सम्प्रति धन्यसार्थवाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिन सम्बोध्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह ' जइ वि इत्यादिना-

'तेण कालेण तेण समएण इत्यादि।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलए चेइए समोसढे, से ण धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एक्कारसगी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये। उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्थवाह अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया। प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशागों का ज्ञाता भी हो गया। अन्त समय मे उसने एक मास की सलेखना धारणकर काल अवसर काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-। वहा से चव कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा। इस धन्यसार्थवाह के दृष्टान्त से जबू स्वामीको सबोधितकर के श्री

तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (समणे भगव महावीरे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીર

(गुणसिलए चेइए समोसढे। सेण धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एक्कारस गी-मासियाए स लेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ)

ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળીને તે ધન્ય સાર્થવાહ પેાતાના પાચે પુત્રેાની સાથે તેમની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગયેા પ્રવ્રજિત થઇને તે ધીમે ધીમે એકાદશ (અગિયાર) અ ગેાનેા જ્ઞાતા પણ થઇ ગયેા છેવટે મૃત્યુ સમયે એક માસની સ લેખના ધારણ કરીને કાળ અવ સરે તેણે કાળ કર્યો તે તેના પ્રભાવથી સૌધર્મ કલ્પમા ઉત્પન્ન થઈ ગયેા ત્યાથી ચવીને હવે તે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા મુક્તિ પ્રાપ્ત કરશે આ ધન્ય સાર્થ વાહના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ જ બૂ સ્વામીને સ બોધિત

जहावि य ण' यथाऽपि च खलु=येन प्रकारेण खलु हे जम्बूः ! धन्येन सार्थवाहेन नो वर्णहेतोः = नो रूपहेतो. बलहेतोः=नो विषयहेतो. सुसुमाया दारिकाया मांस-शोणितमाहारितम्, एगाए रायगिहसंपावणट्ठयाए' एकस्य राजगृह सम्प्रापणार्थताया अन्यत्र न, किन्तु-अह राजगृह समाप्नुयाम् इति हेतोरेव तेन पुत्रैः सह तद् आहारितमिति भाव ।

भगवानाह—' एवामेव ' एवमेव=अनेन प्रकारेणैव ' समणाउसो ' हे आयुष्मन्तः श्रमणाः योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा अस्य वान्तास्रवस्य पित्ता-

सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा-(जहा वि य ण जम्बू ! धण्णेण सत्थवाहेण णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए-एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गंथीवा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्स विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ आहर अहारेइ, नन्नत्थएगाए सिद्धिगमणसपावणट्ठयाए) हे जम्बू ! जिस तरह धन्यसार्थवाह ने अपने शरीर में कान्ति विशेष बढाने के लिये, बल बढाने के लिये, अथवा विषय सेवन की शक्ति बढाने के लिये सुसुमा दारिका का मास एव शोणित नही खाया। किंतु मैं पुत्रों के सहित राजगृह नगर में पहुँच जाऊँ इसी एक अभिप्राय से सुसुमा दारिका का अपने पुत्रों सहित मास शोणित सेवन किया-इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमरा निर्ग्रन्थ श्रमण जन अथवा श्रमणी जन है-वह इस वान्तास्रववाले, पित्तास्रववाले, शुक्रास्र-

કરીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(जहा वि य ण जम्बू ! धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए ममसोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिह, संपावणट्ठयाए एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्से विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा आहार आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसपावणट्ठयाए)

હે જબૂ ! જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના શરીરમાં કાંતિ વિશેષની વૃદ્ધિ કરવા માટે બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા વિષય સેવનની શક્તિના વર્ધન માટે સુસુમા દારિકાના માંસ અને શોણિત નહિ ખાધા, પણ પુત્રો સહિત હું રાજગૃહ નગરમા પહોચી જાઉં આ એક જ મતલબથી પોતાના પુત્રોની સાથે સુસુમા દારિકાના માંસ-શોણિત સેવન કર્યો આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણજન અથવા શ્રમણીજનો છે તેઓ આ વાંતા

समागतः। अनन्तर स धन्यः सार्थवाहः सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रज्यानन्तरम् 'एक्कारसगी' एकादशाङ्गविन्=एकादशाङ्गाभिज्ञो जातः 'मासियाए' मासिक्या सलेखनया कालं कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्मे कल्पे 'उपपन्नः'। पुनः तत च्युतः महाविदेहे वर्षे 'सिज्झिहिइ' सेत्स्यति-मुक्तिं प्राप्स्यति। सम्प्रति धन्यसार्थवाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिनं सम्बोध्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह 'जइ वि इत्यादिना-

'तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि।

टीकार्थं—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलए चेइए समोसढे, से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एक्कारसगी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये। उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्थवाह अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया। प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशागों का ज्ञाता भी हो गया। अन्त समय मे उसने एक मास की सलेखना धारणकर काल अवसर काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-। वहा से चव कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा। इस धन्यसार्थवाह के दृष्टान्त से जम्बू स्वामीको सबोधितकर के श्री

तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (समणे भगवं महावीरे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીર

(गुणसिलए चेइए समोसढे। सेणं धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एक्कारसगी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ)

ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળીને તે ધન્ય સાર્થવાહ પોતાના પાચે પુત્રોની સાથે તેમની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગયો પ્રવ્રજિત થઇને તે ધીમે ધીમે એકાદશ (અગિયાર) અંગોનો જ્ઞાતા પણ થઇ ગયો છેવટે મૃત્યુ સમયે એક માસની સલેખના ધારણ કરીને કાળ અવસરે તેણે કાળ કર્યો તે તેના પ્રભાવથી સૌધર્મ કલ્પમા ઉત્પન્ન થઇ ગયો ત્યાથી ચવીને હવે તે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા મુક્તિ પ્રાપ્ત કરશે આ ધન્ય સાર્થવાહના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ જબૂ સ્વામીને સબોધિત

सुधर्मास्वामीप्राह— एव ' अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण 'जाव सपत्तेण ' यावत् सप्राप्तेन=मोक्षगतेन अष्टादशस्य ज्ञाताध्ययनस्य ' अयमट्ठे ' अयमर्थ =पूर्वोक्तरूपोऽर्थः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, ' त्ति वेमि ' इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ९ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायामष्टादशम ययन समाप्तं ॥ १८ ॥

जबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि) इस प्रकार से हे जबू! श्रमण भगवान् महावीरने जो सिद्धि गति नमक स्थान को प्राप्त हो चुके है इस अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा जो मैंने कहा है वह उन्हीं के श्री मुख निर्गतवाणी को सुनकर ही कहा है-अपनी ओर से इसमें कुछ भी मिलाकर नही कहा है ॥ सू० ९ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत

" ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका

अठारहवां अध्ययन समाप्त ॥ १८ ॥

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि)

આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકયા છે-આ અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આવુ જે મે કહ્યું છે, તે તેમના જ શ્રીમુખથી નીકળેલી વાણીને સાભળીને જ કહ્યુ છે પોતાના તરફથી ઉમેરીને મે કહ્યુ નથી ॥ સૂત્ર ૯ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત

" જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર " ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ

અઢારમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

सोणियस्य सुक्कासयस्य 'जाव आहत विप्पणट्ठियव्वस्स' यावत् अवश्यं विपत्या ज्यस्य औदारिकशरीरस्य नो वर्णहेतो वा, नो रूपहेतोर्वा नो बलहेतोर्वा, नो विषयहेतोर्वा, आहारमाहरति=आहार करोति, 'एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए' एकस्याः सिद्धिगमनसंपापणार्थतायाः 'नन्नत्थ' अन्यत्र न, मोक्षप्राप्तिरूप प्रयो जन विहाय वर्णादिप्रयोजनेन आहार नाहरतीति भावः। स=निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा खलु 'इहभवे चेव' इहभवे एव=अस्मिन जन्मन्येव बहूना श्रमणानां बहूनां श्रमणीना बहूना श्रावकाणा बहूना श्राविकाणाम् 'अच्चणिज्जे' अर्चनीय = आदरणीय 'जाव वीइवइस्सइ यावद् व्यतिव्रजिष्यति=चातुरन्तसंसारकान्तार मुल्लङ्घयिष्यति-संसारपार गमिष्यतीत्यर्थः।

वाले, यावत् अवश्य परित्याग होने की योग्यतावाले इस औदारिक शरीर में कान्ति विशेष बढाने के लिये बल बढाने के लिये, अथवा विषय की प्रवृत्ति चालू रखने के लिये आहार नहीं लेता है किन्तु-एक-केवल सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त करने के लिये ही आहार लेता हैं। मोक्ष प्राप्तिरूप प्रयोजन को छोड़कर और किसी कान्ति आदि बढाने के अभिप्रायरूप प्रयोजन से निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन अहार नहीं लिया करते हैं-(सेण) ऐसे निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन (इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावयाण बहूण सावियाण अच्च णिज्जे जाव वीइवइस्सइ) इस भव में ही अनेक श्रमण, श्रमणी, जनों द्वारा तथा श्रावक श्राविकाओ द्वारा अर्चनीय-आदरणीय यावत् इस चतुर्गतिरूप संसार कान्तार को पारकरने वाले होते हैं। (एव खलु

સ્રવવાળા, પિત્તાસ્રવવાળા, શુક્રાસ્રવવાળા યાવત્ શોણિત નષ્ટ થનારા આ ઔદારિક શરીરમા કાંતિ વિશેષની વૃદ્ધિ માટે, બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા તો વિષયની પ્રવૃત્તિ ચાલુ રાખવા માટે આહાર લેતો નથી પણ ફક્ત એક જ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવા માટે જ આહાર ગ્રહણ કરે છે મોક્ષપ્રાપ્તિ રૂપ પ્રયોજન વગર બીજી કોઇ કાંતિ વગેરેની વૃદ્ધિની અભિલાષા રાખીને નિર્ગ્રંથ-શ્રમણીજન આહાર ગ્રહણ કરતા નથી (સેણ) એવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ શ્રમણીજનો—

(इहभवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूण सावियाण अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ)

આ ભવમા જ ઘણા શ્રમણ શ્રમણીજનો વડે તેમજ શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્ચનીય, આદરણીય યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારને પાર કરી જનારા હોય છે

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूण वीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएण इहेव जंबूदीवे दीवे पुव्वविदेहेवासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेण उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णाम विजए पन्नत्ते। तत्थ ण पुंडरिगिणी णाम रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्ख देवलोगभूया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तीसेण पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे। तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था, तस्स ण पउमावई णाम देवी होत्था। तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, त जहा—पुंडरीए य कंडरीए य, सुकुमालपाणिपाया० । पुंडरीए जुवराया। तेणं कालेणं तेणं समएण थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए धम्म सोच्चा, पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएण थेरा बहिया जणवयविहार विहरति, तएण से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे ॥ सू० १ ॥

अथ एकोनविंशतितममध्ययनम्—

गतमष्टादशमध्ययनम्, साम्प्रतमेकोनविंशतितम व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सह अयमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन्नध्ययने असंवृतास्रवस्य तद्विपरीतस्य च अनर्थार्थौ उक्तौ, इहतु चिर संवृतास्रवोऽपि यः पश्चाद्विपर्यस्तो भवेत्तस्य अल्पकालं संवृतास्रवस्य च अनर्थार्थौ मोच्येते, इत्येवं सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिसूत्रम्-' जइणं भंते ' इत्यादि ।

॥ पुण्डरीक-कण्डरीक नाम का उन्नीसवा अध्ययन प्रारम्भ ॥

अठारहवां अध्ययन समाप्त हो चुका-अब १९ वां अध्ययन प्रारम्भ होता है-इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार का सम्बन्ध है पूर्व अध्ययन में असंवृतास्रव अथवा संवृतास्रव वाले प्राणी को अर्थ एव अनर्थ की प्राप्ति होना समर्थित किया गया है-अर्थात् असंवर वालेको अनर्थ की प्राप्ति होती है और संवरवाले को इष्ट अर्थ की प्राप्ति होती है । अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि जिस प्राणी ने चिरकाल से आस्रवको संवृत कर दिया है-परन्तु यदि वह पीछे से असंवृतास्रव वाला बन जाता है तो उसके अनर्थ की प्राप्ति तथा अल्प काल भी जिसने आस्रव को संवृतकर दिया है उसके अर्थ की प्राप्ति होती है। इस संबंध को लेकर प्रारम्भ किये गये इस अध्ययन का यह सर्व प्रथम सूत्र है।

પુણ્ડરીક-કણ્ડરીક નામે ઓગણીસમુ અધ્યયન પ્રારંભ

અઢારમુ અધ્યયન પુરું થઈ ગયુ છે હવે ઓગણીસમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે આ અધ્યયનનો એના પૂર્વના અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પૂર્વ અધ્યયનમા અસંવૃતાસ્રવ અથવા સંવૃતાસ્રવવાળા પ્રાણીને અર્થ અને અનર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વાતનુ સમર્થન કરવામા આવ્યુ છે એટલે કે અસંવરવાળાઓને અનર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે અને સંવરવાળાઓને ઇષ્ટ-અર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે હવે આ અધ્યયનમા સૂત્રકાર આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરી રહ્યા છે કે જે પ્રાણીએ ચિરકાળથી એટલે કે બહુ લાંબા વખતથી આસ્રવને સંવૃત કરી દીધો છે, પરંતુ જો તે પાછળથી એટલે કે ભવિષ્યમા અસંવૃત્તાસ્રવવાળો બની જાય છે તો તેને અનર્થની પ્રાપ્તિ તેમજ થોડા વખત સુધી પણ જેણે આસ્રવને સંવૃત કરી દીધો છે તેને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે આ વાતને લઈને આરંભાએલા આ અધ્યયનનુ આ પહેલુ સૂત્ર છે—

पाश्चात्ये=पश्चिमेभागे 'एगसेलगस्स' एकशैलकस्य=मध्यजम्बूद्वीपमेरुपर्वतसमीप स्थस्य एक शैलकनामकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरत्थिमेण' पौरस्त्ये=पूर्वस्या दिशि 'एत्थण' अत्र खलु पुष्कलावती नाम विजयः प्रज्ञप्तः। तत्र खलु पुण्डरीकिणी नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, सा 'णवजोयणवित्थिण्णा' नवयोजनविस्तीर्णा = नवयोजनविस्तारवती 'दुवालसजोयणायामा' द्वादश योजनायामा=द्वादशयोजनानि आयामो दैर्घ्ये यस्याः सा=द्वादशयोजनदीर्घेत्यर्थ, पुन 'जाव पच्चक्ख देवलोयभूया यावत् प्रत्यक्षदेवलोकभूता=साक्षात् स्वर्गसदृशा पुनः पासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा, प्रतिरूपा। तस्या खलु पुण्डरीकिण्याः

पुरत्थीमेण एत्थण पुक्खलाइणाम विजए पण्णत्ते) इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं-सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल-और उस समय में इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में पूर्व विदेह क्षेत्रमें, शीत महानदी के उत्तरदिग्वर्ती तीर पर स्थित नील पर्वत के दक्षिण दिग्भाग में, तथा उत्तर दिग्वर्ती शीतामुखवनषंड के पश्चिम भाग में, तथा एक शैलक नाम वाले वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशा में पुष्कलावती इस नाम का विजय है। शीतामुखवनषंड का तात्पर्य यह है-कि जहां से शीतानदी नीकली है उस उद्गमस्थान पर एक वनषंड है। मध्य जम्बूद्वीप और मेरूपर्वत के समीप में रहा हुआ एक शैलक नाम का वक्षस्कार पर्वत है।-(तत्थण पुंडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) उस

सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेण एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण एत्थण पुक्खलावइ णाम विजए पण्णत्ते)

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ! સાંભળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે આ જંબૂદ્વીપ નામક દ્વીપમા પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમા, શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના દક્ષિણ દિગ્ભાગમા તેમજ ઉત્તર દિશામા આવેલા સીતા મુખવનષંડના પશ્ચિમ ભાગમા, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામા પુષ્કલાવતી નામે એક વિજય છે સીતા મુખવન-ષંડનો અર્થ આમ સમજવો જોઇએ કે જ્યાથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનષંડ છે મધ્ય જંબૂદ્વીપ અને મેરૂપર્વતની પાસે આવેલો એકશૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(तत्थण पुंडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णव जोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा)

टीका—' जइण भंते ' इत्यादि। यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन अष्टादशस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः, पुनः खलु हे भदन्त ! एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्त ?। इति जम्बूस्वामी प्रश्नान्तरं सुधर्मास्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव ' जम्बूदीवे दीवे ' जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे ' पुव्वविदेहवासे ' पूर्वविदेहे वर्षे सीताया महानद्याः ' उत्तरिल्ले=उत्तरदिक् स्थिते कूले=तीरे ' नीलवंतस्स दाहिणेणं ' नीलवतः पर्वतस्य दक्षिणेभागे ' उत्तरिल्लस्स ' उत्तरीयस्य=उत्तरदिक् स्थितस्य ' सीयामुहवणसण्डस्स ' सीतामुखवनषण्डस्य= सीताया नद्या यन्मुखमुद्गमस्थान, तत्र यद् वनषण्डम् तस्य, ' पच्चत्थिमेणं '

' जइण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं ' इत्यादि !

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (जइण भंते समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक मुक्तिस्थान को प्राप्त कर चुके हैं अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है-तो उन्हीं श्रमण भगवान् महावीरने १९ वें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव-अर्थ निरूपित किया है ? (एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बुदीवे दीवे पुव्वविदेहवासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स

' जइण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं —

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે

(जइण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?)

હે ભદન્ત ! જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામક મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધુ છે-અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबू दीवे दीवे पुव्वविदेहवासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स [illegible] उत्तरिल्लस्स

पाश्चात्ये=पश्चिमेभागे 'एगसेलगस्स' एकशैलकस्य=मध्यजम्बूद्वीपमेरुपर्वतसमीपस्थस्य एक शैलकनामकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरत्थिमेण' पौरस्त्ये=पूर्वस्या दिशि 'एत्थण' अत्र खलु पुष्कलावती नाम विजयः प्रज्ञप्तः। तत्र खलु पुण्डरीकिणी नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, सा 'णवजोयणवित्थिण्णा' नवयोजनविस्तीर्णा = नवयोजनविस्तारवती 'दुवालसजोयणायामा' द्वादश योजनायामा=द्वादशयोजनानि आयामो दैर्घ्यं यस्याः सा=द्वादशयोजनदीर्घेत्यर्थ, पुन 'जाव पच्चक्ख देवलोयभूया यावत् प्रत्यक्षदेवलोकभूता=साक्षात् स्वर्गसदृशा-पुनः मासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा, प्रतिरूपा। तस्या खलु पुण्डरीकिण्याः

पुरत्थीमेण एत्थण पुक्खलावइणाम विजए पण्णत्ते) इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं-सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल और उस समय मे इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में पूर्व विदेह क्षेत्रमें, शीत महानदी के उत्तरदिग्वर्ती तीर पर स्थित नील पर्वत के दक्षिण दिग्भाग में, तथा उत्तर दिग्वर्ती शीतामुखवनषड के पश्चिम भाग में, तथा एक शैलक नाम वाले वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशा में पुष्कलावती इस नाम का विजय है। शीतामुखवनषड का तात्पर्य यह है-कि जहा से शीतानदी निकली है उस उद्गमस्थान पर एक वनषड है। मध्य जम्बूद्वीप और मेरूपर्वत के समीप में रहा हुआ एक शैलक नाम का वक्षस्कार पर्वत है।-(तएण पुडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) उस

सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेण एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण एत्थण पुक्खलावइ णाम विजए पण्णत्ते)

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ! સાભળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે આ જંબૂદ્વીપ નામક દ્વીપમા પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમા, શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના દક્ષિણ દિગ્ભાગમા તેમજ ઉત્તર દિશામા આવેલા સીતા મુખવનખંડના પશ્ચિમ ભાગમા, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામા પુષ્કલાવતી નામે એક વિજય છે સીતા મુખવન-ખંડનો અર્થ આમ સમજવો જોઇએ કે જ્યાથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનખંડ છે મધ્ય જંબૂદ્વીપ અને મેરૂપર્વતની પાસે આવેલો એકશૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(तत्थण पुडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णव जोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा)

नगर्याः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नलिनीवनं नाम उद्यानम् । तत्र खलु पुण्डरीकिण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजाऽऽसीत् । तस्य खलु पद्मावती नाम देवी आसीत् । तस्य खलु महापद्मस्य राज्ञः पुत्रौ पद्मावत्या देव्या आत्मजौ द्वौ कुमारौ आस्ताम् । 'तं जहा' तद्यथा तयोर्नामरूपे, तदाह-'पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया' पुण्डरीकश्च कण्डरीकश्च सुकुमारपाणिपादौ कोमलकरचरणौ । तयोर्मध्ये पुण्डरीको युवराजाऽऽसीत् । तस्मिन् काले तस्मिन समये 'थेरागमण'

पुष्कलावती विजय में पुंडरी किनी नाम राजधानी थी। यह नव योजन विस्तारवाली तथा १२ योजन की लंबी है यह साक्षात स्वर्ग जैसी प्रतीत होती है। प्रासादीयचित्त एव अन्तःकरण को यह प्रसन्न करने वाली है, दर्शनीय-नेत्रों को तृप्ति करने वाली है, अभिरूप-असाधारण रचना से युक्त हैं एव प्रतिरूप है-इसके जैसी और दूसरी कोई नगरी नहीं है ऐसी। (तीसेणं पुंडरिगीणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जाणे-तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था-तस्सणं पउमावईणामं देवी होत्था, तस्स णं महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था) उस पुंडरीकिणी नगरी के उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग में नलिनीवन नाम का एक उद्यान था। उस पुंडरीकिणी राजधानी में महापद्मनाम का एक राजा रहता था। उसकी देवी का नाम पद्मावती थो। उस महापद्म राजा के यहा पद्मावती की कुक्षि से उत्पन्न हुए दो कुमार थे (तं जहा पुंडरीए य, कंडरीए य-सुकुमालपाणि पाया० । पुंडरीए जुवराया तेणं कालेणं

તે પુષ્કલાવતી વિજયમા પુંડરીકિની નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બાર યોજન જેટલી લાબી છે તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્ત કરણને તે પ્રસન્ન કરનારી છે, દર્શનીય-આખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ) રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ-એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવા છે

(तीसेणं पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जाणे-तत्थणं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था-तस्सणं पउमावईणामं देवी होत्था, तस्सणं महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था)

તે પુંડરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમા નલિનીવન નામે એક ઉદ્યાન હતો તે પુંડરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો હતો તેની રાણીનુ નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્મવતી દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા

स्थविरागमन=तस्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने स्थविराणामागमनमभूत् । महापद्मो राजा धर्मं श्रोतुं निर्गतः, धर्मं श्रुत्वा सञ्जातवैराग्यः पुण्डरीकं राज्ये स्थापयित्वा प्रव्रजितः । अनन्तरं पुण्डरीको राजा जातः, कण्डरीको युवराजः । महापद्मोऽनगारः चतुर्दशपूर्वाणि अधीते । ततः खलु स्थविरा बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति । ततः खलु स महापद्मो बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा यावद् सिद्धः॥सू० १॥

तेण समएण थेरागमण, महापउमे राया णिग्गए, धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया । महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएणं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे) उनके नाम इस प्रकार है-१ पुंडरीक और दूसरा कंडरीक-ये दोनो पुत्र सुकुमार करचरणवाले थे । पुंडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था । उस काल में और उस समय में वहां स्थविरों का आगमन हुआ । महापद्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर नलिनीवन उद्यान में आये । वहां धर्म का उपदेश सुनकर उन्हें वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया-सो वे पुंडरीक को राज्य में स्थापितकर दीक्षित हो गये । पुंडरीक राजा बन गया-और कंडरीक युवराज हो गया । महापद्मराजर्षि ने चौदह पूर्वों का अध्ययन कर लिया । इसके बाद वहां से स्थविरों ने

(तं जहा-पुंडरीए य, कंडरीए य-सुकुमालपाणिपाया० । पुंडरीए जुवराया तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए, धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महा० पउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएणं थेरा बहिया, जणवयविहारं विहरति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे)

તેમના નામો આ પ્રમાણે છે-૧ પુંડરીક, અને ૨ કંડરીક આ બને પુત્રો સુકોમળ હાથ-પગવાળા હતા રાજાએ પુંડરીકને યુવરાજપદ પ્રદાન કર્યું હતું તે કાળે અને તે સમયે ત્યાં સ્થવિરોનું આગમન થયું મહાપદ્મ રાજા ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળીને નલિનીવન ઉદ્યાનમાં આવ્યો ત્યાં ધર્મોપદેશ સાંભળીને તેને વૈરાગ્યભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયો છેવટે પુંડરીકને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તેઓ દીક્ષિત થઈ ગયા પુંડરીક રાજા થઈ ગયો અને કંડરીક યુવરાજ થઈ ગયો મહાપદ્મ રાજર્ષિએ ચૌદ પૂર્વોનું અધ્યયન કરી લીધું ત્યારપછી સ્થવિરો ત્યાંથી બહાર જનપદોમાં વિહાર

नगर्याः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नलिनीवन नाम उद्यानम् । तत्र खलु पुण्डरीकिण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजाऽऽसीत् । तस्य खलु पद्मावती नाम देवी आसीत् । तस्य खलु महापद्मस्य राज्ञः पुत्रौ पद्मावत्या देव्या आत्मजौ द्वौ कुमारौ आस्ताम् । 'त जहा' तयथा तयोर्नामरूपे, तद्यथा-'पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमाल पाणिपाया' पुण्डरीकश्च कण्डरीकश्च सुकुमारपाणिपादौ कोमलकरचरणौ । तयो र्मध्ये पुण्डरीको युवराजाऽऽसीत् । तस्मिन् काले तस्मिन समये 'थेरागमण'

पुष्कलावती विजय में पुंडरी किनी नाम राजधानी थी। यह नव योजन विस्तारवाली तथा १२ योजन की लंबी है यह साक्षात स्वर्ग जैसी प्रतीत होती है। प्रासादीयचित्त एव अन्तःकरण को यह प्रसन्न करने वाली है, दर्शनीय-नेत्रों को तृप्ति करने वाली है, अभिरूप-असाधारण रचना से युक्त है एव प्रतिरूप है-इसके जैसी और दूसरी कोई नगरी नहीं है ऐसी। (तीसेण पुंडरिगीणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे-तत्थ ण पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था-तस्सण पउमावईणाम देवी होत्था, तस्स ण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था) उस पुंडरीकिणी नगरी के उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग में नलिनीवन नाम का एक उद्यान था। उस पुंडरीकिणी राजधानी में महापद्मनाम का एक राजा रहता था। उसकी देवी का नाम पद्मावती थो। उस महापद्म राजा के यहा पद्मावती की कुक्षि से उत्पन्न हुए दो कुमार थे (त जहा पुंडरीए य, कंडरीए य-सुकुमालपाणि पाया० । पुंडरीए जुवराया तेण कालेण

તે પુષ્કલાવતી વિજયમા પુંડરીકિની નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બાર યોજન જેટલી લાબી છે તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્ત કરણને તે પ્રસન્ન કરનારી છે, દર્શનીય-આખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ) રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ-એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવી છે

(तीसेण पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे-तत्थण पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था-तस्सण पउमावईणाम देवी होत्था, तस्सण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था)

તે પુંડરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમા નલિનીવન નામે એક ઉદ્યાન હતો તે પુંડરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો હતો તેની રાણીનુ નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્મવતી દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા

स्थविरागमन=तस्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने स्थविराणामागमनमभूत । महापद्मो राजा धर्मं श्रोतुं निर्गतः, धर्मं श्रुत्वा सजातवैराग्यः पुण्डरीकं राज्ये स्थापयित्वा प्रव्रजितः । अनन्तरं पुण्डरीको राजा जातः, कण्डरीको युवराजः । महापद्मोऽनगारः चतुर्दशपूर्वाणि अधीते । ततः खलु स्थविरा बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति । ततः खलु स महापद्मो बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा यावद् सिद्धः॥सू० १॥

तेणं समएणं थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए, धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएणं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे) उनके नाम इस प्रकार है-१ पुंडरीक और दूसरा कंडरीक-ये दोनो पुत्र सुकुमार करचरणवाले थे । पुंडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था । उस काल में और उस समय में वहां स्थविरों का आगमन हुआ । महापद्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर नलिनीवन उद्यान में आये । वहां धर्म का उपदेश सुनकर उन्हें वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया-सो वे पुंडरीक को राज्य में स्थापितकर दीक्षित हो गये । पुंडरीक राजा बन गया-और कंडरीक युवराज हो गया । महापद्मराजर्षि ने चौदह पूर्वों का अध्ययन कर लिया । इसके बाद वहां से स्थविरो ने

(तं जहा-पुंडरीए य, कंडरीए य-सुकुमालपाणिपाया० । पुंडरीए जुवराया तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए, धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महा० पउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएणं थेरा बहिया, जणवयविहारं विहरंति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे)

તેમના નામો આ પ્રમાણે છે-૧ પુંડરીક, અને ૨ કંડરીક આ બને પુત્રો સુકોમળ હાથ-પગવાળા હતા રાજાએ પુંડરીકને યુવરાજપદ પ્રદાન કર્યું હતું તે કાળે અને તે સમયે ત્યાં સ્થવિરોનું આગમન થયું મહાપદ્મ રાજા ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળીને નલિનીવન ઉદ્યાનમાં આવ્યો ત્યાં ધર્મોપદેશ સાંભળીને તેને વૈરાગ્યભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયો છેવટે પુંડરીકને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તેઓ દીક્ષિત થઈ ગયા પુંડરીક રાજા થઈ ગયો અને કંડરીક યુવરાજ થઈ ગયો મહાપદ્મ રાજર્ષિએ ચૌદ પૂર્વોનું અધ્યયન કરી લીધું ત્યારપછી સ્થવિરો ત્યાંથી બહાર જનપદોમાં વિહાર

मूलम्–तएणं थेरा अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए। कंडरीए महाजणसद्द सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ। थेरा धम्म परिकहेंति पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए। तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवर पुण्डरीयं रायं आपुच्छामि, जाव पव्वयामि। अहासुह देवाणुप्पिया! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घंट आसरहं दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए तएणं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी–माणं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि। तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए कंडरीए कुमारं जाहे नो संचाएइ, बहूहिं आघवणाहि

बाहिर जनपदों में विहार कर दिया। महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालनकर यावत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १॥

બાદ નીકળી પડયા મહાપદ્મ અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને યાવત્ સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કરી લીધુ ॥ સૂત્ર ૧

य पण्णवणाहि य४ ताहे अक्कामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ जाव थेराण सीसभिक्खं दलयइ । पव्वइए अणगारे जाए एगारसगविऊ । तएण थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरति ॥ सू० २ ॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि । ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समवसृता =समगताः । तेषा समागमन श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितु निर्गतः । अनन्तरम्—कण्डरीको ' महाजणसद्द ' महाजनशब्द=स्थविरान् वन्दितु कामाना गच्छता बहूना जनाना कोलाहल श्रुत्वा ' जहा महाबलो जाव पपज्जुवासइ ' यथामहाबलो यावत्पर्युपास्ते । महाबल इव स्थविराणा समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते । स्थविरा धर्मं 'परिकहेंति' परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थ' । तेरुपदिष्ट धर्मं श्रुत्वा पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः 'जाव पडिगए' यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

' तएण ते थेरा अन्नया कयाइ ' इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (ते थेरा) वे स्थविर (अन्नया कयाइ किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए) पुडरीकिणी राजधानी में आये । वहा वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुडरीक राजा उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहा जाने के लिये अपने महल से निकले । (कडरीए महाजणसद्द सोचा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परिकहेंति, पुडरीए समणोवासए जाए जाव

' तएण ते थेरा अन्नया कयाइ ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (ते थेरा) ते स्थविरो (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (पुणरवि) ફરી (पुडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुडरीકિણી રાજધાનીમા આવ્યા ત્યા તેઓ નલિનીવન ઉદ્યાનમા રોકાયા પુડરીક રાજા તેમનુ આગમન સાભળીને ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળવાની ઈચ્છાથી ત્યા જવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળ્યા (कडरीए महाजणसद्द सोचा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परि

मूलम्–तएणं थेरा अन्नया कयाइ पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए। कंडरीए महाजणसद्द सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ। थेरा धम्म परिकहेंति पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए। तएण से कंडरीए उट्ठाए उट्टेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह ज णवर पुण्डरीय राय आपुच्छामि, जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया। तएणं से कडरीए जाव थेरे वंदइ णमसइ वंदित्ता णमसित्ता थेराण अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ करयल जाव पुंडरीय एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया। मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए तएणं देवाणुप्पिया। जाव पव्वइत्तए। तएण से पुडरीए कडरीए एव वयासी–माणं तुम देवाणुप्पिया। इयाणि मुंडे जाव पव्वयाहि, अह णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि। तएण से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ठ णो आढाइ णो परिजाणइ तुसिणीए सचिट्ठइ। तएण पुण्डरीए राया कडरीय दोच्चपि तच्चपि एव वयासी–जाव तुसिणीए सचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएइ, बहूहि आघवणाहि

बाहिर जनपदों में विहार कर दिया। महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालनकर यावत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १ ॥

બહાર જનપદોમાં વિહાર કરી દીધો. મહાપદ્મ અનગારે અનેક વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને યાવત્ સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કરી લીધુ ॥ સૂત્ર ૧ ॥

य पण्णवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिचइ जाव थेराणं सीसभिक्ख दलयइ । पव्वइए अणगारे जाए एगारसंगविऊ । तएण थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरंति ॥ सू० २ ॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि । ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समवसृता -समगताः । तेषा समागमन श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितु निर्गतः । अनन्तरम्–कण्डरीको ' महाजणसद्द ' महाजनशब्द=स्थविरान् वन्दितु कामाना गच्छता बहूना जनाना कोलाहल श्रुत्वा ' जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ ' यथामहाबलो यावत्पर्युपास्ते । महाबल इव स्थविराणा समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्थित्वा सेवते । स्थविरा धर्मं 'परिकहंति' परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः । तैरुपदिष्ट धर्मं श्रुत्वा पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः 'जाव पडिगए' यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

' तएण ते थेरा अन्नया कयाइ ' इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (ते थेरा) वे स्थविर (अन्नया कयाइ किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए) पुंडरीकिणी राजधानी में आये । वहा वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुंडरीक राजा उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहा जाने के लिये अपने महल से निकले । (कंडरीए महाजणसद्द सोच्चा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परिकहेंति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव

' तएण ते थेरा अन्नया कयाइ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારપછી (ते थेरा) તે સ્થવિરો (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (पुणरवि) ફરી (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए रायाणिग्गए) પુંડરીકિણી રાજધાનીમા આવ્યા ત્યા તેઓ નલિનીવન ઉદ્યાનમા રોકાયા પુંડરીક રાજા તેમનુ આગમન સાભળીને ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળવાની ઈચ્છાથી ત્યા જવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળ્યા (कंडरीए महाजणसद्द सोच्चा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परि

नमस्थित्वा प्रतिनिवृत्तः । ततः खलु कण्डरीकः ' उट्ठाए ' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति, उत्थया उत्थाय ' जाव ' यावत् स्थविरान् वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवदत्–' से जहेयं तुब्भे वदह ' तथैवेदं यूयं वदथ=हे देवानुप्रियाः ! यूयं यथा यद् वदथ, तत्तथैव, ' ज णवर ' यन्नवर=यो विशेषः तच्चैवम्–यवरं पुण्ड रीकं राजानम् आपृच्छामि । तत खलु ' जाव पव्वयामि ' यावत् प्रव्रजामि ।

पडिगए) इसके बाद कण्डरीक युवराज स्थविरों को वंदना करने के लिये जानेवाले अनेक मनुष्यों का कोलाहल सुनकर महाबल राजा की तरह स्थविरों के पास गया–वहां जाकर उसने उनकी वंदना की–नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर फिर उसने उनकी पर्युपासना की। स्थविरों ने धर्म का उपदेश दिया। उस उपदेश को सुनकर पुंडरीक श्रमणोपासक बन गया। बाद में वह स्थविरों को वंदना और नमस्कार कर अपने स्थान पर वापिस वहां से लौट आया। (तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएणं जाव पव्वयामि–अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद कंडरीक उत्थानशक्ति से उठा–उत्थानशक्ति –उठने की शक्ति से उठकर उसने स्थविरों को वंदना की–नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा–हे

कहेंति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए) ત્યારપછી કંડરીક યુવરાજ સ્થવિરોની વંદના કરવા માટે ઉપડેલા અનેક માણસોનો ઘોંઘાટ સાંભળીને મહાબલ રાજાની જેમ સ્થવિરોની પાસે ગયો ત્યાં જઈને તેણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમની પર્યુપાસના કરી સ્થવિરોએ ધર્મોપદેશ આપ્યો, તે ઉપદેશને સાંભળીને પુંડરીક શ્રમણોપાસક બની ગયો ત્યારપછી તે સ્થવિરોને વંદન તેમજ નમન કરીને પોતાના નિવાસ–સ્થાને પાછો આવતો રહ્યો

(तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएणं जाव पव्वयामि–अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ)

ત્યારપછી કંડરીક ઉત્થાન શક્તિ વડે ઊભો થયો, ઉત્થાન શક્તિ–ઊભા થવાની શક્તિ વડે ઊભો થઈને તેણે સ્થવિરોને વંદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કે

इति तद् वचन श्रुत्वा ते स्थविरा' प्रोचु. ' अहासुह देवाणुप्पिया ' यथासुख हे देवानुप्रिया ! हे देवानुप्रिय ! यथा तव सुखकर भवेत् तथा कुरु । ततः खलु स कण्डरीको यावत् स्थविरान् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य, तमेव ' चाउग्घट ' चतुर्घण्ट=चतस्रो घण्टा यस्मिन् स तम्=घण्टा चतुष्टयोपेतम् अश्वरथ दूरोहति, यावत् प्रत्यवरोहति=स्थादवतरति । अवतरणानन्तर यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, ' करयल जाव ' करतल यावत्=करतलपरिगृहीत शिर आवर्त्त दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा पुण्डरीकमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! मया स्थविराणामन्तिके यावद् धर्मो निशान्त =श्रुत', स धर्मः=स्थविरप्रोक्तो धर्मः यावत् अभिरुचित' । तत् खलु हे देवानुप्रिय ! ' जाव पव्वइत्तए ' यावत् प्रव्रजितुम्=हे देवानुप्रियाः ! भवद्भिरभ्यनुज्ञातो स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः ।

देवानुप्रियो ! आप जैसा कहते है-वह वैसा ही है-मेरी भावना उसे सुनकर सयम लेने की हो गई है-अतः सयम धारण करने के पहिले मैं पुडरीक राजा से इस विषय में पूछ आता हूँ उसके बाद सयम धारण करना चाहता हूँ। इस प्रकार उसके वचन सुनकर उन स्थविरों ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जैसे सुख हो-तुम वैसा करो-इसके बाद कडरीक ने स्थविरों को वदना की-नमस्कार किया और वदना नमस्कारकर वह उनके पास से चला आया (पडिनिक्खमित्ता) आकर के (तमेवचाउग्घट आसरह दुरूहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल जाव पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरूइए

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જેમ કહો છો તે બરોબર તેમ છે આ બધુ સાભળીને સયમ ગ્રહણ કરવાની મારી ઈચ્છા થઈ ગઇ છે એટલા માટે સયમ ધારણ કરતા પહેલા હુ પુડરીક રાજાને આ વિષે પૂછી આવુ છુ ત્યારપછી હુ સયમ ધારણ કરવા ચાહુ છુ આ પ્રમાણે તેના વચનો સાભળીને તે સ્થવિરોએ તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમા સુખ મળે તેમ કરો ત્યારપછી કડરીકે સ્થવિરોને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તે તેમની પાસેથી આવતો રહ્યો (पडिनिक्खमित्ता) આવીને,

(तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, जाव पच्चोरूहइ, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरूइए-तण्ण देवाणुप्पिया !

ततः पुण्डरीकः पण्डरीकमेवमवादीत्-मा खलु तं हे देवानुप्रिय ! अहः इदानीं मुण्डो यावत् प्रव्रज अह खलु त्वा महता २ 'रायाभिसेएण' राजाभिषेकेण 'अभिसिंचामि=अभिषेचयामि। ततः खलु स पण्डरीको युवराजः पुण्डरीकस्य राज्ञ एतमर्थं नो आदियते=तस्य राज्याभिषेकरूपमर्थं नो मनुते, 'नो परिजाणइ' नो मतिजानाति=न स्वीकरोति 'तुसिणीए संचिट्ठइ' तूष्णीकः

-तएणं देवाणुप्पिया ! पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि-अहं णं तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि) वह वहां आया-जहां चतुर्घंटो पेत अपना अश्वरथ रखा हुआ था। वहां आकर वह उसपर चढ़ गया -चढकर वह जहां पुंडरीक राजा थे वहां आया-वहां आते ही वह रथ से नीचे उतरा। नीचे उतरकर पुंडरीक राजा के पास गया- वहां जाकर उसने पुंडरीक राजा को दोनों हाथ जोडकर नमस्कार किया-बाद में इस प्रकार करने लगा-हे देवानुप्रिय मैंने स्थविरों के पास धर्म का उपदेश सुना है-वह मुझे बहुत रूचा है इसलिये हे देवानुप्रिय! मैं आपसे आज्ञापित होकर उन स्थविरों के पास संयम लेना चाहता हूँ-इस प्रकार कंडरीक की बात सुनकर पुंडरीकने उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय! तुम इस समय मुंडित होकर स्थविरों के पास संयम धारण मतकरो मैं बड़े जोर शोर के उत्सव के साथ तुम्हारा राज्याभिषेक करना चाहता हूँ। (तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स

जाव पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया। इयाणिंमुंडे जाव पव्वयाहि अहं णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि)

તે ત્યા આવ્યો જ્યા ચતુર્ઘંટવાળો પોતાનો અશ્વરથ હતો ત્યા આવીને તે તેમા બેસી ગયો, અને બેસીને તે જ્યા પુંડરીક રાજા હતો ત્યા ગયો ત્યા પહોચતા જ તે રથ ઉપરથી નીચે ઉતર્યો, નીચે ઉતરીને પુંડરીક રાજાની પાસે ગયો ત્યા જઇને તેણે બને હાથ જોડીને પુંડરીક રાજાને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તેણે તેમને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળ્યો છે તે મને ખૂબ જ ગમી ગયો છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી સયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છુ છુ આ પ્રમાણે કંડરીકની વાત સાભળીને પુંડરીકે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હમણા મુંડિત થઇને સ્થવિરોની પાસેથી સયમ ધારણ કરો નહિ હુ મોટા ઉત્સવ સાથે તમારો રાજ્યાભિષેક કરવા છુ

सतिष्ठते=तमर्थं न स्वीकृतवान् केवल मौनमवलम्ब्य स्थितः। ततः खलु पुण्डरीको राजा कण्डरीक भ्रातर द्वितीयमपि तृतीयमपि वारम् ' एव 'पूर्वोक्तरूपेण अवादीत्-' जाव तुसिणीए सचिट्ठइ ' यावत्-तुष्णीकः सतिष्ठते। तत' खलु पुण्डरीकः कण्डरीक यदा ' नो सचाएइ ' नो शक्नोति = न समर्थो भवति बहुभि ' आघवणाहि य ' आख्यापनाभिश्च-आख्यापनाभि -प्रज्ञाविगेविभि राख्यानैः ' पण्णवणाहि य ' प्रज्ञापनाभिश्च ' अह तव ज्येष्ठभ्राताऽस्मि, तव हितं येन भवति, तदेव कथयामि, इत्यादि रूपैः प्रज्ञापनवाक्यैः एव ' विण्णवणाहि य ' विज्ञापनाभिः विनितमृदुवचनावलिरूपवाक्यप्रबन्धैः, तथा ' सण्णवणाहि य ' सज्ञापनाभिः ' प्रव्रज्याया महान् कष्टो भवति ' इत्यादि स्वाभीप्सितसज्ञापकैर्वाक्यैश्च

रण्णो एयमट्ठ णो आढाइ, णो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुडरीए राया कडरीयं दोच्चपि तच्चपि एव वयासी जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुडरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएई, बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ जाव थेराण सीसभिक्ख दलयइ)

कडरीक कुमारने पुडरीक राजा की इस बात को आदर की दृष्टि से नहीं देखा-नही माना-और न उसे स्वीकार ही किया-केवल चुपचाप ही रहा। पुडरीक राजा ने जब कडरीक कुमार को चुपचाप देखा-तब उसने दुबारा और तिबारा भी उससे ऐसा ही कहा-परन्तु उसने इस बात पर बिलकुल ही ध्यान नही दिया केवल चुपचाप ही रहा-। अतः जब पुडरीक राजा कडरीक कुमार को उसके ध्येय से विचलित करने

(तएण से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ठ णो आढाइ, णो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुडरीए राया कडरीय दोच्चपि तच्चपि एव वयासी जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुडरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएई, बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ जाव थेराण सीसभिक्ख दलयइ)

કડરીક કુમારે પુડરીક રાજાની આ વાતનુ સન્માન કર્યું નહિ-માની નહિ અને તેનો સ્વીકાર પણ કર્યો નહિ, ફક્ત તે મૂગો થઈને બેસી જ રહ્યો પુડરીક રાજાએ જ્યારે કડરીક કુમારને મૂગો મૂગો બેસી રહેલો જોયો ત્યારે તેમણે બીજી વાર અને ત્રીજી વાર પણ તેને આ પ્રમાણે જ કહ્યુ પરતુ તેણે આ વાતની સહેજ પણ દરકાર કરી નહી, ફક્ત મૂગો થઈને બેસી જ રહ્યો છેવટે જ્યારે પુડરીક રાજા કંડરીક કુમારને તેના ધ્યેયથી ભ્રષ્ટ વિચારથી

'आघवित्तए' आख्यापयितुं ४=सर्वथाप्रतिरोधयितुं न शक्नोतीति पूर्वेण सम्बन्धः, 'ताहे' तदा 'असंचाएमाणे चेव' असक्नुवन्नेव 'एयमट्ठं' एतमर्थम्-पुण्डरीकाभिलषित प्रव्रज्यारूपम्, 'अणुमन्निरया' अन्वमन्यत=स्वीकृतवान्, 'जाव णिक्खमणाभिसेएणं' यावन् निष्क्रमणाभिषेकेण' स्वीकरणानन्तर निष्क्रमणोपयोगि वस्तुजातमुपनीय सविधि दीक्षाभिषेकेण अभिषिञ्चति, 'जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ' यावत्-स्थविरेभ्यः शिष्यभिक्षाम्=अभिषेकानन्तर स पुण्डरीको राजा पुण्डरीकं शिबिकायां समुपवेश्य महता समारोहेण सह नलिनी वने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वकनुभ्रातरं शिष्यभिक्षां ददाति। अनन्तरं स पुण्डरीकः प्रव्रजित सन् अनगारो जातः। तथा 'एक्कारसंगविऊ' एकादशाङ्गवित्=एकादशाङ्गज्ञानवान् जातः। तत' खलु स्थविरा भग

के लिये आख्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो सके-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही पुंडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिषेक से अभिसिंचन किया। अभिषेक के बाद पुंडरीक राजा पुंडरीक को शिबिका में बैठाकर बड़े समारोह के साथ नलिनीवन में आये। वहां आकर उन्होंने स्थविरों के लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया। इसके बाद पुंडरीक (पव्वइए अणगारे जाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था सम्पन्न हो गये। (एगारसंगविऊ,-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइ पुंडरिगिणीओ नयरीओ पोंडरीयाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति,

---

વિચલિત કરવા માટે આખ્યાપનાઓ, પ્રજ્ઞાપનાઓ, વિજ્ઞાપનાઓ, સંજ્ઞાપનાઓ વડે પણ સમર્થ થઈ શકયા નહિ ત્યારે તેમણે ઇચ્છા ન હોવા છતાએ પુંડરીક કુમારને દિક્ષાગ્રહણ કરવાની સ્વીકૃતિ આપી દીધી સ્વીકૃતિ આપ્યા બાદ તેમણે નિષ્ક્રમણને લગતી બધી વસ્તુઓ મંગાવી જ્યારે વસ્તુઓ આવી ગઈ ત્યારે તેમણે તેનુ વિધિસર દીક્ષાભિષેક વડે અભિસિંચન કર્યું અભિષેક કર્યા બાદ પુંડરીક રાજા પુંડરીકને પાલખીમા બેસાડીને ભારે સમારોહની સાથે નલિની વનમા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિરોને પોતાના નાના ભાઈને શિષ્યના રૂપમા આપી દીધો ત્યારપછી પુંડરીક (पव्वइए अणगारे जाए) પ્રવ્રજિત થઈને અનગારાવસ્થા સંપન્ન થઇ ગયો

(एगारसंगविऊ-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइ पु [illegible] नय

वतो ऽन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या नगर्या नलिनीवनात् उद्यानात् प्रतिनिष्क्रा म्यन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहार विहरन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्–तएणं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहि अतेहि य पंतेहि य जहा सेलागस्स जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरइ। तएणं थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता, णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेइ । तएणं पोंडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वंदइ णमसइ वदित्ता णमंसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोय पासइ, पासित्ता, जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, थेरे भगवते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एव वयासी–अहण्णं भते ! कडरीयस्स अणगारस्स अहा पवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छं आउट्टामि, त तुब्भे ण भते ! मम जाणसालासु समोसरह। तएण थेरा भग-वतो पुंडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, जाव उवसपज्जित्ताणं

पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरति) धीरे २ वे ग्यारह अगोंके पाठी भी बनगये इसके बाद उन स्थविर भगवतों ने किसी एक दिन पुडरीकिणी नगरी के उस नलिनीवन नामकेउद्यान से विहार किया सो विहार कर वे बाहिर के जनपदों में विचरने लगे ॥ सू० २ ॥

रीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरति)

ધીમે ધીમે તેમણે અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન કરી લીધુ ત્યારબાદ તે સ્થવિર ભગવતોએ કોઇ એક દિવસે પુડરીકિણી નગરીના તે નલિનીવન નામના ઉદ્યાનથી વિહાર કર્યો, વિહાર કરીને તેઓ બહારના જનપદોમા વિચરણ કરવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર ૨ ॥

'आघवित्तए' आख्यापयितुं ४=सर्वथाप्रतिरोधयितुं न शक्नोतीति पूर्वेण सम्बन्धः, 'ताहे' तदा 'अकामए चेव' अकामक एव=अनिच्छुक एव 'पयमट्ठ' एतमर्थम्-कण्डरीककुमारस्य दीक्षाग्रहणरूपम्, 'अणुमन्निरथा' अन्वमन्यत=स्वीकृतवान्, 'जाव णिक्खमणाभिसेएण' यावत् निष्क्रमणाभिषेकेण' स्वीकरणानन्तरं निष्क्रमणोपयोगि वस्तुजातमुपनीय सविधि दीक्षाभिषेकेण अभिषिञ्चति, 'जाव थेराण सीसभिक्ख दलयइ' यावत्-स्थविरेभ्य शिष्यभिक्षाम्=अभिषेकानन्तरं स पुण्डरीको राजा कण्डरीक शिबिकाया समुपवेश्य महता समारोहेण सह नलिनीवने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वभ्रातर शिष्यभिक्षा ददाति। अनन्तर स पण्डरीकः प्रव्रजित सन अनगारो जातः। तथा 'एक्कारसंगविऊ' एकादशाङ्गवित्=एकादशाङ्गज्ञानवान् जातः। ततः खलु स्थविरा भग

के लिये आख्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो सके-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही कंडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिषेक से अभिसिंचन किया। अभिषेक के बाद पुंडरीक राजा कंडरीक को शिबिका में बैठाकर बडे समारोह के साथ नलिनीवन में आये। वहा आकर उन्होंने स्थविरों के लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया। इसके बाद कंडरीक (पव्वइए अणगारेजाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था सम्पन्न हो गये। (एगारसंगविऊ,-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइ पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति,

---

વિચલિત કરવા માટે આખ્યાપનાઓ, પ્રજ્ઞાપનાઓ, વિજ્ઞાપનાઓ, સજ્ઞાપનાઓ વડે પણ સમર્થ થઈ શકયા નહિ ત્યારે તેમણે ઇચ્છા ન હોવા છતાએ કંડરીક કુમારને દિક્ષાગ્રહણ કરવાની સ્વીકૃતિ આપી દીધી સ્વીકૃતિ આપ્યા બાદ તેમણે નિષ્ક્રમણને લગતી બધી વસ્તુઓ મગાવી જ્યારે વસ્તુઓ આવી ગઈ ત્યારે તેમણે તેનુ વિધિસર દીક્ષાભિષેક વડે અભિસિંચન કર્યું અભિષેક કર્યા બાદ પુંડરીક રાજા કંડરીકને પાલખીમા બેસાડીને ભારે સમારોહની સાથે નલિની વનમા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિરોને પોતાના નાના ભાઈને શિષ્યના રૂપમા આપી દીધો ત્યારપછી કંડરીક (पव्वइए अणगारे जाए) પ્રવ્રજિત થઇને અનગારાવસ્થા સંપન્ન થઇ ગયો

(एगारसंगविऊ-तएणं थेरा भगवतो अन्नया कयाइ पु[illegible] नय-

टीका—' तएण तस्स ' इत्यादि । तत खलु तस्य कण्डरीकस्य अनगारस्य तैः ' अतेहि य ' अन्तैश्च=वल्लचणकादिभि , ' पतेहि य ' प्रान्तैश्च=पर्युषितै., नीरसैः स्वादवर्जितैर्वा अशनादिभिः यथा शैलकस्य राजर्षेस्तथा ऽस्याऽपितथाविधमाहार कुर्वतो यावत्प्रकृतिसुकुमारकस्य सुखोपचितस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, *कीदृशीत्याह – उज्ज्वला यावद् दुरधिसह्या = सोढुमशक्या पुन सुखलेशरहिता* कण्डरीकः ' दाहवक्कतिए ' दाहव्युत्क्रान्तिक =दाहस्य शरीरसन्तापरूपरोगस्य व्युत्क्रान्ति =उत्पत्तिर्यस्यासौ दाहव्युत्क्रान्तिक =करचरणादिज्वलनवान् चापि विहरति । तत खलु स्थविरा अन्यदा कदाचित् यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, नलिनीवने समवसृताः । पुण्डरीकस्तद्दर्शनार्थं स्वभवना-

---

' तएण तस्स कडरीयस्स ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तस्स कडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अतेहिं पतेहिं य जहासेलगस्स जाव दाहवक्कतिए यावि विहरइ) उस कडरीक अनगारके वल्लचणक आदि रूप अन्ताहार करनेसे तथा पर्युषित अथवा नीरस आहाररूप प्रान्ताहार करनेसे शैलक राजर्षिकी तरह प्रकृतिसे सुकुमार सुखोपचित होने के कारण शरीरमें वेदना उत्पन्न हो गई । जो उज्ज्वला एव सोढुमशक्या थी । इस तरह शरीर सन्तापरूप रोग की उत्पति से वे कडरीक अनगार कर चरण आदि में जलन होने के कारण सुख के लेश से भी वर्जित हो गये । (तएण थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णलिणिवणे समोसढा पोंडरीए

तएण तस्स कडरीयस्स इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी,

(तस्स कडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अतेहिं पतेहिं य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कतिए यावि विहरइ)

તે કડરીક અનગારના શરીરમા બલ્લચણક વગેરે રૂપ અતાહાર કરવાથી તેમજ પર્યુષિત અથવા નીરસ આહાર રૂપ પ્રાન્તાહાર કરવાથી શૈલક રાજર્ષિની જેમ પ્રકૃતિથી સુકુમાર અને સુખોપચિત હોવા બદલ વેદના ઉત્પન્ન થઈ ગઇ તે વેદના અત્યત ઉગ્ર અને અસહ્ય હતી આ પ્રભાવે શરીર સતાપ રૂપ રોગની ઉત્પત્તિથી તે કડરીક અનગાર હાથ પગમા બળતરાને લીધે થોડી સુખશાતિ પણ મેળવી શકયા નહિ

(तएण थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णलिणिवणे समोसढा पोंडरीए निग्गए धम्म सुणेइ, तएण पोंडरीए राया

विहरंति। तएणं पुंडरीए राया जहा मेहे सेलागस्स जाव बलियसरीरे जाए। तएणं थेरा भगवंतो पोंडरीयं राय पुच्छंति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति। तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए। तत्थेव ओसण्णे जाए। तएणं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जे णं तुम रज्जं च जाव अंतेउरं चावि छड्डयित्ता जाव विगोवइत्ता जाव पव्वइए। अहण्णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। त धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले। तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ। तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेणय पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू०३ ॥

अनगारस्य 'अहापवत्तेहिं' यथा प्रवृत्तै.=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहिं' औषधभैषज्यैः 'जावतेइच्छं' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे भदन्त ! मम यानशालासु समवसरत=आगच्छत। तत' खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति= एतद्वचन स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए' यथा मण्डुकः शैलकस्य यावद् वलिश्शरीरो जातः =

कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि-त तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उपसपज्जित्ताण विहरंति) देखकर जहा स्थविर भगवंत विराजमान थे-वहा पर वे आये वहा आकर उन्हों ने स्थविर भगवंतों को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदंत ! मै कंडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊँगा-अतः हे भदंत ! आपलोग मेरी यानशाला में यहा से विहार कर पधारें-वही ठहरें-। इस प्रकार पुंडरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवंतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से विहार कर वे पुंडरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये। (तएण पुंडरीए राया जहामंडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि त तुब्भेण भंते मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उवसपज्जित्ताण विहरंति)

જોઇને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવંત વિરાજમાન હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવંતોને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે હે ભદંન્ત ! હું કંડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્ ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરવા માગુ છું એટલા માટે હે ભદંન્ત ! તમે સૌ અહીંથી વિહાર કરીને મારી યાનશાળામા આવો અને ત્યાજ રોકાઓ આ પ્રમાણે પુંડરીક રાજાની વિનંતીને તે સ્થવિર ભગવંતોએ સ્વીકાર કરી લીધો અને ત્યાથી વિહાર કરીને તેઓ પુંડરીક રાજાની યાનશાળામા આવીને રોકાઇ ગયા.

(तएण पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

न्निर्गत तत्र गत्वा धर्मं शृणोति । तत खलु पुण्डरीको राजा धर्मं श्रुत्वा यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीक वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा कण्डरीकस्य अनगारस्य शरीर 'सव्वाबाह' सव्याबाध= पीडासहित 'सरोय' सरोग=रोगसहित 'पासइ' पश्यति, दृष्ट्वा यत्रैव स्थविरा भगव तस्त्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान भगवतो वन्दत नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्-'अहण्ण भते !' अह खलु हे भदन्त ! कण्डरीकस्य

निग्गए धम्म सुणेइ, तएण पोंडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वदइ नम सइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वाबाह सरोय पासइ) किसी एक समय वे स्थविर पुंडरीकिणी नगरी में विहार करते हुए आये। यहा आकर वे नलिनीवन नाम के उद्यान में ठहर गये। आगमन सुनकर पुंडरीक राजा उन को वदना एव उनसे धर्मश्र वण करने की भावना से अपने राजमहल से निकलकर उस नलिनीवन उद्यान में आये-स्थविरों ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। धर्म का उप देश श्रवण कर फिर वे जहा कडरीक अनगार थे उनके पास आये। वहा आकर उन्हों ने उनको वदना की नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके उन्होंने कडरीक अनगारके शरीर को पीडासहित एव रोगसहित देखा-(पासित्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-अहण्ण भते !

धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वा बाह सरोय पासइ)

કોઇ એક વખતે તે સ્થવિર પુંડરીકિણી નગરીમ વિહાર કરતા કરતા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉદ્યાનમા રોકાયા તેમનુ આગમન સાભળીને પુંડરીક રાજા તેમને વદન કરવા માટે ત્થા તેમની પાસેથી ધર્મો પદેશ સાભળવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉદ્યાનમા આવ્યો સ્થવિરોએ તેમને ધર્મોપદેશ આપ્યો, ધર્મોપદેશ સાભળીને તેઓ જ્યા કંડરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે કંડરીક અનગારના શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયુ

(पासित्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-अहण्ण भते ! [illegible] अण

अनगारस्य 'अहापवत्तेहिं' यथा प्रवृत्तै.=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहिं' औषधभैषज्यैः 'जावतेइच्छं' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे भदन्त ! मम यानशालासु समवसरत= आगच्छत। तत' खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिश्रृण्वन्ति= एतद्वचन स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए' यथा मण्डूकः शैलकस्य यावद् वलिकशरीरो जातः =

कण्डरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि-त तुब्भे ण भते ! मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये वहा आकर उन्हों ने स्थविर भगवतों को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदत ! मैं कण्डरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊँगा-अतः हे भदत ! आपलोग मेरी यानशाला में यहा से विहार कर पधारें-वहीं ठहरें-। इस प्रकार पुण्डरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से विहार कर वे पुण्डरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये। (तएण पुण्डरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि त तुब्भेण भते मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उवसपज्जित्ताण विहरति)

જોઇને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે ભદન્ત ! હું કણ્ડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્ ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરવા માગુ છુ એટલા માટે હે ભદન્ત ! તમે સૌ અહીથા વિહાર કરીને માગી યાનશાળામા આવો અને ત્યાજ રોકાઓ આ પ્રમાણે પુણ્ડરીક રાજાની વિનતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધો અને ત્યાથી વિહાર કરીને તેઓ પુણ્ડરીક રાજાની યાનશાળામા આવીને રોકાઇ ગયા

(तएण पुण्डरीए राया जहा_मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

न्निर्गत तत्र गत्वा धर्मं शृणोति । तत खलु पुण्डरीको राजा धर्मं श्रुत्वा यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा कण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरं 'सवाबाह' सव्याबाध= पीडासहितं 'सरोय' सरोगं=रोगसहितं 'पासइ' पश्यति, दृष्ट्वा यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्-'अहण्ण भंते !' अहं खलु हे भदन्त ! कण्डरीकस्य

निग्गए धम्मं सुणेइ, तएणं पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासइ) किसी एक समय वे स्थविर पुंडरीकिणी नगरी में विहार करते हुए आये। यहां आकर वे नलिनीवन नाम के उद्यान में ठहर गये। आगमन सुनकर पुंडरीक राजा उन को वंदना एवं उनसे धर्मश्र वण करने की भावना से अपने राजमहल से निकलकर उस नलिनीवन उद्यान में आये-स्थविरों ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। धर्म का उप देश श्रवण कर फिर वे जहां कंडरीक अनगार थे उनके पास आये। वहां आकर उन्हों ने उनको वंदना की नमस्कार किया-। वंदना नमस्कार करके उन्होंने कंडरीक अनगारके शरीर को पीडासहित एवं रोगसहित देखा-(पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अहण्णं भंते !

धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वा बाहं सरोयं पासइ)

બાદ એક વખતે તે સ્થવિર પુંડરીકિણી નગરીમાં વિહાર કરતા કરતા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉદ્યાનમા રોકાયા તેમનુ આગમન સાભળીને પુંડરીક રાજા તેમને વંદન કરવા માટે ત્ય। તેમની પાસેથી ધર્મો પદેશ સાભળવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉદ્યાનમા આવ્યો સ્થવિરોએ તેમને ધર્મોપદેશ આપ્યો, ધર્મોપદેશ સાભળીને તેઓ જ્યા કંડરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે કંડરીક અનગારના શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયુ

(पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अहण्णं भंते ! अण

अनगारस्य 'अहापवत्तेहिं' यथा प्रवृत्तै.=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहिं' औषधभैषज्यैः 'जावतेइच्छ' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे भदन्त ! मम यानशालासु समवसरत=आगच्छत। तत. खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति= एतद्वचन स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए' यथा मण्डूकः शैलकस्य यावद् वलिकशरीरो जातः =

कडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि-त तुब्भे ण भते ! मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये वहा आकर उन्हों ने स्थविर भगवतों को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदत ! मैं कडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊँगा-अतः हे भदत ! आपलोग मेरी यानशाला में यहा से विहार कर पधारें-वहीं ठहरें-। इस प्रकार पुडरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से विहार कर वे पुडरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये। (तएण पुडरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि त तुब्भेण भते मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उवसपज्जित्ताण विहरति)

જોઇને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે ભદન્ત ! હું કડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્ ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરવા માગુ છુ એટલા માટે હે ભદન્ત ! તમે સૌ સહીથા વિહાર કરીને મારી યાનશાળામા આવો અને ત્યાજ રોકાઓ આ પ્રમાણે પુડરીક રાજાની વિનતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધો અને ત્યાથી વિહાર કરીને તેઓ પુડરીક રાજાની યાનશાળામા આવીને રોકાઇ ગયા.

(तएण पुडरीए राया जहा_मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

यथा मण्डूको राजा शैलकस्य राज्ञर्षेः प्रासुकैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सामकारयत्, तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगारस्य यथा योग्यैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सां कारयतिस्म यावत् कतिपयैर्दिनैः कण्डरीको बलितशरीरः=निरामयो जातः। ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकं राजानं आपृच्छन्ति, आपृच्छ्य बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति। ततः खलु स कण्डरीकः तस्मात् 'रोगायङ्काओ' रोगातङ्कात् विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मणुण्णंसि' मनोज्ञे=रमणीये अशनपानखाद्यस्वाद्ये चतुर्विधे आहारे 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मूर्च्छां प्राप्तः=आसक्तः इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः=आकाङ्क्षावान्, 'गढिए' ग्रन्थितः=रसास्वादे निबद्धमानसः, 'अज्झोववण्णे'

भगवतो पोंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरति, तएण से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो सचाएइ पोंडरीयं राय आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए) इसके बाद मंडूक ने जिस प्रकार शैलकराजर्षि की प्रासुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुंडरीक राजा ने भी कंडरीक अनगार की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई-इस से वे बलितशरीर निरोग हो गये। इसके अनन्तर उन स्थविर भगवतो ने वहां से विहार करने के लिये पुंडरीक राजा से पूछा-। बाद में वे वहां से बाहिर जनपदों में विहार कर गये। कंडरीक अनगार कि जो रोगातंकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवती पोंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरति, तएण से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि-असणपाण खाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो सचाएइ पोंडरीयं राय आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए)

ત્યારપછી મંડૂકે જેમ શૈલક રાજર્ષિની પ્રાસુક, ઔષધ અને ભૈષજ્યો વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી હતી તેમજ પુંડરીક રાજાએ પણ કંડરીક અનગારની ઉચિત ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી તેથી તેઓ નિરોગ-સબળ બની ગયા ત્યારપછી તે સ્થવિર ભગવંતોએ ત્યાંથી વિહાર કરવા માટે પુંડરીક રાજાને પૂછયું ત્યારબાદ તેઓ બહારના જનપદોમાં વિહાર કરી ગયા રોગાતંકોથી નિર્મુક્ત થઇ ગયેલા કંડરીક અનગાર તે મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારમાં એટલા બધા આસક્ત થઇ ગયા-ગૃદ્ધ બની ગયા, ગ્રથિત-રસના આસ્વાદનમાં નિબદ્ધ માન

अध्युपपन्नः=सर्वथा आसक्तः सन् नो शक्नोति पुण्डरीकं राजानमापृच्छ्य 'बहिया' बहि 'अब्भुज्जएण' अभ्युद्यतेन=उग्रविहारेण खलु विहर्तुम्, किन्तु 'तत्थेव' तत्रैव=यानशालायामेव 'ओसण्णे' अवसन्नः,=शिथिलसाधुसमाचारीवान् जातः। तत खलु स पुण्डरीको राजा 'इमीसे कहाए' अस्या, कथायाः=कण्डरीकोऽनगारोऽवसन्नो जातः' इति वृत्तान्तस्य लब्धार्थः सन् स्नातः 'अंतेउरपरियालसपरिवुडे' अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः, यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं त्रिः कृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्-धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! यतस्त्वम् 'कयट्ठे' कृतार्थः=विहितजीवनकृत्य 'कयपुन्ने' कृतपुण्यः=विहितप्रव्रजितवेषः। पुनः सुलद्धे' सुलब्ध=सुष्ठुतया प्राप्त खलु हे देवानुप्रिय! 'तव' त्वया 'माणुस्सए' मानुष्यक=मनुष्यसम्बन्धि, 'जम्मजीवियफले' जन्मजीवितफलम्-जन्म-

---

-गृद्ध बन गये ग्रथित-रसास्वाद मे निबद्धमानसवाले हो गये, और अध्युपपन्न बन गये-अर्थात् सर्वथा आसक्त बन गये कि वहा से बाहिर उग्र विहार करने के लिये उनका मन ही नही हुआ-अतः उन्हो ने पुडरीक नरेश से विहार करने की कोई बात ही नही पूछी किन्तु (तत्थेव-ओसन्ने जाए) वही पर वे रहते २ शिथिल साधुसमाचारीवाले बन गये। (तएण से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धेणं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सजन्मजीवियफले जेणं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं चावि छड्डइत्ता

સવાળા થઇ ગયા અને અધ્યુપપન્ન બની ગયા એટલે કે તેઓ એકદમ આસક્ત થઇ ગયા કે ત્યાથી બહાર ઉગ્ર વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ તૈયાર થયા નહિ એથી તેમણે પુંડરીક રાજાને વિહાર કરવાની બાબતમા કઇજ પૂછયુ નહિ પણ (तत्थेव ओसन्ने जाए) ત્યા જ રહેતા રહેતા તેઓ શિથિલ સાધુ સમાચારી થઇ ગયા એટલે કે સાધુઓના આચારમા તેઓ શિથિલ થઇ ગયા

(तएणं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे

यथा मण्डूको राजा शैलकस्य राजर्षे मासुकैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सामकारयत्, तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगारस्य यथा योग्यैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सां कारयतिस्म यावत् कतिपयैर्दिनैः कण्डरीको बलितशरीरः=निरामयो जातः। ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकं राजानं आपृच्छन्ति, आपृच्छ्य बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति। तत खलु स कण्डरीकः तस्माद् 'रोगायङ्काओ' रोगातङ्कादु विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मनुज्ञमशि' मनोज्ञे=मनोज्ञे अशनपानखाद्यस्वाद्ये चतुर्विधे आहारे 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मूर्च्छा प्राप्तः=आसक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः=आकाङ्क्षावान्, 'गढिए' ग्रन्थितः=रसास्वादे निबद्धमानसः, 'अज्झोववण्णे'

भगवतो पोंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरति, तएण से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्ध गढिए अज्झोववण्णे णो सचाएइ पोंडरीय राय आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरित्तए) इसके बाद मंडूक ने जिस प्रकार शैलकराजर्षि की प्रासुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुंडरीक राजा ने भी कंडरीक अनगार की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई-इस से वे बलितशरीर निरोग हो गये। इसके अनन्तर उन स्थविर भगवतो ने वहां से विहार करने के लिये पुंडरीक राजा से पूछा-। बाद मे वे वहां से बाहिर जनपदो में विहार कर गये। कंडरीक अनगार कि जो रोगातंकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवतो पोंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरति, तएण से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि-असणपाण खाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो सचाएइ पोंडरीय राय आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएण जणवयविहार विहरित्तए)

ત્યારપછી મંડૂકે જેમ શૈલક રાજર્ષિની પ્રાસુક, ઔષધ અને ભૈષજ્યો વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી હતી તેમજ પુંડરીક રાજાએ પણ કંડરીક અનગારની ઉચિત ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી તેથી તેઓ નિરોગ-સબળ બની ગયા ત્યારપછી તે સ્થવિર ભગવંતોએ ત્યાંથી વિહાર કરવા માટે પુંડરીક રાજાને પૂછયું ત્યારબાદ તેઓ બહારના જનપદોમા વિહાર કરી ગયા રોગાતંકોથી નિમુક્ત થઇ ગયેલા કંડરીક અનગાર તે મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારમા એટલા બધા આસક્ત થઇ ગયા-ગૃદ્ધ બની ગયા, ગ્રથિત-રસના આસ્વાદનમા નિબદ્ધ માન

कारणात् खलु ब्रवीमि यत् धन्योऽसि त्वं हे देवानुप्रिय ! ' जाव सुलद्धे जन्म जीवितफलम् , ततः खलु स कण्डरीकोऽनगार' पुण्डरीकस्य एतमर्थं=विहाराभिप्रायकमर्थं, नो आद्रियते यावत् तूष्णीकः सतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति । ततः खलु कण्डरीकः पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्विस्त्रिवारम् , एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण, उक्तः सन् ' अकामए ' अकामक'=कामनारहितः ' अवस्सवसे ' अप-

---

देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ) मैं अधन्य हूँ अकृतपुण्य हूँ। जो राज्य मे यावत् अन्तःपुर में तथा मनुष्य सबधी कामभोगों में मूर्छित यावत् अध्युपपन्न बना हुआ हूँ। इसीलिये प्रव्रज्या ग्रहण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। इसी कारण से मै यह कह रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है। पुंडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर कंडरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे। कंडरीक अनगार की इस स्थिति को देखकर पुंडरीक ने दूसरी बार और तीसरी

तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ, जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं राय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ)

હું તો અધન્ય અને અકૃતપુણ્ય છું કેમકે હું તો રાજ્યમા યાવત્ રણવાસમા તેમજ મનુષ્યભવના કામભોગોમા મૂર્છિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બની રહ્યો છું, એટલા માટે જ પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવામા અસમર્થ થઇ રહ્યો છું એથી જ હું આ કહી રહ્યો છું-કે તમે ખરેખર ધન્ય છો હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જ જન્મ અને જીવનનુ ફળ કે જે પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવા રૂપ છે-તે સારી રીતે મેળવી લીધુ છે તેઓ ત્યાથી વિહાર કરી જાય તે આશયથી કહેવા તે પુંડરીકના વચનો સાભળીને કંડરીક અનગારે તેની કંઈ જ દરકાર કરી નહિ તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ આ બધુ સાભળીને પણ તેઓ ત્યાજ મૂગા થઇને બેસી જ રહ્યા કંડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઇને

मानसपोतो उत्पन्नः, जीवितम्=जीवनम्=प्राणधारणम्, तथा' फलम्=जन्मजीवितफलम्=प्रव्रज्याग्रहणमेव मनुष्यजन्मसारः, तदा स्पष्टयति-यः खलु त्वं राज्यं च यावदन्तः पुरं च छर्दयित्वा=त्यक्त्वा 'णिग्घोसइत्ता' निर्घोष्य=तिरस्कृत्य यावत् प्रव्रजितः अहं खलु अधन्यः अकृतपुण्यो राज्ये यावत् अन्तःपुरे च मानुष्यकेषु च कामभोगेषु मूर्च्छितो यावत् अध्युपपन्नो नो शक्नोमि यावत् प्रव्रजितुम् = राज्येऽन्तः = पुरे मानुष्यकेषु च कामभोगेषु निमग्नमानसोऽहं न शक्नोमि प्रव्रज्यां ग्रहीतुम् इति भावः। 'त' तत् = तस्मात्

विगोवइत्ता जाव पव्वइए) જ્યારે પુંડરીક રાજાને "કંડરીક અનગાર અવસન્ન થઈ ગયા છે" આ સમાચાર જ્ઞાત થયા-તો તેઓ સ્નાન કરી પોતાના અન્તઃપુર પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં કંડરીક અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે કંડરીક અનગારને ત્રણ વખત આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરીને વંદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે ધન્ય છો, કૃતાર્થ છો, કૃત-લક્ષણ છો હે દેવાનુપ્રિય! મનુષ્ય ભવના જન્મ અને જીવનના ફળને સારી પેઠે મેળવી લીધું છે કેમકે તમે બરોબર રાજ્ય યાવત્ અન્તઃપુરને ત્યજીને તેને તિરસ્કૃત કરીને પ્રવ્રજિત થઈ ગયા છો

(अहण्णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं सुलद्धेणं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जेणं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं चयसि छड्डइत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वइए)

જ્યારે પુંડરીક રાજાને કંડરીક અનગારના અવસન્ન થઈ જવાના સમાચાર મળ્યા ત્યારે તેઓ સ્નાન કરીને પોતાના રણવાસના પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં કંડરીક અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે કંડરીક અનગારને ત્રણ વખત આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરીને વંદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે ધન્ય છો, કૃતાર્થ છો, કૃત-લક્ષણ છો હે દેવાનુપ્રિય! મનુષ્ય ભવના જન્મ અને જીવનના ફળને સારી પેઠે મેળવી લીધું છે કેમકે તમે બરોબર રાજ્ય યાવત્ રણવાસને ત્યજીને તેને તિરસ્કૃત કરીને પ્રવ્રજિત થઈ ગયા છો

(अहण्णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। तं धन्नेसि ण

कारणात् खलु ब्रवीमि यत् धन्योऽसि त्वं हे देवानुप्रिय ! ' जाव सुलद्धं जन्म-जीवितफलम् , ततः खलु स कण्डरीकोऽनगार' पुण्डरीकस्य एतमर्थं=विहाराभिप्रायकमर्थं, नो आद्रियते यावत् तूष्णीकः सतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति । ततः खलु कण्डरीक' पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्वित्रिवारम् , एव=पूर्वोक्त-प्रकारेण, उक्तः सन् ' अकामए ' अकामक'=कामनारहितः ' अवस्सवसे ' अप-

---

देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव सच्चिट्ठइ, तएण कंडरीए पोंडरीएण दोच्चपि तच्चपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहार विहरइ) मैं अधन्य हूँ अकृतपुण्य हूँ। जो राज्य में यावत् अन्त'पुर में तथा मनुष्य सबधी कामभोगों में मूर्छित यावत् अध्युपपन्न बना हुआ हूँ। इसीलिये प्रव्रज्या ग्रहण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। इसी कारण से मै यह कह रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है। पुंडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर कंडरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे। कंडरीक अनगार की इस स्थिति को देखकर पुंडरीक ने दूसरी बार और तीसरी

तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ, जाव सच्चिट्ठइ, तएण कंडरीए पोंडरीएण दोच्चपि तच्चपि एवंवुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीय राय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहार विहरइ)

હું તો અધન્ય અને અકૃતપુણ્ય છું કેમકે હું તો રાજ્યમા યાવત્ રણવાસમા તેમજ મનુષ્યભવના કામભોગોમા મૂર્છિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બની રહ્યો છું, એજ્લા માટે જ પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવામા અસમર્થ થઇ રહ્યો છું એથી જ હું આ કહી રહ્યો છું-કે તમે ખરેખર ધન્ય છો હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જ જન્મ અને જીવનનુ ફળ કે જે પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવા રૂપ છે-તે સારી રીતે મેળવી લીધુ છે તેઓ ત્યાથી વિહાર કરી જાય તે આશયથી કહેવા તે પુંડરીકના વચનો સાભળીને કંડરીક અનગારે તેની કશી જ દરકાર કરી નહિ તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ આ બધુ સાભળીને પણ તેઓ ત્યાજ મૂગા થઇને બેસી જ રહ્યા કંડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઇને

स्ववशः=अपगतस्वातन्त्र्यः. सन् 'लज्जाए' लज्जया, 'गारवेण' गौरवेण= साधुत्वगौरवेण च पुण्डरीकं राजानमापृच्छति, आपृच्छ्य स्थविरैः सार्द्धं बहिर्जनपदविहारं विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्- तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचिकाल उग्गं उग्गेणं विहरइ । तओ पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तण णिव्विण्णे समणत्तणणिव्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी, थेराणं अतियाओ सणियं२ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता, जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि णिसीयइ णिसीइत्ता, ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठइ । तएणं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीयं रायं एवं-वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर

वार जब उनसे पूर्वोक्त प्रकारसे कहा-तब उन्हों ने नहीं इच्छा होने पर भी स्ववशताका अभाव होनेके कारण लज्जावश होकर साधुत्वके गौरवके खयाल से-पुंडरीक राजा से विहार करनेकी बात पूछी-पूछकर फिर वे वहा से स्थविरोके साथ बाहिरके जनपदों मे विहार कर गये ॥सू० ३॥

પુંડરીકે બીજી અને ત્રીજી વાર પણ જ્યારે પહેલા મુજબ જ વાત કહી ત્યારે તેમણે પોતાની ઇચ્છા નહિ હોવા છતાએ લાચાર થઇને, લજ્જિત થઇને, સાધુત્વના ગૌરવને લક્ષ્યમા રાખીને પુંડરીક રાજાને વિહાર કરવાની વાત પૂછી પૂછીને તેઓ ત્યાથી સ્થવિરોની સાથે બહારના જનપદોમા વિહાર કરી ગયા સૂ ૩

पायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ । तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता, अंतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता, एव वयासी–धण्णेसि णं तुम देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए । अहण्णं अधण्णे३ जाव नो पव्वइत्तए । त धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले । तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चपि तच्चपि जाव संचिट्ठइ। तएणं पोंडरीए कंडरीय एव वयासी अट्ठो भते ! भोगेहि ? हंता अट्ठो तएण से पोण्डरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एव वयासी -खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएणं अभिसिचइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । तत ग्वलु स कण्डरीक स्थविरैः सार्धं किंचित् कालम् ' उग्ग उग्गेण ' उग्रोग्रेण–अत्युग्रेण विहारेण विहरति । तत' पश्चात् ' समणत्तणपरितते ' श्रमणत्वपरितान्तः=श्रमणधर्मपरिपालने खिन्नः पुनः

'तएण से कडरीए थेरेहि सद्धिं ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कडरीए) वे कडरीक (थेरेहिं सद्धिं) स्थविरो के साथ (किंचिकाल) कुछ काल पर्यन्त (उग्ग उग्गेणं) अत्युग्रविहार करने मे (विहरइ) लग गये (तओपच्छा समणत्तण

'तएणं से कडरीए थेरेहिं सद्धि' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(तएण) त्यारपछी (से कडरीए) ते કડરીક (थेरेहि सद्धि) સ્થવિરોની સાથે (किंचिकाल) થોડા વખત સુધી તો (उग्गउग्गेण) અતીવ ઉગ્ર વિહાર કરવામા (विहरइ) પ્રવૃત્ત થયા (तओ पच्छा समणत्तण परितंते)

'समणत्तणणिव्विण्णे' श्रमणत्वनिर्विण्ण=साधुभावे औदासीन्य प्राप्तः 'समण त्तणणिब्भच्छिए' श्रमणत्वनिर्भर्त्सित'=श्रमणत्व निर्भर्त्सित येन स =साधुभावा नादरपरायणः, अतएव 'समणगुणमुक्कजोगी' श्रमणगुणमुक्तयोगी=श्रमणगुणे भ्यो मुक्तः=रहितो योग' योगः=मनोवाक्कायस्य, सोऽस्यास्तीतित्यक्तश्रमणगुणइत्यर्थः, स्थविराणामन्तिकात् शनैः शनैः प्रत्यवष्वस्कते=पश्चादागच्छति, प्रत्यवष्वस्य, यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी यत्रैव पुण्डरीकस्य भवन तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य अशोकवनिकाया.=अशोकवाटिकाया अशोकवरपादपस्य अध. पृथ्वीशिलापट्टके निषीदति=उपविशति, निषद्य, 'ओहयमणसकप्पे' अवहतमनः सकल्पः=अवहतो मन सकल्प =मनोव्यापारो यस्य सः=अपगतमानसिकव्यापार, 'जाव झियाय

परितते) बाद में वे श्रमणधर्म के परिपालन करने में खिन्न चित्त बन गये (समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी थेराण अतियाओ सणिय २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ) साधुभाव के निर्वाह करने में उदासीनता को प्राप्त हो गये-साधुभाव के प्रति उनमें अनादर भाव आ गया अत एव वे श्रमण गुणों से मुक्त योगवाले बन गये-श्रमण के गुणो का उन्हों ने परित्याग कर दिया। इस तरह वे धीरे २ स्थविरों के पास से खिसककर एक दिन जहा पुंडरीकिणी नगरी थी और उसमें भी जहा पुंटरीक राजा का भवन था वहा पर आ गये-। (उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयसि णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसकप्पे जाव झियायमाणे

ત્યારપછી તેઓ શ્રમણ ધર્મના પાલનમા ખિન્નચિત્ત-ઉદાસ બની ગયા

(समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी थेराण अतियाओ सणिय २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरागिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ)

તેઓ સાધુભાવને નભાવવામા ઉદાસ બની ગયા સાધુભાવ પ્રત્યે તેમ નામા અનાદર ભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયેા, એથી તેઓ શ્રમણ-ગુણેાથી મુક્ત ચેાગવાળા બની ગયા એટલે કે શ્રમણના ગુણેાને તેમણે ત્યજી દીધા આ પ્રમાણે તેઓ ધીમે ધીમે સ્થવિરેાની પાસેથી ચુપચાપ નીકળીને એક દિવસ જ્યા પુંડરિકિણી નગરી હતી અને તેમા પણ જ્યા પુંડરીક રાજાનુ ભવન હતું, ત્યા આવી ગયા

(उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्ट यसि, णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसकप्पे जाव झियायमाणे चिट्ठइ, तएणं

माणे ' यावद्ध्यायन्=आर्त्तं यानं कुर्वन् सतिष्ठते । तत खलु तस्य पुण्डरीकस्य राज्ञोऽम्बधात्री यत्रैव अशोकवनिका तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कण्डरीकमनगारम् अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टकेऽपहृतमनःसकल्प यावद् ध्यायन्त पश्यति, दृष्ट्वा, यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीक राजानमेवमवादीत्–एव खलु देवानुप्रिय ! तव ' पिउमाउए ' प्रियभ्राता कण्डरीकोऽनगारोऽशोकवनिकाया अशोकवरपादपस्य अधः पृथ्वीशिलापट्टके अपहृतमनःसकल्पो यावद्-यायति । तत खलु पुण्डरीकः अम्बधात्र्या एतमर्थं=कण्डरीकस्य

सचिट्ठइ, तएण तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओहयमणसकप्प जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी) वहा आकर वे अशोक वाटिका मे अशोक वृक्ष के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर बैठ गये । बैठकर अपहृत मानसिक व्यापारवाले होकर वे वहा आर्त्तध्यान करने लगे । इतने मे पुडरीक राजा की अम्बधात्री-धायमाता उस अशोक वाटिका मे आई-वहा आकर उसने कडरीक अनगार को अशोक पादप के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर चिन्तामग्न देखा-देखकर वह जहा पुडरीक राजा थे वहा आई-वहा आकर उसने पुडरीक राजा से इस प्रकार कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउमाउए कडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ) हे देवानुप्रिय !

तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओहयमणसकप्प जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी)

ત્યા આવીને તેઓ અશોક વાટિકામા અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર બેસી ગયા ત્યા બેસીને તેઓ અપહૃત માનસિક વ્યાપારવાળા (ઉદાસ) થઈને આર્ત્તધ્યાન કરવા લાગ્યા એટલામા પુડરીક રાજાની અમ્બધાત્રી ધાયમાતા–અશોક વાટિકામા આવી ત્યા આવીને તેણે કડરીક અનગારને અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા ઉપર આર્તધ્યાન કરતા જોયા જોઈને તે જ્યા પુડરીક રાજા હતા ત્યા આવીને તેણે પુડરીક રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(एव खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउमाउए कडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ)

अशोकवनिकामपगताशोकवृक्षादिः स्थितस्यार्तध्यानस्यमयं श्रुत्वा निशम्य=अवधार्य 'तहेव' तथैव=यथास्थितमतयेव 'समणे समणे' मन्त्रान्तः सन्- 'कूव पुनरसौ समागच्छ' इति शङ्कितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=झटिति उत्थितो-त्पर्यः, उत्थाय अन्तः पुरपरिवारसपरिवृत यत्रैव अशोकवनिका यत्रैव कण्डरीको-ऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि कृत्वः=वारत्रयम् आद क्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा एवमवादीत्-'धण्णेसि ण तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए' धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्रिय! यावत् प्रव्रजित। अह खलु 'अधण्णे' ३ अधन्यः ३ यावत् नो शक्नोमि प्रव्रजितुम्। 'त' तस्मात्कारणात् 'धन्नेसि' धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्रिय! 'जाव जीवियफले' यावत् जीवितफलम्=त्वया जन्मजीवितफल सुलब्धम् इति भावः। ततः खलु कण्डरीकेण एव=उक्तप्रकारेण एवमनन्तरवचनेनोक्तः सन् तूष्णीक सतिष्ठते, 'दोच्चपि तच्चपि' द्वितीय-मपि तृतीयमपि वार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव सचिट्ठइ' यावत् सतिष्ठते= मौनमवलम्ब्य स्थित इतिभाव। तत. खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्-अहो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहृतमनःसकल्प होकर यावत् चिन्ता मग्न बैठे हुए हैं (तएण पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म तहेव समणे समणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले-तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ, दोच्चपि तच्चपि जाव सचिट्ठइ, तएण पोंडरीए कडरीय एव वयासी अट्ठो मते! भोगेहिं! इता अट्ठो! तएण से पोंडरीए राया कोडु

હે દેવાનુપ્રિય! સાભળો, તમારા પ્રિય ભાઈ કડરીક અનગાર અશોક વાટિકામા અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર અપહૃતમન સકલ્પ થઇને યાવત્ ચિતામગ્ન થઇને બેસી રહ્યા છે

(तएण पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म तहेव समणे समणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अतेउरपरिवालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कड रीय तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्णे २ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ, दोच्चपि तच्चपि जाव सचिट्ठइ, तएण पोंडरीए कडरीय एव वयासी, अट्ठो / ता अट्ठो! तएण से ।७९ या कोडुबिय

चियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ) इस प्रकार अग्र्याधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त मै जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह सभ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये है-इस प्रकार शकित चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परिवार को साथ लेकर जहा अशोक वनिका थी-वहा पर आये-वहां आकर कडरीक अनगार के पास पहुँचे-वहां पहुँच कर उन्हो ने उन्हें तीन वार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एव अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब भी कहा मैं अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है। इस तरह प्रशंसा परक वचनों से पुडरीक राजा द्वारा कहे गये वे कडरीक अनगार कुछ भी नहीं बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुडरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुबारा तिबारा भी उन्हो ने

पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिंचइ)

આ પ્રમાણે અગ્રબાધાયના મુખથી આ વાત સાભળીને અને તેને મનમા ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમા તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમા સ્તબ્ધ થઇને "તેઓ કેમ આવ્યા છે" આ પ્રમાણે શકાયુક્ત થતા-ઉત્થાન શક્તિ વડે તેઓ ઊભા થયા અને ઊભા થઇને જલ્દી રણવાસના પરિવારને સાથે લઇને જ્યા અશોક વાટિકા હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને કડરીક અનગારની પાસે પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કર્યા બાદ કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જો તમે રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલા કહ્યુ હતું તેમજ તે વખને પણ કહ્યુ હુ તો અધન્ય છુ-૩-જે યાવત્ દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનુ પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ધન્ય છે તમોએ ખરેખર પોતાના જન્મ અને જીવનનુ ફળ સારી રીને પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે આ પ્રમાણે પ્રશસાજનક વચનોથી પુડરીક રાજા વડે સબોધિત કરાયેલા તે કડરીક અનગાર કઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂગા થઇને બેસીજ

अशोकवनिकामपगतशोकसङ्कल्पः स्थितस्यार्तध्यानरूपमर्थं श्रुत्वा निशम्य=अवधार्य 'तहेव' तथैव=यथास्थितस्तथैव 'समणे समाणे' मनोभ्रान्तः सन्- 'कथं पुनरसौ समागत' इति शङ्कितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=झटिति उत्तिष्ठतीत्यर्थः, उत्थाय अन्तःपुरपरिवारसपरिवृत यत्रैव अशोकवनिका यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि कृत्वः=त्रिवारम् आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा एवमवादीत्-' धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए ' धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्रिय ! यावत् प्रव्रजित । अह खलु 'अधण्णे ३ अधन्य' ३ यावत् नो शक्नोमि प्रव्रजितुम् । ' त ' तस्मात्कारणात् 'धन्नेसि ' धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्रिय ! ' जाव जीवियफले ' यावत् जीवितफलम्=त्वया जन्मजीवितफल सुलब्धम् इति भाव। ततः खलु कण्डरीकेण एव=अशासापरवचनैरुक्तः सन् तूष्णीक सतिष्ठते, ' दोच्चपि तच्चपि ' द्वितीयमपि तृतीयमपि वार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् ' जाव सचिट्ठइ ' यावत् सतिष्ठते=मौनमवलम्ब्य स्थित इतिभाव । तत. खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्-अहो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहृतमनःसकल्प होकर यावत् चिन्ता मग्न बैठे हुए हैं (तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म तहेव समणे समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कण्डरीय तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले-तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ, दोच्चपि तच्चपि जाव सचिट्ठइ, तएण पोंडरीए कडरीय एव वयासी अट्ठो मते ! भोगेहिं ! इता अट्ठो ! तएण से पोंडरीए राया कोडु

હે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, તમારા પ્રિય ભાઈ કડરીક અનગાર અશોક વાટિકામા અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર અપહૃતમન સકલ્પ થઇને યાવત્ ચિતામગ્ન થઇને બેસી રહ્યા છે

(तएण पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म तहेव समणे समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अतेउरपरिपालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्णे २ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसिण तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ, दोच्चवि, तच्चवि जाव सचिट्ठई, तएण पोंडरीए कडरीय एव वयासी, अट्ठो भते ! भोगेहिं ? इता अट्ठो ! तएण से पोंडरीए राया कोडु बिय

वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ) इस प्रकार अग्राधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त मैं जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह सभ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये हैं-इस प्रकार शंकित चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परिवार को साथ लेकर जहा अशोक वनिका थी-वहा पर आये-वहा आकर कंडरीक अनगार के पास पहुँचे-वहा पहुँच कर उन्हो ने उन्हें तीन वार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एव अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब भी कहा मैं अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय ! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है। इस तरह प्रशंसा परक वचनो से पुंडरीक राजा द्वारा कहे गये वे कंडरीक अनगार कुछ भी नही बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुंडरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुबारा तिबारा भी उन्हो ने

पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिंचइ)

આ પ્રમાણે અગ્રબાધાયના મુખથી આ વાત સાભળીને અને તેને મનમા ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમા તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમા સ્તબ્ધ થઇને "તેઓ કેમ આવ્યા છે" આ પ્રમાણે શકાયુક્ત થતા-ઉત્થાન શક્તિ વડે તેઓ ઊભા થયા અને ઊભા થઇને જલ્દી રણવાસના પરિવારને સાથે લઇને જ્યા અશોક વાટિકા હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને કંડરીક અનગારની પાસે પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કર્યા બાદ કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જે તમે રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલા કહ્યુ હતું તેમજ તે વખતે પણ કહ્યુ હુ તો અધન્ય છુ-૩-જે યાવત્ દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનુ પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ધન્ય છે તમોએ ખરેખર પોતાના જન્મ અને જીવનનુ ફળ સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે આ પ્રમાણે પ્રશસાજનક વચનોથી પુંડરીક રાજા વડે સબોધિત કરાયેલા તે કંડરીક અનગાર કઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂગા થઇને જેમીજ

मंते ! भोगेहिं ' अर्थी हे भदन्त ! भोगैः ?=किं भोगैः प्रयोजनमस्ति ? इति, पण्डरीकः माह-' हता ! अट्ठो '=हन्त ! अर्थः=भोगमुपभोक्तुमानसोऽस्मीति भावः । ततः खलु=पुण्डरीकाभिप्रायानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=माह्वयति, शब्दयित्वा, एवमवदत् - क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! पण्डरीकस्य महार्थम्=महत्यर्थम् ' जाव रायाभिसेयं ' यावत् राजाभिषेकम् ' उवट्ठवेइ ' उपस्थापयत=परिकल्पयत, ' जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ ' यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा पण्डरीकं राजपदे स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्-तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्हों ने कुछ नहीं ध्यान दिया केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे-तब पुनः पुंडरीकने उन कंडरीक अनगार से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य है ? तब कंडरीक ने कहा हा-मेरा मन भोगों को उपभोग करने के लिये हो रहा है। इस तरह कंडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुंडरीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-भो देवानुप्रियो तुम लोग कंडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुंडरीक राजा की इस आज्ञा के अनुसार, उनलोगों ने वैसा ही किया-जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित हो चुकी-तब पुंडरीकने कंडरीक का राज्याभिषेककर दिया-कंडरीक को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા પુંડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઇને બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું પણ તેમણે તેની કઈ દરકાર કરી નહિ તેઓ ફક્ત મૂગા થઇને જેસી જ રહ્યા ત્યારે ફરી પુંડરીકે તે કંડરીક અનગારને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભગવન્ ! તમને શું હજી ' ભોગ ઉપભોગોની ઈચ્છા છે ? ત્યારે કંડરીકે કહ્યું કે હા, ખરેખર મારૂ મન ભોગ ઉપભોગમા પ્રવૃત્ત થવા ઇચ્છે છે આ પ્રમાણે કંડરીકની ઇચ્છા જાણીને પુંડરીક રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો કંડરીક માટે-રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો પુંડરીક રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાભળીને તે લોકોએ તેમજ કર્યું જ્યારે રાજ્યાભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઇ ગઈ ત્યારે પુંડરીકે કંડરીકનો રાજ્યાભિષેક કરી દીધો એટલે કે કંડરીકને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો ॥ સૂત્ર ૪ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ, गेण्हित्ता, इम एयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताणं तओ पच्छा आहार आहरित्तए त्तिकट्टु, इम च एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हेत्ता णं पोडरिगिणीए पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—' तएण पुडगीए ' इत्यादि । ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्च मुष्टिक लोच करोति, तथा स्वयमेव ' चाउज्जाम ' चातुर्यामं=चतुर्महाव्रतलक्षण धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, ' कडरीयस्स सतिय ' कण्डरीकस्य सत्कम्=कण्डरीक सम्बन्धि इत्यर्थः, ' आयारभटय ' आचारभाण्डक आचाराय=साधोः पञ्चविधा चारपरिपालनाय यद्भाण्डक=वस्त्रपात्रमदोकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

'तएण पुडरीए सयमेव पचमुट्ठिय' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पुडरीए) पुडरीक ने (सयमेव) अपने आप (पचमुट्ठिय लोय करेइ) अपना पचमुष्टिक लोच किया- (करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ) और लोच करके स्वय ही उन्होने-चातुर्याम-चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया। एवं कडरीक के अनगार अवस्था सबन्धी आचार भाण्डक को-वस्त्र, पात्र सदोरक मुख वस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप साधु चिह्नों को-ले लिया। (गेण्हित्ता इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमसित्ता

'तएण पुडरीए सयमेव पचमुट्ठिय' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારપછી (पुडरीए) પુડરીકે (सयमेव) પોતાની જાતે જ (पचमुट्ठिय लोय करेइ) પોતાનુ પચમુષ્ટિક લુચન કર્યું

(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ)

અને લુચન કરીને જાતે જ તેમણે ચાતુર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપધર્મને ધારણ કરી લીધો અને કડરીકની અનગાર અવસ્થા સબધી આચાર ભાડકો-વસ્ત્ર, પાત્ર, સદોરક મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ વગેરે સાધુ ચિહ્નોને લઈ લીધા

मंते ! भोगेहिं ' अर्थो हे भदन्त ! भोगैः ?=किं भोगैः प्रयोजनमस्ति ? इति, पुण्डरीक' प्राह-' हता ! अट्ठो '=हन्त ! अर्थः=भोगसुपभोक्तुमानसोऽस्मीति भा' । ततः खलु=पुण्डरीकाभिप्रायानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=भाषयति, शब्दयित्वा, एवमवदत् - क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! पुण्डरीकस्य महार्थम्=अत्यर्थम् ' जाव रायाभिसेयं ' यावत् राजाभिषेकम् ' उवट्ठवेह ' उपस्थापयत=परिकल्पयत, ' जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ ' यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं राजपदे स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्-तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्हों ने कुछ नहीं ध्यान दिया केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे-तब पुनः पुंडरीकने उन कंडरीक अनगार से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य है ? तब कंडरीक ने कहा हा-मेरा मन भोगों को उपभोग करने के लिये हो रहा है। इस तरह कंडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुंडरीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-भो देवानुप्रियो तुम लोग कंडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुंडरीक राजा की इस आज्ञा के अनुसार, उनलोगों ने वैसा ही किया-जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित हो चुकी-तब पुंडरीकने कंडरीक का राज्याभिषेककर दिया-कंडरीक को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા પુંડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઇને બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું પણ તેમણે તેની કંઈ દરકાર કરી નહિ તેઓ ફક્ત મૂગા થઇને બેસી જ રહ્યા ત્યારે ફરી પુંડરીકે તે કંડરીક અનગારને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભગવન્ ! તમને શું હજી ભોગ ઉપભોગોની ઇચ્છા છે? ત્યારે કંડરીકે કહ્યું કે હા, ખરેખર મારૂ મન ભોગ ઉપભોગમા પ્રવૃત્ત થવા ઇચ્છે છે આ પ્રમાણે કંડરીકની ઇચ્છા જાણીને પુંડરીક રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો કંડરીક માટે-રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો પુંડરીક રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તેમજ કર્યું જ્યારે રાજ્યાભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઇ ગઈ ત્યારે પુંડરીકે કંડરીકનો રાજ્યાભિષેક કરી દીધો એટલે કે કંડરીકને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો ॥ સૂત્ર ૪ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ, गेण्हित्ता, इम एयारूव अभिग्गहं अभिगिण्हइ–कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताणं तओ पच्छा आहार आहरित्तए त्तिकट्टु, इम च एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हेत्ता णं पोडरिगिणीए पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—' तएण पुडगीए ' इत्यादि । ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्च मुष्टिक लोच करोति, तथा स्वयमेव ' चाउज्जाम ' चातुर्यामं=चतुर्महाव्रतलक्षण धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, ' कडरीयस्स सतिय ' कण्टरीकस्य सत्कम्=कण्डरीक सम्बन्धि इत्यर्थः, ' आयारभडय ' आचारभाण्डक आचाराय=साधोः पञ्चविधा चारपरिपालनाय यद्भाण्डकं=यत्पात्रसदोरकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

'तएण पुडरीए सयमेव पचमुट्ठिय' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पुडरीए) पुडरीक ने (सयमेव) अपने आप (पचमुट्ठिय लोय करेइ) अपना पचमुष्टिक लोंच किया– (करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ) और लोच करके स्वय ही उन्होने–चातुर्याम–चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया। एव कडरीक के अनगार अवस्था सबन्धी आचार भाण्डक को–वस्त्र, पात्र, सदोरक मुख वस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप साधु चिह्नों को–ले लिया। (गेण्हित्ता इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमसित्ता

'तएण पुडरीए सयमेव पचमुट्ठिय' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારપછી (पुडरीए) પુડરીકે (सयमेव) પોતાની જાતે જ (पचमुट्ठिय लोय करेइ) પોતાનુ પચમુષ્ટિક લુચન કર્યું

(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ)

અને લુચન કરીને જાતે જ તેમણે ચાતુર્યામ–ચતુર્મહાવ્રત રૂપધર્મને ધારણ કરી લીધો અને કડરીકની અનગાર અવસ્થા સબધી આચાર ભાડકો–વસ્ત્ર, પાત્ર, સદોરક મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ વગેરે સાધુ ચિહ્નોને લઈ લીધા

गृह्णाति, गृहीत्वा, इमम् एतद्रूपम्=वक्ष्यमाणमभिग्रहम्=प्रतिज्ञाविशेषम् अभिगृह्णाति=करोति अभिग्रहस्वरूपमाह-कल्पते मे स्थविरान वन्दित्वा नमस्थित्वा स्थविराणा मन्तिके चातुर्यामं धर्मम् ' उवसपज्जित्ताण ' उपसंपद्य=स्वीकृत्य, ततः पश्चात्-आहारमाहर्तुम् इति कृत्वा निश्चित्य, इमं च एतद्रूपम् अभिग्रहम्, अभिगृह्य खलु पुण्डरीकिण्या प्रतिनिष्क्रामति निस्सरति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पुव्वाणुपुव्विं ' पूर्वानुपूर्व्या चरन्, ग्रामानुग्राम द्रवन् यत्र स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव प्राधारयद्-गमनाय गन्तु प्रस्थित' ॥ सु०५ ॥

थेराण अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसपज्जित्ताण, तओ पच्छा आहारं आहरित्तए) बाद में उन्होंने इस प्रकार अभिग्रह धारण किया कि जबतक मैं स्थविर भगवन्तो को वंदना नमस्कार कर उनके पाससे चातुर्याम धर्मको धारण नहीं कर लूंगा, तबतक मैं आहार पानी ग्रहण नहीं करूँगा उनके पास चातुर्याम धर्म धारण करके ही आहार ग्रहण करूँगा (त्ति कट्टु इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता णं पोंडरिगिणीए पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार का यह अभिग्रहण कर वे उस पुंडरीकिणी नगरी से निकले-और निकल कर तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए एवं एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विचरण करते हुए वे उस ओर प्रस्थित हुए कि जहा स्थविर भगवंत विराजमान थे ॥ सूत्र ५ ॥

(गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, करपइ, मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं तओपच्छा आहारं आहरित्तए)

ત્યારબાદ તેમણે આ જાતનો અભિગ્રહ ધારણ કર્યો કે જ્યાં સુધી હું સ્થવિર ભગવંતોને વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ નહિ કરૂં ત્યાં સુધી હું આહાર પાણી ગ્રહણ કરીશ નહિ તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ કરીને જ હું આહાર ગ્રહણ કરીશ

(त्ति कट्टु इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ताणं पोंडरिगिणीए पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

આ પ્રમાણે તે અભિગ્રહને મનમા ધારણ કરીને તેઓ તે પુંડરીકિણી નગરીની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતા કરતા અને આ પ્રમાણે એક ગામથી બીજે ગામ વિચરણ કરતા કરતા તેઓએ જ્યાં સ્થવિર ભગવંતો વિરાજમાન હતા તે તરફ પ્રસ્થાન કર્યુ ॥સૂ૦૫॥

मूलम्--तएणं तस्स कडरीयस्स रण्णो त पणीय पाण-भोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइ भोयणप्पसगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ। तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगय-सरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ। तएणं से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकाल ट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववण्णे। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टि-स्सइ, जहा व से कडरीए राया ॥ सू० ६ ॥

टीका—'तएणं तस्स' इत्यादि। तत खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञस्त 'पणीय' प्रणीतम् = सरस गरिष्ठ च पानभोजनम् 'आहारियस्स समाणस्स' आहारितस्य सत'=आहार कुर्वतः सत' 'अइजागरियेण य' अतिजागरितेन च=

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स कडरीयस्स रण्णो) उस कड रीक राजा के (त पणीय पाण भोयण आहारीयस्स समाणस्स अतिजा गरिएणय अइभोयणप्पसगेणय से आहारे णो सम्म परिणमइ) इस प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजन के खाने से तथा विषयों की अधिक आसक्ति के कारण अतिजागरण करने से एव प्रमाणाधिक भोजन के

'तएणं तस्स कटरीयस्स रण्णो' इत्यादि।

टीकार्थ'—(तएण) त्यारपछी (तस्स कडरीयस्स रण्णो) ते કડરીક રાજાને

(त पणीय पाणभोयण ओहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अईभो यणप्पसगेण य से आहारे णो सग्म परिणमइ)

તે પ્રણીત-સરસ-ગરિષ્ઠ પાન ભોજનના આહારથી તેમજ વિષયોમા વધારે પડતી આસક્તિના લીધે, વધારે જાગરણ કરવાથી, અને પ્રમાણ કરતા

विषयासक्तेरतिमात्रतया ' आलोयणप्पमाणं ' अतिभोजनमसङ्गेन=प्रमाणाधिक भोजनेन स आहारो नो सम्यक् परिणमति=यथावदाहारस्य परिपाको न भवति। ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञः ' तंसि ' आहारंसि ' तस्मिन् आहारे ' अपरिणममाणंसि ' अपरिणमतीति=परिपाकमगच्छति सति ' पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेर्मध्यभागे ' सरीरंसि ' शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशी वेदना ? उज्जला=सुखलेशरहिता, विपुला=विशाला-सर्वशरीरव्यापा ' पगाढा ' प्रगाढा ' जाव दुरहियासा ' यावद् दुरधिसह्या=सोढुमशक्या, पुनः स कण्डरीको राजा ' पित्तज्जरपरिगयसरीरे ' पित्तज्वर परिगतशरीर =पित्तज्वरेण परिगत=व्याप्त शरीर यस्य स.=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीर. ' दाहवक्कंतीए ' दाह व्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्त चापि विहरति=आस्ते। ततः खलु स कण्डरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्तःपुरे च ' जाव अज्झोववन्ने ' यावत्

प्रसग से कुत आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएण तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ) इसलिये एक दिन की बात है कि उन कंडरीक राजा के जब वह कुत सरस गरिष्ट आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर मे रात्रि के मध्यभागमे वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी बहुत अधिक थी-यावत् वह उन्हें दुरधिसह्य हो रही थी। पित्तज्वर से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कंडरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

પણ વધારે ભોજન પ્રસંગોમા કરેલા આહારનુ પાચન બરાબર થતું નહોતુ

(तएण तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्व रत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ)

એથી એક દિવસની વાત છે કે તે કંડરીક રાજાને જ્યારે ભોજન રૂપમા લીધેલા તે સરસ અને ગરિષ્ઠ આહારનુ સારી રીતે પાચન થયુ નહિ ત્યારે રાત્રિના મધ્ય ભાગમા તેમના શરીરમા વેદના થવા માંડી, તેથી તેઓ ખૂબ જ દુખી થયા આ વેદનામા માત્ર દુઃખ જ થતુ હતુ, તે વેદના તેમના સંપૂર્ણ શરીરમા વ્યાપ્ત થઈ [illegible] રતી પ્રમાણમા તે બહુ જ વધારે હતી યાવત્ તે તેમના માટે દુર[illegible] સહ્ય) થઈ પડી હતી પિત્તજ્વરથી વ્યાપ્ત થયેલા શરીરવાળા તે [illegible] જ્વાળાઓથી સળગી ઉઠયા

अध्युपपन्नः-मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथित अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' आर्तदु.खार्तवशार्तः=तत्र=आर्त्त.=मनसा दु खितः, दुःखार्तः=देहदु खयुक्तः, वशार्तः=राज्यराष्ट्रान्त. पुराद्यासक्तेन्द्रियवशेन विषयसुखवियोग-सम्भावनया पीडित =आर्त्तध्यानोपगत इत्यर्थ । 'अकामए' अकामकः=अनिच्छक -मरणवाञ्छारहित, 'अवस्सवसे' अवश्यवश =अपगतस्वातन्त्र्य. पराधीनः सन् कालमासे काल कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अधः सप्तम्या पृथिव्याम् तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्ठिइयंसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये। (तएण से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासेकाल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसी नेरइयत्ताए उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कंडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एव अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिकों में सर्वथा आसक्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दु खित होकर, देह के दुःख से एकक्षण आर्तध्यान में पड़ गये। अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जावे-तो भी सासारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतन्त्र थे, इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के सातवे नरक मे कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है-अर्थात् ३३ सा

(तएण से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए, अक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

આ પ્રમાણે દુ ખિત થયેલા તે કંડરીક રાજા રાજ્ય, રાષ્ટ્ર અને રણુ વાસમા અધ્યુપપન્ન થઈ ગયા એટલે કે વધારે પડતા આસક્ત થઈ ગયા. આ પ્રમાણે ગન્ધ વગેરેમા સ પૂર્ણપણે આસક્ત ભાવથી બ ધાયેલા તે રાજા મનથી દુ ખિત થઇને, શારીરિક કષ્ટથી એક ક્ષણ માટે પણ મુક્તિ નહિ થવાને કારણે વિષય સુખોના વિયોગની સ ભાવના થ ય તેમજ રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, રણુવાસ વગેરેમા આસક્ત ઇન્દ્રિયોના વશમા હોવાને કારણે આર્તધ્યાનમા મગ્ન થઈ ગયા છેવટે તેઓ મૃત્યુને ઇચ્છતા નહોતા છતાએ સાંસારિક વાતાવરણુમા બ ધાયેલા હોવાને કારણે અથવા વેદનાઓથી પીડિત હોવાને કારણે તેઓ સ્વવશ હતા નહિ, પરવશ-પરતત્ર હતા, એથી કાળ અવસરે કાળ કરીને,-મૃત્યુ પામીને-નીચે તમસ્તમપ્રભા નામના સાતમા નરકમાં કે જે ઉત્કૃષ્ટ કાલ

विषयासक्तेरतिजागरणया ' आहोयणए ' अतिभोजनप्रसङ्गेन=प्रमाणाधिक भोजनेन स आहारो नो सम्यक् परिणमति=यथावदाहारस्य परिपाको न भवति। ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञः ' तंसि ' आहारंसि ' तस्मिन् आहारे ' अप रिणममाणंसि ' अपरिणमति=परिपाकमगच्छति सति ' पुव्वरत्तावरत्तकालसम यंसि ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेर्मध्यभागे ' सरीरंसि ' शरीरे वेदना प्रादु र्भूता, कीदृशीवेदना ? उज्जला=मुक्तलेशरहिता, विपुला=विशाला-सर्वशरीरव्यापा ' पगाढा ' प्रगाढा ' जाव दुरहियासा ' यावद् दुरधिसह्या=सोढुमशक्या, पुनः स कण्डरीको राजा ' पित्तज्जरपरिगयसरीरे ' पित्तज्वर परिगतशरीर =पित्तज्वरेण परिगत=व्याप्त शरीर यस्य स.=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीरः ' दाहवक्कतीए ' दाह व्युत्क्रान्तिक'=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्त चापि विहरति=आस्ते। ततः खलु स कण्डरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्तःपुरे च ' जाव अज्झोववन्ने ' यावत्

प्रसग से कृत आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएण तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावर त्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ) इसलिये एक दिन की बात है कि उन कंडरीक राजा के जब वह कृत सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर मे रात्रि के मध्यभागमे वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी बहुत अधिक थी-यावत् वह उन्हें दुरधिसह्य हो रही थी। पित्तज्वर से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कंडरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

પણ વધારે ભોજન પ્રસંગોમા કરેલા આહારનુ પાચન બરાબર થતુ નહોતુ

(तएण तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्व रत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ)

એથી એક દિવસની વાત છે કે તે કંડરીક રાજાને જ્યારે ભોજન રૂપમા લીધેલા તે સરસ અને ગરિષ્ઠ આહારનુ સારી રીતે પાચન થયુ નહિ ત્યારે રાત્રિના મધ્ય ભાગમા તેમના શરીરમા વેદના થવા માંડી, તેથી તેઓ ખૂબ જ દુખી થયા આ વેદનામા માત્ર દુઃખ જ થતુ હતુ, તે વેદના તેમના સમ્પૂર્ણ શરીરમા વ્યાપ્ત થઈ રહી હતી પ્રમાણમા તે બહુ જ વધારે હતી યાવત્ તે તેમના માટે દુરધિસહ્ય (અસહ્ય) થઈ પડી હતી પિત્તજ્વરથી વ્યાપ્ત થયેલા શરીરવાળા તે કંડરીક રાજા દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી સળગી ઉઠયા

अध्युपपन्नः-मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथित अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' आर्तदुःखार्तवशार्तः=तत्र=आर्त्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः=देहदुःखयुक्तः, वशार्तः=राज्यराष्ट्रान्तः पुराद्यासक्तेन्द्रियवशेन विषयसुखवियोग-सम्भावनया पीडित=आर्त्तध्यानोपगत इत्यर्थ । 'अकामए' अकामकः=अनिच्छक-मरणवाञ्छारहितः, 'अवस्सवसे' अवश्यवश=अपगतस्वातन्त्र्यः परा धीनः सन् कालमासे काल कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अधः सप्तम्या पृथिव्याम् तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्ठिइयंसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये। (तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसी नेरइयत्ताए उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कंडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एवं अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिकों में सर्वथा आसक्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दुःखित होकर, देह के दुःख से एकक्षण आर्तध्यान में पड़ गये। अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जावे-तो भी नासारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतन्त्र थे, इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के सातवे नरक मे कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है-अर्थात् ३३ सा

(तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए, अक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

આ પ્રમાણે દુઃખિત થયેલા તે કંડરીક રાજા રાજ્ય, રાષ્ટ્ર અને રણવાસમા અધ્યુપપન્ન થઈ ગયા એટલે કે વધારે પડતા આસક્ત થઈ ગયા. આ પ્રમાણે રાજ્ય વગેરેમા સંપૂર્ણપણે આસક્ત ભાવથી બંધાયેલા તે રાજા મનથી દુઃખિત થઇને, શારીરિક કષ્ટથી એક ક્ષણ માટે પણ મુક્તિ નહિ થવાને કારણે વિષય સુખોના વિયોગની સંભાવના બદલ તેમજ રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, રણવાસ વગેરેમા આસક્ત ઇન્દ્રિયોના વશમા હોવાને કારણે આર્તધ્યાનમા મગ્ન થઈ ગયા છેવટે તેઓ મૃત્યુને ઇચ્છતા નહોતા છતાએ સાંસારિક વાતાવરણમા બંધાયેલા હોવાને કારણે અથવા વેદનાઓથી પીડિત હોવાને કારણે તેઓ સ્વવશ હતા નહિ, પરવશ-પરતંત્ર હતા, એથી કાળ અવસરે કાળ કરીને,-મૃત્યુ પામીને-નીચે તમસ્તમપ્રભા નામના સાતમા નરકમાં કે જે ઉત્કૃષ્ટ કાલ-

नैरयिकतया उपपन्नः। एतद् दृष्टान्तेन भगवान् महावीरः साधूनुपदिशति-एवमेव =अनेनैवमकारेण हे आयुष्मन्तः ! श्रमणाः यः कश्चिदस्माकं श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके यावन्मुण्डितः सन् पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान् 'आसाएइ' आस्वादयति। स 'जाव अणुपरियट्टिस्सइ' यावदनुपर्यटिष्यति-यावत्-चातुरन्तसंसारकान्तारं परिभ्रमिष्यति। 'जहेव से कंडरीए राया' यथैव स कण्डरीको राजा ॥ सू०६ ॥

मूलम्-तएणं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता, अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तइ,

---

गर की जहा उत्कृष्ट स्थिति है-नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो
इसी बात को दृष्टान्त से श्री भगवान् महावीर प्रभु साधुओं को
झाते है-(एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि
स्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंड
राया) इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो कोई हमारा श्रमण अथ
श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास मे दीक्षित होकर के पुन मनुष्
भव सबन्धी कामभोगों को भोगता है वह कंडरीक राजा की तरह
यावत् इस चतुर्गति रूप ससार कान्तार में परिभ्रमण करेगा ॥सूत्र ६॥

સ્થિતિ પ્રમાણ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની જ્યા Cત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાત રૂપમા સાધુઓને સમજાવે છે કે—

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंडरीए राया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે કોઇ અમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઇને ફરી જો તે મનુષ્ય ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કંડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારમા પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, भत्त-पाणं पडिदंसेइ पडिदंसित्ता, थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे विल मिव पण्णगभूएणं अप्पाणेण तं फासुएसणिज्ज असणपा-णखाइमसाइम सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ । तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स त कालाइक्कतं अरस विरस सीय-लुक्ख पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ । तएणं तस्स पुंडरीस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरप-रिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ । तएणं से पुंडरीए अण-गारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल जाव एव वयासी—णमोऽत्थुणं अरिहंताणं जाव सपत्ताणं णमोत्थुणं थेराण भगवताण मम धम्मायरियाणं धम्मोव-एसयाण पुव्वि पि य ण मए थेराण अतिए सव्वे पाणाइ-वाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उव-वन्ने । तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमत काहिइ । एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहि कामभोगेहिं णो सज्जइ णो रज्जइ, जाव विप्पडिघायमावज्जइ, से ण इहभवे चेव बहूण सावगाणं०

नैरयिकतया उपपन्नः। एतद् दृष्टान्तेन भगवान् महावीरः साधूनुपदिशति-एवमेव =अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्त' ! श्रमणाः यः कश्चिदस्माकं श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके यावत्प्रव्रजितः सन् पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान् 'आसाएइ' आस्वादयति। स 'जाव अणुपरियट्टिस्सइ' यावदनुपर्यटिष्यति-यावत्-चातुरन्तसंसारकान्तारं परिभ्रमिष्यति। 'जहा व से कंडरीए राया' यथैव स पुण्डरीको राजा ॥ सू०६ ॥

मूलम्-तएणं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चपि चाउज्जाम धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, करित्ता जाव अडमाणे सीयल्लुक्ख पाणभोयणं पडि गाहेइ, पडिगाहित्ता, अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तइ,

---

गर की जहा उत्कृष्ट स्थिति है-नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो गये। इसी बात को दृष्टान्त से श्री भगवान् महावीर प्रभु साधुओं को समझाते है-(एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कडरीए राया) इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो कोई हमारा श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास मे दीक्षित होकर के पुनः मनुष्य भव सबन्धी कामभोगो को भोगता है वह कडरीक राजा की तरह यावत् इस चतुर्गति रूप ससार कान्तार में परिभ्रमण करेगा ॥सूत्र६॥

સ્થિતિ પ્રમાણ છે-એટલે કે 33 સાગરની જ્યા Cત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાત રૂપમા સાધુઓને સમજાવે છે કે—

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कडरीए राया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે કોઇ અમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઇને ફરી જો તે મનુષ્ય ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાતારમા પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

पौरुष्या=प्रथमे प्रहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्ख' शीतरूक्ष-शीत=पर्युषित, रूक्ष घृतादिरहित पान भोजन प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकट्टु' यथापर्याप्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमितिमनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

---

पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तइ-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमं साइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हो ने स्थविर भगवतों को वदना नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हो ने उनसे दुवाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित, रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहा से

पोरिसीए सज्जाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तई-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं, अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ)

ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવંતોને વંદના અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમની પાસેથી બીજીવાર ચાતુર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપ ધર્મને ધારણ કર્યો જ્યારે ષષ્ઠ ક્ષપણની પારણાનો વખત આવ્યો ત્યારે તેઓ પ્રથમ પૌરૂષીમા સ્વાધ્યાય કરતા અને સ્વાધ્યાય કરીને તેઓ ઉચ્ચ, નીચ અને મધ્યમ કુળોમા ભિક્ષા માટે પરિભ્રમણ કરતા તે સમયે તેમને શીત-પર્યુંષિત, રૂક્ષ-ઘી વગરનો, પાન આહાર મળતો તો તેને તેઓ સ્વીકારી લેતા અને 'આટલો આહાર ઉદર-પોષણ માટે પૂરતો છે' આવો મનમા વિચાર કરીને ત્યાથી પાછા ફરી જતા પાછા આવીને ભિક્ષામા

अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जं सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे त्तिकट्टु परलोय वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंत संसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ जहावेसे पोंडरीए अणगारे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । एव खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके ' दोच्चपि ' द्वितीयमपिवारम् चातुर्यामिक चतुर्महाव्रतरूप धर्मं प्रतिपद्यते । तथा षष्ठक्षपणपारणाया समाप्ताया प्रथमाया

' तएण से पोंडरीए अणगारे' इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुंडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) जहां स्थविर भगवन्त विराजमान थे वहां आ गये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चपि चाउज्जाम धम्म

(तएण से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्यारबाद (से पोंडरीए अणगारे) ते पुंडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં સ્થવિર ભગવંત બિરાજમાન હતા ત્યાં ગયા

(उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चपि चाउज्जामं, धम्मं पडिवज्जइ,

पौरुष्या=प्रथमे प्रहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्ख' शीतरूक्ष-शीत=पर्युषित, रूक्ष घृतादिरहित पान भोजन प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकट्टु' यथापर्याप्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमितिमनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

---

पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमिं त्ति कट्टु पडिनियत्तइ-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमं साइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हों ने स्थविर भगवंतों को वंदना नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके बाद में उन्हों ने उनसे दुवाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित, रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहां से

पोरिसीए सज्झायं करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमिं त्ति कट्टु पडिनियत्तई-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं, अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ)

ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવંતોને વંદના અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમની પાસેથી બીજીવાર ચાતુર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપ ધર્મને ધારણ કર્યો જ્યારે ષષ્ઠ ક્ષપણની પારણાનો વખત આવ્યો ત્યારે તેઓ પ્રથમ પૌરૂષીમા સ્વાધ્યાય કરતા અને સ્વાધ્યાય કરીને તેઓ ઉચ્ચ, નીચ અને મધ્યમ કુળોમા ભિક્ષા માટે પરિભ્રમણ કરતા તે સમયે તેમને શીત-પર્યુષિત, રૂક્ષ-ઘી વગરનો, પાન આહાર મળતો તો તેને તેઓ સ્વીકારી લેતા અને 'આટલો આહાર ઉદર-પોષણ માટે પૂરતો છે' આવો મનમા વિચાર કરીને ત્યાથી પાછા ફરી જતા પાછા આવીને ભિક્ષામા

अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जेत्तिकट्टु परलोप वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरत संसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ जहावेसे पोंडरीए अणगारे । एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । एव खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । तत' खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा स्थविराणामन्तिके ' दोच्चपि ' द्वितीयमपि वारम् चातुर्यामं चतुर्महाव्रतरूप धर्मं प्रतिपद्यते । तथा षष्ठक्षपणपारणाया समाप्ताया प्रथमाया

' तएण से पोंडरीए अणगारे' इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भगवन विराजमान थे वहा आ गये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराणं अतिए दोच्चपि चाउज्जाम धम्म

(तएणं से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्यारबाद (से पोंडरीए अणगारे) ते पुडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) જ્યા સ્થવિર ભગવત બિરાજમાન હતા ત્યા ગયા

(उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराण अतिए दोच्चपि चाउज्जाम, धम्म पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरस विरस शीतरूक्ष पान भोजनम् ' आहारियस्स ' आहारितस्य सत पूर्वरात्रापररात्रकालसमये ' धम्मजागरियं जागरमाणस्स ' धर्म जागारिका जाग्रत =धर्मचिन्तनार्थं जागरणा कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति=नो परिपाक गच्छति। ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता ' उज्जला जाव दुरहियासा ' उज्ज्वला यावत् दुरधिसह्या, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति। तत. खलु स पुण्डरीकोऽनगार ' अस्थामे ' अस्थामा=शक्तिरहितः, अबल =शारीरिकबलरहितः, ' अवीरिए ' अवीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषार्थपराक्रमरहितः ' करयल जाव ' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं दशनख मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्सिद्धिप्राप्तेभ्यः=मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा

भोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इस तरह उन पुंडरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएणं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुणं अरिहंताणं जाव सपत्ताणं णमोत्थुणं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुव्विं पि य णं मए

लुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

આ પ્રમાણે તે પુંડરીક અનગારનો કાળાતિક્રમથી કરેલો તે અરસ, વિરસ, શીત, રૂક્ષ પાન આહારનું રાત્રિના મધ્ય ભાગમાં ધર્મચિંતન માટે કરેલા જાગરણને લીધે સારી રીતે પાચન થતું ન હતું

(तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएणं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुणं अरिहंताणं जाव सपत्ताणं णमोत्थुणं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं

निर्वर्तते=प्रत्यागच्छति, प्रतिनिवृत्य यत्रैव स्थविरभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, भक्तपान प्रतिदर्शयति, प्रतिदर्श्य, स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञातः सन् अमूर्च्छित अगृद्ध अग्रथित' अनध्युपपन्नः=आसक्तिपरिणतिरहित इतिभाव', ' बिल मिव पन्नगभूएण अप्पाणेण ' बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना इव=यथा पन्नग भूतेन=पन्नगभवमागतेन आत्मना=जीवेन बिल प्रविश्यते, तथा त ' फासुएसणिज्जं ' प्रासुकैषणीय=द्वाचत्वारिंशद्दोषरहितम् अशन पानं खाद्य स्वाद्य 'सरीर कोट्ठगंसि' शरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति, यथा भुजङ्गो बिलस्य पार्श्वभागद्वयमस्पृशन् मध्यभागत एवात्मान बिले प्रवेशयति तथा स मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहित माहार कण्ठनालाभिमुख प्रवेश्य आहारयतीति भाव' । तत खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य ' कालाइक्कत ' कालातिक्रान्त=कालमतिक्रम्य प्राप्तम्-बुभुक्षा

वापिस आ जाते-वापिस आकर फिर प्राप्त भिक्षान्न को दिखाने के लिये वे जहा स्थविर भगवत विराजमान होते वहां आते-वहां आकर प्राप्त भिक्षान्न को उन स्थविर भगवतो को दिखलाते-दिखाकर जब वे उस आहार को खाने की आज्ञा देते-तब वे अमूर्च्छित भाव से अगृद्धचित्तवृत्ति से, एव आसक्ति रहित परिणति से उस प्राशुक एषणीय-४२ दोषों से रहित अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप-आहार को जिस तरह सर्प-बिल में प्रविष्ट होता है उसी तरह से शरीर कोष्टक में-उदर में डाल देते थे। कारण इसका इस प्रकार है-जैसे भुजग बिल के पार्श्वद्वय नही छूता हुआ सीधे मध्यभाग से अपने को बिल में प्रविष्ट कराता है उसी तरह वे मुनिराज मुख के पार्श्वद्वय के स्पर्श से रहित आहार को सीधे कण्ठनाल में धर कर आहार करते थे (तएण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स त कालाइक्कत अरसविरस सियलुक्ख पाण

પ્રાપ્ત આહારને બતાવવા માટે જ્યા તે સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવતા ત્યા આવીને મેળવેલા આહારને તે સ્થવિર ભગવતોને બતાવતા અને બતાવીને જ્યારે તેઓ તે આહારને ગ્રહણ કરવાની આજ્ઞા કરતા ત્યારે તેઓ અમૂર્છિત-ભાવથી, અગૃદ્ધ-ચિત્તવૃત્તિથી અને આસક્તિ રહિત પરિણતિથી તે પ્રાસુક એષણીય-૪૨ દોષોથી રહિત અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ આહારને જેમ સાપ દરમા પ્રવેશે છે તેમજ શરીર કોષ્ઠકમા-પેટમા નાખી દેતા હતા જેમ સાપ દરના બને પાર્શ્વને સ્પર્શ ન કરતા સીધો વચ્ચે થઈને પોતાની જાતને દરમા પ્રવિષ્ટ કરાવી લે છે તેમજ તે મુનિરાજ પણ મુખના બને પાર્શ્વના સ્પર્શથી રહિત આહારને સીધો કઠનાળમા મૂકીને ઉદરસ્થ કરતા હતા.

(तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स त कालाइक्कत अरस विरस सिय

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरस विरस शीतरूक्ष पान भोजनम् ' आहारियस्स ' आहारितस्य सत पूर्वरात्रापररात्रकालसमये ' धम्मजागरियं जागरमाणस्स ' धर्म जागारिका जाग्रत=धर्मचिन्तनार्थ जागरणा कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति=नो परिपाक गच्छति। ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता ' उज्जला जाव दुरहियासा ' उज्ज्वला यावत् दुरधिसह्या, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगार' पितज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति। तत. खलु स पुण्डरीकोऽनगार ' अस्थामे ' अस्थामा=शक्तिरहित., अबल =शारीरिकबलरहितः, ' अवीरिए ' अवीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषार्थपराक्रमरहितः ' करयल जाव ' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं दशनख मस्तके अञ्जलि कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्सम्प्राप्तेभ्यः=मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा-

---

भोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इस तरह उन पुंडरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ, तएण से पुंडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहंताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण थेराण भगवंताण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण पुव्विं पि य ण मए

लुक्ख पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्म परिणमइ)

આ પ્રમાણે તે પુંડરીક અનગારનો કાળાતિક્રમથી કરેલો તે અરસ, વિરસ, શીત, રૂક્ષ પાન આહારનુ રાત્રિના મધ્ય ભાગમા ધર્મચિંતન માટે કરેલા જાગરણને લીધે સારી રીતે પાચન થતુ ન હતું

(तएण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ, तएण से पुंडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहंताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण थेराण भगवंताण मम धम्मायरियाण

न्तिके सर्वं प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं खलु प्रत्याख्यातम्=अष्टादशपापस्थानानि प्रत्याख्यातानि इति भावः, इदानीमपि तेषामेव थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्लेणं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने) इस कारण पुंडरीक अनगार के शरीर में वेदना प्रकट हो गई। जिसके कारण उन्हें क्षणभर भी शांता नहीं मिलती। धीरे २ यह समस्त शरीर में भी व्याप्त हो गई। यावत् यह उनके लिये सहन हो सके ऐसी नहीं रही-वे उसे बड़ी कठिनता से सहते। दाहज्वर ने भी इनके शरीर पर अपना प्रभाव जमा लिया। इस तरह ये दाहज्वर की ज्वाला से भी आकुल व्याकुल रहने लगे। धीरे २ इनका शरीर शक्ति रहित हो गया। शारीरिक बल भी इनका जाता रहा। उत्साह रहित एवं पुरुषार्थ पराक्रम से विहीन जब ये हो गये तब करतल परिगृहीत दशनखोंवाली अंजलि को इन्हों ने अपने मस्तक पर रखकर इस प्रकार का पाठ बोलना प्रारंभ किया यावत् मुक्ति प्राप्त अर्हंत भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो, मेरे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक स्थविर भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो। मैंने पहिले भी स्थविर भगवंतों के निकट समस्त प्राणातिपात प्रत्याख्यान कर दिया है-यावत् मिथ्यादर्शन शल्य

धम्मोवएसयाए पुव्विं पि य ण मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्लेणं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठ सिद्धे उववन्ने)

એથી તે પુંડરીક અનગારના શરીરમાં વેદના પ્રકટ થઈ ગઇ તેથી તેમને એક ક્ષણ માટે પણ શાંતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ શરીરમાં પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ રહેવા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઇ ગયું શારીરિક બળ પણ તેમનું નષ્ટ થઇ ગયું હતું આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને પુરૂષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઇ ગયા ત્યારે કરતલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી અંજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેનો પાઠ બોલવા લાગ્યા કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે મેં પહેલા પણ ભગવંતોની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધુ છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

अन्तिके प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य प्रत्याख्यामि, एव ' जाव आलोइय पडिक्कते ' यावदालोचितप्रतिक्रान्त' कालमासे काल कृत्वा सर्वार्थसिद्धे उपपन्नः । ततोऽनन्तरम्=तत्पश्चात् सर्वार्थसिद्धात् ' उव्वट्टित्ता ' उद्वृत्य=सर्वार्थसिद्धेर्निर्गत्य महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत् सर्वदुःखानामन्त करिष्यति । पुण्डरीकानगारचरित दृष्टान्तेनोपदर्श्य श्रमणानुपदिशति भगवान् महावीरः-' एवामेव ' अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः 'जाव पव्वइए ' यावत्प्रव्रजितः=योऽस्माक श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् मानुष्यकेषु कामभोगेषु नो सज्जते नो असक्तिमाश्रयते ' नो रज्जते ' नो रज्यते=नो अनुरागवान् भवति, ' जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ ' यावत् नो विप्रतिघातमापद्यते=सयमनाश न प्राप्नोति, स खलु इह भवे एव बहूना श्रमणाना बहूना श्रमणीना बहूना श्रावकाणा बहूना श्राविकाणाम् अर्चनीयो वन्दनीयः पूजनीयः सत्कारणीयः सम्माननीयो भवति, तथा च-स सर्वेषा ' कल्लाण ' कल्याण=कल्याणरूपम् ' मगल ' मङ्गलम्=मङ्गलरूपम् , ' देवय ' दैवत=धर्मदेवरूपः, ' चेइय ' चैत्यम्=ज्ञानरूप पर्युपासनीयश्च भवति ' त्तिकट्टु ' इति कृत्वा इति

का अष्टादश पापस्थानो का, मैंने प्रत्याख्यान कर दिया है। और अब भी उन्ही के साक्षी से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान करता हूँ। इस तरह आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे कालअवसर कालकर सर्वार्थ सिद्ध नामके अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो गये। (तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाणमत काहिइ, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्स एहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ सेण इह भवे चेव बहूण साविवाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवास-

---

પાપસ્થાનોનુ મે પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ આ પ્રમાણે આલોચિત પ્રતિક્રાત થઇને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઇ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(તઓ અણતર उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाणमत काहिइ, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं काम भोगेहि णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ से ण इह भवे चेव बहूण साविवाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे, सम्माणणिज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो

न्तिके सर्वः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं खलु प्रत्याख्यातम्=अष्टादशपापस्थानानि प्रत्याख्यातानि इति भावः, इदानीमपि तेषामेव थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्लेणं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने) इस कारण पुंडरीक अनगार के शरीर में वेदना प्रकट हो गई। जिसके कारण उन्हें क्षणभर भी शाता नहीं मिलती। धीरे २ यह समस्त शरीर में भी व्याप्त हो गई। यावत् यह उनके लिये सहन हो सके ऐसी नहीं रही-वे उसे बड़ी कठिनता से सहते। दाहज्वर ने भी इनके शरीर पर अपना प्रभाव जमा लिया। इस तरह ये दाहज्वर की ज्वाला से भी आकुल व्याकुल रहने लगे। धीरे २ इनका शरीर शक्ति रहित हो गया। शारीरिक बल भी इनका जाता रहा। उत्साह रहित एवं पुरुषार्थ पराक्रम से विहीन जब ये हो गये तब करतल परिगृहीत दशनखोंवाली अंजलि को इन्हों ने अपने मस्तक पर रखकर इस प्रकार का पाठ बोलना प्रारंभ किया यावत् मुक्ति प्राप्त अर्हंत भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो, मेरे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक स्थविर भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो। मैंने पहिले भी स्थविर भगवंतों के निकट समस्त प्राणातिपात प्रत्याख्यान कर दिया है-यावत् मिथ्यादर्शन शल्य

धम्मोवएसयाणं पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्लेणं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठ सिद्धे उववन्ने)

એથી તે પુંડરીક અનગારના શરીરમા વેદના પ્રકટ થઈ ગઇ તેથી તેમને એક ક્ષણ માટે પણ શાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ શરીરમા પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઇ, ભારે મુશ્કેલીથી તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ રહેવા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનુ શરીર અશક્ત થઇ ગયુ શારીરિક બળ પણ તેમનુ નષ્ટ થઇ ગયુ હતુ આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને પુરૂષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઇ ગયા ત્યારે કરતલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી અંજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેનો પાઠ બોલવા લાગ્યા કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે મે પહેલા પણ ભગવંતોની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધુ છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

अन्तिके प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य प्रत्याख्यामि, एव ' जाव आलोइय पडिक्कते ' यावदालोचितप्रतिक्रान्तः कालमासे काल कृत्वा सर्वार्थसिद्धे उपपन्नः । ततोऽनन्तरम्=तत्पश्चात् सर्वार्थसिद्धात् ' उव्वट्टित्ता ' उद्वृत्य=सर्वार्थसिद्धेर्निर्गत्य महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत् सर्वदुःखानामन्त करिष्यति । पुण्डरीकानगारचरित दृष्टान्तेनोपदर्श्य श्रमणानुपदिशति भगवान् महावीरः-' एवामेव ' अनेनैवमकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः 'जाव पव्वइए ' यावत्प्रव्रजितः=योऽस्माक श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजित' सन् मानुष्यकेषु कामभोगेषु नो सज्जते नो असक्तिमाश्रयते ' नो रज्जते ' नो रज्यते=नो अनुरागवान् भवति, ' जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ ' यावत् नो विप्रतिघातमापद्यते=सयमनाश न प्राप्नोति, स खलु इह भवे एव बहूना श्रमणाना बहूना श्रमणीना बहूना श्रावकाणा बहूना श्राविकाणाम् अर्चनीयो वन्दनीयः पूजनीयः सत्कारणीयः सम्माननीयो भवति, तथा च-स सर्वेषा ' कल्लाण ' कल्याण=कल्याणरूपम् ' मगल ' मङ्गलम्=मङ्गलरूपम्, ' देवय ' दैवत=धर्मदेवरूपः, ' चेइय ' चैत्यम्=ज्ञानरूप पर्युपासनीयश्च भवति ' त्तिकट्टु ' इति कृत्वा इति

का अष्टादश पापस्थानो का, मैने प्रत्याख्यान कर दिया है। और अब भी उन्हीं के साक्षी से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान करता हूँ। इस तरह आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे कालअवसर कालकर सर्वार्थ सिद्ध नामके अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो गये। (तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाणमत काहिइ, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्स एहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ सेण इह भवे चेव बहूण साधियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवास-

---

પાપસ્થાનોનુ મે પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ આ પ્રમાણે આલોચિત પ્રતિક્રાત થઇને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઇ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाणमत काहिइ, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं काम भोगेहि णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ से ण इह भवे चेय बहूण साधियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे, सम्माणणिज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो

हेतोः परलोकेऽपि च खलु सा नो आगच्छति= न प्राप्नोति बहूनि=बहुविधानि दण्डनानि च मुण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्त संसार कान्तर 'वीइवइस्सइ' व्यति अनिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, यथा स पुण्डरीकोऽनगार

णिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ, बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतसंसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ सिद्ध विमान से चव कर महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहीं से सिद्धपद के भोक्ता बनेंगे- यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे। इस तरह पुंडरीक अनगार के चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मत श्रमणो! जो हमारा श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनुष्यभव सबधी कामभोगों में आसक्त नही बनता है, रञ्जित-अनुराग भाव सपन्न-नही होता है, यावत् अपने सयम को नष्ट नहीं करता है, वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक एव श्राविकाओं द्वारा अर्चनीय वदनीय पूजनीय सत्करणीय एव सन्माननीय होता है। तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप बन जाता है। लोग उसकी उपासना करते हैं। वह परलोक में भी अनेक प्रकार के दडनरूप, दुःखो को, मुडनों को तर्जनों को, ताडनाओं

आगच्छइ, बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणिय तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतसंसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ ધારણ કરીને ત્યાથી જ સિદ્ધપદ મેળવશે યાવત્ સમસ્ત દુઓનો અત કરશે આ રીતે પુંડરીક અનગારના ચરિત્રને દૃષ્ટાત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતા કહે છે કે આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને મનુષ્ય ભવના કામભોગોમા આસક્ત થતા નથી રજિજત-અનુરક્ત થતા નથી, યાવત્ પોતાના સયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમા જ ઘણા શ્રમણ-શ્રમણી અને શ્રાવક- -ઓ વડે અર્ચનીય, વદનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય અને સન્માનનીય જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મગળરૂપ, ધર્મ દેવરૂપ અને -ઓ તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમા પણ ઘણી -ઓને તર્જ-

सुधर्मास्वामी कथयति-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्ध समाप्तयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन षष्ठस्य अङ्गस्य=षष्ठाङ्गसम्बन्धिन प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः । ' त्ति बेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०७ ॥

को नहीं पाता है और चतुर्गतिवाले इस समार कान्तार को पुंडरीक अनगार की तरह पार करनेवाला हो जाता है। (एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरे ण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्ध गई नामधेज्ज ठाणं सपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरे ण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्ते णं छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) अब श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं कि हे जंबू ! आदिकर तीर्थंकर यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १९ वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। इस तरह हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को अच्छी तरह प्राप्त कर चुके हैं, उठे अग के प्रथम श्रुतस्कंध का यह पूर्वोक्त रूप से भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मैंने प्रभु के कहे अनुसार ही यह हे जंबू ! तुमसे निवेदित किया है।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સંસાર કાંતારને પુંડરીક અનગારની જેમ પાર કરનાર થઈ જાય છે

(एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्धिगई नामधेज्ज ठाण सपत्तेण एगूणवीस इमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयम पण्णत्ते त्तिबेमि)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ ! આદિકર તીર્થંકર યાવત સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે-છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા ભાવ પ્રતિપાદિત કર્યો છે હે જંબૂ ! આવુ મે પ્રભુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યુ છે

हेतोः परलोकेऽपि च खलु सा नो आगच्छति= न प्राप्नोति बहूनि=बहुविधानि दण्डनानि च मुण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्तं संसार कान्तर 'वीइवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, यथा स पुण्डरीकोऽनगार

णिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ, बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतसंसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ सिद्ध विमान से चव कर महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहीं से सिद्धपद के भोक्ता बनेंगे- यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे। इस तरह पुंडरीक अनगार के चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मत श्रमणो! जो हमारा श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनुष्यभव संबंधी कामभोगों में आसक्त नहीं बनता है, रञ्जित-अनुराग भाव संपन्न-नहीं होता है, यावत् अपने संयम को नष्ट नहीं करता है, वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक एवं श्राविकाओं द्वारा अर्चनीय वंदनीय पूजनीय सत्करणीय एवं सन्माननीय होता है। तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप बन जाता है। लोग उसकी उपासना करते हैं। वह परलोक में भी अनेक प्रकार के दंडनरूप, दुःखों को, मुंडनों को तर्जनों को, ताडनाओं

आगच्छइ, बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणिय तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतसंसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાંથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ ધારણ કરીને ત્યાંથી જ સિદ્ધપદ મેળવશે યાવત્ સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે આ રીતે પુંડરીક અનગારના ચરિત્રને દૃષ્ટાંત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતા કહે છે કે આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને મનુષ્ય ભવના કામભોગોમાં આસક્ત થતા નથી રંજિત-અનુરક્ત થતા નથી, યાવત્ પોતાના સંયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમાં જ ઘણા શ્રમણ-શ્રમણી અને શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્ચનીય, વંદનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય અને સન્માનનીય હોય છે તેમજ જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મંગળરૂપ, ધર્મ દેવરૂપ અને જ્ઞાનરૂપ બની જાય છે લોકો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમાં પણ ઘણી જાતના દંડન રૂપ, દુઃખોને, મુંડનોને, તર્જ

सुधर्मास्वामी कथयति-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्ध समापयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन षष्ठस्य अङ्गस्य=षष्ठाङ्गसम्बन्धिन प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः । ' त्ति बेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०७ ॥

को नहीं पाता है और चतुर्गतिवाले इस समार कान्तार को पुंडरीक अनगार की तरह पार करनेवाला हो जाता है । (एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरे ण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्ध गई नामधेज्ज ठाण संपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरे ण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण सपत्ते णं छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) अब श्री सुधर्मा स्वामी कहते है कि हे जंबू ! आदिकर तीर्थंकर यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १९ वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है । इस तरह हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को अच्छी तरह प्राप्त कर चुके हैं, उठे अग के प्रथम श्रुतस्कंध का यह पूर्वोक्त रूप से भाव प्रतिपादित किया है । ऐसा मैंने प्रभु के कहे अनुसार ही यह हे जंबू ! तुमसे निवेदित किया है ।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સ સાર કાતારને પુંડરીક અનગારની જેમ પાર કરનાર થઈ જાય છે

(एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्धगई नामधेज्ज ठाण सपत्तेण एगूणवीस इमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयम पण्णत्ते त्तिबेमि)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ ! આદિકર તીર્થંકર યાવત સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે-છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા ભાવ પ્રતિપાદિત કર્યો છે હે જંબૂ ! આવુ મે પ્રભુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યુ છે

' तस्से ' त्यादि, तस्य खलु प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य एकोनविंशतिरध्ययनानि ' एगूणवीसाए ' एकस्यामूनानि=एकोनानि=न्यूनानि=न तानि उद्देशरहितानि एकोनविंशति दिवसेषु समाप्यन्ते ॥ सू० ७ ॥

मंगलं भगवान् वीरः मंगलं गौतमः प्रभुः ।
सुधर्मा मंगलं, जम्बूर्जैनधर्मश्च मंगलम् ॥ १ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-पवित्रशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमश्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं की है किन्तु प्रभु के मुख से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम से मैंने कहा है। "तस्से" त्यादि इस प्रथम श्रुतस्कंध के अन्तराल में उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं। ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं।

टीकार्थः—सांसरिक समस्त जीवों के लिये यदि मंगलकारी पदार्थ हैं—तो ये हैं भगवान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जम्बू स्वामी और जैनधर्म।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रके प्रथम श्रुतस्कंध संपूर्ण।

આ કથનમાં મે મારા તરફથી કોઇપણ જાતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી, પણ પ્રભુના મુખથી જેવુ મે સાભળ્યુ છે તેવુ જ મે કહ્યુ છે "तस्से" त्यादि આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કધના અતરાલમા ઉદ્દેશ રહિત ઓગણીસ અધ્યયનો છે આ અધ્યયનો ઓગણીસ દિવસોમા સમાપ્ત હોય છે

ટીકાર્થ —બધા સાસારિક જીવોના માટે જો મગળકારી પદાર્થો છે તો તે એજ છે-ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જબૂ સ્વામી અને જૈન ધર્મ

"આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કધ સમાપ્ત થયો"

॥ अथ ज्ञातासूत्रे द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम् ॥

मङ्गलाचरणम्-

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

आद्ये श्रुते भगवता रुचिरैरनेकै,-
र्ज्ञातैरदायि सकलार्त्तिहरः सुबोधः ।
स्कन्धे द्वितीयइह धर्मकथा च साक्षाद्,
विज्ञापिता तमनिशं वरद स्मरामि ॥ १ ॥

(मालिनीछन्दः)

गणधरगुणधार, प्राप्तभसारपारम्,
भविजनहितकार, दत्तसम्यक्त्वसारम्, ।
हृतसकलविकार भव्यचित्तैकहार,
शिवसुखपदधार, नौमि चारित्रसारम्, ॥ २ ॥

-:द्वितीयश्रुतस्कधप्रारभः-

आद्येश्रुते इत्यादि'—प्रथम श्रुतस्कधमे भगवान् सूत्रकार ने अनेक सुन्दर दृष्टान्तों द्वारा सकल आर्ति (दुःख) हारक सुबोध प्रदान किया है अब वे इस द्वितीय श्रुतस्कध में साक्षात् धर्मकथाएँ प्रकट करेंगे-अतः ऐसे भगवान को मैं कि जो भव्यजीवों को कल्याण करनेवाले होते हैं उनको निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

गणधरइत्यादि—जो गणधरो के गुणों को धारण करनेवाले हैं ससार को पार करनेवाले है, जो भव्यजनों को हितकारक है, सम्यक्त्वरूपी गुणके बोधक हैं-सकल विकारों से रहित है, इसलिये जो भव्यजीवों

દ્વિતીય શ્રુતસ્કધ પ્રારભ

આદ્યે શ્રુતેત્યાદિ— પ્રથમ શ્રુતસ્કધમા ભગવાન સૂત્રકારે ઘણા સુદર દૃષ્ટાતો વડે સમસ્ત આર્તિ (દુખ) હારક સુબોધ પ્રદાન કર્યો છે હવે તેઓ આ બીજા શ્રુતસ્કધમા સાક્ષાત્ ધર્મકથાઓ પ્રકટ કરશે એટલા માટે એવા ભગવાનને-કે જેઓ ભવ્ય જીવોનું કલ્યાણ કરનારા છે-હુ નિરતર નમસ્કાર કરૂ છુ ૧

ગણધર ઈત્યાદિ—જેઓ ગણધરોના ગુણોને ધારણ કરનારા છે, ससारને પાર કરનારા છે જેઓ ભવ્યજનોના હિતકારક છે, સમ્યકત્વ રૂપી ગુણના બોધક છે, આ બધા વિકારોથી રહિત છે, એટલા માટે જ જેઓ ભવ્ય જીવોના

' तस्से ' त्यादि, तस्य खलु प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य एकोनविंशतिरध्ययनानि ' एगसरगाणि' एकस्वरकानि=समानोच्चारणानि=अन्तरालेऽनुद्देशरहितानि एकोनविंशति दिवसेषु समाप्यन्ते ॥ सू० ७ ॥

मंगलं भगवान् वीरः मंगलं गौतमः प्रभुः ।
सुधर्मा मंगलं, जम्बूर्जैनधर्मश्च मंगलम् ॥ १ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-पवित्रपुद्गलपद्यैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमश्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं की है किन्तु प्रभु के मुख से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम से मैंने कहा है। "तस्से" त्यादि इस प्रथम श्रुतस्कंध के अन्तराल में उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं। ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं।

टीकार्थ—सासरिक समस्त जीवों के लिये यदि मंगलकारी पदार्थ है—तो ये हैं भगवान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जम्बू स्वामी और जैनधर्म।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रके प्रथम श्रुतस्कंध संपूर्ण।

આ કથનમા મે મારા તરફથી કોઇપણ જાતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી, પણ પ્રભુના મુખથી જેવુ મે સાભળ્યુ છે તેવુ જ મે કહ્યુ છે "तस्से" त्यादि આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધના અતરાલમા ઉદ્દેશ રહિત ઓગણીસ અધ્યયનો છે આ અધ્યયનો ઓગણીસ દિવસોમા સમાપ્ત હોય છે

ટીકાર્થ—બધા સાસારિક જીવોના માટે જો મગળકારી પદાર્થો છે તો તે એજ છે-ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જબૂ સ્વામી અને જૈન ધર્મ

"આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ સમાપ્ત થયો"

नगारशतैः सार्द्धं सपरिवृताः ' पुव्वाणुपुव्विं ' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया ' चरमाणा' चरन्त =विहरन्तः ग्रामानुग्राम एकग्रामाद्व्यवधानेनान्य ग्रामम् ' दूइज्जमाणा ' द्रवन्तः=स्पृशन्त ' सुह सुहेण ' सुख सुखेन=सुखपूर्वक यथावसरमित्यर्थः विहरन्तो यत्रैव राजगृह नगर यत्रैव गुणशिलक चैत्य यावत्—सयमेन तपसा आत्मान भावयन्तो विहरन्ति । अत्र आदरार्थं बहुवचनम् । परिपन्निर्गता । धर्मः कथितः । परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽनगारस्यान्तेवासी आर्य जम्बूर्नामान

ज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति) उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अतेवासी आर्य सुधर्मा नाम के स्थविर भगवत कि जो विशुद्ध मातृवशवाले थे विशुद्ध पितृवशवाले थे, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र एव लाघव सपन्न थे, चौदहपूर्व के पाठी थे–मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान एव मन पर्यव ज्ञान इन चारों ज्ञानों के धारक थे–पाचसौ अनगारों के साथ तीर्थंकर परपरा के अनुसार विहार करते २ एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विना किसी व्यवधानके विचरण करते हुए सुख पूर्वक समय पर–जहा राजगृह नगर और उस में भी जहां वह गुणशिलक चैत्य था आये। वहा वे सयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए उतरे (परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अ ते-

ज्जमाणा सुह सुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति)

તે કાળે ને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના અતેવાસી આર્ય સુધર્મા નામના સ્થવિર ભગવત કે જેઓ વિશુદ્ધ માતૃવશવાળા હતા–વિશુદ્ધ પિતૃવશવાળા હતા, યાવત્ બળ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને લાઘવ-સપન્ન હતા ચૌદ પૂર્વના પાઠી હતા, મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન પર્યવજ્ઞાન એ ચારે જ્ઞાનોના ધારક હતા પાચસો અનગારોની સાથે તીર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ કોઇપણ જાતના વ્યવધાન વગર સુખેથી યથા સમય જ્યા રાજગૃહ નગર અને તેમા પણ જ્યા તે ગુણશિલક ચૈત્ય હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા તેઓ સયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રોકાયા

(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अतेवासी

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः-नगरवर्णन सर्वमत्र विज्ञेयम् । तस्य खलु राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणशिलकं नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः । तस्मिन् काले तस्मिन समये श्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाइसंपन्ना' जातिस म्पन्नाः=सुविशुद्धमातृवंशाः, कुलसम्पन्नाः=विशुद्धपितृवंशाः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्ना, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगता =मतिश्रुतावधिमन. पर्यवज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (रायगिहे नामं नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था। (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चंपा नगरी के समान जानना चाहिये। (तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णाम चेइए होत्था, वण्णओ) उस राज गृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था। यहां पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भग वंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइ

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (रायगिहे नामं नयरे होत्था) રાજગૃહ નામે નગર હતુ (वण्णओ) આ નગરનુ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમા વર્ણવવામા આવેલા ચપા નગરીના વર્ણનની જેમ જ જાણી લેવુ જોઈએ

(तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णाम चेइए होत्था, वण्णओ)

તે રાજગૃહ નગરની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્-ભાગની તરફ એટલે કે ઇશાન કોણમા એક ગુણશિલક નામે ચૈત્ય-ઉદ્યાન-હતો અહી ચૈત્ય વિષેનુ બધુ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રની જેમ જાણવુ જોઇએ

(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दस पुव्वी चउणाणो वगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइ

नगारशतैः सार्द्धं सपरिवृताः 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया 'चरमाणा' चरन्त =विहरन्तः ग्रामानुग्राम एकग्रामाद्व्यवधानेनान्य ग्रामम् 'दूइज्जमाणा' द्रवन्तः=स्पृशन्त 'सुह सुहेण' सुख सुखेन=सुखपूर्वक यथावसरमित्यर्थः विहरन्तो यत्रैव राजगृह नगर यत्रैव गुणशिलक चैत्य यावत्-सयमेन तपसा आत्मान भावयन्तो विहरन्ति । अत्र आदरार्थं बहुवचनम् । परिपन्निर्गता । धर्मः कथितः । परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिश प्रतिगता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽनगारस्यान्तेवासी आर्य जम्बूर्नामान

ज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति) उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अतेवासी आर्य सुधर्मा नाम के स्थविर भगवत कि जो विशुद्ध मातृवशवाले थे विशुद्ध पितृवशवाले थे, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र एव लाघव सपन्न थे, चौदहपूर्व के पाठी थे-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान एव मन पर्यव ज्ञान इन चारों ज्ञानों के धारक थे-पाचसौ अनगारों के साथ तीर्थंकर परपरा के अनुसार विहार करते २ एक ग्राम से दूसरे ग्राम मे विना किसी व्यवधानके विचरण करते हुए सुख पूर्वक समय पर-जहां राजगृह नगर और उस में भी जहां वह गुणशिलक चैत्य था आये। वहा वे सयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए उतरे (परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अते-

---

ज्जमाणा सुह सुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति,

તે કાળે ને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના અતેવાસી આર્ય સુધર્મા નામના સ્થવિર ભગવત કે જેઓ વિશુદ્ધ માતૃવશવાળા હતા-વિશુદ્ધ પિતૃવશવાળા હતા, યાવત્ બળ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને લાઘવ-સપન્ન હતા ચૌદ પૂર્વના પાઠી હતા, મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન પર્યવજ્ઞાન એ ચારે જ્ઞાનોના ધારક હતા પાચસો અનગારોની સાથે તીર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ કોઇપણ જાતના વ્યવધાન વગર સુખેથી યથા સમય જ્યા રાજગૃહ નગર અને તેમા પણ જ્યા તે ગુણશિલક ચૈત્ય હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા તેઓ સયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રોકાયા

(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अतेवासी

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन समय राजगृह नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः-नगरवर्णन सर्वत्र विशेयम् । तस्य खलु राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणशिलक नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः । तस्मिन् काले तस्मिन समये श्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्त' 'जाइसंपन्ना' जातिस म्पन्नाः=सुविशुद्धमातृपक्षा', कुलसम्पन्नाः=विशुद्धपितृपक्षाः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्नाः, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगता =मतिश्रुतावधिमनः पर्ययज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (रायगिहे नाम नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था। (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चपा नगरी के समान जानना चाहिये। (तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णाम चेइए होत्था, वण्णओ) उस राजगृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था। यहा पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवतो जाइसपन्ना कुल सपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगाम दूइ

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (रायगिहे नाम नयरे होत्था) રાજગૃહ નામે નગર હતુ (वण्णओ) આ નગરનુ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમા વર્ણવવામા આવેલા ચપા નગરીના વર્ણનની જેમ જ જાણી લેવુ જોઈએ

(तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णाम चेइए होत्था, वण्णओ)

તે રાજગૃહ નગરની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્-ભાગની તરફ એટલે કે ઇશાન કોણમા એક ગુણશિલક નામે ચૈત્ય-ઉદ્યાન-હતો અહી ચૈત્ય વિષેનુ બધુ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રની જેમ જાણવુ જોઈએ

(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवतो जाइसपन्ना कुलसपन्ना जाव चउद्दस पुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगाम दूइ

श्रमणेन यावत्सम्माप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा तानेव दर्शयति-
' चमरस्स चमरस्य=चमरेन्द्रस्य दाक्षिणात्यासुरकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषीणा प्रथमो-
वर्ग १ । ' वलिस्स ' वलिनाम्नः ' वइरोयणिंदस्स ' वैरोचनेन्द्रस्य=वि=विविध
प्रकारैः रोचन्ते=दीप्यन्ते दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यो विशिष्टदीप्तिमत्त्वात् इति विरो
चना , त एव वैरोचना:=औदीच्यासुरकुमारास्तेषामिन्द्रः वैरोचनेन्द्रस्तस्य ' वइरो-
यणरन्नो ' वैरोचनराजस्य=वैरोचनाधिपतेः अग्रमहिषीणा द्वितीयो वर्गः २ । असु-
रेन्द्रवर्जिताना ' दाहिणिल्लाण ' दाक्षिणात्याना=दक्षिणदिक्सम्बन्धिना भवन-
वासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणा तृतीयो वर्गः ३ । ' उत्तरिल्लाण ' उत्तरीयाणामसु
रेन्द्रवर्जिताना भवनवासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणा चतुर्थो वर्ग. ४ । दाक्षिणात्याना
वानव्यन्तराणामिन्द्राणामग्रमहिषीणा पञ्चमो वर्गः ५ । उत्तरीयाणां वानव्यन्तरा-
णामिन्द्राणामग्रमहिषीणा षष्ठो वर्गः ६ । चन्द्रस्याग्रमहिषीणा सप्तमो वर्गः ७ ।

स्वामी ने उनसे कहा—हे जबू! सुनो—यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथाओं के दश वर्ग प्रज्ञप्त किये हैं—(त जहा) वे इस प्रकार हैं—(चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमेवग्गे ? वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीण बीओ वग्गो २ असुरिंद-वज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण इदाण अग्गमहिसीणं तइओ वग्गो ३ उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवणवासीण इदाण अग्गम-हिसीण चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणमतराण-इदाण अग्गमहि सीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणमतराण इदाण अग्गमहिसीण छट्ठो वग्गो ६, चदस्स अग्गमहिसीण सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्गमहिसीण अट्ठमो वग्गो सक्कस्स अग्गमहिसीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्गम हिसीण दसमो वग्गो) चमरेन्द्र की—दाक्षिणात्य असुरकुमारेन्द्र की—

તેમને કહ્યું કે હે જબૂ! સાભળો યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે (તજહા) તેઓ આ પ્રમાણે છે—

(चमरस्स अग्गमहिसीण पढमेवग्गे वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीण बीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण इदाण अग्गमहिसीण तइओ वग्गो ३, उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवण-वासीण इदाण अग्गमहिसीण चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणमतराण-इदाण अग्गमहिसीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणमतराण इदाण अग्गम-हिसीण छट्ठो वग्गो ६, चदस्स अग्गमहिसीण सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्गमहिसीण अट्ठमो वग्गो, सक्कस्स अग्गमहिसीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्गमहिसीण दसमो वग्गो)

गार. यावत्-' पज्जुवासमाणे ' पर्युपासीनः=सेवमानः एवमवदत्-यदि खलु ' भंते ' भदन्त=हे भगवन ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्-मोक्ष सम्प्राप्तेन षष्ठस्याङ्गस्य प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य ' णायाण ' ज्ञातानाम्=उदाहरणानाम् अयमर्थः प्रज्ञप्तः द्वितीयस्य खलु हे भदन्त ! श्रुतस्कन्धस्य धर्मकथाना श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन=मोक्ष गतेन भगवता कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बू !

वासी अज्ज जम्बूणाम अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी-जइणं भंते समणेण जाव सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स णायाण अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स ण भंते ! सुयक्खधस्स धम्मकहाणं समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) राजगृह नगर से परिषद वदन करने के लिये आई। सुधर्मास्वामी धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर परिषद् अपने २ स्थान पर पीछे वहा से चली गई। उस काल में और उस समय में आर्य सुधर्मास्वामी के अतेवासी आर्य जम्बू नामके अनगार ने यावत् उनकी पर्युपासना करते हुए उनसे इस प्रकार पूछा हे भदत ! यावत् मुक्तिको प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने छठे अगके ज्ञातासूत्र प्रथम श्रुतस्कध के उदाहरणोका यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है-तो हे भदत ! द्वितीय श्रुतस्कन्धकी धर्मकथाओं का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या अर्थ निरूपित किया है ? इस प्रकार जम्बू के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मा

अज्जजम्बू णाम अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी-जइण भंते समणेण जाव सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स णायाण अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स ण भंते ! सुयक्खधस्स धम्मकहाणं समणेण जाव सपत्तेग के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता)

રાજગૃહ નગરથી પરિષદ વદન કરવા માટે ત્યા આવી સુધર્મા સ્વામીએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને પરિષદ પોતાના સ્થાને પાછી જતી રહી તે કાળે અને તે સમયે આર્ય સુધર્મા સ્વામીના અતેવાસી (શિષ્ય) આર્ય જબૂ નામના અનગારે યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરતા તેમને આ પ્રમાણે પૂછયુ કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા અગના પ્રથમ શ્રુતસ્કધના ઉદાહરણોને આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધુ છે-દ્વિતીય શ્રુતસ્કધની ધર્મકથાઓનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જબૂના પ્રશ્નને સાંભળીને

भावार्थ

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भंते! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते?, एव खलु जवू! तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं काली नाम देवी चमरचचाए रायहाणीए कालवडिसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि चउहि महत्तरियाहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहिं अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि वहुएहि य कालवडिसयभवणवासीहि असुरकुमारेहि देवीहि य सद्धिं सपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवलकप्प जबुद्दीव दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ अणुगच्छित्ता वाम जाणु अचइ अचित्ता दाहिणं जाणु धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

सूरस्स=सूर्यस्याग्रमहिषीणामष्टमो वर्गः ८। सक्कस्याग्रमहिषीणां नवमो वर्गः ९। ईसानस्याग्रमहिषीणा दशमो वर्गः १० ॥ सू० १ ॥

मूलम्–जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठ पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता त जहा–काली

अग्रमहिषियों का–पट्टदेवियों का–प्रथम वर्ग, बलि नामक वैरोचनेन्द्र की अग्रमहिषियोंका द्वितीय वर्ग, असुरेन्द्रको छोडकर दक्षिण दिशा सबधी भवनवासियों के इन्द्रों की अग्रमहिषियों का तृतीय वर्ग, उत्तर दिशा सबधी भवनवासियो के इन्द्रों की कि जिन में असुरेन्द्र छोड दिये गये हैं अग्रमहिषियों का ४ चतुर्थ वर्ग, दक्षिण दिशा सबधी वानव्यन्तरों के इन्द्रों की अग्रमहिषियोंका पचम वर्ग, उत्तर दिशा सबंधी वानव्यतरोंके इन्द्रो की अग्रमहिषियों का छट्ठा वर्ग, चन्द्र की अग्रमहिषियों का ७ वा वर्ग, सूर्यको अग्रमहिषियोका आठवा वर्ग, शक्र की अग्रमहिषियों का नवमां वर्ग, और ईशानकी अग्रमहिषियो का दशमां वर्ग। वैरोचन उत्तर दिशाके असुरकुमार हैं। ये दक्षिण दिशासबधी असुरकुमारोंकी अपेक्षा विशिष्ट दीप्तिसपन्न होते हैं इसलिये इन्हें वरोचन कहा गया है॥सू०१॥

ચમરેન્દ્રની–દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની–અગ્રમહિષીઓનો–પટ્ટદેવીઓનો પહેલો વર્ગ, બલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનો બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને બાદ કરતા દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો ત્રીજો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાથી અસુરેન્દ્રોને બાદ કરી દીધા છે અગ્રમહિષીઓનો ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો પાચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી વાનવ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓનો આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહીષીઓનો નવમો વર્ગ અને ઇશાનની અગ્રમહિષીઓનો દશમો વર્ગ વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા સબધી અસુરકુમારો કરતા વિશિષ્ટ દીપ્તિ–સપન્ન હોય છે એથી જ એ વૈરોચન કહેવામા આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भंते! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते?, एव खलु जवू! तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेणं समएणं काली नामं देवी चमरचचाए रायहाणीए कालवडिसगभवणे कालसि सीहासणसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि चउहि महत्तरियाहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहिं अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि वहुएहि य कालवडिसयभवणवासीहि असुरकुमारेहि देवीहि य सद्धिं सपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवलकप्प जवुद्दीव दीव विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जंवुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गह उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्टेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ अणुगच्छित्ता वाम जाणु अचइ अचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

सूरस्स=सूर्यस्याग्रमहिषीणामष्टमो वर्गः ८। सक्कस्याग्रमहिषीणां नवमो वर्गः ९। ईशानस्याग्रमहिषीणा दशमो वर्गः १० ॥ सू० १ ॥

मूलम्-जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संप त्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता त जहा-काली

अग्रमहिषियों का-पट्टदेवियों का-प्रथम वर्ग, बलि नामक वैरोचनेन्द्र की अग्रमहिषियोंका द्वितीय वर्ग, असुरेन्द्रको छोडकर दक्षिण दिशा सबधी भवनवासियों के इन्द्रों की अग्रमहिषियों का तृतीय वर्ग, उत्तर दिशा सबधी भवनवासियो के इन्द्रों की कि जिन में असुरेन्द्र जोड दिये गये हैं अग्रमहिषों का ४ चतुर्थ वर्ग, दक्षिण दिशा सबधी वानव्यन्तरों के इन्द्रों की अग्रमहिषियोंका पचम वर्ग, उत्तर दिशा सबधी व्वानव्यतरोंके इन्द्रों की अग्रमहिषियों का छट्ठा वर्ग, चन्द्र की अग्रमहिषियों का ७ वा वर्ग, सूर्यको अग्रमहिषियोका आठवा वर्ग, शक्र की अग्रमहिषियों का नवमां वर्ग, और ईशानकी अग्रमहिषियों का दशमां वर्ग। वैरोचन उत्तर दिशाके असुरकुमार हैं। ये दक्षिण दिशासबधी असुरकुमारोंकी अपेक्षा विशिष्ट दीप्तिसपन्न होते हैं इसलिये इन्हें वैरोचन कहा गया है॥सू०१॥

ચમરેન્દ્રની-દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની-અગ્રમહિષીઓનો-પટ્ટદેવીઓનો પહેલો વર્ગ, બલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનો બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને બાદ કરતા દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો ત્રીજો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાથી અસુરેન્દ્રોને બાદ કરી દીધા છે અગ્રમહિષીઓનો ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો પાચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી વાનવ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓનો આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહીષીઓનો નવમો વર્ગ અને ઇશાનની અગ્રમહિષીઓનો દશમો વર્ગ વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા સબધી અસુરકુમારો કરતા વિશિષ્ટ દીપ્તિ-સપન્ન હોય છે એથી જ એ વૈરોચન કહેવામા આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके है प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भंते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स क अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता । पढणस्स ण भंते, अज्झयण-स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एव वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्व सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु ' भते ' भदन्त !-हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गो प्रज्ञप्तः,

---

-:जइणं भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ —(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जबूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भते ! वग्गस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स ण भंते, अज्झयण स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंत तत्थगयं इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव सपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहि उवदसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—' जइणं भंते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु ' भंते ' भदन्त !=हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः

-:जइण भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थः—(जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भंते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जबूस्वामी श्री

जइण भंते ! इत्यादि—

(जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते ह कि (भते) हे भदत ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष मे विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स क अट्ठे पन्नते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता । पढणस्स ण भते, अज्झयण स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव सपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु ' भते ' भदन्त !=हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गः प्रज्ञप्तः,

-:जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ —(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जबूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भते ! वग्गस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू' ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू' ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण) यदि (समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स ण भंते, अज्झयण स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एव वयासी-णमोऽत्थुणं अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव सपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु ' भते ' भदन्त !-हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गः प्रज्ञप्तः,

-:जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जबूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भते ! वग्गस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदत ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि-जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भंते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स ण भंते, अज्झयणस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंत तत्थगयं इह गया पासउ म भगवं तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहि उवदसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु 'भते' भदन्त !=हे भगवन्! श्रमणेन यावत्सप्राप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा. प्रज्ञप्ता:,

---

-:जइण भते! इत्यादि।

टीकार्थ'—(जइण भते! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एव खलु जबू! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते! इत्यादि—

(जइण भते! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भते! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एव खलु जबू! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थ' प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते ह कि (भते) हे भदत ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेणं जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स णं भते, अज्झयण स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए गया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एव वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वदामि णं भगवंत तत्थगयं इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्व सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सवित्थिण्णा जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु ' भते ' भदन्त !=हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा प्रज्ञप्ता',

---

-:जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ'—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जबूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स ण भंते, अज्झयणस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंत तत्थगयं इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु ' भते ' भदन्त !=हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा प्रज्ञप्ता',

-:जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जबूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०

' समोसरिए ' समवसृतः समागतवान । ' परिसा '-परिषद्=राजगृहनगर वास्तव्यो जनसमूह ' णिग्गया ' निर्गता=भगवद्वन्दनार्थं स्व स्वस्थानान्निस्सृता, भगवता धर्मकथा कथिता यावद् परिषद् भगवन्त ' पज्जुवासइ ' पर्युपास्ते=सेवते, तस्मिन् काले तस्मिन समये काली नाम देवी चमरचञ्चाया राजधान्यां

उन्हें उत्तर देने के अभिप्राय से कहा कि (एव खलु जबू !) हे जबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है सुनो यावत सम्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के पाच अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं वे ये हैं- काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, और मेघा ५। अब पुनः जबू स्वामी प्रश्न करते हैं कि हे भदत ! यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के पाच अध्ययन निरूपित किये हैं तो मै आपसे पूछता हू कि भदत यावत् मोक्ष को सप्राप्त उन्हीं श्रमण भगवान् महावीरने प्रथम अध्ययनका क्या अर्थ निरूपित किया है ? इसका उत्तर उन्हें सुधर्मास्वामी इस प्रकार देते है-हे जबू ! उस काल और उस समय में राजगृह नामकी नगरी थी-उस में गुणशिलक नाम का उद्यान था-नगरी के राजा का नाम श्रेणिक था। उसकी रानी का नाम चेल्लना था। (सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ-तेण कालेणं तेणं समएणं काली नाम देवी, चमरचचाए रायहाणीए

આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામી । પ્રશ્નને સાભળીને તેમને ઉત્તર આપવાના ઉદ્દેશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યુ કે (एव खलु जबू !) હે જબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે સાભળો, યાવત્ સપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પહેલા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે તેઓ આ પ્રમાણે છે— ૧ કાલી, ૨ રાત્રિ, ૩ રજની, ૪ વિદ્યુત, અને ૫ મેઘા

હવે ફરી જબૂ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો નિરૂપિત કર્યા છે તો હુ તમને ફરી પૂછવા માગુ છુ કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેને ઉત્તર આપતા કહેવા લાગ્યા કે જબૂ ! તે કાળે અને તે વખતે રાજગૃહ નામે એક નગરી હતી તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનુ નામ શ્રેણિક હતુ તેની રાણીનુ નામ ચેલ્લના હતું

(सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ-तेण कालेणं तेणं समएणं काली नाम देवी, चमरचचाए रायहाणीए

'कालवडिंसगभवणे' कालावतसकभवने काले=कालाख्ये सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः, चतसृभिर्महत्तरिकाभिः, सपरिवाराभिस्तिसृभिः=बाह्याभ्यन्तरमध्यरूपाभिः 'परिसाहिं' परिषद्भिः पारिवारिकदेवीरूपाभिः, सप्तभिः 'अणिएहिं' अनीकैः=हयगजरथपदातिवृषभगन्धर्वनाट्यरूपैः, अत्राय विवेकः-

कालवडिंसगभवणे कालंसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहिं कालवडिंसगभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ) वहा पर श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ। लोगों को जब इनके आगमन की खबर लगी-तब समस्त राजगृह निवासी जन इन का वदना करने के अभिप्राय से गुणशिलक उद्यान में आये। भगवान् ने धर्मकथा कही-यावत् परिषदने भगवान् की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय मे काली नाम की देवी चमरचपा नाम की राजधानी में रहती थी। उसके भवन का नाम कालावतसक था। जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम काल था। यह उस भवन में चार हजार सामानिको की परिषदा के साथ, चार हजार महत्तरिकाओं के साथ, अपने २ परिवारवाली तीन हजार पारिवारिक देवियों के साथ, सात अनीकोंके-हय, गज, रथ, पदाति, वृषभ, गधर्व एव नाटयरूप सैन्य के-

कालसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहिं कालवडिंसयभवणवासीहिं असुमकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं सपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ)

ત્યા શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ જ્યારે લોકોને તેમના આગમનની જાણ થઈ ત્યારે રાજગૃહના બધા લોકો તેમને વદન કરવાના અભિપ્રાયથી ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા ભગવાને ધર્મકથા કહી સભળાવી યાવત્ પરિષદે ભગવાનની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે કાળી નામની દેવી ચમરચચા નામની રાજધાનીમા રહેતી હતી તેના ભવનનું નામ કાલાવતસક હતુ જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનુ નામ કાળ હતું તે ભવનમા તે ચાર હજાર સામાનિકોની પરિષદાની સાથે, ચાર હજાર મહત્તરિકાઓની સાથે, પોતપોતાના પરિવારવાળી ત્રણ હજાર પારિવારિક દેવીઓની સાથે સાત અનીકો-ઘોડા, હાથી, રથ, પાયદળ, વૃષભ, ગંધર્વ અને નાટય

आयरक्षकानि सद्ग्रामाग्र, गन्धर्वनाट्यै पुनरुपयोगायेति, सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षदेवसाहस्रीभिः, अन्यैश्चबहुभिश्च कालावतंसकभवनवासिभिरसुरकुमारदेवैर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृता 'महयाहय नाव विहरइ' महताऽहत यावद् विहरति-'महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइय रवेणं' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतलताल त्रुटित घनमृदङ्गपटुप्रवादित रवेण, तत्र-'महता' रवेणेतिसम्बन्ध, आहतानि=भग्नाहतानि यानि नाट्यगीतानि, तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तला =हस्ततालाः, तालाः=कांस्यतालाः, त्रुटितानि=तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिसादृश्याद् घनमृदङ्गः= स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषा यो रवस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति। 'इम च ण' अस्मिन्नवसरे खलु केवलकल्प=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप विपुलेन 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएमाणी २' अभोगयमाना २ पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती सती पश्यति। किं पश्यति ? इत्याह-'तत्थ' तत्र= अवधिज्ञानोपयोगे श्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ, तथा और भी बहुत से कालावतंसक भवन में निवास करनेवाले असुरकुमार देवों के एव देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी। अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एव वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कास्य ताल, त्रुटित आदि तूर्यादिवाद्यो के एव मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह बजाये गये मृदगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगो को भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी। (इम च ण केवलकप्प जबुद्दीव दीव विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जबू दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे

રૂપ સૈન્યની સાથે અનીકાધિપતિઓની સાથે, સોળ હજાર આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનોમા નિવાસ કરનારા અસુર કુમારદેવો અને દેવીઓની સાથે પરિવૃત થઇને રહેતી હતી તે અવ્યાહત (સતત) નાટય ગીતો વાદિત તંત્રી, હસ્તતાલ, કાસ્યતાલ, ત્રુટિત વગેરે તૂર્ય વગેરે વાધો, મેઘના ધ્વનિની જેમ સારી પેઠે વગાડવામા આવેલા મૃદગોના સુંદર શબ્દોથી ઉપલક્ષિત દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતી પોતાના સમયને સુખેથી પસાર કરતી રહેતી હતી

(इम च ण केवलकप्पं जबुद्दीवं दीवं विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणभगवं महावीरं जबुद्दीवे दीवे भारहे

नगरे गुणशिलके चैत्ये यथाप्रतिरूप=यथाकल्पम् ' उग्गह ' अवग्रह=वसतेराज्ञाम् ' उग्गिण्हित्ता ' अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मान भावयन्त पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट तुष्टचित्तानन्दिता ' पीइमणा ' प्रीतिमनाः=प्रसन्नमनस्काः ' जावहियया ' यावत्-हर्षवशविसर्पदहृदया=हर्षवशादुल्लसितहृदया सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

णयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गह उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वाम जाणु अचेइ, अचित्ता दाहिण जाणु धरणियलंसि निहट्टु त्तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलंसि निवेसेइ, निवेसित्ता कट्टु एव वयासी) इस अवसर में उसने केवल कल्प-सम्पूर्ण-जबूद्वीप नामके द्वीपको-मध्यजबूद्वीप को-विपुल अवधिज्ञान के द्वारा वार २ उपयोग देकर देखा-। उस समय उसने श्रमण भगवान् महावीर को जंबूद्वीपान्तर्गत भरत क्षेत्र में राजगृह नगर मे गुणशिलक चैत्य में यथाकल्प वसति की आज्ञा लेकर संयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए स्थित देखा। देखकर वह बहुत अधिक हृष्ट एव तुष्ट हुई । उसका मन प्रीति से भर आया। हर्ष के वश से हृदय उल्लसित हो उठा । वह उसी समय अपने सिंहासन

गुणसिलए चेइए अहापडिरूव उग्गह उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाण पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ चित्तमाणदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, वाम-जाणु अचेइ, अचित्ता दाहिण जाणु धरणियलंसि निहट्टु त्तिक्खुत्तोमुद्धाण धरणिय-लंसि निवेसेइ निवेसित्ता कट्टु एव वयासी)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સંપૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મધ્ય જંબૂ દ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો. તે સમયે તેણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને જંબૂદ્વીપમા આવેલા ભરતક્ષેત્રના રાજગૃહ નગરના ગુણ શિલક ચૈત્યમા યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સંયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ ગઈ તેનુ મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયુ હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ ગયુ તે તે જ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ

आधपञ्चशतानि सह्यामाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरपि भोगायेति, सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षदेवसाहस्रीभिः, अन्यैश्चबहुभिश्च कालावतंसकभवनवासिभिरसुरकुमारदेवैर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृता ' महयाहय जाव विहरइ ' महताऽहत यावद् विहरति-' महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं ' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतल ताल त्रुटित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण, तत्र-' महता ' रवेणेतिसम्बन्ध, आहतानि=भग्नाहतानि यानि नाट्यगीतानि, तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तला =हस्ततालाः, तालाः=कास्यतालाः, त्रुटितानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिसादृश्याद् घनमृदङ्गः= स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषा यो रवस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति । ' इम च ण' अस्मिन्नवसरे खलु केवलकल्प=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप विपुलेन ' ओहिणा ' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएमाणी २' आभोगयमाना २ पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती सती पश्यति। किं पश्यति ? इत्याह-'तत्थ' तत्र= अवधिज्ञानोपयोगे श्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ, तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असुरकुमार देवों के एव देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी। अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एव वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कास्य ताल, त्रुटित आदि तूर्यादिवाद्यो के एव मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह बजाये गये मृदंगो के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगो को भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी। (इम च ण केवलकप्प जबुद्दीव दीव विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जबू द्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे

---

૬૫ સૈન્યની સાથે અનીકાધિપતિઓની સાથે, સોળ હજાર આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ ઘણા કાલાવત સક ભવનોમા નિવાસ કરનારા અસુરકુમારદેવો અને દેવીઓની સાથે પરિવૃત થઇને રહેતી હતી તે અબાહત (સતત) નાટ્ય ગીતો, વાદિત તંત્રી, હસ્તતાલ, કાસ્યતાલ, ત્રુટિત વગેરે તૂર્ય વગેર વાદ્યો, મેઘના ધ્વનિની જેમ સારી પેઠે વગાડવામા આવેલા મૃદંગોના સુદર શબ્દોથી ઉપલક્ષિત દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતી પોતાના સમયને સુખેથી પસાર કરતી રહેતી હતી

(इम च ण केवलकप्प जबुद्दीवं दीवं विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणभगव महावीरं जबुद्दीवे दीवे अयरे

नगरे गुणशिलके चैत्ये यथाप्रतिरूपं=यथाकल्पम् ' उग्गहं ' अवग्रहं=वसतेराज्ञाम् ' उग्गिण्हित्ता ' अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मान भावयन्त पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट तुष्टचित्तानन्दिता ' पीइमणा ' प्रीतिमनाः=प्रसन्नमनस्काः ' जाव हियया ' यावत्-हर्षवशविसर्पद्हृदया=हर्षवशादुल्लसितहृदया सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

णयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वाम जाणु अचेइ, अचित्ता दाहिण जाणु धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलंसि निवेसेइ, निवेसित्ता कट्टु एव वयासी) इस अवसर में उसने केवल कल्प-सम्पूर्ण-जबूद्वीप नामके द्वीपको-मध्यजबूद्वीप को-विपुल अवधिज्ञान के द्वारा वार २ उपयोग देकर देखा-। उस समय उसने श्रमण भगवान् महावीर को जबूद्वीपान्तर्गत भरत क्षेत्र में राजगृह नगर मे गुणशिलक चैत्य में यथाकल्प वसति की आज्ञा लेकर संयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए स्थित देखा। देखकर वह बहुत अधिक हृष्ट एव तुष्ट हुई । उसका मन प्रीति से भर आया। हर्ष के वश से हृदय उल्लसित हो उठा । वह उसी समय अपने सिंहासन

गुणसिलए चेइए अहापडिरूव उग्गह उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाण पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ चित्तमाणदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, वाम जाणु अचेइ, अचित्ता दाहिण जाणु धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तोमुद्धाण धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता कट्टु एव वयासी)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સંપૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મધ્ય જંબૂદ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો તે સમયે તેણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને જંબૂદ્વીપમા આવેલા ભરતક્ષેત્રના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ચૈત્યમા યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સંયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ ગઈ તેનુ મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયુ હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ ગયુ તે તે જ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ

आयपत्रयाणि सङ्ग्रामाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपभोगायेति, सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षदेवसाहस्रीभिः, अन्यैश्च बहुभिश्च कालावतंसकभवनवासिभिरसुरकुमारदेवैर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृता ' महयाहय जाव विहरइ ' महताऽहत यावद् विहरति-' महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण ' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतलताल त्रुटित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण, तत्र-' महता ' रवेणेतिसम्बन्ध, आहतानि=अभ्याहतानि यानि नाट्यगीतानि, तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तला =हस्ततालाः, तालाः=कास्यतालाः, त्रुटितानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिमाहत्यात् घनमृदङ्गः= स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषा यो रवस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति । ' इम च ण' अस्मिन्नवसरे खलु केवलकल्प=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप विपुलेन ' ओहिणा ' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएमाणी २' अभोगयमाना २ पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती सती पश्यति। किं पश्यति ? इत्याह-'तत्थ' तत्र= अवधिज्ञानोपयोगे श्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ, तथा और भी बहुत से कालावतंसक भवन में निवास करनेवाले असुरकुमार देवों के एव देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी। अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एव वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कास्य ताल, त्रुटित आदि तूर्यादिवाद्यों के एव मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह बजाये गये मृदगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी। (इम च ण केवलकप्प जबुद्दीव दीव विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जबू द्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे

૬૫ સૈન્યની સાથે અનીકાધિપતિઓની સાથે, સોળ હજાર આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનોમા નિવાસ કરનારા અસુરકુમારદેવો અને દેવીઓની સાથે પરિવૃત થઈને રહેતી હતી તે અવ્યાહત (સતત) નાટય ગીતો, વાદિત તંત્રી, હસ્તતાલ, કાસ્યતાલ, ત્રુટિત વગેરે તૂર્ય વગેરે વાદ્યો, મેઘના ધ્વનિની જેમ સારી પેઠે વગાડવામા આવેલા મૃદગોના સુંદર શબ્દોથી ઉપલક્ષિત દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતી પોતાના સમયને સુખેથી પસાર કરતી રહેતી હતી

(इम च ण केवलकप्प जबुद्दीवं दीवं विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणभगवं महावीरं जबुद्दीवे दीवे [illegible] नयरे

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तुकामाय, वन्दे खलु भगवन्त ' तत्थगय ' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको द्याने समवसृतम् ' इहगया ' इहगता=चमरचञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु मा भगवान् तत्रगत इहगतम्, ' त्ति कट्टु ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे ' पुरत्थाभिमुही ' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिगाभिमुखी ' निसण्णा ' निषण्णा=उपविष्टा । तत. खलु तस्या कालया देव्या अयमेत-

जाव संपाविउकामस्स वदामि ण भगवत तत्थ गय इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गय त्तिकट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हंत भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो। सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान महावीर को मैं नमस्कार करती हूँ। जबूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में इस समय विराजमान उन भगवान को मैं इस चमर चपा नाम की राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ। वहा पर रहे हुए वे प्रभु मुझे यहा पर रही हुई देखे। इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की -नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहासन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके बैठ गई। इसके बाद उस काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ-

(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा-तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

યાવત્ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલા અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવાની કામનાવાળા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને હું નમસ્કાર કરૂ છુ જબૂ દ્વીપના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમા અત્યારે વિરાજમાન તે ભગવાનને હુ આ ચમરચચા નામની રાજધાનીમા રહેતી નમસ્કાર કરી રહી છુ ત્યા વિરાજમાન તે પ્રભુ અહીં રહેતી મને જુએ આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેમને વદન કર્યા અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તે પોતાના ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર આવીને પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને બેસી ગઈ ત્યારપછી તે કાળી દેવીને આ જાતનો યાવત્ મન સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

पादपीठात् ' पच्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य 'पाउयाओ' पादुके ' ओमुयइ ' अवमुञ्चति=वियोजयति, मुक्त्वा तीर्थंकराभिमुखी सतीमया पदानि ' अणुगच्छइ ' अनुगच्छति=तदभिमुखं गच्छति, अनुगम्य वाम जानुं ' अचेइ ' अञ्चति=ऊर्ध्वीकरोति, अञ्चित्वा=ऊर्ध्वीकृत्य दक्षिण जानु धरणितले ' निहट्टु ' निहत्य=स्थापयित्वा ' तिक्खुत्तो ' त्रिः कृत्व =त्रिवारम् ' मुद्धाणं ' मूर्धानं=मस्तक धरणितले निवेशयति=नमयति, निवेदय ईसिं पच्चुण्णमइ ' ईषत् प्रत्युन्नमति=स्तोक शिरोनामयति, प्रत्युन्नम्य 'कडयतुडियथंभियाओ' कटकत्रुटित स्तम्भिते कटके=करभूषणे तुटिते=बाहुभूषणे ते' म्तम्भिते=अवष्टब्धे ' भुयाओ ' भुजे ' साहरइ ' संहरति=एकत्रीकरोति, संहृत्य ' करयल जाव कट्टु ' करतलपरि गृहीत शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-' नमोत्थुण ' इत्यादि- नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावद् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह तीर्थंकराधिष्ठित दिशा की ओर सात आठ पद आगे गई। वहां आकर उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु को नीचे धरणीतल मे रखा-रखकर फिर तीन बार अपने मस्तक को नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-नवाया। बाद मे कटक और त्रुटित से भूषित भुजाओ को एकत्रित किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अजलि बनाई-और उसे मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोत्थुण अरहंताण जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महावीरस्स

---

૭૫૨ થઇને નીચે આવી નીચે આવીને તેણે બને પાદુકાઓને પગોમાથી ઉતારી દીધી ઉતારીને તે તીર્થંકર ની દિશા તરફ વિરાજમાન હતા તે દિશા તરફ સાત-આઠ ડગલા આગળ ગઇ ત્યા જઇને તેણે પોતાના ડાબા ઢીંચણને ઊચો કર્યો ઊચો કરીને પછી તેણે જમણા ઢીંચણને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યો ટેકવીને તેણે ત્રણ વખત પોતાના મસ્તકો નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યુ, ટેકવીને તે થોડી નમી-મસ્તકને નીચે નમાવ્યુ ત્યારપછી તેણે કટક અને ત્રુટિતથી વિભૂષિત ભુજાઓને ભેગી કરી, ભેગી કરીને તેણે તેઓ બનેની અજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ-પૂર્વક ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(नमोत्थुण अरहंताण जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि ण भगवंत तत्थगय इह गया म भगव

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तुकामाय, वन्दे खलु भगवन्त ' तत्थगय ' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको द्याने समवसृतम् ' इहगया ' इहगता=चमरचञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु मा भगवान् तत्रगत इहगताम्, ' त्ति कट्टु ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे ' पुरत्थाभिमुही ' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभिमुखी ' निसण्णा ' निषण्णा=उपविष्टा । तत. खलु तस्या कालया देव्या अयमेत-

जाव सपाविउकामस्स वदामि ण भगवत तत्थ गय इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गय त्तिकट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हंत भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो। सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान महावीर को मै नमस्कार करती हूँ। जम्बूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में इस समय विराजमान उन भगवान को मै इस चमर चपा नाम की राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ। वहा पर रहे हुए वे प्रभु मुझे यहा पर रही हुई देखे। इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की -नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहासन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके बैठ गई। इसके बाद उस काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ-

(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा-तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

યાવત્ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલા અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવાની કામનાવાળા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને હું નમસ્કાર કરૂ છુ જબૂ દ્વીપના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમા અત્યારે વિરાજમાન તે ભગવાનને હુ આ ચમરચચા નામની રાજધાનીમા રહેતી નમસ્કાર કરી રહી છુ ત્યા વિરાજમાન તે પ્રભુ અહીં રહેતી મને જુએ આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેમને વદન કર્યા અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તે પોતાના ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર આવીને પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને બેસી ગઈ ત્યારપછી તે કાળી દેવીને આ જાતનો યાવત્ મન સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

पादपीठात् ' पच्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य 'पाउयाओ' पादुके ' ओमुयइ ' अवमुञ्चति=परित्यजति, मुक्त्वा तीर्थंकराभिमुखी सतीसप्ता ष्टपदानि ' अणुगच्छइ ' अनुगच्छति=तदभिमुखं गच्छति, अनुगम्य वाम जानु ' अचेइ ' अञ्चति=ऊर्ध्वीकरोति, अञ्चित्वा=ऊर्ध्वीकृत्य दक्षिण जानु धरणितले ' निहट्टु ' निष्टत्य=स्थापयित्वा ' तिक्खुत्तो ' त्रिः कृत्वः=त्रिवारम् ' मुद्धाणं ' मूर्धानम्=मस्तक धरणितले निवेशयति=लगयति, निवेश्य ईसिं पच्चुण्णमइ ' ईषत् प्रत्यवनमति=स्तोक शिरोनामयति, प्रत्यवनम्य 'कडयतुडियथंभियाओ' कटकत्रुटित स्तम्भिते कटके=करभूषणे तुटिते=बाहुभूषणे तैः स्तम्भिते=अवष्टब्धे ' भुयाओ ' भुजे ' साहरइ ' संहरति=एकत्रीकरोति, संहृत्य ' करयल जाव कट्टु ' करतलपरि गृहीत शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-' नमोत्थुण ' इत्यादि- नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्य' यावद् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह तीर्थंकराधिष्ठित दिशा की ओर सात आठ पद आगे गई। वहां आकर उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु को नीचे धरणीतल में रखा-रखकर फिर तीन बार अपने मस्तक को नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-नवाया। बाद में कटक और त्रुटित से भूषित भुजाओं को एकत्रित किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अंजलि बनाई-और उसे मस्तक पर आवर्तन प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोत्थुण अरहंताणं जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महावीरस्स

ઉપર થઇને નીચે આવી નીચે આવીને તેણે બને પાદુકાઓને પગોમાથી ઉતારી દીધી ઉતારીને તે તીર્થ કર જે દિશા તરફ વિરાજમાન હતા તે દિશા તરફ સાત-આઠ ડગલા આગળ ગઇ ત્યા જઇને તેણે પોતાના ડાબા ઢીંચણને ઊચા કર્યો ઊચો કરીને પછી તેણે જમણા ઢીંચણને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યો ટેકવીને તેણે ત્રણ વખત પોતાના મસ્તકને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યુ, ટેકવીને તે થોડી નમી-મસ્તકને નીચે નમાવ્યુ ત્યારપછી તેણે કડક અને ત્રુટિતથી વિભૂષિત ભુજાઓને ભેગી કરી, ભેગી કરીને તેણે તેઓ બનેની અજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર આવર્તિણ પ્રદક્ષિણ-પૂવક ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યું

(नमोत्थुण अरहंताण जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महा वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वदामि ण भगवत तत्थगय इह गया [illegible] म भगव

मत्यर्पयन्ति=तदाज्ञानुसारेण कार्यं कृत्वा निवेदयन्ति । ' णवर ' नवरं=विशेषस्त्वयम्-यत्-सूर्याभस्य यानविमान योजनशतसहस्रविस्तीर्णमस्ति, अस्यास्तु-योजनसहस्रविस्तीर्ण यानविमानमस्ति, शेष तथैव विज्ञेयम् । तथैव-सूर्याभदेववदेव काली देवी स्वस्य नामगोत्र साधयति=कथयति । तथैव=सूर्याभदेववदेव च नाट्यविधिम् उपदर्शयति, उपदर्श्य यावत् प्रतिगता=यत आगता तत्रैव प्रतिनिवृत्ता॥सू०२॥

मूलम्-भतेत्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एव वयासी कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ कहि गया० कूडागारसालादिट्ठतो,

---

कि जब वह विमान बनकर तैयार हो जावे-तब उसकी पीछे हमें ख़बर कर देना। सो उन आभियोगिक देवो ने वैसा ही किया-और पीछे इसकी खबर उसे कर दी। इसमे (जोयणसहस्सवित्थिण्ण जाणविमाण सेस तहेव) विशेषता इतनी रही कि सूर्याभदेव का यान विमान एक लाख योजन का विस्तारवाला था। तब कि इसका यह यान विमान १ हजार योजन का विस्तारवाला था। बाकी सब रचना इसकी उसी सूर्याभ विमान की तरह जाननना चाहिये। (तहेव णामगोय साहेइ, तहेव नाट्यविहिं उवदसेइ जाव पडिगया) सूर्याभ देव की तरह काली देवी ने अपने नाम गोत्र का कथन किया और सूर्याभ देव की तरह ही नाट्यविधि को दिखलाया दिखालाकर फिर वह जहा से आई थी वहीं पर पीछे गई सूत्र २ ॥

વિમાન તૈયાર થઈ જાય ત્યારે તેની મને જાણ કરવામા આવે ત્યારપછી તે આભિયોગિક દેવોએ તેમજ કર્યું અને વિમાન તૈયાર થઈ જવાની ખબર દેવીની પાસે મોકલાવી દીધી આ વિમાનમા (જોયણસહસ્સવિત્થિણ જાણ વિમાણ સેસ તહેવ) વિશેષતા આટલી જ હતી કે જ્યારે સૂર્યાભદેવનુ યાન-વિમાન એક લાખ યોજન જેટલુ વિસ્તારવાળુ હતુ ત્યારે તેનુ આ યાન-વિમાન એક હજાર યોજન જેટલુ વિસ્તારવાળુ હતુ બાકી રચના સમધી તેની બધી વિગત સૂર્યાભ-વિમાનની જેમ જ જાણવી જોઇએ (તહેવ णामगोय साहेइ, तहेव नाट्यविहिं उवदसेइ जाव पडिगया) સૂર્યાભદેવની જેમ કાળી દેવીએ પોતાના નામ-ગોત્રનુ કથન કર્યું અને સૂર્યાભદેવની જેમ જ નાટયવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે જ્યાથી આવી હતી ત્યા જ પાછી જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨ ॥

भूयः यावत् मनः-सङ्कल्प समुदपद्यत-अहो खलु मम श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दित्वा यावत् ' पज्जुवासित्तए ' पर्युपासितुम्=सेवितुम्, इति कृत्वा=इतिमनसि निधाय एवम्=उक्तरीत्या ' संपेहेइ ' सम्प्रेक्षते=विचारयति सम्प्रेक्ष्य=विचार्य ' आभिओगिए देवे ' आभियोगिकान् देवान्-भृत्यदेवान् सद्दावेइ=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवमवदत्-उक्तवान् खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीरः एव यथा सूर्याभस्यैव आज्ञप्तिका ददाति यावत् दिव्य सुरवराभिगमन योग्य ' जाणविमाण ' यानविमान=यानाय गमनार्थंविमान कुरुत, कृत्वा यावत्-ममाज्ञा ' पच्चप्पिणह ' प्रत्यर्पयत=मह्य निवेदयत । तेऽपिदेवाः तथैव कृत्वा यावत्

कट्टु एव संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव दिव्व सुरवराभिगमणजोग्गं जाण विमाण करेह, करित्ता जाव पच्चप्पिणह) मुझे भव यही उचित-श्रेय स्कर है-कि मैं श्रमण भगवान महावीर को वदना करके यावत् उनकी पर्युपासना करूँ इस प्रकार उसने पूर्वोक्तरूप से विचार किया। विचार करके उसने उसी समय आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! श्रमण भगवान् महावीर राज गृह नगर के गुणशिलक उद्यान में पधारे हुए हैं-मैं उनको वदना करने के लिये जाना चाहती हूँ-अत. तुमलोग मेरे लिये दिव्य सुरवराभिग मन योग्य एकयान-विमान तैयार करो इस प्रकार की उसने उन्हें सूर्याभ देव की तरह आज्ञा दी। और स्थान में उनसे यह भी कह दिया

(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्तिकट्टु एव संपेहेइ, संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव दिव्व सुरवराभिगमणजोग्ग जाणविमाण करेह, करित्ता जाव पच्चप्पिणह)

મારા માટે હવે એ જ વાત યોગ્ય છે કે હુ શ્રમણ ભગવાન મહા વીરને વદના કરીને યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરૂ, આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે તરત જ આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલા વીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમા પધારેલા છે તેમને વદન કરવા માટે હુ ત્યા જવા ઈચ્છુ છુ એથી તમે બધા મારા માટે દિવ્ય સુરવરાભિગમન યોગ્ય એક યાન-વિમાન તૈયાર કરો આ પ્રમાણે તે લોકોને તેણે સૂર્યાભદેવની જેમ આજ્ઞા કરી, અને સાથે સાથે તેઓને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે જ્યારે

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया पहाया कयवलिकम्मा कायकोउय मगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहाग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरूढा, तएण सा काली दारिया धम्मिय जाणपवरं एवं जहा देवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्म कहेइ, तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि ण भते! णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भं वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवाणुप्पियाण अतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए!, तएण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एवत्तुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ढिया२ कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभि समण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एव खलु गोयमा! तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जबूदीवे दीवे भारहे वासे आम लकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जिय सत्तू राया तत्थ ण आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहा वइ होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था, वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडि यपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमा-णसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहि अट्ठत्ती-साए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी एव खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पाय-वदिया गमित्तए ? अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेहि,

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया पहाया कयवलिकम्मा कायकोउय मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहाग्घाभरणालकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर दूरुढा, तएण सा काली दारिया धम्मिय जाणपवर एव जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भ वयह, ज णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अह देवाणुप्पियाण अतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता तमेव धम्मिय जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ढिया२ कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभि समण्णागया ?, एव जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आम लकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जिय सत्तू राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहा वइ होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था, वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडि· यपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमा· णसामी णवर णवहत्थुस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहि अट्ठत्ती· साए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी -एव खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पाय· वंदिया गमित्तए ? अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेहि,

तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहाग्घाभरणालकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरूढा, तएण सा काली दारिया धम्मिय जाणपवर एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि णं भते! णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भ वयह, ज णवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवाणुप्पियाणं अतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए!, तएण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मिय जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

उवागच्छइ उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे णिसंते सेऽवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अहं अम्मयाओ! संसार भउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंत्तित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसिय करेइ करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिय सीयं दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग सयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सविड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीयं ठावित्ता

कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-
पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वादित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-
एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता
जाव किमग पुण पासणयाए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! ससार
भउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए मुडा भवित्ता जाव
पव्वइत्तए, त एय णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्ख, दल-
यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख, अहासुह
देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास
अरह वदइ नमंसइ वादित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं
अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ
ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो
वंदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—आलित्ते ण
भते ! लोए एव जाव सयमेव पव्वाविया, तएण पासे
अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि
दारिय सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं
सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबभयारिणी,
तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-
माइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ बहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-
पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता वदइ नमसइ वादित्ता नमसित्ता एवं वयासी-
एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता
जाव किमग पुण पासणयाए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! संसार
भउव्विगा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडा भवित्ता जाव
पव्वइत्तए, त एय णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्ख, दल-
यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख, अहासुह
देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास
अरह वदइ नमंसइ वादित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं
अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ
ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो
वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-आलित्ते ण
भते ! लोए एवं जाव सयमेव पव्वाविया, तएण पासे
अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि
दारिय सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं
सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबभयारिणी,
तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-
माइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ बहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

उवागच्छइ उवागच्छित्ता आमलकप्प णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे णिसंते सेऽवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अहं अम्मयाओ ! संसार भउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंत्तित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरओ कालिय दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिय सीयं दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं णयरिं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीयं ठवेइ ठवित्ता

कालिय दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-
पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वादित्ता नमसित्ता एवं वयासी-
एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता
जाव किमग पुण पासणयाए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! ससार
भउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए मुडा भवित्ता जाव
पव्वइत्तए, त एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्ख, दल-
यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख, अहासुहं
देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास
अरह वदइ नमंसइ वादित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं
अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ
ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो
वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी--आलित्ते ण
भते ! लोए एवं जाव सयमेव पव्वाविया, तएण पासे
अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि
दारिय सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं
सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबभयारिणी,
तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-
माइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ बहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

टीका—कालीदेवीगमनानन्तर गौतमः पृच्छति-' भंतेति ' इत्यादि। ' भतेति ' हे भदन्त ! इति सम्बो य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्-कालिया खलु हे भदन्त ! देव्या सा=या साम्मत दर्शिता सा दिव्या ' देविड्ढी ' देवर्द्धि =विमानपरिवारादिरूपा, ' देवज्जुई ' देवद्युति.=शरीराभरणादीनां दीप्तिरूपा ' देवणुभावे ' देवानुभावः= शक्तिप्रभावादिरूप', कुवगता ? कुत्र प्रविष्टा ? भगवानाह-शरीरं गता, शरीरमनु

' भते त्ति भगव गोयमे ' इत्यादि।

टीकार्थः—कालीदेवी के चले जाने के बाद (भगव गोयमे) भगवान गौतम ने (भते त्ति) हे भदन्त ! इस प्रकार सबोधित कर (समणं भगव महावीर वदइ णमसइ) श्रमण भगवान् को वदना की-नमस्कार किया (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) वदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे इस प्रकार पूछा-(कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठतो, अहोण भते ! कालीदेवी महड्ढिया ३, कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एव जहा सूरियाभस्स जाव) हे भदन्त ! कालीदेवी ने जो इस समय दिव्य विमान-परिवार आदिरूप ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवद्युति एव शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया-वह सब कहा चला

'भतेत्ति भगव गोयमे' इत्यादि—

ટીકાર્થ—કાળી દેવીના જતા રહ્યા બાદ (भगव गोयमे) ભગવાન ગૌતમે (भतेत्ति) હે ભદન્ત ! આ પ્રમાણે સબોધન કરીને (समण भगव महावीर वदइ णमसइ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન અને નમસ્કાર કર્યા (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પુછયુ કે

(कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागार सालादिट्ठतो, अहोण भते ! काली देवी महड्ढिया ३, कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एव जहा सूरियाभस्स जाव)

હે ભદન્ત ! કાળી દેવીએ અત્યારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવદ્યુતિ તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો કયા અદ્રશ્ય થઈ ગયો ? કયા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો ?

प्रविष्टा, ' कूडागारसालादिट्ठतो ' अत्र कूटागारशाला दृष्टान्तो बोद्धव्यः। ' अहो ' आश्चर्ये खलु हे भदन्त ! कालीदेवी महर्द्धिका महाद्युतिका महानुभावा वर्त्तते कालया खलु हे भदन्त ! देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३ ' किण्णा ' कथ= केन प्रकारेण ' लद्धा ' लब्धा=अर्जिता, ' किण्णा ' कथ=केन प्रकारेण ' पत्ता ' प्राप्ता=स्वाधीनीकृता ' किण्णा ' कथ=केन प्रकारेण ' अभिसमन्नागया ' अभि समन्वागता=उपभोगविषयतया समागता ? एव ' जहासूरियाभस्स जाव ' यथा-सूर्याभस्य यावत्=यथा सूर्याभदेवविषये गौतमस्वामिना प्रश्न कृतस्तथैवात्रापि विज्ञेयः। अथ भगवान् कालीदेवीपूर्वभववृत्तान्त वर्णयति-' एव खलु ' इत्यादि। एव खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहेव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे आमलकल्पा नाम नगरी आसीत्। ' वण्णओ ' वर्णकः=नगरी वर्णनग्रन्थऔपपातिसूत्रादवसेय' । तत्र आम्रशालवन चैत्यं, जितशत्रू राजा

गया-? कहा प्रविष्ट हो गया ? इस प्रकार गौतम का प्रश्न सुनकर भगवान् ने उनसे कहा-शरीर में चला गया-शरीर में प्रविष्ट हो गया। इस विषय में कूटाकारशाला का दृष्टान्त जानना चाहिये। हे भदन्त! काली-देवी महर्द्धिक, महाद्युतिक एव महानुभाववाली है। इस कालीदेवी ने वह देवर्द्धि ३ किस प्रकार प्राप्त की अर्जित की किस प्रकार उसे अपने आधीन किया? और किस प्रकार से उसने उसे अपने भोग की विष-यभूत बनाई ? इस तरह गौतमस्वामी ने सूर्याभदेव के विषय में जिस तरह से प्रश्न किया उसी तरह से यहां पर भी जानना चाहिये-। अब भगवान् कालीदेवी के पूर्वभव के वृत्तान्त का वर्णन करते हैं-(एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण-इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अबसालवणे चेइए जियसत्तू

આ પ્રમાણે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાભળીને ભગવાને તેમને કહ્યુ કે શરીરમા પ્રવિષ્ટ થઇ ગયેા-શરીરમા જતેા રહ્યો આ વિષે કૂટાકાર શાળાનુ દૃષ્ટાન્ત જાણવુ જોઇએ હે ભદન્ત ! કાળી દેવી મહર્દ્ધિક મહાદ્યુતિક અને મહાનુભાવવાળી છે આ કાળી દેવીએ તે દેવર્દ્ધિ ૩ કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરી છે, અર્જિત કરી છે, કેવી રીતે સ્વાધીન બનાવી છે, અને તેણે તેને કેવી રીતે પોતાના ઉપભોગની વિષયભૂતા બનાવી છે ? આ પ્રમાણે ગૌતમ સ્વામીએ સૂર્યાભદેવના વિષે જેમ પ્રશ્ન કર્યો હતો તેમજ અહીં પણ જાણવો જોઇએ ભગવાન હવે કાળી દેવીના પૂર્વભવના વૃત્તાન્તનુ વર્ણન કરે છે—

(एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे अमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया

टीका—कालीदेवीगमनानन्तर गौतमः पृच्छति-' भंतेति ' इत्यादि। ' भतेति ' हे भदन्त ! इति सम्बो य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्-काल्या खलु हे भदन्त ! देव्या सा=या सामत दर्शिता सा दिव्या ' देविड्ढी ' देवर्द्धि =विमानपरिवारादिरूपा, ' देवज्जुई ' देवद्युतिः=शरीराभरणादीना दीप्तिरूपा ' देवणुभावे ' देवानुभाव'= शक्तिप्रभावादिरूप', कुत्रगता ? कुत्र प्रविष्टा ? भगवानाह-शरीरं गता, शरीरमनु

' भते त्ति भगव गोयमे ' इत्यादि।

टीकार्थः—कालीदेवी के चले जाने के बाद (भगव गोयमे) भगवान गौतम ने (भते त्ति) हे भदन्त! इस प्रकार सबोधित कर (समणं भगव महावीर वदइ णमसइ) श्रमण भगवान् को वंदना की-नमस्कार किया (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) वदना नमस्कार करके फिर उन्हो ने उनसे इस प्रकार पूछा-(कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठतो, अद्दोण भते ! कालीदेवी महड्ढिया २, कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एव जहा सूरियाभस्स जाव) हे भदन्त ! काली देवी का जो इस समय दिव्य विमान-परिवार आदिरूप ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवद्युति एव शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया-वह सब कहा चला

'भतेत्ति भगव गोयमे' इत्यादि—

ટીકાર્થ—કાળી દેવીના જતા રહ્યા બાદ (भगव गोयमे) ભગવાન ગૌતમે (भतेत्ति) હે ભદન્ત ! આ પ્રમાણે સબોધન કરીને (समण भगव महावीर वदइ णमसइ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન અને નમસ્કાર કર્યા (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પૂછયુ કે (कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठतो, अद्दोण भते ! काली देवी महड्ढिया २, कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एव जहा सूरियाभस्स जाव)

હે ભદન્ત ! કાળી દેવીએ અત્યારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવદ્યુતિ તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો ક્યા અદૃશ્ય થઈ ગયો ? ક્યા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો ?

पतितपूतस्तनी-अवनतनितम्बस्तनी, ' णिव्विन्नवरा ' निर्विण्णवरा=वरवरणे विरक्ता, अतएव ' वरपरिवज्जिया ' वरपरिवर्जिता=पतिरहिता चाप्यासीत्। तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीय =पुरुषश्रेष्ठ. आदिकरः यथा वर्द्धमानस्वामी तथैव पार्श्वप्रभुरपि ' णवर ' नवरम्-अय विशेषः-श्रीवर्द्धमानस्वामी सप्तहस्तोच्छ्रयः, पार्श्वप्रभुः ' णवहत्थुस्सेहे ' नवहस्तोत्सेधः=नवहस्तपरिमितशरीरावगाहन , स षोडशभि. श्रमणसाहस्रीभि', अष्टत्रिंशता आर्यिकाजिया यावि होत्था) इस काल गाथापति की कालश्री नाम भार्या थी। इसके हाथ पैर आदि समस्त अग उपाग विशेष सुकुमार थे। देखने में यह बडी सुन्दर थी काल गाथापति के इस काल श्री की कुक्षि से उत्पन्न हुई एक काली नाम की दारिका भी थी। जो बहुत वयस्का हो चुकी थी-इसका विवाह भी नही हुआ था। इसलिये कुमारी अवस्था में ही यह वृद्धा जैसी बहु उमरवाली हो गई थी। शरीर भी बहु अवस्था सपन्न होने के कारण इसका जीर्ण हो चुका था। अतः अपरिणीतावस्था में ही यह जीर्ण कुमारी बन गई थी। इसके नितम्ब और स्तन दोनों ही बिलकुल ढीले हो गये थे नीचे झुक आये थे। वरके वरण करने रूप कार्य से यह विरक्त बन चुकी थी अतः यह वरपरिवर्जित थी-पति से सर्वथा रहित थी। (तेण कालेणं तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवर णवहत्थुस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जिया साहस्सीहिं

णिविन्नवरा, वरपरिवज्जिया यावि होत्था)

તે કાલ ગાથાપતિની કાલશ્રી નામે ભાર્યા હતી તેના હાથ-પગ વગેરે અને બધા અંગો તેમજ ઉપાગો સવિશેષ સુકોમળ હતા દેખાવમા તે બહુ જ સુદર હતી કાલ ગાથાપતિની આ કાલશ્રીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી એક કાલી નામે દારિકા (પુત્રી) પણ હતી તે મોટી ઉમરની થઈ ચૂકી હતી તેનુ લગ્ન પણ થયુ નહોતુ એથી કુમારિકાની અવસ્થામા જ તે ડોશી જેવી બહુ ઉમરે પહોચેલી થઈ ગઈ હતી બહુ ઉમરે પહોચેલી હોવા બદલ તેનુ શરીર પણ જીર્ણ થઈ ચૂકયુ હતુ એથી કુમારિકાની અવસ્થામા જ તે જીર્ણ કુમારિકા બની ગઈ હતી તેના નિતમ અને સ્તનો બને આવ ઢીલા થઇ ગયા હતા, નીચે લટકવા લાગ્યા હતા વરને વરણ કરવા રૂપ કાર્યથી તે વિરક્ત બની ગઈ હતી એથી તે વર પરિવર્જિત હતી તે એકદમ પતિ વગરની હતી

(तेणं कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जिया

पारसीत् । तत्र खलु आमलकल्पायां कालो नाम गाथापतिरभवत् कीदृशः ? इत्याह-'अड्ढे' आढ्यः=धनधान्यादि समृद्धिसमृद्धः, 'जाव' यावत् 'अपरिभूए' अपरिभूतः=बहुजनैरपि पराभवितुमशक्यः । तस्य खलु कालस्य गाथापतेः काल श्रीर्नाम भार्याऽऽसीत्, कीदृशीत्याह-सुकुमारपाणिपादा यावत् सुरूपा । तस्य खलु कालस्य गाथापतेर्दुहिता कालश्रियः भार्यायाः आत्मजा काली नाम दारिका=पुत्री आसीत् । सा कीदृशी ? इत्याह-'वुड्ढा' वृद्धा=बहुवयस्कत्वात्, वृद्धकुमारी=अपरिणीतत्वात्, 'जुण्णा' जीर्णा=जीर्णशरीरत्वात्, 'जुण्णकुमारी' जीर्णकुमारी-अपरिणितावस्थायामेव संजातजीर्णशरीरत्वात्, 'पडियपूयत्थणी'

राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहावई होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए) वे कहते हैं-गौतम सुनो-तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है-उस काल और उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में भारतवर्षमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। नगरीका वर्णन करनेवाला पाठ यहां पर औपपातिक सूत्र से योजित करलेना चाहिये। उस नगरी में उद्यान था जिसका नाम आम्रशालवन था। इस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था। इस आमलकल्पा नगरी में काल नाम का गाथापति रहता था। यह धन धान्यादिसे विशेष समृद्ध था और लोगोंमें भी इस की अच्छी प्रतिष्ठा थी। (तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडियपूयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिव

तत्थण आमलकप्पाए नयरीए काळे, नाम गाहावई होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તેઓ કહે છે કે હે ગૌતમ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નોનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે-કે તે કાળે અને તે સમયે આ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારત વર્ષમા આમલકલ્પા નામની નગરી હતી નગરીના વર્ણન વિષેનો પાઠ અહીં ઔપપાતિક સૂત્ર વડે જાણી લેવો જોઇએ તે નગરીમા એક ઉદ્યાન હતુ તેનુ નામ આમ્રશાલ વન હતું , તે નગરીના રાજાનુ નામ જીતશત્રુ હતું તે આમલકલ્પા નગરીમા કાલા નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તે ધનધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સમૃદ્ધ હતો અને સમાજમા તે ણ સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી

(तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरीणाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडि

र्हतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दिका=पादवन्दनाशया गन्तुम् । अम्बापितरौ कथ
यतः--हे देवानुप्रिये ! पुत्रि यथा सुख तथा कुरु किन्तु अस्मिन् शुभकार्ये प्रति-
बन्ध=प्रमाद मा कुरु । ततः खलु सा कालिका दारिका अम्बापितृभ्यामभ्यनु-
ज्ञाता सती हृष्टयावद्हृदया स्नाता कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता शुद्ध-

अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिया गमित्तए ?) लोगो को ज्योही पार्श्व प्रभु के आम्रशालवन में आने की खबर लगी-त्योंही सब जनता प्रभु को वदना के लिये अपने २ स्थान से निकलकर उस आम्रशालवन में आने लगी। वहा आकर प्रभु का धार्मिक उपदेश सुन वह प्रभु की पर्युपासना करने लगी। इसके अनन्तर जब यह समाचार काली दारिका को मिला तो वह बहुत अधिक हर्षित एव सतुष्ट चित्त हुई। बाद में वह जहा अपने माता पिता थे वहा पहुँची वहा जाकर उसने माता पिता को दोनो हाथ जोडकर चरण वदना की-और इस प्रकार कहा-हे माततात ! पुरुषश्रेष्ठ, आदिकर, ऐसे पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु आम्रशालवन में पधारे हुए हैं-इसलिये मै आपसे आज्ञापित होकर उन पुरुषश्रेष्ठ अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ को वदना करने के लिये जाना चाहती हूँ। (अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि, तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमगलपायच्छित्ता

णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिया गमित्तए ?)

પાર્શ્વ પ્રભુના આમ્રશાલવનમા પધારવાની જાણ થતા જ બધા લોકો પ્રભુને વદન કરવા માટે પોતપોતાના સ્થાનેથી નીકળીને તે આમ્રશાલ વનમા આવવા લાગ્યા ત્યા આવીને પ્રભુનો ધાર્મિક ઉપદેશ સાભળીને તેઓ પ્રભુની પર્યુપાસના કરવા લાગ્યા ત્યારબાદ કાલી દારિકાને આ સમાચારો મળ્યા ત્યારે તે ખૂબ જ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ ચિત્તવાળી થઈ ગઈ ત્યારપછી તે જ્યા તેના માતા-પિતા હતા ત્યા પહોચી ત્યા જઈને તેણે માતા-પિતાને બને હાથ જોડીને ચરણ વદના કરી અને ત્યારપછી આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે માતા પિતા ! પુરુષ શ્રેષ્ઠ, આદિકર એવા પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુ આમ્રશાલ વનમા પધાર્યા છે એટલા માટે હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે પુરુષ શ્રેષ્ઠ અર્હત પ્રભુ પાર્શ્વનાથને વદન કરવા માટે જવા ઇચ્છુ છુ

(अहा सुह, देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि, तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कय

साहस्सीमि सार्द्धं सपरिवृतः यावत् आम्रशालवने समवसृतः। परिषन्निर्गता यावत् पर्युपास्ते। ततः खलु सा काली दारिका अस्याः भगवत्पार्श्वसमुपसमागमन रूपायाः कथायाः=वार्तायाः 'लद्धट्ठा' लब्धार्था भगवानत्रसमवसृतः, इत्येव रूपार्थप्राप्ता 'हट्ठ जाव हियया' हृष्ट यावद्हृदया-हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता प्रीतमनस्का हर्षवशविसर्पद्हृदया सती यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीत शिर आवर्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे अम्ब तातौ! पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः आदिकरो यावत्-आम्रशालवने चैत्ये यथा-मतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसाऽऽत्मान मावयन् विहरति-आस्ते, तद्गच्छामि खलु हे अम्बतातौ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्या

सद्धिं सपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे) उस काल में और उस समय में पुरुषादानीय पुरुषश्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु जो श्री वर्द्धमान स्वामी जैसे थे-सोलह हजार श्रमणों के तथा ३८, हजार आर्यिकाओं के साथ तीर्थंकर परंपरानुसार विहार करते हुए उस आम्रशालवन में आये। भगवान् महावीर और पार्श्वनाथ प्रभु की शरी रावगाहना में विशेषता केवल इतनी ही थी कि उनका शरीर सात हाथ ऊँचा था और पार्श्व प्रभु का शरीर ९ हाथ ऊँचा था। (परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तएणं सा दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु अम्मयाओ पासे अरहा पुरिसा दाणीए आइगरे जाव विहरइ, त इच्छामि ण अम्मयाओ! तुब्भेहिं

साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे)

તે કાળે અને તે સમયે પુરુષાદાનીય-પુરુષ શ્રેષ્ઠ-આદિકર પાર્શ્વનાથ-અર્હંત પ્રભુ-જેઓ શ્રી વર્દ્ધમાન સ્વામી જેવા હતા-સોળ હજાર શ્રમણો તેમજ ૩૮ હજાર આર્યિકાઓની સાથે તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતા તે આમ્રશાલ વનમા આવ્યા ભગવાન મહાવીર અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની શરી રાવગાહનામા વિશેષતા ફક્ત આટલી જ છે કે તેમનુ શરીર સાત હાથ જેટલુ ઊચુ હતુ અને પાર્શ્વ પ્રભુનુ શરીર નવ હાથ ઊચુ હતુ

(परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु अम्मयाओ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, त इच्छामि ण अम्मयाओ!

'जहा दोवई जाव' यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीवत् छत्रादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरादवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वक भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्त 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते। तत खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्षदि धर्म कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त पुरुषादानीय त्रिकृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योंही उसने द्रौपदी की तरह तीर्थंकरातिशयरूप छत्रादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वदना की, उन्हें नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय मे अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

ત્યાથી રવાના થઈ દ્રૌપદીની જેમ તેણે જ્યારે તીર્થંકરાતિશય રૂપ છત્ર વગેરે વિભૂતિને જોઈ કે જોતાની સાથે જ તે ધાર્મિક યાન-પ્રવરમાથી નીચે ઉતરી પડી અને પચ અભિગમનપૂર્વક ભગવાનની પાસે જઈને તેમને વદના કરી, તેમને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમની પર્યુપાસના કરી ત્યારપછી

(तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

પુરુષાદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથે તે કાલી દારિકાને તે વિશાલ પરિષદાની સામે ધર્મકથા સભળાવી

(तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ)

પુરુષાદાનીય તે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી ધર્મને સાભળીને અને તેને હૃદયમા અવધારિત કરીને તે કાલી દારિકા બહુ જ વધારે હર્ષિત

मवेइयाणि माङ्गल्लाणि वत्थाणि पवरपरिहिता अप्पमहाभरणालङ्कियसरीरा चेटिका चक्रवालपरिक्षिप्ता स्वगात् गृहाद् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव धार्मिको यानप्रवरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यान प्रवर दूरूढा=आरूढा। ततः खलु सा काली दारिका धार्मिकं यानप्रवरम्, एवं

सुद्धप्पवेसाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिक्खित्ता साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा, तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)

तब माता पिता ने उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये! तुझे जिस प्रकार सुख मिले उस प्रकार तू कर-इस शुभकार्य में प्रतिबन्ध-प्रमाद मत कर। इस प्रकार माता पितासे अभ्यनुज्ञात हुई उस दारिका ने हृष्ट तुष्ट चित्त होकर स्नान क्रिया बायसादि के लिये अन्नका भागरूप-बलिकर्म क्रिया कौतुक, मंगल एवं प्रायश्चित्त करके शुद्ध प्रवेश योग्य, मंगलकारी वस्त्रों को अच्छी तरह पहिरा, और अल्पभार बहुमूल्य आभरणों से अलकृत शरीर होकर वह चेटिका चक्रवाल से युक्त हो अपने घर से निकली। निकलकर वह वहाँ गई-जहा बाह्य उपस्थान शाला थी-उसमें जाकर वह जहा धार्मिक यानप्रवर रक्खा था-वहाँ पहुँची-वहा जाकर

कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिक्खित्ता साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं एवं जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)

ત્યારે માતાપિતાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે! તને જેમ સુખ મળે તેમ તું કર આ શુભ કાર્યમાં પ્રતિબંધ-પ્રમાદ કર નહિ આ પ્રમાણે માતાપિતા વડે આજ્ઞાપિત થયેલી તે દારિકાએ હૃષ્ટ-તુષ્ટ ચિત્ત થઈને સ્નાન કર્યું કાગડા વગેરેને અન્નભાગ આપીને બલિકર્મ કર્યું કૌતુક, મંગળ અને પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને શુદ્ધ પ્રવેશ યોગ્ય, મંગળકારી વસ્ત્રોને સારી રીતે પહેર્યા અને વજનમાં હલકા પણ કિંમતમાં બહુ ભારે એવા આભરણોથી શરીરને અલંકૃત કરીને દાસીઓના સમૂહથી પરિવેષ્ટિત થઈને પોતાના ઘરથી નીકળી નીકળીને તે ત્યાં પહોંચી જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી તેમાં જઈને તે જ્યાં ધાર્મિક યાનપ્રવર ઊભું હતું તેમાં આરૂઢ થઈ ગઈ આરૂઢ

'जहा दोवई जाव' यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीवत् छत्रादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरादवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वक भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्त 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते। तत खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्षदि धर्म कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्म श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त पुरुषादानीय त्रिकृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योंही उसने द्रौपदी की तरह तीर्थंकरातिशयरूप छत्रादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वदना की, उन्हें नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय मे अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

ત્યાથી રવાના થઈ દ્રૌપદીની જેમ તેણે જ્યારે તીર્થંકરાતિશય રૂપ છત્ર વગેરે વિભૂતિને જોઈ કે જોતાની સાથે જ તે ધાર્મિક યાન-પ્રવરમાથી નીચે ઉતરી પડી અને પચ અભિગમનપૂર્વક ભગવાનની પાસે જઈને તેમને વદના કરી, તેમને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમની પર્યુપાસના કરી ત્યારપછી

(तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

પુરુષાદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથે તે કાલી દારિકાને તે વિશાલ પરિષદાની સામે ધર્મકથા સભળાવી

(तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ)

પુરુષાદાનીય તે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી ધર્મને સાભળીને અને તેને હૃદયમા અવધારિત કરીને તે કાલી દારિકા બહુ જ વધારે હર્ષિત

नमस्थित्ता एवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु हे भदन्त ! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचनं यावत् तत् तथैतत् खलु यथ नवर=किन्तु अयम्-यत्-अहम् अम्बापितरौ आपृच्छामि, यत = मातापितरौ पृष्ट्वा खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि । भगवानाह-यथासुखं हे देवानुप्रिये ! । ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वेन अर्हता पुरुषा

हृष्ट हुई। उसने उन पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु को तीन बार वंदना नमस्कार किया। बाद में (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी, तेणेव उवागच्छइ) वंदना नमस्कार करके उसने उन प्रभु से ऐसा कहा-हे भदन्त ! मैं आपके द्वारा प्रतिपादित निर्ग्रन्थ प्रवचन को विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखती हूँ आपने जैसा यह प्रतिपादित किया है वह वस्तुतः वैसा ही है। यह मुझे बहुत रुचा है। अतः मैं माता पिता से पूछती हूँ। उनसे पूछकर फिर आप देवानुप्रिय के पास आकर

હૃદય થઇ તેથી તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુને ત્રણ વાર વંદના અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ

(वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहा सुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ)

વંદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત ! તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં છું તમે જેવુ આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેવુ જ છે મને આ ખૂબ જ ગમી ગયુ છે એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉ છું તેમને પૂછીને

दानीयेन एवमुक्ता सती हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा तदेव धार्मिक यानप्रवर दूरोहति, दूरुह्य पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीय स्यान्तिकाद् आम्रशालवनात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव आमलकल्पा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आमलकल्पाया नगर्या मध्य-मध्येन यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिक यानप्रवर स्थापयति, स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्बा पितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करतल०' करतलपरिगृहीत मस्तकेऽञ्जलिं

दीक्षित होना चाहती हूँ। काली दारिका के इस अभिप्राय को सुनकर प्रभुने उससे कहा देवानुप्रिये! यथासुखम्। इस प्रकार वह काली दारिका पुरुषादानीय उन अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ से अनुमोदित होकर चित्त मे बहुत अधिक प्रसन्न हुई। उसने अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभु को वंदना नमस्कार किया-और वदना नमस्कार करके वहा से आकर वह उसी अपने धार्मिक यान पर चढ गई चढकर वह फिर पुरुषादानीय, अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ के पास से और उस आम्रशालवन नामके उद्यान से बाहिर चली आई। बाहिर आकर वह जहा आमलकल्पा नगरी थी -वहा पर आ गई। (उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणपवराओ पच्चोरुहेइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छेइ, उवागच्छित्ता करे-

આપ દેવાનુપ્રિયની પાસે આવીને દીક્ષિત થવા ચાહુ છુ કાલી દારિકાના આ અભિપ્રાયને સાભળીને પ્રભુએ તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે! 'યથાસુખમ્' આ પ્રમાણે તે કાલી દારિકા પુરુષાદાનીય તે અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વડે અનુમોદિત થઈને ચિત્તમા ખૂબ જ પ્રસન્ન થઈ તેણે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુને વદના નમસ્કાર કર્યા અને વદના નમસ્કાર કરીને ત્યાથી આવીને તે તેજ પોતાના ધાર્મિક યાનમા બેસી ગઈ અને બેસીને તે પુરુષાદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથની પાસેથી અને તે આમ્રશાલ વન નામના ઉદ્યાનથી બહાર આવી ગઈ બહાર આવીને તે જ્યા આમલકલ્પા નગરી હતી ત્યા આવી ગઈ

(उवागच्छित्ता आमलकप्प णयरिं मज्झ मज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० एव वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मए पासस्स

नमंसित्ता एवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु हे भदन्त ! नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं यावत् तत् तथैतद् युष्मद् वचनं नवरं=विशेषोऽयम्-यत्-अहम् अम्बापितरौ आपृच्छामि, ततः= मातापितरौ पृष्ट्वा खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि । भगवानाह-यथासुखं हे देवानुप्रिये ! । ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वेन अर्हता पुरुषा

हृदय हुई। उसने उन पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु को तीन बार वंदना नमस्कार किया। बाद में (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि ण भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, ज णवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी, तेणेव उवागच्छइ) वंदना नमस्कार करके उसने उन प्रभु से ऐसा कहा-हे भदन्त ! मैं आपके द्वारा प्रतिपादित निर्ग्रन्थ प्रवचन को विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखती हूँ आपने जैसा यह प्रतिपादित किया है वह वस्तुतः वैसा ही है। यह मुझे बहुत रुचा है। अतः मैं माता पिता से पूछती हूँ। उनसे पूछकर फिर आप देवानुप्रिय के पास आकर

હૃદય થઇ તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુને ત્રણ વાર વંદના અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ

(वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, ज णवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासे णं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ)

વંદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત ! તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં છું તમે જેવું આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેવું જ છે મને આ ખૂબ જ ગમી ગયું છે એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉં છું તેમને પૂછીને

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके मुण्डाभूत्वा आगाराद् अनगारिता मव्रजितुम्=स्वीकर्त्तुम् । मातापितरौ कथयत.-यथासुख हे देवानुप्रिये !=यथा रोचते तथा-कुरु किन्तु अस्मिन कार्ये प्रतिबन्ध=प्रमाद मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चया-नन्तर खलु स कालो गाथापतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः=अग्रे कालिका दारिका श्वेतपीतै.=रजतसुवर्णमयै कलशै' स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभू-षिता करोति, कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनिकां शिबिकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्द्धं संपरिवृतः सर्वर्द्धया यावत्-वाद्य

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ-अतः मैं चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हंत पार्श्वनाथ प्रभु के समीप मुण्डित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लू । इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे कहा-(अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह, तएण से काले गाहा वई विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग सयणसबधिपरियण आमतेइ आमतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेण पुप्फवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसबधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेया पीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

શ્રવણથી હુ આ સ સારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને જન્મ-મરણથી ભયભીત થઈ ગઈ છુ એવી મારી ઈચ્છા છે કે હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે મુડિત થઈને અગારાવસ્થા ત્યજીને અનગારાવસ્થા સ્વીકારી લઉ આ પ્રમાણે પોતાની કાલી દારિકાની વાત સાભળીને માતાપિતાએ તેને કહ્યુ —

(अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह, तएण से काले गाहावई विपुल असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसबधिपरि यण आमतेइ आमतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेण पुप्फवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसबधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता

कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे अम्बतातौ ! मया पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, सोऽपि च धर्म 'मे' मम 'इच्छिए' इष्टः=इच्छाविषयीभूत, 'पडिच्छिए' प्रतीष्टः=पुनः पुनरभिलषित 'अभिरुइए' अभिरुचितः=आस्वाद्यवस्तुवत्सर्वथाप्रियः, तत्=तस्मात् कारणात् खलु अहं हे अम्बतातौ ! संसारभयोद्विग्ना भीता जन्ममरणेभ्योऽपि इच्छामि खलु युष्माभ्याम

चल० एवं वयासी-एव खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अतिए धम्मे णिसते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए-तएण अहं अम्मयाओ ! ससारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण-इच्छामि ण तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए) वहां आकर के वह आमलकल्प नगरी के बीचों बीच से होकर जहां वह पाला उपस्थान शाला थी-वहां आई-वहा आकर वह उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी-नीचे उतर कर फिर बाद में वह जहा अपने माता पिता थे-वहा गई-वहा जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर उनसे इस प्रकार कहा-हे मात तात ! सुनो मैंने अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ के मुख से धर्म सुना है-वह धर्म मुझे बहुत अच्छा लगा है, बार बार उस धर्म को सुनने की अभिलाषा हो रही है । जिस प्रकार आस्वाद्य वस्तु प्रिय लगती है उसी प्रकार वह धर्म मेरे लिये सब प्रकार से प्रिय लगा है । उसके सुनने से मैं हे मात तात ! इस ससार

अरहओ अतिए धम्मे णिसते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए-तएण अहं अम्मयाओ ! ससारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणी-इच्छामि ण तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अतिए मुडा भवित्ता जगाराओ अगगारिय पव्वइत्तए)

ત્યા આવીને તે આમલકલ્પા નગરીની વચ્ચે થઇને જ્યાં તે બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી ત્યા આવી ત્યા આવીને તે તે ધાર્મિક યાન પ્રવરમાથી નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે જ્યા તેના માતાપિતા હતાં ત્યા ગઈ ત્યા જઇને પોતાના બને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે માતાપિતા ! સાભળો, અર્હત પ્રભુ પાર્શ્વનાથના મુખથી મે ધર્મનુ શ્રવણ કર્યુ છે, તે મને બહુ જ ગમી ગયુ છે તે ધર્મને વારવાર સાભળવાની ઈચ્છા થઈ રહી છે જેમ આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લાગે છે તેમજ તે ધર્મ મારા માટે પધી રીતે પ્રિય થઈ પડ્યો છે હે માતાપિતા ! તેના

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके मुण्डाभूत्वा आगाराद् अनगारिता प्रव्रजितुम्=स्वीकर्तुम् । मातापितरौ कथयत.-यथासुखं हे देवानुप्रिये !=यथा रोचते तथा-कुरु किन्तु अस्मिन कार्ये प्रतिबन्धं=प्रमाद मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चया नन्तर खलु स काली गाथापतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः=अग्रे कालिका दारिका श्वेतपीतैः=रजतसुवर्णमयै कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभू षिता करोति, कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनिकां शिबिकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्द्धं सपरिवृतः सर्वर्द्धया यावत्-वाद्य

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ-अतः मै चाहती हूँ कि मै आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु के समीप मुण्डित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लू । इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे कहा-(अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग सयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीय सीयं दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

શ્રવણથી હુ આ સંસારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને જન્મ-મરણથી ભયભીત થઈ ગઈ છુ એથી મારી ઇચ્છા છે કે હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે મુંડિત થઈને અગારાવસ્થા ત્યજીને અનગારાવસ્થા સ્વીકારી લઉ આ પ્રમાણે પોતાની કાલી દારિકાની વાત સાભળીને માતાપિતાએ તેને કહ્યુ —

(अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसिय करेइ, करित्ता

मानानेकविधवादित्रवेण सह आमलकल्पायां नगर्यां मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैवाम्रशालवनं चैत्यं तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य छत्रादिकान् तीर्थकरातिः

सयंधिपरियणेण सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ) हे देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह अच्छा लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर। इस तरह उस काल गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने में दृढ निश्चयवाली जानकर विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर बाद-बाद में मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सम्बन्धी परिजनों को आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके बाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प, वस्त्र, गंध माल्य, एवं अलंकारों से सत्कार सन्मान करके उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सम्बन्धी, परिजनों के साथ काली दारिका का श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-बाद में उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-फिर पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर उसे चढवाया। चढवाकर फिर उन मित्र, ज्ञाति निजक, स्वजन सम्बन्धी परिजनों से घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, वाद्यमान अनेक विध बाजों की ध्वनि के साथ २ आमलकल्पा नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर निकला। (णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए

पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरुहेइ, दुरुहित्ता मित्तणाइ, णियगसयणसंबंधि परियणेण सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમ સારૂ લાગે તેમ કર આ કામમા પ્રમાદ કરીશ નહિ આ પ્રમાણે તે કાલગાથાપતિએ પોતાની પુત્રીને દીક્ષા અંગેનુ કરવાનો મક્કમ વિચાર જાણીને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરે ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવ્યા ત્યારબાદ મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને આમંત્રિત કર્યા આમંત્રિત કરીને તેણે સ્નાન કરીને પુષ્કળ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય અને અલંકારો વડે સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી, પરિજનોની સાથે કાલી દારિકાનો સફેદ, અને પીળા કળશો વડે અભિષેક કર્યો ત્યારબાદ તેને સમસ્ત અલંકારો વડે વિભૂષિત કરી અને ત્યારપછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર તેને ચઢાવી ચઢાવીને તેણે મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધી, પરિજનોની સાથે પરિવેષ્ટિત થઈને પોતાની સમસ્ત ઋદ્ધિની સાથે, ઘણા વાજાઓના ધ્વનિની સાથે સાથે આમલકલ્પા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઈને નીકળ્યો

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकां स्थापयति, स्थापयित्वा कालिकां दारिकां शिबिकातः प्रत्यवरोहयति । ततः खलु सा कालिका दारिका अम्मापितरौ पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यतः, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! काली दारिका आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमङ्ग ! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ) निकलकर वह वहां गया कि जहां वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था। वहां जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छत्रादिक अतिशयों को देखा। (पासित्ता सीयं ठावेइ, ठाविता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं सा कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी) देखकर उसने उस पुष्प सहस्रवाहिनी शिबिका को खडी कर दिया। खड़ी करके उसमें से काली दारिका को नीचे उतारा बाद में वे माता पिता उस कालिक दारिका को आगे करके जहां पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहां गये। वहां जाकर उन्हों ने उनको वदना की-नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हों ने इस प्रकार प्रभु से कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमंगपुणपासणयाए ! एस

(णिग्गच्छित्ता जेणेव असोयवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ)

નીકળીને તે ત્યાં ગયો કે જ્યાં તે આમ્રશાલ વન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં જઈને તેણે તીર્થંકર પ્રકૃતિના ઉદયથી અસ્તિત્વમાં આવતા છત્ર વગેરે અતિશયોને જોયા

(पासित्ता सीयं ठावेइ, ठाविता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं सा कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी)

જોઈને તેણે તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીને રોકી રોકીને તેમાંથી કાલી દારિકાને નીચે ઉતારી ત્યારપછી તે માતાપિતા તે કાલીક દારિકાને આગળ કરીને જ્યાં પુરુષદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વિરાજમાન હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે તેમને વદના કરી, નમસ્કાર કર્યા વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમણે પ્રભુને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! कालीदारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमंग-

मानानेकविधवादित्ररवेण सह आमलकल्पायां नगर्यां मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैवाम्रशालवनं चैत्यं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादिकान् तीर्थकरातिः

सधिपरियणेण सद्धिं सपरिवुडे सन्निड्ढीए जाव रवेण आमलकप्प नयरिं मज्झ मज्झेण णिगच्छइ) हे देवानुप्रिये! तुझे जिस तरह अच्छा लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर। इस तरह उस काल गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने मे दृढ निश्चयवाली जानकर विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर घाया-बाद में मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सम्बन्धी परिजनों को आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके बाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प, वस्त्र, गध माल्य, एव अलकारों से सत्कार सन्मान करके उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सबन्धी, परिजनों के साथ काली दारिका का श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-बाद में उसे समस्त अलकारों से विभूषित किया-फिर पुरुष सहस्रवाहिनी शिविका पर उसे चढवाया। चढवाकर फिर उन मित्र, ज्ञाति निजक, स्वजन सबन्धी परिजनों से घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, वाद्यमान अनेक विध बाजो की ध्वनि के साथ २ आमलकल्पा नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर निकला। (णिग्गच्छित्ता जेणेव अवसालवणे चेइए

पुरिससहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइ, णियगसयणसबधि परियणेण सद्धिं सपरिवुडे सन्निड्ढीए जाव रवेण आमलकप्प नयरिं मज्झ मज्झेण णिगच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયે! તને જેમ સારૂ લાગે તેમ કર આ કામમા પ્રમાદ કરીશ નહિ આ પ્રમાણે તે કાલગાથાપતિએ પોતાની પુત્રીનો દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો મક્કમ વિચાર જાણીને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરે ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવ્યા ત્યારબાદ મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સબધી પરિજનોને આમત્રિત કર્યા આમત્રિત કરીને તેણે સ્નાન કરીને પુષ્કળ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગધ, માલ્ય અને અલકારો વડે સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સબધી, પરિજનોની સાથે કાલી દારિકાનો સફેદ, અને પીળા કળશો વડે અભિષેક કર્યો ત્યારબાદ તેને સમસ્ત અલકારો વડે વિભૂષિત કરી અને ત્યારપછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર તેને ચઢાવી ચઢાવીને તેણે મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સબધી, પરિજનોની સાથે પરિવેષ્ટિત થઇને પોતાની સમસ્ત ઋદ્ધિની સાથે, ઘણા વાજાઓના ધ્વનિની સાથે સાથે આમલકલ્પા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઇને નીકળ્યો

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिबिका स्थापयति, स्थापयित्वा कालिकां दारिकां शिबिकातः प्रत्यवरोहयति। ततः खलु सा कालिका दारिका अम्बापितरौ पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यतः, वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! काली दारिका आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमङ्ग! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ) निकलकर वह वहा गया कि जहा वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था। वहां जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छत्रादिक अतिशयों को देखा। (पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं त कालीय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी) देखकर उसने उस पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका को खडी कर दिया। खड़ी करके उसमें से काली दारिका को नीचे उतारा बाद मे वे माता पिता उस कालिक दारिका को आगे करके जहा पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहां गये। वहा जाकर उन्हों ने उनको वदना की-नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हों ने इस प्रकार प्रभु से कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमगपुणपासणयाए! एस

(णिग्गच्छित्ता जेणेव असोगवरपायवे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ)

નીકળીને તે ત્યા ગયો કે જ્યા તે આમ્રશાલ વન નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા જઈને તેણે તીર્થંકર પ્રકૃતિના ઉદયથી અસ્તિત્વમા આવતા છત્ર વગેરે અતિશયોને જોયા

(पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी)

જોઇને તેણે તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીને રોકી રોકીને તેમાથી કાલી દારિકાને નીચે ઉતારી ત્યારપછી તે માતાપિતા તે કાલીક દારિકાને આગળ કરીને જ્યા પુરુષદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વિરાજમાન હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદના કરી, નમસ્કાર કર્યા વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમણે પ્રભુને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया! कालीदारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमग

'पासणयाए' दर्शनाय ?, एषा खलु हे देवानुप्रियाः । संसारभयोद्विग्ना इच्छति देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत्प्रव्रजितुं, तद् एतां खलु देवानुप्रियाणां शिष्याभिक्षां ददः, 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु हे देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम् । भगवानाह-यथासुखं हे देवानुप्रियौ ! मा प्रतिबन्धं कुरुतम् । ततः खलु काली कुमारी पार्श्वमर्हन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा उत्तरपौरस्य

ण देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाण ! अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं) हे देवानुप्रिय ! यह हमारी काली दारिका नामकी पुत्री है । यह हमें बहुत अधिक इष्टा, कान्ता यावत् उदम्बर पुष्प के समान सुनने के लिये भी दुर्लभा है-तो फिर हे अग ! इसके दर्शन की तो बात ही क्या कहना है । हे देवानुप्रिय ! यह संसारभय से उद्विग्न हो रही है अतः आप देवानुप्रिय के पास मुंडित होकर यावत् संयम लेना चाहती है । इस लिये हम दोनों आपके लिये शिष्या की भिक्षा दे रहे है-आप देवानुप्रिय ! हमारी इस शिष्यारूप भिक्षा को स्वीकार करें (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह) इस प्रकार उन दोनों का कथन सुनकर प्रभु ने उनसे कहा हे देवानुप्रियो ! आप को जैसा सुख हो-वैसा आप करो-इसमें विलम्ब करने से लाभ नहीं हैं । (तएणं) इसके बाद (काली कुमारी पास

पुण पासणयाए ? एसणं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाण ! अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ અમારી કાલી દારિકા નામે પુત્રી છે અમારા માટે આ બહુ જ વધારે ઈષ્ટા, કાંતા યાવત્ ઉદુમ્બર પુષ્પની જેમ નામ શ્રવણમાં પણ દુર્લભા છે તો પછી એના દર્શનની તો વાત જ શી કરવી ? હે દેવાનુપ્રિય ! આ સંસાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઇ રહી છે એથી આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી મુંડિત થઈને યાવત્ સંયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે એથી અમે બને આપના માટે આશિષ્યાની ભીક્ષા અર્પણ કરીએ છીએ આપ દેવાનુપ્રિય અમારી આ શિષ્યારૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો (અહાસુહં દેવાણુપ્પિયા ! મા પડિબંધં કરેહ) આ પ્રમાણે તેઓ બનેનું કથન સાભળીને પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો આમા વિલંબ કરવાથી લાભ નથી (તએણં) ત્યારપછી

दिग्भागम् अवक्रामति, अवक्रम्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव आभरणमाल्यालङ्कारम् अवमुञ्चति=अवतारयति, अवमुच्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव लोच=केशलुञ्चन करोति, कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पार्श्वमर्हन्त त्रिः कृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–आदीप्तः खलु हे भदन्त ! लोक' एवम्=अनेन प्रकारेण यावत्–एषाऽपि स्वयमेव पार्श्वप्रभुणा प्रव्राजिता ।

अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव लोय करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) काली कुमारी ने पार्श्वनाथ अरिहंत प्रभु को वदना एव नमस्कार किया–। वदना नमस्कार करके फिर वह उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग ईशान कोण की ओर गई। वहा जाकर उसने अपने आप आभरण माल्य एव अलकारों को उतार दिया। उतार कर अपने हाथो से उसने बालो का लुचन किया–लुचन करके फिर वह जहां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु विराजमान थे वहां आई– वहां आकर उसने पार्श्वनाथ अर्हत को तीनबार वदन एव नमस्कार किया और वदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगी –(आलित्तेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव सयमेव पव्वाविया–

(काली कुमारी पास अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी)

કાલી કુમારીએ પાર્શ્વનાથ અરિહંત પ્રભુને વદના અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તે ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ ઈશાન કોણની તરફ ગઇ ત્યા જઈને તેણે પોતાની મેળે જ આભરણ, માલ્ય અને અલકારોને ઉતાર્યા Cતારીને પોતાના હાથો વડે જ તેણે વાળોનુ લુચન કર્યુ લુચન કરીને તે જ્યા પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યા આવી ત્યા આવીને તેણે પાર્શ્વનાથ અર્હંતને ત્રણ વાર વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરવા લાગી કે—

(आलित्तेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव सयमेव पव्वाविया–तएण

ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः कालीं स्वयमेव पुष्पचूलायै आर्यायै शिष्यात्वेन ददाति । ततः खलु सा पुष्पचूला आर्या कालीं दारिकां स्वयमेव प्रव्राजयति यावत्-सा काली तदाज्ञाम् उपसम्पद्य खलु विहरति । ततः सा काली-आर्या जाता, कीदृशी ? त्याह-ईर्यासमिता यावत्-गुप्तब्रह्मचारिणी । तत खलु सा काली अर्या पुष्पचूलाया आर्याया अन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते,

तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ) हे भदत ! यह लोक आदीप्त हो रहा है-इस प्रकार से पार्श्वनाथ प्रभु के द्वारा स्वय ही दीक्षित की गई। इसके बाद उन पुरुषादानीय पार्श्व प्रभु ने काली को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या को शिष्याणीरूप से प्रदान कर दिया। पुष्पचूला आर्या ने उसे काली को इस प्रकार दीक्षित करवा कर अपनी शिष्याणीरूप में उसे स्वीकार कर लिया-यावत् वह काली उस आर्या की आज्ञानुसार अपनी प्रवृत्ति करने लग गई। (तएण सा काली अज्जा जाव) इस तरह वह काली अब आर्या हो गई। (ईरिया समिया जाव गुत्तबभयारिणी तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए

पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ)

હે ભદન્ત ! આ લોક આદીપ્ત થઈ રહ્યો છે આ પ્રમાણે આ પણ પાર્શ્વનાથ પ્રભુ વડે જાતે જ દીક્ષિત કરવામા આવી ત્યારપછી તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વ પ્રભુએ કાલીને દીક્ષિત કરીને પુષ્પચૂલા આર્યાને શિષ્યાના રૂપમા આપી દીધી પુષ્પચૂલા આર્યાએ તે કાલીને આ પ્રમાણે દીક્ષિત કરાવીને પોતાની શિષ્યાના રૂપમા તેનો સ્વીકાર કરી લીધો યાવત્ તે કાલી તે આર્યાની આજ્ઞા મુજબ પોતાની પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી (તણ્ણ સા કાલી અજ્જા જાવ) આ રીતે તે કાલી હવે આર્યા થઈ ગઇ

(ईरिया समिया जाव गुत्तबभयारिणी, तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए समाइयमाइयाइं एक्कारसअगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउ -- विहरइ)

बहुभिः चतुर्थ यावत्-षष्ठाष्टमदशमद्वादशभिस्तपःकर्मभिरात्मान भावयन्ती विहरति ॥ सू० २ ॥

मूलम्–तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं सरीरवाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ पाए धोवइ सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ कक्खं तराणि धोवइ गुज्झंतराइं धोवइ जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेइए त पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा आसयइ वा सयइ वा, णिसीहइ वा, तएणं सा पुप्फचूला अज्ज कालि अज्जं एव वयासी–नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणीणं णिग्गंथीणं सरीरवाउसियाण होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया ! सरीरवाउसिया जाया अभिक्खणं२ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि, तएणं सा काली

सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ) उसका रहन शयन आदि सब व्यवहार नियमित एव सीमित हो गया। चलती तो वह ईर्या समिति से मार्ग का संशोधन कर चलती। यावत् वह शुद्ध ब्रह्मचरिणी बन गई। ९ नौ कोटी से ब्रह्मचर्यव्रत की सरक्षिका हो गई। इसके बाद उस काली आर्या ने पुष्पचूला आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया–और अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, तपस्याओं की आराधना से अपने आपको भावित किया ॥ सूत्र २ ॥

તેનુ રહેવું, સૂવુ વગેરે બધુ કામ નિયમિત અને સીમિત થઇ ગયુ ચાલતી ત્યારે તે ઇર્યા–સમિતિથી માર્ગનુ સશોધન કરીને ચાલતી યાવત્ તે શુદ્ધ બ્રહ્મચારિણી બની ગઈ ૯ કોટિથી બ્રહ્મચર્ય વ્રતની તે સરક્ષિકા થઇ ગઇ ત્યારપછી તે કાલી આર્યાએ પુષ્પચૂલા આર્યા ની પાસે સામાયિક વગેરે અગિયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ તપસ્યાઓની આરાધનાથી પોતાની જાતને ભાવિત કરી ॥ સૂત્ર ૨ ॥

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमण्णंति अभिक्खणं२ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयवसा जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, त सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्का उवस्सय उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा, णीसेहेइ वा, तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेइ झूसित्ता तीसं भत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए काली [illegible] वण्णा,

तएणं सा कालीदेवी आहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामण पज्जत्तीए०। तएणं सा कालीदेवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाणं य देवीणं य आहेवच्चं जाव विहरइ, एवं खलु गोयमा! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भंते! देवीए केवइयं काल ठिई पन्नत्ता?, गोयमा! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, काली णं भंते! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ?, गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि। धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि-ततः खलु सा काली आर्या अन्यदा कदाचित् ' सरीरवाउसिया ' शरीरा वाकुशिका=शरीरसंस्करणशीला जाता चाप्यासीत्। अथ सा किं करोती? त्याह-अभीक्ष्ण२ वारंवार हस्तौ धावति, पादौ धावति,

---

'तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ,' इत्यादि।

टीकार्थ —(तएण) इसके बाद (सा काली अज्जा) वह काली आर्या (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सरीरवाउसिया) शरीर को संस्कारित करने के स्वभाववाली बन गई इसलिये वह (अभिक्खण २

'तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારપછી (सा काली अज्जा) તે કાલી આર્યા (अन्नया कयाइ) કોઇ એક વખતે (सरीरवाउसिया) શરીરને સંસ્કારિત કરવાના સ્વભાવવાળી બની ગઇ, એટલા માટે તે—

(अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ, पाए धोवेइ सीसं धोवइ, मुहं धोवइ, थणंतराइं धोवइ,

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमण्णंति अभिक्खण२ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयवसा जप्पिभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, त सेय खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्का उवस्सय उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलते पाडिएक्क उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा, णीसेहेइ वा, तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेइ झूसित्ता तीसं भत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदे[illegible] उववण्णा,

निर्ग्रन्थीना शरीरबाकुशिका जाताऽसि, यतस्त्वम्-अभीक्ष्ण २ हस्तौ धावसि यावत् 'आसयाहि वा' आस्से=उपविशामि, 'सयाहि वा' शेषे=शयनं करोषि 'णीसीहियाहि वा' निषेधयसि=स्वाध्याय करोषि, 'व' तत्=तस्मात् कारणात् त्व हे देवानुप्रिये ! एतत् स्थानम्-'आलोएहि' आलोचय यावत् प्रायश्चित्त मतिपद्यस्व । मूले-सम्बन्धसामान्ये षष्ठी । ततः खलु सा काली आर्या

देवाणुप्पिया ! समणी ण णिग्गथीण सरीरबाउसियागं होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया ! सरीरबाउसिया जाया-अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुमं देवाणुप्पियाए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि) हे देवानुप्रिये ! निर्ग्रन्थ श्रमणियों को शरीरबकुश होना कल्पित नहीं हैं। परन्तु तुम तो हे देवानुप्रिये ! शरीरबकुश बन रही हो। बार २ हाथों को धोती हो यावत् जहां तुम्हें उठना बैठना होता है, शयन करना होता है, स्वाध्याय करना होता है उस स्थान को पहिले से ही सिंचित कर लेती हो तब जाकर वहां उठती बैठती हो, शयन करती हो, स्वाध्याय करती हो। इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस स्थान की आलोचना करो यावत् प्रायश्चित्त ग्रहण करो। (तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ, जाव तुसिणीया सचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ

(नो खलु कप्पइ, देवाणुप्पिया ! समणीण णिग्गथीण सरीरबाउसियाणं होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया ! सरीर बाउसिया जाया अभिक्खण २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा, णिसीहियाहि वा त तुम देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोए हि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि)

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને શરીરબકુશ થવુ કલ્પિત નથી, પરતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરબકુશ થઈ રહી છો વારવાર હાથોને ધૂઓ છો યાવત્ ન્યા તમારે ઉઠવા બેસવાનુ હોય છે, સૂવાનુ હોય છે, સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો, અને ત્યારપછી તમે ત્યા ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો.

(तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्ज अभि-

सीसं धावति, मुखं धावति स्तनान्तराणि धावति, कक्षान्तराणि धावति, गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु 'ठाणं वा' स्थानम्=उपवेशनस्थलम् 'सेज्जं वा' शय्या=शयनभूमिम्, 'णिसीहियं वा' नैषधिकीं=स्वाध्यायभूमिम् 'चेएइ' चेतयते=करोति 'त' तत्=स्थानादिकं 'पुव्वामेव' पूर्वमेव=उपवेशनादि क्रियाया पूर्वं 'आसयइ वा' आस्ते=उपविशति, 'सयइ वा' शेते=शयनं करोति, 'णिसीहइ वा' निषेधयति=स्वाध्याय करोति वा। ततः खलु सा पुष्पचूलाऽऽर्या कालीमार्यामेवमवादीत्-नो खलु कल्पते हे देवाणुप्रिये! श्रमणीनां

हत्थे धोवइ पाए धोवइ, सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ, कक्खंतराणि धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएइ-त पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइवा) बार २ हाथों को धोने लग गई, पैरों को धोने लग गई, शिर को धोने लग गई, मुँह को धोने लग गई, स्तनान्तरों को-स्तनों के मध्यभाग को-धोने लग गई, कक्षान्तरों को-काखो के मध्यभाग को-धोने लग गई, गुह्यभागों को-गुप्तागों को धोने लग गई। जहा २ वह बैठने का स्थान, शयन, स्थान, स्वा याय करने का स्थान नियत करती उसे पहिले से ही वह पानी से सिंचित कर देती-बाद में वह वहा बैठती शयन करती, स्वाध्याय करती, (तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्ज एव वयासी) उस काली आर्या की इस स्थिति को देखकर पुष्पचूला आर्या ने उसे इस प्रकार कहा-(नो खलु कप्पइ,

कक्खंतराणी धोवइ, गुज्झंतराइ धोवइ, जत्थर वि य ण ठाण वा सेज्ज वा णिसीहिय वा चेएई त पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइ वा)

વાર વાર હાથોને ધોવા લાગી, પગોને ધોવા લાગી, માથાને ધોવા લાગી, મુખને ધોવા લાગી, સ્તનાન્તરને-સ્તનના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી, કક્ષાતરોને-બગલોના મધ્ય ભાગને ધોવા લાગી, ગુહ્ય ભાગોને-ગુહ્યાગોને ધોવા લાગી જ્યા જ્યા તેને બેસવાનુ સ્થાન, શયનસ્થાન, સ્વાધ્યાય કરવાનુ સ્થાન નક્કી કરતી તો તેને પહેલેથી જ તે પાણીથી સિંચિત કરી દેતી, ત્યારપછી તે ત્યા બેસતી, શયન કરતી, સ્વાધ્યાય કરતી (तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्ज एव वयासी) તે કાલી આર્યાની આવી સ્થિતિ જોઈને પુષ્પચૂલા આર્યાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

निर्ग्रन्थीना शरीरबाकुशिका जाताऽसि, यतस्त्वम्-अभीक्ष्णं २ हस्तौ धावसि यावत् ' आसयाहि वा ' आस्से=उपविशसि, ' सयाहि वा ' शेषे=शयन करोषि ' णीसीहियाहि वा ' निषेधयसि=स्वाध्याय करोषि, ' व ' तत्=तस्मात् कारणात् त्व हे देवानुप्रिये ! एतत् स्थानम्-' आलोएहि ' आलोचय यावत् प्रायश्चित्त मतिपद्यस्व । मूले-सम्बन्धसामान्ये षष्ठी । ततः खलु सा काली आर्या

देवाणुप्पिया ! समणी ण णिग्गथीण सरीरबाउसियाण होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया ! सरीरबाउसिया जाया-अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुम देवाणुप्पियाए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि) हे देवानुप्रिये ! निर्ग्रन्थ श्रमणियों को शरीरबकुश होना कल्पित नहीं हैं । परन्तु तुम तो हे देवानुप्रिये ! शरीरबकुश बन रही हो । बार २ हाथों को धोती हो यावत् जहा तुम्हें उठना बैठना होता है, शयन करना होता है, स्वाध्याय करना होता है उस स्थान को पहिले से ही सिंचित कर लेती हो तब जाकर वहाँ उठती बैठती हो, शयन करती हो, स्वाध्याय करती हो । इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस स्थान की आलोचना करो यावत् प्रायश्चित्त ग्रहण करो । (तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ, जाव तुसिणीया सचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ

(नो खलु कप्पइ, देवाणुप्पिया ! समणीण णिग्गथीण सरीरबाउसियाणं होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया ! सरीर बाउसिया जाया अभिक्खण २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा, णिसीहियाहि वा त तुम देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोए हि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि)

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને શરીરબકુશ થવું કલ્પિત નથી, પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરબકુશ થઇ રહી છો. વારવાર હાથોને ધૂઓ છો યાવત્ જ્યા તમારે ઉઠવા બેસવાનુ હોય છે, સૂવાનુ હોય છે, સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો, અને ત્યારપછી તમે ત્યા ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો.

(तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ जाव तसिणीया संचिट्ठइ, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्ज अमि

पुप्फचूलाए आयाए एवमट्ठं 'नो आढाइ' नो आद्रियते=न मन्यते यावत् 'तुसिणीया' तूष्णीका=समौना सतिष्ठते। ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्याः कालीमार्याम् 'अभिक्खणं २' अभीक्ष्णं २=बार बार 'हीलेंति' हिलन्ति=जन्मकर्मो-द्घाटनपूर्वक निर्भर्त्सयन्ति 'णिंदति' निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वक दोषोद्घाटनेन अना द्रियन्ते, 'खिसंति' खिंसन्ति=हस्तमुखादिविकारपूर्वकमवमन्यन्ते, अपमानं कुर्वन्ती त्यर्थः 'गरिहंति' गर्हन्ते=गुर्वादिसमक्षं दोषाविष्करणपूर्वकं तिरस्कुर्वन्ति, 'अवमण्ण ति' अवमन्यन्ते=रूक्षवचनादिभिरपमानं कुर्वन्ति, तथा-अभीक्ष्णमभीक्ष्णम् बारंबार एतमर्थं=शरीरसंस्करणरूपं निवारयन्ति। ततः खलु तस्याः कालिकाया आर्यायाः अम

अज्जाओ कालिं अज्ज अभिक्खणं २ हीलेंति, णिंदंति, खिसंति, गरि-हंति अवमण्णंति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तासे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) उस काली आर्याने पुष्पचूला आर्याके इस कथन रूप अर्थको नहीं माना। केवल वह यावत् चुपचाप ही रही। उत्तरमें जब उसने उनसे कुछ नहीं कहा-तब उस पुष्पचूला आर्या 'हीलंति' काली आर्याकी बार२ जन्मकर्म उद्घाटन पूर्वक भर्त्सना (तिरस्कार) करना प्रारंभ करदिया। 'निंदति' कुत्सित शब्दोच्चारण पूर्वक दोषोद्घाटन करते हुए वे उसकी बार २ निंदा करने लगीं। 'खिंसति' हस्त, मुख, आदि के विकार प्रदर्शन पूर्वक वे उसका अपमान करने लग गईं। 'गरिहंति' गुरु आदिजनों के समक्ष दोषों को प्रकट करके वे उसका तिरस्कार करने लगी। तथा "अवमण्णंति" रूक्षवचन आदि बोल २ कर उसका अपमान भी करने लग गइ।

क्खणं २ हीलेंति णिंदंति, खिंसंति, गरिहंति अवमण्णंति, अभिक्खणं २ एय मट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

તે કાલી આર્યાએ પુષ્પચૂલા આર્યાના આ કથન રૂપ અર્થનો સ્વીકાર કર્યો નહિ ફક્ત તે મૂગી થઈને જ બેસી રહી જવાબમા જ્યારે તેણે તેમને કઈજ કહ્યુ નહિ ત્યારે પુષ્પચૂલા આર્યાએ કાલી આર્યાની વારવાર જન્મ, કર્મ, ઉદ્ઘાટનપૂર્વક ભર્ત્સના કરવા માડી કુત્સિત શબ્દોચ્ચારણથી દોષોદ્ઘાટન કરતી તે તેની વારવાર નિંદા કરવા લાગી હાથ, મુખ વગેરેને વિકૃત કરીને તે તેમનુ અપમાન કરવા લાગી ગુરૂ વગેરેની સામે દોષોને પ્રકટ કરીને તે તેમનો તિરસ્કાર કરવા લાગી તેમજ રૂક્ષ વચનો વગેરે બોલીને તેનુ અપ-માન પણ કરવા લાગી અને સાથે સાથે તે આર્યા તેને વારવાર શરીર-સત્કાર કરવાની મનાઈ પણ કરતી રહી આ પ્રમાણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ વડે વારવાર

णीभिः निर्ग्रन्थीभिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हिंस्यमानायाः यावत्-वार्यमाणाया अयमेतद्रूप 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः=आत्मगतविचारः यावत्-मनोगतः सङ्कल्पः समुदपद्यत यदा खलु अहम् अगारवासमध्ये 'वसित्था' उषित्वा=न्यवस तदा खलु अहं 'सयवसा' स्वयंवशा=स्वतन्त्रा आसम्, तत्प्रभृति च खलु अहं मुण्डाभूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजिताऽभव तत्प्रभृति च खलु अहं परवशा जाताऽस्मि 'तं' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत् सूर्ये ज्वलति=सूर्योदये सति 'पाडिक्कं' प्रत्येकम्=एकमात्रं मित्रमित्यर्थः, उपाश्रयमुपसंपद्य खलु विहर्तुम्, 'तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि निश्चाय एव सम्प्रेक्षते,

साथ २ में वे आर्या उसे बार २ शरीर सस्कार करने से मना भी करती रही। इस प्रकार उस काली आर्या के निर्ग्रन्थ श्रमणियों द्वारा बार २ भर्त्सित आदि होने पर तथा शरीर सस्कार करने से निषिद्ध होने पर, उसे यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ। (जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया ण अहं सयवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ, अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्कायवस्सय उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हइ) जब मैं अपने घर के बीच में रहती थी-उस समय मैं स्वतन्त्र थी। परन्तु जिस दिन से मुण्डित होकर अगार अवस्था से इस अनगार अवस्था में आई हूँ उस दिन से मैं परवश-पराधीन बन चुकी हूँ। अतः मुझे वही श्रेयस्कर है कि मैं दूसरे दिन प्रात काल होते ही जब सूर्य

ભર્સિત વગેરે થવાથી તેમજ શરીર સત્કારની મનાઇ હોવા બદલ તે કાલી આર્યાને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે—

(जयाणं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तयाणं अहं सयवसा जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हइ)

જ્યારે હું ઘરમા રહેતી હતી ત્યારે હું સ્વતત્ર હતી પરતુ જ્યારથી મે મુંડિત થઇને અગાર અવસ્થાને ત્યજીને અનગાર અવસ્થા સ્વીકારી છે ત્યારથી હું પરવશ-પરાધીન થઇ ગઇ છુ એથી મારા માટે હવે એ જ શ્રેયસ્કર બીજે દિવસે સવાર થતા જ જ્યારે સૂર્ય ઉદય પામશે ત્યારે

सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाडिएक्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति। तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनपघट्टिका यदृच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्णं हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा। ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था=गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽवसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछंदा अहाछंदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह विना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार बार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहा उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તે બીજે દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(तत्थण सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा छंदा अहाछंद विहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છંદ થઇને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યા ઉઠવા બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોક્ત્રી થઇ

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, ' कुसीला ' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलनकषायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, ' अहाच्छंदा ' यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता' ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिकया संलेखनयाऽऽत्मान ' झूसेइ ' जोषयति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए ' अनशनया ' छेएइ ' छिनत्ति, छित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा चमरचञ्चायां राजधान्यां कालावतंसके भवने उपपातसभायां देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसंख्येयभागमात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

---

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई। कुशीला बन गई-संज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणो की विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानुसार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परिचयजन्य प्रेमबधन से अपने आचार पालन मे शिथिल बनी हुई उसने इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और (पाउणित्ता) पालनकर (अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए कालवडिंएस भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसंतरिए अगुल-

---

વિહારિણી થઈ ગઇ સમ ચારી પાલન કરવામા શિથિલતાવાળી બતાવવા લાગી-અવસન્ન વિહારિણી થઈ ગઇ કુશીલા થઇ ગઇ, સજ્વલન કષાયનો ઉદય હોવાથી ઉત્તર ગુણોની વિરાધના કરવા લાગી, કુશિલ વિહારિણી થઇ ગઈ અને પોતાની ઇચ્છા મુજબ માર્ગની કલ્પના કરીને તેમા પ્રવૃત્ત થવા લાગી એથી તે યથાચ્છન્દ વિહારિણી પણ બની ગઇ ગૃહસ્થ વગેરે લોકોના વધારે પડતા પરિચયજન્ય પ્રેમબધનથી પોતાના આચાર પાલનમા શિથિલ થઈ ગઇ તેણે આ પ્રમાણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનુ પાલન કર્યું અને (પવણિત્તા) પાલન કરીને

(अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाडिएक्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति। तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनपघट्टिका यद्वच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा। ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था=गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽवसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछंदा अहाछंदविहारी, संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह बिना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार बार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहा उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તે બીજે દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(तत्थण सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा दा अहाछंद विहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છંદ થઇને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યા ઉઠવા બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોજન

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, ' कुसीला ' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलनकषायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, ' अहाच्छंदा ' यथाछन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता' ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिक्या सलेखनयाऽऽत्मान ' झूसेइ ' जोषयति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए ' अनशनया ' छेएइ ' छिनत्ति, छित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतंसके भवने उपपातसभाया देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसंख्येयभागमात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

---

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई। कुशीला बन गई-संज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणो की विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानुसार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परिचयजन्य प्रेमबधन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और (पाउणित्ता) पालनकर (अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कन्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए कालवडिंएस भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसंतरिए अंगुल-

---

વિહારિણી થઈ ગઇ સમ ચારી પાલન કરવામા શિથિલતાવાળી બતાવવા લાગી-અવસન્ન વિહારિણી થઈ ગઇ કુશીલા થઈ ગઇ, સંજ્વલન કષાયનો ઉદય હોવાથી ઉત્તર ગુણોની વિરાધના કરવા લાગી, કુશિલ વિહારિણી થઇ ગઈ અને પોતાની ઇચ્છા મુજબ માર્ગની કલ્પના કરીને તેમા પ્રવૃત્ત થવા લાગી એથી તે યથાચ્છન્દ વિહારિણી પણ બની ગઇ ગૃહસ્થ વગેરે લોકોના વધારે પડતા પરિચયજન્ય પ્રેમબંધનથી પોતાના આચાર પાલનમા શિથિલ થઈ ગઇ તેણે આ પ્રમાણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનુ પાલન કર્યું અને (પઉણિત્તા) પાલન કરીને

(अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कन्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाडिएक्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति। तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनपघट्टिका यदृच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्णं हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा। ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था=गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽवसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछंदा अहाछंदविहारी, संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह विना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार बार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहा उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તે બીજે દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा दा अहाछंद विहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છદ થઇને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યા ઉઠવા બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોક્ત્રી થઇ

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, ' कुसीला ' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-कषायोदये सक्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, ' अहाच्छंदा ' यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता' ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिक्या संलेखनयाऽऽत्मान ' झूसेइ ' जोषयति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए ' अनशनया ' छेएइ ' छिनत्ति, छित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा चमरचञ्चायां राजधान्यां कालावतंसके भवने उपपातसभायां देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग-मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

---

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई। कुशीला बन गई-संज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणो की विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानुसार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परिचयजन्य प्रेमबधन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और (पाउणित्ता) पालनकर (अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए कालवडिंएस भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुल-

---

વિહારિણી થઈ ગઇ સમાચારી પાલન કરવામા શિથિલતાવાળી બતાવવા લાગી-અવસન્ન વિહારિણી થઈ ગઇ કુશીલા થઇ ગઇ, સંજ્વલન કષાયનો ઉદય હોવાથી ઉત્તર ગુણોની વિરાધના કરવા લાગી, કુશિલ વિહારિણી થઇ ગઈ અને પોતાની ઇચ્છા મુજબ માર્ગની કલ્પના કરીને તેમા પ્રવૃત્ત થવા લાગી એથી તે યથાચ્છન્દ વિહારિણી પણ બની ગઇ ગૃહસ્થ વગેરે લોકોના વધારે પડતા પરિચયજન્ય પ્રેમબંધનથી પોતાના આચાર પાલનમા શિથિલ થઇ ગઇ તેણે આ પ્રમાણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનુ પાલન કર્યું અને (પાઉણિત્તા) પાલન કરીને

(अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

पपन्ना=तत्कालसमुत्पन्नासती पञ्चविधयापर्याप्त्या यथासूर्याभः=सूर्याभदेववत्, 'जाव भासामणपज्जत्तीए' भाषामन पर्याप्त्या-यावत्-आहारपर्याप्त्या १, शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३, आनप्राणपर्याप्त्या ४, भाषामन पर्याप्त्या ५, पर्याप्तिभाव गच्छति। पर्याप्तिबन्धकाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिसमाप्ति कालान्तरापेक्षया भाषामन पर्याप्त्योः स्तोककालान्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्षणात् पर्याप्तीनां पञ्चविधत्वम्। ततः खलु सा काली देवी चतसृणां सामानिक-साहस्रीणां यावत्-अन्येषां च बहूनां कालावतंसकभवनवासिनामसुरकुमारणां

स्स असंखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा) अर्द्धमास की सलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया। इस प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३०भक्तोंका छेदन करने पर भी उस स्थानकी आलोचना नहीं की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही हटी-अतः अनालोचित अप्रतिक्रान्त बनकर वह जब उस काल अवसर-काल कर चमरचंपा नाम की राजधानी में, कालावतंसक भवनमें, उपपातसभामें देवदूष्यवस्त्रसे आच्छादितदेवशयनीय'शय्या' ऊपर अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएणं सा कालीदेवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए ०। तएणं सा कालीदेवी चउण्हं समाणिय साहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसकभवणवासीणं असुरकुमाराणं

चचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसी देवदूस तरिए अंगुलस्स असंखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा)

તેણે અર્દ્ધમાસની સંલેખનાથી પોતાના આત્માને યુક્ત કર્યો આ પ્રમાણે તેણે અનશનો વડે ૩૦ ભક્તોનુ છેદન કરીને પણ તે સ્થાનની આલોચના કરી નહિ અને તે અતિચારોના આચરણથી પણ અટકી નહિ એથી અનાલોચિત અપ્રતિક્રાંત થઇને તે જ્યારે કાળ અવસરે કાળ કરીને અમરચંચા નામની રાજધાનીમા કાલાવતંસક ભવનમા, ઉપપાત સભામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રથી આચ્છાદિત દેવશનીય ઉપર આંગળીઓના અસંખ્યાતમા ભાગની અવગાહનાથી કાલી દેવીના રૂપમા ઉત્પન્ન થઇ ગઈ

(तएणं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए०। तएणं सा काली देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसकभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाणं य देवीणय आहेवच्चं जाव विहरइ)

देवाना च देवीना च ' आहेवच्च ' आधिपत्य=स्वामित्व कुर्वन्तीपालयन्ती यावद् विहरति ।

एवम्=उक्तप्रकारेण खलु हे गौतम ! काल्या देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३, लब्धा, प्राप्ता, अभिसमन्वागता ।

गौतमः पृच्छति-काल्या खलु हे भदन्त ! देव्यास्तत्र ' केवइय ' कियन्त

देवाण य देवीण य आहेवच्च जाव विहरइ) इस प्रकार वह काली देवी अभी अभी उत्पन्न होकर पाच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त बनी है। पर्याप्तिया ६ होती है परन्तु यहा पर जो वे पाच की सख्या में निर्दिष्ट हुई हैं-उसका कारण यह है कि पर्याप्ति के बधकाल में देवों के आहार, शरीर आदि पर्याप्तियों के समाप्तिकाल की अपेक्षा भाषा और मनः पर्याप्त का साथ साथ बध होता है, इसलिये इन दोनो को एक रूप से यहा विवक्षित किया गया है। वे पर्याप्तियां इस प्रकार है-। (१) आहारपर्याप्ति (२) ,शरीर पर्याप्ति (३) इन्द्रियपर्याप्ति (४) श्वासोच्छवासपर्याप्ति (५) भाषा एवं मनः पर्याप्ति। वह काली देवी चार हजार सामानिक देवोका यावत् और दूसरे अनेक कालावतसक भवनवासी असुरकुमार देवो का देवियो का आधिपत्य कर रही है। (एव खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देवड्ढी ३ लद्धापत्ता अभिसमण्णा गया,

---

આ પ્રમાણે તે કાલી દેવી હમણા જ ઉત્પન્ન થઇને પાચ પ્રકારની પર્યાપ્તિઓથી પર્યાપ્ત બની છે પર્યાપ્તિઓ છ હોય છે પણ અહીં જે પાચની સખ્યામા જ બતાવવામા આવી છે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે પર્યાપ્તિના બધકાલમા દેવોના આહાર, શરીર વગેરે પર્યાપ્તિઓના સમાપ્તિકાળની અપેક્ષા ભાષા અને મન પર્યાપ્તિનુ એકી સાથે બધ હોય છે એથી આ બનેને અહીં એક રૂપમા જ બતાવવામા આવી છે તે પર્યાપ્તિઓ આ પ્રમાણે છે— (૧) આહાર પર્યાપ્તિ, (૨) શરીર પર્યાપ્તિ, (૩) ઇન્દ્રિય પર્યાપ્તિ, (૪) શ્વાસોશ્વાસ પર્યાપ્તિ, (૫) ભાષા અને મન પર્યાપ્તિ તે કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવો ઉપર યાવત્ બીજા પણ ઘણા કાલાવતસક ભવનવાસી અસુરકુમાર દેવો, દેવીઓ ઉપર શાસન કરી રહી છે

(एव खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए ण भंते ! देवीए केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा इज्जाइ पलिओवमाई ठिई पण्णत्ता)

पपन्ना=तत्काल समुत्पन्नासती पञ्चविधयापर्याप्त्या यथासूर्याभः=सूर्याभदेववत्, 'जाव भासामणपज्जत्तीए' भाषामन पर्याप्त्या-यावत्-आहारपर्याप्त्या १, शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३, आनमाणपर्याप्त्या ४, भाषामन पर्याप्त्या ५, पर्याप्तिभाव गच्छति। पर्याप्तिबन्धकाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिसमाप्ति कालान्तरापेक्षया भाषामन पर्याप्त्योः स्तोककालान्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्षणात् पर्याप्तीना पञ्चविधत्वम्। ततः खलु सा काली देवी चतसृणा सामानिकसाहस्रीणां यावत्-अन्येषा च बहूनां कालावतसकभवनवासिनामसुरकुमारणा

स्स असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा) अर्द्धमास की सलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया। इस प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३०भक्तोंका छेदन करने पर भी उस स्थानकी आलोचना नही की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही हटी-अतः अनालोचित अप्रतिक्रान्त बनकर वह जब उस काल अवसर-काल कर चमरचपा नाम की राजधानी में, कालावतसक भवनमें, उपातातसभामें देवदूष्यवस्त्रसे आच्छादितदेवशयनीय'शय्या' ऊपर अगुलके असख्यातवे भाग की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएण सा कालीदेवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए०। तएण सा कालीदेवी चउण्ह समाणि य साहस्सी ण अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसकभवणवासीण असुरकुमाराण

चचाए रायहाणीए कालवडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसी देवदूस तरिए अगुलस्स असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा)

તેણે અર્દ્ધમાસની સલેખનાથી પોતાના આત્માને યુકત કર્યો આ પ્રમાણે તેણે અનશનો વડે ૩૦ ભકતોનુ છેદન કરીને પણ તે સ્થાનની આલોચના કરી નહિ અને તે અતિચારોના આચરણથી પણ અટકી નહિ એથી અનાલોચિત અપ્રતિકાત થઇને તે જ્યારે કાળ અવસરે કાળ કરીને અમરચચા નામની રાજધાનીમા કાલાવત સક ભવનમા, ઉપપાત સભામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રથી આચ્છાદિત દેવશનીય ઉપર આગળીઓના અસખ્યાતમા ભાગની અવગાહનાથી કાલી દેવીના રૂપમા ઉત્પન્ન થઇ ગઈ

(तएण सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए०। तएण सा काली देवी चउण्ह सामाणियसाहस्सीण जाव अण्णेसिं च बहूण कालवडेसकभवणवासी ण असुरकुमाराण देवाण य देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ)

श्रीसुधर्मास्वामी माह-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत्-मोक्ष सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य अयमर्थ=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः । त्तिबेमि ' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०४ ॥

॥ धर्मकथाना प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगी और वहीं से सिद्ध होगी। अब सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू! स्वामी से कहते हैं कि हे जम्बू! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उन्हीं के मुख से सुनकर यह तुमसे कहा है ॥ सूत्र ४ ॥

-:प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त-

મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ થશે હવે સુધર્મા સ્વામી શ્રી જબૂ! સ્વામીને કહે છે કે હે જબૂ! મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે આવુ હુ તેમના શ્રી મુખથી સાભળીને તમને કહી ગયેા છુ ॥ સૂત્ર ૪ ॥

" પ્રથમ વર્ગનુ પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત "

काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? भगवान्माह-हे गौतम ! ' अड्ढाइज्जाउ ' अर्द्धतृतीये=सार्द्धे द्वे पल्योपमे स्थितिः प्रज्ञप्ता ।

गौतमः पृच्छति-काली हे भदन्त ! देवी तस्माद्देवलोकाद् अनन्तरम्=आयुर्भवस्थितिक्षयानन्तर ' उव्वट्टित्ता ' उद्वृत्य=निस्सृत्य कुत्र गमिष्यति कुत्र-उत्पत्स्यते ? ।

भगवानाह-हे गौतम ! सा काली देवी देवलोकाच्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे उत्पद्य सेत्स्यति, ।

कालीए ण भते ! देवीए केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा अड्ढाइज्जाइ पलिओवमाई ठिईपण्णत्ता) इस तरह से हे गौतम ! काली देवी ने वह दिव्य देवर्द्धि ३, अर्जित की है स्वाधीन की है और उसे अपने उपभोग के योग्य बनाया है। अब गौतम पुन प्रभु से पूछते हैं-कि हे भदत ! कालीदेवी की कितनी स्थिति है ? उत्तर में प्रभु ने उनसे कहा-हे गौतम ! कालीदेवी की स्थिति अढाई पल्य की (प्रज्ञप्त हुई) है (काली ण भते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छहिइ, कहिं उववज्जिहिइ, ? गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ एव खलु जबू ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ति बेमि, धम्मकहाण पढमज्झयण समत्त) हे भदत ! कालीदेवी उस देवलोक से आयु एवं भवस्थिति के क्षय के अनन्तर निकलकर कहा जावेगी, कहा उत्प न होगी ? इस गौतम के प्रश्न का उत्तर प्रभु ने उ इस प्रकार दिया-गौतम ! वह काली देवी देवलोक से चव कर म

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીએ તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ ૩ પ્રાપ્ત કરી છે સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતાને માટે ઉપભોગ યોગ્ય બનાવી હવે ગૌતમ ફરી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! કાલી દેવીની સ્થિતિ કેટ જવાબમા પ્રભુએ તેમને કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીની સ્થિતિ અઢી પલ્યની (પ્રજ્ઞપ્ત થઈ) છે

(कालीण भते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छिहिइ, कहि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, एव खलु जबू ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि, धम्मकहाण पढमज्झयण समत्त)

હે ભદન્ત ! કાલી દેવી તે દેવલોકથી આયુ અને ભવસ્થિતિને પૂરી કરીને કયા જશે ? કયા ઉત્પન્ન થશે ? આ પ્રમાણે ગૌતમના પ્રશ્નને સાભળીને પ્રભુએ ઉત્તરમા તેને કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! તે કાલી દેવી [illegible] ચ્યવીને

श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनाममधेयं स्थान सम्प्राप्तेन धर्मकथाना प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलक चैत्यम् । स्वामी भगवान् महावीरः समवसृतः । परिष

पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दिइयस्स ण भंते! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुण सिलए चेइए सामी समोसढे) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथन अध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है-तो हे भदत! द्वितीय अध्ययन का उन्ही श्रमण भगवान महावीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जबू ! सुनो -तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था। उसमें महावीर स्वामी समवसरे।-(परिसा निग्गया-जाव पज्जुवासइ,

---

वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दिइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के० अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ? तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे)

જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રવમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધુ છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

(परिसा निग्गया-जाव पज्जुवासइ, तेण काळेण तेण समएण राई देवी

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एव खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएणं राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली तहेव आगया णट्टविहि उवदसेत्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत काहिति । एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स बीयज्झयण समत्त ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त !

-:द्वितीय अध्ययन प्रारभः-

-:जइणं भते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ'—जबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भते) हे भदंत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

બીજુ અધ્યયન પ્રારભ —

જઇણ ભંતે ! સમણેણ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (ભતે) હે ભદન્ત !

(જઇણ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ

श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन धर्मकथाना प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीमाह–एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलक चैत्यम् । स्वामी भगवान् महावीरः समवसृतः । परिष

पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जबू ! तेण काळेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुण सिलए चेइए सामी समोसढे) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है–तो हे भदत! द्वितीय अध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान महावीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जबू ! सुनो -तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था। उसमें महावीर स्वामी समवसरे।-(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ,

---

वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के० अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ? तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे)

ને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધુ છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ–અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

[illegible]गया–जाव पज्जुवासइ, तेण काळेणं तेण समएण राई देवी

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एव खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपुच्छा, एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत काहिति । एवं खलु जंबू ! बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स बीयज्झयण समत्त ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु हे भदन्त !

-:द्वितीय अध्ययन प्रारभः-

-:जइणं भते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ.—जबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

બીજું અધ્યયન પ્રારભ —

जइण भंते ! समणेण इत्यादि—

टीकार्थ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भते) હે ભદન્ત !

(जइण समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पढमस्स

श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनाममधेय स्थान सम्प्राप्तेन धर्मकथाना प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीमाह–एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलक चैत्यम् । स्वामी भगवान् महावीरः समवसृतः । परिष

पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दुइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुण सिलए चेइए सामी समोसढे) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है–तो हे भदत ! द्वितीय अध्ययन का उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो -तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था । उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था । उसमें महावीर स्वामी समवसरे ।–(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ,

---

वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दुइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के० अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ? तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધુ છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ–અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ, तेण काळेण तेण समएण राई देवी

अथ द्वितीयमध्ययन प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली तहेव आगया णट्टविहि उवदसेत्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपुच्छा, एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत काहिति । एव खलु जबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स बीयज्झयण समत्तं ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु हे भदन्त !

-:द्वितीय अध्ययन प्रारभः-

-:जइणं भंते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ —जबु स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

બીજુ અધ્યયન પ્રારભ —

जइण भते ! समणेण इत्यादि—

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भते) હે ભદન્ત !

(जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पढमस्स

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वम्य = पार्श्वप्रभो समवसरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका. तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली- तहेव निक्खंता, तहेवसरीर पाउभिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू। विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था। नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था। वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था। उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था। इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहा उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई। अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बडे ठाठ बाट के साथ शिबिका में बैठाकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये। वहा वह दीक्षित हो गइ। धीरे २ वह शरीर बाकुशिका बनगई। जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खता, तहेव सरीरवाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

તેના ગયા બાદ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમે રાત્રિ દેવીના પૂર્વ ભવની વિગત પૃછી પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી તેમા આમ્રશાલવન નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બનેને રાત્રિ નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને પ્રાપ્ત થઇ તેમજ ત્યા ઉદ્યાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઇ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઇ ગઇ ધીમે ધીમે તે પણ શરીર બાકુશિકા બની ગઇ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા થઈને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

निर्गता यावत् भगवन्त पर्युपासते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'राई' रात्रिः-रात्रिनाम्नी देवी चमरचञ्चायां राजधान्याम्, एव यथा काली तथैव-आगता, नाटयविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। 'भंते त्ति' हे भदन्त! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा रात्रि देव्या पूर्वभव पृच्छति। भगवान् माह-एव खलु हे गौतम! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकल्पा नगरी, आम्रशालवन चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गाथापतिः, रात्रिश्रीर्भार्या, तयोः

तेण कालेण तेण समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एव जहा काली-तहेव आ गया नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया। सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-चचाराजधानी में रहती थी-जैसे वहां काली देवी रहती थी। सो वह भी प्रभु का आगमन सुनकर वहा आई। वहां आकर उसने नाटय विधि दिखलाई-और दिखलाकर फिर वह वहा से वापिस अपने स्थान पर चली गई"। (भंते त्ति भगव गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली-तहेव आगया नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया)

પ્રભુનુ આગમન સાંભળીને નગરના બધા નાગરિકજનો તે પ્રભુના દર્શન કરવા માટે તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો બધાએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે રાત્રિ નામે દેવી ચમરચચા રાજધાનીમા કાલી દેવીની જેમ રહેતી હતી તે પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યા આવી ત્યા આવીને તેણે નાટયવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે ત્યાથી પાછી જતી રહી

(भंते त्ति भगव गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एव खलु गोयमा! तेणं कालेण तेण समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स दारिया

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समवसरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली- तहेंव निक्खता, तहेवसरीर वाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू। विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उस काल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था। नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था। वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था। उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था। इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहा उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई। अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े ठाठ बाट के साथ शिबिका में बैठाकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये। वहा वह दीक्षित हो गइ। धीरे २ वह शरीर वाकुशिका बनगई। जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खता, तहेव सरीरवाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

તેના ગયા બાદ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમે રાત્રિ દેવીના પૂર્વભવની વિગત પૂછી પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી તેમા આમ્રશાલવન નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બનેને રાત્રિ નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને પ્રાપ્ત થઇ તેમજ ત્યા ઉદ્યાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઇ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઇ ગઇ ધીમે ધીમે તે પણ શરીર બાકુશિકા બની ગઇ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા થઇને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

निर्गता यावत् भगवन्तं पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'राई' रात्रिः-रात्रिनाम्नी देवी चमरचञ्चायां राजधान्याम्, एवं यथा काली तथैव-आगता, नाटयविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। 'भंते त्ति' हे भदन्त! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा रात्रि देव्या पूर्वभव पृच्छति। भगवान् माह-एव खलु हे गौतम! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकल्पा नगरी, आम्रशालवन चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गाथापतिः, रात्रिश्रीर्भार्या, तयोः

तेण कालेण तेण समएण राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एव जहा काली-तहेव आ गया नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया। सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-चंचाराजधानी में रहती थी-जैसे वहां काली देवी रहती थी। सो वह भी प्रभु का आगमन सुनकर वहां आई। वहां आकर उसने नाटय विधि दिखलाई-और दिखलाकर फिर वह वहां से वापिस अपने स्थान पर चली गई"। (भंते त्ति भगवं गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचंचाए रायहाणीए एत्र जहा काली-तहेत्र आगया नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया)

પ્રભુનુ આગમન સાભળીને નગરના બધા નાગરિકજનો તે પ્રભુના દર્શન કરવા માટે તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો બધાએ પ્રભુની પર્યુંપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે રાત્રિ નામે દેવી ચમરચચા રાજધાનીમા કાલી દેવીની જેમ રહેતી હતી તે પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યા આવી ત્યા આવીને તેણે નાટયવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે ત્યાથી પાછી જતી રહી

(भंते त्ति भगवं गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स दारिया

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समवसरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली- तहेंव निक्खंता, तहेवसरीर पाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू। विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था। नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था। वहां रत्रि नामका एक गाथापति रहता था। उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था। इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहा उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई। अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े ठाठ बाट के साथ शिबिका में बेठाकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये। वहा वह दीक्षित हो गइ। धीरे २ वह शरीर बाकुशिका बनगई। जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खता, तहेव सरीरपाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

તેના ગયા બાદ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમે રાત્રિ દેવીના પૂર્વભવની વિગત પૂછી પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી તેમા આમ્રશાલવન નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બનેને રાત્રિ નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને પ્રાપ્ત થઇ તેમજ ત્યા Cાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઇ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઇ ગઇ ધીમે ધીમે તે પણ શરીર બાકુશિકા બની ગઇ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા થઇને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

' एवं खलु जम्बू ! ' इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निक्षेपकः=उपसंहार= समाप्तिवाक्यमत्रान्योऽत्र बोध्य ॥ सू०५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययन समाप्तम् ॥-१-२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर वाकुशिका बनगई थी । इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब सम्बन्ध यहां पर इसके विषय में लगालेना चाहिये और वह सम्बन्ध "महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों का अन्त करेगी " यहा तक जानना चाहिये । इस प्रकार हे जम्बू ! यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

થઈ તેવીજ સ્થિતિ તે રાત્રિદારિકાની પણ થઈ અહીં આ પ્રમાણે કાલિદારિકાનો બધો સબધ આના વિષે સમજી લેવો જોઇએ અને તે સબધ " મહાવિદેહમાં ઉત્પન્ન થઇને તે બધા દુઃખોનો અત કરશે " અહીં સુધી સમજવો જોઇએ. આ પ્રમાણે હે જબૂ ! પ્રથમ વર્ગના બીજા અધ્યયનનો આ ઉપસહાર છે સૂ ૫

" પ્રથમ વર્ગનુ બીજુ અધ્યયન સમાપ્ત "

अथ तृतीयमध्ययनम्

मूलम्—जइ णं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावई रयणी-सिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अंत काहिइ ३ । एवं विज्जू वि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावई विज्जु-सिरीभारिया विज्जुदारिया सेस तहेव । ४ एव मेहा वि आम-लकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं धम्म-कहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! इत्यादि तृतीया-ऽयनस्य उत्क्षेपकः=जम्बूप्रश्नादिरूपः प्रारम्भवाक्यप्रबन्धोऽत्रवाच्यः । सुधर्मास्वामी कथ

॥ तृतीय अध्ययन प्रारभ ॥

(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) इत्यादि ॥

टीकार्थः—(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) अब जंबू स्वामी पुनः पूछते हैं कि हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय अध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है-तो तृतीय अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस तरह से इस तृतीय अध्ययन का जबू स्वामी का यह प्रश्न आदिरूप वाक्य प्रबन्ध उत्क्षेपक है-प्रारभक है-इस प्रश्न का उत्तर श्री सुधर्मा स्वामी

ત્રીજા અધ્યયન પ્રારભ—

' जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) હવે જબૂ સ્વામી ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જબૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાકય પ્રબધ ઉત્ક્ષેપક છે-પ્રારભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શ્રી સુધર્મા સ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે:—

' एवं खलु जम्बू ! ' इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निक्षेपकः=उपसंहारः समाप्तिपर्यन्तमध्ययनमन्त्योऽत्र बोध्य ॥ सू०५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययन समाप्तम् ॥-१-२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर वाकुशिका बनगई थी। इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब सबन्ध यहां पर इसके विषय में लगालेना चाहिये और वह सबन्ध "महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों का अन्त करेगी " यहा तक जानना चाहिये। इस प्रकार हे जम्बू! यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

થઈ તેવીજ સ્થિતિ તે રાત્રિદારિકાની પણ થઈ અહીં આ પ્રમાણે કાલિદારિકાનો બધો સબધ આના વિષે સમજી લેવો જોઇએ અને તે સબધ " મહાવિદેહમાં ઉત્પન્ન થઇને તે બધા દુઃખોનો અત કરશે " અહીં સુધી સમજવો જોઇએ આ પ્રમાણે હે જબૂ ! પ્રથમ વર્ગના બીજા અધ્યયનનો આ ઉપસહાર છે સૂ ૫

" પ્રથમ વર્ગનુ બીજુ અધ્યયન સમાપ્ત "

अथ तृतीयमध्ययनम्

मूलम्—जइ णं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ, एव खलु जंबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावई रयणी-सिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अंत काहिइ ३ । एव विज्जू वि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावई विज्जु-सिरीभारिया विज्जुदारिया सेस तहेव । ४ एव मेहा वि आम-लकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५ । एव खलु जबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं धम्म-कहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि। यदि खलु भदन्त ! इत्यादि तृतीया ययनस्य उत्क्षेपकः=जम्बूप्रश्नादिरूपः प्रारम्भवाक्यप्रबन्धोऽत्रवाच्यः । सुधर्मास्वामी कथ

॥ तृतीय अध्ययन प्रारभ ॥

(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) इत्यादि ॥

टीकार्थः—(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) अब जंबू स्वामी पुनः पूछते हैं कि हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय अध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है—तो तृतीय अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस तरह से इस तृतीय अध्ययन का जबू स्वामी का यह प्रश्न आदिरूप वाक्य प्रबन्ध उत्क्षेपक है—प्रारभक है—इस प्रश्न का उत्तर श्री सुधर्मा स्वामी

ત્રીજા અધ્યયન પ્રારભ —

' જઇણ ભતે ! તઇયજ્ઝયણસ્સ ઉક્ખેવઓ ' ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(જઇણ ભતે ! તઇયજ્ઝયણસ્સ ઉક્ખેવઓ) હવે જબૂ સ્વામી ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જબૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાકય પ્રબધ ઉત્ક્ષેપક છે-પ્રારભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે —

यति-एव खलु हे जम्बूः ! राजगृहं नगरं, गुणशिलकं चैत्यम् । एव यथैव रात्रि स्तथैवरजनी अपि, नवरम् आमलकल्पा नगरी, रजनीगाथापतिः, रजनीश्रीर्भार्या, रजनी दारिका । शेष तथैव । यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य तृतीयाध्ययनम् ॥ १-३ ॥

इस प्रकार से देते हैं-(एव खलु जंबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवर आमलकप्पा नयरी, रयणी गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अत काहिइ ३) जम्बू ! सुनो-उस काल में और उस समय में राजगृह नाम का नगर था । उसमें गुणशिलक नामका उद्यान था । जिस प्रकार रात्रि प्रभु का आगमन सुनकर, गुणशिलक उद्यान में गई थी उसी तरह रजनी भी वहां गई उसने प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुना । सुन कर ससार शरीर और भोगो से वह विरक्त हो गई । दीक्षा लेने का अपना भाव उसने प्रभु से निवेदित किया । प्रभुने यथासुख देवानुप्रिये कहकर उसके भाव की सराहना करतेहुए 'शुभस्य शीघ्र' करने की अपनी अनुमति प्रकट की-तब यह घर आई और माता से अपना दीक्षा लेने का विचार प्रकट किया-इत्यादि सब सबन्ध काली दारिका के कथानक अनुसार रजनी के साथ लगालेना चाहिये । जब रजनी देवी प्रभु को वदना करनेके लिये गुणशिलक उद्यान में आई और वहा

(एव खलु जंबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एव जहेव राई तहेव रयणी वि णवर आमलकप्पा नयरी, रयणी-गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अत काहिइ ३).

હે જબૂ ! સાભળો, તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ જેમ રાત્રિ પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ગુણશિલક ઉદ્યાનમા ગઇ હતી તેમજ રજની પણ ત્યા ગઈ તેણે પ્રભુના મુખથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો સાભળીને તે સ સાર, શરીર અને ભોગોથી વિરકત થઈ ગઈ તેણે પોતાનો દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો ભાવ પ્રભુની સામે પ્રકટ કર્યો પ્રભુએ ' યથાસુખમ્ ' દેવાનુપ્રિયે ! કહીને તેના ભાવની સરાહના કરી અને શુભ કાર્યમા વિલબ કરો નહિ એવી પોતાની અનુમતી દર્શાવી ત્યારે તે પોતાને ઘેર આવી અને માતાપિતાની સામે દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો વિચાર પ્રકટ કર્યો-વગેરે બધી વિગત કાલી દારિકાની જેમજ રજનિની સાથે પણ સમજી લેવી જોઇએ જ્યારે રજનીદેવી પ્રભુને વદના કરવા માટે ગુણ શિલક ઉદ્યાનમા આવી અને ત્યા તેણે નાટયવિધિનુ પ્રદર્શન ' ત્યારબાદ

'एव विज्जूवि' इत्यादि। एव विद्युदपि। आमलकल्पा नगरी, विद्युद् गाथापति, विद्युत् श्रीर्भार्या, विद्युदारिका। शेष तथैव।

इति प्रथमवर्गस्य चतुर्थं अध्ययनम् ॥ १-४ ॥

उसने नाटयविधिका प्रदर्शन किया बाद में वह जब वहा से प्रभु की पर्युपासना कर वापिस अपने स्थान पर चली गई-तब प्रभु से गौतम गणधर ने उसके पूर्वभव पूछे तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-उस काल और उस समय में आमलक कल्पा नामकी नगरी थी-उसमें रजनी नामका गाथापति रहता था। रजनी श्री उसकी भार्या का नाम था।इन दोनों के एक पुत्री जिसका नाम रजनी था। उसके विषय का अवशिष्ट कथानक "समस्त दुःखो का यह अन्त करेगी" यहां तक का काली दारिका के जैसा ही जानना चाहिये ॥ सू० ६ ॥

॥ प्रथम वर्ग का तीसरा अध्ययन समाप्त ॥

एव विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जू गाहावई ॥
विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेस तहेव ॥ ४ ॥
एव मेहावि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई ॥
मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेस तहेव ॥ ५ ॥
(एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्ग

પ્રભુની પર્યુપાસના કરીને પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી ત્યારે ગૌતમ ગણધરે પ્રભુને તેના પૂર્વભવો પૂછ્યા ત્યારે પ્રભુએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી, તેમા રજની નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો, રજની શ્રી તેની પત્નીનુ નામ હતું તેઓ બનેને એક પુત્રી હતી-જેનુ નામ રજની હતુ એના વિષેની બાકીની બધી વિગત "સમસ્ત દુઓનો તે અન્ત કરશે" અહીં સુધીની કાલી દારિકાની જેમજ સમજી લેવી જોઇએ ॥ સૂત્ર ૬ ॥

"પ્રથમ વર્ગનુ ત્રીજુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥

(एव विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जु गाहावई ।
विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेस तहेव ॥ ४ ॥
एव मेहा वि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई ।
मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेस तहेव ॥ ५ ॥
(एव खलु जबू ! समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स अय-
मट्ठे पण्णत्ते ६)

'एव मेहावि' इत्यादि। एव मेघोऽपि। आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीर्भार्या, मेघा दारिका। दोष तथैव।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बूः! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थ प्रज्ञप्तः॥ सू०६॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम्॥ १-५॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-'जइण भंते' इत्यादि।

मूलम्-जइणं भंते! समणेण जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एव खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स

स्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६) इसी तरह का कथानक विद्युत्के विषय में भी जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका। इस तरह नाम आदि मे ही परिवर्तन हुआ है। अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है। मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये। आमलकल्प नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नहीं। इस प्रकार यहा तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं। विद्युद्दारिका का अध्ययन ४ चौथा, एव मेघा दारिका का अध्ययन ५ पचम है। इस तरह हे जबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधिपति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવુ જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બનેને ત્યા વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયુ છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયુ છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદ્દારિકાનુ અધ્યયન ચોથુ, અને મેઘ દારિકાનુ અધ્યયન પાચમુ છે આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઇ ચૂકયા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૯ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–सुभा निसुंभा रंभा निरभा मयणा, जइ ण भते ! समणेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेणं समएणं सुभादेवी वलिचंचाए रायहाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहासणसि कालीगमएणं जाव णट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुभा दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओवमाइं ठिई एवं खलु जबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि अज्झयणा सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया, एवं खलु जबू ! निक्खेवओ विईयवग्गस्स२ ॥ सू० ७ ॥

॥ वीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपक' । सुधर्मास्वामीमाह–एव खलु हे जम्बूः श्रमणेन यावत्

-:द्वितीयवर्गप्रारभः-

' जइण भते ! समणेण ' इत्यादि ।

टीकार्थ.—जबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (भते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ–एव खलु

બીજો વર્ગ પ્રારભ—

' जइण भते ! समणेण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(भते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ–एव खलु

'एव मेहावि' इत्यादि । एव मेघाऽपि । आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीर्भार्या, मेघा दारिका । शेष तथैव ।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थ प्रज्ञप्तः ॥ सू० ६ ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम् ॥ १-५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-'जइण भते' इत्यादि ।

मूलम्-जइण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एव खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेण दोच्चस्स

स्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६) इसी तरह का कथानक विद्युतके विषय में भी जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका। इस तरह नाम आदि मे ही परिवर्तन हुआ है। अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नही है। मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये। आमलकल्प नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नही। इस प्रकार यहा तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं। विद्युद्दारिका का अध्ययन ४ चौथा, एव मेघा दारिका का अध्ययन ५ पचम है। इस तरह हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधिपति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવું જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બનેને ત્યા વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયુ છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયુ છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદ્દારિકાનુ અધ્યયન ચોથુ, અને મેઘ દારિકાનુ અધ્યયન પાચમુ છે આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઇ ચૂકયા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–सुभा निसुंभा रंभा निरंभा मयणा, जइ ण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण धम्मकहाण दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणासिलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेणं समएणं सुंभादेवी वलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुंभा दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओवमाइं ठिई एवं खलु जबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि अज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिसनामया, एवं खलु जबू ! निक्खेवओ विईयवग्गस्सर ॥ सू० ७ ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामीमाह–एव खलु हे जम्बूः श्रमणेन यावत्

-:द्वितीयवर्गप्रारभः-

' जइण भते ! समणेण ' इत्यादि ।

टीकार्थः—जबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (भते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ–एव खलु

બીજો વર્ગ પ્રારભ—

' जइण भंते ! समणेण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(भते ! जइण समणेण जाव संपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ–एव खलु

'एव मेघाणि' इत्यादि। एव मेघाऽपि। आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीर्भार्या, मेघा दारिका। शेष तथैव।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बूः! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थ प्रज्ञप्तः॥ सू०६॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम्॥ १-५॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-'जइण भते' इत्यादि।

मूलम्-जइणं भंते! समणेण जाव संपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जबू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स

स्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६) इसी तरह का कथानक विद्युतके विषय में भी जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका। इस तरह नाम आदि मे ही परिवर्तन हुआ है। अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है। मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये। आमलकल्प- नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नहीं। इस प्रकार यहा तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं। विद्युद्दारिका का अध्ययन ४ चौथा, एव मेघा दारिका का अध्ययन ५ पचम है। इस तरह हे जबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधिपति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવુ જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા. આ બનેને ત્યા વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયુ છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયુ છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદ્દારિકાનુ અધ્યયન ચોથુ, અને મેઘ દારિકાનુ અધ્યયન પાચમુ છે આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઇ ચૂકયા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी समवसृत । परिषन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी बलिचञ्चाया राजधान्या शुम्भावतंसके भवने शुम्भे सिंहासने ' कालीगमएण ' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाटयविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रतिगता । ' पुव्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपृच्छा=गौतम-स्वामी शुम्भा देव्या' पूर्वभव पृच्छति। भगवान् कथयति–श्रावस्ती नगरी । कोष्ठक चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीर्भार्या । शुम्भा दारिका । शेष यथा कालया=काली दारिकाया वर्णन तथात्रापि विज्ञेयम् , नवर=विशेस्त्व-

---

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदन्त ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जम्बू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये। प्रभु का आगमन सुनकर वहां की समस्त जनता उन्हें वदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिषद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की। (तेण कालेण तेण समएण) उसी काल और उसी समय मे (सुभादेवी बलिचचाए रायहाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहासणसि कालीगमएण जाव नट्टविहिं उवदसेत्ता जाव पडिगया पुव्वभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया,सुभे गाहावई सुभ

સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રવણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે, તો હે ભદન્ત ! બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ?

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને આ પ્રમાણે કહે છે કે હે જબૂ ! તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા વર્દ્ધમાન સ્વામી પધાર્યા પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યાના બધા નાગરિકો તેમને વદના કરવા માટે પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો પરિષદે ધર્મોપદેશ સાભળીને પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી (તેણ કાલેણ તેણ સમએણ) તે કાળે અને તે સમયે

(સુભા દેવી બલિચચાએ રાયહાણીએ સુભવડેંસએ ભવણે સુભસિ સીહાસણસિ કાલી ગમએણ જાવ નટ્ટ વિહિં ઉવદસેત્તા જાવ પડિગયા, પુવ્વભવપુચ્છા સાવત્થી णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई, सुभसिरी भारिया, सुभा-

मोक्ष सम्माप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्चाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-शुम्भा १, निशुम्भा २, रम्भा ३, निरम्भा ४, मदना ५, । यदि खलु हे भदन्त । श्रमणेन यावत्सम्माप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्च-अ-ध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, द्वितीयस्य खलु हे भदन्त । वर्गस्य प्रथमा ध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। सुधर्मास्वामी प्राह-एव

जबू। समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदत ! मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने द्वितीय वर्ग का उत्क्षेपक प्रारभ किस रूप से प्ररूपित किया है-तब सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा-हे जबू। सुनो यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए उन श्रमण भगवान् महावीर ने इस द्वितीय वर्ग के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-(त जहा) वे इस प्रकार हैं-(सुभा, निसुभा, रभा, निरभा मयणा, जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्ग स्स पच अज्जयणा पण्णत्ता, दोच्चस्सण भते वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवा सइ) (१) शुम्भा, (२) निशुम्भा (३) रम्भा, (४) निरम्भा (५) मदना, । अब जबू स्वामी पुनः सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि हे भदत ! यदि यावत् मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीरने द्वितीयवर्ग

जबू ! समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता)

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક-પ્રારભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યુ કે હે જબૂ ! સાભળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે (તજહા) તે આ પ્રમાણે છે—

(સુમા, નિસુમા, રમા, નિરમા, મયણા, જઇણ ભંતે ! સમણેણ જાવ સપ ત્તેણ ધમ્મકહાણં દોચ્ચસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અજ્ઝયણા પણ્ણત્તા, દોચ્ચસ્સ ણ ભંતે વગ્ગસ્સ પઢમજ્ઝયણસ્સ કે અટ્ઠે પણ્ણત્તે ! એવ ખલુ જબૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમએણ રાયગિહે णયરે, गુણસીલए चेइए-સામી સમોસઢે પરિસા णિગ્ગયા જાવ પજ્જુવાસઇ)

(૧) શુભા, (૨) નિશુભા, (૩) રભા, (૪) નિરભા, (૫) મદના હવે જબૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी समवसृत । परिषन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी बलिचञ्चायां राजधान्यां शुम्भावतंसके भवने शुम्भे सिंहासने ' कालीगमएण ' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रतिगता । ' पुव्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपृच्छा=गौतम-स्वामी शुम्भा देव्याः पूर्वभवं पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठक चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीर्भार्या । शुम्भा दारिका । शेषं यथा कालिकायाः वर्णनं तथात्रापि विज्ञेयम् , नवरं=विशेषस्त्व-

---

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदंत ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जंबू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये। प्रभु का आगमन सुनकर वहां की समस्त जनता उन्हें वंदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिषद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की। (तेणं कालेणं तेणं समएणं) उसी काल और उसी समय में (सुभादेवी बलिचचाए रायहाणीए सुभवडेसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया पुव्वभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया,सुभे गाहावई सुभ

સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રવણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો હે ભદન્ત ! બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ?

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને આ પ્રમાણે કહે છે કે હે જંબૂ ! તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા વર્દ્ધમાન સ્વામી પધાર્યા પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યાના બધા નાગરિકો તેમને વદના કરવા માટે પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો પરિષદે ધર્મોપદેશ સાભળીને પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે

(सुभा देवी बलिचाए रायहाणीए सुभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव नट्ट विहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई, सुभसिरी भारिया, सुभा-

मोक्ष सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्चाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-शुम्भा १, निशुम्भा २, रम्भा ३, निरम्भा ४, मदना ५, । यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्च-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, द्वितीयस्य खलु हे भदन्त । वर्गस्य यद्याद्यध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी माह-एव

जबू। समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदत ! मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय वर्ग का उत्क्षेपक प्रारभ किस रूप से प्ररूपित किया है-तब सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा-हे जबू। सुनो यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए उन श्रमण भगवान् महावीर ने इस द्वितीय वर्ग के पांच अध्ययन प्ररूपित किये है-(तं जहा) वे इस प्रकार हैं-(सुभा, निसुभा, रभा, निरभा मयणा, जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्जयणा पण्णत्ता, दोच्चस्सण भते वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ) (१) शुम्भा, (२) निशुम्भा (३) रम्भा, (४) निरम्भा (५) मदना, । अब जबू स्वामी पुनः सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि हे भदत ! यदि यावत् मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने द्वितीयवर्ग

जबू ! समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता)

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક-પ્રારભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યુ કે હે જબૂ ! સાભળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે

(तजहा) તે આ પ્રમાણે છે—

(सुभा, निसुभा, रभा, निरभा, मयणा, जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भते वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ)

(૧) शुभा, (૨) निशुभा, (૩) रभा, (૪) निरभा, (૫) मदना હવે જબૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

'एव सेसावि' इत्यादि-एव शेषाण्यपि=निशुम्भा १-रम्भा २-निरम्भा ३-मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नव रम्-एतावान् विशेषः-मातर पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि-निशुम्भाया माता निशुम्भश्री, पिता निशुम्भः। रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः। निरम्भाया माता निरम्भश्रीः, पिता निरम्भः। मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः। एते सर्वे गाथापतयः आसन्।

एव खलु हे जम्बू ! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये। उसमें और इसमे केवल अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पल्य की थी और इस शुभादेवी की ३॥, पल्य की थी। इस प्रकार हे जम्बू! इस द्वितीय वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है। इसी तरह निशुम्भा, रम्भा निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये। इन में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां जो माता पिता है वे दारिका सदृश नामवाले है-जैसे निशुम्भा के पिता का नाम निशुम्भ, माता का नाम निशुम्भ श्री, रम्भाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री, निरम्भा के पिता नाम निरम्भ माता का नाम निरम्भश्री, मदना के पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री। ये सब ही गाथापति है। इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक-उपसहार-है।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્યની હતી આ પ્રમાણે હે જબૂ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ જાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનુ નામ નિશુભ, માતાનુ નામ નિશુભશ્રી, રભા ના પિતાનુ નામ રભ, માતાનુ નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનુ નામ નિરભ, માતાનુ નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનુ નામ મદન અને માતાનુ નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

यम्-अस्याः शुम्भादेव्याः 'अद्धपुट्ठाइ' अर्द्ध चतुर्थानि=सार्द्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीमाह-हे जम्बू! निक्षेपकः=उपहारोऽध्ययनस्य वाच्यः॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमा अध्ययनम् ॥

सिरी भारिया सुंभा दारिया, सेस जहा कालीए णवरं अद्धपुट्ठाइ पलिओवमाइं ठिई, एवं खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणा सावत्थीए णयरे माया पिया सरिस नामया एवं खलु जंबू। निक्खेवओ निरयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुभादेवी जो बलिचंचा नामकी राजधानी में शुभावतंसक नामके भवन में रहती थी-और शुभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वंदना करने के लिये आई। वहां उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहां से पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्ठक नामका उद्यान था,। नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा पति रहता था। जिसका नाम शुभ था। इसकी शुभ श्री नाम की भार्या थी। दारिका का नाम शुभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवरं अद्धपुट्ठाइ, पलिओवमाइं ठिई। एवं खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नयरे मायापिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू! निक्खेवओ-निरयवग्गस्स पंच अज्झयणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

શુભા દેવી-કે જે બલિચંચા નામે રાજધાનીમા શુભાવતંસક નામના ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વંદના કરવા માટે આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું ત્યારબા૰ તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે— શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોષ્ઠક નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનુ નામ શુભા હતુ ત્યારપછીનુ તેનુ શેષ વર્ણન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવુ જોઇએ તેમા અને આમા તફાવત એટ

'एव सेसावि' इत्यादि-एव शेषाण्यपि=निशुम्भा १-रम्भा २-निरम्भा ३-मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नवरम्-एतावान् विशेषः-मातर पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि-निशुम्भाया माता निशुम्भश्री, पिता निशुम्भः। रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः। निरम्भाया माता निरम्भश्रीः, पिता निरम्भः। मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः। एते सर्वे गाथापतयः आमन्।

एव खलु हे जम्बू! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये। उसमें और इसमे केवल अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पल्य की थी और इस शुभादेवी की ३॥, पल्य की थी। इस प्रकार हे जबू! इस द्वितीय बर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है। इसी तरह निशुभा, रभा निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये। इन में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां जो माता पिता है वे दारिका सदृश नामवाले हैं-जैसे निशुभा के पिता का नाम निशुम, माता का नाम निशुभ श्री, रभाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री, निरभा के पिता नाम निरभ माता का नाम निरभश्री, मदना के पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री। ये सब ही गाथापति हैं। इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक-उपसहार-हे।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્યની હતી આ પ્રમાણે હે જબૂ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ જાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનુ નામ નિશુભ, માતાનુ નામ નિશુભશ્રી, રભા ના પિતાનુ નામ રભ, માતાનુ નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનુ નામ નિરભ, માતાનુ નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનુ નામ મદન અને માતાનુ નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

यम्-अस्याः शुम्भादेव्याः 'अद्धुट्ठाइ' अर्द्ध चतुर्थानि=साद्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीमाह-हे जम्बूः! निक्षेपकः=उपसंहारोऽध्ययनस्य वाच्यः॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमा ययनम् ॥

सिरी भारिया सुभा दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओव माइं ठिई, एव खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चउरिअज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिस नामया एव खलु जबू! निक्खेवओ बिईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुभादेवी जो बलिचंचा नामकी राजधानी में शुभावतसक नामके भवन में रहती थी-और शुभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वदना करने के लिये आई। वहां उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहा से पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्टक नामका उद्यान था,। नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा पति रहता था। जिसका नाम शुभ था। इसकी शुभ श्री नाम की भार्या थी। दारिका का नाम शुभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्धट्ठाइ, पलिओवमाइ ठिई। एव खलु जबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवर माया-पिया सरिसनामया, एव खलु जबू! निक्खेवओ-बिईयवग्गस्स पच अज्झ यणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

શુભા દેવી-કે જે બલિચચા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વદના કરવા માટે આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યુ ત્યારબા૦ તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે— શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોષ્ઠક નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતુ તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનુ નામ શુભા હતું ત્યારપછીનુ તેનુ શેષ વર્ણન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઇએ તેમા અને આમા તફાવત એટ

'एव सेसावि' इत्यादि-एव शेषाण्यपि=निशुम्भा १-रम्भा २-निरम्भा ३-मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्यां विज्ञेयानि, नवरम्-एतावान् विशेषः-मातर पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामान', तथाहि-निशुम्भाया माता निशुम्भश्री , पिता निशुम्भः । रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः । निरम्भाया माता निरम्भश्री', पिता निरम्भः । मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः । एते सर्वे गाथापतयः आसन् ।

एव खलु हे जम्बू ! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये। उसमें और इसमे केवल अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पल्य की थी और इस शुभादेवी की ३॥, पल्य की थी। इस प्रकार हे जबू! इस द्वितीय वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है। इसी तरह निशुभा, रंभा निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये। इन में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां जो माता पिता हे वे दारिका सदृश नामवाले हैं-जैसे निशुभा के पिता का नाम निशुम, माता का नाम निशुभ श्री, रभाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री, निरभा के पिता नाम निरभ माता का नाम निरभश्री, मदना के पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री। ये सब ही गाथापति हैं। इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक-उपसहार-हे।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્યની હતી આ પ્રમાણે હે જબૂ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ જાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનુ નામ નિશુભ, માતાનુ નામ નિશુભશ્રી, રભા ના પિતાનુ નામ રભ, માતાનુ નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનુ નામ નિરભ, માતાનુ નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનુ નામ મદન અને માતાનુ નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

यम्-अस्याः शुम्भादेव्याः 'अद्धुट्ठाइ' अर्द्ध चतुर्थानि=साद्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीमाह-हे जम्बूः! निक्षेपकः=उपहारोऽध्ययनस्य वाच्यः॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमा ययनम् ॥

सिरी भारिया सुंभा दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओव माइं ठिई, एव खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्ता रिअज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिस नामया एव खलु जबू। निक्खेवओ बिईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुभादेवी जो बलिचचा नामकी राजधानी में शुभावतसक नामके भवन में रहती थी-और शुभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वदना करने के लिये आई। वहाँ उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहा से पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्ठक नामका उद्यान था,। नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा पति रहता था। जिसका नाम शुभ था। इसकी शुभ श्री नाम की भार्या थी। दारिका का नाम शुभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्धट्ठाइ, पलिओवमाइ ठिई। एव खलु जबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवर माया पिया सरिसनामया, एव खलु जबू! निक्खेवओ-बिईयवग्गस्स पच अज्झ यणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

શુભા દેવી-કે જે બલિચચા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વદના કરવા માટે આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યુ ત્યારબા૦ તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે— શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોષ્ઠક નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનુ નામ શુભા હતુ ત્યારપછીનુ તેનુ શેષ વર્ણન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઇએ તેમા અને આમા ત્ર વત્ ઓટ

अद्धपलिओवम ठिई सेस तहेव, एव खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स)
उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। वहां गुण-शिलक नाम का उद्यान था। उसमें तीर्थंकर परपरानुसार विहार करते हुए श्रमण भगवान् महावीर आकर ठहरे हुए थे। नगर की परिषदा प्रभु को वदना के लिये अपने २ घर से निकलकर उस उद्यान मे आई प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। सुनकर लोगो ने यावत् प्रभु की पर्युपासना की। उसी समय वहा पर धरणेन्द्र की अग्रमहिषी अलादेवी जो धरणा राजधानी में अलावतसक इस नाम के भवन मे रहती थी-और जिसके बैठने के सिंहासन का नाम अला था प्रभु को वदना आदि करने के निमित्त आई। वहाँ आकर उस ने नाट्यविधि दिखलाई। दिखलाकर वह फिर वहा से पीछे अपने स्थान पर गई। उसके आते ही गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर से उसका पूर्वभव पूछा तब भगवान् ने उनसे इस प्रकार कहा वाणारसी नामकी नगरी थी-उसमें काम महावन नाम का उद्यान था। उसमे अलनाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या "अल श्री" इस नामकी थी। इस की एक पुत्री थी जिसका नाम अला था। इसका-अला का शेष कथानक, कालीदेवी का

वाओ, साइरेग अद्धपलिओवम ठिई सेस तहेव, एव खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા તીર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતાં પધારીને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે મુકામ કર્યો હતો નગરની પરિષદ પ્રભુને વદન કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળીને તે ઉદ્યાનમા આવી પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને લોકોએ યાવત્ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી, તે વખતે ત્યા ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) અલાદેવી કે જે ધરણા રાજધાનીમા અલાવતસક આ નામના ભવનમા રહેતી હતી, અને જેને બેસવાના સિંહાસનનુ નામ અલા હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી ત્યા આવીને તેણે નાટયવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું, પ્રદર્શન કરીને તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેના ગયા પછી તરત જ ગૌતમ સ્વામીએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને તેનો પૂર્વભવ પૂછયો ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે વાણારસી નામે નગરી હતી, તેમા કામમહાવન નામે ઉદ્યાન હતુ, તેમા અલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની ભાર્યાનુ નામ અલશ્રી હતુ [illegible]ી હતી તેનુ નામ અલા હતુ અલા વિષેનુ શેષ કથાનક પહેલા

भदन्त ! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथाना तृतीयस्य वर्गस्य चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तेषु प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मस्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम्, गुण शिलक चैत्यम्, स्वामी समवसृतः, परिषन्निर्गता यावत्-भगवन्त पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये अलादेवी=धरणेन्द्रस्याग्रमहिषी धरणाया राजधान्याम् आलानतसके भवणे अले सिंहासणे, एव 'कालीगमएण' कालीगमेन=काली सदृशपाठेन यावत् नाटयविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा-गौतमस्वामी अलादेव्याः पूर्वभव पृच्छति, भगवान् कथयति-वाणारसी नगरी। काममहावन चैत्यम्। 'अले' अलनामा गाथापतिः। अलश्रीर्भार्या। अला दारिका। शेष 'जहाकालीए' यथा कालेयाः=कालीदेव्या वर्णन तथैव अला देव्या वर्णन विज्ञेयम्, नवरम्-धरणस्याग्रमहिषीतयाऽस्या उपपातः, सातिरेक=

यावत् मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथा के तृतीयवर्ग के ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं तो उनमे से हे भदत ! उन्हीं यावत् मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? इस प्रश्न के समाधान निमित्त सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हे कि-(एव खलु जबू !) हे जबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है(तेण कालेण तेण समएण अलादेवी धरणाए राय हाणीए अलावडसए भवणे अलंसि सीहासणसि एव कालीगमएण जाव णट्ठविहिं उवदसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी, काममहावणे चेइए अलगाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारियासेस जहा कालीए णवर धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ, साइरेग

છે કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મ ક થાના ત્રીજા વર્ગના ૫૪ ચોપનઅધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તો તેઓમાથી હે ભદ ત ! તે જ યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ પ્રશ્નના સમાધાનમા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે (એવ ખલુ જબૂ !) હે જબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે

(तेण कालेण तेण समएण अलादेवी धरणाए रायहाणीए अलावडसए भवणे अलसि सीहासणसि एव काली गमएण जाव णट्ठविहिं उवदसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी, काममहावणे चेइए, अल गाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारिया सेस जहा कालीए णवर धरणस्स उव-

एव यावत् घोषस्यापि=घोषेन्द्रस्यापि, एतान्येव षड् अध्ययनानि सन्ति। एवमे तानि दाक्षिणात्यानामिन्द्राणा चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि भवन्ति। सर्वा अपि पूर्वोक्तादेव्य पूर्वभवे वाणारस्या जाताः काममहावने चैत्ये भगवतः पार्श्वस्यार्हतः समीपे प्रव्रजिताः, तृतीयवर्गस्य निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यप्रबन्धो विज्ञेयः॥ सू०८।

॥ इति धर्मकथाना तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो वर्ग प्रारभ्यते-' चउत्थस्स ' इत्यादि।

मूलम्-चउत्थस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ एव खलु जबू ! तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेण समएणं रूया देवी रूयाणदा रायहाणी रूयगवडिसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया सेस तहेव, णवर भूयाणदअग्गमहिसि-

---

वर्णन भी धरणेन्द्र के वर्णन जैसा ही है। घोषेन्द्रके भी ये ही ६ अध्ययन इसी तरह के हैं। इस तरह दक्षिण दिशा सबन्धी इन्द्रों के० ५४ अध्ययन हो जाते हैं। ये सब देवियां पूर्वभवमें वाणारसी में उत्पन्न हुईं और काममहावन उद्यानमे भगवान् पार्श्वनाथ अर्हत प्रभुके समीप दीक्षित हुईं। इस तरहसे वर्मकथाका यह "तृतीय वर्ग समाप्त हुआ है।"

વર્ણન જેવુ જ છે ધોષેન્દ્રના પણ આ જાતના જ ૬ અધ્યયનો છે આ પ્રમાણે દક્ષિણ દિશા સબધી ઇન્દ્રોના ૫૪ અધ્યયનો થઈ જાય છે આ બધી દેવીઓ પૂર્વભવમા વાણારસીમા ઉત્પન્ન થઈ હતી અને કામમહાવન ઉદ્યાનમા ભગવાન પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ આ પ્રમાણે ધર્મકથાનો આ ત્રીજો વર્ગ પૂરો થયો છે

साधिकम् अर्द्धपल्योपम स्थिति । शेष तथैव। एव खलु निक्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य। एव क्रमात् शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युदपि ६। सर्वा एता धरणस्य=धरणेन्द्रस्य अग्रमहिष्य एव । एतानि षड् अध्ययनानि वेणुदेवस्यापि । ' अविसेसिया ' अविशेषितानि=निर्विशेषाणि सदृशानि भणितव्यानि ।

જૈસા કથાનક પીછે વર્ણિત કિયા જા ચુકા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે। ઉસકે વર્ણન મેં ઔર ઇસકે વર્ણન મેં કેવલ અન્તર ઇતના હી હૈ કિ યહ ધરણેન્દ્ર કી અગ્રમહિષી કે રૂપ મેં ઉત્પન્ન હુઈ ઔર ઇસકી સ્થિતિ ૧॥ પલ્ય સે કુછ અધિક હૈ। શેષ કી કા ઇસકા વૃત્તાન્ત કાલીદેવી કે જૈસા હી હૈ। ઇસ તરહ યહ દ્વિતીયવર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા નિક્ષેપક-ઉપસંહાર-હૈ।-(एव कमा सक्का, सतेरा, सोयामणी, इंदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ, एव, एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाण इंदाण-चउप्पण्ण अज्झयणा भवति, सव्वओ वि वाणारसीए कामम्हावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ८ ॥

(तइओ वग्गो समत्तो) ઇસી ક્રમ સે શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદામની ૪, ઇન્દ્રા ૫, ઘનવિદ્યુત્ ૬, યે સબ દેવિયા ધરણેન્દ્ર કી હી અગ્ર મહિષિયા થીં। ઇસ તરહ કે ૬ અધ્યયન વેણુદેવ કે ભી હૈં। ઔર ઇનકા

વર્ણવેલા કાલી દેવીના કથાનકની જેમજ સમજી લેવુ જોઇએ તેના અને આના વર્ણનમા તફાવત ફક્ત એટલો જ છે કે આ ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષીના રૂપમા ઉત્પન્ન થઇ અને આની સ્થિતિ ૧॥ પલ્ય કરતા કઇક વધારે છે આનુ બાકીનુ વર્ણન કાલી દેવી જેવુ જ છે આ પ્રમાણે આ બીજા વર્ગના પહેલા અધ્યયનનો નિક્ષેપક ઉપસંહાર છે

(एव कमा सक्का सतेरा, सोयामणी, इंदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स, अग्गमहिसीओ एव एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाण इंदाण-चउप्पण्ण अज्झयणा भवति, सव्वाओ वि वाणारसीए काम महावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ॥ ८ ॥ तइओ वग्गो समत्तो)

આ અનુક્રમ પ્રમાણે જ શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદામની ૪, ઇન્દ્રા ૫, ઘનવિદ્યુત ૬, આ બધી દેવીઓ ધરણેન્દ્રની જ અગ્રમહિષીઓ હતી આ પ્રમાણે જ ૬ અધ્યયનો વેણુ દેવીના પણ છે અને એમનુ વર્ણન ધરણેન્દ્રના

वसरण=भगवतः श्री महावीरस्वामिन. समागमन सजात, यावत् परिषद् भगवन्त पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूप कावतसके भवने रूपके सिंहासने यथा कालयाः=कालीदेव्या वर्णनं तथा=तद्वत्

समणे रायगिहे समोसरणे जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रूया देवी, रूयाणदा रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जबू! उत्क्षेपक इस प्रकार है-उसकाल में और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ। परिषद प्रभु को वदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहा प्रभु विराजमान थे वहां आई। प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया। यावत् सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में भूतानद इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को वदना के लिये

(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रूयादेवी, रूयाणदा, रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूपगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूपया वि, रूयसावि, रूयगाहावई, वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

હે જબૂ! પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ પ્રભુને વદના કરવા માટે પરિષદ પોતપોતાને સ્થાનેથા નીકળીને જ્યા પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યા આવી, પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો યાવત્ સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે ભૂતાનદ ઈન્દ્રની અગ્રદેવી (પટરાણી) જેનુ નામ રૂપા દેવી હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી તેના રહેવાના ભવનનુ

त्ताए उवघाओ देसूणं पालिओवम ठिई णिक्खेवओ एव सुरू-यावि रूयसावि रूयगावईवि रूयकतावि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स, णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ सू० ९ ॥

॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥ ४ ॥

टीका—' चउत्थस्स-चतुर्थवर्गस्य ' उक्खेवओ ' उत्क्षेपक =प्रारम्भवाक्य पाठोऽत्रवाच्य । सुधर्मस्वामी प्राह-एव खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथाना चतुर्थवर्गस्य चतुष्पञ्चाशत् अ ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा प्रथम मध्ययन यावत्-चतुष्पञ्चाशत्तमम ययनम् । तेषु प्रथमस्या ययनस्य उत्क्षेपक. । सुधर्मस्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन समये राजगृहे सम

-:चतुर्थ वर्ग प्रारभः-

' चउत्थस्स उवक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थ.—(चउत्थस्स उवक्खेवओ) चतुर्थ वर्ग का प्रारभ किस तरह से हुआ है-इस प्रकार-जम्बूस्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि (एव खलु जबू) हे जबू ! सुनो-(समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण चउत्थवग्गस्स चउप्पण्ण अज्झयणा पण्णत्ता त जहा पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णाइमे अज्झयणे) यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथा के चतुर्थ वर्ग के ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये है-वे प्रथम अध्ययन से लेकर ५४ वें अध्ययन तक हैं-(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण

ચોથો વર્ગ પ્રારભ

' चउत्थस्स उवक्खेवओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(चउत्थस्स उवक्खेवओ) ચોથા વર્ગની શરૂઆત કેવી રીતે થઇ છે ? આ જાતનો જબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે (एव खलु जबू) હે જબૂ ! સાભળો,

(समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण चउत्थवग्गस्स चउप्पण्ण अज्झयणा पण्णत्ता त जहा पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे)

યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મ કથાના ચોથા વર્ગના ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે તેઓ પહેલા અધ્યયનથી માડીને ૫૪ મા અધ્યયન સુધી છે

वसरण=भगवतः श्री महावीरस्वामिनः समागमन सजात, यावत् परिषद् भगवन्त पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूप कावतसके भवने रूपके सिंहासने यथा कालयाः=कालीदेव्या वर्णन तथा=तद्वत्

समणं रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएणं रूया देवी, रूयाणंदा रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जबू! उत्क्षेपक इस प्रकार है-उसकाल में और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ। परिषद प्रभु को वदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहा प्रभु विराजमान थे वहां आई। प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया। यावत् सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में भूतानद इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को वदना के लिये

(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण रूयादेवी, रूयाणदा, रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूपगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूण पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई, वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

હે જબૂ! પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ પ્રભુને વદના કરવા માટે પરિષદ પોતપોતાને સ્થાનેથા નીકળીને જના પ્રભુ વિરાજમાન હુતા ત્યા આવી, પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો યાવત્ સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ભૂતાનદ ઈન્દ્રની અગ્રદેવી (પટરાણી) જેનુ

રૂપા દેવી હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી તેના રહેવાના ભવનનુ

रूपादेव्या अपि विज्ञेयम्, नवर=विशेषोऽयम्-पूर्णभद्रे चम्पायां नगर्यां पूर्णभद्र चैत्यम्, रूपको गाथापतिः, रूपश्रीर्भार्या, रूपाद्वारिका, शेषं तथैव नवरं भूतानन्दाग्रमहिषीतया तस्या उपपातः जन्म। देशोन पल्योपम स्थितिः। निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यरूपः प्रबन्धोऽत्र विज्ञेयः। एव सुरूपाऽपि २, रूपाशाऽपि ३, रूपकावत्यपि ४, रूपकान्ताऽपि ५, रूपप्रभापि ६। एताश्चैव उत्तरीयाणामिन्द्राणां

आई। इसके रहने के भवन का नाम रूपकावतसक था। और जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम रूपक था। पीछे जिस प्रकार का वर्णन कालीदेवी का किया गया है-उसी प्रकार का इनका भी वर्णन जानना चाहिये। उसके पूर्वभव का वर्णन इस प्रकार है-यह पूर्वभव में चपा नामकी नगरी में कि जिसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था और रूपक गाथापति जिस में रहता था उस गाथापति की यह रूपश्री भार्या से "रूपा दारिका" इस नाम से पुत्री उत्पन्न हुई थी। बाद में प्रभु का उपदेश सुनकर यह प्रतिबोध को प्राप्त हो गई और कालीदेवी की तरह यह आर्या बन गई इसके आगे जिस तरह का काली देवी का वृत्तान्त बना इसी तरह से इसका भी जानना चाहिये। जब यह काल अवसर काल कर गई तब यह भूतानद इन्द्र की अग्रमहिषीरूप से उत्पन्न हुई। वहां इसकी कुछकम १, पल्य की स्थिति है। इस प्रकार रूपा देवी के कथानक का यह निक्षेपक है। इसी तरह से (२) सुरूपा (३) रूपाशा (४) रूपकावती (५) रूपकान्ता और ६ रूपप्रभा का भी वर्णन जानना

નામ રૂપકાવતસક હતુ અને જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનુ નામ રૂપક હતુ જેમ પહેલા કાલી દેવીનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેમજ આનુ વર્ણન પણ સમજી લેવુ જોઈએ તેના પૂર્વભવનુ વર્ણન આ પ્રમાણે છે— આ પૂર્વભવમા ચપા નામની નગરીમા-કે જેમા પૂર્ણભદ્રા નામે ઉદ્યાન હતુ અને રૂપક ગાથાપતિ જેમા રહેતો હતો તે ગાથાપતિની આ રૂપશ્રી ભાર્યાથી 'રૂપાદારિકા' આ નામથી પુત્રી રૂપે ઉત્પન્ન થઈ હતી ત્યારપછી પ્રભુનો ઉપદેશ સાભળીને એ બોધને પ્રાપ્ત થઈ અને કાલી દેવીની જેમ આર્યા થઈ ગઇ એના પછીની વિગત કાલી દેવીની હતી તેવી જ એની પણ સમજી લેવી જોઈએ જ્યારે તેણે કાળ અવસરે કાળ કર્યો ત્યારે આ ભૂતાનદ ઇન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) ના રૂપમા ઉત્પ ન થઇ ત્યા તેની થોડી ઓછી એક પલ્યની સ્થિતિ છે આ પ્રમાણે રૂપાદેવીના કથાનકનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ (૨) સુરૂપા, (૩) રૂપાશા, (૪) રૂપકાવતી, (૫) રૂ અને

भणितव्या'=अग्रमहिष्यो वक्तव्या यावत् महाघोषस्य । महाघोषेन्द्रस्य । निक्षेप-कश्चतुर्थवर्गस्य ॥ सू०९ ॥

॥ इति धर्मकथाना चतुर्थो वर्ग समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः प्रारभ्यते-पचमवग्गस्स ' इत्यादि ।

मूलम्-पंचमवग्गस्स उक्खेवओ, एव खलु जव्व ! जाव वत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तजहा-कमला१ कमलप्पभा२ चेव, उप्पला३ य सुदसणा४। रूववई५ वहुरूवा६, सुरूवा७ सुभगावियं८ ॥ १ ॥ पुण्णा९ वहुपुत्तिया१० चेव, उत्तमा११ तारयावियं१२। पउमा१३ वसुमती१४ चेव, कणगा१५ कण-गप्पभा१६ ॥२॥ वडेसा१७ केउमई१८ चेव, वइरसेणा१९ रइप्पिया२० । रोहिणी२१ नवमिया२२ चेव, हिरी२३ पुप्फ-वईइय २४ ॥३॥ भुयगा२५ भुयगवई२६ चेव, महाकच्छाँ-ऽपराइया२८। सुघोसा२९ विमला३० चेव, सुस्सरा३१ य सर-सवईं३२ ॥४॥ उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एव खलु जवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण कमलादेवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलसि सीहासणसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसव

चाहिये। ये देविया भूतानद इन्द्र की तरह उत्तरीय इन्द्रो की भी अग्र-महिषिया है। और ये ही महाघोषेन्द्र की भी हैं। इस प्रकार यह चतुर्थ वर्ग का निक्षेपक (स्वरूप) है।

॥ चतुर्थवर्ग समाप्त ॥

(૬) રૂપપ્રભાનુ વર્ણન પણ સમજી લેવુ જોઇએ આ બધી દેવીઓ ભૂતાનદ ઈન્દ્રની જેમ ઉત્તરીય ઈન્દ્રોની પણ અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) છે અને મહાઘોષેન્દ્રની પણ તેઓજ પટરાણીઓ છે આ પ્રમાણે આ ચોથા વર્ગનો નિક્ષેપક છે

ચોથો વર્ગ સમાપ્ત

उत्क्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य । जम्बूस्वामिना पृष्टे सुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे 'समोसरण' समवसरण=मग

३१, सरस्वती ३२,। (उक्खेवओ पढमज्झयणस्स एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं कमला देवी, कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पाससं०अतिए निक्खता कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं) इसके बाद जम्बूस्वामी ने श्री सुधर्मास्वामी से पूछा कि इनमें से कमला नामका जो प्रथम अध्ययन है उसका उत्क्षेपक किस तरह से है-इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर उनसे सुधर्मास्वामी ने कहा-कि हे जम्बू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल में और उस समय में राजगृह नामका नगर था। उसमें भगवान् महावीर का आगमन हुआ। यावत् वहां की परिषद् प्रभु को वंदना करने के लिये आई।

(उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसापज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पाससं० अंतिए निक्खता कालस्स पिसाय कुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमंठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे मायापिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं)

ત્યારપછી જંબૂ સ્વામીએ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યું કે આ બધામાં કમલા નામે જે પહેલું અધ્યયન છે તેનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ તેમને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે હે જંબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું યાવત્ નગરની પરિષદ તેમને વંદના કરવા માટે આવી પ્રભુએ સૌને

न् महावीरस्वामी समागमन सजात, यावत् परिषद् भगवन्त पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये कमला देवी कमलाया राजधान्यां, कमलावतसके भवने कमले सिंहासने, शेष यथा-काल्या.=कालीदेव्या वर्णन तथैवाऽस्या अपि, नवर= विशेषोऽयम्-पूर्वभवे नागपुर नगर, सहस्राम्रवनमुद्यानम्, कमलस्य गाथापतेः कमलश्रियो भार्यायाः कमला दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्य अन्तिके 'निक्खता' निष्क्रान्ता=प्रव्रजिता, कालस्य पिशाचकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषी। अर्द्धपल्योपम स्थितिः। एव शेषाण्यपि कमलप्रभादिनामकान्यपि एकत्रिंशद् अध्य-

प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। परिषद ने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय मे कमला नाम की देवी, कमला राजधानी मे कमलावतसक भवन में रहती थी। उस के सिंहासन का नाम कमला था। इसके आगे का समस्त वर्णन कालीदेवी के वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। परन्तु इसमे जो विशेषता है वह इस प्रकार है-जब गौतमस्वामी ने उसके-अर्थात् देवी के चले जाने के बाद उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा-तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-पूर्वभव के इसके नगर का नाम नागपुर था-उसमे सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था। उस नगर में कमल नामका गाथापति रहता था।-उसकी भार्या का नाम कमला श्री था। इनके एक पुत्री थी जिस का नाम कमला था। वह काललब्धि के आनेपर पुरुषादानीय-पुरुष श्रेष्ठ-पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु के समीप प्रव्रजित हो गई। बाद में मरने पर वह काल नाम के पिशाच कुमारेन्द्र की अग्रमहिषी बनी। वहा इसकी स्थिति अर्धपल्य की है।

ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો પરિષદે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે કમલા નામની દેવી, કમલા રાજધાનીમા કમલાવતસકે ભવનમા રહેતી હતી તેના સિંહાસનનુ નામ કમલા હતુ એના પછીનુ બધુ વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ જ સમજી લેવુ જોઇએ પરતુ આમા જે કઈ વિશેષતા છે તે એ પ્રમાણે છે-કે જ્યારે ગૌતમ સ્વામીએ દેવીના ગયા પછી તેના પૂર્વ ભવ વિષેની વિગત પૂછી ત્યારે પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે આના પૂર્વ ભવના નગરનુ નામ નાગપુર હતુ તેમા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતુ તે નગરમા કમલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ કમલાશ્રી હતુ એમને એક દિકરી હતી તેનુ નામ કમલા હતુ, તે યોગ્ય કાળલબ્ધિના અવ સરે પુરુષાદાનીય-પુરુષ શ્રેષ્ઠ-પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ગઇ ત્યારપછી મૃત્યુ થયા બાદ તે કાલ નામના પિશાચ કુમારેન્દ્રની અગ્ર

यानानि दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तरेन्द्राणामग्रमहिषीणा भणितव्यानि । सर्वाश्चैताः पूर्वभवे नागपुरे नगरे समाताः, सहस्राम्रवने उद्याने भगवत्पार्श्वमभोः समीपे प्रव्रजिताः । मातापिता दुहिता सदृशनामकः । आसा स्थितिरर्द्धपल्योपमम् ॥सू० १०॥

॥ इति धर्मकथानां पञ्चमो वर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

मूलम्–छट्ठोवि वग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकालादीणं उत्तरिल्लाणं इदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरु उज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ॥ सू० ११ ॥

॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ॥ ६ ॥

बाकी जो २१, कमलप्रभा नामके अध्ययन हैं वे दक्षिण दिशा सबन्धी वानव्यतरेन्द्रों की अग्रमहिषियों के हैं ऐसा जानना चाहिये। ये सब ही पूर्वभव में नागपुर नगर में उत्पन्न हुई-और सहस्राम्रवन नामके उद्यान में भगवान् पार्श्वनाथ के समीप प्रव्रजित हुई । इन अध्ययनों में माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कमलप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है-इसी तरह से और अध्ययनों में भी जानना चाहिये। इन सब देवियों की स्थिति अर्धपल्य की है ॥सू१०।

-:पचमवर्ग समाप्त:-

મહિષી (પટરાણી) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે શેષ જે ૩૧ કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની અગ્રમહીષીઓ (પટરાણીઓ) ના સમજવા જોઈએ આ બધી પૂર્વભવમા નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમા ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવજિત થઈ ગઈ આ બધા અધ્યયનોમા માતાપિતા તેમજ પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યય નમા માતાનુ નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનુ નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનુ નામ કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવુ જોઈએ આ બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાચમો વર્ગ સમાપ્ત

टीका—' छट्ठोवि ' इत्यादि षष्ठोऽपि वर्ग. पञ्चमवर्गसदृशः । नवरम्–एतावान् विशेष –अत्र महाकालादीनाम् उत्तरीयाणामिन्द्राणामग्रमहिष्य' । एताः सर्वाः पूर्वभवे साकेतनगरे उत्तरकुरूद्याने पार्श्वप्रभुसमीपे प्रव्रजिताः मातरः पितरो दुहितरः सदृशनामकाः । शेष तदेव सर्वं वाच्यम् ॥ सू० ११ ॥

इति धर्मकथाना षष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

–:षष्ठवर्ग प्रारंभः–

' छट्ठो वि वग्गो पचमवग्गसरिसो ' इत्यादि ।

टीकार्थ —(छट्ठो वि वग्गो पचमवग्गसरिसो, णवर महाकालादीण उत्तरिल्लाण इदाण अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरुउज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेस त चेव ११) छठा वर्ग भी पचमवर्ग के जैसे ही है । परन्तु इसमें जो उसकी अपेक्षा विशेषता है –वह इस प्रकार है–इस अध्ययन में उत्तर दिशा के इन्द्र महाकाल आदिकों की अग्रमहिषियों का वर्णन है । ये सब अग्रमहिषिया पूर्वभव में साकेत नगर (अयोध्या) में उत्तर कुरु नामके उद्यान मे पार्श्वप्रभु के समीप प्रव्रजित हुई हैं । माता पिता एव पुत्रिया ये सब एक जैसा नामवाले हैं । बाकी का इनके विषय का समस्त कथन कालीदेवी के वर्णन जैसा जानना चाहिये ।

–:षष्ठवर्ग समाप्तः–

છઠ્ઠો વર્ગ પ્રારભ —

' छट्ठो वि वग्गो पचम वग्गसरिसा ' इत्यादि—

(छट्ठो विवग्गो पचमवग्गसरिसो, णवर महाकालादीण उत्तरिल्लाण इदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेय नयरे उत्तरकुरु उज्जाणे मायापिया धूया सरिसणामया सेस त चेव ११)

છઠ્ઠો વર્ગ પણ પાચમા વર્ગના જેવો જ છે પરતુ આમા જે તેના કરતા વિશેષતા છે, તે એ પ્રમાણે છે કે આ અધ્યયનમા ઉત્તર દિશાના ઈન્દ્ર મહાકાલ વગેરેની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) નુ વર્ણન છે આ બધી અગ્રમહિષીઓ પૂર્વભવમા સાકેત નગરમા ઉત્તરકુરૂ નામના ઉદ્યાનમા પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે માતાપિતા અને પુત્રીઓ બધા એક સરખા નામવાળા છે એમના વિષેનુ બાકીનુ બધુ કથન કાલી દેવીના વર્ણન જેવુ જાણવું જોઇએ

છઠ્ઠો વર્ગ સમાપ્ત,

यनानि दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तरेन्द्राणामग्रमहिषीणां भणितव्यानि । सर्वाश्चैता पूर्वभवे नागपुरे नगरे संजाताः, सहस्राम्रवने उद्याने भगवत्पार्श्वसमीपे प्रव्रजिताः । मातापिता दुहिता सदृशनामकाः । आसा स्थितिरर्द्धपल्योपमम् ॥सू० १०॥

॥ इति धर्मकथानां पञ्चमो वर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

मूलम्–छट्ठोवि वग्गो पचमवग्गसरिसो, णवरं महाकालादीणं उत्तरिल्लाणं इदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरु उज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ॥ सू० ११ ॥

॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ॥ ६ ॥

बाकी जो ३१, कमलप्रभा नामके अध्ययन हैं वे दक्षिण दिशा सबन्धी वानव्यतरेन्द्रों की अग्रमहिषियों के हैं ऐसा जानना चाहिये। ये सब ही पूर्वभव में नागपुर नगर में उत्पन्न हुई–और सहस्राम्रवन नामके उद्यान में भगवान् पार्श्वनाथ के समीप प्रव्रजित हुई । इन अध्ययनों में माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कमलप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है–इसी तरह से और अध्ययनों में भी जानना चाहिये। इन सब देवियों की स्थिति अर्धपल्य की है ॥सू१०।

–:पचमवर्ग समाप्तः–

મહિષી (પટરાણી) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે શેષ જે ૩૧ કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની અગ્રમહીષીઓ (પટરાણીઓ) ના સમજવા જોઈએ આ બધી પૂર્વભવમા નાગપુર નગરમા ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમા ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ગઇ આ બધા અધ્યયનોમા માતાપિતા તેમજ પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યયનમા માતાનુ નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનુ નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનુ નામ કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ આ બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાચમો વર્ગ સમાપ્ત

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिर्मालि' ३, प्रभङ्करा ४ । प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीमाह-एव खलु हे जम्बू' ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राज गृहे समवसरणम्=भगवद्वर्धमानस्वामिसमागमनम् यावत् परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं -(त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जब्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण सूरप्पभा देवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार है सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्करा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जब्बू ! इस प्रकार है- उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर मे भगवान वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था-प्रभु का आगमन सुनकर वहा की परिषद् उनको वदना करने के लिये उनके समीप गई-प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी-और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वदना करने के लिये आई। इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण सूरप्पभादेवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा)

તે ચાર અધ્યયનો આ પ્રમાણે છે –સૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભડકરા ૪, હે જબૂ! આ બધામા પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામના નગરમા ભગવાન વર્ધમાન સ્વામીનુ આગમન થયું પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યાની પરિષદ તેમને વદના કરવા માટે તેમની પાસે ગઇ પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે સૂરપ્રભા નામની એક દેવી-જે સૂર વિમાનમા રહેતી હતી અને સૂરપ્રભ સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-પ્રભુની વદના કરવા માટે આવી. એના પછીનું'

अथ सप्तमो वर्गः प्रारभ्यते-' सत्तमस्से ' त्यादि ।

मूलम्-सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-सूरप्पभा आयवा अच्चिमाली पभकरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एव खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेण समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए तहाणवर पुव्वभवे अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहाव इस्स सूरसिरीए भारियाए सुरप्पभा दारिया सूरस्स अग्ग-महिसी ठिई अद्धपलिओवम पचहि वाससएहिं अब्भहिय सेसं जहा कालीए, एव सेसाओवि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए ॥ सू० १२ ॥ ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ ७ ॥

टीका—' सत्तमस्से ' ति-सप्तमस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीकथयति-एव खलु हे जम्बूः ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि

-:सप्तमवर्ग प्रारभः-

' सत्तमस्सवग्गस्स उक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थः—(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदत ! सातवें वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार है ? इस जबूस्वामी के प्रश्न करने पर गौतमस्वामी उनसे कहते हैं-कि हे जबू ! सुनो, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण

સાતમો વર્ગ પ્રારભ—

' सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) હે ભદન્ત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીને છે ?

જબૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्करा ४। प्रथमा यथनस्योत्क्षेपकः। सुधर्मस्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू! तस्मिन काले तस्मिन् समये राज गृहे समवसरणम्=भगवद्धर्मानस्वामिसमागमनम् यावत् परिषत् पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं -(त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण सूरप्पभा देवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार है सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्करा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जबू! इस प्रकार है-उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था-प्रभु का आगमन सुनकर वहा की परिषद् उनको वदना करने के लिये उनके समीप गई-प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी-और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वदना करने के लिये आई। इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(तं जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण सूरप्पभादेवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा)

તે ચાર અધ્યયનો આ પ્રમાણે છે-સૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભડકરા ૪, હે જબૂ! આ બધામા પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામના નગરમા ભગવાન વર્ધમાન સ્વામીનુ આગમન થયુ પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યાની પરિષદ તેમને વદના કરવા માટે તેમની પાસે ગઇ પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે સૂરપ્રભા નામની એક દેવી-જે સૂર વિમાનમા રહેતી હતી અને સૂરપ્રભ સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-પ્રભુની વદના કરવા માટે આવી એના પછીનું

अथ सप्तमो वर्गः प्रारभ्यते-' सत्तमस्से ' त्यादि ।

मूलम्-सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-सूरप्पभा आयवा अच्चिमाली पभकरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एव खलु जब ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेण समएणं सूरप्पभा देवी सूरसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए तहाणवर पुव्वभवे अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहाव इस्स सूरसिरीए भारियाए सुरप्पभा दारिया सूरस्स अग्ग-महिसी ठिई अद्धपलिओवम पचहि वाससएहि अब्भहिय सेसं जहा कालीए, एव सेसाओवि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए ॥ सू० १२ ॥ ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ ७ ॥

टीका—' सत्तमस्से ' ति-सप्तमस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामी कथयति-एव खलु हे जम्बूः ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि

-:सप्तमवर्ग प्रारभः-

' सत्तमस्सवग्गस्स उक्खेवओ ? इत्यादि ।

टीकार्थः—(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदत ! सातवें वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार है ? इस जबूस्वामी के प्रश्न करने पर गौतमस्वामी उनसे कहते हैं-कि हे जबू ! सुनो, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण

સાતમો વર્ગ પ્રારભ—

' सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) હે ભદન્ત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

જબૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે, કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા

अथाष्टमो वर्गः प्रारभ्यते–' अट्ठमस्से ' त्यादि ।

मूलम्–अट्ठमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा–चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चदप्पभंसि विमाणंसि चदप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चंदासिरी भारिया चंदप्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा ॥ सू० १३ ॥ अट्ठमो वग्गो समत्तो ॥ ८ ॥

टीका—' अट्ठमस्से ति–अष्टमस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामी प्राह–एव खलु हे जम्बू ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि यथा–चन्द्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्करा ४ । प्रथमस्याध्ययनस्योत्क्षेपक । एव

–:अष्टमवर्ग प्रारभ–:

' अट्ठमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थ—'(अट्ठमस्स उक्खेवओ–एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता त–जहा–चदप्पभा,दोसिणाभा, अचिमाली, पभकरा,

આઠમો વર્ગ પ્રારભ

' अट्ठमस्स उक्खेवओ , इत्यादि—

'(अट्ठमस्स उक्खेवओ–एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा–चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खे-

यथा काल्या'=काली देव्या वर्णन तथा विज्ञेयम् , नवरम्=अय विशेषः=पूर्वभवे अरक्षुर्यां नगर्यां सूरप्रभस्य गाथापतेः, सूरश्रियो भार्यायाः सूरप्रभा दारिका, सूरस्य अग्रमहिषी स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चभिर्वर्षशतैरभ्यधिकम्। शेष यथा काल्या । एव शेषा अपि=आतपादिकाः देव्यो ज्ञान्या । सर्वा पूर्वभवे अरक्षुर्यां नगर्यामासन् ॥ सू० १२ ॥

॥ इति धर्मकथाना सप्तमो वर्गः समाप्तः ॥ ७ ॥

का वृत्तान्त लिखा जा चुका है-वैसा ही है। उसमें कुछ अन्तर नहीं है (णवर) परन्तु जिन बातों में अन्तर है-वह इस प्रकार है-(पुव्वभवे) यह पूर्वभव में (अरक्खुरीए णयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवम पचहिं वाससएहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए १२) अरक्षुर नामकी नगरी में निवास करनेवाले सूरप्रभा गाथापति की सूर श्री भार्या की कुक्षि से अवतरी थी। इसका नाम सूरप्रभा था। यह सूर की अग्रमहिषी हुई। इसकी वहा पांचसौ वर्ष से अधिक अर्धपल्य की स्थिति है। और इसका इस अवस्था का समस्त वर्णन काली समान ही है। इसी तरह का आतपाआदिक ३ देवियों का भी जीवन वृत्तान्त है। ये ३ तीनों ही देवियां अपने २पूर्व भव में अरक्षुर नगरी में जन्मी थी॥ सू०१२ ॥

-सप्तमवर्ग समाप्तः-

આનુ વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ, તેમા કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી (णवरं) પરતુ જે વાતમા તફાવત છે, તે આ પ્રમાણે છે (पुव्वभवे) આ પૂર્વભવમા

(अरक्खुरीए णयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवम पचहिं वाससएहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए, एव सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए १२)

અરક્ષુરી નામની નગરીમા રહેનારી સૂરપ્રભા ગાથાપતિની સૂરશ્રીભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામી હતી, તેનુ નામ સૂરજપ્રભા હતુ તે સૂરની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ તેની ત્યા પાચસો વર્ષ કરતા વધારે અર્ધપલ્યની સ્થિતિ છે તેનુ આ અવસ્થા વિષેનુ બધુ વર્ણન કાલીના જેવુ જ છે એ પ્રમાણે જ આતપા વગેરે ૩ દેવીઓનુ પણ જીવનવૃત્તાત છે આ ત્રણે દેવીઓ પોત પોતાના પૂર્વભવમા અરક્ષુર નગરમા જન્મ પામી હતી ॥સૂ०१२॥

સાતમો વર્ગ સમાપ્ત

विज्ञेयम्, नवर=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे मथुरायां नगर्यां भण्डीरावतसकमुद्यानम्, चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीर्भार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चाशद्भिर्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम्। शेष यथा कालयाः। एव

चद्रप्रभ विमान मे रहती थी और चद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी-श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने एव उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई-। इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नही है। जहां अन्तर है-उसका खुलासा इस प्रकार है-पूर्वभव मे यह मथुरा नगरी में जन्मी थी। वहा भडीरावतसक उद्यान था। उस नगरी में चद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चद्रश्री था। उनके यहा यह चद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रमहिषी बनी। (ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपल्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियो के सबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये हैं-वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવુ જ છે તેમા કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી જ્યા તફાવત છે-તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતસક ઉદ્યાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નાભા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબધને લગતુ જે અધ્યયનો કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજી લેવા જોઇએ

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे श्रीमहावीरस्वामिनः समव सरण, यावत्-परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन समये चन्द्रप्रभा देवी चन्द्रप्रभे विमाने चन्द्रप्रभे सिंहासने शेष यथा कालिकायाः=कालीदेव्या वर्णनं तद्वद्

पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जब्बू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरण-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण चदप्पभादेवी चदप्पभंसि विमाणंसि चदप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भडीरवडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चदसिरी भारिया चदप्पभा दारिया) हे भदत ! आठवें वर्ग का उत्क्षेपक कैसा है ? इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा-स्वामी ने उनसे कहा-हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के चार अध्ययन प्रज्ञप्त किये है -वे इस प्रकार से हैं-चद्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्माली ३, प्रभ-करा ४,। इनमे हे जम्बू ! प्रथम चन्द्रप्रभा अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार से है-उस काल मे और उस समय में राजगृह नामके नगर में श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ था-। उनसे धर्म का उपदेश प्राप्त करने के लिये वहा की समस्त धार्मिक जनता उनके पास आई थी प्रभु ने सब के लिये धर्म का उपदेश सुनाया-सुनाकर सबो ने उनकी यावत् पर्युपासना की। उस काल और उस समय में चन्द्रप्रभा देवी जो कि

वओ-एव खलु जम्बू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरण-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण चदप्पभादेवी चदप्पभंसि विमाणंसि चदप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भडीरवडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चदसिरी भारिया चदप्पभा दारिया)

હે ભદન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જબૂ ! સાભળો તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે-ચદ્રપ્રભા ૧ જ્યોત્સ્નાભા ૨, આર્ચિમાલી ૩, પ્રભકરા ૪ હે જબૂ ! આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમા શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાભળવા માટે ત્યાની બધી ધાર્મિક જનતા ગ્યા આવી પ્રભુએ ધમનો ઉપદેશ સભળાવ્યો સાભળીને બધાએ તેમની યાવત્ પયુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચદ્રપ્રભા દેવી-કે [illegible] દપ્રભ

विज्ञेयम्, नवर=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे मथुरायां नगर्यां भण्डीरावतसकमुद्यानम्, चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीर्भार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चाशद्भिर्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम्। शेष यथा कालायाः। एव

चद्रप्रभ विमान मे रहती थी और चद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी-श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने एव उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई-। इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नही है। जहा अन्तर है-उसका खुलासा इस प्रकार है-पूर्वभव मे यह मथुरा नगरी में जन्मी थी। वहा भडीरावतसक उद्यान था। उस नगरी में चद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चद्रश्री था। उनके यहा यह चद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रमहिषी बनी। (ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपल्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियो के सबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये हैं-वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવુ જ છે તેમા કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી જયા તફાવત છે-તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતસક ઉદ્યાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નાભા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબધને લઇને જે અધ્યયનો કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજી લેવા જોઇએ

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे श्रीमहावीरस्वामिनः समव सरण, यावत्-परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन समये चन्द्रप्रभा देवी चन्द्रप्रभे विमाने चन्द्रप्रभे सिंहासने शेष यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णन तद्वत्

पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण चदप्पभादेवी चदप्पभंसि विमाणंसि चदप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भडीरवडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चदसिरी भारिया चदप्पभा दारिया) हे भदत ! आठवें वर्ग का उत्क्षेपक कैसा है ? इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा-स्वामी ने उनसे कहा-हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के चार अध्ययन प्रज्ञप्त किये है -वे इस प्रकार से हैं-चद्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्मालो ३, प्रभ-करा ४, । इनमे हे जम्बू ! प्रथम चन्द्रप्रभा अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार से है-उस काल मे और उस समय में राजगृह नामके नगर में श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ था-। उनसे धर्म का उपदेश प्राप्त करने के लिये वहा की समस्त धार्मिक जनता उनके पास आई थी प्रभु ने सब के लिये धर्म का उपदेश सुनाया-सुनाकर सबो ने उनकी यावत् पर्युपासना की। उस काल और उस समय में चन्द्रप्रभा देवी जो कि

वओ-एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण चदप्पभादेवी चदप्पभंसि विमाणंसि चदप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भडीरवडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चदसिरी भारिया चदप्पभा दारिया)

હે ભદન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યુ કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે-ચદ્રપ્રભા ૧ જ્યોત્સ્નાભા ૨, આર્ચિમાલી ૩, પ્રભકરા ૪ હે જબૂ ! આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાભળવા માટે ત્યાની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યા આવી પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સભળાવ્યો સાંભળીને બધાએ તેમની યાવત્ પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચદ્રપ્રભા દેવી-કે જે ચદ્રપ્રભ

विनेयम्, नवर=विशेषस्तत्रयम्-पूर्वभवे मथुरायां नगर्यां भण्डीरावतसकमुद्यानम्, चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीर्भार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चाशद्भिर्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम्। शेष यथा कालयाः। एव

चद्रप्रभ विमान में रहती थी और चद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी-श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने एव उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई-। इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नही है। जहा अन्तर है-उसका खुलासा इस प्रकार है-पूर्वभव मे यह मथुरा नगरी में जन्मी थी। वहां भडीरावतसक उद्यान था। उस नगरी में चद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चद्रश्री था। उनके यहा यह चद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रमहिषी बनी। (ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपल्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियो के सबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये हैं-वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવુ જ છે તેમા કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી જ્યાં તફાવત છે-તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતસક ઉદ્યાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નાભા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબધને

शेषाः=ज्योत्स्नाभादि देव्योऽपि विज्ञेया । सर्वाः पूर्वभवे मथुरायां नगर्यां जाताः, पार्श्वप्रभुसमीपे च प्रव्रजिता । मातापितरोऽपि दुहितृसदृशनामानः ॥सू०१३॥

इति धर्मकथानामाष्टमो वर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमो वर्गः प्रारभ्यते–' णवमस्स ' इत्यादि ।

मूलम्–णवमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ-अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा–पउमा सिवा सई अंजू रोहिणी णवमिया, अचला अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए एव अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएण नायव्वा, णवर सावत्थीए दो जणीओ हत्थिणाउरे दोजणीओ कपिल्लपुरे दोजणीओ सागेयनयरे दोजणीओ पउमे पियरो विजया माइराओ सव्वाओऽवि पासस्स अंतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अत काहिति ॥ सू०१४ ॥

॥ णवमो वग्गो समत्तो ॥ ९ ॥

आदि देविया पूर्वभव में (महुराए णयरीए) मथुरा नगरी में उत्पन्न हुई और पार्श्वनाथ प्रभु के समीप दीक्षित हुई। (माया पियरो वि० धूया सरिसणामा) इन पुत्रियों का नाम वैसा ही नाम इनके माता पिता का है।

–' अष्टमवर्ग समाप्तः–

આ બધી જ્યોત્સ્નાભા વગેરે દેવીઓ પૂર્વભવમા (મહુરાए णयरीए) મથુરા નગરીમા ઉત્પન્ન થઈ અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી દીક્ષિત થઈ (માયાપિયરો વિ૦ ધૂયા સરિસણામા) આ પુત્રીઓના નામો જેવા જ તેમના માતાપિતાઓના નામો પણ છે

આઠમો વર્ગ સમાપ્ત

टीका—' णवमस्से ' ति-नवमस्य वर्गस्योत्क्षेपकः । एव खलु हे जम्बूः ! यावत्-अष्ट-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-पद्मा १, शिवा २, शची ३ अञ्जूः ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७, अप्सरा ८ । एव प्रथमाध्ययनस्योत्क्षे-

-:नवमवर्ग प्रारभ -

णवमस्स उक्खेवओ इत्यादि ।

टीकार्थ'—(णवमस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-त जहा-पउमा, सिवा, सई, अजू, रोहणी, णवमिया, अचला, अच्छरा,-पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! तेण कालेणं तेणं समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेणं तेण समएण पउमावई, देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमसि-सीहासणसि जहा कालीए एव अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएण नायव्वा) हे भदत ! नौवे वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार से है ? इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस तरह से है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के यावत् आठ अध्ययन प्ररूपित किये-वे इस प्रकार से हैं-पद्मा १, शिवा, २, शची ३, अजू ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७, और अप्सरा । इनमें हे जबू ! प्रथम

नवमो वर्ग प्रारभ

(णवमस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-त जहा पउमा, सिवा, सई, अजू, रोहिणी, णवमिया, अचला, अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमसि-सीहासणसि जहा कालिए एव अट्ठ वि अज्झयणा काली गमएण नायव्वा)

હે ભદન્ત ! નવમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે—શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના યાવત્ આઠ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે —પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩, અજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭ અને અપ્સરા ૮

पक्षः । एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्= भगवतो महावीरस्य समागमनमभूत्, यावत् परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पद्मावती देवी, सौधर्मे कल्पे पद्मावतसके विमाने सभाया सुधर्माया पद्मे सिंहासने, यथा कालिकायाः । एवम् अष्टापि अध्ययनानि कालीगमकेन=कालीदेवीसदृशपाठेन ज्ञातव्यानि, नवरं=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे श्रावस्त्यां नगर्यां 'दोज-

---

अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार से है-उस काल में और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का अगमन हुआ था। लोगों को जब इनके शुभागमन की खबर पड़ी तो वे सब के सब उनको वदना करने के लिये और उनसे धर्मोपदेश का काम लेने के लिये उनके समीप पहुँचे। प्रभु ने आये हुए परिषद् को श्रुतचारित्ररूप धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनने के बाद उसने प्रभु की यावत् पर्युपासना की। उस काल मे और उस समय में पद्मावती देवी जो कि सौधर्मकल्प में पद्मावतसक विमान मे, सुधर्मा सभामें रहती थी और जिसके सिंहासन का नाम पद्म था श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने और उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये वहा आई। इसके बाद का सम्बन्ध कालीदेवी का जैसा वर्णन पहिले किया गया है वैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह से अवशिष्ट सात अध्ययन भी जानना चाहिये। इन आठों ही अध्ययनों का पाठ जैसा कालीदेवी का पाठ है वैसा ही है। कोई अन्तर नहीं हैं (णवर) परन्तु जहा अन्तर है वह-

---

હે જબૂ! આમા પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનુ આગમન થયુ લોકોને તેમના શુભાગમનની જ્યારે જાણ થઈ ત્યારે તેઓ સર્વે તેમને વદન કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે ગયા. પ્રભુએ આવેલા સર્વ લોકોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સભળાવ્યો. ઉપદેશ સાભળીને લોકોએ પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે પદ્માવતી દેવી-કે જે સૌધર્મ કલ્પમા, પદ્માવતસક વિમાનમા સુધર્મા સભામા રહેતી હતી અને જેના સિંહાસનનુ નામ પદ્મ હતુ-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન કરવા અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા ત્યા આવી એના પછીનુ વર્ણન પહેલા કરવામા આવેલા કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે જ બાકીના સાત અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવુ જોઇએ એ આઠે આઠ અધ્યયનોનો પાઠ કાલી દેવીના જેવો જ

णीओ ' द्वे जन्यौ=पद्मा-शिवाभिधे द्वे दारिके सजाते । एव हस्तिनापुरे द्वे जन्यौ श्रुतिः-अज्जूः चेति, काम्पिल्यपुरे द्वे जन्यौ रोहिणीनवमिकानाम्न्यौ, साकेतनगरे द्वे जन्यौ अचला-अप्सरा इति सजाते । सर्वेषाम् ' पउमे ' पद्मः पद्मेति नामानः पितरः, विजया=विजयानाम्नो मातर आसन् । सर्वा अपि पार्श्वस्य=पार्श्वप्रभोरन्तिके प्रव्रजिताः, शक्रस्याग्रमहिष्यो जाता । तासा स्थितिः सप्तपल्योपमानि । एताः सर्वा महाविदेहे वर्षे सेत्स्यन्ति यावत्सर्वदुःखानामन्त करिष्यन्ति ॥सू० १४॥

॥ इति धर्मकथाना नवमो वर्गः समाप्तः ॥ ९ ॥

इस प्रकार से है-(सावत्थीए दोजणीओ) पद्मा और शिवा ये दो कन्याएँ पूर्व भवमे श्रावस्ती नगरी में उत्पन्न हुई (हत्थिणाउरे दोजणीओ, कम्पिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजयाभायराओ सव्वओवि पासस्स अतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्तपलिओवमाइ महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अत काहिंति '१४') श्रुति और अजू ये दो हस्तिनापुरमें, रोहिणी, नवमिका ये दो काम्पिल्यपुरमें, अचला एव अप्सरा ये दो साकेत नगर में, उत्पन्न हुई । इन सब कन्याओके पिता का नाम पद्म और माता का नाम विजया था । ये सब कन्याएँ पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुई है । शक्र की अग्रमहिषिया बनी है । इन की स्थिति सातपल्य थी । ये

છે તેમ સમજી લેવુ જોઇએ તેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી (બાકી) પરતુ જ્યા તફાવત છે-તે આ પ્રમાણે છે (सावत्थीए दोजणीओ) પદ્માવતી અને શિવા આ બને કન્યાઓ પૂર્વભવમા શ્રાવસ્તી નગરીમા ઉત્પન્ન થઇ

(हत्थिणाउरे दो जणीओ, कपिल्लपुरे दो जणीओ सागेय नयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजया भायराओ सव्वाओवि पासस्स अतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई, सत्त पलिओवमाइ महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अत काहिंति " १४ " ।)

શ્રુતિ અને અજૂ આ બને હસ્તિનાપુરમા, રોહિણી અને નવમિકા આ બને કાપિલ્યપુરમા, અચલા અને અપ્સરા આ બને સાકેત નગરમા ઉત્પન્ન થઈ આ બધી કન્યાઓના પિતાનુ નામ પદ્મ અને માતાનુ નામ વિજયા હતુ આ બધી કન્યાઓ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવજિત થઈ છે અને શક્રની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) બની છે એમની સ્થિતિ સાત પલ્ય જેટલી

अथ दशमो वर्ग आरभ्यते-दसमस्स ' इत्यादि ।

मूलम्-दसमस्स उक्खेवओ, एव खलु जबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-कण्हा य कण्हराई रामा तहराम-रक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा चेव ईसाणे ॥१॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हादेवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवर पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ सावत्थीए नयरीए दो जणीओ कोसबीए नयरीए दो जणीओ, रामे पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्व-इयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्ग-महिसीओ ठिई णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झि-हिति बुज्जिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं अत काहिति । एवं खलु जबू ! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स ॥ सू० १५ ॥

॥ दसमो वग्गो समत्तो ॥ १० ॥

टीका—' दसमस्से ' ति दशमस्य उत्क्षेपकः । एव खलु हे जम्बू ! यावत् अष्ट-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-तानि गाथया प्रदर्श्यन्ते ' कण्हे ' त्यादि ।

सब महाविदेह क्षेत्र से सिद्ध अवस्था प्राप्त करेंगी-यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगी ॥ सू० १४ ॥

॥ नवमवर्ग समाप्त ॥

છે આ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાથી સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત્ સર્વ દુ ખોનો અત કરશે ॥ સૂત્ર૧૪ ॥

નવમો વર્ગ સમાપ્ત

" कृष्णा १ च कृष्णराजिः २, रामा ३ तथा रामरक्षिका ४ वसूश्च ५ वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, वसुन्धरा ८ चैव ईशाने ॥ १ ॥ "

तत्तन्नामभिरध्ययनानि प्रसिद्धानि । तत्र प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे भगवत श्रीमहावीर-

॥ दशमवर्ग प्रारभ ॥

' दसमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि० "१५"

टीकार्थ—(दसमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जबू ! जाव अट्ठअज्झयणा पण्णत्ता-त जहा कण्हाय कण्हराई, रामा, तह रामरक्खिया वसू य। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा चेव ईसाणे "१"-पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू !) हे भदन्त श्रमण भगवान महावीर ने दशवें वर्गका उत्क्षेपक किस प्रकार से कहा है ? इस तरह का जबू ! स्वामी के प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जबू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीरने इस दशवें वर्ग के आठ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं-वे ये हैं-कृष्णा १, कृष्णराजि २, रामा ३, रामरक्षिका ४, वसू ५, वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, और वसुधरा । इन २ नामो द्वारा इन २ नाम वाले अध्ययन प्रसिद्ध हुए है। इनमें प्रथम अध्ययन का हे जबू ! उत्क्षेपक

દશમો વર્ગ પ્રારભ—

' दसमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि—

(दसमस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-त जहा-कण्हा य कण्हराई, रामा तह रामरक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू !)

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે કહ્યો છે ?

આ પ્રમાણેના જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને તેના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દશમા વર્ગના આઠ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે-કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણરાજિર, રામા ૩, રામરક્ષિકા ૪, વસૂ ૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭ અને વસુધરા ૮

આ ઉક્ત જુદા જુદા નામો વડે એ જ નામના જુદા જુદા અધ્યયનો પ્રસિદ્ધ થયા છે હે જબૂ ! આ બધામાથી પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક

स्वामिनः समवसरणं यावत् परिषत् पर्युपास्ते, तस्मिन् काले तस्मिन् समये कृष्णा देवी ईशाने कल्पे कृष्णावतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां, कृष्ण सिंहासने, शेष

इस तरह से है-(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ) उस काल एवं उस समयमें राजगृह नगरमें भगवान् महावीर का शुभागमन हुआ था। परिषद् उन को वंदना आदि करने के लिये उनके समीप पहुँची। प्रभुने सबके लिये धर्म का उपदेश सुनाया। लोगोंने उपदेश सुनकर प्रभु की पर्युपासना की (तेण कालेण तेण समएण कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेस जहा कालिए एव अविट्ठा अज्झयणा कालीगमएण णेयव्वा, णवर पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई, णवपलिओवमाइ, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति, बुज्झिहिंति, मुच्चिहिंति, सव्वदुक्खाण, अंतकाहिंति, एव खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स) उसी काल और उसी समय वहा कृष्णादेवी जो ईशान कल्प में कृष्णावतंसक विमान में रहती थी-और

આ પ્રમાણે છે (तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण, जाव परिसा पज्जुवासइ) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનુ શુભાગમન થયુ તેમને વદન કરવા માટે પરિષદ તેમની પાસે પહોચી ગૌને પ્રભુએ ધર્મોપદેશ સભળાવ્યો ધર્મોપદેશ સાભળીને પરિષદે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી

(तेण कालेण तेण समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए एव अविट्ठा अज्झयणा कालीगमएण णेयव्वा, णवर पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई, णवपलिओवमाइ, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति, मुच्चिहिंति, सव्वदुक्खाण, अंतकाहिंति एव खलु जंबू ! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स)

તે કાળે અને તે સમયે ત્યા કૃષ્ણા દેવી-કે જે ઇશાન-કલ્પમા કૃષ્ણાવતસક વિમાનમા રહેતી હતી અને જેની સભાનુ નામ [illegible] તેમજ સિંહાસનનુ નામ કૃષ્ણા હતુ-આવી એના પછીનો

यथा काल्याः । एवमष्टा कृष्णराजिप्रभृतीनि अध्ययनानि कालीगमकेन=काली-देवीसदृशपाठेन ज्ञातव्यानि नवर=विशेष यत्-पूर्वभवे वाणारस्या नगर्यां द्वे=कृष्ण-कृष्णराजिनाम्न्यौ जन्यौ=दारिके सजाते । एव राजगृहे नगरे द्वे=वसु-वसुगुप्ता नाम्न्यौ जन्यौ, कौशाम्ब्या नगर्यां द्वे=वसुमित्रा-वसुन्धरा नाम्न्यौ जन्यौ=दारिके समुत्पन्ने । सर्वासा रामः=रामाभिधः पिता, धर्मा=धर्माऽभिधा माता । सर्वा अपि पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके प्रव्रजिताः, पुष्पचूलाया आर्यायाः शिष्या-त्वेन पार्श्वप्रभुणा स्वय प्रदत्ता । ईशानस्य=ईशानेन्द्रस्य अग्रमहिष्यो जाताः । तत्र तासा स्थितिर्नव पल्योपमानि वर्त्तते । ततश्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे समुत्पद्य सेत्स्यन्ति,

---

जिसकी सभा का नाम सुधर्म तथा सिंहासन का नाम कृष्ण था आई। इस के आगे का पाठ कालीदेवी के वर्णन में जैसा पाठ कहा गया है वैसा ही है। इसी तरह से कृष्णराजि प्रभृति अध्ययन भी-कालीदेवी वर्णन में पठित पाठ के सदृश ही जानना चाहिये। कालीदेवी के पाठ में और इन आठ अध्ययनोक्त पाठों में जो अन्तर है वह इस प्रकार से है-पूर्वभव में वाणारसी नगरीमें कृष्णा और कृष्णराजि ये दो जनी -उत्पन्न हुई, राजगृहनगर में रामा और रामरक्षिका श्रावस्ती नगरी में वसु, वसुगुप्ता और कौशाबी नगरी में वसुमित्रा एवं, वसुधरा उत्पन्न हुई । इन सब के पिता का नाम राम और माताओं का नाम धर्मा था। ये सबकी सब पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुई । प्रभुने इन सब को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या की शिष्यारूप से दिया। ये सब इस ईशानेन्द्रकी अग्रमहिषी हुई । वहां इनकी स्थिति नौ पल्योपम की है। वहां से चवकर ये महाविदेह क्षेत्र मेंउत्पन्न होंगी और वहीं से

વર્ણનમા જે પ્રમાણે પાઠ કહેવાયેા છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવેા. જોઇએ આ પ્રમાણે જ કૃષ્ણરાજિ વગેરે અધ્યયનેા પણ કાલી દેવીના પાઠમા અને આ ઉક્ત આઠ અધ્યયનેાના પાઠેામા જે કઈ તફાવત છે તે આ પ્રમાણે છે-પૂર્વભવમા વાણારસી નગરીમા કૃષ્ણા અને કૃષ્ણરાજિ આ બને ઉત્પન્ન થઈ, રાજગૃહ નગરમા રામા અને રામરક્ષિકા શ્રાવસ્તી નગરીમા વસૂ, વસુગુપ્તા અને કૌશાબી નગરીમા વસુમિત્રા અને વસુધરા ઉત્પન્ન થઈ એમના પિતાનુ નામ રામ અને માતાનુ નામ ધર્મા હતું એ બધીએ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી હતી પ્રભુએ સર્વેને દીક્ષિત કરીને પુષ્પચૂલા આર્યાને શિષ્યાઓના રૂપમા સેાપી હતી એ બધી ઇશાનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓ થઈ ત્યા તેમની સ્થિતિ નવ પલ્યેાપમની છે ત્યાથી ચવીને એ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ-

भोत्स्यन्ति, मोक्ष्यन्ति सर्वदुःखानामन्तं करिष्यन्ति । एवं खलु हे जम्बूः ! निक्षेपको दशमवर्गस्य ॥ सू० १५ ॥

॥ इति धर्मकथानां दशमो वर्गः समाप्तः ॥ १० ॥

मूलम्--एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं सयंसबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

॥ धम्मकहासुयक्खंधो समत्तो दसहि वग्गेहिं ॥

॥ णायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

टीका—सुधर्मास्वामी कथयति-' एवं खलु ' इत्यादि । एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण स्वयं सम्बुद्धेन पुरुषोत्तमेन

सिद्ध पद की भोक्ता बनेंगी केवलज्ञानरूप आलोक से समस्त चराचर पदार्थों की ज्ञाता बनेगी । द्रव्य एवं भावरूप समस्त कर्मों से छूटजावेंगी इस तरह ये वहीं से समस्त दुःखों का अन्त करने वाली होंगी । इस प्रकार हे जंबू ! यह दशवेंवर्ग का निक्षेपक है ।

॥ दसमवर्ग समाप्त ॥

' एवं खलु जंबू ! ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते) अब जंबूस्वामी से श्री सुधर्मास्वामी कहते हैं कि हे

પદ મેળવશે એ બધી કેવળજ્ઞાન રૂપ આલોકથી સમસ્ત ચર અને અચર પદાર્થોનુ જ્ઞાન મેળવશે દ્રવ્ય અને ભાવરૂપ બધા કર્મોથી મુક્ત થઈ જશે આ પ્રમાણે એ બધી ત્યાથી જ બધા દુઃખોને અત કરનારી થશે આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! આ દશમા વર્ગનો નિક્ષેપક છે

દશમો વર્ગ સમાપ્ત

एवं खलु जंबू ! इत्यादि—

(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव सपत्तेणं धम्म कहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते)

यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन धर्मकथानामयमर्थ प्रज्ञप्तः ॥

॥ धर्मकथानामको द्वितीयः श्रुतस्कन्धः समाप्त ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
॥ त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-
॥ ६ ॥ प्रतिविरचितायां-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षि-
ण्याख्यायां व्याख्यायां समाप्तायां ॥

जंबू! आदिकर, तीर्थङ्कर, स्वयं संबुद्ध पुरुषोत्तम, यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए ऐसे श्रमण भगवान महावीर ने धर्मकथा नामक द्वितीय श्रुतस्कंध का पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है। (धम्म-कहासुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं) धर्मकथा नामका यह द्वितीय श्रुतस्कंध दशवर्गों में समाप्त हुआ है। इस तरह (णायाधम्मकहाओ समत्ताओ) यह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र समाप्त हुआ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत
"ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या समाप्त ॥

હવે જંબૂ સ્વામીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ! આદિકર તીર્થંકર, સ્વયં સંબુદ્ધ, પુરૂષોત્તમ યાવત્ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચૂકેલા એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથા નામના બીજા શ્રુતસ્કંધનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે (धम्मकहा सुयक्खधो समत्तो दसहि वग्गेहि) ધર્મકથા નામનો આ બીજો શ્રુતસ્કંધ દશ વર્ગોમા પૂરો થયો છે આ પ્રમાણે (णायाधम्मकहाओ समत्ताओ) આ જ્ઞાતા ધર્મકથાક સૂત્ર પૂરૂં થયુ છે

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
"જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર" ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા સમાપ્ત

—:प्रशस्तिः—

काठियावाडदेशेऽस्ति, राजकोटपुरे शुभे
कोठारीहरगोविन्द काकानाम प्रसिद्धिमान् ।
तस्यास्तिभार्यापरमा सुशीला, धर्मानुरक्तागृहकार्यदक्षा ।
शान्तिप्रिया दीनदयार्द्रभावा, नाम्ना प्रसिद्धा किल रुक्मिणीला ॥ २ ॥
दिनेशचन्द्रस्तनयोऽस्ति यस्य, कुलस्य दीपः सरलस्वभावः ।
कन्या सुशीला सरला जितुश्च-सदा-प्रमोदाय पकाङ्गिणोः ॥ ३ ॥
व्याख्यानभवने तस्य, ज्ञाताधर्मकथाङ्गके ।
घासीलालेन मुनिना कृता टीका सतां मुदे ॥ ४ ॥
द्विसहस्रचतु सख्ये, विक्रमाब्दे रवौ दिने ।
माघे शुक्ले च पञ्चम्यां, सम्पूर्णा धर्मवर्षिणी ॥ ५ ॥

काठियावाडदेश में राजकोट नामका अच्छा नगर है। उसमें कोठारी हरगोविन्दकाका रहते हैं। इनका सुशीलभार्याका नाम रुक्मिणी हैं। यह गृहकार्य में बहुत चतुर है। धर्मात्मा है, शान्ति प्रिया है एवं दीन दुःखियों के ऊपर सदा दया भाव रखती है। काका का कुल दीपक एक दिनेशचन्द्र नाम का पुत्र और जितु नाम की कन्या है। ये दोनों माता पिता के प्रमोद के स्थान भूत हैं।

मुझ घासीलाल मुनिराज ने उन्हीं के व्याख्यान भवन में ठहर कर विक्रम संवत् २००४ दिन रविवार माघशुक्ला पञ्चमी के दिन ज्ञाता धर्मकथाङ्ग, सूत्र की यह टीका रचकर समाप्त की है।

કાઠિયાવાડ પ્રાંતમા રાજકોટ નામે એક સરસ રમ્ય નગર છે, તેમા કોઠારી હરગોવિંદ કાકા રહે છે તેમની સુશીલ પત્નીનુ નામ રૂક્મિણી છે તેઓ ગૃહકાર્યમા બહુ જ ચતુર છે, ધર્માત્મા તેમજ શાંતિ પ્રિયાપણ છે તેઓ ગરીબ દુઃખીઓના ઉપર હમેશા દયાભાવ રાખે છે કાકાનો કુળદીપક એક દિનેશચંદ્ર નામે પુત્ર અને જિતુ નામે એક કન્યા છે આ બને માતા પિતાના પ્રમોદના આશ્રયસ્થાનો છે

મે ઘાસીલાલ મુનિરાજે તેમના જ વ્યાખ્યાન ભવનમા રહીને વિક્રમ સવત્ ૨૦૦૪ રવિવાર માઘ શુકલા પચમીના દિવસે જ્ઞાતાધર્મકથાંગ સૂત્રની આ ટીકા રચીને પૂરી કરી છે